

पृथ्वीराजरासो



नागरीप्रचारिणी सभा वाराणसी

सभा शताब्दी योजना के अंतर्गत प्रकाशित

पृथ्वीराजरासो

भाग- १

संपादक
मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या
श्यामसुन्दर दास बी०ए०
सहायक संपादक
कुंवर कन्हैया जू



वाराणसीप्रचारिणी सभा

वाराणसी • नई दिल्ली

पृथ्वीराजरासो

प्रथम भाग



नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

मूल्य रु० ३००-०० मात्र

~~.....~~ PUBLIC LIBRARY
BL/R.R. FILE
MR. NO. RRRLF/GEN) ~~7~~



वीरशिरोमणि महाराज पृथ्वीराज



महाकवि चंदवरदायी

Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4-7.

THE PRITHVIRAJ RASO

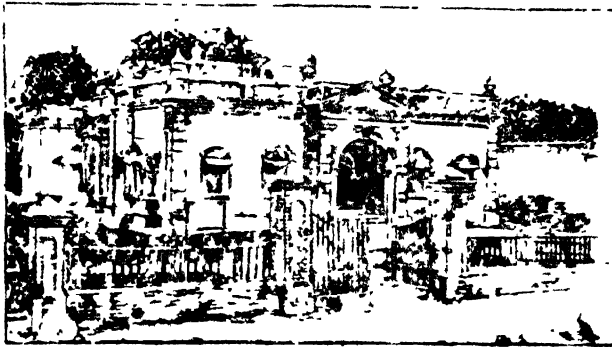
OF
CHAND BARDAL.

EDITED

Mukundlal Visnukul Prasad, Kashi Kirtan Lal

Shyam Narayan Das, B. A.

CANTOS XXIV and XXV,



महाकवि चंद वरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादन किया।

वर्ष १४ और २४

PRINTED AT THE LARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE
NAGARI PRACHARINI SABHA DE VARANASI

1906

मूल्य १०]

Printed and sold October 1906

[१९०६, १४ १०]

सभा द्वारा पूर्व में प्रकाशित पृथ्वीराज रासो का मुख पृष्ठ

प्रकाशिका

हिंदी की रासो परंपरा में अन्यतम विस्तृत महान काव्य **पृथ्वीराज रासो** है। अन्यधिक उलझा हुआ विवादास्पद ग्रन्थ है। इसके प्रकाशन की कहानी भी उतनी ही उलझी हुई एवं गापित है। एशियाटिक सोसायटी बंगाल ने इसका प्रकाशन १९वीं शताब्दी के अंतिम दशक में प्रारंभ किया किन्तु विद्वानों ने ऐतिहासिक दृष्टि से इसके अप्रामाणिक होने के सम्बन्ध में इतना व्यापक और प्रभावशाली विम्वृत आन्दोलन किया कि कुछ खण्डों के प्रकाशन के उपरान्त इसके शेष खण्ड प्रकाशित करना सोसायटी ने उचित नहीं समझा।

नागरीप्रचारिणी सभा का विशेषकर बाबू श्याममुन्दर दास और राधाकृष्ण दास का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ। सन् १९०१ में नागरीप्रचारिणी पत्रिका के ५वें भाग में मुंशी देवी प्रसाद का एक लेख 'पृथ्वीराज रासो' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इस लेख में बताया गया था कि सबसे पहले एशियाटिक सोसायटी बंगाल में इसके छपने का प्रबन्ध हुआ था परन्तु दो तीन अंकों में अधिक नहीं निकले। फिर पंड्या मोहनलाल जी ने उद्योग किया, यह भी पूरा नहीं हुआ। पीछे सुना था कि अजमेर के छापेखाने में छपा, परन्तु यह बात झूठी ही निकली। कहीं से भी सुनने में नहीं आता कि इसके छापने का उद्योग हो रहा है। नागरीप्रचारिणी सभा पंड्या जी से १०० ग्रन्थ लेना चाहती है तो भी पूरी आज्ञा छपने की नहीं होती क्योंकि बड़े खर्च और परिश्रम का काम है। उन्होंने आगे यह भी लिखा है 'कविराज श्यामलदास जी ने रासो का एक खण्डन छाया था—यह रासो इतिहास विषय में तो कुछ भी उपयोगी नहीं है, हाँ काव्य तो कुछ अनुपम है और वीररस से भरा पडा है।'

नागरीप्रचारिणी पत्रिका में इसी अंक में 'हिन्दी का आदि कवि' शीर्षक से श्याममुन्दर दास जी का एक लेख प्रकाशित है जिसमें उन्होंने लिखा है "चन्द ने निज रासो में जो सब संवत् दिए हैं वे अशुद्ध नहीं हैं बरन् वे उस अब्द से ठीक मिलते हैं जो उस समय दरबार के कामजातों में प्रचलित था जो प्रचलित बिक्रम संवत् से ९०—९१ वर्ष पूर्व था। इसी अब्द से हम यह बात स्पष्ट सिद्ध कर सकते हैं कि बिलालेख और परवाने तथा पट्टे दोनों सत्य हैं। फिर— जो कुछ ऊपर लिखा जा चुका है उससे स्पष्ट है कि—चंद के संवत् मनोकल्पित और असत्य नहीं हैं और रासो में जो बातें हैं वे निरी बप्प नहीं हैं, यह भी सिद्ध कर दिया गया है।

“अब यह स्वतः सिद्ध है कि चन्द का रासो वास्तविक सत्य घटनाओं से पूरित ग्रंथ है जैसे कि उस काल के ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रायः सब देशों में मिलते हैं और इसे झूठा सिद्ध करने का उद्योग केवल निरर्थक निष्प्रयोजनीय और द्वेषपूर्ण माना जायेगा। इसमें सन्देह नहीं है कि यह ग्रन्थ सहस्रों मनुष्यों के हाथों में गया है और सैकड़ों ने इसे लिखा है। इससे यदि आज हमको इसके पाठ में दोष या कहीं-कहीं गड़बड़ मिले तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? इससे उस ग्रन्थ के गुण और अनादर में किसी प्रकार की क्षति न होनी चाहिए।”

“अन्त में अब मुझे केवल इतना ही कहना है कि यदि पंडित मोहनलाल विष्णु-लाल पंड्या जी अपने कर्तव्य पालन से पराङ्मुख न होते, यदि पृथ्वीराज रासो अब तक छप कर प्रकाशित हो गया होता तो आज मुझे लिखने तथा अन्य लोगों को व्यर्थ आक्षेप करने का अवसर प्राप्त न होता। आशा है कि अब वे इस अमूल्य रत्न को चिथड़ों में न लपेट कर आसन पर इसे सुशोभित करेंगे जिसके यह योग्य है और जो अब तक इसे मिलना उचित था। यदि पण्डित मोहनलाल जी अब भी मौन साधे बैठ रहें तो हमें केवल देश का दुर्भाग्य मानने के और कोई चारा नहीं है।”

इस लेख को हम परिशिष्ट (१) में इसी खण्ड में दे रहे हैं और परिशिष्ट (२) में मुंशी देवीप्रसाद के लेख को ताकि लोगों को उस युग की पृष्ठभूमि से साक्षात्कार हो जाय।

मुन्शी देवीलाल या वह कर्मा भी जो इसे इतिहास की दृष्टि से जाली समझता था वह मानता रहा है कि पृथ्वीराज रासो में काव्य की गुणनिधि है। इसकी साहित्यिक महत्ता सभी वर्ग के लोगों को स्वीकार है। किंतु कवि चन्द के जीवन की भांति पृथ्वीराज रासो भी शापित ग्रंथ है जिम पर चर्चाएँ तो खूब होती हैं किंतु उन अनुपात में उसके गंभीर अध्ययन का कार्य नहीं होता।

पृथ्वीराज रासो पर जिन विद्वानों ने काम किया है उनमें इतिहास के विश्व-विद्वान तो हैं ही साहित्य और भाषा के विशिष्ट आचार्य भी सम्मिलित हैं। कर्नल टाड ने इन्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान, डा० बूलर, डा० मारीकन, मुंशी देवीप्रसाद, पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, बाबू इयामसुन्दर दास, डा० दशरथ शर्मा, मोतीलाल मिनारिया, हजारीप्रसाद द्विवेदी, माताप्रसाद गुप्त, डा० विपिन-बिहारी त्रिवेदी आदि ने काफी महत्वपूर्ण कार्य पृथ्वीराज रासो के अध्ययन के संबंध में किया है। साथ ही साथ डा० बीम्स, हाडेंले, ग्रियसन, डा० तेस्तीतोरि, डा० खोरेन्ग वर्मा, डा० सुनीति कुमार चटर्जी, डा० नरोत्तम स्वामी, मोहनलाल विष्णु-लाल पंड्या, मथुरा प्रसाद दीक्षित, अमरचन्द नाहुटा और कविराज मोहन सिंह के प्रयत्न विशेष महत्वपूर्ण हैं।

सबने उस संस्करण की चर्चा अवश्य की है जो विस्तृत संस्करण माना जाता है और जिसका प्रकाशन नागरीप्रचारिणी सभा से हुआ। जो इसे जाली समझते हैं और जो इसे अप्रामाणिक मानते हैं वे भी यह कहते हैं कि इसके संक्षिप्त संस्करण इसी प्रति पर आधित हैं। बाबू श्यामसुन्दर दास अपने निश्चय के दृढ़व्रती व्यक्ति थे और हिन्दी के साहित्यकारों में सबसे पहले उन्होंने ही मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या के इस दिशा में किए गए प्रयास को मूर्त रूप देने का बीड़ा उठाया जब कि उनके दो दो विद्वान मित्र डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा और मुन्शी देवीप्रसाद इसे इतिहास की दृष्टि से अप्रामाणिक मानते थे।

अपने उक्त लेख में जो परिशिष्ट (१) में दिया गया है श्यामसुन्दर दास जी मानते थे कि यदि मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या का यह ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ तो हिन्दी का दुर्भाग्य है। हिन्दी के दुर्भाग्य को श्यामसुन्दर दास के इस दृढ़व्रत ने सौभाग्य में परिवर्तन सभा से पृथ्वीराज रासो का प्रकाशन कर किया।

पहले भाग के संपादक थे मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्ण दास और बाबू श्यामसुन्दर दास। यह सन् १९०४ में प्रकाशित हुआ और इसमें पर्व १ से ११ तक था। दूसरे भाग का प्रकाशन पर्व १२ से २८ तक में हुआ जो सन् १९०६ में प्रकाशित हुआ। तीसरे भाग का प्रकाशन पर्व २९ से ५४ तक सन् १९०७ में हुआ और अब इसके संपादक मात्र पंड्या जी और श्यामसुन्दर दास रह गए। संपादन कार्य में सहायता कुंवर कन्हैया जी ने की। चौथा भाग १९१० में प्रकाशित हुआ जिसमें पर्व ५५ से ६१ तक दिया गया है। पांचवां भाग सन् १९१२ में प्रकाशित हुआ जिसमें पर्व ६२ से ६९ तक है। सभा के सन् १९१३ और १४ की वार्षिक रिपोर्ट में पृथ्वीराज रासो के सम्बन्ध में निम्नलिखित टिप्पणी महत्वपूर्ण है:—

“पृथ्वीराज रासो—इस वर्ष में इस ग्रन्थ की २२वीं तथा अंतिम संख्या छप कर प्रकाशित हो गई। इस ग्रन्थ की भूमिका लिखने का भार पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या जी ने लिया था परन्तु उनका परलोकवास हो जाने के कारण भूमिका के लिये जो कुछ सामग्री इकट्ठी की गई थी वह भी लुप्त हो गई। बाबू श्यामसुन्दर दास ने भूमिका लिखने का भार अपने ऊपर लिया है पर पहले अस्वस्थ रहने और फिर कार्य की अधिकता के कारण वे अभी इस संबंध में कुछ नहीं कर सके हैं। सभा को इस बात का आनन्द है कि इस ग्रन्थ का मूल भाग और सारांश कई वर्षों के निरंतर उद्योग के अनंतर छप कर तैयार हो गया है और उमका हिन्दी के प्रेमियों में उचित आदर हो रहा है।

यह ग्रन्थ प्रायः तभी से अनुपलब्ध था और समय-समय पर प्रयत्न किया जाता रहा कि इसे प्रकाशित किया जाय। किन्तु एकाग्र बंध कहीं-कहीं छप-छपा गए पर पृथ्वीराज रासो का यह संस्करण पूर्ण रूप से होबारा नहीं हो सका। इसका

संशोधित संस्करण भी सभा प्रकाशित करना चाहती थी और इस कार्य का भार बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर, श्यामसुन्दर दास और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को सौंपा गया था किन्तु वह एक संकल्प मात्र रह गया था। श्यामसुन्दर दास को भूमिका लिखनी थी, वह कार्य भी अभी तक नहीं हुआ।"

यद्यपि डा० श्यामसुन्दर दास जी के नागरीप्रचारिणी पत्रिका में अनेक शोधपरक निबन्ध पृथ्वीराज रासो के सम्बन्ध में प्रकाशित हुए पर यह ग्रंथ मूल रूप में सभा पुनः प्रकाशित नहीं कर सकी।

जिस रूप में यह पहले छपा था सर्वथा उची रूप में इसे प्रकाशित किया जा रहा है। अंतर केवल इतना है कि पहले संस्करण का आकार रायल अठपेजी का था और यह संस्करण डबलडिमाई १६ पेजी का है।

इस ग्रन्थ का यह दुर्भाग्य या सौभाग्य रहा है कि हिन्दी के बहुत थोड़े विद्वानों ने इसे देखा है और उनमें से स्वल्प ने ही इसे पढ़ा है। जो इसे अप्रामाणिक मानते हैं वे भी सर्वथा इसके आधार पर आश्रित अन्य संस्करणों को मानते हैं और जो अन्य परम्परा की उपलब्ध लघु रासो को प्रामाणिक मानते हैं वे भी इसके बिना चलना पसंद नहीं करते।

इस ग्रन्थ की दूसरी विशेषता यह है कि केवल यह आधार ग्रन्थ ही नहीं है, इसमें पाठान्तर, टिप्पणियाँ और आलोचना इतनी अधिक ध्यान-स्थान पर बिखरी हुई हैं कि यदि उसका ठीक से अध्ययन कर लिया जाय तो रासो से संबद्ध भाषा, छन्द तथा अन्य सभी विषयों में ऐसी ज्ञान मंडित सामग्री संमुख आयेगी जो प्रायः लुप्तप्राय है। जो कुछ भी पृथ्वीराज रासो के संबंध में कहा जाता है वह सबका सब पाद-टिप्पणियों में है और भ्रमनिवारण का सार्थक यत्न भी है। पृथ्वीराज रासो पर हिन्दी में जितना काम होना चाहिए, नहीं हुआ और आज तो ऐसा लग रहा है कि इस ओर अध्ययन करने वालों का ध्यान न के बराबर है।

प्राचीन भाषा की अलघ्य दीवार, बिना थ्रम के विद्या लाभ की कामना और बिना साधना के श्रेय प्राप्ति की परिपाटी इसमें बाधक हो रही है। साथ ही इस ग्रंथ का उपलब्ध न होना भी इसका कारण है। जिन विद्वानों ने इस संबंध में इस बृहद् संस्करण से इतर जो कुछ भी प्रस्तुत किया है उसे या तो छया, मान लिया गया या उसकी प्रामाणिकता भी संदेह के घेरे में है। कहीं-कहीं तो ऐसा रुचता है कि कुछ विद्वानों ने मूल को पढ़े बिना ही विद्वानों की बातों को अक्षर मानकर अपना मंतव्य स्थिर किया है।

जो कुछ हो, आवश्यकता इस बात की है कि पृथ्वीराज रासो पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाय क्योंकि अब सामग्री पहले की अपेक्षा अधिक उपलब्ध है।

रामो का यह बृहद् संस्करण सभा की ओर से हिन्दी जगत को ८० वर्ष के बाद सेर्वापित किया जा रहा है । सभा शताब्दी वर्ष में यह उपहार हिन्दी जगत को है । इसमें मारी की सारी सामग्री ज्यों की त्यों है । श्री विपिन बिहारी त्रिवेदी के ग्रन्थ में प्रकाशित चंद्रवरदायी का चित्र इसमें बढ़ा दिया गया है । जिम रूप में यह उस समय छपता था, उसकी छांकी मिल सके, इसलिए इसका उस समय का कवर पेज भी दे दिया गया है ।

जो कुछ भी हो सभा द्वारा प्रस्तुत पृथ्वीराज रामो इस क्षेत्र में अध्ययन अध्यापन के लिए नया द्वार खोलेगा और भाषा वैज्ञानिको को यह प्रेरणा देगा कि पृथ्वीराज रामो की भाषा पर वे शोधपरक कार्य करें ।

सुधाकर पाण्डेय

प्रधानमंत्री

नागरीप्रचारिणी सभा

वाराणसी

विषय-सूची

[समय १] आदि पर्व लिख्यते

[पृष्ठ १-१९७]

आदिदेव, गुरु, वाणी, लक्ष्मीश, सुरनाथ और मवंश का मंगलाचरण १,
'क' छंद लक्षण १, धर्म स्तुति ९, कर्म स्तुति ११, मुक्ति स्तुति १२,
अग्नी स्त्री की शंका का समाधान करता १५, चंद्र की स्त्री
श्च शंका करती है १५, चंद्र अपनी स्त्री की शंका का पुनश्च समाधान
ना है १६, चंद्र अपनी स्त्री के आगे ईश्वर के ऐश्वर्य का वर्णन करता १६;
की स्त्री अपने पति से अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका पूछती है १८,
अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका का कथन करता है १८, चंद्र अपनी
ग वर्णन करता है १९. चंद्र उन्मापित होकर अपने को पूर्व कवियों का दाम
पति, उनकी उक्ति को कहना और अपनी को बकना कहता है २०, चंद्र खलों
स्वभाव वर्णन करके सुजनों के निमित्त अपना काव्यरचन करना चाहता है २१,
वती की स्तुति २१, गणेश की स्तुति २१, गणपति की उत्पत्ति कथा २१,
र की स्तुति २२, कवि की आशा का स्वरूप वर्णन २४, 'चं' का काव्य
ः का है २४, कोई अशुद्ध पढ़ने वाला चंद्र को काव्य-संबंधी दोष न दे २४,
ग्रंथ में चंद्र ने क्या क्या कथन किया है २४, रामो को रमिया सरस
॥ २५, रासो का तत्त्वज्ञान कैसे होगा २५, जो रामो को सुगुरु से पढ़ता
कुमति नहीं दरसाता २६, रासो किमको अच्छा और किमको बुरा प्रतीत
है २६, इस ग्रंथ के काव्य की मर्यादा का कथन २६, रामो के ठेके हुए अर्थ
ग्रंथ में काव्य का कथन २६ इस ग्रंथ के त्रिषय का संक्षेप कथन २६, रात्रा
क्षत को तक्षक दर्शन और जन्मेजय की मर्षमंत्र कथा २७, वर्तमानआबू र्विन के
की क्या ३३, गालव ऋषि के शिष्य उत्तम का उपाख्यान ३४, वशिष्ठ ऋषि
गुरु पर तप करना और उनकी नंदनी गौ का अघाव बिल में गिरना ३५,
ठ ने अपनी गाय निकालने को गंगा का आह्वान किया ३६, मदाकिनी गंगा का
ना और गौ का निकलना ३७, वशिष्ठ ऋषि का उग्र अण्डाह बिल बूरने को
य के पास एक पुत्र मांगने जाना ३७, हिमालय का अपने सब पुत्रों से ऋषि
भिप्राय कहना ३८, हिमालय के बड़े पुत्र का उत्तर देना ३८, वशिष्ठ का

प्रत्युत्तर दे कहना कि वह भूमि बड़ी रम्य है ३८, और वहाँ आगे वाल्मीकि ऋषित्व को प्राप्त हुए हैं ३९, रिमाध्य के मध्यम पुत्र नंद का वशिष्ठ के साथ आना स्वीकार करना ४०, वशिष्ठ का अबुंद नाग से कहना कि जो तू नन्द गिरि को उठा ले चले तो हमारा कार्य सिद्ध हो ४०, अबुंद नाग का कहना कि जो मेरे नाम से तीर्थ प्रसिद्ध हो तो मैं नंदगिरि को उठा ले चलूँ ४०, अबुंद नाग का नंदगिरि को उठा लाकर विल में रख देना ४१, विल का पुर जाना और पुष्पवृष्टि महिम्न यजयज्ञार होना ४१, नग का हिलना ४१, नग के हिलने से वशिष्ठ विता कर ईश आराधन करने लगे ४२, वाचिष्ठ ऋषि ने महादेव का यह आराधन किया ४२, वशिष्ठ के वचन सुन महादेव का प्रत्यक्ष हो कर मांगने को कहना ४३, ईश का स्वरूप देख ऋषि का मुदित होना ४३, वशिष्ठ ऋषि का महादेव को नमस्कार करना ४३, प्रमथाधिति ने आनन्दित होकर बर मांगने को कहा ४४, वशिष्ठ ऋषि का नंदगिरि को अचल करने का बर मांगना ४४, महादेव का पर्वत को अचल कर उस में अचल नाम से विराजना ४४, आवुं को अचल देख कर वशिष्ठ का प्रसन्न होना और अन्य ऋषियों को वहाँ यज्ञ के लिये बुलाय जप ह्य और वास करना ४५, यज्ञ का अनुष्ठान सुन कर राक्षसों का एकत्र हो जाना ४६, ऋषियों का अतलकुंड चरन कर ब्रह्म कर्म प्रारंभ करना ४६, दैत्यों का ऋषियों के यज्ञ में बिघ्न करना ४७, ऋषियों का संतापित होकर वशिष्ठ के पास जाय पुकारना ४७, जिस पर वशिष्ठ का प्रतिहार चालुक्य और पेंवार को प्रगट करना ४८, तथापि राक्षसों का उपद्रव शमन न होना ४८, तब वशिष्ठ का स्वयं कुंड चरन कर यथार्थ बैठना और वितवन करना ४८, वशिष्ठ का चाटुवानजी को उत्पन्न करना ४९, क्षत्रियों के छत्तीस वंशों की नामावली ५२, चारों अग्नि कुल क्षत्रियों ने वशिष्ठ का यज्ञ निविघ्न किया ५३, जिन्होंने द्विजों की रक्षा की उनके वंश में पृथ्वीराज हैं ५३, चाटुवानजी से माणिकराजजी पहिले तक तेरह पीढ़ी का वर्णन ५३, महिमिह जी से घर्माधिराज जी तक का वर्णन ५४, श्रीमल्लदेव जी का वर्णन ५६, दुदा दानव की उत्पत्ति और उसका अत्रमेरु के बन में रहना ५७, मारुदेवजी की राणी गौरीजी का अनन्तर्गम महिम्न रणयंभ पञ्चरत्ना ५८, आना राजा का जन्म होना और उनका बाल्यम ५९, आना का बाल्यापन व्यतीत होना और वीरत्व को प्राप्त हो माता से पूछना ६०, आना की माता का उमको सर नर और अपपर विद्या का उपदेश करना ६०, आना का माता से पूछना कि मैं किस वंश में उत्पन्न हुआ हूँ ६०, गौरी माता का कहना कि यह बात न पूछो उनके कहते मुझे भय और कष्टना होती है ६१, आना का माता से अपने वंश की कथा कह करके पूछना ६१, आना की माता का उसे कथा प्रगट न करने को कहना और डंक करके संक्षेप में कहना ६१, अन्य उपलक्ष्यों के द्वारा आना का संभार

की पूर्व कथा सँभारना ६१, आना का माता से पूछना कि नर अर्थात् वीसलदेव
 दानव कैसे हुआ ६२, आना की माँ का कहना कि दानव की कथा न सुन जिस भंग
 होगा ६३, आना का उत्तर से कहना कि ऐसे मुझे क्यों डरती है ६३, आना की
 माँ का कहना कि जिना से कार्य मिट्ट न हो उसका कहना व्यर्थ है ६३, आना
 का प्रत्युत्तर देना कि आगे किन्तने नर, ऋषि और राक्ष दानव हुए हैं कथा सुनने
 से क्या होता है ६३, वीमलदेवजी का जन्म होना ६४, वीमल देवजी का पाठ
 बैठना ६४, वीमलदेवजी का अंत एतदपट्टव विजय करने को छत्र धारण करना
 ६७, वीमलदेवजी पाठ बैठकर कैसे राज करने थे ६७, वीमलदेवजी का अपने पुत्र
 गार्ग्यदेवजी को उद्देश्य करके नांभर संतना कि जो अपनी धा-बैन के पति के
 विनाश में दूचित हो गए थे ६८, वीमलदेवजी का मृगया में बहुरना, एक तात्पर्य
 बनाने की आज्ञा देना और दरबार करना ७०, वीमलदेवजी का रणवाम में पक्षार र
 विश्राम करना और उनकी एक अप्रिय रानी का उनको नपुंसक करना ७१,
 वीमलदेवजी का पुष्पवत् राज होने में दुषित हो गोकर्णेश्वर की यात्रा करना
 को गुजरात जाना ७२, वीमलदेवजी का गोकर्णेश्वर महादेव की स्तुति करना
 ७२, वीमलदेवजी से गोकर्णेश्वर के मित्र का उनका नाम ग्रानादि पूछना ७६,
 वीमलदेवजी का अपना नाम गाम आदि बनाना ७७, मित्र का गोकर्णेश्वर के
 लोभ से मर्दिता रंगत करना ७७, वीमलदेवजी का तीन दिन निराहार सपवाम
 कर गोकर्णेश्वर करना और महादेव का अस्त्रग को उन्हे उठाने भेजना ७९,
 अस्त्रग का वीमलदेवजी से महादेव के प्रसन्न होने और मन की वामना पूरा
 होने की बात बनना ८०, वीमलदेवजी का अपने में पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त होना
 देवार इहाँ वीमलदेव बना कर महादेव का मन्दिर बनाने का हुक्म देना ८०,
 वीमलदेवजी का पीछे अज्ञेय आना और भय कथा प्रसंग पवार जी राणी ने
 कहना ८०, सब काम-दुष्प्राप्ति को सोच होना कि जंभू ने ऐसा क्या कर दिया
 ८१, वीमलदेवजी का कामान्ध हो प्रकृतंश्रय काम करना ८१, वीमलदेवजी के
 दुराचर हो दुःखी होकर नगर के लोगों का प्रधान के पास पुकारने जाना ८२,
 सबका आश्रय में मलाह करके वीमलदेवजी को राजधर्म अरज करना ८२,
 वीमलदेवजी ने उत्तर दे कहा कि यह सब मैं जानता हूँ पर कम-स्वान्ता के बात
 से लाचार हूँ, अब तुम जो कहो वह करूँगा ८२, इस पर वीमलदेवजी का
 किरगाल को बुठाना और उसका आना ८३, वीमलदेवजी का किरगाल से कहना
 कि तद्वारि हो पृथ्वी है जो हम नव खंड की पङ्क्त खोमने को पङ्क्त बाधने है,
 तुम खताना मंग ले वीसल सरवर पर डेरा बने ८३, वीमल सरवर पर
 वीमलदेवजी के अधीन तथा सहायक इष्ट मित्र राजाओं का उनके दिग्विजयार्थ
 अटन के लिये एकत्र होना और गुजरात के चालुक्य राजा का वहाँ न आना अतएव
 वीसलदेवजी का उस पर चढ़ाई करना और बालुका राय का यह सुनकर सामना

करके को आना ८४, बालुकराय का आना सुनकर बीसलदेवजी का सेना ले चढ़ना ८६, बीसलदेवजी की खबर सुन बालुका राव का जलभुन जाना ८६, बीसलदेवजी की खबर सुन बालुका राव का जलभुन जाना ८७, बालुका राव का नित्य नेम करके लड़ने को तयार होना ८७, बालुका राव का बीसलदेवजी के पास श्रीकंठ भट्ट को भेज संदेश कहना ८७, यह सुनते ही बीसलदेवजी का लड़ने को आज्ञा देना ८७, बीसलदेवजी का चक्रव्यूह और बालुकराय का अहिभ्यूह रचना ८८, बीसलदेवजी और बालुकराय की फौजों का परस्पर युद्ध करना ८८, चालुक का कहना कि रात को युद्ध नहीं करना, प्रात होने पर युद्ध करेंगे ८९, दोनों योद्धाओं का अपने अपने डेरों पर आना और चालुक के मंत्रियों का एक झूठी पत्री बनाना ८९, चालुक के मंत्रियों का उसे एक झूठी पत्री देकर धर भेज देना ८९, बालुक के मंत्रियों का बीसलदेवजी के मंत्रियों से मिल संधि कर लेना ८९, पावासुर का बीसलदेवजी से संधि कर लेने के समाचार कहना ९०, बीसलदेवजी का संधि स्वीकार कर वहां महल बनाने और नगर बसाने को कहना ९०, माल भोगकर बीसलपुर बसाना और वहां से पीछे फिरना ९०, एक दूती का बीसलदेवजी को एक बहुत सुन्दर बनिक्मुता की खबर देना ९१, बीसलदेवजी का बीसलपुर में प्रविष्ट होना ९१, बीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और वहां उनका हास होना ९२, बनिक्मुता गौरी का पुष्कर में जप करना और बीसलदेवजी का उस पर मोहित होना ९२, पुष्कर की तपस्विनी की बीसलदेवजी के प्रति अश्रुदासि ९३, बीसलदेवजी का पुष्कर में बनिक्मुता गौरी का सतीत्व भ्रष्ट करना और उसका उनको दावन होने का शाप देना ९३, गौरी का बीसलदेवजी को भयभीत देखकर कहना कि तुम्हारा पोता तुम्हारी सुकीर्ति करेगा ९४, तपस्विनी के क्रोध में बीसलदेवजी का मांस के काटने से अलोप होना ९४, जिस तपस्विनी के शाप से बीसलदेवजी अमुर हुए उसके तप का आना की मा मविस्तर वर्णन करती है ९५, शाप से विमुक्त होने के विचार में बीसलदेवजी का गोकर्ण की यात्रा के लिये बीसल सरवर पर प्रस्थान करना ९७, तपस्विनी के शाप से बीसलदेवजी की बुद्धि का चल विचल होना ९७, बीसलदेवजी को साप का काटना और उसमें उनका मरना ९७, बीसलदेवजी के मरण और अमुर हे' नर भक्षण करने की बात सुनकर सारंगदेवजी का अपनी रानी को रणथंभ भेजना और आप उनसे युद्ध करने को तयार होना ९८, सारंगदेवजी की रानी गवरी का चिता करना ९८, सारंगदेवजी का सेना लेकर दुंडा राक्षस से युद्ध करने को अजमेर पहुँचना ९८, सारंगदेवजी का तीन दिन कोट में रहना, वहां अमुर का न मिलना और अजमेर की भ्रष्ट और भयानक दशा देखकर चिता करना ९८, सारंगदेवजी और उनके पिता दुंडा दानव का परस्पर युद्ध होकर सारंगदेवजी का मारा जाना ९९, आना की मा का उसे

कहना कि मनुष्यों को बूढ़ बूढ़ कर खाने से बूढ़ा नाम पड़ा और उसने रम्य अजमेर को बेराम कर दिया १००, आना का माता से कहना कि अभी जाकर मैं उसे मार आऊँ १००, गवरी का आना को अमंन मंग कटकर शिक्षा करना १००, आना का माता से कहना कि या तो मैं मिर समर्पणा या छत्र धर्मा १०, आना का माता से कहना कि सेवा ऐसी है कि जिम से सब कार्यमिद्धि होती है १०१, आना की माता का तो उगे शत्रु न सेवने को कहना किन्तु उसका अजमेर जाना १०२, बूढ़ा दानव का अजमेर वन में बहुत दिनों तक मन्तु होकर रहना १०२, अजमेर की नाश भ्रष्ट दशा और आना का खड्ग लेकर प्रेत के पास जाना १०२, आना का आने मन से विचार कर कहना १०२, आना का दानव को कंदरा में देखना और उसके खड्ग मार्ग पर दानव का गाजना १०२; इस पर दानव का आना से उसके मा बाप आदि के नाम पूछना १०४, बूढ़ा दानव का आना के निर पर हाथ धर गल्ह पूछना १०४, आना का मन में विता करना कि जो बूढ़ा, पुझे निगलेगा तो मैं उसका पेट चीरकर निकलूँगा १०५, आना का उत्तर देना कि जिममे बीमलदेवजी का मन मैन हो गया १०५, दानव का आना से पूछना कि तू क्यों राज अरत्त है १०६, आना का वीसलदेवजी दानव को उत्तर दे कहना १०६, बूढ़ा दानव का प्रमत्त होकर आना को अजमेर का राज देना १०६, बूढ़ा का नेम ऋषि के उद्देश से गंगा की ओर जाते हुए दिल्ली पहुँचना १०७, बूढ़ा का हारिफ ऋषि से मिलना, अपनी पूर्व कथा कहना और तीन सौ अस्मी वर्ष महातप करके ऋषि उपदेश ग्रहण करना १०७, अनंगपाल राजा का दिल्ली बसाना १०९, अनंगपाल की सुता का निगमबोध काण्डिदी तट पर गौरी पूजने जाना १०९, अनंगपाल की सुता का बूढ़ा को पूजना और उसका कारण पूछना १०९, अनंगपाल की सुता का बूढ़ा को वर चाहने को पूजने का कहना ११०, बूढ़ा का राज-त्रियों की सेवा से संतुष्ट होना ११०, बूढ़ा का वर देकर काशी की उड़ जाना ११०, बूढ़ा का फिर जन्म लेना और उसका वृत्तान्त चंद्र का वर्णन करना ११०। बूढ़ा का वर देना और काशी में यज्ञकर तन त्यागना ११०, बूढ़ा के दानव शरीर का मान और स्वरूप वर्णन ११०, बूढ़ा का दिल्ली में पाषाण रूप हो जाना और स्त्रियों का उसे पूजना १११, बूढ़ा का अनंगपाल की सुता को वीर पुत्र होने का वर देना १११, बूढ़ा का वर देकर काशी जाना, वहाँ दानव-योनि से मुक्त हो अबतार लेना-सोमेतर के परिग्रह के प्रबंध के लिये क्षत्रियों का उत्पन्न होना-जिनमें से बीस अजमेर में और अन्य अन्यत्र हुए सोमेस के पुत्र पृथ्वीराज हुए ११२, पृथ्वीराजजी के परिग्रह के सामंतों के नाम और जन्म स्थानादि का वर्णन ११२, आना राजा का उजड़ी हुई अजमेर को फिर बसाकर राज करना ११६, जैसिहजी का गद्दी पर विराज राज करना ११६, आनन्दमेवजी का राज करना ११६, सोमेश्वरजी का सिंहासन

पर विराज राज करना ११६, सोमेश्वर जी की शूरता का संक्षिप्त वर्णन ११७, दिल्ली के राजा अनंगपाल जी पर कमधुज्ज का चढ़ना ११८, कमधुज्ज की चढ़ाई सुन अनंग का कालिंदी उत्तर मुकाम करना ११८, कमधुज्ज की चढ़ाई सुन सोमेश का अनंग की सहायता को दिल्ली जाना और वहाँ पहुँच अनंगपालजी से एकान्त में मंत्रणा करना ११८, अनंग की बात सुन सोमेश का रोस में आकर लड़ने को तैयार होना १२०, दोनों राजाओं का डेरों पर जाना और पिछला रात को युद्धारंभ होना १२०, सोमेश की सहायता से अनंग की विजयपालजी के साथ लड़ाई १२१, सोमेश्वरजी का दिल्ली में बड़ा साहस करना १२६, कमधुज्ज का पराजित हो घर जाना और सोमेश का अजमेर को चलना १२६, सोमेश्वरजी का अजमेर आना और वहाँ बड़ा उत्सव होना १२७, पृथ्वीराजजी की कथा का आरंभ करना १२७, सोमेश्वरजी का तेज बल से तपना १२८, अनंगपालजी का अपनी दो पुत्रियों में से सुन्दरी विजयपालजी को और कमला सोमेश्वरजी को प्रदान करना १२८, जिस दिन सोमेश का विवाह हुआ उस दिन क्या क्या हुआ १२९, सोमेश्वरजी की रानी के गर्भ रहना और उसका प्रतिदिन बढ़ना १२९, सोमेश्वरजी की तूँझरि रानी का पृथ्वीराजजी को जनना १२९, सोमेशजी के प्रथम पुत्र का बूँडा के वर से होना स्मरण कर गंधर्वादि का प्रसन्न होना और उत्सव मनाना १२९, जिस दिन पृथ्वीराजजी का जन्म हुआ उस दिन देवानियों में क्या क्या हुआ १३०, अनंगपालजी का अपनी पुत्री के पुत्र को देखना और उसका करना १३१, पृथ्वीराजजी का जन्म होना सुन कर सोमेशजी का उत्सव करना १३१, सोमेशजी का पृथ्वीराजजी को अपने घर लाने को कहना १३२, सोमेशजी का पृथ्वीराजजी को अजमेर ले आना १३२, पृथ्वीराजजी का जन्म संवत् और उनके प्राकट्य का हेतु १३०, पृथ्वीराजजी के शत्रु की संज्ञा का सूत्रस्य कवि का वाक्य १३२, सोमेश्वरजी के अपूर्व तप से पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए १४१, सोमेश्वरजी का राव (वेन) को बंधाई देना १४१, पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुणों का वर्णन १४२, सोमेशजी को पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुण सुनकर हर्ष और शोक होना १४२, विक्रम के मद्दुष पृथ्वीराजजी हुए कि जिन की बुद्धि का वर्णन चंद करता है १४२, पृथ्वीराजजी के जन्मसमय के ब्रह्मों की स्थिति १४२, सोमेश्वरजी का दरबार में बैठ ज्योतिषियों से पृथ्वीराजजी की जन्मपत्री का फल पूछना और पंडितों का फल वर्णन करना १४२, पृथ्वीराजजी के जन्म होने पर क्या क्या आश्चर्यदायक बातें हुईं १४७, पृथ्वीराजजी की बाल अवस्था के चरित्रों का वर्णन १४८, पृथ्वीराजजी का गुरु राम से सब प्रकार की विद्या सीखना १४९, पृथ्वीराजजी के बलीय लक्षणों का वर्णन १५१, एक दिन रात्रि को चंद की स्त्री का रस में आकर पृथ्वीराजजी

की भाँति से अंत तक कीर्ति वर्णन करने के लिये चंद्र में कहना १५४, चंद्र की स्त्री का उमसे पूछना कि कौन दानव, मानव और नृप कीर्ति करते योग्य है १५४, चंद्र का अपनी स्त्री को गूढ़ उपलक्षों के द्वारा उत्तर दे कहना कि केवल हरि की कीर्ति करने योग्य है क्योंकि उमकी भक्ति के बिना मुक्ति नहीं है १५४, चंद्र की स्त्री का उमसे कहना कि चित्रनेवाले को चित्र कि जिनमें तू दुस्तर के पार उतरे-चहुव नकी कीर्ति चित्रने से वह क्या रंजंगा १५५, चंद्र का अपनी स्त्री में कहना कि मैं चहुभ्रान का ऋण उतारता हूँ १५५, चंद्र की स्त्री का कहना कि राजा को ऋण देना है तो गोविन्द को क्यों नहीं सुमरता १५५, चंद्र का उत्तर देना कि मैं कमलामन को देखकर अकुलाया हूँ, केवल भक्ति मिलव करनेवाली है १५६, तथा चंद्र का कहना कि संसार में जो कुछ और सर्वश्यासी है वह कमलामन ही है उसी की उरमा पर मैं पृथ्वीराजजी की कीर्ति वर्णन करना हूँ १५६, चंद्र की स्त्री उसे कहती है कि ब्रह्म को ब्रह्म में देख जो उमे देखता है उसे यह शिष्यता है, नर की कीर्ति मत गा, क्योंकि उससे और कोई बलवंत नहीं है १५६, चंद्र का अपनी स्त्री को उत्तर दे कहना कि अंग प्रा में हरि-रूप-रम है १५७, चंद्र की स्त्री का उमसे कहना कि अह्न अह्न में प्रसर रस वर्णन कर दिखानो १५७, चंद्र का उत्तर दे कहना कि कान दे मुझ में वर्णन कर दिखाना हूँ १५७, उपसंहारिणी टिप्पणी १५०-१८० ।

[समय २] अथ दसम लिख्यते

[पृष्ठ १८१-२५८]

हरि ह्य का मंगलाचरण १ १, दशारजार का नाम स्मरण १८३, दशावतार की स्तुति १८१, मच्छात्रतार की कथा १८६, बच्छात्रतार की कथा १८९, वाग्द प्रवतार की कथा १९४, वृषिह अवतार की कथा १९७, वामनादतार की कथा २०५, परशुरामावतार की कथा २०८, रामावतार की कथा २१८, वृषावतार की कथा २२७, बौद्धावतार की कथा २५६, कल्कि अवतार की कथा २५७, उपसंहार का कथन २५८ ।

[समय ३] अथ दिल्ली किल्ली कथा लिख्यते

[पृष्ठ २५९-२७८]

चंद्र की अपनी स्त्री के प्रति उक्ति कि विघना ने दिल्ली सोमेरमन्द के समने को निर्माण को दी २५९, चंद्र का अपनी स्त्री को कहना कि अनंगपाल की पुत्री को पुत्र उत्पन्न होने से दिल्ली की पूर्व कथा का प्रसंग प्राप्त हुआ है

२५९, बालकपन में पृथ्वीराज का दिल्ली प्राप्त करने का स्वप्न देखना २५९, पृथ्वीराज की माता का उससे स्वप्न का वृत्तान्त पूछना २६०, पृथ्वीराज का माता का उत्तर दे स्वप्न का वृत्तान्त कहना २६०, पृथ्वीराज की माता का स्वप्न का वृत्तान्त सुन अद्भुत रम में रंजित होना २६१, उसका ज्योतिषियों को बुला स्वप्न का सत्यफल पूछना २६१, ज्योतिषियों का उत्तर दे कहना कि पृथ्वीराज दिल्ली का राजा होगा २६१, ज्योतिषियों को विदा कर माता और पुत्र का एक गृह में जा बैठना २६१, अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र के आगे दिल्ली की पहिली किल्ली की पूर्वकथा का कहना और राजा कल्हन का वनक्रीडा करते सुमा और स्वान के चरित्र से भूमि का वीरत्व देखना २६१, उस वीरभूमि में व्याम का कीली गाड़ना २६२, वहा कल्हन का कल्हनपुर बसा कर राज करना और फिर उसके कितनीक पीढी पीछे अनंगपाल का होना २६२, इतनी कथा सुनकर राव (पृथ्वीराज) के मन में अचरज हुआ २६२, विपरीत समय का आना देखकर सकल मभा का शंकित होना २६२, अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र (पृथ्वीराज) के आगे अपने पिता के फिर से दिल्ली बसाने के लिए पाषाण और किल्ली गाड़ने की कथा का कहना २६२, व्याम का कहना कि पाच घड़ी तक पाषाण को हाथ न लगाने से वह शेष के मिर पर दूढ़ हो जायगा परन्तु राजा का उसे अनर्थ कर मानना २६३, साठ अगुठ की कीली गाड़ना अर्थात् शंक्रुपात कर्म करना २६३, मंत्र के वरजने पर भी उस कीली का उखाड़ डालना २६४, पाषाण के उखाड़तेही रुधिर की धार चलना और आश्चर्य्य होना २६४, पाषाण का उखाड़ लेना सुन व्याम का दुःखन हो राजा के पाम आना २६४, अनंगपाल का पश्चाताप करना और व्यास का आगम कहना २६४, व्यास का अनंगपाल को खेद न करने का उपदेश करना २६५, अनंगपाल के पीछे जो जो राजा दिल्ली में होंगे उनके विषय में व्यास का भविष्य कथन करना २६६, तुंगरो का नाश और चौहानों का राज्य होना २६६, चौहानों के पीछ मुसल्मान और उनके पीछे फिर हिन्दुओं का राज्य होगा २६६, फिर मेवातपति सं० १६७७ में दिल्ली जीत लेंगे २६६, व्यास का कहा हुआ भविष्य नहीं टरेगा २६७, माता का दान और होम करना २६७, मातुल का अपने मन में मोह करना २६८, पृथ्वीराजका स्वप्नफल सुन आनन्द में फूला न समाना २६८, स्वप्नफल सुनकर पृथ्वीराज की सर्वेश्व वृद्धि कैसे होने लगी २६९, पृथ्वीराज का अजित अवनार होना २७०, लोहाना का गीस में से कूदना और अजानवाह नाम और जागीर पाना २७०, दिल्ली किल्ली कथा का उपसंहार २७१, उपसंहारिणी टिप्पण २७२-२७८ ।

[समय ४] अथ लोहानो ब्राजान बाहु समय लिख्यते

[पृष्ठ २७९-२८३]

पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को बत्तीस हाथ ऊंची गोप में कूदने की उत्तेजना देना २०९, लोहाने के कूदने की प्रशंसा २८०, पृथ्वीराज का दौड़ कर लोहाना के पास जाना और उसे हिये लगाना २८०, उसे भाप उठाकर आने घर के जाना और इलाज करना २८०, हकीमों का लोहाना को दवा के लिये ले जाना और नवें दिन उसका अच्छा हो कर पृथ्वीराज के पास आना २८०, पृथ्वीराज का प्रसन्न हो कर लोहाना को मालियर, रणथम्भौर, उड्डा आदि पांच हजार गांव देना २८०, आजानुगद्गु का आना और पृथ्वीराज का हाथी घोड़े आदि देना २८१, लोहाना के वीरत्व का वर्णन २८२, लोहाना का पांच हजार मेना लेकर ओडछा के राजा जमवन्त पर चढ़ाई करना २८२, ओडछा पर चढ़ाई की शोभा का वर्णन २८२, ओडछा के राजा जमवन्त का सामना करने के लिये प्रम्भुन होना २८२, लड़ाई होना और लोहाना का जीतना २८३, लोहाना का गढ़ पर अधिकार कर लेना २८३

[समय ५] अथ कन्हपट्टी समय लिख्यते

[पृष्ठ २८४-३००]

पृथ्वीराज के भोग भीमग से वैर होने का कारण २८४, पृथ्वीराज के कुंभरगन का तपनेज वर्णन २८५, गुजरात के राजा भोरा भीम का तपनेज वर्णन २८५, उसके काका और चचेरे भाइयों की वीरता का वर्णन २८६, पाट बैठने पर प्रतापसी को गर्व होना २८६, प्रतापसी के देश उजाड़ने की पुकार भीमंग के पास होना २८६, भोरा भीम की लड़ाई २८७, उन मातों भाइयों का चरित्र होना २८८, पृथ्वीराज का उन चलचित्त मातों भाइयों को जागीर और मिररेपाव देना २८८, पृथ्वीराज का दरबार करके बैठना-उसमें प्रतापसी का आना और उसे मूख भरोडने पर कन्ह का मारना २८९, भाई के मारे जाने पर अरि सिंह का क्रोध करना और कन्ह चौहान पर बार करना २९०, पृथ्वीराज का महल में जाना और अरि सिहादि की लड़ाई का होना २९०, हरमिह का युद्ध २९१, नरसिह का युद्ध २९१, कैमास का युद्ध २९१, माधव खवास का युद्ध २९२, कन्ह का युद्ध २९२, चालुकों के मारे जाने से दरबार में कोलाहल होना २९२, साक्ष हो गई परन्तु लड़ाई न रुकी २९५, कन्ह चौहान का युद्ध जीतना २९६, प्रतापसिंह आदि के मारे जाने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का अप्रसन्न होना २९६, पृथ्वीराज की अप्रसन्नता सुनकर कन्ह चौहान का घर बैठ रहना, तीन दिन तक अजमेर में हरताल पड़ना २९७, सात दिन तक कन्ह के न आने पर

पृथ्वीराज का उनके घर मनाने को जाना और कहना कि संसार में यह बुराई हुई कि घर बुलाकर चालुक्यो को मार डाला २९७, कन्ह का कहना कि मेरे सामने दूसरा कौन सभा मे बैठकर मोछ पर ताव रख सकता है २९७, पृथ्वीराज का कहना कि तो आप आख मे पट्टी बांधे रहा कीजिए २८, पृथ्वीराज का अड़ाऊ पट्टी बनवा कर आने हाथ मे कन्ह के आख मे बांध देना २९८, पट्टी रात दिन बँधी रहती थी २९८, कन्ह चौहान की प्रशंसा २९९, चालुक्य राजा भीम का मरने भाइयो के मारे जाने का समाचार सुन कर बहुत दुखी होना २९९, भीम का पृथ्वीराज से भाइयो के पलटे मे लटवाई मागना ३००, पृथ्वीराज का उत्तर देना कि हम तयार है जब चाहे अओ ३००, भीम का चडाई के लिये तय्यार होना पर मरदाओ के कहने से वर्षा ऋतु भर ठहर जाना ३००, उपसंहार का अंगन ३०० ।

[समय ६] प्रथम आषटक वीर वरदान वर्णन समय निरूप्यते

[पृष्ठ ३०१-३०७]

पृथ्वीराज के कुरारपने के उपनेत्र का वर्णन ३०१ पृथ्वीराज की दिन यति का वर्णन ३०२, पृथ्वीराज का आषटक के लिये निकलना ३०२, अहेले कवि चन्द का जन मे भक्त जाना ३०३ एक आम के पेड के लिये एक ऋषि से उधवी भेंट होना ३०३ कद्विवन्द का ऋषि के पास जाकर पूचना कि आप कौन है ३०४, ऋषि का पूना कि तुम कौन हो इस बीट्ट मे वन मे कैसे आए ३०४, चन्द का अपना परिचय देना ३०४, जनी का प्रश्न होकर एक मंत्र बतलाना जिसके वाम मे वाहन वीर है ३०४, चन्द का मंत्र की परीक्षा करना और वीरो का पाण्ड होना ३०५, वीरो के रूप आदि का वर्णन ३०६, चन्द का वीरो को देख कर प्रश्न होना ३०७, चन्द का वीरो की पूना करना ३०८, चन्द का पृथ्वीराज के लिये मन्त्रमन मंत्र ग्रहण करना ३०८, क्षेत्रपालो (वीरो) का पूना कि हम लोगो का क्या बुनाया है ३०८, चन्द का यह उत्तर देना कि हमने पृथ्वीराज की मन्त्रमना के लिये आप लोगो को बुनाया है ३०८, चन्द का प्रार्थना करना कि जैसे आप राम रावण आदि की लडाई मे रक्षा करने आए ऐसी ही पृथ्वीराज को भी करना ३०९, वीरो का प्रश्न होकर कहना कि गार्ह पडे तब स्मरण करना ३०९, सैरव का एक वीर को आज्ञा देना कि पय वीरो का नाम बनला कर चन्द को पहिचनवा दो ३०९, मन्त्र वीरो का नाम गुण कथन ३०९, चन्द का बावनो वीर को पहिचान कर प्रणाम करके विदा करना और आप पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे बढ़ना ३१२, चन्द का उस जङ्गल का वर्णन करना जहाँ पृथ्वीराज आषटक खेलता है ३१२, पृथ्वीराज के शिकार का प्रशंसा ३१४, कन्ह

चौहान आदि सब सरदारों का आकर पृथ्वीराज से मिलना और कहना कि आज यही शिकार हो ३१६, पृथ्वीराज का शिकार से घर की ओर लौटना ३१६, गोठ (भोजन) के स्थान पर टहरना ३१८, चन्द बरदाई का आकर पृथ्वीराज से मिलना और पिछला सब वृत्तान्त एकांत में ले जाकर कहना ३१७, पृथ्वीराज का भोजन करना और फिर आगे बढ़ना ३१७, सब सरदारों को एक एक घोड़ा बांट दिया उमी पर सब चढ़ कर चले ३१७, कविचन्द को एक हाथी देना जो महा बलवान था ३१७, कवि चन्द का पृथ्वीराज की मनुषि करना ३१८, सब लोगों को अपने अपने घर निदा करना ३१८, वीरो के मिलने के समान्तर से पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ३१९, पृथ्वीराज की प्रशंसा ३१९, दूसरे दिन सबेरे पृथ्वीराज का उठना और निम्न वृत्त करना ३१९, महाकर दर गोदान, दम तोड़ा सोना और बहुत सा अन्न दान देना ३१९, मरुल से पृथ्वीराज का बिराजना और सरदारों का आना ३२०, वीरो के वश होने की बात से पृथ्वीराज का पेट फूलता है पर किसी में कह नहीं सकता ३२०, वैष्णव का पाप जोड़ना पूछना कि आपके मुख पर कुछ उन्माह दिखे देना है पर आप खुत्कर कहने लगे नहीं ३२०, पृथ्वीराज का चन्द के वीरो का वश करने के समान्तर कहना ३२१, सरदारों का उपहास करके कहना कि भाट, नट, चाणन ये सब आरत है इनकी बात सत्य नहीं माननी चाहिए ३२१, वैष्णव ने कहा कि चन्द को दोने ने वरदान दिया है वह सचमुच कोई अद्वन्द्व है ३२१, कन्हने कहा कि चन्द छूट गया था यह बात सच है इसी पर उरने यह बात प्रसन्न करने के लिये गर्दी है ३२१ पृथ्वीराज के मन में सन्देह हो जाता ३२२, इनने में चन्द का आकर आसीस देना ३२२, पृथ्वीराज का चन्द को पस बुलाकर वीरो की बात छेड़ना ३२२ पृथ्वीराज का चन्द की बटाई करके कहना कि हम लोगों की बड़ी अभिलाषा है सो आज वीरो का दर्शन करवाओ ३२२, कवि चन्द का मंत्र जपना और होम करना ३२२, वीरो का प्रगट होना ३२२, वीरो के शब्द से सामंती का डरकर सोचना कि तिनका काम इनको बुलाना ठीक नहीं हुआ ३२३, दो मन्त्र हाथी दर्बार के बाहर बाधे थे वर वीरो का भयानक शब्द सुनकर चौके ३२३, दोनो हाथियों का तुड़कर लड जाना और दर्बार में रक्त-बन्धी मचना ३२४, सरदारों का बहुत उपाय करना पर हाथियों का रक्त में न आता ३२४, चन्द का बावन वीरो से प्रार्थना करना कि आप लोग इन हाथियों को छुड़ाकर बाध दीजिए ३२४, भीरव की आज्ञा से वीरो का हाथियों को जजीर में बांध देना ३२५, यह कौतुक देखकर सरदारों का आश्चर्य में होना और सबका दर्बार में आकर बैठना ३२५, पृथ्वीराज का सब वीरो को प्रणाम करना, चन्द का नाम ले लेकर सब वीरों को पहिचनवाना ३२५, चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि बिना कारण इनको बुलाया है इससे इनकी बलि दो पृथ्वीराज का

बावन घड़ा मदिरा बावन बकरे मंगाकर बलि देना और भैरव आदि की पूजा करना ३२५, बीरों का प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहना कि बर मांगो सो हम दें और अब हमको बिदा करो ३२६, पृथ्वीराज की ओर से चन्द का कहना कि लड़ाई के समय हमारी सहायता कीजिएगा ३२६, भैरव वा चन्द को बुलाकर कहना कि जब तुम्हें टेढ़ा समय आवे तब हमको याद करना ३२६, बचन देकर बीरों का बिदा होना, मरदारों का चन्द की बात पर प्रतीत धरना और पृथ्वीराज का चन्द पर अधिक प्रेम बढ़ना ३२७, पृथ्वीराज का चन्द से कहना कि सब मरदारों को मन्त्र बनना दो, चन्द का सबको मन्त्र बतलाना ३२७, चन्द को बीस गाँव और एक घोडा पृथ्वीराज ने दिया ३२७ ।

[समय ७] अथ नाहर राय कथा वर्णन लिख्यते

[पृष्ठ ३२८-३६१]

सोमेश्वर देव का शिवरात्रि का व्रत जागरण करके मोने की तुला दान करना और उसे बांट देना ३२८, शिव जी की स्तुति करना ३२९, शिव जी की स्तुति करके सोमेश्वर देव वा अपने कुमार के विवाह के लिये नाहर राय के पाम दूत भेजना ३३०, शामदामादि से निपुण दूत का पत्र दरमाना ३३०, कवि का मनीचरी दृष्टि के योग पर ने भविष्य में बँर दोष होने का कथन करना ३३०, कवि का कहना कि स्त्री के कारण से बँर दौष आगे रामादि बड़े बड़ों को हो चुका है ३३०, कामधेनु का चरित्र ३३१, प्रातः समय जगते ही दूत का पत्र पढ़ना ३३१, उम पत्र में बीर रूप देवस्थान द्विगुलाज के प्रभाव से पृथ्वीराज के बलवान होने और नाहरराय के बल प्रताप का वर्णन था ३३१, पट्टन में चौलुक्य भीमदेव, आवू पर जैन (मल्ल ?) पंवार, मेवाड में ममरभिद, दिल्ली में अनङ्गाज जैसे बलवानों में मण्डोवर में नाहरराय के राज्य करने का वर्णन ३३२, पृथ्वीराज का आठ वर्ष की अवस्था में दिल्ली ननिहाल में आना, दिल्लीश अनंगपाल के अधीन राजाओं का वर्णन ३३३, मण्डोवर के नाहर राय का दिल्लीश्वर की भेट को दिल्ली आना, पृथ्वीराज का रूप देखकर प्रसन्न होना और माला पहिरा कर कहना कि जब पृथ्वीराज सोलह वर्ष का होगा तब मैं अपनी कन्या इसको विवाह दूँगा ३३३, नाहर राय का मत पलट जाना अर्थात् कन्या देना अस्वीकार करना ३३३, नाहर राय का उत्तर लिखना कि तुम्हारा कुल आदि हमारे योग्य नहीं है ३३४, दूत का यह पत्र लाकर पृथ्वीराज के हाथ में देना ३३४, पृथ्वीराज का क्रोध करना, सोमेश्वरदेव का समझना ३३४, मरदारों का पत्र मुनकर क्रोध करना ३३५, पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये सजना ३३५, मेना का वर्णन ३३५, विता की आज्ञा लेकर अष्टमी को पृथ्वीराज का

लड़ाई के लिए यात्रा करना ३३७, नाहर राय के दूतों का पृथ्वीराज की चढ़ाई और सेनाबल का समाचार नाहर राय को देना ३३७, पृथ्वीराज का प्रताप सुनकर नाहरराय का चौकन्ना होना ३३८, अपने सरदारों से नाहर राय का कहना कि अब क्या करना चाहिए पहिले चौहानों से हम से और बान थी पर अब तो बिगड़ गई ३३८, सरदारों का कहना कि लड़ना चाहिए ३३९, नाहर राय का कहना कि आगे से बढ़कर एक बारगी उन पर चढ़ाई करना चाहिए नहीं तो जीत न होगी ३३९, नाहर राय का सेना मजना ३३९, पृथ्वीराज की सेना की प्रशंसा ३३९, पृथ्वीराज का आगे बढ़कर लड़ने के लिये जोबनराय को आज्ञा देना ३४०, जोबनराय का उत्तर दे कहना कि नाहरराय का पथ बांधा सो वह रणभूमि को तिरछी छोड़ कहीं चला गया ३४०, सबेरे नाहरराय के भग जाने पर सांझ को पृथ्वीराज का पहुँचना और मकी खोज करना ३४०, चालुक के प्रधान (दीवान) के घर नाहरराय का पता मिटना और सामन्त सहित पृथ्वीराज का नदी उतरना ३४१, सुमट सहित सेना में पृथ्वीराज कैसा शोभता है ३४१, पृथ्वीराज के ग्राम पहुँचने का समाचार नाहरराय का सुनना और सेना इकट्ठी करना ३४१, घाटी पर पर्वतराय का रास्ता रोने के लिये भेजना ३४१, पर्वतराय का घाटी रोकना ३४२, पर्वतराय कैसे घाटी रोक कर बैठा है ३४२, घाटी रुकने का समाचार पृथ्वीराज को मिलना ३४२, क्रोध करके पृथ्वीराज का पर्वतराय से लड़ने की कन्ह चौहान को भेजना ३४३, कन्ह का पर्वत से युद्ध और उसमें पर्वतराय का मारा जाना ३४३, पर्वत के मारे जाने पर नाहरराय का स्वयं दूट पड़ना ३४४, पृथ्वीराज का भी चढ़ चलना ३४४, इधर पृथ्वीराज इधर नाहरराय का सम्मुख युद्ध ३४५, उसमें पृथ्वीराज का नाहरराय के घोड़े को मार डालना ३४६, रत्नवीर का सम्मुख हो पृथ्वीराज से जुद्ध करना ३४६, मोहन परिहार और पवार सम्मुख हो लड़ना ३४६, चामंड का युद्ध ३४७, नाहर ? से नाहरराय का लड़ना ३४८, बलराय का खेन में मरेना ३४८, घोर युद्ध वर्णन ३४९, लोहाना आजानु बाहु के युद्ध का वर्णन ३५१, कन्ह चौहान के युद्ध का वर्णन ३५४, नाहरराय का भागना और पृथ्वीराज का पीछा करना ३५६, पट्टन में पृथ्वीराज का राज्याभिषेक होना ३५७, नाहरराय का हाकर अपनी कन्या के विवाह का लग्न लिखवाकर भेजना ३५८, पृथ्वीराज का ब्याहने को जाना ३५९, पृथ्वीराज का तोरन की बंदना करना ३५९, पृथ्वीराज का नाहरराय की कन्या से विवाह होना ३५९, नाहरराय का कहना कि आपके काम में सीस देने के सिवाय और कुछ देने के योग्य हम नहीं हैं ३५९, नाहरराय की कन्या का गुण और रूप वर्णन ३६०, पृथ्वीराज का जीत कर स्त्री के साथ लौटना ३६०, पृथ्वीराज का ग्यारह डोलों सहित होना ३६०, पृथ्वीराज का विवाह कर घर पहुँचना ३६१, पृथ्वीराज की प्रशंसा ३६१ ।

[समय ८] अथ मेवाती मुगल कथा लिख्यते

[पृष्ठ ३६२-३७४]

सोमेश्वर के मंडोवर जीतने और लूट लो सरखाओ में बांट कर प्रबल प्रनाश के साथ राज्य करने का वर्णन ३६२, सोमेश्वर के गुणों और उसकी गुणग्राहकता का वर्णन ३६२, सोमेश्वर का मेवात के राजा (मुद्गलराय) के पास कर लेने के लिये दूत भेजना ३६२, मुद्गल का गडपत्र पाकर क्रोध प्रगट करके देना और सोमेश्वर का पत्रोत्तर पाकर क्रोध करना और उस पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना ३६३, उज्जयिणियों से मुहूर्त दिसाकर पुष्य नक्षत्र में चढ़ाई के लिये निकलना ३६४, यात्रा के समय उच्छे शशुन मिले ३६४, पृथ्वीराज को राज्य में छोड़कर सोमेश्वर का मेवात पर चढ़ाई करना और उसकी सूचना पत्र द्वारा मुद्गलराय को दे कइना कि लडो वा दंड दे प्राप्ति हो ३६५, मुद्गलराय का पत्रोत्तर देकर सोमेश्वर और पृथ्वीराज दोनों में लड़ाई पांगमा ३६५, सोमेश्वर का भयने लडके के वध के विषय में संजय कइना ३६५, और पृथ्वीराज के पास मुद्गलराय के पत्र का सदेश भेजना और उसका रोम में आकर विना के पास रण में आ विजना ३६५, पृथ्वीराज का विना के पास पहुंच कर मंत्र लेना को सोने हुए पाना और सोमेस का उममे न बोलना ३६६, उमका विना को विद्रो में जगु की सेना को देवभाल कर उत्थापित होना ३६६, और उमका जगु की सेना पर झरटना ३६६, पृथ्वीराज और मुद्गलराय का युद्ध ३६७, ऐसे पृथ्वीराज के अन्त मुद्गल के योद्धाओं से लडे ३६७, कन्हू का मेवातियों से युद्ध ३६७, कैमाम का पठान गानीदखा से युद्ध ३६८, कुरंभ से राम पार का युद्ध ३६८, दाने में पृथ्वीराज का रण के बीच अचानक जा पहुंचना और घोर युद्ध का होना ३६८, मुद्गलराय की फौज का विनार विनार होना और उमका पकटा जाना ३६९, कवि का सोमेश्वर की सेना और घोड़े हाथी आदि ही यज्ञदि अनेक उपमाओं के साथ प्रशंसा करना ३६९, रण में मरे और घायल कैंने पड़े दीखने और हीन कौन योद्धा किम किम में घायल हुए और मारे गए ३७१, जयरायकर का उमाओं के मर्तिन वर्णन ३७३, पृथ्वीराज की विजय ३७४ ।

[समय ९] अथ हुसेन कथा लिख्यते

[पृष्ठ ३७५-४०९]

संभरिनरेश (पृथ्वीराज) और गजनी के शाह (शाहबुद्दीन), से कैसे बैर हुआ इसका वर्णन ३७५, शाहबुद्दीन के भाई मीर हुसेन के गुणों और उसकी वीरता की प्रशंसा ३७५, शाहबुद्दीन की पातुर चित्ररेखा की प्रशंसा, शाहबुद्दीन

का उस पर प्रेम, मीर हुसैन का भी उस पर श्राप क्त होना और चित्रगेषा का भी मीर को वापस देना ३७१, शाह का यह समाचार सुनकर क्रोध करना ३७६, हुसैन का शाह की बात न मानना और शाह का आज्ञा देना कि या तो मेरा राज्य छोड़ दो नहीं तो मारे जाओगे ३७६, मीर हुसैन का देश छोड़कर परिवार आदि के साथ नागौर की ओर आना ३७६, मीर हुसैन का पृथ्वीराज के यहाँ आना ३७७, मीर हुसैन को आदर के साथ पृथ्वीराज का बुझाना, और मीर का आकर सजाम करना ३७७, पृथ्वीराज का सिवाय सेना और मीर हुसैन का सुन्दरदाम को पृथ्वीराज के पाम भेजना ३७७, सुन्दर छाया का म्यान देखकर मीर का डेरा डालना, ३७८, हरम (गिरी) का डेरा पीछे की ओर हटना ३७८, सुन्दरदाम का पृथ्वीराज के पास आना, पृथ्वीराज का मीर का बुझाने-समाचार पूछना और उसका सब हाल जानना ३७८, मन्त्री, कैमास, चद, पुडौर आदि को बुलाकर पृथ्वीराज का पूछना कि क्या करे क्योंकि दोनों तरह विरति है एक शाह का कोप, दूसरे, शरण पाए हो न रखना धर्मिकद्वैत है ३७८, चन्द का बचाव देना कि जैसे शरणगत होने पर किष्णु भक्त ने मन्मथ का घर उर पृथ्वी को अपनी सीमा पर रक्षित था वैसी भी कीर्ति ३७८, जैसे गिरी गले में विष धारण किए हैं वैसे ही मीर को श्राप भी रक्षित कर चन्द ने कहा ३७९, सुन्दरदाम से पूछना कि अब सब सिवाय तो सुख से है और शाह से भगडा होने की बात क्या सच है ३७९, सुन्दरदाम का कहना कि हर की ऐसी एक पातुर है बुद्धि के पाम थी उसको लेकर हुसैन यहाँ चौहान की शरण में आया है ३७९, चन्द का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना कि जैसे मोरभय के बहा उर्जुन ब्रह्मण बन कर शरण गया, भगवान ने सिंह बन कर काम भागा, शरणगता द्रौपदी का भीर बहाया, वैसे ही तुमने शरणगत हो रक्षकर शत्रु भय की रक्षा की, तुम्हारे माना पिता धर है ३७९, शाहहूँ का पृथ्वीराज में आना, पृथ्वीराज का आदर देना ३८०, हुसैन को दक्षिण की ओर नागौर की जमीर देना ३८०, पृथ्वीराज का हुसैन को घाड़े हाथी आदि देना और दोनों का परस्पर प्रेम बढ़ना ३८०, शहाबुद्दीन का चर दून अजमेर भेजना ३८१, पृथ्वीराज का हुसैन को कैवल, हामी, हिसार का पंगना देना और शिकार में साथ चलना, यह सब समाचार दूतों का शहाबुद्दीन से कहना ३८१, शहाबुद्दीन का क्रोध करना और अरब खा को पृथ्वीराज के पाम भेजना कि भला शत्रु तो हुसैन को निकाल दो ३८१, अरब खा से कहना कि पढ़े हुसैन के पाम जाना, जो वह पातुर को दे दे तो हम क्षमा कर देंगे, जो वह गर्व करके न माने तो पृथ्वीराज के पाम जाकर हमारा पत्र देकर समझाना ३८२, अरब खा का हुसैन से मित्रकर समझाना, हुसैन का न मानना ३८२, अरब खा का पृथ्वीराज के पास जाना ३८२, पृथ्वीराज का सुकतान की कुशल पूछना ३८३, अरब खा का कहना कि हुसैन खां को निकाल देने के लिये सुलतान ने कहा है ३८३, शहाबुद्दीन

का संदेसा सुनकर पृथ्वीराज का मुख लाल हो गया, भीहैं चढ़ गई ३८३, कैमास ने ढपट कर कहा कि आर्य लोगों का धर्म सुलतान नहीं जानता इससे ऐसा कहता है, हुसैन पृथ्वीराज के शरणागत है, क्षत्री का धर्म उसे छोड़ने का नहीं है ३८३, कन्ह चौहान, सूरसिंह, गोयंदराज, चन्द, पुंडीर आदि का भी यही कहना और सुलतान से लड़ने को हम प्रस्तुत हैं यह कहना ३८४, अरब खां का अपना निरादर होता देख उठ आना और गजनी को कूच करना तथा शहाबुद्दीन से सब समाचार कहना ३८४, दरबार करके शहाबुद्दीन का तातार खां, अरब खां, मीर जमाम कमाम खुरासा खां रहन महन खां, रुस्तम खां, हाजी खा, गाजी खां जम्मन खा, गजनी खां, मुहब्बत खां, मीर खां, आदि सरदारों को बुला कर सलाह करना ३८४, तातार खां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज पर चढ़ाई करनी चाहिए ३८५, खुरासान खा का तातार खां से कहना कि उमके बल को भी विचार लो, जल्दी न करो ३८५, अरब खां का कहना कि उमका बल अतुल है, तुम लोगो ने देखा नहीं है इमने ऐसा कहने हो ३८५, शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना ३८५, अरब खा का पृथ्वीराज के बल की प्रशंसा करना ३८६, तातार खां का अरब खां की बात का हँसी में उडा देना, अरब खा का कहना कि अपनी आंख से न देखने से ऐसा बहते हो ३८६, शाह का क्रोध करके तातार खां को चढ़ाई के लिये प्रस्तुत होने की आज्ञा देना ३८६, शाह के जी में रात दिन चौहान की चिन्ता लगी रहना ३८७, सेना के साथ चढ़ाई के लिये शाह का तैयार होना ३८७, अशकुन होना ३८७, अरब खा का कहना कि आज ठहर जाइए, शकुन अच्छा नहीं है ३८७, सुलतान का कहना कि काफिर चौहान को जीतना कौन बड़ी बात है जो इतना विचार करते हो ३८७, शाह का चौहान की ओर जाना और दूतों का यह समाचार नागौर में हुसैन को देना ३८८, पृथ्वीराज का चढ़ाई का समाचार सुनकर सरदारों को बुलाकर मिघ तक शाह के पहुँचने का हाल कहना ३८८, लड़ने के लिये प्रस्तुत होने का मव का मत होना ३८८, युद्ध की तैयारी होना ३८९, गुरुगम ब्राह्मण का आकर आशीर्वाद देना, बहुत कुछ दान कराना और वेद मंत्र से तिलक करना ३८९, भगवान का स्मरण कर यात्रा करना ३८९, हुसैन का भी अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज से जा मिलना ३९०, दम कोम पर डेरा देना ३९०, दूतों का सुलतान को पृथ्वीराज के चढ़ आने का समाचार देना ३९०, सुलतान का चढ़ाई के लिये घूमघाम में चलना ३९०, सुलतान की चढ़ाई का वर्षान ३९०, साहंड अचलपुर में सुलतान का डेरा डालना ३९१, कैमास का यह समाचार घड़ी रात रहे पृथ्वीराज को देना ३९१, पृथ्वीराज का उसी समय चढ़ाई करने की तैयार होना ३९२, चढ़ाई की तैयारी, भगवत् स्मरण तथा दानदेना ३९२, पृथ्वीराज का सबार होना ३९२, पृथ्वीराज का मीरहुसैन के डेरे में आना,

मीरहुसैन का अपने साथियों के साथ तैयार होकर पृथ्वीराज को मलाम करना ३९३, पृथ्वीराज और मीरहुसैन के मिलकर चलने का वर्णन ३९३, मुल्तान के चरों का सुल्तान को जाकर समाचार देना कि शत्रु की सेना एक योजन पर आ गई ३९४, सुल्तान की सेना की तैयारी का वर्णन ३९४, मारुडि का बाईं ओर सजकर सुल्तान का खड़ा होना ३९५, मुल्तान की सेना देखकर पृथ्वीराज का मीर हुसैन की ओर देखना, हुसैन का अपने मरदारों के साथ तैयार होकर पृथ्वीराज को मलाम करना ३९५, मीर हुसैन का कहना कि आपने हमारे लिये कष्ट उठाया है तो हमारा मिर भी आपके लिये तैयार है, देखिए कैसी लड़ाई लड़ता हूँ। पृथ्वीराज का कहना कि इसमें आश्चर्य क्या है मैं भी आज तुम्हें गजनी का सुल्तान बनाना हूँ ३९६, मीर हुसैन का मलाम करके बाईं ओर सेना मजना, पृथ्वीराज का अपने मरदारों को आज्ञा देना कि तुम लोग मीर हुसैन की सहायता करो और सामंतों का आज्ञापालन करना ३९६, कैमाम आदि सामंतों का चार सहस्र सेना के साथ पृथ्वीराज के दक्षिण ओर सेना मजना ३९७, पृथ्वीराज के आगे की ओर गोहन्द्रगय आदि मरदारों का पांच सहस्र सेना के साथ खड़े होना ३९७, दोनों सेनाओं का सामना होना और निशान बज उठना ३९७, हुसैन और तानार खा की सेनाओं की लड़ाई होना अंत को तानार खा की फौज का भागना ३९८, खुरामान खा का आगे बढ़कर लड़ना ३९९, खुरामान खा की फौज का भागकर सुल्तान की फौज के साथ मिलना और कैमाम का चढ़ाई करना ४००, बाईं ओर जमान, दाहिनी ओर से कैमाम और सामने से पृथ्वीराज का चढ़ना ४००, युद्ध का वर्णन ४०१, पृथ्वीराज की सेना का बढ़ना और मंडलीक का मारा जाना ४०२, शहाबुद्दीन की सेना का भड़कना और पृथ्वीराज की सेना का पीछा करना ४०३, घोर युद्ध का वर्णन ४०३, पृथ्वीराज के सामंतों का शहाबुद्दीन का पीछा करना ४०४, सुल्तान का पकड़ा जाना, उमकी सेना का भागना और पृथ्वीराज की विजय ४०४, सूर्योदय से एक घड़ी पांच पल की लड़ाई आरम्भ हुई और चार घड़ी दिन रहे सुल्तान पकड़ा गया, बीस हजार मीर और सात हजार हाथी घोड़े मारे गए, हिन्दू तेरह सौ मरे, तीन कोस में लड़ाई हुई, सुल्तान को अपने डेरे में लाए ४०५, रणक्षेत्र में दंडकर पृथ्वीराज का मीर हुसैन की लाश निकलवाना ४०५, पानुरि का जीने जी हुसैन के साथ कन्न में गड़ जाना ४०५, पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को पांच दिन आशर के साथ रखकर तीन बेर मलाम कराके मीर हुसैन के बेटे गाजी को उनको सौंप कर यह प्रण करके कि अब हिन्दुओं पर न चढ़ूंगा, छोड़ना, शाह का गाजी को लेकर कुशल से गजनी पहुंचना ४०६, अमीरों का सुल्तान के जीते जागते लौटने पर बघाई देना और कुशल पूछना ४०६, उपसंहारिणी टिप्पणी ४०२-४०९।

[समय १०] अथ आषेटक चूक वर्णन लिख्यते

[पृष्ठ ४१०-४२०]

एक वर्ष बीत गया, परन्तु शहाबुद्दीन के हृदय में पृथ्वीराज का बैर सालता रहा ४१०, एक महीना पांच दिन गजनी में रह कर फिर हुसैन का पृथ्वीराज के पाम आप जाना ४१०, फिर पृथ्वीराज का आषेटक माड़ना और शहाबुद्दीन का चूक करने को आना ४१०, नीतिराव क्षत्रिय का शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज के आषेट का समाचार देना ४१०, आषेट का अच्छा अवसर पा कर शहाबुद्दीन का भेद लेने को दूत भोजना, दूत का समाचार देना, शाह का सरदारों को आज्ञा देना कि छिप कर पृथ्वीराज पर चढाई करो ४११, हाजी खां आदि का तयारी करना ४११, शहाबुद्दीन का आज्ञा देना कि इस बत का भेद लो कि कितनी सेना चौहान के साथ है क्योंकि बिना भेद कुछ काम नहीं बनता ४११, सब सरदारों का मन होना कि बिना घोखा दिए चौहानों को जीतना कठिन है ४१२, पृथ्वीराज का देखटके आनन्द से आषेट खेलना ४१३, पृथ्वीराज के आषेट का वर्णन ४१३. आठ हजार सेना और सरदारों के साथ शहाबुद्दीन का पट्टवन में छिपकर पहुंचना ४१३, सबेरे के समय चढाई करने का विचार करना ४१४, पांच सरदारों को साथ लेकर आषेट को पृथ्वीराज का निकलना ४१४, कवि चन्द का कहना कि हमे शहाबुद्दीन के आने का मन्देह है और खोज करने पर चागों ओर यवनों को पाना ४१४, शाह की ओर से आक्रमण आरम्भ होना ४१५, युद्धारम्भ युद्ध का वर्णन ४१५, पांच सरदारों का पृथ्वीराज की रक्षा में चागों ओर हो जाना और इन सभों का यवनों के बीच में घिर कर युद्ध करना ४१५, पृथ्वीराज का कमान मेंभाल कर यवन सरदारों को गिरना ४१६, पृथ्वीराज का तलवार लेकर यवनों का विनाश करना ४१६, सुलतान की ७५५ सेना का कट कर आगे गिरना ४१६, चालुका का घोर युद्ध करके वीरना के साथ मारा जाना ४१६, क्रोध करके पृथ्वीराज का तलवार से युद्ध करना, पृथ्वीराज की सब सेना का इकट्ठा हो जाना ४१७, सुलतान का बढ़कर लड़ना, दो घड़ी युद्ध होना ४१७, यवन सरदारों का मारा जाना पृथ्वीराज की विजय ४१८, हारकर शहाबुद्दीन का गजनी की ओर लौट जाना ४१८, चौहान की विजय पर चन्द कवि का जै जकार करना ४१८, उपमहाग्नी टिप्पण ४१९-४२० ।

[समय ११] अथ चित्ररेवा समयो लिख्यते

[पृष्ठ ४२१-४२६]

चित्ररेवा की उत्पत्ति पूछना ४२१, शहाबुद्दीन का अरब खां पर चढाई करने की इच्छा कर सरदारों से पूछना ४२१, अरब खां नवता नहीं है इसलिये उस पर

चढ़ाई होनी चाहिए यह आज्ञा दी ४२२, चढ़ाई की सेना की संख्या ४२२, सेना की धूम का वर्णन ४२२, शाह का निमुरति खां को अरब खां के पास भेजना कि चित्ररेखा को देकर पैर पर गिरी तो हम क्षमा कर दें ४२३, अरब खां का सादर आज्ञा मानना और चित्ररेखा को देना स्वीकार करना ४२३, निमुरति खां का अरब खां को शाबसी दे कहना कि तुमने शाह के बचन माने और हिन्दु धर्म को न मान कर म्लेच्छ कुल कर्म को धारण किया सो ठीक किया ४२३, शहाबुद्दीन का सेना समेत मजकर चलना ४२३, चलते समय शाह का चित्त चित्ररेखा में मत्त गयंद की भांति लगा हुआ था ४२४, सेना की शोभा का वर्णन ४२४, शाह की सेना की प्रबलता देखकर अरब का अना बग भंग होना कहना ४२५, अरब खां का आज्ञा मानकर चित्ररेखा को भेंट में देना ४२५, चित्ररेखा वेदया के रू का वर्णन ४२५, बिना युद्ध चित्ररेखा को लेकर गौरी का लौट आना ४२६, चित्ररेखा के साथ शाह के आदर और प्रेम का वर्णन ४२६, चित्ररेखा के सुलतान व वना करने का वर्णन ४२६, चित्ररेखा की कथा सुन कर कवि का आनंदित होना ४२६ ।

[समय १२] अथ भोलाराय समय लिखते

[पृष्ठ ४२७-४८४]

भोलाराय भीमदेव का बल कथन और राजा सलष को संभरि-राज (सोमेश्वर) की महायता का वर्णन ४२७, गृही का शुक से इंछिनी के विवाह की सविस्तर कथा पृच्छना ४२७, इधर चौहान तपता था उधर आबू का राजा सलष पंवार बड़ा प्रनापी था उमका वर्णन ४२७, सलष को एक बेटा जैन नाम का और मंदोदरी और इंछिनी नाम की दो बेटियां थी ४२७, बड़ी मंदोदरी का विवाह भीमदेव के साथ होना ४२८, भोजा भीमदेव के दल पराक्रम का वर्णन ४२८, भीमदेव के मंत्री अमर सिंह सेवरा का वर्णन ४२८, मंत्र बल से अमर सिंह का अमात्रम को चन्द्रमा उगाना, ब्राह्मणों का मिर मुंडा देना, दक्षिण और पश्चिम दिशा को जीतना ४२८, इंछिनी के रू की बड़ाई सुन भीम का उसपर आसक्त होना ४२९, आबू की ओर से आनेवालों के मुंह से इंछिनी की बड़ाई सुन-सुन जैन धर्मी भीमदेव भीतर ही भीतर कामानुर हो व्याकुल हुआ ४२९, देखने सुनने और स्वप्न में मिलने से कामान्ध होकर भीमदेव रात दिन इंछिनी के ध्यान में पागल सा हो गया ४२९, भीमदेव का राजा सलष के पास अपने प्रधान को पत्र देकर भेजना कि इंछिनी का विवाह मेरे साथ कर दो और जो पूर्व वाग्दान के अनुसार चौहान को दोगे तो तुम्हारा भला न होगा ४०, सलष के बेटे जैतसी की वीरता का वर्णन, भीमदेव के दूत का आबू पहुंच कर राजा का

सलष से मिलना ४३०, पंचार सलष की प्रशंसा ४३०, पंचार सलष पर चालुक्य भीमदेव का जंपना और पत्र में लिखना कि मंदोदरी दिया है अब इंच्छिनी को भी देओ नहीं तो भाबू की गद्दी से हाथ धोओगे ४३१, भीमदेव के प्रधान को पांच दिन तक आदर के साथ राजा सलष का रखना, छठें दिन दरबार में आ उसका पत्र और भेंट उपस्थित करना ४३१, सलष की बीरता की प्रशंसा और उम पर चालुक्य भीमदेव के कमर कसने का वर्णन ४३१, राजा सलष और उसके पुत्र जैतसी की गुणग्राहकता और उदारता का वर्णन ४३१, चालुक्य को मंदोदरी देकर नाता किया, परंतु भीमदेव ने इंच्छिनी के रूप पर मोहित हो अपने प्रधान को भेजा ४३२, सलष ने विचार किया उसे वह प्राण देकर भी न पलटंगा ४३२, भीमदेव का पत्र पढ़ कर जैतसी का क्रुद्ध होना ४३२, जैतसिंह का तलवार सभाल कर कहना कि भीमदेव का मन पाण्ड से आकर्षण आदि का मंत्र वश में करके बहुत बढ़ गया है पर उत्तर के क्षत्रियों से कभी वाम नहीं पड़ा है ४३२, जैतसी का कहना कि पाण्ड से अपना बल बढ़ाकर भीमदेव अपने को अमर समझता है यह उसकी भूल है ४३३, भीमदेव के प्रधान का भीमदेव के बल की बढ़ाई करके कहना कि वह पुगल गढ़, आबू, मंडोवर और अजमेर सब जीत लेगा ४३३, राजा सलष का उत्तर देना कि गोवर्धनधर श्रीकृष्ण हमारी सहायता करेंगे ४३३, ऐसे ही वाक्य जैतसी के भी कहने पर प्रधान का यह कह कर जाना कि सावधान रहना तुम पर हम राजा को लेकर आबेंगे ४३४, राजा सलष का अपने यहाँ तयारी करना और इंच्छिनी को विवाहने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना ४३४, भीमदेव का सलष पर चढ़ाई करने के लिये अपने सामंतों से सलाह और उन्हें उत्तेजित करना ४३५, चालुक्य और चौहान से जो विवाह का झगड़ा पड़ा है उसका वर्णन चन्द करता है ४३५, जैतसि का भीमदेव के संदेसे पर महाक्रोध प्रकाश करके पिता से कहना कि यह कभी न होना चाहिए ४३५, सबकी सलाह का यही होना कि चौहान के पास पत्र भेजा जाय ४३६, दूत का दिल्ली में जाना और पृथ्वीराज को लड़ाई के लिये प्रचारना ४३६, सलष का पत्र पढ़कर पृथ्वीराज का प्रमत्त होना ४३६, मंत्री को पृथ्वीराज की पांच हाथी, सौ घोड़े, पांच सौ रुपया आदि दिया और आप सलष की राजधानी की और गया, यह सुनकर भीमदेव क्रुद्ध गया ४३६, इंच्छिनी का पृथ्वीराज से व्याहा जाना सुनकर भीमदेव का सरदारों से सलाह करना ४३७, भीमदेव का सलष पर क्रोध प्रकाश करना और दिल्ली दूत भेजना कि उसे चहुआन कारण न रखवै ४३७, भीमदेव का चारों ओर मित्र राजाओं की सेना बुलाना और चढ़ाई की तयारी करना ४३७, आबू पर चढ़ाई की तयारी ४३७, भीमदेव की सेना के कूच की धूम का वर्णन ४३८, आबू की शोभा वर्णन ४३८, भीमदेव का वैदिक धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म मानना ४३८, अमर सिंह-सेवरा की सिद्धि का वर्णन ४३९, भीमदेव का

रात के समय कूच करना ४३९, सलष और भीम की सेना से घोर युद्ध ४४०, सलष का मारा जाना, उमकी वीरता की बड़ाई ४४०, भीमदेव का आबुगढ़ पर अधिकार करना ४४१, एक महीना पाच दिन आवू में रह कर भीमदेव का अपने राज्य को लौटना ४४१, अपने राज्य में आकर भीमदेव ने शहाबुद्दीन को पत्र लिखा कि आा मारडू आइए हग आग मिलकर पृथ्वीराज को जीतें, पत्र देकर मकवान को भेजा ४४१, मकवान से भीमदेव का कहना कि केवल इच्छिनी के ही कारण से मैंने सलष को मरुदुव स्वर्ग लोक को भेजा है ४४१, और मेरे मन का दुख तब दूर होगा जब चौदान पर चढ़ाई करूँ, मुलतान मुझ में मिलजाय, और दिल्ली का राज्य अपने हाथ से नष्ट करूँ ४४२, भीमदेव के कागद के समाचारों का मारोश ४४२, घोड़े, चमर, पशमीना आदि भेंट देकर शहाबुद्दीन के यहां भीमदेव का दूत भेजना ४४२, पत्र पढ़कर मुलतान ने कमान खींचकर कहा कि या तो मैं म्लेच्छों को मारूँगा या खुरसान रहूँगा ४४२, मुलतान ने कहा कि दान, खज्ज, विद्या और सम्पत्ति ये साझे में नहीं होते ४४२, पृथ्वी वीरभोग्या है भीमदेव मुझ में क्या शेखी मारना है मैं उसे भी मारूँगा ४४३, यह सुनकर सारंगदेव मकवाना का क्रोध करके भीमदेव की बड़ाई करना ४४३, शहाबुद्दीन का फिर कहना कि पहिले चौदान को मारूँगा पीछे भीमदेव चालुक को ४४३, मकवाना मुलतान की बात सुन बोला कि चालुक वा दल जब चलता है तो काल वापना है ४४३, चालुक्य के आगे जालंधर, वग, तिलंगी, कोंकन, कच्छ, पगोट मरहट्टे आदि कोई नहीं ठहर सकते ४४४, जिस भीमदेव ने बघेलों को जीता, आवू को तोडा और जादवों को डराया उमको जीतना सहज नहीं उमे ब्रह्मा ने अपने हाथ से बनाया है ४४४, सुनकर मुलतान की आंखे क्रोध से लाल हो गईं और वह उमको मारने पर उद्यत हुआ ४४४, वजीर ने समझाया कि दूत नहीं मारा जाता, उमम बडा अयश होगा ४४५, शहाबुद्दीन को महा क्रोध हुआ, एक सामंत ने वजीर से कहा कि तुम ठीक कहते हो पर यह कैसी गंवारों सी वान करना है ४४५, यह सुन मकवाना को क्रोध आ गया, उसने सामंत को एक हाथ माग कि गिर जुदा हो गया ४४५, इस पर ऐमा हाहाकार मच गया ४४५, मकवान का अपने चित्त में मुलतान के संदेमा न मानने पर विचार ४४६, इधर चालुक्य राय का अपनी सेना सजना ४४६, उधर शहाबुद्दीन ने तो अपने सामंत के मरने पर क्रोध कर मकवान को एक तीर मारा और मकवान ने हैजम हुनाब के पिर में एक तेग ऐसी मारी कि दोनों गिर गए ४४६, भीमदेव ने अपने दूत का मारा जाना सुन बड़ा क्रोध किया और गजनी पर चढ़ाई के लिये वह सेना मजने लगा ४४७, सेना सजने पर आग लगने से अशकुन होना ४४७, भीमदेव का प्रतिज्ञा करना कि जो खुरसान के

राज्य पर शाहाबुद्दीन रहे तो मेरा नाम नहीं ४४८, उधर शाहाबुद्दीन ने अपनी सेना सजी ४४८, मुलतान और चालुक के अपनी-अपनी सेना सजाने पर चहुवान का भी दिल्ली और नागौरादि में अपनी सेना सजाना ४४८, कैमास का मति उपजाना कि ऐसे में अपने दोनों शत्रुओं से लड़ने का अच्छा अवसर है ४४८, कैमास की उपजाई मति के निश्चय के लिए नगौर में मता मंडना अर्थात् सब सामंतों की मभा होना उसमें कैमासादि का अपना विचार प्रकाश करना ४४९, उसमें चामुंड राव और जैत राव की प्रतिज्ञा ४४९, वागी अर्थात् देव राव बगरी का कथन ४५०, राव बड़ गुज्जर का कथन ४५०, लोहाना का आगे होना और सेना ले जहां चाहुवान सेना फेरता था वहां जा मिलना ४५०, सामंतों का मत हो जाने पर चाहुवान ने अपनी सेना के दो भाग किए, एक चामुंड राव जैतसी के साथ मुलतान पर चढ़ा एक और दूसरा चालुक भीम देव पर ४५०, दुओरी चढाईयो की सेना की शोभा का वर्णन ४५१, इधर मुरतान का मुख अर्थात् मुहाना रोक और उभर भीम से लड़ने के लिए चौहान का नागौर जाना ४५२, सब सामंतों का गुज्जर नरेश से कहना ४५२, फिर निशान का बजना और अमरसीह का दाहिम को बाधने का पापड करना ४५४, अमर सिंह सेवरा के मन्त्रबल से कैमास को वश में करने का निश्चय करना ४५४, चालुक्य राज की सेना की चढ़ाई और अमर सिंह का मन्त्र आरम्भ करना ४५५, अमर सिंह के मन्त्रबल की प्रशंसा ४५५, कैमास के यहां सन्धि का पत्र लेकर वहां का भाट भेजा गया उसने चालुक्य की बड़ाई करके पत्र दिया ४५६, चालुक्य राज का पत्र ४५६, अपनी बड़ाई लिखकर एक स्त्री का चित्र लिखा कि यह स्त्री लो और कई ग्राम और धन देंगे तुम आनन्द करो, चित्र देखकर कैमास का मोहित हो जाना ४५७, दूत ने लाले नामक एक स्त्री की रूपवती लड़की के द्वारा वश करने का मंत्र आरम्भ किया ४५७, दूत समय जान उस स्त्री को साम्हने लाया ४५८, उस स्त्री के रूप का वर्णन ४५८, आश्चर्य है कि कैमास ऐसा मन्त्री बालचरित्र के वश पड़ जाता है ४६०, अमर सिंह के मंत्र के बस में कैमास ऐसा प्रबल स्वामिभक्त मंत्री फँस गया ४६०, कैमास ऐसा मन्त्रमुग्ध हुआ कि पृथ्वीराज को भूलकर चालुक्यराज के वशवर्ती हो गया ४६१, कैमास के वश होने से नागौर में भीमराय चालुक्य की आन गिर गई ४६१, चन्द बरदाई को स्वप्न में इस समाचार की सूचना हो गई ४६१, यह जानकर चन्द ने देवी का आह्वान और उसकी स्तुति की ४६१, चन्द स्वयं कैमास के पास नागौर की ओर चला ४६२, नागौर पहुँच कर चन्द ने सब बात प्रत्यक्ष देखा और घर घर यह खरबा सुनी ४६२, यह देख कर चन्द ने बड़े क्रोध से भीरो तथा देवी का अनुष्ठान आरम्भ किया ४६२, चन्द का देवी की स्तुति करना ४६३, चन्द का देवी से वर माँगना कि जैन की माया को कीर्त ४६४, समाचार पाकर चन्द का

मंत्र व्यर्थ करने के लिये अमर सिंह का मंत्र प्रयोग करना और घट स्थापन करना ४६५, एक घड़ी तक चन्द का भ्रम में पड़ जाना फिर संभल कर अपना अनुष्ठान करना देवता आदि का आश्रय के साथ दोनों का बल देखना ४६५, चन्द ने अमर सिंह की माया काटने के लिये योगिनियों के जगाने का मन्त्र आरम्भ किया ४६६, अमर सिंह का बहुत पाखण्ड फैलाना ४६६, चन्द का पाखण्ड भंजन में सफल होना ४६६; चालुक्य राज का मन्त्र नष्ट होना ४६७, चन्द का अमर सिंह को बाद में जीतना ४६७, चन्द की सेना का युद्ध करके शत्रुओं को भगाकर कैमास के पास जाना ४६८, कैमास का लज्जित होना ४६९, चन्द का कैमास को आश्वामन देना ४६९, कैमास को लेकर पृथ्वीराज के मामंतों का चालुक्य राज पर चढ़ने को प्रयुक्त होना ४६९, चालुक्य राजा का सेना प्रस्तुत करना ४७०, चालुक्य की सेना का वर्णन ४७१, चालुक्य राज का धोखा करना ४७१, युद्ध का वर्णन ४७१, मममी को घोर युद्ध का आरम्भ होना ४७२, युद्ध की तयारी का वर्णन, सरदारों का सेना समेत प्रस्तुत होना ४७३, युद्ध आरम्भ होना ४७४, वाजिद खाँ का लड़ना और भीरता से मारा जाना ४७५, अष्टमी के युद्ध का वर्णन ४७५, चावंडराय के युद्ध का वर्णन ४७६, यह युद्ध संवत् ११४४ में हुआ ४७६, उन सरदारों का नाम कथन जो लड़ते थे ४७७, युद्ध का वर्णन ४७८, स्वयं भोराराय के युद्ध का वर्णन ४७९, भोला राय को लिए हुए हाथी का गिरना और मरना ४८०, पृथ्वी पर गिरने से भीमराय का महाक्रोध करके कैमास पर टटना ४८०, कैमास पर भीड़ देख कर चामंड राय का सहायता पर पहुँचना ४८१, घोर युद्ध का वर्णन ४८१, भोलाराय की सेना का भागना ४८२, पृथ्वीराज का राज्य स्थापन होना ४८३, आबू का राज्य जैनली को सौंपना ४८४।

[समय १३] अथ सत्स्र जुद्ध समयो लिख्यते

[पृष्ठ ४८५-५०३]

उधर भोला भीमदेव से सरदारों की लड़ाई ठनी इधर शहाबुद्दीन की खबर लाने दूत गया, उसका लौटना और पृथ्वीराज से विनय करना ४८५, दूत का आकर पृथ्वीराज को खबर देना कि तीन लाख सेना के साथ शहाबुद्दीन आता है, ४८६, दूत का वेवरे के साथ शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन करना ४८६, शहाबुद्दीन की चढ़ाई का ममाचार मुन वर पृथ्वीराज का क्रोध करना ४८७, लोहाना का क्रोध करके शाहगोरी के नाश करने की प्रतिज्ञा करना ४८७, पुरोहित गुरु राम का आशीर्वाद देना ४८८, थोड़ी सी सेना के साथ शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये पृथ्वीराज का निकलना ४८८, पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये माहंडे पर चढ़ाई करना ४८८, लोहाना आजान बाहु का पांच सौ सेना के साथ आगे बढ़ना ४८९, तातार खाँ का मुलतान से चौहान की सेना पहुँचने का समाचार कहना ४८९, मुलतान का अपनी सेना को तैयार करना ४८९, मुलतान का उमराओं से कहना कि अब की अवश्य जीतना चाहिए ४८९, खुरासान खाँ तातार खाँ

आदि सरदारों का बादशाह की बात सुन आक्रोश में आना ४८९, मन्न सरदारों का सज कर घावा करना ४८९, सेना की चढ़ाई का आरम्भ होना ४९०, चौहान की सेना का पूर्व और पश्चिम दोनों ओर से चढ़ कर मिलना ४९१, खुरामानियों का चौहानों पर टूट पड़ना ४९१, शाह की सेना का युद्ध वर्णन ४९१, दोनों सेनाओं का मुठभेड़ होना, सलष राज का भी आकर मिलना ४९१, सलष की प्रार्थना ४९२, आजानबाहु लोहाना का मार कर भागना ४९२, सलष राज की वीरता का वर्णन ४९२, बड़ गुज्जर और तातार खाँ का युद्ध वर्णन ४९३, दोनों सेनाओं का एक घड़ी तक एकमेक हो जाना और घोर युद्ध होना, आकाश न सूजना ४९३, कैमास का साथ छोड़ कह चौहान का भी सारूडे में आ जाना ४९४, कान्ह का बड़ी वीरता से घावा करना ४९४, दोनों ओर के सरदारों का महा क्रोध कर करके युद्ध करना ४९४, आकाश में देवांगनाओं का वीरों को वरन करना ४९५, गुरु राम का एक मन्त्र लिख कर म्लेच्छों की सेना पर डालना ४९५, मन्न के बल से शाह की सेना का माया में मोड़ित हो जाना, इधर से काजी खा का मंत्र बल करना और युद्ध होना ४९६, मास्फ खाँ का शाह से कहना कि अब बड़ी भीड़ पड़ी जिन काजी खा पर खुरामान का दार मदार था उन्होंने तसबीह छोड़ दी, म्भिन्न हार दी ४९६, खुरामान खाँ आदि सरदारों का फिर एकत्र होना और लड़ने को तयार होना ४९६, अपनी सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन पृथ्वीराज का विजय पाना, शहाबुद्दीन का बाधा जाना ४९९, इस युद्ध में सलष राज की वीरता का वर्णन ४९९, मन्नपराज का घार युद्ध करना, उनकी वीरता की बड़ाई ५००, पृथ्वीराज का सलष की सहायता करना ५००, पृथ्वीराज की वीरता की प्रशंसा ५००, सलष राज के युद्ध की घातना का वर्णन ५००, म्लेच्छों की सेना का मुँह मोड़ना, सुल्तान का हाथी छोड़ घाड़े पर चढ़ कर भागना ५०१, म्लेच्छ सेना और सुल्तान की भगेड का वर्णन ५०१ इस युद्ध में सलष राज के यश पाने का वर्णन मुस्तान का बंधा जाना ५०१, सुल्तान का जीत कर सलषराज का लूट मचाना ५०१, सुल्तान की सेना का भागना चौहान का पीछा करना पृथ्वीराज की दोहाई फिरना ५०२, पृथ्वीराज के जीत की जय जय कार मचना ५०२, पृथ्वीराज के सरदारों की वीरता की प्रशंसा ५०२, पृथ्वीराज का जीतना तेरह खाँ स दारों का पकड़ा आना सारण्ड का टूटना ५०२, इधर शहाबुद्दीन को दण्ड देने उधर कैमास का चालुक्यों को जीतने का वर्णन ५०३, शाह के बांधने भीमदेव के जीतने और इन्छिनी के व्याह की प्रशंसा ५०२, मं० ११३६ के माघ सुदी में मुस्तान का बांधना माघ ब० ३ को इच्छिनी का पादि-ग्रहण करना, दण्ड लेकर मुस्तान को छोड़ना और फिर लट्टवन में सिकार को जाना ५०३, शुकी से शुरु ने जो कथा चालुक्यों के जीतने की कही उसे सारूडे में कवि चन्द ने वर्णन किया ५०३ ।

[समय १४] अथ इच्छिनी व्याह कथा लिख्यते

[पृष्ठ ५०४-५२३]

शुकी के प्रश्न पर शुक का चालुष्य के जीतने, महाबुद्धि के बांधने और इच्छिनी के व्याह का वर्णन करने लगा ५०४; शाह को दंड देकर छोड़ने पर राजा मलय ने पृथ्वीराज के यहां लग्न भेजा ५०४, पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इच्छिनी का रूप नाम आदि पूछना ५०४, पृथ्वीराज का व्याहने के लिये यात्रा करना ५०५, पृथ्वीराज के साथ मामंतों का वर्णन ५०६, पृथ्वीराज की बारात की शोभा वर्णन ५०६, पृथ्वीराज को आते हुए सुनकर मलयराज का धूमधाम से अगवानी करना ५०६, दोनों राजाओं की सेना के मिलने की शोभा का वर्णन ५०७, मलयराज की प्रशंसा ५०७, तोरन आदि बांधकर, कलस धरकर, मोती के अक्षत छिड़क कर मंगलाचार होना ५०७, नगर में स्त्रियों का बारात की शोभा देखना ५०७; सुहासिनी स्त्रियों का कलण लेकर द्वार पर आरती उतारना ५०८, मलय की रानी दूल्ह की शोभा देख प्रसन्न होना ५०८, स्त्रियों का महल में जाना और बारात का जनवांसे आना ५०८, जनवांसे की तयारी का वर्णन ५०८, जनवांसे में भोजन का नेवता देकर मलयराज का लौटना ५१०, ब्राह्मण लोग विवाह की विधि करने लगे ५११, पृथ्वीराज के रहने को जो बाग सजा गया था उसकी शोभा का वर्णन ५१२, ब्राह्मणों का मंडप स्थापन करना ५१३, दूल्ह का मंडप में आना ५१३, स्त्रियों का दूल्ह की शोभा देख मग्न होना ५१३, स्त्रियों का मंगल गीत और गाली गाना ५१३, दूल्ह दुल्हिन का पट्टे पर बैठकर गंठ जोड़ा होकर गणेश पूजन करना ५१४, नवग्रह, कुलदेवता, अग्नि, ब्राह्मण की पूजा कर साधोचचार होना ५१४, ब्राह्मणों का आशीर्वाद के मंत्र पढ़ना ५१४, मलयराज का कन्या दान देकर विनय करना ५१४, कान्ह चौहान का कहना कि जैसे शिव के साथ गौरी है वैसे ही यह होगी ५१४, लग्न साधकर तब राजा का ज्योत्नार करना ५१४, ज्योत्नार ६ पकवानों का वर्णन ५१४, पृथ्वीराज के विवाह का वर्णन कश्चिन्द अपनी सामर्थ्य से बाहर बनलाता है ५१५, नव दुल्हिन की शोभा का वर्णन ५१५, प्रथम समागम का वर्णन ५१६, दुल्हिन को लेकर दूल्ह का जनवांसे से आना और हाथी घोड़े घन आदि लुटाना ५१६, दहेज में मलयराज का बहुत कुछ देकर भी संकुचित होना ५१७, पांच दिन तक सब जातिधों को भोजन कराया गया ५१७, बारात की विदाई का वर्णन ५१८, बारात का बिदा होकर अजमेर की ओर चलना ५१८, बारात के अजमेर पहुंचने पर मंगलाचार होना ५१९, शुकी पूछने पर शुक का इच्छिनी के नवशेष का वर्णन करना ५१९, शोभा कहते कहते रात बीत गई ५२३ ।

[समय १५] अथ मुगलजुद्ध प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ५२४-५२८]

इंछिनी को ब्याह कर लाने पर मेवात के राजा मुदगल का पूर्व वैर निकालने का विचार ५२४, मेवात राजा का विचारना कि रास्ते में पृथ्वीराज को मारना चाहिए ५२४, पृथ्वीराज के डेरे में कैमास को छोड़ सब का सो जाना कैमास का उल्लू की बोली सुनना ५२४, कैमास का बाई और देवी को देखना ५२५, देवी की बोली सुनकर कैमास का गुरूराम पुरोहित से सगुन पूछना, पुरोहित का कहना कि इसका सगुन चन्द से पूछिए ५२५, चंद का पृथ्वीराज के वंश की पूर्व कथा वर्णन कर मेवातियों के साथ वैर का कारण कहना ५२५, सवेरे उठकर पृथ्वीराज का अपने सामंतों के साथ शिकार को निकलना ५२६, मुगलराज का आकर रास्ता रोकना ५२६, तुरंत पृथ्वीराज का शत्रुओं के बीच में घुसना, मानों बड़वानल समुद्र पीने के लिये घसा हो ५२६, पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन ५२७, युद्ध का वर्णन ५२७, मुगलराज को चारों ओर से घेर कर बांध लेना ५२८, मुगल को कैद करके इंछिनी को माथ लिये पृथ्वीराज आनंद से घर आए ५२८।

[समय १६] अथ पुंडीर दाहिमी विवाह नाम प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ५२९-५३१]

राजा मल्ल की बेटी के ब्याह के वर्ण दिन बड़े सुख के साथ बीते ५२९, चंद पुंडीर की कन्या का रूप गुण सुनकर पृथ्वीराज का उम पर प्रेम होना ५२९, चंद पुंडीर की कन्या का रूप वर्णन ५२९, पुंडीर का कन्या का देना स्वीकार करना ५२९, शुभ लग्न विचार कर चंद पुंडीर का कन्या विवाह देना ५३०, पुंडीर दाहिमी की कन्या के साथ पृथ्वीराज के आनंद विलाम का वर्णन ५३०, विवाह का वर्णन ५३०, विवाह का फेरा फिरना ५३०, दहेज में आठ सखी, तिग्मठ दासी, बहुत से घोड़े हाथी देना ५३१, पृथ्वीराज और पुंडीरनी की जोड़ी की शोभा का वर्णन ५३१।

[समय १७] अथ भूमि सुपन प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ५३२-५४१]

पृथ्वीराज का कुँवरपन में शिकार खेलना ५३२, हाथी घोड़े आदि का इतना कोलाहल होना कि शब्द सुनाई नहीं पड़ता ५३२, सिंह का क्रोधित होना ५३२, सिंह का महा क्रुद्ध होना ५३२, सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज

का तलवार से सिंह को मारना ५३३, पृथ्वीराज के शिकार की धूम घाम का वर्णन, पृथ्वीराज का एक पेड़ की छाया में अपने सरदारों के साथ बैठना ५३४ संजम राय के बेटे का वीरता दिखलाना ५३, पृथ्वीराज का प्रसन्न होना और उमकी पीठ ठोकना ५३५, सब लोगो का आगे बढ़ना, एक शकुन मिलना ५३५, शकुन को देख कर सब को आश्चर्य होना ५३५, एक सर्प को नाचते हुए देखना ५३६, पृथ्वीराज का इस सर्प की देवी के शकुन का फल पूछना ५३६, ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से आपको बहुत धन मिलेगा ५३६, पृथ्वीराज का देखना कि सर्प आधा विल में है और आधा बाहर, उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारो ओर नाचती है और राजा पर प्रसन्नता दिखलाती है ५३७, देवी का इनने में उड़कर आम की डार पर बैठना और साग गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना ५३७, इस शुभ शकुन का फल वर्णन ५३७, शिकार बंद करके बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना ५३८, डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वीराज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना, सब का ठंडा होना, भोजन की तयारी ५३८, सब लोगो के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना ५३९, पृथ्वीराज का घर पहुँच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को स्वप्न में देखना ५३९, भूमि देवी के रूप सौन्दर्य का वर्णन ५३९, पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस समय यहाँ क्यों आई हो ५४०, भूमि देवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूँ, मेरे लिये सुर अमुर सब शंकिन रहते हैं पर जो मच्चा वीर मिले तो मैं बहुत रस श्रवती हूँ ५४०, राजा का विचार में मग्न होना ५४०, पृथ्वीराज से भूमि का कहना कि षट्ठू बन में अगानित धन है ५४०, अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वापर में था, उसने वहाँ असंख्य धन रक्खा है ५४०, ।

[समय १८] अथ दिल्ली दान प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ५४२-५५१]

अनंगपाल के दून का कैमास के हाथ में पत्र देना ५४२, पत्र में अनंगपाल का अपनी बेटे के बेटे पृथ्वीराज को लिखना कि मैं बूढ़ा हुआ, बद्रिकाश्रम जाता हूँ मेरा जो कुछ है सब तुम्हें समर्पण करना हूँ ५४२, पत्र पढ़कर सब का विचार करना कि क्या करना चाहिए ५४२, कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिए, कोई कहना पहिले पृथा कुंभारि का व्याह रावल ममर सिंह के साथ करना चाहिए ५४२, राजा सोमेव्वर सब सामंतों को एकत्र कर परामर्श करता है कि क्या कर्तव्य है पुण्डरी राय ने सलाह दी कि भाता हुआ राज्य न छोड़ना चाहिए ५४२, चन्द बरदाई का मत पूछना ५४३, चंद ने ध्यान करके देवी का आह्वान किया और देवी की आज्ञा से कहा ५४३, ध्यास ने जो भविष्यत बानी कही थी वह सुनाकर

चंद्र का कहना कि आप का राज्य खूब तपंगा ३४३, दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना को वैराग्य बयो हुआ ५४३, दूत का अनंगपाल की प्रशंसा ५४३, अनंगपाल का प्रताप कथन ५४३, अनंगपाल के राज्य में दिल्ली की शोभा वर्णन ५४४, अनंगपाल का वृद्धावस्था में सपना देखना कि सब तोभर लोच दक्षिण दिशा को जा रहे है ५४४, स्वप्न से जाग कर अनंगपाल का हरि स्मरण करना ५४४, दो घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक मिह जमुनाजी के किनारे आया है, दूगरा उस पार से तैरकर आया दोनो सिंह आमने सामने बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे, इतने में नींद खुल गई मवेरा हो गया ५४४, अनंगपाल का व्यास जगजोति को बुला कर स्वप्न का प्रष्ण करना ५४५, व्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चौहान का राज्य होगा जैसे सिंह आया था सो तुम भला चाहो तो अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो ५४५, इस भविष्यवानी को मोचकर विचार करना कि दिल्ली का राज्य अपने दौहित्र चौहान को देना चाहिए ५४५, अनंगपाल का मन में यही निश्चय कर लेना कि पृथ्वीराज को राज्य देकर बनवास करना चाहिए ५४५, अनंगपाल का मंत्रियों को बुलाकर मन पूछना ५४५, मंत्रियों का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनाता से होता है इसे न छोड़ना चाहिए ५४५, मंत्रियों की बात न मानकर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना ५४६, कवि चंद्र का मत सुनकर पृथ्वीराज का दिल्ली जाना निश्चय करना ५४६, कैपाम का भी यही मत होना ५४६, इन्होंने आकर समाचार दिया पृथ्वीराज का भ्रूम घाम में दिल्ली की आर यात्रा करना ५४७, अनंगपाल ने दौहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा दिन दिखवा कर दिल्ली का राज्य लिख दिया ५४७, पृथ्वीराज के रजामिर्क का वर्णन ५४७, शुभ लगन दिखा कर बड़ी तयारी और विधि के साथ अनंगपाल का पृथ्वीराज को पाट वैंठाकर आने हाथ से राज्य का तिलक करना ५४७, दिल्ली के सब मदर्गो का आकर पृथ्वीराज को जुहार करना ५४७, बड़ी तयारी के साथ मत्रकर पृथ्वीराज की मवारी निकलना ५४७, पृथ्वीराज का रनिवाम में आना रनियों का मंगलाचार करना ५४९, दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थनाम के लिये जाना ५४९, यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का प्रमन्न होना ५४९, पृथ्वीराज का प्रतार वर्णन ५४९, आशीर्वाद ५५१ ।

[समय १६] अथ माधो भाट कथा लिख्यते

[पृष्ठ ५५२-५७४]

पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना ५५२, शहाबुद्दीन के कवि माधो भाट का गुण वर्णन ५५२, माधो भाट का दिल्ली आना और यहाँ की शोभा पर मोहना ५५२, पृथ्वीराज के इन्द्र के मदान राज्य करने का वर्णन ५५२, माधो भाट

का पृथ्वीराज के दरबार में भेद लेने को आना और अपने गुणों से लोगों को रिझना ५५३, धर्मान कायस्थ का माघो भाट को सब भेद देना ५५३, पृथ्वीराज का माघो भाट की बहुत कुछ इनाम देना ५५२, बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माघो भाट को दिल्ली में रखना ५५४, बहुत सा दान (जितना कभी नहीं पाया था) लेकर माघो भाट का गजनी लौट आना ५५४, माघो भाट का शहाबुद्दीन के दरबार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने आदि का वर्णन करना ५५४, अनंगपाल के बनवास का वर्णन ५५४, यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होने ५५५, शहाबुद्दीन क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिए चलना, फौज की सोभा वर्णन ५५५, शहाबुद्दीन का नातार खा आदि मरदारों को हट्टा करके मलाह पूछना ५५५, शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के दिल्ली पाने का समाचार कहकर उसके जोर मोड़ने का मत पूछना ५५६, नातार खा का मलाह देना कि दिल्ली पर चढ़ाई करना चाहिए ५५६, नातार खा की यान का सब लोगों का मकारना हस्तम खा का मंत्र देना कि जब तक सेना तयार हो तब तक एक दूत दिल्ली जाय सब समाचार हिंदुओं के ले आवे ५५६, माघो भाट की वान पर विश्राम न करके शाह का दूत भेजना ५५८, दूतों के लक्षण का वर्णन ५५८, दूत भेज कर अपनी सेना की तयारी करना ५५९, शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की ओर जाना ५६०, दूत को दिल्ली पहुँच कर अनंगपाल के बनवास और पृथ्वीराज के न्याय राज का समाचार विदित होना ५६०, धर्मान कायस्थ का सब समाचार लिख कर भेजना ५६०, सब समाचार लेकर दूत का लौटना ५६०, दूत ने छ महीने रहकर जो बातें देखी थीं शह शाह को जा सुनाई ५६१, शहाबुद्दीन का लड़ाई के लिए प्रस्तुत होना उमरावों की तयारी का वर्णन ५६१, दूत का ब्योरेवार दिल्ली का समाचार कहना ५६२, संवत् ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना ५६३, दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना शाह का खुरामत खा आदि से मत पूछना ५६३, तातार खा का दिल्ली पर चढ़ाई करने का सलाह देना ५६३, तातार खा का मत मान कर सुलतान का सेना मजने के लिए आज्ञा देना ५६४, शाह की सेना का घूम घाम से कूच करना ५६४, शाह की दो लाख सेना का सिंधु के पार उतरना ५६५, पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर अपने मरदारों से परामर्श करना ५६५, कैमास का मत देना कि हम लोग आगे से बढ़ कर रोके ५६६, इस मत को सब का मानना ५६६, पृथ्वीराज का सबेरे उठ कर कूच करना ५६६, पृथ्वीराज की सेना का वर्णन ५६७, युद्धारम्भ होना ५६७, युद्ध वर्णन ५६७, घोर युद्ध होना सुलतान की सेना का भागना ५६९, फौज को भागते देख कर सुलतान का क्रोध करना ५७०, सेना को ललकार शाह का फिर जोर बाँधना ५७०, तातार खा का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना, पृथ्वीराज की विजय ५७०, पृथ्वीराज का सुलतान की सेना का पीछा करना

५७२, चामंडराय का सुलतान को पकड़ कर पृथ्वीराज के हाथ समर्पण करना
 ५७४, सुलतान को एक महीना दिल्ली में रख कर छोड़ देना ५७४, इस विजय
 पर दिल्ली में आनन्द मनाया जाना, बहुत कुछ दान दिया जाना ५७४ ।

[समय २०] अथ पद्मावती समय लिख्यते

[पृष्ठ ५७५-५८३]

पूर्व दिशा में समुद्र शिषर गढ़ के यादवराजा विजयपाल का वर्णन ५७५,
 विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटों का वर्णन ५७५, कुँअर पद्मसेन की
 बेटों पद्मावती के रूप गुण आदि का वर्णन ५७५, पद्मावती एक दिन खेलते
 समय एक सुग्गे को देख कर मोहित हो गई और उसने उसे पकड़ लिया और
 महल में पिंजरे में रखा ५७५, पद्मावती कीर के प्रेम में खेल कूद भूल कर सदा
 उसी को पढ़ाया करती ५७६, पद्मावती के रूप को देख कर सुग्गे का मन में
 विचार करना कि इसको पृथ्वीराज पति मिले तो ठीक है ५७६, पद्मावती का
 सुग्गे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है ५७६, सुग्गे का उत्तर देना कि मैं
 दिल्ली का हूँ वहाँ का राजा पृथ्वीराज मानों इन्द्र का अवतार है ५७६,
 पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना ५७६,
 पृथ्वीराज का रूप, गुण सुनकर पद्मावती का मोहित हो जाना ५७७, कुँवरी के
 स्थानी होने पर विवाह करने के लिये मा बाब का चिंतित होना ५७७, राजा का
 दर इन्द्रने के लिये पुरोहित को देश देशांतर भेजना ५७७, पुरोहित का कर्मों के
 राजा कुमोदमनि के यहाँ पहुँचना ५७७, पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर
 कुमोदमनि को लग्न चढ़ा दिया ५७७, कुमोदमनि का बड़ी धूम से ब्याह के लिये
 बारात लाना, पद्मावती का दुःखित हो कर सुग्गे को पृथ्वीराज के पाम भेजना ५७८,
 सुग्गे से संदेसा कहलाना और चिट्ठी देना कि रुकन की तरह मेरा उद्धार कीजिए
 ५७८, शिव पूजन के समय हरन करने का संकेत लिखना ५७८, सुग्गे का पत्र
 पृथ्वीराज को देना और पृथ्वीराज का चलने के लिये प्रस्तुत होना ५७८, चामंड
 राय को दिल्ली में रख कर और मरदारो को साथ लेकर उसी समय पृथ्वीराज का
 यात्रा करना ५७९, त्रिम दिन समुद्र शिषर गढ़ में बारात पहुँची उसी दिन
 पृथ्वीराज भी पहुँच गया और उसी दिन गजनी में शहाबुद्दीन को भी समाचार
 मिला ५७९, यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज
 का रास्ता आगे बढ़ कर रोका और इसर इसकी सूचना चद ने पृथ्वीराज को दी
 ५७९, बारात का निकलना, नगर की स्त्रियों का गौष आदि से बारात देखना,
 पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना ५७९, सुग्गे का आकर पद्मावती को
 समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर शृंगार करना और मखियों के साथ शिव जी
 की पूजा को जाना वहाँ पृथ्वीराज का उसे उठाकर अपने पीछे घोड़े पर बैठाकर

दिल्ली की ओर खाना होना, नगर में यह समाचार पहुँचना, राजा की सेना का पीछा करना, पृथ्वीराज के साथ घोर युद्ध होना ५७९, पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना ५८०, पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का समाचार मिलना ५८०, अवसर जान कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को पकड़ने के विचार से सेना सजना ५८०, शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन, पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लेना ५८१, पृथ्वीराज को तेग संभाल शत्रुओं पर टूटना ५८१, दिन रात घोर युद्ध हुआ, पर किसी तरह जीत न हुई ५८१, युद्ध का वर्णन ५८१, पृथ्वीराज की बीरता का वर्णन, शहाबुद्दीन को कमान डाल पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना ५८१, पृथ्वीराज का जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना ५८२, पद्मावती को वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के निकट चत्रभुजा के स्थान में पृथ्वीराज का पहुँचना ५८२, लग्न साध कर धूम धाम से विवाह करना ५८२, पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुल्हिन के साथ अपने महल में आना ५८२।

[समय २१] अथ प्रिया व्याह वर्णनं लिख्यते

[पृष्ठ ५८४-६०६]

चित्तौर के रावल समर के माथ सोमेश्वर की बेटी के विवाह की सूचना ५८४, सोमेश्वर का अपनी कन्या समर सिंह को देने का विचार करके पत्र भेजना ५८४, समर सिंह के गुणों का वर्णन ५८४, पत्र लेकर गुरुराम पुरोहित और कन्ह चौहान का जाना ५८५, पृथा कुँअरि के रूप का वर्णन ५८५, पृथा कुँअरि और समर सिंह के उपयुक्त दम्पति होने का वर्णन ५८५, लग्न का शोधा जाना ५८५, कवि चंद्र का कहना है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं सकता पर जहाँ तक बनेगा उठा न रखूँगा ५८६, स्त्रियों के शरीर की उपमाओं का वर्णन ५८६, पृथा कुँअरि के रूप तथा नव यौवनावस्था का वर्णन ५८६, रावल समर सिंह का गुण वर्णन ५८७, श्रीफल देकर पुरोहित को तिलक चढ़ाने को भेजना और इस सम्बन्ध से अपने को बड़भागी मानना ५८७, पुरोहित का चित्तौर में पहुँच कर बमन्त पंचमी को तिलक देना ५८७, पृथ्वीराज के विवाह की तयारी करने का वर्णन ५८७, पृथ्वीराज ने ऐसी तयारी की मानो इन्द्रपुरी है ५८८, पृथ्वीराज का चारों दिशा में निमन्त्रण भेजना घर घर में तयारी होना ५८९, हाथी घोड़े सेना आदि की तयारी का वर्णन। पृथ्वीराज के सामंतों की तयारी का वर्णन ५९०, रावल समर सिंह का व्याह के लिये पहुँचना रावल की शोभा वर्णन ५९०, नगर नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा वर्णन ५९०, समर सिंह के पहुँचने पर मङ्गलाचार होना ५९१, शृंगार का वर्णन ५९१, पाँच सौ वैदिक पंडितः

दो सहस्र कोविद, एक सहस्र मागध आदि गुण गाते हुए, ऐमी घूमधाम से रावल समर सिंह का मण्डप में आना ५९३, विवाह मण्डप की शोभा का वर्णन ५९३, कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहां विवाह मण्डप में इन्द्रादिक देवता जय जय कर रहे हैं और लगन का समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है ५९४, सामंतों और राजाओं ने जो जो दहेज दिया उसका वर्णन ५९४, पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है दोनों की प्रशंसा ५९६, पृथ्वीराज और पृथा बाई के नाना अनंगपाल का वर्णन ५९७, विवाह का देव विधि से होना बहुत सा दान दहेज देना ५९७, व्याह के पीछे दरबार में आना ५९८, पृथ्वीराज की प्रशंसा ५९८, रावल का रनियास में जाना ५९८, निष्क होना और भावरी फिरना ५९९, ऋषीकेश वैद्य और चन्द के बेटे जलह आदि को दिया तब रावल फेरा फिरे ५९९, प्रत्येक भावरी में बहुत कुछ दान देना ५९९, रावल समर सिंह के पुरुषों को चित्तौर मिलने का इतिहास वर्णन ६००, विवाह की शोभा का वर्णन ६०१, पृथ्वीराज के दान दहेज देने का वर्णन ६०२, रावल का बारह सामंतों ने अपने यहां नेवता किया ६०३, बारह दिन तक रह कर रावल का कूच की तयारी करना ६०३, बरात लौटने की शोभा का वर्णन ६०३, अनंगपाल का बहुत कुछ दान देना ६०४, व्यास जगज्जोति की भविष्यवाणी ६०५, सभों का अपने अपने घर लौटना ६५, शाह गोरी का रावल का दहेज देना ६०६, पृथा व्याह की फल स्तुति ६०६।

[समय २२] अथ होली कथा लिख्यते

(पृष्ठ ६०७-६०९)

पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा और छोटे बड़े का विचार छोड़ कर अबोल बकते हैं इसका वृत्तान्त कहो ६०७, चन्द का कहना कि चौहान वंश का दुंडा नामक एक राक्षस था उसकी छोटी बहिन दुंडिका थी ६०७, दुंडा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया यह सुन दुंडिका भी भाई के पास गई दुंडा भ्रम हो गया तो भी दुंडिका बैठी रही उसे सौ वर्ष योही सेवा करते बीता ६०७, तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर दुंडिका से कहा कि मैं प्रसन्न हूँ वर मांग ६०८, दुंडिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकूँ ६०८, गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐमा उपाय कीजिए कि दुंडिका की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सकें ६०८, शिवजी ने आज्ञा दी कि फागुन में श्रीन दिन जो लोग गाली बर्क गदहे पर चढ़े तरह तरह के स्वाग बनावे उनको छोड़ और जिसको पावे वह भक्षण करे ६०८, दुंडिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते पागल से बने, गाते, बजाते, आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया ६०८,

इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर में आनन्द हो गया ६०९, जाड़ा बीतने और बसन्त के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और दुँडिका की स्तुति करते हैं ६०९ ।

[समय २३] अथ दीपमालिका कथा लिख्यते

[पृष्ठ ६१०-६१३]

पृथ्वीराज ने फिर चंद्र से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो ६१०, चंद्र का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ६१०, मुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे ६१०, उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग लगे थे वहाँ एक वैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ६१०, स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करे ६१०, सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ज्या. की ओर चिन्तन दिया ६११, सत्याश्रम ने मी वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया का प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है ६११, तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए ६११, ऋषि मिद्धि से क्या होता है ६११, ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है ६१०, ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग ६१२, ब्राह्मण ने दीपदान वर मांगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जलै ६१२, राजा ने कहा कि तुमने क्या मांगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गाँव माँगना था, अस्तु अब घर जाओ ६१२, ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल और सवा ढेर रुई मंगाई ६१२, कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए ६१२, राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बालै ६१२, लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उमने सारे नगर में अँधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देखकर वहाँ आई और विचार किया कि यही सदा रहना चाहिए ६१२, लक्ष्मी ने प्रमन्न होकर उसका दारिद्र्य काट कर वर शिया कि सात जन्म में तेरे घर बसूँगी ६१३, तब दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूँ ६१३, दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस नगर में न आऊँगा ६१३, उसी घड़ी से उसके यहाँ आनन्द हो गया, हाथी घोड़े झूमने लगे, उसी दिन से यह दीपमालिका चली ६१३, चारों दिशा में दीप मालिका का मान्य है, यह कथा कवि चंद्र ने कह सुनाई ६१३ ।

[समय २४] अथ धन कथा लिख्यते

[पृष्ठ ६१४-६७७]

खट्टू बान मे शिकार खेलने और नागौर में शाह गौरी के कैद करने की सूचना ६१४, पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धिमत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना ६१४, पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विधिप्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इसके अर्थ करने में सब भटकते हैं, सो तुम इसका अर्थ करो ६१४, पुतली के सिर का लेख 'सिर कटने से धन मिले सिर रहने से धन जाय' ६१५, पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैमास से परामर्श करना ६१५, पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि बीर बाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीडक था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्बंश मरेगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है ६१५, कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर के रावल समरसिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचंद, शहाबुद्दीन भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं ६१६; पृथ्वीराज का कैमास की इस मलाह को मानकर उसको मिरोपाव देना और उसकी लड़ाई करना ६१६, पृथ्वीराज का चंद्र पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समरसिंह के पास भोजना ६१६, रावल की भेट को धोड़े हाथी आदि भोजना ६१६, चंद्र पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में महायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर है ६१७, रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशंसा ६१७, पत्र पढ़कर समरसिंह ने हंमकर चंद्र पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह देव गति है ६१७, चंद्र पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरसा रखते हैं सो चलिए ६१७, शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रबंड शत्रुओं का सामना है इस लिये महायता मे आपको चलना चाहिए ६१८, रावल समरसिंह का सेना आदि सज्जकर चलना सेना की तैयारी का वर्णन ६१८, परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के पास नागौर को चले ६१९, धर्मापन कायस्थ ने यह समाचार चुपचाप दून भेजकर शहाबुद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चित्तौरपति धन निकालने नागौर आए हैं ६१९; समरसिंह का दिल्ली के पास पहुंचना और दून का पृथ्वीराज को समाचार देना ६१९, पृथ्वीराज का आद्य कोस भाग से बढ़कर आश्वानी करना ६१९, समरसिंह का अनङ्गाल के घर में डेरा देना, दो दिन रहकर सब सामनों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन निकालने का क्या उपाय करना चाहिए ६१९, कैमास ने कहा कि बेरी सम्पत्ति है कि शहाबुद्दीन के आने के रास्ते पर दिल्लीपति रोकें

और भीमदेव चालुक्य का मुहाना रावल समरसिंह रोकें और तब घन निकाल लिया जाय ६२०, रावल समरसिंह का इम मत को पसंद करना और मंत्री की प्रशंसा करना ६२०, नागौर के पास सब का पहुँचना, मुलानान के रुख पर पृथ्वीराज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना ६२०, दो दो कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा देना ६२१, दूत का शाह को समाचार देना कि नागौर में घन निकालने के लिये दिल्ली गति आ गए ६२१, नागौर के समाचार पाकर मुलानान का उमरा खाँ के साथ डक्का निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना ६२१, शाह का चक्रभूट रचना करके चटना, सेना की सजावट का वर्णन ६२१ पृथ्वीराज को बाईं ओर से बचाता मुलानान धूमधाम से चला शेषनाग को काँता पृथ्वी को धमाता रात दिन चलकर नागौर से आध कोस पर जा पहुँचा ६२१, यह समाचार सुन समरसिंह का घन पर मंत्री कैमाम को रखकर आप मुलानान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना ६२२, जैसे समुद्र में कमल फूले हों इस प्रकार से मुलानान को सेना ने डेरा दिया ६२२, मंत्रों उठने ही समरसिंह आगे मुलानान के दल की ओर बढ़ा, उसकी सेना के चलने से धूल उड़ने लगी ६२२, धूल उड़ने से सब विशा धूम्ररी हो गई, दोनों दलों का द्वियार सज सज कर लड़ने के लिये तैयार हो जाना ६२२, लड़ाई का आरम्भ होना ६२२, युद्ध का वर्णन ६२३, रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन ६२५, पृथ्वीराज की विजय, यह बुद्धि ही सेना का भागना ६२३, सूर्यास्त होना ६२३, रात होना । सेना का डेरे में जाना ६२३, चामंडराय आदि सरदारों का रात भर जागकर चौकमी करना ६२३, शहाबुद्दीन के सरदारों का रात को चौकी देना ६२८, पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन ६२८, यह बुद्धि ही सेना का वर्णन ६२८, मुलानान के सरदारों के क्रम से मजदूर खड़े होने का वर्णन ६२९, घड़ी दिन चढ़े मुलानान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का आगे बढ़ना, दोनों सेना का सामना होना ६२९, प्राण फाल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन ६२९, रावल समरसिंह का सब सरदारों से पूछना कि क्या हाल है वीर दूढ़ है और डगता है । सभी का उत्साह पूर्ण वीरता का उत्तर देना ६३०, रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़कर स्वामी का साथ देना है वही मचना वीर है ६३०, दोनों सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना ६३०, पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना ६३०, मुलानान का रणमज्जा से मजदूर मवार होना ६३१, हिन्दुओं के तेज के आगे भीरों का धीर छूटना ६३१, एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर से रावल समरसिंह का शत्रुओं पर दूटना ६३१, युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन, अरब खाँ का मारा जाना ६३१, पाँच घड़ी दिन चढ़े वीरता के साथ लड़ कर अरब खाँ का मारा जाना ६३२, सुमान खाँ का क्रोध करके लड़ने को आना ६३२, युद्ध का वर्णन ६३२, ग्यारह दिन

युद्ध होने पर सुलतान की सेना का निर्बल होना। रावल समरसिंह का तिरछी ओर से शत्रु सेना पर टूटना ६३२, युद्ध वर्णन ६३३, खुरासान का घोर युद्ध करना ६३३, समरसिंह की वीरता का वर्णन ६३३, बड़े बड़े बीरों का मारा जाना, ६३४, गण्डर खां और तातार खां दोनों का मारा जाना ६३४, याकूब खां का घोर युद्ध वर्णन ६३४, जब आधी घड़ी दिन रह गया तो निसरत खां और तातार खां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया ६३४, घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार लेकर टूट पड़ना ६३५, रावल की वीरता का वर्णन ६३५, शाह का प्रबल पराक्रम करना हिन्दू सेना का घबड़ाना ६३५, रावल का क्रोध कर स्वयं सिंह के समान टूट पड़ना ६३५, दोनों सेनाओं का लथपथ होकर घोर युद्ध करना ६३६, रावल के क्रोध कर लड़ने का वर्णन ६३६, युद्ध की शोभा का वर्णन ६३६, रावल का शत्रु सेना को इतना काट कर गिराना कि सुलतान और उसके सेनानियों का घबड़ा जाना ६३७, पृथ्वीराज का अपनी कमान संभाल कर शत्रुओं का नाश करना ६३८, सुलतान का अपनी सेना को ललकारना कि प्राण के लोभ से जिसको भागना हो तो भाग जाओ मैं तो यही प्राण दूंगा ६३८, सब लोगो का सुलतान की बात सुन बढ़ाई करना ६३८, सुलतान का तातार खां से कहना कि संसार में सब स्वार्थी हैं मरने पर कोई किसी के काम नहीं आते ६३८, शाह का कहना कि सच्चा सेवक, मित्र, स्त्री वही है जो स्वामी के गाढ़े समय मुंह न मोड़े ६३९, सुलतान की सेना का फिर तमक कर लौट पड़ना और लड़ाई करना पांच खां और पांच ख्वामों का घोर युद्ध मचाना ६३९, युद्ध का वर्णन ६४०, कन्ह का खुरासान खां को मारना ६४१, खुरासान खां के गिरते हिन्दुओं की सेना का फिर तेज होना ६४१, पृथ्वीराज का ललकारना कि सुलतान जाने न पावे इसको पकड़ो सब सरदारों का टूट पड़ना ६४१, घोर युद्ध होना, शाह और पृथ्वीराज का सम्मुख युद्ध ६४२, शहाबुद्दीन का तलवार से और पृथ्वीराज का कमान से लड़ना ६४२, दोनों नरेशों का युद्ध वर्णन ६४२, घोर युद्ध वर्णन शाह की सेना का भागना ६४३, शाह की सेना का भागना और शाह का पकड़ा जाना ६४४, सुलतान की सेना के भगैठ का वर्णन ६४४, रविवार चतुर्दशी को समर सिंह का यह युद्ध जीतना और घन निकालने को चलना ६४५, पृथ्वीराज के सुलतान को पकड़ने पर जय जयकार होना ६४५, इस विजय पर चारों ओर आनन्द ध्वनि होना ६४५, राजगुरु का कहना कि अब विजय कर के एक बेर दिल्ली चलिए फिर मुहूर्त बदल कर आइएगा ६४५, राजा का पूछना कि पीछे लौटने की क्यों कहने हो इसका कारण कहो ६४५, उनका उत्तर देना कि इस विजय का उत्सव घर पर चल कर करना चाहिए ६४६, यहाँ राव दाहिम के साथ सेना चन्द भट्ट और सामंतों को छोड़ कर शुभ काम कीजिए ६४६, वहाँ से लौट कर तब घन

निकाटना चाहिए ६४६, पृथ्वीराज का दाहिम का मत मानकर दिल्ली चलना स्वीकार करना ६४६, फागुन सुदी तेरस को दिल्ली यात्रा करना ६४६, रावक के साथ दाहिम आदि सरदारों और सेना को छोड़ कर और कुछ सामंतों और सेना को लेकर दिल्ली यात्रा करना ६४६, राव पञ्जा कन्ह आदि राजा के साथ चले ६४६, शत्रु को जीत कर होलिका पूजन के निकट राजा चले ६४७, होलिका की पूजा विधि से करके शाह को लिए घर की ओर चले ६४७, कुमार का पैतल आध कोम प्रागे बढ़ कर मिलना ६४७, राजा का कुमार को सवार होने की आज्ञा देना ६४७, चैन नदी समीप को महलों में पहुँचे ६४७, महल में सब स्त्रियो ने आकर निछावर किया ६४७, स्त्रियाँ अपने अपने घर गईं राजा ने विश्राम किया और वे नाना भांग विलाम कर सुखी हुए ६४७, शहाबुद्दीन की डोन्गी मंगाकर उसे भोजन कराया और आज्ञा दी कि इन्हें सुख से रक्खा जाय ६४७, शाह के पकड़े जाने और दिल्ली पहुँचने का समाचार पाकर उनके अनुचरों का आतुर होना ६४८, एक बीर ने दौड़ आकर यह समाचार तातार खा को दिया ६४८, ततार खाँ ने खत्री को तुरन्त पत्र देकर दिल्ली भेजा कि आप बड़े भारी राजा हैं अब कृपा कर शाह को छोड़ दीजिए ६४८, खत्री का पत्र सौ सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना ६४८, खत्री शकुनों का विचार करता बारह कोम नित्य चलता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा ६४८, खत्री लोरक का दिल्ली के पाम पहुँचना ६४८, लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में ठहरना और वहीं भोजन करना ६४९, दो घड़ी दिन रहे दिल्ली में प्रवेश किया ६४८, नगर में घुमते ही फूल की डाली लिए मालिन मिली यह शुभ शकुन हुआ ६४९, खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुँचना ६४९, ड्योढ़ी पर से समाचार मिजवाया कि तातार खाँ का भेजा वकील आया है राजा ने तुरन्त साम्हने लाने की आज्ञा दी लोरक ने दरबार में आकर सलाम किया ६४९, सभा में बैठे सामंतों का वर्णन राजा की आज्ञा से लोरक का सलाम कर बैठना ६४९, लोरक ने तीन सलाम करके तातार खाँ की अर्जी राजा को दी ६५०, मधु शाह प्रधान को पत्र दिया कि पदो ६५०, ततार खाँ की अर्जी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना ६५०, राजा ने अर्जी मुनकर हँस दिया और खत्री को विदा किया ६५०, दूसरे दिन लोरक फिर दरबार में आया ६५०, लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह को छोड़ने की प्रार्थना करना पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी नाम क्यों पड़ा? ६५०, लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन बैठा वह बड़ा कामी था पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान न हुआ तब शाह निजाम की टहल करने लगा ६५१, शेख निजामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशिर्वाद दिया कि तुम्हें ऐसा प्रतापी बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं को

जीत दिल्ली पर सर्पगा ६५१, शाह घर आया चित्त में चिन्ता हुई कि जो यह लडका ऐसा प्रतापी होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा । इतने में ही बेगम को गर्भ रहने का समाचार मिला । शाह ने सिर ठोका और उस बेगम को निकाल दिया पांच वर्ष बीते शाह मर गया वजीर लोग सोच में पड़े किसे गद्दी पर बैठावें एक शेख ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर बालक को दिखलाया ६५१, उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया ६५२, ज्योतिषी को बुला कर जन्म पत्र बनवाया उसने कहा कि यह जलालुद्दीन से भी बड़बर प्रतारी होगा इस की जाति गोरी है यह हिन्दुस्तान पर राज्य करेगा ६५२, लोरक ने शाह की पूर्व कथा इन प्रफार कह सुनाई ६५२, पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान शृङ्गारहार नाम का हाथी है उसके शाह बहुत चाहता है उसको और तीस हजार उत्तम घोड़े हो तो शाह छूटे ६५२, खत्री ने कहा कि जो आप माँगेंगे वही दूंगा पर शाह छूटना चाहिए ६५३, पत्र लिख कर दूत को दिया कि जो इकरार हुआ है वह भेजो ६५३, पत्र पाने तानार खाँ ने हाथी घोड़े भेज दिये जो दस दिन में रात दिन चल कर पहुँचे ६५३, दण्ड पाने पर सुलतान को छोड़ देना ६५३, सुलतान का गजनी पहुँच कर अपने उमराओं से मिलना ६५३, शाह के महल में आने पर तानार खाँ खुशामत खाँ का बड़ा आनन्द मनाना ६५३, पृथ्वीराज का शृङ्गारहार को सामने रखना हाथी को बड़ाई और राजा की स्वारी की दोभा वा वर्णन ६५३, हाथी के रूप और गुणों का वर्णन ६५४, सब सामंतों को साथ ले एक दिन शिकार के लिए राजा का जाना वहाँ कन्ह चौहान का आना ६५४, एक अनुचर का आकर एक सूअर के निकलने का समाचार देना ६५४, राजा का आज्ञा देना कि उसे रोकने भागने न पावे ६५४, चारों ओर में नाका रोक कर सूअर को खदेरना और उसके निकलने पर राजा का तीर मारना ६५४, सूअर का मरना सरदार का राजा की बड़ाई करना ६५५, बड़े आनन्द से राजा राज को लौटना था कि एक पारधी ने एक दोर निकलने का समाचार दिया ६५५, एक नदी के किनारे वृषभ को मारकर मिह खाना था राजा ने पारधी को आज्ञा दी कि तुम उसको हारो ६५५, राजा का शृङ्गारहार गज पर चढ़कर मिह को मारने चलना और मिह को हँकारने की आज्ञा देना ६५५, कोलाहल मुन मिह का क्रोधकर निकलना । राजा का तीर मारना और तीर का पार हो जाना । क्रूरम्भ का बड़े कर तलवार में दो टुक कर डालना । सब का प्रशंसा करना ६५५, राजा के शिकार करने पर बाजे बजने लगे ६५६, सब सरदारों में शिकार बँटवा दिया ६५६, राजा का दिल्ली लौटना, कवि चन्द का आकर फूरो की वर्णन करना ६५६, राजा का गुह से घन निकालने चलने का मुहूर्त पूछना ६५७, राजगुह का बैसाख सुबी तीज को मुहूर्त निकालना ६५७, पृथ्वीराज का मुहूर्त पर धूमधाम से यात्रा

करना ६५७, एक वेश्या का शृङ्गार किए मिलना । राजा का शुभ शकुन मानना ६५७ रात दिन कूब करते हुए राजा का चलना ६५७, रावल और सामंतों तथा सेना का भागे बढ़कर राजा से मिलना ६५७, सब सरदारों और रावल के मिलने से बड़ी प्रगन्नना का होना ६५७, रावल से मिलकर राजा का प्रेम पूर्वक शिकार और शाह के दण्ड का समाचार कहना ६५८, शाह के पकड़ने और दण्ड देकर छोड़ने आदि का सविस्तार समाचार कहने पर बड़ा आनन्द उत्साह होना ६५८, राजा का गुरु से लक्ष्मी निकालने के विषय में अरिष्टों का प्रश्न करना ६५८, धन निकालने के विषय में राजा ने कैमास को बुलाकर परामर्श किया । कैमास ने कहा कि मैं चौहानों की पूर्व कथा सब जानता हूँ, आप को देवी का बर है यह विश्रय जानिए । इस धन के निकलने के समय देव प्रगट होगा, उससे लोफ डर कर भागेंगे ६५९, पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू बन में चले, वहाँ एक पत्थर का शिलालेख कैमास को दिखाई दिया ६५९, उस शिलालेख को देखकर सब प्रगन्न हुए और आशा बँधी ६५९, कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा ६५९, उसे पढ़कर उसी के प्रमाण में नाप कर खोदवाना आरम्भ किया ६६०, दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरमिह पूजा करने लगे ६६०, चन्द्र यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जगजोति कह गए है कि पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर करके नगीर बन के धन को भाँगे ६६०, राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूँ ६६०, तब चन्द्र को बुलाया, उसने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुब हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है ६६०, रात को सब सामंतों को रखकर रणगाड़ी करो ६६१, कुछ सरदार साथ रहे कुछ सोए । सबेरे वह स्थान खोदा गया, वहाँ एक पुष्प की मूर्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उनको कैमास ने पढ़ा ६६१, उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देखकर तुम न चैनो तो पाखान को देखो ६६१, सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे ६६१, धुन मुहूर्त आते ही कमान की मूठ में ताली थी वह देखी ६६१, उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखाई पड़ा जिसे देख सब भागे ६६१, विक्रम संतान ग्यारह मी अड़तीस को मोमेश्वर के बेटे पृथ्वीराज ने असंख्य धन पाया ६६१, चन्द्र ने मन्त्र से बीलकर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे ६६१, चन्द्र की बात मानकर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहाँ आए ६६१, राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का मिर काटकर धन निकालो ६६१, शिला काटकर धूम खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी कांपने लगी ६६२, शस्त्र की नोक से तीग अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊँचा खोदा तब खजाने का मुँह खुल गया ६६२, बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला ६६२, उस राक्षस ने माया करके खड्डना आरम्भ किया ६६३, जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द्र ने देवी की स्तुति

की कि मां अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले ६६३, देवी की स्तुति ६६३, देवी ने प्रमन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया ६६४, बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारा गया ६६४, चन्द ने स्तुति करके इस राक्षस और घन की पूर्वं कथा पूछी ६६४, देवी ने कहा कि जी लगाकर तू इसकी पूर्वं कथा मुन ६६४, सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलयुग में वीरता प्रधान है ६६४, रघुवंश में आनन्द नामक एक राजा हुआ है उसकी कथा कहती हूँ ६६५, वह राजा बड़ा अन्यायी था घर्म विरुद्ध काम करता था ६६५, यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कर्मों को देख ऋषियों ने शाप दिया कि जान राक्षस हो जा ६६५, उसका शरीर भस्म हो गया और वह दैत्य होकर यहाँ रहने लगा ६६५, इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई ६६६, तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब घन निकालने में दैत्य दुःख न दे ६६६, इष्ट मंत्र का साधन करने यज्ञ करते हुए खोदकर लक्ष्मी निकालना आरम्भ किया ६६६, देव ने चन्द से कहा मेरे पिता रघुवंशी घर्माधिराज थे मैं उनका बेटा आनन्दचन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने न्याय से संसार को जीता, इन लिये शाप से मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम बीर पड़ा ६६६, बीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैंने ही यहाँ रक्षित था। दैगति से इसी को लेकर मेरी यह गति हुई ६६९, बीर का अपने पिता रघुवंश राज की प्रशंसा करना ६६७, चारो युगो के घर्म का वर्णन ६६७, बीर का अपने बल का वर्णन करके अपने मामले घन निकालने को कहना ६६७। चन्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने से अब राजा घन निकालेंगे ६६७, चन्द की सुन्दर बानी सुनकर बीर ने प्रसन्न होकर घन निकालने की आज्ञा दी ६६८, बीर की बात सुनकर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि शुभ कर्म कराओ और आनन्द से घन निकालो ६६८, चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रमन्नता के लिये जो कहो वही करें ६६८, बीर का कहना कि मेरी प्रमन्नता के लिये पंडित में जप कराओ और महिष का बलि देकर घन निकालो ६६८, दानव यह कहकर स्वर्ग गया। चन्द का राजा से कहना कि शाह को तो तुम वांछ चुके अब रावल के साथ घन निकालो ६६८, राजा ने रावल को बुलाकर ज्योतिषी पंडित को बुलाया, पंडित ने होम की सामग्री मंगाकर वेदी आदि बनवाकर शुभ अनुष्ठान का प्रारम्भ किया ६६९, छ. प्रधानों को पास रखकर राजा ने पत्थर खोदकर हटवाया ६६९, वह स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला, उसमें एक मोने के हीराजटित टिडोले पर मोने की पुनली मोने की शीणा बजाती और नाचती हुई निकली, उसका नाच देखकर आश्चर्य होने लगा ६६९, पुनली को देख गुहराम का आश्चर्य करना ६७०, चन्द का कहना कि यह मायारूपी है ६७१, रावल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुनली किसका अवतार

है ६७०, चन्द ने कहा कि ठहरिए तब कहूंगा और उसने बीर को स्मरण करके पुनली का भेद पूछा ६७०, देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि गानी है ६७०, यह ऋद्धि साक्षात् लक्ष्मी का रूप है इसे तुम बे खटकें भोग सकते हो। यह देव बानी सुनकर चन्द प्रसन्न हुआ और रावल का संगय मिटा ६७०, इम हिंडोले को पूजन में रखना यह कहकर देव अन्तर्धान हो गए। राजा फिर धन निकालने लगे ६७१, कुत्रे के से भण्डार मा धन निकलना, मव को आश्रय होना और तब सुरंग को देखना ६७१, पुनली का बिना कुछ बोले चन्द और रावल की ओर तीक्ष्ण कटाक्ष से देखना ६७१, चन्द और रावल का मूर्छित होकर गिरना। कुछ देर में सँभल कर उठना ६७१, उठने पर राज गुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन निकला अब क्या आज्ञा है ६७२, धन के कलश आदि का वर्णन। रावल और पृथ्वीराज का एक मिहामन पर बैठना ६७२, एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और रावल आए ६७२, पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुण का वर्णन ६७२, देव मंत्र से दोनों राजाओं के लिये पूजा की और दस महिष बलि चढ़ाया। चतुःषष्टि देवि ने प्रसन्न होकर हृद्धार किया ६७३, राजा ने सिंहासन हाथ में लेकर देवी की स्तुति की देवी ने प्रसन्न होकर हृद्धार किया ६७३, देवी पृथ्वीराज को आशीर्वाद देकर अन्तर्धान हो गई ६७३, पृथ्वीराज ने सिंहासन और लक्ष्मी मँगाकर रावल के साम्हने रखी। रावल ने कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई है तुम्हारी है। पाटन के यादव राजा की कुर्वरि समित्रता की सगाई का विचार ६७३, रावल समरसिंह का धन लेने से इन्कार और कहना कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्हीं लो ६७४, पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात में रावल को क्रोध आ गया तब उन्होंने अनुचरों को धन ले लेने को कहा ६७४, पृथ्वीराज से रावल का धर जाने के लिये सीख मांगना पृथ्वीराज का कहना कि दस दिन और ठहरिए शिकार खेलिए। रावल का आग्रह करना ६७४, प्रेमाशु भरकर रावल ने विदा मांगी, पृथ्वीराज उठकर गले से गले मिले ६७४, पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा सदा ही स्नेह बनाए रहिएगा ६७४, रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो देह हैं, हमको तुम से बढ़कर कोई प्रिय नहीं है ६७५, रावल समरसिंह गदगद हो विदा हुए और अपने देश की ओर चले ६७५, रावल को विदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया और रावल के यहा हाथी आदि भेट भेजा ६७५, रावल ने चन्द को मोती की माला देकर विदा किया और आर विसौर को कूच किया ६७५, कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का दिल्ली चरना ६७५, कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया। राजा खट्ट वन में शिकार खेलता चला ६७५, पृथ्वीराज ने बहुत से धन को बराबर भाग करके सब सामंतों को बांट दिया

सरदारों का बांट का वर्णन ६७६, बड़ी धूमधाम से दिल्ली के पास पहुंचे, राजकुमार ने आगे से आकर दण्डवत किया। बड़ा आनन्द उत्सव हुआ ६७६, जेठी सुदी तेरम रविवार को राजा दिल्ली आए ६७६, महल में आने पर रानियों ने मुत्ररा किया ६७६, दाहिमा, आदि रानियां न्योछावर कर राजा की सीख पा अपने महल में गईं ६७६, रात को राजा पुण्डीरी के महल में रहे। सबेरे बाहर आए, मन में शाह के दण्ड का विचार उठा ६७७, बादशाह से जो घोड़े आदि दण्ड लिया था सब सरदारों में बांट दिया। अपने पास केवल यश रक्खा ६७७।

[समय २५] अथ शशिवृतावर्णनं नाम प्रस्ताव

[पृष्ठ ६७८-७६३]

शशिव्रता की आदि कथा वर्णन की सूचना ६७८, ग्रीष्म में पृथ्वीराज का विहार करना ६८, ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आरम्भ होना ६७८, राजा सभा में बैठे थे कि एक नट आया, राजा ने आदर कर उसका परिचय पूछा ६७८, नट को गुण दिखलाने की आज्ञा देना ६७८, नट का कहना कि मैं नाटक आदि सब गुण जानता हूँ आर देखिए सब दिवाना हूँ ६७९, देवी की वन्दना करके नृत्य आरम्भ करना ६७९, नट का नाच के आठ भेद बतलाना ६७९, आठो भेदों के नाम ६७९, नृत्य देव कर बैठने का हुक्म देना ६७९, राजा का नट से उसके निवाम स्थान का नाम पूछना ६७९, नट का कहना कि देवगिरि में मैं रहता हूँ वहां का राजा मोमदंशी जादव बड़ा प्रतापी है। राजा की बड़ाई ६७९, मैं उनका नट हूँ आपका नाम सुन यहां आया ६८०, राजा का पूछना कि उनकी कन्या का विवाह किमके साथ निश्चय हुआ है ६८०, नट का कहना कि उज्जैन के कमधेज राजा कयहां सगाई ठहरी है ६८०, जादव राजा ने सगाई के लिये ब्राह्मण उज्जैन भेजा है पर लड़की को यह सम्बन्ध नहीं भाया ६८०, नट का शशिव्रता के रूप की बड़ाई करना ६८०, सभा उठने पर राजा का नट को एकान्त में बुलाना ६८१, नट का शशिव्रता का रूप वर्णन करना ६८१, उसका रूप सुन राजा का आमन्त्र हो जाना और नट से पूछना कि हमकी सगाई मुझसे कैसे हो ६८१, नट का कहना कि हमका उत्तर पीछे दूंगा मुझने इम में जो हो सकेगा उठान रखूंगा ६८१, राजा का नट को इनाम देकर विदा करना, नट का कुक्षेत्र की ओर जाना ६८१, ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आगमन हुआ, राजा का मन शशिव्रता की ओर लगा रहा ६८१, राजा का शिव जी की पूजा करना, शिव जी का प्रसन्न होकर आधी रात के समय दर्शन देना ६८२, शिव जी का मनोरथ सिद्ध होने का बर देना ६८२, राजा का स्वप्न में बर पाकर प्रसन्न होना और किसी तरह वर्षा ऋतु काटना ६८२, वर्षा

की शोभा का वर्णन राजा का शशिव्रता के विरह में व्याकुल होना ६८२, वर्षा
 वर्णन-राजा का विरह वर्णन ६८२, वर्षा बीत कर शरद का आगमन ६८३,
 शरदागमन-शरद वर्णन ६८३, राजा का अपने सरदारों के साथ शिकार के
 लिये तय्यारी करना ६८३, राजा का शिकार के लिये सवार होना ६८४,
 माप त्रदी मङ्गलवार को शिकार के लिये निकलना ६८४, राजा की धूमधाम
 का वर्णन ६८४, बन में जानवरों का वर्णन ६८४, शिकार का वर्णन ६८४,
 शिकार पर जानवरों का छोड़ा जाना ६८५. भालू, सूअर आदि का आगे होकर
 निकलना ६८५, राजा के बन में घुमने पर कोलाहल होने से शूकरों का भागना
 ६८५, सब सरदारों का भी वहाँ पहुँचना, एक बधिक का आकर शूकर का
 पना देकर राजा से पैदल चलने का निवेदन करना ६८५, राजा का तुरन्त
 घोड़ा छोड़ तुवक कंधे पर रख बागह की खोज में चलना ६८५, सूअर को
 राजा ने मार कर बधिक को इनाम देकर सुन्दर बारी में विश्राम किया, समय
 होने पर भोजन की तय्यारी होना ६८६, चारों ओर राजा के शिकार की बड़ाई
 होना ६८६, राजा का अकेले बधिक के साथ शिकार के पीछे चलना और
 सरदारों का राजा के पीछे चरण ६८६, शूकी का शुक में पृष्ठना कि दिल्ली
 के राजा के गन्धर्व विवाह का समाचार कहो शुक ने कहा कि ज्ञादन राजा ने
 नागियल देकर ब्राह्मण को भेजा ६८७, ब्राह्मण का जैचन्द्र के यहाँ जाकर
 अपने भतीजे वीरचन्द्र में समिव्रता की मगाई का संदेमा देना। एक गन्धर्व यह
 सुनता था वह तुरन्त देगिरि की ओर चला ६८७, गन्धर्व का शशिव्रता के
 पाम भाना, वह बन में विचर रही थी ६८७, सोने के हंस का रूप धरकर
 गन्धर्व का दिखलाई देना, शशिव्रता का उसको पकड़ना और पृष्ठना कि तुम
 वीर ही। हंस का कटना कि मैं गन्धर्व हूँ देवराज के काम को आया हूँ
 ६८७, शशिव्रता का पृष्ठना कि हम पहिले कौन थी और हमारा पति कौन
 होगा ? हंस का कहना कि तू चित्ररेषा नाम की अप्सरा थी, अपने रूप और गान
 के गर्व से इन्द्र से लड़ गई इससे दक्षिण के राजा की बेटी हुई ६८८, हंस ने
 कहा कि पद्म अर्थात् कन्यकुब्ज नरेश के भतीजा वीरचन्द्र के साथ तुम्हारे
 मातापिता ने मगाई की है वह तुम्हारे योग्य बर नहीं है ६८८, उसकी आयु एक
 ही वर्ष है, इस लिये दया करके राजा इन्द्र ने मुझको तुम्हारे पाम भेजा है
 ६८८, शशिव्रता ने कहा कि तुमने मां बाप के समान स्नेह किया सो तुम
 जगसे कहो उमी से मैं ब्याह करूँ ६८८, हंस का कहना कि दिल्लीपति चौहान
 तुम्हारे योग्य बर है ६८८, उसके सौ सरदार हैं, उमने गजमीपति को पकड़कर
 दण्ड लेकर छोड़ दिया ६८८, महाबली चालुक्य भीमदेव की जीता है यह सुन
 शशिव्रता का प्रसन्न होकर कहना कि तुम जाओ और उन्हें लाओ जो वह न आवेंगे
 तो मैं शरीर छोड़ दूंगी ६८८, हंस वहाँ से उड़कर दिल्ली आया ६८८, बन

में शिकार के समय हंस का आना उसे देख कर आश्चर्य में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना ६८९, बन में शिकार के समय हंस का आना उसे देखकर आश्चर्य में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना ६८९, संध्या को हंस रूपी दूत का सबको हटा कर राजा को पत्र देना दूत का कहना कि एकान्त में कहने की बात है इतना कह कर चुप हो जाना ६८९, हंस का कहना कि शशिव्रता का गुण कहने को शारदा भी समर्थ नहीं है ६९०, चन्द्र और सूर्य के बीच में शशिव्रता ऐसी सुशो-भित है मानों शृङ्गार का सुमेर हो ६९०, शशिव्रता के रूप का वर्णन ६९०, पृथ्वी-राज का शशिव्रता का रूप मुनकर उसके मिलने की चिन्ता में रात दिन लगे रहना सबेरे उठने ही राजा के दूत से पूछना ६९१, हंस का राजा देवगिरि का जैवन्द के यहां सगाई भेजने और शशिव्रता के पण ठानने का वृत्तान्त कहना ६९१, शशिव्रता की विरह जल्पना का वर्णन ६९१, शशिव्रता का चित्ररेषा के अवतार होने तथा पृथ्वीराज के पाँके लिये रात दिन शिव जी की पूजा करने का वर्णन ६९२, वह आप अब मिल गए देर न कीजिए चलिए ६९२, मैं महादेव जी की आज्ञा में तुम्हारे पास आया हूँ ६९२, शशिव्रता के रूप गुण का वर्णन ६९३, पृथ्वीराज का पूछना कि तुम सब शास्त्र जानते हो सो चार प्रकार की स्त्रियों के गुणादि का वर्णन करो ६९३, हंस को देर होने के भय से कोई बात अच्छी नहीं लगती ६९३, हंस कहता है कि स्त्रियों की बहुत जाति है पर शशिव्रता पश्चिमी है ६९३, राजा का उत्तम स्त्रियों का लक्षण पूछना ६९३, हंस का पश्चिमी, हस्तिनी, चित्रणी, और संखिनी इन चारों का नाम गिनाना ६९३, राजा का चारों के लक्षण पूछना ६९३, हंस का लक्षण वर्णन करना ६९३, स्त्रियों के उत्तम गुणों का वर्णन ६९४, पश्चिमी का वर्णन ६९४, हस्तिनी का वर्णन ६९४, चित्रणी का वर्णन ६९४, संखिनी का वर्णन ६९४, शशिव्रता के रूप तथा नखशिख शोभा का वर्णन ६९५, राजा का पूछना कि अप्सरा का अवतार क्यों हुआ ६९६, हंस का विवरण कहना ६९६, इन्द्र और चित्ररेषा के झगडा तथा शाप का वर्णन ६९६, पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप इन्द्र का देना ६९६, अनेक स्तुति करने पर शिव जी का प्रमत्त होना ६९७, शिवजी का प्रमत्त होकर वर देना कि तेरा जन्म राजकुल में होगा और ब्याह भी छत्रप्रागी में होगा पर तेरा हरन होगा और तेरे कारण घोर जुद्ध होगा। शिव की उमी बानी के अनुसार वह अपने समान पति चाहती है ६९७, दिन पूरा होने पर उत्तम पति पाकर फिर अप्सरा मृत्युलोक में गिरी वही जादव राज की कन्या शशिव्रता है और तुम्हें अपने पति वरन किदा है ६९७, हंस कहता है कि इस अप्सरा का अवतार तुम्हारे लिए हुआ है ६९८, हंस कहता है कि राजा जादव ने शशिव्रता को कान्यकुब्जेश्वर को ब्याहना विचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें मन अर्पण कर शिव की आराधना की। शिव की आज्ञा से मैं हंस रूप धर तुम्हारे पास आया

हूँ शीघ्र चलो राजा का प्रस्तुत होना । दस सहस्र सेना सजना ६९८, राजा का कहना कि जादव राजा के गुणों का वर्णन करो ६९८, हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना ६९९, उनके बेटे और बेटों के रूप गुण का वर्णन ६९९, एक आनन्दचन्द खत्री था उसकी बहिन चन्द्रिका कोट में ब्याही थी वह विधवा हो गई और भाई उसको अपने यहाँ ले आया ६९९, वह गान आदि विद्या में बड़ी प्रवीणा थी ६९९, उसके पास शशित्रता विद्या पढ़ती थी उसी के मुख से आपकी प्रशंसा सुन कर वह आप पर मोहित हो गई है ७००, यों ही दो वर्ष बीत गए बाल्यावस्था बीतने पर काम की चटपटी लगी ७००, तभी से नित्य शिव को पूजा करके वह तुम्हें मिलने की प्रार्थना करती रही ७००, शिव पार्वती का प्रसन्न हो कर सपने में वर देना ७००, प्रसन्न होकर शिव पार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि जयचन्द व्याहने आवेगा सो तुम रुक्मिणी हरण की भाँति इसे हरण करो ७०१, राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों व्याहरचा और क्यों प्रोहित भेजा ७०१, हंस का कहना कि राजा ने बहुत दुँदा पर दैव की इच्छा उसे जयचन्द ही जंचा वहाँ श्रीफल ले प्रोहित को भेजा ७०१, प्रोहित ने जयचन्द को जाकर श्रीफल और वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया ७०१, टीका देकर प्रोहित ने कहा कि साहे को दिन थोड़ा है सो शीघ्र चलिए ७०२, प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तयारी और उत्सव करने की आज्ञा देना ७०२, हंस कहता है कि वह पचाम सहस्र सेना और मात महस्र हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो पृथ्वीराज ने दस सहस्र सेना लेकर चलना विचारा ७०२, पृथ्वीराज का शशित्रता से मिलने के लिये संकेत स्थान पूछना ७०३, ब्राह्मण का संकेत स्थान बतलाना ७०३, राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊँगा ७०३, हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहाँ अवश्य पहुँचिए ७०३, इतनी वार्ता करके हंस का उड़ जाना ७०३, दस हजार सेना सहित पृथ्वीराज का तैयारी करना ७०३, राजा का सब सामंतों को हाथी घोड़े इत्यादि वाहन देना ७०३, माघ बदी पंचमी शुक्रवार को पृथ्वीराज वा यात्रा करना ७०५, चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना ७०५, चलने के समय राजा को भय दिलाने वाले शकुनों का होना ७०६, राजा का इन शकुनों का फल चन्द से पूछना ७०६, चन्द का कहना कि इस शकुन का फल यह होगा कि या तो कोई झगडा होगा या ग्रहविच्छेद ७०६, चन्द ने राजा को जँचन्द के पूर्व वर स्मरण दिला कर कहा कि इस काम में हाथ देना मानों बैठे बैठे भारी शत्रु को जगाना है ७०६, वय, पराक्रम, राज और काम मद मे मत्त राजा ने कुछ ध्यान न दिया और दक्षिण की ओर शीघ्रता से वह चला ७०६, पृथ्वीराज से पहिले जँचन्द का देवगिरि पहुँचना ७०७, जँचन्द के साथ एक लाख दस हजार सेना का वर्णन जँचन्द का आना सुन शशिवृता का दुखी होना ७०७, शशिवृता मन ही मन

देवताओं को मनाती है कि मेरा धर्म न जाय और उसका प्राण देने को प्रस्तुत होना ७०७, सखी का समझाना कि व्यर्थ प्राण न दे देख ईश्वर क्या करता है ईश्वरी लीला कोई नहीं जानता सखियों का श्री रामचन्द्र, पाण्डव आदि के प्राचीन इतिहास सुना कर धीरज धराना ७०७, राजा का पृथ्वीराज के आने और शशिवृता के प्रेम का समाचार जानकर हमीर समीर (?) से मत पूछने लगा ७०८, हमीर समीर का मत देना कि वीर चन्द को कन्यादान दीजिए ७०८, कन्या के प्राण देने के विचार और शकुन विचार से राजा भानु ने चुपचाप पृथ्वीराज के पास दूत भेजा ७०८, राजा ने पत्र में लिखा कि शिव पूजा के बहाने शिवाले में तुम को शशिवृता मिलेगी ७०९, इधर पृथ्वीराज के सरदारों का उन्साहित होना ७०९, कवि कहता है गन्धर्व ब्याह शूरवीर ही करते है ७०९, पृथ्वीराज का आना सुनकर मन ही मन राजा भानु का प्रसन्न होना, परन्तु वीरचन्द का सशक्त होना ७०९, पृथ्वीराज का नगर में होकर निवृत्ता स्त्रियों का झरोखों में देखना शशिवृता का प्रसन्न होना ७१०, राजा भानु के हृदय में पृथ्वीराज का आना सुनकर हर्ष शोक साथ ही उदय हुआ ७१०, पृथ्वीराज की सेना का उमङ्ग के साथ नगर में घूमना ७११, देवालय में शिव पूजा के लिये शशिवृता का जाना पृथ्वीराज का वहाँ पहुँचना ७११, पृथ्वीराज की प्रशंसा ७११, सखी का शशिवृता से कहना कि तू जिमका ध्यान करती थी वह आ गया देख ७११, शशिवृता का आँख उठा कर देखना दानों की आँखें मिलना ७११, मारे लाज के कुछ बोल न सकी पर नैन की मैन से बात हो गई ७१२, नैन श्रवण का संवाद ७१२, हम ने पहुँच कर शशिवृता से कहा कि ले पृथ्वीराज शिवालय में तुझ से मिलने आ गया ७१२, माता पिता की आज्ञा के शशिवृता का देवालय में जाना ७१२, शशिवृता के रूप का वर्णन ७१३, दम दामियों के साथ शशिवृता का शिवालय में आना ७१३, शशिवृता का रूप वर्णन ७१३, शशिवृता का चडोल पर चढ़ कर देवी की पूजा को आना ७१५, तेरह चडोलों को चारों ओर से घेरकर राजा भानु की सेना का चलना ७१५, सुयोदह के समय पूजा के लिये आना राजा की सेना का वर्णन ७१५, मन्दिर के पास पहुँच कर शशिवृता का पैदल चलना ७१५, शशिवृताके उस समय की शोभा का वर्णन ७१५, कान्यकुब्जेश्वर को देख कर शशिवृता का दुखी होना और मन में चिन्ता करना ७१६, एत और कान्यकुब्जेश्वर की सेना का जमाव होना और दूमरी और पृथ्वीराज की सेना का घेरना ७१६, पृथ्वीराज की सेना का चारों ओर से घेरना ७१६, जैचन्द और पृथ्वीराज की सेना की तुलना ७१७, दोनों सेनाएं तद्वार त्रिपु नैवार है। जियने द्रोपदी का पण रक्खा वही शशिवृता का पण रक्खेगा ७१७, मठ को देख कर शशिवृता के मन में काम उत्पन्न हुआ और अपने मन ही मन शिव को प्रणाम किया ७१७, तीस

ढोलियों के बीच में शशिवृता का चाँडोल था जिसको ५०० दासी घेरे हुई थीं। ५००० सवार और ५०००० पैदल सिप ही साथ में थे ७१७, शशिवृता ने चाँडोल से उतर कर पृथ्वीराज के कुशल की प्रार्थना की ७१८, बाजों का शब्द सुनकर सामंतों का चित्त पलट जाना ७१८, सेना में वीर रस का जागृत होना ७१८, देवालय के पास सब लोगों का चित्र लिखे से खड़े रह जाना ७१८, सतियों का जैचंद्र के भाई को शशिवृता का वर कहना जो उसे विष माँ लगा ७१, अपनी सेना सहित वह भी शिवपूजन के लिए वहाँ आया ७१९; तब तक पृथ्वीराज के भी ७००० सैनिक हथियार बन्द कपट भेष धारण किए हुए भोड़ घेरे पड़े ७१९, शशिवृता ने चाँडोल से उतर कर शिव की परिक्रमा की और पृथ्वीराज से मिलन होने की प्रार्थना की ७१९, शशिवृता का शिव जो की स्तुति करना ७१९, पृथ्वीराज सात हजार कपट बेपधारी कामरथी वीरों के साथ देवी के मन्दिर में घेरे पड़े ७२०, पृथ्वीराज और शशिवृता की चार आँखें होते ही लज्जा में शशिवृता की नजर नीची हो गई और पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ लिया ७२१, पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने गुह्रनों की खबर आ गई और इससे आँख में आंसू आने लगे पर उन्हें अशुभ जानकर उसने छिपा लिया ७२१, जिस समय पृथ्वीराज ने शशिवृता का हाथ पकड़ा पृथ्वीराज के हृदय में रुद्र, शशिवृता के हृदय में करुणा और उन सति के शत्रुओं के हृदय में विभक्त रस का संचार हुआ ७२१, वरिवृत्त से एक घरी ठहर कर पृथ्वीराज शशिवृता को साथ ले कर चल दिए ७२२, शशिवृता के पिता ने कन्या के बैर कमधञ्ज ने स्त्री के बैर से लड़ाई का विचार किया और सेना साजी ७२२, शशिवृता के पिता का कमधञ्ज के साथ मिलकर पांच घरी दिन रहे सकट व्यूह रचना ७२२, कमधञ्ज की सेना का वर्णन ७२२, घरियाल के बजते ही सब सेना जुट गई ७२३, चहुआन और कमधञ्ज सस्त्र लेकर मिले ७२३, शत्रुता का भाव उच्चारण करके दोनों ने अपने अपने हथियार कसे ७२३, दोनों सेनाओं के युद्ध का वर्णन ७३, युद्ध के समय शूरवीरों की शोभा वर्णन ७२४, कमधञ्ज की शोभा वर्णन ७२५, शशिवृता का चहुआन के प्रति सच्चा अनुराग था ७२५, पृथ्वीराज की श्री गेपजी से उपमा वर्णन ७२६, उम युद्ध में वीरों को आनन्द होता और कायर डरते थे ७२६, कवि का पृथ्वीराज को कलि में वीरों का सिरताज कहना ७२७, पृथ्वीराज और कमधञ्ज का मुकाबला होना ७२७, धन्य है उन शूरवीरों को जो स्वामिकाय्य के लिये प्राणों का मोह नहीं करते ७२७, पृथ्वीराज और कमधञ्ज का युद्ध २७, घोर युद्ध वर्णन ६२७, युद्ध की यज्ञ से उपमा वर्णन ७२८, कमधञ्ज का सर्वव्यूह रचना ७२८, पृथ्वीराज का मयूरव्यूह रचना ७२९, बीररस में शृंगाररस का वर्णन ६२९, पृथ्वीराज

की आज्ञा पाकर कन्ह का क्रुद्ध होकर झपटना ७३०, कन्ह का युद्ध वर्णन ७३०, पृथ्वीराज के वीर सामंतों का प्रशंसा ७३१, इस युद्ध को देखकर देवताओं का प्रसन्न हो कर पुष्पवृष्टि करना ७३२, सांस हो गई परन्तु कमधञ्ज की अनी न मुड़ी ७३२, कमधञ्ज का अपने वीरों को उत्साहित करना ७३२, सब रन भूमि में तीन हाथ ऊँची लाशें पड़ गईं ७३३, तीन घड़ी रात्रि हो जाने पर युद्ध बंद हुआ ७३३, पृथ्वीराज की सेना की समुद्र से उपमा वर्णन ७३३, युद्ध में नव रस वर्णन करना ७३३, राम रघुवंश का कहना कि जिस वीर ने युद्धरूपी काजी क्षेत्र में शरीर त्याग करके इस लोक में यश और अंत में ब्रह्म पद न पाया उसका जीवन वृथा है ७३४, गुरुगाम का पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच देना ७३४, कमधञ्ज और जह्व की मृत फौज की शोभा वर्णन ७३४, किन किन वीरों का मुकाला हुआ ७३४, रात्रि व्यतीत हुई और प्रातःकाल हुआ ७३५, प्रातःकाल होते ही घोड़ों ने ठी लाई, शूरवीरों ने तयारी की और दोनों तरफ के पौजी निशान उठे ७३५, शूरवीरों के पराक्रम से और सूर्य से उमा वर्णन ७३५, उस पंजर में यह गुण था कि हजार शस्त्र प्रहार होने पर भी शस्त्र नहीं लगता था ७३६, बैकुंठ वासी विष्णु भगवान पृथ्वीराज की रक्षा पर थे ७३६, इधर से पृथ्वीराज उधर से कमधञ्ज की सेना की तयारी होना ७३६, आगे यादवराय की सेना तिस पीछे कमधञ्ज की सेना, निम के पीछे हाथियों की कतार देकर रूमी और अरबी, का सेना सज कर युद्ध के लिये चलना ७३६, सेना की मजावट की शोभा वर्णन और उसे देख कर भूत वेताल योगिनी आदि का प्रमत्त हो कर नाचना ७३७, सुमञ्जित सेना से पावम की उपमा वर्णन ७३८, अंकुस लगा कर हाथी बढ़ाए गए और शस्त्र निकाल कर शूरवीर लोग आगे बढ़े ७३८, कमधञ्ज के शीश पर छत्र उठा उसकी शोभा ७३८, घोड़ों की टापों से आकाश में धूल छा गई ७३८, चहुआन का घोड़े पर सवार होना ७३९, उस दिन तिथि दसमी को युद्ध के समय के तिथि योग नक्षत्रादि का वर्णन ७३९, युद्ध वर्णन ७३९, घायल सामंतों की शोभा ७३९, शूरवीरों का क्रोध में आकर युद्ध करना ७३९, कवि का कथन कि उन सामंतों की जहाँ तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है ७४०, कमधञ्ज के वीर खवाम का युद्ध और पराक्रम वर्णन ७४१, खवाम तो मारा गया परन्तु उसका अखंड यश युगान युग चलेगा ७४२, खवाम के मरने से कमधञ्ज को बड़ा दुःख हुआ और उमने अपने मंत्रियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिए ७४२, मंत्रियों का कहना कि समय पड़ने पर ऋषीव, दुर्योधन, श्री रामचन्द्र, पांडव, अर्जुन इत्यादि सब ने अपनी अपनी स्त्रियों को छोड़ दिया ७४२, कमधञ्ज के मंत्रियों के मंत्र देने के विषय में कवि की उक्ति ७४२, मंत्रियों के मंत्र के अनुसार कमधञ्ज ने अपनी अनी मोड़ली ७४३, कमधञ्ज की सेना के फिरने से सामंतों का दिल

बढ़ा ७४३, जिस कुल में चामुंड है उसको दाग नहीं लग सकता ७४३, दुहर के समय कमधुज की फौज फिर से लौट पड़ी ७४४, कमधुज और चहुआन खड्ग लेकर क्षत्री धर्म में प्रवृत्त हुए ७४४, शूरवीर हाथियों के दाँव पकड़ पकड़ कर पछाड़ने लगे ७४४, महाभारत में अर्जुन के अग्निबाण के युद्ध से इस युद्ध की उपमा देना ७४४, घोर संग्राम का वर्णन ७४४, प्रातःकाल से युद्ध होते सन्ध्या हो गई और कमधुज की सेना मुड़ गई परन्तु चौहान की सेना का बल न घटा ७४२, दोनो सेनाओं के बीच युद्ध से सन्तुष्ट न हुए तब इधर से भीमराय और उधर से मृत पत्राम के भाई ने क्रुद्ध होकर धावा किया ७४६, स्वामिकार्य के किये जो शरीर का मूल्य नहीं करता वही सक्का स्वामिभक्त सेवक है ७४७, शनिवृत्त का ग्राह घन्य है जिसमें अनन्त वीरो की मुक्ति मिली ७४७, कमधुज के दस बड़े बड़े शूरवीर थे वे दसों इस युद्ध में काम आये ७४७, कमधुज के जो वीर मारे गये उनके नाम ७४७ शूरवीरो की प्रशंसा ७४८, कमधुज का स्वतः छत्र देख चामुंड राय का उसे काट देना और सब सेना का आश्चर्य और कमधुज की सेना में हाय हाय मच जाना ७४९, कमधुज का छत्र गिरने में शूरवीरो की भय न हुआ ७५०, स्त्रियों की प्रशंसा ७५०, रात्रि का कुछ अंश बीतने पर चन्द्रमा का उदय हो गया और दोनो सेनाओं के बीच विश्राम के लिए रण से मुक्त हुए ७५१, सूर्योदय से शत्रु चकवा चकई और शूरवीरो को आनन्द होना है ७५१, रात्रि को सगोपिनी स्त्री और रण से श्रमित सेना विश्राम करनी है पर कुपोदिनी और विद्योगिनी को बल नहीं पड़ती ७५१, महम्मदो सेना में भी छिपा हुआ चहुआन का शत्रु बच नहीं सकता ७५२, चहुआन के सामंत स्वामिकार्य के लिये प्राण को कुछ वस्तु नहीं समझते और यह स्वभाव चहुआन का स्वयं भी है ७५२, सामंतों का पृथ्वीराज से कहना कि आप दिल्ली को जाय हम लड़ाई करेंगे ७५२, पृथ्वीराज का कहना कि सूर्य बिना चंद्र तथा तारागण से कार्य नहीं ही सकता, हनुमान के समुद्र लांघने पर भी रामचंद्र जी के बिना कार्य नहीं हो सका। मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जा सकता ७५२, तुम्हें रण में छोड़ कर मैं दिल्ली में जाकर आनन्द करूँ यह मैंने नहीं पढ़ा है ७५३, राजा का उत्तर सब को बुरा लगा परन्तु किसी ने राजा की बात का उत्तर न दिया ७५३, यही उत्तर दिया कि शत्रु के साम्हने से भागने वाले क्षत्री को धिक्कार है, मैं प्रातःकाल भारा मवाज्जा ७५३, सब का यह मत होना कि सूर्योदय से प्रथम ही युद्ध आरंभ हो जाय ७५३, सूर्योदय से प्रथम ही फौज का तैयार हो जाना ७५३, रण मदमाते निवृद्ध का घोड़े पर सवार होना और साठ योधाओं को लेकर हेरावल में बढ़ना ७५४, शूरवीर लोग माया मोह को छोड़ कर आगे बढ़े ७५४, तीसरे दिवस का युद्ध वर्णन ७५४, युद्ध करते हुए बीरों की प्रशंसा ७५४, शूरवीर सामंतों का रणमत्त होकर विविध कौशल से शस्त्राघात

करते हुए युद्ध करना ७५५, शूरवीर स्वामिकार्य साधन करने के लिये वीरता से रण में प्राण दे कर पूर्व कर्मों की संधि को लांघ कर स्वर्ग पाते हैं ७५६, स्वामिकार्य में जो वीर रण में मारे जाते हैं उन का शिर श्री महादेव जी की माला (हार) में गूहा जाता है ७५६, तीसरे दिन एकादशी सोमवार को युद्ध होते होते पांच षड़ी चढ़ आई शूरवीर मार मार कर हाथियों की कला कला की पछेलते जाते थे ७५६, इधर पृथ्वीराज ने शशिवृता की उत्कंठा पूर्ण की ७५६, सम्मिलन के प्रारंभ में पृथ्वीराज ने प्रण किया कि मैं तुझे तीनों पन में एक सा धारण किए रहूँगा ७५७, बह वर पाने के लिये कवि का शशिवृता को घन्य कहना ७५७, पृथ्वीराज का अटल प्रेम देख कर पैर पकड़ कर शशिवृता का कहना कि दिल्ली चलिए ७५७, उक्त विषय पर पृथ्वीराज का विचार में पड़ जाना कि क्या करना चाहिए ७५७, यह देख शशिवृता का कहना कि मेरी लज्जा रखिए ७५७, राजा का कहना कि तेरी सब बातें रस कसूम (अफीम के शर्वत) के समान मेरे जीवन भर मेरे साथ हैं ७५७, शशिवृता का कहना कि मैं भी क्षण क्षण आपकी प्रसन्नता का यत्न करती रहूँगी ७५८, पृथ्वीराज का कहना कि बहुआन का धर्म ही लज्जा का रखना है ७५८, तू अपने धर्म अनुसार सत्य कहती है ७५८, इस प्रकार शशिवृता और पृथ्वीराज का परामर्श होता रहा, पृथ्वीराज रूप रस में मत्त था और उसके स्वामिधर्म में रत सामंत उस तक कोई बाधा न पहुँचने देते थे ७५८, यद्यपि सामंत बड़े बलवान थे किन्तु तब भी पृथ्वीराज का मन युद्ध ही की ओर लगा था ७५८, शशिवृता की आज्ञा पूजी, शिवजी की मुंडमाल पूरी हुई और भगवती रुधिर से तृप्त हुई ७५९, शूरवीरों के शौर्य और बल की प्रशंसा ७५९, शशिवृता के ब्याह की देवामुर संग्राम में उग्रमा वर्णन ७५९, शूरवीरों का कहना कि हमारी जय तो हुई किन्तु जयचंद का भाई कमधुज्ज क्यों जीवित जाने पावे ७५९, राजा का कहना कि उसे मार कर क्या करोगे ७६०, आताताई का कहना कि उसे युद्ध में खंड खंड कर ही दूँगा ७६०, इसी प्रकार गुरराम की आज्ञा होने से घोर युद्ध का होना ७६०, रण में अग्नित सेन को मरा देख कर निदंकर का कमधुज्ज से कहना कि अब तू किस के भरोसे युद्ध करता है। पृथ्वीराज तो शशिवृता को लेकर चला गया ७६१, पृथ्वीराज शशिवृता को लेकर आघ कोस आगे जाकर खड़ा हुआ ७६१, अपनी और कमधुज्ज की सब सेना मरी देखकर यद्दव का हार मानना और सब डोली पृथ्वीराज को सौंप देना ७६१, पृथ्वीराज ने तैंताससी डोलियों सहित बीच में शशिवृता को लेकर दिल्ली को कूच किया ७६२, शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज तेरस को दिल्ली पहुँचे ७६२, पृथ्वीराज की प्रशंसा वर्णन ७६२, चामुंडराय की प्रशंसा ७६२, युद्ध में कमधुज्ज और यद्दव को जीत कर शशिवृता को लेकर पृथ्वीराज दिल्ली जा पहुँचे ७६२, शशिवृता के साथ विलास करते हुए सब सामंतों सहित पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करने लगे ७६२, इस जय के प्राप्त होने से

चहुभ्रान का यश और बादशाह से बँर बढ़ा ७६३, पृथ्वीराज शत्रुओं को पराजय कर के अदंड बादशाह को दँड दे कर नीति पूर्वक दिल्ली का राज्य करता था ७६३ ।

[समय २६] अथ देवगिरि समयी लिख्यते

[पृष्ठ ७६४-७७७]

जयचन्द की सेना ने देवगिरि गढ को घेर रक्खा ७६४, राजा जयचन्द के भाई ने कन्नौज को और देवगिरि के राजा ने पृथ्वीराज के पाम सब समाचार भेजा ७६४, दून ने लज्जा के साथ जयचन्द को पत्र दिया । जयचन्द के पूछने पर दून ने युद्ध और पराजय का हाल कहा ७६४, जयचन्द की महा क्रोध से कहना कि पृथ्वीराज की कितनी सेना है । उसे मेरा एक मीर बना जीत कर बाध गकना है ७६५, जयचन्द ने मंत्रियों से मत करके स्नेही राजाओं को सेना सहित आने को पत्र भेजा ७६६, पत्र भेज कर अपनी तयारी की आज्ञा दी । सन्तारी के लिये घोडा तय्यार कराया ७६६, घोडे की प्रशंसा वर्णन ७६६, जयचन्द घोडे पर चढा तीन हजार डंका निजान और तीस लाख पैदल सजकर झट मे तय्यार हुआ ७६७, जयचन्द ने प्रतिज्ञा की कि जादव और चौहान दोनों को मार कर तब मैं राजसूय यज्ञ करूँगा ७६७, सेना की शोभा वर्णन ७६७, जयचन्द की स्त्री का विरह वर्णन ७६८, जयचन्द की चटाई का वर्णन ७६९, जयचन्द का दक्षिण की ओर चढ़ चलना ७७०, हाथियों की शोभा वर्णन ७७०, राजा भान का यह समाचार पृथ्वीराज को लिखना ७७०, उक्त समाचार पाकर काम क्रीडा प्रवृत्त पृथ्वीराज का वीरता के जोम मे आ जाना ७७०, इधर गहाबुद्दीन की चढाई, उधर जयचन्द की राजा भान ने लडाई देखकर पृथ्वीराज ने बितौर के रावल समर मिहजी को सब वृत्तान्त लिखकर सहायता चाही और सम्मति पूछी ७७१, समर मिह ने पत्र पढकर कहा इस समय पृथ्वीराज की दिन्नी मे अकेले न छोडना चाहिए । मेरे साथ अपने साबन और अपनी सेना दें मैं पंग से लड लूँगा ७७१, समरमिह की सलाह मान पृथ्वीराज ने अपने सावंत चामुडगाय और रामराय बडगूजर के साथ अपनी सेना रवाना की ७७१, रात्रि समरमिह ने अपने भाई अमर मिह को साथ लिया । ये लोग देवगिरि की ओर चले ७७२, जयचन्द को गढ घेरे देख चामुडराय ने चढाई की । इधर राजा भान मिला ७७२, राजा भान और चामंडराय की सेना का वर्णन ७७२, राजा भान का मिलना देखकर जयचन्द का क्रोध करना ७७२, अमरमिह ने जयचन्द के हाथी को मार रिया ७७३, हाथी के मारे जाने पर जयचन्द का क्रोध करना और हाथी टूट पडना ७७३, लडाई सतत होने पर जयचन्द का अरने घायलों को उठवाना ७७४, इस युद्ध में मारे गये सूर सामंतों के नाम ७७४,

रणभूमि में जयचन्द के घोड़े की चंचलता और तेजी का वर्णन ७७४, देवगिरि के किले की नाप और जंगी तैयारी का वर्णन ७७४, जयचन्द का राजा भान को मिलाने का प्रबंध करना ७७४, इधर अमरसिंह का घोर युद्ध करना ७७५, जयचन्द का किले पर सुरंग लगाना ७७५, जयचन्द का कीर्तिपाल नामक भाट को भीमदेव और चामंड के पाम संधि का सदेमा लेकर भेजना ७७५, राजा भान को ममझा कर जयचन्द के दूत वा वश कर लेना ७७६, जयचन्द का विचारना कि वह धन छोड़ कर यदि यह धरती मिली भी तो किस काम की ७७६, इसके परणाम में चहुभान और राजा भान को वश मिला और जयचन्द नवमी को वस्रोज को फिर गया ७७७।

[समय २७] अथ रेवा तट समयो लिख्यते

[पृष्ठ ७७८-७९९]

देवगिरि से विजय कर चामंडराय का आना ७७८, चामंडराय का पृथ्वीराज से रेवा तट से बन की प्रशंसा करके वहां अधिकार के लिये चलन की मलाह देना ७७८, उन् बन के हाथियों की उत्पत्ति और शोभा वर्णन ७७८, राजा का चन्द से पूछना कि मुख्य चार जाति में से यः किम जाति के हाथी है और स्वर्ग से इस लोक में क्यों आए ७७८, चन्द का वर्णन करना कि हेमाचल पर एक वृक्ष था जिसकी शाखें सी सी योजन तक फैली हुई थी मतवाले हाथियों ने उन्हे तोड़ दिया। इस पर क्रोध करके मुनिवर ने गाप दिया कि तुम मनुष्यों की सवारी के लिये पृथ्वी पर जन्म लो ७७८, अंग देश के पूर्व एक सुन्दर वनखंड है वही बहु गजयुथ विहार करता था। वहां पालकाव्य नामक एक छोड़ी अवस्था का ऋषीश्वर रत्ता था उसे इन मर्षों से बड़ा स्नेह हो गया था परन्तु राजा रोमपाद फंदा डालकर हाथियों को चंपापुरी में पकड़ ले गया ७७९, पाठकाव्य मारे बिरह के मरकर हाथी के रू में जनमा ७७९, उधर ब्रह्मा के तप को भंग करने के लिये इन्द्र ने रंभा को भेजा था उसे शापवश हथिनी होना पड़ा वह भी वही आई ७७९, पालकाव्य उसके साथ बिरह करने लगा ७७९, चन्द ने उम बन और जन्तुओं की प्रशंसा करके कहा कि आप अवश्य वहां चलकर शिकार के लिए ७८०, एक तो जयचन्द पर जलन हो रही थी दूसरे अच्छा रमणीय स्थान सुन पृथ्वीराज से न रहा गया ७८१, पृथ्वीराज धूम से चला रास्ते के राजा संग हो गए, स्वयं रेवानरेश भी साथ हुआ इस समय मुल्तान के भेदुए (नीतिराय) ने लाहौर से यह समाचार गजनी भेजा ७८०, मारु खाँ और ततार खाँ ने दिल्ली पर आक्रमण करने का बीड़ा उठाया। तातार खाँ आदि मर्षों ने कुरान हाथ में लेकर शपथ करके प्रस्थान किया ७८१, एक दिन दिल्ली के लूणा ७८१, चन्द पृथ्वीराज ने पृथ्वीराज को समाचार लिखा। पृथ्वीराज

का छः कोम लौट कर कूच का मुकाम करना ७८१, पृथ्वीराज का पंजाब तक मीरे गहाबुद्दीन की मेना के रूब पर जाना और उधर गहाबुद्दीन की मेना का आना ७८१, पृथ्वीराज का रेवा तट आना मुनकर मुलतान का मेना मजकर नलना ७८१, पृथ्वीराज का कहना कि बहुत बड़े शत्रुकी आँों का समूह शिफार करने को भिठा ७८२, राज्य मंत्रियों ने यह मम्मति दी कि आने आर झगडा मोल लेना उचिन नही किपी नीति द्वारा काम लेना ठीक है ७८२, यह वान मुन कर मामतो का मुपका कर कहना कि भारत का वचन है कि रण मे मरने से ही बीर का कल्याण है ७८२, पञ्जूनराय का कहना कि मैंने सब शत्रुको पराजित किया और गहाबुद्दीन को भी पकडा अब भी उम से नहीं डरना ७८२, जैन राव का कहना कि गहाबुद्दीन की मेना से मिलान होना लाहौर के पाम अनुमान किया जाना है अतएव अपनी सब तैयारी कर लेनी उचिन है आगे जो आर की इच्छा हो ७८३, रघुवंस राम का कहना कि हम मामंत लोग मंत्र क्या जानें केवल मरना जानने हैं, पहिले शाह को पकडा या अब भी पकडेंगे ७८३, कविचन्द्र का कहना कि हे गुज्जर गँवारी बातें न कहो इन्ही बातों से राज्य का नाश होता है हम सब के मरने पर राजा क्या करेगा ७८३, पृथ्वीराज का कहना कि जो बात आगे आई है उसके लिये जुद्ध का सामना करो ७८३, पृथ्वीराज के घोडों की शोभा वर्णन ७८४, आधी रात को दून पृथ्वीराज के पाम पहुंचा और समाचार दिया कि अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख सेना के साथ मुलतान लाहौर से चौदह कोस पर आ पहुंचा ७८४, पृथ्वीराज ने दून से पत्र लेकर पढ़ा-हिन्दुओं के दल मे शोर मच गया ७८४, दून का दरबार मे आकर पृथ्वीराज से कहना कि मुमलमान सेना चिनाब के पर आ गई चन्द पुण्डरी ने उमका रास्ता बाध कर मुझे इधर भेजा है ७८५, मुलतान का अपने मामतो के साथ युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ७८५, शाहजादे का सरदारों के साथ सेना हरवल रचना और मेना के मुख्य सरदारों के नाम स्थान और उनका पराक्रम वर्णन ७८५, गहाबुद्दीन का इम पार तीस दूर्तों को रख कर चिनाब पार करना ७८६, यह मुन कर पृथ्वीराज का क्रोध करना और दून का कहना पुण्डरी उसे रोकें हुए है ७८६, जहा पर मुलतान चिनाब उतरने वाला था वही पुण्डरी ने रास्ता रोक़ा । घोर युद्ध हुआ । चन्द पुण्डरी घायल हो कर गिरा । मुलतान चिनाब पार होने लगा ७८६, मुलतान का चिनाब उतरना और चन्द पुण्डरी का गिरना देख कर दून ने बड़ कर पृथ्वीराज को समाचार दिया ७८६, पृथ्वीराज ने क्रोध के साथ प्रतिज्ञा की कि तब मैं सोमेश्वर का बेटा जो फिर मुलतान को कैद करूँ पृथ्वीराज ने चन्द्र ब्यूह की रचना करके चढ़ाई की ७८७, पञ्चमी मङ्गलवार को पृथ्वीराज ने चढ़ाई की (कवि ने उस दिन के यह स्थिति योग आदि का वर्णन किया है) ७८७, जिम प्रकार चक्रवाक,

संघु, रोगी, निर्धन, बिरह वियोगी लोग रात्रि के अवसान और सूर्योदय की इच्छा करते हैं उसी प्रकार पृथ्वीराज भी सूर्योदय को चाहता था ७८७, पृथ्वीराज की सेना तथा चढ़ाई का वर्णन ७८७, दोनों ओर की सेनाओं के चमकते हुए अस्त्र शस्त्र और निशानों का वर्णन ७८८, जब दोनों सेनाएं साम्हने हुईं तब मेवारपति रावल समरसिंह ने आगे बढ़कर युद्ध आरम्भ किया ७८८, रावल, जैत पंचार, चामण्ड राय और हुसैन षां का क्रमानुसार हराबल में आक्रमण करना पीठि सेना का पीछे से बढ़ना ७७९, हिन्दू सेना की चन्द्र व्यूह रचना ७८९, दो पहर के समय चंद्र पुण्डरी का तिरछा रख दे कर शत्रु सेना को दबाना ७८९, पृथ्वी राज और शहाबुद्दीन का सम्मुख घोर युद्ध होना योगिनी भैरव आदि का आनन्द से नाचना ७९०, मुलतान का खबराना तातार खां का घैर्यं दिलाना ७९०, उक्त युद्ध की वसन्त ऋतु से उरमा वर्णन ७९०, सोलंकी माधव राय में खिलजी खां से तलवार का युद्ध होने लगा। माधव राव की तलवार टूट गई तब वह कटार से लड़ने लगा शत्रुओं ने अघमं युद्ध से उसे मार गिराया ७९१, वीर गति से मरने पर मोक्ष पद पाने की प्रशंसा ७९२, जै सिंह की वीरता और उसकी वीर मृत्यु की प्रशंसा ७९२, वीर पुण्डरी के भाई की वीरता और उसके कर्मण्ड का खड़ा होना ७९२, पञ्जून राय के भाई पल्हान राय का खुरसान खां के हाथ से मारा जाना ७९२, जै सिंह के भाई का मारा जाना ७९२, गोइन्द राय का तत्तार खां के हाथी और फीलवान को मार गिराना ७९३, नरसिंह राय के सिर में धाव लगने से उसके गिर जाने पर चामुंडराय का उसकी रक्षा करना ७९३, रात हो गई दूसरे दिन सबेरे फिर पृथ्वीराज ने शत्रुओं को आ घेरा ७९३, जैत राय के भाई लक्ष्मण राय के मरते समय अप्सराओं का उसके पाने की इच्छा करना परन्तु उसका सूर्य्य लोक भेद कर मोक्ष पाना ७९३, महादेव का लक्ष्मण का मिर अपनी माला के लिये लेना ७९४, पहर दिन चढ़े जंघा योगी ने त्रिशूल लेकर घोर युद्ध मनाया लंगरी राय की वीरता की प्रशंसा ७९४, लोहाने की वीरता का वर्णन चौमठ खांओं का मारा जाना ७९५, चौमठ खान मारे गये और तेरह हिन्दू सरदार मारे गये हिन्दू सरदारों के नाम तथा उनका किमसे युद्ध हुआ इसका वर्णन ७९५, दूसरे दिन तत्तार खां का शहाबुद्दीन को विकट व्यूह के मध्य में रख कर युद्ध करना और सामंतों का क्रोध कर के शाह की तरफ बढ़ना ७९६, खुरासान खां का मुलतान के बचन पर तैश में आकर घोर युद्ध मचाना ७९७, रघुवंशी के घोर युद्ध का वर्णन ७९७, लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तू उदाई क्यों है ? उसने उत्तर दिया कि आज किसी को बरन करों का अवसर नहीं मिला ७९७, रम्भा ने कहा कि इन वीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या ये सूर्य में जा समाए ७९८, हुसैन खां घोड़े से गिर पड़ा उजबक खां खेत रहा मारुफ खां तातार खां सब परत हो गए तब दूसरे दिन सबेरे मुलतान स्वयं तलवार निकाल कर लड़ने

लगा ७९८, सुलतान ने एक बान से रघुवंस गुसाईं को मारा दूसरे से भीम भट्टी को तीसरा बान हाथ का हाथ ही में रहा कि पृथ्वीराज ने बमे कमान डाल कर पकड़ लिया ७९८, सुलतान को पकड़ कर और हुसैन खाँ तातार खाँ आदि को विजय करके पृथ्वीराज दिल्ली गए चारों ओर जै जैकार हो गया ७९९, एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया ७९९, एक महीना तीन दिन कैद रखकर नौ हजार घोड़े और बहुत से माणिक्य मोती आदि लेकर सुलतान को गज़नी भेज दिया ७९९ ।

[समय २८] अथ अनंगपाल समयो लिख्यते

[पृष्ठ ८००-८२१]

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप कर चला गया था परन्तु उमंग पृथ्वीराज ने फिर विग्रह क्यों किया, इस कथा का वर्णन ८००, अनंगपाल के बद्रीकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली निवृत्त शासन करना ८००, यह ममानार देश देशानार में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली में निवृत्त राज्य करता हुआ स्वजनो को मान देता है और उपकार को न मान कर अनङ्गपाल की प्रजा को बुरा दुख देता है ८००, अग्नि, पाहुना, विप्र, तस्कर आदि परदुःख नहीं जानते । पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनङ्गपाल पराए की भांति तप करता है ८००, सोमेश्वर अजमेर में राज्य करता है और पृथ्वीराज को दिल्ली मिली यह सुन कर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा ८०१, मालवापति ने चारों ओर के राजाओं को पत्र लिख कर बुलाया गक्कर, गुण्ड, भदौड़ और सोरपुर के राजा आए । सलाह हुई कि पहिले सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय ८०१, मालवपति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना सहित चन्द्र नदी पार होना ८०१, शत्रुओं के आने का समाचार सुनकर सोमेश्वर अपने सामंतों को इकट्ठा करके बोला कि पृथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर शत्रु चढ़े है ऐसा न हो कि कायरता का घन्ना लगे और नाम पर हँसा जाय ८०१, सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल है इससे इनको रात के समय छल करके जीतना चाहिए । सोमेश्वर ने कहा कि तुम ने नीति ठीक कहा पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बढ़ी निन्दा होगी ८०२, सामंतों ने कहा कि सेतु बांधने में श्रीराम ने, मुग्धीव ने बालि को मारने में, वृमिह ने हिरण्यकश्यप के मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस के मारने में छल किया, इसमें कोई दूषण नहीं है ८०२, सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तयारी करना ८०३, पट्टन के यादव राजा ने आकर डेरा डाला अजमेर जीतने का उत्साह जी में भरा था ८०३, चारा और लालबली मन्न गई रुद्रगण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे ८०३, योद्धाओं की तयारी तथा उनके उत्साह का वर्णन ८०४, सोमेश्वर ने पिछली रात घाबा कर दिया शत्रु के पैर

उखड़ गये ८०४, संसार में एक मात्र कवि कथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है ८०५, यादव राजा ऐसा घायल होकर गिरा कि मुंह से बोल न सकता था। सोमेश्वर उसे उठा लाया बड़ा यत्न किया। एक महीना बीस दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया सोमेश्वर ने बहुत दान दिया ८०५, पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना। उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात पाऊंगा शत्रुओं को मत्त चखाऊंगा ८०५, इधर दिल्ली की प्रजा ने बद्रिकाश्रम में अनङ्गपाल के पास ज कर पुकारा कि महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए ८०५, अनङ्गपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मन्त्री को बुलाकर समाचार कहा। मन्त्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए ८०५, राज्य प्राप्त करने के लिए गत ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन ८०६, तूअर वंश ने सबंदा भूज की पहले किल्ली को उखाड़ा फिर आपने पृथ्वीराज को राज्य दिला दिया ८०६, राजा हाथी घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परन्तु राज्य की सर्व मणि के समान रक्षा करे ८०६, अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मन्त्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला ८०६, पृथ्वीराज से मिल कर मन्त्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रमत्न हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो ८०६, इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना ८०७, बसीठ का कहना कि जिनका राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं ८०७, पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते है ८०७, मन्त्री का यह मुनकर उदास मन हो चला आना ८०७, मन्त्री ने अनङ्गपाल से आकर कहा कि मैंने तो पहिले ही कहा था, यद् दैत्यवंशी चौहान कभी राज्य न लौटायेगा पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए ८०७, अनङ्गपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया पृथ्वीराज नाना की मर्यादा को सोचने लगा और अपने कैमास को बुला कर पूछा कि मेरी साँप छद्मन्दर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए ८०८, जो लड़ाई करता हूँ तो अपनी माँ के पिता (नाना) से लड़ना हूँ और जो छोड़ देना हूँ तो अपनी हीनता प्रगट होती है सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो ८०८, कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिये, इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न माने यही आकर भिड़े ताँ फिर लड़ना चाहिए ८०८, अनङ्गपाल ने धूमधाम से युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लड़ाई हुई अन्त में अनङ्गपाल की हार हुई ८०८, हार कर अनङ्गपाल का बद्रोनाय लौट जाना ८०८, आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड़ कर अनङ्गपाल लौट गया ८०९, मन्त्री सुमन्त की सलाह से अनङ्गपाल ने माघो भाट को मुल्तान शहाबुद्दीन गोरी के पाम सहायता के लिये भेजा ८०९, माघो भाट जाकर मुल्तान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ चला ८०९, नीतिराव कन्नौजी ने

अनङ्गपाल के गोरी के पाम दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया ८०९, पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आप को पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फँलाकर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते है ? ८०९, जैसे बादल से बून्द गिर कर, हवा से पेड़ के पत्ते गिर कर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसे ही हमे पृथ्वी देकर इम जन्म मे आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए ८१०, आर सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए, उमे तो हमने कई बार बाँध बाँध कर छोड़ दिया है ८१०, हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। सदेमा मुनने ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा ८१०, अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिखकर दूत को गजनी की ओर भेजा। पत्र मे लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए हम ओर आर मिलकर दिल्ली को विजय करें ८१०, दूत ने आकर अनंगपाल के राज्य-दान करने फिर उमे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनंगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सुनाया सुलतान मुनने ही चढ़ चला ८११, मुलतान शाहबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सरदारों का वर्णन ८११, सिन्धु पार उतरकर, बीम हजार मेना माय देकर मुलतान ने ततार खाँ को अनंगपाल को लाने के लिए हरेद्वार भेजा। ततार खाँ के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष मे उससे मिला ८११, अनंगपाल ने बहून मे घोड़े मोल लिये और सेना भरती करके लड़ाई क तैयारी की ८१२, तीन सौ वीर जो अनंगपाल के साथ वीरागी हो गये वे भी तलवार बाँध कर लड़ने के लिये तयार हुए ८१२, ततार खा ने रात भर रहकर सवेरे ही अनंगपाल के साथ कूच किया। अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर आगे से बढ़कर उमने सुलतान को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे ८१२, अनंगपाल ने सब वृत्तान्त सुनाया, दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप आकर हाजिर हो जाय तो उसे जीव दान करना चाहिए। सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बडा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौा देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो। पृथ्वीराज ने कहा कि ऐसी कोटि चढ़ाई क्यों न करे अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता ८१२, पृथ्वीराज ने डक्के पर चोट लगा कर सब सरदारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला ८१३, दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सुलतान से कहा। जो सब सरदार विरक्त हो गए थे वे भी स्वामि के काम के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए ८१३, सुलतान ने दूत से समाचार सुन कर चढ़ाई का हुकम दिया ८१४, पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे मुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पडा ८१४, धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला, जब दोनों सेनाएं एक दूसरे से दो कोस पर रह

गई तब पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट दी ८१४, पृथ्वीराज के पहुँचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया ८१५, आगे तातार खां को रक्खा, मारुफ खां को बाईं ओर और खुरासान खां को दाहिनी ओर अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया ८१५, पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूहरचना की। आगे कैमास को और पीछे चावंडराय को कर दिया ८१५, अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं, जीते ही पकड़ना चाहिए ८१५, दोनों दलों का सामना हुआ, कैमास ने युद्धरम्भ किया ८१५, दोनों दल का सामना होते ही घममान युद्ध होने लगा ८१५, कैमास ने शस्त्र संभाल कर युद्धरम्भ किया। युद्ध का वर्णन ८१५, शहाबुद्दीन को चावंड राय ने पकड़ लिया, पृथ्वीराज की जय हुई, सात हजार मुपलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए ८१७, पृथ्वीराज का सुलतान को कैद में भेज कर अनंगपाल को आदर सहित दरबार में बुला कर उनके पैर पड़ना ८१७, दाहिम राव को हुक्म देकर सुलतान को दरबार में बुलाना, उसके आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बड़े बुद्धिमान हैं आप इस शाह के बहकाने में क्यों आ गए ८१७, सरदार गहलौत ने कहा इसमें महाराज अनंगपाल का दोष नहीं है यह सब प्रपंच दीवान का रचा हुआ है ८१८, चामुंड राय का कहना कि कुमंग का यही फल होता है ८१८, मामंतों ने जितनी बातें कहीं, सब अनङ्गपाल मिर नीचा किये मुनता रहा, कुछ न बोला ८१८, पृथ्वीराज का शाह को एक षोड़ा और मिरोगाव (खिल्लत) देकर छोड़ देना ८१८, शहाबुद्दीन का षोड़े हाथी और दो लाख मुद्रा दण्ड देना और पृथ्वीराज का उसे मामंतों में बांट देना ८१८, ग्लेश्च को जीत कर पृथ्वीराज दिल्ली आया ८१८, राजा से राव पञ्जून गोयन्द राय आदि मामंत आकर मिले ८१९, अनङ्गपाल का मंत्री से पूछना कि अब मुझे क्या करना उचित है ८१९, मंत्री ने कहा कि महाराज आप अब बूढ़े हुए मृत्यु समय निकट है और पृथ्वीराज को दिल्ली आप दे चुके हैं अब इसका मोह छोड़ कर धर्म कर्म कीजिये ८१९, मंत्री का कहना कि संसार के सब पदार्थ नाशमान हैं इसकी चिन्ता न कीजिए ८१९, रानी का सलाह देना कि पृथ्वीराज से आधा पंजाब का राज्य ले लो अथवा जो व्याम जी कहें सो करो ८१९, व्यास जी का कहना कि बलवान पृथ्वीराज को दिल्ली का राज करने दीजिए आप गुरु का ध्यान करके तप कीजिए ८२०, राज्य धन सम्मान मांगने से नहीं मिलता न बल से स्नेह होता है ८२०, मीरा मन मानो कि बद्दीनाथ जी की शरण में आकर कन्दमूल फल खाकर तप करो ८२०, पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल की बड़ी सेवा की जब तेरह महीने बीत गए तब अनङ्गपाल ने दौहित्र (पृथ्वीराज) से कहा कि अब मुझे बद्दीनाथ पहुँचा दो वहाँ बैठा कर तप और भगवान का भजन करूँ पृथ्वीराज ने कहा कि आप यहीं बैठकर तप भजन कर सकते हैं ८२०, पृथ्वी-

राज ने बहुत समझाया पर अनङ्गपाल ने एक त माना उसे बद्रीनाथ जाने की ली लगी रही तब पृथ्वीराज ने बड़े आदर के साथ दस लाख रुपया सात नौकर और दस ब्राह्मण साथ देकर उन्हें बद्रीनाथ पहुँचा दिया अनङ्गपाल वहाँ जाकर तपस्या करने लगा ८२१, पृथ्वीराज की सहानुभूति दयालुता और बीरता की प्रशंसा ८२१ ।

[समय २६] अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ८२२-८३२]

पृथ्वीराज साठ हजार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार गजनी में पहुँचा ८२२, दूनों ने जाकर गजनी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज घूमघाम के साथ शिकार खेलने को निकला है । शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्तचर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर गजनी में जाहिर किया ८२२, सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तस्बीह (माला) लूंगा ८२३, खुगामान, रूम, हबश और बलख आदि देशों में सुलतान का सहायता के लिए पत्र भेजना ८२३, पाँच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना ८२३, चंद्र शुक्ल ३ रविवार को दोपहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घघर नदी पहुँचा ८२३, शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन ८२४, सेना का वर्णन ८२४, मुसलमान सेना का व्यूहबद्ध होकर नदी पार करना ८२४, पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना सज्जित कर चामंडराव को आगे किया ८२५, पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गहड़ब्यूहाकार रचना की ८२५, दोनों सेनाओं का साम्हना होना । एक हजार मीरो का कैमास को घेरना ८२५, तत्तार खाँ का घायल होना । मीरो की बीरता ८२५, कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना ८२५, चावंडगाव ने ऐमा घोर युद्ध किया कि सुलतान की सेना में बहुर मच गया ८२६, जैतराव के युद्ध का वर्णन ८२६, युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव और खुरासान खाँ का तुमुल युद्ध हुआ ८२६, घोर युद्ध हुआ । निमुरत खाँ मारा गया । दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई ८२७, एक लाख कालजरी का धावा, कन्ह चौहान के आँख की पट्टी का खुलना और उमका घोर युद्ध करना ८२७, कालञ्जर के टूटते ही सुलतान की सेना का भग्नना । कन्ह चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना ८२७, पञ्जूनराव का मीरो को काट काट कर डेर कर देना । कन्ह का सुलतान को पकड़कर अपने घर ले आना ८२८ कन्ह का सुलतान को अजमेर ले जाना और उसे वहाँ किले में रखना ८२८, पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की

संस्था ८२८, पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अबकी बार शहाबुद्दीन को प्राण दण्ड दिया जाय ८२८, कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश लेकर हमें छोड़ दिया जाय ८२९, पृथ्वीराज का कन्ह की बात मान कर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ दे कर शाह को घर भेज देना ८२९, कन्ह का अन्नमेर से बादशाह को दिल्ली लाना । शाह का कन्ह एक मणि और राजा को अपनी तलवार नजर देकर घर जाना ८२९, सुलतान का कुरान बीच में देकर कनम खाना कि अब कभी आप से विग्रह न करूंगा ८२९, सुलतान के अटक पार पहुँचने पर उधर से तत्तार खाँ का आवर मिलना ८३०, रयमल को दूनों का समाचार देना उमका सेना ले कर अटक उतर रास्ते में रोकना ८३०, लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना ८३०, सबेरा होते ही रयमल आ पहुँचा लोहाना से युद्ध होने लगा ८३१, रयमल का मारा जाना, सुलतान का निर्भय गजनी पहुँचना ८३१, तातार खाँ सुरासान खाँ आदि मुमाहबों का पेना सहिन सुलतान में आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना ८३१, दस दिन लोहाना बड़ी रक्षा, शाह ने सान हाथी और पचाम घोड़े लोहाना को दिये और पृथ्वीराज का दण्ड दिया लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया और सब मोना चित्तोर भेज दी ८३१, चन्द कवि ने चित्तोर में आकर सब मोना आदि रावल को भेंट की, रावल ने चंद का बड़ा सम्मान किया ।

[समय ३०] अथ करनाटी पात्र समयो लिख्यते

[पृष्ठ ८३३-८३९]

दूनों का दिल्ली का हाल मनन कर जैचन्द में जाकर कहना ८३३, यद्व की सेना सहिन पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढाई करना । करनाटक देश के राजा का करनाटकी नामक देश का पृथ्वीराज को नजर करके मंघि करना ८३३, करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना ८३३, सव्व ११४१ में दक्षिण विनर करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को मंगीनकला में अत्यन्त विद्वान केन्द्र नामक को मंगि देना ८३३, करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंसा सुनकर पृथ्वीराज का उसके लिए कामानुस होना ८३४, पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन ८-४, पृथ्वीराज के मधामण्डर की प्रशंसा वर्णन ८-४, पृथ्वीराज की उक्त सभा में उगस्थित मभावदों के नाम ८३५, कन्हन नट का करनाटी सहिन सभा में आना और पृथ्वीराज का उममें करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना ८-५, कविचन्द का कहना कि ऐसा नाटक खेजे जिसमें निड्डुरराय प्रमन्न हों ८३५, नाटक का पूछना कि राजा के पास बड़े हुए मुमट ये कौन हैं ८३६, कवि चन्द का निड्डुरराय का इतिहास कहना ८३६, निड्डुर का शिकार करने जाना और प्रधान

पुत्र सारंग के बगैचे में गोठ रचना ८३६, यह खबर युन कर उमी समय सारंग का बही आकर निहदुर के रंग में भंग करना ८३६, निहदुर का जैचन्द से सारंग की बुगई करना और जैचन्द का सारंग का पक्ष करना ८३७, यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐमा ही नाट्य कौशल करूंगा जिसमें राजा का चित्त प्रसन्न हो ८३७, राजाओं के स्वाभाविक गुणों का वर्णन ८३७, राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना ८३८, करनाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना नाटक का क्रम वर्णन ८३८, करनाटी के नाच गान पर प्रसन्न होकर राजा का नाटक में मूक्य पूछना और नाटक का कहना कि आर से क्या भोल कहें ८३८, पृथ्वीराज का नाटक को १० मन स्वर्ण देकर वेश्या का महलो में रखना ८३९, पृथ्वीराज का करनाटी के साथ क्रीडा करना और रात दिन सैकड़ों दामियों का उमके पड़े पर रटना ८३९।

[समय ३१] अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते

पृष्ठ ८४०-८४८]

प्रातःकाल होते ही पृथ्वीराज का और चामुण्ड राय आदि सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमाम का आकर राजा के पास बैठना ८४०, मन्नाम जाने पर राज्यकार्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का संतव्य होना ८४०, पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस अच्छे जीवन में कीर्ति ही मार है ८४१, राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिए राजा दधीचन अपने अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन ने कीर्ति के लिए ही प्राण दिए ८४१, राजा की दम प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोधार्य करना ८४१, मन्नाम में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन ८४१, पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना ८४३, सामंतों का राजाज्ञा मानना ८४४, जैचन्द के उपर चढ़ाई की तैयारी होना ८४४, कमधञ्ज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन ८४४, उन छ सामंतों के नाम जो सामंतों में सबसे अधिक मान्य थे ८४५, उक्त छः सामंतों का पराक्रम वर्णन ८४५, सामंतों का जैचन्द पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिए कहना ८४५, प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिम्ब स्वरूप था ८४५, पृथ्वीराज के सब सखे सबको का एक ही मन्त्र टहरा ८४६, चढ़ाई के लिए वैमाल गुदि ५ का सुदिन पक्का करके सबका अपने अपने घर जाना ८४६, मरने के लिए मुहूर्त साध कर सब बीरों का आनन्द में मतवाला होना ८४६, प्रातःकाल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुटना ८४६, पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन ८४६, सामंतों की सर्व से उपमा वर्णन

८४७, सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन ८४७, शूरवीर सामंतों का उत्साह वर्णन ८४७, फौज की शोभा वर्णन ८४८, पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण क्षेणीवद्ध करना ८४८, सामंतों की वीरता का वर्णन ८४८, युद्ध के लिए प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित निन्दुर का वीर मत वर्णन ८४९, घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन ८९९, राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना । ८५०, घोड़ों की शोभा वर्णन ८५०, शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा ८५०, शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना ८५०, राजा की आज्ञा बिना चाबूठराय का आगे बढ़ जाना ८५१, चामंडराय जैतसी कोहाना आजानबाहु का पांच कोस आगे बढ़ कर तत्तार खां खुरसान खां पर आक्रमण करना ८५१, उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुस्लमानों का कमान पर बाण चढ़ाकर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना ८५१, पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जयचन्द की सहायता ले कर शहाबुद्दीन का राह छेकना ८५२, मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है ८५२, पृथ्वीराज का राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन ८५२, युद्ध आरंभ होना ८५२, स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पाव देने को उद्यत थे ८५३, दोनों ओर के शूर वीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन ८५३, कन्ह गोइन्दराय लंगरी राय और अतत्ताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुस्लमानों की फौज का विचलाना, हामब खां खुरसान खां का मारा जाना ८५३, शूरवीरों का रणरंग से मत्त होना शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना ८५३, युद्ध की पावस से उपमा वर्णन ८५४, घोर युद्ध वर्णन ८५४, चालुक्य की प्रशंसा वर्णन ८५४, जापदेव यादव का आघ्र कोम आगे डटना और उमकी वीरता की प्रशंसा वर्णन ८५५, पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरग्यूह रचना ८५५, न्याजी खां, तत्तार खां और गोरी का उधर से आक्रमण करना और उधर से पीप (पडिहार) नरिंद का हरावल सम्हालना ८५५, युद्ध होते होते रात्रि हो जाना ८५६, छ; हजार दीपक जलाकर भारत की भाति युद्ध होना ८५६, आघ्री रात हो जाने पर तोंब्रर और पडिहार का शहाबुद्दीन पर आक्रमण करना और मुसलमान फौज का पैर उखडना ८५६, पीप पडिहार का शहाबुद्दीन की पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना ८५६, प्रमंगराय खीची, पञ्जूनराय के पुत्र, वीरमान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना ८५६, शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना ८५७, पीप युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन ८५७, सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन ८५८ ।

[समय ३२] ग्रथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ८५९-८७२]

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना ८५९, पृथ्वीराज का ६४ मामतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहा के राजा भीम प्रमार को जीत लेना ८५९, इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना ८५९, इन्द्रावती की छवि वर्णन ८५९, पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढाना ८५९, पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना ८६०, ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना ८६०, ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुना ८६०, इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनो का वर्णन ८६०, उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी समय गुज्जर राय का चित्तोर गढ़ घेर लेना ८६१, पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तोर जाना ८६१, पृथ्वीराज का पञ्जून राव को अपना खड्ग बंधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तोर की तरफ जाना ८६४, समन्वय पृथ्वीराज के पयान का वर्णन ८६२, पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तोर की यात्रा करना और उधर में रावल के प्रधान का आपा और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना ८६२, प्रधान का उत्तर देना ८६३, पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुडते ही परास्त करूंगा ८६३, पृथ्वीराज का आगे बढ़ना ८६३, रणभूमि की पावम श्रुतु से उपमा वर्णन ८६३, चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन ८६४, पृथ्वीराज की मेना की पारध से उपमा वर्णन ८६४, बहुभ्रान और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना ८६४, दोनों ओर से युद्ध के त्राजे बजते हुए युद्धारम्भ होना ८६४, इधर में पृथ्वीराज उधर में रावल ममर जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ८६५, पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज ब्यूह रचना ८६५, युद्ध वर्णन, ८६५, चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर सग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना ८६६, दूसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना ८६६, भोराराय का नदी उतर कर लडाई करना ८६६, घमामान युद्ध वर्णन ८६६, समय पाकर रावल समरसिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना ८६६, युद्ध लीला कथन ७६७, सामनो का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना ८६७, भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उन का नाम ग्राम कथन ८६७, आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज के हुसैन खां का चालुक्य पर आक्रमण करना ८६८, एक दिन रात्रि और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना ८६८, गुज्जर राय भीम देव का भागना ८६८, कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति श्रमर हुई ८६८, पृथ्वीराज की कीर्ति

का उज्ज्वल भेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना ८६८, कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन ८६९, प्रातःकाल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद्र और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना ८६९, गुरुराम का कहना कि वह भोलाराय का परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी ८६९, रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहमा आक्रमण करना ८६९, रात का युद्ध वर्णन ८७०, पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान बीर काम आए, उनके नाम ८७०, दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों का मारा जाना ८७० पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना ८७० प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना ८७०, दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना ८७१, दो पहर दिन चढ़ने-चढ़ने ५ हजार सैनिकों का मारा जाना ८७१, पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना ८७२, चालुक की सब सेना का मारा जाना ८७२, पृथ्वीराज का रणक्षेत्र दृढ़वा कर घायलों को रठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना ८७२, पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना ८७२, इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहृतना ८७२ ।

[समय ३३] अथ इन्द्रावती व्याहृत

[पृष्ठ ८७३-८८४]

उज्जैन के राजा भीम का चंद्र कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरम है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा ८७३, कविचंद्र का कहना कि समय पाय सर्गों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया ८७३, भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ८७३, यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना ८७४, सखियों का इन्द्रावती को समझाना ८७४, इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूँ मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता ८७४, भीम का कविचंद्र से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते ८७४, कविचंद्र का कहना कि समय देख कर कार्य करना ही वृद्धिमत्ता है ८७४, भीमदेव का उज्जैन से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बुरा अभिमान है इसी से तुम और जो शूरवीर ही नहीं जानते ८७५, जैनराय का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटने हो ८७५, भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये मिथ्या करना कौन सा धर्म है ८७५, गुरुराम का ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना ८७५ भीम का गुरुराम को मूर्ख बनाकर कविचंद्र से कहना कि जैनराय को तुम समझाओ ८७५, कविचंद्र का सप्रमाण उत्तर देना ८७६, भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना ८७६, मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याहृत दीजिए पर भीम का इस बात को मानकर क्रोध करना ८७६, सामंतों का परस्पर विचार बाधना ८७६, रघुवंस रामपवार का

वचना ८७६, चहुआन की फौज के भीमदेव की गीलों के घेर लेने पर पट्टनपुर में खजभज पड़ना ८७७, चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम का उसका साम्हना करना ८७७, भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सल्लख होना ८७७, रघुसं राय का नाका बाँधना और पूज्जून का भीम की गाँव घेर कर हाँकना ८७८, जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन ८७८, युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि ८७८, सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना ८७९, दूतरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुन. सामंतों का पान-व्यूह रच कर युद्ध करना ८७९, युद्ध वर्णन ८७९, युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना और इन्द्रावती का चहुआन के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कबिचन्द का उसे छुड़ा देना ८८०, भीम का सब सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके घायलों को औषधि करना ८८०, इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने विवाह स्वीकार कर लिया है ८८१, इन्द्रावती का शृंगार वर्णन ८८१, इन्द्रावती का मण्डप में सखियों सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठबन्धन होना ८८१, भीम का चहुआन को भाँवरी दान वर्णन ८८२, गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिखा ८८२, पृथ्वीराज का वन्दियों को दान देना ८८२, सामंतों की प्रशंसा वर्णन ८८२, विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन ८८२, दहेज वर्णन ८८२, सुक्का अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पडाव डालना ८८३, उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना ८८३, लोहाना का कहना कि सुरतान दण्ड देने से फिर कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है ८८३, पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुँचा कर युद्ध की तैयारी करना ८८३, इन्द्रावती का रहाइस ८८३, सुहाग स्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना ८८३, इन्द्रावती का लज्जामय मन्द चाल का वर्णन ८८४, सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना ८८४ ।

[समय ३४] अथ जैतराव युद्ध सम्यो लिख्यते

[पृष्ठ ८८५-८९३]

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना ८८५, ठाई वर्ष पश्चात् पृथ्वीराज का षट्दू बन में शिकार खेलने का जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना ८८५. पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जंतुओं की गणना और षट्दू बन में शहाबुद्दीन के दूत का आना ८८५, पृथ्वीराज का सामंतों से सलाह लेना ८८६, शहाबुद्दीन के दूत का बचन ८८६, पृथ्वीराज का कहना कि ऐं डीठ बसीठ तू नहीं जानता कि अभी कौन जीता और कौन हारा

राज्य सुख के लिये कर्तव्य छोड़ना परे है ८८६, कहीं गजनी है और कहीं दिल्ली और कहीं बार मैंने उसे बन्दी किया ८८६, दोनों ओर की सेनाओं की सजावट की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ८८७, शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ८८७, इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उन्मुक्त होना ८८७, शहाबुद्दीन का सिन्ध नदी तक आना और चहुआन को दूनों द्वारा समाचार मिलना ८८८, पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ८८८, चहुआन सेना में शूरवीरों का उत्साह करना और कायरों का भयभीत होना ८८८, चलते समय सेना का आतंक वर्णन ८८८, शाही सेना की सजावट की वर्णन ८८८, शहाबुद्दीन का स्वयं सफल कर सेना को सत्कार्य देना कि अब की पृथ्वीराज अवस्था पकड़ लिया जाय ८८९, प्रातःकाल होते ही जममोज खाँ और नवरोज खाँ का युद्ध के लिये सेना तैयार करना ८९०, चहुआन का सेना तैयार करना ८९०, दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना ८९०, युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन, दोनों सेनाओं में रत वाद्य वजना और उससे सूर बीर लोगों तथा घोड़े इत्यादि का भी प्रसन्न होकर मिहनाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना ८९१, लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ८९१, पृथ्वीराज का अपनी वीरता से शत्रु सेना को बिड़ार देना ८९१, इस युद्ध में दोनों ओर से मृत सरदारों के नाम ८९२, सूर्योदय के समय की शोभा वर्णन ८९२, दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तैयारी होना ८९२, दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन ८९२, शहाबुद्दीन का हाथी पर में गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना ८९३, शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना ८९३, जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना ८९३।

[समय ३५] अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ८९४-९०१]

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगडा दुर्ग की जाना चाहती हूँ और आप इसका वचन भी दे चुके हैं ८९४, पृथ्वीराज का कांगडा के राजा के पास दूत भेजना ८९४, दूत का वचन सुनकर कांगडा के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ८९४, दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को बढ़ा की शक्ति निवेदन करना ८९४, इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना ८९५, युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना ८९५, युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना ८९५,

पृथ्वीराज का जय पाता ८९५, मार्गकाल के समय राजा भान की सेना का भागना राजा भान का शोक वश होकर कंगूर देवी का ध्यान करना और देवी का कहना कि मैं होनहार नहीं भेट सकती ८९६, मवेरा होते ही भोटी राजा का मन्त्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना ८९६, प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिन्तान करें मैं शत्रु का मान मरने कल्ंगा ८९६, भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना ८९६, पृथ्वीराज का रघुवंश राय और हाहुजी राय हमीर को कंगूर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना ८९७, हाहुजी राय का कहना कि शं दुर्गा बन प्रान्त को यहूज ही जीतूंगा ८९७, कंगूर गढ़ के महाजंगल इत्यादि की मघनना और उनमें विकटपन का वर्णन ८९७, उक्त दोनों वीरों का युद्धही मेना को हर्षन खां को सुपद करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना ८९८, नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना ८९८ कंगूर दुर्ग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन ८९८, नारे (पीठ ही मेना के नायक) के चढ़ाई करने ही शुभ शकुन होना ८९८, मेना का हल्का करके क्रोध में घावा करना ८९९, युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन ८९९, अकेले रघुवंश राम का किले पर अधिकार कर लेना ९००, सब सामनों का सलाह करके (रामरेत) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना ९००, सब भोटी भूमि पर चहु-भान की आन धिर जाना और मान रघुवंश का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री व्याहना ९००, नियत तिथि पर ब्याह होना ९००, भोटी राज का कन्या के रूप गुण का वर्णन ९००, भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नर दुलहिन के साथ भोग विलम्ब करना ९०१ ।

[समय ३६] अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ९०२-९३३]

पृथ्वीराज का शिकार के लिये पट्टपुर जाना ९०२, रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हमावती नामक एक सुन्दर कन्या थी और चँदेरी में शिमुगल वपी पंचाइन नाम राजा राज करता था ९०२, हंमावती की शोभा वर्णन ९०२, चँदेरी के राजा का हंमावती पर मोहित होकर रणथंभ को दून भेजना ९०२, चँदेरी का रणथंभ में जाकर पत्र देना ९०३, रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चदेी पति से युद्ध करूंगा उसके घुडकने से नहीं डरता ९०३, चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना ९०३, चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक लहाबुद्दीन के

पास मदद के लिये ९०३, स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और गज्य गया ९०३, जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं ९०४, भानुराय यद्वव का बभीठ की बात न मानना ९०४, वसीठ का लौट कर चंदेरीपति की फौज में जा पहुंचना ९०४, पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखा हुआवखां आदि सरदारों का आना ९०४, दोनो घनघोर सेनाओ सहित चंदेरी के राजा का आगे बढ़ना ९०४, चंदेरी राज की चटाई का वर्णन ९०४, रनथंभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना ९०५, भानुराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना ९०५, उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज वा ममर सिंहजी के पास कन्ह को भेजना ९०५, कन्ह का समरसिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना ९०५, समरसिंह जी का सेना तैयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे ९०५, तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम से आगे जा पहुंचेंगे ९०६, कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले है और राजा भानपर बड़ी विपत्ति है ९०६, समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कह के परतें ९०६, समरसिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना ९०६, कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध वर्णन ९०६, दसमी सोमवार को समरसिंह जी की यात्रा की मूर्त होगा ९०६, यात्रा के समय समरसिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन ९०७, सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के बाएं ओर पृथ्वीराज और दहिने ओर मे समरसिंह जी का आना ९०७, पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समरसिंह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी ९०८, किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन ९०८, उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावम में उपमा वर्णन ९०८, चंदेरी की सेना और रुस्तमा खा के बीच में रावठ ममर सिंह जी का घिर जाना ९०९, पृथ्वीराज का रावल की मदद करना ९०९, रनथंभ के राजा भान का ममर सिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना ९०९, समरसिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ९१०, चंदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनो सेना के बीरो का उत्पाह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन ९१०, युद्ध में मारे गए सैनिक बीरो की गणना ९१०, पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अंती करके आक्रमण करना ९११, युद्ध के लिये सन्तुष्ट हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप ९११, हंसावती की घरया से और दोनो सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन ९११, सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन ९११, प्रतिकाल होते हुए समर सिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना ९११, समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन ९१२, युद्ध वर्णन ९१२, समरसिंह की युद्ध

चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे रक्त पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना ९१२, चँदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना ९१२, रावल समरसिंह जी और चँदेरी के राजा का द्वन्द्व युद्ध और चँदेरी के राजा (बीर पंचाइन) का मारा जाना ९१२, युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना । हुसैन खाँ और कन्हाराय का घायल होना ९१३, पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्द्रवदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नौद खुलने पर उसे न पाना ९१३, पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी भविष्य स्त्री हंसावती है कहिये तो मैं उमका स्वरूप रंग कह डालूँ ९१३, हंसावती के स्वरूप गुण और उसकी वयःमन्धि अवस्था की सुलभा और उसके लालित्य का वर्णन ९१४, पृथ्वीराज उन बातों को सुन ही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना ९१४, और उक्त रणथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन ९१५, लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का बारू बन को शिकार खेलने के लिये जाना ९१५, पृथ्वीराज के बारू बन में शिकार करते समय मारंग राय सौलंकी का पितृवैर लेने का विचार करना ९१५, सारंगदेव का कथना कि पितृवैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है ९१५, सारंग राय का नागद के पास मंगलगढ़ के राजा हारा हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट मत में बांधना ९१६, मारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योता भेजना ९१६, यहाँ एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट-चक्र रचना ९१७, हाड़ा राव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर शिष्टाचार करना ९१७, कवि का हाड़ा राव पर कटाक्ष ९१७, पृथ्वीराज को नगर में पैठते ही अशकुन होना ९१७. ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना ९१७, उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ ९१७, सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के सामंती का उनका साम्हना करना ९१८, रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द्व युद्ध ९१८, पृथ्वीराज का नागफनी से शत्रुओं को मारना ९१८, घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में क्षरभर मच जाना ९१८, रामराय बड़ गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना ९१९, कविचन्द द्वारा 'युद्ध' एवं सारंग देव के कुकृत्य का परिणाम कथन ९१९, पञ्जून राय के पुत्र कूरंम राय का बड़ी वीरता के साथ मारा जाना ९१९, इस युद्ध में एक राजा तीन राव सोलह रावत और पंद्रह भारी बौद्धा काम आये ९२०, रेन पवार (सामंत) की प्रशंसा ९२०, रेन पंगार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का उसे छोड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र भाव से पेश आना ९२०, तेरह तीमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आये ९२०, हुसैन खाँ का अमर सिंह की बाहून को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छोड़ा देना ९२१, रावल अमर सिंहजी की प्रशंसा और अमर सिंह का उनको अपनी बहिन ब्याह देना ९२१.

आधी रात को ममाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है ९२१, घुमान और "प्रसंगराय" खीची का रणथंभ की रक्षा के लिए जाना ९२१, पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना ९२२, पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन ९२२, पृथ्वी-राज का आगवन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का झरोखे से झाकना ९२२, गौख में मे देखनी हुई हंसावती की दशा का वर्णन ९२२, हंसावती के शृगार की पद्यारी ९२३, हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन ९२३, हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य वर्णन ९२३, नेत्रों की शोभा वर्णन ९२३, हंसावती के स्नान समय की शोभा ९२३, हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर मोलहो शृगार और बार में आभूषण सहित शृगार की उपमा उाभेय सहित शोभा वर्णन ९२४, हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन ९२५, हंसावती के केशरकण्ठ हाथ पावों की शोभा वर्णन ९२६, पृथ्वीराज का निवाह मण्डप में प्रवेश ९२६, पृथ्वीराज के गन्धर्वगण और (व्याह मृकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन ९२६, हंसावती का मन्विगो सहित मण्डप में आना ९२६, पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य देख कर प्रफुल्लित होना ९२७, पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना ९२७, हंसावती के अग प्रत्यग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन ९२७, इसी समय दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना और ५० मामतों का उम आक्रमण को रोकना ९२७, पृथ्वीराज के मामतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन ९२७, दूसरे दिवस प्रातःकाल मुरतान खा का आक्रमण करना ९२८, हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की चढाई के समय की शोभा वर्णन ९२८, तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना ९२८, थोड़ी देर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड़ गये ९२८, युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का अस-वान हाथ लगना और पीरोत्र खा का मारा जाना ९२९, पृथ्वीराज का सब सामतों को हृदय में लगा कर कहना कि मैं आपका बहुत ही अनुग्रहीत हूँ ९२९, पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुमा जी को समर की जागीर का पट्टा लिखना ९२९, समर सिंह का उम पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना ९२९, समर सिंह का वित्तीर जाना ९३०, पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त हो जाना ९३०, हंसावती के प्रथम ममागम का वर्णन ९३०, मुग्धा हंसावती की कोरू कला में पृथ्वीराज का मुग्ध होकर कामान्ध वृषभ की नाई मस्त होना ९३०, हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना ९३१, शनै शनै हंसावती के हर और लज्जा का ह्रास होना और उमकी कामेच्छा का बढ़ना ९३१, हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चन्द्रमा को देख कर पृथ्वीराज को हृदय समुद्र का उमड़ना ९३१, दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये ९३१, पावस का अन्त होने पर शरद का आगमन और शीत का बढ़ना ९३२, शीत काल की बढ़ती हुई

रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना ९३२, हंमावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंमावती की चाह में अहिंनिसि मस्त रहते थे । इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन ९३३, समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अबस्था वर्णन ९३३ ।

[समय ३७] अथ पहाड़राय सम्यो लिख्यते

[पृष्ठ ९३४-१८८]

कविचंद की स्त्री का पूछना कि पहाड़राय तोंअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा ९३४, महाबुद्दीन का तत्तार खाँ से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है ९३४, तत्तार खाँ का उत्तर देना ९३४, शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने की सलाह करना ९३४. दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर महर्षों मुमलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना ९३५, ममस्त सेना का दम कोम पूर्ब को बढ़ कर पड़ाव डालना ९३५, शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए मरस्य योद्धाश्री के नाम ९३६, सभा में तत्तार खाँ का नियमित कार्य के लिए ३३६, वितण्ड खाँ का सगर्व अपना पराक्रम कहना ९३६, खुरमान खाँ का राजनीति कथन ९३६, बादशाह का (लोरकराय) खत्री को पत्र देकर धर्मायन के पाम दिल्ली भेजना ९३७, दून का दिल्ली जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना ९३६, दून का दिल्ली पहुँचना ९३७, दून का धर्मायन से मिठना ९३८, धर्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना ९३८, धर्मायन का दरबार में जा कर यह पत्री कैमाम को देना ९३८, शहाबुद्दीन की पत्री का लेख ९३८, धर्मायन का कैमाम के हाथ में पत्र देना ९३८, कैमाम का पत्र पढ़ कर मुनाना ९३८, पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामंतों की मभा करना ९३८, पृथीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना ९३९, सामंतों का उत्तर देना ९३९, पृथ्वीराज का पचीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना ९३९, कूच के समय सेना की शोभा और उमका आतंक वर्णन ९३९, पृथ्वीराज का पड़ाव डालना ९३९, अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का सन्तु पर आक्रमण करना ९४० हिन्दू और मुस्लमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ९४०, शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना ९४०, सूर्योदय होते-होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोराहल होना ९४०, दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर घावा करना ९४०, दोनों सेनाओं के उत्कर्ष में मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन ९४०, हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उनके अनी भाग और व्यूह बढ़ होने का वर्णन ९४१, दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना ९४१, युद्ध का दृश्य वर्णन ९४२, सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना ९४२, प्रातःकाल होने ही इधर से कैमाम और उधर शहाबुद्दीन का अपनी-अपनी सेना को सम्हालना ९४२, सूर्योदय होते ही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना

और अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना ९४२, दोनों सेनाओं का पर-
स्पर एक दूसरे पर वाणों की वर्षा करना ९४३, दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ
कर शस्त्रों की मार करना ९४३, युद्ध भूमि में बैताल और योगिनियों के नृत्य की
शोभा वर्णन । योगिनी भूत बैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना शूरवीरों का
वीरता के साथ प्राण देना ९४३, युद्ध रूपी समुद्र मंथन को उक्ति वर्णन ९४४, इस
युद्ध में जो जो वीर सरदार मारे गये उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन ९४४,
युद्ध होते होते रात्रि हो गई ९४५, उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोमर
का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना ९४५, पहाड़राय तोमर का बल और
पराक्रम वर्णन ९४५, दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्धका अवसान होना ९४६
तृतीया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ ९४६,
चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय बीभत्स
दृश्य वर्णन ९४६, मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी पर तलवार
का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना ९४७, मुस्लमान सेना का घबरा
कर भाग उठना ९४७, अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह
जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के
पाम हाजिर करना ९४७, मुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और
बंद लेकर उसे छोड़ देना ९४८ ।

[समय ३८] अथ बरुण कथा लिख्यते

[पृष्ठ ९४९-९५६]

“सोमेश्वर” सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते
थे ९८९, चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी पर ग्रहण
स्नान करने जाना ९४९, सोमेश्वर जी के साथ में जाने वाले थोडाबो के नाम
और पराक्रम वर्णन ९४९, उक्त समय पर पूर्णमा की शोभा वर्णन ९४९, अर्द्ध
रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सबका यमुना किनारे पर जाना ९५०,
बरुण के वीरों का जागृत होना ९५०, इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल
दूब और अन्न आदि लिए हुए लड़े थे ९५१, वीरों का गहरे जल में शब्द
करना ९५१, जलवीरों के सहज भयानक और विचराल स्वरूप का वर्णन ९५१,
सामंतों का प्राय पर चला जाना ९५१, जलवीरों के उछारने के वेग से जी
जल प्राय पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन ९५१, जलवीरों के बहुत उपद्रव
करने पर भी सोमेश्वर के सामंतों का भयभीत न होना ९५२, वीरों को स्वयं
अपना पराक्रम वर्णन करके सामंतों का भय दिखाना ९५२, वीरों का राजा
सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना ९५२, सामंतों का वीरों से

यथाशक्ति युद्ध करना ९५२, इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख
 बीरों का बल कम होना और सामंतों का जोर बढ़ना ९५३, प्रातःकाल के
 बाल सूर्य की प्रतिभा वर्णन ९५३, सूर्योदय होते ही बीरों का अन्तर्धान होना
 और सोमेश्वर सहित सब सामंतों का मूर्छित होना ९५३, सब मूर्छित पड़े हुए
 थे उसी समय पृथ्वीराज का वहाँ पर जाना ९५३, निज पिता एवं सब सामंतों
 की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना ९५४, यमुना के
 सम्मुख हथ बांधकर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना ९५४, यमुना जी की
 स्तुति ९५४, स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना ९५५,
 सोमेश्वर की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुनः ब्रह्मज्ञान की युक्तिमय स्तुति
 करना ९५५, इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यन्त्र का जप
 करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना ९५५, पृथ्वीराज
 का सोमेश्वर को मिर नवाना ९५६, सोमेश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज का
 राजमहल में आना ९५६ ।

[समय ३६] अथ सोमबध सम्भो लिख्यते

[पृष्ठ ९५७-९७०]

भीम देव की इच्छा ९५७। भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह
 करना ९५७, सब सरदारों का कहना कि वीर का बदला आवश्यक लेना चाहिए
 ९५८, भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा ९५८, भीमदेव की सेना का इकट्ठा
 होना ९५८, भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य
 ९५८, भोलाराय भीम का माम दाम दंड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों
 को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना ९५९, मंत्रियों का कहना कि इस
 कार्य में विलंब न करना चाहिए ९६०, राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत
 भीषण घटनाओं का ऐतिहासिक उदाहरण ९६०, पुनः मंत्रियों का आख्यान
 कहना ९६०, भोलाराय का सेनासज्ज कर तयारी करना ९६०, सेना के जुड़ाव
 का वर्णन ९६०, कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे
 होनहार को नहीं जानते ९६१, सेना का श्रेणीबद्ध खड़ा होना ९६१, सेना
 समूह का क्रम वर्णन ९६१, उक्त सेना समूह की सजावट के आर्तक की पावम
 ऋतु से उपमा वर्णन ९६१, इसी अवसर में मुख्य सामंतों सहित पृथ्वीराज का
 उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों को पश्चिम सेना की तरफ
 आने की आज्ञा देना ९६२, पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का
 भी चला जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था ९६२, उसी समय
 पूर्व वीर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़ आना, प्रातःकाल
 की उसकी तयारी का वर्णन ९६२, इधर कन्हू और जैसिह के साथ सोमेश्वर

का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तैयार होना १६२, सोमेश्वर की सेना को तैयारी वर्णन १६३, सैनिकों का उत्साह सोमेश्वर की बीरता और कन्हाराय का बल वर्णन १६३, युद्ध आरंभ होना १६३, कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति उसका व्याख्यान १६४, कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना १६४, दोनों हिंदू मेनाओं की परस्पर ओजस्विता का वर्णन १६४, कन्हाराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन १६४, कन्ह राय का कोप १६५, अपनी सेना को छितर बितर देव कर भीम देव का रोा में भाकर स्वयं युद्ध करना १६५, कन्ह और भीम देव का परस्पर पोर युद्ध होना १६६, कवि की उक्ति १६६, युद्ध स्थल की उपमा वर्णन कन्हाराय का भीमदेव के हाथों को मार गिराना १६६, दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध १६७, जामराय यद्धव और उमतां सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मनवांछे हाथियों में उपमा वर्णन १६७, उक्त दोनों वीरों की मदान्ध व्रत में उपमा वर्णन १६८, इन वीरों का युद्ध देखकर देवताओं का विस्मित होना और पुनः वृष्टि करना १६८, सोमेश्वर जी के वाम मेनाद्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन १६८, भीमदेव की सेना का भी मावम की रात्रि के समान जुट कर आगे बढ़ना १६८, भीमदेव की सेना का चारों ओर में सोमेश्वर को घेर लेना १६९, उस समय चतुर्भान वीरों का जीवन की भाशा छोड़ कर युद्ध करना १६९, सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना १६९, भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना १६९, अपना धरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अनुलिन वीरता में युद्ध करना और उसका मारा जाना १७०, सोमेश्वर के माय मारे गए हाथी घोड़े पदाती एवं रावन सामंतों संख्या कथन १७०, सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का प्रायल होकर मूर्छित होना १७१, सोमेश्वर को मृत्त सहज ही मिली १७१, पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि सय्या धारण करना और घोड़मी आदि मृत्युकर्म करना १७१, पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बाघंगा न घी खाऊंगा १७१, पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना १७२, पृथ्वीराज का राज्याभिषेक १७२, पृथ्वीराज का दरबार में बैठना और विप्रों का स्वस्नयन पढ़ कर निरुक्त करना १७२, पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरबार में नृत्य गान होना १७३, दरबार में सब सामंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन १७३, ईच्छनी में गठबन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचार संशुद्धी प्राप्त विधान करना १७४, पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामंतों का टीका करना १७४, पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन १७४, ।

[समय ४०] अथ पञ्जून छोंगा नाम प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ९७५-९७७]

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना ९५५, पञ्जून राय बछवाहे की पट्टन के सग्राम में वीरता वर्णन ९७५, पृथ्वीराज का पञ्जून राय के मिर पर छोटा बांध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना ९७५, दूत का ममाचार देना कि भोगाराय इस समय सोनिगर के किले में हैं और यहा पर पञ्जूनराय का चढ़ाई करना ९७५, पञ्जून राय की चढ़ाई की शपथ वर्णन ९७६, पञ्जूनराय का घेरा डालना मलय विह का मुन्नाबला करना ९७६, भू पञ्जून राय का चावुक भूठ जाना श्री किरमत रोम म लोट कर चावुक की मरी गना में से चावुक ले जाना ९७६, चावुक मना का पीछा करना और पञ्जूनराय का उस परास्त करना ९७७, छोटा देहर भीमदेश का पट्टन को जाना और मलय विह और पञ्जूनराय की कौर्ति का स्थापित होना ९७७, पञ्जून राय का पृथ्वीराज को छोटा नजर करना ९७७, पृथ्वीराज का पञ्जून राय का ही छोटा द देना और एक छोटा और दना ९७७, चन्द्र कवि की उक्ति में पञ्जून राय के वीरदियारामणि होने की प्रशंसा ९७७ ।

[समय ४१] अथ पञ्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिख्यते

[पृष्ठ ९७८-९८२]

जै नन्द के उभाड़ने से बालुका राय सोलकी और शहाबुरीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना ९७८, दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना ९७८, पृथ्वीराज का विचार करना की पञ्जून राय से यह कार्ययं होना सभव है ९७८, पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को बुलाना ९७८, पृथ्वीराज का सभा में बीडा रखना और किमी का बीडा न उठाना, सबका पञ्जूनराय की प्रशंसा करना ९७८, पञ्जूनराय का भरी सभा में बीडा उठा कर दोनों शत्रुओं का हवस करने की प्रतिज्ञा करना ९७९, मुलतान और कमघुज्ज के दल की सर्प और अकीम से उपमा और पञ्जूनराय की गरुड और उंट से उपमा वर्णन ९७९, पञ्जूनराय के बीडा उठाने पर सभा में आनन्द ह्वनि होना ९७९, पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को घाटा देना ९७९, चढ़ाई के लिये तय्यार होकर पञ्जूनराय का अपने कुटुम्ब स मिटना और उसके पात्रो घाड़यों का साथ होना ९७९, पञ्जूनराय की चढ़ाई की जोधा वर्णन ९८०, पञ्जूनराय के बूच की तिथि वर्णन ९८०, पञ्जूनराय का इन शीरनामों का वर्णन ९८०, पञ्जूनराय की चढ़ाई का आतंक वर्णन ९८०, पञ्जूनराय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुचना ९८०, कमघुज्ज और यवन सेना से पञ्जूनराय का साम्हना होना ९८१, दोनो प्रतिपक्षी सेनाओं का आतंक वर्णन ९८१, पञ्जून सेना के भूहवह्य होने का स्पष्टीकरण ९८१, युद्ध की तिथि ९८१, पञ्जूनराय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना

१८२, इस युद्ध में पञ्जूनराय के भाइयों का मारा जाना पञ्जूनराय की जीत होना और शत्रु सेना का माल मत्ता लूटा जाना १८२, पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा १८२, पञ्जूनराय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना १८२ ।

[समय ४२] अथ चंद्र द्वारका समयो लिख्यते

[पृष्ठ १८३-१९२]

कविचन्द का द्वारिका को जाना १८३, कविचन्द का यात्रा समय का सात्र समान और उसके साथियों का वर्णन १८३, चंद्र का चित्तौर के पास पहुँचना १८३, चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन १८३, चिन्नकोट गढ़ की पूर्व कथा १८४, उक्त मोरी का गोमुख कुंड बनवाना १८४, एक तिहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना १८४, तिहनी की पूर्व कथा १८४, कविचन्द का जाना सुन कर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना १८५, कवि का चित्तौर जाना १८५, कवि का किले में भोजन करने जाना पृथा का उसे भोजन परोसना १८५, कन्ह अमरनिहादि सामंतों का पृथा कुमारी को उपहार देना १८६, चंद्र का चित्तौर से चलना १८६, द्वारिकापुरी में पहुँच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना १८६, कविचंद्र कृत रणछोड जी की स्तुति १८६, देवी की स्तुति १८७, कवि का होम करके ब्राह्मण भोजनादि कराना १८७, द्वारिकापुरी में छाप लगवाने का महात्म्य १८७, द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में जाना १८८, पट्टनपुर के नगर एवं ग्राम्य की शोभा वर्णन १८८, पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहाँ की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन १८९, राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना १८९, भीमदेव का कविचंद्र के पास अपने भाट जगदेव को भेजना १८९, जगदेव का कविचन्द से मिलना १९०, जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल बँभव की प्रशंसा करना १९०, कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना १९०, जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ १९१, भोराराय भीमदेव का चंद्र के डेरे पर जाना १९१, कविचन्द का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना १९१, कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना १९१, कविचन्द और अमरनिह सेवरा का परस्पर बाढ होना और कविचन्द का जीनना १९२, भीमदेव का अपने महक को लौट जाना १९२, कविचन्द का मुरतान की चढ़ाई की खबर मुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना ।

परिशिष्ट १

१-१४

परिशिष्ट २

१६-२४

पृथ्वीराज रासो

भाग १

पृथ्वीराजरासो

आदि पर्व लिख्यते
(पहिला समय)

आदिदेव गुरु, वाणी, लक्ष्मीश, मुरनाथ और मर्वश का
मगलाचरण ॥

एक ऊँ आदी देव प्रनम्य नम्य गुरय, वानीय वदे पय ।
सिष्ट धारन धारय वसुमती, लच्छीस चर्नाश्रय ॥
त गु निष्टति ईस दुष्ट दहन, मुर्नाथ सिद्धिश्रय ।
धिर्चञ्जगम जीव चद नमय, सर्वे म वर्दामय ॥ छंद ॥ १ ॥ रूपक ॥ १ ॥

१ यह मगलाचरण त्रिस छंद में चंद कवि न करता है उसका नाम उमने साटक
गण किया है और इस नाम से यह छंद आज कल जो छंद ग्रंथ प्रायः उपलब्ध है,
उसमें नहीं मिलना । यद्यपि उमकी परीक्षा करने में वह निःसंदेह शादंलविकीर्तित्
यक छंद मान्य होता है परंतु जबतक उमका लक्षण अथवा नामान्तर होने का
ई प्रमाण नहीं दिखलाया जाय तब तक पुरातत्त्ववेत्ता विद्वान् मनुष्य नहीं हो
सकते । अतएव बहुत शोध करने में गुजराती भाषा के काव्यों में इस नाम का छंद
सा और The Revd Joseph Van S Taylor साहब अपने गुजराती भाषा
करण के पद्यसंग्रह अथवा छंदविद्या नामक प्रकरण के पृष्ठ २२३ में उमका
एक नाम से कुल ३८ अक्षरों की दो तुक का छंद होना लिखते हैं कि जिसकी
येक तुक में $१२ + ७ = १९$ अक्षर होते हैं । इसके सिवाय प्राकृतभाषा के किसी
ग्रंथ में अनुवादित होकर सं० १७७६ में जो एक रूपदीप विग्रह नामक छंद ग्रंथ
॥ है उसमें केवल ५२ छंदों के लक्षण कहे हैं । उसमें भी साटक का यह लक्षण
ना है ।

साटक छंद लक्षण

कर्म द्वादश अंक आद संज्ञा, माषा सिवो मागरे ।
दुःखी भी करिके कलाष्ट दम भी, अर्को विगमाधिक ॥ १ ॥
अने गर्ब निहाय धार सबके, अगरे कछू भेद ना ।
तीसो मस्त उनीस अंक करने, तैसो भजे साटिक ॥

हम इस साटक छंद को पिगल छंद सूत्रम् नामक ग्रंथ में कहे शार्दूलविक्रीडित् छंद का समानान्तर होना मानते हैं और उसका लक्षण बहुत प्राचीन अमर और भरत-कृत छंद ग्रंथों में अवश्य होना अनुमान करते हैं क्योंकि चंद्र कवि ने भी अपने इसी ग्रंथ के आदि पत्र के रूपक ३७ में जो कुछ कहा है उससे स्पष्ट मालूम होता है कि उसने अपने इस महाकाव्य की रचना में पिगल अमर और भरत के छंद ग्रंथों का आश्रय लिया है ॥

इस छंद के लक्षण का पता लगाकर अब हम इस रूपक के पाठ को शोधते हैं । उस की पहिली पक्ति का पाठ A S B की छपी हुई पुस्तक की Fasciculus I जिसको Mr. John Beames साहब ने शोध कर छपाया है उसमें "आदि प्रनम्य नम्य गुरयं वानीय वंदे पर्यं" ऐसा पाठ है और जो Mr F S Growse, C S M. A ने रामो के प्रारंभ के छंदो का अनुवाद करने में पाठ लिखा है वह भी ऐसा ही है । निदान साटक के लक्षण के अनुसार इस नुक में १२ + ७ - १९ अक्षर होने चाहिए परंतु उसमें १० + ७ = १७ अक्षर हैं । अब यह अत्यावश्यक है कि घटने हुए दो अक्षरों का पता लगाया जाय । यह कल्पना करनी कि चंद्र कवि अथवा उसके नाम में कोई यह जाली ग्रंथ बनानेवाला छंद ग्रंथों में भले प्रकार व्युत्पन्न न होने के कारण मूल में ही भ्रूठ गया है. सर्वरीन्या अयोम्य और आश्चर्यं दायक वान है । क्योंकि वर्तमान पृथ्वीराजराजसो का विगडा हुआ काव्य भी अपने कर्म का एक बड़ा व्युत्पन्न कवि होना स्वयम् स्पष्ट प्रकाश करता है अतएव उसका ऐसी भ्रूठो का करना निर्मल प्रजावाले विद्वानो के ध्यान में सर्वथा असंभव है ।

इस प्रथम नुक में जो दो अक्षर घटने के वे पक्ति भर में किम स्थान में लेखक अथवा शोधक की भूल में लोप हो गए है इस वान की शोध लेने के लिये यह एक बड़ी मरल युक्ति है कि हम इस नुक के अर्थ का ध्यान में लेकर उसके वाक्यखंडो को पृथक-पृथक कर दे कि जिस में अपूर्ण वाक्यखण्ड अपने आप हमको घटते हुए बतला देवे; जैसे कि वानीय वंदे पर्यं और नम्य गुरयं और आदि प्रनम्य ऐसा करने से हमको मालूम हो गया कि आदि प्रनम्य वाक्य खंड अपूर्ण है और उसमें कोई-संज्ञावाचक शब्द घटना है । अब विचारना चाहिए कि वह संज्ञावाचक शब्द आदि शब्द के पहिले घटना है अथवा पीछे । जो हम आदि शब्द के पहिले उमीका होना मानें तो "आदिः पदान्ते गण सूचकः" में दोष प्राप्त होकर हमारी कल्पना अन्यथा हो जाती है अतएव मानना चाहिए कि आदि शब्द के पीछे कोई संज्ञावाचक शब्द है; क्योंकि ऐसा मानने में आदि शब्द उस शब्द के साथ मिलकर हमको कर्मधारय समास का होना स्पष्ट विदित करना है । जब कि यह निश्चय हो गया कि आदि शब्द के पीछे अर्थान् आदि और प्रनम्य के बीच में कोई संज्ञावाचक शब्द रह गया है तब हमको फिर सूक्ष्म विचार में निमग्न होना चाहिए कि वह संज्ञावाचक शब्द कौन सा है कि जिसको चंद्र कवि ने प्रयोग किया था । हम

संदेह कल्पना करने है कि यहाँ देव शब्द वा अर्थात् आदी देव ऐसा पाठ चंद्र प्रयोग किया था, क्योंकि प्रथम तो “आदिः कारण स च देवश्चेतिःमधारयः” तथा जगदुपादानादि गुणवान नारायणः”, दूमरे, आदि देव व हमारी मस्कृत भाषा के प्रामाणिक ग्रंथों के मगलाचरणों तथा ईश्वर की नि तथा ईश्वर के ध्यान के वाक्यों में बहुधा प्रयोग किया गया है कि हम उदा-
 ण के लिये केवल दोही प्रमाण यहाँ दिखाने हैं, जैसे —“परं ब्रह्म परं धाम ।
 तत्र परं भवान् ॥ पुहं शाश्वत दिव्यमादिदेवमज विभु” तथा “त्वमा-
 त्वः पुहं पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधान” ॥ तीसरे, चंद्र कवि ने
 इस महाकाव्य में इस आदि देव शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों में किया है
 कि “प्रनम्य प्रथम मम आदि देव ऊँकार शब्द जिन करि अछेव”, चौथे
 नुक में प्रथम मगण होने के कारण तीना अक्षर दीर्घ होने वाशिए अनपेक्षित कवि
 आदी देव ऐसा पाठ कहा है । आदि शब्द मस्कृत में इकारान्त है परन्तु उम
 ने यहाँ मगण होने के कारण के अतिरिक्त गानविद्या सबंधी दोष दूर करने के
 लिये भी ईकारान्त किया है, क्योंकि चंद्र गानविद्या में भी निपुण था और
 एक गाने में नुक ही पदही तीरी मात्रा पर पाठ आता है । यद्यपि हमारी
 विद्या में यह है परन्तु जब हमारे इस ग्रंथ का कुछ भाग सोमराज्य के विद्वान
 राजेश्वरी चरीशानजी में पढ़ा था तब उन्होंने यह बातें याद की आदि के
 ओ३म् शब्द का प्रयोग कवि चंद्र ने किया था और उनका अर्थ आदि ओ३म्
 म्य अर्थात् महिसे आकार का नमन करने किया था । यद्यपि यह प्रयोग भी
 उचित माना है और ठीक सा मालूम होता है और जिनकी पुस्तकें राया की हमारे
 नाम में आई है उनमें प्रायः ऐसा ही पाठ मिलता है परन्तु हम उसकी अपेक्षा
 ती वचना का अधिक बलवान और युक्त मानते हैं और आज्ञा करते हैं कि यदि
 यह दिखमान होंगे तो हमारे इस कथाना का प्रमथनापूर्वक मान लेते । यदि
 ओ३म् आदि प्रनम्य ऐसा भी पाठ माने तबार्थ कुछ हासि नहीं है । और जब
 कि किसी बहुत प्राचीन पुस्तक में हमारे इस मानने के विरुद्ध कई अन्य पाठ
 पाठ पावे तब तक हम इस को मानना अयोग्य नहीं समझते हैं ॥

अब हमारी पक्ति का पाठ “मिष्ट धारन धारय वमुमती लच्छीम
 नाश्रय” है । इसमें १० + ८ = १८ अक्षर हैं कि यहाँ चरनाश्रय शब्द को
 चरनाश्रय किया है क्योंकि कोई छंद गान से खाली नहीं है और माटक की
 लक्ष्मी अनुसार उच्चारण में यहाँ रकार स्वररहित हो जाता है और जैसा
 गण और गान में रूप हो वैसा काव्य में लिखने में भी कोई दोष नहीं है । जो
 गान के नियमों से अपरिचित है उनके काव्य में ऐसे स्थलों में अनेक दोष रह
 सकते हैं क्योंकि गान छंद के लिये एक कमीटी है और ऐसे ही मीलों को कवि का
 लिए अर्थात् Poetical License कहते हैं । कोई कोई विद्वान कवि के अधिकार

की छूट अर्थात् Poetical License को दोष मानने हैं परंतु वह एक भ्रम है, क्योंकि मस्वर अक्षर का खोडा कर देना और खोडे को मस्वर कर देना व्याकरणादि भिन्न शास्त्रों में दोष समझना चाहिए परंतु छंद रचना और गान में तो यह दोष नहीं कहाता है। देखो, चंद के इन वचनों के भीतरी आशयो में भी हम यही अनुमान कर सकते हैं—

लहु गुर मंडित खंडियहि । पिगल अमर भरत्थ ॥ ३७ ॥ १

चरन नीम अच्छिर सुरंग । पाटलहु गुरु विधि मंडिय ॥

सुर विकास जारी गु मुष्प । उक्ति रम गौरव नि छंडिय ॥ ४० ॥ १

तीसरी पंक्ति के पाठ तम गुन तिष्ठति ईम दुष्ट दहनं । सुरनाथ सिद्धिभ्रयं में $१४ + ८ = २२$ अक्षर हैं। इनमें ऊपर कही हुई युक्तियों के मिवाय थोडा सा और ध्यान देने से ज्ञात हो सकता है कि ग्रंथकर्ता ने तम गुन और सुरनाथ पाठ नहीं प्रयोग किए थे किंतु जैसे हम ने अनुमान कर शुद्ध किये हैं तं गुं और सुर्नाथ; क्योंकि प्रथम तो इस साटक छंद में मगण होने के कारण तं और गुं ही होने चाहिए और दूसरे चंद के ऐसे प्रयोग इस काव्य में बहुत से स्थलो पर देख पड़ेंगे। यह भी हमारे देखने में आवेगा कि त्वम् और अहम् के स्थान में तं और हं जैसे प्रयोग चंद ने किए हैं। इसमें हम को कुछ भी आश्चर्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि चंद के इस नीचे लिखे वाक्य से हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि उसने अपने इस महाकाव्य की भाषा में षट भाषा और पुरान की भाषा का आश्रय लिया है —

श्लोक ॥ उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नव रसं ।

षट भाषा पुराणं च । कुरानं कथितं मया ॥ १ ॥

अब शेष चौथी पंक्ति का पाठ “थिर चर जंगम जीव चंद नमयं सर्वेस वरदा मयं” में $१४ + ८ = २२$ अक्षर हैं। इसके स्थान में जो यह पाठ “थिर्चंजंगम जीव चंद नमयं सर्वेस वर्दामयं” शुद्ध किया गया है उसके लिए ऊपर कही हुई युक्तियों से ही हमारा शोधन करना ठीक मालूम हो सकता है। इसमें इतना और भी आवश्यक है कि सोसाइटी की मुद्रित की हुई पुस्तक में जो चंदनमयं पदच्छेद किया है वह अयुक्त है और मस्टर एफ० ब्राऊज साहब ने जो चंद और नमयं पदच्छेद किए हैं वे ठीक हैं और हम भी मस्टर ब्राऊज के पदच्छेद से सम्मत हैं ॥

जो पाठ हमने त्रिम रीति से इस रूपक में शुद्ध किए हैं वे अथवा वैसे ही पाठ जो कहीं आगे इस ग्रंथ भर में आवेंगे तो हम उन पर सर्वत्र टिप्पण नहीं करेंगे किंतु वहां का मूल पाठ हमारे यहां पर वर्णन किए शोधन के प्रकार के अनुसार शुद्ध रहेगा। पाठक महाशय इन ही नियमों में उन पाठों को सिद्ध कर समझ लें अर्थात् त्रिम नियम को एक स्थान पर टिप्पण में वर्णन कर देंगे वह अन्यत्र नहीं कहा जावेगा। किंतु जहां कोई नवीन प्रयोग आवेगा वहां उसका वर्णन कर दिखावेगे ॥

जैसे चंद के प्रयोग किए हुए छंदों के नाम और उनके लक्षणों के शोध करने में पुरातत्त्ववेत्ताओं को परिश्रम पडता है वैसे ही उसके इस महाकाव्य के अर्थ लगाने में भी अनेक प्रकार की अड़चनें उपस्थित होती हैं। यद्यपि हमारा मुख्य काम इस ग्रंथ के मुद्रित करने में केवल इतना ही है कि उसके मूलपाठ को मार्थक शोध दें परंतु यह महाकाव्य वर्तमान समय में ऐसी विगड़ी हुई दशा में उपस्थित है कि उस पर इतना परिश्रम न किया जाय कि जितना हम यह करते हैं तो हमारा किया हुआ शोधन पुरातत्त्ववेत्ता विद्वानों को भली भांति संतुष्ट नहीं कर सकता। अतएव हम चंद के काव्य की अर्थ संबंधी कठिनता को दिखलाने के लिये केवल इस मंगलाचरण के रूपक का अर्थ उदाहरण के लिये करते हैं कि जिसमें हमारे पाठकों को मालूम हो कि मूल पाठ का शुद्ध होना अर्थ पर दृष्टि दिए बिना असंभव है। महाकवि चंद अपने इस महाकाव्य के आरंभ में इस मंगलाचरण के रूपक में आदिदेव, गुरु, वाणी, लक्ष्मीश, सुरनाथ और सर्वेश को नमस्कार करना है। वह कहता है कि “आदिदेव को नमन कर के और गुरु को नमस्कार करके, वाणी के पदों को वंदन, स्वर्ग, पाताल (और) पृथ्वी के स्रष्टा लक्ष्मीश के चरणों का आश्रय, दुष्टों के दहन करने को तम गुण (जिस) ईश में रहता है [उम] सुरनाथ की पादुका का सेवन [और] थिर, चर, जंगम, [और] जीव के वरदामय सर्वेश को [मैं] चंद नमन करता हूँ”

हमारे लिए इस अर्थ के विचार से विद्वानों को मालूम हो सकेगा कि यद्यपि इस के अनेक प्रकार के अर्थ हो सकते हैं परंतु यह अर्थ चंद के व्याकरण शास्त्र संबंधी जो नियम उसके इस ग्रंथ से मालूम होते हैं उनके अनुसार सरल और कवि की युक्ति के अनुकूल है। इसमें कितनेक शब्द ऐसे भी हैं कि जो अर्थ करनेवाले को चमका और भड़का देते हैं, परंतु हम इस रूपक के सब शब्दों के विषय में अर्थात् जिसके विषय में जितना कहना आवश्यक है कहते हैं—

आदिदेव — [सं. पु. आदिदेवः । आदौ दीव्यति स्वयं राजते] नारायण । इस शब्द के विषय में हमने ऊपर कहा है अतएव यहां विशेष नहीं कहते, किन्तु उसके प्रयोग के दो प्रमाण और भी यहां देते हैं—सहस्रात्मा मयायोव आदिदेव उदाहृतः ॥ या. स्मृ. ॥ वासुदेवो बृहद्भानुरादि देवः पुरंदरः ॥ वि. सहस्रनाम ॥

प्रणम्य — (सं. प्रणम्य) नमन करके अथवा प्रणाम कर के ॥

नम्य — (सं. अ. नमः अथवा नम् — नमना) नमस्कार करके । इस शब्द के भी म्य पर साटक की ध्वनि के अनुसार ताल है अर्थात् यहां भी स्वर उदात्त है ॥

गुरुयं—गुरु को । यह चंद की हिन्दी के पुर्लिंग गुरु शब्द की द्वितीया का निज प्रयोग है । चंद के ऐसे निज प्रयोगों को देख कर हमको आश्चर्य के वस न हो जाना चाहिए किन्तु इस बात की खोज करनी चाहिए कि चंद की हिन्दी के व्याकरण संबंधी नियम क्या और कैसे हैं । और ऐसे अनुस्वार सहित शब्दों को

देख कर यह अनुमान भी नहीं करना चाहिए कि रासो का ग्रंथकर्ता ऐसा निर्बोध था कि उसको अनुस्वार और विसर्ग तक का ज्ञान नहीं था। ये हमारे अन्वेषण ध्यान में लाने योग्य है कि प्रथमतः चद की हिन्दी तीन प्रकार की है—षट् भाषा और पुरान की भाषा की योनिवाली १ षट्-भाषा और पुरान की भाषा के सम २ और देशी प्रमिद्ध ३। दूसरे, साप्रत हिन्दी में तो नपुसकलिंग नहीं है परंतु चद की हिन्दी में तीनों लिंग हैं। तीसरे, जितनी सज्ञा अनुस्वार सहित उसमें प्रयोग हुई है वे पुल्लिंग अथवा नपुसकलिंग ही हैं। देखो, यहाँ नम्य गुरुय वाक्य खंड में कवि के अर्थ को ध्यान में लाने में गुरुय शब्द पुल्लिंग में प्रयोग किया गया मालूम होता है और पाचवे रूपक की इस तुक गुरु सव्व कव्वी लहू चद कव्वी जिन दसिय गेवि साअग हव्वी में गुरु शब्द चद ने अपनी हिन्दी के नपुसकलिंग की प्रथमा में प्रयोग किया है। और जहाँ क्रिया शब्दों में अनुस्वार है, जैसे इमी प्रमाण में प्रवेश की गई तुक में दसिय शब्द है वह संस्कृत दर्शित में है। बहुत से शब्दा पर लेखकों ने अपने अव्युत्पन्न होने के कारण जो अनुस्वार लगा दिये हैं उनका सूक्ष्म विचार करने में विद्वान् स्पष्ट जान सकने हैं कि यहाँ कवि ने अनुस्वार का प्रयोग नहीं किया था किन्तु लेखकों ने अपनी उज्ञानता में लगा दिया है और कहीं-कहीं उन्होंने कवि के प्रयोग किए हुए अनुस्वारों का उच्चारण दिया है जैसे पाचवे रूपक के भुजगप्रयाण छंद की पहिली तुक में चद ने ऐसा प्रयोग किया था कि प्रथम भुजगी सुधारी ग्रहन जिनै नाम एक अनेक कहन ॥ उसके स्थान में एमियाटिक सोमाट्टी की छापी हुई पुस्तक १ के पत्र ३ में देखो कि जिस लिखित पुस्तक में वह छापी गई है उसके लेखक ने प्रथम भुजगी सुधारी ग्रहन जिनै नाम एक अनेक कहन पाठ कर दिया है। इसके अनिश्चित चद के अनुस्वार सहित शब्दों के प्रयोग करने के और भी अनेक कारण हैं परंतु वह जब अपने मकलित किये हुए चद के व्याकरण सबधी नियम हम कुछ समय में प्रकाश करेंगे तब स्पष्ट रीति में हमारे पाठकों को हमारे बड़े परिश्रम में सिद्ध किये हुए अन्वेषण मालूम हो जायगे ॥

वानीय— (म स्त्री वाणि = सरस्वत्याम्) सरस्वती के। यह चद की हिन्दी में षष्ठी के एक वचन का रूप है और जैसे संस्कृत में श्री शब्द के रूप में षष्ठी का श्रय होता है उभी तरह चद ने अपनी हिन्दी में वानीय किया है।

वदे— वदन करता हूँ ॥ चेत रखना चाहिए कि हम ऊपर गुरुय शब्द की व्याख्या में चद की हिन्दी तीन प्रकार की होना बतला आए हैं उसमें से यहाँ यह वदे संस्कृत-सम के रूप का प्रयोग चद ने किया है ॥

पयं (सं० पय = गती) चरणो को ॥ यह चंद की हिन्दी के पुल्लिग की द्वितीया का रूप है । कोई-कोई कवि जो पय शब्द को पैर का वाचक होना बिलकुल नहीं बताते और उसका अर्थ यहा "दूध जैसी ज्वेत अथवा जल जैमी निर्मल सरस्वती को बदन करना हू" करने हैं, वे भूलते हैं । पय शब्द पैर का वाचक मामत हिन्दी मे भी रात्रिदिन बोलचाल मे आता है जैसे पयलगी, पैलगी, पालागन, पाय और पयदल, इत्यादि । और सम्कृत मे भी पय = गती है । ग्राऊज साहब ने जो इस शब्द को पैर का वाचक अपने अंग्रेजी अनुवाद मे माना है वह बहुत ठीक है और हम उनमे इस विषय मे सम्मत हैं ॥

सिष्ट (सं० त्रि० मृष्ट निर्मिते । रचिते) मृजनेवाला । चद की हिन्दी मे सं० मृष्ट मृजनेवाले का नपुमकलिग की प्रथमा का एकवचन है । इसको सिष्ट अथवा श्रष्ट आदि शब्दों का अपभ्रग मानना अयुक्त है किन्तु वह चद की हिन्दी मे सं० चि० मृष्ट का सिष्ट बना है । इसी तरह सं० भृष्ट, भ्रष्ट, धृष्ट इष्ट, के अपभ्रग रूप हिन्दी मे भिष्ट घिष्ट, दिष्ट होते हैं ॥

धारण [सं० प० धारण स्वर्णके] स्वर्गलोक ॥ धारय [सं० चि० धारय = धारके । नाग देशे ॥ धारयै कुमुमोम्पणाम् । भट्टि] पानाल लोक ॥ वसुमती [सं० स्त्री भूलोक । रणटम्] भूलोक यहा थोडा सूक्ष्म विचार कर हमारा क्रिय अर्थ की मत्ता जाचन का काम है क्योंकि सिष्ट धारण धारयं वसुमती लच्छीम चर्नाश्रय का अर्थ अनेक कवि अनेक प्रकार का करने हैं परन्तु हम उनको चद के अभिप्राय के अनुकूल नहीं समझते । इन शब्दों के प्रयक् प्रयक् अर्थ तो हमने सम्कृत कोशों मे लेकर वर्णन कर ही दिए है । इसके सिवाय लच्छीम शब्द जो विष्णु का वाचक है वह हमको यह अर्थ करन की सारत लक्षणा कराता है कि धारण स्वर्गलोक । धारय पानाल-लोक ॥ और वसुमती भूलोक का सिष्ट मृजनेवाला [जो] लच्छीम = विष्णु [उसके] चर्नाश्रय = चरणों का सेवन [करता हू] यही बहुत ठीक अर्थ है क्योंकि यहा तत्पुरुष ममाम है और लक्ष्मीश का अर्थ विष्णु शास्त्रो मे नीचे लिखे प्रमाण मे स्पष्ट है । उसमे भी हमारा किया हुआ अर्थ अच्छी तरह पुष्ट होता है

यस्मात् विश्वमिद सर्वं तस्य शक्त्या महात्मन ।

नस्मात् देवोच्यते विष्णु विशधानो प्रवेशनात् ॥

ज्योतीषि विष्णुर्भुवनानि विष्णुर्बनानि विष्णुर्गिरयो दिशश्च ।

नद्य समुद्राश्च स एव सर्वो यदस्ति यन्नास्ति च विप्रवर्येति ॥

अनादि निघन विष्णु । सर्वलोक महेश्वर ।

लोकाध्यक्ष स्तुष नित्य । सर्व दु खानि गो भवेत् ॥ ९ ॥

लोकनाथं महद्भूतं । सर्वभूतभवोद्भवं ॥ १० ॥

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षां । धर्माध्यक्षः कृतः कृतः ॥ ३१ ॥
 लक्ष्मीवान् समितिं जयः ॥ ५६ ॥ श्रीमाल्लोक चयाश्रयः ॥ ८२ ॥
 त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः । केशवः केशिहा हरिः ॥ ८६ ॥
 लोकस्वामी त्रिलोक धृत् ॥ ८० ॥ लोकाधिष्ठानमदभुतः ॥ ११२ ॥
 त्रीन् लोकान् व्याप्य भूतात्मा । भुंक्ते विश्व भुगव्ययः ॥ १४४ ॥
 वामनाद्वासुदेवस्यः । वासितं भुवन चयं ॥ १५३ ॥

चर्नाश्रयं—(सं० चरण + आश्रयं =) चरणों का सेवन ॥ यह अनुस्वार सहित शब्द भी चंद की हिन्दी का संस्कृत-सम नपुंसकलिङ्ग है ।

तं । गुं [सं० न० तम. और पु० गुणः] तम । गुण । चंद की हिन्दी के नपुंसकलिङ्ग ॥ प्राकृत—भाषा सम का प्रयोग ॥

तिष्ठति—(सं० तिष्ठति) रहता है । चंद की हिन्दी के संस्कृत-समभेद का रूप है ॥

ईस—(सं० पु० ईस = महादेव) सदाशिव ॥

दुष्ट—(सं० न० दुष्ट = अधमो वंचके) दुष्ट दहनं = दुष्टों का दहन करने के लिये अथवा दुष्टों के दहनार्थं ॥

दहनं—(सं० पु० दहनः = दाहे । भस्मीकरणे ।) दहन के लिये चंद की हिन्दी का नपुंसक है ॥

सुर्नाथ—(सं० पु० सुर + नाथ = रुद्र) महादेव की ॥

सिद्धि—(सं० स्त्री० = सिद्धिः = पादुकायाम्) पादुका का ॥

श्रयं—(सं० पु० श्रयः = श्रयणे । श्राये ॥ श्रिञ् = सेवायाम्) सेवन ॥ सिद्धि श्रयं = पादुका का सेवन ॥

स्थिर—(सं० पु० स्थिरः = स्थिर पदार्थाः) स्थिर वस्तु; जैसे—पर्वत और पृथ्वी आदि ॥

चर—(सं० पु० चरः = चले) चर वस्तु अथवा पदार्थ, जैसे. वस्तु और जलादि ।

जंगम—(सं० त्रि० जंगमः = पशुपक्षी) कीट पतंगादि ॥

जीव—(सं० पु० जीवः = प्राणिनि) मनुष्यादि ॥ ध्यान में लेने की बात है कि पंडितों ने सब पदार्थों को स्यावर और जंगम नामक दो भेदों में ही विशेष करके विभक्त किया है । परन्तु चंद ने सब पदार्थों के चार भेद माने हैं । प्रथम स्थिर, जो सदैव स्थिर रहते हैं; जैसे पर्वतादि; दूसरे चर, जो सदैव स्थिर नहीं रहते; जैसे स्थानादि; तीसरे जंगम जो जीव दूध नहीं पीते; जैसे कीट पतंगादि; और चौथे जीव, जो दूध पीते हैं; जैसे मनुष्यादि । हम ने किसी किसी शक्ति को इन चारों शब्दों के प्रयोग करने के कारण चंद कवि का दोष देने हुए सुना है परन्तु यह उनकी भूल है, क्योंकि उन्होंने कवि के सूक्ष्म आशय को ध्यान देकर नहीं समझा है ॥

धर्म-स्तुति

बधुआ—प्रथम सुमंगल मूल श्रतबिय । स्मृति सत्य जल सिचिय ।
 सुतरु एक घर धम्भ उभ्यो ॥
 चिषट साष रम्मिय त्रिपुर । बरन पत्त मुख पत्त मुभ्यो ॥
 कुमुम रंग भारह मुफल । उकति अलंब अमीर ॥
 रस दरसन पारस रमिय । आम असन कवि कीर ॥
 ॥छं० २ः॥ ६० २ ॥

चंद बरदई—इस महाकाव्य का ग्रंथकर्ता कि जो हिन्दुओं के अंतिम बादशाह पृथ्वीराज जी चौहान का लंगोटिया मित्र और उनके दरबार का कविराज था । वह भट्ट जाति जो आज कल राव करके कहलानी है, उसके जगत नामक गोत्र का था और उसके पूर्वा पंजाब देश के लाहौर नगर के रहनेवाले थे और उनकी यजमानी अजमेर के चौहानों की थी । उसकी जैसी शूरवीरता इस काव्य में विदित होती है उसका मुख्य कारण यही है कि वह पंजाब देश की अद्यावधि प्रसिद्ध वीरभूमि के तन्वों में उत्पन्न हुआ था और राजपूताने के हृदयरूपी अजमेर नगर में बड़ा हुआ था । वह षट-भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य छंद शास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, मंत्रशास्त्र, पुराण, नाटक, और गान आदि विद्याओं में अच्छा व्युत्पन्न पंडित था । उसके पिता का नाम वेण और विद्यागुरु का नाम गुरुप्रसाद था । उसकी दो स्त्रियों के नाम कमला अर्थात् मेवा और गौरी अर्थात् राजोरा और एक लडकी का नाम राजबाई और दस लडकों के नाम सूर १ सुन्दर २ मुजान ३ जल्ह ४ बल्ह ५ बलिभद्र ६ केहरि ७ वीरचंद ८ अवधूत अर्थात् योगराज ९ और गुनराज १० थे । इस महाकाव्य के विषयों को वैसे तो उसने समय-समय पर बनाकर कठ कर रक्खा था परन्तु उनको ग्रंथाकार में उस ने ६० ॥ दिन में रचा था और अतः को उसने रासो की पुस्तक अपने लडके जल्ह को दी थी । इस रासो के अतिरिक्त उस के रचे और भी कई एक ग्रंथ सुनने में आते हैं परन्तु उन में सब से बड़ा ग्रंथ यही है और अन्य सब ग्रंथ अब बिलकुल नहीं मिलते हैं । उसका सविस्तर जीवनचरित और वंशावली जहां तक हमारे जानने में ख्यातादि से आई है वह हम इस ग्रंथ के समाप्त होने पर छाप कर प्रसिद्ध करेंगे ॥

नमयं—नमस्कार अथवा नमन करता है अथवा करता हूँ ॥

सर्वेश—(सं० सर्वेशः = ब्रह्मा) ब्रह्मा ॥

वर्दामयं—वरद—स्वरूप ॥

२ इस रूपक के छंद का बधुआ नाम चंद कवि ने तो अपने समय का प्रसिद्ध ही लिखा है परन्तु वह सांप्रत काल में पुरातत्त्ववेत्ता और कविराजाओं को भी पूरा

परिश्रम देनेवाला एक छंद है। हमने इस छंद के लक्षण के लिये अपने अंग्रेजी भरत-
सूत्र के कवियों के अतिरिक्त राजपूताने के कवियों से भी पूछा और सब ने आज
कल के उपलब्ध छंदग्रंथों में भी उसे ढूंढा परन्तु जो कवि पक्षपातरहित और सज्जन
है उन्होने तो स्पष्ट कह दिया कि इस नाम का कोई छंद हमारे जानने में नहीं
आया है किन्तु चदकृत इमी महाकाव्य में इस छंद का नाम देखने में आता है, परन्तु
जो कवि ऐसे है कि अपनी हठ-उक्ति के आगे और कुछ ध्यान में नहीं लाते उनमें
से किमी ने आर्य्या का एक भेद और किसी ने कहा कि इनमें लेखक और शाधक कवि
के दोष में काव्य छंद में अथवा उगाहा में दोहा मिल गया है परन्तु किमी का भी
कहना पुरानन्त्रवेत्ताओं का मनाष देनेवाला नहीं हो सकता है। इस छंद के विषय
में हमारा कहना यह है कि जो आज अमर और भरतकृत छंद ग्रंथ उपलब्ध होते
कि जिनका आश्रय चद न लिया है ना उनके शोध में कुछ कठिनाता नहीं पडती।
हम इस छंद को रूपदीप पिगल में वर्णन किये हुए रिडुक का नामान्तर होना नि मदेह
मान कर उसका शोधन करते हैं। देखो रूपदीप पिगल में रिडुक छंद में ही रिडुक
का यह लक्षण कहा है

रिडुक नाम छंद लक्षण।

कीजे कला प्रथम तिथ मान, दश एको दूसरे,

तीजे गिन दश पाचरिये ॥

फिर चौथे दस एकं। परस्यन में पाच में करिये ॥

रोडा सठ मठ मन है। कीनो मेंम बखान।

तामें फिर दांहा मिले। रिडु छंद पहिचान ॥

इसमें मालूम होगा कि यह बहुधा छंद कैसा एक विचित्र छंद है कि जिसकी
पहिली तुक में दो यति होने के कारण $१५ + ११ + १५ = ४१$ मात्राएँ होती हैं और
दूसरी में एक यति होने से $११ + १५ = २६$ मात्राएँ और सब मिलकर ६०। इन
दो तुकों के पीछे एक दोहा होता है। जो इसमें दोहा न लगावें तो जहाँ तक ६०
मात्राएँ होती हैं वहाँ तक का रोडा नामक छंद होता है।

इस छंद की प्रथम तुक की गति के प्रथम टुकड़े में बीस पाठ अशुद्ध हैं, उनके
स्थान में हमने बिय किया है। और दूसरी यति के दूसरे टुकड़े में मिथियइ के
स्थान में मिथिय और धम्म के स्थान धम्म और यत के स्थान में पत्त, भारह
को भारह, और परस को पारस शुद्ध किया है और ये शोधन ऐसे साम्प्रारण हैं
कि जिनके लिये कोई तर्क लिखने की आवश्यकता नहीं है ॥

कर्म-स्तुति

कविता— प्रथम मंगल प्रमान । निगम संपजय वेद धुर ॥

त्रिगुण साख चिह्न चक्क । वरन लग्गो सु पत्त छुर ॥

त्वचा धम्म उइवरिय । सत्त फूल्यो चावद्दिसि ॥

क्कम्म सुफल उदयत्त । अन्नत सुन्नत मध्य वसि ॥

डुल्लै न वाय न्प नीति ध्रति । स्वाद अमृत जीवन करिय ॥

कलि जाय न लग्गै कलंक इहि । मत्ति मत्ति आढति धरिण ॥

॥छं० ३॥ रू० ३॥

३ इम रूपक मे प्रथकर्ता वृक्ष के रूकाकार मे धर्म की स्तुति करता है ॥

कवि ने इम रूपक के छंद को कवित्त मजा दी है । माप्रत काल मे यह छप्पय, छप्पै षटपद, षटपदी आदिक नामो मे प्रसिद्ध है, परन्तु मत्तहवी यत्तादी के पहिले यह कवित्त नाम मे ही प्रसिद्ध था । स्वादीप पिगलवाले ने भी जो नीचे लिखा छप्पय का लक्षण कहा है उममे उमने भी यह कहा है कि—“सुन गरुड पंख पिगल कहै छप्पै छः कवित्त यह इमसे सिद्ध होता है कि इम प्रथ के वनने के समय तक छप्पै का नामान्तर कवित्त करके प्रसिद्ध था ।

छापै

लह दीग्घ नहि नेम । मत्त चौवाम करीजे ॥

पेमें ही तुक् मार । धार तुक् चार भरीजे ॥

नाम रमावल होय । और उम्तू कभि जानहु ॥

उल्लावा की मिरन । फर तिथि नेरह आनहु ॥

है तुक्क बनाओ अन की । यत यत मे अठ बीम गहु ॥

मुन गरुड पख पिगल कहै । छप्पै छद कवित्त यह ॥

इमके अनिरिक्त मत्त कवि-कृत रघुनाथ-रूपक मे भी उमने छप्पै छदो को कवित्त करके ही लिखा है ।

इमके पाठ को शोधन करने मे ध्यान में लेने जैमी बात है कि प्रथम और मंगल शब्दों के बीच मे जो बहूत मी पुस्तको मे किय शब्द है वह अधिक होने से बशुद्ध है, क्योंकि उम पाद में कुल ११ मात्राएँ होनी चाहिए । बेदलेवाली पुस्तक मे संपजय शब्द है और एशियाटिक सोसाइटी की छापी हुई पुस्तक मे जो संपूजय किया गया है, इममें मेरी सम्मति यह है कि पाठ मे तो संपजय ही रखना चाहिये परंतु अर्थ करने में संपूजय समझना चाहिए, क्योंकि संपूजय पाठ करने से छंद टूटना है । गुजराती भाषा में ऐसे शब्द बहुत आते है, जैसे मुकुन्दराम का मकन्दराम, तुलसी का तलसी, और शिव का शव । ऐसे मुख-दोष के कारण से बिगड़े हुए शब्दों के रूपों के लिये एक यह श्लोक भी प्रसिद्ध है—

गुज्जरो मुखदोषेण । शिवोपि शवतां गतः ॥

तुलसी तलसी जाता । मुकुन्दोपि मकन्दतां ॥

मुक्ति-स्तुति

कवित्त—भुगति भूमि किय क्यार । वेद सिंचिय जल पूरन ॥
 बीय सुवय लय मध्य । ग्यांन अंकू रस जूरन ॥
 त्रिगुन साख संग्रहिय । नाम बहु पत्त रत्त छिति ॥
 सुक्रम सुमन फुल्लयौ । मुगति पक्की द्रव संगति ॥
 दुज सुमन डसिय बुध पक्व रस । वट विलास गुन पिस्तरिय ।
 तरु इक्क साख त्रयलोक महि । अजय-विजय गुन विस्तरिय ॥
 ॥छं० ४॥ रू० ४॥

पूर्व कवियों की स्तुति और उच्छिष्ट संज्ञा कथन
 भुजंगप्रयात ॥

प्रथमं भुजंगी सुधारी ग्रहंनं । जिनें नाम एक अनेक कहंन ॥

इसके अनिरिक्त चंद की हिन्दी में ऐसे प्रयोग बहुत में आवेंगे, जैसे “बिन्दलालाट प्रसेद कियो” यहा प्रस्वेद का प्रसेद हुआ है। चिह्न के स्थान में चिह्न किया है, क्योंकि यहा अर्ध अनुस्वार प्राप्त है। लगो के स्थान में लग्गो, उदयत्त के स्थान में उदयत्त। लग्गो के स्थान में लगै और सति मति के स्थान में सत्ति मत्ति सुधारे ह, क्योंकि ऐसे पाठ सुधारने में छद के टूटने का दोष हम को स्वयम् सचेत करता है ॥

४ इस रूपक में भी चंद कवि रूपकालकार से कर्म की स्तुति करना है ॥

इसके पाठ में एशियाटिक मोसाइटी आदि की पुस्तकों में जो अंकूर सजूरन पाठ हैं वे, एक बालक भी जान सकता है कि, बड़े ही अशुद्ध हैं, किन्तु दृष्टि देने से हमारे किए पदच्छेद में मार्थक पाठ हो जाते हैं अर्थात् अंकू रस जूरन। हमने रत्त के स्थान में रत्त, छिति के स्थान में छित पाठ किए हैं। हमारे डसिय पाठ के स्थान में आगरा कालेज और बेदले आदि की पुस्तकों में डसिय पाठ है, परन्तु वह अशुद्ध है। मालूम होता है कि उनके लेखकों ने ड को ऐसा झ समझकर अशुद्ध पाठ लिख दिया है और अर्थ पर दृष्टि देकर प्रतिलिपि नहीं की है ॥

५ स्मरण में रखना चाहिए कि इस रूपक में कवि रूपकालकार से मुक्ति की स्तुति करता है अर्थात् चंद ने दूसरे, तीसरे और इस चौथे रूपकों में क्रम से छम्मेंश्वर, कर्मेश्वर और मुक्तेश्वर नामक ईश्वरों के मंगलाचरण किए हैं ॥

इस भुजंगप्रयात नामक छंद का लक्षण चंद कवि के माने हुए छंद ग्रंथों में से पिमलमुनि यह लिखते हैं कि ‘भुजं प्रयातं यः ॥ ३८ ॥ अर्थात् जिसके गण में चार यकार (यगण) हों वह भुजंगप्रयात नामक छंद कहाता है।

इस पांचवें रूपक के जो पाठ एशियाटिक मोसाइटी की और अन्य पुस्तकों में बहुत अशुद्ध हैं वे ये हैं:—प्रथमं । ग्रहंनं । कहंनं । लब्भयं । भारथ । उत-

दुती लभायं देवतं जीवतेसं । जिनै विश्व राख्यौ वली मंच सेसं ॥
 चवं वेद बंधं हरी किति भाखी । जिनै धम्म साधम्म संसार साखो ॥
 तृती भारती व्यास भारत्थ भाख्यौ । जिनै उत पारत्थ सारत्थ साख्यौ ॥
 चवं सुखदेवं परीखत्त पायं । जिनै उड्यौ श्रव्व कुर्वं सरायं ॥
 नरं रूप पंचम्म श्रीहर्ष सारं । नलैराय कठं दिने पड्व हारं ॥
 कूटं कालिदासं सुभाषा सुबड्वं । जिनै वागवानी सुबानी सुबहं ॥
 कियो कालिका मुख्ख वासं सुमुहं । जिनै सेत बंध्योति भोज प्रबंधं ॥
 सतं उंडमाली उलाली कवित्तं । जिनै बुडि तारंग गंगा मसित्तं ॥
 जयदेव अट्ठे कवी कब्बिरायं । जिनै केवलं किति गोविंद गायं ॥
 गुहं सब्ब कब्बी लहू चंद कब्बी । जिनै दसियं देवि सा अंग हब्बी ॥
 कवी किति कित्ती उकत्ती सुदिख्खी । तिनै की उचिष्ठी कवी चंद भस्खी ॥
 ॥छं० १० । ६० ५ ॥

गारथ । सारथ । सुखदेव । परीषत् । उड्यौ श्रव । कु ख्वंस षड् । कालिदास ।
 मुष्य । सुमुद्ध । बंध्यौ । तिभोजन । बुद्धितारंग । गंगासरित्तं जयदेव ।
 अठं । केवल । दरसिय । उकति । तिन । कवि और भर्ष्या । इनमें से
 मत्येक को सिद्ध करने के लिये जो हम मतकं विवेचना करें तो बहुत स्थान
 चाहिए, परंतु आशा करता हूं कि पुरातत्त्ववेत्ता इनको हमारे मुद्ध पाठों में मिलाकर
 और जो कुछ चंद कवि की हिन्दी के नियम हमने संक्षेप पहिले प्रकाश किए हैं
 उनसे विचार कर सिद्ध कर लेंगे ।

इस रूपक में चंद कवि अपने से पहिले हुए मुख्य मुख्य कवियों की स्तुति
 करके अंत की दो तुकों में उनको अपने गुरु मान कर और आप निरभिमान होकर
 अपने काव्य को उनके कहे काव्य की उच्छिष्टी होने की संज्ञा देता है : जैसे कि
 इस महाकाव्य के किसी किसी रूपक में चंद के समय के पीछे बरते हुए वृत्त लिखे
 गाम होते हैं और उनपर से इस ग्रंथ की प्रामाणिकता में संदेह किया जाता है,
 वैसे ही यह रूपक क्या इस ग्रंथ की प्रामाणिकता को सिद्ध करनेवाला एक
 प्रमाण रूप नहीं है ? और अन्य कवि जैसे श्रीहर्ष और जयदेवादि का समय निश्चय
 और निर्णय करने में पुरातत्त्ववेत्ताओं का महायक और उपकारी नहीं हो सकता है ?

इसके अतिरिक्त इस छंद की तीसरी तुक में जो एक बंधं शब्द चंद कवि ने
 प्रयोग किया है उसको देखकर चारण राव और भाट जाति क अच्छे अच्छे कवियों
 को हमने आश्चर्य करते हुए देखा है और वे उसका अर्थ अंड बंड करते हैं । कोई
 उसको ब्रह्म शब्द का अपभ्रंश बतलाता है और कोई चारों वेदों के ग्रंथों का वाचक
 बतलाता है और कोई कहता है कि महादेव की मूर्ति के आगे जो गाल बजा के
 बंधं शब्द मुख से कहते हैं और ऐसा करने से महादेव प्रसन्न हो जाते हैं उसका

चंद की स्त्री अपने पति के उच्छिष्ट संज्ञा कथन में शंका करती है ।
 टूहा—उच्छिष्ट चंद छंदह बयन । सुनत सु जंपिय नारि ॥
 तनु पवित्र पावन कविय । उकति अनूठ उधारि ॥
 छं० ॥ ११ ॥ रू०२ ॥ ६ ॥

कवित -कहैं कति सम कंत । टंत पावन बड़ कब्बिय ॥
 तंत मंत उच्चार । गेवि दरसिय मझि हब्बिय ॥

वाचक है, परन्तु इस शब्द का पता लगाकर बताते हैं कि यह वर्ष चंद की हिंदी का भूतकालिक क्रियावाचक शब्द है और संस्कृत भाषा में यङ्गन्त प्रक्रिया के प्रयोगों में जो बंधणीत बभंति प्रयोग प्रसिद्ध होता है उससे बना है और उसका यह फिर फिर बार बार पढ़ा वा भणाका अर्थ है। क्योंकि "चवं वेद बभं हरी किति भास्वी" इस तुक का अर्थ यह है कि इस "जीवतेम ते चारो वेदो को बार बार पढ़ा वा भणा और हरी की कीर्ति को भासा"। जो मनुष्य संस्कृत भाषा में अच्छा व्युत्पन्न और पक्षयान और हठ जैसे दोषों में त्रिमुक्त और मन्थ का दूढ़ अवलंबन करनेवाला है वह, इस आशा करने है कि, ऐसे प्रयोगों को देख कर कदापि यह नहीं कहेगा कि इस महाकाव्य का प्रयुक्ता चंद संस्कृत भाषा में अव्युत्पन्न था ।

इस रूप में चंद कवि आठ कवियों को अलग गण मान कर उनकी स्तुति और उनकी काव्य-रचना-शक्ति का वर्णन करता है। वह सबसे पहले भृगु नाम से परमेश्वर को कवि प्रहंग करता है क्योंकि वेदादिक में उसका कवि नाम कहा है; यथा

होना वा देव्या कवी०" यजु 'प्रथम वरज भेषज कविम्०' षजु
 "कविर्मनीषी परिभू स्वयभू" ईशोपनिषत्
 "कवि क्रान्तदर्शी सर्वतुक् नान्यतोऽस्ति द्रष्टा" इश्वर ॥ शा० भा०
 "कवि पुराणमनुशासनारम्०" गीता ॥

दूसरे जीवनेश में प्राणनाथ अर्थात् ब्रह्मा कि जो आदि कवि कहाता है जैसे भागवत में कहा है कि "तेने ब्रह्माहूदा य आदि कविये मुह्यानि यत् सूर्य" ॥

बाकी सब कवियों के विषय में कुछ विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सर्व माध्वारण लोग व्यासादि के नाम में भले प्रकार विज्ञ है ॥

६-७ कवि चंद ने जो पहिले रूप में अपने काव्य को अपने में पहिले हुए कवियों के काव्य का उच्छिष्ट होना कहा है उस सुनकर उसकी स्त्री उच्छिष्ट संज्ञा में आश्चर्य के साथ शंका और अपने पति के गुणों का वर्णन करती है अर्थात् इन रूपों में कवि चंद ने अपनी स्त्री के पणोत्तर के प्रसंग से अपने काव्य की उच्छिष्ट संज्ञा के हेतु और अपने गुण प्रकाश किए हैं। इनमें सम, कति और कंत

तंत वीर उग्रत । रंग राजन सुख दाइय ॥
 बाल केल प्रत्यंग । सुरनि उड्वरि कविताइय ॥
 अबलंब उकति उच्चार करि ॥ जिहित मोहि कोविद रहै ॥
 सम ब्रह्मरूप या मब्द कहूँ । क्यों उचिष्ट कवियन कहै ॥
 छ० ॥ १२ ॥ रू० ७ ॥

चद अपनी स्त्री की शंका का समाधान करता है ॥
 कवित्त—सम बनिता बर बदि । चंद जपिय कोमल कल ॥
 सबद ब्रह्म इह सत्ति । अपर पावन कहि निर्मल ॥
 जिहित सबद नहि रूप । रेख आकार ब्रन्न नहिँ ॥
 अकल अगाध अपार । पार पावन त्रयपुर महिँ ।
 तिहिँ सबद ब्रह्म रचना करे । गुरु प्रमाद मरमे प्रमन ॥
 जद्यपि सु उकति चूकौ जुगति । तौ कमल बदनि कवितह हँसन ॥
 छ० ॥ १३ ॥ रू० ॥ ८ ॥

चद का स्त्री पुनश्च शंका करती है ॥
 कवित्त तुम बानी वरबद । नाग देखन विमल मनि ॥
 छद भग गन रहिन । कठ कौमार काव्य कृत ॥

शब्दों के प्रयोग विद्वानों की दृष्टि में रहने योग्य है । सम (स० अ० मम मगे - मव-धे, समच्चये,) जो अथवा प्रति और मम ब्रह्मरूप में मम तुन्य के अर्थ में कवि ने प्रयोग किया है, कति (म० स्त्री कम नि) पत्नी अथवा स्त्री और कत (म० पु० कम् + त) पुरुष अथवा पति, यह तीनों चद की हिन्दी के सम्बन्ध-मम प्रयोग है । और तन और मन शब्दों के प्रयोग भी दृष्टि देने जैसे है तन पावन में तत = तत्त्व और तन मन में तत तत्र और मत मत्र के वाचक कति ने प्रयोग किए हैं ।

अन्य पुस्तकों में यह अशुद्ध पाठ है -सु, जपिय, कवि, सुख, दाईय, कविता-ईय, को, विद, समब्रह्मरूप, कहूँ कविय और न ॥

चद इस रूपक में अपनी शंका का उत्तर देकर समाधान करता है ॥ शब्दब्रह्म (म० शब्दात्मक ब्रह्म) शब्द का प्रयोग चद के व्याकरण और वेदान्त दिशा के ज्ञान का द्योतक है । गुरुप्रसाद शब्द यहाँ श्लेषार्थ में कवि ने प्रयोग किया है क्योंकि श्यातियों के अनुसार चद के विद्या-गुरु का नाम गुरुप्रसाद था । यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नहीं मिलते तथापि यह गुरु प्रसाद नामक पंजाब देश का रहनेवाला एक बड़ा पंडित हुआ है । कवितह चद की हिन्दी का निज प्रयोग है और उसका अर्थ कवित्त अर्थात् काव्य रखनेवाले कवि का है । किसी किसी पुस्तक में जो बरबदि, अमल, त्रयपूर, महि, तिहि, और प्रमन पाठ हैं वे अशुद्ध हैं ॥

बुधि तरंग सम गंग । उकति उच्चार अमिय बल ॥
सुरन सुनत विहसंत । मंत जनु वस्यकरन बल ॥
अवतार भूप प्रिथिराज पहु । राज सुख तिन सम लहहि ॥
बीराधि वीर सामंत । सब तिन सु गल्ह कच्छी कहहि ॥
छ० ॥ १४ ॥ रू० ॥ ९ ॥

चंद अपनी स्त्री की शका का पुनश्च समाधान करता है ॥
कवित्त गज गवनी प्रति चंद । छंद कोमल उच्चारिय ॥
मनहरनी रस बेलि । सुरन सागर रस धारिय ॥
बक नयन बय बाल । प्रानवल्लभ सुखदाइय ॥
अगुन निगुन गुरु ग्रहनि । गवरि पूजा फल पाइय ॥
भए आदि अत कविता जिने । तिन अनत गति मति कहिय ॥
अनेक ग्रंथ तिन बरनबत । यौ उचिष्ट मति मै लहिय ॥
छ० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १० ॥

चंद अपनी स्त्री के आगे ईश्वर के ऐश्वर्य का वर्णन करता ॥

॥ प्रहर ॥

प्रनम्भ प्रथम मम आदिदेव । उंकार शब्द जिन करि अछेव ॥
निरकार मध्य साकार कीन । मनसा बिलास सह फल फलीन ॥१६॥
त्रयगुनह तेज त्रयपुर निवास । सुर सुरग भूमि नर नाग भास ॥
फुनि ब्रह्मरूप ब्रह्मा उचार । कथि चतुरबेद प्रभु तत्त सारि ॥ १७ ॥

६ जिन पुस्तको मे ये पाठ हैं—अमीय, सुरन और ममलहहि, वे अशुद्ध हैं । इममे दूसरी तुक का दूसरा पाद “कठ कौमार काव्य कृत” विद्वानो के ध्यान देने योग्य है । इमका आशय यह है कि चंद की स्त्री अपने पति से कहती कि तुम कठ कौमार काव्य कृत हो अर्थात् तुम को कौमार काव्य कठ है । क्या यह भी चंद के संस्कृत भाषा मे व्युत्पन्न होने का एक अच्छा प्रमाण नहीं है ?

१० अन्य पुस्तकों मे ये पाठ अशुद्ध हैं—बेली सुखदाइय, जिने, बरन, बत और मे । इस रूपक मे गवरि शब्द श्लेषार्थ मे कवि ने प्रयोग किया है क्योंकि कथातियों मे चंद की स्त्री का नाम गौरी करके प्रसिद्ध है ॥

११ इम रूपक के छंद का नाम पढ़रा है और उसका लक्षण यह है—

दस करो प्रथम फिर षट मिलाय । गिन पौडश मत्ता पाय पाय ॥

इमत्रगन अंत मे घरत सोय । भमि रोग पढ़री छंद होय ॥ रूप डी ॥

इस रूपक मे चंद अपनी स्त्री को ईश्वर का ऐश्वर्य वर्णन कर बताता है और पहिली तुक मे प्रनम्य पाठ नहीं ग्रहण करना चाहिए किन्तु प्रनम्य पाठ ठीक है । अर्थात् चंद अपनी स्त्री को कहता है कि तू प्रथम मेरे आदिदेव को प्रनमन कर कि

बरनयौ आदि करता अलेख । गुन रहित गुननि नह रूप रेख ॥
 जिहि रचे सुरग भू सत पताल । जम ब्रह्म इन्द्र रिषि लोकपाल ॥ १८ ॥
 पवन अग्नि जल धर अकास । सरिता समुद्र तिथि गिर निवास ॥
 असि लक्ष्म चार रच जीव जंत । बरनंत ते नहीं लहों अंत ॥ १९ ॥
 अठ्ठार बन्न बेली सु कीन । नाना प्रकार सब गुन अधीन ॥
 करि सकै न कोइ अग्याहि भंग । धरि हुकुम सीस दुख सहै अंग ॥ २० ॥
 दिनमान देव रवि रजनि भोर । उगई बने प्रभु हुकम जोर ॥
 ससि सदा राति अग्या अधीन । उगई अकास होय कला हीन ॥ २१ ॥
 द्विगपाल दाबि रहै सबरि भूमि । चमकें न कार रहै चापि चूमि ॥
 परिमान पवन करि गवन गाह । घटि बढि अंग मंडै उछाह ॥ २२ ॥
 इन्द्र सुर्ग भेष अग्या अकास । बरखा सु वरख रक्खे इलाम ॥
 धर रहि अचल होय प्रभु प्रताप । हलि चलि न निमख सककै सताप ॥ २३ ॥
 उठंत लहरि लग्गी अकास । तठ समुद्र मत्त नहि खोज तास ॥
 परिमान अप्प लंघे न कोइ । करै सोइ कम प्रभु हुकम जोइ ॥ २४ ॥
 अग्यान मेदि को सकै ताहि । भूत न भविष्य को व्रत माहि ॥
 बरनयौ वेद ब्रह्मा अछेह । जल थलह पूरि रह्यौ देह देह ॥ २५ ॥
 पुनि कहे व्यास दमअठ पुरान । अवतार रचित नाना निधान ॥
 बरनयौ विमल मति देव देव । सब रहै मोधि नह लह्यौ भेव ॥ २६ ॥
 फुनि मालमीक रामावतार । शत कोटि ग्रथ कथि तत्त सार ॥
 विध्वसि सीय कज देव दाद । प्राक्रम रीछ कपि दयित वाद ॥ २७ ॥
 पुनी पंच काव्य कवितान कीन । अग्यान नरन उर दीप दीन ॥
 किन्तीक बात मो मति प्रकास । करि सकों ग्रंथ तो होइ हास ॥
 ॥ छ० २८ ॥ रू० ११ ॥

जिमने ऐसा ऐसा किया है । हमारा यह कहना अर्थ पर दृष्टि देने से बहुत ठीक प्रतीत हो सकता है । अन्य पुस्तकों में जो ये मिलते हैं वे अशुद्ध हैं जैसे—प्रनम्य, मन, ब्रह्माड, चार, सत्त, पाताल, पवनह, अरु, अस्मि, च्यार, कोई, सबर, कोर, बडो, मंताम, मर्हि, व्रत्तमां, हि, कहै, न, हलह्यौ, सीयक, जदप, प्राक्रम और अब्ब ॥

इस रूपक के छंद २३ की पहिली तुक के पहिले पाद में जो हमारे सबरि पाठ के स्थान में एशियाटिक सोसाइटी की छापी हुई पुस्तक में सबर पाठ है और उसको मिस्टर जान बीम्स साहब ने जो अरबी सन्न शब्द होना अनुमान किया है वह अयुक्त है, क्योंकि अरबी सन्न शब्द का अर्थ यहाँ सबरीत्या अघटित है, किन्तु मानना चाहिए कि चंद ने हिन्दी सबरि शब्द का छंद टूटने के कारण

चंद की स्त्री अपने पति से अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका पूछती है ।

दूहा—सुनत काव्य कवि चंद को । चित आनन्दी नारि ॥

तुम बानी बानो प्रसन । हसन हुवंत निवारि ॥

॥ छं० २९ ॥ रू० १२ ॥

कवित्त—कहै कंति मतिवंत । तंत रसना रस सागर ॥

तुम गुन श्रवन सुहंत । जानि चमकंत कलाधर ॥

तुम देवी वरदान । दान दीजै मुहि कब्बिय ॥

अष्टादसह पुरान । नाम परिमानह सब्बिय ॥

तुम कथन कथन आनन्द मुहि । अग पच्छ भर सुड्वरै ॥

अग्यान तिमर नठ्ठय सुनत । अछव कमल हिय उड्वरै ॥

॥ छं० ३० ॥ रू० १३ ॥

चंद अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका का कथन करता है ॥

पड्वरी - ब्रह्मन्यदेव सम वासुदेव । अष्टदस पुरान तिन कहि सुभेव ॥

तिन कहीं नाम परिमान ब्रन्न । जिन सुनत सुड्व भव होत तन्न ॥ ३१ ॥

ब्रह्मह पुरान दम सहम जुट्टि । जिहि पढत सुनत तन तप्प छुट्टि ॥

पच्चाम पंच हज्जार गन्नि । पद्महपुरान तिन कह्यौ ब्रन्नि ॥ ३२ ॥

नेनीम महम सै चारि जानि । विष्णू पुरान विष्णू समानि ॥

चौबीस सहम कहि शिव पुरान । तिहि पढत सुनत सम अमिय पान ॥ ३३ ॥

अठ्ठारह सहस भागवत्त भेव । करि पार परिकवत सुक्कदेव ॥

नारद पुरान कहि पाव लाख । तहं मुक्ति मोद आनन्द भाख ॥ ३४ ॥

सबरी प्रयोग किया है और रामो की किमी किमी पुस्तक मे ऐमा पाठ भी मिलता है । जो इम शब्द को रकार और बकार के उलट पुलट लिखे जाने से बरस शब्द होना भी हम माने तथापि यह कुछ अमंगत नही है ॥

१२ इममें प्रसन्न शब्द का पाठ किमी किमी पुस्तक में मिलता है, परंतु यहां छंद टूटने के कारण कवि ने प्रसन करके प्रयोग किया है ॥

१३ इम कवित्तके भिन्न भिन्न पुस्तकों में जो पाठ मिलते हैं; जैसे—कहे, वरदानि, पछू, नट्टु, य, अंछवक और मल ॥

१३ इम रूपक के अगुद्ध पाठान्तर अन्य पुस्तकों में ये हैं—अष्टादस, कहै, सभेव, ब्रन्निहो, तन्ननि, तथ्य, पंचास, पंचह, च्यारि, तिष्णु, अठार, भागबन, तहां, तेईस, दुस, संपूर, अग्नि, पठि इग्यार, अछ, प छ, कूरभ, मछ, भन्दि डरान, सहंस, और नम ॥

इम रूपक के ४१वें छंद की एक तुक भाषा के कवि घटती बताकर चंद पर दोषारोपण करते हैं, परंतु यह उनकी भूल है; क्योंकि चंद ने इस छंद को एक

मारुंड नाम तेइप हजार । पौरान पवित्र मो दुख जार ॥
 पंद्रह हजार संख्या सूर । अग्नी पूरान पठि पाप दूर ॥ ३५ ॥
 चवदे हजार सें पांच पडिड । भववित पुरान मो पाप जडिड ॥
 ब्रह्मवैवत सहस अठार । केवल गिनान कथि भक्ति सार ॥ ३६ ॥
 रुद्रह हजार लिगह पुरान । आनन्द अर्थ आगम गुरान ॥
 चौबीस सहस बाराह भक्ति । पौरव पुरान तिन अमित सक्ति ॥ ३७ ॥
 हजार इक्यासी कहि विवेक । स्कंदह पुरान भव भक्ति एक ॥
 ग्यारह सहस बावन सु अच्छ । पौरान सुनत सुधि अगग पच्छ ॥ ३८ ॥
 सत्रह हजार कूरंम पुरान । भाषा विनोद प्राक्रम पुरान ॥
 विद्या हजार मित मच्छ देव । विधि संख उड्वरे सेव भेव ॥ ३९ ॥
 उनईस सहस गरुडह पुरान । श्रोतान वक्त भक्ती उरान ॥
 ब्रह्मांड पुरान बारह सहस । करि व्याम भक्ति प्रभु कंस नस्म ॥ ४० ॥
 पंद्रह हजार अठ चार लाख । मम ब्रह्म व्याम कहि चंद भाख ॥
 ॥ छं० ४१ ॥ ॥ ॥ १४ ॥

चंद्र अपनी लघुता वर्णन करता है ॥

दूर-कृति किति चहुआन की । जुगनि जुग निवाम ॥
 अप्य मति मरमे मबल । मनी करे हवि हाम ॥

॥ छं० ४२ ॥ ॥ ॥ १५ ॥

गाहा--पय सक्करी सुभत्तौ । एकत्तौ कनय राय भोयगी ॥
 कर कंमी गुज्जरीय । रब्बरिय नैव जीवति ॥

॥ छं० ४३ ॥ ॥ ॥ १६ ॥

सन खनै आवासं । महिलानं मद् सद् नूपरया ॥
 सतफल बज्जुन पयमा । पब्बरिय नैव चालति ॥

॥ छं० ४४ ॥ ॥ ॥ १७ ॥

ही तुक में कहा है और श्लोकार्थ कहने और लिखने को रीति मस्कृत भाग के काव्यों में प्रचलित है । चंद्र की यह मस्कृत-काव्य-यम जैली इस महाकाव्य में बहुत स्थानों पर देखने में आवेगी अतएव हमको इस पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए । ऐसे उदाहरण पुराणों में बहुत मिलेंगे, परन्तु जिनके पढ़ने में माघ काव्य भी आया होगा वे जानते होंगे कि माघ ने पहिले मर्ग के दूसरे श्लोक के साथ नीचे लिखा अर्द्धश्लोक कहा है—

“द्विधा कृनात्मा किमयं दिवाकरो । विधूम रोचिः किमयं हुताशनः ॥

गतं तिरश्चीनमनूरु सारथेः । प्रसिद्धमूर्धं ज्वलनं हविर्भुजः ॥ २ ॥

पतत्यधोधाम विसारि सर्वतः । किमेतदित्याकुल भीक्षितं जनैः ॥

१५ इसमें अशुद्ध पाठान्तर ये हैं :—अय्य और मति ॥

रब्बरियं रस मंदं । क्यू पुज्जति साध अमियेन ।
उकति जुकत्तिय ग्रंथं । नथि कत्थ कवि कत्थिय तेन ॥

॥ छ० ४५ ॥ रू० १८ ॥

याते वसंत मासे । कोकिल झंकार अंब बन करयं ॥
बर बब्बूर विष्यं । कपोतय नैव कलयंति ॥

॥ छ० ४६ ॥ रू० १९ ॥

सहसं किरन सुभाउ । उगि आदित्य गमय अंधरं ॥
अय्यं उमा न सारो । भोडलयं नैव झलकति ॥

॥ छ० ४७ ॥ रू० २० ॥

कज्जल महि कस्तूरी । रानी रेहत नयन श्रगार ॥
कां मसि घसि कुंभारी । कि नयने नैव अजति ॥

॥ छ० ४८ ॥ रू० २१ ॥

ईस सीस अममान । सुर मुरी मलिल निष्ट नित्यान ॥
पुनि गलती पूजारा । गडुवा नैव ढालति ॥

॥ छ० ४९ ॥ रू० २२ ॥

चंद उत्तापित होकर अपने को पूर्व कवियों का दास होना, उनकी
उक्ति को कहना और अपनी को बकना कहता है ॥

दूहा—कहां लगी लघुता बरनवो । कविन दाम कवि चद ॥
उन कहि ते जो उब्बरी । मो बकहो करि छद-॥

॥ छ० ५० ॥ रू० २३ ॥

१६-२२ गाहा छद का लक्षण यह है —

गाहा पहिले वारह । दूजे अठागहै कला राजै ॥

तीजै वारह धारहु । पद्रह चौथे तथा छाजै ॥

इन गाहा छदों में अशुद्ध पाठान्तर ये हैं—मनफल, क्यूाने, बडू, रवि, रण्वं
नगय, सुरीस लिल, और फुनि ।

बाइमवें गाहा के "ईम सीम आममान" में जो आममान शब्द है उसको जो
मिस्टर जान बीम्म साहब फारमी आसमान होना अनुमान करने है उससे हम
बिलकुल असम्मत हैं । हम इसको म० असमान, त्रि० (नगस्ति ममानो यस्य ।)
अतुल्यं, विजातीय, मजानियभिन्नं का वाचक समझते हैं अर्थात् ईम = परमेश्वर
का सीम = शिर, आसमान = अतुल्य है ।

२३-२५ इनमें जो किमी किमी पुस्तक में तेजो पाठ है वह अशुद्ध । कवि
चंद ने अपनी लघुता वर्णन करते करते अन को उत्तापित होकर जो य दो दोहे
(२४।५२॥ + २५-५३) कहे हैं वे इस महाकाव्य के पाठकों और खंडन करनेवालों
के ध्यान में रहने योग्य हैं ॥

चंद्र ललों का स्वभाव वर्णन करके सुजनों के निमित्त अपना काव्य-
रचन करना चाहता है ॥

दूहा—सरस काव्य रचना रचौ । खल जन मुनि न हसंत ॥

जैसे सिंधुर देखि मग । स्वान मुभाव भुसंत ॥

॥ छं० ५१ ॥ रू० २४ ॥

तौ पनि निमित्त सुजन गुन । रचिये तन मन फूल ॥

जूका भय जिय जानिकै । क्यों डारियै दुकूल ॥

॥ छं० ५२ ॥ रू० २५ ॥

सरस्वती की स्तुति ॥

साटक—मुक्ताहार बिहार सार मुबुधा, अबधा बुधा गोपिनी ॥

सेतं चौर मरीर नीर गहिरा, गौरी गिरा जोगनी ॥

बीना पानि सुवानि जानि दधिजा, हंसा रसा आसिनी ॥

लंबोजा चिहुरार भार जघना, त्रिधना घना नासिनी ॥

॥ छं० ५३ ॥ रू० २६ ॥

गणेश की स्तुति ॥

छत्रंजा मद गंध राग रुचयं, अलिभूराछादिता ॥

गुंजा हार अथार सार गुनजा, झंझा पया भासिता ॥

अग्नेजा श्रुति कुंडलं करि कर, स्तुदीर उदारयं ॥

सोयं पातु गनेस सेम सफल, पृश्नाज काव्यं कृतं ॥

॥ छं० ५४ ॥ रू० २७ ॥

गणपति की उत्पत्ति कथा ॥

विराज—रतं रत्न भारी । करुना विचारी ॥

लियो मात नक्खं । बियो संख लक्खं ॥ ५५ ॥

२६-२७ इन रूपकों में यह अशुद्ध पाठान्तर है—गोपनी, गिराजोगनी, सुवानी, दधि, जाहं मरसा, लंबी, जा, विघना, छत्र, मदं, जा, करः, स्तु, दीर, पृथिराज, काव्य और कृते । इनमें एक पृथीराज शब्द के स्थान में जो हमने पृश्नाज पाठ रक्खा है वह एक रामो की पुस्तक में है और चंद्र का ऐसा प्रयोग देखकर राजपुताने और ब्रज की ग्रामीण भाषाओं से परिचित विद्वानों को कुछ आश्चर्य न होगा, क्योंकि उन्होंने ऐसे ही गजराज के स्थान में गज्जाज बोलते और खेलते लोगों को देखा और सुना होगा । यह चंद्र की हिंदी के देशी प्रसिद्ध नामक भेद का उदाहरण है ॥

२८ अन्य पुस्तकों में पाठान्तर ये हैं - करुना, मात, नष्प, दिये, रिषि, अवल्लाह, कल्ली, पुरुष, डोर, धर्पो, तुहि, दद, दैहै, देह, भगतं, लछी, लच्छी,

मिले एक दीहं । रमै काम सीहं ॥
 इकं रिष्व आयौ । दियौ काम चायौ ॥ ५६ ॥
 खिज्यौ रिष्व भारी । दियौ काम डारी ॥
 भयौ पुत्र तब्बं । घजा मोद सब्बं ॥ ५७ ॥
 सिरो मालधारी । गनेसं बिचारी ॥
 खिजे तब्ब ईसं । भयौ रोम बीसं ॥ ५८ ॥
 अबल्ला इकल्ली । वियौ पुर्ष भिल्ली ॥
 डके डोर नहं । हन्या पुत्र बहं ॥ ५९ ॥
 खिजी मात भारी । सरायं बिचारी ॥
 करी जाकु ईसं । घरघो पुत्र सीसं ॥ ६० ॥
 सबै कज्ज अगै । तुही नाम लगै ॥
 कलानंद रूपं । गनेसं सभूपं ॥ ६१ ॥
 इकं दन्त दन्ती । विराजंत कंती ॥
 सुभं दंत ऐसै । कबिंदं प्रससै ॥ ६२ ॥
 मनो भूमि धारी । बाराहं उपारी ॥
 इमी नठ्ठ तेज । कला सोम केजं ॥ ६३ ॥
 नमो देव कहं । प्रजा ईस महं ॥
 भवै भूत प्रेतं । तिजारी न हेतं ॥ ६४ ॥
 इकं दोह एकं । दुती दोह मेकं ॥
 भगनं मुचक्री । दियो लच्छि वक्री ॥ ६५ ॥
 इकं चोख अथ्यं । करै नाक नथ्यं ॥
 मुभक्ती सुमत्ती । जल माहि पत्ती ॥ ६६ ॥
 घरै आक सीसं । त्रिलोकेस ईमं ॥
 त्रयं वेद जक्की ॥ प्रियं चंद भक्की ॥ छ० ६७ ॥ रू० २८ ॥

शंकर की स्तुति ॥

दूहा - नमस्कार संकर कियो । सरसै बुधि कवि चंद ॥
 सति लंपट लंपट नवा अबुधि मंच सिमु इंद ॥

॥ छं० ६८ ॥ रू० २९ ॥

अर्थ, नथं, समती, पनी, घरे, त्रिलोक और ईमा । इस रूपक के छंद का नाम
 चंद ने विगज कहा है परंतु उम का नामान्तर मखा नारी और उम का भक्षण
 यह है—

छई वर्ष वारो । यगर्भ दुधारो ॥

रखो पाव चारी । करो संखनारी ॥ श्रीघर कवि-कृत पिंगल ॥

साधन भोग संयोग रजि । मंडन आव अखूट ॥
नमो उमा उर आभरन । जय बंधन जट जूट ॥

॥ छं० ६९ ॥ रू० ३० ॥

विराज - जटा जूट बंदं । लिलाटंत चंदं ॥
विराजंत छंदं । भुजंगी गलिदं ॥ ७० ॥
गिरो माल इंदं । गिरीजा अनंदं ॥
सिरै सिंधि नहं । रनै बीर महं ॥ ७१ ॥
करी चर्म सहं । करं काल खहं ॥
उनै गंग हहं । चखी अगि दहं ॥ ७२ ॥
प्रलै जानि जहं । जयो जोग सहं ॥
घटा जानि भहं । जरै काम तहं ॥ ७३ ॥
हरै त्राहि बहं । रचै मोह कहं ॥
बचै दूरि दहं । नटे भेख रहं ॥ ७४ ॥
नमो ईम इंदं । वदै भहं चदं ॥ छं० ७५ ॥ रू० ३१ ॥

दूहा - करिये भक्ति कवि चंद हर । हरि जंपिय इह भाइ ॥

ईम स्याम जू जू कहै । नरक परंतह जाइ ॥

॥ छं० ७६ ॥ रू० ३२ ॥

श्लोक - परात्परतरं याति । नारायण परयाणं ॥

न ते तत्र गमिष्यन्ति । ये दुष्यन्ति महेश्वरं ॥

॥ छं० ७७ ॥ रू० ३३ ॥

साटक - गगाया भ्रगुलत्त वमन्न मसन, लच्छी उमा दोवरं ॥

संखं भूत कपाल माल अमितं, वैजंति माला हरी ॥

चर्म मध्य विभूति भूतिक युगं, विबभूति माया क्रमं ॥

पापं विहरति मुक्ति अप्पन वियं, वीयं वरं देवयं ॥

॥ छं० ७८ ॥ रू० ३४ ॥

३० पाठान्तर - मरमै । मती । मजोग ॥

३१ पाठान्तर - गिरिजा । रनै । बीर । खहं । गंगहहं । हहं ॥ महं ॥ इस

इम रूपक का छंद ७/५ चंद की संस्कृत काव्य-मम श्लोकाद्धं शैली का दूसरा उदाहरण है । देखो टिप्पण १४ को ॥

३२ पाठान्तर - करिये ।

३३ पाठान्तर—याति । यह श्लोक चंद के शुद्ध संस्कृत काव्य-रचन का प्रथम उदाहरण है ॥

३४ पाठान्तर - प्रगुलत्त । वसनमसनं । लच्छी । कपालमाल । चमभूतिकियुगं । मायात्र मं मुक्ति । वरदेवयं ॥

कवि की आशा का स्वरूप वर्णन ॥

गाहा—आमा महीव कब्बो । नव नव किस्तीय संग्रहं ग्रंथं ॥
सागर सरिस तरंगी । वोहृथयं उक्तिय चलयं ॥

॥ छं० ७९ ॥ रू० ३५ ॥

चंद्र का काव्य समुद्र कैसा है ॥

दूहा—काव्य समुद्र कवि चंद्र कृत । मुगति समप्पन ग्यान ॥
राजनीति बोहिथ सुफल । पार उतारन यान ॥

॥ छं० ८० ॥ रू० ३६ ॥

छंद प्रवध कवित्त जति । साटक गाह दुहृथ ॥
लहु गुर मडित खडिय हि । पिगल अमर भरथ ॥

॥ छं० ८१ ॥ रू० ३७ ॥

कोई अशुद्ध पढ़ने वाला चंद्र को काव्य-संबंधी बोध न दे ॥

कवित्त अति ढक्यौ न उघार । सलिल जिमि सिष्ण सिवालह ॥

वरन वरन सोभंत । हार चतुरंग विसालह ॥

विमल अमल वानी विसाल । वयन बानी वर व्रनन ॥

उक्तिन वयन विनोद । मोद श्रोतन मन हर्नन ॥

युत अयुत जुक्ति विचार विधि । वयन छद छुट्यौ न कह ॥

घटि बद्ध मति कोई पढइ । तौ चंद्र दोस दिज्जो न वह ॥

॥ छं० ८२ ॥ रू० ३८ ॥

इस ग्रंथ में चंद्र ने क्या क्या कथन किया है ॥

श्लोक उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नव रमं ॥

पट् भाषा पुराणं च । कुरान कथित मया ॥

॥ छं० ८३ ॥ रू० ३९ ॥

३५ पाडान्तर—किनी ॥

३६ पाठान्तर—ग्यान । यान ।

३७ पाठान्तर—भरथ ।

३८ पाठान्तर—पिष्ण । विशाल । विच्चार । पढई । दिज्जो । दिज्जै ।

३९—कवि का यह मस्कून श्लोक हमारे पाठको के मदा ध्यान में रखने योग्य है । इस के मूक्य विचार से हम मकते हैं । कि पट्भाषा और कुरान की भाषा के जो जो शब्द इस महाकाव्य में प्रयोग हुए हम देखते हैं वह कवि ने जान कर प्रयोग किए हैं और कुरान की भाषा शब्दों के प्रयोग का विषय कोई आश्चर्यदायक भी नहीं है क्योंकि मुसलमानों का प्रवेश भारतखंड में शहाबुद्दीन गोरी के बहुत ही पहिले हो गया था । इस के अनिश्चित हम को यह भी निश्चय मानना चाहिए

रासो को रसिया सरस उच्चारें ॥

कवित्त - चरन नीम अच्छिर सुरंग । पाट लहु गुरु विधि मंडिय ॥
सुर विकास जारी सु मुष्प । उक्ति रस गौरवनि छंडिय ॥
जुगति छोह विस्तरिय । सीढियन घाट सु बहिय ॥
महि मंडन मेधान । याहि मंडन जस महिय ॥
घन तर्क उतर्क वितर्क जति । चित्र रंग करि अनुसरिय ॥
विश्वकर्म कवि निर्मइय । रसियं सरस उच्चरिय ॥
॥ छं ८४ ॥ रू० ४० ॥

रासो का तत्त्वज्ञान कैसे होगा ॥

अरिल - तर्क वितर्क उतर्क मु जतिय । राज सभा सुभ भामन भतिय ॥
कवि आदर मादर बुध चाही । पडि करि गुन रासो निर्वाही ॥
॥ छ० ८५ ॥ रू० ४१ ॥
धम्म अधम्म न बुद्धि बिचारौ । नयन नारि निय नेह निहारौ ॥
कोक कला कल केलि प्रकासौ । अरथ करौ गुन रासो भासौ ॥
॥ छ० ८६ ॥ रू० ४२ ॥
परासर जो पुत्त विहामह । मतवंती ग्रम्भं गुर भासह ॥
प्रब्व अठार मवा लष लष्यै । तौ भारथ गुर नत्त विमष्यै ॥
छ० ८७ ॥ रू० ४३ ॥

कि चद सस्कृत भाषा मे निपुण था और षट्मापा और कुरान की भाषा मे भी अपरिचित नही था और जो जो छद इस महाकाव्य मे सस्कृत भाषा मे लिखे हमारे दृष्टि आते है वे उसकी सस्कृत-काव्य-रचनशक्ति के उदाहरण रूप है । यह श्लोक चंद के माने हुए पिंगल छदसूत्रम् के अनुसार लौकिक अनुष्टुप अर्थात् अष्टाक्षर पद छद है । इस रूपक के विशेष पाठान्तर अन्य पुस्तको मे दृष्टि नही आते किन्तु केवल विशाल के स्थान मे विसाल और पुराण के स्थान मे पुरान पाठ है ॥

४० पाठान्तर अछिर । सुरंग । ममुष्प । मुष्प । गौषिन । सीढियन । मेधान । याह । नित्ररंग । विश्वकर्म कर्म । उच्चारिय ।

४१-४३ इस रूपक के छद का नाम कवि ने अरिल्ल प्रयोग किया है कि जिस का लक्षण यह है—

अरिल्ल — लघु दीर्घ को नेम न कीजै । ऐसे ही तुक चार भरीजै ॥

षोडश कला कली बिच धारै । छद अरिल्ला शेष उच्चारै ॥

पाठान्तर — सुजनिय । मतिय । पडि शब्द के पहले ती शब्द का पाठ पुस्तकान्तर मे विशेष है । पटि । नारिनिय । कौक । कलाकल । अरथ शब्द के पहिले ती शब्द किसी किसी पुस्तक मे विशेष है । ग्रभ । लष्य लष्यै । नारथ ।

जो रासो को सुगुरु से पढ़ता है वह कुमति नहीं बरसाता ॥
कवित्त—रासौ बर बुद्धि सिद्धि । सुद्धि सो सब्ब प्रमानिय ॥
राजनीति पाइयै । ग्यान पाइयै सु जानिय ॥
उकति जुगति पाइयै । अरय घटि बढि उन मानिय ॥
या समान गुन आप । देव नर नाग बखानिय ॥
भविछत भूत ब्रतह गुनित । गुन त्रिकाल सरसइय ॥
जो पढ़य तत्त रासौ सुगुर । कुमति मति नहि दरसाइय ॥

॥ छं० ८८ ॥ रू० ४४ ॥

रासो किसको अच्छा और किसको बुरा प्रतीत होता है ॥
दूहा—कुमति मति दरसत तिहिं । बिधि विना न श्रब्बान ॥
तिहिं रासौ जु पवित्र गुन । सरसौ ब्रन्न रसान ॥

॥ छं० ८९ ॥ रू० ४५ ॥

इस ग्रंथ के काव्य की संख्या का कथन ॥

दूहा—सत सहस नष सिष सरस । सकल आदि मुनि दिष्य ॥
घट बढ मत कोऊ पढौ । मोहि दूसन न वसिष्य ॥ छं० ९० ॥ रू० ४६ ॥
रासो के ढँके हुए अर्थ के विषय में कवि का कथन ॥

गाहा—अरथं ढंकिन सहसा । उघारे बनथिय एकलया ॥

मझं मझं प्रमानं । चतुर स्त्री हारयं जेमं ॥ छं० ९१ ॥ रू० ४७ ॥

इस ग्रंथ के विषय का संक्षेप कथन ॥

कवित्त—दानव कुल छत्रीय । नाम दूढा रषम बर ॥
तिहिं मुजोत प्रथिराज । सूर मामंत अस्ति भर ॥
जीह जीति कवि चंद । रूप मंजोगि भोगि भ्रम ॥
इक्क दीह उपन्न । इक्क दीहै समाय क्रम ॥

४४ पाठान्तर—राज । नीति । पाई । उक्ति । पाइयै । उन मानिय । ब्रतह ।
सरस इय शब्द के पहिले किमी किमी पुस्तक मे मध्य शब्द का विशेष पाठ है ।
सरसईय । दरसईय ।

४५ पाठान्तर—दमन । तिहि । तिहि । रसान ॥

४६ पाठान्तर—कोऊ ॥ इम मे "सत सहस" से कवि एक लाख की ग्रंथ
संख्या बताता है और यह भी कहता है कि घट बढ पढ करके मुझे दोष मत देना ।
कोई कोई कवि जो यहां मन शब्द मे मात का अर्थ अनुमान करने हैं वह हमारी
सम्मति में अयुक्त प्रनीत होता है ॥

४७ पाठान्तर—ढंकिन । नवथिय । मझ । मझ ।

४८-५० पाठान्तर—रषम । तिहि । जिह । संजोगी । भोगी । उपने ।

जय कथ्य होइ निर्मये । जोग भोग राजन लहिय ॥
बज्र'ग बाहु अरि दल मलन । तामु किति चंदह कहिय ॥

॥ छं० ९३ ॥ रू० ४८ ॥

अरिल्ल—प्रथम राज चहुवांन पिथ्य वर । राजधान रंजे जंगल धर ॥
मुष सू भट्ट सूर सामंत दर । जिहि बंध्यो सुरतांन प्रान भर ॥

॥ छं० ९३ ॥ रू० ४९ ॥

अरिल्ल—हं कवि कंद मित्त सेवह पर । अरु सुहित सामंत सूर वर ॥
बंधौ किति प्रसार सार सह । अष्यो बरनि भंति थिति थह ॥

॥ छं० ९४ ॥ रू० ५० ॥

राजा परीक्षित को तक्षक वंशज और जन्मेजय की
सर्पसत्र कथा ॥

हनुफाल - इति हनूफालय छंद । कल बरनि बरनि सुकंद ॥
नहि नाल पिंगल जोर । दुज हूंतो दुजनिय भोर ॥ ९५ ॥
संसार बंधन दोय । इक पद्यू विद्य समोय ॥
तन देइ अच्छर एक । नहि पिंग पिंगल मेक ॥ ९६ ॥
किहि काल मरन सुविष्य । लहि नाग रूप सु अप्य ॥
हरि हरयो बाहन आइ । तिहि कह्यो पिंगल चाइ ॥ ९७ ॥
दै विद्य रूप सु अद्ध । सो गयो छल करि मद्ध ॥
सो तच्छ बीर प्रमान । जुग जुगनि निश्चल ध्यान ॥ ९८ ॥
इक हुतो सिंगिय रिष्य । तप करै बाल विसिष्य ॥
नृप गयो वर आखेट । दिषि श्रप्य मृतक बेट ॥ ९९ ॥
बाराह रूप प्रमान । लग्यो सु ब्रह्म धियान ॥
दह बार बुझ्यो राज । दुज दिय न उत्तर काज ॥ १०० ॥
लखि चित्त चित्र सपूत । यों भयो रिष अवधूत ॥
भयो ताम तामस राज । लियो गोन मंच बिराज ॥ १०१ ॥

जोगराज । नालहिय । बज्रङ्गबाहु । अरि दल मलन । कुन्ती । चंद ॥ ४७ ॥ सुर ॥
४८ ॥ मित । बंधो । किति । अष्यो । निथि ॥ ४९ ॥

५० दृष्टि में रखने की बात है, जैसे महाभारतादि महा पुराणों में समग्र ग्रंथ के आशय का मार एक अथवा दो अथवा तीन अथवा चार श्लोकों में वर्णन किया गया है, वैसे ही चंद ने भी अपने इस महाकाव्य का मार इन (४८ से ५० तक) तीन रूपाकों में वर्णन किया गया है ॥

५१ पाठान्तर—हनु फाल । हनूफाल । विद्यम । मोय । न । न । अच्छर ।
हयो । तिहि । चायि । दे । तछा । जुगनि । हुंतो । रीष्य । बालवि । मिष्य ॥

कम्मान कोनक संधि । नूपराज दुज गलबंधि ॥
 फिरि गयो ग्रह प्रमान । आयो सु बालक थान ॥ १०२ ॥
 खिजि कह्यौ नैन भरीव । तप्त ताम रूप सरीव ॥
 पै जुन्न बालक बुल्लि । गलि गर्भ क्यौं न बितुल्लि ॥ १०३ ॥
 तिहि तजिय तात हमान । धरि कोप अंग निधान ॥
 करि क्रोध अंखि सुरत । हविजानि लग्गिय लत्त ॥ १०४ ॥
 जिति जियत गुत्रह अप्य । को तात लभभय दप्य ॥
 रिस करौ जोव प्रमान । जरै तीन लोक अमान ॥ १०५ ॥
 रिस तेज कंपत बाल । दिष्यौ सु तात विसाल ॥
 वह लग्गि ब्रह्म धियान । भयौ कोटि तामस नाम ॥ १०६ ॥
 अति ना रत्न दिखि रिखि लोइ । दिक्क्या सु तात समोइ ॥
 ॥ छं० १०७ ॥ रू० ५१ ॥

कवित्त — जोरि हथ्य धुति मंत्र । फिरयो पर दच्छि लग्गि पय ॥
 हधिर नयन आरक्त । कंठ लग्ग्यौ सु मुक्कि भय ॥
 भूत हार वोभार । गाजि आये सुत मग्गं ॥
 भर भर भर उच्चार । रोस दावानल लग्गं ॥
 जिहि हह्यो श्रप्प सो तात गर । गनिव सत्त दिन में प्रमति ॥
 जो हत्यो श्रप्प तक्षक सुन्नत । कं काया अन्नत सुगति ॥
 ॥ छं० १०८ ॥ रू० ५२ ॥

साटक — धंन्यो धंन्य सु बाल तापन तपं । बाऊं बलं विव्हलं ॥
 सोयं पुत्र कि सोम दोम त्रिविधं । बानीय गद् गद् गलं ॥

बुभयौ । दियऊ । चित्र । चित्रम । कोनक । नवि । तुल्लि । तिहि । अति लोल
 दिदिषि रिपि लोइ । लोई । ममोई ॥

हमारे पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए कि चंद्र कवि ने इस कथा को
 महाभारत के आदि पर्व के अध्याय ४९ में ५८ तक और भागवत में पहिले स्कंध
 के अध्याय १८ और १९ और दूसरे स्कंध के पहिले १ अध्याय में उद्धृत और संक्षिप्त
 करके वर्णन किया है । यदि कोई इस कथा और चंद्र के काव्य को उक्त भागवत और
 भागवत में मिलाकर सूक्ष्म विचार कर देवे तो वह निःसंदेह यह अनुमान कर सकता
 है कि चंद्र संस्कृत भाषा अच्छी जानता था और ये बड़े बड़े ग्रंथ भी उसके पढ़े
 हुए थे, क्योंकि चंद्र के कोई कोई छंद उक्त ग्रंथों के श्लोकों के ठीक अनुवाद प्रतीत
 होते हैं । इस हनुफाल छंद के चारों पाद बारह बारह मात्रा के होते हैं ॥

५२ पाठान्तर - कियौ । लग्ग्यौ । विभार । गाजि । आइय । आईय । हत्यो ।
 प्रमति । प्रमित्त कैकाया । सुगति ॥

५३ पाठान्तर — धंन्यो धंन्य । तनं । बाल । भरनं । तेजनं । विचोर । विघन ॥

एनं भूप विसाल भूमि भरतं । धम्मं धरा राजनं ॥
तं तेजं नवि चोर व्याघ्र विघनं । नैवापि मतापयं ॥

॥ छ० १०९ ॥ रू० ५३ ॥

दत्त्वा श्राप मिदं श्रुतं गुरु वरं । मृत्युं च राजा नय ॥
सत्यं सप्त दिनानि पानि पवरं । नैवं चलते पयं ॥
त्वं श्राप त्रय लोक जालति बरं । भुल्ले वग् तुत्रयं ॥
एकं दोह सुतप्प प्रापति पद । त्रैलोक्य त्रासयं ॥

॥ छ० ११० ॥ रू० ५४ ॥

दूहा सब रिखि मे मो पुत्र तू । बय दिक्खी परमान ॥
मानहु डम्बर मे उदै । बढति कला वर भान ॥

॥ छ० १११ ॥ रू० ५५ ॥

कवित्त पुत्र छडि रिखिराज । जाइ नृप थान सु वत्ता ॥
पंथ कुलह सग्रह्यौ । रिषि श्रापान विरत्ता ॥
अति सु दीन । सर नीच । ऊच नहि भाल उचाइय ॥
दिष्टि दिष्ट राजन चरित । मगन नृव आइय ॥
एकग एक जोगिन्द्र वर । धातु न बधे हथ्य पर ॥
करि काज रिषि आयौ घरहि । उरह धरड्वग् लग्ग डग् ॥

॥ छ० ११२ ॥ रू० ५६ ॥

गाहा जो जप्यो रिष पुत्त । प्रलय होइ सत्तिय काल ॥
ज भावइ त धम्म । सो किज्जे राजन बलय ॥

॥ छ० ११३ ॥ रू० ५७ ॥

त्रोटक — नृप छडि प्रजक प्रजंक पला । मुहु मुदिह भानक मोद कला ॥
नृप दीन हल्यौ बहु चित्त चित्तं । सुहल्या जनु पोणय पीप पत्त ॥

॥ छ० ११४ ॥

पतन गुर जानि चरन्न लग्यौ । बहुस्या रिषिराज सु प्राण दग्यौ ॥

॥ छ० ११५ ॥ रू० ५८ ॥

५४ पाठान्तर—अतच । अत्यच । पानिपवर । पय । श्राप ह्वालति । तैलाकय ॥

५५ पाठान्तर —मै । मे । तू । परसान । सबत् १६४७ की पुस्तक मे हमारा
लिखा पाठ है और इतर पुस्तको मे “मानहु इदी वर उदै” है ॥

५६ पाठान्तर — जाय । सपत्ती । श्रापन । ऊच । नह । नहि । दिष्ट । नृप ।
जोगिन्द्र । हथ । किहि । घरह । उर । घर । अद्धर । लग्गि ॥

५७ पाठान्तर—झो । झंप्यौ । पुत्र । भावी । भाव । इत । जो । कीजै ॥

५८ पाठान्तर—नृप । नृप । फला । इला । मुहुमदिह । भान । कमोद ।
नृप । बहुचित्त । जुनु । योनय । बहुयौ । किसी पुस्तक मे सु शब्द नहीं है ॥

गाहा— मनो रिषि हृथं प्रानं । वल्लीकं जीवनं गुरयं ॥
जो फल लग्यौ पच्छ । तौ कालं रिष सो बरयं ॥

॥ छं० ११६ ॥ रू० ५९ ॥

दूहा—इय चितय रिषि राज गुर । पुच्छिय अन रिष राज ॥
क्यौ उधार होई श्राप बर । करो कृपा करि आज ॥

॥ छं० ११७ ॥ रू० ६० ॥

कवित्त— मद भंडी इक पुरुष । निसा भद्व अघ रत्ती ॥
वरगना अंगने । डस्यौ अहि परत धरत्ती ॥
सुरापान आमिष्य । गयौ करहुं तब छुट्टिय ॥
उच्चारत हा राम । जाय बैकुठ सु ठट्टिय ॥
परताप नाम सद गति भइय । कीर कहत परिषत सम ॥
भागवत्त मुनिहि जो इक्क चित । तौ सराप छुट्टिय अक्रम ॥

॥ छं० ११८ ॥ रू० ६१ ॥

ज दिन श्राप तुहि भयौ । न दिन परसोक घर छघर ॥
पगु पयि जल छडि मुनिवर ममाधि उर ॥
छडि चक्र हरि रषिष । कूप नूं मात परिष्यत ॥
पडव वम प्रतप्य । तपन धम धारी दिष्यत ॥
अचरिज्ज कहा तुम उद्वरन । होइ प्रमन मुकदेव कहि ॥ ..
दिन मन अवाधि अंतर बहुत । हरि सु उड्वरै छिनक महि ॥

॥ छं० ११९ ॥ रू० ६२ ॥

धरनि रूप करि धेन । धम्म बछरा संग लीयै ॥
झारषंड महि चरत । देषि कलयुग कुपि हीयै ॥
चरन तीन भज्जंत । प्रजा सब आय पुकारिय ॥
चडि करि तें नृपराज । वथ्य परि ताहि बछारिय ॥

५६ पाठान्तर - प्रान । वल्लीक । लग्यौ । पछ । पछ । तौ । इस के छड का नाम सं० १६४७ की पुस्तक में गाथा है ॥

६० पाठान्तर चिनन । रिषियगज । पुच्छिय । होय । आप ॥

६१-६३ ये तीन रूपक सं० १७७० और सं० १६४७ की पुस्तकों के अनिरीक्त उनमें पीछे की जितनी पुस्तकें अब तक हमारे देखने में आई हैं उन सब में हैं, परन्तु जब तक उन में भी पहिले की पुस्तकें न प्राप्त हों तब तक इन रूपकों को हम निश्चय रूप में शेषक नहीं कह सकते । इनके पाठान्तर ये हैं— अघरत्ती । वारंगन । अंग । ने । काहुं । भगवत्त । जंइ क्वचित ॥ ६१ ॥ यदि । म । तदि ।

किहि कीर अंग लग्गौ परस । तिहि कारन इह उपज्जिय ॥
आषेट जाय पन्नग मृतक । सिगी, गर घतिय, षिज्जिय ॥

॥ छं० १२० ॥ रू० ६३ ॥

त्रोटक—इति त्रोटक छंद सुमंत गुरं । दिन सात पद्यौ हरि गंग कुरं ॥
त्रितकाल विकालह चित्त धरं । क्रित पत्त छिमा पिबु लाइ भरं ॥

॥ छं० १२१ ॥

नृपराज परीछत तत्त गुरं । धरि ध्यान कह्यौ बदलीष धरं ॥
इन काल सु तप्पय देव नरं । नृप ग्यान सुन्यौ बपु व्याम वरं ॥

॥ छं० १२२ ॥ रू० ६४ ॥

साटक—या विद्या बदलीत राजन गुर । श्रापो रिषं तारय ॥
शून्य राज सु इन्द्र धारन धर । विद्या अमारा पुरं ॥
ग्रम्भोयं मुधन तु मानुल इय । मोह हरित्तरयं ॥
सो ध्यानं रिषिराज राजन वर । पापापहार पर ॥

॥ छं० १२३ ॥ रू० ६५ ॥

चौपाई अति किसलय सुम कोमल अग । जानु कि मुक्किय देहिय अंग ॥
किष्ण दीपायन दीपन व्याम । कोपिन एकिन मडल त्रास ॥

॥ छं० १२४ ॥ रू० ६६ ॥

दूहा—किसनदीप दीपायनह । कही रिषी सब वत्त ॥
जु कछु मराप सु उङ्घया । परनराज गुरु गत्त ॥

॥ छं० १२५ ॥ रू० ६७ ॥

कवित्त तितं आय वर ब्रह्म । अप्प रिषि रिषि मु पुकार ॥
कै तच्छक नृप हतहु । न तरु तच्छक मर धार ॥
उभय चित्त चितयौ । भइय श्री नाग सु मान ॥
नृप न हतो तो मरन । अहित नृप रिष्व निधानं ॥

न । परिसोक । धर । रषि । परीषत्त । प्रतप्य । प्रतषि । प्रमन्न । धम । सग ।
लियै । हियै । बप्प । परिताहि । घतिय ॥ ६३ ॥

६४ पाठान्तर - तोटछद । किल । पिबुलाड । त्रिनकाल । नन । नृन ।

६५ पाठान्तर - गुरु । ग्रम्भोयं । मुधन । मानुल । तारय । ध्यान । राज ॥

६६ पाठान्तर—सु । सकोमल । देहीय । अय । किन्वा । दीपायन ।
चन्द्रायना ॥

६७ पाठान्तर—रषी । वत्त । जु । उधर्यौ । आगत ।

६८ पाठान्तर—तच्छक । हतहु । तजक । भई । भइय । मान । तो । निधान ।
धरि । चित । ध्यान ।

दुअ भंति चित्त चिंता सुचित । धरिथ ध्यान चित जान जिय ॥
सत विप्य आइ लिय बोर बर । आय हथ्य राजन सु दिय ॥

॥ छं० १२६ ॥ रू० ६८ ॥

कवित्त दिय हथ्यं मधि कीट । सुफल लेइ राजन धारिय ॥
क्रल लंछन लागंत । निकरि कीटं क्रित कारिय ॥
क्किनक मधि बाढंत । भए फुनि पंचनि नारिय ॥
नृपय हुकम मुष दियौ । कतौ सो काम करारिय ॥
फिरि आय राय दिष्टह बचिय । क्रम्म महि उसनह फनिय ॥
जं जाह जोह कलि हंस कृत । भइय देह बन श्रप्यनिय ॥

॥ छं० १२८ ॥ रू० ६९ ॥

तब जनमेजय पुत्त । दिहा दच्छिन जन मुक्किय ॥
तहां धन अंतर वैद । दरक चढ़ि लेन सु तक्किय ॥
करिय षेद चलि अप्प । सहम चेला मंग धारिय ॥
आस्तीक जु धुर नाग । तब सु तछ्छक विच्चारिय ॥
छल तक्कि रूप लकुटी भइय । ग्रहिय गुरु पुठ्ठें डसिय ॥
भष काज सिष्य सिष्यां दइय । विप्र रूप तछ्छक हँसिय ॥

॥ छं० १२७ ॥ रू० ७० ॥

दूहा—आस्तीक जु गूर वैर कजि । पढि विद्या ग्रह नाग ॥
जनमेजय निरूप सों मिलिय । मंड्या श्रप्पन जाग ॥

॥ छं० १२९ ॥ रू० ७१ ॥

कवित्त— ति हित वैर सिहु बरन । सपत विप बोल मु चारव ॥
नृप जनमेजय नाम । भयौ तामस उत गारव ॥
तात वैर सिमु दण्णिय । जियन सोइ लोइ विचारै ॥
जानिहु वातन हरिय । मच्छ बंध्यौ जनु जारै ॥
होमंत सक्ति तच्छक सु नग । इन्द्र सरन पत्ती तबै ॥
मुनि कन्न राज तामस भयौ । करहु मंत साधन सबै ॥

॥ छं० १३० ॥ रू० ७२ ॥

६६ पाठान्तर— भरा । किमी किमी पुस्तक में मो शब्द का पाठ नहीं है ।
आई राइ । दिष्ट । भईय । भईये ॥

७० पाठान्तर—दछिन । जनमु । किय । धन । अंवरवेद । सुत । किय ।
तिछक । छलन । कि । भईय । युद्धे । मिष्य । मिष्या । दरह । तछक ।

७१ पाठान्तर—निहित । बदस । यत्त । विप्यं । मचारत्र । रण्य्य । जानलु ।
बात । नृहरिय । मछ । होम । मंत । तछक । पत्ती । कनी । मंत्र ॥

७२ पाठान्तर— करि । अस्तुति । स्वाहा । सारन । तिन । सह ॥ इस

भुजंगी—करी अस्तुती यं स्वहा इंद्र जोगं । तहा इंद्र आयो सुरं नाग भोगं ॥
इतं देव सादेव सारन्न आयौं । तिन काटि दीयंत सो पाप पायै ॥
॥ छ० १३१ ॥ रू० ७३ ॥

कवित्त अभय दान आतुरह । अनं उग्राह पान दत ॥
मरन रषिष भय नरन । कट्टिह मुक हिन छडि मत ॥
तय लगि कग्ग कराल । स्वान मसन ऊ बामै ॥
रुधिर चरम अरु असति । वस्त वस्तन ऊ नासै ॥
जो इय जोइ जग उच्चरै । जननि जाय ग्रम्भह गरै ॥
तिन काज राज प्रारथिये । जियन तछक तन उब्बरै ॥
॥ छ० १३२ ॥ रू० ७ ॥

दूहा - नृप चिंता बहु लगि मन । ज्यौ जुथ वाय त्रिकाल ॥
यौ नृप राजत राज कुल । पुनर जनम दुप ज्वाल ॥
॥ छ० १३३ ॥ रू० ७५ ॥

वर्तमान आबू पर्वत के उद्धार की कथा ॥

उस तक्षक का आबू पर ग्रपना अर्बुद नाम धर रहना ॥
कवित्त स तछ आबू प्रमान । मडीयो सू अचल कर ॥
गरब गरुर ते बिडुरि । सुडरु रप्यौ जु मत धुर ॥
अचल ईम प्रति ताम । अचल आचित्त अचल धर ॥
देव देव प्रारथिय । इन्द्र मुक्किय छडिय धर ॥
अरबुद नाम धर जुत्तिया । दूर तषित थहराइया ॥
कलपान पुहप अरु बस्त गुरु । छाह गुरु गुर छाडया ॥
॥ छ० १३३ ॥ रू० ७६ ॥

रूपक के छंद का नाम हम ने शोध करके भुजगी रक्खा है और स० १६४७ की तथा स० १७७० की पुस्तको मे भी यही नाम लिखा है किंतु इतर पुस्तकों में चंद्रायना नाम लिखा है वह अशुद्ध है ॥

७३ पाठान्तर—आतुर है । अन । कट्टि । मु । कहित । तुय उ । उं । जोइयै । सभइ । कारज । प्राथिय । उबरै ॥

७५ पाठान्तर—त्रिम । पुनरजनम ॥

७६ पाठान्तर—सो । तक्षक । आ । चित । बर । नुकिय । छडीय । जुतिय । तषियत । छाईया । स=वह का वाचक और तछ=सर्प=तक्षक का वाचक, जैसे, रू० है ५१ फी ८ तुक में तच्छ प्रयोग हुआ है ॥

गालव ऋषि के शिष्य उत्तङ्ग का उपाख्यान

डूहा—सो आबू उद्धार विधि । कहीं कथा * परबंध ॥
ज्यों अनादिआ रिष्य मुष । सुनी सु गुर समबंध ॥

॥ छं० १३४ ॥ रू० ७७ ॥

गुरु गालव उत्तंग सिष । बहु विद्या पढ़ि जाम ॥
पय लगौ गुर राज कै । कही दछछना कम ॥

॥ छं० १३५ ॥ रू० ७८ ॥

बाधा—गालव रिषि सिष्य उत्तंग । दिय विद्या बुध क्रम क्रम अंग ॥

गुर दषिषन कज्जै गुर जच्चै । गुर पतनी तब मंगि बिरच्चै ॥ १३६ ॥

कुंडल जच्चि षित्रिया कानं । अप्यौ जासु दषिषना दानं ॥

दिवस अठूमो ब्रत अषंडै । चरचों दान विप्र श्रुत मंडै ॥ १३७ ॥

चल्यौ रिषिष चमके ताम । गुर गुरनी कों करै प्रनाम ॥

चितत इष्ट चल्यौ बर राहं । संपत्तौ यौ सद नृप टाहं ॥ १३८ ॥

जच्च कुंडल षित्रिय पासं । सोइ समप्यै बिधि बर तासं ॥

विप्र प्रसंसै समपे कुंडल । कहि डर तच्छक बीच नीच षल ॥ १३९ ॥

लै कुंडल चल्यौ हरषे मन । श्राप्यौ राज विप्र अन्यो अन ॥

क्रम्यौ विप्र राह चंचल चर । छलि तच्छक लीनें कुंडल वर ॥ १४० ॥

क्रमयो विप्र पुठ्ठि अति चंचल । धरि अहि रूप सु गयो रसात्तल ॥

विल इष्ये ठढ्ठौ रिपि तामं । दुमत चिन भय विहत विरामं ॥ १४१ ॥

अस्तुति इन्द्र करन लगौ रिपि । नण्यौ वामव पिनक वज्र सिपि ॥

ब्रित अभिन दीयो आपंडल । धर रिपि तक्कि षात विल मंडल ॥ १४२ ॥

७७ पाठान्तर—रिष्य ॥

७८ पाठान्तर—उत्तंग । जाम कै । दछना ॥

* हमारे पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए कि चंद्र अर्बुद के उद्धार की कथा अर्बुद खण्ड अर्थात् आबू महात्म्य नामक संस्कृत ग्रंथों में संग्रह करके वर्णन करता है । जिन पाठकों के पढ़ने में अथवा सुनने में ये ग्रंथ आए हैं वे जान सकते हैं कि कवि ने थोड़े में बहुत ही आगय लिया है और उत्तङ्ग का उपाख्यान महाभारत के आदि पर्व के पौष्यपर्वाध्याय नामक द्वितीय अध्याय में में भी कवि ने संगृहीत किया है ॥

७९ पाठान्तर—उत्तंग । दक्षिण । गुरपतनी । दक्षिणा । अषंडे । मंडे । करे । संपत्तौ । निरूप । प्रसंसै । समप्यै । तथ्यक । बीच । रसै । अंचल । इष्यै । इष्ये । ठढौ । साम । विराम । वज्र । आम्रत । दियौ । रिपि । पैठे । बीठे । घोमं । ठोम । विराम । फेरै । वाह । जो । तामं । वे । हथ । वे । ईम । मकाम । वेइम । सठि ।

पैठो बिप्र नागपुर ठामं । घोम प्रगट्टै मंत्र विरामं ॥
 इष्पी पुरुष एक षट आरं । फेर चक्र तास फिरि तारं ॥ १४३ ॥
 इष्पी बाह बाह सत बारं । उंच तेज आजेज अपारं ॥
 यौं नर नारि अपै बर नामं । वे अह हृथ्य वेई सम कामं ॥ १४४ ॥
 त्रिसत सठ्ठि तां तंति ठायं । अद्ध सेत्त स्यामं अध तायं ॥
 अहि धुत्तेन उपाइ सुवाहं । फुंकत पुंछ सधुम्म सराहं ॥ १४५ ॥
 पुंकत पुंछ धार धुस चल्ली । लग्गै नाग अंग सह थल्ली ॥
 प्रगटे अंसू पलक उध धत्ति । अप्यौ कुंडल नाग मान हत्ति ॥ १४६ ॥
 ग्रिह कुंडल अप्पे गुर वामं । गुर विद्या अप्यी अभिरामं ॥
 दुज वर बज्र पैठ जेहा धर । बिल अभ्रित तिह थानं मंडि थिर ॥
 ॥ छं० १४७ ॥ ६० ७९ ॥

दूहा—बिल अथाह तिहि थान भय । बहु संवच्छर वित्त ॥
 पृथुल कराल कराल भौ । जिम जिम काल बित्तित्त ॥
 ॥ छं० १४८ ॥ ६० ८० ॥

वशिष्ठ ऋषि का आबू पर तप करना और उनकी
 नंदनी गौ का अथाव बिल में गिरना ॥

पद्वी-किहि समय ताम वाचिष्ट रिष्पि । धर अटन करन सम आइ मिष्पि ॥
 सिवपुरि सु सोभ तारन्न वन्न । मुभ थान इष्प आमोद मन्न ॥ १४९ ॥
 बर इष्पि ठाम विश्राम ताम । अनेक रिष्पि किय तह विश्राम ॥
 तिहि समय चरनिय होम धेन । सामीप समंपी बिलह तेन ॥ १५० ॥
 अध इष्पि इष्पि भ्रमेव गाव । मुछेव परिय मझि बिल अथाव ॥
 हुअ होम काल आवी न धेन । चिनै सु रिष्पि कारन्न केन ॥ १५१ ॥
 बल जंप लह्यौ गो पात थान । तहां गयौ रिष्पि सिष्पह ममान ॥
 उतकंठ बिलह ठद्धौ सु रिष्पि । नंदिनिय नाम कहि सदिति मिष्पि ॥ १५२ ॥
 क्रन्दन्न गाव संपत्त वच्च । हंभार कियो सुर उच्च तच्च ॥
 सुन्नै वचन्न सावच्छ भ्रम्म । चित्ते मु रिष्पि निक्कास क्रम ॥ १५३ ॥
 ॥ छं० १५३ ॥ ६० ८१ ॥

ता । तति । ठाय । उपाय । स्याम । धुत्तेन । फुंकत । सधुम । धुन लगे । थली ।
 अंसू । कुंड । अप्यौ । हित्त । मनि । यही । राम । पैठ । आधेन । अभ्रित ।
 ८० पाठान्तर—वित । प्रिथुल । प्रथार विवित ॥
 ८१ पाठान्तर—वासिष्ठ । सिब । पुरिस । सपन्न । इष्पि । भ्रमेव । सपतीय ।
 । परित । हबिल । आवीत । ग्रीन । चितै । गोपात । सिष्पहि । उतकंठ ।
 । सदति । क्रन्नेन । वन्ननेन । क्रनेव । संभार । रंभार । ऊंच वचन । सावच्छ ।
 । चितै । रिष्पि । निरक्कास । क्रम ॥

बशिष्ठ ने अपनी गाय निकालने को गंगा का आह्वान किया ॥

इहा—चित्त अनेकह विधि विवर । विल नंदिनी निकास ॥
मंत्र रूप गंगा तवन । लगे करन रिष तास ॥
॥ छं० १५४ ॥ रू० ८२ ॥

भुजंगी—नमो देवि गंगे जयो मात गंगे । द्रवै रूपका मंडलं ब्रह्म संगे ॥
त्रयं पथ्य त्रेयं गुणं ते निवासं । वसं वृंद वृंदारका सेव जासं ॥ १५५ ॥
हिमं सैल भेदे सु भेदे धरायं । सजै रूप कायं सुरायं नरायं ॥
मधु छेदनं पाय प्रावेस कारी । सतं मुष्ण सामुष्ण सामुद्र धारी ॥ १५६ ॥
हली सेत झलनी जलद्धी समुद्दं । अवै सेष षीरं सु मानौ समुद्दं ॥
धराचल्लि भागीरथी विश्व भागं । मिटै अध्घ ओघं तनं दुष्ण दागं ॥ १५७ ॥
सुभं उच्च अंदोल बीचं बिराजं । मनो स्तुग्ग आरोह सोपान साजं ॥
नरं नीच नीरं तटं श्रोन प्रम्मं । तवै श्रग्ग देवं गुणं श्रब्ब श्रम्मं ॥ १५८ ॥
परै मझ्झ कल्लेवरं धंषि छुट्टी । भषी कावलं गिद्धि गोमाय लुट्टी ॥
तटं श्रोन झल्लै थलं वारि हल्लै । षिनं मझ्झ अंदोल बीचं वहल्लै ॥ १५९ ॥
तिनं आतमं देह आनूप धारै । वरं उर्वसी चामरं बिन्न नारै ॥
धरै ध्यान भावं तिनं दुक्ख दब्बै । मिटै मज्जनं अध्घ साजंम सब्बै ॥ १६० ॥
झलक्कंत गंगा तनं तेज सोहै । मनौ दाहनं दाह दाहंन जो है ॥
सुयं गंग गंगे सु गंगा प्रकारं । हरै नाम गंगा जमं किं करारं ॥ १६१ ॥
त्रिपथी त्रिगामी विराजंत गंगा । महा स्रग्ग लोकं नरं नारि अंगा ॥
रहट्टं धरी ज्यौं फिरै तीन लोकं । महा दिव्य धुस्ती तवं निग्म लोकं ॥ १६२ ॥
कलाली गुहीरं गुफा फारि नागं । प्रगट्टीय मातंगि मानुष्य भागं ॥
रही नष्ण अष्पी सुयं ताप भंजै । महा वहराजं दिवं दुर्गं रंजै ॥ १६३ ॥
भयं भीषमं मात बहु पाप षडं । जमं ज्वाल ज्वालं तमं तेज चंडै ॥
रहं रोह रंगो हरं सीस गंगे । महा मोहनी मात दुग्गा उतंगे ॥ १६४ ॥
बरं काल काला जलं स्वेत रूपं । तहां उप्पनी मात आभंग नूपं ॥
भई गाम सद्दं सु हामुद्द मेतं । डस्यो नाम गंगा उतंग्गा विहेतं ॥ १६५ ॥
हरद्वार द्वारं कलां तूं प्रगट्टी । करी मुक्ति मग्गं महा पाप मट्टी ॥
तिनं नाम लीनै कियं तोय पीजै । कियं संमन्नं देव संज्यान कीजै ॥ १६६ ॥

८२ पाठान्तर—अनेक । ह । निकामी लगी ।

८३ पाठान्तर—देव । द्रवे । रूपका । पृथ । गुणत्रै । निकाम । वृंद । वृंदारका ।
मुष । सामुष । जलधी । समद् । सामुनी । धरा । वल्ली । नीर नीच । स्रग्ग । कल्लेवरं ।
मधि । बीचिव । मंजने हल्लै । अप सा । जम । दाहनं । जोहै । त्रिपथी । नाग ।
षटा ताम । मंगा । महादिव्य । नवं । निग्म । महावहराजं । षडिब दुर्गं । भीषम ।
आलं । महामोहनी । अनूपं । धर्यौं । समरनं मंस्या । मोछ । मोक्ष । दुपन्न ॥

कियो गाहि तें पंथ उग्याहि सज्जं । तुंही तापिनी तेज तूं तेज राजं ॥
तुंही मध्य वारानसी भोज देनी । कळी काल दुष्णं कठभं क्रपेनी ॥

॥ छं० १६७ ॥ रू० ८३ ॥

दूहा -जब लमि रज तन मात की । रहे अंग सो लाइ ॥
तब लगि काल न संपजे । क्रम्म पाप सब जाइ ॥

॥ छं० १६८ ॥ रू० ८४ ॥

गाथा -क्रम्मं अघं सब भजै । दिव्यं करै देह सा रूपं ॥
सुरगं करै सु गामी । अद्वं नाम रसन उच्चारं ॥

॥ छं० १६९ ॥ रू० ८५ ॥

मंदाकिनी गंगा का उभरना और गौ का निकलना ॥

दूहा -सुनि गंगा सुवयन्न रिष । उभरी आय प्रमान ॥
ताहि तिरंतह नंदिनी । आई तट बिल थान ॥

॥ छं० १७० ॥ रू० ८६ ॥

रिष्य सिष्य ध.ये सु सब । सब घर कड्डी तँह गाव ॥
सो कड्ढवि मंदाकिनी । गइ पयाल फिरि ठाव ॥

॥ छं० १७१ ॥ रू० ८७ ॥

बिल अथाह दिष्यो सु रिष । चित चिता पर पत्त ॥
को निकसै या माधिगत । गात भयानक षत्त ॥

॥ छं० १७२ ॥ रू० ८८ ॥

वशिष्ठ ऋषि का उस अथाह बिल बरने को हिमालय
के पास एक पुत्र मांगने जाना ॥

बिअषरी-चिते रिषि देखि बिल दुक्रित । उर लगी अति चित मझि हित ॥

पूछवि रिष्य सिष्य क्रत कामं । लहै न कोइ बुद्धि बल तामं ॥ १७३ ॥

चिते ध्यान अप्य रिषि राजं । याहि सपूरन को धिर काजं ॥

चितत रिषि ध्यान उर भासं । है सत पुत्र हेम गिरि जासं ॥ १७४ ॥

एक पुत्र जाचों तिन पासं । बिल पूरै पूरै उस आसं ॥

क्रम्यो राज रिषी दिसि उत्तर । देषी मन आनंद दिव्य घर ॥ १७५ ॥

८४ पाठान्तर -सोलाइ ।

८५ पाठान्तर -क्रम । सारूपं । सुगाभी ॥

८६ पाठान्तर -सुनयन । तिरत ॥ ८६ ॥ घाए । कढा । तहां । कडवि ।

गई । ठाव ॥ ८७ ॥ परयत । मधि । षत ॥ ८८ ॥

८९ पाठान्तर -चिते इक्रन । काई । सपूरन । नासं । हेमगिरि । पुत्र एक ।
पू । पूरं । रिषि । उत्तर । मान । रिषिराज । गिरि राजं । इष्ये । मेना । पय ।
काये ॥

गौ रिषि राज पास गिर राजं । इष्य अग्न पति आसन साजं ॥
मैना सहित आप पग लगे । अरध पाद करि अचवन लगे ॥

॥ छं० १७६ ॥ रू० ८९ ॥

दूहा सुनि सुवचन गिरि राज कौ । कहि रिषि कारन षात ॥
पुत्र एक जच्चं तुमहि । गरित सपूरन गात ॥

॥ छं० १७७ ॥ रू० ९० ॥

हिमालय का अपने सब पुत्रों से ऋषि का अभिप्राय कहना ॥

कवित्त - तव सुचित गिर ईस । पुत्र सद्दे निज सब्बं ॥
कहि कारन षिति षात । अप्य रण्णी कुल अब्बं ॥
इह सुरिष्य सुत ब्रह्म । नाम वाचिष्ट महामति ॥
धर्म पार तप पार । पार श्रुत कर्म परम गति ॥
जच्चे सु सोइ तुम एक कहूँ । चितिय चत कारज्ज रिषि ॥
मंब सो वास विल उद्धरी । पद पामो परमुच्च अषि ॥

॥ छं० १७८ ॥ रू० ९१ ॥

हिमालय के बड़े पुत्र का उत्तर देना

कवित्त - तव अप्पहि अग्र पुत्त । सुनहु गिरि राज चित चित ॥
पिना वाच रिष काज । कोइ छंडहि मुक्कम्म हित ॥
उह सु भूमि निषेद । थान जानहु तुम सब्बं ॥
धर्म क्रम अरु देव । सेव जाजन नहि अब्बं ॥
कुच्छित्त देम कारन विक्रम । तहूँ सु केम किज्जं गमन ॥
अप्पियै प्रान मांगै जो रिषि । पै द्रुष्ट थन थप्पहिँ न तन ॥

॥ छं० १७९ ॥ रू० ९२ ॥

वशिष्ठ का प्रत्युत्तर दे कहना कि वह भूमि बड़ी रम्य है

कवित्त - तव जपे सुत ब्रह्म । सुनौ गिरि राज पुत्र सम ॥
इहि सु भौमि विल थान । रम्य मंडहि सु तप्य हम ॥
मबै देव इहि वास । तिथ्य सब्बै रिषि सब्बं ॥
विप्र ब्रक्ष बर वल्लि । सु गुनि गध्रव सब कब्बं ॥

९० पाठान्तर—गिरिराज । सपूरन ।

९१ पाठान्तर—ईसं । रण्यो महामति । परमगति । कहू । संव । संबसौ :
परमुच ।

९२ पाठान्तर—गिरिराज । मुक्कम्म । रूब्ब । अब्ब । तहा । कहहा । पै ॥

९३ पाठान्तर—जपे । सुअ । गिरिराज । तिष । मंधवं । मूर्तिमान । सज्ज्वै ।
विषर । धाश्र । महि ॥

किन्नरंह क्रम सुत धर्म धर । मुरति मान सज्जति सिर ॥
हरि ब्रह्म ईस संवास सह । जो आश्रम हि एक्क गिर ॥

॥ छं० १८० ॥ रू० ९३ ॥

और वहां आगे वाल्मीकि ऋषित्व को प्राप्त हुए हैं

पद्धरि—रमनीक ठाम वाचिष्ट राज । तहां बसहि देव देवह बिराज ॥
इहि थान पुव्व क्रत युग प्रमान । रिषि कियो तप्प ज्जजित विधान ॥१८१॥
बाल्मीक वीर एक वधिक रूप । अति पाप क्रम आघात कूप ॥
भंजै सु मग्ग तिन धम्म थान । पायौ मु हरिय दरसन विधान ॥ १८२ ॥
चित्त संष चक्र गद पदम बाहु । तन स्याम मुभित पीतह प्रवाहु ॥
दिष्ण्यौ सु लछो तन रूप भील । कीनी नह तन तिन निमप ढील ॥ १८३ ॥
आयौ सु दिठु गोबिन्द वीर । जानी न पुव्व धम्मह सरीर ॥
छिति दिष्ण दिठु कामह करूर । बिद्यो सु पाप मथ्यां समूर ॥ १८४ ॥
तब आय रिष्ण उपदेस दीन । किहि काज इहां यह क्रम कीन ॥
भग्नी रुबंध निय मात पुत्त । बंटहि कि पाप पापह सजुत्त ॥ १८५ ॥
तिहि जाई कह्यौ वर भील मान । बंद्यो न पाप किन अंग थान ॥
लग्यो चरन्न कर धनुष तोरि । आघात घात वानी सजोरि ॥ १८६ ॥
व्याघात नाम सों वधिक थान । भ्रम भ्रम्यो इक्क वृच्छह निधान ॥ *
॥ छं० १८७ ॥ रू० ९४ ॥

गाथा यों कहियं रिषि राजं । तुम कोइ दिवम भ्रमन करि अर्थ्यं ॥
फुनि हम दरसन प्रायं । सथ्यं गुर मंच दे कानं ॥

॥ छं० १८८ ॥ रू० ९५ ॥

मरां मरां यह कहियं । गहियं भगताय अंगयं नेहं ॥
भिदे तु चक्रम मंटी । दट्टी निय श्रव यो देहं ॥

॥ छं० १८९ ॥ रू० ९६ ॥

डूहा -बांबी फिर अंगह वली । अंग उदैही जाम ॥
झीन सबद मुष निक्कसे । धीर धीर कै राम ॥

॥ छं० १९० ॥ रू० ९७ ॥

६४ पाठान्तर - जु । धर्म । दर्शन । लछि । वीर । धर्मह । धरमह । विद्ध्यो ।
मथाम । भूर । रिषि । इह्यो । रह्यां । क्रम । त्रिय । पुत्त । संजुत्त । चरन । तोरी ।
भ्रम्यो । इक्क । वृच्छ ।

* यह पंक्ति कर्नेल टाड साहब वाली पुस्तक में नहीं है ॥

६५ पाठान्तर—कोई । प्रमं । समध्य । मरा । मरा । गहिय । भई । अब ।
बबयो ॥

६६ पाठान्तर—बांबी । निकसी । कै ॥ ६७ पाठान्तर—दिषि । रिषि ॥

तव धरि मधि कद्यो सु रिषि । दिष्णि प्रबल तप पार ॥
बालमीक रिषि सो भयो । सुनि गिरि सुअन बिचार ॥
॥ छं० १९१ ॥ रू० ९८ ॥

हिमालय के मध्यम पुत्र नंद का वशिष्ठ के साथ
ग्राना स्वीकार करना ॥

कवित्त—सुनि सु वचन गिरि सुअन । सर्व बिधि राम बाच रहि ॥
मध्य पुत्र गिरि नंद । सोय उच्चयो वाच सहि ॥
हौं सु पंग बिन पाय । क्रम्मि सककों न राह दुर ॥
जाय परों षित षात । करौ उद्धार वाच धुर ॥
पित बाच राम सज्यो सु बन । बाच मु हरिचंद्र अब्व वहि ॥
सोइ बाच तात क्रत कज्ज रिषि । कोइ सचुक्कहि मुष्ण महि ॥
॥ छं० १९२ ॥ रू० ९९ ॥

वशिष्ठ का अर्बूद नाग से कहना कि जो तू नन्द गिरि को
उठा ले चले तो हमारा कार्य सिद्ध हो ॥

पद्धरी अर्बुदा अचल अर्बुदति नाम । क्रित काम पयह षोरौ सु काम ॥
धर नंद नंद नंदन प्रमान । उच्चार सार लै जाहु धान ॥ १९३ ॥
रुंधी सु गाय वन व्याघ्र क्रोध । आयौ मु राज राजन समोध ॥
कुरु लाय करिय करुना मु धेन । छंडाय राज राजन बलेन ॥ १९४ ॥
तन धरिग कन्यौ जज्जर सरीर । दिष्ण्यौ न मिघ तहां निमष तीर ॥
सु प्रसन्न गाय धेनक सु रिष्णि । कीनौ जु अंग द्रपक विसिष्ण ॥ १९५ ॥
थन धान दिष्णि अर्बुदा राज । रिष कहै जोग हौ चलन साज ॥
॥ छं० १९६ ॥ रू० १०० ॥

अर्बुद नाग का कहना कि जो मेरे नाम से तीर्थ प्रसिद्ध
हो तो मैं नंदगिरि को उठा ले चलूं ॥

कवित्त तव तवि अर्बुद नाग । मित्र गिर नंद हिन हिय ॥
हौं उद्धरी लै जाउँ । तिथ्य मो नाम नाम दिय ॥

६८ पाठान्तर—गिरि । सोइ । हो । उच्चर्यो । गइ । क्रमि । क्रमि । सकों ।
सककों । सककै । परों । करों । कोई । चुकहि । मुख ॥ इम रूपक की पांचवीं तुक
के बाच और सज्ज्यौ शब्दों के बीच में राम शब्द किमी किमी पुस्तक में लेखक
ने लिखना छोड़ दिया है । तथा इमी तुक के दूसरे पाद का पाठ हमारे पाठ के
सिवाय किमी किमी पुस्तक में “पिना वाच मिर अबु वहि” करके भी है ॥

१०० पाठान्तर—इम की पहिली तुक के पहिले पाद का पाठ हमने म०
१६४७ की पुस्तक से रक्खा है । सोमाइटी की छापी हुई तथा अन्य पुस्तकों में
“अर्बुदा मवठ अर्बुद नाम” करके पाठ है । क्रन । पोटी । गाव । बिन । कुकना ।
कवों । सीह । तिहां । कितौ । द्रपक । इप्यक । जो । गहू ॥

तब नंदी उच्चरथौ । होहि तो नाम तिथ्य हित ॥
सु रिषि कज्ज सुद्धरहि । सु रिन उद्धरहि वाच पित ॥
थप्पी सुवत्त अबु उरग । सु रिनि सीस नंषे सु मन ॥
पय परसि मात पित बंध ब्रग । सुअ सुहेम कीनों गमन ॥

॥ छं० १९७ ॥ रू० १०१ ॥

अबुं व नाग का नंदगिरि को उठा लाकर बिल में रख देना ॥

कवित्त - तब निय अबुं द नाग । कंध उद्धरथौ नंदि नग ॥
मग अग गिरि राज । रिषि संचरथौ सथ्य अग ॥
साघ सिद्ध सुर सुरह । सुमन नंषे उच्चरि सह ॥
रिषि अग गिरि पच्छ । आय संपत्त तथ्य षह ॥
प्रविस कियो गारत्त गिरि । जय जय वचन सरीर हुअ ॥
भौ मगन सुतन सब्वै सु गिरि । उबरथौ नाक सुनाग धुअ ॥

॥ छं० १९८ ॥ रू० १०२ ॥

बिल का पुर जाना और पुष्पवृष्टि सहित जयजयकार होना ॥

द्रुहा - उबरथौ नाक सु नाग धुअ । दिव अस्तुति परमान ॥
पुहप वृष्टि हथ्यां करिय । जयजय बंध्यौ तान ॥

॥ छं० १९९ ॥ रू० १०३ ॥

नग का हिलना ॥

द्रुहा - गात सकल गिरि जात को । सब बूड्यो सम नाग ॥
उबरि नास सैलह तहां । सो हलही बिन लाग ॥

॥ छं० २०० ॥ रू० १०४ ॥

१०१ पाठान्तर - हित । तिथ । उच्चरथौ । हो । हितो । सुरसि । सुद्ध ।
रहि । उद्ध । रहि । वत । अरबुद । धय । इस रूपक की दूसरी तुक का दूसरा
पाद और तीसरी तुक जो वेदले वाली पुस्तक मोसाइटी में है उस में लेखक की
भूल से नहीं है; अन्य सब में हमारा लिखा पाठ है ॥

१०२ पाठान्तर - उद्धयौ । नन्दिग । अग्गा । गिरिराज । रिषि । संचयौ ।
अग । सिघ । उचरि । अग्गी । पछ । संपन । तथ ॥ इस की अंत की तुक का पाठ
किमी किसी पुस्तक में "भू मग सुतन सब्वै सुगिरि । उबरथौ नाक सु नाक धुअ" है ॥

१०३ पाठान्तर - उबरथौ नाक । हथां ॥

१०४ पाठान्तर - यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है और जब तक
कि वह इस से भी प्राचीन पुस्तक में नहीं मिले तब तक उस को क्षेत्रक नहीं कह
सकते । सोह । लही । बुड्यौ ॥

नग के हिलने से वशिष्ठ चिंता कर ईश आराधन करने लगे ॥
 दूहा—नास सुहल हल्यौ सुनग । उर अति चिंता जग ॥
 अति आतुर वाचिष्ठ रिषि । ईस अराधन लग ॥

॥ छं० २०१ ॥ रू० १०५ ॥

वाचिष्ठ ऋषि ने महादेव का यह आराधन किया ॥

साटक—ईसजा गिरिजानने वगरथं । उच्छंग मातंगिनी ॥
 चर्मजा वड्जामवं जलजं । बुंदं तयं उज्जलं ॥
 रच्यं जारति कर्नं कामति मलं । दलयति तीयं पुरं ॥
 त्रिपुरारिं तन तुग तारन गुरं । जैजै हरं ईमयं ॥

॥ छं० २०२ ॥ रू० १०६ ॥

भुजंगी—नमो आदि नाथं स्वयंभू सनाथं । नहीं मात तातं न को मंगि वातं ।
 जटा जूठयं सेशरं चंद्र भालं । उरं हार उदारयं रुंड मालं ॥ २०३ ॥
 अनीलं असन्नं उपब्धीत राजं । कलं काल कुटं करं सूल साजं ॥
 वरं अंग ओधून विभूत ओषं । प्रलै कोटि उग्रसि कालं अनोषं ॥ २०४ ॥
 करी चर्म कंधं हरी परिधानं । वृषं वाहनं वास कैलास थानं ॥
 उमा अंग वामं सु काल पुरष्वं । सिरं गंग नेत्रं त्रयं पंच मुष्यं ॥ २०५ ॥
 नमः संभवायं सरव्वाय पायं । नमो रुद्रयायं वरदाय सायं ॥
 पसूपत्तए नित्तए मुग्गयाए । कपर्दी महादेव भीमं भवाए ॥ २०६ ॥
 मषघ्नाय ईमानए त्रबकाए । नमो धम्मए घातए अद्धकाए ॥
 कुमारो गुरव्वे नमो नील ग्रीवे । नमो व्याघए बाघए दिच्छ जीवे ॥ २०७ ॥
 नमो लोहिते नील मिष्यंडण तं । नमो शूलिने चक्षुषे दिव्याए तं ॥
 बसूरेतषे स्रव्वदेवम्नुतेव । नमो पिंग जटिल्लए देव देवं ॥ २०८ ॥
 नमो तप्प मानाय व्रष्यं धुजाए । नमो ब्रह्मचारी त्रयं ब्रह्मकाए ॥
 सिवं चातमे गातगे श्रगंचाए । नमो विश्वमावित्तए विश्वराए ॥ २०९ ॥

१०५ पाठान्तर—नाग । वाशिष्ठ । आराधन । लय ॥

१०६ पाठान्तर—उच्छंग । चलजं । जलदं । रिष । करन । दलयति ॥

१०७ पाठान्तर—स्वभू । ममाथं । नहीं । मंगी । चंद्रमालं । उर । रुंडमालं ।
 असनं । उपवीत । कलंकालकूटं । विभूत । सिकालं । अलोषं । करि । वधं ।
 वृषवाहनं । वासं । थानं । दामं । कुरष्वं । गंगा । नेत्रं । उद्रयायं । सरवाय ।
 वरदाय । पसू । पत्त । ए । नित । ए । मुग्ग । जाए । कपर्दी । कर्पदी । मषघ्नाय ।
 हसं । नप । धम्म । ए । घात । ए । गुध्वं । नल । व्याघ । ए । बाघ । ए । दिच्छ ।
 सिष्यंड । एतं । दिव्य । एतं । बसूदेवते के स्रवदेवं । स्तुतेवं । श्रघंघ । जाये ।
 ब्रह्मकाए । काए । ववर्ष । चाये । विश्वया । वित्तए । नमस । ते नमस । ते । सीत ।
 काए । साहस्र । एनीत । एसं । सहस्र । नैन । सहस्र । आसंष । कनें । हिरय । संभा

नमस्ते नमस्ते नमो सीतताए । नमो सर्ववक्त्रायने संकराए ॥
 नमो ब्रह्मवक्त्राय भूतं पिताए । नमो वाचपे विश्वपे भूतपाए ॥२१०॥
 नमो सीससाहस्रए नीतएसं । सहस्रभुजा नैन साहस्र तेसं ॥
 नमो पादसाहस्र आसंखकने । नमो वन्हि हीरन्य हीरन्यवने ॥२११॥
 नमो भक्ति आकंपनं संभु देवं । धिरं रिद्धि दाता मनं वच्च सेवं ॥
 प्रसन्नो भवो ईस तब्बै न कब्बै । तनं ताप विन्नासए चित्त तब्बै ॥
 ॥ छं० २१२ ॥ ६० १०७ ॥

वशिष्ठ के वचन सुन महादेव का प्रत्यक्ष हो बर
 मांगने को कहना

चौपाई- सुनि मुनि वचन मोद मन ईसं । आय परो रह्यो उद्धरि सीसं ॥
 बर ! बर ! बानि जानि मन मंगहु । जंपहि ईस आस जिहि जगहु ॥
 ॥ छं० २१३ ॥ ६० १०८ ॥
 मंगहु मुनि सज्जन गुन गुन बर । चलै कित्ति जित्ती जिहि धुर धर ॥
 ता कित्ती मुक्तीन भों लिज्जै । ब्रह्मासन आसन डोलिज्जै ॥
 ॥ छं० २१४ ॥ ६० १०९ ॥

ईस का स्वरूप देख ऋषि का मुदित होना ॥

चौपाई- देषि सरूप ईस मन उम्मदि । जै भे जीह धन्य वानी बदि ॥
 गौर कपूर तेज तन उदित । रिषि रोमंचित ब मन मुदित ॥
 ॥ छं० २१५ ॥ ६० ११० ॥
 मुदित मन उदित तन भारी । हरि वैकुण्ठ ईस मनचारी ॥
 अबुंद गिरि धरि ध्यान सु ईसं । करै काल तिहि काल जगीसं ॥
 ॥ छं० २१६ ॥ ६० १११ ॥

वशिष्ठ ऋषि का महादेव को नमस्कार करना ॥

साटक - त्रेनैनं त्रिजटेव सीस त्रितयं । त्रैरूप त्रीसूलयं ॥
 त्रदेवं त्रिदिसा त्रिभू त्रिगुनयं । त्रीसधि वेदत्रयं ॥
 त्रैरग्निं त्रयलच्छि काल त्रितयं । ग्रामं त्रयं त्रैववं ॥
 गंगा त्रै त्रिपुरारि भासिन तनुं । सोयं नमः संभवे ॥
 ॥ छं० २१७ ॥ ६० ११२ ॥

बिनास । ए चित ॥ सं० १६४७ की पुस्तक मे इस छंद की ८वीं तुक में का उत्तर
 शब्द नहीं है ॥

१०८-१०९ पाठान्तर—मंगहुं । जगहुं ॥ चलै और कित्ति शब्दों के बीच
 में "ई" शब्द पाठ सं० १:४७ की पुस्तक में नहीं है और इधर के समय की
 कित्ति पुस्तकों में है । धुर धुर । कित्ती । मुक्तीह ॥

११०-१११ पाठान्तर—उंमदि । गौरक । पूर ॥

११२ पाठान्तर—त्रिजटेवसीस । त्रयलच्छिकाल । त्रितयंप्राम ॥

प्रथमाधिपति ने ध्यानभित्त होकर बर मांगने को कहा
 झूहा—आनंदी प्रथमाधिपति । बर ! बर ! बंदी बानि ॥
 रिषि मंगहु उतकंठ मन । सोइ समप्यौ अनि ॥

॥ छं० २१८ ॥ रू० ११३ ॥

वशिष्ठ ऋषि का नंदगिरि को अचल करने का बर मांगना ॥
 झूहा—फिरि रिषि जंप्यो संभु सों । जो तुट्ठी मुझ भास ॥
 नग चलंतौ अचल करि । फुनि सज्जो सिर बास ॥

॥ छं० २१९ ॥ रू० ११४ ॥

सो आबू गिरि राज गुरु । सुर गिर सम सैलास ॥
 त्रिपथ ताम मुनि देव का । बसि रु कियो कैलास ॥

॥ छं० २२० ॥ रू० ११५ ॥

महादेव का पर्वत को अचल कर उस में अचल
 नाम से विराजना ॥

कविस्त तब सु ईस मन मुदित । पानि चंप्यौ गिर गौरव ॥
 अचल अचल कहि अचल । भयो अचलेस नाम तब ॥
 सुथिर भयो नग नंदि । अप्प सिर वास सु सज्यौ ॥
 उभय आय तिहि थान । सगन प्रमथाधिप रज्यौ ॥
 गिरि नंद नाम हेमह सुतन । अबुद नाग सु मित्र मन ॥
 तिहि नाम त्रिविध भय तिथ्य हर । पारस अप्पन अर्थ तन ॥

॥ छं० २२१ ॥ रू० ११६ ॥

कविस्त—अचल नाम कहि अचल । अचल विद्या अभ्यासिय ॥
 अबुंद गिरि थिर घस्यौ । बियो बानारम बासिय ॥
 उहित नाम इक बरष । मुक्ति लम्भेति जगत गुर ॥
 इहत नाम इक दीह । करै उपवास सोइ नर ॥
 बाना रभंति बारानसिय । आबू अबुंद उद्धरिय ॥
 जट विकट जाल बिम्भूति रंग । मुरग मुकति ढिग ढिग फिरिय ॥

॥ छं० २२२ ॥ रू० ११७ ॥

११३-११५ पाठान्तर—प्रथमाधिपति । बानी । समप्यौ । ११३ ॥ भों ।
 भग्न वास ॥ ११४ ॥ गुरं । सं० १६८७ कीप्रतिमें "मुदगिरि सम सैलाम" और
 सं० १७७० की प्रति में "सुर गिर सम सैलास" और सं० १८५९ में "मेर सम
 सैलास" पाठ हैं ॥ त्रिपथा । ताप । मुनि वमि । रुकियो ॥ ११५ ॥

११६ पाठान्तर—अच । प्रथमाधिपं । रज्यौ । नम । तिथ । अधि ॥

११७ पाठान्तर—घयी । बोयो । लम्प्यौ । तिषगत । बानार । वंदि ।
 बानारसीय । उद्दीय । मुक्ति ॥

आबू को अचल देख कर वशिष्ठ का प्रसन्न होना और अन्य
ऋषियों को वहां यज्ञ के लिये बुलाय जप तप

और वास करना

पद्दरी-अग अचल दिष्पि वाशिष्ठ रिष्प । मन मुदित भयो सम आय सिष्प ॥
हर वासदेव सब गुन समान । आवरन रिद्धि चित चित धान ॥२२३॥
आभासि रिष्प गौतमह तथ्य । आचरघौ वास अनि रिष्प सथ्य ॥
आभासि रिष्प अनेक तान । संबोध बोलि प्रथू प्रियुक नाम ॥२२४॥
देवलह असित अंबावि सूअ । सौमित्र सर्प माली विभूव ॥
मह महन सनक जैनेय पैल । दालभ्य बक्क सुमंत अँल ॥२२५॥
दीपाय किन्न धूलंसि राय । तैतरिय जबक्री मुताय ॥
जैमनिय धव्व वैसंपायन । हर्षनह लोम असुहोत्र जान ॥२२६॥
मंडव्य अरति कौसिक्क दाम । उष्णीष त्रिवन पर्णादि बाम ॥
घटजात मुबल मोजायनेय । बलवक पगसर वायवेय ॥२२७॥
सच्चिवाक जात क्रन क्रन्न माल । सनिवाक क्रिताश्रम सुच्चि पाल ॥
सिषि वानमु पर्वत पारिजात । अगस्ति माकंडे सुभानि ॥२२८॥
पावित्र पानि सर्वन्य रभ्य । किरनाषकेत भ्रगु मेप मभ्य ॥
जंघाव भालकी कोप वेग । गालम हरीय ब्रह्म भ्रगेग ॥२२९॥
कौडिन्न बंध माली मनक्क । सानंद मनातन कक्ष वक्क ॥
सांडिल करक वाराह पंग । कौमार अश्र ह्य घोष मंग ॥२३०॥
वेनीय जघन जघ नासकेत । कन्हं कलाप वक्रीव सेत ॥
अष्टाहवक्र उद्दालकेय । च्यवनह कपिल मानंग जेय ॥२३१॥
माधव्व गरग अनेक रिष्प । आए सु अन्य तहां समह सिष्प ॥
आह्वान मंत्र बल तप्प सथ्य । सब देव रिष्पिआए सु तथ्य ॥२३२॥
कालिंद्र गंग सरसत्ति आय । अनुसरिय बद्ध सब सीय ताय ॥
ऊषधी स्रब्ब मनि सब्ब घात । बर वृष्प लता फल पुहप पात ॥२३३॥
जाजन्य जजन अधियन अध्याय । लग्गेमु करन हचि रिष्प आय ॥
आह्वान बान उचान जाप । लग्गे सु करन हचि इष्ट ताप ॥२३४॥
जप होम मंत्र धारना ध्यान । आरंभ रिष्प लग्गे सु ग्यान ॥

११८ पाठान्तर—दिषि । वाशिष्ठ । सिष । आय । प्रियुक । अंकवा ।
विसूअ । सप्प । ध्रुव । हरष । नह । मंडप । कौसिक । उष्णीक । पनदिबाम । घट ।
जात । बाल । वाक । वालजाक । वाय । वेय । सच्चि वाक । क्रन्न । क्रनमाल ।
सनि । वाक । क्रिताश्री । सिषि । वानस । पर्वत । भाल । की । गालं । महि ।
रिय । कौडिन । सांडिल । वेनी । जय । घन । घना । सकेत । कन्ह । बसेत अष्टाह ।

आराधि सकृति आभासि ताम । संचास कीन गिर उंच धाम ॥२३५॥
 आदरस रिष्व संकास कीन । आश्रम्म श्रव्व क्रम काज चिन्ह ॥
 जगनह जाप अध्याप होम । आराध उंच आयास धोम ॥२३६॥
 प्रीनंत दे सुव्वास आय । सब मिले वृंद वृंदार काय ॥
 वीशेष मंत्र जंत्रं गुरेन । बंधे जु मंत्र कर आप देन ॥२३७॥
 करि भसम देव देवल लहीव । विस्माह अमृत पावै सु पीव ॥
 अति धम्म क्रम्म इष्वे अनंद । आए सु निसाचर छलन मंद ॥२३८॥
 भररंत रिष्व मंगिय करूर । तिन समत भूमि षह नग्न नूर ॥
 चित अचित पंच आभासि देह । रस दुग्ध सही पुद्धा अछेह ॥२३९॥
 के भवै वाय के ध्यान देव । जल दुग्ध कंद मूलह सु केव ॥

॥ छं० २४० ॥ रू० ११८ ॥

गाहा कंदं फलानि फलयं । कहुंठंतं मुनिय काल वेकालं ॥
 एकोपि धार धरयं । संतोषं सर्वं निधानं ॥

॥ छं० २४१ ॥ रू० ११९ ॥

मंतोषं विना न लभ्यै । कल्पंतं राजनं सुष्यं ॥
 जो मंतोषं देहं । तो सुष इय मूल काम लया ॥

॥ छं० २४२ ॥ रू० १२० ॥

यज्ञ का अनुष्ठान सुन कर राक्षसों का एकत्र हो आना
 दूहा जंत्रकेत दानव दुमह । अरु रूपम ध्रुमकेत ॥
 अप्प मथ्थ लीने सकल । आए, दुग्ध हेत ॥

॥ छं० २४३ ॥ रू० १२१ ॥

ऋषियों का अनलकुंड चरन कर ब्रह्म कर्म प्रारंभ करना
 कवित्त - आवु करि रिषि जय्य । मत्र कारन मु मत्र जपु ॥
 पंड हत्थ नर उंड । अष्ट अगुल उद्धं वु ॥
 हत्थ तीन अरु अद्ध । मंडि चवकून समा सम ॥
 स्रण्य समति सम कियो । फनति वच्यो देव क्रम ॥

वक्र । उद्दाल । केय । च्यव । नह । मानग । जेय । नहा । तथा । मथ । देवर्गण्य ।
 कलिद्र । मरमनि । ऊप्यो । सव । अधनय । अध्याय । लगे । आय । लगे । धारणा
 ध्यान आदर । मरिय । क्रम । अध्याय । मु बाम निके विषेय । गत्र अन्नत । उष्ये ।
 भवै । कंध । सकेव ॥

११६-१२० पाठान्तर —कहुंतं । कालवेकाल । ए कोपि । मंतोषं । मन्त्र ।
 तिहाणं ॥ ११९ ॥ संतोषं । विण । लभइ । कल्पंतं । मतोस । तो ॥ १२० ॥

१२१ पाठान्तर —यंत्रकेत । रापेय । ध्रुमकेत । अप । मथ । अहेत ॥

१२२ पाठान्तर —आवु । रिषि । नप । ह्य । वर । उग्ध । वप । अद्धे ।

अग्निनेव धान अग्निनेव धर । बाय कुंड दक्षिण दिसा ॥
नैरत निवर्तं धज मंडि कै । ब्रह्म क्रम्म लगे रिसा ॥

॥ छं० २४४ ॥ रू० १२२ ॥

दैत्यों का ऋषियों के यज्ञ में विघ्न करना

कवित्त पंच पर्व्व जग्योपवीत । पंच पर्व्वी अधिकारिय ॥
देवो मुनि दुजराज । वैश्य शूद्रह चितकारिय ॥
चर बिडाल पशु म्लेच्छ । क्रम चंडाल षंड करि ॥
इह प्रमान दस विधि * सुक्रम । जग मंडे सुमंडि हरि ॥
दानव सु दुष्ट दुष्टसु क्रम । दुष्ट भूत्र वरिषा करै ॥
पमु मंम रुधिर नषै सु जल । क्रम विप्र समुह डरै ॥

॥ छं० २४५ ॥ रू० १२३ ॥

चौ बेदी चौ विप्र । गीत गायत्र मंत्र जप ॥
ता मंडी घन विघ्न । करै आरिष्ट असुर कुप ॥
कबक भूमि हल्लवै । कबक पर्वत हल्लावै ॥
अग्नि वृष्टि कव करै । कबक बुल्लै बुल्लावै ॥
मोहनी रूप कबहुक करै । कबक सिंघ नद्दह करै ॥
तुष्णीक रहै गावै कबहु । बे हथ्यो तालह धरै ॥

॥ छं० २४६ ॥ रू० १२४ ॥

ऋषियों का संतापित होकर बशिष्ठ के पास जाय पुकारना

दूहा—दिषिष रिष्य मंडी सु रिध । जग्गिन होमह जाप ॥
ताहि विगारन मन मुदित । लगे सकल संत प ॥

॥ छं० २४७ ॥ रू० १२५ ॥

संमति । सप । कीयो । बंनयो । अग्निनेव । आगे । नेव नांथ । अगि । नेव । वाह ।
क्रुंड । दपिन । किमा रसा ।

१२३ पाठान्तर—जग्योपवीत । जुग्योपवीत । मं० १६४७ और १७७० की
पुस्तकों में यह पाठ है “इह विधि प्रमान दस विधि सुक्रम” । जंग । जग । सुमंडि ।
सुदुष्ट । दुष्ट । सुक्रम । वमु । मंसु । सुजल । कर्म । समुह ॥ * विधि विशेष है ॥

१२४ पाठान्तर—गाइत्र । मंड्य । मंडे । पर्वत हलाव । मोहनी । रूप
कबहिक धरै । नद्दहि । कबक । वै । “वै हथिन तालि न धरै” भी सं० १६४७ की
प्रति में पाठ है । हर्ध्ये ।

१२५ पाठान्तर—दिषी दिषिष । दिष दिष । दिषि । दिष । लगे । संताप ।
मंताप ॥

पद्धरी—रज वृष्टि उपल त्रिन नषि थान । त्रासना बार पहु लगि भयान ॥
 रिष गये सब्ब वाचिष्ट पास । रषसन कह्यौ मंड्यौ विनास ॥२४८॥
 रिष राज दुष्ट बघ चित आय । छंड्यौ जजन् बल मंत्र भाय ॥
 ॥ छं० २४९ ॥ ६० १२६ ॥

जिस पर वशिष्ठ का प्रतिहार चालुक्य और पँवार को
 प्रगट करना ॥

कवित्त—तब सु रिष वाचिष्ट । कुंड रोचन रचि रचि तामह ॥
 धरिय ध्यान जजि होम । मध्य वेदी सुर सामह ॥
 तब प्रगट्यौ प्रतिहार । राज तिन ठौर सुधारिय ॥
 फुनि प्रगट्यौ चालुक्य । ब्रह्मचारी व्रत धारिय ॥
 पाँवार प्रगट्या बीर वर । कह्यौ रिष परमार धन ॥
 त्रय पुरष जुड्व कीनौ अतुल । मह रषम पुदंत तन ॥
 ॥ छं० २५० ॥ ६० १२७ ॥

तथापि राक्षसों का उपद्रव शमन न होना

मलया-- कारयं जग्य बंभान निमानयं । रच्चियं कुंड षंड थिरं थानयं ॥
 आमनं दिव्य देवान आह्वानयं । आसुरं कीन उच्चिष्ट उथानयं ॥
 ॥ छं० २५१ ॥ ६० १२८ ॥

तब वशिष्ठ का स्वयं कुंड रचन कर यथार्थ बँठना और
 चितवन करना

डूहा--जब वाचिष्टह जग्य कजि । सजि कुंडह सुभ थान ॥
 तब असुर अन संक से । किय उचिष्ट उतान ॥
 ॥ छं० २५२ ॥ ६० १२९ ॥

१२६ पाठान्तर—लग्नि । यान । मब । सर्व । राष्यसन । राषिमन । वघ ।
 चिति । जजन । बल ॥

१२७ पाठान्तर—रिषि । वासिष्ट । राचेता । तहि । ध्यान । मध्यवेदी ।
 सरसा । महि । प्रिगट्यौ । परिहार । राह । चालुक । सं० १६४७ में “ब्रह्म विन
 चाल सुमारिय”, सं० १८५० की में “ब्रह्म तिन चाल सुमारिय” पाठ है । रष ।
 रष । पंमार । धनु । धनु । रषस । तनु ॥

१२८ इस रूपक के छंद का नाम जो चंद ने मलाया प्रयोग किया है वह
 स्रग्वणी नामक चार रमण का छंद है ॥

पाठान्तर—बंभाननि । मानयं । रच्चियं । आह्वानयं । उच्चिष्ट ।

१२९ पाठान्तर—वाशिष्ठ सुथान । अदं ।

कवित्त - तब चितिय वाचिष्ट । एक आसुर अविचारिय ॥
 जग्य जीह उच्चिष्ट । करं कातर क्रत हारिय ॥
 सुरन अंम संग्रहे । हवै नह हव्य हुआवह ॥
 सो उपाव संचियै । जो * याहि सवरै असुर सह ॥
 निर्म्यौ मु मूर सग्राम भर । अरि अलंघ पंडन मु षल ॥
 सम धरहि जग्य कारन सकल । विमल सिष्ट सोभै सयल ॥

॥ छ० २५३ ॥ रू० १३० ॥

अरिल्ल - अघट घाट रिषि इषिषि निमाचर । परिमि च्यार धरि ध्यान ग्यान बर ॥
 चितिय ब्रह्म करम किहि कामह । भयौ रूप रिषि ब्रह्म मुतामह ॥
 ॥ छ० २५४ ॥ रू० १३१ ॥

वशिष्ठ का चाहुवानजी को उत्पन्न करना

कवित्त - अनल कुंड किय अनल । सज्जि उपगार सार सुर ।
 कमलासन आमनह । मंडि जग्योपवीत जुरि ॥
 चतुरानन स्तुति सद् । मंत्र उच्चार सार किय ॥
 सु करि कमंडल बारि । जुजित आह्वान थान दिय ॥
 जा जग्नि पानि श्रव अहुति जजि । भजि सु दुष्ट आह्वान करि ॥
 उप्पज्यौ अनल चहुवान तब । चव सु बाहु असि वाह धरि ॥

॥ छ० २५५ ॥ रू० १३२ ॥

दूहा - भुज प्रचंड चव च्यार मुष । रत्त वन्न तन तुंग ॥
 अनल कुंड उपज्यौ अनल । आहुवान चतुरंग ॥

॥ छ० २५६ ॥ रू० १३३ ॥

१३० पाठान्तर—चितिय । जिष्ट । जिह । करं । हवै न हव्यहु आवह ।
 संयाम । षंडं । समं । सोभै ॥ (जो *) विशेष है ॥

१३१ पाठान्तर—ईषि । निमाचरं । वरं । ब्रह्मकरम ॥ सं० १३७० की
 पुस्तक मे "ग्यान" शब्द नहीं है ॥

१३२ पाठान्तर—अनलकुंड सज्जि । जग्योपवीत । आह्वान । जाजाने ।
 आवहान । उपज्यौ । चहुवान ॥ पुरातत्त्ववेत्ताओ के स्मरण मे रहै कि प्रायः यह
 कहा जाता है कि अग्निकुलों की कव उत्पत्ति आबू पर हुई उसका कोई पौराणिक
 प्रमाण भी नहीं मिलता । अतएव हम एक यह प्रमाण विदित करते हैं कि
 कार्लिदिका प्रकाश नामक ग्रंथ में पुराणोक्त यह श्लोक लिखा है—

श्लोक—दूषयिष्यन्ति यवना स्सहस्राब्दे गते कलौ ।

तदा रक्षां करिष्यति याज्ञिकाः क्षत्रियर्षभाः ॥

१३३ पाठान्तर—रत । वन्न । बन्न ।

ऋषियों का चाहुवानजी का स्वरूप देख कर उन को चाहुवान कहना । उनको राक्षसों से युद्ध करने की शक्ति देने को आशापूरा देवी का स्मरण करना । देवी का प्रत्यक्ष होकर चाहुवानजी को राक्षसों से युद्ध करने में सहायता देना । राक्षसों का रसातल को जाना । देवी का चाहुवान जी को अपनी कुलदेवी मानने की आज्ञा करना और उनका अपने वंश भर की कुलदेवी मानना स्वीकार करना । देवी का उनको वर देकर पधारना । वशिष्ठ का चाहुवानजी को आशीर्वाद देकर अन्य अनलों का वर्णन करना और दुर्वासा को शाप देकर पठाना ॥

बाधा - उपज्यौ अनल अनूपम रूपं । नहि आकृति अवर नर द्रूपं ॥

ब्रंन अभूत सु उन्नत जिष्टं । वंदन भर कि बद्ध मनु पिष्टं ॥ छं० २५७॥
 स्याम रोम कपोल विसालं । उन्नित कंध छतिय दूमालं ॥
 लाल माल सौभं उर सोभं । मथु प्राकृष्ट दिच्छ कर दोभं ॥ छं० २५८॥
 नयन प्रथुज भ्रकुटी सु करूरं । मुख आकृति बाल हर नूरं ॥
 कवच त्रोन उर त्रान मरीसं । दल आकृति भयानक दीसं ॥ छं० २५९॥
 तोन पूरि सर बद्धि मु कासं । धरिय पांन सरबी रवि रासं ॥
 षेटक पग्न उनंगी धारं । चाहिवान दिष्यो रिष सारं ॥ छं० २६०॥
 चाहि आइ रिषि आइ समंगे । चहुआन कहि सद सुरंगे ॥
 समरी सकति रिषि गिर वामी । दिय माहाय युद्ध कजि तामी ॥ छं० २६१॥
 आई सकति मिघ आरोही । द्वादस भुजा सु आयुद्ध सोही ॥
 पेटक पग्न बरहह पामं । घंटा बान क्रती सिर आसं ॥ छं० २६२॥
 पप्पर सकति शूल मद पात्रं । देपे रूप क्रम क्रम छात्रं ॥
 आसा पूरि कहै रिषि राजं । चाहुवान मंडी क्रत काजं ॥ छं० २६३॥
 चाली सकति सहाई अनललं । छल्ले मूर सबै कसि बल्लं ॥
 सब आए छट्टि रष्वस ठानं । मंड्यौ जुद्ध सबै असमानं ॥ छं० २६४॥

१३४ इस रूपक के छंद २५७ के पाठ में बड़ी गड़बड़ है । एशियाटिक सोसाइटी की छापी हुई पुस्तक में : "उपज्यौ अनल अनूपम रूप । नहि आकृति अवरन रूपं ॥ व्रन अभ्रन सू उन्नत जिष्ट । वंदन भर कि बद्ध मनु पिष्ट" ॥ और सं० १७७० की पुस्तक में "उपज्यौ अनल अनोपम स्तपं । महि आकृति अवरम रूपं । वंन अभून अमु उन्नमा जिष्टं । वंदन भार कि बद्ध मन पिष्टं" और संवत् १७४७ की में "उपज्यौ अनल अनूपम रूपं । नहि आकृति अवरम् स्तूपं । व्रत अभूत अमु उन्नन जिष्टं । वंदन भरा के बद्ध मन पिष्ट" ॥ किन्तु हमारा पाठ कर्नैट टाडा साहब के गुरु बारहट कृष्णमिहजी ने जिम सं० १८५९ की पुस्तक से रासो पढ़ा था उसके अनुसार है ॥ इसमें "द्रूपं" शब्द हमारे पाठकों को अर्थ करते समय परिश्रम देगा जिस संस्कृत शब्द "द्रूप" का यह अपभ्रंश हिन्दी है वह संस्कृत के

बाहै आवधि सकती सारं । धड आवधि पडै धर भारं ॥
 सद्धे धुमरकेत सकतीयं । जंत्रकेन चहुआन सु * हतीयं ॥छं० २६५॥
 अद्ध सु रणस दानव सद्धे । गण रसानल नठ्ठे अद्ध ॥
 देवी आइ अनल्लह पासं । जंपी तथ्य प्रमन्नी तासं ॥छं० २६६॥
 आसापूर कहै मो नामं । पुज्ज पुत्र पौत्र परिनामं ॥
 कुलह गोत्र झुझ थपै नामं । अप्पो रिद्धि अचल्लह तामं ॥छं० २६७॥
 धास्यौ सिर लै कर चहुवानं । ब्रद्धहु बंस अम जम मानं ॥
 जीती अप्य देवी चहुवानं । दिय वर दान गई अममानं ॥छं० २६८॥
 गइ असमान कियौ सद भारी । धुं ! धु ! कार जै ! जया मारी ॥
 है ! है ! करि हं ! हं ! चहुवानं । अनल कुंड उपजे परिमानं ॥छं० २६९॥
 चौ मुण्यौ चौ वेद प्रहारं । असौ मुष देप्यौ अधिकारं ॥
 वेदं स्याम अथर्वन रूपं । रिगु जिजु वेद देव गुन नूपं ॥छं० २७०॥
 चित चमकार चिहं विमि लगिय । पढन ताहि ब्रह्मंड मु जगिय ।
 वानी धुनि मुनि हरपि वसीमं । वर बचिष्ट तहां दई असीसं ॥छं० २७१॥
 तोहि त्रंस होइ कुंडल धारी । जनु कि अर्क राका विस्तारी ।
 थुनि करि सेव देव तिहि पानं । जै जै नप्य जिने चहुवानं ॥छं० २७२॥
 परहृगि वीर वीर नर केकं । तिहि चालुक्क भयौ गुन मेकं ॥
 परिहरि वर पावार ति वारं । क्रोध रूप जाजुल्य निधारं ॥छं० २७३॥
 जाजुल्लति परिहार न दिष्यो । षिजि करि विप्र पौरि तह रण्यौ ॥
 तिन कारन वाचिष्ट रिषीसं । अबुद नाम गिरि नंद जगीसं ॥छं० २७४॥
 ता ऊपर दुरवासा आए । दै सराप वाचिष्ट पठाए ॥
 अब वे दानव दुष्ट सु दापै । तो रण्या चव कुली मु रापै ॥छं० २७५॥
 बंस छत्तीस गनीजै भारी । च्यार कुली कुल तिन अधिकारी ॥
 सब सु जात जोनी मग दिषिय । ए ब्रह्मा अविशेष विसिषिय ॥
 ॥ छं० २७६ ॥ १३४ ॥

अच्छे विद्वानों के पढ़ने में भी उमका बहुधा प्रयोग न होने के कारण बहुत ही कम
 ध्याया होगा और वह वाचस्पत्यवृहद्भिधान और शब्दार्थ चिन्तामणि जैसे बड़े
 कोशों में भी नहीं मिलेगा परन्तु प्रोफेसर बिलसन साहब के कोश में मिलेगा । वे
 इसको चर्चिलग में Strong अर्थात् बलवान अथवा पुष्ट का वाचक लिखते हैं ॥

पाठान्तर — उन्नित । उन्नित । उन्नत । दुसालं । प्राकुष्ट । दिछ । आकृति ।
 बालहर । आकृति । सरि वीर विरासं । उन्नगी । चाहि । बान । गिरवासी ।
 ह । कर्ता । क्रम । मंडी । सहाई । ठानं । आबटि । धुमकेत । सकतिय सहृतिय ।
 । पास । तास । तछ्य । पसनिय । थप्ये । नाम । ताम । संवत् १६४७ और

क्षत्रियों के छत्तीस वंशों की नामावली

कवित्त—रवि ससि जादव वंस । ककुस्थ परमार सदावर ॥
 चाहुवान चालुक । छंद सिलार आभीयर ॥
 दोग मत्त मकवान । गरुअ गोहिल गोहिल पुत ॥
 चापोत्कट परिहार । राव राठौर रोस जुत ॥
 देवरा टांक सैधव अनिग । योतिक प्रतिहार दधिषट् ॥
 कारट्टपाल कोटपाल हुल । हरितट गोर कलाप मट ॥

॥ छं० २७७ ॥ रू० १३५ ॥

हूहा—धन्यपालक निकुंभ वर । राजपाल कविनीस ॥
 काल छुरकै आदि दे । बरने वंस छत्तीस ॥

॥ छं० २७८ ॥ रू० १३६ ॥

संवत् १७७० की मे "धान्यो कर मिर लै चहुवानं" पाठ है । धयो । चाहुवान ।
 ब्रह्म । वंस । मान । चहुवान । अममान । गई । हे है । चहुवानं । उपज्जि । चिहू ।
 पथ । हरपिध्र । सीसं । वशिष्ट । रामा । नप । नरकेकं । तिवारं । पारहारन ।
 तहं । उपर । रथ्य । छत्तीम । गनि । जै । जेती । (मु०) विशेष है ।

१३५-३६ पाठान्तर—यादव । परमार-र । तोवर । चालुक । छिद्र ।
 छंदक । आभीवर । गुरुअ गोह । गही भुत । राठौर । सिधव । अनग । अनंग ।
 योतिक । प्रतिहा । दधीषट । करेटपाल । हुन । हरीनट । गोरक । भाड । जट ॥
 १३५ ॥ ध्यानपालक । ध्यान पालकनि । कुंभ । कविनीम । दे । छत्तीम ॥

कवि चंद के समय मे जो छत्तीस कुल क्षत्रियों के प्रसिद्ध थे उनके नाम उमने
 वर्णन किए हैं अर्थात् रवि = सूर्यवंशी १ ममि = चंद्रवंशी २ यादव = यदुवंशी ३
 ककुस्थ = कछवाहे ४ परमार ५ सदावर = तोवर ६ चौहान ७ चालुक = मोलकी ८
 छंद = गंदल ९ मिलार १० आभीयर ११ दोगमत्त = दाहिमा १२ मकवान १३
 गोहिल १४ गहिलोत १५ चापोत्कट = चावडा १६ परिहार = पडियार १७ राठौर
 १८ देवडा १९ टांक २० सैधव = सिधव २१ अनिग = अनग २२ योतिक २३
 प्रतिहार २४ दधिषट २५ कारट्टपाल = काठी २६ कोटपाल २७ हुल = हुन, हुण
 २८ हरितट = हाडा २९ गोर = गोड ३० कलाप = कलाड, जेठया ३१ मट = मट
 ३२ ध्यानपालक वा ध्यानपालक ३३ निकुंभ ३४ राजपाल ३५ कलछुरकै = काछछर
 ३६ । इनके विषय मे कवि दलपत गमजी अपने जानि निबंध नामक ग्रंथ में लिखते
 हैं कि रत्नकोश नामक संस्कृत ग्रंथ की टीका में लिखा है कि क्षत्रिय कुल का
 आदि पुरुष मनु उमक वंश मे से ये छत्तीस हुए हैं ।

सं० १६४७ और सं० १७७० की पुस्तकों में इन रूपकों के स्थान में रूपक
 १३७ और उसके स्थान में इनको लिखा है अर्थात् उलट पुलट है । हमने उनका

चारों अग्निकुल क्षत्रियों ने वशिष्ठ का यज्ञ निर्विघ्न किया ॥

कवित्त—पढ़न मंत्र रिष जाय । च्यार पित्री उप्पाए ॥

कुचिल दीन परिहार । पौरि ग्ण्डु सन भाए ॥

चतुर वीर चहुवान । च्यार मुष्पी चौवाहं ॥

अष्ट अअ आरिष्ट । देव चारिष्ट मु स्याहं ॥

पंमार वाह धन धन करह । कह्यौ रिष्य परमार धन ॥

चालुक्क वाह चालुक्क दुज । कुमिन कुसन मंडित तन ॥

॥ छं० २७१ ॥ ह० १३७ ॥

अनल कुंड आभंग । उपजि चौहान अनिल थल ॥

सुकर संठि करि वार । धनुष संग्रह्यौ बान बल ॥

तिन रषिस परिवार । धार मुष धरनि नि धट्टिय ॥

षल जुषित्त संमुहे । तिनह सिर भरअन तुट्टिय ॥

बंधान जग्य निर विघन किय । पुहप वृष्टि सुर सीम रजि ॥

रषि मु धरनि षग भुज्ज वर । रिष्ट निवारिय इष्ट भजि ॥

॥ छं० २८० ॥ ह० १३८ ॥

जिन्होंने द्विजों की रक्षा की उनके वंश में पृथ्वीराज हैं ॥

दूहा—तिन रक्षा कीनी सु दुज । तिहि सु वंस प्रथिराज ॥

सो सिरपत पर वादनह । किय रासो जुविराज ॥

॥ छं० २८१ ॥ ह० १३९ ॥

चाहुवानजी के वंश के राजाओं की कथा ॥

चाहुवानजी से माणिकराजजी पहिले तक तेरह पीढ़ी का वर्णन ॥

पद्धरी—ब्रह्मान जग्य उत्पन्न मूर । चहुवान अनल अरि मलन मूर ॥

उत्तंग अंग प्रच्चंड बाह । पहुमीस इंद अरि गिलन राह ॥ छं० २८२ ॥

प्रतिपाल धरनि अंगह सु धम्म । श्रुत मान कीन उत्तंग क्रम्म ॥

रत्तो सु जोग भव भोग रास । पुर अमर नाग नर कित्ति जास ॥ छं० २८३ ॥

क्रम इसलिये ग्रहण नहीं किया है कि रूपक १३८ के छंद २७६ की पहिली तुक का अर्थ उसके पीछे इन रूपकों वा ही होना प्रकाश करता है ॥

१३७—१३८ पाठान्तर—जाय कुलिल । चहुवान । मुषी । मुसाहं । वाह ।

रिषि । पंमार । मंडि । ततन ॥ १३७ ॥ कुंद । चौहान । री । सपरिवार ।

मुष । निषट्टिय । जुषित । निरविघन । भुज्जवर ॥ १३८ ॥

१३९ पाठान्तर—रख्या । तिहि । पृथ्वीराज । पृथिराज । प्रवादनह ॥

१४० पाठान्तर—ब्रह्मान । उत्पन्न । चहुवान । मल । मसूर । उत्तंग ।

पहुबीसु । इंद अरिगिलन । धरनी । अंग । श्रुतमान । उत्तंग । रत्तो । सुजोग ।

ता सुअन सूर सामंतदेव । अरिमंत मत्त मत्ता जु रेव ॥
महदेव सुअन मोहंत तास । सु प्रसन्न ईस सेवंत जास ॥छं० २८४॥
 बर अजर्यासिह सिघह सु राम । नर बीरसिह संग्राम ताम ॥
 सुअ बिंदसूर उदारहार । आसोक श्रोय संकाविडार ॥छं० २८५॥
 सुअ बैरसिघ वैरी विहंड । श्रुव बोरसिघ अरि बीर डंड ॥
अरिमंत सकल कलि कलनचूर । मानिकक राव चहुआन सूर ॥छं० २८६॥

महिसिह जी से धर्मधिराजजी तक का वर्णन

राजन् * सुअन ता सहम मथ्य । महिसिघ सिघ संग्रम मथ्य * ॥
 सुअ चंद्रगुपत सम चंद्ररूप । प्रतापसिघ आरेन दूप ॥छं० २८७॥
 मुन मोह सिघ बर मोह रूप । भूतह भयंक रन रत्त भूत ॥
 सुत सेनराइ वह सेन वंत । संप्रति राइ मुभ तन मंत ॥छं० २८८॥

भास । किति । तामू । अन । सु । अन । माहत । संका । विण्डार । मानिक ।
 राजत । मु । अन । माह । भूत । भयंकर । रन । नूप । तन । पूर । बालन । प्रथम ।
 जग । दुष । पट्ट । मंह । रत । कोडी । किये । चन्यो । प्रमान । मान । थान ।
 चत्यो । मुकजो । मुकमो । निगम । मुक्कयो । निगम । मुक्कयो । जिन । किति ।
 चौसठि । चिन । पायो । जम । विष । जम । कदम । कदम । दानेकमल । युन ।
 स । आनि । उगत । उगत । उतंग । पुकस्या । जरत जाहुजाहु । जाह जाह ।
 इन्द । मं० १७७० और १६४७ मे 'नैर पुर रुद्र उरि हक बजि । मानि । जर्जरी ।
 जज्जरीय । पानि । लगे । डके । मुरूप । मृग । सर्प । श्रप्य । श्रप । रद् । पुज ॥

* * पक्षपातरहित वृद्ध और विद्वान कवि कहते हैं कि यथा अर्थात् छंद २८६ और २८७ के बीच में कितनेक छंद लोप हो गए हैं किन्तु चंद्र कवि ने ता मूल पुरुष श्री चाहुवान जी से लेकर पृथ्वीराजजी तक पीढ़ावली वर्णन की थी जिनको सब ऐतिहासिक ग्रंथ और सर्वमाद्यारण मनुष्य द्विन्दुओं का अन्तिम बादशाह होना प्रकाश करने और मानते हैं और क्वचित् चंद्र का नाम विध्वंस करने वाले यह कहते हैं कि ग्रंथकर्ता ने अपने अज्ञान होने के कारण खडविखट वधावली वर्णन की है । इन दोनों सम्मनियों में से हम पहिली से सम्मन है क्योंकि प्रथम तो चंद्र कवि अपनी वंश परम्परा में इस राजकुल का मुख्य कवि और ख्यात वर्णन करने वाला था और यह कदापि संभव नहीं है कि आज हम जोहान वंश की शुद्ध अथवा अशुद्ध पीढ़ावली जान सकें और हम से सात सौ वर्ष पहिले जो उक्त राजकुल का निज कवि हुआ वह न जानता हो और न वर्णन करे । हमारे चाहुवान वंश की पीढ़ावली जो श्रीमान श्री बूंदी राव राजा जी महोदय ने निश्चय कराया है और जो

सुअ नागहस्त सम नाग राज । अस्थूल नंद आनंद राज ॥

गिर लोहधीर सुत धम्मसार । सुअ वीरसिंघ संकाबिडार ॥छं० २८९॥

सुअ बिबुधसिंघ सम जोगसूर । जस चंद्राय बर अजस दूर ॥

सुत किस्नराज जस किस्न चित । हरहरहराइ नर बुद्धिमंत ॥छं० २९०॥

बालन्न राइ बलि अंग तास । सुअ प्रथव राइ पटुमी प्रहास ॥

तिन अनुज अंग राजत अनेय । कलि अल्प आउ कित्ती अछेय ॥छं० २९१॥

धर्माधिराज रति जोग भोग । षट षुंट पिन्ति षगह मु भोग ॥

एक चाहुवान वंश मात्र की पीढावली हम भी मन् १८७३ मे गिद्ध कर रहे हैं और वह बूंदीवाली मे विशेषांश में मिलती हुई है । उन दोनों के अनुमार श्री चाहुवानजी से पृथ्वीराजजी एक सौ सतत्तरवीं १७७ पीढ़ी में हुए भिद्ध होने हैं । अब यहां सूक्ष्म बुद्धि से विचार कर देखने की बात है कि छंद २८२ मे २८६ तक ५ जो तेरह १३ नाम क्रम मे कवि ने कहे हैं वे उक्त दोनों वंशावलियों मे बराबर मिलते हैं और "राजत मुग्रन ता पत्त मथ्य" का अर्थ इन प्रथम माणिक्यराजजी के विषय में षट नहीं सकता क्योंकि इतना वंश यहां तक बढ़ नहीं सकता । इसके सिवाय जो षाठक चाहुवान वंश की इस परम प्रसिद्ध कथा को मानते होंगे कि तीमरी पीढ़ी में महादेवजी (जिनका उपनाम परभंजनजी भी है) के हाथ से अनजाने प्रमति ऋषि की एक गाय मर गई थी कि जिस पर ऋषि ने शाप दिया था कि "तुमारा वंश नाश हो" तदनन्तर ऋषि को मनाने पर उन्होंने अपराध क्षमा करके कहा कि कितनीक पीढ़ियों तक तो तुम्हारे वंश मे एक ही पुत्र होता रहेगा, फिर वंश बढ़ेगा । इससे भी इस तुक का अर्थ माणिक्यराजजी में नहीं घट सकता ।

तथा उक्त दोनों पीढावलियों को इस रूपक के साथ मिलाने से यह भी ज्ञान होता है कि छंद २८७ मे अर्थात् उसमें कहे महिसिंहजी एक सौ अड़नालीसवीं पीढ़ी में हुए और उन से फिर सब नाम बराबर क्रम मे एक सौ सतत्तरवीं पृथ्वीराजजी तक मिलते है । क्या अब जो चौदहवीं पीढ़ी से एक सौ सैतालीसवीं पीढ़ी तक के बीच के नाम बढ़ भी क्रम से चंद कवि बिलकुल ही नहीं जानता था अथवा क्या वह उनको निगल कर परलोक में जा बैठा है जो कि हमारी वृत्ति सदैव प्रत्येक विषय के अनुकूल अनुमान करने और उसके माधर्म्य को मान्य करने की है इसलिए प्रतिकूल अनुमान ही क्यों करें और वैधर्म्य की ओर क्यों दृष्टि डालें । क्योंकि जो आज विद्वान लोग अन्य बड़े-बड़े प्रसिद्ध ग्रंथों के विषय मे ऐसे ही प्रतिकूल ही अनुमान करने लग जायें और वैधर्म्य का ही आश्रय कर लें तो बड़ा अनर्थ हो जाय । अब हम चौदहवीं पीढ़ी से एक सौ सैतालीसवीं पीढ़ी तक के नाम अपने तथा बूंदी राज्य के प्रोध किए हुए हमारे पाठकों के जानने के लिए यहां लिखते है । पुष्करजी (विजयपालजी) १४ असमंजसजी १५ प्रेमपूरजी १६ भानुराजजी १७ मानसिंहजी

वीसल देव जी का वर्णन ॥

जग दुष्प वीसल नरिंद । बहु पापरत्त द्रव्यान अंध ॥छं० २९२॥
 क्रत अक्रित काम क्रितह सु कीन । जिन असुर घोर षनि द्रव्य लीन ॥
 संमार थागि फुनि द्रव्य काज । उपजाइ मति अजमेर राज ॥छं० २९३॥
 कौडी सु मोल गज कियो एक । लीयो न दिनह फिरि महर नेक ॥
 कामंध अंध मुझ्यौ न काल । हक अहक जोर गिरि इक्क माल ॥छं० २९४॥
 मुझ्यौ न राजनीतह प्रमान । आनीत बंधि नृप थान थान ॥
 मुझ्यौ न धम्म चाल्यौ प्रमान । मुकजौ निगम्म करि आगममान ॥छं० २९५॥
 अबलोह छोह छंडिय सु किति । मुकक्यौ धम्म आधम्म जिति ॥
 दरबार अतिथ दीसै न कोइ । अप्प मुह किति संभरै लोइ ॥छं० २९६॥
 चौसठ्ठि बरस बर राज कीन । पायौ न पुत्र फल सुष्प हीन ॥
 बल अबल चित्त चित्यौ सुकाल । पायौ न मुकृत कछु करन साल ॥छं० २९७॥

१८ हनुमानजी (धम्मपाल) १९ चित्रसेनजी २० शम्भूजी २१ महामेनजी (ऋद्धीश
 जी) २२ मुरथजी २३ रुद्रदत्तजी (कर्णपालजी) २४ हेमरथजी (रोमपालजी) २५
 चित्रांगदजी २६ चद्रसेनजी (चित्ररथजी) २७ बाल्मीकजी (वस्तराजजी) २८
 धृष्टद्रुमनजी (वरुणजी) २९ उत्तमजी ३० मुनीकजी ३१ मुबाहुजी (मोहनजी) ३२
 मुरथजी ३३ भरथजी (भद्रमेनजी) ३४ मन्यकीजी (माय्यकीजी और मरिचकीजी)
 ३५ मन्त्रजितजी (केमरीदेवजी) ३६ विक्रमजी ३७ सहदेवजी (इन को जीतकर
 कुरुवंशी राजा ने दिल्ली ले ली) ३८ वीरदेवजी (भीमसेनजी) ३९ बमुदेवजी ४०
 वामुदेवजी ४१ रणधीरजी ४२ शत्रुघ्नजी ४३ मुमेशजी (शालिवाहनजी) ४४
 कुन्वर्माजी ४५ सुवर्माजी ४६ दिव्यवर्माजी ४७ योवनाश्वजी ४८ हरियश्वजी
 ४९ अजपालजी (अजमेर बमाने वाले) ५० भठदलनजी ५१ अनगराजजी ५२ भीमजी
 ५३ गोगाजी ५४ शुभकरणजी ५५ उदयकरणजी ५६ जगकरणजी ५७ हरीकरणजी
 ५८ कीर्तोगजी ५९ बालकृष्णजी ६० हरिकृष्णजी ६१ रामकृष्णजी ६२ बलदेवजी
 ६३ हरदेवजी ६४ भीमजी ६५ सहदेवजी ६६ रामदेवजी ६७ वमुदेवजी ६८ श्याम-
 देवजी ६९ हरिदामजी ७० महीधरजी ७१ वामदेवजी ७२ श्रीधरजी ७३ गंगाधरजी
 ७४ महादेवजी ७५ शारंगधरजी ७६ मानगिहजी ७७ चक्रधरजी ७८ मन्त्रजितजी
 ७९ हलधरजी ८० महाधनुजी ८१ देवदनजी ८२ दामोदरजी ८३ काशीनाथजी
 ८४ लीलाधरजी ८५ धरणीधरजी ८६ रमणेशजी ८७ भगवतदासजी ८८ कृष्णदास
 जी ८९ शिवदामजी ९० हरिपूर्णजी ९१ देवीदामजी ९२ कर्मचन्द्रजी ९३ रामदासजी
 ९४ महानन्दजी ९५ विष्णुदामजी ९६ महारामजी ९७ रेवादामजी ९८ अमरमिहजी
 ९९ गंगादामजी १०० मानमिहजी १०१ विश्वंभरजी १०२ मयुगदासजी १०३
 द्वारिकादामजी १०४ माघवजी १०५ मुदामजी १०६ वीरभद्रजी १०७ गोपालजी
 १०८ गोविन्ददासजी १०९ माणिक्यराजजी दूसरे (इनके दो पुत्र बड़े हनुमानजी

गति अंत सुमति सो होइ बीर । पाबै सु जन्म जज्जर सरीर ॥
 द्रवि गयो सुमन वीसल नरिंद । उप्पनौ बीर छिति वीप्य कंद ॥छं०२९८॥
 धन मदन सदन भरि सब्ब जन्म । तिह परत उठिठ क्रत्या कदम्म ॥
 ढुंढा दानव की उत्पत्ति और उसका अजमेर के बन में रहना ॥
 क्रत्या कदम्म उर अमुर रज्जि । धर ढुंढ नाम दानव उपज्जि ॥छं०२९९॥
 जगि जोग नयर जुगनीय थान । पुज्जै सु आय उगति विहान ॥
 रथ च्यार त्रक्र उत्तंग वाह । अमि अमिय हृथ्य मुष अग दाह ॥छं०३००॥
 संभरिय धरा धरनीय ठाह । पुक्करचौ नरनि र जाहु जाह ॥
 सिर कोपि रीस धुनि दसन बज्जि । उभरे पगग जनु इन्द्र गज्जि ॥छं०३०१॥
 प्राहार पाय धुकि धरनि धुज्जि । पुर नयररुद्र उर हृक्कि वज्जि ॥
 कंपी सु भूमि नव पंड मान । जज्जगिय नाव ज्यौं भाय पान ॥छं०३०२॥

और छोटे सुग्रीवजी जिन में पाठवी हनुमानजी नामक वा राज्य अपनी प्रसन्नता में सुग्रीवजी को देकर आप एतना जीत वहा के राजा हुए कि जिन के वंश में इकतीस ३१ प्रकार के पूर्विये चौहान हुए) ११० सुग्रीवजी (माभर के राजा हुए) १११ अगदजी ११२ केगरीजी ११३ जयंतजी ११४ जगदीशजी ११५ जयरामजी ११६ विजयराम जी ११७ कृष्णजी ११८ जीतयुद्धजी ११९ गोवर्द्धनजी १२० मोहनजी १२१ गिरिधरजी १२२ उदयगामजी (उद्यमजी) १२३ भारथजी १२४ अजुनजी १२५ शत्रुजीनजी १२६ मोमदत्तजी १२७ दुखनजी १२८ भीमजी १२९ लक्ष्मणजी १३० परशुरामजी १३१ रघुरामजी (मागोठ के राजा से मात दिन लड़कर सांभर छोड़ बुरहानपुर अपने मुमरे के यहाँ भाग गए और वही मरे) १३२ समरसिंहजी १३३ माणिक्यराजजी तीमरे (मांभर दन्ही ने पीछे विजय कर लिया १३४ महकर्मजी (दामोदरजी) १३५ रामचंद्रजी १३६ मगामसिंहजी १३७ शिवदत्तजी (श्यामदत्तजी) १३८ भोगादत्तजी १३९ शिवदत्तजी १४० रुद्रदत्तजी १४१ ईश्वरजी १४२ उमादत्तजी १४३ चतुरजी १४४ गोमेदवरजी पहिले (पहिले के दो लड़के भरथजी १ और उरथजी २ उनसे से भरथजी पाठवी के वंश में पृथ्वीराजजी हुए और उरथजी के वंश में बूंदी और कोटा आदि के हाडा चौहान हुए हैं) १४५ भरथजी १४६ युद्धेष्टजी ॥

इसके छन्द २२८ की पहिली तुक के पहिले पाद "मुत मोहसिंह बर मोह रूप ।" में कवि का गूढ़ आशय यह समझना आवश्यक है कि वद उसमें तीन नाम वर्णन करता है मोहसिंह (मिहदेवजी) मिहवर और मोहनरूप कि जिनके सिध शब्द का अर्थ करने के समय मोह शब्द के साथ और बर के साथ दोबार लगाने में पृथक दो नाम सिद्ध हो जाते हैं अतएव हमने सिध शब्द के नीचे दो लकीरे करी हैं । और इसी तरह छन्द २९१ की पहिली तुक के दूसरे पाद में "प्रथम" शब्द से

लगौ न पलक द्रग देवचच्छि । डक्कै डकार द्रगपाल गच्छि ॥
 दिष्पी सरूप दानव उतंग । बैराट रूप हरि घन्यौ अंग ॥छं० ३०३॥
 पंषीरू अग्न नर सप्त भाजि । आघात सद् दानव सु गाजि ॥
 चित चित चित जुगिनि प्रधान । पुज्जै सु आनिउगति विहान ॥छं० ३०४॥
 चहुआन रूप दानव प्रमान । भज्या सु पुत्र आबू सथान ॥

॥ छं० ३० ॥ रू० १४० ॥

दूहा— सो दानव अजमेर बन । रहि तह दिन घन अंत ॥

सून्य दिसान जीव कौ । थिर थावर द्रिगमंत ॥

॥ छं० ३०६ ॥ रू० १४१ ॥

मुरिल्ल संभरि सोर नरिदह मभरि । पथ प्रजा पसरै रन जंगर ॥

रम्य अरम्य करी मु धरन्निय । रहें मठ कोट अफोट करन्निय ॥

॥ छं० ३०७ ॥ रू० १४२ ॥

सारंगदेवजी की राणी गौरीजी का अनलगर्भ सहित रणथंभ पधारना

दूहा गौरां चलि रनथंभ गिरि । सारंग सच्चौ राह ॥

प्रजा पुलंदी महिम धरि । ग्रम्भ अनल गौराह ॥

॥ छं० ३०८ ॥ रू० १४३ ॥

पृथ्वीराज नाम का नि सन्देह ग्रहण षट् भाषा मे व्युत्पन्न विद्वान कर सकते । तदनन्तर वीसलदेवजी के जो वृत्त चद ने जैमे के तैमे उल्हापित होकर लिखे हैं—उनको मनन करने मे विद्वान पाठक मद्रज ही मे यह अनुमान कर सकते हैं कि यद्यपि चद उनके कुल का वंशपरंपरा मे राज-कवि था पर वह नि मदेह बडा ही स्पष्ट वक्ता और पक्षपातरहित पुरुष था, क्योंकि आज इस उन्नीसवीं शताब्दी मे भी जब कि स्वतंत्रता और सभ्यता का सूर्य पूर्ण प्रकाशित हो रहा है तब भी कोई राज कवि ऐसा स्पष्ट वक्ता और पक्षपात रहित अपने यत्नमान की दुर्गंतियों की उमकी भावी सतानो के निक्षेपायं निरुद्ध होकर प्रकाश करने वाला प्राय किसी की दृष्टि मे न आया होगा । इस के साथ भाषाओ के शोध करने वाले विद्वानो को चद का वह वाक्यखंड “हक अहक” भी ध्यान देखर समझने योग्य है कि “हक अथवा “हक्क” जो हिंदी भाषा मे प्रयोग होता है वह अरबी तथा फारसी नहीं है किन्तु संस्कृत स्वक शब्द मे है और “अहक” शब्द स्वतः इस बात की स्पष्ट साक्षी देना है । इसी रूपक के छन्द ९९९ मे दूहा राक्षस की उत्पत्ति चद कवि वर्णन करना है ॥

१४१ पाठान्तर-- रहितह । रहतह । दिमानन । जीवक्यै । द्रिग । मंत ॥

१४२ पाठान्तर--पसरी । अबन्निय । रहे ॥

१४३-१४४ पाठान्तर—सारंग । ग्रम्भ । गौराम । शुभ । रिनथंभ । राजदव ।

पति ॥

अनल ग्रम्भ धरि गौरि सिमु । गय रनथंभ दिसान ॥
राजद्व राबत पती । मातुल पष चहुवान ॥

॥ छं० ३०९ ॥ रू० १४४ ॥

आना राजा का जन्म होना और उनका बालपन ॥

भुजंगी -- धरै गौर जन्नंम आनल्ल राजं । बसे देव गामं दुनी छत्र लाजं ॥

नवं वृत्त नित्तं नवं वृत्त सिष्यै । नरं तार तारं नवं भृत्त भिष्यै ॥ छं० ३१० ॥

चरं संभरी बात पुच्छंत मित्तं । धरै ध्यान दिष्यै अजमेर चित्तं ॥

कला सब्ब सिष्यिं महा मल्लवीरं । गिनै मग ओमं पढे मंत्र धीरं ॥ छं० ३११ ॥

दिनं सीह अब्बीह आपेट षिल्लै । ननं नेह निद्रा सुरं सिद्ध मिल्लै ॥

करं पाइकं बिद्ध साइक्क नष्यै । भर भै अभैनं मुयं मव्व रष्यै ॥ छं० ३१२ ॥

वधे काम कामं अलीहो न भष्यै । सुभै राजसं तामसं सत्त चष्यै ॥

रमै जम्म सेना ग्रहे जम्म भारी । सुई संभरी वात दिष्यै कगरी ॥ छं० ३१३ ॥

कहै काल कालं अकालंति बंधै । इतं जोर मा वित्त सौं चित्त संधै ॥

दुअं बाह परचंड दुआं सख्यं । इसो दिष्यै राज आना अनूपं ॥

॥ छं० ३१४ ॥ रू० १४५ ॥

इन रूपको के पढ़ने के पहिले हमारे पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि बीसलदेवजी ने अपने लड़के सारंग देव जी को अपने हाथ में मार डाला था कि जिम के पीछे वे आप भी मांप के काटने से मर गये और अजमेर अर्थात् संभर का राज्य बिना राजा के रह गया और अजमेर के वन में दुंडा नामक दानव रहने लगा किंतु बीसलदेवजी के लड़के सारंगदेवजी की रानी गौरी के गर्भ था । रानी जी राज्य की यह दशा देखकर अपने पितः रणथंभ के राजा के यहां चली गई और वहां सारंगदेवजी के अनल अर्थात् आना राजा उत्पन्न हुए । यह सब का आगे के रूपकों में जब आना राजा की माता से अपने पिता का नाम और सब वृत्तान्त पूछेगे तब कवि माता और पुत्र के संवाद में बीसलदेवजी की कथा सविस्तार वर्णन करेगा । इन रूपकों में अभी गौरी रानीजी का मगर्भा रणथंभ जाना ही कवि ने वर्णन किया है ॥

१४५ पाठान्तर-- आनल । वृत्त । नित्तं । वृत्त । भृत्त । बान । पुच्छंत । सेत । चित्तं । सब । मिषिं । मिषं । महामल्ल । गिनी मंगि आमं । ओमं । अवीह । सिद्धं । पायकं । साइकं । नष्यै । भरंभे । अभैन सोई सब्ब रष्यै । भरं भेअ भैनं सोई सब्ब रष्यै । भरं भेअ भैनं सोयं सब्ब रष्यै । वधे । अली । होन । इतं । वषै । जम । ग्रहे । जम । सोई । साई । सोइ । संभरि । तिबंधै । जो रामावित्त । सौं । दुर्गा । दिषियै । अनूप ॥

इस रूपक से कवि ने आना राजा के जन्मादि की कथा वर्णन करनी प्रारंभ की है ॥

कवित्त - अति बल बंड प्रचंड । हिंड आषेटक षिल्लै ॥
हिरन रोज वाराह । बंधि बागुर वर मिल्लै ॥
वन परवत्त झिरना । निवान राइ * राजन संग हिंडै ॥
राग रंग भाषा * कवित्त । दिव्य वानी चित्त मंडै ॥
हय हथिथ देय संकै न मन । षग्ग मग्ग पूनी वहै ॥
चहुआन वंस अवतंस इम । रँग अनेक आना रहै ॥

॥ छं० ३१५ ॥ रू० १४६ ॥

आना का बालापन व्यतीत होना और वीरत्व को प्राप्त हो
माता से पूछना

डूहा - तन मंडी महि अप्पनी । छंडी वालक बुद्धि ॥
रोम रम्यौ अरि अंग में । तब पुछि मातह सुद्धि ॥

॥ छं० ३१६ ॥ रू० १४७ ॥

आना की माता का उसको सर तर और अषषर
विद्या का उपदेश करना ॥

गाहा - सर तर अषषर विद्या । साविद्या अन्य सारसी नथ्यी ॥
सो आना अन भंगं । मंत्रनं प्रिय यो सष्वि ॥

॥ छं० ३१७ ॥ रू० १४८ ॥

जा सिसु वीरं पतनी । वीरं होइ वीर भज्जायं ॥
नवं तीन वत्त तरंगं । मा माल वीरया पुत्तं ॥

॥ छं० ३१८ ॥ रू० १४९ ॥

आना का माता से पूछना कि मैं किस वंश में उत्पन्न हुआ हूँ

डूहा - वीर पुन मानुल सुमति । गवरि सपन्नो जाइ ॥
को किहि बंमहि ऊगज्यौ । तूं मुज्ज जंपहि माइ ॥

॥ छं० ३१९ ॥ रू० १५० ॥

१४६ पाठान्तर-गड । अंग । हिंडै । कवित्त । मपे । रग । गड * भाषा * विशेष हैं ॥

१४७ पाठान्तर - मत । मही । बुधि । पुछिय ।

१४८ पाठान्तर-अरकर । मंत्रनं । अनभंग । माने ॥ १४९ ॥ वीर । भजाई ।
नवनी नवत तरंगं । नव तीन वत्त तरंगं । नवनी नव तत्त रंगं ॥ यह तीन प्रकार
के पदच्छेद कोई कोई कवि कहते हैं ॥

१५० पाठान्तर-गुनि । मंपत्री । जाई । जाई । किहि । ऊपनी । माइ माइ ॥

गौरी माता का कहना कि यह बात न पूछो उसके
कहते मुझे भय और करुणा होती है

दूहा -- गौरि मात कहै पुत्र सौं । पुत्र न पुव्वछहु बत्त ॥
जिहि भय जल लोचन भरहि । बर पूछन पर तत्त ॥

॥ छं० ३२० ॥ रू० १५१ ॥

ग्राना का माता से अपने वंश की कथा हठ करके पूछना

पद्धरी—उच्चयी मात सों पुत्र सच्चि । जानों न वंस मो पिता वच्चि ॥

मो तात नाम बंदो न लेहि । [नन करों श्राद्ध कवहू न गेह ॥ छं० ३२१ ॥

अप्पी न अंब अंजुलिय तात । उप्पनी वेद हं किन सु गात ॥

के नाम लेय मातुलह वंस । पित बैर लेउं बर वीर हंस ॥ छं० ३२२ ॥

छंडों कि प्राण मुक्कूं व देह । संसार भार अप्पीं कि छेह ॥

आना नरिंद यह कहिय बात । सुनि श्रवण अप्प घर परिय मात ॥

॥ छं० ३२३ ॥ रू० १५२ ॥

ग्राना की माता का उसे कथा प्रगट न करने को

कहना और हँक करके संक्षेप में कहना

दूहा पुअ प्रगट्ट न कीजिये । मो तिय इय अंदेह ॥

आदि हुते दानव प्रबल । धर धुंमी असुरेह ॥

॥ छं० ३२४ ॥ रू० १५३ ॥

भिरन कहत दानव सरिस । मानव मनुषी देह ॥

मो गंधारि निहारि मुष । पुत विलासनि गेह ॥

॥ छं० ३२५ ॥ रू० १५४ ॥

अरिल्ल -- इह मातुल बंस प्रधानह मान । भये दम पुत्र सु मानिक थान ॥

विचारि करघी तहा संभरि ग्राम । वस्यो अजमेर [सुमंत विश्राप ॥

॥ छं० ३२६ ॥ रू० १५५ ॥

अन्य उपलक्ष्यों के द्वारा ग्राना का संभरि की पूर्व कथा संभारना

कवित्त—धर मुक्किवलि राय । मात लभ्यौ न कित्त रिस ॥

धर मुक्किय सुअ पंड । सुष्प मुक्यौ सु दुष्प बसि ॥

१५१ पाठान्तर—गौरी । सी । पुन । पुछहु । जिन । भर्हि । पूछत । परमत ।

१५२ पाठान्तर—उच्चयी । उचरघी । रूच्च । जानी । मत्र । वच्च । लेहि ।
करयी । सु । वेदहु । किनसु । कै । लेइ । लैऊं । लेऊ । छंडो । कै प्राणं । मुक्की ।
ब अछेह । आनां । इह । इम । कहीय । अप । बरिय ॥

१५३-५५ पाठान्तर—पुत्र । पुत । प्रगठ । कीजीइ । जिय । अंदेस । हुंते ।
असुरेस ॥ १५३ ॥ विलासन । विलास । न ॥ १५४ ॥ प्रधानह । मान । मानिक ।
पान । गम । सुमंत्र । विश्राम ॥ १५५ ॥

धर मुक्किय श्रीराम । सिया षोड्य बल गोड्य ॥
 धर मुक्की नल राय । मिरहि कालंकित ज्योड्य ॥
 धर मुक्कि वीर हर चंद नृप । नीच घरह घट जल भरयो ॥
 ढंकन सु इला नृप जानियै । नृप ढंकन इलचर कयो ॥

॥ छं० ३२७ ॥ रू० १५६ ॥

नृप ढंकन इल होइ । इलह ढंकन सु राज भर ॥
 षह ढंकन वर देव । देव ढंकन वर अंबर ॥
 अपजस ढंकन किति । किति ढंकन जस धारिय ॥
 औगुन ढंकन विद्य । सुगुन विद्या उच्चारिय ॥
 ढंकनह काल वर धंमको । धंम काल ढंकन करिय ॥
 मावति गुरु ढंकै जु सिसु । सिसु ढंकन पित उच्चरिय ॥

॥ छं० ३२८ ॥ रू० १५७ ॥

अरिल्ल -इहि विधि आनल वत्त उचारिय । पुब्ब कथा संभरि संभारिय ॥
 किहि विधि रापस ढुंढ उपन्ना । मारंगदे कैसे जुद्ध किन्ना ॥

॥ छं० ३२९ ॥ रू० १५८ ॥

आना का मात्ता से पूछना कि नर अर्थात् वीसलदेव दानव कैसे हुआ
 दूहा—एक वन तुम सम कहौ । मात कथा समझाई ॥
 नर किहि विधि दानव भयो । इह अचिरज मो आइ ॥

॥ छं० ३३० ॥ रू० १५९ ॥

दूहा—जो मोसों सांच न कहौ । तौ हौ छंडों देह ।
 इह अप्पनि जिय जानि जहु । नव निहचे निज अहेह ॥

॥ छं० ३३१ ॥ रू० १६० ॥

गाहा -कथि मा कांनन कथयं । जो मो ऊपर पुत्र हितायं ॥
 जीवन वृथा परंती । आना नह आन उपायं ॥

॥ छं० ३३२ ॥ रू० १६१ ॥

१५६-१५७ पाठान्तर—वल । राइ । लिन्यो । गिम । मुक्कीष श्री । मुष ।
 दुप । मुक्कीय । सीया । पोड्य । गोड्य । मुक्किय । सिरां । मिरह । कालंक । तज्यो ।
 जोड्य । मुंकि । घरहि । भयो । इल । भूमि । इल वर । कयो । अप । जस । किति ।
 किति । धारीय । औगुन । सुगुन । उच्चारिय । को । मा । विन ॥ १५७ ॥ वत्त ।
 उच्चारिय । किहि । अपत्ती । कीनो ॥

१५८-१५९ पाठान्तर -वन । सों । समन्नाय । अचरिज ॥ १५९ ॥ जो ।
 सौ । ढूं । जानियो । नव निहचै नि मदेह ॥

१६१ पाठान्तर-१६४७ में ॥ कषि कथावत्त कथियं । जो उपर पुत हितायं ॥

आना की मा का कहना कि दानव की कथा न सुन चित्त भंग होगा

दूहा -पुत्र नि मुनि दानव कथा । श्रवन सुनत होइ भंग ॥

इह अरिष्ट अंग उप्पजै । पित परिपिता प्रसंग ॥

॥ छं० ३३३ ॥ रू० १६२ ॥

आना का उत्तर दे कहना कि ऐसे मुझे क्यों डराती है

मुरिल -अमी कहि मो कहु डरपावहु । मेरे कछु इह दाय न आवहु ॥

रामाइन भारथ की बाना । मो हौ सबै सुनत हौ माता ॥

॥ छं० ३३४ ॥ रू० १६३ ॥

आना की मा का कहना कि जिस से कार्य सिद्ध न हो
उसका कहना व्यर्थ है

कवित्त -जिहि पुर गवन न होइ । ताहि कोइ पंथ न बुझै ॥

जिहां दिष्ट नह भिदै । तहां कैमे करि सुझै ॥

जो श्रवन न नह सुनी । मु* कही कैमी परि कहिये ॥

जाकै देह न होइ । ताहि कैमे कै गहिये ॥

इह कथा असम अद्भूत अनि । हठ निग्रह सुन जिन करे ॥

सुनत ही श्रवन दुष उप्पजै । सिद्ध न कोइ करिज सरै ॥

॥ छं० ३३५ ॥ रू० १६४ ॥

आना का प्रत्युत्तर देना कि आगे कितने नर, ऋषि और

राइ दानव हुए हैं कथा सुनने से क्या होता है

कवित्त मात सुन हु मुझ बात । कथा सुनतें कहा लगै ॥

केते नर रिष राइ । भए सुर दानव अगै ॥

तिन की कथा प्रसंग । सुनहि सब को समुझावहि ॥

तिन को जुद्ध विरुद्ध । लोक वेदन में गावहि ॥

इह जानि मात श्रवननि सुनी । कहतें कछु लगै नहै ॥

जेजे निर्मान विधि निर्म्मए । तेते निहचै निब्बहै ॥

॥ छं० ३३६ ॥ रू० १६५ ॥

१६२ पाठान्तर—पुत्रहि । होय । अग । उप्पज्यो । उपज्यो ॥

१६३ पाठान्तर—कू । क्यू । पावहि । मेरे । कछुई । आवहि । बातं । हं ।
हैं । हों । हो मातं ॥

१६४ पाठान्तर—गमन । तासु । को । बूजै । जहा । कैसै । सूझै । अवनहु ।
गहु । न । कहु । कहीर । कैसै । गहिये । उपजै । कोय ॥ सु * विशेष है ॥

१६५ पाठान्तर—बात । सुनतें । सुनि । कोइ । वेदनि । जानि । कहतें । कहे ।
तें । जै जै । नूमान । नूमए । निर्मए । निरवहै ॥

आना की माता का बीसलदेवजी की सविस्तार कथा कहना ॥

बीसलदेवजी का जन्म होना

मुरिल - पुत्र सुनहु इह बत्त पुरानी । कहतै होइ गद गद बानी ॥
अनल कुंड आवू रिषि कीनी । राज उपाइ राज सिर दीनी ॥

॥ छं० ३३७ ॥ रू० १६६ ॥

बूहा - ताके कुल तै उप्पनौ । महाराज धंमाधि ॥
ताके बीसल देव नृप । सबै राज आराधि ॥

॥ छं० ३३८ ॥ रू० १६७ ॥

बीसल देवजी का पाठ बँठना

कवित्त - आठ सैं रु इक ईस । बैठि बीसल सु पाट ब्रष ॥
सुकुवार प्रतिपदा । मास वैसाष सेत पष ॥

१६६ पाठान्तर - वत । पुरानी । गदतै । कहे । ते । वांनी । रिष । ॥ १६६
तैं । ऊपनौ । धंमाधि । ताकै । नृप ॥

१६७ पाठान्तर - बसल । पाठ । वर । प्रतिपादा । प्रतिपदी । मारै । उचारै ।
उच्चरै । अंगबर । धम । नरै ॥

१६८ हमारे पाठकों को भले प्रकार ज्ञात है कि कुछ दिनों से कोई कोई विद्वान
इस ग्रन्थ को आदि से अंत पर्यंत जाली बना हुआ अनुमान धरते हैं और जितना
तर्क वे अपने अनुमान को सिद्ध करने को लाते हैं उनमें सब से बड़ा तर्क कि जिम
पर दूसरे तर्कों का भी सर्वरीत्या आधार है वह यह है कि इस ग्रंथ में लिखे हुए संवत्
संप्रति शोध हुए और मुसलमानी तवारीखों में लिखे हुए संवत्तों से नहीं मिलते ।
अनएव इस संवत् विषयक झगड़े का प्रारंभ इस रूपक १६८ और छन्द ३३९ से
समझना चाहिये, क्योंकि रासो के जिनने छन्दों में संवत् मिति कहे गए हैं उनमें मे
प्रथम छन्द यही है । इससे हमको विदित होता है कि संवत् ८२१ वैशाख सुदी १
शुक्रवार को बीसलदेवजी राज-गद्दी पर बिराजे, किन्तु इसी आदि पर्व में इस रूपक
से थोड़े ही और आगे बढ़कर हम को बीसलदेवजी के पट्टन विजय करने के संवत्
सूचन करने वाले नीचे लिखे रूपक मिलेंगे —

(संवत् १८५९ की पुस्तक में)

बूहा—सो संवत् नव सत अद्ध । वरम तीम छह अगग ॥

पुत्र पट्टन बीसल नृपति । राजत मयलह जगग ॥

कवित्त—संवत् नव सत अद्ध । वरस दम * तीम सस अगग ॥

पुत्र प्रविष्ट बीसल नरिद । राण्यव मयल जगग ॥

आये बंस छतीस । विप्र बंदी जन सारे ॥
दियौ छत्र सिर तिलक । वेद मंत्रह उच्चारै ॥

(सवत १७७० की पुस्तक मे)

दोहा—मो संवत् नव मत्त अथ । बरम तीम छत्र अगि ॥
पुर पट्टन वीमल नृपति । राजत सयलह जगि ॥
कवित्त—सर संवत् नव मत्त । बरम दम * पच सत्त अग ॥
पुर प्रविष्ट वीमाल । नृपति राजत समल जग ॥

(गुजरात देश की पुस्तक मे)

दोहा—सो संवत् नव मत्त अधिक । वर्ष तीम छह अग ॥
पुर प्रतिष्ठ विशाल नृपति । राजत सकले जग ॥

जितनी पुस्तकें हम इस टिप्पण के लिखने समय देख सके उन सब में ऊपर लिखे पाठ पाए अर्थात् किसी में हमारी स० १८१९ की पुस्तक का पाठ मिलता है तो किसी में संवत् १९०० वाली का । शोक की बात है कि हमारी १६३१ तथा १६३२ वाली पुस्तक में तो यह पर्व ही नहीं है और संवत् १६८७ वाली में यह पृष्ठ नहीं है कि जिसमें इन छन्दों का होना संभव है । यह तो जानने में ही है कि पिछले रूपक १८० में चंद कह आया है कि 'चौमट्टि बरम बर राज कीन' चौमठ बरम बीसलदेवजी ने राज्य किया । अब विद्वानों के विचार देखने जैसी बात है कि इस रूपक के संवत् को इसी प्रकरण के दूसरे रूपको में कहे सबतो से मिलाने से एक सौ वर्ष का फरक पडता है और जो ९१ वर्ष का एकमा अंर रामो में लिखे सब संवत्तों को संप्रति शोध से मिलाने और जो पर पने हमने पृथ्वीराजजी के शोध किये है उनमें पडता है वह इस में मिवाय है । जगन का एक यह सर्वम धरण नियम है और उसका भार सब पक्षपातरहित विद्वानों पर है कि प्रत्येक समय के विद्यमान बड़े-बड़े विद्वान सब परम पद-प्राप्त ग्रन्थियों के ऊपर जो कोई व्यर्थ आक्षेप करे उसको खण्डन करते छिन्न-भिन्न कर दे, क्योंकि यदि यह भार विद्वानों पर स्वन सिद्ध न रहा होगा तो सब कीट क्रिकिट सब अमून्य ग्रन्थों को काट कर

* हिन्दी भाषा के ऐसे काव्यों में चंद जैसे महाकवियों की गूढ बातों को खोलने की कुजियों में से हम एक वा पहा प्रकाश करते हैं कि दश दम और दसि दमि शब्दों का अर्थ, जहाँ वे कुछ संख्या प्रकाश करने को प्रयुक्त हुए हो वहाँ सूक्ष्मता रखते हैं, अर्थात् दश अथवा दम=१० का वाचक और दसि अथवा दमि=शून्य० अर्थात् केवल दहाई का वाचक होता है और जहाँ लेखक के दोष से इन शब्दों के लिखने में गड़बड़ हो जाती है वहाँ संख्या में भी गड़बड़ पड जाती है इस के उदाहरण इस महाकाव्य में यहाँ से लेकर अनेक स्थलों में आवेंगे ॥

आनंद अगवर इन्द्र सम । धंम नंद जस उद्धरै ॥

अजमेर नय / अरि जेर करि । विमल राज बीसल करै ॥

॥ छं० ३३९ ॥ रू० १६८ ॥

खा जाय और बड़े-बड़े कवियों के नामों पर पोता फेर दें । अतएव ऐसी जिम्मेदारी को शुद्ध अन्तःकरण से समझने वाला कोई विद्वान क्या यह कं गा कि भिन्न-भिन्न पुस्तकों में यह भिन्न-भिन्न अशुद्ध पाठ चंद कवि जैसा महाकवि बीसलदेवजी की तरह दानव होकर लिख गया है ? क्या इन भूलों का अपरधी चंद है ? नहीं-नहीं कभी नहीं । हम क्या एक छोटा सा बालक भी कह सकता है कि यह सब भूलें अयोग्य लेखक और कवियों ने जान कर अथवा अनजाने की ? अब हमारी सम्मति इस विषय में चंद की शैली और ख्यातियों की पुस्तकों में लिखें सं० ९३१ को देखते हुए ऐसी है कि यहां ऐसा पाठ था कि "नो सें अरु इकनीम" और हमारे अनुमान की पट्टन-विजय करने के संवत वाले रूपक पुष्टि करते हैं । देखो —

बीसलदेवजी का पाठ बैठना	९३१ वर्ष
उनका राज्य करना जोड़ो	६४ वर्ष
रामो के संवतों और विक्रम में जो संबंध एकसा अन्तर है वह जोड़ो—					९१ वर्ष
					विक्रमी मवत १०८६

रामो के रूपकों के जो मूल पाठ अशुद्ध हैं उनको अभी हम जैय लिखित पुस्तकों में है वैसे ही रक्वेंगे क्योंकि जब तक सब विद्वान एक मन न हो जाय तब तक उनको हम पुगनत्र विद्या के नियमों के अनुसार बदल नहीं सकते हैं । इसके अतिरिक्त हम पुरातत्त्ववेत्ताओं को चेन कराने हैं कि फीरोजशाह की लाट पर की प्रशस्तियों को अब एक बार प्रथम बीसलदेवजी के और पृथ्वीराजजी के चरित्रों को भले प्रकार अंत्यान्तर्गों में पढ़कर उन आशयों के महारों से फिर विचारें तो उनको मालूम हो सकेगा कि पहिली प्रशस्ति नाममें का नीचे का लिखा अनुवाद है उसको बीसलदेवजी की नहीं समझना चाहिये किन्तु पृथ्वीराजजी की समझना उचित है और केवल यही विशेष समझना होगा कि बीसलदेवजी के उपलक्ष का संबंध उममें इतना ही है कि जिस मिति को वह प्रशस्ति निर्माण हुई है वह मिति बीसलदेवजी के पाठ बैठने की है अर्थात् वैशाख सुदी १ और पृथ्वीराजजी को बीसलदेवजी का अवतार हीना लोग जानते हैं अतएव इन प्रशस्तियों के लिखने वालों ने अपने उम गूढ़ भाव को प्रकाश करने में उन दोनों का मादृश्य दिखाया है कि त्रिमसे निर्णय करने में यह झगड़ा पड़ जाता है कि अमुक प्रशस्ति पृथ्वीराजजी की है अथवा बीसलदेवजी की । हमारे प्याम इन प्रशस्तियों संबंधी सब संज्ञ प्रस्तुत नहीं हैं और न इतना अवकाश है, नहीं सो हम ही परिश्रम करके कुछ विशेष मारांश प्रकाश करते । इसके अतिरिक्त जो सं० १२३० जैसी प्रशस्तियों को बीसलदेवजी की मानें तो फिर पृथ्वीराजजी को

बीसलदेवजी का अंत समय पट्टन विजय करने को छत्र धारण करना
द्रुहा - बर पट्टन अट्टन अमित । समित वेद फुनि राज ॥
समय अंत बीसल मिरह । धरचौ छत्र सम साज ॥

॥ छं० ३४० ॥ रू० १६९ ॥

पद्धरी - मिर धारि छत्र बीसल नरिद । आसनह मिष बर वरन इंद्र ॥
भूदेव मंडि वेदी बिसाल । रम पंच मेधि मेलै ति काल ॥ छं० ३४१ ॥
बर बढी ज्वाल खंडन त्रिभाग । जमि रहे जमल पुट पलति लाग ॥
मष समुष दिष्य परसपर बैन । तिनपुटह बीच तन धूप अन ॥ छं० ३४२ ॥
जानीत वेद मुख रहै मौन । मुभ समय अमुभ उच्चार कौन ॥
संपूर वेद किन्नो भिषेक । दुज दइय वदि आसिष असेष ॥ छं० ३४३ ॥
विधि अन राज दिय मु लप माल । जै जया सबद बीसल मुआल ॥
॥ छं० ३४४ ॥ रू० १७० ॥

बीसलदेवजी पाठ बंठकर कैसे राज करते थे

द्रुहा -- लय पाठ बीसल नृपति । विकल इच्छ घन मार ॥
पंडन त्रिय दंडन करै । विन अपराध अतार ॥

॥ छं० ३४५ ॥ रू० १७१ ॥

तेरहवें शतक में मानना पड़ेगा, उस दशा में भी पृथ्वीराजजी विजोड की ओर आठ
की प्रशक्तियों के अनुसार गवत गमरमीजी के समकालीन होंगे और मुसलमानी
तवारिखों के मन झूठे ठहर कर मप्रति प्रसून हुए नरक के अनुसार मुसलमानी तारीख
जाली मिद्ध होगी ॥

OM

In the year 1230, on the first day of the bright half of the
month Vaishakh (a monument) of the Fortunate - Visal - Deva
son of - the - Fortunate - Amilla - Deva - King - of - Sacumbhari,
Popular Ed. of the Asiatic Researches, page 315

पाठान्तर - पाठ । बर । वर । प्रतिपादा । प्रतीपद्दी । छत्तीम । मारै । दीयो ।
उच्चारै । नैर ।

१६६ पाठान्तर—पुनि । समै । मरह । घयो । जास ॥

१७० पाठान्तर—मंडि । छत्रधारि । वंवरन । इंद्र । मधि । मेले । मले ।
मेलिय । वडिय । वटी । दिषि । बेन । पुट । हवी । चतन । अन । रहे । मले मौन ।
शुभ । अशुभ । कौन कीनो । बंध । बंधि । एन । शह । मूवाल ॥

१७१ यह रूपक संवत् १७७० और १६७० की पुस्तकों में तो नहीं है किंतु सं०
१८५९ तथा सोसाइटी की छपी हुई पुस्तकों में है जब तक कि इससे भी बहुत पुरानी
पुस्तकों में यह न मिले तब तक उससे अपक संज्ञा हम नहीं दे सकते । यहां यह भी

कवित्त—इसी बीर बीसल्ल । नरिद अजमेर नैर पर ॥
 रचि रचना पुर दिव्य । मनो विसक्रम कीय कर ॥
 अधम धम उप्परें । क्रम दुक्कित मन इच्छै ॥
 हक्क द्रव्य संग्रहै । विना हक लोभन वंछै ॥
 चव बरन सरन चहुआन कै । वंस छतिस सेवत ही ॥
 बीसल नरिद धंमाधिधरि । देव कला देवत ही ॥

॥ छं० ३४६ ॥ रू० १७२ ॥

बीसलदेवजी का अपने पुत्र सारंगदेवजी को उपदेश करके सांभर भेजना
 कि जो अपनी धा-बंन के पति के विनाश से दुचित हो गए थे

कवित्त—पट रागिनि परिहार । प्रम्भ सारंग उपन्नो ॥
 पुत्र होत भइ मृत्य । बाल वानिक कौं दिन्नो ॥
 ता वानिक नंदिनिय । नाम गौरी सारंग सन * ॥
 इक्क थान पय पान । इक्क सिज्या इक आसन ॥
 नव बरस लगि कन्या रही । ब्याह राज बीसल कियो ॥
 वीबाह हुअे बर वन गयो । तहां सिघ बर विनसयो ॥

॥ छं० ३४७ ॥ रू० १७३ ॥

हूहा—मिघ विनस्यो वनिक सुत । कन्या किया अंदोह ॥
 वृत्त धयो ब्रह्मचर्य को । तप पहुकर तजि मोह ॥

॥ छं० ३४८ ॥ रू० १७४ ॥

समझ लेने योग्य बात है कि १६९ स्पक से १७० स्पक तक बीमल-देवजी की पाठन की चढ़ाई के लिये छत्र धारण करने का वर्णन है । प्राचीन समय में जब कि राजा किसी पर चढ़ाई करते छत्र धारण विधि का वैदिक कर्म करके प्रस्थान करते थे । पाठकों को यह भी बीमलदेवजी की कथा बहुत सावधानता से पढ़नी चाहिये क्योंकि इसके बीच-बीच में उनके लडके सारंगदेवजी आदि के भी वृत्त आते जाते हैं परन्तु उन सब को कवि ने बीमलदेवजी के वृत्तों में मिलाकर वर्णन किया है ॥

पाठान्तर—इछ ।

१७२ पाठान्तर - बीमल । नैर । मनो । विश्वक्रम । विसक्रम । विसकर्म । करि । अधम । धम । उप्परें । क्रम । दुक्कित । मन । इच्छै । विना । हक्क । लोभ । न । चछोव । चहुआन । छनीम । धंमाधिधर । देव । ताही ॥

१७३ पाठान्तर पाठ । गनि । प्रम । उप्पनी । भय । मृत्ति । को । दीनों । वनिक । दिनी । मम । पै । इक्क । लगे । कीयो । वीग । हुवे । गये । विनंसयो ।

* यह पाठ हमने सं० १६४७ तथा १६६० की पुस्तकों में रक्खा है । इधर की सब पुस्तकों में स्रम पाठ है । मनोतिषणुदाने तथा त्रि० अक्षण्डते ॥ अथवा सं० सूनु वा सूनु का अपभ्रंश है ।

१७४ पाठान्तर—कन्या । कीयो । वृत्त धयो । पहुकर ॥

पद्धरी—अति दुचित भयो सारंग देव । नित प्रति करै अरहंत सेव ॥
 बुध धम्म लियो बंधै न तेग † । सुनि श्रवन राज मन भौ उदेग ॥छं० ३४९॥
 बुल्लाइ कुंअर सनमान कीन । किहि काज त्म्म इह धम्म लीन ॥
 तुम छडि सरम हम कहौ बत्त । बांक्क पुत्र हन तै दुचित ॥छं० ३५०॥
 इह नष्ट ग्यान मुनियै न कान । पुरषातन भज्जे कित्ति हान ॥
 तुम राज वंस राजनह संग । मृगया मग्ग वेली वन दुरंग ॥छं० ३५१॥
 परमोध तजो बोधक पुगन । रामाइन सुन भारथ निदान ॥
 अभिमान दान रिन सरन धम्म । चारघौ प्रकार मुनि राज क्रम्म ॥छं० ३५२॥
 परमोध मानि गजन कुमार । तत काल मंगि बधे ह्थ्यार ॥
 भय प्रसन राज कीनौ पमाव । संभरि रजधानी करहु जाव ॥छं० ३५३॥
 गजराज पाट है वर उतंग । मिघामन दीनो जटिन नंग ॥
 तुम जाहु कुअर संभरिय थान । किग्पाल करिय कायथ प्रधान ॥छं० ३५४॥
 प्रोहित मुकंद ‡ सारंग चुहान । माचौर धनी नरमिघ भान ॥
 पधार लार बहवल मग्गेच । दिय बहुत हमम कीयौ न मोच ॥छं० ३५५॥
 अनेक जाति उमराव मथ्थ । है गै नर वाहन सुतर ह्थ्थ ॥
 तिहि बार धाय वानिक बुलाय । जिन जाहु कुंअर की मथ्थ काय ॥छं० ३५६॥
 तुम कियौ पुत्र सौ मेक मुड । पिड्दि वैन कह्यो कहा देहु दंड ॥
 अजमेर मेन्डि संभरि दिमान । जो जाहु तच्च पडौ परान ॥छं० ३५७॥
 इतनी कथ्थि नृप चल्थौ मथ्थ । रथ च्यार भरे तिन वार अथ्थ ॥
 जोजनह एक कीनौ भिलान । अनेक भष्ष तहा षान पान ॥छं० ३५८॥
 भय प्रात प्रसन पग लग्गि पुत्त । चलि सीष मगि समरि पहुत्त ॥
 सर जाय पहुचिय संभ राय । मन वच्च सुद्ध करि क्रम नाय ॥छं० ३५९॥
 दम महिष भंजि तहा बली सु दीन । जज होम धोम सुर प्रसन कीन ।
 कीनौ प्रवेस सुर महिम मौलि । तोरन कलम बंधि राज पौलि ।

॥ छं० ३६० ॥ ६० १७५ ॥

† हिं० नेग from Sk (तैग्म्य (तिग to assail. to seek, to injure, to attempt, to kill) or तिग्म = sharp as a weapon) इसी तरह हिं० तेज is note from the A. Tayz, or P Tez. but from the Sk तेज m. Sharpness, pungency, sharpness of a weapon brilliancy, spirit.

‡ यह नागर जाति का ब्रह्मण था ॥

१७५ पाठान्तर - प्रति । धम । कीयो । वधे । सवन । भय । बुलाय । कुवर । तुम । धम । धर्म । वृत्त । वानिक । तें । दुचित । ग्यान । मुनिये । सुनीये । कान । भज्जे । छित्ति । षोलो । सुनहु । रिण । धम । चान्यो क्रम । कुंआर । बंधी । ह्थ्यार । हुव । प्रसन्न । रजधान । संभरिय करहु जव । हैं । कुमार ।

कवित्त - किय प्रवेश सारंग । देव संभारिय धान धिर ॥
 आयेह वैस्य वित्रिय । अनेक पग लगि नम्मि नर ॥
 तब कायथ किरपाल । सबन कौ आया दीनी ॥
 सस्त्र वस्त्र दत्त चित्त । देय दिल्लासा कीनी ॥
 जद्वनि गौरि आइय जबहि । पाइ लगी परमार कै ॥
 नव सगुन भए सगुनी कह्यौ । कुँअर होइ कुमार कै ॥

॥ छं० ३६१ ॥ रू० १७६ ॥

दूहा - देवराज रावन सुता । देवत्तनि जदौन ॥
 गौरि नाम सारंग वर । मनरति मूरति जौन ॥

छं० ॥ ३६२ ॥ रू० १७७ ॥

बीसलदेव जी का मृगया से बहुरना, एक तालाब बनाने की
 आज्ञा देना और दरबार करना

दूहा तब बाहुरि बीसल नृपति । मृगया पेलत वन्न ॥

देयि धान सर*उद्धरन । मतो उपायी मन्न ॥ छं० ३६३ ॥ रू० १७८ ॥

पद्धरी - तब देखि नरिन्द अनूप ठाम । निर्झर गिरिन्द बन अम्भिराम ॥

बुल्लाय लिए मंत्री प्रधान । सर* रचौ इहां पहुकर समान ॥ छं० ३६४ ॥

धान । करीय । प्रधान । सारंग । चुहान । चहान । धनीय । धान । दिये । हंसम ।
 कियो । वानिक । बुलाई । मभ मो । मूढ । वन । कह्यो । दिमन । खरान । कष ।
 सभ मध्य । मथि । जोजन । भरक । लगि । पहुँत वच । नाइ भाजि । बाली ।
 प्रसन्न । तोरन कलम बघीति पील ॥

१७६ पाठान्तर - धान । भाय । आइ । पित्रि । को । अग्या । समत्र ।
 सस्त्र । चित्त । दिलासा । किनी । जद्वनि । पाय । कुँअर । कुमार ॥

१७७ पाठान्तर - देवतनि । जदौन । मनो । रति । मनोरति ॥

१७८ पाठान्तर - नृपति । वन । धन । मतो । मन ॥

* यह बीमल का तालाब अब तक अजमेर के पाम विद्यमान है उसके किनारे पर जहाँगीर बादशाह ने एक महल बनाया था जिसमें उमने इग्निस्तान के पादशाह जेम्स पहिले के एलजी मे मुलाकात की थी । इम टिप्पणी को हमने इम तालाब के किनारे पर खड़े होकर लिखा है । यदि कोई पुरातत्ववेत्ता इम तडाग की वर्तमान दशा अपनी आँख से देखे तो उमको बडा शोक तथा आश्चर्य होगा कि अंग्रेज सरकार के राज्य में ऐमे प्राचीन म्यलों का जीर्णोद्धार राज-कोश के द्रव्य से होता है परंतु रेलवाले अपनी रेल इम पर दौड़ा-दौड़ा कर उमको नष्ट भ्रष्ट किए झालते हैं कि पाँच वर्ष पीछे वह समूल नष्ट हो जायेगा । इतनी मम्मति म यह विषय पुरातत्ववेत्ता विद्वानों और समस्त भारतीय प्रजा को सरकार हिन्द की सेवा में मिमोरियल करने योग्य है जिससे यह एतिहासिक चिह्न यथास्थान बना रहे ।

फुरमाय † काम अप आय गेह । आनंद अग उपज्यौ अछेह ॥
 बैठो सिंघासन धम्म नंद । बीसल नरिन्द नग्लोक इंद ॥ छ० ३६५ ॥
 सिर छत्र पाम दुय चमर ढार । अनि रूप जानि अस्वनि कुमार ॥
 आईय मु कुलि छत्तीस नाम । पावासर तोवर गौर राक ॥ छ० ३६६ ॥
 हजूर लग राजन बुलाइ । तबोलि दियो मनमुष्य चाइ ॥
 पढि बंदि छद बोले विरद । मुक्काय सीम नायौ नरिन्द ॥ छ० ३६७ ॥
 सब सभा प्रि जैमै नछित । चहुआन बाच जनु चद रत्त ॥
 मनमान कये सब दटय मीष । फिर बदी जन दीनी अमीष ॥ छ० ३६८ ॥
 निमि गई पच पल एक जाम । राजन्न महत्त ‡ प्रायेम ताम ॥
 करपुर अगर मृगमद मु वाम । मी । छिरकि उनिम अवाम ॥
 ॥ छ० ३६९ ॥ २० ५७९ ॥

बीसलदेवजी का रणवास मे पधारकर विश्राम करना और
 उनकी प्रिय रानी का उनको नपुंसक करना

कविन सुरंग धाम अभिगम । नहा विश्राम राज क्रिय ॥
 राग रग नाटक । विनोद मुष महल बोल लिय ॥
 पट रागिनि पावार । रूप रभा गुन जुब्बन ॥
 प्रमृदा प्रान गमान । नही विमरत्त इक्क छिन ॥
 रति भोग सुरति तिन मौ मदा । कवहु आन न दिच्छ त्रिय ॥
 षिञ्जि मौलि मकल एकत्र भय । पुरषातन तिन बध किय ॥

॥ छ० ३७० ॥ २० १८० ॥

† यह भी हिंदी शब्द है संस्कृत स्फुरितम् अथवा स्फुरि=स्फरणे, अनमः
 कल्पनायाम् स ॥

‡ यह भी हिंदी है । संस्कृत महल्ल=अंत पुर inner apartments palace.
 और महल्लक=अंत पुर रक्षक मे ॥

१७८ पाठान्तर नृगति । वन । यन । मनो । मन ॥

१७९ पाठान्तर नरिन्द । निन्नर । नगरन । गिरद । अभिराम । बुलाय ।
 लये । रचो । समान । बैठो । सुनिघामन । धम । नरिन्द । समीप । दिय । जानि ।
 अस्वनि । आइय । कुटी । छत्तीस । ताम । पावासर । तूवर । दीयो । मनमुख ।
 चाहि । चाय । छद । वदि । वेरद । नाम्यो । जैम । चाहु । न । मनगान । दईय ।
 जाम । राजन । वाम । कपूर । सोधे । छिरकि । उनम ॥

१८० पाठान्तर—सुरग । मुष ताम । विश्राम । मुष । पवार । जुवन ।
 प्रान । समान । इर । स्वै । नि । दरम । सीकि । भई ॥

पद्धरी तब सकल भइय एकत्र नारि । पुरुषातन तिन बंध्यौ विचार ॥
 प्रचार सहर दूतिका च्यार । लै षवरि सहर पहुची मझार ॥३७१॥
 प्रसताव भाव तिन कहि उचार । जोगिनिय बोल आदीतवार ॥
 पहराइ वेस बदलाय भेस । इम कियो राजद्वारह प्रवेस ॥३७२॥
 लै अथ्य दई दरवान हथ्य । इम किय प्रवेस सहचरिय मथ्य ॥
 जोगिनिय गई रागिनी मद्धि । सब बोलि कह्यो है मिद्ध सिद्ध ॥३७३॥
 आदेम क्रियौ सब पाइ लगि । आमन्न जोरि कर उम्भ अग ॥
 किहि काज आज हू बोलि लीन । किहि नार तुमहि इह सोप दीन ॥३७४॥
 सब सौति कह्यो दुष मुनहु तुम्म । राजन्न तनय हम सौ न क्रम्म ॥
 को जानि मात बिंझनी पीर । मौति कौमाल सालै सीर ॥३७५॥
 तुम कहौ करूं जीव तै बद्ध । तुम कहौ करौ नारी विरुद्ध ॥
 तुम कहौ करौ काम तै भंग । ज्यौ नारि अंग न्यौ पुरुष अंग ॥३७६॥
 गत्र चित्त वमी इह मौति बात । अब ही इह कारज करो मान ॥
 मंगाय अगिनि तत्र कियो होम । पर स्वान मांस प्रति वास धोम ॥३७७॥
 उच्चरयो मंत्र आराधि इष्ट । तन काल भयो काम तै नष्ट ॥
 दम दिमा लगि इह करी विद्धि । गन भौ पुरुषातन रहि न मिद्ध ॥३७८॥
 दै द्रव्य कहौ माता मिधाव । इह महर छडि अनि सहर जाव ॥

बीमलदेवजी का पुरुषतर नाश होने से दुचित्त हो

गोकर्णेश्वर की यात्रा करने को गुजरात जाना

अनि दुचित्त राज भय काम नाम । ब्रह्मचर्य नेम लियौ चतुर माम ॥३७९॥
 कातकर करन पढुकर मनान । गोकर्ण * महातम मुनत कान ॥

* इन गोकर्णेश्वर महादेव की उत्पत्ति-कथा स्कंध पुराणपन्नगंज जो नागर ब्राह्मणों का एक परम पुज्य सम्कृत भाषा में २४००० श्लोक की मर्यादा का नागरखंड नामक ग्रंथ है उसके २६ वें अध्याय में लिखा है । यह सम्पूर्ण ग्रंथ मेरे पुस्तकालय में है ॥

बाज जो बडनगर और बीमन नगर नामक नगर गुजरात में प्रसिद्ध हैं उनका प्राचीन नाम चमत्कारपुर था, उसकी सीमा का प्रमाण उक्त ग्रंथ के १६ वें अध्याय में लिखा है अर्थात् इन गोकर्णेश्वर को उसकी दक्षिणोत्तर सीमा पर होना प्रकाश किया है —

ऋषय ऊनु — चमत्कारपुरोत्पत्तिः श्रुतात्वत्तो महामने ।

तत्क्षेत्रस्य प्रमाणं यत्तदस्माकं प्रकीर्तय ॥ १ ॥

यानि तत्र च पुण्यानि तीर्थान्याय तनानि च ।

सहितानि प्रभावेन तानि सर्वाणि कीर्तय ॥ २ ॥

बुल्लाय जैतमिय गोलवाल । तुम भूमि पास नागरहं चाल ॥३८०॥
तुम देस कहीजै गोउरुन्न । परवत्त सरोवर नदी रन्न ॥

महाराज उहां महादेव थान । वानास नदी कौमारि कान ॥३८१॥
गिरवर उतंग इक तीन कोस । निझरना झरत मन आवे जोम ॥

केतीक दूर अजमेर हूत । दिन दाय मंझ नीके पहंत ॥३८२॥
चढ़ि चलयी राज गोकव दिसान । मैं मंत गुग्गिय घूमत निसान ॥
आवाजि पहूंनिय दम दिसान । अरि भ्रमैं वन्न तजि थान थान ॥

॥ छं० ३८३ ॥ ६० १८१ ॥

सून उवाच -पंचकोश प्रमाणेन क्षेत्र ब्राह्मण सतभा ।

आयामव्याम तश्चैव चमत्कारपुरोद्भवं ॥ ३ ॥

प्राच्या सम्यां गयाशीर्ष पश्चिमेन हरेः पदं ।

दक्षिणोत्तरयाश्चैव गोकर्णेश्वर सज्जिकं ॥ ४ ॥

हाटकेश्वर संज्ञ तू पूर्वमामी द्विजोत्तमाः ।

तत्क्षेत्र प्रथित लोके सर्वपातकनाशनं ॥ ५ ॥

यत् प्रभृति विप्रेभ्यो दत्त तेन महात्मना ।

चमत्कारेण तत्स्थानं नाम्ना ग्व्यानि ततो गतं ॥

† नागरह - उक्त नागरखंड जिमके भले प्रकार पढने मे आया होगा वह कह सकना है कि अनंत देश मे हाटकेश्वर क्षेत्र है, उनमें जो आज बड नगर राम मे प्रख्यात है वह नगर यही है । इसके मतयुग मे आनन्पुर, त्रेता मे चमत्कारपुर; द्वार मे मानपुर अर्थात् मनीपुर, और कलि मे नगर अर्थात् बडनगर नाम प्रसिद्ध हुए है । इसके अनिर्दिक्त यह भी ध्यान मे रखने योग्य बात है कि नागर ब्राह्मणों मे से जो आज बीसननगर नामक नागर ब्राह्मण प्रसिद्ध है वे बडनगरों मे से इन्हीं बीसलदेवजी के समय मे उनके दान देने से पृथक हुए है और बीसननगर नामक जो नगर आज गुजरात में प्रसिद्ध है वह इस समय इन ही बीसलदेवजी का प्रदान किया हुआ है । नगरखंड से यह भी जात होगा कि बीसलदेवजी के समय में जिन नागर ब्राह्मणों को दान दिया गया है उनमें से कुछ उस समय पुष्कर में भी रहते थे और येही लोग बीसलदेवजी को पुनश्च पुंसत्व प्राप्त कराने को गोकर्णेश्वर की यात्रा कराने जिमका वर्णन यहां कवि ने किया है, ले गए थे और अजमेर के चाहुवान राज्य के पुरोहित भी येही नागर ब्राह्मण थे । उनमें से एक पुरोहित मुकुन्द का नाम १७५ रूपक में आ चुका है । नागरों की पुरोहिताई छुटने पर अन्य ब्राह्मण चौहानों के पुरोहित हुए हैं ।

दूहा—अरि उद्यान प्रमि थान तजि । बजि पर षंड अवाज * ॥
तच्छितपुर † गोक्रम दिसि । पहुँच्यौ बीसल राज ॥

॥ छं० ३८४ ॥ रू० १८२ ॥

कवित्त—गिरि उतग सलिता । विहंग उद्यान थान हर ॥
सघन छान पषी । असपि रहि लता झुमि तर ॥
बरन बरन पल्लव । पहुँप द्रुम बेलि केलि फ ॥
कीर पिक्क चक्कोर । मोर कोकिल कौतूहल ॥
वाराह सिध मृग जथ जहा । दिग्धिराज अचरिज भयो ॥
अन्नूप ठाम आगाम अति । सिव परमत मव मुप भयो ॥

॥ छं० ३८५ ॥ रू० १८३ ॥

* यह मम्कृत अर्थात् वाज तारा का वाज अथवा अदाद तथा आवाद से है ॥

† जो शिक मे गुजरात प्रांत मे बडनगर कहलाना है उगोरा नाम है । नागरखड के पढने से उमके कितनेक अन्य नाम भी ज्ञात होगे जैसे, वृद्धपुर, वडनगर आदि । उक्त ग्रंथ मे यह भी पढने मे आवेगा कि इस स्थान मे एक समय सर्पों का बडा उपद्रव हुआ था और वह महादेवजी के विजान ब्रह्मण को 'नगरम् नगरम्' मंत्र प्रदान करने से दूर हुआ इसी से वडनगर कहलया । इस नगर के रहने वाले नागर ब्राह्मण अब तक प्रसिद्ध हैं । यह कथा नागरखड के ११३ वे अष्टायाय में मविस्तार लिखी है ॥

पाठान्तर—भई । बघन । प्रच्यार । महम । प्रस्तार उच्यार । जोगनीय । अथि । चहुआन । कीय । सहचरा । मथ । जोगनी । आईम । बीयी । आमन्न । उम्भ कर जोगि अगम । दिह । हम । नाम । काम । जान । बामनी । बी । माल । सान । कही । कौं ते । भी । बरो । अगनि । उचरघो । आराध । ते । लगि । विट्ट । गहन । कातिग । करन । मानाना । मुनहु । कान । पामल । पास कल । कहीजै । गोक्रम । परवन । महाराज । वप्राम । कामागिकान । निक्षरना । मभ । नीकै । मै धुम्भन । निसान । थान ॥

१८२ पाठान्तर उद्यान । थान । तच्छितपुर । गोक्रम । पहुँच्यौ ॥

१८३ पाठान्तर उद्यान । उद्यान । छाह । असक्य । झुमि । बरन । पहुँप्य । पीक । चकोर । चक्कोर । मारम । दिपि । अनू । ठाम । आगाम । परमत ॥ इस रूपक की पहिली दो तुकों की पहिली दो यतियों मे दम दम मात्राए है और दूसरी मे चौदह चौदह । यह कोई ऐसा दोष नहीं कि जिस के लिये हम ग्रंथकर्ता को दोष दें । ऐसे उदाहरण अन्य बड़े बड़े कवियों के काव्यों मे भी देखने मे आते हैं अतएव इस को कवियों की एक शैली मानना चाहिये । ऐसे स्थलो मे प्रायः शुष्क-कवि आपस में बहुत वादविवाद कर सिर फोटा करते हैं अतएव हम एक ओर भी सूक्ष्म

कविसु—परबत में कंदरा । तहां किधर सु विराजै ॥
 वारि बूंद सिर झरै । पास सिँघ जूथ समाजै ॥
 आनि अचानिक राज । पाइ लगे करि पन्न पति ॥
 ॐ नमो सिव सकल । नमो अकलेस अकल मति ॥
 फल पट्टप द्रव्य पंचा अमृत । धूप दीप अगों धरिय ॥
 अस्नान दान चहुवान करि । तब अस्नुति सेवा करिय ॥

॥ छ० ३८६ ॥ ऋ० १८४ ॥

बीसलदेवजी का गोकर्णेश्वर महादेव की स्तुति करना

भृजगी नमो वाय भूताय शानं भयानं । जटा माहि गगा झलकै प्रमान ॥
 त्रय नेत्र ज्वाला जल चंद्र भाल । त्रिप कठ माला म्लै हंड माल ॥३८॥
 महा आदि मुद्रा नप मिगि नादं । निध्र देव देव कथ माय मात्रं ॥
 धरा धूरि धूम विभूतं घमने । नमस्ने नमस्ने नमस्ने नमस्ने ॥३८८॥
 यज चर्म आछादिन भ्रम नाम । रहै वीर भैरो गन आम पास ॥
 पदम्भामनं पुष्टि नदी प्रचडी । चवं वेद आमोद चौमट्टि चडी ॥३८९॥
 बजै डकक डोरू डमकं तडककै । धकै मेरु धुज्जै हके गेन हककै ॥
 धनूकं पिनाकं धरै बाम हस्ते । नमस्ने नमस्ने नमस्ने नमस्ने ॥३९०॥

कारण बताते हैं कि चर और सूर जैसे आदि-कवि गान विद्या में पारंगत होने के कारण जहाँ एक ही यति में अनेक स्वर स्वरित हो गये हो वहाँ की एक दो मात्रा को दूसरी यति में मिला देते हैं कि जिस में स्वर न बिगड़े । देखो यहाँ उत्तंग के तं और सल्लिता के ता पर स्वर स्वरित हो गये हैं ॥

१८४ पाठान्तर - प्रबल । किनर । बुदि । नपै । मघ । पाय । प्रन्ति ।
 उ । द्रवि । पचै । दान । चहुवान ।

१८५ पाठान्तर - झनकै । वंदे । मघ । डरि । डम । भैरू । आसा । पाम ।
 पदमासनं । छी । कोद । चौमठि । डक । डेरू । तडकै । मेरे । धूजै । धनूक । धरै ।
 वाम । सूलपाणी । सार्धेति । ज्यंती । ग्रध्रव । जखं । अछदी । दिख । सनकादिकं ।
 सपत रिषी । मस रिषी । प्रथी वायर्गेनाय तेज । भानं । मिटै । नाम । ती । महा
 आदि । पुरिषं । पुरुष । तवो । कोन । ती । नपातिग । अरधंग । कयल्लास ॥

हमारे जो पाठक ऐसे हैं कि जिनको न तो कभी यह शका हुई न अब है और न आगे होगी कि हिंदी भाषा का यह अनि प्राचीन महाकाव्य आदि से अंत पर्यंत जाली बना है उन को उचित है कि यूरोप देश निवामी मिस्टर ग्रोम, डाक्टर हौर्नली, मिस्टर बीम्स और भरतखंड निवासी डाक्टर राजेन्द्र लालजी मित्र जैसे महाशयों को अनेक धन्यवाद दें कि उनके शोध और अनेक लेखों के कारण से यह महाकाव्य सर्वसाधारण लोगों के जानने में आ गया नहीं तो कुछ समय और व्यतीत होने पर

सिधं साध आराध्यं शूलपानी । सिवा ध्रंम साधेति के साध जानी ॥
 नरं किनरं ग्रंध्रवं नग्ग जण्णं । सुरं आसुरं अच्छरी हूर रळ्णं ॥३९१॥
 सनक्कादिक सप्तर्षी बाल कालं । प्रथीवायुगेनाय तेजंस लालं ॥
 नमो भान चंद्रं नवं ग्रह समस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥
 मिटं मंकटं वाट घाटं विघट्टं । तटं नाम तो कोटि काटं कसट्टं ॥
 षरं षेचरं भूचरं जंत्र मंत्रं । जपै व्याधि आमाधि भाजै अनंतं ॥३९३॥
 महादी पुरूषं महीमा मुरारी । नव कौन तो सौ निपातिक परारी ॥
 गिरा गौरि अर्धग कैलाम वस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥
 ॥ छं० ३९४ ॥ रू० १८५ ॥

बीसलदेवजी से गोकर्णेश्वर के सिद्ध का उनका नाम ग्रामादि पूछना

दूहा - इति अस्तुति राजन मषह । पढि पुज्जिव पग बंदि ॥
 देपि सिद्ध चक्रित भयौ । भाजन बुद्धि नरिद ॥

॥ छं० ३९५ ॥ रू० १८६ ॥ *

कोई मनुष्य जैो हि तर्क तिनकों से अब दोष देने है वैसे ही इस रूपक मे "नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते" वा पाठ देल करके कदाचित यह अनुमान कर लेने कि इस को स्वामी श्री दशानन्द सरस्वतीजी के सिद्धांतानुयायी किमी कवि ने झूठा बना दिया है क्योंकि नमस्ते शब्द का प्रचार या तो वैदिक समय मे था अथवा इन दिनों मे आर्य समाजस्थो मे है और आदि के चार रूपको से चरक धर्म संबधी वैदिक समय के मे प्रतीत होते है । यद्यपि आज यह महाकाव्य इतना प्रसिद्ध हो गया है परन्तु भात्री दोष देने वाले के लिये वह कुछ बाधक नहीं हो सकना, क्योंकि जो कुछ प्रमाण इस समय की प्रसिद्धि के उमको उम समय मे मिलेंगे उन सबको वह निःशक होकर वर्तमान समय के दोष देने वाले की भाँति जाली कह सकना है जैसे कि इस समय मे सब राजपूतान के राज्यों के प्राचीन संवत इस रामे के ९१ वर्ष के अंतर के संवत के अनुमार मिलने है और उन सबको इसी रामो ने अशुद्ध कर दिया यह कहा जाना है, इसी तरह वह भी कह सकना है कि इस समय में जाल ही जाल फैल गय था क्योंकि जैसे आज चंद्र स्वयम् माक्षी नहीं दे सकता वैसे हम लोग भी उम समय मे न होंगे । सारांश यह है कि एक नस्त्रा सौ दुख हरता है और थोये हठ के आगे किमी की कुछ नहीं चलती ॥

१८६ पाठान्तर—ओ ।

* यह रूपक सं० १६४७ और १७७० की लिखी पुस्तकों में नहीं है जो इनसे भी पुरानी पुस्तकों में यह न मिले तो इसको क्षेपक मानना चाहिये । किन्तु अभी तो हम इसको क्षेपक संज्ञा प्रदान नहीं कर सकते ॥

कहत सिद्ध किहि पुरहुं तें । कौन गोत किहि नाम ॥
इति तीरथ आये हुने । कै अर्गं कोइ काम ॥

॥ छ० ३९६ ॥ रू० १८७ ॥

बीसलदेवजी का अपना नाम गाम आदि बताना

दूहा पुर अजमेर सु वास हम । गोत ग्याति चहुआन ॥
बीसल दे मो नाम सिध । अयौ करन मनान ॥

॥ छ० ३९७ ॥ रू० १८८ ॥

सिद्ध का गोकर्णेश्वर के तीर्थ की महिमा वर्णन करना

अरिल्ल सिद्ध कहत सुन राजन वत्तिय । जो तू तजि अयौ निज धत्तिय ॥
इह गोपेपुर थान अपूरब । नित प्रति निमा उतरै सो रंभ ॥

॥ छ० ३९८ ॥ रू० १८९ ॥

इन थानक चारन बर पाए । तिनके नाम कहि रु समझाए ॥
भसमाकर रावना मधु कीटक । तिन उपास निराहर षट टक ॥

॥ छ० ३९९ ॥ रू० १९० ॥

इहै तिथ की महिमा गाए । धेनु दुग्धते आनि न्हाए ॥
जैसै ध्याए तैसे पाए । इतनी कहि सिध ऊठि सिधाए ॥७०४००॥रू०१९१॥

**बीसलदेवजी का तीन दिन निराहार उपवास कर गोदानादि
करना और महादेव का अपछरा को उन्हें उठाने भोजना**

दूहा राजन मन चक्रित भयौ । सुनि थानक की बिद्धि ॥
जो तो अभि अंतर * बसन । कहि ते तौ सिध सिद्ध ॥

॥ छ० ४०१ ॥ रू० १९२ ॥

१८७ पाठान्तर परहु । ते । क्योन । नाम । आगे । काम ॥

१८८ पाठान्तर —नाम । मनान ॥ बीसल दे शब्द मे जो दे है वह देव शब्द
का सक्षिप्त रूप है इसी तरह ममरमी मे सी सिध वा सिह का सक्षिप्त है ॥

१८९ से १९१ पाठान्तर—वत्तीय । इह । धरत्तीय । इहा । गामेसद । थान ।
प्रतै । थानक । च्यारन बर । च्यार नर । नाम । उपवास । टक ॥ ए हे । धेनु ।
ते । आनि । जैसे । तैमे ॥

* चंद की भाषा का व्याकरण तो हम कुछ समय मे बनाकर प्रकाश करेगे
परन्तु एक सूत्र उसका यह स्मरण रखना चाहिये कि उसमे षट-भाषा-वत् सधि ।
विकल्प करके होती है, इसके होने के उदाहरण बहुत आवेगे परन्तु न होने के
कारण उदाहरण यह अभि+अंतर और पंचा+अमृत हैं ॥

१९२ पाठान्तर—विधि । जि । तौक । तो । सिद्ध । सिध ॥

अरिल्ल -सहसं गौ मंगाह सवच्छिय । देह द्रव्य लै अच्छी अच्छिय ॥
सहस घट्ट सिव ऊपर कीनौ । तीन उपास नेम तब लीनौ ॥

॥ छं० ४०२ ॥ रू० १९३ ॥

तीन दिवस रहै राव निराहर । जल कल तज्यौ पवन कौ आहर ॥
एक निसा इक अपछर आई । सब अपछरा नृत्ति करि गाई ॥

॥ छं० ४०३ ॥ रू० १९४ ॥

बहुत बेर पीछें बोल्यौ हर । अपछर जाइ उठेउ वहै नर ॥
मौ अपछर नर देषन आई । देषति नृपति बसि नीदा माही ॥

॥ छं० ४०४ ॥ रू० १९५ ॥

अपछरा का बीसलदेवजी से महादेव के प्रसन्न होने और मन की
कामना पूरण होने की बात कहना

दूहा -तुम कौ सिव मु प्रसन्न भय । कह्यौ मोहनि वर मोहि ॥
जाहु थान हरि थान तजि । तूठे संभर तोहि ॥

॥ छं० ४०५ ॥ रू० १९६ ॥

नेरे मन की कामना । ऊपर शिव कौ पाइ ॥

इतनी कहि करि मोहनी । दियौ मु नृपति उठाइ ॥

॥ छं० ४०६ ॥ रू० १९७ ॥

बीसलदेवजी का अपने में पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त होना देखकर वहाँ बीसलपुर
बसा कर महादेव का मन्दिर बनाने का हुकम देना

कवित्त - पहुर रात पछिली । राज आप डेरा मधि ॥

वडिउ काम कामना । भई पुरियावन की सिधि ॥

प्रातकाल करि न्हाण । धेन विप्रन कौ दीनी ॥

पंचा अम्रत धूप । दीप सिव सेवा कीनी ॥

निहि बार हुकम * देवल करन । पुर † बसाइ बीमल ‡ घरह ॥

१६३ मे १६५ पाठान्तर -मह्य । गऊ । मंगाव । गवच्छिय । देव । ले ।
अछीय । घट । शिव । तिन । द्योग । रूई । निशा । एक आईय । अपछर । नृपति ।
गाईय । पीछे । बोले । उठाउ । वहे । आइय । देषि नृपति बसि । नीद अमाइय ॥

१६६-६७ पाठान्तर -मौ । मौ । शिव । हुव । थान । संभू । कौ पाय ।
दीयो । नृपति । उठाय ॥

* यह हिंदी शब्द हुकम अथवा हुकरुम संस्कृत शब्द मूकम् से बना है ॥

† चाहुवान वंश की ख्यातियों मे बीमलदेवजी का उपनाम पूणक होना लिखा
है और जो आज-कल गुजरात में विसल नगर अथवा त्रिसन नगर करके प्रख्यात
है यही यह बीसलपुर बीमलदेवजी का बसगया हुआ है और उधी दिन से बड़ नगरे
नागरों में से कुछ नागरों की विसन नगरा भूमक संज्ञा पड़ी है । हमारे इस अनुमान

मंगाइ हस्ति असवार * हुइ । फिरथो राज घर आतुरह ॥

॥ छं० ४०७ ॥ रू० १९८ ॥

की कविराज श्री दलपत रामजी सी० आई० ई० अपने जाति-निबन्ध नामक ग्रंथ मे नीचे लिखे प्रमाण से पुष्टि करते है---

जे रीते औदिक्यप्रकाश तथा श्रीमाली महात्म्य स्कंध पुराण मां छे । तेमज नागर ब्राह्मणोंनी उत्पत्ति नो ग्रंथ "नागरखंड" नामे घणो मोटो छे, ते पण स्कन्ध पुराण मां छे । ते न गरो नी उत्पत्ति गुजरात मां बड़नगर गाम मां थई । पण ते बयारे थई, तेनो संवत काई अे पुस्तक मां लख्यो नथी तेनू कारण अेज जाणवू के संवत लखवा थी तथा बना बनार नू नाम लखवा थी ग्रंथ जूनो केयेवाय नही पण नागर ब्राह्मणो नो प्रचाराध्याय नामे ग्रंथ मां जोयो छे तेमां लखे छे के,

श्लोक--श्रीमदानंदपुर महाम्थानीय पंचदशशतगोत्राणा ।

मंत्र २८३ पूर्वनिष्ठमान गोत्राणां ममानप्रवरस्य निबंधः ॥

अर्थ --शोभायमान अेत्रा आनंदपुर मोटास्थानवाला पदरसे गोत्रो मांथी मंत्र २८३ थी पेहेला रहेला गेणेना अेरुज गरखा नामीच नो निबंध लखूं छूं ॥

अे उपर थी आशरे मालम पड़े छे के अे बखत मां नगरो नी नात वधाई छे । अने त्यार पछी तेमां थी विमलनगरा नी नात जुदी पड़ी तेनू कारण बेहे छे के बिसलदेव राजाअे विमल नगर ब्रमाकीने त्यां जग्न बीघो हतो । त्यारे बडनगर थी केटलाअेक नागरो त्यां जोधा गया हता । त्यारे राजाअे तेओ ने दक्षणा आपवा मांडी । त्यारे अे नागर ब्राह्मणे अे कह्यूं के अमे कोई नी दक्षणा लेता नथी । त्यारे राजाअे कह्यूं के तमने पननां बीडा अगपी शूं । अेम कहीने पानना बीडा मां गाम नां नाम लखी नें अे नागर ब्राह्मणों ने आप्यां । त्यारे ते ब्राह्मणों जे पानना बीडू लीधा । तेमां जोयूं त्यारे गामनां नाम लख्या हनां । तेथी पछीनो अे गाम लेबा कबूल काया । अे बात बडनगरना नागरोअे जाणी त्यारे तेओ अे कह्यूं के अणे राजा नू दान ाधूं वास्तें अेओ आपणी नातथी बाहर छे । ते दिवस थी विमलनगरानी नात जुटी थई । कोई केहे छे के तेज राजाअे तेज बखतमां माठोद गाम नू नाम पान मां लखी ने जेने आप्यूं हतूं ने साठोदरा नागर थया । चित्रौड़ लखी ने जेने आप्यूं त चित्रौड़ा नगर थया । तेमज प्रश्नोरा तथा कृष्णोरा पण थया । ६ प्रकार ना नगरो ना नाम । बडनगरा नागर १, विमल नगरा नागर २, सठोदरा नागर ३, चित्रौडा नागर ४, प्रश्नोरा नागर ५, कृष्णोरा नागर ६ ॥ हवे विचार करो के बिसल देने बिसल नगर सं० ९३६ बी साल मां वसार्ब्यू अे प्रथिराजरासा मां चंद कविये लखेलूं छे ॥ मोहा ॥ सो संवत नव शत अधिक । वर्ष तीस छह अग ॥ पुर प्रतिष्ठ बीसल नृपति । राजत सकले जग ॥ १ ॥ त्यार पछी बिसलनगरानी नात बंध ई छे । तेथी सफ जणाय छे के परमेश्वरे काई नातो बांधी नथी । फकत माणसोअे जुदा जुदा बाडा बांध्या छे । त्यारे ते बंधाया थी हालमां जे हरकतो थती होय ते बंध करवा चहाय तो करी शके खरा । बिगल नगराओ राज नू दान लेबा थी जो बटत्या

बीसलदेवजी का पीछे भ्रजमेर घाना और सब कुख्या प्रसंग पवार जी
राणी से कहना

दूहा—दो दिन के मग एक दिन । आए बीसल गेह ॥

किय प्रवेस न्रप सहर में * । मुचित भए ग्रह मेह ॥

॥ छ० ४०८ ॥ रू० १९९ ॥

होय तो हाल मा बडनगराओं मुसलमाननी सेवा करे छे तेओ अनाथी पण बटल्या
कहेतेवाय । वास्ते अेवो जूठो वेहेम छोड़ी देवो जोइये । अने जरूर समजवूँ के तेओ
अेक बीज थी काइ बट-णे नही । इत्यादि ॥ ज्ञाति निबन्ध पृष्ठ ४३ से ४५ तक ॥

नागरखंडना अध्याय २३ पछे तेमा १०८ मा अध्याय थी ४ था अध्याय मां
लखे छे के आनर्त देशना राजाअे चमत्कारनामे शेहेर वसावी ते ७२ गोत्र ना ब्राह्मणो
ने आपवा माड्या तेम ८ गोत्र नाअे लीघा नही ने ६४ गोत्रनाअे लीघा । पछी त्या
काई कारण थी नागनी उत्पत्ति घणी थई तेओअे घणा मणसोने करडी खाघा तेथी
केटला ब्राह्मणो नाशी छुटया । पछी अेक अपमान करेले ब्राह्मणे (त्रिजातके) मन्त्र
नो उपाय कच्यो तथा अे मऊ ब्राह्मणो अे मलाने लाकडी पथरा वगेरे थी हजारो
नागने मारी नाख्या त्यारे अे शेहेगूनू नाम नागर (शेर विनान्) ठस्यूँ ने ते ब्राह्मणो
नागर कहेवाया । एछी १५८ मा अध्याय मा लखे छे के अेक पुष्यक नामने पुरुषे
पर स्त्रीनो सग घणा वर्ष कस्यो, ते पछी पस्तावो कगिने तेनू प्रायश्चित करवा
बडनगर मा आब्यो त्यारे सऊ नगरो अे कह्यूँ के अे पाप मटवानो उपाय नथी ।
त्यारे अेक चडशर्मा नामने नागरे काई प्रायश्चित कराब्यूँ, तेथी नागरोअे चडशर्मान
नात बाहर मुक्यो तेथी ब्राह्म नगरानी नात जुदी बन्धाई ॥

पृथ्वीराजरामा मा लख्यूँ छेके बीमलनगर बसावनार बीसलदेव राजाअे पुंकर
क्षेत्रमा परस्वीनो सङ्ग कर्यो हतो, तेथी ते स्वीअे श्राप दीघो हतो जे नू अमुर थईग ।
पछी अे पाप मटवानो उपाय बीसलदेव गोघतो हतो । मा टे पुष्यक नामनो पुरुष
नगर खण्ड मा लख्यो छे ते बीसलदेव सम्भवे छे । ने बाह्न नगरा जे लख्या छे ते
बीमलनगरा, साठोदरा वगेरे सम्भवे छे इत्यादि० ज्ञाति निबन्ध पृष्ठ ७५-७६ ॥

* यह हिंदी शब्द संस्कृत अश्ववर अथवा अश्व + वर अथवा अश्व + आर
से बना है अरबी अथवा फारसी से अनुमान करना व्यर्थ है ॥

१६८ पाठान्तर—पहर । कामन । हुई । न्हान । प्रिप्र । को । वमाय । धीम उ
पुरह । मगाय । हांड ॥

* हिन्दी महर अथवा महरि शब्द अरबी अथवा फारसी से नहीं है किन्तु
संस्कृत स + हलि से ॥ SK स + हलि = Agriculture, furrows Hence a
place where agriculturists reside. Dwelling & Habitation &
The Hindi हर is also from the SK हल A plough, the earth In
the Same manner नगर a town is from नग a tree, a mountain &
र aff.

ऊंच धाम विसराम किय । रंग साल चतुरंग ॥
प्रौढा महल पवार सों । कहिय सु कथा प्रसंग ॥

॥ छं० ४०९ ॥ सू० २०० ॥

सब काम-लुब्धाओं को सोच होना कि शंभू ने ऐसा क्या वर दिया ?

चौपाई - काम लुब्ध बोली सब कामनि । च्यार जाम गई जागत जामिन ॥
सब नारिन कौ सोच उपनौ । अँसौ कहा संभु वर दिनी ॥

॥ छं० ४१० ॥ सू० २०१ ॥

बीसलदेवजी का कामान्ध हो अकतर्व्य काम करना

कवित्त -- राति दिवस एकसी । काम कामना सु बढिदय ॥
प्रौढ मुगध वय वृद्ध । सबे थर हरि त्रिय गढिदय ॥
पर घरनी लै बोलि । धरी नह विलंब लगावै ॥
जो विलंब करि रहै । ताहि हनिवे कौ आवै ॥
भै भीत काम विसराम बिन । नाम सुनत औदिक परै ॥
अजमेर नैर वासल नृपति । प्रमुदा देशत प्रज्जरै ॥

॥ छं० ४११ ॥ सू० २०२ ॥

रूहा - पट्टन धनकनि देह दुष । ग्रेह कटन ग्रह हथ्थ ॥
धरै धन्न निज कोस मधि । इहै वानि समरथ्थ ॥

॥ छं० ४१२ ॥ सू० २०३ ॥

कवित्त - जिते जाइ इह मान । काम कामना सु बढिदय ॥
अवर ताहि उप्परह । बयन मूरष पर चढिदय ॥

१६६-२०० पाठान्तर—कं । कं । सेवा ॥ घाम । महिले । वारि । कौ ।

२०१ पाठान्तर--काम । याम गय । जाम । को उपनौ । अँसौ । सिभु ।
तीनौ ॥

२०२ पाठान्तर—काम । कामना । बढिय तम । सबे । हरत नारी जस ।
नीं । विलंब । ताहि के पहिले तो विशेष है । भय । काम । विसदाम । नहि । नाम
अन्दकि मरै । नृपति । प्रजरै ॥

२०३ पाठान्तर—धनकन । मुष । ग्रिह । कट्टन । हथ । निसि । वानि ।
मरथ ।

२०४ पाठान्तर—मान । काम । कामना । बढिय । उपहर । चढिय । दिषत ।
पुण्य । संग । काऊ कांणि । रषहि । त्रिय । बईस । किहि । इहै । लहै । निसि ॥

हमारे पाठकों में से जो ऐसे हैं कि वे Political officers रहे हैं अथवा
जिनहोंने बीसल देवजी की जैसी अनीतियों के वृत्त गोप्य Political Reports में

तिन दिष्पत बर बस्त । मंगि अप्पन मुष अष्पहि ॥
अबला सँग उल्हास । काहु की कानि न रष्पहि ॥
दुज षत्रि वैस सूद्रह बरन । तजै न किहू तक्कत नयन ॥
बीसल नरिद इह भय अकलि । लहै न लहु निस दिन चयन ॥

॥ छं० ४१३ ॥ रू० २०४ ॥

बीसलदेवजी के दुराचरणों से दुःखी होकर नगर के लोगों का प्रधान के पास पुकारने जाना

इहा—दीरघ जन मिल नयर के । गए द्वार परधान ॥
बढि अचैन नर नारि सब । नहीं रहै रजधान ॥

॥ छं० ४१४ ॥ रू० २०५ ॥

सबका आपस में सलाह करके बीसलदेवजी को राजधर्म श्ररज करना

कवित्त—तिन मति तिहिं पुर होइ । लोइ मति समथ समंडव ॥
बहुत भूमि भूमियां । चढवि तिन धर पुर षडव ॥
इह सु धम्म राजेन्द्र । दुष्ट ककट सिर कट्ट ॥
अनड अनड सहरै । धरा रप्पन धर अट्टै ॥
इह करथौ मत्र तिन मंत्रियन । अरु सब महर सु पच जन ॥
इह कथिय वन त्रिप सम तिनह । दवरि विसेपक भूमि यन ॥

॥ छं० ४१५ ॥ रू० २०६ ॥

बीसलदेवजी ने उत्तर दे कहा कि यह सब मैं जानता हूँ पर कम-ज्वाला के बढ़ने से लाचार हूँ, अब तुम जो कहोगे वह करूंगा

कवित्त—दुज्जर काय मु कहन । राज मन माहि समइशौ ॥
काम ज्वाल मो बढिय । तुम हि तिन कै दुष दइशौ ॥

पढ़े हैं अथवा जो Mysteries of the Native Courts के ज्ञाता है अथवा जिन्होंने वाजिदअली शाह की सायबी का पूरा ज्ञान उपार्जन किया है वे चन्द के लिखे बीसल देवजी के वृत्तान्त पर अविश्वास नहीं करेंगे और उसे अत्यन्तभाव का समझेंगे, किन्तु कवि के स्पष्ट वस्तुत्व की प्रशंसा करेंगे । इतिहास लिखनेवाले का यह मुख्य काम है कि वह चालचलन के विषय में स्पष्ट वृत्त लिखे कि जिससे उसकी भावी संतान शिक्षा ग्रहण करे । हमारे इस देश में हम लोग इस बात को फांसी लगने जैसा अपराध समझने हैं और रात्रि दिन ऐसी ही अनीतियों में लगे रहते हैं अनएव पुरुषार्थ का बड़ा टोटा हमारे यहा आ गया है ॥

२०५ पाठान्तर—मिलि । कै । परधान । बढि । अचैन । नहीं । रहसि । रजधान । रिमान ॥

२०६ पाठान्तर --मतिह । समथ्य । मंडव । भूमिया । धम्म । कहे । अनड अनड । रषन । कट्टिय । तिनहि । विशेषक । भूमियन ॥

हैं इह जानों सबै । पै मुहि मन वसि न होई ॥

सदा पहर जिम छाह । रहै कूई की कूई ॥

तुम कहौ सु हौं करि हौं अवसि । बोलि लेहि किरपाल हौं ॥

जहँ जहां दिसा तुम संचरी । तहँ तहँ आऊं चढिड ही ॥

॥ छं० ४१६ ॥ रू० २०७ ॥

इस पर बीसलदेवजी का किरपाल को बुलाना और उसका आना

दूहा -दै फुरमान * प्रधान तब । बुल्लाये किरपाल ॥

संभरि मौं आयौ सहर । लिये अनूप रसाल ॥

॥ छं० ४१७ ॥ रू० २०८ ॥

बीसलदेवजी का किरपाल से कहना कि तरवारि की पृथ्वी है

सो हम नव खंड की षड्ग खोसने को षड्ग बांधते हैं,

तुम खजाना संग ले बीसल सरवर पर डेरा करो

कविन -आय तबै किरपाल । पाइ राजन कै लगौ ॥

मुह अगै दुअ पग । धरै नग जरित उनगौ ॥

२०७ पाठान्तर - दुजर केत । समझी । काम । बढीय । कै । दजी । हो ।

जानो । मवे । पै । मोहि । छाह । हों । कू । तहा तहा । चढि । हँ ॥

* यह हिन्दी शब्द मस्कृत स्फुर + मान से है जैसे कि स्फूर्तिमान, स्फूर्तिमत्ता और स्फूर्तिमत् इत्यादि । इस फुरमान अथवा फुरमाना आदि शब्दों का प्रचार राजस्थानी अथवा बड़े प्रतिष्ठित लोगों की मडली में आज भी बहुत है । वास्तव में यह उन कहने अथवा आज्ञा के अर्थ में प्रयोग होता है जो किसी के द्वारा कहा जाय अथवा आदेश किया जाय । जैसे हमारे रजवाडों में जहां अभी प्राचीन देशी रीति प्रचलित है वहां राजा स्वयम् नहीं बोलते । राजाजी तो किसी अन्य पुरुष को कहने जाते हैं और वह पुरुष इष्ट मनुष्य को कहता जाता है । तथा किसी अपने से छोटे अथवा अधीन को कागद पत्र के द्वारा कहा अथवा आदेश किया उसको फुरमान व फुरमाना कहते हैं ।

२०८ पाठान्तर - फुरमान । प्रधान । बुल्लाये । बुल्लाये । मौं । अमूप ॥

२०९ पाठान्तर - पाय । आगे । दुय । धरे । नगो । मगुन । कथिय ।

दानं । नेम पग की इह पृथ्वीय । इह सगुन अत्रै हमकों भए । सो ब्रह्म मड मंड । कयो । दडौ ॥

* हिन्दी में खजाना और उससे बने शब्द आते हैं उसका वाचक यह प्राचीन हिन्दी शब्द सत्रके ध्यान में रहने योग्य है । यह संस्कृत खज्जर रोप्ये Silver का अपभ्रंश है । इन शब्दों को अरबी और फारसी के अपभ्रंश अनुमान करना व्यर्थ है । देखो, सं० खज शब्द भी गुड और स्वार्थ के अर्थों में प्रयोग होता है । और वह भी इतने प्राचीन समय से कि ऋग्वेद ८ । १७ में "अल्पि युष्म खजकृत पुरन्दरं" कहा है ।

बंधिय तेग विचार । सु गुन राजन इह कथिय ॥
जिम जिम विद्या दान । तिमह तिम षगकी प्रथिय ॥
इहै सगुन हम कौ भयौ । षग षोसौं नव खंड धर ॥
ब्रह्मांड मंड सब बसि करौ । भंडौ मेर सुमेर धर ॥

॥ छं० ४१८ ॥ ह०, २०९ ॥

दूहा—सुनि क्रिपाल मो मुष वचन । कठि षजीन सँग लेहु ॥
बीसल सरवर ऊपरै । ध्रुव दिसि डेरा देहु ॥

॥ छं० ४१९ ॥ ह०, २१० ॥

बीसल सरवर पर बीसलदेवजी के अधीन तथा सहायक इष्ट मित्र
राजाओं का उनके दिग्बिजयार्थ अटन के लिये एकत्र होना और
गुजरात के चालुक्य राजा का वहाँ न आना अतएव
बीसलदेवजी का उस पर चढ़ाई करना और बालुका
राय का यह सुनकर सामना करने को आना

पद्धरी - भरि चले सुनर *रथ एक राह । बीमल तडाग दिय वारि गाह ॥
फुरमान दए लिपि दस दिसान । सब आय मिले अजमेर थान ॥ छं० ४२० ॥
परिहार महनसी मित्यौ आय । मंडोवर के नर लगे पाय ॥
गहिलौत मिले सब सभा मोर । पावासर तोंवर राम गौर ॥ छं० ४२१ ॥

२१० पाठान्तर—किपाल । संग उपरें दृ । दिशि ॥

* इस रूपक के कई एक शब्द भाषा के शोधक विद्वानों के ध्यान में लेने योग्य हैं; जैसे—हं० सुनर (SK. मु + तर or तरि तर), जेर (SK. जूर) or जूरी to reduce, to injure, to hurt to decay. to grow old, to wound or kill) जोर (SK. जुड to bind, to join, as in making or mending, to direct, to grind or pound &c, or जुर speed. velocity, motion in general). तरवार (SK. तरवारि) दर (SK. दृ to divide, cut or break, to preserve, &c, and aff अप्) कूच or कूच (SK. कुञ्च to go, to go to or towards.)

इसके अतिरिक्त यह भी पाठकों को ज्ञान हो कि इस प्रसंग में कही बालुक और कही बालुक पाठ है सो जहां जैसा पुस्तकों में मिला वैसा रखना गया है, किन्तु जितनी पुस्तक जातियों की लिखी हुई हैं उनमें च और व में बहुत ही कम फरक देखने में आया है जिसमें अनुमान करता हूँ कि लेखकों ने घोका लाकर बालुक का बालुक पाठ न लिख दिया हो ॥

* हिं० निशान अथवा निसान (SK. नि + शाण i. e. नि before and शाण coarse cloth, sack cloth, Canvas A Small tent or screen used

मेवात धनी आए महेश । मोहिल्ल दुनांपुर दिग पेस ॥
 बलोच मिले सब पाइ बंधि । बांभन्या नृपति तजि गए संधि ॥छं० ४२२॥
 भटनेर राय की आइ भेट । मुलतान नाल बंध थटा थेट ॥
 फुरमान गए जैमलहमेर । भेम्या सब भाटी भाग जेर * ॥छं० ४२३ ॥
 जादौं रु बधेला मल्हवाम । मोरी बड गूजर आइ पास ॥
 अंतरहवेध कूरंभ आइ । सब मेर जेर होय लगे पाइ ॥छं० ४२४ ॥
 आप सपाइ चढि जैतमीह । तच्छिनपुर के नर संग लीह ॥
 आये सु चढ्ढि उदया पवार । निरवान डोड चढि चले लार ॥छं० ४२५ ॥
 चंदेल दाहिमा चरन लगि । बसि किये भूमिया घूनि पग ॥
 चालुकक कोइ आयौ न पाइ । रहे मुकरि जोर अंतरवार * माहि ॥छं० ४२६ ॥
 सुनि बोल जैतसो गोलवाम । घर वार नगर को रषपाल ॥
 सौं पाँ मु तुमहि अजमेर थान । बालुकक कितक पावै न जान ॥छं० ४२७ ॥
 दर * कूच-कूच * चढि चल्यौ वीर । गिरि मग्न होइ सर मुक्कि नीर ॥
 सोझति सोलकी पहिलि चोट । सैं लोट किये धर पारि कोट ॥छं० ४२८ ॥
 जारौर भंजि गढ रोर पार । अरि माजि गए गिरि बन मझार ॥
 आवू चढि भेज्यो अच्चलेस । तन्काल लियो गिरिनारि देम ॥छं० ४२९ ॥
 वागरि सोरठ छपरा मुद्ध । दंड मानि मिले नह मिले जुद्ध ॥
 गुजरात देम छिनर हज्जार । बालुका राइ चालुक झुझार ॥छं० ४३० ॥
 सुनि बन् चढ्यो अहंकार बंध । यिव मकनि पूजि धरि कुंत कंध ॥
 असवार लार हज्जार तीस । मद झरत नाग पचाम बीस ॥छं० ४३१ ॥
 जोजनह एक पर करि मिलान । आवाज मुनिय तव चाहुवान ॥
 ॥ छं० ४३२ ॥ रू० २११ ॥

especially as a retiring room for actors and tumblers, &c) Hence
 a standard, an ensign, flag, banner & colours, &c इस निशान शब्द
 का प्राचीन देशी राज्यो मे अभी तक प्रचार है और troop और Company के
 अर्थ मे भी प्रयोग होता है जैसे अमुक राजा ने अपने अमुक सरदार पर दो निशान
 चढा दिये । अमुक अमुक निशानो मे झगडा वा लडाई हो गई । मैं अमुक निशान
 का हूँ और वह अमुक का ॥

२११ पाठान्तर—दीप । फुरमान । दिमान । थान । आई । गहिलोन ।
 पावांमर । नूर । मोहिल । बलोच । बांभन्या । मिध । आय । बध । फुरमान ।
 जेमलहमेर । जदो । मल्हनवाम । आय । अंतरहबंध । आय । पाय । सपाय । जैतमिह ।
 तच्छिनपु । माथ । मथ । सध्या । लीय । चढि । पवार । निरवान । भूमिया ।
 मुसकरि । रषवाल । सोपोम । थान । कहांक । कितहु । जान । कूच कुझ । मगि ।
 से । भति । मोकति । मोचंक । सैं । जालौर । पारि । मझारि । लियो । छपन ।
 डंड । सतरि । राय । कुंत । पचाम । जोजन । मिलान । चाहुवान ॥

बालुकराव का भ्राना सुनकर बीसलदेवजी का सेना ले चढ़ना
दूहा—सुनि अवाज बीसल नृपति । आयी बालुक राव ॥

राज मंगि है वर चढ्यौ । दियो निसान * निघाव ॥

॥ छं० ४३३ ॥ रू० २१३ ॥

पद्धरी-दल चढ्यौ साजि बीसल सु राज । बड्डिय सु जनि अरि पुर अवाज ॥

सित्तर हजार सेना सु वाज । झिगरि सलूर पावस निगाज ॥ छं० ४३४ ॥

ढलकंत ढाल झलकंत कुंत । बिकसंत सूर सकसंत जंत ॥

हल हलत सिंधु वर चल अनूप । झल मलत सिष्य पष्यर सनूपा ॥ छं० ४३५ ॥

वर विजय बद्धि चालुक देश । बहु मिलत भूमियां लेय पेस ॥ *

अरि गहत गाढ तिन धरनि षंड । इहि रीत राज वसु विजय मड ॥ छं० ४३६ ॥

करि अग मद् गल सहस इष्य । वर माघ मास उज्वलौ पष्य ॥

दस कोस जाय मुक्कामांकीन । बिच गाम नगर पुर लूट लीन ॥

॥ छं० ४३७ ॥ रू० २१३ ॥

बीसलदेवजी की खबर सुन बालुका राव का जलभुन जाना

दूहा—सुनिय षबरि † बालुक तवै । तमकि सु ऊठ्यौ ताम ॥

मानों प्राजारिय अगिन । नर निरधूम बिराम ॥

॥ छं० ४३८ ॥ रू० २१४ ॥

२१२ पाठान्तर -- आवाज । मंग । हेवर । चढ्यौ । दीयो । निसान । न । घाव ।

२१३ पाठान्तर -- जान । सत्तरि । बाजी । झिगर । कि गाज । ढलकति कुंत । जुत । जुंतु । सिष । पष्यर । गदि । भूमिया । मंडि । सं० १६४७ और १७७० में "करि अगम गम्य दल अट्टल रक" है । जव । ऊजली । ऊजली । पदक । मुक्काम ॥ मुक्काम । गाम ।

* हि० पेस (SK. प्रैष्य m A servant, a slave n Service, servitute. Hence a tribute or present such as is only presented to conquerors, princes, great men and superiors)

हि० पेज अथवा पेम + कशी अथवा कमी (SK. प्रैष्य and कृष् = to draw, to draw out or off, to attract, to raise, to draw up, &c)

† हि० मुक्काम or मुक्काम (SK. मुक्त + काम = परिश्रम labour). Hence a halt, a stop in a marsh &c. Some think it from the SK मकुट mfn, going lazily, slowly, &c. or SK. मक or मकि or मुक्क to go, to move &c. & अमनि a road or SK. मुक्त + आम to go.

‡ हि० खबरि or खबर (SK. ख्या to relate, to recount, to say or tell celebrate, to make known &c.

२१४ पाठान्तर -- षबरि । जमि । ताम । सं० १८५९ की में "मनों प्राजारिय अगनि बन" ॥ बिराम ॥

बीसलदेवजी की खबर सुन बालुका राव का जलभुन जाना
 दूहा—सुनिय षबरि! बालुक तबै । तमकि सु ऊठघौ ताम ॥
 मानो प्राजारिय अगिन । नर निरधूम बिराम ॥

॥छं ४३८ ॥ रू० २१४॥

बालुका राव का नित्य नेम करके लड़ने को तयार होना
 पद्धरी बालुका राइ चालक्क वीर । मंगाइ नीर मंज्यो सरीर ॥

हरि चरन अंब अंजुली कीन । परि कंठ विष्ण धारिय कुलीन ॥छं०४३९॥

जुध आज करौ कहि कहा कालि । जो जाउं भज्जि तौ गोत गालि ॥

इतनी भूमि षित्री न कोह । अडौ न फिरघौ मिलि लेय लोह ॥छं०४४०॥

पपरैत तुरिय पपरैत गज्ज । नर कम्से वगतर मिलह मज्जि ॥

अवसर भये तब षवरि दीय । बालुका राइ अयो अबीह ॥छं० ४४१॥

बालुका राव का बीसलदेवजी के पास श्रीकंठ भट्ट को
 भेज संदेशा कहना

श्रीकंठ भट्ट चहुवान पास । तुम जाय कही इहि विधि प्रकास ॥

श्रीकंठ भट्ट गय अरि सु थान । बीसलदे भेटघौ चाहुवान ॥छं०४४२॥

आमीस दई उम्भारि हथ्य बालुका राइ की कही कथ ॥

जितनें नृपति सौं मुदै काम । तितनें रयति सौं कौन काम ॥छं०४४३॥

तुम बुरी करी करि रयति बंदि । असी न करै हिंदू नरिद ॥

अव छंडि रयति फिरि जाहु घाम । अजमेर सहर मंडौ विश्राम ॥छं०४४४॥

हौं वह्य राय जुध करन जोग । जुध भाजि जाउ तौ परै सोग ॥

हम मरन दिवस है मंगलीक । मो पास जितेनृप सुद्ध लीक ॥छं०४४५॥

हम तुम्म नहीं कवहू विरुद्ध । इह जानि जाहु फिरि तजौ जुद्ध ॥

हम तुम्म काम इहि पैत आज । को रहै पैत को जाइ भाजि ॥छं०४४६॥

यह सुनते ही बीसलदेवजी का लड़ने को आज्ञा देना

इतनी जु सुनत ही चाहुवान । तिहि वार हुकम करि द्यौ निसान ॥

पषरैत किये है वर मतंग । संनाह पहरि सब नरनि अंग ॥छं०४४७॥

दोउ फौज निजर दिठाल मिल्लि । उपट्टै सिधु जनु लहरि जल्लि ॥

॥ छं० ४४८ ॥ रू० २१५ ॥

२१५ पाठान्तर— १। चालुक । मंगाय । भय्यो । अजुलि । धारिय ।
 जुद्ध । करो । कालिह । काल । जो । जाउं । जाऊ । गजि । गोतमालि । काय ।
 अडो । फिर । पषर । पषरैत । गज । कमे । सजि भाए । जाहुं । कहो । थान ।
 सं १७७० में “भेटघौ बीसलदे चाहुवान” । दीन । दइ । उभारि । हथ । राय ।
 कथ । जितनें । सौं । काम । तितनें । सौं । कौम । काम । बुरीय । करी । करै ।
 हिंदू । घाम । विश्राम । हौं । वह्य वंस । भागि । जाऊं । पासि । शुद्ध । तुम ॥

बीसलदेवजी का चक्रव्यूह और बालुकराय का अहिव्यूह रचना
दूहा — चक्रव्यूह चहुवान किय । अहि मन बालुक राइ ॥

कै भेदै कै मधि रहै । दई करय निरवाह ॥

॥ छं० ४४९ ॥ रू० २९६ ॥

बीसलदेवजी और बालुकराय की फौजों का परस्पर युद्ध करना

भुजंगी - मिले प्रात काल दुअं दिष्ट फौज । मनो देषिअं जानि सामुद्र मीजं ॥

गजं आय झूमे भले साव रोटं । षई पंड सुंडं करे श्रप चोटं ॥ छं० ४५० ॥

भई तीरकारी छुटे बाल बानं । परी सोर की धुध सुइल्ले न भानं ॥

भले सूर वीरं धरे कुंत कंढं । उपारं तुरी दो दिसा फौज मडं ॥ छं० ४५१ ॥

निसंकं तुरी थप्पि पषरेत नष्पै । मनो बुंद सिधं परै कौन दिष्पै ॥

भए एकमेकं परे भार भारे । तनं तेग तुट्टै बहै फूल धारै ॥ छं० ४५२ ॥

भई फौज चलुक्क की पच्छ पायं । तबै बालुका राइ कीनी सहायं ॥

जपै भाय भायं करै मार मारं । लरै दोय जोधा कटै सार सारं ॥ छं० ४५३ ॥

उपट्टै घटै गाबरं तुंड तुट्टै । वहै संग छुड्डी फिरी अंग फुट्टै ॥

चपे चक्रव्यूहं नृपं श्रप चल्लै । फिरै मुष्प परिहार गहिलौत मिल्लै ॥ छं० ४५४ ॥

चल्यौ भज्जि गहिलौत तूबर दिसानं । फटे चक्रव्यूहं भए एक थानं ॥

तिनं बार स्याबामि पावामु रान । सनं मुष्पे धाए मनोसिघ जानं ॥ छं० ४५५ ॥

परी भूमि लोथं मिले हथ्थ वथ्थं । करै जोर जोधा अक्थ्थं मु कथ्थं ॥

तिनं बार पंधार पेलेवल्लोच । जुरे आय संमुष्प कीयौ न सोच ॥ छं० ४५६ ॥

भभक्क भकं हस्ति बोले भमुंडं । परे पंड पंडं रनं रंड मुंडं ॥

बने लाल बागे लिले लोह मिल्लै । दुह ओर जोधा मनो फाग पिल्लै ॥ छं० ४४७ ॥

गजं थ्रोन चल्लै रजं आम पासं । मनो माधुरी मास फूले पलासं ॥

मिली दिष्ट बालुक्क बीसल नरिदं । मनौ मूर ईधे भये चंद्र मंदं ॥ छं० ४५८ ॥

तुरी चड्ढि चालुक्क हस्ती चुहानं । भयौ राज सौ जुद्ध भारी भयानं ॥

उनें बाजिनप्यौ इनें गज्ज पेन्थ्यौ । दिए दंतपायं दुअं लोह मिल्यौ ॥ छं० ४५९ ॥

फिन्यौ गज्जराजं उनें वाजि फेन्थ्यौ । दुअं वीर वाचा भई वेत हेन्थ्यौ ॥

॥ छं० ४६० ॥ रू० २९७ ॥

तुंम । नही । विरुध । तुंम । काम । जाय । चाहुवान । निमान । हैवर । हैवार ।
चोऊ ।

२१६ पाठान्तर - चाहुवान । बालुका । राय । दइ ।

२१७ पाठान्तर - दुयं । दिठ । देपिये । अंन । जानि । झूमे । रोटं । रोट्टं ।
सषं । मोटं । मोट्टं । धुधु । मुझै । भानं । धूर । धरे । कंधं । उपारै । षंयं ।
थप्परै । कंध नपे । नप्यै । परै । कौन । भइ । पछ पाई । पछ । राय । सहाई ।
जपे । भाई भाई । जोद्धा । कटै । घटं । तुब । करी । चपे । श्रप । चलं । फिरै ।
मुदव । मिलं । भजि । तौबर । फटै । मुष । पुह्वि । पहुमि । हथ वथं । करे ।

चालुक का कहना कि रात को युद्ध नहीं करना, प्रात
होने पर युद्ध करेंगे

दूहा राज मुनी चालुक कहै । है थप्परि इह कंध ॥
राति परी जुध नहि करे । प्रात करे फिर जुद्ध ॥

॥ छं० ४६१ ॥ रू० २१८ ॥

दोनों योद्धाओं का अपने अपने डेरों पर आना और चालुक के
मंत्रियों का एक झूठी पत्री बनाना

अरिल्ल -अपने अपने डेरा आए । सब घायल के घाव बंधाए ॥
मिले सकल चालुक के मंत्रिय । झूठी एक बनाई पत्रिय ॥

॥ छं० ४६२ ॥ रू० २१९ ॥

चालुक के मंत्रियों का उसे एक झूठी पत्री देकर घर भेज देना

अरिल्ल सो कर ज.इ राज कै दित्रिय । तुम घर जाहु कहा वक थत्रिय ॥
डोली करि चालुकक चलाए । सब मंत्री मिलबे कौं आए ॥

॥ छं० ४६३ ॥ रू० २२० ॥

चालुक के मंत्रियों का बीसलदेवजी के मंत्रियों से मिल
संधि कर लेना

अरिल्ल सब मंत्री परधान थान पर । बोलि लए पावामर तोंअर ॥*
हम मु तुम्हारे पाइन आए । कपट निपट करि राव चलाए ॥

॥ छं० ४६४ ॥ रू० २२१ ॥

इह मु बोल गज तोल चलावौ । राज कहै सो माल मंगावौ ॥

॥ छं० ४६५ ॥ रू० २२२ ॥

अकथं । कथं । पेल्यो । सनमुष । भभकंन ह ती मु बोळै भुमुंड । मंड । मुडं ।
मिले । दुहं । मनो । पिले । चल्ले । रजे । मनो । बालुक । मनो । टणे । हुवं ।
चंद । चढि । चालुकं । करी । चाहुवानं । चौहानं । सो । नष्यो । गत्र । दए । दुवं ।
गजराजं । दुहं । भयं ॥

२१८ पाठान्तर —करें । करे । भरे । करे ।

२१९-२२ पाठान्तर —अपनें २ । घाउं । बंधाए । मंत्री । पत्री ॥ २१९ ॥
जाय । दीनीय । थनिय । चालुक । करी । कौं । कूं । आये ॥ २२० ॥ परधान ।
थान । तुम्हारे । पायन ॥ २२१ ॥ इहां । सोल । चलायी । मंगायी । तहं ॥ २२२ ॥

* यह तुक सं० १६४७ और १७७० की पुस्तकों में नहीं है ।

पावासुर का बीसलदेवजी से संधि कर लेने के समाचार कहना

अरिल्ल—राजन पास गए पावासुर । तहाँ बोलि किरपाल लए नर ॥

चालुक के मंत्री आये मिल । मंगो माल धरै प्रभु पग तल ॥

॥ छं० ४६६ ॥ रू० २२३ ॥

बीसलदेवजी का संधि स्वीकार कर वहाँ महल बनाने और
नगर बसाने को कहना

अरिल्ल— फिर राजन्न कही तुम जानी । मेरो इहाँ महल हु थानी ॥

एक मास में नगर बसावौ । इतनी कहि अस पाइन आवौ ॥

॥ छं० ४६७ ॥ रू० २२४ ॥

माल मंगाकर बीसलपुर बसाना और वहाँ से पीछे फिरना

डूहा—पावामर तोंअर कहे । भरें कोरि कौ भाग ॥

जब ही माल मगाइ करि । नगर बसावन लाग ॥

॥ छं० ४६८ ॥ रू० २२५ ॥

जीति पेत चहुआन नृप । चालुक घाय अघाय ॥

फिरि बाहुरि बीसल चल्यौ । बीसल नगर बसाय ॥

॥ छं० ४६९ ॥ रू० २२६ ॥

सो संवत् नव मत्त अघ । बरम तीस छह अग ॥

पुर पट्टन बीसल नृपति । राजत सयलह जग्ग ।*

॥ छं० ४६० ॥ रू० २२७ ॥

२२३-२२४ पाठान्तर --कैं । कै । पाइन । ताले । २२३ ॥ राजन । राजन्न । जानी । इहं । मेलिहह । हो । मै । वमायो । वमाउ । पायना । आयो ॥ २४ ॥

२२५-२२७ पाठान्तर—कहै । भरे । भरें । मंगाय । वसाउन । ॥ २२५ ॥ जीनी । चहुआन । चहुवान । नृप । घाय । फिरि ॥ २२६ ॥ सत । अघ । अगिग । जगिग ॥ २२७ ॥

* इस रूपक में कहे संवत् के विषय में हमारा टिप्पण १६८ पढो और विचार करो । इस ग्रंथ क रूपक १६८ में बीसलदेवजी के पाठ बैठने का संवत् ८२१ कहा है परंतु श्यानियो में सं० ९३१ भी मिलता है । उनके राज्य करने के वर्ष ६४ कवि ने बना ही दिग् है अतएव यह रूपक पाठ बैठने के रूपक १६८ में आठ सै के स्थान में नौ सै अथवा नव सै का पाठ होना स्वयम् सिद्ध करता है, क्योंकि जो ऐमा न माने तो ११८ वर्ष का राज्य समय होगा । श्याति में लिखे बीसलदेवजी के पाठ बैठने के संवत् के अनुमार जो लेखा लगाकर हमने टिप्पण १६८ में संवत् १०८६ सिद्ध किया है वही कर्नेल टाड साहब भी नीचे लिखे प्रमाण से अनुमान करते हैं—

एक दूती का बीसलदेवजी को एक बहुत सुन्दर बनिकसुता की खबर देना
 दूहा - बनिक सुता कौमारिका । एक अनूप नरिंद ॥
 कामलता दूती कहै । मनो सरद की चंद ॥

॥ छ० ४७१ ॥ ६० २२८ ॥

बीसलदेवजी का बीसलपुर में प्रविष्ट होना

कबित्त मवत नव मत अद्ध । वरष दस तीय मत अग ॥
 पुर प्रविष्ट बीमल नरिंद । राजत मयल जग ॥
 तिहि पट्टन इक बनिक । मडि ग्रह राज त्रिवाहति ।
 रचिब देव नप मवद । दिगिष तिय देव उवाहनि ॥
 जै जै मवद बदिन चवहि । मागध पुत्र पवित्र मनि ॥
 अन धन प्रवाह बहु पुहवि परि । वरप्पी जेम पुरद गनि ॥

॥ छ० ४७२ ॥ ६० २२९ ॥

'Mahmood's final retreat from India by Sindh to avoid the armies collected 'by Byramdeo and the prince of Ajmere,' to oppose him, was in A H 417, A D 1026, or S 1082, nearly the same date as that assigned by Chand S 1086,' Vol II Page 419.

इसके सिवाय पाठको को यह भी विचार करना होगा कि इस समय गुजरात देश के पट्टन का चालुक राजा कौन था कि जिससे बीमलदेवजी का यह युद्ध हुआ । अतएव हम जैन ग्रंथ प्रबन्ध-चिन्तामणि और कुमारपाल-चरित्र आदिक के अनुसार शोध हुए सवत् मूलराजजी मोलकी से लेकर करण तक के नीचे लिखने हैं—

१ मूलराज	=	सवत् ९९८ से	५५ वर्ष	राज किया
२ चामुडराय	=	„ १०५३ से	१३ वर्ष	„ „
३ वल्लभराज	=	„ १०६६ से	११॥	मास ६ दिन राज किया
४ दुल्लभराज	=	„ १०६६ से	११॥	वर्ष राज किया
५ भीम	=	„ १०७८ से	५० वर्ष	„ „
६ करण	=	„ ११२८ से	३२ वर्ष	„ „

२२८ पाठान्तर - कोमारिका । कहै । मनहुत ॥

२२६ पाठान्तर - स० १७७० की पुस्तक में 'नर सवत् नव सत्त । वरष दस पंच सत्त अग' पाठ है । बीमल । नृपति । राज्यत । तिन । पट्टन । गृह । दिषि । तीय । इबाहि । पुत । पहु । पुहमि । पद । पुरिद ।

उस रूपक के संवत् के विषय में टिप्पणी १८ और २२५-२८ और बीसल नगर अथवा बीसलपुर के विषय में टिप्पण १८० और १८२ अवलोकन करो ॥

बीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और वहाँ उनका हास होना
दूहा—इह विधि मंड्यौ राज वरि । जग्य बनिक अजमेर ॥

वरष त्रयोदश मद्धि वय । भयौ हास सव नैर ॥

॥ छं० ४७३ ॥ रू० २३० ॥

बनिकसुता गौरी का पुष्कर में जप करना और बीसलदेवजी का
उस पर मोहित होना

पद्धरी—आषाढ मास उज्जाम पष्प । दिन तीय सोम बंदन सरुष्प ॥

मटिवाय गज्जि नीसांन गेन । अति उंचि मडिन्निप अवधि अेन ॥ छं० ४७४ ॥

किलकंत उषल आकाल अभ्भ । विथुच्यौ महि जल पहुमि गभ्भ ॥

बिलसंत राज तिय देव साय । निकसै बार कहु एक भाय ॥ छं० ४७५ ॥

चिहुं कोद घूमि घन पुब्र पूर । दिन पाच आनि दरसाइ सूर ॥

रस बार सोम वीरंम दिन्न । ते वंम सेव जन बंद किन्न ॥ छं० ४७६ ॥

मो षंड मास लगि रत म मान । घर हरे धुंम जल महिर आन ॥

॥ छं० ४७७ ॥ रू० २३१ ॥

साटक - स्यामग रवरंग अंग रवनी । अन्वी मु रगेसवे ॥

माहसं मक पाइ राइ मुगता । जुगता सरित्तरए ॥

नीलं वास वनूर बंध विधना । हरि हार् धारा तनं ॥

भूमि मंकि स्वधीन पुन्य तनयं । देवा रहस्यं मनं ॥

॥ छं० ४७८ ॥ रू० २३२ ॥

कविन् - धरनिय हरि उर वास । बाम धर उर तिय धारिय ॥

दिग कज्जल लमि धार । धार कज्जल दिग धारिय ॥

रच्यौ हार तिय मद्धि । मद्धि हिय हार मु रमिय ॥

नूपुर पय सो श्रवत । श्रवन नूपुर पय अगिय ॥

अविमय न पुह्य घन वन रमिय । रमय वनी घन पुष्प सम ॥

भू इंद रहमि रमि वमि रमिय । वीमल रन भू इंद रम ॥

॥ छं० ४७९ ॥ रू० २३३ ॥

२३० पाठान्तर - परि । मधि ॥

२३१ पाठान्तर - उज्जाम । पय । हरुष्य । मरुप । मटिवाय । गज ।
नीसांन । गेन । उच । वैन । उपिठ । अम । विथुच्यौ । मधि । पहुमि । गभ ।
निकसै । विहुं । घूमि । पुव । वच । दरसाई । विरम । दिन । नें । बध । किन्न ।
म नाभ । आभ ॥

२३२ पाठान्तर - स्यामाग । अरनी । पाय । जुगता । सरित्तरए । विन्निमा ।
हार । भूमि ॥

२३३ पाठान्तर - धरनिय उर । धारि । मधि । हिय । रगिय । नूपुर ।
सा । पुह्य । पह्य । रहस्मि ॥

पुष्कर की तपस्विनी की बीसलदेवजी के प्रति प्ररदासि

दूहा - हौं राजन मंगों यहै । इह मेरी अरदासि ॥

पुहकर की कहै तपमनी । रूप रंग की रामि ॥

॥ छ० ४८० ॥ रू० २३४ ॥

अरिल्ल पित्र मनेह सपूत सबानिय । देवनि भूमिन सब्व समानिय ॥

सो रति मान थटे घन डवर । असय मद्धि निज उज्जल अवर ॥

॥ छ ४८१ ॥ रू० २३५ ॥

दूहा— उज्जल पष दसमी दिवस । अरु दशरथ के नंद ॥

नयर बंद अर कंध दम । रचिकें किण्णिकद ॥

॥ छं० ४८२ ॥ रू० २३६ ॥

दीप माल दीपै सुरग । ग्रह ग्रह महल अवास ॥

हरिपुर हर मानत मनह चितवत चितत वाम ॥

॥ छ० ४८३ ॥ रू० २३७ ॥

बीसलदेवजी का पुष्कर में बनिकमुता गौरी का सतीत्व भ्रष्ट

करना और उसका उनको दावन होने का शाप देना

कवित्त - एकादममा दिवम । देव नर नाग मव्व मिल ॥

सुर मक्रव तजि वाम । आनि पुहकर प्रसाद षिल ॥

तहा बनिक नदिनी । पुत्रि गवरी तप मड्यौ ॥

दिषिष ताहि बीसल नरिद । बढि मार प्रचड्यौ ॥

हादसो दिवम दिन अस्त करि । असद सद् कीनी नृपति ॥

जित्त तिनह दिषिष तिहि मन दुचित । न हिय राज कहु छिन त्रिपति ॥

॥ छ० ४८४ ॥ रू० २३८ ॥

पद्धरी-बर विमल लोक पुहकर प्रकास । सुर नर सु नाग रिधि मुनि अवास ॥

घर धरम करम सुभ परम पाइ । जय सुर चवत गुन अगम गाइ ॥ छं० ४८५ ॥

तिथि अगनवार दिन कर प्रकास । गय द्वार तपनि करि कपट पास ॥

तन रचित नीर उर ध्यान देव । त्रप मानि रहस करि वर अपेव ॥ छं० ४८६ ॥

२३४-३७ पाठान्तर— हो । इहै । अरदास । दै । तपसनी ॥ २३४ ॥

मुरिल्ल । सबानिय । सबानीय । सबानीय । सब । समानिय । मान । मधि ।

उजल ॥ २३५ ॥ नैर । बध । अरि । निकव ॥ २३६ । सुरंग । चितवत ॥ २३७ ॥

२३८ पाठान्तर— एकादशमी । दाव । मिलि । पास । आनि । षिलि ।

देषि । द्वादशी । असू सद । तितहि । दिषिति । तहु । मन । कहूं ॥

२३९ पाठान्तर— वर । प्रकाश । रिष । करकम । पाय । गाय । अनग ।

बिन कर । ध्यान । ब्वाल । नैन । कुश । सकुय । दय । बैन । बैन । हस्त । पिट्टि ।

बडि विकल झाल तम धूम नैन । गाहि कुस सकुथ्य दइ दुसिष बैन ॥
 धर हरति अंग जल धार भार । हथ पटकं गंग जट समुष पार ॥छं० ४८७॥
 धरि ध्यान ध्यान तिन अगनि ईस । षंडे सु जग्गि तंफे जगीस ॥
 रवि पदम पाय सासन सरूढ । उर धरे देव तिन देव गूढ ॥ छं० ४८८ ॥
 जुग पानि नाभि ताली लगाय । रमि द्रिष्टि द्रिष्टि गिरि बभ राय ॥
 तिर पुटिय भाल शिल कमलमूर । इह भाति ताव तप तपनि जूर ॥छं० ४८९॥
 तप त्रवल मुक्कि किय विरथ काम । कर मंझि राज मुझ श्राप नाम ॥

॥ छं० ४९० ॥ रू० २३९ ॥

झूहा - पुत्री बनिक सराप दिय । भर पुहकर नर लोइ ॥
 असुर होई बीसल नृपति । नर पलचारी सोइ ॥

॥ छं० ४९१ ॥ रू० २४० ॥

गौरी का बीसलदेवजी को भयभीत देखकर कहना कि
 तुम्हारा पोता तुम्हारी सुकीर्ति करेगा

झूहा— दिप्पि राज भय भीत तन । तन मन धूजत तथ्य ॥
 मो उद्धारन पय गहन । कथ कुमुमन वर कथ्य ॥

॥ छं० ४९२ ॥ रू० २४१ ॥

झूहा— तो सुअ सुत्त उदार मति । गति तिन देव प्रकाम ॥
 घर मडन डडन भरन । सो तुम करहु मुवाम ॥

॥ छं० ४९३ ॥ रू० २४२ ॥

तपस्विनी के कोप से बीसलदेवजी का सांप के काटने से
 अल्लोप होता

कवित्त—सपत दिवम अनुसिष्य । सुण्य मधि दिग्ग प्रजारिय ॥
 अमि त्रिष वद्धंन अंग । अगनि गन दनुज उदारिय ॥
 सहस अद्ध तन वद्ध । झार मुष चार विकारिनि ॥
 सर्व असन करि अमम । सैन छिन चैन निकारनि ॥

ध्यान ध्यान । जगि । तडे । तजे । मृरूट, । पा ने । नाभा । द्रिष्टि । द्रिष्टि । राइ ।
 तरपटीय शील शिलकमल मूल । नानि । तप प्रवल मुनि कियय विरथ वम ।
 सराय । नाम ॥

२४०-४१ पाठान्तर -वणिक । नृपति । नर भण्यन करे तोय ॥ २४० ॥

दिषि । तथ । कथ । कुमुम । वर । कथ ॥ २४१ ॥

२४२ पाठान्तर -सुत्त सुत्त । उद्धार । मड ॥

२४३ पाठान्तर -अनुसिष । मुष । दिग्ग । उद भच्चिय । वार । विकारनि ।

सैन । चैन । आहुठ । साहुठ । ग्यान । गल्ह । आरंन ॥

आहुट्ठ दीह साहुट्ठ मधि । पलप पदम बिन कदम बिन ॥

गुर गवरि ग्यान गन गन्ह करि । रम्य राज्य आरन्न छिन ॥

॥ छं० ४९४ ॥ ह० २४३ ॥

दूहा—भय दिवाह आहुट्ठ दुति । तपसरनी की कोप ॥

जल बेली बिहु वाग त्रिष । ते जिन भये अलोप ॥

॥ छं० ४९५ ॥ ह० २४४ ॥

जिस तपस्विनी के शाप से वीसलदेवजी असुर हुए उसके

तप का श्राता की मा सविस्तर वर्णन करती है

दूहा—सुनहु पुत्र तिन तपनि तप । भिन्न भिन्न परिमाण ॥

जिहि दुसिष्य नृप असुर हुआ । रच्या सवर वरमान ॥

॥ छं० ४९६ ॥ ह० २४५ ॥

बनिक पुत्र मन इम धरिय । मो पति ताप अपार ॥

जो तप्पह मंडौ प्रबल । ती छुट्टौ संसार ॥

॥ छं० ४९७ ॥ ह० २४६ ॥

कवित्त—धन अप्पिय सब ब्रह्म । उअर । तिय ध्यान सु धारिय ॥

चित्तवि पुहकर तिथ्य । रिन्नु ग्रीषम अति चारिय ॥

पंच अगनि वर सीस । मेघ धारा धर मंडिय ॥

बरपा काल पचंड । सीम जल मद्धि मु बुडिय ॥

छंडिय सु वाम संसार मुष । जोति निरंजन उर सचिय ॥

इम कंक नालि मंडिय गगन । पीयै वाम दछिन मुचिय ॥

॥ छं० ४९८ ॥ ह० २४७ ॥

पद्धरी—पहु समय तिथ्य वर सजर किन्न । उर नयर धारि तिन भुवन चिन्न ॥

रुप च्यार देव पद भेटि ठौर । मन धरयो ध्यान सब तिथ्य मौर ॥ छं० ४९९ ॥

वडि वाह मास तिन पान कीन । सिर अद्ध उद्ध दिग वरन दीन ॥

सचिवेद अर्ध हवि पंच मंडि । दहि दर्प दर्प मन मयन षंडि ॥ छं० ५०० ॥

२४४-४६ पाठान्तर—भये । भए । आहुठ । को कोपु । विहुं । वृप ।

भए ॥ २४४ ॥ भिन । भिन । परिमाण । जिहि । दुसिष । नृप । भए । वरमान ।

॥ २४५ ॥ धरीय । मो तन पाप अपार । मो पित ताप अपार । जो तप मंडौ

निय प्रबल ॥ २४६ ॥

२४७ पाठान्तर—ब्रह्म । ताय । ध्यान । तिय । रतु । चारीय । शीस ।

मंडय । शीत । मधि । बुडय । साव । ज्योति । बंक । वाम । दषिन ॥

२४८ पाठान्तर—तिथ । किन । धार । चिन्ह । ध्यान । तिथ । पान ।

कीन । संचि । दर्प । मेन । विहसित । विहसीत । नगन । माध । अभ्य । अभ ।

धर । भूम । लूबि भूमि । मूडै । बिद । महाराव । वाव । दह । दिसा । इंद ।

विहसित्त रगर नन प्रसध साध । सिर द्रवत उदक विप प्रातमाष ॥
 चव वरष अम्भ घर धार भूमि । गिरि गुरनि गिरनि गन लूम झूमि ॥५०१॥
 परि मुद्धं उद्धं उषलंत बिन्द । गहराय बाय दह दिसनि इन्द ॥
 घर हरत अंग जल धार धार । हर थटिय गंग जट मुकट पार ॥५०२॥
 घरि ध्यांन ग्यांन तिन अग्र ईस । षंड्यौ स जग्य मंड जगीस ॥
 उर धरे देव तिन अंग गूढ । रचि पदम पाय सासन सरूद ॥५०३॥
 जुगु पानि नाभि ताली बनाय । रमि दिष्ट सिष्ट गिरवान राय ॥
 तरपटी साल सिल कमल मूर । इहि भांति भाव तप तपनि जूर ॥
 ॥ छं० ५०४ ॥ रू० २४८ ॥

कवित्त- देव चरित रमि धाइ । इक्क कर हीय मद्धि घरि ॥
 सु रचि तिथ्य अडसट्ठि । मान पहुकर प्रकास करि ॥
 दिग अंबर उर धारि । तारि तारी तप तारनि ॥
 मन सुर भाग समान । लाई राषै परि पारनि ॥
 वर तर्प चंद अन दर्प करि । तामस द्विग विकराल मन ॥
 सम गवरि अंग अंग सिष उसिष । नृपति समंतन असुर बन ॥

॥ छं० ५०५ ॥ रू० २४९ ॥

भार । सुमुप । ध्यांन । ग्यान । सरूद । पानि । सिष्ट । गिरवरन । राद । मूल ।
 इहि ॥

इस रूपक के अंत की पाच तुकों को कवि पिछले रूपक २३९ में भी कह आया है यह चंद की संस्कृत काव्य—सम शैली का एक उदाहरण है और ऐसे उदाहरण इस महाकाव्य में अनेक आवेंगे । कवियों की ऐसी निज शैलियों को देखकर भाषा के क्षुद्र और अपरिपक्व कवि झट चंद जैसे हिन्दी भाषा के वास्तविक कविराज को दोष देने लग जाते हैं परन्तु संस्कृत भाषा के महाकाव्यादि के पठित विद्वानों को चंद कवि पर तो नहीं किन्तु इन दोष देनेवालों की कुशाय बुद्धि पर बड़ा आश्चर्य होगा क्योंकि संस्कृत काव्यों तथा अन्य बड़े-बड़े ग्रंथों में प्रायः ऐसे उदाहरण मिलते हैं । देखों माघ के चतुर्थ सर्ग के २१वें श्लोक में महिरितालममाननवाशुकः । दो वार प्रयुक्त हुआ है और रघुवंश के दूमरे सर्ग के श्लोक ३१ की अंत की वृत्ति त्रित्रापितारम्भद्ववावतस्ये ॥ कुमारसंभव के तीसरे सर्ग के ४२वें श्लोक में भी महाकवि कालिदासजी ने ऐमाही प्रयोग किया है । तथा रघुवंश के सातवें सर्ग के ६० श्लोक से लेकर ग्यारहवें ११ तक के सब श्लोक जैसे के तीसरे कुमारसंभव के सातवें सर्ग के सत्तावनवें श्लोक से बासठवें तक महाकवि कालिदासजी ने प्रयोग किये हैं ॥

२४६ पाठान्तर—धार । इक । रहिय । रहीय । मधि । तिथ । अडसठि ।
 मान । उधारि । समान रषे । पारन तर्प । तर्प्य । अंग अंग ॥

शाप से विमुक्त होने के विचार से बीमलदेवजी का गोकर्ण
की यात्रा के लिये बीसल सरवर पर प्रस्थान करना

दूहा तजि तरिंदं अजमेर पुर । चित गोकुन हर थान ।
बीमल सरवर ऊपर । बीमल दिय प्रस्थान ॥
॥ छं ५०६ ॥ स० २५० ॥

तपस्विनी के शाप से बीमलदेवजी की बुद्धि का चल विचल होना

दूहा काम कुमनो उपनो । दीय तपमनी साप ॥
बीमल दे बुधि चल विचल । प्रगटि पुत्र की पाप ॥
॥ छं ५०७ ॥ स० २५१ ॥

बीमलदेवजी को सांप का काटना और उससे उनका मरना

दूहा वार रवी निधि मत्तमी । त्रि रथ मुनर मग ॥
निद्रि वेरा श्रायो कड़े । डरा भाद्रि पनग ॥
॥ छं ५०८ ॥ स० २५२ ॥

कविन देपि राज बनि ब्रध । वान को डड धारन कर ॥
बेधि पनग फन जहिम । पन्ना भर तरफत बनिर ॥
छट निद्रि वेर मग । पठ दाने का धारा ॥
एक मोजरी मदि । पनग फन बनि रकावा ॥
फिरि राय आय देर नट् । पन्ना मा न जगै ॥
भिनिय वन आघान गति । उननी कहि राजन हरवा ॥
॥ छं ५०९ ॥ स० २५३ ॥

दूहा ओपद मत्र अनत उप । फिते हर उपाय ॥
ज्यो ज्या नन लहरन चल । त्यो ज्यो इचिार राय ॥
॥ छं ५१० ॥ स० २५४ ॥

कीर्त राज मरन उपना । मत्र अनत मग उपना ॥
पठ नागिनि पापार । निरनि नय री नर विवा ॥

२५० ५१ पाठान्तर । वान को डड धारन कर ॥
पन्ना मा न जगै ॥ पन्ना मा न जगै ॥ पन्ना मा न जगै ॥

२५२ पाठान्तर । निद्रि वेरा श्रायो कड़े । डरा भाद्रि पनग ॥
पनग ॥

२५३ पाठान्तर । वान । वर । नाग । फन । बेनिर । छूणो । स० १३३०
और १६१७ में "भिति" राजन मोजरीन । को । जागी । मधि । पनग । अनि ।
आ । राय ॥

२५४ पाठान्तर उपद । उपा । ज्यो ज्यो । लहरी त्यो त्यो । इनिनी ॥

२५५ पाठान्तर — ऊपनो । उपनी । उपनी । निरमो । कीनो । इम । उचच्यो
७

तिन मुष इम उच्यौ । होइ जदवनि सपुत्तय ॥
मो असीस इह फुरो । तुम्म भोगवहु धरत्तिय ॥
जिन रथी मद्धि ऊठे असुर । धबै ज्वाल तिन मुप विषय ॥
नर भषय जहा लसकर * सहर । मिलै मनिप ते ते भषय ॥

॥ छ० ५११ ॥ रू० २५५ ॥

बीसलदेवजी के मरण और असुर हो नर भक्षण करने की
बात सुनकर सारंगदेवजी का अपनी रानी को रणथंभ
भोजना और आप उनसे युद्ध करने को तयार होना

दूहा मुनिय बात तो तात तव । हौ पठई निरथंभ ॥

मत्र वदि तिन तेग बल । जुद्ध जुन आरभ ॥

॥ छ० ५१२ ॥ रू० २५६ ॥

सारंगदेवजी की रानी गबरी का चिन्ता करना

दूहा उन गति मो गति डक्क होइ । कै अवगाने मिलन ॥

हाम मिटै दुष को मह । उह्य चिन मो चिन ॥

॥ छ० ५१३ ॥ रू० २५७ ॥

सारंगदेवजी का सेना लेकर दुंडा राक्षस से युद्ध करने को

अजमेर पहुँचना

दूहा-- एक महम भग्नि मथ्य वग्नि । मत्रठ मकर यि फेरि ॥

द्वै निमान चहुवान चदि । पटुचिय गट अजमेरग ॥

॥ छ० ५१४ ॥ रू० २५८ ॥

सारंगदेवजी का तीन दिन कोट में रहना । वहाँ असुर का नाम मिलना

और अजमेर की भ्रष्ट और भयानक दशा देखकर निता करना

कविता अति उद्यान मत्र थान । भये गट धाम भयानक ॥

दिष्ट देगि मारग । देव चिने तत्र थानक ॥

सपुत्तय । सपुत्त । असीस । भोगवा । धरत्तय । तन । मात्र उठै । भषय । सहर । मिल
मनुष भषे ।

* हि० क्रमकर । SK (ज To be skilful or clever, to do anything
skilfully and scientifically or क्रम To play or sport, to work and
कर Who or that does makes or causes) Hence a camp or
cantonment &c

५६-५८ पाठान्तर वन । हो । मो । गन । वदि । वर । जुद । १५६ ॥

इन । इक । कै । अवगति । चिन ॥ २५७ ॥ भग् । मथ । निमान । चहुवान ।

चहुवान । पटुचिय ॥ २८ ॥

२५६ पाठान्तर - उद्यान । थान । धाम । वानिक वाकै । नैनन । रईन ।
बसावौ । बसावौ । कहीय ॥

किय पिता पुत्र जुध सम असम । गिर सौ जनु सारंग गिन्यौ ॥
मन जानि असुर नर घुमि रहै । सब दुडा दुडत फिन्यौ ॥

॥ छ० ५१६ ॥ ह० २६० ॥

आना की मा का उसे कहना कि मनुष्यों को ढूँढ ढूँढ कर खाने
से ढूँढा नाम पड़ा और उसने रम्य अजमेर को वेराम कर दिया
दूहा - ढूँढि ढूँढि षाये नरनि । तार्तै ढूढा नाम ॥
देवपुरी अजमेर पुर । रम्य करी वेराम । * ॥

॥ छ० ५१७ ॥ ह० २६१ ॥

आना का माता से कहना कि अभी जाकर मैं उसे मार आऊँ
दूहा मात सुनौ तपसिन वचन । अरु दिय असिम पवारि ॥
अबहि जाय अजमेर गढ । अरि को आऊ मारि ॥

॥ छ० ५१८ ॥ ह० २६२ ॥

गवरी का आना को अमंतन मंत कहकर शिक्षा करना
दूहा गवरि अमंतन मंत कहि । रण्यमि तोहि कुमार ॥
अरि रण्यम भर नग मे । प्रजा राज मधार ॥

॥ छ० ५१९ ॥ ह० २६३ ॥

कवित्त गवरि मात सिणपवै । पुत्र आनन्द उरि निणिय ॥
मानव सो मानवह । भिरत दानव न पिणिय ॥

है । पर ना समस्त म... विजा... बड़ा भारी... मे विजा... मे से तो... अन्य कथा... आप विचार... सम्मति... है कि यदि... देनी पड़ती है... होता न...
* विराम से वेराम बना गाठम जाना है *
२६१-६२ पाठान्तर—दूहा । पाण । ताते । नाम । वेराम ॥ २६० ॥ दीय ।
अमीम । अवे । जाई । कूं । को । आऊ ॥ २६० ॥ मत । करि । रण्यमि ।
अहिर रकम भर नगम ॥ २६३ ॥

बहुत काल बहि गए। भरे जगल धर पूरन ॥
मृग मयद पडियहि। छडि पंषिय पनि मूरन ॥
ज जीव हनजि मानुल धरह। भजन घट मगन करहि ॥
उर धरनि और रण्यम कहन। आनिन रण्यम उर भरहि ॥
॥ छ० ५२० ॥ रू० २६४ ॥

दूहा उच्चरि मान ममन इह। जीवन मगन न मिद्ध ॥
दुह विधि धर वामन करी। आगधन कि विरुद्ध ॥
॥ छ० ५२१ ॥ रू० २६५ ॥

पुत्त अमन जु सिप्यो। मिप्यो उरह दहत ॥
दुदो नर दुदो भषन। न् सेवनह कहन ॥
॥ छ० ५२२ ॥ रू० २६६ ॥

आना का माता से कहना कि या तो मैं सिर समपूर्णा या छत्र धारणा
दूहा तब आनल ऐसी कहिय। मुहि मुड्डिय यह वत्त ॥
कै मिर उनहि समपि हो। कै मिर धरिहो छन ॥*
॥ छ० ५२३ ॥ रू० २६७ ॥

आना का माता से कहना कि सेवा ऐसी है कि जिस से सब
कार्यसिद्धि होती है
कवित्त मेव देव रजिये। मेव रण्यम वमि मन्त्रह ॥
मेव मिघ पनिये। मेव विष जरै न जल्लह ॥
मेव बैर भजिये। मेव रच्च पनि पाहन ॥
मेव दहै नह दहन। मेव बहु द्रव्य उपावन ॥
जिहि मेव देव रण्यम धरहि। जियन मा नन ताइ नन ॥
आमूढ दुढ धावन भषन। नहि सु देव नहि दानवन ॥
॥ छ० ५२४ ॥ रू० २६८ ॥

२६४ पाठान्तर -मिषवै। पुन। मिपिय। मो। मानव। दानव। नह।
पिषिय। आ। पषि। पष जीवनहु तजि मानुम परह। रण्यम। गहनं। आवन।
रण्यम। करहि ॥

२६५-६६ पाठान्तर -उर्चार। मु मत्र। मिद्धि। दुहु। बर। करो।
करी ॥ २६५ पुन। मिपियो। मिषो। भवन ॥ २६६ ॥

* यह रूपक सं० १६ ७ और १७७० की पुस्तकों में नहीं है और जब तक
वह किसी और प्राचीन लिखित पुस्तक में न मिले तब तक हम उसे प्रसन्नतापूर्वक
क्षेपक सजा नहीं प्रदान कर सकते ॥

२६७ पाठान्तर -सुक्षिय। वन। के। उाहि। हो ॥

२६८ पाठान्तर -र तीरे। न मेव मिघ गिरे। नउह। नतीरे। रचै।
सेवह नह दहन। द्विव्य। जिहि। नइ। सो नह ॥

आना की माता का तो उसे शत्रु न सेवने को कहना किन्तु
उसका अजमेर जाना

दूहा मात बरज्जत रत्त हुआ । शत्रु न सेव न सेव ॥
आइ अनल अजमेर बन । असुर निरप्पन भेव ॥

॥ छं० ५२५ ॥ ह० २६९ ॥

ढूढा दानव का अजमेर बन में बहुत दिनों तक मन्तु होकर रहना
सो दानव अजमेर बन । रह्यो दीह घन अंत ॥
सुन्न दिसानन जीव को । थिर थावर जग मंत* ॥

॥ छं० ५२६ ॥ ह० २७० ॥

अजमेर की नष्ट भ्रष्ट दशा और आना का खड्ग लेकर प्रेतके पास जाना
चोटक तहं सिंघ न म्रग न पपि वनं । दिमि सून भई उर जीव घनं ॥

नह मातह मंत अमंत कियं । पिय की धरनी रह तंत लिय ॥ छं० ५२७ ॥

तहें ठाम भयानक सोच तयं । तहें ठाम कला कल सोधि वयं ॥

तिहें ठाम मरं नर नारि ननं । तिहें ठाम न पंथिय पंथ कनं ॥ छं० ५२८ ॥

तिहें ठाम गजं वर बाजि ननं । तिहें ठाम न सिद्धय साथ कनं ॥

तिहें ठाम न दारिद्र द्रव्य गनं । हिय मात न तात न मोह मनं ॥ छं० ५२९ ॥

लय पग रमविक्रय प्रेत दिसं । वर बीर सु मंडिय चित्त रमं ॥

अविलंघ करो सकरं त्रिपनं । रिपुथान संपत सु भै न मनं ॥ छं० ५३० ॥

नर दिप्प अचंभ कियो मु हियं । कहि आज विधं भल भप्प दियं ॥

कुछ प्यास रु निदय राज ननं । सु गयो वर दानव ताप तनं ॥

॥ छं० ५३१ ॥ ह० २७१ ॥

आना का अपने मन में विचार कर कहना

श्लोक - मनमाधार्यं पुंसा स्याद् । विधिश्चित्ति नान्यथा ॥

ब्रह्माजा लंघनेनापि । स्वयंपूरकमाधवः ॥ छं० ५३२ ॥ ह० २७२ ॥

२६६-७० पाठान्तर--वरजन । रत । आय । अनल । निरपन ॥ २६९ ॥

सून । सुन्ना । हथिर ॥ २७० ॥

* हि० मंत = मं० मन्तु = राजा से बना है । यहाँ यह मंत्र का अपभ्रंश नहीं है ॥

२७१ पाठान्तर -- तहां । तहं । मृग । उर । वनं । मसु । पीपकी । तत ।

तत्ति । लीयं । तहां । तिहां । ठाम । भयानक । नहां । ठाम । तिहां । ठाम ।

तिहां । ठाम । नमं । तिहां रुक्क मु पंथि रु पंथि जनं । तिहां । ठाम । तिहां ।

ठाम । द्रव । लै । लग । रु । मुकिय । अविलंघ । थान । संपत । दिपि । कीयी ।

कोई । कोई आज भलो इव भ्रप दियं । बुघ । न निद्रय । दानव ॥

२७२ पाठान्तर - स्याद् । विधिश्चित्ति । ब्रह्माद्या । माधव ॥

कविन मो पूरक माधव्व । जगत ज्ञानन अधिकारिय ॥
 थावर जंगम दैन । कठिन चिना न विचारिय ॥
 सरव भुन हँ जाम । मध्य हरि दैन भुगतिय ॥
 कि कारन नर झुगे । देइ मन बछिन बत्तिय ॥
 मा पूरस चित्त धरकै नही । धरक चित्त कायर करहि ॥
 तिहि काज देषि दानव बलिय । दल बलिाट पुन उचरहि ॥
 ॥ छं० ५३३ ॥ रू० २७३ ॥

ज्ञाना का दानव को कंदरा मे देखना और उसके खड्ग मारने
 पर दानव का गाजना

पद्धरी दिप्यौ सु वीर कदल्या गेह । मैं पच हृथ्य ता हृथ्य देह ॥

असि असी हृथ्य झारहि ज्ञनक । मन महम पाइ तो डर पनक ॥ छं० ५३४ ॥

हमारे पाठको को ज्ञान जाना कि उस ग्रथ का कृतम बना हुआ कहनवालों ने ऐसा अत्यन्तभाव का बचन भी कहा है कि इस महाकाव्य के बनाने वाले को अनुस्वार और त्रिं तक का भी ज्ञान न था । परन्तु हमने उसी ग्रथ में और इसी आदि पर्व में हम स्वयं के उचित आप ही सम्मत भाषा । के श्लोक आप की दृष्टि के आगे धरे हैं कि आप न्याय कर मने और हमे श्लोक आगे इस ग्रथ में बहुत आरेगे तयोहि हमने उस महाकाव्य को कई आवृत्ति करके पढ़ा है । वैसे ही उस श्लोक को भी आप पढ़कर देखें कि पढ़न में तो यह कैसा मरठ है और अभिप्राय में कैसा विद्वानों के विचारने योग्य है । माधारण सम्बुन जाननेवाले से यह श्लोक लगना कठिन है अतएव हम उसका अन्वय नीचे सम्बुन भाषा में भी लिखते हैं

अन्वय पुना मनसा आधर्यं यत् स्यात् नत् स्वयंपूरक = माधव विधिः
 ब्रह्मजालघने नापि चिन्तन्ति अन्यथा न चिन्तन्ति ॥

अर्थ पुष्प करके मन से धार के जो काम हो सकता है उसको स्वयं पूरा करने वाला परमेश्वर (विधि) देव विधान व कर्म ब्रह्मा की आज्ञा को उल्लघन करके भी मोचता है अन्यथा अर्थात् उससे उलटा नहीं मोचता ॥

सारांश यह है कि उद्योग के ही फल देव भी देता है चाहे प्रारब्ध उससे उलटी भी हो । इससे केवळ उद्योग की प्रधानता कही है ॥

हे पाठको ! क्या आप के अपक्षपात में विभूषित हृदय में यह दोष कुछ भी जच सकता है कि इस महाकाव्य का कर्ता चाहे कोई भी हो ऐसा निर्बोध था कि जिमको अनुस्वार और विसर्ग तक का बोध न था ?

२७३ पाठान्तर — मैं । माधव । ज्ञानन । अधिकारीय । दैन । दैन ।
 विचारीय । सबं । जाम । दैन । दैन । भुगतिय । देव । नही । तिहि । दानव ।
 उचरहि ॥

अग्रोष्ठ उद्ध ऊठिय भनंक । उठतै सु रोमनि सनंक ॥
 बुच्यौ सु बैन निय सत्त मान । देपन चप्प बालक विनान ॥ छं० ५३५ ॥
 अनि सुषम वचन मधु मधुर कंन । दिण्णौ मु अम राजन मुभंत ॥
 जंभाई बीर दमनं लहक्क । उद्यौ सु रोम रोपह पहक्क ॥ छं० ५३६ ॥
 उर चंपि षग्ग मिर नाइ राज । गहगय इंद्र दानव सु गाज ॥
 ॥ छं० ५३७ ॥ ६० २७४ ॥

इस पर दानव का आना से उसके मा बाप आदि के नाम पूछना
 कविन भेद वचन तन षेद । सुतन पडुर चढि आइय ॥

उर धरद्वर कपि । सुतन प्राक्रम जभाइय ॥

चरन सु थिर मन लीन । जीव धर धर धर कानिय ॥

कौन भाव कवि चद । बलिय मान्वक रस भानिय ॥

पुच्छन सु बाल बुण्यौ बलिय । करि सु चित अतित चित ॥

को मात तान कहि नाम को । को माई साधक मु मति ॥

॥ छं० ५३८ ॥ २७५ ॥ *

हुंढ दानव का आना के सिर पर हाथ धर गह पूछना

दूहा न्वरग हथेली वाम पर । हुंढे मेरि अनन्ह ॥

करुना करि मिर हथ धरि । पूछि विवर सब गह ॥

॥ छं० ५३९ ॥ ६० २७६ ॥ *

गाथा अमुर हथेली चद । विमतार कही यह थवा र्म ॥

मुकता फल परिमान । ता मध्ये मोहीयं आना ॥

॥ छं० ५४० ॥ ६० २७७ ॥ †

२७४ पाठान्तर - रुद्रग यद्र । ह्य । थ । पाय । टाट । उठिय ।
 रोमह । बैन । सन । मान । वपु । विनान । सुषम । वचन । वगति । राज
 राजन । जंभाय । हमन । लहक । नाट । गहग इंद्र दानव कि गाज ॥

२७५ पाठान्तर - द्वर द्वर । कप । प्राकप । प्राकम । धरा धर । कानीव ।
 कौन । भाइ । भानीय । पुछन । बुण्यौ । चित अत्यन्त । नित । मुमति ॥

* इसके आगे के अर्थात् रूप २७६ म २०८ तक म १६४७ और १७७०
 की लिखित पुस्तकों में नहीं है किन्तु इधर की लिखी पुस्तकों में मिलते हैं । जब
 तक इनमें भी पुगनी पुस्तकों में ये रूपक न मिलें तब तक उनको हम क्षेपक
 कहना योग्य नहीं समझते हैं ।

२७६ पाठान्तर - वरग । कर । गह । थेली । मोंह । अनन्ह । हथ ॥

२७७ पाठान्तर - हुंढा । निकमो । विहारी ॥

† यह आज कल मोरठा छंद कहलाता है किन्तु प्राचीन समय में हिंदी भाषा
 के कवि इसको दोहा भी कहते थे क्योंकि दोहे से जितने भेद के छंद ग्रथों में लिखे

श्राना का मन में चिंता करना कि जो ढुंढा मुझे निगलेगा
तो मैं उसका पेट चीरकर निकलूंगा

दूहा आने चितिय गोम । जो मुहि ढुंढा निगलिहै ॥

इंद्र व्रनामुर जेम । निकमी उदर बिदादि पग ॥

॥ छ० ५४१ ॥ रू० २७८ ॥†

श्राना का उत्तर देना कि जिससे बीसलदेवजी का मन मंन हो गया

दूहा गवगि मात उर उद्धओ । पिन बीमल मन मैंन ॥

इत आवन मन तरमयो । सूअ तन देपन नैन ॥

॥ छ० ५४२ ॥ रू० २७९ ॥

साटक कि दारिद्र मृ दुष्ट कुष्ट तनय । नि भूमि मत्र हर ॥

कि वनिता च वियोग देव विपदा । निर्वासितां कि नर ॥

कि जन मानम रुष्ट जृष्ट जुगता । कि आपित मङ्गुर ॥

कि गान्धिन रग भग सरसा । आलगता मुदरी ॥

॥ छ० ५४३ ॥ रू० २८० ॥

साटक नो दारिद्र न कुष्ट दुष्टन तन । मत्र धरा नो हर ।

नो वनिता च वियोग देव विपदा । निर्वासितो नो नर ॥

नो सन्मानम रुष्ट जुष्ट जगता । नो श्रापिता सतु गुर ॥

मानुर्नाम्रित रग भग मरमा । ना लिगिता मुदरी ॥

॥ छ० ५४४ ॥ रू० २८१ ॥

दूहा ना दारिद्र न कुष्ट तन । ना मुगधरा रम भेव ॥

नानुरत समार सुष । नो पग रतो सेव ॥ छ० ५४५ ॥ रू० २८२ ॥

साटक नैवा दुष्ष न मुष्ष साहस रने । नैवान काल कृन ॥

नैवा मात पिता न चैव धनय । नैवान किती रत ॥

हैं उनमें सोरठा भी है अतएव चंद का इमे दूहा मजा देना कुछ जाश्चर्यदायक नहीं है ॥

२७६ पाठान्तर बल । मन । आवनम । तुम । नैन ॥

२८० पाठान्तर मत्र । देवविपदा । निर्वासितं । मानम । जुगता ।

जगता । मतगुर । मरमा । आलिगिता ।

यह भी ध्यान में रहने योग्य बात है कि पुरानी हिंरी भाषा की लिखित पुस्तकों में मृत् और नृप जैसे शब्द म्रित और नृप लिखे देखने में आते हैं ॥

२८१ पाठान्तर नां । धरा नं । ना । वनिता । ना । ना । ना । सन्मानम ।

श्रापितो । गुरं । मानुर्नाम्रित ॥

२८२ पाठान्तर—न । न मुगध । नानुरत । नरतु तूथ पग रतो सेव ॥

नैवानं हित्त मित्त साजन रमं । नैवानं किं हृष्टयं ॥
त्वं देवं तुअ सेव देव मरनं । तीयं जयं राजयं ॥

॥ छं० ५४६ ॥ रू० २८३ ॥

दूहा - तव लगि कुष्ट दरिद्र तन । तव लगि लघ मुहि गात ॥
जव लगि हौ आयी नही । तो पाइन सेवात ॥

॥ छं० ५४७ ॥ रू० २८४ ॥

दानव का आना से पूछना कि तू क्यों राज अरत्त है
दूहा आलिंगन दै हृथ्य धरि । अरु पुच्छिय इह वत्त ॥
जा जीवन रत्ती जगत । तू क्यों राज अरत्त ॥

॥ छं० ५४८ ॥ रू० २८५ ॥

आना का बीसलदेवजी दानव को उत्तर दे कहना
दूहा जिय न रत नह एन दुष । भूमि न घर मुझ देव ॥
नित उचाट निउँ कै मरौ । तुम पय रत्ती सेव ॥

॥ छं० ५४९ ॥ रू० २८६ ॥

दूहा राजा ज दिन बुलाई हौ । मुह मुझै इह मत्त ॥
कै सिर तुम हि समप्पि हौ । कै मिर धरि हौ छत्त ॥

॥ छं० ५५० ॥ रू० २८७ ॥

इह धरती मुझ पित प्रपित । आदि अनादि सु देव ॥
सो मगन तुम पाय हौ । आयी आतुर सेव ॥

॥ छं० ५५१ ॥ रू० २८८ ॥

दूँढा दानव का प्रसन्न होकर आना को अजमेर का राज देना

त्रोटक सु प्रसन्न देखित ईत तनं । नर रूप धरन्न कियो सु मनं ।

तुअ पुत्रह पौत्र वध उरनं । जन मानस राज करो धरन ॥ छं० ५५२ ॥

अमि हृथ्य लिये अममान गयी । पग टोडर कदल ही जु ठयो ॥

तव पुञ्जन कौ गविवार कह्यौ । चहुआन सु आनल राज दयो ॥

॥ छं० ५५३ ॥ रू० २८९ ॥

२८३ पाठान्तर - दुष । मुष । रम । पित । मित । मजन । तु । तुष ॥

२८४-८५ पाठान्तर - नव । त । नही । नी । २८४ ॥ दे । हष ।
पुच्छिय । रत्ती । सो तू कैम अरत्ति । २८५ ॥

२८६ पाठान्तर - रत । तहि । भूमिन । निहि । जीऊ । जिऊ । कि ।
मरौ । वें । रत्ती ॥

२८७-८८ पाठान्तर - जा । दिन । मुहि । मूझै । ममि । कै । हौं । कै ।
हूं । हों । छत्र ॥ २८७ ॥ प्रमिन । हों । २८८ ॥

२८९ पाठान्तर - प्रसन्नह । धरन । कीयो । मानम । करै । हृथ । अममान ।
कूं । पूजन । कों । चहुआन । चाहुवान । आनल ॥

ढुंढा का नेम ऋषि के उपदेश से गंगा की ओर जाते हुए विल्ली पहुँचना

पद्धरी- नव द्वार रुक्मिण्य नप पवन जोर । आयौ सु नेम रिष तथ्य ठौर ॥
 दिषि रिष्य लगि निसचर मु पाय । कहि रिष्य कवन तो काय ॥ छं० ५५५ ॥
 बीसलह राज कथि पुव्व कथ्य । जरी ताप उधरौ केम नथ्य ॥
 तुअ षित्रि कौन इह ठांउ धारि । कामी मु जाइ लै निथ्य धारा ॥ छं० ५५६ ॥
 तें पाय लीन आनन ममं । निहि ठौर मव्व छुट्टे मु कर्म ॥
 मुनि श्रवन उद्यौ रापिम अकाम । आयौ मुपंथ क्रमि दिन्नी वासा ॥ छं० ५५७ ॥
 सुर थान निगम बोधह सुरंग । जल जमन आइ रापिम ममंग ॥
 कालिन्द्र दह मु अति गहर वारि । पावघ्न परम मांतल मु चारि ॥
 ॥ छं० ५५८ ॥ ॠ० २९१ ॥

ढुंढा का हारिफ ऋषि से मिलना, अपनी पूर्व कथा कहना और
 तीन सौ अस्सी वर्ष महातप करके ऋषि उपदेश ग्रहण करना

कवित्त सीतल वार मु चंग । तहां गय चत्ति निमाचर ॥
 लगि विपास म्रम अग । वारि विन्नी अंदोलि वर ॥
 भी सीतल सब अंग । करै अति वारि विहारह ॥
 रिष हारिफ गुह बगै । सोर मुनि आय निहारह ॥
 दिषि प्रवल रिष्यि पूछ्यौ प्रसन । कवन रूप कीलै मु जल ॥
 निसि मद्धि अद्ध रापिम वचहि । पाइ परम पुव्वह सकल ॥
 ॥ छं० ५५९ ॥ ॠ० २९२ ॥

दूहा— दिग जुग्गिनिपुर सरित तट । अचवन उदक सु आय ॥
 तह इक तापस तप तपत । बीली ब्रह्म लगाय ॥
 ॥ छं० ५६० ॥ ॠ० २९३ ॥

२९० पाठान्तर दीयो । आनलहु । कीय ॥

२९१ पाठान्तर नेम । तथ । नथ । ठार । रिष । लगि । पाइ ।
 रिषि । बीसलह कथ कथि राज कथ । जोगे । उद्धरी । नथ । तुव । कौन ।
 इहि । ठाउ । जाउं । त्यौ । तिथ । आनंत । आनत । अधम्म । तिहि । ठोरि ।
 सब । ति । क्रम्म । उड्यो । दिलि । सुर सुर । थान । आय । राषिश्रमंग
 कालिंद । पावन । परंम । सू सारि ॥

२९२ पाठान्तर - तिहां । चलि मु निसाचर । म्रम । पीनो । अंदोलि ।
 मय । मव्व । देह । करै । रिषि । पुछ्यो । कीली । मद्ध । चवहि । पाय परसि
 गध अप्प सकल ॥

२९३ पाठान्तर— तहां । भाइ । लगाई । लगाइ ॥

कवित्त ताली पुल्लिय ब्रह्म । दिष्पि इक अमुर अदम्भुत ॥
 दिष्प देह चष सीस । मुष्प करुना जम जप्पन ॥
 तिन रिषि पूछिय ताहि । कवन कारन इत अगम ॥
 कवन थान तुम नाम । कवन दिमि करिब सु जंगम ॥
 मो नाम हुड बीमल तपति । साप देह लम्भिभय दयत ॥
 छट्टन मु तेह गंगा दरम । तजन देह जन मंत कृत ॥

॥ छं० ५६१ ॥ रू० २९४ ॥

दूहा तजन देह जन मंत कृत । सजन अजैपुर राज ॥
 निय नन अमि वर षंडि हौ । मधि गंगा रिपराज ॥

॥ छं० ५६२ ॥ रू० २९५ ॥

तन मु पाप तापह तपन । क्रिम उधार मो होइ ॥
 तुम रिपिराज वचिष्ट वर । द्यौ उपदेसह मोइ ॥

॥ छं० ५६३ ॥ रू० २९६ ॥

तव मुनि वर हमि यो कहिय । तिन तप लहिय न राज ॥
 अन धन मुन दारा मुदित । लहौ सबे मुप साज ॥

॥ छं० ५६४ ॥ रू० २९७ ॥

तव मु तहा उपदेस लिय । लगि धारन हरि ध्यान ॥
 तपन तप्प तिन रिषि गुहा । अंग उपज्यौ ग्यान ॥

॥ छं० ५६५ ॥ रू० २९८ ॥

रिष मु उठिठ तीरथ गयो । दरी मु दानव छडि ॥
 जो लौ जाऊ निथ्य करि । तो लौ तू तप मंडि ॥

॥ छं० ५६६ ॥ रू० २९९ ॥

गाथा—तपन निमाचर तप्प । वीते बरप तीन मै असीयं ॥
 भय वाधा विण अंगं । लगौ राम धारना ध्यान ॥

॥ छं० ५६७ ॥ रू० ३०० ॥

२९४ पाठान्तर शोचिय । ब्रह्म । दिषि । अदम्भुत । शिष्य । चषु । रम
 जंपत । पुछिय । थान । नाम । करीय । नाम । नृनि । थाप । लभीय इडल ।
 सजन । कृत ॥

२९५-२९६ पाठान्तर -कृत । हो । हो ॥ २९५ ॥ मंइ । मोइ ॥ २९६ ॥
 यो । लहौं । मवे ॥ २९७ ॥ उडा ध्यान । तप तप्प । अंग अग उपज्यो ग्यान ।
 अंग उपज्या ग्यान ॥ २९८ ॥ ऊठि । दानव । लौं । अऊं । निथ तू ॥ ॥

३०० पाठान्तर -पनिचर । नां । मै । भो । वादक मत्र अग । लगौ ।
 ध्यान ॥

दूहा - बुंढा रिषि उपदेस लिय । तिहि ढिग दरिय उधोर ॥
वरष तीन सत असिअ लगि । महा प्रबल तप घोर ॥

॥ छं० ५६८ ॥ सू० ३०१ ॥

अनंगपाल राजा का बिल्ली बसाना

दूहा पंडव बंस अनंग तप । पति हथिनापुर ठाम ॥
एक समै जमुना तटह । बसिय राज तहें गान ॥

॥ छं० ५६९ ॥ सू० ३०२ ॥

अनंग पाल तूअर तहां । दिली बसाई आनि ॥
राज प्रजा नर नारि सब । बसे सकल मन मानि ॥

॥ छं० ५७० ॥ सू० ३०३ ॥

अनंगपाल की भुता का निगमबोध कालिंदी तट पर गौरी पूजने जाना

कविन अनंग पाल तूअर । नरिद धरमाधि राइ गुर ॥
मुना नाम अनि सुभग । वरष अट्टह सरूप वर ॥

सषो सु आनि समानि । सीत गुन वर अट्टह तर ॥
सावन भावन माम । गविरि नित करै पुज्ज उर ॥

निगम-बोध कालिदि तट । गई सकल पूजन वरि ॥

तिहि काल मेघ वरषट्ट प्रबल । * भई लगि भीजन कुंअरि ॥

॥ छं० ५७१ ॥ सू० ३०४ ॥

अनंगपाल की सुना का दूँटा को पूजना और उसका वारण पूछना

कविन अनंगपाल तूप सुना । संग पुत्री ति पच गिन ॥

प्रोहित पुत्री गक । पुत्रि मा चंडि मेव हिन ॥

सब मिलि जमना नीर । गई अस्वात सवारि ॥

दिपि देवल अत पिड । तेड दूँटा तप धरिअ ॥

सब मिलि गु ताहि पुज्जा करिय । अन्ध धन तूअ माय दिन ॥

दिन अवधि दहन पुत्रिय विनह । को तुम वारण काम विन ॥

॥ छं० ५७२ ॥ सू० ३०५ ॥

३०१ पाठान्तर - तिहि कालसंग वरष अट्टह तट पर गौरी पूजने जाना

३०२-३ पाठान्तर - ठाम । यमुना । तहां । राम । तीअर । विविदि

आनि । प्रज । बसे सकल मन आनि । मानि ॥

* भई लगि भीजन - यह प्राचीन हिन्दी का वाग्गीति अर्थात् मुहावरा है ।

३०४ पाठान्तर - तूवर । राय । अट्टह । सषी आनि समांग । आनि ।
समानि । सीत । अठोतर । सावन । स पुज वर । निगमोध । कालिदि । गई ।
वरषि । लगि भीजन । कुवरि ॥

अनंगपाल की सुता का दूँडा को वर चाहने को पूजने का कहना
गाहा इह सुनि अनग नरिद । पुत्री सित पंच अवर दुज राज ॥
वर चाहत तुम पास । ए वर बीर वास इक ठाम ॥

॥ छ० ५७३ ॥ ६० ३०६ ॥

दूँडा का राज-त्रियों की सेवा से संतुष्ट होना

दूहा दिल्ली ढिग गहरिय गुफा । दृष्टा तहा बयउट ॥
अठ्ठीत्तर गौ राज त्रिय । सेवा करत मु नुठ्ठ । छ० ५७४ ॥ ६०३०७ ॥

दूँडा का वर देकर काशी को उड़ जाना

पद्धरी दिय बाच बाल दानव मु राज । सज्ज्यौ मु आप वर बचन माज ॥
उडि चन्चौ आप कामी ममग । आयौ मु गग तट कज्ज जग ॥ ५७५ ॥
सन अट्ट पड करि अग अडि । होमे मु आप वर मद्धि हडि ॥
मग्यो मु ईम पहि वर पसाय । मन अट्ट पु । अवनरन फाय ॥ ५७६ ॥
नन रह्यौ जोति मय देव थान । भिडि ताहि अठ्ठरिय करत गान ॥
॥ छ० ५७६ ॥ ६० ३०८ ॥

दूँडा का फिर जन्म लेना और उसका वतानन चंद्र का दर्शन करना

दृष्टा उम आनम उटार रि । जन्म लियो मथ जा ।
गा वनन कवि नद न । वरन्दा उचित वरा ॥ ५७७ ॥ ६०३०९ ॥
दूँडा का वर देना और काशी में घटकर नन शशचा
दूहा नर दृष्टा वर दान त्रिय । सुनि नन अट्ट पनअ ॥
सामी माय न जग्य त्रिय । गिन पट किय नन ॥ छ० ५७८ ॥ ६० ३१० ॥
दूँडा के दानव शरीर का भान और स्वरूप दर्शन
कविन अगट मान प्रमान । पच सै दध्य उने कह ॥
उ उची उनमान । किनय अठ्ठिनट प्रिय कह ॥

३०५ पाठान्तर — अनगपाल पुता मु एव । नर मा नी राज सत ।
ता मड । भाउ । अमुसा । अठ्ठिनान । मर । त्रिय । दृष्ट । वरिय । पूजा ।
करीय । द्य । देव । पुत्र्यौ । नितं ॥

३०६ पाठान्तर — अगग । पुत्री वर । काम वास ॥

३०७ पाठान्तर — उठी । गुफा । दूँडा । वरठ । अठानर । मा । नुठ ॥

३०८ पाठान्तर — शीय । दानव । म । अप । पचन । चन्चौ मग ।
कज्ज जग । अठ अवि । म । मद्रि । हवि । मद्य । म । यमाई । पसाड । अठ्ठ ।
अठ । अतवार । काइ । उगानि । थान । अठ्ठरीय । गान ॥

३०९-१० पाठान्तर — उधार लीया । भूअ । आइ । वतान । चरनें ।
वरन्चौ मरुल बनाय ॥ ३०९ ॥ दूँडे । वरदान । अठ । कीय । सत्त । कीय ॥ ३१० ॥

हृथ्य षडग विकराल । मुप्य ज्वालंघन मद्दह ॥
आनल दिन्नो राज । गयो रापिम तन मद्दह ॥
जोगिनिग गुफा बोधह निगम । तप आदर किन्ना मु तन ॥
साधत पवन तप उग्र करि । इम र्प्या उद्धार मन ॥

॥ छ० ५८० ॥ ह० ३११ ॥

ढूँडा का दिल्ली में पाषाण रूप हो जाना और स्त्रियों का उसे पूजना

कवित्त असी वरम मन तीन । गुफा किन्नी तप भारिय ॥
वैम वंस पित्रिअ ध्रम । भरै जमना जल नागिय ॥
मारंग बज्यो वाउ । घटा वंघे जल वृद्धी ॥
दोरी मव गृह मझ । रूप पाषाण गु दिद्धी ॥
मिलि नारि मवत अचरिज्ज करि । जल धोए उज्जल कन्यो ॥
सापंड नप दीपह चरिच । मिन मन गिन्नी आचन्यो ॥

॥ छ० ५८१ ॥ ह० ३१२ ॥

ढूँडा का अनेंगपाल की मुना को धीर पुत्र होने का वर देना

कवित्त दिव गिनक वरदान । कुष्य उपजे नाग भर ॥
शीरा रग जान । गृह नउ न तीर नर ॥
वीर जोनि अबतार । भट्ट जिद्धा तन भारिय ॥
नयन जोनि संजोगि । पत्ति कुठ पिता संधारिय ॥
द्विप मु नयन गृह करि प्रनिद्ध । कियो पाव उन धूव करि ॥
उपपजे नारि अति रूप तिन । तेन पिह्र जायै सुधर ॥

॥ छ० ५८२ ॥ ह० ३१३ ॥

३११ पाठान्तर तदिअ । भान । प्रमान । य । न । व । न । हृथ ।
मुप । आनल । दीनी । जो पिनी । कीनी । पयत्र । रापी ॥

३१२ पाठान्तर अशी । वरप । शन । कीनी । भारीय । पपी अधम ।
षित्रीय । अध्रम । पित्रिय अध्रम । भरै । जमना । भारीय । न रीय । मारंग ।
बज्यो । बज्या । वाय । वघे । वुठी । दोरी । मझ । गुद्धिठी । दीठी । अरिज ।
धोय । उजल । तन मनि सुधि आवन्यो । तन मन सुधि आ । न्यो ।

३१३ पाठान्तर -दीय । वीरल । वरदानि । कुष । कुष्य । उपजे । महा ।
रवा । उतान । ज्योति ॥ जीटका । भारीय । पति । संधारिय । संधारीय ।
देवे । प्रसिद्ध । कीयो । दूव । उपज्जी नारी । उपनी । तेल लिन जाइ सुधिर ।
तेन लित जानै सुधर ॥ *

ढूँढा का घर देकर काशी जाना, वहाँ दानव-योनि से मुक्त हो
 भ्रवतार लेना-सोमेसर के परिग्रह के प्रबंध के लिये क्षत्रियों
 का उत्पन्न होना-जिनमें से बीस अजमेर में और अन्य
 अन्यत्र हुए-सोमेस के पुत्र पृथ्वीराज हुए

कवित्त बर दिनी ढूँढा नरिन्द । जाय कासी तट सिद्धी ॥
 अस्त लियौ अवतार । भट्ट रसना रस पिद्धी ॥
 सोमेसर परिग्रह । प्रबंध सित उपने षिट्रि नर ॥
 हुए बीस अजमेर । विए उप्पने अपर धर ॥
 सोमेस बीर सुत पिथ्थ हुआ । ठोर ठोर ऊपजि वलिय ॥
 विधि विधि विनान अवलोक गति । अवर गूर आए मिलिय ॥

॥ छं० ५८३ ॥ रू० ३१४ ॥

पृथ्वीराजजी के परिग्रह के सामंतों के नाम और जन्म
 स्थानादि का वर्णन

कवित्त - हुआ निड्डसर कनवज्ज । जैन मलय अद्बुगह ॥
 मंडोवर परिहार । करपि कंगुर हाहुलि दिह ॥
 बलि भद्र मु नागौर । चंद्र उपजि लाहौर ह ॥
 दिल्लिय अना ताड । विया धर गामन नौर ॥

३१४ पाठान्तर दीना । दीनी । निना । निधी । जैन । मलय । अद्बुगह ।
 रज । सोमेसर । परिग्रह । निन । जैन । उपन । पि । कंगुर । हाहुलि । दिह ।
 वीग । अने । अवर । विया । उर्पि । विनान । आप मिलिय ।

३ पाठको का उक्त अर्थ है : फिर मावधान । सोम पदना । अद्बुगह । मलय
 कवि उक्त अर्थ है : पृथ्वीराजजी के अन्नादि की सेवा में भूमिगत आकर जन्म
 वर्णन करता है ॥

३१५ पाठान्तर निडर । निडर । अने । जैन । मलय । अद्बुगह ।
 उपजि । अना ताड । मयना गसदे आउद । गह । हाहुलि । विया । प्रदीराज ।
 परिग्रह ॥

इस अर्थ में कवि ने पृथ्वीराजजी के सामंतों के नाम और उनकी उत्पत्ति व
 स्थानादि का वर्णन करना प्रारंभ किया है । यह विषय पुराण-योनाश्रो के ऐति-
 हासिक गोश्री में बहुत उपयोगी होने जैसा है, किन्तु इस ग्रन्थ के अद्वितीय होने में भी
 एक प्रमाण रूप ही सक्ता है और यह भी भले प्रकार ध्यान में रखना जैसा बात है
 कि यहाँ चंद्र अपनी उत्पत्ति लाहौर की अर्थात् "चंद्र उपजि लाहौरह" कहता है ।
 इस महाकाव्य में बहुत से पंजाबी भाषा के शब्द मिलने से पुरातत्त्व-वेत्ता विद्वान
 चंद्र की जन्मभूमि के विषय में पंजाब देश का अनुमान किया करते थे और

राम दे राब जालौर घर । गोईद गद्द धामनि ग्रने ॥
दाहिम्म बयाने उपनौ । प्रिथिराज परिघह वसे ॥

॥ छं० ५८४ ॥ रू० ३१५ ॥

पंजाबी अति वृद्ध गृहस्थ भी अपने देश के महाकवि चंद का नाम वंशपरंपरा से आज तक सुनते चले आते हैं परंतु अब हमको इस बात का निश्चय हो गया और पंजाब देश हिन्दी भाषा के काव्यों की अनुक्रमणिका में पहिली मंथ्या पर जा स्थापित हुआ क्योंकि अब तक इस महाकाव्य में प्राचीन कोई अन्य काव्य नहीं उपलब्ध हुआ है। कोई कोई विद्वान जो यह कहते हैं कि चंद कवि का होना केवल इसी महाकाव्य से विदित होता है, उनका अजमेर नगर के कैमरगंज में चांद बावड़ी अपने नेत्रों में देखनी चाहिये और चंद के पुरुषार्थों का बनाया हुआ भाटाबाव भी उसी नगर में नारागढ़ को जाने हुए दृष्टि गोचर करना उचित है जो अजमेर के भाटो के कबजे से निकलकर बहुत समय तक टोक के नद्वाब साहब के अधिकार में रहें हैं। फिर उन्होंने एक मोची को चांद बावड़ी दे दी थी। अब म्युनिमीपैल कमैटी ने उस की चारों ओर की दीवार बना दी है और इस बावड़ी के चारों ओर एक बागीचा भी था जिसका हामल कुछ छोड़े दिनों तक म्युनिमीपैलीटी में जमा होता रहा है और अब वह बागीचा काटकर वहां बस्ती बसा दी गई है। चांद बावड़ी में नीचे उतरने दाहिने हाथ की दीवार में प्रगमति का स्थान बना है जिसके पाषाण लेख को एक ८३ वर्ष का मुसलमान फकीर कर्नेल टाड साहब का ले जाना कहता है। इसके महावरदान द्वार के दोनों ओर एक एक पत्थर के फूल खुदे हुए हैं कि जिसको अंग्रेजी में lotus अर्थात् कमल की जाति का फूल कहते हैं। यह फूल शिल्पशास्त्र के सिद्धान्तों में विज्ञ विद्वानों को बावड़ी की अति प्राचीनता सूचन करने वाला दृष्टि आवेगा। चंद के विषय में कुछ और भी प्रमाण हमारी रचिन पृथ्वीराज रासे की प्रथम संरक्षा में पाठक देख लें। इस महाकाव्य में प्रायः फारसी शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं। उनके विषय में हमने अन्यत्र कई एक प्रमाण प्रवाशित किये हैं, परंतु यह भी विशेष करके हमारे पाठकों के ध्यान में रहने जैसी बात है कि चंद जिस समय लाहौर में उत्पन्न हुआ था उसके १०० वर्ष पहिले से वहां महमूदी सन्तान का राज्य था। फिर क्या कोई यह अनुमान कर सकता है कि उस समय की हिन्दी में एक फारसी भाषा का शब्द नहीं मिल सकता था ! इन रूपकों में जिन जिन सामंतों के नाम आये हैं उनका पूरा पूरा वर्णन हम ग्रंथ के पूरे छप जाने पर लिखेंगे क्योंकि अभी हमारा काम केवल मूल पाठ शोधकर प्रकाशित करने का है ॥

पद्धरी—उतपत्ति वास सामंत चंद । पाधरी छंद ब्रह्म सु बंद ॥
 दस तीन हुए दिल्ली प्रमान । हरिसिं- वसै गढ़ह बयान ॥छं० ५८५ ॥
 जैसलहमेर अचलेस भान । पज्जून वसै चीतोर थान ॥
 कलि कुंड हुआ जंधार भीम । चहुआन आन रषैत सीम ॥छं० ५८६ ॥
 बड भ्रात छोरि लग्गो मु पाइ । चहुवान मु वर सामंत राइ ॥
 समियांन गढ़ह नरसिंघ राइ । पित मात छोरि आए सु भाइ ॥छं० ५८७ ॥
 देवरा धीर रिनधीर सथ्य । पछिवान देस प्रिथिराज तथ्य ॥
 जंधार भीम गढ़ जून वास । किन्नो सु जुद्ध भीमंग आम ॥छं० ५८८ ॥
 लग्गो सु लोह लिन्नो दिलेस । मारंग राइ मोरी नरेस ॥
 बारडह राइ सहमो करन्न । असिर वसै गढ़ आममन्न ॥छं० ५८९ ॥
 जुध करै जित्त कन्हति राइ । चहुआन सूर उप्पारि घाइ ॥
 सेवक्क कीन अपै मु जोर । तेजल्ल डोड वामी जुनोर ॥ छं० ५९० ॥
 कैमाम मद्धि वलवन वीर । लग्गो मु साइ चहुआन धीर ॥
 तारन्न सूर भटनेर वास । प्रिथिराज पाइ कीनी सु आस ॥ छं० ५९१ ॥
 भौहा चदेल गजनीय सेव । लग्गो मु घाव झंन तेव ॥
 उप्पारि लियो मामत राव । कीनी मु सेव अपह मु भाव ॥छं० ५९२ ॥
 अमरी चदेल माच्यौ सकज्ज । भौ हा चदेल दीनो सरज्ज ॥
 पानीय पथ उत्तन्न देस । दीनो मु फेरि दिल्ली नरेस ॥ छं० ५९३ ॥
 कनवज्ज राइ झुंजंत ताम । रण्यो मु अप वलि जुग नाम ॥
 चाळुक्क पाट भारा भुअंग । रण्यै मु कचरा पि थ रग ॥छं० ५९४ ॥

३१६ पाठान्तर -उतपत्ति । उतपान । वाश । वरनीन । चंद वनेनि ।
 बंध । दग । हा । प्रमान । गढ़ह । बयान । जेधलह । जेमल्लह । भान । पाजुन
 पूजन । वमे । थान । कुंड । हुवे । हुयो । चहुआन । आन । नपेनि । आनर
 रषेनि । भ्राण्ट । लग्गा । सू । पाय । चहुवा न राई राय । समियांन । गढ़ ।
 राय । छारि । भाय । निग्धीर । रनधीर । पछिवान । देश । प्रिथीराज ।
 पृथीराज । तथ्य । जून । वाश । कीनी । सु लिन्नो । दिलेश । राय । नरेश ।
 राय । सह । मो । करन । आममन । करे । जित । कन्हानराय । चहुवान ।
 उपार । उप्पार । सेवक । ककीन । अपै । ते जल । जुनोर । गढ़ । लग्गा ।
 पाय । चहुवान । चहुवान । तरन । वाश । प्रिथीराज । पाय । सू । भौहा ।
 भौहा । गनीय । बूंदी राज्य के पुस्तकालय की पुस्तक लिखी सं० १९५४ मे लग्गी
 तेव के स्थान में "इम अप्प अप्पह मु भेव" करके पाठ है । और छंद ५९१ पिछली
 सुक उममें है ही नहीं । लग्गा । झुंजंत । उगारि । लियो । किन्नी । चदेल ।
 सकन्न । भौहा । भौहा । चंदल । सूरज । सुरज्ज । पानीय । उतन । उत्तन ।
 देश । सू । नरेश । कनवज्ज राज झुंजंत ताम । जुग । फग । नाम । चालुक्क ।

जावलो जल्ह दळिषनी देस । प्रिथिराज राइ किन्नो प्रवेस ॥
 सतनंज नगर दीनी उतन्न । पूरन्न माल प्रिथिराज तन्न ॥छं० ५९५॥
 सूरत्ति वाम चहुआन राइ । कडघी सु भ्रान रण्यो सु दाइ ॥
 बडगुज्जरहराम अल्ली नरेम । दिन प्रति पनि भंजै मदेस ॥छं० ५९६॥
 मुक्कले दून प्रिथिराज तथ्थ । सेवा सु पाड उणपर जु हथ्थ ॥
 प्रिथिराज ताहि दो देस दिद्ध । मारुन पांन अल्ली प्रमिद्ध ॥छं० ५९७॥
 करि वास तब्ब गुज्जर निमंक । मारयो पांन आलील बंक ॥
 हडा हमीर नैन वारिद्ध । लगे सु पाह दह देस दिद्ध ॥छं० ५९८॥
 पेता पंगार है भ्रात राइ । परयो दु काल देस सु भाइ ॥
 दिल्लीय देस गुदुडा सु मडि । रण्ये सु वाम भट सुभट सुट ॥छं० ५९९॥
 परमार कनक जैचंद वाम । किन्नो सु पन इरु पात्रि दाम ॥
 लिय पात्र ग्रहो प्रिथिराज देस । लग्यो सु पाइ आयो नरेम ॥छं० ६००॥
 माणुलो महममल मान पाप । नप करन अनंगह गयो रण्य ॥
 लग्यो सु पाइ प्रिथीराज आइ । दीनी सु देस पट्य माइ ॥छं० ६०१॥
 अवनार लियो दिल्ली नरेम । तव हुण मन मामंत भेम ॥
 ॥ छं० ६०२ ॥ रू० ३१६ ॥

कविन ॥ हुंडा नाम दानव उतंग । दियो फल अब विसाउ ॥
 बदि लान नृप राज । आप फिर गेह सु चाल ॥
 सत्त भाग छह अग । बटि दिय भ्रत समानं ॥
 तिनह सूर मामंत । किति रण्यन चहुवान ॥
 रजमेल चंद फल अमिय प्रथु । सबर साहि मोपन सु गहु ॥
 इकदस समंत पंचह समै* । भए धान पंचम सु पहु ॥

॥ छं० ६०३ ॥ रू० ३१७ ॥

रण्य । पिष । रण्ये सुकचरापिथ रग । जावले जल्ह दिषिनीय । देश । दपनीय ।
 प्रिथीराज । राय । कीनी । दिनप्री । उतंत । पूरन माल । प्रथीराज । तंन ।
 पूरति । त्रात । बडगुज्जर रांय । अली । नरेश । सुदेश । मुकले । पृथीराज ।
 तव । पाय । सु । प्रिथीराज । देश । दिघ । अली । प्रसीद्ध । तब । गुजर ।
 मारीयो । हाडा । हामा । दमीर । नैन । लगे । पाय । पेतल पंगर । परियो ।
 देमां । भय । बिलिय । दलीय । देश । गुडा । भट्ट । जैद । पात्रदास ग्रही ।
 प्रथीराज । देश । ३ये । मान । पषि । करित । रिषि । प्रथीराज । आय । कीनी ।
 षठूच । लीयो । दिली । सित्त ॥

३१७ पाठान्तर—हुंडु (नाम * विशेष है) उतंग । विसालं । गेहे ।
 बालं । अग्र । भूत । समानं । चहुवानं । अति प्रथम । अभिय प्रकाल । सगह ।
 किक । सर्वत । सबन्न संवत ॥

आना राजा का उजड़ी हुई अजमेर को फिर बसाकर राज करना
बूढ़ा—अनल आनि मातह मिल्यो । कहि सब बत्त सुनाइ ॥

लोग महाजन संग लै । भूमि बसाई जाइ ॥

॥ छं० ६०४ ॥ ६० ३१८ ॥

पट्टरी—आना नरिंद अजमेर वास । संभरीय कीन सौवन्न रास ॥

नियनाम कह्या आना नरिंद । अरि धरनि बीर मंझौ सु दंद ॥ छं० ६०५ ॥

ग्रामान ग्राम तोरन उतंग । बन बद्धि कद्धि निधि निधि पुरंग ॥

पसु पंषि सद श्रुत मंडलेस । जल न्हान दान ब्रह्मान मु देस ॥ छं० ६०६ ॥

हारम्य रम्य फिरि मंडि लोइ । दाबिद्र दीन दोसै न कोइ ॥

चौघट्टि सत्त बरष प्रमान । आना नरिंद तपि चाहुवान ॥ छं० ६०७ ॥

जैसिंह जी का गद्दी पर विराज राज करना

षग धम्म देस दिय पुत्र हृष्य । जैसिंधदेव तपि राज तथ्य ॥

छिति छत्र सीस जैसिंधदेव । निधि लई बीर बीसल पनेव ॥ छं० ६०८ ॥

बिटु लीय बीर आना नरिंद । बीसल तडाग मधि द्रव्य कंद ॥

पायौ न बीर तिन द्रव्य छेह । कंचनह काम मंडाय गेह ॥ छं० ६०९ ॥

सब द्रव्य दीन तिन विप्र हस्त । भंडार धरिय धन धम्म वस्त ॥

श्रुति मुनिहि श्रवन जंपत पुरान । माधरम करम चलि चाहुवान ॥ छं० ६१० ॥

कलि नीनि गरुअ गहि मुक्कि । कुल रीनि चित्त रचक न चुक्कि ॥

सों बरम अट्ठ तप राज कीन । आनद मेव सिर छत्र दीन ॥ छं० ६११ ॥

आनन्दमेवजी का राज करना

तहां तपि तेज आनन्द मेव । बराह रूप दिष्यो सु देव ॥

धरनी विहार आयास माद । मंझौ सु राज पहुकर प्रसाद ॥ छं० ६१२ ॥

सोबरष राज तप अंत कीन । सिर छत्र सोम पुत्रह मु दीन ॥

सोमेश्वरजी का सिंहासन पर विराज राज करना ॥

सोमेस सूर गुज्जर नरेम । मालवी राज सब पग पेम ॥ छं० ६१३ ॥

* यह पाठ हमने मं० १८५९ की पुस्तक का रक्खा है किन्तु मं० १६४७, मं० १७७० और सं० १८४१ की प्रति में "डक दम सवत पंचहू समै" है । इनमें से जिसको विद्वान ठीक समझें उसे ग्रहण करें ॥

३१८ पाठान्तर अनलि । अनलि । सुनाय । लोग । बसाईष । बसाइय । जाय ।

३१९ पाठान्तर—आना । नरिंद । नरद । संभरीय । सौवन्न । राशि । नाम । आना । मंझौ । तोरन । वद्धि । कद्धि । पुरंग । पष । सदस्तुत । मंडलेस । न्हान । दान । हारम्य । मंड । लोई । लोय । दाबिद्र । दीन दीन । दोसे । कोई । चौ । बढी । सत । प्रमान । नरिंद । चाहुवान । धम हृष । हृष्य । तप । छत्रसीस ।

मारू बजाइ भट्टीन थान । घळ भोमि लई बल चाहुवान ॥
 दिल्लेस ग्याह तोंवर घरेम । निह ग्रम्भ भयो पीथळ नरेम ॥छं०६१४॥
 आनन्द राज नंदन मु सोम । मोरिया दलनि तिन कियो होस ॥
 निय पुर मु नयर सुर लगि भोम । आनन्द केलि अजमेर भोम ॥
 ॥ छं० ६१५ ॥ रू० ३१९ ॥

सोमेश्वर जी की शूरता का संक्षिप्त वर्णन

कवित्त जिहि सोमेमर सूर । सूर जित्त पुरमानी ॥
 जिहि सोमेमर सूर । चडिबि गुज्जर घर भानी ॥
 जिहि मोमेमर सूर । लियो नाहर परिहारिय ॥
 बल उपम कवि चंद । चंद राहा जिम मारिय ॥
 बर वीर धीर धारह धनी । संभरि बैरिन भंजयो ॥
 डक दौरि गौर राजौर वह । पां बड गुज्जर गंजयो ॥

॥ छं० ६१६ ॥ रू० ३२० ॥

जैमिह । निय । वीर मड । पनैव । वंदुनीय । विट शीप । नरिद छैह । देह ।
 काम । यैह । गैह । दिन । भंडारि । धरन मुनहि । जपन । पुरांन । चाहुवांन ।
 गरुव । गरुव मुक्ति । ऊळि । गीन । चिन । रचक । चुकि सी । अठ । तिहां ।
 नगि । रूप्य । देव्यो । गद्द । प्र । द । सो । सोम । मोमेम । भूरा गुजर । बग ।
 पैम । मारू । बजाय । भट्टी । थान । लइ । बल । चाहुवान । दिलेस । दिल्लेस ।
 तुंवर । घरेश । गभं । ग्रभ । पिन्यड । पीथथन । नरेश । मोरीया । दल । दलह ।
 कीयो । नैर । लगि । कल ॥

* चौघट्टि सत्त—इसके विरुद्ध कोई दूसरा पाठ हमारे पाम की पुस्तकों में नहीं मिलता किन्तु कोई कोई वृद्ध कवि चौमट्टि सत्त करके मूल में पाठ होना कहते हैं और उससे ६४+७=७१ वर्ष की संख्या निकालते हैं और कोई १०० वर्ष और चार घड़ा और कोई ७ वर्ष और चार घड़ी का वाचक पाठ कहते हैं किन्तु ऐसे सब स्थल पक्षपातरहित विद्वानों के सूक्ष्म विचार करने योग्य हैं ।

* इस सो शब्द का पाठ किमी किमी पुस्तक में सो भी है जिससे वर्ष की संख्या के समझने में बड़ी गड़बड़ हो जाती है । यह स्थल भी विद्वानों की बुद्धि को श्रम कर देने जैसा है । यदि कोई शुद्ध अंतःकरण से पूर्वापर का लेखा लगा देखेगा तो वह चंद कवि की संवत् संबंधी कठिनता को जानकर बहुत प्रसन्न होगा ॥

३२० पाठान्तर—जिहि । सोमेत्वर । जिने । धुरसांनी । चडै । चडे । भानी ।
 भांती । लीयो । परिहारि । परिहारीय । बलि । उपम । राहां । सारी ।
 मारीय । बैरन । दौरि । राजोर । बर । पां । मड । गुजर । गूजर । गजयो ॥

दिल्ली के राजा अनंगपाल जी पर कमधज्ज का चढ़ना
कवित्त - दिल्लीवै आनंग । राज राजंग अभंगं ॥

ता उप्पर कमधज्ज । सेन मज्जी चतुरग ॥

अग आतस आभूत । पुट्टि बंधे गज पत्त ॥

ता पुट्टै विजपाल* । सुभर सज्जै रन मत्त ॥

धजनेज मोज नीसान ढल । मनु बसत रज्जिय विपन ॥

करि कूच कूच उप्पर धरा । वेध अतर सपन ॥

॥ छ० ६१७ ॥ ह० ३२१ ॥

कमधज्ज की चढ़ाई सुन अनंग का कार्लिदी उत्तर मुकाम करना
कवित्त मुनी बत्त आनग । अग लगो रम बीरह ॥

भ्रकुटि वक्र रत द्रिग । चित्त जुध रत्त सरीरह ॥

बोलि भ्रित्त अप्पान । कहिय सू वान मत गुन ॥

चढत राइ दिल्लेस । करिय नीसान बीर धुन ॥

गज बाजि रथ्य पइ भर गहर । सजिय सेन सनमुष शलिय ॥

उत्तरि कलिद्रि मुक्काम किय । दस दिसान बत्ती सलिय ॥

॥ छ० ६१८ ॥ ह० ३२२ ॥

कमधज्ज की चढ़ाई सुन सोमेश का अनंग की सहायता को दिल्ली
जाना और वहां पहुँच अनंगपालजी से एकान्त में मंत्रणा करना
पद्वरी संभरिय बत्त संभरि नरेस । आभासि भ्रित्त अप्पा असेस ॥

कमधज्ज राज तोवर नरिद । मत्तौ सु दुनै आवद्ध दद ॥ छ० ६१९ ॥

* स्मरण में रखने की बात है कि माप्रत शोधो के अनुसार भी कन्नौज के राजा विज पाल जी, दिल्ली के राजा अनंगपाल जी और अजमेर के राजा सोमेश्वर जी परस्पर समकालीन थे ॥

३२१ पाठान्तर—दिल्ली । दिल्लीवै । राजंग । अभंगम । कनवज । सजा । चत्रुरंगम । अंग । अग्र । पुठि । पुठि । बेधे । पंत । पंत । पुठे । पुठि । विजेपाल । सजे । मंतं । मन । नीसान । ढल्ल । मनो । चसन । रजय । विपन । कुच २ । उपरि । घरहि । घरहि । माइ । वेद्य । सन ॥

३२२ पाठान्तर - मुनिग । सूनिग । वन । लगी । लगे । दस । भुगुटि । भ्रक्र । द्रिग रत । भ्रित्त । भ्रुत्त । अप्पान । शवान । स वान । दिलेश । निसान । बूनि । रथ । पय । मन मुष । ममुष । उत्तरि । कलिद्रि । मुकाम । दस । दशान । बत्ती । हलीय ॥

* यह छंद सं० १६४७ । १७७० और १८४५ की पुस्तको में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी में है ॥

अप्पन महाय सज्जां सपूर । बैठन्न प्रेम नह धम्म सूर ॥

करिकें मु जीति आवें अपान । कै मजें वाम कैलाम थान ॥छं०६२०॥

मन्नेव सूर भर मंत वाम । घुम्मरे नह नीमान नाम ॥

च्हि चल्या सेन मजि चाहवान । उप्पटे जानि मत मिधु पान ॥छं०६२१॥

अग्गे मु मोम दिक्की मझाय । अग्गेव विण्व हर कंठ लाय ॥

अग्गेव मनी लम्मी फुनिद । अग्गेव मरद निमि उग्गि चंद ॥छं० ६२२॥

अग्गे मु द्वैचक्र विप्रौ गुविद । अग्गे मु वज्र कर च्छी इंद ॥

बिहु वाह सूर सज्जे समंत । वेने विरह बंधे अनंत ॥छं०६२३॥*

अग्गे मुदंति पनिय विरर । पलकंत अट्ट मद झरत भूर ॥

धजनेज चमर वंवर विनान । मन हू कि पव्व पल्लव क्रिमान ॥छं०६२४॥

धमकंत धरनि अहि मिर निहाय । हू हल्लिय द्विग्ग उद्विग्ग थाय ॥

पुरघूरि पूरि जुट्टिन भमिति । दिमि व दिमि राज पमरंत किति ॥छं०६२५॥

इस छंद की अन की तुक में "वेने विरह बंध अनंत" है जिसका अर्थ यह होता है कि वेन ने अनेक विरह बाधे अर्थात् कहे । यह वेन व वि हम महाकाव्य के रचने वाले चंद्र का पिता था और यह मोमेश्वरजी के हम समय साथ था । अब तक चंद्र से पहिले का कोई काव्य किसी भी कवि का किसी के जानने में नहीं है किन्तु हमने जो एक चंद्र छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक सं० १९२९ में लिखी घोष की है उसके पीछे मेवाड़ राज के महाराणाजी श्री उदयपिहजी के महाराज कुमार श्री भग सिंहजी के पंडित विष्णुदामजी ने अकबर बदायुं के भाट गंगजी से अजमेर में पटोलादाय के मुकाम पर चंद्र के बाप कवि राव वेन का नीचे लिखा छिप्य अर्थात् कवित्त लिखा था वह हम प्रकाश करेंगे । छिप्य में वेन ने वृध्वीराजजी के पिता मोमेश्वरीजी को आगीस दी थी—

छप्य अटल ठाट मडि पाट । अटल तारागढ धान ।।

अटल नग्र अजमेर । अटल ह्रिदव अस्थानं ॥

अटल तेज परताप । अटल लंका गढ हंडिव ॥

अटल आप चहुवान । अटल भूमि जस मंडिव ॥

सभनी भूप मोमेस नूप । अटल छत्र ओप सु सर ।

कवि राव वेन आसीम दें । अटल जुगा रजेम कर ॥ १ ॥

इसीके साथ उसी पुस्तक में चंद्र के नागावकरणा का कहा हुआ यह नीचे लिखा दोहा भी है—

दोहा—ले कूजा नूप पीथुला, सांमत चमूं समंद ॥

वेन नैदन कनवज गमन, चंद करन कड दंद ॥

३२३ पाठान्तर—संभरीय । नरेखा । अभापि चित आपां । अपा । अशेश । कमधज । राव । तूवर । नरिद । दुन्है । आवह । दुंद । सज्जी । वैवन्न । ग्रेह ।

रह षरहि सोम पर चाड कज्जि । मन हू कि दुलह बर व्याह रज्जि ॥
संपत्त जाय दिल्लिय पुरेस । आनंग राज मिल्ल असेस ॥छं०६२६॥
ग्रह बत्त कुशल पूछिय असेत । रस हास पेम बढ्ढे मु हेत ॥
विधि विद्धि भोज भोजंत राय । रुचि सु चित षट रस्स भाइ ॥छं०६२७॥
आहार पान घन मार पूर । बैठे मु आइ एकंत मूर ॥
सब कहिग बिद्धि कमधज दिमान । सुद्धरैं बत्त सो करहु पान ॥

॥ छं० ६२८ ॥ रू० ३२३ ॥

अनंग की बात सुन सोमस का रोस में आकर लड़ने को तैयार होना

कवित्त सुनिय बत्त जपि सोम । रोम उभार झार अमि ॥

रमन दमन दब्बंत । रत्त द्रिग जुच्छ ह्थ्य कमि ॥

इह कमंध आमंध । राज मम जंग विचारिय ॥

सजौ सेन अप्पनी । भिरो भंजी अरि भारिय ॥

चहुआन राय आनन्द मुअ । अति उमाह भारथ मनह ॥

अह मगग लगिग झंघौ दलह । बात चक्र मानहु तिनह ॥

॥ छं० ६२९ ॥ रू० ३२४ ॥

दोनों राजाओं का डेरों पर जाना और पिछला रात को

युद्धारंभ होना ।

दूहा इह परिट्ठि राजन उठे । गय अप्पाने ठाव ॥

निमा जाम रहि पाछली । भयौ निमान निघाव ॥

॥ छं० ६३० ॥ रू० ३२५ ॥

धम । कैमर । जीत आना । नरिद । आनिग । अपान । थान । कं सजं थान कैलास
इंद । मनेव । मंनैव मंन भर मूर ठाम । घघुमरेद्ध नीसान ताम । मनेव । घुमरे ।
चाहुवान । उाटे । जानि । निध । पानि । पानि । अग्गै अग्गे । अग्रै । अग्गेव ।
अंगेव । अग्रव । विष । लाड । अग्गेव । अग्गेव । अग्गेव । मन्नि । मन्त्र । लभी ।
फूनिद । अग्गेव । अग्गेव । रत्त अग्गे । अग्गे । बेन । बानै । अग्गे मदंत । पंझूर ।
पंडूर । झरन । बनान । मन हूं । पव । क्रमान । सर । हलीय । दुग । अद्दुग ।
दूग । अद्रग । पुरि धूरि रिपुरि मुदिन भमित्त पुररि पूरि धूरि मुदिन तगित्त ।
वि । पपरत्ति । पडड । षडह । कल । मान ह । मानहु । रज । संपत्त । दिल्लिय
पुरेस । राय । मिले । गृह । कुशल । पुछिय । अजेत् । रस हास । बढे विधि
विधि । चित । रस । पान । आय । मब्ब । विधि । कमधज । दिमान । सुद्धरहि ।
बत्त । हं । पान ॥

३२४ पाठान्तर - वत्त । चत्त । जप । रोस । उभार । झारि । कुत्तबंत ।
मुछ । ह्थ्य । विचारिय । अप्पान । अरानीय । अवि । भागीय । चाहुआन । चहुवान ।
झंघौ । दलं । मानहुं ॥

* हि० परिट्ठि (सं० स्त्री० परीष्टि = Inquiry, research &c) से है ॥

सोमेस की सहायता से अनंग की विजयपालजी के साथ लड़ाई

भुजंगी--रही जाम एकं निसा पच्छि यांनं । बजे नद् नीमान बीमान जानं ॥
 चढ्यो राज आनंग मोमं समेनं । बढे हाम रामं चितं प्रीति हेतं ॥छं०६३१॥
 मुभे मेत छरं धजा नेज माही । मनो बढलं मझ्ज रंज्जे मु राही ॥
 मजे पण्णर बाज दंती मनेनं । मनाहंतं श्रीतं चितं जुद्ध जेनं ॥छं०६३२॥
 इतं आनि दूतं कही बन्न माज । मजे सेन आयो विजेपाल राजं ॥
 श्रपं व्यूह आकार मज्जे मभारं । दढं फन्न पुंछं च्चे भ्रित्त मारं ॥छं०६३३॥
 मु । बन्न आनंग वित्त विचारी । कही मोम मीपी बधो बंध भाी ॥
 सजो सेन अप्पान व्यूहं गरूरं । गिले अप्पनामंहुवैजित्ति मूर ॥छं०६३४॥
 सज्यो चंच ग्रीवा मु सोमेस राय । तिनं संभरी लाज राजं सहायं ॥
 दिमा दाहिनी पच्छि चौरंग बीरं । कुलं चाहुवानं जयं युद्ध भीरं ॥छं०६३५॥
 बियं पच्छि बीरम बीरंग देवं । धरा धार उद्धीर धारं मु नेव ॥
 पंगं पंड आनंग राजग पालं । पंड पंडं भुजं लज्ज झालं ॥छं०६३६॥
 मजे पुच्छ कोरंभ जैसिध नामं । जिने जित्तिया जुद्ध अन्नेक ठाम ॥
 मजे अग पंती मदं मोषनभंगं । तिनं अग आतम्म झारं उतंगं ॥छं०६३७॥
 दुवे मेन मिन्ली उडी रेन पूर । कंवे कायर मूर बढ्ढे सनूरं ॥
 धजा नेज ढालं पनाषी दिसानं । वजे मिधु आनद् गज्जे निसानं ॥

॥ छं० ६३८ ॥ ह० ३२६ ॥

३२५ पाठान्तर पच्छि । यानं । पानं । जाम । रूडी ।
 निमानं । नघाय ॥

३२६ पाठान्तर जाम । दक । इक । पछियनं । बजे । नीमानं ।
 वरमान । सोमे । समेनं । चढे । हाश । राम । राश । चित । मुभे । छेत्र । नेन ।
 मांही । मनो । बढठ । बढल्ल । मझ्ज । रचे । रच्च्ये । पषरं । मनेनं । मनाहति
 भ्रितं । चित । जुद्ध । जैन इत्ते । इतें । आनि । आय । सजे । आयो । विजिपाल
 विजेपाल । श्रपं । श्रप । मजे । मु भार । दढं । फन । फन्न । भृत्ति । भ्रित
 मुनै श्रवन वैनं । वतं विचारी । मिरकं । सिपं । बयो । मजो । अपान । करूरं
 गिले । श्रप । जित्ति । चंचुं । राय । तिन । राजं । पिछ । ोरंग । तयं युद्ध । जय
 उधीर । पिछ । धरा धार उधार वीरं मु नेवं । पंड पिंड । पंड पंड । लज
 सेजे । सजे । पुछ । पध्य । कूरंभ । जिने । जित्तीया । उनेक । अग्र । नंगं । तिन
 अग । आतस । झारे । दुयं । मेनं । उडै । कंवे । बडे । झंटा । दिषानं । वजै
 अन्नद । अनंद् । अनंद् । मजे । निसानं ।

कवित्त बज्जि गहर नीसान । अग्गि अग वान बिछट्टिय ॥

* दरिया दधि किय मथन । † भोम फटिय षह तुट्टिय ॥

करषि मुट्ठि कम्मान । तानि क्रन वान छनं किय ॥

मनहुं चिल्ह दिसि सदल । ‡ भोरं वामं नमनं किय ॥

रुधि मग्ग मिच षह मद्दयी । सुभर मोम मत्ती गहन ॥

सर सार सार उप्पर सिलह । मनु मेघ बुंद मही महन ॥

॥ छं० ६९९ ॥ रु० ३२७ ॥

विराज चुरंगी सु बीर । जुटे जुट्ट भीर ॥

छूटे मोष वानं । मुट्टे आममानं ॥ छं० ३४० ॥

परे वप्प धायं । करे क्ह कायं ।

उभारंन सेलं । हुवं सेलं भेलं ॥ छं० ६४१ ॥

तनं छिद्र कालं । रुधिजा प्रनाल ॥

बहै धार षग्गं । निनारंध रग्गं ॥ छं० ६४२ ॥

तुटे दंत जारी । करे गं विहारी ॥

परे भूमि थानं । कलं कूट जानं ॥ छं० ६४३ ॥

हयं षंड षंडं । धरं हंड मुंडं ॥

लुथं लुथ्य मत्तं । कटं बंन भत्तं ॥ छं० ६४४ ॥

चुरंगी सु तनं । वरं सिघ उत्तं ॥

मित्तयो वध्थ आनं । दुअं मल्ल जानं ॥ छं० ६४५ ॥

झिल्लै जंम दद्धं । गल लग्गि बद्धं ॥

वरं सिघ पेत्तं । परे वंघ नेत्तं ॥ छं० ६४६ ॥

मयं पंच भीरं । कटे पास बीरं ॥

भगे द्हद्ध वानं । जिने चाहुवानं ॥ छं० ६४७ ॥ रु० ३२८ ॥

३२७ पाठान्तर नीमान । अग्गि अगिवान निछट्टीय । *कि । दीया । कीय । मघब । † कि । फटाय । तुट्टीय । मुछ । क्रमानं । कम्मान । क्रम । क्रिन । वान । छनंकिय । मनहुं । चिल्लि । ‡ कि । भीर । भीर । भोर । वाम । नभनं । मग । मुदयो । सुभर भोम । मना मेघ बुंदह महन । मनो मेघ बुंद मह महन । महि ॥

३२८ पाठान्तर - चौरंगीश । जुटे । जूटे । भारं । छूटे । छूटे । जानं । मुदे । वप । धायं । करे । क्ह । हुए । सैल । तिनं । छद्र । रुधिजा । रुधिजा । बहै । षग्गां । ढग्गां । रग्गं । त्रुटे । तुटे । दन । करगे करेगे । विहारी । परे । परे । थानं । कल कोट जारी । कोट । हय । धरे । हड । लुळ लीष मत्तं । कटं वंधन भयत्तं । कटे । भत्तं । चौरंगी । वरसिघ । वरसिघ वय । दुअ । मल । जम । दूठं । बठं । वरसिह । वरसिघ । पितं । परे । वधि । नेत्तं पच । भीर । कट्टी । भगी । दहि । जितै ।

गाथा भगो दल नर सिधं । जंगं जिताइं राइ चौरंगी ॥
वाई दिसि बर बीरं । लगे जुद्धाइं पग मग्गाय ॥

॥ छं० ६४८ ॥ ह० ६२९ ॥

रसावला ० पग माहि नगा । सेन मेन अगा ॥
मार धारं मगा । कूह कूहं वगा ॥ छं० ६४९ ॥
धाय यों ठनकी आहिरं घनकी ॥

कंठ गीरं मता । बारुनी पी मता ॥ छं० ६५० ॥

बीर लथं लुथं । मिल्ल बथं वथं ॥

तुट्टीतं अती । गरजनियं दंती ॥ छं० ६५१ ॥

नालि ज्यो कडती । सूर यो बिहती ॥

उड्डि लोहं लुह । मिल्ल जोह जुहं ॥ छं० ६५२ ॥ ह० ३३० ॥

कविन्— बदन वीर वीरम्म । वीर कमधज सौ जुट्यो ॥

ता उपपर गज-ज । आइ मद मोष उपट्यो ॥

इहिन रंग उभारि । बिरचि बाही गज मथह ॥

जाइ ठनंक्रिय घंट । कंठ सोभा सुभि तथह ॥

गहि संग सूर लीनी हवकि । जै जै मुर आकास कहि ॥

रुधि धार छुट्टि संमुह चली । मनो मेर सरमत्ति बहि* ॥

॥ छं० ६५३ ॥ ह० ३३१ ॥

३२६ पाठान्तर भगो । वरसिध । वरसिह । जग । जिताइ । राय ।
नचरंगो । वाइ । दीमि । लगे । मगई । मगाइ ॥

* इस छंद का नामान्तर बिमोह अर्थात् विमोहा भी है और वह दो दो गण
का होता है ॥

३३० पाठान्तर - पगं । मग । माहि । माहं । नगा । मृजं सेन अगा । सजे
मेन अगा । मारं धार । कूह कूह वमा । विषायं ठनकी । अहीरन घनकी । अहिन्न
घनकी । कटगी रमता । कटगी रमता । बारुणी पिमत्ता । बारुणि पिमंता । परी
लुष लुथं । परी लुया लुथथ । मिल्ल वथ वथथ । वथं । तुटीतंन अती । तुटी तंति
अंती । गरजन दंती । नालि ज्यो कडती । मृग्पो बडती । सूर ज्यो बडती । उडे
लोह लोहं । उडे लोह लोहं । मिल्ल जोह जोहं । मिल्ले जोह जोहं ॥

इस रूपक के पाठान्तरो को विचारने से पाठको को ज्ञात होगा कि वे कैसे-कैसे
बद्धुत और विद्वानों को भी भुला देनेवाले हैं ॥

* ये तुर्क बूंदी राज के पुस्तकालय की पुस्तक सं० १८४१ की में नहीं है ॥

३३१ पाठान्तर — बीरंम । कमधज्ज । सों । सु । उपर । गजराजं । आय ।
इहत । उभारि । बाहि । मथह । जाय । कंति । तथह । संगि । समुह । संमुह हेड
रिय । अलिय । मनहु मति । विहि ॥

भंजि मुष्ण गजराज । अप्प सेना उर धारिय † ॥
 ता मध्ये सै तीन । फिरग संमुष है डारिय †
 ता मध्ये बावेल । राइ रिपु सल्ल महा भर ॥
 घरी एक रन रंग । नुद्दि धर धार गही धर ॥
 जितौ सु जंग धारह धनिय । विभछ वीर+वित्तौ जहां ॥
 भजि और भ्रन छंडे रिनह । गे राज विजपाल तहा ॥
 ॥ छं० ६५४ ॥ रू० ३३२ ॥

दूहा -बीर देव सम बीर लरि । भग्गि सेन कमधज्ज ॥
 ता पन्छे सोमेस पर । उड्डि सार बजरज्ज ॥ छं० ६५५ ॥ रू० ३३३ ॥
 कवित्त—परी भीर सोमंस । सोम बंसी सहाय भय ॥
 मार मार उचरंत । सेन चतुरंग ह्यग्गय ॥
 गजदंता विछुरंग । वीर मेरी झननंकत ॥
 टोप टूक विछुरंत । षग्ग भागत रननंकत ॥
 रस रास बीर कमधज्ज भय । संमुह वीर निहाइया ॥
 संभरी राव संभारि छल । लग्गी लोह उचाइया ॥
 ॥ छं० ६५६ ॥ रू० ३३४ ॥

पद्धरी-उच्चाय लोह लगि व्योम धान । मानों कि हरिय बल छलन वान ॥
 जुट्टी सु अरिन दल मइक्ष जाइ । मानों कि सिंघ गज जूय पाइ ॥ छं० ६५७ ॥

† पाठको ! हम श्रीमन्नदेवजी की दानव कथा को अदभूत रूप में कवि का लिखाना टिप्पण २६० में कह आये । उमी तरह इस दिल्ली के अनंगपाल जी और कनौज के राजा कमधज्ज विजैपालजी की लड़ाई का वर्णन वीभन्म और वीर रसों में कविने लिखा है इस बात की वह हम की युक्ति से सूचना अपने "विभक्ष वीर वित्तौ जहां" वाक्य में करता है । यह महा काव्य कवि ने नव रसों में लिखा है अतएव जहां हम आप को मचेत न भी करें वहां आप विचार कर रम को समझ लीजिएगा ॥

३३२ पाठान्तर—मुष । मेनह । धारीय । मध । संमुह हे । संमुह हई डारिय । मधे । बधेठ । बधेल । राय । मल । नुदि । गद । गई । जितो । स । घनीय । जिहा । वीर । ओर । भन । भ्रत्त । छंडे । रनह । गाइय । गयै । विजैपाल जिहां ॥

३३३—पाठान्तर—दोहा वीर । बीर । भग्ग । कमधज्ज । पिछे । पिछे । सोमंस उडी । रज्ज ॥

३३४ पाठान्तर—परी । सोमेस । बंसी । ह्य । गय । गजदंता झननंकतः । टोप । विछुरंत । षग्ग । भगत । रननंकित । रननंकत । रस सुग वीर । संमुह वीर । निहाइया । निहाइया । संभरी । लग्गी । लग्गी । उचाइया उ चारिया ॥

इन बिद्ध सोम मिल लोह पूर । आवद्ध रीठ मत्ती करूर ॥
 छन नंकि बान बजि गोम धंक । कायर पुलंत सूरा निसंक ॥ छं० ६५८ ॥
 हल मिलग सेन बे बाह बीर । बरसे अनंग गज्जंत घीर ॥
 माचंत कूह बजि लोह सार । जुटंत सूर रिन करि पहार ॥ छं० ६५९ ॥
 राजंत राग मिंधू * कराल । बाजंत वज्ज जनु मेघ काल ॥
 हलकंत घाव वाहंत घीर । किलकंत नद् नारद् बीर ॥ छं० ६६० ॥
 डहकंत डक्क डाइन डरान । गहकंत गिद्धि सिद्धिनिय थान ॥
 नाषंत देव महकंत फूल । लहकंत दुग्ध मन मथ्थ हूलि ॥ छं० ६६१ ॥
 उररीय मेन सजि अनगपाल । भर हरी भीर कमधज विसाल ॥
 सत पंड जाइ फिर लगि घाय । आतार रीठ मत्ती उराय ॥ छं० ६६२ ॥
 तिन मुष्ण मोभ मिल चाहवान । मानो कि रिषि दरिया ग्रमान ॥
 तिन सीस वज्जि धारा निहाय । घरीयार वज्जि मनु वज्ज पाय ॥ छं० ६६३ ॥
 परि सोम सूर अरि बधिय जंग । चौसट्टि घाय वेध्थी सु अंग ॥
 तिन अग पग्गि पहु मान बीर । छिन भिन्न होय धारा सरीर ॥ छं० ६६४ ॥
 सत पंच परिग है गै करूर । सें पंच दून परि पित्त मूर ॥
 सहसं च पंच कमधज्ज सेन । जीतौ अनंद सुत बीर सेन ॥ छं० ६६५ ॥
 भाजंत सेन वर विजैराज । है गै बीर रिन छोरि लाज ॥
 पलकंत थोन धर चलिग पाल । कौतिग देव हर रुंड माल ॥ छं० ६६६ ॥
 पल चरन चार वर रंभ कीन । जै जया सद् बंदीनदीन ॥ छं० ६६७ ॥ ६३३५ ॥

* मंगीत शास्त्रवेत्ता और अन्य सब को मरण मे रखने की बात है कि संगीत के आचार्य भरत जो मिंधू राग को बीर रस मे मानते हैं उमका प्रचार इस समय तक पाया जाता है अर्थात् लडाई मे मिंधु राग गाया और बजाया जाता था और ब्यूह रच के लडना भी पृथ्वीराजजी के समय तक प्रचलित रहा है ॥

३३५ पाठान्तर - उचाय । लोह । व्योम । योम । थान । माने । मनो । हरि । हरी वलि बलन बानं । हरीय । बानं । जुंदी । जुटी । जुटो । मस । जाग । मानो । मानो । जुथ । पाय । इनि बिध । विधि । मौम । मिलि । लोह । पुग । रीद्ध । मती । बानं । शूरा । हलि । मिलिग । वै वाह । बरसे यजंठ । मांचंत । जुटन । सिदुं । मंघ । घातय । घायु । वहंत । नद । नारद्र । डक । डरानं । सिद्धनीय । थानं । फूल । दुग्ध । मथ । फूल । मैन अनंगपाल । हरय । उरीय । पेड । पंड जाय । फिरि । मती मुष । सोम । मिलि । चाहवानं । मानो । रिपि । दरयाग्रमानं । घरीयार मनुं । मनो । घरीयार मनो । वज्जि । वज्जं । सोम । जग । चौमठि । वैध्थो । श्रग । परिम । पहु मानं । होइ । शरीर । गै । गरूर । से । सुर । सहसच । परिकमध । जीतो सु जंग सुत बीर सेन । जीतो सु जंभ सुत बीर सेन । हय । गय । कौनिग । चाह । वरं । जे जे जु सद् । जै जै जु सद् ॥

सोमेश्वरजी का बिल्ली में बड़ा साहस करना

कवित्त दिल्ली वै सोमस । कियौ साहस चहुवानं ॥
 सो कमधज्ज नरिद । बीर विजपाल भगानं ॥
 अजरा परि अजमेर । मान बंधव परि चहुं ॥
 अस्त बस्त अरु चर्म । टंक लभ्भै नन हहुं ॥
 रघुवंस बीर दिष्यौ निजरि । पहु पषिनिय रडाइयां * ॥
 अप मम अप्य करि कट्टि कै । चीन्हां हंकि उडाइयां * ॥
 ॥ छं० ६६८ ॥ रू० ३३६ ॥

कमधज्ज का पराजित हो घर जाना और सोमस का अजमेर को चलना
 दुहा जित्ति भन्ति भारथ्य भी । गौ फिरि ग्रह कमधज्ज ॥

उपारे अजमेर पट्ट । डोला पंच गरज्ज ॥ छं० ६६९ ॥ रू० ३३७ ॥

अनंगपाल जी का सोमेश्वर जी को कन्यादान करना

कवित्त - अनग तुंअर नरिद । धम्म मंड्यो उळंग बर ॥
 शुभ सोमस नरिद । ग्रहन पानिग मडि कर ॥
 हेम हय गय भार । दामि दीनि जु पंच गय ॥
 गन हम्नी है मडम । अथ्य आपी मू देम लय ॥
 हिमार को पचचर विहर । मुत्ती माल मुरंग घन ॥
 चन्वो नरिद अजमेर दिशि । बलि नरिद इक वध मन ॥

॥ छं० ६७० ॥ रू० ३३८ ॥

* ऐसे प्रयोगों को देखकर कर्नातूतान के कवियों को भ्रम के वश न हो जाना
 चाहिये क्योंकि वे कवि की मातृभाषा पाठवी भाषा के कारण प्रयुक्त हुए हैं और
 राजपूताने की भाषा में बहुत से पञ्चाबी शब्द भी मिले हुए हैं तथा राजपूताने की
 भाषा कोई स्वतंत्र भाषा नहीं है किन्तु भीड़ और मर आदि और जो जो क्षत्री और
 कवि आदि जिन जिन प्रान्त में इस देश में आकर बस है उन सब की भाषाओं से
 मिलकर बनी हुई एक बिचड़ी है ॥

३३६ पाठान्तर - दिल्ली । दिल्ली । वे सोमस । बहुवान । कमधज्ज ।
 नरेंद । विजपाल । मान । परचंड । परचंड । अस्ति । वस्ति । अह-चर्मः ।
 चर्म । विर । पयोनिय । पषिनि । अप्य । मम । कठि । कै । कै । चिन्हां
 हविक । हकि ॥

३३७ पाठान्तर - जित्ति । भित्ति । भारथ्य । भय । गय । ग्रह । कम धज्ज ।
 डोला मुग्ज ॥

३३८ पाठान्तर - अनंगपाल । तुंबर । शुभ । सोमस । पानिग । मडि । हैम
 हय गय । ज । मिम । ह्यी । हय । हय । सुं देवमलय । कीट । पचचर । पचर
 विहार । मुत्ति । मुत्तिय । दिशि । बल ॥

सोमेश्वरजी का अजमेर आना और वहां बड़ा उत्सव होना

कवित्त शृंगारिय गजराज । आय ग्रिह जीनिव जानय ॥
 पहिरावन परिवार । जानि रिति माधव मानिय ॥
 बाल वृद्ध जुव्वनह । मुप गावन प्रति संगल ॥
 रुचि रुचि विविध वचन । परसपर जानि मुप्य गल ॥
 तरु अंब गौप तारुन त्रिविध । मपिय गौप उभिभय सरस ॥
 प्रतिविब मुप्य राका दरस । मुह गावन चहुआन जम ॥
 ॥ छं० ६७१ ॥ ह० ३३९ ॥

पृथ्वीराजजी की कथा का आरम्भ करना

पट्टरी अब कहौ कथ्य चहुआन राट । जिम लई भूमि पल पग धाई ॥
 जिम अनग राज दिल्ली दान । वषतंत वनिय कुल चाहुवान ॥ छं० ६७२ ॥
 जिम अगम द्रुग गढ लण कटि । जिहि किति जिति समार खूटि ॥
 जिम मेछ्छ सेन पण धार पंडि । के वार गाहि जिन वंधि छंडि ॥ छं० ६७३ ॥
 जिम कमध सेन घर धरिय कीन । विध्वंगि जग मंजोगि सीन ॥
 अबुआ राव गण्डी बनेस । चाहुक भंजि पट्टन नरेस ॥ छं० ६७४ ॥
 परिहार मिघ जिम जेर कीन । बरनी विवाहि रस वगि अधीन ॥
 देवगिरद्रुग है पुरनि गाहि । बालका जीति दे जग्य धाहि ॥ छं० ६७५ ॥
 निरथंभ द्रुग जट्टव नरेस । कन्या विवाहि तिन रणिष देस ॥
 भंजे मै वास बहु भील कंक । भर वीर ग्रैह तिन कडिह वंक ॥ छं० ६७६ ॥
 अनमी मसंद तिन नाम वारि । जुगवंत जीव मूरप गवार ॥
 अवतार अप्प करतार होइ । हूओ न और हूँहै न कोइ ॥ छं० ६७७ ॥

३३६ पाठान्तर - श्रगारीय । ग्रिह । गृह । जीनिव । पारिवार । जानि । मानिय । बुद्धि । जुव्वनह । मुप गावन । मुप्य गावन । विविध वचन । जानि । सु भिगल । तारुनि । त्रिविधि । मपिय । गौषि । उभीय । प्रति विब मुष्क राका दरसन । प्रतिव्यंभ । मुप चहुवान । चहुवान । चहुआन ॥

३४० पाठान्तर - कहौ । कही । कथ । चहुवान राय । लइ । पगा । पग । धाय । अनंग । दिलि दां दान । वषतंत । वषनोत । चाहुवान । दुर्गा । द्रुगा । जुठिठ । जिहि । किति । जिति । लुट्टि । लुंटि । जिन । मेछ । मेछ । विड । के । जिन । कमध । सेन । घर धरीय । किन्मं । धरधरी । धीर । कोन्न । जिग्य । जिग्य । मंजोगि । लिन्न । लीन्न । अबुआ । आंनुआ । जिन । जैर । किन । देवगिरि । हे । गाहि । दे । घाह । धाम । द्रुग । दुंग । जदेव । कन्या । रषि । भंजे । मेवास । मिवास । भरें । ग्रैह । कडि । नाम । जुगवत । किरतार । सीइ । हूओ । हूउन । हूँहै । हूँ है । कीय । दुग । दुंग । नूप । सोम । धरन । दिलिय । दिल्लीय ।

अजमेर हुग नृप सोम राइ । अदभूत तेज अरि धरन लाइ ॥
दिल्लिय अनंग तीअर नरिंद । अनसंक कंक पहुमीस इंद ॥ छं० ६७८ ॥
तिह सुत्त नाहि ग्रह पुत्ति दोय । किय व्याह कमध चहुआन सोई ।

॥ छं० ६७९ ॥ सू० ३४० ॥

सोमेश्वरजी का तेजबल से तपना

कवित्त तपे तेज चहुकान । सूर सोमेस अप्प बल ॥
तिन सु तेज तरवारि । मुछछ अरु सुछ्छ मुष्प जल ॥
सुभट भाट मंग थान । चित्र चारन चतुरंगन ॥
जहँ तहँ लछ्छि निवाम । सु बमि विलमत सुरगम ॥
सुनियै न पर श्रवन चक्र भय । सुजस सकल जपे जगत ॥
मानिकक राइ कुल उद्धरन । गीम पलनि जहँ तहँ षगत ॥

॥ छं० ६८० ॥ सू० ३४१ ॥

अनंगपालजी का अपनी दो पुत्रियों में से सुन्दरी विजैपालजी को और कमला सोमेश्वर जी को प्रदान करना

इहा - अनंग पाल पुची उभय । इक दीनी विजपाल ॥
इक दीनी सीमेस कौं । बीज बवन कलि काल* ॥

॥ छं० ६८१ ॥ सू० ३४२ ॥

एक नाम सुर सुंदरी । अनि वर कमला नाम ॥
दरसन सुर नर दुल्लही । मनौं मु कलिका काम ॥

॥ छं० ६८२ ॥ सू० ३४३ ॥

सुंदर । पहुवीम । पुदवीम । निहि । सुत । ग्रह । गृह । पुत्री । चहुवांन । चहुआन ।
सौय ॥

३४१ पाठान्तर तपे । चहुआंन । चहुवांन । मुछ । मुछ । अछ । मुछ ।
सुभट घाट मंग । भाट चित्त चोरन चतुरगम । जहां तहां । जिहा तिहा । जह ।
तह । लछि । बगि । मुनीयै । जपे । मानिक । कुल । पलन । जिहां । जह । तह ॥

३४२-४३ पाठान्तर --अनंगपाल । दिनी । विजैपाल । विजैषद । सीमेस ।
अपि वपुन । चाल । दद ॥ ३४२ ॥ नाम । सुर सुंदरी । सुदरी । बीअ कहेला वर
नाम । वै । अनि वर मलया नाम । दुल । मनौं । मु काम ॥ ३४३ ॥

* चंद्र कवि का यह वाक्य "बीज बवन कलि काल" हमारे पाठकों के ध्यान
देकर ममझने योग्य है कि यद्यपि चंद्र सोमेश्वर जी के घर का कविराज था परन्तु
वह कैसा यथार्थ वक्ता था । क्या आज भी कोई कवि अथवा कविराज ऐसा स्पष्ट
कह अथवा लिख सकता है ?

जिस दिन सोमेस का विवाह हुआ उस दिन क्या क्या हुआ
कवित्त ज दिन व्याहि गोमेस । त दिन अमरन मन उदित ॥
त दिन बीर येताल । काल कलहागम कुदिन ॥
त दिन अवनि उमहीय । पुत्र इति भार उतारै ॥
छत्र तेज छिन छज्जि । देव दानव पुतारै ॥
ता दिन मु साग मज्या ममह । भ्रम अतर कायर कपे ॥
मानिकक राड अनगेम घर । गानि ग्रहन त्र दिन थपे ॥

॥ छ० ६८३ ॥ सू० ३४४ ॥

सोमेश्वरजी की रानी के गर्भ रहना और उसका प्रतिदिन बढ़ना

कवित्त कितिक दिवम अंत-ह । रहिय आधान गानि उर ॥
दिन दिन कला बढंत । मेघ ज्यो बढत भद धुर ॥
चद्र कला मित पप । जेम वाढत दिन दिन ॥
मुगधा जोवन चढत । मिलत भरनार पिनपिन
उदि । मान सुभ गातनह । जेम जलधि पुत्रिम बट्टि ।
हुलसंत हीय जे प्रोय त्रिय ॥ जिम मु जोति जनिता चढहि ॥

॥ छ० ६८४ ॥ सू० ३४५ ॥

सोमेश्वरजी की तुंगरि रानी का पृथ्वीराजजी को जनना

दूहा - सोमेसर तोअर घरनि । अनगपाल पुत्रीय ॥

तिन मु पिथ्य गर्भ धरिय । दानव कुल छत्रीय ॥

॥ छ० ६८५ ॥ सू० ३४६ ॥

सोमेसजी के प्रथम पुत्र का दुंडा के वर से होना स्मरण कर
गंधर्वादि का प्रसन्न होना और उत्सव मानना

कवित्त प्रथम पुत्र सोमेस । गंधपुंर दुंडा गडिदय ॥

भई सुद्धि गंधवन । पुहप मंगल दुज पडिदय ॥

३४४ पाठान्तर - व्याह । सोमेस । ता । अमरन । अमरन । उदित । काम ।
कलहागम कुदित । उमहि । उमहि । नाथ मोहि भार उतारै । तैज । छिति ।
छाज दिव वानवि पुं तारै । गी । दीन कहुं दधि पुतारै । कपीय । मानिक । राय ।
अनगेम । ज दिन । थपिय । थपीय । थपै ।

३४५ पाठान्तर - कितिक । आधान । गानि । ज्यो मे - बढत भद धुर । ज्यो ।
ज्यो मेघ बढत भद धुर । पप । पपि । जेम । यौवन । पिन पिन । पिनि षन ।
गदित अधान सुभगतनह । जेम । पुनिम । पुनिम । हुलसत । जै । त्रिय । ज्योति ।

३४६ पाठान्तर - सोमेशर । तुंगर । ग्रम्भ पिथ । पिथ्य छित्रीय ॥

अद्ध रैनि अनु जानि । लियौ बालुक सिर सिद्धिय ॥
गयन बयन घन सद् । युद्ध जीवन जय दिद्धिय ॥
सित मुभट सूर छह सथ्य चलि । चंद भट्ट कीरति करन ॥
संजोगि जोति तप राषि सतर । वरष तीस दसह बरन ॥

॥ छं० ६८६ ॥ रू० ३४७ ॥

कवित्त --वल तापस तप तपिय । श्राप बीसल सिर धारिय ॥
बरस असी तीन सै । गुहा ढिल्ली ढिग तारिय ॥ †
सित अंजर रजनीय । पुरनि गंधव पग धारिय ॥ †
* * * * *
अवतार लियौ प्रिथिराज पहु । ता दिन दान अनंत दिय ॥
कनवज्ज देस गज्जन पटन । किलकिलंत कालंकनिय ॥

॥ छं० ६८७ ॥ रू० ३४८ ॥

जिस दिन पृथ्वीराजजी का जन्म हुआ उस दिन देशान्तरों में
क्या क्या हुआ

कवित्त --ज दिन जनम प्रिथिराज । षरिग बत्तह कनवज्जह ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन गज्जन पुर भज्जह ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन पट्टन वै सद्धिय ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन मन कालन पद्धिय ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज भौ । त दिन भार घर उत्तरिय ॥
वतरीय मंस अंसन-ब्रह्म । रही जुमें जुग बत्तरिय ॥

॥ छं० ६८८ ॥ रू० ३४९ ॥

३४७ पाठान्तर --मोमैम । गयपुर । हुहा घारीय । भद मुद्धि गंधवन ।
बंधवन । पद्धिय । रैन । रैन । जानि । लयो । बालिक । बालक । गुर । मद्धिय ।
बैन बैन । घमद । गेंन । बैन घन मद । मुद्ध जीगिन जय दिद्धिय । मत । मुर ।
जोति । मन ॥

† ये दोनों तुक सं० १८४९ की पुस्तक में नहीं हैं ॥

* यह तुक हमारे पाम की किमी भी पुस्तक में नहीं है ॥

३४८ पाठान्तर --वलि । मिल । घारीय । रंजनीय । गंधव । लियौ ।
प्रिथीराज । दान । कनवज्ज । दैसं । गजन । पठन । पट्टन । शिलकलं । कालक
वीय ॥

३४९ पाठान्तर --दिनि । जनमि । प्रिथीराज । परिग बत्तह कनवज्जह ।
जनमी । गंजन पुर भंजन । गजन पुर भज्जह । जा । ता । वे । सद्धीय । जनमी ।
जा । जनिमि । भय । जहिन । जनम प्रिथिराज मुभ । भुय । ता । उत्तरिय ।
बत्तरिय । अवतरीय । जुगे । जुग । वतरीय ॥

अनंगपालजी का अपनी पुत्री के पुत्र को देखना और उत्सव करना

कवित्त अनग पुहवै नरेस व्याम जग जोत बुलाइय ॥

लगन लिद्धि अनुजा सुत । नाम चिहु चक्क चलाईय ॥

पुष्क पानि धरि धूप । पिथ्य पाइन दो अंसह ॥

कलि अवतार कुलाह । अंसपति पारन कंसह ॥

बहु जुद्ध रुद्ध कलि जुग वर । भ्रिन मित्त देवन भिरन ॥

कवि चंद दिली थह कारने । इह अपुव अवतार लिन ॥

॥ छं० ६८९ ॥ ६० ३५० ॥

पुत्री पुत्र उछाह । दान मानह घन दिद्धिय ॥

धाम रे * गावत घमारि । मनहु अहि वन मनि लिद्धिय ॥

कनवज जैचंद मात । भयी संभरि बहनी सुत ॥

तिन पवंत दुज पठिय । थार जर चीर थपिय थुन ॥

पहिराइ परीघह दान दुज । किय समाप सब्बन विवरि ॥

दम दिय्य रणिय अप्पन अवर । अति उछाह आनंद करि ॥

॥ छं० ६९० ॥ ६० ३५१ ॥

पृथ्वीराजजी का जन्म होना सुन कर मोमेसजी का उत्सव करना

दूहा सुनि मोमेस बधाइ दिय । है गै चीर गुराव ॥

अति उछाह अनंद भरि । नप मुष चड्ढिय जाव ॥

॥ छं० ६९१ ॥ ६० ३५२ ॥

* इस का कोई नई वान नहीं समझना चाहिये किन्तु गुरुन पुरानी रीति है कि काव्य में जहां शब्द का दो बार प्रयोग होता है और दो बार उन का पूरक प्रयोग करने से छंद टूटना हो तो उन को एक बार लिख कर उनके आगे ० का अक्षर कर देने है और उस से अभिप्राय यह रहता है कि उनको गद्य में करने के समय अथवा उसका अर्थ करने समय उस शब्द का दो बार प्रयोग कर लेना कि उनके योग्य का नाश न हो जाय । ऐसे प्रयोग प्राचीन कवियों के काव्यों में आते है परन्तु अब लोगो ने उनके स्थानों में नये पाठ भर दिये है और इस सूक्ष्म कारण पर ध्यान नहीं दिया है । किन्तु गद्य में तो अब तक यह रीति भले प्रकार पचलित है ॥

३५०-५१ पाठान्तर - अनंगपाल । पुहवी । योति । बुलाईय । लिद्ध । दिद्ध । सु । तनि । नाम चिहुं चक चलाईय । पुष्क पानि । पिथ । यायन । दो । असह । कुलाह । अमपति बहु जुद्ध । जुंगा । जुग । ध्यन । भ्रित मित । देवन । भिरिय । करत इह अपूरव अवतार लीय । अपुव ॥ ३५० ॥ दान । मान दिद्धीय । धाम धाम । घमारि । मनहुं अवि वंत गनि लद्धीय । कनवजह । कनवजह । जैचंद । जैचंद । पिता बहिनी सुतनी सुत । तिम । यवंग । दुजि । पठीय । थपीय । थुति । श्रुति । पहिराय । परिगाह । परिगह । दान । कीय । ज्येमाष । समाष । सबन । विवर । दिस । रिषि । आन ॥

३५२ पाठान्तर—बीष । हे । ने । वीर । भर । मुष । चड्ढिय । जाव ॥

सोमसजी का पृथ्वीराजजी को अपने घर लाने को कहना
 दूहा - तब बुलाय सोमस बर । लौहानी अह चंद ॥
 लै आवहुँ अजमेर धर । पहौतै घरह मु इंद ॥

॥ छं० ६९२ ॥ ह० ३५३ ॥

सोमसजी का पृथ्वीराजजी को अजमेर ले आना
 दूहा करि आनी * उछ्छाह किय । चक्रिय राज अजमेर ॥
 सहम बाजि है सुभर बर । मन सषी मनि मेर ॥

॥ छं० ६९३ ॥ ह० ३५४ ॥

पृथ्वीराजजी का जन्म संवत् और उनके प्राकटय का हेतु
 दूहा एकादस मै पंच दह । विक्रम साक अन्द ॥
 तिहि रिपु जय पुर हरन वौ । भय प्रथिराज नरिद ॥

॥ छं० ६९४ ॥ ह० ३५५ ॥

पृथ्वीराजजी के शक की संज्ञा का सूत्ररूप कवि का वाक्य
 दूहा एकादस सै पंच दह † विक्रम जिम ध्रममुत्त ॥
 त्रिनिय साक प्रथिराज को । लि पौ विप्र गुन गुप्त ॥

॥ छं० ६९५ ॥ ह० ३५६ ॥

३५३ पाठान्तर - बुलाय । सोमस । लौहनी । पुर गजब अन आमनह ।
 महन नथ कवि चंद पुर गजजन अन हरि आमनह । पुहन नथ रवि चंद ।
 आवहु । घर ।

* स्त्री को उसका पति अथवा पति के मरे गवधी आदि उसके पिता के घर में
 अपने घर लाते है वह आना अथवा आनी कहलाना है ॥

३५४ पाठान्तर - उछाह । कीय । चलीय । हे । बर मन । मनि । मेर ॥

३५५ पाठान्तर - एकादस । मे । मे । साक । तिह रिपु पुर जय हरन को ।
 हुंअ । हुय । भे । पृथ्वीराज । वृदीवाली म० १८४९ की पुस्तक में इसके स्थान में
 ३५६ रूपक है और उस के स्थान में यह है ॥

† इसकी पहिली आधी तुक का पाठ हमारे पास की सब पुस्तकों में "एकादस
 समयै सु कृत" कहे है किन्तु दो इमने रचना है वह वृदी राज की पुस्तक से
 उद्धृत किया है ।

३५६ पाठान्तर - एकादस । समअ । समयै । ध्रम । सुत । त्रीयणि । त्रीयनि ।
 शाक । पृथीराज । प्रथीराज । की ॥

इन रूपक ३५५ और ३५६ पर हम यह टिप्पण अत्यन्त आवश्यक ने माय
 लिखकर हिन्दी भाषा के महा कवि चंद बरदाई की संयत् संबंधा बड़ी कठिनाता के
 इस शोध को पुगतत्ववेत्ताओं की सेवा में भले प्रकार विचार करने को उपस्थित
 करते हैं । यद्यपि हमारे ज्योतिष शास्त्रादि के अच्छे अच्छे विद्वान इष्ट मित्रों में से

कितनेक महाशय जिनको यह शोध विदिन हो गया, है इमको First discovery प्रथम शोध करने का मान देने है किन्तु हम उनकी परम प्रीति और न्याय वृद्धि के साथ गुणग्राहकता के लिये अत्यन्त आभारी होकर यह कहने हैं कि जब अन्य पुरातत्ववेत्ता विद्वान् भी हमारे इस शोध को उनके गुण दोषों का अन्वेषण करके स्वीकार करेंगे तब हम आने की सर्वंगीन्या कृत कृत्य समझेंगे ।

अब आप चंद की मंत्र कठिनता की उम प्रकार में समझने का प्रयत्न करें कि प्रथम तो साक ३५५ का वृद्ध ध्यान देकर पढ़ें । तदनन्तर उमका अन्वय करके यह अर्थ करें कि [एकादश में पचःह] ग्यारह में पचःह [अनन्द विक्रम साक अथवा विक्रम अनन्द साक] अनन्द विक्रम का साक अथवा विक्रम का आनन्द साक [तिहि] कि जिममें [रिपुत्रय] शत्रुओं को विजय करने [पुरहृत्त] और नगर अथवा देश देशान्तरो को हर्न करने [री] को [प्रियरात्र नरिंद] पृथ्वीराज नामक नरेद्र [भय] उत्पन्न हुए ।।

तदनन्तर इसके प्रत्येक शब्द और वाक्यखंड पर सूक्ष्म दृष्टि देकर अन्वेषण करें कि उममें चंद की (Achaic style) प्राचीन गूढ भाषा होने के कारण संवत् मंत्र-धी कठिनता हटा और क्या घुमी टूट है । कवि के प्रतिकूल नहीं किन्तु अनुकूल विचार करने पर आपकी न्याय वृद्धि जट खोज कर पकड़ लावेगी कि विक्रम साक अनन्द वाक्यखंड में - और उममें भी अनन्द शब्द में हम लोगों को इनने वर्षों में गटबटा कर धमा रखने का चंद की लाघवता भरी हुई है । इतनी जट हाथ में आ जाने पर अनन्द शब्द के अर्थ ही गटराई को ध्यान में लेकर पक्षपातरहित विचार से निश्चय कीजिये कि यथा चंद ने उमका क्या अर्थ माना है । निदान आपको समझ पड़ेगा कि अनन्द शब्द का अर्थ यथा चंद ने केवल नव-सं-रहित का रक्खा है अर्थात् अ-रहित और नन्द = नव ९ । अब विक्रम साक अनन्द को क्रम में अनन्द विक्रम साक अथवा विक्रम अनन्द साक करके उमका अर्थ करो कि नव-रहित विक्रम का साक अथवा विक्रम का नव-रहित साक अर्थात् १००-९= ९० । ९१ अर्थात् विक्रम का वह साक कि जो उमके राज्य के वर्ष ९० । ९१ से प्रारंभ हुआ है । यही थोड़ी सी और उत्पेक्षा करके यह भी समझ लीजिये कि हमारे देश के उगोतिपी लोग जो सैकड़ों वर्षों से यह कहते चले आते हैं और आज भी बृद्ध लोग कहने हैं कि विक्रम के दो संवत् थे जिनमें से एक तो अब तक प्रचलित है और दूसरा कुछ समय तक प्रचलित रहकर अब अप्रचलित हो गया है । और हमने भी जो कुछ इस के विषय की विशेष दंतकथा कोटा राज्य के विद्वान कविराज श्रीचंडीदानजी से सुनी थी वह इस महाकाव्य की संरक्षा में जैसी की तैसी लिख दी है । अनएव विदित हो कि विक्रम के दो संवत् हैं । एक तो सनन्द जो आज कल प्रचलित है और दूसरा अनन्द जो इस महाकाव्य में प्रयोग में आया है । इसी के साथ इतना यहां का यहां और भी अन्वेषण कर लीजिये कि हमारे शोध के अनुसार

जो १०।११ वर्ष अंतर उक्त दोनों संवतों का प्रत्यक्ष हुआ है उसके अनुसार इस महाकाव्य के संवत् मिलते हैं कि नहीं। पाठकों को विशेष ध्यान पड़े अतएव हम स्वयम् नीचे के कोष्ठक में कुछ संवतों को सिद्ध कर दिखते हैं—

पृथ्वीराजरासो के अनन्द संवतों का कोष्ठक

पृथ्वीराजजी का	रासो में लिखे अनन्द संवत्में	सनन्द और अनन्द संवतों का अंतर जोड़ो	यह सनन्द संवत् हुआ उम में	पृथ्वीराजजी की शेष वय जोड़ो	परीक्षा के लिये अंतिम लड़ाई का मिद संवत्
जन्म	१११५	१०।११	१२०५।६	४३	१२४८।९
दिल्ली गोद जाना	११२२*	१०।११	१२१२।३	३६	१२४८।९
कैमास जुद्ध	११४०	१०।११	१२३०।१	१८	१२४८।९
कन्नौज जाना	११५१	१०।११	१२४१।२	७	१२४८।९
अंतिम लड़ाई	११५८	१०।११	१२४८।९	०	१२४८।९

जो कुछ हमने यहां तक कहा है उससे और सब बातें तो हमारे पाठकों के मन में बैठ गई होंगी किन्तु ३५५ रूपक में जो अनन्द शब्द का प्रयोग हुआ है उसमें किमी-किसी को कुछ संदेह रहेगा, अतएव हम फिर उसके विषय में कुछ अधिक कहते हैं। देखो मंगय करना कोई बुरी बात नहीं है किन्तु वह मिद्वान्त का मूल है। हमारे गौतम ऋषि ने अपने न्यायदर्शन में प्रमाण और प्रमेय के पीछे संशय को एक पदार्थ माना है और उसके दूर करने के लिये ही मानो सब न्यायशास्त्र रचा गया है। यदि आनन्द का नव-संख्या-रहित का अर्थ किमी की सम्मति में ठीक नहीं जंचता हो तो उससे इस स्थल में बहुत अच्छी तरह घटता हुआ कोई दूसरा अर्थ बतलाना चाहिये। परन्तु बात तब है कि वह सर्वत्र मिद्वान्त (universally true) से उसी तरह मिद्व हो सकता हो कि जैसे हमने यहां अपना विचार सिद्ध कर दिखाया है। सब लोग जानते हैं कि हमारे इस शोध के पहिले तक युवा और मध्य वय के कोई-कोई कवि इस अनन्द संज्ञा वाचक शब्द का गुण अर्थ शुभ

* यह संवत् हमने पृथ्वीराजजी के जो परवाने हमको मिले हैं उनकी छाप में लिखा हुआ है उनसे ग्रहण किया है किन्तु रासो की अब तक प्राप्त हुई पुस्तकों में तो किसी में ११३८ और किसी में ११३८ लिखा मिलता है ॥

(auspicious) का करने रहे हैं और चारण जाति के महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदासजी ने भी अपने इस महाकाव्य के खंडन-ग्रथ में यही अर्थ माना है । परन्तु विद्वानों के विचारने और न्याय करने का स्थल है कि इस दोहे में आनन्द पाठ नहीं है और न चंद के लक्षण के अनुसार वह बन सकता है किन्तु स्पष्ट अनन्द पाठ है । यदि नहा संज्ञा वाचक आनन्द पाठ भी होता तो भी उसका वाचक शुभका अर्थ नहीं हो सकता था परन्तु संस्कृत भाषा का जो डामा ज्ञान रखनेवाला भी यह ज्ञान सकता है अथवा जिनके पास संस्कृत भाषा के कोशों की पुस्तकें हैं वे उनके ग्रंथ में भी जान सकते हैं कि वाचस्पत्य वृहत् संस्कृत-भिधान के पृष्ठ १४९ और शब्दार्थचिन्तामणि के पृष्ठ ६९ में स्पष्ट अनन्द के यह अर्थ लिखे हैं "त्रि० न नन्दयति नन्द, आनन्दायतुभिन्ने, अनानन्दे असूखे" इत्यादि । देखो जब अनन्द शब्द का सत्य अर्थ दुःख का है तो फिर क्या सुख और शुभ का अर्थ करना अयोग्य नहीं है । यदि कवि लोग जैसे अलंकार और नायका भेद की सूक्ष्मता जान लेने के लिये पोषण करते हैं वैसे ही जो सूक्ष्म दृष्टि देकर देखते तो झट जान लेते कि यथा कवि गूढार्थ में मवत् का भेद करता रहा है और सुख अथवा दुःख और शुभ अथवा अशुभ के रथक अर्थों को प्रयोग में नहीं लेता है । व्याकरण शास्त्र की रीति से भी आनन्द और अनन्द शब्दों की प्रयोग मिथि में अन्तर है । अब हमारे अर्थ की पुष्टि में विचार कीजिये -

१. प्रथम तो विचार करने के पहिले ऐसे-ऐसे दुराग्रहों से अपने-अपने हृदय को अपवित्र नहीं कर रखना चाहिये कि चन्द ऐसा मूर्ख था कि उसे अनुस्वार और विमर्ग नव का ज्ञान न था और न वह संस्कृतार्थ किसी भाषा में व्युत्पन्न पंडित था और जितनी भूल हम महाकाव्य में मिलती हैं वह सब उसने ही की है ॥

२. दूसरे, देखो कि कवि यथा विक्रम के शक की सस्या के विरोध में अनन्द शब्द का प्रयोग करता है और नहा संज्ञा-वाचक अर्थ का ही प्रसंग है । और इस बात की भी कुछ अत्यावश्यकता नहीं है कि हम यथा अनन्द को आनन्द का अपभ्रंश आदि समझकर शुभ का ही अर्थ करें क्योंकि कवि इसके साथ ही रूपक ३५६ में स्पष्ट "तृतीय साक पृथिराज को लिख्यो" कहता है । और संज्ञावाचक आनन्द का अपभ्रंश रूप अनन्द कि जो तथापि संज्ञावाचक ही होगा, उसका गुणवाचक अर्थ शुभ (auspicious) कदापि नहीं बन सकता ॥

३. तीसरे, इस स्थल के प्रसंग से अनन्द शब्द को अ-नन्द से बना मानना चाहिये और अ का यथा रहित अर्थ करने के लिये इस श्लोक को प्रमाण में लेना चाहिये :-तत्सादृश्यमभावश्च, तदन्यत्वं तदल्पता । अप्राशस्त्यं विरोधश्च नअर्थापट प्रकीर्तिताः ॥ और नन्द के नव संज्ञावाचक अर्थ के ग्रहण करने को वैसे ही समझें तो ऋषि शब्द ७ सात के वाचक की भाँति 'नव नन्दा-

भविष्यन्ति चाणक्योयान् हनिष्यति' स्कं पु.। तथा श्रीधर स्वामी-कृष्ण भागवत की टीका में तेषा सपुत्राणां नव संख्यत्वेन तत्तुल्य संख्या" के अर्थ स्पष्ट ही है अतएव अधिक प्रमाण नही लिखने है ॥

४ चौथे, चंद्र का अनन्द शब्द प्रयोग करने से उसका अर्थ आन्तरीय अभिप्राय होना जाना होता है कि विक्रम का जो प्रचलित संवत् है उसकी मूल संख्या में संकर राजा नन्द का कुछ मनप मिला हुआ है अर्थात् यह संवत् त्रिम गणित के अनुसार है वह उक्त नन्द के समय माहिन था और चन्द्र ने त्रिम प्रकार से बात निरूपण किया है यह नन्द के समय रहित है अर्थात् चन्द्र का लिखा विक्रमी संवत् शुद्ध विक्रमी है। इसी लिये हमने इन दोनों संवत्तो को अनन्द और सनन्द नामों में इन टिप्पण भर में ग्रहण किया है। यदि कोई मनुष्य यह हठ कर बैठे कि हमको चन्द्र का अनन्द संवत् केवल प्रत्यक्ष प्रमाणों से ही मिट्ट कर दिखाओ तो क्या यह हमारा उसको उत्तर देना अन्यथा होगा कि त्रिम प्रमाण रूप प्रचलित विक्रमी संवत् की आंशों से तुम चन्द्र के लिये अनन्द संवत् रूपी प्रमेय को मिट्ट करना चाहते हो तो प्रथम तुम अपन प्रमाण को वैसे ही अत्यक्ष प्रमाणों से निर्दोष मिट्ट कर दिखाओ न कि हम उसको प्रमाण रूप मानकर चन्द्र के अनन्द संवत् रूपी प्रमेय को मिट्ट कर उनकी अशुद्धता समझ लें, क्योंकि यह दावा तुम्हारा है कि चन्द्र का लिखा संवत् अशुद्ध है। अतएव वादी के करने का काम हम ही करके प्रचलित विक्रमी संवत् की सत्यता की परीक्षा करना है। परीक्षा करने के पहिले एत यह मिट्ट हुई बात स्मरण कर लेनी चाहिये कि आज तक मर विलिप्तम् जोन्म मिस्टर मैम्पूण्ड इविन, कौलब्रुक, व्रेण्टी, गार, जैमन, डाकुर भाऊ दाजी बुन्दर, सिटनी, अन्वीप्ती डाकुर हार और डाक्टर कर्ण आदि ने जो जो शोध बट बड़े परिश्रम से विक्रमादिग्यती का ठीक समय निश्चय करने के लिए कई एक प्रकारों में अर्थात् विक्रमादिग्यती के समयालीन राजा और ग्रंथकर्ता आदि ने समयदि का भी विवरण करके किये हैं उनके सिवाय इस प्रकार से सिद्धान्त कर लेने के कि वर्तमान विक्रमी में से १३५ वर्ष घटाने से शालिवाहन का शक और ५६ वा ५७ घटाने से ईस्वी मन् और इसी प्रकार से अन्य संवत् भी और इसी हिसाब से ईसा मसीह के ५६ वा ५७ वर्ष पहिले कोई विक्रम नाम का राजा हुआ था कि त्रिमका यह संवत् प्रचलित है, न तो कोई और फल निकला है और न कोई वैसा प्रामाणिक प्रत्यक्ष प्रमाण किसी को मिला है और न कोई आज दे सकता है कि जैसा विचारे स्वर्गवासी चंद्र कवि के लिये संवत्तो को मिट्ट को करने के लिए बड़ी धूमधाम से हम चाहते हैं। क्या यह न्याय है कि विक्रम के प्रचलित संवत् को मिट्ट करने के समय तो हम गोलमाल कर जायें और चंद्र के संवत् को मिट्ट करने के लिये दूर से प्रत्यक्ष प्रमाण मांगे ? फिर विचार कीजिए कि संस्कृत भाषा के कोषादि में जो यह तत्र शककारकस्य

विक्रमादित्यस्य हननात् शालिवाहनस्य शकर्तृत्वम्" लिखा प्राप्त होना है और प्राईन अक्षरों के ग्रथकर्त्तान भी यही भाष्य ग्रहण किया है। इसमें विक्रमादित्यजी का मरण तो १३५ में होना निश्चिन्त ही है तथा १३५ वर्ष तक राज्य करना भी स्वतः सिद्ध है। उस रत्नायत कि विक्रम के मरण का प्रारम्भ उसके जन्म से अथवा गद्दी पर बैठन के दिन से अथवा गद्दी पर बैठन सीधे किसी बड़े कार्य के करन के दिन से हुआ है। यदि ज्योतिर्विदाभरण को कदाचित्त यह धोना ही अप्रत्या असम्भव ही माने और उस किसी भी समय में बना क्यों न ग्रहण करें तथाकि उनके अनिश्चित कोई अन्य प्रमाण दृष्टि में नही आना कि जिसके इस "निर्हन्ति या भूतदमडले शकान्। सपञ्चकोट्यद्वज्जदलप्रमान् कलो ॥ स राजपुत्र शकवारको भवेत्। त्रपाधिगज्य ह्यूनशाककर्तृं हा ॥" वाक्य के अनुसार पञ्चपन कराड शरीर ही अथवा किसी शक कर्त्तों को मारने से विक्रमी मन्व का प्रारम्भ होना ही अनिश्चित प्रतीत होना है। तदनन्तर यह अनुमान करना भी अनुचित नहीं है कि विक्रम ने कुछ अन्तःकरण में तो ऐसा बड़ा साका किया ही न होगा। तन्तु उस समय उसकी कर्म से कम २० वर्ष की वय तो भी होगी कि जिसमें १००० - १६०० तक सौ साठ वर्ष की सब वय सिद्ध होती है। निश्चय उसका हम प्रसाराजी और समरगीजी के ९२ वर्ष तक न ही मानना अनुमान ही अथवा सम्भव ही समझा जायक नहीं है। समरग यही है कि चन्द्र विक्रम की १०० वर्ष ही का का समभाव्यगम जो जन्म दिवस मरती ही जन्मद मरण मज ही २०० वर्ष तक नही है और प्रवर्त्तित विक्रमी मन्व कि विना ही हम मन्द कर्त्तों के समय का प्रथमव कुल मन्द का समय मिला हुआ है और यह चन्द्र मन्व का दास्य दिन ही मन्व निर्दिष्ट कारण का नहीं है। जबकि प्रवर्त्तित विक्रमी मन्व अन्तःकरण भेदे प्रारम्भ सिद्ध के प्रमाण नहीं देखकना ता वह जिस प्रकार से आज माना जाता उसी प्रकार पृथ्वीराजरासा के मन्व ९०। ९९ वर्ष के अन्तर के मान जाने में भी कुछ हानि दृष्टि नहीं आती। हमको एक बड़ा शोक इस बात का है कि यदि विद्वानों ने रूपक ३५५ और ३५६ को एक दूसरे की सगति लगाकर त्रिचारा होता और रूपक ३५६ को बिल्कुल ही न छोड़ दिया होता तो रामो के संवत्तो के विषय में सदेह ही नहीं हुआ होता क्योंकि वे दोनों रूपक मानो खडे हुए पुरकार पुरकार कर कह रहे हैं कि हमारे आशय ये है।

५. पाचवें चन्द्र के नवे नन्द के समय को नहीं ग्रहण करने का एक यह भी प्रबल कारण सब के ध्यान में आ सकने जैसा है कि महानन्द को नौ पुत्र थे, भाठ तो विवाहिता दानियो से और एक चंद्रगुप्त नामक मुरा नाम की नाइन उपस्त्री से। हमारी इस बात को भी स्मरण में रखना चाहिये कि मुरा नाम की नाइन से उत्पन्न होने के कारण चंद्रगुप्त और उसके वंशज मौर्य कहलाये हैं।

अन्य देश देशान्तर के मनुष्यों की अपेक्षा हमारे स्वदेशीय बन्धुओं के समीप कुलीन और अकुलीनों में परस्पर डाह बैर का होना कोई आश्चर्यदायक बात नहीं है क्योंकि यह व्यवहार सदा से बना आया है और आज भी सब छोटे बड़ों में विद्यमान है अर्थात् कोई अकुलीन चाहे जितनी उन्नति की दशा की क्यों न प्राप्त हो जाय और कोई कुलीन चहे कैसा दरिद्र भी क्यों न हो जाय किन्तु वह कुलीन उम अकुलीन को मंकर ही समझेगा । और इससे सदा दोनों से परस्पर द्वेष रह कर जो जब प्रबल होगा तब वह उम निर्बल को अवश्य नाश कर देगा और वे दोनों अपनी वशावली में अपने अपने बैरी का नाम तक नहीं गिनेगे । इसी कारण से हमारे आर्य काल निरूपको (The Arya Chronologists) की भी यह शैली हो गई है कि जो स्वयम् कुलीन है अथवा कुलीनों के पक्षपाती है वे उम अकुलीन राजा के नाम और समय को अपनी संपादित रूपाय में नहीं लिखते हैं और उमके समय आदिश को या तो उसके आगे पीछे के किसी कुलीन राजा में मिला देते हैं अथवा ऐसे स्थलों में यह लिख देते हैं कि इतने समय तक "कटार अथवा तरवारि ने राज किया इत्यादि" । इसके अनेक उदाहरण राजपुत्रा की वंशावलियों में मिल सकते हैं परन्तु एक ऐसा आधुनिक उदाहरण है कि क्रिम को सर्व माधारण जानने है वह मेवाड राज की वशावली में बनवीर का है - हमने ही विचार देखिये । क्या मेवाड देश के परम कुलीन महाराणाजी महार और क्या और कुलीन उमराव सरदार और पामवानादि लोग और क्या हम जो कदाचित् मेवाड की रूपाय (Chronicles) लिखे तो बनवीर का नाम और उम का समय अपनी कुलीन वशावली में न तो किसी ने मिलाया है और न हम मिलावेगे किन्तु उसका वृत्त सब के जानने के लिये हम एक पृथक टिप्पण में लिख देंगे कि क्रिम हम को पुरातत्ववेत्ता वृत्त का चोर न ठहरावे और जो कोई कदाचित् हम को ऐसा करने के कारण मृत्युश्मिन् अर्थात् दुःखही भी कहेंगे तो हम उमका अपनी एक अति प्रिय पदवी समझकर उम पर अभिमान करेंगे । उमी लिये कुलीन शत्रियों के अभिमानी चंद बरदाई ने विक्रमादित्यजी के समय में से अकुलीन मौर्य समय ९० । ९१ वर्ष का हान करके शुद्ध शत्रिय समय ग्रहण किया है और उसका नाम विक्रम का अनन्द संवत् अर्थात् पृथ्वीराजजी का तृतीय शक रक्खा है । हम यह वहां तक भी मान कर कह सकते हैं कि यदि आज इस विषय को समर्थन करने को कोई भी प्रमाण न मिले, तथापि चंद की निज-काल-निरूपण शैली तो स्वयम् सिद्ध ही है ।

६. छठे, चंद के प्रयोग किये हुए विक्रम के अनन्द संवत् या परवर बारहवें शतक तक की राजकीय व्यवहार की लिखावटों में भी हमको प्राप्त हुआ है अर्थात् हम को शोध करते करते अपने स्वदेशी अंतिम बादशाह पृथ्वीराजजी और रावल समरसीजी और महाराणी पृथाबाईजी के कुछ पट्टे परवाने मिले हैं कि उनके संवत्

भी इस महाबाध्य में लिखे संवत्तो से ठीक-ठीक मिलते हैं और पृथ्वीराजजी के परवानों में जो मुहर अर्थात् छाप है उसमें उनके राज्याभिषेक का सं० ११२२ लिखा है। इन परवानों के प्रनिरूप अर्थात् Photo हमने अपनी ओर से एशियाटिक सोसाईटी बंगाल को भेंट करने के लिये अपने स्वदेशी परम प्रसिद्ध पुगानन्द-वेना डाक्टर राय बहादुर राजा राजेन्द्रलाल जी मित्र एल० ल० डी० सी० टार्ट० ई० के पास भेजे हैं और उनके अकृत्रिम होने के विषय में उनसे बहुत कुछ पत्रव्यवहार हुआ है। यदि हमारे राजा माहव अकस्मात् रोगग्रस्त न हो गये होते तो उन्होंने हमारे इस बड़े परिश्रम से प्राप्त किये हुए प्राचीन लेखों को अपने विचार सहित पुरातत्ववेत्ताओं की मदद से उपस्थित किया होता। इन परवानों के अतिरिक्त हम को और भी कई एक प्रमाण प्राप्त होने की दृष्टांश है कि जिनको हम उस समय विद्वत् मंडली में उपस्थित करेंगे कि जब कोई विद्वान् उनको कृत्रिम होने का दोष देगा। देखिए जोधपुर राज्य के काल-निरूपक राजा जयचंदजी को सं० ११३२ में और शिवजी और मैनरामजी को सं० ११६८ में और जयपुर राज्यवाले पञ्जूनजी को सं० ११२७ में होना आज तक निःसंदेह मानते हैं और ये सब भी हमारे अन्वेषण किये हुए ११ वर्ष के अन्तर के जोड़ने से मनन्द विक्रमी होने का सांपन काल के दोष हुए समय में मिल जाते हैं इसके अतिरिक्त रावल समरसीजी की जिन प्रशस्तियों को हमारे मित्र महामहोपाध्याय कविराज श्यामलदामजी ने अपने अनुमान से मिद्ध करने को प्रमाण में माना है वे भी एक अन्तरीय हिंसा में (indirectly) हमारे जोध किये हुए अनन्द संवत् को और उसके प्रचार को पुष्ट और मिद्ध करती हैं। देखिए और इन दो ध्रुवों को अपने ध्यान में रख लीजिए कि प्रथम तो रावल बापाजी के नाम पर सब रूपांत की पुस्तकों में मई में सं० ११११ लिखा चला आता है जिसका कर्नल टाड साहब ने तो बल्लभी है नाम में चीतोड़ प्राप्त होने तक का समय माना है और मेवाड़ के छोटे छोटे लड़के तक इतना अवश्य जानते हैं कि बापाजी सं० ११११ में हुए और उन्होंने १०१ वर्ष राज्य किया जयवा उनकी वय १०१ वर्ष की हुई और ऐसे आज तक के इस बड़े निश्चय के साथ सर्वसाधारण के मानने को महामहोपाध्याय कविराजजी भी कदापि अस्वीकार नहीं कर सकते हैं। दूसरे, रावल समरसीजी के नाम पर भी उमी तरह सर्व साधारण के दृढ़ निश्चय के साथ ११०६ का संवत् ख्यातियों में लिखा हुआ बराबर चला आता है। अब हमारे पाठक उक्त सब प्रशस्तियों के सब संवत् अर्थात् १३३०, १३३५, १३४२, और १३४४ में से बापा जी के पूर्व का समय ११११ घटाकर देखें तो ११४१; ११४४, ११५१ और ११५३ पावेंगे जो हमारे अनन्द विक्रमी में मिल जाते हैं। क्या ये प्रशस्तियां भी हमारे अनन्द विक्रमी संवत्तो में आंतरीय हिंसा से नहीं मिल जाती हैं? ये क्यों मिल जाती है इस बात के भेद को हम अपनी समझ के अनुसार जानते हुए भी अभी प्रकाश नहीं करते हैं किन्तु किसी उचित

समय पर उसे शास्त्रार्थ के साथ प्रकाश करके अपने मेवाड़ राज की वंशावली को शुद्ध और प्रतिपादन कर मेवाड़ देश की एक असूय्य सेवा करेंगे ॥

सातवें यदि कोई यह नरुं करे कि राजा नन्द के विक्रमादित्यजी से पहिले अथवा पीछे होने का मतान्तर प्राचीन समय के विद्वानों में होना कुछ भी गिद्ध हो जाय तब हम मन अनुमान कर सकने हैं कि अनन्द और सनन्द सवतो के भेद अवश्य हो सकने हैं । जतण्व हमारा कहना यह है कि जिस किसी को इस विषय का कुछ मतान्तर हो वह एशियाटिक सोसाइटी बंगाल के स्थापन—करनेवाले सर विलियम् जोन्स माह्वि (Sir William Jones) लिखित (The Chronology of the Hindus) हिन्दुओं का काल निरूपण नामक विषय के अंतिम दो तीन लेख खंड अर्थात् फिकरे पढ़कर समझ ले (देखो एशियाटिक रिसर्चेंज पुस्तक ८) परन्तुम स्मरण रहे कि हम राजा नन्द का विक्रम से पहिले होना अपने देशी शास्त्रों के अनुसार मानते हैं ॥

पाठको ! रूपक ३५६ भी पुरातत्व विद्या में बड़ा उपयोगी है । उस में आपको मालूम होगा कि चंद्र यह तात्पर्य्य वर्णन करता है कि जिस ११०० अथवा ११११ में पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए हैं वह मर्यादा कैसी है कि उसी ११०० अर्थात् १११५ में धर्म—सुत हुए थे तथा उसी ११०० अथवा १११५ में विक्रमादित्यजी भी हुए थे और उसी में अर्थात् विक्रम से ११०० अथवा १११५ वर्ष पीछे पृथ्वीराज जी हुए हैं कि जिनका यह तृतीय शक में ने विप्रगुप्त [ब्रह्मगुप्त] की गुन वर लिखा है । (ज्यो विप्र गुन गुप्त) क्या चंद्र यह असूय्य पुरातत्व इस रूप में नी कहता है ? नहीं, वह हमका निमदेष्ट गृही कहता हुआ दर्शित आता है । यदि यहां धर्मसुत का अर्थ युधिष्ठिर का ग्रहण हो सकता है तो हमारे देशी महा वि का विक्रम से युधिष्ठिर तक का ११०० अथवा १११५ वर्ष का अंतर मानना मिस्टर वैंटली माह्व के अनुमान १ १३ के से बहुत मिलता हुआ है अर्थात् उस में केवल २३ अथवा ८ वर्ष का ही अंतर है । और यह हमारा स्वदेशी कालनिरूपको की गणना से भी मिलता हुआ है, क्योंकि ११०० अथवा १११५ युधिष्ठिर से दोमक तक तथा उससे विक्रम तक ११०० अथवा १११५ और विक्रम में पृथ्वीराजजी तक ११०० अथवा १११५ और इस गणना के अनुसार ८१४ कलिगत में युधिष्ठिर हुए । तथा चंद्र के कहे विप्रगुप्त कि जिसको हम ब्रह्मगुप्त होना अनुमान करते हैं उसके विषय में मिस्टर वैंटली माह्व यह कहते हैं कि वह विक्रमी ५८३ तदनुसार ५२७ ई० प हुआ था । उसने ब्रह्म-कल्प की गणना का प्रकार स्थापन और प्रकाश किया था कि जिस पर आधुनिक ज्योतिष का आधार है और ऐतिहासिक संबंध भी उसी के अनुसार परिवर्तन हुए हैं (देखो एशियाटिक रिसर्चेंज पुस्तक ८ पृष्ठ २३६—७) इस ब्रह्मगुप्त की गणित में और अन्य ज्योतिषाचार्यों के सिद्धान्तों में कुछ अंतर है जिसके लिये अन्य कोई कोई इस ब्रह्मगुप्त को दोष देते हैं । इस का

सोमेश्वरजी के अपूर्व तप से पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए

श्लोक सोमेश्वर महाबाहो । तस्यापूर्व तपो गुणै ॥

तेने पुण्यं जगज्जेता । गर्भान्नि पृथुर्गडयम् ॥

॥ छ० ६९६ ॥ सू० ३५७ ॥

सोमेश्वरजी का राव (वेन) को बधाई देना

पद्धरी अनगम पुत्रि हुअ पुत्र जन्म । बिज्जल चमकि जनु मेष घन्म ॥
 वद्धाइ राव * सोमेश दीन । इक महस हेम ह्य हुकम कीन ॥छ० ६९७॥
 दिय ग्राम एक ह्य इक्क हथ्थ । परिग्रह प्रमाद मह कीन तथ्थ ॥
 नीमान ताजि दरवार जोर । घन गज्जं जान दरिया हिलोर ॥छ० ६९८॥
 पधाराइ राठ मुष दरग कीन । क्रिन्न क्रम्म पुव्व फल मान लीन ॥
 करि जान क्रम्म मति ग्रथ सोधि । वेदोक्त विप्र वर बुद्धि बोधि ॥छ० ६९९॥
 मगल उच्चार करि नृत्य गान । अछ्छरि अलाप सुर भुवन जान ॥

॥ छ० ७०० ॥ सू० ३५८ ॥

कुछ विवरण Mr. Samuel Davis लिखित हिन्दुओं की जर्मानिया विद्या The Astronomical Computations of the Hindus नामक लेख के पढ़ने से जान हो सकता है (देखो एशियाटिक रिमार्कस पृष्ठ २०)

इस मान्य सक्धी अग्रे से हमारा अंतिम निवेदन यह है कि यह पुरातत्त्वविद्या ऐसी बड़ी सूक्ष्म और अज्ञात गहरी है कि जो विद्वान् हमसे कदाचित् थोड़ा सा भी चूक जाय तो वह उसमें तब जाता है और उसके खारे पानी के समुद्र में तिरना बहुत कठिन है और उस में पड़ी हुई किसी धम्म को वही गोताखोर अर्थात् शोधक निकाल सकता है कि जिन धर्मन्वी प्राण को शुद्ध अन्वेषण में स्थिर करके गोता मारने का अभ्यास होता है ।

३५७ पाठान्तर सोमेश्वर । सोमेश्वर । तस्या । पुत्र । तप । गुण । गुणै पुन्य । जगज्जेता ग । नि । पवित्राय । गर्भान् । पिथीराजयो ॥

इस रूपक के शुद्ध और अशुद्ध पाठों का सूक्ष्म दृष्टि से देखने से ज्ञान हो सकता है कि दुष्ट लेखकों ने उनको कैसे कैसे भ्रष्ट कर दिया है कि जिसके लिये स्वर्गनामी विषये चंद्र को हम लोगों के दिये अनेक दोष मूठने पड़ते हैं ॥

* देखो, मात्तम होता है कि चंद्र यहा अपने बाप का स्पष्ट नाम नहीं लेकर महाव्रते में राव शब्द प्रयोग कर राव वेन का निर्देश करता है ॥

३५८ पाठान्तर अनगम । दुर । बिज्जल । रि लि । चमक । जनु । मेष । जन्म । वद्धाय । राज । सोमेश । दीय । ग्राम । इक । इक । हथ्थ । ह्य । परिग्रह । परीग्रह । कीन । तथ । वज्जि । गजि । जानि । पधाराय । राय । मुष । मरमन । हरष । कर्म । पुव । मानि । क्रम्म । मति ॥ वेदोक्त । विप्र । बुधि । प्रमोधि । गाम । ग्यान । अछिर । अछर । सुरं । भुवन । जानि ।

पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुणों का वर्णन

साटक --जन्मोत्तरि गुण जन्म राजन् वरं, चालीस वर्ष त्रती ॥

सा भोगं धर लच्छि टिलति वरं, पंजाब पंचो पथं ॥

इन्द्रप्रस्थय संभरी ववरयं, सोमेसजा जोतयं ॥

भुक्तं मुक्तय बंधि गज्जन वरं, जन्मं करं मुक्तयं ॥छं०७०१॥रू०३५९॥

सोमेसजी को पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुण सुनकर हर्ष और शोक होना

कवित्त -सोम वत्त सुनि श्रवन । हर्ष अरु सोक उपन्नो ॥

देव काल संजोग । तपै ढिल्ली धर थन्नो ॥

कहै व्याम संभरी । क्रञ्च इह बत प्रमानं ॥

किं जानै किं होइ । घरी इक घट्टन जानं ॥

निम्मान मान संभर धनी । सुनी कित्ति अनगेस वर ॥

मंत्री प्रमान सब इष्ट गुरु । कहै राज पृथ्वीराज वर ॥छं० ७०२॥रू०३६०॥

विक्रम के सदृश पृथ्वीराजजी हुए कि जिन की बुद्धि का वर्णन चंद करता है

दूहा -विक्रम राज सरीस भी । बुधि ब्रनन कवि चंद ॥

भूत भविष्यत व्रत्तमन । कहत अनूपम छंद ॥छं० ७०३ ॥ रू०३६१ ॥

पृथ्वीराजजी के जन्मसमय के ग्रहों की स्थिति

दूहा —ग्रह स पंच चव हंस हथ । लगन मु श्राटम मंद ॥

दुनिया गुरु मेपह तरनि । चित्रह जनम नरिद ॥छं० ७०४ ॥ रू० ३६२॥

सोमेश्वरजी का दरबार में बैठ ज्योतिषियों से पृथ्वीराजजी की

जन्मपत्री का फल पूछना और पंडितों का फल वर्णन करना

पद्वरी दरवार बैठि सोमेस राइ । लीने हजूर जोनिग बुलाइ ॥

कहौ जन्म कर्म वाञ्छक विनोद । मुम लगन महरन सुनन मोद ॥छं० ७०५॥

३५६ पाठान्तर -ज मोनरि । राजन्म । वर । चालीस । वरं । घटी । सोभायं । सोभायं । लछि । टिलित । दिन्लित । वर । पंच । पंच । इद्रप्रस्थ । ववरय । जोतियं । भुक्त । वर । जन्म ॥

३६० पाठान्तर -सोम । वनी । उपनो । उपनो । देव । संजोग । ढिल्ली । धर । धनो । क्रन । वन । जाने । होय । यक । घट्टिन । जानं नृमानं । संभरि । सुतिकिन्नी । प्रमान । प्रथीराज । पृथीराज ॥

† यह रूपक हमारे पाम की ओर सब पुस्तकों में तो है किन्तु सं० १७७० वाली में नहीं है ।

३६१ पाठान्तर -सरीर । बुद्धि । ब्रनन । व्रत्तमन ॥

३६२ पाठान्तर -हंस सह । लेगन । थले । गुर । तसणि जन्म । नरिद । नरियः । भरिद ।

संवत् इक्कदस पंच अग । वैसाष मास पच कृष्ण लग्ग ॥
 गुर सिद्धि जोग चित्रा निपत्र । गर नाम करन मिमु परम हित् ॥छ० ३०६॥
 ऊता प्रकास इरु धरिय राय । पल तीस अम त्रय बाल जाति ॥
 गुरु बुद्ध मुरु परि दसै यान । अष्टमै वार शनि फल विनान ॥छ० ३०३॥
 पत्र दुअ थान परि सोम भोम । ग्यारमै राह पल करन होम ॥छ० ३०८॥
 बारमै सूर मो करन रग । अनमी नमाड तिन करै भंग ॥
 बिन पेम रोत्र रहि है न कोइ । भजं मित्रास मुग न दिन होइ ॥छ० ३०९॥
 प्रथिराज नाम वरु हरै छत्र । दिल्लीय तपत मडै मु छत्र ॥
 चालीस तीन तिन वरै माज । कलि पुह्मि इद्र उद्धार काज ॥छ० ३१०॥
 पर लहै द्रव्य पर हरै भूमि । मुत्र लहै अग जव होइ झूमि ॥
 बरनीय अष्ट दुय लेय व्याह । दुर्ग तात थपि आप वाहि ॥ छ० ३११॥

३६३ पाठान्तर - तीसरा राय । द्रुवर । पांडन । बुधाय । कम्म । वानिक ।
 महरन । सवत् । सवत्तह । ईम दस । दह टक । दश पच अग्र । पच अग्र । वैशाख ।
 त्रितीर । पच । क - - - । सिद्धि । मिधि । जोग । योग । निपत्र । नक्षत्र ।
 गुरु । गुरु । मिमु । घरी । जाति । गुरु । दसम । दशम । थान । अष्टमे थान ।
 शनि । विनान । द्र । थान । मीम भोम । तीस । वारमे । कृष्ण । वरु । मैव ।
 है माई । राय । मजे । मेत्रास । मुग । त । होइ । नाम । द्रुवै । मून । शत्र ।
 दिव्य । दिव्य । मडे । बद्रीवासी भे - चालीस वर्ष मिम मास माज । च लिख ।
 पुत्रि । - - - । भंम । मुत्र । जंम । व - णीय । वरनीय । जट वल । लेट । व्याहि ।
 दंगग । दंग । वैपि । चाहि । विरद । उचार । मके । जपि । मी । मुनि ।
 रा । गन । ह्य । गाय । द्रव्यान । वदयाम । अगार । झूट । नवान् । कुत्र ।
 कठ । उत्र । अस्तिन । गौवन । नीरन । कुरग । जाय । मधि । ग्रेह । नैह । जय ।
 मगध । नाशा । अघाय । विगमन । छत्रीस । उदुनय । यदन ।

जैसे कवि चंद्र रूपक ३५५ और ३५६ में अपनी प्राचीन गूढ़ भाषा के गूढ़ार्थ में पृथ्वीराजजी का जन्म सवत् वर्णन कर आया है वैसे ही यहाँ भी वह इन रूपक ३६२ और ३६३ में उनकी जन्मपत्नी तथा उसके ग्रहों का फलादेश वर्णन करता है । इन दोनों रूपकों के पाठ जहाँ तक हमारे पास की पुस्तकों से शुद्ध हो सके वहाँ तक हमने शोध दिये हैं उनके इतने ही शुधने पर जो कई एक शक अब तक लोग करते थे वह दूर हो गई । और जो इसी तरह और भी कुछ प्राचीन पुस्तकें मिल जावें और उनसे यह रूपक फिर शोध दिये जावे तो आशा है कि इन रूपकों में लिखी ज्योतिष शास्त्र सबधी सब बात मिल जावे और विद्वानों की जो जो शंकाएं अब भी बाकी रहती हैं उनका भी निवारण हो जाय । इसके अतिरिक्त हमारे पाठक यह अच्छी तरह जानते हैं कि इस रासो जैसी छष्ट लिखित प्राचीन पुस्तकों में अबका वैसे ही कोई कोई बड़े प्रतापी मनुष्यों की जन्म-

संषेप विरद उच्चार कीन । कथौ सकौ जंपि मो बुद्धि हीन ॥
 मुनि रइ दान मंड्यौ अपार । है गै सुवस्त्र द्रव्या न पार ॥छं० ७१२॥
 सब सहार नारि शृंगार कीन । अप अप्प झुड मिलि चलि नवीन ॥
 थपि कनक थार भरि द्रव्य दूब । पट कूल जरफ जर कसी ऊब ॥छं० ७१३॥
 अछ्छित्त अनूप रोचन सुरंग । मृदु कमल हाम लोडन कुरंग ॥
 इक जात मद्धि इक फिरत गेह । पहिराइ परम पर बढत नेह ॥ छं० ७१४ ॥
 दरवार भी बरनी न जाइ । मृगध वाम नासा अघाइ ॥
 विगमंन बदन छतीम बम । जदुनाथ जन्म जनु जदुन वंस ॥

॥ छं० ७१५ ॥ स्तं० ३६३ ॥

पत्नी अथवा ज्योतिष शास्त्र के अनुगार जिनका कृ. अन्वेषण किया जा ऐना कुछ विषय हम को वर्त्तमान समय में भी मिलता हुआ प्राप्त होना है उगकी या-योग्य रीति शोध लेना कैसा कठिन है । उसमें भी चंद्र की जैसी गहारां की कठिनता और ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तियों के मतान्तर पर दृष्टि दी जावे तो प्रत्येक सज्जन मनुष्य मुखपूर्वक कह सकता है कि यह कार्य बहुतही कठिन है और जो कदाचित् ऐसी कठिनता का कुछ पता लगा सके तो हमारे राष्ट्रीय जगत विख्यात ज्योतिष शास्त्राचार्य पंडितवर श्री ब्राह्मदेवजी शास्त्री अथवा उन के शिष्य वर्ग में से भी कोई लगा सकते है, किन्तु अन्य के वश का यह कार्य नहीं है । इन जन्मपत्री को शोधने के लिये हमने बड़ा परिश्रम कर रखा है अर्थात् जितने पाठान्तर रामों की भिन्न भिन्न पुस्तकों में से मिलने जाते है और जितनी भिन्न भिन्न प्रकार की पृथ्वीराज जी की जन्मपत्रियां भरतखंड में से मिलती है वे भी एकत्र की जाती है और ब्रह्मगुप्त रचित ज्योतिषशास्त्र की पुस्तक भी प्राप्त करने का उद्योग कर रहे है जिसका चंद्र का आश्रय करना उगकी शैली में अनुमान होता है । इस प्रकार से शोध होने पर हम इस जन्मपत्री के विषय में जिन विद्वान के गणित के अनुगार जो बात निश्चय होगी वह प्रकाश करेंगे । किन्तु अभी हम कुछ उन शकाओं के विषय में भी कहते है कि जो इस विषय में महामतोपाध्याय कविराज श्री श्यामल-दामजी ने कवि का मरल और स्पष्ट अर्थ न समझकर केवल प्रतिकूल अनुमानप्रत्यक्ष के वश हो अपने खंडन ग्रंथ में की हैं -

१. प्रथम कविराजजी ने पृथ्वीराजजी के जन्म संवत् के प्रकाश करनेवाले रूपक ३५५ के साथ का रूपक ३५६ जैसे अपने खंडन-ग्रंथ में छोड़ दिया है, वैसे ही गदा भी उन्होंने रूपक ३६२ को छोड़ कर केवल रूपक ३६३ के आधार पर जन्मपत्री के संबन्धित दोष दिये हैं । इन दोनों स्थलों को हमारे विद्वान पाठक विचार कर समझ सकते हैं कि रूपक ३५६ और ३६२ को छोड़ देना उचित था कि नहीं और इनका रूपक ३५५ और ३६३ के साथ पूर्ण संबन्ध है कि नहीं । यदि पूर्ण संबन्ध

है तो निर्णय करने के समय उनका त्याग देना किसी वारतविक पुरातत्ववेत्ता के लिये कैसा अनुचित कर्म है ॥

२, दूसरे ओ कुछ दोष इस विषय में दिये गये हैं वे मालूम होते हैं किसी एक पुस्तक के पाठ पर से ही दिये गये हैं। किन्तु मैं आशा करता हूँ कि डाक्टर होर्नली साहब कि जिन्होंने अपने हाथ में रामो के कुछ भाग को बड़ी सूक्ष्म दृष्टि देकर शोध है वे भले प्रकार साक्षी दे सकते हैं कि इस ग्रंथ के पाठान्तर, अपपाठ, विशेष पाठ और न्यून पाठ आदिक की क्या दशा है और क्या किसी एक पुस्तक के पाठ पर ही किसी बात का निर्णय होना उचित है ॥

३ तीसरे यदि रूपक ३६२ न छोड़ दिया गया होता और पुरातत्ववेत्ताओं के निर्णय करने की रीति में ध्यान दिया गया होता तो कविराजजी अपनी कितनीक शकाओं के समाधान स्वयं उन रूपकों और भिन्न भिन्न पाठान्तरो से जान सकते थे, जैसे कि—

(क) रूपक ३२ में पृथ्वीराजजी के नाम की दूज मिल जाती होती है। यदि निधि की मर्यादा शब्द-शब्द भी हो तो भी उन कवि ने कवित्रा नक्षत्र में मर्यादा अनुमान कर सकते हैं कि या तो मर्यादा कवि ने पट्टा उदरान्त की प्रणाली है अथवा किसी और विधि की मर्यादा का श्राव्य हो सकता है। हम जोतिये शरण्य नती नती न फल पत्रदान वक्ष्यो में अभी तक प्राचीन प्रणाली नहीं जाती है कि जोतिये नती पर मान वर्ष ५ दान्य को भी पितरि वेराज्ञो के कुछ धूर जयान् गुरु गिरया करत ह। उनके अनुसार हम यह कह सकते हैं कि हमारे आर्य मामो के नाम नक्षत्रो पर से पडे हैं और प्रत्येक महीन का नक्षत्र मही १८ चित्रा पूनम अथवा वही परिपदा के दिनमें होता है अतएव इस दूज के स्थान में मोरि तेनी निधि थी जा श्राव्य हो गई है। देखो, कविराजजी ने 'वैशाख तृतीय पर्य कृष्ण लग्ना' का लिखा है उसके स्थान में हमारा म. १६४३। १८३० और १९०० की पुस्तको में 'ह वैशाख मास पर्य कृष्ण लग्ना वा अरग' पाठ लिखा गया है और यह एक प्रकार में ठीक भी दीखता है क्योंकि रूपक ३६२ में कवि निधि का आया है अतएव अब वह यहा दोष माम और पक्ष कहना है। चित्रा नक्षत्र के विषय में कुछ गोलमाल किसी पुस्तक में दृष्टि नहीं आता और वैशाख के विषय में कुछ गड़बड़ सी दीखती है अतएव जो कोई चित्रा ने चैथ माम का होना अनुमान करे तो हमारी सम्मति में ना वह कोई आश्चर्यदायक बात नहीं है।

(ख) कविराजजी ने कवि के कहे 'बारमै मूर सो करन रग पर ही विशेष दोष दिया है और उसका बारहवें घर में होना असंभव माना है' तथा इतनी ही बात पर दोष देकर अन्य ग्रहों को कुछ शोध नहीं किया है। परन्तु जो वे

रूपक ३६२ के तीसरे चरण पर कुछ थोड़ी सी भी दृष्टि देते तो उनको मालूम हो जाता कि चंद्र कवि मेघ का सूर्य होना स्वयम् वहता है जो संभव भी है 'दुतिया गुरु मेषह तरनि' इमसे यह भी समझ सकते थे कि जब मेघ के सूर्य का बारहवें घर में होना कवि कहना है तब वृष लग्न भी है और "ऊषा प्रकाश इक धरिय रात" से कवि का गूढार्थ भी यह है कि पृथ्वीराजजी का सूर्योदय के पश्चात् जन्म होने से ऊषा एक घड़ी थी अर्थात् ऊषा के एक घड़ी पीछे उनका जन्म हुआ ॥

(ग) कविराजी के खंडन ग्रंथ में "गुरु सिद्ध जोग चित्रा नखत्त" पाठ से सिद्ध योग ग्रहण किया है कि जिसका चित्रा नक्षत्र के साथ वा पास आना असंभव है, परन्तु थोड़ी सी भी सूक्ष्म दृष्टि देकर देखते अथवा पुस्तकान्तर में पाठ देखते तो कितनीक पुस्तकों में सिद्ध पाठ जैसे हमको मिल गया वैसे मिल जाना ॥

(घ) कविराजजी ने अपने खंडन ग्रंथ में बड़ी बड़ी सूक्ष्म युक्तियों से सूक्ष्मतर अनुमान किये हैं, परन्तु इस स्थान पर वे बड़ी ही बेतरह चूक गये हैं, उन्होने 'गुरु नाम करन सिमु परम हित्त' का गुरु पाठ से घोखा खाकर यह अर्थ किया है कि "गुरु ने बड़े प्रेम से बालक का नाम रक्खा" किन्तु यह अर्थ बिल्कुल ही अमन्य है। यद्यपि इम गुरु पाठ का पुस्तकान्तर में गर पाठ स्पष्ट मिलता है परन्तु वह न भी मिले तथापि पुरातत्ववेत्ता विद्वान इस छंद की प्रत्येक तुक की एक दूसरी में सगति मिलाकर भले प्रकार जान सकते हैं कि कवि "तिथि वारं च नक्षत्रं योगं करणमेव च" के अनुमार यहां यह कहना है कि "गर नामक करण शिशु को परम हितकारी है" न कि यह कि—गुरु ने बड़े प्रेम से बालक का नाम रक्खा। हमारे हे मञ्जन पाठकों! आप मोचो, विचारो, न्याय करो, और मन्य मन्य कहो कि यह महाअनर्थ करने वाली भूल है कि नहीं और जो हम इतना परिश्रम केवल स्वदेशवन्मलना से उन्नापित होकर न करते तो हमारे देश की हिन्दी भाषा और ऐतिहासिक विद्याओं की कितनी हानि संभव थी। राजपूताने के कितनेक कवि लोग अपने को हिन्दी भाषा के काव्यों में ऐसा उत्कृष्ट समझते हैं कि मानो अन्यदेशीय उनके आगे कुछ माल ही नहीं है, परन्तु इम अवसर पर हमको मिस्टर जोन बीम्स माह्व का यह कहना स्मरण आता है कि "The pandits of Rajputana even do not understand Chand beyond the general drift of the poem" राजपूताना के पंडित भी चंद्र के काव्य को उसके एक साधारण भावार्थ के सिवाय नहीं समझते हैं" ॥

(ङ) कविराजजी के कव्ये पाठ में "पंचमें थानपरि सोम भाम" है और हमको पुस्तकान्तर में पंच दुअ थान परि सोम भोम" पाठ मिला है। क्या इससे जन्महैत्री के ग्रहों में कुछ अंतर नहीं पड़ जाता है? और क्या जब तक कि

पृथ्वीराजजी के जन्म होने पर क्या क्या आश्चर्यदायक बातें हुईं

कवित्त भयी जनम पृथिराज । द्रुग पर हरिय मिपर गुर ॥
 भयी भूमि भूचाल । धममि धम धम्म अरिनि पुर ॥
 गढन कोट से लोट । नीर सरितन बहु वडिहय ॥
 भै चक्र भय भूमिया । चमक चक्रित चित चडिहय ॥
 पुरसान थान षल भल परिय । ग्रम्भ पात भय ग्रम्भनिय ॥
 बेताल बीर विकसे मनह । हुंकारन घह देवनिय ॥

॥ छ० ७१६ ॥ ॠ० ३६४ ॥

अनेक प्राचीन पुस्तकों से इन रूक्तों का पाठ मिलाकर के शुद्ध न किया जावे तब तक जन्मपत्रों को अशुद्ध कह देना मानो महमा मिद्धान्न कर लेना नहीं है ? यदि कोई कोई विद्यमान पुरातत्ववेत्ता अपन महमा मिद्धान्न कर लेने को अच्छा समझ लेना अयोग्य नहीं समझेंगे और वे इस प्रचार को एक कमल बंद नहीं कर देगे तो पुरातत्वविद्या को निमीम हानि पहुंचनी समब है। यहा कन्या का चंद्रमा और पृथ्वीराजजी का पृथ्वीराज नाम होने के कारण उनकी कन्या राशि का होना स्पष्ट है और ज्योतिष शास्त्र के एर अचल ध्रुव के अनुमार यह अनुमान कर लेत रा काम भी चंद्र ने हमारे ऊपर ही छोड़ दिया है कि कन्या के चंद्रम के साथ केतु भी है क्योंकि राहु और केतु सदा परस्पर साथ रहते हैं ॥

३६४ पाठान्तर—जन्म । प्रिथीराज । पृथीराज । प्रथिराज दुग । दुग । भूवाक । धम । केरट । मँ । लोट । बहि । वडिय । भैचक्र भय भूमियान । भय चक्रित भूमिया । चमकि । चडिय । पुरसान । थान । परीय । ग्रम । वैनाल । विकर्म । नयन । हुंकारन । देवनीय ॥

इस रूपक में जो कुछ आश्चर्यदायक बातों के भाव कवि ने बड़े बड़े कोड़े वस्तुविरु आश्चर्य नहीं है किन्तु कवि लोग बड़े-बड़े प्रतापी पुरुषों के जन्मादि के वर्णन में अद्भुत रम का आश्रय करके प्रायः ऐना प्रसंग बागा करने हैं। देखो, जैसे यहा “धमकि धम धम्म अरिनि पुर” अथवा ‘पुरसान थान षल भल परिय’ कवि ने कहा है। वैसे ही तबकात नामरी नामक फारसी तबारीख में देखो कि महमूद गजनी जिम रात्रि को उत्पन्न हुआ था उसी समय सिन्धु नदी के किनारे के एक मंदिर का फट जाना उस में लिखा है। उसमें केवल इतना ही समझ लेना चाहिये कि महमूद मंदिरों को भ्रष्ट करने और मूर्तियों को तोड़ फोड़ डालनेव ल हुआ है अतएव कवि ने उसके जन्म समय भी वैसा ही उसके प्रताप का एक चिन्ह वर्णन किया है। इस रूपक में बीर और अद्भुत रम मिले हुए हैं अतएव आक्षेप करनेवाले अथवा किमी कोमल हृदयवाले मनुष्य के कान उस के पढ़ने ही खड़े हो जाते हैं, अर्थात् रस अपना प्रभाव उसको प्रयत्न दिखा देना है।

३६५ पाठान्तर—बधे । पिथ । बाघै । पल पलष । पष्य । पष । लषीय । लषीय । चष । मनिगनि । कंठला । भधि । कैहरि । सीहत । बालै कैम । वारे केस ।

पृथ्वीराजजी की बाल व्यवस्था के चरित्रों का वर्णन ॥

कविस—बरष बधे बिय बाल । पिथ्य बढै इक मासह ॥

घरी दीह पल पष्य । मास लष्यय ब्रष तासह ॥

मनिगन कौठला कंठ । मद्धि केहरि नष सोहत ॥

घूषर वारे चिहुर । रुचिर बानी मन मोहत ॥ छ० ७२६॥रू० ३६७॥

केसर सु मंडि सुभ भाल छवि । दमन जोति हीरा हरत ॥

नह तल्प इक्क थह षिन रहत । हुलसि उठि उठि गिरत ॥

॥ छं० ७१८ ॥ रू० ३६६ ॥

दूहा - रज रजित अंजित नयन । घूठन डोलत भूमि ॥

लेत बलैया मात लषि । भरि कपोल मुष चमि ॥

॥ छं० ७१७ ॥ रू० ३६५ ॥

पद्धरी—अगुरिन लगि रगि चलत लाल । मर मद्धि उठत गज हम बाल ॥

मिलि बाल जाल फबि रहै केलि । बढि रही द्द जनु बीज बेलि ॥ छं० ७१९ ॥

जनु रमत कमल ऋत कमल अग । तप तेज बद्धि मुष पित्र नग ॥

सब देव तेज देपन अंग । उछार अंग अदभूत प्रमग ॥ छं० ७२० ॥

संग बाल बँठि भोजन करंत । परिवार वरनु लै हट घरत ॥

आदर अदब्ब मथधीन देत । वगमीम करन हिय परम देन ॥ छं० ७२१ ॥

है हथि चटन बढटन आनद । मन मौज चौज कवि पटन छद ॥

जिन हृदय कमल विद्याह हैन । छल छद भेद तिन बुद्धि लेन ॥ छं० ७२२ ॥

पाडवत मग कायक केलि । घरि धूप हथ्य बाहन जेलि ॥

गहि बग हथ्य फेरन नुरंग । नट नृत्य निपुन घावन कुरंग ॥ छं० ७२३ ॥

जल केलि करत मिलि मजन मग । अल्लोल कलभ जनु सरति रग ॥

पकवान पांत सुगध पुर । मादक मृ मोद मृष मुपन नर ॥ छं० ७२४ ॥

पेलत अपेट मग श्वानडोर । वग्गु वत्रन पर गौम कोर ॥

मुष घरिय पहर दिन पाप मास । मोमम मुर चित्र बहन आम ॥ छं० ७२५ ॥

जिम राम कृष्ण मुष नद गेह । सभरिय राय तिम दमा देह ॥

॥ छं० ७२६ ॥ रू० ३६७ ॥

केसरि सुमंडि सुभ दरसन । अगुरि अरि । मर मद्धि उठत गज हम बाल । स वि । परत ॥

२६६ पाठान्तर । मर मद्धि उठत गज हम बाल । मर मद्धि उठत गज हम बाल ॥

२६७ पाठान्तर । मर मद्धि उठत गज हम बाल । मर मद्धि उठत गज हम बाल ॥

षत्रिग । पत्रि । पग । तैज । दखन । उदार । प्रदभूत । गुरग । मग । बँठि । केलि । वरनु ।

वस्त । हटि । अदब । मथधीन । हीय । हथि । बहन । मौज । चौज । रिदे । मुहेत ।

विद्या सु । छल । बेदि । भेदि । छदि । बुद्धि पाक । काइन । कैलि । घोप । घोप ।

हथ । बाहन । वग हथ । नृत्य निपुन्य । नुरंग । कैलि । अल्लोल । सरति । सुगध ।

पद्वरी लिपि सिष्व कुंअर प्रिथिराज राज । गुरु द्रोण पास सुत धन्म ताज ॥

ॐ नमो सिद्धि प्रथमं पढाय ॥ सब भाव भेद अष्वर बताय ॥ छं० ७३० ॥

दस पंच + दिन्न अध्येन कीन । दस च्यारि सार सब सीष लीन ॥

सीषी मु कला दस अठ्ठ च्यारि । तिन नाम कहत कबि अगग सारि ॥ छं० ७३२ ॥

गुरु गीत बाद बाजित्र नृत्य । सोचक सु वाच्य सविचार वृत्य ॥

मनि मंत्र जंत्र ब स्तक विनोद । नैपथ विलास मुनि तत्त मोद ॥ छं० ७३२ ॥

साकुन्न कला क्रीडन विमार । चित्रन सु जोग कवि चयत चारु ॥

कुमु मेघ क ता जुत इन्द्र जाल । मुचि क्रम विहार आहार लाल ॥ छं० ७३३ ॥

सौभग प्रयोग मूगंध वस्त । पुनरोक्त छंद वेदोक्त हस्त ॥

वानिज्ज वितनय भाषित्त देस । आवद्ध जुद्ध निर्जुद्ध मेस ॥ छं० ७३४ ॥

बरनन समय हस्ती नुरंग । नारी पुरुष्य पंषी विचंग ॥

भू भू कटाछ मुल्लेय मन्व्य । वृष छद्म प्राण उत्तर विजत्य ॥ छं० ७३५ ॥

सुभ साम्त्र कहे गनिकह पढन्न । लिपितव्य चित्र कविता वचन्न ॥

व्याक्रन्न कथा नाटक छंद । अविधानं दरम अलंकार बध ॥ छं० ७३६ ॥

घातक मु कर्म सुभ अर्थ जानि । मुर मरी कला बहुतरि ब्रपान ॥

॥ छं० ७३७ ॥ ८० ३३१ ॥

दूहा - कला बहुतर करि कुमल । अति निबद्ध जिय जानि ॥

हेन आदि जानन निपुन । चनुरासीत विग्यान ॥

॥ छं० ७३८ ॥ ८० ३३२ ॥

† इस दसपंच शब्द को पद्वरी ही दिन का वाचक नहीं समझना चिन्तु कुछ दिन अथवा कुछ समय अथवा गोंडे दिनों का वाचक समझना उचित है, क्योंकि रूपक ३७० में स्पष्ट कोइक दिन पाठ आ गया है ।

३७१ पाठान्तर - लिपि । शिष्य । मिषि । कुअर । नृअर प्रिथीराज । गुरं । गुर । द्रोण । पामि । धम । नमः सिद्ध । पढाइ । भेद । अष्वर । बताइ । बताई । अध्ययन । अध्यैन दस पंच विद्या अष्यैन कीन । सीषि । अठ । नाम । कहिन । अंग । सार । गुर । वृत्य । सोचक । नृत्य । वास्तुन । विनोद । नैपथ्य । सुनि । तन । साकुन । शाकुन । वितार । विचार । सू जोग । कुम । युन । सोभग । प्रयोग । पुनरुक्ति । वेदोक्त वस्त । वानिज । भाषित आवध । युद्ध । निरयुद्ध । सैस । पुरुष । वचंग । भू भू । मुल्लेय व्रष । छंद । उत्तर । विजत्य । कहे । पढन । कृषितं व्याचित्र । लिपितव्य । वचन । व्याक्रन्न । नाटक । नाटिक । दरमन । अलंकार । शुभ । जानि । जाण । बषानि ।

३७२ पाठान्तर - बहुतरि । जानि । जानन । विधान । विग्यान ।

अरिल्ल चतुरामीत विग्यानन जानन । भर मन मन आमंका भाजन ॥
 मनिहा बीर मदा मन मोदन । बहुतरि विचित्र छत्रीस विनोदन ॥८० ७३९॥
 दरगन श्रवन गीत वर वादी । न्यत्र न्यत्र पाठक पुनि आदी ॥
 लेषक वित्त बाज वक्तवनि । मस्त्र साम्त्र जुद्धाकर तन्वनि ॥८० ७४०॥
 जुद्ध गनित पपी गज तुरगा । आपेटक दूनन जल उरगा ॥
 जवन मत्र महोछत्र पवन । पुष्प कला फल यथा मु चित्रन ॥८० ७४१॥
 करन पदारथ आयुध केली । वठवनि सूत्रह नन्व पहेली ॥८० ७४२॥ ८० ७६॥

दूहा कमठ वदन रवि तेज वर । लपन मति बनीस ॥

कठ नित प्रति शीपन कला । आउध धरन छनीस ॥

॥ ८० ७४३ ॥ ८० ३७३ ॥

माठक विद्या वम विचार मन्य विनय मौच्या ममाधीनता ॥

मन्मान मन्थान मौष्य रिज मोजन्य मौभान्यय ॥

सपूर्ण च मरूप र प्रनन, चित्र मदा चारनं ॥

साति । सत्रोग चार माठ विस्तारयते कला ॥

॥ ८० ७४४ ॥ ८० ३७८ ॥

दूहा गुन गरिष्ठ गी विप्र प्रति । पूजा दान वरीस ॥

मदर आदि दे निपुन अति । मारुह मनावीस ॥

॥ ८० ७४५ ॥ ८० ३७९ ॥

श्लोक मस्कन प्राकृत चैव । अश्रम पिशाचिका ॥

मागधौ नरमेनी च । पट् भाषाश्रैव जायते * ॥८० ७४६ ॥ ८० ३८० ॥

पृथ्वीराजजी के बत्तीस लक्षणों का दर्शन

श्लोक विनयी गुरजनजाता । सर्वज्ञ सर्वपालक ॥

शरीर शोभते श्रेष्ठं । द्वित्रयान्तम्य लक्षणाम् * ॥८० ७४७ ॥ ८० ३८१ ॥

३७६ पाठान्तर—चक्र रचना । विग्यानन । जानन । भानन । मोदन ।

न्यत्र । चक्रवदन । चक्रवन । मस्त्र । शास्त्र । साम्त्र । युद्ध । तन्वन । युद्ध ।
 तुरगा । आम । पटक । उरगा । जवन । महोछत्र । पुष्प । कला । फल । यथा । करण । केली ।
 आयुध । पहली ॥

३७७ पाठान्तर तेज । तेय । लपन । लपन । वतीस । शीपन । मौषति ।
 आयुध । आउध । रन ॥

३७८ पाठान्तर सार । मौष्य । ममाधीनता । समाधानता । मनमान ।
 मनमान । सोजन्य । मूरु । चारण संगीत । सयोग । विस्तारयते ॥

३७९ पाठान्तर—विप्र । दांभ । सबद । दे । सासत्रह ॥

* इन रूपकों के इन चौथे चरणों में नी अक्षरों को देखकर कुछ आश्चर्य नहीं
 करना चाहिये, क्योंकि संस्कृत भाषा के ग्रंथों में भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं जैसे कि
 दुर्गापाठ के अध्याय २ श्लोक १ में "महिषे सुराणामधिपे" ॥

काव्यजाति—अरि तर वर तुंगो । कट्टनार्थे कुहारो ॥

कुल कमल प्रकासो । नेत्र तप्ती दिनेस ॥

दरसन रस सेवी । कामिनी काम मूर्ति ॥

पर वर प्रति पंचं । पालनं पार्थवानां ॥छं० ५४८ ॥हू० ३८२॥

अरिल्ल—सूरज ज्यों तप सत्रु कमोदन । फूलन अंग महा मन मोदन ॥

भूपति भूप प्रतापन भारी । हठि करि रावन ज्यो अहंकारी ॥

॥ छं० ७४९ ॥ हू० ३८३ ॥

श्लोक ज्ञानधर्मार्थिकामं च । बल शत्रु सिंहासनं ॥

मभारभक्तिनेश्चैवा । मिघान् अष्टधा स्मृत ॥छं० ७५० ॥ हू० ३८४॥

ब्रूहा पाप वीरानन सीम पर । अरुण्य अंनि निहाय ॥

मनो मेरु ने शिषर पर । रक्षा अंगानि आय ॥छं० ७५१॥हू० ३८५॥

ता पर नुनरा सुभन अति । कथन शोभ अत्रि नाथ ॥

मनु मूरज । काम पर । धिपन ध-यो धनु नाया ॥छं० ७५२॥हू० ३८६॥

शवन विरानन स्वानि मु । दरसन वनो वगान ॥

मनु कमल पत्र अग्रज रहे । ओम उग्रगन जान । छं० ७५३॥हू० ३८७॥

३८२ पाठान्तर—सूरज । ज्यों तप । सत्रु । कमोदन । फूलन । अंग । महा । मन । मोदन ।
मांगधी । अहंकारी । कुल । कमल । प्रकास । नेत्र । तप्ती । दिनेस । पर । वर । प्रति । पंच । पालन । पार्थवानां ।
पालक । जनों । पालन । मोहन । मारण । श्रेष्ठ । द्वा । पंच । पालन ॥

३८२ पाठान्तर—अरि तर वर तुंगो । कट्टनार्थे । कुहारो । तपती । दिनेस ।
दिनेस । मैत्री । मूर्ति । पंच । पार्थवानां ॥

३८३ पाठान्तर—सूरज । ज्यों तप । सत्रु । कमोदन । फूलन । अंग । महा । मन । मोदन ।
ज्यों ॥

३८४ पाठान्तर—ग्यान । बल । मिघामन । शन । चैव । अभिधान ॥

३८५-८६ पाठान्तर—अनि । जरीनि । कै । शिषर । शिषर । परि ।
अहर्ष्या । अहंकारी । कुल । मोहन । मन । मनो । मूरज । मनो मूरज । कै शीम
वर । परि । धिपन । विरानन । वगान । मनो । मनो । अग्रज । रहे । ओम ।
पयोकन । पयोकण । आनि । शीतत्व । शोभ । विगाड । मोभनि । मेरु । शिषर ।
काम । अनन । छिन्नन । मिमि । निपट । मनो । काम कै । ऊगे । उगी । अर्गन ।
अकूर ।

३८० पाठान्तर—ज्ञानन । उद्दु । उद । उदीन । समानो । मानो । जानन ।
जानन । शोभ । विचयन । जानो । भान । शत्रुन । कै । कामिनी । कुं ।
अकरध्वज । मानन ॥

कंठ माल मोतीन की । मोभत मोभ विसाल ॥

मेरु सिषर पारस फिरत । जानि नछिन्न माल ॥ छं० ७५४ ॥ ऋ० ३८८ ॥

मिम भीने सु मयंक सुष । निपट विराजत नूर ॥

मनौ वीर उर काम के । उगे आनि अंकूर ॥ छं० ७५५ ॥ ऋ० ३८९ ॥

अरिक्ल आनन इदु उदोन मु मानौ । जानन भोज विचप्यन जानौ ॥

रवि ज्यौ सत्रन के तन तारन । कामिनि को मकरध्वज मानन ॥
॥ छं० ७५३ ॥ ऋ० ३९० ॥

अरिक्ल जा सरनागत मानव वछै । जा सरनागत दानव इछै ॥

जा सरनागत देव विचारै । मां प्रियिराज प्रियीपति मरै ॥

॥ छं० ७५७ ॥ ऋ० ३९१ ॥

इहा विश्विराज पति प्रिथ्विपति । गिर मनि कुली छनीम ॥

नप गिप पर मित लम नजै । ते गुन वरनि वर्न म ॥ छं० ७५८ ॥ ऋ० ३९२ ॥

गिन महाय अमुरह गुरुह । मन नाम नरु गुर ॥

गिन मु किति प्रि हिन । रही चद हिन पर ॥ छं० ७५९ ॥ ऋ० ३९३ ॥

किति चदभान के वस । वीर मानिक पुत्र दस ॥

ता मु किति प्रि हिन । जन्म लगी जपन जन ॥

ज्यौ वीर्या भार थ । आदि अतह ज्यौ जपो ॥

वय वानी गु प्रमान । लगन मगनह गुन थपो ॥

ज्यौ भयो जन्म कवि चद को । भयो जन्म सामन सब ॥

उक थान मरन जन्मह मु उक । चदहि किति ममि लगि रब ॥

॥ छं० ७६० ॥ ऋ० ३९४ ॥

३६१ पाठान्तर भा । प्र । ली । पार । वी । म । न । ग । नि । मो । प । र । राज । प्र । यी । पति ॥

३६२ पाठान्तर प्रिथ्वीराज । प्रिथ्वीय पति । पवीराज प्रथीवी पति । गिर । कुली । गिप । नन । ते । छनीन । छनीम ॥

३६३ पाठान्तर अमुरह गुरुह । किति ॥

३६४ पाठान्तर चदभानारै । चदभाना के । वस । मानिक । मानक । म । जन्म लगी । उगे । ज्यौ । वरपो । भारग । ज्यौ । जपो । वानी । प्रमान । लगन लगनह । मगन । थपो । जन्म । जैरी । सामन । थान । मरेग । जन्म दिन डक । जन्म । किति । शनी । ममी । रिव । रवि ॥

पाठान्तर याद । दम । रही ॥

इस रूपक से अत तक कवि इस आदि पर्व का तो उपसंहार और दशम की कथा का प्रसंग अपनी स्त्री के वार्त्तालाप के द्वारा बड़े गूढ़ार्थ में वर्णन करता है । हम आशा करते हैं कि काव्य के रसिक इस प्रसंग के दोहों और उनके अर्थ के शांभीर्य को अनुभव करके बहुत ही प्रसन्न होंगे ॥

एक दिन रात्रि को चंद्र की स्त्री का रस में आकर पृथ्वीराजजी की
प्रादि से अंत तक कीर्ति वर्णन करने के लिये चंद्र से कहना ॥
गाथा समयं इक निसि चंद्र । वाम वत्त वट्टि रस पाई ॥
दिल्ली ईस गुनेयं । किती कहो आदि अताई ॥ छं० ७६१ ॥ रू० ३९५ ॥
चंद्र का अपने घर में कथा कहना और उसकी स्त्री का उसे
सुनते हुए जो स्मरण आवे वह पूछते जाना
दूहा एक दिवम कवि चंद्र कथ । कही अप्पने भोन ॥
जिम जिम श्रवन्त सभरी । तिम पुछि मारंग नेन ॥ छं० ७६२ ॥ रू० ३९६ ॥
चंद्र की स्त्री का उससे पूछना कि कौन दानव, मानव और
नृप कीर्ति करने योग्य है
दूहा कह्यो कंत सो कनि इम । हो पूछो गुन तोहि ॥
को दानव मानव सु को । को नृप किंतिरु होटि ॥ छं० ७६३ ॥ रू० ३९७ ॥
चंद्र का अपनी स्त्री को गूढ़ उपलक्षों के द्वारा उत्तर दे कहना
कि केवल हरि की कीर्ति करने योग्य है क्योंकि उसकी भक्ति
के बिना मुक्ति नहीं है
कवित्त पेट काज चट्टि वंस । परे फर हरे अवनि पर ॥
पेट काज रिन भोम । मरे मारे सु दूर धर ॥
पेट काज वहि भार । पार प्राहारन पारे ॥
पेट काज तर तुग । चिन्न परि घर पर ठारे ॥
इति पेट काज पापी पुरुष । वधै वट्ट लछ्छी हरन ॥
नर वर मुकम्म कहा नह करै । इहै उदर दुम्भर भरन ॥
॥ छं० ७६४ ॥ रू० ३९८ ॥
कवित्त मेह बिना नहि तेह । नेह विन गेह अरम रस ॥
पिय विन तिय न उमग । अंग शृंगार रूप रस ॥

३९६ पाठान्तर मुदिन । वद । कशीय । अप्पने । भोन । श्रवन्त । श्रवन्त ।
इचवन्त । पूछीय । मारंग । नेन ॥

३९७ पाठान्तर कनि । सो । गो । सो । कंत । ईम । हो । हो । पुछ्यो ।
पूछं । गुन । तोहि को । दानव । मानव को । को । को नृप । कनि । कहोहि ॥

३९८ पाठान्तर - काजि । वं । वंश । परयइ फरअकहरे । ररई । फरहरइ ।
पैठ । काजि । रन । भोमि । मरे । मारे । मरे । मरे । मारे । सुं । डरे । डरइ ।
पैठ । काजि । पाहारम । वट्ट । काजि । तर । चित्र । तिन । तिन । पारि । परिय ।
ठारे । इन । इन । काजि । पुरुष । वधै । वधे । लछी । चर । मुकम्म । कह ।
करहि । इहइ । ईह । भरन ॥

नायक बिन नह मेन । दंत बिन भुक्ति न होई ॥
 तेग त्याग तैं रहित । कहै कीरति को लोई ॥
 बिन नीर मीन राजन कहूं । छत्री बिन मूर तरिन ॥
 मन बचच क्रम्म निम जानि जिय । न है मुक्ति हरि भक्ति बिन ॥
 ॥ छ० ६५ ॥ ऋ० ३९० ॥

चंद की स्त्री का उनसे कहना कि चित्रनेवाले को चित्र कि जिससे
 तू दुस्तर के पार उतरे-चहुवानकी कीर्ति चित्रने से वह क्या रंजैगा
 ब्रह्मा चित्रनहारे चित्रि तूं । रे चतुरगी नाह ॥
 का चहुआन मृ किति बधि । मन मनुछय हरि लाह ॥ छ० ७६६ ॥ ऋ० ४०० ॥
 कविन- तन हीन पुनरी । पंज बधी कर नचै ॥
 आमा नदी सपूर । जीय मनोरथ सचै ॥
 बहु तरंग तृष्णाह । राग बह ग्रह कुरगी ॥
 का चहुआना किति । कत धीरज निर भगी ॥
 मन मोह मूढ विम्वरि रह्यौ । चिता नट घट भजइय ॥
 उत्तरहि पार दुतर कवी । का चहुआना रजइय ॥
 ॥ छ० १९६३ ॥ ऋ० ४०० ॥

चंद का अपनी स्त्री से कहना कि मैं चहुआन का ऋण उतारता हूं
 ब्रह्मा कहे गुप्त गुन तैं भले । मो जिय इय अदेन ॥
 रिन आपौ नहआन की । पृथ्वह पित्थ नरेस ॥ छ० ७६८ ॥ ऋ० ४०२ ॥
 चंद की स्त्री का कहना कि राजा को ऋण देता है तो
 गोविन्द को क्यों नहीं मुमरता
 ब्रह्मा चित्रनहारे हेरि चित । चित्रन हेरि कविद ॥
 जो रिन आपै राज की । ती मुमरै न गुविद ॥ छ० ७६९ ॥ ऋ० ४०३ ॥

३६६ पाठान्तर रिना । नट । नह । बटु । नट । गंड । पीउ । त्रिय ।
 तीय । श्रिगार । मन । दन । बिन । भुक्ति । होइ । तैग । त्याग । तैं । नन । लोइ ।
 जीवन । नगी । मूर नारिन । मूर तरिन । बच । क्रम । कम । जानि । जीय । सु
 न । है । नही मुक्ति हरि भक्ति बिन ॥

४०० पाठान्तर — चित्रनहारे । त्र । चहुवान । कृवि । मनुछ ॥

४०१ पाठान्तर - तत्र । तत । पुनरी । पूतली । बधा । नचै । नचै ।
 नंदी । सपूर । जीव । मनोरथ । बहा । सचै । बहुंत । रग । तृष्णाह । बहु । ग्रह ।
 कुरंगी । कां चहुवान । मोह । मुडं चता । भजइय । उत्तरिहि । दुतर । कट्टी । का ।
 चहुवान । पंजइय । रंजइह ॥

४०२ पाठान्तर—कहै । तैं । तैं । भलो । भले । मो । ईह अंदेश । रिण ।
 बप्पी । की । सुखह पंथ नरेस । पुछह पित्थ नरेस ॥

भ्रम जल मन मंदान करि । भ्रम जल भेष न फेरि ॥

चित्त न अप्प चित्र कौं । चित्रनहारे हेरि ॥ छं० ७७० ॥ रू० ४०४ ॥

चंद्र का उत्तर देना कि मैं कमलासन को देखकर अकुलाया हूँ,
केवल भक्ति विलंब करनेवाली है

दूहा कमलामन देषत थक्यौ । भगत त्रि गंडन द्वार ।

क्रोध श्राप सब जग ग्रसै । ग्रसत न लग्ये वार ॥

॥ छं० ७७१ ॥ रू० ४०५ ॥

तथा चंद्र का कहना कि संसार में जो कुछ और सर्वव्यापी है वह
वह कमलासन ही है उसी की उपमा कर मैं पृथ्वीराजजी
की कीर्ति वर्णन करना हूँ

भुजंगी वही तन त्रैलोक्य समार सारं । वही तारनं मत भी सिंध पारं ॥

जगत्तं अघारं निराघार यो गी । वही श्रवदा संपदा नित्य मोही ॥ छं० ७७२ ॥

वही भेद मंत्रं गजानन शोभ । वही पूरन ब्रह्म संसार भीय ॥

नवं भक्ति कौ मंत्र ही छत्र धारी । भूम्यो ब्रह्म बुभुची वही गिद्ध नारी ॥ ७७३ ॥

जगत्तं गुरत वही हे निगारं । वही वागना वामुदेवं प्रकारं ॥

वही भक्त हृथ्यं नच्यो कपिमान । वही यै वही यै निधान ॥ छं० ७७४ ॥

इकं एक अचिज्ज कीनें गुसाई । चवै चंद्र जो रंग गोबिंद पाई ॥

वही की उम्मा करै निति भामो । वही मन्त्र मंगार मन्त्रै प्रकासो ॥ छं० ७७५ ॥

वही अंतरगी सुरगी निनाद ! वहे राज राजीव लोचन सारं ॥

॥ छं० ७७६ ॥ रू० ४०६ ॥

चंद्र की स्त्री उसे कहती है कि ब्रह्म को ब्रह्म में देख, जो उसे देखता है
उसे वह दीव्यता है, नर की कीर्ति मत गा, क्योंकि उससे और
कोई बलवंत नहीं है

दूहा - ब्रह्म देषि ब्रह्मान्तरव । हरि दिपियन दिप्याइ ॥ ३ ॥

विज्ज छटा अग्यांन मन । गोपी हरि गो गाइ ॥ छं० ७७७ ॥ रू० ४०७ ॥

४०३-४०४ पाठान्तर चित्रनहारे चित्र तू । कपि चंद्र । ज्यो अप्पो ।
अपै । को । नो । मधरे । ममरि । गोविंद ॥ ३९८ ॥ मंदा कपि । भेष न फोरि ।
चित्रन अप्पो । अप्ये । को । चित्रनहारे ॥

४०५ पाठान्तर दैवन । क्रोध । मर्ष । ग्रहे । लगे लगे ॥

४०६ पाठान्तर नव । नारण । भव । सिंधु । जगत्तं । मोही । ऊंही । ऊही ।
सरदा । मोही । भेद । मंत्र । गजा मन । लोयं पुगनं । मोयं । भोयं । नव । भक्ति ।
शव । भूम्यो । जगत्तं । गुरत्तं । हेनि । हैनि । वागना । वाम । हैवं । वाम हेवं ।
भक्ति । हृथं कपिमानं । कपिमानं । नधानं । वही यै वही यै निधानं निधानं । इक ।
अक । अक । अचिज्ज । कीने । कीने । गुसाइ । गुसाई । जो । रंगी । गोविंद ।
उपमा । करे । भामो । कही । मकल । मर्ष । प्रकासो । कहे । लोचन ॥

ब्रह्म ब्रह्म हररात बर । नर जानी न गुविद ॥

सकल घटं घट हरि रमै । ज्यौं अनेक घट चंद ॥ छ०७७८ ॥ ६०४०८ ॥

जस अपजस लाभिष्ट दोइ । अवगति गति न बुझाइ ॥

गोप ग्वाल बूझे नही । गोपन बूझी गाइ ॥ छ०७७९ ॥ ६०४०९ ॥

कवित्त कहि महियल बल किनौ । एक दट्ठ हरि धारिय ॥

कहि बामिग बल कितौ । मु फुनि करी नेत्रा मारिय ॥

सुमुँद किनौ गरुअत्त । अप भुज जांग हिलोरिय ॥

कित्तोक मवल मेरु गिरि । कमठ होइ पिट्टहतोन्निय ॥

लघु बली सेग बभानवै । मुर अमुगयन दिट्ठ मह ॥

कवि चंद अवर बल वैम कहि । कह ती हरि यत्त्रत कह ॥

॥ छ० ७८० ॥ ६०४१० ॥

चंद का अपनी स्त्री को उत्तर दे कहना कि अंग अंग मे
हरि-रूप-रम है

दूहा त्रिय वर ज्यौ नर ज्यौ मु कवि । नर किनो नत गाइ ॥

अग अग हरि रूप रम । यत्र दिया सुनाइ ॥ छ०७८१ ॥ ६०४११ ॥

चंद की स्त्री का उममे कहना कि अङ्ग अङ्ग मे हरि-रूप रम वर्णन
कर दिवाओ

दूहा अग अग हरि रूप रम । विविध विवेक बरेन ॥

मुकति समपत कत रम । जुग निति जोग मरेन ॥

॥ छ० ७८२ ॥ ६०४१२ ॥

४०७ पाठान्तर ब्रह्म ब्रह्म हररात बर । नर जानी न गुविद । अपजस । लाभिष्ट । दोइ । अवगति । गति । न । बुझाइ । गोप । ग्वाल । बूझे । नही । गोपन । बूझी । गाइ ॥

४०८ पाठान्तर ब्रह्म ब्रह्म । हररात । बर । नर । जानी । न । गुविद । अपजस । लाभिष्ट । दोइ । अवगति । गति । न । बुझाइ । गोप । ग्वाल । बूझे । नही । गोपन । बूझी । गाइ ॥

४०९ पाठान्तर ब्रह्म ब्रह्म । हररात । बर । नर । जानी । न । गुविद । अपजस । लाभिष्ट । दोइ । अवगति । गति । न । बुझाइ । गोप । ग्वाल । बूझे । नही । गोपन । बूझी । गाइ ॥

४१० पाठांतर ब्रह्म ब्रह्म । हररात । बर । नर । जानी । न । गुविद । अपजस । लाभिष्ट । दोइ । अवगति । गति । न । बुझाइ । गोप । ग्वाल । बूझे । नही । गोपन । बूझी । गाइ ॥

४११ पाठान्तर चनीय । मु कितौ ताई । गाय । ब्रह्मि । दिपाई । दिषाय । सुनाई । सुनाय ॥

४१२ पाठान्तर- विविध । बरन्न । मुगति । जुंग । जोग । सरन्न ॥

चंद्र का उत्तर दे कहना कि कान दे सुन मैं वर्णन कर दिखाता हूं
दूहा - कही भामि सौं कंत इम । जो पूछै तत मोहि ॥

कान धरौ रसना सरस । ब्रह्मि दिषाऊं तोहि ॥छं०७८३॥रू०४१३॥
इति श्री कवि चन्द्र विरचिते प्रथिराज रासके आदि पर्व नाम
प्रथम प्रस्ताव सम्पूर्णम्



उपसह्यारिणी टिप्पणी

यद्यपि इस महाकाव्य के महाविचित्र बरदार ने इस आदि पर्व का उपसह्यार अपनी निज काव्य-रचन-शैली के अनुसार ३९० श्लोक में लेकर ४१४ तक में बड़े गूढार्थ के साथ वर्णन कर दिया है परन्तु यह भी उचित और अन्यावश्यक है कि हम भी अपनी शैली के अनुसार अपने टिप्पणों के उपसह्यारार्थ कुछ थोड़ा सा अपने पाठकों की सेवा में मखिनय निवेदन करें कि जिसमें सर्वसाधारण को हिन्दी भाषा के इस महाकाव्य का कुछ स्वरूप जान हो।

इस महाकाव्य का नाम पृथ्वीराजरासो है और यह दो शब्दों में मिलकर बना है अर्थात् पृथ्वीराज और रासो। इस सज्ञा का अर्थ यह होता है कि "पृथ्वीराज की रासो"। ग्रथकर्ता ने पृथ्वीराज नामक सज्ञा से हमारे उन पृथ्वी-
 ◆◆◆◆◆ राज्ञी चोहान को अपने इस महाकाव्य का नायकवर्णन किया
 ◆ग्रन्थ-संज्ञा◆ है जो विक्रम के बारहवें शतक में हमारे स्वदेशी अन्तिम राज-
 ◆◆◆◆◆ राजेश्वर अर्थात् बाहशाह हुए है, जिनकी शूरवीरता का अभिमान आज तक प्रत्येक आर्य को है और जिनके नाम का औठा राजदिन की बोलचाल में हमारे देश के सर्वसाधारण किया करने है। यह भी किमी से छिपा नहीं है कि वह कौन बड़े बड़े आर्य और शूरवीर राजा हुए हैं, कि जिन्होंने मुल्तान शहाबुद्दीन गोरी को कई बेर घोर युद्ध कर के पराजित किया था। परन्तु होनहार परम बलवान होती है कि जिनमें अतिवृत्त घटना भी झट उपस्थित हो जाती है। देखो, ईश्वर ही की इच्छा हिन्दुओं की बादशाहत स्थिर रखने की न थी, कि दैवयोग से पृथ्वीराजजी चोहान जैसे शूरवीर राजा, मुल्तान शहाबुद्दीन गोरी के हाथ से, अपनी अन्तिम लड़ाई में, अंत को प्राप्त हुए। वह भी फिर कैसे कि वे हिन्दुओं की बादशाहत के सब ठाठ पाठरूपी सर्वस्व को मानो अपने साथ ही लोकान्तर में ले गये और जगत् को यह निर्देश कर गये कि लौकिक में जो प्रायः यह कहा कते है कि किमी के अंत समय उ के साथ कुछ नहीं जाता है वह एक प्रकार से अमत्य है। अब रहा हिन्दी रासो शब्द, वह संस्कृत रास अथवा रामक से है और संस्कृत भाषा में रास के "शब्द, ध्वनि, क्रीडा, शृङ्खला विलास, गज्जन, नृत्य और कोलाहल आदि" के अर्थ और रासक के काव्य अथवा दृश्यवाक्यादि के अर्थ परम प्रसिद्ध हैं। मालूम होता है कि ग्रथकार ने संस्कृत भारत शब्द के सदृश रासो शब्द को भावार्थ से महाकाव्य के अर्थ में ग्रहण कर प्रयोग किया है। यह रासो शब्द आज बल की ब्रज भाषा में भी अप्रचलित नहीं है किन्तु अन्वेषण करने से वह काव्य के अर्थ के अतिरिक्त अन्य अनेक अर्थों में भी प्रयोग होता हुआ विद्वानों को दृष्टि आवेगा, जैसे—'हमने चै दे के गदर को एक

रासो जोड़्यो है । कल बहादर सिंघजी की बैठक में बदर ने गदर की रासो गायो हो, फिर मैंने भरतपुर के राजा सूरजमल को रासो गायो सो सब देखते ही रह गए । अजी ये कहा रासो है । मैं तो कल्ल एक रासो में फँस गयो या सूं तुमारे बहाँ नाय आय सक्यो । अजी राम गोपाल बडो दिवारिया है, वाके रासे मे फँस कै रूपैया मत विगाड दीजो । हमनँ आज बिन को रासो निमटाय दीनी है । देखी सब रासो के संग रासो है, बुरी मत मानो" । तथा लुगाइयाँ भी गाया करती है--

गीत—मत काची तोन्ह रखियो धानी

तान्ह कखंगी अँव रासा

गुर राख, पकावा, मत काचा । इत्यादि ॥ १ ॥

निव लोगन की राम उठेगी तोन्ह के खाक उठावेगा,

हल जोत, नही पछनावेगा । इत्यादि ॥ २ ॥

२ यद्यपि इस महाकाव्य का केवल नाम सुनते ही इसका विषय यह प्रतीत होने लगता है कि इसमें पृथ्वीराजजी चौहान के जन्म से लेकर मरण तक के ही सब चरित्र वर्णन किये गए हैं, परन्तु इसके रचित होने की परीक्षा करने से जानने में आता है कि महाकवि चन्द ने इसमें पृथ्वीराजजी के चरित्रों के साथ ही उनके सब सम्बन्धीन सर सामन्त, ठाण्डे राजा, द्वाट मित्र और सगे सबन्धी और महान्त गावदारों राजकुलों के भी कुछ न कुछ चरित्र और शौर्य वर्णन किये हैं । अतः वास्तविक रूप में यह महाकाव्य प्रतीत होता है कि यह महाकाव्य पृथ्वीराजजी चौहान के नायक होने के अलावा न केवल चौहानों की ही बापीता का ग्रन्थ है, किन्तु यह वास्तव में याददार्थ राजकुलों का सर्वस्व है । देखो, पृथ्वीराजजी से लेकर जिन जिन शूर वीरों के चरित्र इसमें वर्णन किये गये हैं उन सब की विद्यमान सतान वर्तमान काल की हमारी श्रीमती भारत राजराजेश्वरी विक्टोरिया के महामन के चारों ओर उपस्थित इकर अपनी अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार तन मन और धन के द्वारा परम राजभक्ति को प्रकाश कर रही हैं और श्रीमती के प्रवेद के साथ मानो अपना रक्त तक दहने को प्रस्तुत करी हैं । क्या पृथ्वीराजजी के एक बड़े सर दीर सामन्त पञ्जनी के वंश में श्री महाराज साहब जयपुर और उनके राज वंशिय सरदार नहीं हैं ? क्या पृथ्वीराजजी के सगे सबन्धी जयचन्दजी के वंशज श्रीमहाराज साहब जोधपुर और कृष्णगढ़ और उनके भाई बेटे नहीं हैं ? क्या पृथ्वीराजजी के बहनऊ और परम शूर वीर महामन्त रावल समरसिन्धी की कुलीन सतान में श्रीमहाराज साहब नेपाल, श्रीमहाराजाणी साहब उदयपुर, श्रीदरबार इंगरपुर और प्रतापगढ़ अपने अपने राजवर्षा सुमराय और सरदारों के सहित नहीं हैं ? क्या चौहानजी के अनेक वंशज बूढी, बोटा शिरोहा, नीमराणा भदावर बेदला, कोटारिया, और पारसोली आदि के राजा महाराज और सरदारों को आज हम अपनी आँखों से नहीं देखते हैं ? इसी तरह अन्य सब की विद्यमान सतानों को भी हमारे पाठक स्वयम् विचार देखे और इस पाठ में ही

बहुत करके समझ लें कि इस महाकाव्य का विषय बारहवें शतक के यावदर्य राजकुलों के संवलित चरित्रों से परम विभूषित है ॥

३ इस पृथ्वीराज रामों को जो हम अपने लेखों में महाकाव्य कर के लिखने हैं

काव्य यह कुछ अन्यथा और आश्चर्यदायक नहीं है, किन्तु साहित्यदर्पणमें महाकाव्य का जो नीचे लिखा हुआ लक्षण लिखा है उममें वही विशेषांश में मिलना हुआ है

सर्गबन्धो महाकाव्य तत्रैको नायक सुर ।
 सद्गुणः क्षत्रियो वापि धीरोदान गुणान्वितः ॥
 एकचंद्रभवा भूषा कुलजा बहोदरि वा ।
 शृङ्गारवीरशान्तानामकोऽङ्गी रम ईष्यते ॥
 अङ्गानि सर्वेषु रमाः सर्वे नाट्यमन्धरा ।
 इतिहामोद्भवं वृत्तमन्धरा सज्जनाश्रयम् ।
 चत्वारस्तस्य वर्गाः स्येस्नेप्वेकं न फलं भवेत् ।
 भारी मनस्त्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा ॥
 क्वचिचिन्दा खलादीनां मताञ्च गुणकीर्तनम् ।
 एकवृत्तमयै पदयैरवत्रानेज्यवृत्तकैः ॥
 नातिस्वलपा नातिदीर्घाः सर्गा अप्टाधिका इह ।
 न नावृत्तमया क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते ॥
 सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत् ।
 सन्ध्या सूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः ॥
 प्रातर्मध्याह्नमृगयाशीलतुं वमसागराः ।
 सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः ॥
 रणप्रयाणोपयम मन्त्रपुत्रोदयादय ।
 वर्णनीया यथायोगं माङ्गोपाङ्गा अमी इह ॥
 कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा ।
 नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गं नाम तु ॥

सा० द० ५५९ ॥

जब कि वह महाकाव्य के लक्षण के अनुसार वास्तविक एक महाकाव्य है तब फिर उसके रचनेवाले का भी साहित्यशास्त्र में एक अच्छा व्युत्पन्न महाकवि होना क्या अनुमान नहीं किया जा सकता है? जैसे कि इस महाकाव्य का विषय पृथ्वीराजजी चौहान और उनके समकालीन यावदर्य राजकुलों के चरित्रों से संवलित है वैसे ही उसका काव्य भी भिन्न भिन्न प्रकार के छंदों से विभूषित अनेक प्रकार के काव्यों का एक ऐसा संवलित काव्यात्मक है कि उसको हम किसी एक

प्रकार के काव्य की संज्ञा प्रदान नहीं कर सकते हैं। उसके काव्य को श्राव्य काव्य की संज्ञा देने में हम आशा करते हैं कि किसी विद्वान को भी कुछ शंका न होगी, किन्तु सूक्ष्मतर अन्वेषण करने से ज्ञात होगा कि उसको कोई दृश्य काव्य का अच्छा व्युत्पन्न परीक्षक झट शोधकर जान सकता है। क्या हम यह नहीं विचार सकते कि इस महाकाव्य के छंदों को कवि ने रूपक के क्रम से क्यों गिना है? इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से यहां तक भी स्पष्ट विदित हो सकता है कि महाकवि चंद ने उसको काव्य की अनेक उत्तमताओं के इन तीनों मूलों से भी भले प्रकार विभूषित किया है। प्रथम, तो महाकवि ने अपने वचन को शृंगार, रस, अनुप्रास और अंकारादिक से परम विचित्र किया है। दूसरे उमने भाव में चोज रखा है। तीसरे, इस महाकाव्य के सब छंद प्राचीन और नवीन प्रकार की गानविद्या के अनुसार गाये भी जा सकते हैं। इसके अनिरिक्त महाकवि ने पृथ्वीराजजी और उनके समकालीन यावदायं राजकुलादि के इतिहास भी जहां तक उमसे हो सके हैं भले प्रकार में वर्णन किये हैं। हिन्दी भाषा में साहित्यशास्त्र और सब पौगणिक अनुवाद विषयक ग्रंथ जो अब तक प्राप्त हो सके हैं वे बारहवें शतक के अथवा उसके पहले के नहीं हैं किन्तु वे सब इधर के समय के रचित हैं, अतएव हमको समझना चाहिये कि चंद ने संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों के आधार में ही यह महाकाव्य रचा है। और जब कि यह बात ऐसी ही है, फिर हमको उमके परम परिश्रम के लिये किन्तु जाभारी होकर उमको प्रशंसा करनी चाहिये। क्या हमको इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने में चंद को उक्ति, साहित्यशास्त्र विषयक रस, और पौगणिक का आदि में उमका संस्कृत भाषा के अनेक विद्या ग्रंथों का अनुकरण करना नहीं दृष्टि आता है? जहां तक हिन्दी भाषा के ऐसे अनेक ग्रंथ कि जो चंद के पीछे के रचित हैं, हमारे दृष्टिपथ में आये हैं, उन सब में यही जान होता है कि उनके रचनेवाले चंद कवि जैसे संस्कृत भाषा में भले प्रकार परिज्ञान नहीं थे और उन्होंने चंद की शैली का ही निमदेह अनुकरण किया है। हमारे बहने का माराश यह है कि इस महाकाव्य को उमके अति किञ्चिद और हमारी बुद्धि को चल विचल कर देनेवाला होने के कारण निन्दनीय ठहराना नहीं चाहिये, किन्तु साहित्यशास्त्रादि के संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों का हाथ में लेकर और अपने हृदय को चाण और भाटादि के बंगपरपरा के डाढ़ बँर के दुःखग्रह में शुद्ध करके सूक्ष्मतर परीक्षा करनी चाहिये उमसे हमको निमदेह यह जान हो जायगा कि हमारे स्वदेशी और यूरोपियन बड़े बड़े विद्वान जो इस महाकाव्य की प्रशंसा अब तक करते चले आये हैं वह वास्तव में वैसा ही अमूल्य महाकाव्य है और वह ऐसा है भी-मानों चंद अपने समय तक के हिन्दी भाषा के सर्व प्रकार के काव्यों का एक अमूल्य सग्रह हमारे लिये प्रस्तुत कर के हमारी हिन्दी भाषा को अति धनाढ्य कर गया है। क्या यह बात पक्षपातरहित विद्वानों को अति आश्चर्य और अट्टाट्टहास करानेवाली नहीं है, कि

हम इस महाकाव्य को अभी तक बहुत ही अच्छी तरह से पढ़ पढ़ा और समझ समझा तो मकने ही नहीं और न इस महाकाव्य में यूनिवर्सिटी (University) की परीक्षा की शैली के अनुसार परीक्षा देकर उत्तीर्ण हो सकते हैं, किन्तु उसको दोष देकर बिध्वंस करने को तो हम सबसे आगे आ खड़े होने को प्रसन्नतापूर्वक तैयार हैं ? निदान किसी कवि के कहे अनुसार जो जिसके गुण को नहीं जानता वह उसकी निन्दा निरन्तर करता है —“न वेति, यो यस्य गुणप्रकार्यं न तस्य निदा सतत करोति । यथा किराती करिकुम्भजाना मुक्ता परिव्यज्य विमानि गुजा ”

जैसे इस महाकाव्य का काव्य अनेक प्रकार के काव्यों का एक सञ्चित काव्य है वैसे ही उसकी भाषा भी उसके ग्रथकर्त्ता के समय तक की अनेक प्रकार की प्राचीन हिन्दी भाषाओं की एक अनि सञ्चित हिन्दी भाषा है ।

भाषा यदि किसी को इसमें कुछ मद्देह हो तो वह इस आदि पर्व को ही ध्यान देकर पढ़ देखे कि उसका किसी छन्द की तो वैसी भाषा है और किसी की कभी । क्या विद्वानों से यह बात ठीकी हुई है कि भाषा और काव्य का निम्न गण्य नहीं है ? जब कि उनमें निम्न मन्त्र का होना यथार्थ है तब फिर क्या प्रश्न का प्रश्न आता अनेक प्रकारों में सञ्चित होना भी स्पष्ट सिद्ध नहीं है ? इन महाकाव्य की भाषा के बीच जाये विद्वानों में प्रसार में जान मस्त है कि जो वर्तमान समय में फिलोलोजिस्ट (Philologists) अर्थात् सांख्यिकविद्याज्ञक गण्य हैं । और जैसे ता हमारे पढ़ने में वर्तमान समय में ऐन ऐन महाकाव्य सिद्धान्त कर लेनेवाले विद्वानों के भी लेख पाये हैं कि निम्नाने ऐसा अन्वेषणाभाव का वाक्य भी कहा है, कि इस महाकाव्य के मातृका को अनुस्वार और विष्णु तक का प्रयोग करने का बोध नहीं था । और विद्वानों में ही ऐसा कहने में मन्त्र हो परन्तु हमारे मुख से तो इस महाकाव्य के काव्य का देखने हुए ऐसा मुन कर बारबार यही निकलता है कि—त्राहि गोविन्द ! त्राहि गोविन्द ! ग्रथकर्त्ता न इस ग्रथ को निम्न भाषा में लिखा है वह उसने स्वयम् ही इस आदि पर्व में रूपक ३२ में स्पष्ट कह दिया है और जैसा उमने कहा है वैसी ही भाषा हम इस महाकाव्य की पाते भी हैं । फिर आश्चर्य क्या है ? वह यही है कि न तो हम इस ग्रथ को आदि से लेकर अन्त पर्वत पढ़ते हैं, न समझते हैं, न कवि के अभिप्राय को लक्ष में लाते हैं, न यह विचारते हैं कि बड़े बड़े विद्वानों जिन के वचन पर अनेक मनुष्य विश्वास करते हैं, उनके सिर पर कुछ सम्मति देने समय बड़ी भारी जिम्मेदारी अर्थात् अनुयोज्यता का बोझ भी रखा हुआ है कि नहीं—किन्तु जो मन में आया वही हम लिख डालते हैं, क्योंकि न तो चंद कवि, न पृथ्वीराजजी चौहान और न रावल तमरसीजी हमसे हमारे ऐसा कहने के लिये अब लड़ने को आ सकते हैं, और न किसी क्षीर-नीर का सा न्याय करनेवाले विद्वानों का हमको डर है । देखो, हमने अपनी प्रथम टिप्पणी

में ही कह दिया है कि इस महाकाव्य की हिन्दी भाषा तीन प्रकार की है । प्रथम षट-भाषा और कुरान की भाषा की योनिवाली, दूसरे षट भाषा और कुरान की भाषा के सम, और तीसरे देशी प्रसिद्ध । इसके अतिरिक्त विद्वानों को इस महाकाव्य की भाषा की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से ज्ञात होगा कि चंद्र कवि ने साहित्यदर्पण में लिखे हुए भाषा के प्रयोग के निम्नलिखित नियमों का भी अपने निज विचार और शैली के संस्कारसहित इस महाकाव्य के रचने में कुछ अनुकरण किया है-

पुरुषाणामनीचाना संस्कृतं स्यात्कृतात्मनाम् ।
 गौरमेनीप्रयोक्तव्या नादशी नाञ्च योपिनाम् ॥
 भामामेव तु गाथा सु महाराष्ट्री प्रयोक्तव्या ।
 अत्रोक्ता मागधी भाषा राजान् पुनर्चारिणाम् ।
 चेटानाराजपुत्राणां श्रेष्ठीनां चाद्रंमार्गधी ।
 प्राच्या विद्वत्कादीनां घूर्णानाम्यादर्वातिका ॥
 योघनागरिकादीनां दाक्षिणात्या हि दीव्यताम् ।
 शाकाराणां शकादीनां शाकारी मन्प्रयोजयेत् ॥
 बाह्लीकभाषा दिव्यानां द्राविडी द्विडादिषु ।
 आभीरेषु तथाऽभीरीचाण्डाली पुष्कमादिषु ॥
 आभीरी शावरी चापि काष्टप्रत्रोप जीविषु ।
 तथैवाङ्गाकारादौ पेशाची स्यात् पिशाचवाक् ॥
 चेटिनामप्यनीचानामपि स्यात् शौ-सेनिका ।
 बालानां पण्डकानाञ्च नीचग्रह विचारिणाम् ॥
 उन्मत्तानामातुराणां मेवे स्यात् संस्कृतं क्वचित् ।
 ऐश्वर्य्येण प्रमत्तस्य दारिद्र्योपस्कृतस्य च ॥
 भिक्षुबन्ध धरादीनां प्राकृतं मन्प्रयोजयेत् ।
 संस्कृतं मन्प्रयोक्तव्यं लिङ्गनीयूतमामु च ॥
 देवीमन्त्रि मुतावेश्या स्वापि कौञ्चित्तथोदितम् ।
 यद्देशं नीच प्रात्रन्तु तद्देशं तस्य भाषितम् ॥
 कार्यातदचोत्तमादीनां काव्यो भाषात्रिपर्यं ।
 योगिन मस्त्रीवालविश्यां कितवाप्सरसां तथा ॥
 वैदग्ध्यार्थं प्रदानव्य संस्कृतं चा त्रगन्तरा ॥

म० द० ४३२ ॥

इस बात की कुछ परीक्षा हम इस आदि पद्य में ही कर सकते हैं । देखिये रूपक ३३, ३९, आदि शुद्ध संस्कृत भाषा में हैं और रूपक १६, २२, ४७, ५७, ५९, इत्यादि में षट्भाषाओं का सद्दृश्य और साटकों में प्रायः संस्कृतादि भाषाओं का सादृश्य है । इसी प्रकार हमारे पाठक इस भाषा सम्बन्धी सब बातों को इस

समय ग्रन्थ में अन्वेषण कर जाच देखें। यदि इस प्रकार की परीक्षा करने पर सब विद्वानों की सम्मति में यही नुस्खा कि चर कवि वज्र मूर्ख या तो हम भी उम को बड़ा वज्र मूर्ख कहने लगेंगे, क्योंकि वह हमारा कोई सबन्धी नहीं है और न हमको अपने कहे का कुछ हठ है वरन हमारा मिद्धान्त यही है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग हो। इस महाकाव्य की भाषा में दो एक वर्ष में एक यह भी बड़ी भारी शका लोगो न खड़ी की है कि उममें आठ या १० दम भाग में एक भाग फारसी शब्द हैं हैं और फारसी शब्द अकबर बादशाह के समय से हिन्दी भाषा में मिले हैं, अतएव यह महाकाव्य १०० १६४ में १६७० के बीच में कृत्रिम बना है। हम इस बात से बिलकुल ही असम्मत हैं और ऐसा अनुमान करने वाले को हम समझते हैं कि उसने न तो यह पृथ्वीराज रामो कभी आदि में अत पर्यंत अच्छी तरह से पढ़ा है और न उसको ऐतिहासिक विद्या का पूरा पूरा बोध है, क्योंकि यह अनुमान बिलकुल ही अदृढ़ और अग्रिपक्व है। वरन अब तक के ऐतिहासिक शोधों के अनुसार हमारी सम्मति में फारसी शब्दों का मेल हमारे भरतखण्ड की बोलचाल की भाषाओं में सातवें शतक तक पाया जा सकता है। फिर इस बारहवें शतक की हिन्दी भाषा की तो क्या ही कथा कहनी है। ठीक विचार कर देखिये कि किसी देश की भाषा में अन्य देशीय भाषा के शब्दों का मेल बहुधा करके प्रथम बोलचाल की भाषा में ही हुआ करना है न कि किसी मृतप्राय भाषा में और वज्र विदेशियों के किसी देश में आने जाने, बसने बसाने, रहने सहने, मिलने मिलाने, वाणिज्य करने कराने, राज्य के बदलने बदलाने, मन के बिगड़ने बिगाड़ने आदि कारणों में ही हुआ करना है। तदनन्तर आप नीचे लिखे कारणों को विचार कर देखिये और निर्णय कीजिये कि चन्द की हिन्दी में जो फारसी शब्दों के प्रयोग सबन्धी दोष दिये जाते हैं वे वास्तव में यथार्थ हैं अथवा नहीं —

१ पृथ्वीराज रामो के किसी भी समय में आठ या दम भाग में एक भाग के फारसी शब्द नहीं हैं और जब प्रत्येक समय में नहीं है तब समय ग्रन्थ में भी न होना स्वतः सिद्ध है। यदि किसी को निश्चय करना हो तो इस आदि पदों से ही गिन कर निश्चय कर लें। हा, ऐसा तो निःसंदेह कह सकते हैं कि उममें अनेक फारसी शब्द हैं किन्तु बिना गिने ऐसी असत्य सख्या स्थिर नहीं कर सकते हैं ॥

२ ग्रन्थकर्त्ता ने रूपक ३० में स्वयम् कहा है कि उमने कुरान की भाषा का भी आश्रय लिया है।

३ ग्रन्थकर्त्ता महाकवि चन्द पंजाब देश के लाहौर नगर में उत्पन्न हुआ था, जहाँ कि उसके जन्म होने के १०० वर्ष पहले से ही महमूदी सलतनत का होना और उमका पृथ्वीराजजी के साथ ही साथ नाश होना तबकात नासरी से ही सिद्ध है। फिर क्या कोई विद्वान यह अनुमान कर सकता है कि इस सी १०० वर्ष के समय

में लाहौर नगर की भाषा में कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का नहीं मिल सका था और न चंद कवि एक भी फारसी शब्द जानता था और न उसके सुनने में कभी कोई एक भी फारसी शब्द आया था ? क्या महमूदी सलतनत के समय में कोई एक भी हिन्दू मुसलमान नहीं हुआ था, न कोई मसजिद बनी थी, न कोई नगर आदि मुसलमानी नाम से बसे थे ?

४ क्या पृथ्वीराजजी के राज्य की ओर महमूदी सलतनत की परस्पर सीमा नहीं मिली हुई थी ? क्या इन दोनों राज्यों के दूत एक दूसरे के राज्य में आते जाते और नहीं रहते थे ? यदि परस्पर लिखापढ़ी का काम पड़ा था तो क्या वह शुद्ध वैदिक संस्कृत भाषा में लिखापढ़ी हुई थी और क्या महमूदी सलतनत वाले भी संस्कृतादि मृतप्राय भाषाओं में ही अपना राज का काम चलाते थे ?

५ क्या हमन निजामी आदि से हम को यह ज्ञात होता है कि पृथ्वीराजजी के राज्य समय में उनकी सेवा में अथवा उनके राज्य में न तो कोई फारसी जानने-वाला था न कोई सुलतान की ओर से कभी कुछ संदेश लेकर पृथ्वीराजजी के पास गया, न कोई मुसलमान सिपाही था, न कोई मुसलमान मौदागर था, मानों पृथ्वीराजजी के राज्य समय की हिन्दी भाषा को मुसलमानी भाषा की किंचित् वायु ही नहीं लगी थी ? क्या चित्ररेखा नाम की मुलतान शहाबुद्दीन गोरी की एक परम प्रिया पामवान को हमन नामक व्यक्ति का उड, लाना तबक़ातनामरी में कुछ भी मिद्ध नहीं होता और क्या यही सुभगा पृथ्वीराजजी की मरण में रँहकर हमारी हिन्दुओं की बादशाहत को ममूल नाश को प्राप्त करानेवालों में नहीं हुई है ?

६ क्या सुलतान शहाबुद्दीन गोरी ने कई बेर पृथ्वीराजजी और लाहौर की महमूदी सलतनत पर चढ़ाईयां नहीं की थी ? क्या इन अवसरों में भी जो फारसी शब्द चन्द ने प्रयोग किये हैं वे चंद और पृथ्वीराजजी की सेना के सुनने और समझने में कभी नहीं आये थे और न उनमें का कोई एक शब्द भी उनकी भाषा में मिल गया था ? क्या जब महाबुद्दीन ने लाहौर की महमूदी सलतनत पर चढ़ाईयां कीं तब लाहौरवालों ने पृथ्वीराजजी से कुछ मंत्रणा नहीं की थी और न उनकी कुछ सहायता ली थी ?

७ क्या महमूद ने हांसी पर चढ़ाई नहीं की थी ? क्या वह लाहौर के एक वाइसराय (Viceroy) के माथ बनारस तक नहीं आया था और न इमने उम शिवपुरी को लूटा ? क्या इस समय में भी कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का हमारी हिन्दी भाषा में नहीं मिला था ?

८ क्या महमूद गजनवी की १६ वा १७ चढ़ाईयां (मन् ९९६ से १०३० तक) हमारे देश की भाषाओं में कोई एक भी मुसलमानी शब्द नहीं मिला सकी थी ? क्या हमारे गुजराती बंधुओं को महमूद गजनवी के निजमुक्त के "कुत्शिकन" और

“बुत्फरोश” शब्द मोमनाथ के नाश के दिन से आजतक नहीं याद रहे ? क्या गुजरात के नागर ब्राह्मणों में से जिन्होंने अपने देश की संरक्षा के लिये पुच्छायं किया और मुसलमान बादशाहों की सेवा करना अंगीकार किया उनका नाम “मिपाही नागर” नहीं पडा है ? क्या महमूद के समय में कोई भी हिन्दू मुसलमान नहीं हुआ था ? क्या मथुरापुरी में उसके लर में अनेक हिन्दू गुलाम दो दो रुपये पर नहीं बिके थे ? क्या उसकी एक लाख मवार और बीस हजार पैदल फौज के साथ हमारे स्वदेशी व्यापारियों की बोलचाल देववाणी में होती थी और कोई एक भी मुसलमानी शब्द उसकी फौज हमारे देश के अनेक नगरों में अपने पीछे अपने स्मारक-बिन्दू की भांति नहीं छोड गई थी ? क्या महमूदाबाद नामक कोई भी नगर महमूद का बनाया हुआ हमारे देश में नहीं है ?

६ क्या अब्बुल् असी ने सन् ६-६ ई० के लगभग बंई के समोप के थाना पर चढाई नहीं की थी ? क्या ईराक के परम प्रसिद्ध जालिम गवरनर हज्जाज के समय में राजा दाहिर से मिथ विजय नहीं किया गया था ? क्या फिर सन् ७१२ ई० में महम्मद कासिम ने मिथ पर चढाई करके मिथ को नष्ट भ्रष्ट और लूट खसोट नहीं किया था और दाहिर को भी मार डाला था ? क्या राजा दाहिर का लडका जयसिंह इस समय विन्नेक और छोटे मोटे मिथ के राजा और सरदारों सहित मुसलमान नहीं हो गया था और क्या तब से ही मुसलमानी धम्म का आज तक मिथ में बराबर चला आना ऐतिहासिक स्रोत नहीं सिद्ध करते है ? क्या मिथी मुसलमान पृथ्वीराजजी के पीछे हुए है ? क्या इस दशा में कोई एक भी अरबी शब्द हमारी देश भाषाओं में उस समय नहीं मिला है ?

१० क्या ऐतिहासिक स्रोत हमको यह नहीं विदित करते है कि पारसी लोग सैमेनियन् वंश की अवन्ति के समय फारस में भाग कर हमारे देश के बंबई नगर के आसपास आकर बसे है ? क्या उन लोगों ने अपनी मातृभाषा का कोई एक शब्द भी पृथ्वीराजजी के समय तक हमारी देश भाषा में नहीं मिलाया था ? क्या उनको हमारे देश के लोग पारसी के बदले अन्य वैदिक शब्द से पुकारते थे ?

११ क्या गुजरानी भाषा में फारसी शब्दों के मिलने का शोध सन् १३५६ तक शास्त्री ब्रजलाल कालिदासजी के रचित गुजरानी भाषा के इतिहास नामक ग्रंथ से पहुंचना नहीं विदित होता है ? जो एसी तरह हमको देश भाषा के प्राचीन ग्रन्थादि बराबर मिलते जाय तो क्या हम सातवीं सदी तक कोई एक भी मुसलमानी शब्द अपनी देश भाषाओं में मिला हुआ नहीं शोध सकते है ?

१२ क्या पुरातत्त्ववेत्ताओं ने यह शोध लिया है कि हिन्दी भाषा का अमुक समय में प्राकट्य हुआ है ? क्या बारहवें शतक के पहले और उसके एक दो शतक पीछे की कोई पुस्तक, ताम्रपत्र, प्रशस्ति, पट्टे, परवाने आदि हमको ऐसे प्राप्त हो गये हैं कि जिनसे हम यह कह सकें कि बारहवें शतक के पहले अथवा उसके कुछ

पीछे के समय तक भी मुसलमानी भाषा के शब्द हिन्दी में नहीं मिले थे ? क्या अब तक के प्राप्न हुए पुगलत्व संस्कृतादि मृतप्राय भाषाओं में नहीं है और उनकी अपेक्षा से हिन्दी भाषा के विपश्य में कल्पना करना बहुत ही आश्चर्यदायक और अयोग्य नहीं है ?

१३ क्या संस्कृत भाषा के उन ग्रंथों में जिनको पुगलत्ववेत्ता बारहवें शतक के पहले के बने हुए मानते हैं, ऐसे ऐसे शब्द हमको प्राप्न नहीं होते हैं कि उन नाम के देश और मनुष्य यूरोप आदि अन्य खंडों में आज भी विद्यमान हैं ? क्या विक्रमादित्यजी की "शाकारि" पदवी साधु संस्कृत भाषा की है ? क्या रावल समरसीजी की आवू की प्रशस्ति के ४५ वे श्लोक में "तुरुष्क" शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है ? क्या व्याकरण महाभाष्य से बहुत में धातुओं का प्रयोग द्वीपान्तरो में होना विदित नहीं होता है ? क्या महाभारत में पांडवों का यावनी भाषा में बात करना नहीं लिखा मिलता है ?

१४ क्या वर्तमान समय के अच्छे हिन्दी लिखनेवालों में से कोई किसी विद्वान्मंडली में खड़ा होकर यह कह सकता है कि चिट्ठी पत्री से लेकर ग्रन्थतक जो कुछ उसने आज तक हिन्दी भाषा में लिखा है उन सब की हिन्दी एक सी ही है अर्थात् उनके अनेक लेखों में से ऐसे उदाहरण बिलकुल नहीं मिल सकेंगे कि उनके किसी लेख में तो एक भी फारसी शब्द नहीं आया होगा और किसी में अनेक फारसी शब्द प्रयुक्त हुए होंगे ? यदि पृथ्वीराज रामो की भांति एक हजार वर्ष के पीछे कोई ऐसे हमारे स्वदेशी ग्रन्थों के ऐसे लेखों को हाथ में लेकर वादविवाद करे तो क्या दोनों पक्षकारों को प्रत्येक के अनुकूल तर्क नहीं मिल सकेंगे ? जब आज ही हम लोगों को यह दशा है कि कभी किसी हिन्दी लिखने में और कभी किसी, तो फिर प्राचीन समय के ग्रन्थकारों में से जिनमें यह स्पष्ट कह दिया है कि मैं कुरान की भाषा को भी प्रयोग मालता हूँ, उमको हम कथोकर दोष दे सकते हैं ? क्या हम अनुमान नहीं कर सकते कि प्राचीन ग्रन्थकारों में से जिनमें किसी हिन्दी चाही उसने किसी ही लिखी है ?

१५ क्या आज कल के विद्यमान देशी राजस्थानों में अस्मत् समय से अब तक मुसलमान बादशाह, सिपहमालार, सरदार, मोदागर, मोलवी, मुत्ला और बाजी आदि के नाम, अपनी देशभाषा हिन्दी और मृतप्राय भाषा संस्कृतादि के होते हुए भी, फारसी अक्षरों और उसी भाषा में चिट्ठी पत्री और फरमान खरीते आदि के लिखे जाने का प्रचार नहीं प्रचलित है ? क्या आज के एकड़की अंग्रेजी राज्यशासन के समय में भी राजपूताने के अन्तर्गत राज्यों से श्रीमान् वाहमराय और गवरनर-जनरल माह्व बहादुर के नाम उभय को विदेशी फारसी भाषा और लिपि में खरीते नहीं लिखे जाते हैं ? बहुत समय के व्यतीत हो जाने पर जब कि वर्तमान समय अत पुरातत्व संज्ञा से माने जावेंगे और वे ऐसे ही अलभ्य होंगे जैसे कि आज पृथ्वी-

राजकी के समय के है, तब फिर क्या उस समय के विद्वानों का वैसे ही तर्कों से कि जैसों से आज हम लोग रामो में दोष देते हैं, इन देशी राज्यों की इन फारसी लिपि और भाषा में गवर्नमेंट हिन्द के नाम लिखे हुए खरीनों को भी जाली समझना यथार्थ होगा ? क्या यह व्यवहार भी वर्तमान समय में देशी राजस्थानों में प्रचलित नहीं है कि जब गवर्नमेंट हिन्द के नाम खरीना लिखने का काम पड़ना है तब फारसी भाषा के विद्वानों को घेर घार कर, फारसी को ढूँढ़ ढाड़ कर, और एकांत में बैठ बाठ कर, कई दिनोतक अति परिश्रम करके वे नहीं लिखे जाते हैं; उसी तरह जब किसी मंदिर आदि की प्रशस्तिका का काम पड़ना है तब वैसे ही देशी और पंडितों को, चाहे वे राजके नौकर हों अथवा नहीं, घेर घार कर संस्कृत भाषा में प्रशस्तियां नहीं लिखाई जाती हैं और जब किसी राजा की विरदावली का कोई कवित्त बनवाने का काम पड़ता है तब षट भाषाओं की भाषा से बिगड़कर बनी हुई डिगल भाषा में वाक्य नहीं रचवाया जाता है और जब लाटसाहब की पधरावनी का उत्सव किया जाता है तब उस में Address अर्थात् अभिवादन अंग्रेजी भाषा में नहीं दिया जाता है ? क्या ये सब भाषाएं आज प्रचलित हैं और क्या आज मुसलमानों की बादशाहत है ? क्या जो आज हम महाराणाजी श्रीमज्जनमिहजी के राज्यशासन समय के सब प्रकार के राजकीय लेख एकत्र करके देखें तो वे सब एक ही भाषा में हमको लिखे मिलेंगे ? क्योंकि क्या सब राजा साहबों के स्वर्गवास होने पर राब की मोहर, छाप और स्टाम्प और मिक्के आदि में उसी दिन नवीन राजा साहब का नाम पलट करके वैसे ही हुकुम जारी हो जाते है कि जैसे आज अंग्रेजी राज में होते है कि जिस राजकीय व्यवहार के संस्कार में विद्यमान पुरातत्ववेत्ता उलब्ध पुरातत्वों को जांचा करते है ? क्या मेवाड़ राज्य में महाराणा जी श्रीशंभूमिहजी के नाम का स्टाम्प आज तक नहीं जारी है ? महाराणाजी श्रीमज्जनमिहजी के नाम की छाप वर्तमान महाराणाजी साहब के राज्यशासन समय में कई वर्षों तक नहीं जारी रही है ? क्या ऐसे स्टाम्प पर लिखि हुई दस्तावेजों और ऐसी छाप लगे पत्र बहुत समय के व्यतीत हो जाने पर जाली समझे जायेंगे और जिन जिनके पास ये राजकीय लेखादि उस समय में मिलेंगे वे सब जाल के अग्राधी समझे जाकर फांसी लगाये और कालेपानी भेजे जावेंगे ?

सारांश हमारे निवेदन करने का यह है कि हिन्दी भाषा में अन्य देशीय भाषाओं के शब्दादि के मिलने का प्रश्न बड़ा ही सूक्ष्म और कठिन है और जो हमारी तरह विद्वान लोग यह मान लें कि जब जिस अन्य देशीय का आना हमारे भारतखंड में हुआ तबही से उसकी भाषा के शब्दों का भी मेल होना अति संभवति है तो यह प्रश्न बड़ा ही सरल हो जाता है। हमारा सिद्धान्त को माने बिना इस प्रश्न का निर्णय करना बहुत दुस्तर है क्योंकि जो चंद्र कवि के पहिले अथवा उसके समय की हिन्दी भाषा की पुस्तकादि मिल जायें और उनमें मुसलमानी भाषाओं के

शब्द न मिलें तो हम मुख से यह अनुमान कर सकते हैं कि उनके रचनेवालों ने उनका जानकर प्रयोग नहीं किया और चंद ने रूपक ३९ की प्रतिज्ञा पूर्वक उनका प्रयोग किया है जैसे कि वर्तमान समय में भी हिन्दी भाषा के अनेक विद्वान अनेक प्रकार की हिन्दी लिखते हैं ।

कविराजजी ने इस महाकाव्य की भाषा के प्रसंग में जैसे मुसलमानी शब्दों के प्रयोग होने का दोष दिया है वैसे ही उन्होंने इन सत्त । चावदिसि । भारत्य । पारत्य । सारत्य । और चूक शब्दों को भी राजपूताने की कविता के ही शब्द होना समझ कर इस महाकाव्य का मेवाड़ राज्य में जाली बनना भी अनुमान किया है । तथा इन ग्रंथ में बहुत से शब्द अनुस्वार सहित प्रयुक्त हुए हैं उनके विषय में भी उन्होंने महाकवि चंद पर आक्षेप करके यह कहा है कि "अनुस्वार लगाने से यह स्पष्ट जान पड़ता है कि यह संस्कृत कुछ भी नहीं जानता था क्योंकि उसको विन्दु विसर्ग का भी ठीक ज्ञान न था ।" परन्तु हमारी तुच्छ सम्मति में महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदास जी महाशय का यह सब कहना बिल्कुल ही अमत्य और निमूल है । अब जो प्रमाण अपने इस कहने के समर्थन में हम आगे दिखावेंगे उनमें यह भी स्पष्ट सिद्ध होगा कि जिन जिन ग्रंथों में हमने उनको उद्धृत किया है वे कविराज जी के पढ़ने में नहीं आये होंगे, नहीं तो वे ऐसे अग्र-ताभाव के अनुमान कदापि नहीं करेंगे —

१. यद्यपि सत्त शब्द का आजकल की बोलचाल की ब्रज भाषा में भी प्रयोग होना हमने अपनी लिखित प्रथम संरक्षा में इन वाक्यखंडों के उदाहरणों से सिद्ध कर दिखाया है, जैसे-जैसे वाक् मत्त चढ़ आयो, तब वो मत्ती भई, मत्त पर दत्त दाना, राम राम मत्त है, दा चार नित्त है-तथापि एक यह दोष भी हम कविवचनमुद्रा में उद्धृत करके प्रमाण में उपस्थित करने हैं—“मत्त सुबचन कवीर के, चित्त देत सुन लेहु । एक मानक गुरु के बचन, मत्त मत्त करि गेहु” । तथा सालशाकृत विनय-त्रिका में—“राज मोल पर देख हयं सर्वं सत्त लेख मो दीन रेख मेख मार भाल मन्द के” यह शब्द ऐसा अप्रसिद्ध नहीं है कि जिसके प्रयोग के विषय में हिन्दी भाषा के विद्वानों को किंचित् भी संदेह हो सतएव हम अधिक उदाहरण नहीं लिखते ।

२. श्रीमद्वल्लभ मप्रदाय में जो अष्ट छाप करके प्रसिद्ध है उनमें के एक कृष्ण-दासजी ने “चावदिसि हरिकृष्ण ग्रंथों” अपने एक कीर्तन में कहा है ।

३. इन भारत्य, सारत्य और पारत्य शब्दों के प्रयोग के विषय में हमने प्रथम संरक्षा में बहुत कुछ कहा ही है परन्तु फिर भी हम एक प्रमाण अष्ट-छापवाले छीत स्वामी के एक कीर्तन में से यह बतते हैं “भारत्य में सारत्य हैं हरिभू कहाये सारथी” और पंडित कन्हैया लालजी-कृत छंदप्रदीप नामक ग्रंथ से वैसे ही अन्य शब्दों के प्रयोगों के उदाहरण भी विदित करते हैं; यथा—(१) करि

गहि भार समत्थ । (२) यश पायो वृष मथ्य । (३) मत्थन नत करि लज्जित
दिनज (४) सुसज्जिय भ्रमगति । (५) उत्थिय ममुद बद्रिय लहरि । (६) रहि
तदत्थकि जियमु अरि । (७) लखि दव्वत सब नृपति । (८) मिहवली समरस्थ
हत्थिवर मत्थ विदारन ।

४. अब शेष चूक शब्द के विषय में भी हमारी लिखित संरक्षा में लिखे के
सिवाय हमको यह कहना है कि उसके शब्दार्थ तो वही है कि जो डाक्टर हार्नेली
ग्राहब ने हिन्दी शब्दों के धातुओं के संग्रह में वर्णन किये हैं किन्तु यह शब्द जिस
विषय के प्रसंग में प्रयोग होता है वैसा ही उसका भावार्थ हो जाता है जैसे कि छल
के अर्थ में अष्ट-छापवाले परमानन्ददास जी ने उसका प्रयोग किया “अहो हरि
बलिसौ चूक करी” इसी तरह ममझ लेना चाहिये कि जब वह छल में भारने के
प्रसंग में प्रयुक्त होता है तब उसका वैसा भावार्थ ग्रहण किया जाना है । राजपूताने
के किसी किमी कवि को हमने ऐसा भी कहते हुए सुना है कि यह चूक शब्द राज-
पूताने की भाषा में ही प्रयोग हुआ मिलता है और हिन्दी भाषा के किसी काव्य में
किमी भी अर्थ में यह शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है, परन्तु उनका यह कहना हमारे
नीचे लिखे प्रमाणों से बिल्कुल ही असत्य प्रतीत होता है -

वृन्द सतसई

दोहा पिशुन छत्यो नर मृगन सो करन निगाम न चूक ।

जैम दाध्यो दुध की, पीवन दाउह फूक ॥

मूरख गुन समझै नही, सो न गरी में चूक ।

कहा भयो दिन की त्रिभी, देखी जो न उलूक ॥

नाथ कवि अर्थात् कवि लोकनाथजी चौबे कृत

कवित्त - मुखद रमाल को रिमाल तह नापे बैठि,

ऐंठि बोल बोलै पिक, मधुप दुहू दुहू ॥

कुंज कुंज कारे है कुटल अलि पुंज पुंज,

गुंज गुंज फूल रस चुहकै चुह चुह ॥

चूक बिन प्यारी कीन्ह मेरो मन टूक टूक,

कूक सुने हूक परै, करन उहू उहू ॥

नाथ दिसि चार अधियार ही जनात मोहि

तातैं किल कोकिला, कहत कुहू कुहू ॥

सूरसागर राग काफ़ी

मैं अपने कुलकानि उरानी ।
कैसे श्याम अचानक आये मैं मेया नहीं जानी ॥
वह चूक जिय जानि सखी मुनि मन लै गये चुगई ॥
तन तै जात नही मैं जान्यो लियो श्याम अपनाई ॥
ऐसे ठगत फिरत हरि घर घर भूलि कियो अपराध ।
सूर श्याम मन देहि न मेरो मुनि करिहों अनुराध ॥
रागबिहागरो—कहा करों गुरजन डर मान्यों ।
आये श्याम कौन हिन करिकें मैं अपराधिनि कछु नहि जान्यो ॥
ठाढ़े श्याम रहे मेरे आंगन तब ते मन उन हाथ बिकान्यों ।
चूक परी मोकों सबही अंग कहा करौ गई भूलि मयान्यों ॥
वे उनही को नए हरष मन मेरी करनी ममुझि अयान्यों ।
सूर श्याम संगम उठि लाग्यो मो पर बारं बारं रिसान्यों ॥ ३७ ॥
बीच कियो कुल लज्जा आई ।
मुन नागरी बक्रम यह मोकों मनमूख आये घाई ॥
चूक परी हरिनें मैं जानी मन लै गये चुगई ।
ठाढ़े रहे मकुच तो आगे राखा बदन दुगई ॥
तुम हो बडे महर की बेटी काहे गई भुलाई ।
सूर श्याम है चोर तुम्हारे छाडि देहु डरपाई ॥ १० ॥

कवि लल्लूलाल कृत

दोहा -- घरम आज मों चूक करि । दुर्जघन लै दीन्ह ॥
राजपाठ अर बिन मब । बनोबम दै दीन्ह ॥
करी चूक प्रह्लाद पै । हिरन अमुर परचड ॥
हरि सहाय हिन अवतरे । अमुरन किये विखंड ॥

रामायण

छमहु चूक अनजानत केरी । चहिये विप्र उर कृपा घनेरी ॥

स्त्रियाँ गाया करती हैं

मेरा मस चुहात दिगारी । काग कप में डर डर चूकूं कृपा जान मई बीवा री ॥

कबीर

काशी का मैं बामी कहिये, करम दशा का हीना ॥

राम भजन में चूक पड़ी, तब पकर जुलाहा बीना ॥

कहावत

बाहार चूके वह गये व्योहार चूके वह गये ।

दरवार चूके वह गये मुमराळ चूके वह गये ॥

चूरनवाले

है चूरन खट्टा चूक । जिमस नित्त लगी भूल ॥

५ हम अनुस्वार सहित शब्दों के प्रयोग के विषय में जो उपर कह आये है हमके नीचे लिखे उदाहरणों को अवलोकन करने में अज्ञा है कि हमारे पाठकों को पूर्ण संतोष हो जायेगा

सूरसागर

राग भैरवी भजि श्रीविद्म चण सरोज । तन्मणि दीर्घ इति मनोजं ।

इच्छामि यदि सततं मुखमारं । तन्मणि न विनि विषय धृतभारं ॥

यदि बाह्यमि हृदि भक्ति सुरत्न । तुर चपल शरणगत यत्नं ॥

प्राप्य मुदुल्लस नखर देह । परिहर गतल निगम सदेहं ॥

मानय हृदय मयोदित वचनं । तदया मितो चेदतिशय पचनं ॥

वत्सपदं भावय भव जलधि । अत समै भवधि न ववधि ॥

नाथ तवाह मनीरण रावं । पूर्य गतनमिम मयि भावं ॥

तव गुण गण कथिता मृत गाथे । प्राण्यमिद दिश तव रघुनाथे ॥

रामायण

छंद - दै भक्ति रमा निवास त्राम हरण शरण सुखदायकं ॥

सुपधाम राम तमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ॥ १०४ ॥

सुखद राजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलित वलं ॥

ब्रह्मादि शकर सेव्य राम तमामि करुणा कोमल ॥ १०५ ॥

तोटक छंद -- गुण ज्ञान निधान अमान मजं । नित राम तमामि विभूं विरज ॥

भुजदंड प्रचंड प्रताप वलं । षलवृद निकद महाकुशलं ॥ १०६ ॥

विनु कारण दीन दयालू हितं । छवि धाम तमामि रमा सहितं ॥

भवतारण कारण कार्य परं । मनसं भव कारण दोष हरं ॥ १० ॥

शरचाप मनोहर तूणि धरं । जल जाहण लोचन भूप वरं ॥

सुष मंदिर सुंदर श्रीरमणं । मद भार महा ममता शमनं ॥ ११ ॥

खालशा-कृत विनय पत्रिका

भैरवी -- रे मन सत चरण धरु माथं ।

निम वामर जिनके जगनायक वास करत है स, १ ॥ १ ॥

निनको छोड़ विश्व मे भटकै वेश्या को करि नाथं ।

भक्ति सहित सेवा तुम करते वह मारत है लाथं ॥ २ ॥

तत्रापी कछु लाज न आवत मलत चरण धरि हाथं ।

सिंह मदन गोपाल साधु पद गहु अघहर सम पाथं ॥ ३ ॥

गोस्वामी श्रीलक्ष्मीनाथजी परमहंस-कृत पदावली

नमो नमो गीता हरि वंशं । मुर नर मुनि सज्जन अवतंशं ॥
 योगल पद उपनिष श्रुति अंसं । हरि मूष कथित मंत हिय हंसं ॥
 विमल व्याम भाषित गन संशं । देव दनुज मानव अहि वंशं ॥
 भक्ति प्रिराग ज्ञान परगाशं । काम क्रोध मद मोह विनाशं ॥
 सकल शास्त्र सम्मत निति शोशं । अर्थ धर्म सुखदायक हंसं ।
 सुचि सागर तीरथ फल देशं । कलिमल निमिर प्रकाम दिनेशं ॥
 गुण अनन्त कहि गावन सेशं । चतुरानन गण देव महेशं ॥
 सुनत सकल मन होत हुलाशं । लछमीपति अनि पाप विनाशं ॥

नरहरदास कृत अवतार चरित्र

भुजंगी - सुगन्धं विगन्धं न अस्तूति गागी । विभेदं न सत्रं न मित्रं विचारी ॥
 न महिमा न माया न मद् न मोहं । न रंगं विरगं न दाया न द्रोहं ॥
 न मीतं न तापं न सांगं कुमंगं । भावं न भिष्यान अंगं अनंगं ।
 सुखं भूमि मज्जा न डामं न वाम । यहे वाहं आनै नती पंन-ग्रामं ॥
 ममं विषयह भूमि पंथं म ज्जं । वमन्नं दिगं गीतरागं त्रिलज्जं ॥
 विमोहं विदेहं न उन्नी विकारं । अघाने ये निति वानं अहारं ॥
 विलेपं न न श्रीपंड जागी विचारं । धरी गुणनाशक गै मिया धारं ॥
 प्रकामी नु निरास मय मोद पवै । एम नाउ द आर पीर हगवै ॥
 अलेपं अछेपं न अप्रकामं । निगपेक्ष निर्वयः नरनं निरामं ॥
 अनाजुन अघवन माया अनीतं । अमोह अछोह अद्रोहं अभीतं ॥
 अनामं अकामं अडामं अजेयं । अनाधार आगार मरिभा अमेयं ।
 प्रश्रुति लीनै भवै पंन पानी । विचार प्रचारं विहारं विमानी ॥

यह महाकाव्य आज तक महाकवि चंद्र का बारहवीं शताब्दी का रचना हुआ एक बड़ा प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ करके हमारे देश में प्राचीन काल में चला जाता है

◆◆◆◆◆ और इसकी यथार्थता में आज तक क्या तो स्वदेशी और क्या अकृत्रिमता ◆ किमी विदेशी विद्वान को कोई वीमो शका नहीं हुई है कि ◆◆◆◆◆ जैसी हमारे परम प्रिय मित्र महामहोपाध्याय कविदासजी श्रीश्यामलदासजी को बैठे बिठाये हो गई है । यद्यपि हम इस महाकाव्य को अभी तक अनुकूल दृष्टि से ही देखते हैं, किन्तु उमीके साथ हम उमकी परीक्षा करने में प्रतिकूल दृष्टि देकर उमके गुण दोषों को भी देखते जाते हैं, और जब हमको उसमें कोई दोष देने जैसी बात नहीं मिलती तब उमी स्थान पर हम अपनी टिप्पणी में अपना अभिप्राय लिख प्रकाश करते हैं । हमारे पाठकों को यह भली प्रकार समझ रखना चाहिये कि जिस दिन जिस स्थान में जो कुछ हम को कृत्रिम दीखेगा उसे

हम उतने ही बलपूर्वक दोष देकर प्रकाश कर देंगे जैसे हम गुणों को प्रकाश करते हैं और जो कोई बात हमको उममे दोष देने जैसी मिलेगी ही नहीं तो फिर हम अगक्त हैं। इस महाकाव्य को कृत्रिम अनुमान करने में निने हेतु दिा गये है उनमे मे प्रत्येक के विषय में हम निम्नलिखित कुछ निवेदन करते हैं -

१ इस महाकाव्य मे जो सवत लिये हुए ३ वद मुमलमानी तवारीखों म लिखे और साप्रत शोध हुए सवतो मे नही मिलत और उनमे ९० वा ९१ वर्ग का अंतर पडता है अतएव इस बात का निर्णय करने को हमारी टिप्पणी १६८ और ३५५।५६ वादी पढै। उनके पढने और पक्षपात रहित मनन करने मे हम आशा करते हैं कि वादी की सवत् अन्तर विषयक शका वा निराकरण हो जायेगा।

२ इस ग्रंथ मे मुमलमानी भाषादि के शब्द प्रयुक्त हुए दृष्टि आने हैं उनके विषय का समाधान, हमारी इसी उममत्तर टिप्पणी का भाषा सवती चौथा लेख-खड अवलोकन करने से, भले प्रकार हो सकता है।

३ अब तक पृथ्वीराजजी के समकालीनों मे मे केवल रावल समरमीजी को ही आशेष करनेवाले न उदहृण मे प्रष्टण क्रिया है कि उसके विषय मे केवल आबू और चित्तौड की पाच चार प्रशस्त्रियों मे ही सशय करनेवाले को सशय होना है अर्थात् सजय वा आधार उन ही प्रशस्त्रियों पर है। यदि उन प्रशस्त्रियों के सवतों वा विद्वान लोग भले प्रचार पराधा करके यह निश्चय कर ले कि वे रावल समरमीजी के ही समकालीन हैं और उनके सवा जमुन पवार के हैं और हमको पृथ्वीराजजी, समरमीजी और पृथावर्द्धनी के तो परवाने प्राप्त हुए हैं उनके सवतो को भी उमी प्रकार जान देने तो फिर रावल समरमीजी के समकालीन होने मे कुछ अगडा ही न रहगा, बसकि अगडा नभी तर रहता है कि अब तर किसी विद्वान को किसी प्रकार पक्षपात होना है और वपण लेकर मुख दिखने हुए भी न होना है। जहा तक हमने रावल समरमीजी के विषय मे शोध किया है वहा तक हमको इस बात मे कुछ सदेह नहीं है कि वे पृथ्वीराजजी के वदनेऊ और समकालीन थे। आबू और चित्तौड की प्रशस्त्रियों के सवतो को समझ लेने के लिये एक चोज की बात हमने अपनी टिप्पणी ३५५।५६ मे अति सक्षिप्त रूप से कही है। इसके अतिरिक्त हम एक बडी अद्भुत बात पर विद्वानों का ध्यान दिलाने है कि कविराजजी ने इस महाकाव्य के सवत् १६४० से १६७७ के भीतर जाली बनने के सिद्ध करने मे नीचे लिखे प्रमाण कहे हैं: -

“इस किताब मे मेवाड़ के राजाओं की बहुत सी प्रशसा, रावल समरमिहजी के नाम से की है और एक स्थान मे उनको आशीस देने मे ये शब्द लिखे हैं—

(१) कलकियां राय केदार ।

(२) पापियां राय प्रयाग ।

(३) हत्यारां राय बणारसी ।

(४) मदवान राय राजान री गंग ।

(५) सुलतान ग्रहण मोरवन ।

(६) सुलतान मान मलन ।

इन पदविषों से मेवाड़ के महाराणा संग्रामसिंहजी (सांगा) की ओर संकेत है—इत्यादि । जब विद्वानों को रामो के उस रूपक को अवलोकन करके परीक्षा कर समझना चाहिये कि जिममें यह वाक्य खंड उक्त किया गया है, वह रूपक यह है:—

छंद पद्धरी —गामंत मन्व मनु शर कीन । प्रोहित राम आमीस दीन ॥

हरि मिद्धि दिद्ध वरदान भट्ट । उच्चरगो चंद्र पीये मृ गट्ट ॥

दुहु पय्य चवर मिर धरिय छत्र । वरदाइ देन आमी तत्र ॥

उठियो सिघ बरदाइ देगि । बोलन बिरद बहु विधि विगेपि ॥

चीतोर राज काइम्म कीन । पुष्मान पाट पग अचल दीन ॥

मेर गिरि सरिस चितोर मानि । किरनाल तेज बढे पुमान ॥

जैचंद समह जिन जुद्ध कीन । मानों कि उरग जनु मोर पीन ॥

कलकिया राय केदार राय । कवदेन विरद मन उमैग चाय ।

पापी राय प्राग बड समान । कषन द्रिद्र करनार जान ।

हित्या राइ कामी अभंग । मदुआन राइ गंगा उतंग ॥

मुग्गन मलन बंधन समोप । हिदून राइ टालन्न दीप ।

उज्जैन राइ बंधन समध्य । आचार राइ जुजुटरह पध्य ।

भीमंगराइ भंजन सुपेन । जम लयी धवल राजिद जैत ॥

रिनचंभ राय मिर दंड कोन । अब्बुआ राइ गढ़ लेइ दीन ॥

उय्याप राइ थापन समध्य । सोपन मरीर प्रगिराज मध्य ॥

दध्यनी साह भंजन अलग्ग । चंदेरि लिद्ध किय नाम जग्ग ॥ ४१ ॥

हमारे पाठकों को इस रूपक का तात्पर्य निकालने के पहले यह जान लेना अत्यावश्यक है कि वह रामो के समरसी दिल्ली सहाय नामक समय में का है रामो की किसी पुस्तक में तो यह समय पृथक है और किसी में वह बड़ी लड़ाई नामक समय के आदि में ही मिला हुआ है । इस इस रूपक के अन्तर्गत वृत्त का प्रसंग यह है कि रावल समरसीजी अपनी महाराणीजी पृथाबाईजी सहित अपने साले पृथ्वीराजजी की सहायता करने को चित्तौड़ से दिल्ली पहुंचा और वहाँ उनका आदर सम्मान वहाँ के सब राज पुरुषों ने करना प्रारंभ किया कि उमी प्रसंग में महाकवि चंद्रवरदाई ने भी वैसे ही रावलजी को आशीश दी कि जैसे वर्तमान काल में प्रत्येक देशी राजस्थान में चारण और राव आदि स्तुतिपाठक दिया करने हैं । रावलजी श्री समरसीजी में जो जो मुख्य गुण थे और उन्होंने जो जो बड़े काम अर्थात् शौर्य किये थे उन सबको उनकी प्रशंसा में कवि छंद ने प्रयोग करके यह

विरदावली कही है और इसमें यह बात विचारने की है कि कविराजजी ने जो इस रूपक में के—“कलकिया राय केदार” जैम विशेषणों का महाराणाजी श्री सग्राम सिंहजी (सागा) की ओर सकेत होना अनुमान करके गणों के जाही बरतन के समय के प्रारंभ का म० १६४० निश्चय किया है वह इस मूठ रूपक के अवलोकन करने से सत्य मालूम होता है कि नहीं। यदि हम कविराजजी के अनुमान का यथार्थ होता भी मान लें परन्तु इस रूपक में—“कलकिया रायकेदार” आदि के साथ ही—“जैचंद समह जिन जुद्ध कीन” और “मोपन मरीर र्चायिगज मथ्य” जैसे स्पष्ट विशेषणों को छोड़ देना और कलकिया राय केदार आदि को ग्रहण कर लेना। यदि कविराजजी ने इन—“कलकिया रायकेदार” आदि सागाजी पर घटाकर केवल उतही तुको को ध्यान बताया होता तो भी यह एक प्रकार से कुछ ध्यान में बैठने जैसी बात होती। हम यह भी नहीं समझ सकते हैं कि इस रूपक में म० १३६० कैसे मिद्ध होता है क्योंकि महाराणाजी श्रीसागाजी का राज्य समय कविराजजी के मानन के अनुसार म० १५६५ से म० १५८४ तक ही होता है और सवत १६६० का वर्ष महाराणाजी श्री ७३ प्रतापसिंहजी के राज्य समय म० १६३३ से १५३ तक में आता है। गणों की म० १६३ १३२ और १६४० की लिखित पुस्तकें हमारे पास विद्यमान हैं। तथा अक्बर बादशाह न पृथ्वीराज रामो की कथा आने दर-बारी भाट गंगाजी में म० १६२७१२८ में मुनी थी कि जिसके वृत्तान्त की एक म० १६२९ की लिखी हुई चंद छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक हमको प्राप्त हो चुकी है और उसी के साथ जो समय म० १६४० से १६७० तक का रामो के जाली बनने का अनुमान किया गया है। उस समय में मेवाड़ में एक राणारासो की पुस्तक म० १६७५ की लिखी हुई प्रति में हमने अपने पुस्तकालय के लिए एक प्रति करवाई है और हमारी प्रति में बहुत से अन्य भद्र पुरुष प्रतियां करवाते हैं। खैर, यह सब बातें तो जाने दीजिये और एक इस छोटी सी बात पर ही ध्यान दीजिये कि रासो की उन सब पुस्तकों के अंत में की जो मेवाड़ राज की एक पुस्तक से प्राप्त हुई है, मूल पुस्तक के लिखने वाले लेखक के लिखे हुए नीचे लिखे छंद प्राप्त होते हैं कि जिनमें यत्किंचित् वृत्त लिखा हुआ है। ये छंद हम आशा करते हैं कि उन पुस्तकों में भी अवश्य होंगे कि जो एशियाटिक सोसाइटी बंगाल के पुस्तकालय में है—

कवित्त —मिली पंकज गन उदधि । करद कागद कातरनी ॥

कोटि कवी काजलह । कमल कटिकर्ते करनी ॥

हितियि संख्या गुनित । कहै कक्का कवियांने ॥

इन श्रम लेषन हार । भेद भेदै सोइ जानै ।

इह कष्ट ग्रन्थ पूरन करय । जन बह्या दुष ना लह्य ॥

पालिये जतन पुस्तक पवित्र । लिषि लेषक विनती करय ॥ १ ॥

गुन मनियन रम पोइ । चंद कविनय करि दिद्विय ।

छंद गुनीनें तुट्टि । मंद कवि भिन भिन किद्विय ॥

देम देन विपरिय । मेल गुन पार न पावय ॥

उद्दिम करि मेल वल । भ्राम बिन अलस आवय ॥

चित्रकूट रान अमरेस नृप । श्रीमुष आयग दयो ॥

गुन बीन बीन करुना उदधि । लवि रासो उद्दिम कियो ॥

दोहा — लघु दीरघ ओछा अधिक । जो कछु अतर होई ॥

सो कवियन मुष सुद्धते । कहो आप दुधि सोइ ॥

इन छंदों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि किसी कवका नामक पुरुष ने मेवाड़ राज्य के अधीश बड़े श्रीअमरसिंहजी (चित्रकोट रान अमरेस नृप) के आज्ञानुसार राज के पुस्तकालय के लिये उक्त पुस्तक लिखी थी । इन महाराणाजी का राज्य समय कविराजजी के मानने के अनुमार सं० १६५३ से १७७६ तक का है । जबकि मेवाड़ राज की पुस्तक का उसकी अन्य प्रतियो में सं० १६५३ से १६७६ के बीच में लिखा जाना अनुमान होता है तो फिर इस समय में जाल बनना भला कोई कैसे मान सकता है । अब रत्ना म० १६७७ की भविष्य वार्ता का विदित करने वाला दोहा उसके विषय में हमने अपनी सुरक्षा के लेख खंड २७ में गविस्तर कह दिया है अतएव यहां कुछ अधिक नहीं वर्णन करने ।

४ यद्यपि इस महाकाव्य के जाली बनने के अनुमान का प्रश्न तो रीति में किया गया है कि इस ग्रंथ में लिखे पृथ्वीराजजी के समय के मनुष्यों के नाम और वृत्त उन समय की मुसलमानी तवारीखों में लिखे हुएों से नहीं मिलने है परंतु जिस प्रकार से हम प्रश्न का निर्णय किया गया है उसमें प्रश्नकर्ता की प्रतिज्ञाहानि और हेत्वाभाव स्वयम्भिद्ध है । हमने इस विषय में अपनी लिखी पृथ्वीराजरागो की सुरक्षा की अंग्रेजी पुस्तक के पृष्ठ १५ और ३०, लेख खंड ११ और २८ और हिन्दी के पृष्ठ १८ और ३१ और लेख खंड ११ और २८ में बहुत कुछ लिख कर प्रकाश किया है । क्या जिनना अंश इस महाकाव्य का मुसलमानी तवारीखों में मिलता हुआ है वह उनके बनानेवाले ने उन तवारीखों को मोलहवीं मट्टी में पड़ कर गड़ जाल निर्माण किया है । क्या उस समय की जमान निजामी की तवारीख, तबकान नामरी, और अब्दुल फिशा, आदि नामक तवारीखों में परस्पर कोई ऐसे विरोध नहीं है और क्या वे एक दूसरे में सर्वत्र प्रकार से परम सम्मत हैं ? कविराजजी ने स्वयम् यह स्वीकार किया है कि तबकान नामरी ने मनुष्यों के अशुद्ध नाम लिखे हैं और अब्दुल फिदाने मयत ही नहीं लिखे है फिर उनके दोषों में यह महाकाव्य क्योंकर दूषित हो सकता है ? क्या उक्त मुसलमानी तवारीखों के कर्ताओं ने सब वृत्त यथानय लिख कर केवल मनुष्य ही लिखने और मिथ्या कुछ भी न लिखने का एक अंदा हाथ में लिया है ? देखो, क्या यह शोक की बात नहीं है कि तबकान नामरी ग्रंथाकर्ता विचारा स्वयं कहता है कि जिस वयं में पृथ्वीराजजी की अंतिम

लडाई हुई थी उममें तो वह उत्पन्न हुआ था और उमके ३५ वर्ष पीछे वह पहले ही पहल हिन्दी में आया था, उमने जो कुछ इस विषय में लिखा है वह उमने एक मनुष्य से मुनकर लिखा है। फिर हम नहीं जानते कि कविराजजी मिनहाज-इ-सिराज जैसे एक भले आदमी को क्यों प्रत्यक्ष प्रमाण की साक्षी में घेरते हैं। हम पृथ्वीराज रामो और उन समय की सब मुसलमानी तवारीखों को एक दृष्टि में देखकर यह कहते हैं कि जिस ग्रंथकर्ता ने जो, जितना और जैसा, देखा और सुना, वह उमने अपनी इच्छा और शैली के अनुसार लिखा है। यदि उनमें से किसी की कोई बात हमको अयथार्थ प्रतीत और सिद्ध हो तो हम उमको अस्वीकार कर सकते हैं, किन्तु हम उनमें से किसी को भी लाड हेस्टिंगस के समय में जैसे नन्दकुमार को जाल के अपराध में फांसी की शिक्षा दी गई है वैसी शिक्षा विद्वानों के हाथ से कदापि नहीं दिलाना चाहते। निदान हम फिर भी प्रसन्नता और विचारपूर्वक कह सकते हैं कि ग्रंथकर्ता ने अपने अपने ज्ञान के अनुसार ऐतिहासिक वृत्त लिखे हैं चाहे उममें कोई बात यथार्थ भी क्यों न हो परन्तु उम असत्य बात के कारण से आदि में अन्त पर्यन्त कोई ग्रंथ जाली नहीं हो सकता। इस बात के मान लेने में हमको कोई लज्जित होने की भी बात नहीं है कि यह पृथ्वीराज रामो चंद का लिखा हुआ मन्तना है, उमके दो एक समय उमके बड़े बेटे जल्ह के लिखे हुए हैं और उममें जो कही गयी कुछ क्षेपक अश पीछे से किसी न मिलाया होगा वह विद्वानों की परीक्षा करने में स्वयम् तरजावेगा। अब तो कोई बात अउचल की रही ही नहीं है क्योंकि यह आदि पत्र तो हमने यथाशक्ति मशोघित करके अपने पाठकों की सेवा में अर्पण कर ही दिया है, उममें हम इस महाकाव्य की अकृत्रिमता की परीक्षा करना प्रारम्भ कर सकते हैं और प्रति माम में हम यह भी सिद्धान्त कर सकते हैं कि यथा तक तो कुछ जाली अश है अथवा नहीं।

इस बात के जानने से हमारे पाठकों को बहुत प्रसन्नता होगी कि हमको शोध करने से पृथ्वीराजजी और रावलजी श्रीसमरसोजी और महाराणी पृथाबाईजी

पृथ्वीराजजी, ने थोड़े से स्वाम हस्के और पट्टे परवाने प्राप्त हुए हैं कि जिनमें

समरसोजी वही अनन्द विक्रमी सवत् है कि जो पृथ्वीराज रामो में लिखा

और पृथा- हुआ मिलता है। इन सब के फोटोग्राफ हमने एशियाटिक

बाईजी के सोसाइटी बंगाल को भेंट करने तथा उनकी सत्यता की परीक्षा

सास हस्के पट्टे करने के लिये अपने स्वदेशी परम प्रसिद्ध विद्वान रायबहादुर

परवाने प्रावि डाक्टर रामा श्रीगजेन्द्रलाल जी मित्र एल० एल० डी०, सी०

आई० ई० की सेवा में भेजे हैं। उक्त डाक्टर साहब अकस्मात्

पोग्रस्त हों गये कि जिससे यह हमारे बड़े परिश्रम से शोध किये हुए लेख उक्त

बैद्वन्मंडली में उपस्थित नहीं हो सके है किन्तु हम की आशा है कि राजा साहब के

रोग्य होते ही उक्त लेख सोसाइटी में उपस्थित होकर यह विषय विद्वान् मंडली

में छिड़ेगा। यह विषय अभी हमारा सौपा हुआ एक महान पुरातत्ववेत्ता विद्वान के हाथ में है अतएव हम उन लेखों की प्रतियों तथा अपने निज विचारों को प्रकाश नहीं कर सकते परन्तु इतना तो निःसंदेह कह सकते हैं कि अभी तक हम उनको अकृत्रिम समझते हैं और ऐसा समझने को सतर्क सिद्ध भी कर सकते हैं। इसके साथ हमको यह कहने में कुछ भी लज्जा नहीं है कि यदि उक्त डाक्टर मित्र, हमारे विद्या गुरु डाक्टर हार्नली साहब, मिस्टर ग्राउस साहब और मिस्टर ग्रियरसन साहब, जैसे पक्षपातरहित और सहसा सिद्धांत न करनेवाले पुरातत्ववेत्ता विद्वान उनको अप्रामाणिक सिद्ध कर ग्रहण करेंगे तो हम भी उन्हीं से सम्मत होंगे क्योंकि हमको किसी बात का वारतव में दुराग्रह नहीं है वरन इसमें भी कुछ संदेह नहीं है कि जो कोई अन्य मनुष्य विना किसी योग्य कारण के हमारे स्वदेश और उसकी विद्या पुस्तकों को दोष दे तो हम उस दशा में उनके एक बड़े कट्टर पक्षकार हैं।

अंत में हमारा सब विद्वानों से यही सविनय निवेदन है कि वे इस महाकाव्य को उसकी भले प्रकार परीक्षा करके पढ़ें और पढ़ावें और जो कहीं उसमें कुछ हमारा कहना तथा कोई अनुमानादि का करना अयोग्य प्रतीत हो तो हमको क्षमा करें। यही प्रार्थना हम विशेष करके अपने मित्र महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदामजी की सेवा में भी करने हैं क्योंकि उन्हीं विचारों और अनुमानों का हमने विशेष करके एक बलिष्ठ भाषा में खंडन कर अपने स्वदेशाभिमान और उसकी हिन्दी विद्या की सुरक्षा की है। इस साथ यह भी वस्तु है कि जैसे हमने इस उपसहायिणी टिप्पणी में इस महाकाव्य के पांच चार विषयों के विषय में अपने विचार प्रकाश किये हैं वैसे ही चंद के व्याकरणादि जैसे दोष विषयों के विषय में भी हम यथावकाश लिखेंगे। इत्यलम् ।



अथ दसम* लिख्यते

(दूसरा समय)

हरि रूप का मंगलाचरण

साटक - सो ब्रह्मा सो इन्द्र ईति भजनं, ईपाल ईयं हरं ॥

पिठ्ठे निठ्ठ कमठ्ठ माइर उरं, जठराग्नि वारी वरं ॥

सो भानं विधि भान नेत्र कमलं, बाहौ गिरं ग्रम्भियं ॥

जंघा अष्ट कुला चलं न ग्रभितं, जै जै हरी रूपयं ॥

॥ छं० १ ॥ ह० १ ॥

दशावतार का नाम स्मरण

चौपाई-मच्छ कच्छ वाराह प्रनम्मिय । नारमिघ वामन फरसम्मिय ॥

मुअ दमरथ्य हलद्धर नम्मिय । ब्रद्ध कलंक नमो दह नम्मिय ॥

॥ छं० २ ॥ ह० २ ॥

दशावतार की स्तुति

विराज करे मच्छ रूप । धरेना अनूपं ॥ बंधे संष धूपं । वरे वेद भूपं ॥३॥

★ ★ ★ ★ । ★ ★ ★ ॥ ★ ★ । नमो मच्छ रूपं ॥४॥

धरा पिठ्ठ तिठ्ठं । कनंगे गरिठ्ठ ॥ जले धार दिठ्ठ । नमो तो कमठ्ठं ॥५॥

स्वयं दे वराहं । ह्यग्रीव गाह ॥ रदग्रे इलाहं । उपम्माति चाहं ॥६॥

★ इस समय मे दशावतार की कथा होने के कारण चंद्र ने उसका नाम दशम रक्खा है ॥

१ पाठान्तर - सो । सो । ईद्र । भजन । इपाल । हारे । हरि । पिठ्ठे । पिठ्ठे । निठ्ठ । निह । कमठ । कमह । माईर । जराग्नि । वर । सो । भान । नेत्र । कमल । बाहौ । गरभितं । ग्रम्भित । जबा । गभ्रितं । हरि ॥

२ पाठान्तर — मछ । कछ । प्रनम्मियं । नारमिष । फरसम्मिय । फमरम्मियं । सुत । सुअ । दमथ । हलद्धर । नम्मिय । रम्मीय । बुअ । कमल । नमो । दद । नम्मीय । रमिय ॥

३ पाठान्तर — करे । मछ । सिरैनारनुपं । बंधे । धुर । धरे । वेद । भूपं । नमो । मछ ॥ ३-४ ॥ पिठ्ठ । तिठ्ठं । तठ्ठं । कनंगे । गरिठ्ठं । दिठ्ठं नमो ते । कमठ्ठं ॥ ५ ॥ सुव । दे । ह्यं । ग्राहं । रदग्रे । इलाहं । उपम्माति । सैवराहं ।

★ ★ ★ । ★ ★ ★ ॥ ससी सेष राहं । नमो ते वराहं ॥७॥
 हिरन्नष्व वीरं । प्रहल्लाद पीरं ॥ उठे षंभ चीरं । महा बीर बीरं ॥८॥
 ★ ★ ★ । ★ ★ ★ ॥ बढी पंक नीरं । नमो धम्म धीर ॥९॥
 मृगंकस्य ऊरं । नषं तोरि तूरं । बजी दठ्ठ पूरं । थपे जान जूरं ॥१०॥
 दया सिंधु मूरं । कुकपीस भूरं ॥ नटी लछिछनूरं । धवी अंषिधूरं ॥११॥
 भयं देव दूरं । नियं भक्ति भूरं ॥ थुती पानि जूरं । नमी सिंघ सूर ॥१२॥
 बली राइ अग्गी । छली भूमि मग्गी ॥ लुके बंभ तग्गी । मुषं वेद जग्गी ॥१३॥
 निषे गंग लग्गी । सुलोकी सुभग्गी ॥ तिहूं लोक बानी । रिजे देब गानी ॥१४॥
 प्रसन्नो बलिज्जा । दईभोमि सज्जा ॥ त्रिलोकी तिडग्गी । नमो बाम लग्गी ॥१५॥
 पिता बाच मानं । हते ग्रम्भ थानं ॥ सहस्रं भुजानं । रुधिद्राघरानं ॥१६॥
 नछत्री छितानं । दई विप्र दानं ॥ सुरानं प्रमानं । नमो परसरामं ॥१७॥
 हरे राम ग्यानं । सु रामं सुरानं ॥ रघूबीर रायं । दया देह कायं ॥१८॥
 सु वैदेहि दायं । सुमित्रे सषायं ॥ विसामित्र सष्यांषरं दूष नष्यं ॥१९॥
 सुपर्णी सहायं । तडिक्की निहायं ॥ बटीपंच पत्ते । मृगं चाप हत्ते ॥२०॥
 रजं वारि दंती । जमं जाममंती ॥ मत मेघ कंती । ★ ★ ★ ॥२१॥
 घनं धार भारी । मरीचं प्रहारी ॥ सुअं मुद्धकारी । हनुम्मान धारी ॥२२॥
 गऊतम्म नारी । सिला तुंग तारी ॥ जरी लक चाही । पुरी हेम दाही ॥२३॥
 रिछं बानरायं । भए मो सहायं ॥ हनुम्मान ताय । दधी मीस आय ॥२४॥
 पषानं तिरायं । सुहिद्रा सहायं ॥ हनूमान रदो । समुद्देस बढी ॥२५॥

नमो । तौ । त ॥ ६-७ । हरंनष्य । हिरनंष । हरिणाष्यदाह । प्रहलाद । प्रहल्लाद ।
 उठै । मनो । घ्रम । उर । तूर । जानि । दया । दधिपुरं । कुकपिस मूर । लछि ।
 नूरं । धवी । अंष । धूरं । धुर । देव । दुर । भक्ति । भक्ति । भूरं । यूनी । पानि ।
 पानि । जूरं । नमो । सि ॥ ८-१२ ॥ राप । अग्गी । लछी । छने । भमि । मग्गी ।
 मग्गी । लुके । तग्गी । तगी । मुष । मुषे । वेद । वेद । जग्गे । जगी । नषे । नषे
 लग्गी । लग्गी । लाकी । स । प्रंगो । भग्गी । तिहो । लोक । बानी । रिजे रिजे । देव
 ग्यांनी । गानी प्रसन्नो । बलीजा । दइ । भूमि । सजा । मिज्या । त्रिलोकोत्तेडगो
 ठनी रुठ ठगी । तडकी । बामनग्गी ॥ १३-१५ ॥ ता बचमार । घग । पानं
 सहस्रं । रुधिजा । रुधिज । नछित्री । दइ । प्रनामं । नमो परसरामं । परसरामं
 ॥१६-१७ ॥ हरे । राम । राम । सुमित्रे । विश्वामित्र । मष्यं । मष । हरीदुकरिष्यं ।
 सपत्नी । मुपणी । सुपर्णी । तडिका । बढी । बढी । पती । मृगं । हनी । हते ।
 रज । जमं जाम मती । मत । मेघ । मरी । मरीचं । सय संघिकारी हनुमानं ।
 गऊतम् । गऊतम् । सिलाक त्रुंग तारी । चाहा । हेन । हेम । रिचं । बानरायं ।
 श्री हनुमान । वरदी । रदी । समुद्देस । बढी । तिनै । हाष्यं । हषं । सवैसं ।

तजे बीर हृद्यं । सँदेसं सु कथ्यं । जहां लंक गढं । तहां बग्ग बढं ॥२६॥
 उहां सीय दिष्पी । हुंती दुष्प मुष्पी ॥ दियं मुद्रि तांम । सहिन्नारामं ॥२७॥
 दमानन्न आदं । गयं मेघनादं । करे कुंम चूरं । भरे वान भूरं ॥२८॥
 सती सीय अंभी । कियं काज बंभी ॥ त्रिकूटेस नाथं । बभीषन्न हाथं ॥२९॥
 प्रसूनं बिमानं । चढें वेगियानं ॥ अयोध्या सपत्ते । नमो राम मत्ते ॥३०॥
 बसुदेव अंनी । बरी कंस भेंनी ॥ बियं पानि बद्धे । पुरानं प्रसिद्धे ॥३१॥
 जयं जग्ग धारी । दियं दान भारी ॥ रथं आप रुढे । समं कंस मूढे ॥३२॥
 अकासे सु बानी । श्रवन्ने गियानी । उवं षग्ग झारे । अनुज्जां प्रहारे ॥३३॥
 बरं पानि बद्धे । सुवाले अबद्धे ॥ इयं ग्रम्भ पुत्तं । रुके तथ्य दत्तं ॥३४॥
 सत्तं किस्न दिस्नं । भये राम किस्नं ॥ प्रथमं सुभद्दं । तिथी पष्प अद्धं ॥३५॥
 नषत्रं सु रोही । भुजं जन्म सोही ॥ चतुर्बाहु चारं । किरीटं सुहारं ॥३६॥
 सत्तं पत्र नेन । क्रुने कुंडलेनं ॥ नियं मुत्ति नासी । इयं अब्बिनासी ॥३७॥
 सदा लच्छिदासी । वरं निवासी ॥ मुखं मंद हासं । चतुर्वेद भासं ॥३८॥
 भ्रगू लत्त गत्तं । प्रभासी प्रभुत्तं ॥ मनी नील सीतं । कटी पट्ट पीतं ॥३९॥
 स्वयं ब्रह्म देही । नियं नंद गेही ॥ विषं पूतनायं । पियं दूध तायं ॥४०॥
 सकटं प्रहारं । ब्रजज्जा विहारं ॥ तिनं व्रत तानी । उवं आममानी ॥४१॥
 प्रभू ग्रीव लगे । तिनं ताम भग्गे ॥ रिषी श्राप आपं । नलं कूब तापं ॥४२॥
 दहं देवदारं । ब्रजंजा कुमारं ॥ नवं नीत चोरं । दही मट्ट ढोरं ॥४३॥

सदेसं । कथ्यं । कथं । तहा । गढं । तहा बग्ग बढ । उहा । दध्यी । दिष्पी । हुंती ।
 दुष्प मुष्पी । दीयं । सहं । दानरामं । सहंनान । दमानन । आदी । मयं । नाथं ।
 करे । चुरं । वानं । भुरं । अभी । किय । बभी । कुंटे । बभीषन ।
 प्रसूत । विमानं । चडैवेगि । आनं । अयोध्या संपत्ते । संपत्ते । नमो । राम ।
 मत्ते ॥ १७-३० ॥ बसुदेवा । अंनी । बसुदेव । भेनी । बीयं पानि । प्रसिद्धे । प्रसिद्धे
 जगिधारी । सूढं । मुढे । अकासे । बानी । अवन्ने । गियानी । उवं षग्ग । झारे ।
 अनुजं । प्रहारं । पानि । बध । बद्धे । बाले । अबद्धे । अबधे । गभ । पुंन । रुके ।
 तथ । दत्तं । दत्तं । किस्न दिस्नं । किदमं । प्रथमं सभद्दं । प्रथमं सभद्दं । परक ।
 पष । पष्प । निषित्री । निषित्रं । रोही । सोही । चतुर्वहु चारू । किसिडी सुं हारू ।
 चतुर्बाहु । किरीटी । नेनं । नैनं । क्रुनें । कुने । कुडलेन । कुंडले मंनं । अयं अयं
 अबिनासी । अपं । अबिनासी । लच्छि । चरने । चरने । चनुर । वैद । भ्रगू ।
 भ्रगू । प्रभुत्तं । देही । ब्रैडी । पुतनायं । पीयं । धूत नाये । सकट । सकटं ।
 ब्रजजा । ब्रजजजा । विहारं । तिना । व्रत । प्रभु । ग्रीव । लगे । तामं । भग्गे ।
 भग्गे । रिषि आप आपं । वैध दारं । ब्रजजा । कुमारं । चोरं । मट्टीरं । गोप ।
 सौरं । अनौषं । किसौरं गद्दीदानं पानि । असीदा रिसानी । सिसुउष्य । सोयं ।

किय गोप मोर । अनोषं किसोरं ॥ ग्रही दान पानी । जसोदा रिसानी ॥०४॥
 मिसू उषष मद्धे । किहों बंध बधे ॥ मुयं ब्रह्म लेष्यो । अचिज्जंसपेष्यो ॥४५॥
 लघू दीर्घ इद । कला की गुविद ॥ ररोष महामी । मुकती निवामी ॥४६॥
 मुन जषष राज । किय ऊर्द्ध काज ॥ द्रुम गात यीची । परे व्रषष सिची ॥४७॥
 थुनी बध पान । प्रमिद्धे पुरान ॥ वरून पिवामी । ग्रहे नद ग्रामी ॥४८॥
 जिते लोक पाल । व्रज जाल वाल ॥ बधी धेन मारै । प्रलब प्रहारै ॥४९॥
 मुषे काल व्याल । मिसू वच्छ पालं ॥ कली उत्तमंग । कियत्रित्तरग ॥५०॥
 व्रजं व रि लोपं । मधू मेघ कोप ॥ परी व्रज्ज धारा । गिरधारिधारा ॥५१॥
 नषे मैठ मार । त्रिभगी त्रिमारं ॥ पुरद पुलान । व्रजे वानि सांन ॥५२॥
 निमा अध घोर । कियं गोप मोर ॥ धरा नील रैनं । तज्यौ देव सैनं ॥५३॥
 कचं वक्र वेंनी । भ्रमी भूरि मैनी ॥ श्रुती कुडलीन । दूती काम लीन ॥५४॥
 चप पुडरीक । बा मेघ लीक ॥ नम मुत्ति मारै । निमामेक तारै ॥५५॥
 घरो मुद्ध हाम । करै देव बास ॥ रड छद् मुद् । नग कोक नद् ॥५६॥
 ग्रिवा कबु रेप । म्जाक्रित्त सेष ॥ वयज्जन माल । उरै मो विमाल ॥५७॥
 लिय वेन सेली । वने जाम केन्ली ॥ जमोदा जगाय । मृगे मिग वाय ॥५८॥
 जिने गोप मथ्य । दही पन हथ्य ॥ वनेजा विहागी । गऊ वच्छचारी ॥५९॥
 अग कान मुद्दे । दिये त्रेरि मद्दे । यिय गेह चारी । हमे गोपभारी ॥६०॥
 सतं पत्र पुन । अचिज्ज मुहिन । निय तप लाग । हरेवच्छ भाग ॥६१॥
 स्वयं स्याम चित्त । धरयो ध्यान् हिन । निय नद पुन । मला न मजुन ॥६२॥
 किय मोक कोप । कहा वच्छ गोप । हरे व्रह्म ग्यन । पराप परान ॥६३॥

आचिज्जम । लघु दीर्घ । जग । उरुद्ध नद । उर्द्ध । द्रुम । परे व्रषष । सीची ।
 सीची । थुनी । प्रमिद्धे विवामी । ग्रही । घट । जिने लोक माल । व्रज । बधी धेन
 सारे । प्रलबे प्रहारे । मुषे । वच्छ । उत्तमंग । कियत्रित्तरग । वृन्वान्त । व्रज ।
 व्रज । लोप । मधुमेघ कोप । व्रज । घाए । गिर धारि वाए । नषे मोरसाल ।
 शैल । त्रिभगी त्रिमाल । पुरद । व्रजेवा । व्रजेवा निमान । धोर । कीय व्रजमोर ।
 रने । कचवक्र अंनी । अंनी । भ्रमी । भमी । भूरि । मैनी । स्लती कुंड लीनं ।
 काम । पुडरीक । चप मै लीक । नाम मुत्तिमारे । निशा । मैक । तारे । सुद्धि ।
 सुद्धि । करे । रद छद् मुद् । रद मद मुद् । नामे कोक नद । कबु । रेप । सैष ।
 शेष । वयजन । उरे । मो । वैन । मैलां । वने । जाम केन्ली । जमोदा ।
 मृगैमिगवायं । जिते । गोप मथ । दशीपन हथ । वनेजा । गोबछ चारी । वछ ।
 अग कान मुद्दे । दिये । सदे । निय गेह चारी । गेह । हसे । हमै । गोप । पत्र
 पत्र । अचिज्ज मुहिनं । तप । हरे । वछ । स्याम चित्त । ध्यान् । हितं । निय ।
 मिलानंस । कीयं । सीक । कोप । कहा । वछ । गोपं । हरे । ग्यानं । पुरुषं ।

रचे क्रिष्ण सोची । त्रियं अंत्र रोची । तिनें रंग नेहं । अप्यं अत्र गेहं ॥६४॥
 तनं संष चक्रं । चतुर्बाहू वक्रं । पियं पट्ट बंध्रे । सहं ग्वाल नंधे ॥६५॥
 अविज्जं बिहारी । नले ब्रह्मचारी । भ्रमें लोक पालं । वियापि मुकालं ॥६६॥
 ★ ★ ★ । ★ ★ ★ । थुनी सा मुरारी । मूब्रह्मं विचारी † ॥
 ॥ छं० ६१ ॥ हं० ३ ॥

भुजंगी । न रूपं न रेषं न सेषं न माया । न चंद्रं न तारा न भानं न भाषा ।
 अविद्या न विद्या न सिद्धं न सादी । तुही ए तुही ए तुही एक आदी ॥६८॥
 न अंभं ग रंभं न रुद्रा न पाया । न सेतं न नीलं न पीनं न गाया ॥
 न काया न माया न षाया न छाया । तुही देव सदेव सिद्धे न पाया ॥६९॥
 तुही सर्वं माया दिषायान माया । तुही सर्वं माया तुही घाम छाया † ॥
 न बंभा न रंभा न रुद्रे न देहं । न मंत्रे न माया न राया न गेहं ॥७०॥
 न सैलं न गैलं न तापं न छाया । न गाहा न गीतं न श्रोता न नाया ॥
 न प्रव्वी न पालं स्रजाद न मादं । न तारी नवारी न हारी न नादं ॥७१॥
 नवे मेष रेप न भूरी न मारी । नवे ध्यान मानं न लगे न तारी ॥
 न लोकं न सोकं न मोहं न मादं । तुही ए तुही ए तुही एक आद ॥७२॥
 तहां पै न तारं न बार न वीरं । नय दडू मडू न ध्यानं न धारं ॥
 नहं जोति हस्मं न वस्त्रं मरुषं । तहा तू तहां तू तहां तू गुरुषं ॥७३॥
 प्रकृतं प्रथमं त्रयं नत्त जोई । तहा नभं नेता सराजं न सोई ।
 न माया न कया न हाया न हाई । तुही देव सा देव साधा न सोई ॥७४॥
 तुही अबुजा अबुकामिन्नि कामं । तुही नत्त कै तत्त रामं न रामं ॥
 तुही दीप मूरं मिर नभंभ तेरे । भुजा इंद्र तुही नभं नाभ फेरे ॥७५॥

रचकिथ्य मोची । अत्र चत्र राची । अत्र चत्र रोची । तिनं रंग नेहं । अप अत्र
 गेहं । तन । चतुर । बंध्रे । नंधे । अविज्जं । नले । भ्रमे । लोक । मारारी ब्रह्मं ।
 ★ पाठ नही मिले । † सं० ०८१९ में है अन्य में नही ॥

४ पाठान्तर—रूपं । रेषं । सेषं । माया । चंद्र । नरुभान । भाषां ।
 चंद । नरुभान । भाषां । तुही । अदी । अभंभ । अंभ । रंभं । रुद्रा । सैतं । नील ।
 नं । नकाया । बाया । तुही । देव । सदेव । सिद्धे । पीया । † यह तक सं० १८५९
 की में नही है अन्य में है । सरव । दिषायान । सरव । तुही । घाम । थंभा ।
 संभा । थंभां । रुद्रा । रुद्रा । मंदे । नया । गेहं । घेहं । गैलं । मगाहा । श्रोत ।
 नं । प्रवीनं । नंपालं । मृजाद । मृजादं । नवारी नवारी हारी । नंद । नवे । मेष ।
 रेषं । भूरी । नवी । ध्यानं । मानं । लगे । लोकं । सोकं । शोकं । मोदं । पें ।
 नयं । दडू । मडू । ध्यानं । धारं । तही ज्योति । नहायोति । सरुष । तु । तू ।
 ते । सुरुषं । पुरुषं । प्रकृतं । प्रथमं । त्रयं । तत्त । जोई । तोही । तहा । नभ ।
 । सराजं । सोई । † सं० १७७० और १८४५ की में नही है । तहां । अबुजा ।

सुयं सायरं पेट सा मुष्प अग्गी । तुही तेज ब्रह्मंड सामीस लग्गी ॥
तुही बाल वृद्धं तुही एक आदी । तुही तंत्र मंत्र कवी चंद बादी ॥७६॥
तुही राग जत्रं जगत्रं बजावै । तुही सार पंचै सु पंचै चलावै ॥
भगव्वांन जंत्री सु वज्जंति लोई । सुरं राग बंधै बंध्यौ आप सोई ॥७७॥
प्रलै अंभ अंबं तुही हन्य बोधै★ । तहामोहि अग्या सु सिष्टं समोधै ॥
॥ छं० ७८ ॥ ६० ४ ॥

साटक — कि सन्मान ससेव देव रजयं, दुष्टान उस्सासयं ॥

कि सुष्पानि दुषानि सेवन फल, आयास भूमी मयं ॥

कि ईसं न सुरेस सेस सनकं, ब्रह्मात ग्यानं लहं ॥

कि रंनं छित्तया छितं सु कमलं, बंदे सदा विषयं ॥ छं० ७९ ॥ ६० ५ ॥

ब्रह्म—नंदकिसोर किसोर मग । निसि पुनिम ससि अच्छ ॥

ब्रह्म स्तुति ब्रह्मा करिय । गोन मिले गुन बच्छ ॥ छं० ८० ॥ ६० ६ ॥

ब्रह्मोक्ति

ब्रह्म—ब्रह्म कहै सुर सकल सों । गोकल हरि अवतार ॥

नारद सुर पति स्तुति करन । अप आए तिन वार ॥ छं० ८१ ॥ ६० ७ ॥

प्रथम किति रवि ससि करी । अहो देव देवेस ॥

तुम गुन बरनत जनम लौ । पार न पायो सेस ॥ छं० ८२ ॥ ६० ८ ॥

मच्छावतार की कथा

बृद्ध नाराच

प्रथम मच्छ रूपयं, सरूप अंग नूपयं ।

सु पर्वं रिष्य तानयं, तमात, संत भूपयं ॥ ८३ ॥

मनि । तन । तन । राम । मूर । नभ । तैर । तर । नरे । तुही । नभ । नाम ।
फेरै । मोमुप । मामुप । अगी । श्रय । ब्रह्मड । मुमीम । लगी । वृद्ध । तत्र ।
मंत्र । वाही । रगयत्र । नुही मार पनी चलावो । भगवान । मुबजेति । लोई ।
बंधे । बंध्या । मोही । ★ म० १३३० की मे नहीं है । प्रछे अभ अत्र तुही ।
हन्य । वाघी शिष्टं । समोधे । ममोधे ॥

५ पाठान्तर—इमकी पहिली नुक म० १३३० की मे "कि प्रती अभ अत्र
नूहा हन्य बोधै" है । सन्मान । रीत्र । देव । दुष्टान । उस्सासय । उसासयं ।
सुष्पानि । दुषानि । रीवनि । कि । इम । मरैम । मैम । जेम । ब्रह्मान । ब्रह्माधान ।
ग्यान । रन । दै मदा विष । विषय ॥

६ पाठान्तर—नंदकिसोर । किसोर । निसि । पुनिम । यूनिम । शसि । अच्छ ।
ब्रह्मस्तुति । ब्रह्मा । ब्रह्मां । गोन । गोन । मिले । बछ । बछा ॥

७ पाठान्तर—ब्रह्म । कहै । सीः गोकल । किरन ॥

८ पाठान्तर—किसी । करिय । अहो देव देवेस । देवेस । तुमि । लौ । पावै ।
पायो । शैश । सैस ॥

ठठक्कि एक घट्टवान, ता निसान बज्ज ही ।
 अनेक देव रंजाण, सुरंभग्यान सज्जही ॥ ८४ ॥
 विवान छित्त रंग कित्त जित्त पंड पंडही ।
 करन्न एक हेत सेत ता समंद मडही ॥ ८५ ॥
 सुरंभ हद्द तव्विकान कित्त कथ्थि चंदय ।
 बरन्नवान संकरे, जमात मोद कदयं ॥ ८६ ॥
 सुचंद सूर नेक भति कित्त जीह जंपही ।
 कमल्ल केलि वंक मेलि वंधि सिधु चंपही ॥ ८७ ॥
 सुदौरि दो दिसान छोरि तोरि झोरि झंपही ।
 सुरंज तंज जेज जेत तिष्य किष्य रंजही ॥ ८८ ॥
 सुरंसुदेह विद्धहार कित्त कथ्थि चंदय ।
 सुजोगयान जोगयं सपूरयं निकंदयं ॥ ८९ ॥
 सुमालयं न पाल देव मालयं सुरज्जयं ।
 दिसान दिस्स उच्चरं सरूप मछ्छयं जयं ॥ ९० ॥
 श्रवंत लोक लोक पाल फूल माल रंभयं ।
 सुमंन्न देव सीस रज्जि वंचयं जयं जयं ॥ ९१ ॥

॥ छं० ९१ ॥ रू० ९ ॥

कवित्त—सायर मद्धि सु ठाम । करन त्रिभुअन तन अंजुल ॥
 देव सिंगि रषि धरिनि । सिरन चक्री चष झंपल ॥
 गैन भुजा ग्रज्जत । रसन दसनं झुकि झांडय ॥

६ पाठान्तर — मछ । सुरूपय अनूपय । सुपवं । सुपरव । रिषि । सुपय ।
 ठठक्कि । घट्टवान । घट्टवान । निसान । अनेक । देव । मज । छिछीह । छित्त । रंग ।
 कित्त । जित्त । करन । सेत । हैत । सुरभ । हर । हद्द । तविकान । कित्त । कत ।
 कथि । चंदयं । सु जोग यान । सकरंज । मोद । कंदयं । सु चव । नैक । सुर । नैक ।
 भति । लीह कित्त । जपही । भति जीह कित्त जपही । कमल । केलि । मेलि ।
 संधि । सुदौरि बोरि दो निसान दोरि छोरि झंपही । दिसाने । छोर । छोरि ।
 सुरंगजतजजनेज तिषकिष रजही । सुरग जतं । जज । तेज । तिष । तिष्य । किष ।
 देव । विद्ध । कित्त । कथि । कायै । वंदयं । सुं । जोग । पान । जोगय । संपूरयं ।
 नमाजयं न । माल देव मालयं सुरजय । दिशान । दिशि । दि । उचर । उचरं ।
 सुरूप । मछयं । श्रवन । लोक । पाल भाय । रजय । सुमान । दिव । जय जयं ॥

१० पाठान्तर—कवित्त । मद्धि सु मद्धि । मध्य । ठाम । करे । करै ।
 अजुल । “देव सिंगि सठि ह्य । सिवन चक्रीवष झंझल” ॥ “देव सिंगि सठि ह्य सिट
 चक्री चष झंझल” ॥ नैन । गैन । गुरजन । गर्जत । रसन रसन । झाइयं । झाइयं ॥

एक करन ओढंत । एक पहरत सवाइय ॥

चल चले सपत साइर अधर★ । इंद्र नाग मन कवन कहि ॥

गिर धर चलत पग मलनमल । लेन बेद अवतार गहि ॥

॥ छं० ९२ ॥ रू० १० ॥

भुजगी - धरे गेन सीसं चले वेद रीसं । गदा मुदगरं दत पारत चीस ॥

पग पिठु नठु कमठुं डरानं । थके वेद ब्रह्मा कमठुं भजान ॥९३॥

भगे जोग जोग छुटे थान थान । छुटे विश्व लोक महा लोक जान ॥

फटे कन्न रानं प्रथी लोक जानं । चिनं रक्त लोकं धमं लोक मान ॥९४॥

पुले पित्र लोकं ब्रह्म लोक देव । ★ ★ ★ ★ ॥

सिबं कूट थानं हरं थान लोक । जहू रस्त लोक परे सत्य सोक ॥९५॥

परे दिव्य लोकं सुरग सु पाल । ब्रह्म राषिस लोक भगोस काल ॥

परे निठु तठुं कमठु रहान । चले दैन सष जुटे वेद रान ॥९६॥

ब्रह्ममा भजान न जान कि जान । धरंजा फटानं ग्रह निठु भानं ॥

परे लोक मोक करे देव कुक्क । डक डक्क बज्जी करे ईस डक्क ॥ ९७ ॥

ग्रहे ब्रह्म लिद्ध धरै वेद मुष्य । गजे जोग सठ्ठी हुवं दैन दुष्य ॥

करे मच्छ रूप धरै धार धूप । छिले सतय मायर अध कूप ॥ ९८ ॥

परे छोनि छक्क विछक्क वरान । करे कुभ नद विहद सुरान ॥

तहा मषन पानि मया सुरान । नही पाव मग प्रथव वरान ॥ ९९ ॥

धजा धूमर अमर अब दज्जी । निन मइस पोउणअ अप्प मुइसी ॥१००॥

धरे गेन गान लरे आव्रान । मनो आमुर वामुर मन पान ॥

कन । कन्न । उदयन । उदय । न । पहरत । नवाउत । १ वरी वाणी मे नही है ।
चउं । मस । साइर । उद । चउउ । पग नलन कहि । लेन ग्राह ॥

११ पाठान्तर - धरे । गेन । चउं । मुदग । मुदगर । पग । पिठ । नठ । नठ ।
कमठं । डरान । थकं । ब्रह्मा । कमठ । भगे । जोग जोग । छुटे । छुटे । विश्वलोकं ।
महालोक । थान । जान । फटे । कन्न । प्रियी । पृथी । जान । चिन । लोक । धमं ।
लोक । मान । पुले । लोक । ब्रह्मलोक । ब्रह्म लोक । देव । ★ ★ यह तुक किमी
पुस्तक मे नहीं मिली । कूट । थान । लोक । जहरस्त । जहरस्त । नोकं । परे ।
सत्यको । सोक । सोक । लोक । सुरग । ब्रह्म । ब्रह्म । लोक । भगी । परे । निठ ।
तठ । तठं । कमठ । कमठं । रहानं । राहान । चले । मष । जुटे । वेद । ब्रह्मां ।
ब्रह्ममा । जान । फटान । गृह् । निठ । निठ । ठ । जान । शोकं । कौक । कोकं ।
डक । बजी । इस । डकं । ग्रहे । लिद्ध । धरै । बद । मुष । गजे । जोगि । मरी । हुवं ।
हुवं । दुषं मछ । धरे । रूपं । रूपं । छिले । सतय । अध । परे । छोनि । थकं ।
छक्कं । विछक्कं । विछक्कं । करे । कुभ । नद । विहवं । सुरानं । पानि । सुरानं । नही ।
शैव । शैवं । प्रथवं । प्रथवं । धुपर । धुपरं । अंबर । अब । दजी । मस । वीडस ।

करककंन मच्छी कटि कट्टि मच्छं । मनो आवधं बज्जि जी वज्ज वच्छं ॥१०१०
 घपे पानि लद्धं फटे पारि छेदं । कडे पेट मझझं सुरं वेद वेदं ॥
 घरे अप्प पानं चले ब्रह्म थानं । किये जैत बज्ज पुरानं सुरानं ॥१०२॥
 करी विष्टि फूलं सुरंसिद्ध देवं । मुअं ब्रह्मं जप्पं किय अप्प सेवं ॥
 मुषं वेद पिद्धं न लै पानि ब्रह्मं । जलै षोलि पानं भजै भ्रंति भ्रमं ॥१०३॥
 † दिय चारनं भट्ट वेदं मु पानी । रहे ब्रह्म ग्यानं हरी मिद्धि रानी ॥
 श्रपं इद्र शाप भगं कोरि कोर । किय मच्छ छुटे वेद रोरे ॥
 ॥ छं० १०४ ॥ रू० ११ ॥

कच्छावतार की कथा

दूहा मडि गजिन वह वल उअर । तल कल वल जल जाल ॥

मंदिराचल वल विपुल पुल । थल थरहर हल पाल ॥

॥ छं० १०५ ॥ रू० १२ ॥

कथा । सुद्धी । घरे । जे । जैम । पान । लरे । आउदान । मनो । मनो । आसुर ।
 ब सुर । मत । मुन । करकन । मछी । कटि । कटि । मछं । मनो । मनो । आवधं ।
 बजि । जनु वज्ज वछं । बज्जि । वछ । घपे । पानि । फटे । छेद । कडे । पेट । मझं ।
 सुर वेद । वेदं । घरे । चले । ब्रह्म । थानं । किये । बजं । बज्ज । पुरान । वृष्टि ।
 वृष्ट । देव । सुरं ब्रह्म । सेव । † बूदीवाली मे इस तुरु के दोना पाठ उलट पुलट
 है मुंप । वेद । पानि ।

† हमारे पाठकों को यह स्मरण मे रखना योग्य है कि चंद्र के इस वाक्य
 "दियं चारन भट्ट वेद मु पानी" मे वास्तव मे चाहे यह ऐमा ही हुआ हो अथवा
 न हो किंतु जान होना है कि इन दोनों जाति के मनुष्यों मे जो वर्तमान समय में
 अनबन दुष्टि आती है वह चंद्र के समय मे विद्यमान न थी किन्तु कुछ धोरे ही
 काल मे उम का जन्म हुआ है । यदि हम भी मान लें कि चंद्र के समय मे इन दोनों
 जातियो में परस्पर विरोध था, तथापि चंद्र कवि प्रशंसा करने के योग्य है, क्योंकि
 उसने चारनो का नाम अपने इस ग्रथ मे कही नही छिपाया है बरुक पहिले उनका
 नाम उसने प्रयोग करके फिर अपनी जाति का नाम प्रयोग किया है । तथा इन
 दोनो जाति के मनुष्यों की उत्पत्ति के शोधकों को यह वाक्य बारहवें शतक तक
 का प्रमाणरूप भी उपलब्ध ममझना चाहिये । इस महाकाव्य मे आगे अनेक स्थानों
 मे ऐमे प्रयोग आवेंगे । इन दोनो जातियों की उत्पत्ति के विषय में अनेक प्रकार के
 रांका समाधान है । परन्तु इन लोगो की उत्पत्ति का कुछ । गय हमारे पास एकत्र
 किया हुआ है वह अवकाश मिलने पर यदि कही आवश्यकता हुई तो हम किसी
 टिप्पणी मे लिख विदित करेगे ॥

ब्रह्म । जल । जलं । पीलि । षोलि । पान । न्नति । भ्रमं । वेदं । पानी ।
 हरे ब्रह्म ग्यान हरि सिद्धि रानी । हरे । रानी । श्रयं । इद्र । भगो । भगे । कोर ।
 सौर । कोर । कोडिरं । किय मन रूप छुटे वेद जोर । मछ । छटे ॥

दंडमाली—धरि कच्छ रूप सरूपयं । कुस कूप मंडित भूपय ॥

धरि मद प्रब्वत पुठुय । जल जात चाल गरिठुय ॥ १०६ ॥

दिव वाम मान न छडय । दित अदित बंस प्रचडय ॥

स्तुति चवत सुर नर गुन गन ★ ★ ★ ★ ॥ १०७ ॥

लिय रतन चवदमु वीनीय । बटि बटि निज कर दीनय ॥

बर बिदरि बिदरि बोरय । कलि कूरम बर इदय ॥

॥ छं० १०९ ॥ रू० १३ ॥

डूहा—कहि सनकादिक इन्द्र सम । किम लिय पाथर तन्न ॥

बहै इन्द्र सनकादिक सौं । मुनौ कहौ करि भ्यन्न ॥

॥ छं० ११० ॥ रू० १४ ॥

दैत राज धर प्रबल हुआ । अमर परे सब मद ॥

गए पुकारन मिलि । जहा लछ्छि गोविंद ॥

॥ छं० १११ ॥ रू० १५ ॥

कही ईस इन्द्रादि सौं । सजौ सेन चतुरग ॥

तुम सहाय असहाय अरि । करौ दैत सब भग ॥

॥ छं० ११२ ॥ रू० १६ ॥

लघु नाराज

कियति नट् भट्टय । लियति रथ्य वट्टय ॥

चले मु देव इदय । करे मु मेन वृदय ॥

अनेक धानप धर । अनेक चक्र सवर ॥

चले अत्रद पेदय । परे भरेति वेदय ॥

१२ पाठान्तर -गनि गन । उर । मदिग । यव ॥

१३ पाठान्तर - छेद दंडमाली । कछ । यम । कुप । जुयर । जूपय । प्रवत । पुठयं । गरिडयं । गरिठय । गरिठय । वाम । दिन । अदिन । वम । प्रचडय । श्रुति । मुनि । अहिगुन । गुनगन ★ यह तुक घटती है । लीय । चउद । मु वीनय । बटि । बिदुर विदुर । विदुर । चिहुरि वारय । असुर । मोमयं । बवन । कविदय । कबीदयं । त्रमं कुउम । चर ॥

१४-१६ पाठान्तर-- पाथी धर । पार्थेधर । सनकादि । सो । कहू । कहौ । भिन्न भिन्न ॥ १४ ॥ देवरात्र । ह्र । परे । लछि । गोविंद ॥ १५ ॥ ईश । इन्द्रादि । सो । सजौ । महाय दैन्य ॥ १६ ॥

१७ पाठान्तर -नद । भदयं । निपगनि । रथ । बदयं । चर्च । इह । वैवयं । करे । सेन । एवयं । अनेक । मंचरं ॥ । चले मु बंद वेदयं । परे भरति वैषयं । वेद्ययं । पताक । धुमली । सत्तह फौज संभली । समूह फौज संभली । करे । जोरिये । चले । चंचलं । मनी । धुमलं । पिनी । मु रिषि । रिष । ज्यौ । ज्यौ ।

धजा पताष धूमली । समूह मेज ः समली ॥
 दईत इत दौरय । करे मनाह जोरय ॥
 चले मृ दैत चचल । मनो अषाढ धूमल ॥
 मिले जु रिण्विमानय । जु देवता दधानय ॥
 दिय सराप देवता । त्रिलोक मध्य तेवता ॥
 श्रवत लछ् छिमी गई । नराधि देवन्त्रिम्मई ॥
 न केसवं न दानव । न नागय न भानव ॥
 यु देवता विचारय । नही सनाह भारय ॥
 दईत भगिा दूरयं । यु देव दूत झूरयं ॥
 मिले त्रिलोक समिली । बिना पराग विह्वली ॥
 कछावतार किद्धयं । लछम्मि जीत लिद्धय ॥
 मदाचल महा गिर । धरे सुपिठ्ठ उप्पर ॥
 मु नाग नेत िद्धय महा समद मथय ॥
 दईत मुष्ष दप्पय । सु पुच्छ देव रष्ययं ॥
 विरोलि दद्धि ज्यौ मही । घटातटाकघ्नही ॥
 लिय प्रथम लछ्छमी । सुकौस्तु भचवच्छ् छमी ॥
 सु पारिजात पानय । सुराधन त मानयं ॥
 जु सोम उगिग मुक्कला । सुधेन गज्ज उज्जला ॥
 सुरभ मोहिनी परी । सुसप्त अश्व सुद्धरी ॥
 धनुष्ष ईस संपय । त्रिष समेत पप्पय ॥
 मुच्यारि दिस्म पचही । दिए सुदेव सचही ॥
 दईत बंस दझयं । मुनाग फेन मझ झय ॥
 किनेक सेन कुक्कही । मुएति मान मुक्कही ॥
 लियं सुरत्न इदयं । दईत किद्ध दंदय ॥

देवता । त्रिलोक । नैवता । लछमी । लछिमि । † यह बूदीवाली पुस्तक मे नही है ।
 कैसव । केशवं । भालय । यो । यो । यो । दइत्त । यो । यो । देव । झुग्य । मिले ।
 कछावनिर । किहय । लछमि । लछमी । जित । गिरि । धरे । पिठ । नैत । भथयं
 दइत । मुप । दयंय पुछ । देव । रषयं । विरोलि । घूमही । घूमही । प्रथम ।
 लछिमी । लछमी । लक्षमी । वप्यमी । लक्षमी । स्त्रपारिजात । सोम । उगि ।
 ऊगि । सु कला । सुं कला । सु धेन । गल । उजला । सु रग मोघनी परा । सु रंग
 मेघनी परी । अश्व । धनुष । समेत । पषयं । दस । दर । देव । दझयं । फेन मझयं
 कितैक सैन कुक्कही । मुए सु । मान । मुक्कही । लयं रन ईदयं । लयं । अमृत । अप ।
 अचरं । अचर । कवरं । कचरं । आय । अषयं । दानव । दानव । चणय । चषयं ।

अमृत अप्प अच्चरं । कियं सु देव कच्चरं ॥
 अनाथ नाथ अष्षियं । दईत देव चष्षियं ॥
 पवंत दीय पष्षली । दईत देव हष्षली ॥
 अमृत देव पिद्धयं । सुरा सुदेत सिद्धयं ॥
 जु सोमनाथ सों कही । रवी सुरा मुदेत ही ॥
 हरी सु चक्र सद्धयं । जुदेत बम बद्धयं ॥

॥ छ० ११३-१२९ ॥ ह० १७ ॥

कवित्त ॥ दानव तब गय दौरि । करे इक वंध कटक्कं ॥
 हुअ देवासुर जुद्ध । चढे देवता चटक्क ॥
 परे रथ्य पष्षरे । आइ लगे सम धार ॥
 रथ सों रथ भंजियहि । कूक लग्गी पुक्कारं ॥
 जोगनी जोग माया जगी । नारद तुंवर निहस्सिया ॥
 दस एक रुद्र दारिद्र गत । दानव तामर हस्सिया ॥

॥ छ० १३० ॥ ह० १८ ॥

भुजंगी—इतें चक्रधारी कियो चक्ररूप । उत कुंभनी कुंभ सा दैत्य भूपं ॥
 उते दानवं बोल्दु बोले करारे । इते देवता गज्जया मार झारे ॥१३१॥
 रिष हृथ्य मादिष्ट दीनी असीस । तिनं वज्रमै कोप दागव्व दीसं ॥
 कुकी जोगमाया वकी थान थानं रटै नारद तुंवर ब्रह्मगान ॥१३२॥
 कियो कुंभ कोपं चली संग माया । इतें इन्द्र ब्रह्मादि सब देव घाया ॥
 परे देव देवाधि चारथ्य चूरे । धजा की पतायं लगी धूरि धूरे ॥१३३॥
 छट्थौ पट्ट पीनं बरं कट्टि छुट्टी । मनो श्याम आकाम नो बीज तुट्टी ॥
 हुए सिध्यलं देव दानव्व घाए । करें रूप अन्नके अन्नके काए ॥१३४॥

पावन्त । पावन दीय पपली । दानव । हपली । अमृत । देव । सुरा ज । सुरा ज ।
 ष्यु । सोरुनाथ । रवी सुरा स दौर ही । संघियं । सदय ॥

† इस महाकाव्य में मुसलमानी भाषा के शब्द प्रयोग हुए देख कर शंका करने-
 वालों को जानना और विचारना चाहिये कि किसी पुस्तक में फीज और किमी में
 सेन पाठ मिलते हैं । क्या यह दोनों पाठ चद ने प्रयोग किये हैं ? ॥

१८ पाठान्तर—गय तब । करै । कटंक । देवासुर । चढे वना चटक । चढे ।
 चटक । परे । रथ । पधरे । पधरे । लगी । सम धार । सुं । सो । लगी । पुकर ।
 पुकारे । जुगिनी । जोग । तुंवर । विहसिया । दरिद्र । तामर । हसिया ।

१९ पाठान्तर—इतै । कियो । उतै । कुंभनि कुंभ । सा दैत । भूपं । उते ।
 † बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है । बोली । बोले । करारै । इतै । देवता । सजिय ।
 झारी । रिष । हृथ । तिमं । मँ । कीप । दानव । जोगमाया । थाभ । थानं । रटै ।

तबें भूत वेताल नच्चैति घाए । घरे षग त्रीशूल अन्नोक घाए ॥
 ततथ्ये ततथ्ये नचे तार विद्धी । कतथ्ये कतथ्ये कहे देव किद्धी ॥१३५॥
 परथ्ये परथ्ये कियं आर पारं । मनथ्ये मनथ्ये कियं देव मारं ॥
 असित्ते असित्ते हुए एक सेनं । ग्रसने ग्रसने महादेवमेनं ॥१३६॥
 अलुङ्गो अलुङ्गो करी अंतसुङ्गो । हुए देवता दानवं अङ्गदङ्गो ॥
 फिरे रथ्य सा देव कीनं अनूपं । षरे रथ्य अप्पु करे कछ्छ रूपं ॥१३७॥
 न लग्गे न लोहं न सांगी न सारं । न अस्त्र न लेप न छेपं न पारं ॥
 फिरे चक्रधारी सु राषीस वृदं । किए एकठे एक एक मुनिंद ॥१३८॥
 हुए चक्र अन्नोक अन्नोक भारी । मरे राषिस वृद दैन्यान मारी ॥
 इसी एक अज्जेज जुद्धं अनूप । हुआं देव देवा सुर कक रूपं ॥१३९॥
 इमं कछ्छपं रूप ओप्यी अपारं । धरा पिठ्ठ रषी सरापं सुधार ॥
 जुगं अ त दानव्व भूमी उपारी । तत्रै कोल रूप कियो श्री मुरारी ॥
 ॥ छ० १४० ॥ ह० १९ ॥

कविन - धरि कछ्छप कौ रूप । भूप दानव संहारे ॥
 लइ लछि सागर सुमथि । रिष्य श्रापान मुधारे ॥
 राह सीस किय णंड । मंडि दानव मव भजिय ॥
 किय देवामुर जुद्ध । ईम वर करि अरि गजिय ॥
 धारी सु धरा हरि पिठ्ठ पर । दिण रत्न वटिय मुरनि ॥
 कविं चाद दंद मेटन दुनी । श्री कछ्छप तेरे सरनि ॥छ०१४१॥ह०२०॥

रहे नारनं । नुबर । ब्रह्मग्यानं । कीयो । कोप । इते । इद्र । सादेव । पर । चारथ ।
 पुं । धुरि धुरे । छुट्यो । यद्र । पीतवर । कटि । छुटी । मनो । श्याम । नै । हुअै ।
 मथल । मतलं । देव दानव । करै । अनीक । आये । काये । तदो । भूत । वेताल ।
 नचैत्रि घाड । नच्छौत्रि थाई । षरे । पग । त्रिसूल । अनेक । अनेक । अघाई । घाई ।
 तनथी । ततथे । नचो । नचें । तारि । विद्धा । कतथी । कतथे । इहै । देव । किधी ।
 परथी । परथे । मनथी । मनथे । देव । असित्ते । अमिते । हुए कैक मेन यमिते । यमिन ।
 मनं । अलुङ्गी । अलुङ्गे । अङ्गे । अङ्गे । हुआं । देवता । दानव । दङ्गे । दङ्गी । फिरै
 रथ । देव । कान । अनुप । परै । रथ अय । आय । करै कछ । लग्गे । म लोह । मु
 लोह । मंनं सगी । कुसस्त्र । कुशस्त्रं । न लगी । न लग्गे । न छैव । न छेव । कुदास्त्र
 न लग्गी न छेवं न पारं । फिरै । सु राषिस । वृद । कं । मुनीदं । अनेकर ।
 अन्नोक । मुरै । मरै । मुरे । इसी । अज्जेज । अज्जेज अनुप । हुआं । सुर । कछ्यं ।
 ओप्यी । पिठ्ठ । रषी । जुग दान । भूमी उधारी । उधारी । तैषै कोल ।
 कयो ॥

वाराह अवतार की कथा

ब्रूहा—हिरनाषह प्रियवी हरी । धर दानव अवतार ॥
इंद्रादिक नागन सजिय । प्रति अवतार पुकार ॥

॥ छं० १४२ ॥ ॠ० २१ ॥

कवित्त—प्रति अवतार पुकार । लीन प्रथवी सर पारिय ॥
जवन जिहां न सु ठाम । धरनि सत साइर गारिय ॥
किन्न रूप वाराह । जोति मन जोति सु कट्टिय ॥
बहुल रूप तन दुरद । रिसन वैश्वानर बड्डिय ॥
कवि चंद चवत दानव भिरन । धरन धरा रद अग्र वर ॥
सुर राज काज उप्पर करन । कोल रूप जगदीस धर ॥

॥ छं० १४३ ॥ ॠ० २२ ॥

कवित्त—बल प्रचंड बल मंड । ज्वाल विकराल काल कल ॥
धर बितांड वाराह । बीर बीरन विदारि पल ॥
हरि हरनछ्छि सु अछ्छि । बछ्छि वर जछ्छि विभावस ॥
विधि विधार वीधार । विदर बिकरार झार असि ॥
उद्धारि धरा रहि अग्र वर । सुर विकास किय चद वर ॥
जै जया सबद धुनि सुर चवत । जोरि पानि बंदै सु चिर ॥

॥ छं० १४४ ॥ ॠ० २३ ॥

वृद्धनाराच

परडिठ प्रात मैमुगंनभानिअणियभज्जयं ।
कला गुहीरनीर तीर आय दैन गज्जयं ॥
पय पताल मीस म्रम अठय मुष्य दण्यय ।
रटंत वेन भुज्ज गॅन रैन नैन रण्ययं ॥

१४० पाठान्तर—कवय । को । भू । दानव । सहृरि । लई । लछ्छि ।
सुभरियिथी । मुमथिय । रिधि । स्त्रायन । सुधारि । शीश । काय । मीड ।
दानव । भनिय । भंनीय । दैवामुर । युद्ध । इमगर वर करि मकिजिष । ईशवर ।
धारि । पिठ । परं । दण । वट्टिय । मुरन । दट । गैटन । कछप । शैरै । सरण ।
सरन ॥

१४१ पाठान्तर—हयग्रीवहि प्रियषा हरी । हयग्रधिहि पृषिवी हरी । प्रथमी ।
सुर । दानव । ब्रह्मवार । ब्रह्मचवार । ब्रह्माचार मुर । इंद्रादिक । मर । इंद्रादि ॥

२२ पाठान्तर—नील प्रथी सर पारीय । त्रभवन । जिहांन । ठाम सायर ।
चारीय । कीन । किन्न । जोति मनि । मोनों । जैति मनि प्रगटी । कट्टिय ।
कट्टिय । कट्टिय । बडिय । ववत । धरनि । ऊपर । कोल ॥

भुजाग्र भाग मेर नाग इंद्र दाग दक्षयं ॥
 बरन्न घुम्म, घुम्मरं सुरं पुरं सु धुज्जयं ॥ १४७ ॥
 पया पुरं धरा धुरं, नरानरं नरष्ययं ।
 इसी अवाह अश्व दाह एक राह दष्ययं ॥ १४८ ॥
 जुटे जुरं भरे भरं, सुरे सुरं सु वाहयं ।
 चटे चटं नटे नटं लटे लटं सु साहयं ॥ १४९ ॥
 करंत क्क मान मूक दैत दुष्य मानवं ।
 पगांनि पानि साहि कांनि लैश् चीरि दानवं ॥ १५० ॥
 करी सु कित्ति दैत देव नीति जीति रष्ययं ।
 हयं सु ग्रीव किद्धरी बकट्टि जीव नष्यय ॥ १५१ ॥ ॥
 सुरा निसार लिद्ध भार दैत्य मारि धारनं ॥
 अये वराह अश्व दाह दैत्य दाह दारुनं ॥

॥ छ० १५२ ॥ ह० २४ ॥

कविन् - करि निरूप वाराह । परनि पुर अविगत पिल्लिय ॥
 जनु कि मेघ उतक ठ । कला समि षोडम झल्लिय ॥
 असिय मुष्य दतल्लिय । तरुन निष्णिय आघारिय ॥
 मेर चंद मनु बीज । चद्र मनि परह सुधारिय ॥
 आरोपिप्रस्थि अंबर पुरह । सन माइर ससै परिय ॥
 कहि चंद द द करि दैन मो । धरनि धार अद्धर धरिय ॥

॥ छ० १५३ ॥ ह० २५ ॥

२३ पाठान्तर मडि विनुग । विनुड । हरनडि । अश्वि चरि । वल्लि ।
 जल्लि । जगि । बट्टि विधार विडार । मिथि विधार विडार । विकराल उद्धरि ।
 धारा । रह । शवद । सुरि । जोरि । पानि ॥

२४ पाठान्तर - परठि प्रन मेष रान । परठि प्रान मेष रान । भान ।
 अषि । अंषि । भजयं । नार । आइ देन । गज्जय । गजय । प्रिषी षताल ।
 पृथी पाताल । सग । मुष । दषय । रटनैतवैनभुजने । वैन । भुजनेन । रैन ।
 नैन । नैन । रष्य । मेर । इद । दागदक्षय । दक्षय । वरन्न । वरन । धुंम ।
 धुम । घुम्म । घुम्मर । सुर । स । धुवय । पयापुर । रषयं । इसो । दषयं । जुदै ।
 जुदे । सुरै सुर । सूरं । स । वाहय । चटै चट । नटै नट । लटै । अक । कुक्क ।
 मान । मुक्क । मुक । दैत्य । दुष । साहिकांन । ची । वीरि । कित्ति । दैव ।
 नीति रषयं । केद्धरी बकट्टि । नषयं । नषयं । सुरान सार । सुरा नसार । धारिनं ।
 अैराह । घाह शरुन ॥

२५ पाठान्तर - कर । करी । अविगति । षलियं । षिलिय । जजु कि ।
 अनु कें । षोडस । झल्लिय । इसी । इसी । मुष । दंतलीयं । दितलीय । तरुनि ।

भुजंगी—बपू बीर बीरं धृतं धृत सारं । विठं दुष्ट दाने कलं कोल कारं ॥
 धरं तुंड तुंगं विसालंत नैनं । छिनं छीन लोकं जुरे दूत सेनं ॥१५४॥
 रुधि फट्टि वज्रंग वज्जे वित्तरं । गनं आन कंतं बजं पंच पूरं ॥
 श्रवं सोर भारं भिरे भूर भारी।तिनं मेक मानी अफाली असारी॥१५५॥
 घटे घोष छोनी बलं छीन नूरं । धरे सुद्ध उद्धं दिवं संम जूरं ॥
 धरे दंत धारा वरं सेष ओषं । मयं कंक लंकं कियं कंठ लोपं ॥१५६॥
 जयं जोगधारी महापान पानं । हयं ग्रीव नषे तिनं तोरि तानं ॥
 करे तुंड तुंडं वितारंत तारं । तियं लोक सोकं विलोकन पारं ॥१५७॥
 सुरे सूर कंतं जयं जो करालं । समं गुच्छ गुच्छं करं जूल जालं ॥
 चवै चंद चंडी नमो वेद चारं । नमो देव कोल वरं रूप सारं ॥

॥ छ० १५८ ॥ २६ ॥

कवित्त कोल रूप जगदीस । हत्यो हयग्रीव मु दानव ॥
 जय जय सबद चवंत । मुमन वरषिय मुर मानव ॥
 पद्धारे हरि लोक । सोक मेट्यो सब्बन मुर ॥
 कोइक काल अंतर । हुओ हिरनंकस आसुर ॥
 तप ईम उग्र परमन्न हुअ । ब्रह्म मिष्ट नह तो मरन ॥
 कवि चंद कष्ट मेटन कलू । कोल रूप तेरे मरन ॥

॥ छ० १५९ ॥ २७ ॥

तरुन । तिषिय । तिषीय । आधारीय । मैर । मनो । मनो । मुधारीय । आरौप ।
 आरोप । पृथी । प्रिथी । गायर । कवि चद दद करि दैन मो । कवि चद दद
 करै दैन मो । कहि चद दद कहि दैन सो । धरनि धार ॥

२६ पाठान्तर—वयं । वप । धृत । धृत । दिवं । दानै । कोल । तुग तुड ।
 तुंग । तुंड । नैन । छिन । लोक । दन । सेन । दशध । रुद्धि । वज्ज । बजं ।
 विनुरं । आन । पुरं । अब । सोर । भिरे । भुर । मेक । मानी । घटे । घोष ।
 छोनी । छलं । ललं । बीन । नुर । धरे । जुद्ध उद्ध । जुद्ध उद्ध । दिव । समजुरं ।
 समजूरं । धरे । वर । मैप । औष । कीय । लोपं । जोगधारी । पानं । पान ।
 हयग्रीव । नषे । तोरि । करै । विलोकन । सुरै । कनि । जो । गुच्छ । अछ ।
 जुठ । निमोदचारं । देव चार । ननो । कोल ॥

२७ पाठान्तर—कोल । हत्यो । जै जै संवद चवन । बरवै । बरवै । पाधारे ।
 पधारे । सोक । सोर । मेट्यो । सबन कोइक । केइक । कल । अंतरै । अतरे ।
 हुओ । भयो । हिरनकुम । इम । ईश । प्रमन । प्रमन्न । तह । तो । वेदुन । कलू ।
 श्रीकोल रूप्य तेरे मरन । शरन ॥

नृसिंह अवतार की कथा

दूहा - सुवर ईम बरदान दिय । किय सुरपति अनुकाज ॥
अवनि अमुर अदभुत तप्यौ । चप्पौ तीनपुर राज ॥

॥ छं० १६० ॥ ह० २८ ॥

जाइ पुकारे सब्ब सुर । जहाँ आप जगदीस ॥
दानव तप त्रैलोक लिय । वर अप्पौ तिन ईस ॥

॥ छं० १६१ ॥ ह० २९ ॥

ब्रह्म सिष्टि सौं ना मरे । सस्त्र अस्त्र नहि जाम ॥
तब हरि नरहर रूप किय । अमुर विदारन काम ॥

॥ छं० १६२ ॥ ह० ३० ॥

षरक षंड षंडे अखिल । तिल तिल षल भै भीर ॥
बिहरि थंभ सुअंभ बर । उदर डारि डर झीर ॥

॥ छं० १६३ ॥ ह० ३१ ॥

विराज-जयं सिंघ रूपं । भयं भीत भूपं॥बजे षग वभंस्वरूपं स्वयभं॥१६४॥
द्रिगं तेज तामं । हवी जान जाम ॥ मुछं सेत सारं । जयं देव धारं ॥१६५॥
हयं रूप दान । मृगकस्य भान ॥ रवहूप पूर । लवी लोक मूरं ॥१६६॥
तिषी तपिष चूरं । कनकीक नूर ॥ दिठ दिठ मूर । बजी तार नूरं ॥१६७॥
जयं देव हूरं । सरं संम जर ॥ दिषे त्रिष्यनन्दी । भयं भी अनंदी ॥ १६८ ॥
द्रिगं दिठ चक्की । रही मौन पक्की ॥ मन जोग जक्की । थल थूर थक्की ॥१६९॥
प्रहल्लाद तक्की । करं हरि बंकी ॥ दिवं कामअंकी । सुषं लोक जंकी ॥१७०॥
बढी बेद बानी । कविना वषानी ॥ कथं गच्छ कच्छी । चवं लोक वच्छी ॥१७१॥
जयं देव रच्छी । वटं वीर मच्छी । उरं मझ्झ पच्छी । तिनं ताम अच्छी ॥ १७२ ॥

२८-३१ पाठान्तरः- सुवर । ईश । बरवान । बरदान । करि । सुर पलि ।
अदभुत । चप्पौ ॥ २८ ॥ जाय । पुकोर । मवनि । सब । निबर । । जहाँ । दानव
तप भै लोक लिय । दानव । अप्पौ । इम । ईश ॥ २९ ॥ ब्रह्म । सिष्टि । सौं ।
सुं । षह जाम । सस्त्र । नह जाम । नहर । करि । मैछ विदारण काम । मेछि ।
काम ॥ ३० ॥ षंडन । आपल । बिदरं । बिरद । षभ । अब । अंभ । भर ।
वर । उदरि । झार झर झीर । उदर डारि डर डीर ॥ ३१ ॥

३२ पाठान्तरः -सिंघ । भूप । बजे । पंभ । स्वयं । स्वयमं । तैज । दानि ।
जामं । सेत । चारं । देव । मुगकस्य । पुर । लोक । शूर । सूरं । तिषी । तिष्य ।
चूरं । नूरं । दिठं दिठ नूरं । हिय । दिठ मूरं । नूरं । देव । सिर । सम । जूग ।
दिषै । त्रिष । वृष्य । भयं भीष नदी । भयं अनदी । दिवाहे छक्की । रदी मौन
यकी । दिव । दह । चकी । मौन । पकी । मन । जोग । जांग । जकी । थुर ।

सुषं सुष्व सानी । हरी रूपरानी । बजी दिव्य भेरी । श्रियं सिध केरी ॥ १७३ ॥
कवी चंद चंदं । जयं जै अनंदं ॥ ★ ★ । ★ ★

॥ छं० १७४ ॥ रू० ३२ ॥

कवित्त—बीर हक्क बर बज्जि । यषंभ फट्थीं घर फट्टिय ॥

निडर जोति निब्बरिय । लयी मृगकस्य दबट्टिय ॥

घरनि घूरि घुंघरिय । तीन भुवनं परि भगिय ॥

भयो मद्द हंकार । जोग माया ते जगिय ॥

प्रह्लाद षपि उष्यपि अरिन । तीन लोक सुर असुर डरिं ।

बिल अबिल बेल बेलन बलन । कहर रूप नरसिंह घरि ॥

॥ छं० १७५ ॥ रू० ३३ ॥

लघुनाराच

लियत रूप नारसं । बंदत वेद चारसं ॥

अरुन्न तेज उगय । भरक्कि देव भगयं ॥ १७६ ॥

उचाय घायउंडले हिरन्नकस्य षंडले ॥

छुदंत कट्टि ठुंमरं । उठंत मुच्छु घुंमरं ॥ १७७ ॥

रुलंतलट्टु लैलटा । षटा पटाकछुछटा ॥

षटाक षट्टु षल्लरी । कटाकबज्जिगल्हरी ॥ १७८ ॥

दटाक बज्जिदोटयं । कला अनेककोटयं ।

नषं बिदारि नष्ययं । अराकिभंजि भष्ययं ॥ १७९ ॥

उरक्त माल अंतयं । भगे भगत भ्रंतयं ।

नराधिपन्न देवता । न नागयं न मेवता ॥

॥ छं० १८० ॥ रू० ३४ ॥

धुन । षकी । प्रह्लाद तकी । प्रह्लाद तकी । कर । हूर । काम । लोक । बंद ।
बषांना । कबै मछ कछी । लौक । षछी । जय देव रछी । छटं बीर मछी । मंष ।
मष । पछी । अछी । मुखी मुख मानी । गनी । भंगी । श्रियं । सिध केरी । कवि ।
अनदः ॥

३३ पाठान्तर—बीर । हक्क । बरबज्जि । निडर उयोनि निघरयं । ज्योति ।
निबरी । लीयो लीयो । दबट्टिय । घुरि । अवन । भरिय । म्बद । हुंकार । जोग ।
तै । षपि । यापि । उषपि लोक । अलिपि अबिल बेल बेलन पुलन । बिल अबिल
बेल नषचन कहर ॥

३४ पाठान्तर—लीयत । बदन । बंद । चारसं । अरुन्न । तेज । उगयं ।
भरक्कि । देव । भगयं । उंडले । हिरग्न्यकम्ब । हिरन्नकस्य । षंडले । छुदंत । कट्टि
कट्टि । ठुंमरं । ठुंमरं । उठंत । मुच्छु । घुंमरं । घुंमरं । रुलितं । रुलित । कटा ।
कै । छु । षटाक । षट्टु । षल्लरी । कटाकि । बज्जिगल्हरी । नराधिपि । नराधिपि ।

दूहा - मुनिवर नरहर कथ्य मुनि । भए सकल मन पग ॥

कौन समै नरहर असुर । जुटे जुद्ध जोधग ॥ छ० ०८१ ॥ ह० ३५॥

वेली भुजंग★

★ ★ चरन्न सरन्न सुमित्र । प्रभा मूर मेव मु पाव पवित्र ॥

तिहू लोक कौ सोक मेटन्न काज ।

धरयो रूप अत्युग्र अद्भुत राज ॥ १८२ ॥

तिन तेज त त्रास (अति)★ आसूर जारे ॥

सुतो अर्भ भे गर्भ प्रदीय डारे ॥

महा मुद्दिनं (अति) ★ तेज ति रक्त नैन ।

प्रलैकाल (रवि)★ कोटी प्रगट्ट त गैन ॥ १८३ ॥

करं कपितं चंपितं सेस सीस । गल गजित तज्जितं ब्रह्म ईसं ॥

डिगे षंभ ब्रह्म ङ दिग्पाल हल्ली ।

धरा चरन् भारतु लाजे मतुल्ली ॥ १८४ ॥

इसो देष रूपं असूरेस धायो । ग्रहे षगता बीरसों षेत आयो ॥

उद्यो सज्जि आवद्ध सन्मुष्ष वत्ते । मनो मत्त है जुद्ध त थै निवृत्ते ॥ १८५ ॥

गह्यो घाइ दान भुज बीच गाढो ।

न जुटट्थो विछुट्थो भयो दूरि ठाढो ॥

दिषै इद ब्रह्मा भयो त्रास हीय ।

गयो हाथ तै तथ्य आचिज्ज कीय ॥ १८६ ॥

बढाक । दटाकि । बजि । दौटय । अनेक । कोटय । नष । नष्यय । भजि ।
भष्ययं । अरक्त । आरक्त । आतयं । भगै । भगन । भ्रत्य । नरधियत । देवता ।
सैवता । मनागय न सेवता ॥

३५ पाठान्तर—मुनि । नरहर । कथन । भय । मुनि । वोन । कौन ।
समे । जुदै । जोयय ॥

३६ पाठान्तर—चरन । वरन । सरन । सुमित्र । प्रना । सेव । पावन ।
लोक । सौक । शोकं । मेटन । मेट । प्रति उग्र । अद्भुत । अद्भुत । अद्भुत ।
राज । विराजं । तिन । नैज । नन ★ अधिक पाठ है । असुर । असूर । जार ।
सुतो । अरभ । भय । भयं । गरभ । अति दीप झारे । अति दिए चार । ★ अधिक
पाठ है । तेज । तिन । नैनं । प्रले । ★ अधिक पाठ । कोट । कोटि । कौटि ।
प्रगटेत । प्रगटत । गेगैनं । कर । कपितं । कंपित । चंपितं । सेस । सीस । गय ।
गय । गरजित । तरजित । ब्रह्म । ईस । डिगै । षंड । ब्रह्मड । बृह्मड । दिग्पाल ।
हली । चरन । लाजे । मतुली । देषतें । देष सरू रूप । रूप । असुरेस । असुरैस ।
ग्रहे । ग्रहे । बीर । सी । षेतं । सजि । आवद्ध । सनमुष्ष । प्रवृत्ते । वरत । मनो ।
भव । इय । दुंय । तथै । तथै । तथे । निवृत्ते । गृहभो । ग्रहभो । धाय । दानव ।

भयो जुद्ध ति बेर तासों । अपारं ।
 कहा बनियै सेष पावै न पारं ॥
 दबट्यो सबट्यो उछान्यो पछान्यो ।
 हुतीयुद्ध की आस तातें न मान्यो ॥ १६७ ॥
 तबै कोपिकै दुष्ट उछछंग लीनी ।
 हिदै फारि तत्काल सो डारि दीनी ॥
 गरज्जयो गुंजान्यो अरी चंपि अैसें ।
 कहा ब्रह्मिकों रूप ति बेर तैसें ॥ १६८ ॥
 रही दत बिच्चत सोहत सारं ।
 मनों मेरु गिशृंग तें ग ग धार ।
 सुभै सीस पै मुछ्छ कौ झौर अैसें ।
 महाराज सीसं दुरै चौर जैसें ॥ १६९ ॥
 जुलित् पावक तेज लोचन भारी ।
 सकैं दिष्ट को देव दानं सहारी ॥
 तप्यो हेम ज्यौं देह की क्रंति सोहै ।
 सुजोती रवी कोटि दिव्यंत मोहै ॥ १९० ॥
 तिन तेज ज्वाला जरे दुष्ट तेतं ।
 रहे संत सरन लहै पुष्ट हेतं ॥
 हुतौ दुष्ट दानं अमानं सु हत्यौ ।
 सुतौ मृत्यु तत्काल सुरपुर पहुत्यौ ॥ १९१ ॥

दानव । भुज । बीच । बाचि । न जुपा । दूर । दिषे । ब्रह्मा । भयो । प्रास ।
 ह्य । तै । तें । तथ । आवरिज । अचिरज । अचिरज्ज । युद्ध । तन । तिन ।
 बैर । तासो । कहा । बरणीयै । बरनीयै । बनिये । सीस । सेस । दपट्यो ।
 अपट्यो । हुती । हती । युद्ध । ताथै । तातें । तबें । कोषिक । कोपिकें उछग ।
 रिदै । तत्काल । सो । दीनी । गरज्यो । गरज्यो । गुजारयो । गुंजारयो । बपि ।
 अैसें । वरनि । वरनि । कहूं । कहूं । तिन । बैरि । बैर । तैसे । तैसे ।
 अंति । दंड । बिच । बिचि । बिचि । अंत । सोभन । सोहत । सोभंत । मनी ।
 झेर । मेर । गिरि । गिर । श्रंग । तें । तै । पर । पुछ । मुछ । को । झौर । अैसे ।
 सीस । दुरे । दुरि । चौर । चौर । जोसे । जैसे । जुलित । ज्वलित । पावक ।
 लोच । लोचन । लोचन । सकैं । दिष्टि । को । देव । दानव । सहारी । हेम ।
 ज्यो । देह । क्रंति । महा जोति रवि । जोति । बयोटि । मोहै । जो है । तेज ।
 जरे । रहै । संस । सरन । लहे । हेतं । हुंतौ । दानव । अमानं । हत्यौ । सुतौ ।
 मृत्यु । तत्काल । तत्काल । सुर । पुर । पहुत्यौ । पहुतौ । सब । सबैं । सरन ।

भई जंत जै सह सुर सर्व हर्षे ।
 सिरं देव नसिंध तै पुष्फु बर्षे ॥
 अये देव अस्तूति के काज सोई ।
 महा रूप कौ भेद पावै न कोई ॥ १९२ ॥
 सबै सोचि आली चिहारे निहारे ।
 जिनं दिष्ट पल्लेक कोई सहारे ॥
 फुरै बाच काहू न भै भीत सर्थ्ये ।
 कह्यौ जाइ कै श्रीय देवं सुतर्थ्ये ॥ १९३ ॥
 तबै लच्छमी आप सोचे विचान्यौ ।
 इसी रूप गोविन्द कबहू न घान्यौ ॥
 इतो तेज जाजुल्य कबहू न देख्यौ ।
 प्रलै पावकं जोति तार्ये विसेष्यौ ॥ १९४ ॥
 घरे रूप जेते तिते सर्व जानों ।
 लगै वार कहते न तार्ये बषानों ॥
 अबै आइ प्रह्लाद जो होइ ठाढी ।
 जिनं हेत कीनीं इसी रूप गाढी ॥ १९५ ॥

हरषेः । सिर । देव । नरसिंध । स्नसिंह । पर । फल पुष्फ । पुष्फ । बरषे । बरषे ।
 अय । आय । आए । देव । अस्तुति । कै । मोई । को । भेद । पात्र । कोई सबै ।
 मोचि । आलो । चिहारै । निहारै । जिन । पल एक । कोइन । कौइ । संहारै ।
 संहारे । काहू । भय । मये । सर्थ्ये । सर्थे । जाय कर । करि । देवे । देव ।
 नध्ये । तर्थे । लच्छमी । सोचे इसी । रूप । गोविन्द । कबहून । कबहून । इसी ।
 तेज । कबहून । देख्यौ । दिष्यौ । जोति । तार्ये । विशेष्यो । विसिष्यो । घरे ।
 जेते । तिते तैते । सर्व । सर्व्ये । जानी । जानों । लगै । वार । कहतै । कहतै ।
 तार्ये । बषानु । बषानी । अबै । आस । आई । आय । प्रह्लाद । जो । हीई ।
 ठाढी । ठंढी । सिन । हेन । कीनी । गढी । इहि । इहें । वत । चित्र । कै । सुढी ।
 जाय । प्रह्लाद । कौ । कुं । कहि । कहहि । कह ॥ ★ ★ इस रूपक की पहिली
 पंक्ति के खाली स्थान में हमारे पास की सब पुस्तकों में—“बंदे बदन हारे”—यह
 अशुद्ध पाठ है । इसको शोधने को कोई प्रमाणिक साधार हमको अभी नहीं मिला
 और यही दशा अंत की पंक्ति में भी है अतएव वह खाली प्रकाश कर दिया गई
 है कि विद्वान लोग विचार कर पाठ को निश्चय करें । हमारी सम्मति में तो
 इनका पाठ हमारे पास की पुस्तकों से भी पुरानी पुस्तकों के मिलने पर ठीक २
 शुधना संभवित है । इस की अंत की तुक भर का पाठ बूदीवाली पुस्तक में—“सुनत
 प्रह्लाद इह बात चली । रहै पङ्क प्रह्लादि निज यो इकलै” ;—सं० १७७० वाची

इहे बत्त ब्रह्मादि के चित्त आई ।
सुतो जाइ प्रह्लाद को के सुनाई ॥

॥ छं० १९६ ॥ रू० ३६ ॥

दूहा— सुनत बचन प्रह्लाद गय । श्री नरसिंह के पास ॥
स्तुति जुति सों ठाढो रखी । फुन्धो नहीं कछु सास ॥

॥ छं० १९७ ॥ रू० ३७ ॥

सीस नाइ कर जोरि तब । रखी सनमुख चाहि ॥
क्रिपा दृष्टि देख्यो हरि । भगत वछल प्रभु आहि ॥

॥ छं० १९८ ॥ रू० ३८ ॥

बेली भुजंग

क्रिपा दिष्ट दिष्यो सु ठढो निनारी ।
सु तो प्राण के प्राण तें अति प्यारी ॥
छयो लाइ छाती घन्धो जंघ कोसं ।
दियो हृष्य मध्यं कियो दूरि दोसं ॥ १९९ ॥
चुम्प्यो मुख नैनं प्रह्लाद केरो ।
जरा मृत्यु भै दूर दोसं न नेरी ॥
भई बुधि त्रिमल महा सुद बानी ।
तब अस्तुतं क्रमप्रह्लाद ठानी ॥ २०० ॥
अहो देव देवेस देवाधि देवं ।
तुही अलष अप्पार पावै न भेवं ॥
अभेदं अछेवं तुही सर्व वेदं ।
तुही सर्व विद्या विनोदं सुभेदं ॥ २०१ ॥

में—“सुनिन हति प्रह्लाद इह बात चल्थ्यो ॥ दहे पत्र ब्रह्मादि निज गो इकली”
:-सं० १८५९ वाली में—“सुनत हेत प्रह्लाद इहे बात चल्थ्यो ॥ रहे पछ ब्रह्मादि
निज गो इकल्यो” ;—और सं० १६४५ वाली में इम का पाठ संवत् १७७० के
खद्वेष ही है ॥

३७-३८ पाठान्तर—दूहा । सुनत ॥ प्रदलद गो । श्रीनसिंह । श्रीनसिंह ।
के । सुत । सों । ठाढो । ठाढा । फुंरघो फुरघो ॥ सीस । नाई जोरि । सनमुख ।
आहि । क्रियादृष्ट । क्रियादृष्ट । क्रियाद्विष्ट । दिष्यो । सही ॥

३९ पाठान्तर—छंद भुजंगी । प्रयात् । द्रष्टि । दृष्टि । ठढो । ठढी । ठट्टी ।
आन । के । प्राण तै अति । पियारो । लाय । कोसं । भमभं । सभं । मन्ध । कीयो ।
बीस । चुम्प्या । चुम्प्यो । मुख । नैनं । नैनं । प्रह्लाद । केरो । मृत्यु । दूरि । दोस ।
हौष । नेरी । बूधीवाली । में—अथ भइ बुधि । त्रिमल उभु ही ब । जाय बीन महा

तुही ग्यान विग्यान सोग्यान कर्ता ।
 तुही बुद्धि कर्ता तुही बुद्धि हर्ता ॥
 तुही घरनि आकास है पौन पानी ।
 तुहीं सबं में एक अनेक बानी ॥ २०२ ॥
 तुही जोति संसार सारं सरूपं ।
 तुही अघकालं अकालं अरूपं ॥
 तुही कोटि सूरज्ज में तेज साजै ।
 तुही चंद्रमा कोटि सीतं विराजै ॥ २०३ ॥
 तुही कोटि ब्रह्मा महादेव जेते ।
 तुही कोटि कंदर्प लावण्य तेते ॥
 तुही हेत संतोष आनंद कारी ।
 तुही सोक संताप सर्व प्रहारी ॥ २०४ ॥
 तुही जोग जोगेस जोगी सु भोगी ।
 तुही भेद अक्षेप संदेस सोगी ।
 तुही मानवं देव दानं सिघानं ।
 तुही कोटि ब्रह्मादि अंतस्समानं ॥ २०५ ॥
 जिती धावरं जंगमं धान चान्यौ ।
 तिनी आप ही आप तें भेद धान्यौ ॥
 करे जे गुसाई अर्गे रूप तेते ।
 कहै ब्रह्मि को देव रिष नाग जेते ॥ २०६ ॥
 कियो मच्छ औतार पैलै अनूपं ।
 गयो बेद लै दैत्य सागर अलूपं ॥
 हने स्वामि संघामुरं बेद लीने ।
 मुतो आनि तत्काल ब्रह्मादि दीने ॥ २०७ ॥

बुद्ध बानी-निर्मल । बानी तबें । अस्तुत । अस्तुति । अस्तुति करन । प्रह्लाद ।
 गंभी । अहो । देव । देवस । देवाधि देव । तुही । अरुष । अपार । पावे । भैषं ।
 अछेद । अभेद । सख । बंद । तुही । सरख । बंटा । विनीदं । सु भेदं । तुही ।
 ग्यान । विग्यान । सोग्यान । करता । तुही । करता । तुही । बुधि । हरता । तुहीं ।
 हैं । पौन । पानी । तुही । सरब । मैं । ए । अनेक बांनी । तुही ; जोति । उज्योति ।
 तोही तुही । अघकाले । तुही । तोही कोटि । सूरज । सूरज । मैं तेज । तोह । तुहीं ।
 कोटि । सीतल । तुहीं । तोही कोटि ब्रह्मा । महादेव । जेते । तुही । तोही । कोटि ।
 कंदरप । लावण्य । तेते । तोही । संतोष । तोही । तुही । सोक । शोक । सरबे ।
 तो ही । जोग । जोगेस । भोगीस । भोगी । तुही । तोही । भेद । अभेद । सर्वेस ।

महापिठ के धार धारी धरती ।
 करी नमलं कस्यपं रूप कती ॥
 बली वामनं पावनं किति राजै ।
 पगं नष अग्रं सु गंगा विराजै ॥ २०८ ॥
 सबै षंडि पित्री सुती विप्र तामं ।
 महापुण्य सम्कर सकै फसंरामं ॥
 श्रियं राम रघुवीर लीनौ वतारं ।
 कियो रावनं कुंभ कर्न सहारं ॥ २०९ ॥
 वसुदेव ग्रेहं गह्यो कृष्ण वासं ।
 हतेदुष्ट सर्वं कियो कंस नासं ॥
 करे जग्य लीयं धरा ध्रम सुद्धं ।
 प्रगट्यो कली काल अवतार बुद्धं ॥ २१० ॥
 जुगं अंत सो सति ह्वं हैं कलंकी ।
 इहै बात सांची सदा देव अंकी ॥
 जिते सैल सुन्हेति सुन्पति कीने ।
 तिते सेस गन्नेस जाअें न चीने ॥ २११ ॥
 सबै दुष्ट भजे सु सेवक् उगारे ।
 करे काम निज धाम नरहर पधारे ॥

॥ छं० २१२ ॥ ६० ३९ ॥

रोगी । तोही । तुही । देव दानव । तोही । तुंही । कौट्टि । ब्रह्मादी । अंतर ।
 समानं । जिजी । षानि । च्यारी । च्यारों । तिली । आवते आप हों । भैद ।
 धान्यो । करे । जै । अगै । नै तै । कडै । बराने । को । रिषि । रियं । जै ते ।
 कीयो । मछ । अवतार । पहिले । अनुपं । जे । दैत्यं । मागर । अलुपं । हनै ।
 स्वामि । शंवासुरं । बैद । लीनै । मुतै । मुनो । तसकाल । वीनै । महापिष्ट । कं ।
 धार । धरनी । धरती । तृमली । रूपकैती । रूपकती । बल्यं । बलि । वामनं ।
 किति । नष । सुरंग । सुरगं । सबै । षंड । पित्री । महापुण्य । सम । करि । सकै ।
 पक्षीरामं । फरसुरामं । श्रीय । श्रीयं राम रघुवीर । अवतारं क्रियो । कियो । गवन ।
 कुंभकरण । सहार । संहारं । वसुदेव । वसुदेव । गेह । गेहं । गृह्यो । ग्रह्यो ।
 कृष्णावासं । हतै । सरव । कीयो । कंस । करै । ध्रम । बुद्धि । बुद्धं । जुगं । सो ।
 सति । वै है । बड़े है । यहै यहै । साची । देव । जितें । जितै । शीलसुर । शूलसुर ।
 है व । हे व । सुरपति । कीने । तितै । सैसं । गनेस । जाअें । बिन्है । चीन्है ।
 दुष्टं । भजै । सेवक । उधारे । करै काम । धाम । पधारे ॥

कवित्त—पद्मारे निज धाम काम सुर सेव किए सब ॥
जुग जुग सब जन हेत । लिए अवतार तबहि तब ॥
निकसे षंभ विदारि । हने हिरनकुस दाह्लव ॥
प्रह्ल्लाद उद्धार । कियो पूरन पद जाह्व ॥
श्री नृसिंघदेव समरंत जन । कलि कलंक दुष्यन हरन ॥
बलिरूप सरूप अनूप किय । श्रीनृसिंघ तेरे सरन ॥ छं० २१३ ॥ रू० ४० ॥

वामनावतार की कथा

हूहा - बहुत काल हरि सुष कियो । सब देवादिक रिष्य ॥
पाछे बलि प्रगटघौ बली । किये सत्त जिन मष्य ॥
॥ छं० २१४ ॥ रू० ४१ ॥
तब इंद्रासन डग मग्यो । जेम तुलाकी डंड ॥
सुर सुरपति आकंपि भय । जाहि कहां हम छंड ॥
॥ छं० २१५ ॥ रू० ४२ ॥
जाह जगाए श्रीपत्नी । बलि आसुर अनपार ॥
तब सु पधारे नरहरी । धरि वामन अवतार ॥
॥ छं० २१६ ॥ रू० ४३ ॥

कवित्त -- सवा लाष वर विप्र । दियो इक इक प्रति दानं ॥
दुरद अयुत रथ अयुत । एक हज्जार के कानं ॥
दासि दास दुय सहस । चरचि आभूषण अंबर ॥
साठि सहस मन कनक । अबर बहु भंति अडंबर ॥
असै कि जग्य पूरन्न करि । निनानू बलि राय जब ॥
वामन सरूप धरि चंद कहि । अप पधारि गोबिंद तब ॥
॥ छं० २१७ ॥ रू० ४४ ॥

४० पाठान्तर --- पधारे । पधारै । धाम काम । सेव । कीए । जुग । जुग ।
हेत । लीए । बहि तब । निकसे । हने । हिरनंकुस । प्रह्ल्लादे । प्रह्ल्लादे । उधारि ।
कीयो । बंदीवाली । मे नरहंसूदेव-सं० १७७० में-नरहंसु देव-दुष्यन । रूप । सरू ।
अनूप । श्रीनृसिंघ । तेरे । सरन ।

४१-४३ - पाठान्तर - बहुत । सुषि । कियो । सम । ऋषि । रिपि । पाछे ।
पाछे । बली बल । बंदीवाली में-धरि कीए सित जित जिनम मख-कीए । सति ।
मप ॥ ४१ ॥ इंद्रासन । जैन । आकंप । जाहि । छंडि ॥ ४२ ॥ जाय । पधारै ।
नरहरी ॥ ४३ ॥

४४ पाठान्तर—दानं । दोय । वामन । धरि ॥

दूहा—बलि लग्गी जुध इन्द्र सम । सुर आसुर मन बेष ॥

साहस संकर विष्णु वर । वेद समम्बर बेष ॥छं०२१४॥ ४०४५॥

गीता मालती †

लग्गेति बेषं वानबेषं, इन्द्र वज्रं सज्जयं ।

छूटंत तारं नषि भारं, काम कामं कज्जयं ॥

धमकंत धारं बार पारं, मार मारं मुष्यए ।

संघेसि वानं कर कमानं, कान तानं नष्यए ॥ २१९ ॥

विकसंतव्योमं सट्ठिठोमं, भिरे भोमं धुज्जए ।

देवकीनंदं अरिंनिकंदं चले गंजन रज्जए ॥

बलिराह बद्धिय देव दद्धिय, इन्द्र कद्धिय आसुरे ।

मिलि तथ्य सथ्यं लथ्य बथ्यं पारि रथ्यं पासुरे ॥ २२० ॥

देवता मारे धन संधारे, हार भारे बलि जुंरं ।

डक्कंत डक्कं पारिधक्कं, हारिधक्कं त्रपुरं ॥

छूटंत पट्टं वान छूटं, तीनपुट्टं चच्चलं, ।

बलिरायजग्गं मानभग्गं, भिरेभग्गं अच्चलं ॥ २२१ ॥

चौसट्ठिठि जोगं करे भोगं, देव सोगं दण्यए ।

रुड्डंतं भुड्डंमुंडि सुंडं हार रुंडं रण्यए ॥

लग्गंत वानं भानछानं, इन्द्र वानं चाहए ।

भूमी भजानंगरि गुमानं, राहभानं दाहए ॥ २२२ ॥

★ यह रूपक हमारे पास की पुस्तकों में से सं० १३४७ और सं० १७७० और बूंदीवाली में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी हुई में है ॥

४५ पाठान्तर—लग्गी । जुद्ध । ओमूर । मनि । वैध । विष्णु । वैध । ममर । वैध । समवर ॥

† इस रूपक के छंद के निर्णय को महज में यों समझ लेना चाहिये कि जिन को इन दिनों हरिगीत छंद कहते हैं, वह यह है । उसके नामान्तर इस मशकाव्य के पाठान्तरों से विदित ही है तथापि The Revd. Joseph Van. Taylor B.A. साहब ने इस को गीय नाम से लिखा है । इस के चार चरण होते हैं, उनमें से प्रत्येक चरण में दो पति १६ + १२ और २८ मात्रा होती हैं, जिन में ९ + ७ + १२ पर विश्राम और ८ नाल होते हैं ॥

४६ पाठान्तर—गीत । मालती धुर्यः । छंद गीतामालती । छंद माधुर्यः । छंद गीत माजती । लग्गेत । लग्गेत । वैदं । वैध । वानं । वानं । वैधं । इन्द्रवज्रं । सज्जयं । छूटंत । तार । भार । काम । काम । धार । बारं । पार । मुष्यए । संधं । वानं । नषरा । विहसंत । व्योम । सठि । गोम । भिरे । भीमं । देवकीनंदं । चले । रजए । बलिराय । बद्धिय । कद्धिय । देव । दद्धिय । आसुरे । मिलितथ्य संथ लथवथं

बलिराहअग्नी भूमि मग्नौ, भूमिषग्नी पारनं ।
 वरदान रद्वेद पद्वे, कालकट्टं कारनं ॥
 वामनं रूपं धारि धूपं, अस नूपं इलममं ।
 हुंकार सह कियं नदं, वेद बहं संममं ॥ २२३ ॥
 धोमंतलग्नं त्रैवदग्नं कियंजग्नं कारनं ।
 दिसि दिसिन दौरं कियं सोरं पौरि शौरं धारनं ॥
 नषसिष्य भोरं कथ्य धोरं, काल कोरं कलकरी ।
 आहुठपेड भोमषंडं छोरिछंडं डरबरी ॥ २२४ ॥
 बलिदौरि आयोइंद्रभायी, वेदगायोबच्छयं ।
 मुहमंगिदानंतियपुरानं, मंडिभानंलच्छयं ॥
 बाजिप्रवायंदेवगायं, बलिपुरायंदिदयं ।
 आहुठपग्नांदीनमग्नं, भीरमग्नं सिदयं ॥ २२५ ॥
 नाषंत वानं गंग तानं, राह भानं रुक्कयं ।
 चालंत धारं सुक्कसारं, रुक्कधारं, सुक्कयं ॥
 डेलंतझारीबारपारी, चष्य चारोमझयं ।
 बलिराह अग्नं भूमिमग्नं, बलसुजग्नं भज्जयं ॥ २२६ ॥
 पाताल पग्नं दान मग्नं, सीसमग्नं सज्जयं ।
 भरि पाउ भारं धरन धारं, षगउभारं मग्नयं ॥
 अमुरानभज्जं बलियगज्जं, पीठसज्जं श्रग्गयं ।

पारि ग्यं पामुरै । देवता । मारै । संघारै । भारै । युंरं । जुर । डकहकंतडकं पारि
 घकहारि थक नैपरं । थ्यक्कं छुदने पट्टं तीनपुटं वानं छट्टं ववलं । छट्टंन पट्टं तीन
 पुट्टं वानं छट्टं चलं । बलिराय जंम मानं भंगं भिरैमरां अचलं । बलिराय जग्गं भिरे
 मग्गं अचलं चौमठि । जोगं । करै । भोग । देव । मोग दपए । रुडत । भुडं । मुडि ।
 मुडि । सुडे । रुड । रषए । लगंत । वानं । भानं । छानं । डडानं । बाहाए । गुमान ।
 भान । दाह । दाहये । बालिराय । आगै । अंग । भुमि । मृगै । मय्ये । मुमि । बने ।
 पग्गै । गारनं । दरवानं । रटै । वेद । पद्वै । काल कटे । वामना । रूप । नुपं ।
 इलममं । हुंकारणदं । वाहं । कीयं । कीय । सबं । नदं । वेद । वद । वदं । मसममं ।
 धोमत । लगं । त्रैवदग्नं । त्रैवदग्नं । कीय । जग्नं । षगं । कारणं । दौर । कीयं ।
 सोरं । सिष । भोरं । कथि । शौर । काल कारं । आहुठ । प्राहुठ । पिड । भोम ।
 षंड । छोरि । छंड । परबरी । बलिदौरि आयो इद्र भायी बच्छयं निष । पुरान ।
 मग्नि । लच्छयं । वये । दिठयं । आहुठ । आहुठ । पेंडं । मग्नं । भने । सडयं । नाषंत
 तानं । गंगवानं । भानं । रुक्कयं । रुक्कयं । बलंत । सुक्कतारे । सुक्कसरि । रुक्क ।
 सुक्कयं । डेरनं । चष । मझये । बलिराय । अंग । भूमि । मंग । मयं । बलि । जिग ।

चंपंतपीठं दासदीठ, दैतरूठं तापयं ॥ २२७ ॥
★ बंधनं बद्धं वरष अद्धं, देव किद्धं सारयं ।
घर पिद्धनद्धं मारि मुद्धं सगं दिद्धं पारयं ॥
रहिअठुपष्वं सष्विलष्वं धाररष्वं, धारयं ।
चप्पीपयानं नहीं कालं, राजभालं भालयं ॥ २२८ ॥
तुट्टं सुनाथं रष्विनाथं, स्रब्वसाथं पालयं ।
असुरान भगं षेलषगं, इंद्र सगं वासयं ॥
वामन्न रूपं कला अनुपं, बलिय कूपं त्रांसयं ॥

॥ छं० २२९ ॥ रू० ४६ ॥

नाटक—नारहं कहि जाय विष्णु पुरयं, स्यामं छले वायकं ।
जयं फल उतपन्न दीन वर्यं, पाताल हरनं सदा ॥
वंझावलि बलि त्रीय पास लष्मी, पारष्विआने हरी ।
चौकी बंधि चौमास पास सरितं, पद्धारनं सत्तलं ॥

॥ छं० २३० ॥ रू० ४७ ॥*

परशुरामावतार की कथा

दूहा—षिति षित्री अति प्रबल हुआ । महामत्त असरार ।

ताहि हतन षिति दुज दियन । परमराम अवतार ॥

॥ छं० २३१ ॥ रू० ४८ ॥

दुय पुत्रिय राजन सुपति । व्याही षित्री दान ॥

जमदग्निह रिषरेनिका परिनठिय अरि पान ॥

॥ छं० २३२ ॥ रू० ४९ ॥

जगं । भअयं । पगं । दानं । मगं । अगं । शृगं । सजयं । धरनं । मगयं । असुराण ।
भजं । बलीय । जजं । गजं । पीर । सजं । अगयं । शृगयं । चपतं । दाव । दाड ।
रूपठं । रुठं । पारयं । ★ यह तुकसं० १८५९ की लिखी पुस्तक में तो है अन्य किसी
में नहीं है । आछे । पप । मंषिन । सध्वं । रषं । चप्पी । पयालं । नहीं । नहींय ।
तुस । सनाथं । रषि । श्रव । भगं भंगं । वंगं । पगं । अग शृगं । वामनं । रूप ।
नूपं । नूपं । अनूपं वलीय ॥

४७ पाठान्तर—वरयं । लषिमी ॥

★ यह रूप हमारे पास की सं० १८५९ की लिखी पुस्तक के सिवाय और
किसी में नहीं है ॥

४८-४९ पाठान्तर—छिति । प्रबलं । हुयं । हुय । हुवं । महामत्त । हननं ।
छिति । परसराम । परसिराम ॥ ४८ ॥ दोय पुत्रि । पुत्री । वत्री । दान ।
जमदग्निह । रेणका । परिनठिय । परनठय । अरिपान ॥

कवित्त - अनुकंपा श्रुत सुबर । दिद्ध वित्रीय अरज्जन ॥

रेनुक रिष जमदग्न । वित्रि सहसार्जुन षप्पन ॥

सहस भुजा सिर इक्क । सरित मन हृथ्य सुवाहै ॥

नव षंडन उग्रहै । लोग सहसं तन दाहै ॥

जमदगनि सुतन दुज घर दियन । फरमराम अवतार घर ॥

वित्रियन मारि वृदह वरिय । करी टृक अज सहस कर ॥

॥ छं० २३३ ॥ ६० ५० ॥

भुजंगी पुत्री दोइ राज मुराज विचारी । इकं रूप मारं विय चत्रु नारी ॥

दई सैस भुज्जं अनुकंप ताहं । वियं जम्मदग्नं सुरेनक्क व्याहं ॥ २३४ ॥

ग्रह बंधिरन् मझ्ज रेनक्क रापै । मन मझ्ज बिभ्र मरिण्य सु दापै ॥

तनं जानि त्रैलोक आरुन्न बह्ठी । भरे अंव वस्त्र रिषं पाम ठह्ठी ॥ २३५ ॥

ब्रष अठुदस्सं बनव्वास रह्यं । करुन्ना मुष मझ्क पत्तीन कह्यं ॥

गई तट्ट सम्मुद्द सथ्थे सु भट्टं । सथं अनु कंयं अमुरान थट्टं ॥ २३६ ॥

घरंती चकडोल अस्मान च ली । मिले सथ्थ सुथान धर्यान हल्ली ॥

गहर दुरंदान भद्रान मदी । मिली माइर जानि निव्वान नदी ॥ २३७ ॥

पुर तीन दरदीन मगं अमगं । नहीन त्रिहं लोग तिन मम्म पगं ॥

॥ छं० २३८ ॥ ६० ५१ ॥

५० पाठान्तर - अन्करा । मबर । पित्रि । पित्री । अम्युत । अरज्जुन ।
रैनक । रेणुक । यमदग्न । वित्री । सहस्रार्जुन । महमारजुन । पवन । इक । हथ ।
सुवाहै । लोग । तन । यमदगनि । जिमदगनि । दीयन । फरमराम । अवतारि ।
घरि । करि । टुक । अजसकर ॥

५१ पाठान्तर—दोई । दोइ । राज । सु राज । इक । मरम । बीषं ।
चत्रुनारी । चतुरनारी । दइ । सहस । भुजं । मु अनुकंप । मु अनकंप । बीषं ।
जमदग्न । सुरेनक । सुरैनक । ग्रहं । बधि । रिन । मझ । रेनक । रैनक । मझ ।
मरिण्य । जानि । त्रयलोक । अरुनक । अरुनत । बढी । भरै । अबं । ठठढी ।
वरय । वरयं । अट्टम । बनवाम । रहि । रहियं । करुन । मुष । मझ । पित्रीन ।
कडीय । कहियं । जाई । जाइ । तट । समुद । समुद् । सथै । सथे । सथ्यै ।
मय । अनुकंप । अनुकंप । अमुरान । अमुरानं । घरनि । घरनी । घरंती ।
चकडोल । चकडोल । असमान । बली । मिले । मथ । मुरथान । धरथान । हल्ली ।
गहर । गहं । दुर दान । मदी । मिले । मायरं । जाविनिनिवाननदी । जानि ।
निवान । नदी । पुर । दरदीन । मग । मगं । अमग । अमंग । नहिन । नहिन ।
नहिन । त्रह । लोग । तिन । समन । थंय । थंय ॥

बूहा—सत षोहनि पानन सहस । रत हृथ्यी सत लष्व ॥
धवल दुरद सत लष्व भर । सत लष अस्सिन् पष्व ॥

॥ छ० २३९ ॥ रू० ५२ ॥

मनहु कूर षित्री मरद । पन अपन प्रति पार ॥
मनहु सूर ससि डरन डर । भर षित्री भर भार ॥

॥ छ० २४० ॥ रू० ५३ ॥

पुज्जि आव षित्रीन रन । उप्पन्नो रिषि राज ॥
फरसी दीनी विष्णु पुर । कलि ब्रह्म स्तुति काज ॥

॥ छ० २४१ ॥ रू० ५४ ॥

भुजंगी—च ग्री अनुकंपं सयं मिप्व मिष्वं । धरीयं मनं मझ्ज पत्नी सुरुष्वं ॥
भरी नेह अंबं तिनं वस्त्र भारी । डरी मन्न मझ्जा ग्रहं इप्प नारी ॥ २४२ ॥
अई हृथ्य हृथ्य जोरी मुहं मोरि कह्यं । भरी नेह नीरं मन पीर रह्यं ॥
रिरी मन्न मेहल्ल भोजन्न कज्जी । किधे दम्म व्रण्ण मु आगंम सज्जी ॥ २४३ ॥
अए रिषि थानं मु डेरा दिवान । जनों चट्ठि नभ्भं प्रगट्ठीय थान ॥
दुक्कन्न जुंउं कियं जुंउं जुंउं । जुं सोभीय पंभ इभ इप्प मुडं ॥ २४४ ॥
दई वत्त नीमान वी वज्जि भेरी । मनो इंद्र इंद्रामनं धुज्जि हेरी ॥
स्मरीयं रिषं धेन कैलाम थानं । किधो व्रिट्ठियं गज्ज गाह् मुनानं ॥ २४५ ॥
जु आनिथ्य आकंपंन धेन आई । मुरं आमुर नाग मझ्जे कि भाई ॥
तवै आनि नुट्ठी मझ्जे थान थाय । जिहनं जु जो भाव भोइन्न भायं ॥ २४६ ॥
तवै षोहनी अट्ठु भोयन्न भण्णी । कहा पाक मासन आतक दिप्पी ॥
तुरतं भगनीन चिना चिनानी । इत्त पुज्जिवे कौन अतर पानी ॥ २४७ ॥

५२-५४ पाठान्तर—मन । गोडुंन । गोडनी । पानन । ह्यो । मिन । लप ।
सिन । लप । मिन । हमन । हमिन । परव । परद । परप ॥ ५२ ॥ मनहु ।
अपन । मनहु । मुर । अशि । षित्री ॥ ५३ ॥ पुज्जि । पूज्जि । उपनो ।
ब्रह्मस्तुति ॥ ५४ ॥

५५ पाठान्तर—नुत्तापान । चट्ठिय । अनुकंप । मय मिषन । मिषं ।
धरीय । धरिय । मन । मन्न । यत्री मरुं । मरुयं । भरीय । नहु । अंब । अव ।
तिन । डरी । भरिय । डरिय । डरि । मन । मन्न । मम्म । ग्रह । इपि ।
इष । आइ । ह्य । कर । जोर । जोरि । महु । मोरि । कहियं । कहीयं । भरिय ।
भरीय । नहु । नीर । मन । रहिय । रसियं । रदीय । रिषि । रषिय । मन ।
मेहल्ल । मल्ल । भोजन । भोजन । कनी । कट्ठि । कट्ठ । किधे । दम । वरण ।
आगम । आगंम । मत्री । आई । आए । रिषि । रपि । थानं । डेरा । जनुं ।
जनी । चदरं । बदरं । नभ । नम्म । प्रगट्ठीय । दुस्यं कनक । दुसंकर । दुस

हेषीयं अनूकंप धेदमु दुहक्षी । कही राज अगै सु भोजन गुह्नी ॥
 पूषं दैत बंकं सुरं सक साझै । दिषं नैन ते चित्त गानन्न दाझै ॥ २४८ ॥
 हरौ कंकं अन्मक लै चल्ल बच्छी । किधौं दौरि पित्री सुरं धेन गच्छी ॥
 रिं हंडं मुंडं सुरं सन्नमारे । जिते लात मारे तिते सर्व तारे ॥ २४९ ॥
 नेन लोम लोम प्रगद्री दहानं । मुपं मुगलं पुच्छ पच्छार भानं ॥
 रं पुष्परं रामि भं मिंग मिद्धं । लगे लेप आण तिनं मुनि लिद्धं ॥ २५० ॥
 हय पुत्र ता माय धेनं दहानं । सुने वान पित्री धरे पिट्ट पानं ॥
 तौ भजि कैलास ते आनि धेनं । किधौ चलिथ राज वी उड्डि रेनं ॥ २५१ ॥
 तं रिष्य श्रापन्न तापन्न ताप । किधौ पुत्र पारथ्य रेनक काप ॥
 न पुत्रन काज आमिष्य वष्यं । कियं पुत्र नृष्यं दियं श्राप रिष्यं ॥ २५२ ॥
 वे फारामं फरस्मी उभारी । कियं रिष्य काम मुमन्नं सुमारी ॥
 गौ पुत्र तंमंगि जौ दिद्ध मान । किधौ पावनं पाइ दोई सभ्रान ॥ २५३ ॥

तस । तंड । तिया । त्रु । त्रैरिष्यं । त्रीषीय । त्रीषीय । पम । ट । म डप ।
 र । ट । नीरान । वट्ट । मैरी । मनो । ट्टासण । है । नी । ममरीयं । ममरियं ।
 र । नया । हिय । हिवू । किडुं । विराय । विरिय । गन । गण । अनीन ।
 रिष्य । राहयन । श्राप्येन । धेने । सुर । मगुर । मझै । मझे । आनि ।
 रि । रडौ । रडी । मरै । टायं । गौ चिठिय भाव भोटन भावं भोटन । जै ।
 पनी । पड । भोजन । भपी । कटर । रिपी । परन । लुरन । मनीन । भगन ।
 मनीन । रिता । विनानी । रैन । पुज्जव । पुत्रवे । पुज्जवे । कोन । कोन ।
 न । यन । यान । चित्तानी । पानी । पांती । रिषि । रिपी । दिरिय । दिरपी ।
 नुरप । धेन । मुदुझी । मुदुझी । करी । अये । भोजनं । गुझी । देन मुप ।
 रने चित्त गाननं दाझै । दिप ने चित्त गान न दाझै । दिप नैन चित्त गात न
 अरे । करी । करी । अनसंक । चली । बली चली । वली । बछी । किषी ।
 रि । गल्ली । परे । रुड । हंड । मुंड । मुड । मुर । सब । मारै । जिते । पान
 रे । लोन । मलोम । प्रगटी । दहनं । दहान । मुप । मुगलं । मुगल । पुछ ।
 पछाय । परठाय । भान । पुर । पुररं । मीग मीग । मिंग । लगे लप । लप्य ।
 रा मुक्ति । लद्ध । कीथं । तो । तो । ने । धेन दमहनं । दपनं । मुने ।
 त । तान । कान । धरे । रिट । पांनं । मनो । मनो । मनो ते नै । किधौं ।
 र्यो । चलिथ । ब बहु । उ । ड । रैन मनो । मना मन । रिषि । श्रापं ।
 तान । किधो । पारथ्य । रैनक । काथं । मनो । मनो । पुत्र नह । अमिष्य ।
 शिष्य । वाप । विषं । वषं । कीयं । वृष । वृषं । दीय । रिप । रिप ।
 ममराम । फरमराभ । फरमी । रिषि । मुमन्नं । तमंगि । तंमंगि । जब । किधो ।
 र्यो । पावन । दोइ । दोइ । सहस्राजुनं । सहसारजुन । कामधेनं । राम ।

करी पैज सैसार्जुनं काम धेनं । चलयो रामफर्सी धरै गज्जि गेनं★ ॥
कहाँ जाइ सैसार्जुनं मुझ्झ अगं★ चळ्यो राम रिष्यं पयं लग्गि मगं ॥२५४॥
दियो रिष्य बरदान जा कुद्ध कज्जं । जबै दिपियं पित्रियं फर्स भज्जं ॥
मनो अर्क वारं मधं अगि लगं । भयो दिट्ठ सैसार्जुनं भीर भगं ॥

॥ छं० २५५ ॥ ह० ५५ ॥

दूहा - फरसराम फरसी गृही । लग्यो पत्रियन काल ॥

हुकम रिष्य दाहन चलयो । जगि जोगिनि विकराल ॥

॥ छं० २५६ ॥ ह० ५६ ॥

त्रिभंगी जगि जोगिनि काल, ईम सभालं किद्धा चाल, रंडालं ॥

मिलि भैरव भूत, देविय दून, चण मरुतं अनालं ॥

मिलि फरम रामं, करुना कामं, भामनि भाम, मुर इद ॥

धर धुज्जै गेनं, उड्डिय गेनं, जगिय नेन, जोगिदं ॥ २५७ ॥

परि आयो रामं, लगिय जाम, पत्रिय ठामं, नह लद्धं ॥

परि मोटन छोटं, दानव दोटं, जुगनि जोटं, लगि जुद्धं ॥

धरथरि थिर थानं, रीठ सुवानं, छाइय भानं, गैनानं ॥

करि पित्री अंतं, मडिय पंतं, पंगुर जत, हं हानं ॥ २५८ ॥

वरवान न लग्गै, भीर न भगै, फारमी बगै, कर भान ॥

अवनार अलप्यं, भामिन भप्यं, दैतन दप्य, ब्रह्मान ॥

करि रूप कुरूपं, जुद्ध मजूप, पुत्र अनूपं, जमदग्नं★

नूनत अनलप्यै, आप अलप्यै, दानव दप्यै, जम मगं ॥ २५९ ॥

फरमी । घरे । गजि । गेन । गेन । गेन । जाय । महसार्जुन । महसार्जुन ।
सहसार्जुनं । मुप । अग्र । ★ यह दोनो बूटीवाली पुस्तक मे नही है । रिप । लगि ।
मग्र । सगं । रिपि । वरदान । काजं । जबै । जडव । दिपियं । पत्रियं । फरम ।
भज्ज । भज । मनो । मनो । अरक । अरकं । अगि । लग्ग । लग्य दिद्ध । दिद्ध ।
सहसारज्जुन । महसार्ज्जुन । भग । ।

५६ पाठान्तर—दोहा । फरसराम । गृही । पित्रियन । पित्रीयन । रिपि ।
अग । युगिनि । जोगिन ॥

५७ पाठान्तर—छंदत्रिभंगी । जुगिन । काल ईश । सभाल । किधा । रंडाल ।
हंडाली । मिल । भैरव । भूत । भूत । देवीय । दून । चंय । चरुतं । अनाल ।
फरसरामं । फरसराम । वरना । काम । भामिनि । इद । धुज्जै गै । गेनं । उड्डिय ।
रेनं । जगिय । नेन । जोगिदं । राम । लगिय । जाम । पत्रिय । छोट । दोट ।
लागि । जुद्धं । धर । थानं । सुनं । गैनानं । पित्रि पित्रयी ददं । मंडीय । जंत ।
भान । लगै । भगै । वगै । भानं । अलप्यं । भयं दैत्यन । दप्यं ब्रह्मान । करुपं ।

गहि प्रिद्धन गाला, किद्धा चाला, गिषि रंढाला, रिन कालं ।
 परि कूक मु कूकं, इक्किन डूकं, गिद्ध गहूकं अंतालं ॥
 मुर छाइय भानं, अरजुन वानं, महमभुजानं, गंजानं ।
 मनु वहर चंदं, हथ्य जुगिदं, कीया फंदं, दंतानं ॥ २६० ॥
 परि लोथ अलोथं, मथ्यन मथ्यं, भरि भरि बथ्यं, भंजानं ॥
 विसि पोहनि अट्ठं, मारक नट्ठं, ता रस तट्ठं, धुकि धानं ॥
 भिरि भुज भंजानं, दैतलजानं, फग्मिय पानं, रन मानं ।
 परि अजुन पानं, पिमीय पांनं, नारद ग्यानं, विजयानं ॥ २६१ ॥
 अवनार मु दिट्ठं, पित्रिय नट्ठ जोगिनि सट्ठं, नापित्रं ।
 परि फूल मुगानं, मारि पित्रान. चंद बपान, गावित्रं ॥

॥ छं० + २६२ ॥ रू० ५७ ॥

रुक्विन सहम भुजा मिर इक्क । नाम अजुन घन मज्जिय ॥
 मुर अठ पोहनि मरदि । करे मुर अप्पन कज्जिय ॥
 भरि रुद्धि षप्र गुनीय । ईम मुंडन भर वधियय ॥
 पलवर रुधि चर पूरि । मक्क करि कारज मथियय ॥
 दिय दान पानि पृथिवी दुजन । करे रुधिर कुंडन त्रपन ॥
 मुर नरन नाग किन्तिय उत्ररि । फरवराम पित्रिय पपन ॥

॥ छं० २६३ ॥ रू० ५४ ॥

★ वदीवाणी मे राठ-रुक्वि रूप कल्प पुत्र अनुत्त भाग्यम सप्तम जमदग्नि-म० १६४७
 और १७७० म-रुक्वि रूप कल्प पुत्र अनुत्त जमदग्नि । नूनन । नूनन । अनुलपै ।
 रडी । री । वनराज । राशय । गड । विद्धन । विद्धनि । विद्या । राजा ।
 गिष । गिष । गड । रन कड । परिकन । करक । मरुह । डोहन । दुह ।
 गडक । मान । अरजुन । अरजुन । वान । भुवान । मनी । मनी । वर । रव । ह्य ।
 जुगिद । विद्या । फद । वीथि । वीथे । अजोर । अजोर । वरन । वरन । मयं ।
 मरुवरन । मरु । पाशवे । रड । मरुह । नडं । मरुह । रड । रूकि । धरं ।
 मरुत । मरु । फरसी । वान । वानं । मानं । अरजुनं । अरजुन । विविश ।
 पान । विट । वीरवा । विरीर । रडं । वरवान । मडं । विवानं । वरान ॥

† उर उर की प्र-वेत नुम मे ३२ मासा और यत्रि १० + ८ + ८ + ६ = ३२
 और ताल ८ होते है ॥

५३ गजधर - उह । नां । अरुत । अरुत । मीर । पीर । मरड ।
 करे । मुरे । कजरा । कथिर । गुनिनिर । वीनिनिर । उव मुंडन । वधिर । पडवर ।
 रुधिर । मरु । मारिज । मथिर । वीथ । दान । पानि । विवरी । करि कुंडन
 रुधिर मु त्रपन । नग । किलीय । वित्रीय ॥

रामावतार की कथा

दूहा— फरसराम छिति पति हते । छिति अप्पी निज वंस ॥

रघुवंसी दसरथ घर । श्रीरघुपति अवतस ॥

॥ छ० २६४ ॥ रू० ५९ ॥

रघुवंसन राषिस रमन । भयोराम अवतार ॥

वेद भ्रात दसरथ मुतन । नयर अजुध्यासार ॥

॥ छ० २६५ ॥ रू० ६० ॥

भय राम लषिमन मुबर । भयथ सत्रुघनभ्रात ॥

अरि रावन राषम हरिय । निन वन लिपिय तात ॥

॥ छ० २६६ ॥ रू० ६१ ॥

कविन नरुनि नाम तारिका । ग्यान हरि परमीराम ॥

वरि सती धानुष । किए मव मुभ्भह नाम ॥

केकड्यै वर मगि । राम वन भरत मुजाज ॥

तव दसरथ दुष कीन । भयौ धुर काज अकाज ॥

दसरथ पाइ परसे उभय । पंच वटी बंधी कुटिय ॥

कहि चंद छद परबध करि । लक कक जिहि विधि जुटिय ॥

॥ छ० २६७ ॥ रू० ६२ ॥

सूपनया राषसी । रहै वन मक्कर ढाली ॥

रूप नष चष धूम । रग श्रवन तन काली ॥

नाक वक्र नष तिष्व । जाइ षरदषन दणिय ॥

दौरि दौरि धरि दौरि । राम मत्र राषिम भषिय ॥

हरि मीत नीत रावन गयो । भयौ चित्त राषिस हरन ॥

कहि पवन पूत दूतह चलिय । सुर मुकाज माई करन ॥

छ० २६८ ॥ रू० ६३ ॥

५६-६१ पाठान्तर फरसराम । हते । अपी । भिज । दसरथ ॥ ५९ ॥
रषि । रवन । राम । श्रीराम । वेद । दसरथ । मुतन । अयोध्या ॥ ६० ॥ भयै ।
भयो । राम । लषिमन । लछमन । भरत । सत्रुघन । रासहरिय । वन लषिय ।
लिषय ॥ ६१ ॥

६२-६४ पाठान्तर— नाम । ग्यान । परमीराम । वरी रती । धानुष ।
कीए । सुभह । केकड्य । केकड्यै । राम । भरत । दुषि । निन दसरथ । पाय । व ।
बंटी पटबध । जिहि ॥ ६२ ॥ सूर्यनया । नुर्यनया । सूपनया । राक्षसी । राषिमी ।
मध्य । रढाली सूपनपत्रण धूम । सूप । नष । श्रवन । प । जाय । षरदषण ।
दणिय । षर । राम । भषिय । हरि । वित पुन । गूतह । तद । चलिय ।
साई ॥ ६३ ॥ गयो इतु रुबेम । एस । लबेश । पाईय । सघरीय । मंहीय । घेर

गयौलंक हनुएस । भ्रमत सुधि सीता पाइय ॥
घन उपवन संघरिय । धरे मन राम दुहाइय ॥
वाय चढ्यौ प्राकार । दगन जुद्धह दनु भणिय ॥
अपै कुमारन हनिय । दौरि इंद्राजिन दणिय ॥
नपि पाम रास द्रष्ट बंध्यौ । कहि मुमग्ग अवर धरौ ॥
लगाय पुच्छ लका जणिय । करक पक किनी परो ॥

॥ छं० २६९ ॥ स० ६४ ॥

दूहा जलन जणिय रापम छगिय । धरिय बग विपरीठ ॥
मनी अरु कमलनि दरम । मुनि रावन मन भीन ॥

॥ छं० २७० ॥ स० ६५ ॥

कविन -बंधि पाज मागरह । हनुअ आद मुग्रीवह ॥
नील जवु मु जटाल । बरी राहन अर जीवह ॥
धाम धरनि व राह । दाउ धारन कटि मारन ॥
स्वामि धम्म धुर धवल । उडि असमान मुधारन ॥
प्रकार धरनि दमकध हरि । पवन पून अधधूत भर ॥
सर * करन लंक ल्यावन मनी । थपन लक बभीष वर ॥

॥ छं० २७१ ॥ स० ६६ ॥

बंधि पाज वर वीर । नपि साइर मु अष्ट कुल ॥
वय तरंग तपि तथ्य । भरे जन् अगस्ति (मु) † अंजुल ।
मिर मच्छी ऊछरी । मनौ रचि मनि धर सेस ॥
पिटु राम भर हनुअ । किन्न मन कारन भेसं ॥
चरु चकित नाथ दम वेद पुर । छोरि देव सेवन ग्रह्य ॥
घर लंक सदा थप्यन मुथिर । अगह गहन हनुमंत भय ॥

॥ छं० २७२ ॥ स० ६७ ॥

राम । दुहाइय । दुहाईय । चाय चढीय प्रकार । दगननुदनुभाणिय ॥ वाय चढीय
प्रकार । जुद्धह । जुद्धह । भणिय । कुमारनि । हनिय । जिध । जीन । मु । दणिय ।
तपि । दुड । बंध्यौ । मरन । अवर । लगाय । पुच्छ । पुच्छ । जाणिय । किनी ।
कीनी ॥ ६४ ॥

६५ पाठान्तर जलनि । जणिय । रणिस । छरीय । धरीय । बग विपरीति ।
मनी । अरक । कमलनि । दरमि । मुनी ॥

६६-६६ पाठान्तर बंधि । गुन । बलि । रहुन । स्वामि । स्वामि । धम्म ।
धम्म । धुरव । धवल । उडि । असमान । प्रकार । पुन । अवधुत । सर । थपन ।
वर ॥ ६६ ॥ बंधि । वर वीर । मायर । कुल । कुल । विप तुरंत तपि तथ । भरे ॥

जब मु राम चढि लक । तब मु मच्छी गिर तारिय ॥
 जब मु राम चढि लक । तब सु पथथर जर धारिय ॥
 जब मु राम चढि लंक । तब सु चक चक्की चाहिय ॥
 जब मु राम चढि लंक । तब सु लंका पुर दाहिय ॥
 जब राम चढे दल बंनरन । भिरन राम रावन परिय ॥
 भिर कुंभ मेघ राषिस रमन । गीत काम कारन करिय ॥

॥ छ० २७३ ॥ ह० ६८ ॥

उतरि समुद्र अथाह । धाह लंका धुर धुज्जिय ॥
 चलिय सेन रघुवंस । जोर मामंत मु सज्जिय ॥
 लुट्टि लक गढ घेरि । फेरि बभीषन थपिय ॥
 इंद्र जीत असि मज्जि । चढे रभ अप्पन जपिय ॥
 परि मार धार परि बंनरन । मार मार उचरत मुष ॥
 चल चलिय सेन लपमन मधर । देव विभान सु मानि दुष ॥

॥ छ० २७४ ॥ ह० ६९ ॥

इहा - मेघ नाद नादन कन्यौ । धन्यौ लक उर धाह ॥

छुट्टि लोग सब भोग नजि । जुट्टे जग उछाह ॥

॥ छ० २७५ ॥ ह० ७० ॥

अंजल । गिर । मच्छी । उवगी । मनो । मनी । मीम । मम । गिरि । राम । जीन ।
 नैसं । चक्रिन । बदनपुर । बदनपुर । छोरि । देवा प्रथम । गृध्र । धर । थपन ।
 अग मग । हनमन ॥ ६७ ॥ राम । राम । मछी । गिरि । तारिय । तारीय ।
 राम । निक । पथर । प्राणीय । राम । चकी । राम । दाहीय राम । चढे । बदरन ।
 राम । परीय । सीन ॥ ६८ ॥ उत्तरि । समुद्र । धुज्जि । सेन । रघुवंस । जो ।
 समज्जिय । ममाजिय । घेरि । बभीषन । बभीषन । थपिय । मज्जि । बदरन । श्रुष ।
 चलि सेन । लपमन । ममन । देव । देवि । विमान । ममान ॥ ६९ ॥

★ इस शब्द का किमी पुस्तक में मर और किमी में मर पाठ है । मैं इसका फारसी शब्द से हिन्दी का बनना नहीं समझना हूँ किन्तु संस्कृत सरः = गनी । गमने ॥ भेदके । भेदने ॥ अथवा Sk. मर = Thin, Small, minute. Hence conquest, victory, triumph के अर्थ में कवि का प्रयोग करना मानता हूँ । बहुत से संस्कृत और हिन्दी शब्द ऐसे २ हैं कि जो उच्चारण और अर्थ में फारसी और अरबी भाषाओं के शब्दों से मिलने झुलते हुये हैं । क्या उनका अन्य देशीय भाषाओं से ही उत्पन्न होना स्वीकार करना परम प्रशमनाय है ? † अधिक पाठ ॥

७० पाठान्तर -- "धन्यौ लंक उर धाह" के स्थान में सं० १७७० की पुस्तक में "लंक उरघाह" मात्र है । भीप । तिन । जुट्टे । उछाह ॥

विराज छुटे बान इंदाघटा जादि भद्रं॥भिरं बान भानं।करंतं बपानं॥२७६॥
 धरे ईस सीसं । किरं बानरीसं ॥ बकी थान थानं । जकी जोग मानं ॥२७७॥
 वहै रत्त धारा । छुटे भद्र भारा ॥ फिकारंत पक्कं । उकारंत डक्कं ॥२७८॥
 भये राम रीसं । मनो काल दीसं ॥ घग् अंग बज्जै । परे रथ्य भज्जै ॥२७९॥
 भिरं भ्रात पारं । मनो राम मारं ॥ हुई इंद्र जीतं । भग् देव भीतं ॥२८०॥
 करे रूप कोरं । सबैलोक मोरं । ★ ★ । ★ ★ ॥ छं० २८१ ॥ ६० ७१ ॥

कवित्त - धरनि धार धुकि धरनि । भिरन इंद्राजित मरभर ॥
 मुक्कि बान रुकि भान । परिय मागरन पलच्चर ॥
 जगिग बान मोहनिय । परिय लपि मनं पथारिय ॥
 परि षट दस सामन । सार मोहनिय मुधारिय ॥
 गजि इंद्र भद्र करि इंद्र रव । गयी लंक गाढी ग्रह्यो ॥
 रघुवंस सेन बानन पथ्यो । सार बद्ध मोहनि मध्यो ॥
 ॥ छं० २८२ ॥ ६० ७२ ॥

वपु नषन पुप्परिय । किनन किन नाट कुरंगिय ॥
 गनन गनन गय नंग । छलन छक्किय उछरगिय ॥
 सनन मोक भिल्लरिय । पनन धर धार षलक्किय ॥
 गिलन डक्क डिल्लरिय । भनन भृभार भलक्किय ॥
 धरनी धरीय वनरं रषिय । परिय पंति मोहन प्रबल ॥
 अमुगन गजि लंका नथह । इंद्रजीतिजीतित अनुल ॥
 ॥ छं० २८३ ॥ ६० ७३ ॥

कवित्त फिरि मज्जिय रघुवस । हनूगट मोट उडायिय ॥
 मरन छोरि मरजाद । इंद्र जीत न मृधि पाइय ॥

७१ पाठान्तर - छट विराज । छुटे । बान । जानि । भद्रं । भिरं । बान ।
 भिग । इम । ईश । रीश । बकी । थान । जोक । रत । छुटे । भद्र । फिकारंत ।
 फकं । डकं । भय । राम । मनो । मनो । बज्जै । परं । रथ्य । भज्जै । भिरं । भिरं ।
 मनो । मनो । रांग । ह । हुई । इंद्र । देव । भीर । सबै । लोक । मोर ॥

७२ पाठान्तर - कविता । धरनिर । धरेन । धरन । इंद्रजीत । मरभर ।
 मुक्ति । यान । भान । भान । भानि । मागरह । पलच्चर । लपि । बांम । मोहिनीय ।
 लपिमन । पथारीय । मोहनिय । मुधारिय । भद्र । रंस । सेन । बानन । मोहन ॥

७३ पाठान्तर - वपु । नषन । कुरंगीय । छकिय । उछरगिय । सनन ।
 सोक । भलरिय । भिल्लरिय । पलक्किय । डक । डलरीय । डिलरीय । भलक्किय ।
 धरनि । धरय । धरिा । वारं । वनर । वनरपिय । ररीय । मोहन । अमुगन ।
 गजि । इंद्रजीति । जितयं । अनुल ॥

मंत्र होम रथ जग्य । सरन देवी सुघ जापं ॥
 लषिमन हनु सुग्रीव । लंकपति भीषन थापं ॥
 आरूढि रथ्य अप्पन अवर । धवर पत्ति द्वारह घरिय ॥
 छर छरिय वान छकि छंछटिय । भरिय पत्र अभरन भरिय ॥
 ॥ छं० २८४ ॥ रू० ७४ ॥

धरनि तरनि आकास । वास रथ सासन रुक्किय ॥
 दमन अंव लगि वान । धरनि वट सापन धुक्किय ॥
 कुकिय कन विन कोर । सोर जोरह चौमट्टिय ॥
 मंत्र जप्प मत्र भूळ । करुन कारुन अन दिट्टिय ॥
 रथ च्यारि चक्र फरि चक्र चत्र । वान वृष्टि लपमन वलिय ॥
 करि कंक मंत्र आमुरनि डर । कहर वत्त ता दिन कलिय ॥
 ॥ छं० २८५ ॥ रू० ७५ ॥

साइर मन सोपनह । वान दिन्नो ता हथ्थं ॥
 गुन औगुन मंघियहि । कठचौ तिन जीवन मथ्थं ॥
 कुमुम वृष्टि मुर कीन । भयौ रावन तन भारी ॥
 सकल सोक रापिमन । हनुं जब लंक प्रजारी ॥
 जैजया सद् जोगिन जपिय । मंदोदरि कीनो रुदन ॥
 लछिमन राम सीता सुग्रहि । तदिन लंक लंगौ कुदिन ॥
 ॥ छं० २८६ ॥ रू० ७६ ॥

बसि निद्रा अघ वरष । घाम अंवर धर धुज्जिय ॥
 गौन गज्जि मुर मज्ज । पुध्रा वन चर वर पुज्जिय ॥

७४ पाठान्तर - मन्त्रीय । रघुवग । हनु । कोट । उडाइय । मरण । मारन ।
 छोरि । पाईय । होम । जागी । देवी । लपमन । बभीषन । थापं । आरूढ ।
 रथ । अघन । अपन । गवर । पति । धारह । छर्य । वान । भर्य । अभर ॥

७५ पाठान्तर—आकाश । रुक्किय । दरमन । अव । वान । धुक्किय । विन ।
 कोरं । सोर । मोर । चौमट्टिय । जप । शत्र । भूळि । भळि । करन । अनादीतेय ।
 अनदिठिय । चक । पान । लपिमन । वन ॥

७६ पाठान्तर सायर । मो । वान । दिनी । दीनो । इथ । अवगुन ।
 तिन । मथं । कुमम । मोर । हनु । सबद । शवद । जृगिनी । योगिनि । मन्दोदरि ।
 किनी । लपमन । मम । स्व । गृह । दिन । लंगौ । लक गोकं । दिन ॥

७७ पाठान्तर—घाम । धुजिय । धुजिय । गैन । गैन । गैन । गज । सज ।
 वन । पुजिय । पुजय । मुप । स्याम । गिरण । समनृप । जाकारिय । अकारिय ॥

गौर मुष्ण वपु स्याम । गिरन समनष्य अकारिय ॥
 काल ग्राम नामाग्र । तार तारन तप धारिय ॥
 मधि कुंड मुंड मर्गन बसै । मूर चंद संधन मपिय ॥
 करि धूम नाम नामन तपिय । अकल जोनि कालन भपिय ॥

॥ छ० २८७ ॥ ६० ३३ ॥

कवित्त भरन काल चलि सथ्य । धाम धामन अरु छट्टिय ॥
 महम जणष भपनीय । मनह अचल चल बट्टिय ॥
 निष्य नप्य अनुचार । झाल रमना झक झाड्य ॥
 करन काल बदरन । धरे अग्या मिर नाड्य ॥
 उत्तरिय लक अगमान मिर । नहन भार भारन नजिय ॥
 करि कृह डक्क गिर बदरन । भिरन राम लपमन भरिय ॥

॥ छ० २८८ ॥ ६० ३८ ॥

गिन रत्ती कुम्भकरन । पन्या भूपी वैमन्नर ॥
 धर बदर धक घाह । दन्त कटि पट्टे बन्नर ॥
 पप भाष्य बलचरिय । नही लट्टे तिहि वारं ॥
 सोपि सरित रन धार । पानि लै पिये अपारं ★ ॥
 सा हत सिन बदर मुघट ★ । गेरन धार उपर पन्यौ ★ ॥
 रघुवम नाम रावन कन्यौ ★ ॥ करन पट्टि दहन धन्यौ ★ ॥

॥ छ० २८९ ॥ ६० ३९ ॥

परन भ्रात धर † धरनि पदम अठ्ठह दमि पालन ॥
 जनु कि मट्ट गाइरन । आनि प्रथी जर तारन ॥
 परिभाषन रपिसन । कुइक चीमन मुष सामन ॥
 कर मुपिठ्ठ मम लिग ‡) कमध । भरन मुप इषिय भासन ॥

ग्राम । तपि । पारीय । मरदन । ३मै । नधन । मपिय । धूम । धम । नाम ।
 तपिय । जोनि । जोनि । कालन । भपिय ॥

७८ पाठान्तर- मय । धामन । छट्टिय । नप्य । अचल-चल । बट्टिय ।
 निष्य । नप्य । रमना । झाईय । झाईक । धरं । गिर । मारिय । साड्य । उत्तरीय ।
 अगमान । कृत् । नह । भिरधर । वन । राम । लपमिन । भिरिय ॥

७९ पाठान्तर- रती । कुम्भकरन । भपी । वैमन्नर । बदर । पट्टे । लट्टे ।
 पप । पत्रचरीय । नाहि । लट्टे । लट्टेति । सोपि । भरनर । पानि । लै पिये ।
 पीष । ★ ये तुको सं० १७७० की पुस्तक मे नही है । मिन । उपर । करन ॥

८० पाठान्तर- † धर शब्द सं० १७७० की पुस्तक मे है ही नही । अठ ।
 सह । मद । मारैरनि । आनि । प्रथी । परिभवन । रपिसन । कौइक । कौइक ।
 बीसन । शासन । मुपिठ । ‡ "मसलिंग" अथवा "मत्तलिंग" अधिक पाठ मालूम

करि लंक कंक पंकन पलन । धलन राम हृथी दुतिय ॥

धर धरत नारि कंतन क्रसन । कूटि कूटि दारुन छतिय ॥

॥ छं० २९० ॥ रू० ८० ॥

त्रिभंगी गढ लंककनन्दा, अगि जरंदा, धाह करंदा, मिलि जंदा ॥

कै जंघहिकंदा, मूपरकंदा, डेडकरंदा, मुष गंदा ॥

पल सव्वन पंदा, वधघ चवंदा, आप अनन्दा, † कुर जंदा † ॥

किलकी कूकंदा, माता मंदा, भारी भंदा, जारंदा ॥२९१॥

परि कुंभ धरंदा, † बान चलंदा, राम कहंदा, मारंदा ।

घर रावन हंदा, करै ति सं दा, लष्पै जंदा, दीसंदा ॥

घन राषिम वृंदा, रूप अनन्दा, पिठु द्रगंदा, दाहंदा ।

घन बान चलंदा, भान छदंदा, राम रवंदा, पारंदा ॥२९२॥

भर रावन हंदा, रूप करंदा, तारन चंदा, जानदा ।

मुर वेद चवंदा, हर फुलंदा, बाजन वृंदा, ईसंदा ॥

जनु कीर चलंदा, हाटे हंदा, तरबूजंदा, नापंदा ।

नट सागर हंदा, रावन वृंदा, रूप करंदा, रथ्यंदा ॥२९३॥

नर कोर चवंदा, रावन हंदा, स्यारमुनंदा, उसरंदा ।

कर लपिमन हंदा, बान चलंदा, हड परंदा, धारंदा ॥

परि रथ्यर वृंदा, बानर हंदा, द्रोन ग्रहंदा, नापंदा ।

पति लंक भगंदा, हनु आहंदा, नील निषदा, फिरि जंदा ॥२९४॥

चक्र चर करंदा, अश्व परंदा, राषिम मंदा, पाइंदा ।

रथ इंद्र अनंदा, बान नपंदा, रथ्य रहंदा, झारंदा ॥

नह ईन रहंदा, पुरा हंदा, विरदन वंदा, धायंदा ।

रिषि देव हंदा, राषिम हंदा, बीम भुजंदा, डाहंदा ॥२९५॥

होना है । कपध । मिगन । उगिय । टगीय । लरकं । कर । राम । हथी । दुतीय ।
क्रमनं । कुट्टि । कुट्टि । छतिय ॥

८१ पाठान्तर । उद विभगी । अगि । के । जघउकंदा । मूपरकं । मूपरकंदा ।
डेडकरंदा । मरा । धरत । रष । † पड तु । तथा नुक के टुमडे वृंदा । वाली पुग्नक
में नही है । माता । मंदा । बान । वंदा । राम । कदा । रूदा । करे । मदा ।
लपै । लष्पे । डहा । रावन । कं । पिठु । द्रगदा । दूमदा । हदा । ह्यहंदा । बान ।
छवंदा । अनंदा । नाम । पदा । नागन वंदा । बैद । दुर । बन नकुदा । इमदा ।
कीर बलदा । हाटे । तरबुजंदा । रावन । रथ्यदा । कारै । वंदा । उमुंदा ।
करि । लपमन । बान । हड । पथर । बानरहदा । द्रोन । ग्रहंदा । चक्रचुर ।
पाइंदा । वन नपंदा । रथ । प्रारंदा । इम । पुराहंदा । विरदन । रषि । देव ।

परि रावन मंदा, भीषन सदा, कात करदा, रामंदा ।
रवि कोट मुरंदा, हाटक हदा, फूल भवदा, मान्हंदा ॥
ले मीत चलदा, लयिमन मदा, सागर वदा, आनदा ॥

॥ छ० २९६ ॥ सू० ८१ ॥

भृङ्गगी किय षड पड बली मुण्य चार । महाबाह वाह बल वेद धार ॥
हनूमान हश्य मंदेम सुबथ्य । धरै पिट्टु तोन लछी वीर मथ्य ॥२९७॥
धनुर्वान माम जर वृन्न कागी । धर पानि याव वर पानि तागी ।
चम लक गौ गदु विहृचो विहान । धर धार धरकी करगोग्रहान ॥२९८॥
किय कोप कोप धर धार प्रोपा निला बधि मिध कुण रूप लोप ।
रन रावन वज्ज राउज वाज । वनी यपि वर य । विर राज राज ॥२९९॥
मुर मुर मुण्य वर वाद व । मरा मोर र । वम रे वनद ॥

॥ छ० ३०० ॥ सू० ८२ ॥

कविन जनक सुता हरि दृष्ट । हरी लका नन दावन ॥
जीव जगन जगि छरन । हरन रिपु ग्रहन मु रावन ॥
हरन रिद्ध नव निद्ध । मिद्धि हर सागर मिद्धिय ॥
हरन पुत्र इद्रजिन । हरन भीषन ग्रह लिद्धिय ॥
निन हरिय मीत व्रत इह जरिय । भरिय पत्र पलचर भयन ॥
गद जारि लक दमकध हनि । राम किनि चदह चवन ॥

॥ छ० ३०१ ॥ सू० ८३ ॥

हमदा । रापिम । वृग । वीम भुजिदा । मदा । भीषन । मदा । रामदा । रवि ।
रिव । कीट्टि । मुरंदा । हाटक । फूल । मालदा । ले । चंदा । मदा । मदा । इस
तुक के ये टुकड म० १३३० वाली पुस्तक मे नही है ।

८२ पाठान्तर उर भजगी । किय । षड । मुण्य । बाहु वेद । हनुमान ।
हथ । मदेमा । ममदे । मुण्य । धरे । पिठ । तोन । मथ्य । धनुर्वान । वृन्न । पानि ।
वर । चम । मो । गदु । विहृचो । विहान । धरकी । कर गे । कर ग ग्रहान ।
कीय । कोप । कोप । बधि । मिध कुण रूप । लोप । रण । आरन । रनि । यपि ।
यान । मुर । मृष । बद । कोट वर । जै । वनद ॥

८३ पाठान्तर कवि । जीवन । छरन । रिपु । स । हरिमा । श्रद्धि ।
रिद्धि । निद्धि । हससागर । मिधिय । इद्रजिन । इद्रजिन । इद्रजनि । हरल्ल ।
गुद । लिद्धिय । हरीय । मीत । वृन्न । भरिय । पलवर । दमकध । राम । बदह ।
तवन ॥

कृष्णावतार की कथा

कवित्त—नमो देव देवाधि । नमो नाभाय कमल बर ॥

नमो माल पंकज प्रमां★ न । नमो वर कलल कमल कर ॥

नमो नैन बर कमल । नमो चित्तह अधिकारिय ॥

नमो विकट भंजनन (मित†) । नमो संसार सुधारिय ॥

नम नमो (स्तु ‡) चंद नंदन नवल । नंद ग्रेह ब्रह्मांड गुर ॥

दिष्पहि जु देव देवाधि तुहिँ । मुगति समप्पन तिनह उर ॥

॥ छं० ३०२ ॥ रू० ८४ ॥

दूहा—प्रति सुंदरि सुंदरतमह सुंदरि मुमति सनेह ॥

सुंदरि त्रिभुवन पुरुष पहुँ, निज आवन तन ग्रेह ॥

॥ छं० ३०३ ॥ रू० ८५ ॥

पद्धरी जो कमलनाभि द्विग कमल पानि।कोमल सु मधुर मधु मधुर बानि॥

दुति मेघ पीत अंमर सुनंद । धर धरनि धरत मिर मोर चंद ॥३०४॥

चौ वज्र पद्म धज अंकुसीय । गद संघ चक्र भ्रगु लत्त हीय ॥

संग सरै दीह मिमु कर विवाल । आचिज्ज अछ्छबिय चरै बाल ॥३०५॥

तुहि दिष्प ध्यान धरि बधु अकाम । व्रत करहि उमा पुज्जन मुभाम ॥

॥ छं० ३०६ ॥ रू० ८६ ॥

कवित्त मसिर बाल तप करहि । कमल दक्षय मु वदन अलि ।

हेमवंत वन दहिग । दक्षि जल्ल सुष सुष मिलि ॥

वर वसंत डुलि पत्र । चित्त डुल्लन अलि रण्यहि ॥

इक्क पाइ तप करहि । पवन चावहिमि भण्यहि ॥

८४ पाठान्तर नमो । विर । नमो । मल । पकज प्रमान । ★ अधिक पाठ मालूम होना है । नमो । नैन । नमो । चित्तह । अधिकारीय । नमो विकटि । मंजन निमित्त । † अधिक पाठ मालूम होना है । नमो । सुधारिय । नमो नमो चंद नंद नंदनहि । ‡ अधिक पाठ जाना होता है । गेह । वृह मंड । ब्रह्मंड । दिष्पहि । ज । गुरज । देव । त्रुहि । तुहि । मुगति । समपन ॥

८५ पाठान्तर—दूहा । सुंदर । सुंदर मुभन । सनेह । सुंदर । सुंदर । त्रिभुवन । पुरुष । पहुँ । आवन । ग्रेह ॥

८६ पाठान्तर—चौ । पानि । कोमल । मिष्ट वानि । दुती । मेघ । अंबस्सु अंबिर । मोरचंद । चौ वज्रपद्मधज अजमीय । चौ वज्र । ध्वज । भृगु लत्त पीय । संग । संघ । मिमि । करि । विवाल । आचिज्ज अर्वा बयचरै बाल । आचज । अब । त्रुहि । दिष्पि । ध्यान । धुर । अकाम । पुजन । म भान ॥

८७ पाठान्तर—कवित्त । मसिर । कहि । करीह । कमल । दक्षय । दक्षि । वदन । हेमवंत । वन । दक्षि जल सुष मिलि । दक्षि । सुष सुष । वर । वसंत ।

बरषा रु सरद लगिय करद । मरद मैंन जगौ सु तन ॥
सुगंधि दिव्य मिष्टह पवन । करहि सेव उमया सु मन ॥

॥ छं० ३०७ ॥ रू० ८७ ॥

सीत मु जल उष्णह सु (अग★) । पवन वृष्णह घन झुल्लहि ॥
उमया उर उच्चार । मृ डर गुर जन बर झुल्लहि ॥
दधि तंदुल घन पीर । बहुत मिष्टान पान कर ॥
हरि मगहि हर नछ्छ । करहि तलपन पत घर ॥
स्नानं च जम्म भगिनी कराहे । मुरति सेव काव्यायनिय ॥
इह कहि रु क्रन कुडल करहि । गरथि माल पुट्टै घनिय ॥

॥ छं० ३०८ ॥ रू० ८८ ॥

हनुफाल मुहि अपि भगवति कन्ह । देवाधि देव सुनंह ।
अति सीय पुट्टप मुरग । विनि पीन अवर चंग ॥ ३०९ ॥
घन मद्धि नडिता तेज । चमकन दुति ममकेज ॥
बिष अन्न उपम देपि । कचग कसौटिय रेपि ॥३१०॥
हरि धरन नुरमिय माल । घन पति मुक्क विमाल ॥
मंजरिय मृत्तिन माल । मुर चाप मोभ रमाल ॥३११॥
मधु मधुर मिष्ट मृदानि । कल अन्नन नुभ्रनि जानि ॥
द्विग स्याम कमला लछ्छि । उपम गुन कवि अछ्छि ॥३१२॥
तरु स्याम तेज नमाल । चट्टि हेम बेलि विमाल ॥
मिर मोर मुकुट जु स्याम । नचि मोर गिरवर ताम ॥३१३॥
झलकन कुडल कान । कवि कहै उपम वान ॥
बर अरक मोम प्रमान । सिन पुनिमा निस घान ॥३१४॥

पन । चिन । डुडन । रषट्टि । रषट्टि । इफ । पाय । नावमि । भषट्टि । बरषा ।
लगिय । मयन । मैंन । जगौ । सुगंधि । सुगंध । सुगंध । मिष्टान । पवन । मिष्टान
पन । सेव ॥

८८ पाठान्तर सीतल । सीत । अगि । अग्रि । ★ अधिक पाठ । वृषह ।
वन । झुल्लहि । हर । चार । वर झुल्लहि । नदुड । घन । मिष्टान । पान । हर ।
मगौ । मगौ । हरनछ । हरनछि । तलपन । पत । पन । प्रमु । जमु । सेव । काव्या-
यनीय । करहि । गह्य गह्य । गह्यपट्टै । घनी ।

८९ पाठान्तर छंद हनुफाल । मुह । कहु । देवाधिदेव । सुनंह । अति
सीम । पट्टप । वनि । पीत । घन । मधि । तेज । कैज । उपम । देवि कसौटीय ।
रेपि । नुरमी । तुरसी । घन पंत । मुक । मोव बानि । अमृत । सुमृत । जानि ।
स्याम । लछि । उपम । अछि । जछ । स्याम । स्याम । तैज । माला हेम बेलि ।

वन सघन सज्जल ताम । उठि इन्द्र चाप सु काम ॥
 बर बजति मुरलिय मुष्प । संसार ह'ति सु दुष्प ॥३१५॥
 इरु पाइ तप कर न्याइ । हरि धरै अधर सु धाइ ॥
 हरि लियै अंकुस वज्र । कविराज उप्पम सज्ज ॥३१६॥
 बर भक्त मत्त करीव । तिन हटक पार नरीव ॥
 यौ पाइ धरि इहि भंति । ससि वीथ बनि परि कंति ॥३१७॥
 हरि चरन कमल सु कोर । जनु मिलन कुमुदिन भोर ॥
 नष नमल नमल सु कंति । जनु उगि तार कपंति ॥३१८॥
 नटवत्त भेष ध्रिमग । दुति कोट करत अनंग ॥
 मुष कमल दधिकन स्याम । नभ फुल्लि मालति काम ॥३१९॥
 सो इकंत अप्पहि मात । अधमान ध्रिमल गात ॥

॥ छं० ३२० ॥ ६० ८९ ॥

दूहा - च्यार घटी निसि सुन्दरी । प्रान पपत्तै थान ॥

जल अंदोलिन सो भई । उदै होन बर भान ॥छं० ३२१ ॥६०९०॥

कंस मेर चडि सोम बहु । मकल हरत रवि पुब्ब ॥

हंस माल भंजन सकल । सज्यौ चंद मनु सब्ब ॥

॥ छं० ३२२ ॥ ६० ९१ ॥

चौवाई - गावति विरति अचारे बालं । हेम मंन कण्ठ नन माठ ॥

उरमा निसि रविनी रम जामं । हरि निरदोष निहारन काम ॥

॥ छं० ३२३ ॥ ६० ९२ ॥

मीर । मुकट । मृगट । युं । स्याम । मु स्याम । नवि । नान । कान । कटि कटे ।
 बांन । वांन । सोम प्रमान । पुरनिमा । ग्राम । धान । मजल । ताम । उद । ताम ।
 चर । बजति । मुरलि । मुष । मृ दुपु । स दुपु । पाय । कर । न्याय । लिये ।
 अंकुम । वज्र । कविराय । औरम । मज वर । भुक्त । मत्त । करीय । हटक पाट ।
 मरीय । हटक पाट । यौ । पाय । ममी । कौर । जुनु । मिलित । कुमदन । भोर ।
 भौर । नष । निमल । नमल । उगि । कंति नटवत्त । भेष । दुति । कौर । कटित ।
 अनंग । म्यांम । फुलि । फूलि । मालनि । काम । सो । अपहि । अधमान ।
 निमल ॥

६० पाठान्तर—दूहा । च्यारि । संदरी । प्रान । पयते । पयते । थान ।
 अदोलित । सो । भइ । होन । वर । भान ॥

६१ पाठान्तर—मीर । सोम । पुव । भजन । चंद । मनो । मनो । सब
 सबम ॥

६२ पाठान्तर—छंद अरिल । अरिल्ल । विरति । अवरि । बालं । हैमवंत ।
 हैमवंत । उरमां । रिविनी । जाम । दीपि । नहारनि । निहारति । काम ॥

ब्रूहा ईद उदंत सरद् उद । मुद आनन्द अनंद ॥

नंदन नंद सु वृ द ब्रज । विहमिय चंद सु चंद ॥

॥ छं० ३२४ ॥ ऋ० ९३ ॥

नव रवनी सम्बर सु नित । स्तुति श्रुति रचि हचि भेद ॥

निरष निमेष विसेष विधि । अमम मरन मन ★ वेद ॥

॥ छं० ३२५ ॥ ऋ० ९४ ॥

वृद्ध नाराच

जिने जिनेक धाम धाम कामनी मनं ।

तिते तिते मृग मुरेम मूत्र भामिनिगनं ॥३२६॥

रते रते धने धने वने वने वनं चरं ।

त्रिभंग वंस प्रवय, श्रवघ्न लगए हूरं ॥३२७॥

मुकट्टयं मयूर चंद्रमीसयं सु लपय ।

गुगोपिका सु गोप बालतालय सु सपय ॥३२८॥

पनीन्नं सु धम्म धाम भामिनी सु भगय ।

अनिईमनी मयं सु पात कंमु लगय ॥३२९॥

सुमीहन्नग कामन्नग कामिनी वृत्तियं ।

अमोह मोह मारगे अलोकनक्कजितियं ॥३३०॥

अपत्ति मुत्तच्छडि स्वामिवाम वाममारगे ।

कहत चद भेदयं अकज्जबप्पु मारगे ॥३३१॥

६३ पाठान्तर—ईद । इद । सरद । मुद । अनद । वृद । ब्रज । वृज । वलिय ॥

६४ पाठान्तर— स्तुति स्ति रचि भेद । स्तुति स्तुति रचि रचि भेद । निरपि । निमेष । विसेष । विधि । वृधि । ★ बूदीवाली मे मन शब्द नहीं है । वेद ।

६५ पाठान्तर—छद वृद्धि नाराच । जिने । जितैक । धाम धाम । काम । कामि । कामिनी । तितै तितै । सुरामुरैमु । सूत्र । रतै-रतै । धने धने । वने वने । वरं । रते रत धने वने वन चर । प्रवय । श्रवघ्न । लगए । मुकट्टयं । मुकट्टयं । मयूर । शीशयं । लपय । गोपिका । गोपव ल । सपय । सुसरवय । पतिन्नत । घृत । धाम । भगयं । अपत्ति । इमनी । पातय । लगय । मोह । मृग । म्रिग । काम मृग । कामृग । कामिनी । वृत्तिय । अमोह । मोह । मारगै । अलोका । तरक । जितियं । अपत्ति । सुत । स्वाम । स्वाम । वाम । वाम । मारगै । मारगे भेदयं । अकज्ज । वपु । सागरे । तमैव । तमैव । ★ बूदीवाली मे स्वाम शब्द नहीं है । तमैव । ईव ।

तमेवधम्म धामयं सुधम्म धामयं सुनं ।
 तमेवकाम कामयं सुकाम★कामनीगनं ॥३३२॥
 तमेव देव देह अंस देह हंस वेदनं ।
 तमेव स्रब्ब श्वब्बयं सु सर्वदा सु भेदनं ॥३३३॥
 तमेव लोक लोक लज्ज भज्जनं सदा हरी ।
 तमेव सुष्ण दुष्णयं सुमाधवं अहंकरी ॥३३४॥
 तमेव दिष्ट इष्ट पुष्ट दुष्टनं प्रतीयते ।
 तमेव सत्ति सत्ति बाद गोपिका महं गते ॥

॥ छं० ३३५ ॥ रू० ९५ ॥

गाथा—इत्थं सु नाम ग्रहनं । नत्थं यत्तेमि कहन कारन यं ॥
 यत्ते पतंग दीवे । हं माधव माधव देवं ॥ छं०३३६ ॥ रू० ९६॥
 कवित्त— मधु माधव वैसाष । रप्पि माधव माधव रित ॥
 बन घन तन बनि रम्य । सोभि मारुत मारुत अति ॥
 बंसी सुर संभय्यो । हय्यो गोपी मु चित्त सुर ॥
 कछु कय्यो कछु कय्यो । गये सातुक सुभाव गुर ॥
 मु मुगति सोह एकंग ग्रहि । अध इषि चपि अजत चली ॥
 एक ही बार सभरि सु सुर । कं चित्त चिता पुत्ती ॥

॥ छं० ३३७ ॥ रू० ९७ ॥

अम । दैह । वेदन । तमेव । श्रब । स्रव । श्रवय । श्रवदा । स्रवदा । अंस । तमेव ।
 लोक । लोक । लज । भजन । भजन । तमेव । मय । दुषय । तमेव । दुष्टय ।
 प्रतीयते । तमेव । तपनिमानि । मति सत्ति । गोपिका । गते ।

इस छंद का कहीं तो वृद्धि नाराच और कहीं लघुनाराच और नाम लिखा
 मिलता है, जैसे कि इसी समय के रूपक ९ और १७ और २४ आदि में है परन्तु
 अभी तक कोई वृद्ध और लघु का भेद सूचक छंद नहीं आया है, जहां आवेगा वहां
 हम उसके विषय में कहेंगे। अभी यह समझ लेना चाहिए कि यहां तक उनमें
 प्रमाणिका नामक छंद का लक्षण घटता है अर्थात् वह आठ अक्षर और बारह
 मात्रा = लगुलगुलगुलगु —का होता है कि जो परस्पर नामान्तर है ॥

६६ पाठान्तर—गाहा । इछ । इछं । नाम । ग्रहनं । नत्थं । पत्तैवि । पत्तं ।
 पंतग दीवं । प्रतंग दीव । देव । वदे ॥

६७ पाठान्तर—कवित । मधु माध वैसाष । मधु माधव वैसष । रिषि ।
 रषि । रिप्ति । तबनि । मोभ । गोपी । मु वित । स चित्त । कछु कछी कछु कछु
 कस्यी सातुक सुभाव गुर । सो । सोह । ग्रहि । इषि । चपि । अजत । वारं ।
 सभरी । चित्त चित्त ॥

गाथा - बाले विभ्रम चरितं । मुक्तं तथ्य वितयं होई ॥

रति कन्हं सम रमनं । छित छितं मुक्ति सा बाले ॥

॥ छं० ३३८ ॥ रू० १८ ॥

दूहा देव देव वसुदेव सुन । नित नित गुन गन पूर ॥

छिन इक नाम लियंत बर । घन अघ उड्डि कपूर ॥

॥ छं० ३३९ ॥ रू० १९ ॥

कवित्त ध्यान मु प्रति प्रति कन्ह । देव देवाधिदेव वर ॥

मधुर नरम अति बेन । मकर कुंडल चंचल गुर ॥

नाचत चित्त त्रिभंग । बंस बंसीधर राजै ॥

अति उतंग (माया ★) बीभंग । नाम लेयंत मुराजै ॥

देवत्त देव देवाधि वर । नीत न मानन भजि मु वर ॥

कहियंत गोप गोपी मु वर । विधि विधान निरमान नर ॥

॥ छं० ३४० ॥ रू० १०० ॥

दूहा अरु लोक बज्जन विषम । गन गंधर्व विमान ॥

मुर पति मति भूल्यौ रहमि । राम रचित व्रज कांन ॥

॥ छं० ३४१ ॥ रू० १०१ ॥

बोटक - तनये तनये तनये मुरय । तन युग मृदग धुनि दरयं ॥

उघटें त्रिघटी हरि विक्रमयं । भ्रमरी रम रीति अनुकक्रमयं ॥३४२॥

व्रज बालिन आलिन आलिनय । इक इकनि कन्ह विचं व्रजयं ॥

निज निरंत वितंत कि नमनं । द्विग पाल मिले कोनिगनं ॥३४३॥

पहु यंजुलि अंजु मुरंग बनं । वर वज्जति छद विन धुनिनं ॥

निसि निर्मल चंद मयूपनयं । घन घटिक नूपुर झंभनयं ॥३४४॥

६८ पाठान्तर - गाथा । बाले । अरु । तनय । तनयं । निरय । होट । कन्ह । स्मरमन । बाले ॥

६९ पाठान्तर दूहा । देवदेव । वसुदेव । मुरि । छिनक । नाम । लीयत । बर । अघाकुंडि । उडोय । कपुर ॥

१०० पाठान्तर - कविता । ध्यान । कन्हं । देवदेवाधिदेव । वर । मरम । बेन । बेन । गुर । बंसीधरा (माया ★) अधिक पाठ । विभंग । देवन । देव । देवाधि । वर । मानन । भंजि । वर । कहीयंत । गीर । गीरी । विधानं । निरमानं ॥

१०१ पाठान्तर - दोहा । लोक । बजन । वज्जन । विषम । गंधर्व । गंधर्व । विमानं । मुररि । मति । भूल्यौ । भून्यै । वृत्र ॥

१०२ पाठान्तर - तथेनैतथे मुरयं । ततथंग । अदंग । धुन । धरयं । उघटें । उघटं । विक्रमयं । भ्रमरी । अनुक्रमयं । व्रज । बालिन । इकति । विच । वृजयं । नरतति । नतित् । वरतिक । वतिक । कि । कयं । नमयं । दुगपाल । मिले । मिल ।

घरनीघर न्त्रियत दिद्वरयं । नव नाग कुली कुल सुम्भरियं ॥
 षट् मास निसानिसि नृत्य कियं । तब गोविंद अंतर ध्यान हुयं ॥३४५॥
 सब गोप वधू मिलि हुंढतियं ॥ छं० ३४६ ॥ ह० १०२ ॥

कवित्त— गोपति अंतर (सु ★) ध्यान । भये भ्रम भ्रम उपनिय ॥

विरह वान भय दीन । प्राण छुट्टिय वरतनिय ॥

ज्यौ तर वर बिन पत्त । आस तर वर बन करई ॥

ज्यौ सुद्धि भई मुष बाल । बहुरि चिता नन घरई ॥

सांवरी स्याम मूरति सुबर । अतिस पहुप संमान बर ।

सिर मोरपिच्छ सोभत वमन । तरुन बाल पुछ्छै मुतर ॥

॥ छं० ३४७ ॥ ह० १०३ ॥

कवित्त किष्ण विरह गोपिका । भई व्याकुल सु दिक्कल मन ॥

बर गहबर बन भ्रमै । कै इक गद्दी ग्रिथल तन ॥

बिषम वाय जिम लता । मोरि मारुत झंझोरै ॥

कै चित्र लिषी पुत्तरी । जोरि जोरंत निहोरै ॥

कै पाषान गढि केक मग । भ्रमत माल मुछ्छत फिरिय ॥

कविचंद चवत हरि दरम बिन । दौय कपोतह विछ्छुरिय ॥

॥ छं० ३४८ ॥ ह० १०४ ॥

दिलै । कोतिगयं । भैरतिगयं । कोतिगन । पुह । पजुलि । एजु । दयं । वर । बजन ।
 बज्जत । बिन । बिन । धूनय । धुनय । निशि । निमलि । मधुपनयं । नुपुर ।
 वृत्ति । नृत्यत । निद्वरयं । कुंली । कुल । मुभरियं । सुभरियं । निमानिम ।
 निसानिस । कीयं । कःयं । गोव्यद । गोवीद । ध्यान । हृष । गोप । वधु । तयं ।
 लीयं ।

१०३ पाठान्तर—कवित ॥ गोपी । गोपी । अंतर । सु ★ अधिक पाठ ।
 ध्यान । भयों । भयै । भ्रम भ्रम । भ्रम भ्रम । उपतिय बांम । भयं । दान । प्राण ।
 छुट्टीय । छुट्टिय । छुट्टीय । वरतनिय । जो । बिन । पत्र । बिन । बिन । जो ।
 सुधि । भइ । चिता । एरइ । स्यावरी । स्यांम । मूरति । रुबर । पिछ मोभन ।
 सहन । पछै । पुछै । पुछै ॥

१०४ पाठान्तर—विरह । गोपिका । भई व्याकुलबिकल मन । बन गहबर
 बन भ्रमै । के । गदिय । रदी । ग्रथलं । मोरि । झंझोरै । झे चित्र छिपी । फुत्तरी ।
 जोरि । जोरितं । निहोरै । कं । के । पषानं । कंक । भ्रमत । बाल । पुछत ।
 फिरिय । बिनु । दौय । कपोतिक । विछुरिय । विछुरीय ॥

स्याम रंग पिष्पहिन । घटा घनघोर गरज्जत ॥
कोइल मधुकर वयन । श्रवन संभरै बरज्जत ॥
कालिंदी न्हावट्टि न । नयन अजै न म्रगंमद ॥
कुचा अग्र परमै न । नील दल कवल तारि मद ॥
पर पीर अहीर न जानि मन । ब्रज बनिना मिलि कहत सब ॥
जिहि मग कन्ह बन संचरिय । तिहि मग जल पीवहि न अब ॥
॥ छ० ३४९ ॥ रू० १०५ ॥

दूहा -सुन न दुष्प अनि बाल मसि । भयो पुरन बिन मंत ॥
निम मुष घटि दुष्पह दरम । भोर भोर उडि जन ॥
॥ छ० ३५० ॥ रू० १०६ ॥

भयो मु उडगन गात वर । पूरन ममिय अकास ॥
मुवर बाल बड्ढघोनि दुष । मिधु उलट्ढघो भाम ॥
॥ छ० ३५१ ॥ रू० १०७ ॥

गाथा राधापतीतमार । राधा भई भुजगय बैन ॥
राधावल्लभ वंमी । बरनं षत मु भोजनं जात ॥
कवित्त राम बाल हरि बाल । बाल आई न बाल हरि ॥
सघन कुज घन कुमुम । सज्जि मुष मैन चैन करि ॥
कंध चढत ब्रषभान । धाय मुक्की तिन बेरह ॥
कोइ लभै नह सुद्धि । बिरह मभन्यौ घने रह ॥
पावै न बाल पुछ्छन मुब्रछ । दै देवाधि देवाधि कह ॥
आरति चरित्र बहु कन्ह कौ । को जपन जानन कलह ॥
॥ छ० ३५२ ॥ रू० १०९ ॥

१०५ पाठान्तर—स्याम । पिष्पहिन । घोर । कोइलय । बरज्जत । कालिंदी ।
परसे । भील । तौरि । जानि । चनिना । मग । कन्ह । बन । ब्रज ।

★ यह रूपक म० १६४७ और १७५० की पुस्तको मे नही है ॥

१०६ पाठान्तर—दोहा । सुन । दुष । पूरन । निम मुषट्टि दुषह दरस ।
मरस । ज्यौ भोर भोर उडि जन ॥

१०७ पाठान्तर—भयो । वर । ममिय । ममिय । मुवर । बड्ढघोनि ।
उलट्ढघो ॥

१०८ पाठान्तर—राधापतिन । राधापतिन । राधापतीत । भार । बैनी ।
बैनी । बैन । राधावल्लभ । वंमी । बरन । षत । भोजन । जानं ॥

१०९ पाठान्तर—कविता । आर्य । आइय । वज्रि । मैन । चैन । बैन । कं ।
ब्रषभान । धीय । मुक्की । मुक्की । बेरह । कोइ । लभै । सुधे । बिरह । घनेरह ।
पावै । पुछ्छन । पुछ्छनि । ब्रिछ । दइ । दैवाधि । आरत । कन्ह । कौ । कौ ॥

रूहा— बग्ग मग्ग गोपिक गमन । कंध अरोहन मग्ग ॥

द्रुम द्रुम बल्लिन अलिन अलि । हरि पुच्छन्न अछि लग्ग ॥

॥ छं० ३५४ ॥ ६० ११० ॥

मोत्तीदाम सुन् कैरी कदंम कयथ्थ करील । कमोदनि कुदह केतकि बील ॥
 कनैर कसोंदिय कैबर कोह । करों दिन कान्ह कहां कहु मोह ॥३५५॥
 सुनी मुनि सोक समीर सुगंध । सकुंजन कुज निरपषत्त रंध ॥
 कहूं बल बंधि बिजोरनि जानि । कहू वट हस दिषावत्त आनि ॥३५६॥
 सुनौ तुम चंप कदंम चकोर । कहौ कहूं स्याम सुने षग मोर ॥
 लही ललिता बन लोचन चंग । कहौ कहूं कान्ह जुहे तुम सग ॥३५७॥
 हूंमान कियौ उन मानह भंग । सह्यौ नहि ग्रब्ब तज्यौ हम संग ॥
 दुरे अब ही तजि कुंजनमांह । गए कर ही कर छाडहि बाह ॥३५८॥
 चली मिल पंछिनि पुच्छत्त भीर । कुरं कुर रंगिन कोकिल कीर ॥
 परी धर मुच्छिछि गहै कर एक । तिनं लगि सास उड्यौ उडि केक ॥३५९॥
 चले असु धार तरंगिनि बाढि । गहे दह सासनि प्रानन काढि ॥
 मगें डग चालि गिरै धर घाइ । गहै कर साहसि लेइ उठाइ ॥३६०॥
 गई जमुना जमुजानिन तीर करै सब कामिन स्याम मरीर ॥
 चु पूतनि रूप धरै तन आप । ग्रहै द्रह कन्हर कालिय साप ॥३६१॥
 धरै कर पव्वय गोप सहाय । परै जल धार तउत्त निहाय ॥
 धरै त्रिय ध्यान न लग्गइ नैन । परै पतिपत्त मुनै सुन बैन ॥३६२॥
 कहंत क्रिपा निधि भक्त सहाय । भए तब आनि प्रगट्ट दिषाय ॥
 कियौ फिरि रास जु मुंदर स्यामाबिचं बिच कन्ह बिचं बिचं वाप्रा ॥३६३॥
 भए श्रम अंग कलिद्वय तीर । छिरवकत्त स्याम गहै भुज भीर ॥

११० पाठान्तर— दोहा । बग्ग मग्गोपिय । मनह । अरोहन । मग । मगि ।
 हुं । बैलिन । बैलिन । मिलि । पुछन । पूछन । लग्ग ॥

१११ पाठान्तर— छंद मोत्तीदाम । सुनि । कोरि । कदंम । कयथ । कमोदनि ।
 केतकि । कसोंदिय । कसोटीय । कैबर । कोह । कमोदनि । कान्ह । कहा । कहा ।
 कहौ । मोह । सुनि सुनि । मुनि मुनि । सोक । नरपत्त । निरपत्त । कहूं । बंध ।
 बिजोरनि । जानि । कहूं । दिषावहु । आनि । सुनौ । कदम । चकोर । कहौ । कहौ ।
 स्याम । सनै । मोर । बन । लोचन । कह । कहू । कान्ह । है । मै । मै । बान ।
 कीयो । ग्रब । दुई । तिजि । माहि । छडि । छाडि । के । के । बाहि । बाह । चलि ।
 मिलि । पुछत्त । कुरंग । कुरनि । कोकिल । मुछि । गहे । गहै । केक । चली ।
 असुधार । चढि । गहै । दहसनि । प्रानन । काटि । चढि । डनी डग । मगें मग ।
 गिरै । गहै । गहै । साहस लेइ । लेई । गइ । यमुना । यमुनान । यमुनानि । कै ।

करी जल केलि चरित्त सुजानि । लियौ दधि दूध त्रियानि सुं दान ॥३६४॥
युं राम विलाम अराम प्रमून । अनंदिय अंमर अंबुज सून ॥

॥ छं० ३६५ ॥ ह० १११ ॥

दूहा कहिरु बाल पत्तिय जमुन । रमन केलि जल बाल ॥

मानहु मदन महीप गुन । कट्टन फदन काल ॥ छं० ३६६ ॥ ह० ११२ ॥

पद्धरी क्रीडन जमुन सुदरि विसाल । प्रापन पट्ट सन वरप बाल ॥

पौगंड छडि किस्मोर पीय । जोति सु सिसर अति तोर जीय ॥३६७॥

अप्पो सु अरघ रिन पानि जोरि । मनु प्रफुलि कुमुद ममि चित्त चोरि ॥

तजि बाल वस्त्र क्रीडन वारि । प्रति धरे अंबरह मिलन धारि ॥३६८॥

आधिकक बचन व्रत रपन वाम । हरि वगन वदम चदि कोटि काम ॥

तजि बाल वस्त्र भावरि सु देम । निकरीय लपट वडवान लेम ॥३६९॥

नव किमल धनुक जनु कनक बलि । निरि चलिय जमुन जनु कदमकेलि ॥

लटकै सु बाल बैनिय सुरग । मोभे मु दुत्ति विच जल तरंग ॥३७०॥

जानै कि सदन नृप रहमि जोर । जवनिका ओट नचचं चकोर ॥

मानो कि दुत्ति द्रपनह व्योम । निचचोल ग्याम मधि ह्मिय सोम ॥३७१॥

मुष केम पास विटिय विमाल । बघ्यो कि सोम मोभा सिवाल ॥

गहि पानि वारि रवि अरघ देहि । उपमा चंद वरनैति नेहि ॥३७२॥

कें । करे । कामनि । ग्याम । पूतन । ज पुता । अहे । धरे । यव्य । गोप ।
तडित । धरे । अन । ध्यान । लगहि । लगेद । लागेड । नेन । परे । पितपता ।
सुने । मुत । बेन । कृपातिथी । भक्ति । दर्द । अन । प्ररट रिपाड । रयाम ।
बिचि । वाम । भई । कलद्रीय । छिरवत । बैलि । चरित । जानि । लियो । पै ।
दूद । पै दान । यो । यौ । अनदिय । अमर ।

यह मोतीदाम नामक छंद चर लगुल का होता है उसमें बारह वर्ण और सोलह मात्रा होती है ।

११२ पाठान्तर दोह । बालि बाल । पतिय । यमुन । बल । मानहुं ।
ग्येनहु । दमन । कटन । कटना ॥

११३ पाठान्तर छंद । पद्धरी । ब्राडत यमुन । सुदरि । प्रापत । सत षट ।
सत षट्ट । वरप । बाल । किमोर । विमोर । जीनी । जु । ममिर । नीरि । अरिन
घरि । पानि । जोरि । मन । मिसि । चित । चोरि । धरे । धरे । अबर । मिलैत ।
मिलित । धार । अधिक । ट्टनि । वृति । वाम । वमन । चहि । कोट्टि । काम ।
बाल । भावरि । बैस । निकरिय । पट्ट । लेम । कीमल । कनकं । बैलि । बलिय ।
कंदम । कलि । लटकै । लटके । बाल । बैनिय । सोहै । सोनै दुत्ति । विच । बिचि ।
जानै । रहस । जोर । जवनका । उट । उद । नचं चकोर मानो । मानो । दुत्ति ॥

सैसवमु पानि जुब्बन सु अर्घ । मनु देहि मनमथ भिलन स्वर्ग ॥
 जल कनक बुद मुष पर विसाल । पुज्यौ कि कंद मनो मुनिमाल ॥३७३॥
 कुंकुम सु नीर छटि लग्यौ चारु । नग रतन धरे मनु हेम थारु ॥
 उर बीच रोमराजीव रेप । गुरु राह मेर मधि चलयौ भेष ॥
 ॥ छं० ३१४ ॥ ह० ११३ ॥

दूहा जहां पत्तवर कृष्ण गुरु । चर्म तमाल हरि वस्त्र ॥
 मानहु सुंदरि अंग वर । करत मुमित्त पवित्र ॥ छं० ३७५ ॥ ह० ११४ ॥
 कवित्त पीत वस्त्र सु निकंत । जलालंबन तन दुति दुरि ॥
 दीपक करि पुंडरिक । द्विग लगि गुंज मुत्ति हरि ॥
 क्रिसन त्रिभगी तन्न । धन्यौ किस्सोरनि रूपं ॥
 दिष्टि वाम भौ कोटि । सोह माया तन ओपं ॥
 आनंद कंद जुग चंद वद । वंदावन वासी विहर ॥
 दै वसन रमन सुट्टनन करि । देहि गारि निय नंद पर ॥
 ॥ छं० ३७६ ॥ ह० ११५ ॥

कुंडलिया धुनि वंसी मुनि मृनि श्रवन । चक चक्रित चित पाहि ॥
 मन माया की पुत्तरी । रही स्वामि तन चाहि ॥
 रही स्वामि तन चाहि । मदन दावानल बढ्ढी ॥
 मीन तन तन फिरै । अवल व्याकुल भइ गढ्ढी ॥
 चित जल रजि पग परै । जलमायी गु मरूप मुनि ॥
 निगम प्रमोद मृणाल (हरि★) । मो भइ वंसी वैन धनि ॥
 ॥ छं० ३७७ ॥ ह० ११६ ॥

इपनह । व्याम । निचोठ । निचोठ । स्याम । हलिय । मोम । कैम । विटीय ।
 त्रिमाल । विड्यो । वड्यो । मीन । गो मा । त्रिमाल । पानि । अरघ । देहि । दौहि ।
 औपमा । उरमा । वरनोंन । वरनैनि । नैहि नेह । सैसवगु । पानि । जुवन । अरघ ।
 अन्ये । मनो । देहि । मिलन । स्वरग । जग कनक । बुद । पुज्यौ । मनो । मनो ।
 मुक्तिमल । कुंकुम । कुंकुम । छुट्यौ यु चारु । रत । धरै । मनो । हेम । उर बीच ।
 लडीम । रोमराजीव । रैव । मेर । भेष ॥

११४ पाठान्तर - दौहा । तहां । पत्तवर । चटि । मानहुं । सुंदर । वरत ।
 मुमित्त । पवित्र ॥

११५ पाठान्तर - कवित्त । कवित्तः । जलालंबन । करी । पुंडरीक । द्विगा-
 मुत्ति । हरिः । मुत्ति हरि । क्रिमल । तनं । किमोकिरनि । किमोरनि । दिष्टि ।
 वाम । कोटिकी । सोह । ओपं उरं । वद । विहर । नृत्तनिम । देहि । देहि ॥

११६ पाठान्तर - कुंडलिया । वंसी चकं । पाह । पाय । मनि कुत्तरी ।
 कुत्तरी । स्वामि । रही । निरनन । फिरै । अवल । भई । गढ्ढी । लन ।

दूहा--बरषि कदम्म मु वन्न चट्टि । लज्जित बहु वर बाल ॥

हृथ्य जोरि मम मो भई । प्रभु बुल्ले वल्लपाल ॥

॥ छं० ३७८ ॥ रू० ११७ ॥

दूहा चट्टि कदम्म बुल्ले मु प्रभु । मधु रिन मिण्टत वानि ॥

वचि वमन कर कन्ह वर । लेहु न मुदरि आनि ॥

॥ छं० ३७९ ॥ रू० ११८ ॥

ब्रजपति ब्रजलालनि कही । रमं रमन इक काल ॥

काम अरथ करि मुदरी । धेनन मुक्कं बाल ॥

॥ छं० ३८० ॥ रू० ११९ ॥

दूहा थुति पानी जुग जोरि करि । फिर लगी चिहुँ पति ॥

मानो गहे वधनह । सोमहि पारस कनि ॥

॥ छं० ३८१ ॥ रू० १२० ॥

दूहा इह क लिदी कदम चट्टि । लैन चीर मव नारि ॥

प्रभु बैठ पातन पतन । मानहु ग्रह पति मारि ॥

॥ छं० ३८२ ॥ रू० १२१ ॥

दूहा तट कीले पीले वमन । रतन छतत छँटि छित्त ॥

इल अपछर मग्गर रवन । भई भ्रम्म मन मित्त ॥

॥ छं० ३८३ ॥ रू० १२२ ॥

कवित्त अरध विव जल अरध । नहिन वस्त्र छिति कारिय ॥

मनो पभ अहि क्रील । किद्ध छिनन वन धारिय ॥

लज्जित । परें । जल मु ईन बरः मुने । प्रमोद निान । मृ । न । * अधिक पाठ ।

सो । बनी । वैनि । वैन ॥

११७ पाठान्तर --रीडा । बरषि । समोद । धवन । लज्जित । वर । इय ।
जोरि । सो । भइ । बुल्लो । भूके । मूके । छपाल । वल्लपाल ॥

११८ पाठान्तर --मुठे । म । मय । वानि । वानि । ववन । कन्ह । वर ।
लेहु । आनि ॥

११९ पाठान्तर ब्रजलालनि रमै । काम । कगी मुक्कं । मुक्कं । बाल ॥

१२० पाठान्तर --थुति । पानि । जुग । जोरे । कर । करि । लगी । विहु ।
मनो । मानो । राहु । जु । सोम कि । सोम कि । पारस पति ॥

१२१ पाठान्तर --कलिदी । कालिदी । कदम । लैन । बैठी । पातन ।
पवन । मानहु ॥

१२२ पाठान्तर --लीडे । पीडे । छटि । छित्त । मुपन । भईय । भून । मित्त ॥

कितक जोरि कर जुग । कितक नग्नी तन तारुन ॥
कितक कूह मुहु कीन । कितक लन म थ सु वारुन ॥
तरु पत्त गत्त निय वमन करि । सुनि ब्रह्मा सकर हस्यौ ॥
तिन टेर वेर बसी बजिय । राम क्रील माधव रस्यौ ॥

॥ छ० ३८४ ॥ रू० १२३ ॥

कवित्त तरु उप्पर हरि चढ्यौ । सबै सधियन मन सध्यौ ॥
कंम त्राम नप पन्यौ । इन्द्र आसन मन बंध्यौ ॥
ब्रह्मा मन उल्हस्यौ । रुद्र रुद्रामन रष्यौ ॥
समि कालह पल भन्यौ । दैन दारुन वल दिप्यौ ।
सुर सज्जि बज्जि गोपह सरस । अति आकर्ष नवेस सुर ॥
रत्ति रूप भद् तरु अद अली । मनि दामिनि गोपिय सु हर ॥

॥ छ० ३८५ ॥ रू० १२४ ॥

दूहा - चढ्यौ राह कैलास पर । फिरि राका चिहुँ चक्क ॥
मुरत सध्य अहि परत तव । चढि कदम रस रक्क ॥

॥ छ० ३८६ ॥ रू० १२५ ॥

दूहा - फिरि गोपीं चिहुँ मग हरि । करन रास रम रंग ॥
इक इक कन्ह अनंग दल । बिच बिच सुंदरि अंग ॥

॥ छ० ३८७ ॥ रू० १२६ ॥

कवित्त - अप्पि वस्त्र कहि रमन । रास मंडल अधिकारिय ॥
एक एक बिच गोप । कृष्ण एकह बिच्चारिय ॥
धुति पत्ति वर वंध । मंत्र चावट्टिमि जोरहि ॥
मनो इक्क घन मद्ध । बिज्ज कुंडलि मकोरहि ॥

१२३ पाठान्तर - कवित्त । छित्त । कारीय । मनो । छित्तन । वृत्त । घारीय ।
जोरि । युग । जुग । तारुन । मनमथ । यत । गत । शकरि । तिन बेर टेर । बसि ।
बजिय । भाव ॥

१२४ पाठान्तर—तर । ऊपर । हर । मवे । सधियन । इद्र । इल्हस्यौ ।
उलस्यौ । शशि । सभ्यौ । दैत । मजि । बजि । आवरणवैस । भद । अलि । मन ।
दामिन । सु । हरि ॥

१२५ पाठान्तर—दोहा । रोहु । विहु । चहु । चक । सथ । परन । नव ।
रकि । रक्कि । रक ।

१२६ पाठान्तर—गोपी । चिहु । मग । हरी । करत । बिचि । विचि ।
सुबरि ॥

१२७ पाठान्तर—कविता । अधिकारीय । बिचि । गोप । विचारीय । धुति ।

बर फिरति सुबर दंपति दिपति । दंपति कुंडलि मंडि करि ॥
मुझ्झै न अंग बिय अंघि कै । ठोर नही इक अंघि भरि ॥

॥ छं० ३८८ ॥ रू० १२७ ॥

दूहा पावस रितु विन्तीत हुआ । सरद संपत्ती आइ ॥
दिन आयी मुंदरि रमन । सुवच सुवंसी गाइ ॥

॥ छं० ३८९ ॥ रू० १२८ ॥

दूहा सरद राति मालति मघन । फूलि रही वन वाम ॥
दीपक माला काम की । हरि भय मुक्किय त्राम ॥

॥ छं० ३९० ॥ रू० १२९ ॥

पद्धरी उगिगय मयक कदर्प रूप । दूरि गयी नम विन किति भूप ॥
द्रुम द्रुमति भार फुलि लता साज । जनु भार नमि गुर गज लाज ॥३९१॥
उज्जाम बंधी धवलन छेह । मुझ्झै न हम ह्मनिय देह ॥
कुरलन मनत धावै न पाइ । अप अप्प तेज सहजै ममाइ ॥
पावै न पुफु अलि इहै वाम । ज्यो अंधत्रीय चाहत भास ॥
अप धरिय वस्त्र पाईन जाइ । दृढन इला पावै मु पाइ ॥
नव बधू मजन भूषन संवारि । ससि बढी किरन अति तेज तारि ॥
अगतिहा भई उर मुनि माल । भुल्लै चकोर समि नैन धाल ॥३९४॥
कुरलंत हंस चून लहिन मार । मुझ्झै न नैन गहरत माल★ ॥
नाछिन्न छिपिग ससि क्रन प्रताप । उज्जास आप घन मार चाप ॥३९५॥
मुझ्झै न दत गज इन्द्र धार । कामिन कटाछ बल बुद्धि चार ॥
नागिनी भद्र गुन गरुअ अंग । दिष्यै न पत्ति मन भश्य पंग ॥३९६॥
गजराज इंद्र दिष्यै न तथ्य । मीडंत मण्यिका जेम हृथ्य ॥
भए गुनित गाव अनि सेन चार । नव बधू मुष्य इणै कुमार ॥३९७॥

पति । चावदिसि । जोराहि । मनो । इक । घन । मथि । धि । विजहि । कुंडल ।
सकोरहि । बर । फिरन । मुझ्झै । कै । ठोर । वौरि । नही । अप । करि ॥

१२८ पाठान्तर दोहा । अन्तु । रित । वितीत । भय । आय । आप्पी ।
सुवच । गाय ॥

१२९ पाठान्तर फुलि । फुल्लि । वन वाम । हर । म्किय ॥

१३० पाठान्तर - रद । गगी । तम । भूप । गुर । उज्जाम । बंधी । छेह ।
मुझ्झै । हंसह । हंसिनीय । ह्मनी । कुरलंत । धावै । पाय । अप्प अप्प । अप अप ।
तैज । ममाय । पुफु । लहै । ज्यो । ज्यो । अंधत्रीय । धरीय । वस्तु । जाय । बुद्धत ।
पाय । बंधु । बधू । भूषन । संवार । संवारि । बढि । किराने । तैज । मृगत्रिष्ण ।
मृगवृष्ण । भइ । मुत्ति । मुत्ति । भजै । भुजै । चकोर । नैन । कुरलत । कुरलंत ।

बाला प्रताप मुष सुभत बार । सो भई गंग धारान धार ॥

हारीति रास करि आस पूर । मन बंछि त्रियन दीनौ हजूर ★ ॥

॥ छं० ३९८ ॥ रू० १३० ॥

दूहा — सो बंसी बज्जी बिषम । सौरस बंसी पाय ॥

ब्रह्मादिक मनकादि मिब । रस तन बज्जै गाय ॥

॥ छं० ३९९ ॥ रू० १३१ ॥

मोतीदाम — मुने सुर बाल विलासत सह । तजे ग्रिह काम पियार समह ॥

परे घन भेद सु वच्च प्रमान । चितै कुइ आन कहै कुइ आन ॥ ४०० ॥

चले मनु ते त्रिय भुल्लिय देह । सती मत जानि चले तव नेह ॥

छिनं छिन अंगन तापन जाय । मनो सब की तडिता चमकाय ॥ ४०१ ॥

भयो तन स्वेद प्रकंपि जंभाति । ठगी मनु मूरि ठगोरि मिषाति ॥

तजे ग्रह काम मनौ प्रसि काल । रही विरहानल के बसि बाल ॥

॥ छं० ४०२ ॥ रू० १३२ ॥

लहिा । मुनै । नैत । गहरन । ★ मं० १७७० में "मुञ्जं न दंत गहृत माल" पाठ है । नापिन । तन । उजान । आनि । वा । मुनै । मुनै । कामिनि । कामिन । कडाछि । वृषि । विवर । तानीरी । गुरुअ । दिपै । पति । भईय । इंद । दिपै । तय । मयिका । जैत । हय । भइ । गुनीत । स्याह । सैन । वधु । इणै । मुख । ईवै । प्रनाम । बार । मो । भइ । राम । पुरः पूर । बंछिय । हजूर ॥

★ इस "हजूर" शब्द को यहां कवि ने गोपियों के परम प्राण बल्लभ प्रेक्ष्य श्रीकृष्ण के लिये प्रयोग किया है । उस को सुमन्मानी भाषा के पक्षपाती लोग अरबी "हजूर" शब्द नामुंश होना अनुमान करेगे किन्तु मैं उसको संस्कृत "सजुष्" से बना हुआ हिन्दी भाषा का शब्द मानता हूं । इस के संस्कृत-योनि-वाला होने के विषय में मैं इस दमम समय की उपसंहारिणी टिप्पण में अपनी सविस्तर और सनक सस्मने प्रकृत कबंगा अर्थात् पाठक इस के विषय में अधिक वहां अवलोकन करै ॥

१३१ पाठान्तर — शोहा । मो । बंसी । बज्जी मोरय । पाई । सिबं । रमनन । बज्जै । पाई ॥

१३२ पाठान्तर — मोतीदाम । मुने । विमालन । तजै । गृह । काम समब परै । भेद । मववन । प्रमान । चिनै । कोई । कोई । कोई आन । कीइ । कोइ । आन । चले । मनौ । त्रियन । भूजीय । भूजीय । देह । जानि । चैक । नैह । छिन । छिन । आन अंगन । वाइ । प्रप्रहाई । स्वेद । जंभाति ठगी । मनो । मनौ । मूर । मूर । ठगीरी । विषाति । गृह । काम । मनौ । मनो । तौ । कं । बसि ॥

दूहा कै स्यामा किस्सौर कै । कै पौगड प्रमान ॥

रमै रसिक रस रमन को । चलि बमी धुनि_कान ॥

॥ छं० ४०३ ॥ सू० १३३ ॥

दूहा सुत पति गुरजन बचि वर । तजि ग्रिह काम प्रमान ॥

धुनि बंमी सभरि श्रवन । चलि मुंदरि तजि प्राण ॥

॥ छं० ४०४ ॥ सू० १३४ ॥

दूहा सजि सिगार नग नग उदित । मुदि मऊष समि हीन ॥

मुदिन दीप राका दिवम । काम कामना कीन ॥

॥ छं० ४०५ ॥ सू० १३५ ॥

दूहा चद दरम गोपी बदन । गयी समीप मु मज्ज ॥

धरक हीन तन छीन भी । कला पौडमी भज्ज ★ ॥

॥ छं० ४०६ ॥ सू० १३६ ॥

चौपाई फिरि फिरि चंद चद विच्चारै । अंन गैन उादम दल हारै ॥

धा० बडि पच दिमा फिरि आयौ । बवि म्प तौ सामित्त बहायौ ॥

॥ छं० ४०७ ॥ सू० १३७ ॥

कवित्त नगनि जोत उद्योत । बहूत मोहै बालं तन ॥

त्रिद भ्रगमद रज्जि । तिलक चिलकै भाल घन ॥

अंग अंग की कृति । बाल समि जोति प्रगामी ॥

कामी भ्रग मारने । तिलक कैमार हगामी ॥

जग जोति जुवति जौवन बनिय । कनिय ओर कामिनि कहिय ॥

ब्रजनाथ साथ गोपी मिलिय । राग रग बसी लहिय ॥

॥ छं० ४०८ ॥ सू० १३८ ॥

१३३ पाठान्तर दोहा । के । स्याम । किमोर । किमोर । के । के । पगाउ ।
पेगाऊ । प्रनाम । की । की । बमी । कान ॥

१३४ पाठान्तर - बवि । वर । गृह । प्रमान । बमी । श्रवन । मुदर । गान ॥

१३५ पाठान्तर तजि । सिगार । मयष । शशि । मुदित । काम ॥

१३६ पाठान्तर दरमि । मज्जि । भज्जि । सजि भजि ॥

★ यह रूपक बःावली पुस्तक मे नही है ।

१३७ पाठान्तर अरिल । अरिल्ल । चद वद । विचारै । अंन । गैन । अंन ।
गैन । उास । हारे बडि । सामित्त । बहायौ ॥

१३८ पाठान्तर - कवित्त । कवित्तः । योति । जोति । उद्योत । मोहै । बाल-
पन । बिन । बिन । मृग । मृगद । रज्जि । तलक । तालकि । बाल मजि । जोति ।
प्रगामी । प्रगामी । कामि । मारने । हगाम । जोति । जुवति । जौवन । बनिक ।
बौर । ब्रजनाथ । गोपी । राम । बमी । बंमीय ॥

चन्द्रायना

कमलति चंपत चारु, फूल सब बिद्धि फल ।
सरद रित्त ससि सीस, मरुत्त्रिबद्धचल ॥
भमर टोल झंकार, उडगन छिप्प छिप ।
ललित त्रीभंगी मद्धि, सबै लहि दीप अप ॥

॥ छं० ४०९ ॥ रू० १३९ ॥

जगतपत्ति रतिपत्ति प्रगट्टय मध्य मन ।
गोपि असोकति कंगुर कंचन पति जन ॥
बाल मष्प कविचंद कि कंगुर चंद बनि ।
कन्ह बिराजत बीच सुमेर मुचंद तन ॥

॥ छं० ४१० ॥ रू० १४० ॥

दूहा - दै कपाट रुक्की अबल । भइ बिहवल उडि हंस ॥
सहिय गोपि सुंदरि सकल । रस लुट्टे बर बंस ॥

॥ छं० ४११ ॥ रू० १४१ ॥

कवित्त जदपि मु पति धन हीन । दीन जीनेरु रोग वसि ॥
बिद्ध कुष्ठ विन रूप । हीन गुन्नेरु काम नमि ॥
गुंगा उध्र सुर श्रवन । विकल मनि तामम धारी ॥
ब्रह्म हत्यानि समूह । पुरुष गुन तदपि विचारी ॥
उडगन समूह तप्पत जदपि । तदपि मुक्कि नन पति रहि ॥
जं जोग भोग पति संग वर । त्रियन धम उर गाह रहि ॥

॥ छं० ४१२ ॥ रू० १४२ ॥

१३६ पाठान्तर-चन्द्रायना । चन्द्रायणाः । चारु । फुल । सबै । बिधि । रित्त ।
रित्त । मरुत्त । विधि । चल । भवर । टोल । उडगन । छिप । त्रीभंगी । मधि ।
सबै । सबै । अपा ॥ जो आज कल पबंगम नाम से प्रसिद्ध है वह यह चंद्रायना २१
मात्र ५ ताल और ११+१० यति का छंद है ॥

१४० पाठान्तर—जगतपति । रतिपति । प्रगट्टय । गोपी । गोपी । यमोकति ।
बाल । बनि । कन्ह । बिराजत । बीच । मेरु । मेरु । तनि ॥

१४१ पाठान्तर—दूहा । दै कपाट । दै किगट । रुक्किय । अबल । भई ।
बिहवल । मैपि । गोप । लुट्टे । लुट्टे । बर । बंस ॥

१४२ पाठान्तर—कवित्त । कवित्तः । यद्यपि मुन पति धन हीन । जुनेरु ।
रोग । वंसि । वनि । कुष्ठ । वृथ । कुष्ठ । विन । गुण मठि । गुन सठ । काम ।
चिकल । समुह । गुण । विचारी । समुह । तदपि । मुकि । पति भोग । भाग । बर ।
धूम । धूम ॥

कवित्त—पति मुक्कै सुनि पत्ति । बाल मुक्कै लछिछय बर ॥
पति हित जो त्रिय क्लित्त । मान मुक्कै मु मोह धर ॥
जीव हिन सुष हित्त । देपि जीति धर मुक्कै ॥
लाज जीति गुरजन (सम्★) ह । मोह माया चित्त रुक्कै ॥
सा अद्ध काम कह कह करै । ध्रंम अध्रंमन दिष्पई ॥
चाहंत सब्ब बंसीय मुर । अंध काम नन बिष्पई ॥

॥ छं० ४१३ ॥ ह० १४३ ॥

चौपाई जिन आराध्यौ काम विनासं । गली गली वामा सुध नामं ॥
बनी रमंत रूप रम रंग । अकुरि वर केली मद नगं ॥

॥ छं० ४१४ ॥ ह० १४४ ॥

बृद्ध नाराज

रमंत केलि कन्हवाम चंपियं छतीमयं ।
बिरीज कन्ह हथवाम लिज्जियं दुतीजयं ॥
चमकिता तडित्त मेपमद्धि ज ति ठाहरी ।
दुति उप्पम चंद की कलं कलंकताहरी ॥
विराज प्रीत पीत वस्त्र दपती सु नैन यो ।
तडित्त मेपमध्य मौज इंद्रकी धनुन्नयो ।

॥ छं० ४१५ ॥ ह० १४५ ॥

गाथा ग्रन्थ आदि लघु प्रेम । जं जं चित्तम्मि प्रेम अनुमरिय ॥
आपानं ऊ महितं । मानं कीअ हित्त ऊ पुरुष ॥

॥ छं० ४१६ ॥ ह० १४६ ॥

१४३ पाठान्तर मुक्कै । पति । मुक्कै । लछिय । जी । त्रिय । मान । मुक्कै ।
स । मोह । हिन । मृष । हिन । जिती । मुक्कै । अधिक पाठ । मुह । मोह । रुक्कै ।
ध्रम । अध्रम । दिषइ । दिषई । सब । बंसीय । काम । विषई । विषइ ॥

१४४ पाठान्तर अरिण । छद । काम । विनाम । विणास । गलिय । वासं ।
बनि । बनि । रंमत । रगं । रगै । अकुर । वर । कैलि । मदमगै । मगै ॥

१४५ पाठान्तर -- छद वृद्धनाराजः । कैलि । कन्ह । वाम । चरीय । चरीयं ।
चंपीयं । बी । बि । रीयु । कुन्ह । हथ । वाम । लिज्जियं । लीज्जिय । हुनी । चमकिता ।
तडित्त । तडित्त । मेप । मधि । जीति । विराजि प्रीति । प्रीत । प्रीन । दपानि ।
नैन । यो । यो । तडित्त । मेप । मधि । कौ । धनु । नयो । नयो ।

† इस शब्द का प्रयोग विद्विन करता है कि कवि संस्कृत पदा था और भागवत के "जगौ कलं वाम दुशा मनोहरम्" स्क० १० । १९ । ३ के अर्थ और भाव में उसने उसे यहाँ प्रयोग किया है ।

दूहा - रही रही हों कंह ढिग । चल्ली चलन नह जाइ ॥
मो इच्छो प्रिय प्रेम बर । लै चलि कंध चढ़ाइ ॥

॥ छं० ४१७ ॥ रू० १४७ ॥

गाथा बाला रत्न सुजानं । ता चित्तं करन लोपनं नथी ॥

रत्तं बाल सुजानं । अप्पानं दाहए अग्गी ॥ छं० ४१८ ॥ रू० १४८ ॥

बण्णे गुन गाहानं । जं गुनप्पि मांइ बंधए चित्तं ॥

हीन सूर कमोढ । औगुनं जुता इकं ताई ॥ छं० ४१९ ॥ रू० १४९ ॥

गाथा दुद्धं सक्कर जुत्तं । विनै सहितं तूरुव साधिकं ॥

पंथं निगम मु धंमं । ते बाला देव मुकंदं ॥ छं० ४२० ॥ रू० १५० ॥

दूहा - चित्त स्वामि तन वाम तन । जड भौ मन गुन जडु ॥

गोबरधनधारी सुमन । अरु गोबरधन चड्डु ॥

॥ छं० ४२१ ॥ रू० १५१ ॥

१४६ पाठान्तर--गाह । प्रव । प्रव । लट्ट । चित्तमि । प्रेम । अनुमरीयं ।
अप्पान । अप्पानं । उं । उ । मान । हिन । उ । उं ।

इस रूपक के छंद के विषय में सर्वत्र यह ध्यान में रखना चाहिए कि कहीं तो इस की गाथा और कहीं गाथा नाम से वर्णन किया है । वास्तव में यह छंद वह कहाता है कि जिस को मस्कृत में आर्या कहते हैं । इस के अनेक भेद हैं किन्तु विशेष करके मात्रिक छंद आठ ताल और $१२ + १७ = २९$ मात्रा अथवा $१२ + १५ = २७$ मात्रा का होता है । चंद कवि के इस महाकाव्य में इस छंद में विषमता के भेद भी दृष्टि पड़ते हैं अर्थात् कहीं कहीं उस के दूसरे और चौथे चरण १५ वा १८ वा १६ । १७ आदि मात्रा के विषम भी होते हैं ॥

१४७ पाठान्तर - दोहा । दूहाः । हो । हो । जाय । मो । इछो । इछी ।
प्रिय । प्रेम । "तो बूदीबाली में अधिक पाठ है । लें । चढ़ाय ॥

१४८ पाठान्तर—गाहा । रत्न । रत्त । चित्त । करे । न । लोपन । नथि ।
रत्तं । मुं जान अपानं । दाहयै । अग्गि ॥

१४९ पाठान्तर—चवै । चवे । गुण । गुणपि । गुनपि । मांइ । माई । मांइ ।
बंधए । औगुण । औगुन । जुत्तां । जिता । ताइ ॥

१५० पाठान्तर--दुद्धं । दुरद्ध । सक्कर । युत्तं । विनय । चक्कव । साधिकं ।
पंथ । धुम । बाला । मुकंद ॥

१५१ पाठान्तर—दोहा । चित्त । स्वामि । तवाम । भौ । जड । जडः ।
गोबरधनधारी । गोबरधन । चड्डु ॥

संक्षेपक जपी सु कथ । माधव माननि मङ्गल ॥

जो चित हित बिलंबियो । (सो ★) हरि हर विद्वान सुङ्गल ॥

॥ छ० ४२२ ॥ ह० १५२ ॥

त्रोटक★ तन मीथल न्न मन पग बल । जमभाति प्रस्वेद प्रकंप ढल ॥

फिरि बैठि वधूवर रग मिल । जँपयो सु कङ्गो व अनग बल ॥

॥ छ० ४२३ ॥ ह० १५३ ॥

कवित्त--माग मुत्ति गग निलक । त्रय सु नेत्रह जट्टालट ॥

मिन दुक्ल विभूत । नीलकठी नय तारट ॥

मुष भुवि चद लिलाट । अमित । वर माल माल मुनि ॥

सेत सिंघर आभ्रन्न । मब्ब मम दिष्पि मम्म दुत्ति ॥

तह ईम हरिय हरनछ्छि अछि । आवद्ध जानि अद्वीक रिपु ॥

इहि विधि अबल्ल बर मुकति वर । पुरुष अवल मोरन्न अपु ॥

॥ छ० ४२४ ॥ ह० १५४ ॥

दूहा अतर दुष अतर सुपन । जिय मन सजि गोपीय ॥

दरम देवि ब्रजपति मु वर । दिषि आनन प्रिय कीय ॥

॥ छ० ४२५ ॥ ह० १५५ ॥

कवित्त - मोरपष तन जलद । प्रीति को मेव देव उर ॥

जुगहार तुलमी मु मार । उभयै सोभित चद कर ॥

१५२ पाठान्तर संपेपक । जपिय । जपीय । माननि । मङ्गल । जो । चित्त । हित । बिलंबियो । (सो ★) बदीवाली और म० १-३० की पुस्तकी में अधिक पाठ है अन्य में नहीं । विघिन । मुङ्गल ॥

१५३ पाठान्तर ★ चौपाई । त्रोटक । मिथल । चरन । चरण । मण । जभाति । सुस्वेद । प्रस्वेद । टल । वधूवर । वधूवर । जप्यो । चरणग । बरनग ॥

१५४ पाठान्तर - कवित्त । मुत्ति । गग । मैत्रह । जटा । मुत्त । दुक्ल । दुक्ल । विभूत । विभूत । नय्ये । नरट । भुलि । माल । मुत्ति । सैत । आभ्रन । मव । दिषि । संम । सम । नह । इम । नछि । अलि । आवध । जानि । जा । अधिक । अद्विक । रिष । विधि । अबल । अबल । वर । मुकति । बल । मोरन्न । मोरन । अष । अप ॥

१५५ पाठान्तर - दोहा । सुयत । सुयति । गोपीय । दरसन । देव । ब्रजपति । मु वर । आनन प्राय ॥

१५६ पाठान्तर - कवित्त । कवित्त । मोरपष । पीत । को । जुगहार । तुलमी । उभै सुभित । सोभित । जलदं । वीच । वीधि । भृगं । भृग । रसं । मडति ॥

जलद बीच सुक पति । भ्रंग रस दंडति लंबी ॥
मुरली सुर नट बाद । त्रिभंग उर आयत लंबी ॥
नैव्रत आय गोपी हरी । नैन मुदित चामोद चर ॥
चर चारु चारु चर बर चक्रित । सो ओपम्म उचार कर ॥

॥ छं० ४२६ ॥ रू० १५६ ॥

झुहा - बंसीबट विश्राम किय । सुरभी गोप सहाइ ॥
मन वंछित दीनी त्रियन । सुर सुंदरि सच पाइ ॥

॥ छं० ४२७ ॥ रू० १५७ ॥

झुहा मुक्कि रास मंडल सुचिर । बर अक्रूर सुजान ॥
मानहु मदन बसंत रितु । करि उछ्छव सुस्थान ॥

॥ छं० ४२८ ॥ रू० १५८ ॥

विराज

मयं विष्प भत्तं । सुयं स्याम पत्तं ॥
लियं ग्वाल सथ्यं । मधुनीर रथ्यं ॥ ४२९ ॥
सुनी जोषि कथ्यं । गही नथ्य बथ्यं ॥
परो भूमि तथ्यं । मिली कृष्ण सथ्यं ॥ ४३० ॥
अचिज्जं सुकथ्यं । ★ ★ ★ ★ ॥
ब्रजं ध्रम धारी । सपत्न विहारी ॥ ४३१ ॥
मुझे संज्ञ ओपं । व्रपं भेस रूपं ॥
कियं कैस महं । सुनी कंस नहं ॥ ४३२ ॥
मतं मत्त साधी । मुषं चाप आधी ॥
सुअं माल मंडी । प्रजापाल दंडी ॥ ४३३ ॥

दंडति । मुरली । सुश्वर । त्रिभंग । आयो । नैव्रत । गोपी । नैन । चारु ।
बर । सो । ओपम । उंपम ॥

१५७ पाठान्तर — दीहा । बंसीबट । विश्राम । गोप । सहाय । त्रियन । सुंदर ।
सचि । पाय ।

१५८ पाठान्तर — मुक्कि । अक्रूर । सुजानि । मानहु । मानु । मानो । रित ।
उछव । सुस्थान ॥

१५९ पाठान्तर — मयं । प्य । भत्तं । श्याम । स्याम । यत्तं । सयं । मधु ।
मधु । नीर । रथं । सुनी । जोषि । कथं । नथ । बथं । भूमि । तथं । कृष्ण । सयं ।
बनिबं । असिजं । कयं । वृजं । धूम । संपते । मपते । संपते । मुषं । औपं । उपं ।
उषं । वृष । वृषोभस । प्रेम । कीयं । कैम । महं । नहं । मत । साधीः । मुषं
माल । डंडी । गय । पुतं । अक्रूर । अक्रूरं । पारितं । कय । कन्ह । लंग । लणं ॥

गयं दीस पुत्तं । अक्रूरं पवित्तं ॥
 कयं कन्ह लगं । अहो मात भगं ॥ ४३४ ॥
 रथं हेम सज्जं । चयं चक्र गज्जं ॥
 सिरं कीट मंड्यौ । उरं माल षंड्यौ ॥ ४३५ ॥
 नृपं वाच मानं । इहं जीव ठानं ॥
 व्रजे नंद्र रानं ★ । तहा जाइ आनं ॥ ४३६ ॥
 विय पुत्त चैनं । वामुदेव ऐनं ॥
 मिता स्याम गत्तं । तहां देव पन ॥ ४३७ ॥
 व्रजं ग्राम तातं । अजं देव आनं ॥
 हदै जग्य सद्धं । लियं उच्च बुद्धं ॥ ४३८ ॥
 तुमं रूप चायं । करौ अज्ज भायं ॥
 रथं जीति जायं । चितं चित्त ताय ॥ ४३९ ॥
 भले भाग मातं । हट्टं चित्त रात ॥
 वृजे बज्ज मगं । अयं क्रूर लगं ॥ ४४० ॥
 बने बंद पथ्यं । पथे पथ्य हथ्यं ॥
 चिनकिन्न क्रिष्णं । मृगे निष्ण दिष्णं ॥ ४४१ ॥
 तज्यौ रथ्य भूमी । मिरं रेन झूमि★ ॥
 बने बल्लि बल्ली । विचित्रं मुरल्ली ॥ ४४२ ॥
 धने दीह अज्जं । धने बज्ज मज्ज ॥
 धने बज्ज धारी । धने एक सारी ॥ ४४३ ॥
 धने गोप लच्छी । मुरागी मुरच्छी ॥
 उडी रेन संझं । वुजं देव मंझ ॥ ४४४ ॥

अदी । भंग । लग । सज । चक्रं । गज । काट । नृप । वाच । इदावृजें । ★ यह
 बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है । जाय । पुन । चेनी । वामुदेव । अनी । श्याम । स्याम ।
 गतं । पबं । आजं । ★ यह सं० १६४७, १७७० और बूंदीवाली में नहीं है । रिदै ।
 जिग । मद्धं । उंच । बुद्धं । करौं । करो । अज । जीति वित । चित्त । भले । रिदे ।
 वृजे । वृजे । बज्ज । वृज । मगं । मगं । सज्ज । लज्जं । वितं । वनं । वृद्धं । पथं । पथै ।
 पथ । हथं चित्त । कीन । किन्न । कृष्णं । विष्ण । मृगी । दिष्ण दिष्णं । रथ । भूमि ।
 रैन । झूमि । ★ बूंदीवाली में नहीं है । बने । चित्त । बली । विचित्रं । मुरली ।
 धने । अजं । धने । बज्ज । मंझं । धने । बज्जं । धने एक । धने । गोप । छली ।
 मुरागी । नै । संझं । दैव । वृषं । वृष । भान । दौदुहनी । वीर । तनम । भीर ।
 दौहा । निकटं । मसौही । करं । श्याम । सैनी । गवं । मेली । दिठि । दिठ ।
 पतकठं । भगी । निष्ण । बज्ज । वृज । चरं । निस्थ । मंझ । मनो । हैम । जाइ ।

व्रषभान पुत्ती । गवं दोदुहत्ती ॥
 कुसं भीय चीरं । तनं हेम भीरं ॥४४५॥
 करं हेम दोही । निकटं ससोही ॥
 सिरं स्याम सेली । गव दोह मेली ॥४४६॥
 दिठी दिठु लगी । उतक्कंठ भग्गी ॥
 निधरंकरासी । लही ब्रज्ज भासी ॥४४७॥
 चरं नस्य मंडं । मनौ हेम डंडं ॥
 उठे कंठ लाई । मधू माध पाई ॥४४८॥
 चले नंद गेहं । जसोमत्त जेहं ॥
 कहे दुष्ण सुष्णं । जदूनंद ऋषं ॥४४९॥
 अमूधार नदं । चरंनस्य वंद ॥
 जहे कम गेहं । मह ध्रंम छेहं ॥४५०॥
 उतप्पात पने । ब्रज लोक जने ॥
 भई कंस मुज्ज । करे भोग भुज्जं ॥३५१॥
 रथ चार दप्यौ । गने गोप सप्यौ ॥
 विलप्यौ मुमुष्णं । दम्यौ देह दुष्ण ॥४४२॥
 निमा जग छंडी । उठ चंड चडी ॥
 रथं जोनि जने । बियं बंध मने ॥४५३॥
 दधी खाल गल्ली । ममं नंद कल्ली ॥
 क्रियो शीष लती । मनौ चंद पत्ती ॥४५४॥
 करेवा विचारं । निरती निहारं ; निहारं ॥

★ ★ । ★ ★ ॥ छं० ४५५ ॥ ह० १५९ ॥

दूहा — अभिनव विरह विलाप त्रिय । दिष्णन नंद कुमार ॥
 निरगुन गुन बंध्यौ सकल । मनु पछिय परिहार ॥

॥ छं० ४५६ ॥ ह० १६० ॥

मधु । मधु । पाइ । षळं । गेहं । गेह । जसोमति । जसोमति ॥ जेहं । कहे । सुख
 दुषं । यदूनंद । ऋषं । अमूधार । नद । चरनस्य । वद । कहे । गेहं । गेहं । सहध्रम ।
 छेहं । उतपात । पने । ब्रज । वृजं । लोक । जने । भट । मं । मुजं । करे ।
 भोजभुज दिप्यौ । दापे । गने । मापे । मापे । मुप्यौ । मपं । दम्यौ । देह । सप्यौ ।
 दुषं । जग । उव । जोनि । बिय । मन । गली । मम । कली । कीयो । लती ।
 लती । मनो । पुती । करेव । निरती ॥ † किमी मे भी पाठ नहीं है ॥

१६० पाठान्तर— दूहा । अभिनव । विरह । विलाप । दिष्ण । नंद ।
 निरगुण । गुण । मनु । मनं ॥

दूहा - टगमग नयम सु मग मग । विमग मु भुल्लिय भंग ॥
रथ हित मु हित मु स्याम हित । चित्त लिए मनु संग ॥

॥ छं० ४१७ ॥ रू० १६१ ॥

दूहा - व्रज हिम कुमलनि कुमल हुआ । जमु तन कुमलिन काम ॥

त्रिछुरन नद कुमार चिर । मत्र भये धामनि धाम ॥ छं० ४१८ ॥ रू० १६२ ॥

विराज-अजन्नाभिनेनी। चित्त चान चैनी। जमुनेम कठेप्रहंवाम भूले ॥ ४१९ ॥

अयं कूर ध्यानं । रथगं विमान ॥ चिन चिन बड्डी । इयं बाल पड्डी ॥ ४६० ॥

बधेरानकंसं । लगे दोष बंसं ॥ रहे जाति साई । मु लच्छी सुहाई ॥ ४६१ ॥

हसे दिषि मुष्यं । हुआ हीय मुष्यं ॥ भग भेषथाइ । सिरं मेष साई ॥ ४६२ ॥

जलं केलि न्यानं । दिठे क्रिण ध्यानं ॥ चतुर्बाह चारं। कीरीटी मुहारं ॥ ४६३ ॥

पियं पट्ट कट्टी । गदा चक्र तुट्टी ॥ नियं पानि कंबं । मयं सेन अंबं ॥ ४६४ ॥

अहो धीर जदौ । धरंक्रूर मदौ ॥ कला कंम केही । नियं ब्रह्म देही ॥ ४६५ ॥

गई चित्त बीरं । रथं पानि तीर ॥ ब्रले क्रूर संगं । हरेराम रंगं ॥ ४६६ ॥

मधूरी सु दिष्टी । सुषं स्याम इष्टी ॥ ★ ★ । ★ ★ ॥

॥ छं० ४६७ ॥ रू० १६३ ॥

दूहा - वारी विद्रुम मद्रुम द्विग । लगि जगि नंद कुमार ॥

मनु विगाम फुल्लिय कुमुम । इय कवि चंद उचार ॥

॥ छं० ४६८ ॥ रू० १६४ ॥

१६१ पाठान्तर - टग टग । मु । गम मग । मग टग । भुल्लिय स्याम । चित्त । लये मनो । मनी ॥

१६२ पाठान्तर - व्रज । हीय । कुशलन । कुशल । कमल । दूय । कुशलन । काम । धामन । धाम ॥

१६३ पाठान्तर - व्रजं । नेनी । चैनी । चैन । जमुनेम । जमुनेम । गृह भूले । अयं कूर । ध्यानं । रथगं । विमान । चिन । बड्डी । इय । बाल । पड्डी । बंधे कंमी । लगे । लगी । दाये बंमी । र । जोतिमाई । जोतिमाइ । लछी । सुहाइ हसे । दिषि । मुष्यं । हुआ । हीय । मुष्यं । भेषथाइ । मेषसाई । जल । केलि । न्यानं । क्रिण । क्रिण । ध्यानं । चतु । बाहु । कीरीटी । मुहारं । पीय । पट । कट्टी गदा । तुट्टी । पाने । पानी । सेन । अहो जदौ । धरो । धरं । मदौ । कंदी नियं । देही । गद् । चिन । बीरं । पानि । चक्रे । क्रूर । संगं । रंगं । मधुनैर । मधूरं दिष्टं । तिष्टं ॥

★ किमी किमी पुस्तक मे यह छंद ४६४ के आगे है ।

१६४ पाठान्तर - दूहा । वारी । विद्रुम । कुंमार । मनीं । विगाम । कुलिय । फुल्लिय । कसम । कुसम ॥

मुजंगी— कूँ अंब विद्रुम सीतरल छाया । कूँ वृष वट्ट निहट्ट सिलाया ॥
 कूँकीर कोकिल नादं सुलीन । कूँ केलि कप्पोत से बोल झीनं ॥४६९॥
 कूँ बीय बिज्जोर पीयूष भारं । जुटी भूमि लुटी मनो हेम तारं ॥
 कूँ दाडिर्मा चूव चिचन्नचंपी । मनो लाल★मानिककपीरोज†थप्पी ॥४७०॥
 कूँ सेव देवं करनं कलापं । कूँ पष पारेव सारो अलापं ॥
 कूँ नीवनाली अकेली पजुरी । पुले काम झडे सुहल्लै हजुरी ॥४७१॥
 कूँ ताल तुगे सुचगे सुचारं । कूँ काम लप्पे सुदप्पे विहार ॥
 कूँ चप चपी सु कपीय वात । कूँ जवु जंभीर गंभीर गात ॥ ४७२ ॥
 कूँ नागवेली निवेली निवेम । कूँ मालची घेरि भोर सुवेम ॥
 कूँ पाडरी डार पाछे विहार । कूँ सेव तीसेव झेनी सुझार ॥ ४७३ ॥
 कूँ अष्परोटे निहट्टे तिवेली । कूँ बील विट्टाम कादम केली ‡ ॥
 कूँ केतकी फूल दल्ली विगस्से । कूँ वंस विश्राम गठी निकस्से ॥४७४॥
 कूँ वेर बदीव पंषी पुकार । कूँ । मीर टेरी मुझेरी विहार ॥
 कूँ सार संसारि सारन्न सोरं★ । मनो पावसी बुट्टि दादुल्ल रोरां ॥४७६॥
 कूँ सेंसिषंडी सुपंडान फुल्ली । कूँ लुम्भि लोगी रही बेलि फुल्ली § ॥

१६५ पाठान्तर - कूँ । अब । विद्रुम । गीतल । बहो । त्रिष । बटान । हट ।
 हट्ट । कहीं । कहु । सं० १७७० की मे कूँ केलि कोकिल मोहिल हीन । कूँ कोइल
 बोल सोहलं झीनं ॥ सं० १८५९ की मे— कूँ केलि कौथल्ल मो जल्ल भीन । कूँ
 काइल बोलि सोहिल्ल भीनं ॥ कूँ बिजोर । बिजोर । पीयुष । जुटी । भूमि ।
 लुटी । मी । को । चुअ । चुअ । चिचिण । मनो । मानिक । मानिक । पीरोज ।
 थपी । कूँ । सेव । देव । करणं । कूँ । प रै । वमारो । अलाप कूँ । नीबं
 अकेली । पजुरी पुलं । झडे । सुहड हजुरी । कूँ । मंगे । कूँ । बीमि । काम ।
 रुषे । दये । दये । कूँ । वात । कूँ । जवु । जभीरं । कूँ । नागवली । निवली ।
 निवसं । कूँ । कूँ । घेर । घेर । भोर । भोरं । सुदेस । कूँ । पड्डी । पडरी ।
 पडरी । पंडुरी । छपे । पछे । विहारं ।

★ हि० लाल (सं० लल् वा लड्) लालरंग का वाचक राष्ट्रालालजी ने उपने
 हिन्दी शब्द कोष मे माना है अत एव लालरंगवाले रत्न का वाचक भी अनेक
 प्राचीन कवियों ने प्रयोग किया है ॥

† हि० पीरोज (सं० पिरोज तथा पेज तथा । पेरोज = उपरान्त विशेषः)
 उपरान्त पिरोजा ॥

‡ हि० हजुरी (सं० सजू वा सजुस् = स with जुम to please) Associated
 an associate or comparon with together with

§ ये तीन पाद बूदीवाली पुरतक में नहीं हैं । अघोटे । मिहट्टे । विट्टाम ।
 कूँ । वंतषी । वंलि । वेली । दली । दिगसी । विगंस । विमसे । कूँ । वंस ।

हसे स्याम बलभद् अक्कूर कुल्ली । जहा कूबरी रूप पंपत भुल्ली ॥४७७॥
 दई मालिया आनि सोदाम दान । भय रजक मन्व सुहाल कान ॥
 रची मंडली गोप व्रजलोक वामी । गए जगमाला तथा धनुष त्रासी ॥

॥ छ० ४७८ ॥ ह० १६५ ॥

दूहा धनुष भग कीनी सु प्रभु । वर वज्रि गन्व हनीम ॥
 विमल लोक मधु पुरि परिय । विहमत स्वामि मदीम ॥

॥ छ० ४७९ ॥ ह० १६६ ॥

रग भग मडप उयपि । अरु धनुक्क तिन थान ॥
 मानो धान कपाव की । लीला ही हति आन ॥

॥ छ० ४८० ॥ ह० १६७ ॥

मधुरिपु मधुरित मधुर मुष । मधु समत मधु गोप ॥
 मधुरित मधुपुर महिल मुष । मधुरित नयन म ओप ॥

॥ छ० ४८१ ॥ ह० १६८ ॥

गोप निरप्पत सुभ त्रिय । रूप मरूप रमाल ॥
 भगति भाव हिन चित्त धरि । हिये हरप्पहि वाल ॥

॥ छ० ४८२ ॥ ह० १६९ ॥

दूहा गोषनि गोष गवप्य गुरु । गोधन गो विस्तार ॥
 गोरुचि गोपति गुपनि मन । रुचि रोचन भार थार ॥

॥ छ० ४८३ ॥ ह० १७० ॥

विश्राम । निरुसै । निरुसे । वर । वरि । बेर बदीव । पुकारै । कहीं । मोर । टैरं
 सुहैर । विहारै । कहीं । मोर । मारान । मारोन । मोर । मनो । पायमी । बुडि
 बुठि । दांदुल्ल । रोर । कही । मै । मुपान । सुपान । मुफुल्ली । मुफु । कहीं
 भुलि । लोगी । बैलि । झुली । कनी । अप । आमोक् । तै । ते । मोक् । दिपै
 रूपतासंतआक । कही । पिड्ड षजूर । षज्जुर । पजुर । झुली । कही । म्मल्ल । मल
 मार । भौर । मुली । झुल्ली । ह्मयै । स्याम । वलिभद्र । वलभद्र । अकूर । कुली
 कूबरी । पेषन । भुली । दइ । मोस्विया । आनि । सोदाम । रजक । भूडाल । मँहाल
 सब । सुनी । मुनिप्र । गोपी । वैत्रलोक । जग । जग । जग्य ।

★ हि० सोरं (sound, noise, tone, tune)

१६६-१७० पाठान्तरः दोहा । धनषं । विश्राम । वर । वज्रि । गच्छ ।
 १६६ । अरु । धनुष । धनुक्क । थान । मानो । क्याचि की । आनि । १६७ ।
 रित्र । समंत । गोप । मधुपुर । नैन । मउप । १६८ निरपत । सुभि । हिडु । चित्त ।
 हियै हरपहि । १६९ । गोपन । गोष । निर । गवष । गुरु । गो । गोरचि । गोपति ।
 रोचन । थार । १७० ॥

त्रोटक ततथाल तिथाल तिथाप त्रियं । पहु पजुलि अंजुलि लै मुतियं ॥
 निज नेह सुनेह जनेह लियं । अरि अभ्रति सुभ्रति संजतियं ॥ ४८४ ॥
 परक्रति पराक्रम पथ नियं । निज नथ्यन मेषनि कुंज नियं ॥
 त्रिदबद्ध सुवद्ध सुपुब्ब जिय । गुरु मात पिता भय नां लजियं ॥ ४८५ ॥
 नृप चदन वदन बदन तियं । असु नंदन नंद सुनद तियं ॥
 किल किञ्चिन कज मनोहरिय । मथुर मनि माथर मो हरियं ॥ ४८६ ॥
 द्विग दासित कसति श्री षंडयं । रथ अप्पति श्री लषि मडनयं ॥
 ग्रह ग्रेह निग्रेह सु बद्दियं । बमुदेव सुतेव सुकुंज तियं ॥
 ॥ छं० ४८७ ॥ रू० १७१ ॥

दूहा—प्रति सुंदरि सुन्दर तनह । मुदर मुभति सनेह ॥
 सुंदर त्रिभुवन पुरष पहुँ । निज आवन तुअ ग्रेह ॥
 ॥ छं० ४८८ ॥ रू० १७२ ॥

सकल लोक व्रजवासि जहँ । तहँ मिलि नंद कुमार ॥
 दधि तंदुल मंजुल मुषह । किय विय बंध अहार ॥
 ॥ छं० ४८९ ॥ रू० १७३ ॥

प्राची रवि रत्तल दिमह । बजि दुदुभि तिय नंच ॥
 अपिल अपार अषंड लिय । रुचि मुभ मंजुल मंच ॥
 ॥ छं० ४९० ॥ रू० १७४ ॥

प्रजा परमंसत भेट दधि । अरु मिर परसत पंग ॥
 पट गुन प्रभु बलिभद्र सम । हरि मिलि गोचर लग ॥
 ॥ छं० ४९१ ॥ रू० १७५ ॥

१७१ पाठान्तर --त्रोटिका । त्रोटक । तिथाल । तिथं । पहुँ । पयुलि ।
 मंजुलि । निजु । नैह । सुनैह । जुनेह । अभ्रित । सुभ्रित । परक्रति । निजु । निथिन ।
 नथ । निमेषन । कुंज । सपुत्र । पिता । जलिये । त्रपि । नृनि । चंद । अशु । त्रियं ।
 कलिकिचन । किलिकिचन । मनोहरीय । कम । मन । मो । दग । दामीय । कपति ।
 षंडयं । मंडनय । ग्रेह । न ग्रहामवद । बमुदेव । सुनैव । मकुंज ।

१७२-१७६ पाठान्तर - दूहा । सुन्दर । सुन्दरः । मुदरि । सुभति । मनैह ।
 पुरिष । पहुँ । आवनउ । त्रुष्टि । गौह । १७२ । लोक । त्रिहृत् । तहां । तहा ।
 तहां । विय । बंध । १७३ । प्राची । रत्तल । दुदुभि । असार । अषंड । रुचि । १७४
 प्रजा । परमंसत । भेट । दधि । सना । पंग । पट । गोचर । लग । १७५ । राजुन ।
 राजन । मानुलह । मतु । कृवल्य । गजु । मुदता । विदती । १७६ । द्विनि ।
 बिहसि । गभ । रोहिनि । रोहित । रोदित । लगी । अभ । १७७ । वृज । मंगे ।

राज सुराजत मानुलह । मत लहि अनुल प्रहार ॥

कुवलय गज मुह लय मुदित । विदित बली दरवार * ॥

॥ छं० ४९२ ॥ ह० १७६ ॥

दिठि बल दिन बालक बिहमि । कुमलिय कुमदिव गम्भ ॥

मृत रोहिन रोहिन रिमह । दिठ दिग लग्यौ अम्भ ॥

॥ छं० ४९३ ॥ ह० १७७ ॥

ब्रज सरनागत वमत ब्रज । ब्रज कहि मगै मग ॥

हम गज दिट्ट निरप्ययो । निमष उमारहु पग ॥

॥ छं० ४९४ ॥ ह० १७८ ॥

रिस लोचन रन रत किय । रनंमर ब्रजपाल ॥

रति रत कंस उदंमि मिष । क्रिम पंचिन निय काल ॥

॥ छं० ४९५ ॥ ह० १७९ ॥

भुजंगी म्दं झारि भूरंग हरं गरज्जं । अहो बाल बाल निवारं बरज्जं ॥

अयं बाद बहं पथं पीलवानं । टिले टट्टे नट्टे जुध जं जुं आनं ॥४९६॥

कटि पट्टे पीनं मिरं स्याम सेली । मिता नील वसनाय दसनाय केली ॥

घरै मोरछल्लं मुवज्जन फूलं । हमै विककमे मुप्य गेनं गहूलं ॥४९७॥

गही सुंड म्डीलपडी अषारं । नटी जानि बंसी मुचुक्की विहारं ॥

पयं पात भूमि मुझ्मि जु आनं । दिशी कंम लग्गी मुबज्जे निसानं ॥४९८॥

हतं हंत हन हहनं सुरषं । प्रमिद्धे पुरानं प्रसादं पुरुषं ॥

दुवं वैर पुव्व दनं देव पछ्छी । मदं जे हिंदं ने हिंदै जानि लछ्छी ॥४९९॥

मग । हमज । दिठन । नरपगो । उमारहु । पग । १७८ । लौचन । रननकियै । तकिवये । रतंवर । उदंम । क्रिम । १७९ ।

★ हि दरवार (म. दर or दरि A natural or artificial excavation in a mountain a cave cavern a grotto &c and बार A door way, a gate.) Hence at door way or gate. अर्थान द्वार पर ॥

१७६ पाठान्तर भूरग । रजं । अहो बलं । बरजं । अय । बाद । पयं पीलवानं । टिले । टिले । टट्टे । नट्टे । नट्टे । उदंमं । जूज् । जुजु । कट । कटे । पट । सरं । स्याम । सेली । वसनाय । केली । घरा । मोरमंनं । वाजन । कूरं । हसे । विकमे । विकसे । मुप । गेनं । गहूर । गहू । आरं जानि बंसी । मुचुकी । पय । भुमी । मुझ्मी । लगी । मुबज्जे । निसानं । हन । हहनं सुरषं । प्रमिद्धं । पुरुषं । वैर । पुवं पुवं । दनु । दनुं । पछी । जै । ल । हदे । जानि । लछी । हरनाछि । मगोर । बिरनपि । वैरी । जदों । कौरं । रमे तैजनेजं पेशा विषंठी । तपेता । हुंअ । हुह । हकं । सुभाषं । सुचारी । अहो । मांअं । अपुनं । क्रिसौरं ।

हरन्नछिहारी विहारी सुगोपं । विरंनरिष वंदी जदों जावि कोपं ॥
 रमे रास किष्णं गत्रं केलि मंडी । तमं तेज तेजं तर्पता त्रिषडी ॥५००॥
 हुअं हूअ हक्कं सुभाषं सुचारी । अहो साधुमाधं अजुत्तं निहारी ॥
 किगोरं किसानवर्तं गातं मुक्कीसं । वपं एस वल्लं मदोमत्त दीसं ॥५०१॥
 छुटे पट्ट पीतं कियं किष्ण रोसं । बलीभद्र भद्रं अनूजा नितोमं ॥
 तुअं बालबुद्धं न सुद्धं सु देहं । गही पट्ट षचं सु अछ्छे सनेहं ॥५०२॥
 मनो मंकला हेम तं सिधु छट्टागही सिधु बल्ली [भद्र] धपी धाम पुट्टं ॥
 गही पुछ फेरे सिर तीन वारं । उड्यो हंस हंसीन भूमी प्रहार ॥ ५०३ ॥
 दुवं बंध दन घरे कट्टि कथं । लगी श्रोनि छिछ मनो गुज बथं ॥
 हते गज्ज गज्जै दुव मल्ल मल्लं । परी गरि पोर प्रमार बिहल्लं ॥५०४॥
 मिले रंग भूमी बलराम किस्नं । नव रग दिप्पी तन तेस तिस्न ॥
 बदी बाय चानूर मामल्ल जुद्ध । रन राज अग्या सु मेटो विरुद्ध ॥५०४॥
 समं डोरि बंधयो निबंधयो निबंधयो । हमं जोति तेज मिल मुत्ति सध्यो ॥
 ॥ छ० ५०६ ॥ ६० १८० ॥

दोहा हम बनचर बालक मुन्नज । तुम जुघ मल्लनि मल्ल ॥
 अपनि जुद्ध तुम प्रति करहि । बिहतन होइ न बल्ल ॥छं०५०७६०१८१॥
 प्रथम मत्त गजराज दर । दम सहस्र बल ताहि ॥
 सो अग्या बल छीन भो । लीला ही हति ताहि ॥छं० ५०८ ॥६० १८२॥
 इति रूपति गजराज भो । मंच मुमडिय कंस ॥
 चानूरह मुष्टिक बलिय । मुकति समप्पन अम ॥छं० ५०९ ॥ ६० १८३॥

कूसावरत । बलं । मदोमत । छट्टे । पट । कृष्ण । कृष्ण । अनुजा । नितोसं । तुअं ।
 षट । षचे । अछे । सनेह । मनो । मनो । इमते । सिध । सिध । छुट्ट । सिध ।
 बल्ली । * अधिक पाठ हे । धपि धम । पुट्टं । पुठ । पुछ । फेरे । दुय । बघ । कटि ।
 कट्टि । कटि श्रोनि । छछं । मनो । गुज । हतं । हते । रज राजे । गजगज्जे । दुअ ।
 मल । मल । प्रमाद । विहल । मिले । भूमी । बन्ध । बल विष्ण । तिन । तैज ।
 तिष्ण । तिन । तेज । त्रिष्णं । चाप । पाय । चानूर । मामल । युक्तं । रण । मेटो ।
 मेटो । विरुद्धं । डोरि । निबंधया निबंधया । जोति । तैज । मुत्ति ॥

† हि० पीठवानं (सं० पीठ, An elephant and, वान, going moving or driving Hence an elephant driver.

१८१ १८३ पाठान्तर—दोहा । बनचर । वचनचर । बालिक । व्रज ।
 वृज । युघ । मल्लन । मल्ल । अपत्ति । युद्ध । युघ । होइ नबल । १८१ ॥ मत ।
 सहस्र । सो छान ताही ॥ १८२ ॥ रूपति । फिर । जहाँ । मंच । कंस । चानूरह ।
 मुष्टक । बलियं ॥ १८३ ॥

कवित्त स्त्री निकेत तन स्याम । पीत कौ सेव देय दुति ॥
धूमकेत वर जलद । काम उदित मु कोट रति ॥
नयन उदय पुडरिक । प्रमन अमरीय मुराजै ॥
गुंजहार जर्जरित । तडित बहृगि मु विराजै ॥
नहि बाल बृद्ध किस्मोर तुअ । ध्रुअ ममान पै डिडपरी ॥
पावै न जोग जोगी जुगति । किन गुन तुम गुन त्रिस्तरी ॥
॥ छ० ५१० ॥ ६० १८४ ॥

साटक किवा जोग महस्र कोटिन गुना, आवै न ध्यानं उर ॥
नैवान मनकादि रिण्य बहु ल. नो ब्रह्म कर्म गुर ॥
कि कि जै वर गोक्लेस हरि मो, कष्ट घन अदभुन ॥
कि निर्माय मु बाल्य अभिनव, नी नोय बानी बद ॥
॥ छ० ५११ ॥ ६० १८५ ॥

दूहा पुष्प आप सम दिवु करि । वचन ति लच्छिय काज ॥
दर दर बानी देव गुरु । रोकि देव सिर ताज ॥
॥ छ० ५१२ ॥ ६० १८६ ॥

कवित्त एक ममै रुकि लच्छिछ । रोहितह ब्रह्म ब्रह्म सिसु ।
सनक मनद रु मनत । मकल रक्केमु पवगि उमि ॥
तिन मराप भयी पतन । वैर भावह हरि किन्नी ॥
हरनकस्स हरनच्छिछ । इक्क अवतारह लिन्नी ॥
अवतार एक मिसुपाल भय । दंतवक्र रुकमनिवयर ॥
रावन्न कुंभकरनह बलिय । त्रिय अवतार मुमत भर ॥
॥ छ० ५१३ ॥ ६० १८७ ॥

१८४ पाठान्तर निकेत । नकेत । स्येन । स्याम । को । मैव । रति ।
धूमकेत । काम । उदित । कोट । जटरीत । बहरी । नहि । किमोर । तुअ । प्रमं ।
समान । पै डिड । डट । जोग । जोगी । युगति । गुण ॥

१८५ पाठान्तर - सट्टक । किवा । जोग । कोटित । गुणा । ध्या । रिष ।
नो । ब्रह्मं । करम । कर्म । कि । कि । गोक्लेस । सी । घन । अदंभुद । अदभुदं ।
मिरम्माय । नै । नोयं । बानी ॥

१८६ पाठान्तर बोहा पुव । आप । अष्ट । वचनति । बचनति । देव ।
गुरु । रुकि । देव ॥

१८७ पाठान्तर- कवित्त । एक । रोहितह । ब्रह्म ब्रह्म । रु । रक्केमु । तन ।
भये । कीनी । हरणकसप । हरणकस्य । हरनछि । ईक । लीनी । इक । भयं । दंत-
वत् । रुकमनि । वयर । रावन । कुंभकरमह । त्रिना । त्रितय ।

श्लोक पूर्वशापं ममट्टुष्टा स्वामिवचन प्रीतये ।

क्रोधमुक्तभाविनाशी पीडितो गजराड्यम् ॥

॥ छं० ५१४ ॥ रू० १८८ ॥

गीतामालत्री गजराज दतिय भ्रमति कतिय मद् मंतिय कीजयं ।

बल कन्ह अगै करिन भग्गै रोस रंगै नीलय ॥

फहरत पीतं बल अभीतं भीम भीतं संजुरे ।

गहि दंत पंतिय कंध कतिय रोस मतिय उभरे ॥

श्रियषट प्रमानं बल बलानं सेन मान दुस्तरै ।

दिषि कंस सैनं काल ऐनं हृथ्य गैनं भभरे ॥

॥ छं० ५१७ ॥ रू० १८९ ॥

भुजंगी-न बालं न बालं किसोरं न तोही । न वद्धं जुवान न व्रन्नं न जोही ॥

हंनं हंनं हंनं विषं बीर बुल्ली । धरे कंध दंतं रने नेत्र पुल्ली ॥५१८॥

बलं तो वलिद्री बजानं न देवं । न व्रन्नं न देहं न सेसं न एवं ॥

महा भाग भागं जुरं जष्यकेवं । दिवं दिष्ट मल्लं सुमुष्टीक एवं ॥

॥ छं० ५१९ ॥ रू० १९० ॥

त्रिभंगी - रन रंगे थालं, जेहा कालं, तेहा मालं, चानूरं ।

तोसल त्रिमूलं, मुष्टिक थूल, हस्त विहूल, धूसल्ल ॥

रन रंग गनानं, मेलि मिलानं, अंग समान, झमकने ।

धव धूसर दने, मन हर धते, रज त्रिलवंते, बलवंते ॥

चव गज्ज सतानं, जम सम पानं, बलि बलवान, बोलते ।

रन रन बैनं, बहु बल मैनं, कन्ह ममैनं उचरते ॥

आवर्तति हल्ल, मं रप गल्ल, बज्जन मल्लं, झूझल्ल ॥

धर धर थल हल्लं, पीपर पल्लं अंमर हल्लं, भू भल्लं ॥

१८८ पाठान्तर --पुर्वं । पुञ्च । श्राप । दिष्टा । स्वामी । मृ । प्रीतयं ।
मुक्तं । अविनामी । गजराज ।

१८९ पाठान्तर --दंतीय । भ्रमन । मद मंतीय । उभरे । नैनं । हत । गेने ।
उभरे ॥

१९० पाठान्तर --वालं । वजानं । व्रन । मूठी । देहं । वगै । समं । जरका ।
स ॥

१९१ पाठान्तर --चानूतं । तोपल । त्रिशूलं । त्रिकूल । मधूलं । समानं ।
वज्रं । बलवानं । मैनं । केन्ह । ममैनं । हठं गजै वज्रन । झूझतं । मत्तं । पीपरि ।
पल्लं । अंमर । हल्लं । भ्रतं । वज्रिय । भूर्जे । गेने । गनानं । सतानं । बवानं ।

बज्जियते भूलं, हस्त विकूलं, गेने हूलं, गेतूलं ।
 गैगर गत्तानं, घन वतानं, परि वथथानं, मल्लानं ।
 धम धम लत्तानं, बहु गत्तानं बज्जिविन्नानं, उम्भानं ॥
 सक्के घन बल्ले, छति धूमल्ले, कीन विहल्ले, झुल्ले ।
 अन रोम रिसल्ले, रंग रिझल्ले, जिन बल झल्ले, धरहल्ले ॥
 कसि डोरिय मेवं, हल धर भेवं, हवि बत भेवं, है वीरं ।
 चानूरं सक्कं, धरि मुष्टिककं, तग गुर बक्कं, बल नीरं ॥
 कटि थान परंसं, पोपित कंसं, जीनि जुगंसं, गिरदने ॥
 अन पग्ग पुलंते, माम उल्लते, मन दम षते अनपंते ॥
 तरवर संतज्जे. आयन वज्जे. घायं गज्जे, भैभानं ।
 दोऊ तन वीरं, जम्म मरीरं, वधि गुनितीर, विधि भानं ॥
 गुरु जन विरुञ्जानं, बहु अममानं, धर धर थान, बज्जिपानं ॥
 उप्पारे पग्गं, ब्रह्मड लग्गं, फिरि फिरि जग्गं, सिर भग्गं ॥
 फिरि कंठं दिप्पिय, आचिज लप्पिय, जग बहु भप्पिय, तपितानं ।
 आतम गुरु पानं, नजि उम्भानं, चंपिय कान, सिर भानं ॥
 उच्चारहि वीरं, बहु व्रत नीरं, जम्म मरीर, जुग भीरं ।
 कमि कसि उन्नमं, डोरिय दंसं, करि रिपुनंसं, विनुहीरं ॥

॥ छ० ५३३ ॥ रू० १९१ ॥

दूहा - दहकारत मनल्ल मुभर । अति बल दिन बल वीर ॥

सुर भर नाग निबद्ध नर । भई कुलाहल भीर ॥

॥ छ० ५३४ ॥ रू० १९२ ॥

रसावला—उत्तमल्लंभरी । अधि धारं धरी ॥

जानि मत्ते करी । होइ हायं षरी ॥५३५॥

घाय वज्जे धरी । गज्जि भदों भरी ॥

मच्छ फल्लं ठरी । धम्म धम्मं धरी ॥५३६॥

मल्ल झु झु हरी । वारि स्भेदंझरी ॥

मेघ लग्गं गिरी । हेम कपं ठरी ॥५३७॥

मलानं । लतानं । बहुर । विनानं । उभानं । सकं । धन । बलं । धुसल्ले । धूमलं ।
 भूभलं । दिसल्लं । रिझल्लं । झलं । हल्लं । डोरीय । चानूरं । सक । धर ।
 मुष्टिकं । बकं । पयंसं । गिरिदम । अनं अमपंते । तरवर । संतजे । बज्जं । गजे ।
 जम्म । वधि । विधि । छिह । झह । उतारे । पग्गं । ब्रह्मत्र । जग्गं । दिप्पिय । लप्पिय ।
 भपिय । उभानं । चंपय । उच्चारहि । डोरीय । विन हंसं ।

१६२ पाठान्तर - दहकारति । मलनि ।

हीय ता कित्तरी । प्राण पछछैलरी ॥
 जानि धक्कै धरी । उन्न उन्न हरी ॥५३८॥
 धूरि भूमी भरी । डोर लग्गी ढरी ॥
 श्रोन मुष्णं झरी । द्रोन द्रुगं षरी ॥५३९॥
 मुठु चुक्कं परी । राम काम ररी ॥
 मल्ल भूमं परी । कंस त्रामं डरी ॥५४०॥
 मंच मुक्की मुरी । धाय जद्दों धरी ॥
 केम षंचे करी । ★ ★ ॥

॥ छं० ५४१ ॥ रू० १९३ ॥

दूहा -सत्तपुत्त बंधव सपत । लष्ण असी गनि भृत्त ॥

काम आय बलिभद्र कर । कन्ह कंम नव हत्त ★ ॥

॥ छं० ५४२ ॥ रू० १९४ ॥

कवित्त - राति कस मुपनंत । कंध दिष्णौ न कंध पर ॥

बर प्रिद्धव उच्चार । षोज लष्भे न अग उर ॥

चिन्ह हीन तन चित्त । बीर जग्यौ ध्रम षंडे ॥

मुकति बंस मनि हीन । रंग मडप फिरि मंडे ॥

चानूर बीर मुष्टक बलिय । नीमल्लह रन रग मजि ॥

कलि काल म कलि काल गति । कलिय काल भजन मुग्जि ॥

॥ छं० ५४३ ॥ रू० १९५ ॥

दूहा जमुन सपनौ कंस हति । विस्व विराजन माथ ॥

बर विश्राम विश्राम घट । धनि जदुनाथ सुहाय ॥ छं० ५४४ ॥ रू० १९६ ॥

वरिल्ल मलन मारि पछारति कंसह । बंधव के रिपु केरि पुनंसह ॥

सूरमेन पुत्तिय सुत छंडिय । उग्रसेन मिर छत्रह मंडिय ॥ ५४५ ॥

जनम धाम वसुदेव देवकिय । किय बरपःन प्रसन्न अंसु किय ॥

विप्रदान ग्रहगान मुमडिय । कवि कविचंद इद मुष बंदिय ॥

॥ छं० ५४६ ॥ रू० १९७ ॥

१६३ पाठान्तर मं । अति । अधि । दुरी । करी । धुरी । मळ । मल ।

झुझी कित्तरी प्राण । पछे । जानि । धक्कै । ऊन । उन । द्रुगं । मुठ । चुक्कं । झरी ।

झरी । मुकी । यद्दो । ★ ★ मेरे पाम की किमी पुस्तक मे पाठ नहीं है ॥

१६४ पाठान्तर—मन । पुन । भुग । काम हत ।

★ यह रूपक सं० १६६७ की लिखित पुस्तक मे नहीं है और उसके पीछे की सं० १८५८ वाली मे है ।

१६५ पाठान्तर—गुधव । उच्चार । मृगनि । चाणूर । मुष्टिक । तोसलह ॥

१६६ पाठान्तर मंगनो । विश्व । विश्राम ।

१६७ पाठान्तर - मालन । जराभिध । पुत्तिय । धाम । देवकीय । पान ।

बंशु । गृह गाम ॥

दूहा - हत्यो कंस केसी हत्यो । काल ग्रहति जिन मात ॥
 नंद कह्यो नन्दादि सौं । जाहु ग्रह अब तात ॥छं० ५४७॥
 जननि जसोदा सौं कह्यो । राम किस्न संदेस ॥
 ह्यां दधि मांषन चीरते । ह्यां हत कंस नरेस ॥छं० ५४८॥
 गोधन गोपी ग्वाल सब । सुप रहियो ब्रजवास ॥
 दिन दस पाछें आय हौं । मात जसोदा पाम ॥छं० ५४९॥
 बंसी वेत बषान बन । गेंद हींगुरी जोरि ॥
 धरियो सबै दुराय कै । लेई न राघा चोरि ॥छं० ५५०॥
 अंसुधार अंसुरार मुष । परत नंद सब गोप ॥
 जो छांडे अब दीन करि । कत राषे जल कोप ॥छं० ५५१॥
 अष बक धेनक त्रास तें । अरु दावानल पान ॥
 कत राषे इन विधन तें । जमला अरजुन ढान ॥छं० ५५२॥
 इह कहि सब अंकन मिले । नंद गोप सब साथ ॥
 पगन परत ब्रज जात मग । कहत मुनाथ अनाथ ॥छं० ५५३॥
 डग मगि पग पेंडन चले । फिरि चितवै गोपाल ॥
 का जाइ जसोदा कहै । बिना संग ब्रजलाल ॥छं० ५५४॥
 जाइ जसोदा सौं कह्यो । रहे राम बलबीर ॥
 सुनत जसोदा यों टरी । ज्यों तरु काटे नीर ॥छं० ५५५॥
 गोपी गोप गोपाल बिन । यों दीषत दीनंग ॥
 कहूं न मन माने निमष । ज्यों मनि बिना भुयंग ॥छं० ५५६॥
 सद माषन साटी दही । धन्यो रहै मनमंद ॥
 षाइन बिन गोपाल को । दुषित जसोदा नंद ॥छं० ५५७॥
 प्रभुमाया फेरी प्रवल । सब लागे ग्रिह दंद ॥
 पलन सुहाई राधिका । बिन वृंदावन चंद ॥छं० ५५८॥
 घर अंगन गायन धिरकि । जमुना जल बन कुंज ॥
 फिरत उचाटी सी भई । बिन वृंदावन चंद ॥छं० ५५९॥

१६८ पाठान्तर - सौं ॥ ५४७ ॥ सुं । मान्यो ॥ ५४८ ॥ रहीयो । पाछे ।
 आइहों ॥ ५४९ ॥ वठ । गिद । हिंगुरी । हिंगुरी ॥ ५५० ॥ असुरार । छांडै ।
 ॥ ५५१ ॥ पान । ढान ॥ ५५२ ॥ कहा । कहै । बिना ॥ ५५३ ॥ सौं । यों ।
 ॥ ५५५ ॥ बिन । दिषत । हीनंग । निषम । बिना ॥ ५५६ ॥ मांषन । बिन ।

वंसीवट बन बीधिकनि । दधि रोकन की ठौर ॥
नैकु न माने कहु न मन । कहों कहां लों और ॥छं० ५६०॥
लीला ललित मुरार की । सुक मुनि कही अपार ॥
ते बड भागी देव नर । जपत रहत नित्यार ॥छं० ५६१॥
नद तात पत्नी सु ग्रह । सिसु बसुदेव प्रमान ॥
कोइ कला मथुरा सु बसि । चली द्वारिका निधान ॥छं० ५६२॥
मधु मंडित मधु पुरित मधु । मधु माधुर मु अजोग ॥
कवि बरनिय सुर स्वामि को । कहत दसम सभोग ॥

॥ छं० ५६३ ॥ रू० १९८ ॥

जुतिचाल बाले जसोदा मतिर्लाले । कम काठ मुकाले ॥
जमोमनि नंदो गोप बंदौ । कदो गुठ्ठिगो वाल चदौ ॥
दीन बंदौ न बदौ । जयौ बासुदेव नन्दा ॥

॥ छं० ५६४ ॥ रू० १९९ ॥

बौद्धावतार की कथा

इहा उतपन कैकट ★ देम कलि । असुर जग्य जय हारि ॥
जय जय बुद्ध सरूप सजि । है मुर मिद्धि सुधार ॥

॥ छं० ५६५ ॥ रू० २०० ॥

विराज—जयो बुद्ध रूपं । धरंतं अनूपं ॥ हरी वेद नदे । दया देह बदे ॥
परूहंत रषे । कियं भण्यभण्ये ॥ जय जग्य जोपं । कियं दक्ष भोप ॥
प्रिगया विहार । सुरष्ये दायरं । अमूरं सुगती । षहं रष्यपती ॥
कला भंजि कालं । दया ध्रंम पालं ॥ सूरं ग्यान मत्तं । प्रवत्ते सुजनं ॥
धरे ध्यान नूपं । नमो बुद्ध रूपं ॥ ॥ छं० ५७० ॥ रू० २०१ ॥

॥ ५५७ ॥ फिर । वृ दावन ॥ ५५८ ॥ परकि । वन ॥ ५५९ ॥ नैकु । लो ॥ ५६० ॥
नित्यार ॥ ५६१ ॥ पत्नी । प्रमाण । निघान ॥ ५६२ ॥ स्वामि । को ॥ ६६३ ॥

२०० पाठान्तर —ककट ॥

★ श्रीमद्भागवत पुराण मे बुद्ध की उद्गति "कीकट" मे होनी लिखी है-
ननः कली संप्रवृत्ते संमोहाय सुगृहिणाम् । बुद्धो नाभ्या ऽत्रिनमुनः कीकटेषु
भविष्यति १ । ३ । २४ ॥

२०१ पाठान्तर —रष्ये । षष्ये । ध्यान ॥

कल्कि अवतार की कथा

दूहा कलि कलिंग उतपन असुर । हती ध्रंम धर भूप ॥
कलि कलिमल सों हरन हरि । कियो कलंक सरूप ॥

॥ छं० ५७१ ॥ ६० २०२ ॥

विराज भय भूप लिंग । अनीत उपगं ॥
बिपनी दयारं । अधर्न विचार ॥
कलकं सुकालं । बिया पुच्छ आलं ॥
धरा धम्म लोपं । चवं एक रोपं ॥
बध्रे मेच्छ मतं । चिन काल रत्न ॥
जुगं वेद हारी । न ग्यानं विचारी ॥
नयं दान ध्यानं । मुपं जानि मान ॥
नहो मन्न पूजा । न मोच अनूजा ॥
न जग्यं न जापं । सबे आप आपं ॥
न देवं न मेवं । अहं मेव मेवं ॥
न गाहा न गीय । न पत्य मुत्रीय ॥
न ग्रथ न पुरानं । धरायन्न जान ॥
धरे ध्यान माम । किय ग्यान नाम ॥
कलकी सरूप । धरन अनूप ॥
हय स्याम रोहं । किरीटी ससोह ॥
जुगं बाहु चार । मनीजोनि तारं ॥
कटी पीत पट्टं । महा बिप्प भट्ट ॥
करे पग धार । विकट्टं करार ॥
मुठी हेम मेतं । मजो धूमकेत ॥
करे खग धारं । असूरं प्रहारं ॥
कियं षंड षंड । धरा पूर हड ॥
धरं धम्म चारं । पवित्र विहारं ॥
कियं श्रब्ब मत्त । सुषीनी पवित्रं ॥
सुरं पुप्फ विष्टं । सुचारं सुतिष्ट ॥

२०२ पाठान्तर -- हति । सों ॥

२०३ पाठान्तर -- कलिंगं । पुछ । मेछ । ग्यानं । ध्यानं । मानं सांमं । तामं ।
स्यामं । कटि । धूमं । किरवार । धम्मचार । सुषीनी । पुप्फ । सत्यं ॥

रचे सत्त जुगं । कलीकाल भगं ॥
कृत सत्य नूपं । जयो ता सरूपं ॥

॥ छं० ५८४ ॥ रू० २०३ ॥

उपसंहार का कथन

दूहा - राम किसन किती सरस । कहत लगे बहु बार ॥
छुच्छ आव कविचंद की । सिर चहुआना भार ॥

॥ छं० ५८५ ॥ रू० २०४ ॥

कवित्त सिर चहुआना भार । राम लीला छिग गाइय ॥
सनक सनद सनत्त । कही मुकदेव न जाइय ॥
बालमीक रिषराज । किसन दीपायन धारिय ॥
कोटि जनम सभवै । तोय हरि नाम अपारिय ॥
मानुच्छ मद मति मद तन । पुञ्जभार चहुआन सिर ॥
ज कह्यौ सलप मति सुलप करि । सुहरि चित्त चित्यौ सुथिर ॥

॥ छं० ५८६ ॥ रू० २०५ ॥

इति श्रीकविचंद त्रिरचते प्रथोराजरासके दसावतार बर्णनं
नाम द्वितीय प्रस्ताव संपूर्णम् ॥२॥



२०४ पाठान्तर - राम । छुछ । चहुआना ॥

२०५ पाठान्तर - चहुआना । राम । मुगद । नाम । मानुछ । चहुआना ॥

अथ दिल्ली किल्ली कथा लिख्यते

(तृतीय समय)

मंगलाचरण

चंद की अपनी स्त्री के प्रति उक्ति कि विधना ने दिल्ली
सोमेसरनन्द के बसने को निर्माण को दं ॥

साटक - राज जा अजमेर केलि कलय, ब्रंद व्रत सभरी ।

जुद्धारा भर भीर मीर वहनौ, दहनौ दुरगी अरी ॥

मो मोमेमरनद दद गहिला, वहिला वन ★ वामन ।

निम्मान विधना मुजान कविना, दिल्लीपुर वासन ॥छ० १ ॥६० १॥

चंद का अपनी स्त्री को कहना कि अनंगपाल की पुत्री को पुत्र

उत्पन्न होने से दिल्ली की पूर्व कथा का प्रसंग प्राप्त हुआ है ।

कविन अनंगपाल पुतीय सुरंग +, पुन इच्छा फल दिनी ।

नालिकेर फल सुफल, मन आरभन किनी ॥

तब प्रमाद अपनी, पुत्र मडी कथ भारिय ।

वर वीमल वै वम, कही वर दुग विचारिय ॥

प्रथिराज जोनि वरनीह कवि, अस्मिमत मामत भर ।

चदानि वदनि सुनि चदमति भयी दानवी बसवर ॥छ०२॥६०२॥

बालकपन में पृथ्वीराज का दिल्ली प्राप्त करने का स्वप्न देखना

दूहा बालपन प्रथिराज ने, इह सुपनन्तर चिन्ह ।

लै जुगिनि जुगिनि पुरह ★, तिलक हथ करि दिन्ह ॥छ०३॥६०३॥

१ पाठान्तर बहिला । वामन । मुजान । वामन ॥

विदित रहे कि यहा कवि ने किसी देवता का मंगलाचरण न कर के पदार्थ-
निर्देशवत् मंगलाचरण किया है ॥

★ जहा दिल्ली बमी है उस वन का पुराना नाम है

२ पाठान्तर † अधिक पाठ है । पुत्र । वरग । वीनी । वीनी । प्रसाद ।
ऊपनी । चारिय । वै । दुग । विचारिय । प्रथिराज । अस्मिता । दानव ॥

ध्यान में रहे कि यथा मे मत्र कथा चंद और -उसकी स्त्री के मवाद से है और
उम मवाद के अंतर्गत अन्य मत्र मवाद वर्णन किए गए है, अतएव छंदों का लगाना
कुछ गूढ़ सा हो गया है । निदान हमारे लिए शीर्षकों के बल से अर्थ सुस्पष्टता से
रुग सकता है ॥

कछु सोवत कछु जागते, निसि सुपनन्तर पाय ।
अद्ध रयन के अंतरै, सुष सुत्तह सुभदाय ॥ छ० ४ ॥ ६० ४ ॥
अभयदायिनी नाम तिहिं, जुगिनि जग आधार ।
सुपनंतर सुभदायिनी, आयै आप पधार ॥ छ० ५ ॥ ६० ५ ॥
कनक कन्ति दुति अंग की, निरषि सु पातग जात ।
परमानन्दप्रदायिनी, पार करन जग मात ॥ छ० ६ ॥ ६० ६ ॥
नष मिष प्रभा प्रकास दुति, चष मुँष कमल मुफूल ।
ब्रह्म ब्रह्म नग जोति जग, जर कस कन्ति दुकूल ॥ छ० ७ ॥ ६० ७ ॥
पृथ्वीराज की माता का उससे स्वप्न का वृत्तान्त पूछना ॥
दूहा सुपन पुच्छि गाना तवै, कह्यो पुत्र मब भाय ।
जौ दिप्यिय तुम अद्ध निमि, सो कारन समझाय ॥ छ० ८ ॥ ६० ८ ॥
पृथ्वीराज का माता को उत्तर दे स्वप्न का वृत्तान्त कहना ॥
कवित्त करि जुगिनि रत भेम, सुरंग भिगार अभामिय ।
चद पनि तारकक, चरन परि त्रिटि प्रहासिय ॥
अबर दिय उच्चार दिव्य बानी धुनि मडिय ।
सुपनतर चहुवान, जाय जुगिनिपुर मडिय ॥
जाग्रत मात दिष्यो सुपन, प्रकृति न काय तिन थान रहि ।
अय प्राय मान पुच्छिय प्रगट, सो सुपनतर अरथ कहि ॥
॥ छ० ९ ॥ ६० ९ ॥

३-७ पाठान्तर— बालापन । पृथ्वीराज । निमि । जुगिनि । जुगनिपुरह ।
हय ॥ ३ ॥ निशि । पाड । अष । रयनिकं । सुभ सुनो सुषदाड । ४ ॥ अभयदायिनी ।
तिहि । जुगिनि । सुभ दायिनी । आपै ॥ ५ ॥ अगमह । पानक ॥ ६ ॥ मफूल ।
मुफूलि । बरन बरन नग । जक्रंस । ७ ॥

इन में स० १६४३ की लिखित पुस्तक के अनुसार दोहा ६ और ७ का पाठ है,
परन्तु उनके इधर की लिखी नवीन पुस्तक में उनके पहिले पाद तो ऐसे ही हैं,
किन्तु शेष तीन पाठ ६ के ७ में और ७ के ६ में लिखे मिलत हैं ॥ ★जुगिनिपुरह-
बिल्की का एक पुराना नाम है ॥

८ पाठान्तर—मुपनि । पुछि । कह्यो । कह्या । ममभाय । मबभाइ । दिपिय ।
दिप्यविदि । ममुझाइ ॥

९ पाठान्तर—कवित्त पटपद । जुगिनि । सुरग । भङ्गार । अभ्यासिय ।
तारक (कै) अधिक पाठ है । भान । प्रहामीय । उचार । बानी । मडीय । चहु-
वान । चहुवान । जाइ । जुगिनिपुर । छडिय । जाग्रत । मंत । दिष्यो । सुपन ।
प्रकृत । कोइ । पुछि । सुपनंतर । अथं ॥

पृथ्वीराज की माता का स्वप्न का वृत्तान्त सुन
अद्भुत रस में रंजित होना ॥

अरि-ल-सुनि मुनि बचन मान तव बुल्लिय, मुभ अद्भुत चित्तरम झुल्लिय ॥
मुष दृष द्विग भरी जल आंइय. मन भौ हाम करन फुनि आइय ॥

॥ छं० १० ॥ रू० १० ॥

उसका ज्योतिषियों को बुला स्वप्न का सत्यफल पूछना ॥

दूहा तव बुलाय मत्र जोतगी, कही सुपनफल मन्य ॥

दिवस पंत के अंतरे, होय मु दिल्लीपति ॥ छं० ११ ॥ रू० ११ ॥

गाथा दिल्ली वै स्वप्न न, प्रात कहिय ★ प्रगट विष्णायं ॥

जोतिग गनिक गुनीम, मुनियं सो सति मत्ताय ॥ छं० १२ ॥ रू० १२ ॥

ज्योतिषियों का उत्तर दे कहना कि पृथ्वीराज दिल्ली का राजा होगा ॥

दूहा न इह बात जोतिग घटे, मनस धूअ थिरताव ॥

जोग नैर † जोनिग कहै. प्रभु मु होय प्रथराव ॥ छं० १३ ॥ रू० १३ ॥

ज्योतिषियों को बिदा कर माता और पुत्र का एक गृह में जा बैठना ॥

दूहा न इह कथ्य दुजराज कथि प्रनाम करी मु विदाय ॥

मात पुत्र दो इक गृह वरमति बैठे आय ॥ छं० १४ ॥ रू० १४ ॥

अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र के आगे दिल्ली की पहिली

किल्ली की पूर्वकथा का कहना और राजा कल्हन का वनकोडा

करते सुसा और स्वान के चरित्र से भूमि का वीरत्व देखना ॥

कवित्त तव अनगानी पुत्ति, कहै सुनि पुत्त सु बत्तह ॥

पुब्ब कथा ज्यो भई, मुनी त्यों कहूं अपुब्बह ॥

१० पाठान्तर -बचन । चित । झुल्लिय । द्विग । भरि । भए ॥

११ पाठान्तर—बुलाय । बुलाह । जोतयी । कहि । कहै । सति । कहै । होइ ।
दिल्ली । पति ॥

१२ पाठान्तर —कहीय । ★ यहां "अग" पाठ सं० १८५९ की पुस्तक में
अधिक है । विष्णायं । मति । मता ॥

१३ पाठान्तर --नह । बात । मनिमू । धुअ । जोगनयर । जोतिषि । होइ ।
पृथुराज ॥

† दिल्ली का पुराना नाम ॥

१४ पाठान्तर —नह । कथ । विदाय । पुन । दोइ । इक । ग्रह । बैठ । आइ ॥

१५ पाठान्तर —पुत्रि । कहै । पुत्रि । पुत्र । बतह । ज्यों । मुनी । त्यों । कहौ ।
पित्त । पुत्रि । किलहन । स्वान । सचीलति । सञ्जीवत । सपुष । होय । होइ ॥

हम पितु पुरिषा पुब्ब, नृपति कल्हन ★ वन क्रीलत ।
सुसा छंडि ता पुट्ट, स्वान संचरिय मचीलत ।
सिसु संसुष हुइ बैठी सु तहां, भगिग स्वान भंभीत हुआ ।
सब सथ्य तथ्य आच्चिज भय, करि पारस टट्टे सुभय ॥छं० १५॥ २० १' ॥

उस वीरभूमि में व्यास का कौली गाड़ना ॥

दूहा व्यास जोति + जगजोति तहें, सिद्ध महरत ताव ।

दैव जोग सेसह सिरह, किल किल्लित सु प्राव ॥छं० १६ ॥ २० १६ ॥

वहां कल्हन का कल्हनपुर बसा कर राज करना और फिर उसके

कितनीक पीढी पीछे अनंगपाल का होना ॥

दूहा कल्हनपुर ★ कल्हन नृपति, वासी नृप निज साज ।

कितक पाट अंतर नृपति, अनगपाल भय राज ॥छं० १७ ॥ २० १७ ॥

इतनी कथा सुनकर राव (पृथ्वीराज) के मन में अचरज हुआ ॥

दूहा- सुनत राव इह कथ्य फुनि, उपजिय अचरज अंग ।

सिथल अंग धीरज रहित, भयो दुमति मति पंग ॥छं० १८ ॥ २० १८ ॥

विपरीत समय का आना देखकर सकल सभा का शंकित होना ॥

दूहा- मकल सभा संकित भई, व्यास वयन वर वेद ।

क्रमय समय विपरीत भय, उपज्यो अंतर पैद ॥छं० १९ ॥ २० १९ ॥

दूसरी किल्ली की कथा

अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र (पृथ्वीराज) के आगे

अपने पिता के फिर से दिल्ली बसाने के लिए पाषाण

और किल्ली गाड़ने की कथा का कहना ॥

कवित्त— अनगपाल पुत्तीय, फेरि बुल्ली मुत सम्मह ।

एक बत्त आचिज्ज, उपजि सो पित्त तु तब्बह ॥

बैठीज । स्वान । स्वान । भय । होइ । मय । तथ । आचिज टट्टे ॥ ★ कल्हन चन्द्र
का वाचक होने से राजा चन्द्र । उपमहारणी टिप्पण देखो ॥

१६ पाठान्तर— दैवयोग । सिरनि । कील । कलित ॥

† व्यास राजगुरु का वाचक है । तैवर राजपुत्रों के पाठ्यवर्गीय गिने जाने से
उनके राजगुरु व्यास कहाते थे । यह वह व्यास था जो कल्हन राजा के समय में
राजगुरु था ॥

१७ पाठान्तर— कल्हनपर । कल्हन । अनंगपाल । भयो ॥

★ कल्हन राजा के दिल्ली बसाने के समय का दिल्ली का पुराना नाम कल्हन-
पुर है ॥

१८ पाठान्तर— कथ । अचरिज ॥

१९ पाठान्तर— वचन । विपरति ॥

पुच्छि व्यास † जग जोति रोज मंघी उच्छव घन ‡ ।
ग्राम नाम अप्पियै, कुमल जिन होय ग्रेह घन ॥
चित्तयो चित्त दुजराज तव, अगम निगम करि कद्दयो ।
सुभ घरी महरत सधि कं, फिरि पापान मु गद्दयो ★॥

॥ छ० २० ॥ ६० २० ॥

व्यास का कहना कि पांच घड़ी तक पाषाण को हाथ न लगाने से वह शेष के सिर पर बूढ़ हो जायगा परन्तु राजा कां इसे अनर्थ कर मानना ॥

कवित्त कहै व्यास जग जोति, मुनिह त्रवर नरिद तुअ ।

एह मेम मिर गाव, अचल निहचल मृग धुअ ॥

मोहि अरथ पल एह, छेह अप नह राजन ।

पंच घरी इह मुविक, राज रहियो इन काजन ॥

इतनी जु कह्यो वर व्यास तहँ इन अनथथ का मानयो ।

भवछित्त बत्त मिटै न को, क्रत क्रम नह जानयो ॥ छ० २१ ॥ ६० २१ ॥

साठ अगुल की कीली गाड़ना अर्थात् शंकुपात कर्म करना ॥

अरिल्ल मुनी वत्त इह तन प्रमान व्यास वरी किल्ली पुर † धान ।

माठि मु अगुल लोहय किल्लिय मुकर सेम नागन मिर मिल्लिय ॥

॥ छ० २२ ॥ ६० २२ ॥

† ध्यान में रहे कि बन्हन के पीछे कई पीढ़ी तक तंत्र कन्हनपुर में सुख से राज करते रहे और रूपक ८ और १९ कवि ने इसी किल्ली की कथा का प्रसंग मिलाने के लिये कहे हैं ताकि जो बृद्ध विपरीत हुआ है वह इसी किल्ली के पीछे हुआ है ॥

२० पाठान्तर — अनगपाल । पुत्रीय । बोली । समह । बन । आचिज । पित । तवह । बुद्धि । व्यास । उछल । नाम । कुशल । मद्धि । गद्दयो ॥ † अनगपाल के समय का राजगुरु ॥

‡ इससे स्पष्ट है कि अनगपाल ने इसी वार दिल्ली बसाने का प्रदान संताप की कामना में किया था । इसी लिये कवि ने—ग्राम नाम अप्पिये, कुमल जिन होय ग्रेह घन—कहा है । और “घन” शब्द यज्ञ मन्तान का वाचक है ॥

★ “फिरि पापान मुगद्दयो” अर्थात् वास्तुशास्त्रानुसार किलाभ्यास कर्म किया ॥

२१ पाठान्तर— तू अ । देश । फिर । निहचल । धुय । इक । मुकि । सु । तहां । अनथ । मानयो । को । मिट्टे । क्रत । क्रम । जानयो ॥

२२ पाठान्तर— बत्त । प्रमानं । किल्लीपुर । किल्लीय । मिलिय ॥

‡ अनगपाल के समय का दिल्ली का नाम “किल्लीपुर” ॥

सब के बरजने पर भी उस कीली को उखाड़ डालना

अरिल्ल मुंघ लोइ आचिज्ज मु मान्यो. भावी गति सो व्यास न जान्यो ।

बरजे सह परिगह परिमान. उण्पारी किल्ली भू थान ॥छ० २३ ॥ह० २३॥

पाषाण के उखाड़तेही रुधिर की धार चलना और प्राइचर्य्य होना ॥

कवित्त अनगपाल पृथ्वी, नरेम आचिज्ज सु मान्यो ।

भवसि वत्त जो होय, सोय ब्रह्मान न जान्यो ॥

आराधन वर ग्यान, सोइ ससार मुषास्यो ।

दैवक्कम्भ करि जोग सोइ पाषान. उपास्चो ॥

रुधि छल्ल छुट्टि ममुह चलय, अति अद्दुत्त मु दिण्णियो ॥

परिगह पवाम मत्री न्नाति, इन आचिज्ज सु लण्णियो ॥

॥ छ० २४ ॥ ह० २४ ॥

पाषाण का उखाड लेना सुन व्यास का दुखित हो राजा के पास आना ॥

दूहा मुनि आयी वर व्यास तह, दुष पायो मन मइज्ज ।

का जप्प्यो मुष न्पति सो, इह मति मूढ अवुइज्ज ॥

॥ छ० २५ ॥ ह० २५ ॥

अनंगपाल का पश्चाताप करना और व्यास का आगम कहना ॥

कवित्त अनगर ल छक्कवे, बुद्धि जो इमी उक्किल्लिय ।

भयो तुअर मति हीन, करी किल्लीय ते ठिल्लिय ॥

कहै व्यास जग जोति, अगम आगम ही जानों ।

तूअर ते चहुआन, अत लं है तुरकानों ॥

तूअर मु अवट्टि मडव घरह, इक्क राय वलि बिककवे ॥

नव सत्त अन मेवान पति, इक्क छत्त महि चक्कवे ॥

॥ छ० २६ ॥ ह० २६ ॥

२३ पाठान्तर --लोय । अचरिज । मान्यो । जान्यो । बरजै । सब उपागिय । किल्लीय ॥

२४ पाठान्तर --अनंगपाल । प्रथवी । अचरिज । वत्त । मोइ । मोइ । जान्यो । ग्यान । मोय । मोइ । चलीय । अद्दुत्त । दिण्णियो । परिगुह । न्पति । आचिज्ज । लण्णियो ॥

२५ पाठान्तर --तहां । तह मंझ । न्नाति । सो । मूढ मति अमपंझ ॥

२६ पाठान्तर --अनंगपाल । यमी । उक्किल्लिय । भयो । तीअर । ते । ठिल्लीय । किल्ली । हूं । जानी । तोअर । ते । चहुआन । ह्वेहें । होइ है । तुरक । इक्क । राइ । बिककवे । अति । मति । इक्क । जक्कवे ॥

व्यास का अनंगपाल को खेद न करने का उपदेश करना ॥

पद्धरी उच्चस्थो व्यास जग जोति वीर । मृत मुग्गं लौक पाताल नीर ।
 त्रयकाल दरम दरमिय मु देव । व्यामह ममान जोतिगिय तेव ॥ छ० २३ ॥
 ममार सार अस्मार कीन । वर व्याम बुद्धि कोविद प्रवीन ॥
 मडयो मु राज सौं क्रोध नूप बरज्यो मुकिष्ण व्यामह मरूप ॥ छ० २८ ॥
 जनमैज राज तम मत्त मान । आनी न चित्त तिन निमष ग्यान ॥
 षिति राज मरिस रिष राइ बोलि । कीनीय वन तुम गत्त षोलि ॥ छ० २९ ॥
 हू गड्डि गयो किन्ली मजीव । हल्लाय करी हिल्ली मईव ॥
 त्तर अवदि मडव सुथान । भोगवै भूमि मुरतान पान ॥ छ० ३० ॥
 मो मत्ति जाति त्तर त्रिनेन । मनि करै रोम राजन मुहेन ॥
 जान्यो मु कह्यो वर व्याम रूप । अटी मुवत्त वरजिन भय ॥ छ० ३१ ॥
 हिन्दून † जानि पडव मु वम । तिन भयो अस पारथ्य नम ॥
 तिहि वम भाम अरु धम्म मुन । तिहि वम वली अनगेम तुत्त ॥ छ० ३२ ॥
 मति करहु मोच मम मत्र मानि । त्तर राज काज वर चाहवान ॥
 वर वम मुमति अति मनि प्रताप । दिक्खित्तरु तपै चट्टवान आप ॥ छ० ३३ ॥
 फिरि व्याम कहै मुनि अनग राइ । भवत्तव्य वान मेटी न जाय ॥
 रघनाथ हाथ त्रैलोक देव । ने वनक भुग लागे पछेव ॥ छ० ३४ ॥
 मारीच अप्य आयो छरत्त । त्तर होत्तर मीता हरत्त ॥
 पडवन जाग आरभ कीन । वरज्यो मु व्याम पठित प्रवीन ॥ छ० ३५ ॥
 दुरवाम द्वारिका दिपन आइ । जद्दान वाल मर्यो उपाइ ॥
 करि गुरुष नारि रचि गर्भ हाम । कह देव यात्रि उरजै सु आम ॥ छ० ३६ ॥
 षिजी कही विप्र तस उदर जोइ । जडवन वंम नापै मु षोइ ॥
 बरजे सुधम्म सुत रमन जूप । देषंत अप ते परे कूप ॥ छ० ३७ ॥
 केतेक कहौं सुनि अनग राइ । जानति जान कीनो उपाय ॥
 भवत्तव्य वात उतपात्त मोटि । मिट्टै न बुद्धि कोइ करी कोटि ॥ छ० ३८ ॥
 जिन करी षेद उपदेम मोहि । हौं जानि ग्यान इह कहौं तोहि ॥
 करि धरा धम्म उद्धारि देह । संमार अनित छंडो मनेह ॥ छ० ३९ ॥
 त्रैलोक जीत्ति जिन जेर कीन । ते गये अंत हुइ आपु हीन ॥
 इक गल्ह अमर संसार सार । रण्वै न पहूमि ते बड गमार ॥

॥ छ० ४० ॥ क० २७ ॥

२७ पाठान्तर — उच्चस्थो । अन । स्वर्ग । समान । जोत्तगी । असार । बुधि ।
 सो ॥

प्रनंगपाल के पीछे जो जो राजा दिल्ली में होंगे उनके विषय
में व्यास का भविष्य कथन करना ॥

तुंगरों का नाश और चौहानों का राज्य होना ॥

कवित्त सुनि अनगेस नरेस, मोहि इह आगम बुझै ॥
अंत राज चहुआन, मोहि इह बेगो सुझै ॥
सब तूंअर षग मग, भिरिग मंडप आहुट्टै ।
मार धार धर धूमि, भुगति पै बधन छुट्टै ॥
इह दोष राज दिज्जै नही, मैं बहु बार वरज्जयौ ।
भवतव्य बान मिट्टै न को, होड सु ब्रह्म मिरज्जयौ ॥

॥ छं० ४१ ॥ ह० २८ ॥

चौहानों के पीछे मुसल्मान और उनके पीछे फिर
हिन्दुओं का राज्य होगा ॥

कवित्त - ता पछ्छै सुनि राज, राज भज्जै चहुआनिय ।
बहुन काल अन्तरै, तपै पुहमी तुरकानिय ॥
मेछ्छ अवनि तप अहुटि, प्रलै हुइ है तिन बसह ।
बहुरि जोर हिन्दू, राह हुइहै इक अंसह ॥
संधारि सकल दान र कुलह, धन्म राह सह विम्तरै ॥
जितै जगन तप प्रबल करि, आनि दिमा विदिमा फिरै ॥

॥ छं० ४२ ॥ ह० २९ ॥

फिर मेवातपति सं० १६७७ में दिल्ली जीत लेंगे★ ॥

कवित्त नव मत्तं वर अंत, बहुरि दिल्ली पति होई ।
दग घोद पुरमान, पट्टमि चक्कवै सु जोई ।
महि मेवान महीप, दीप दीपनि दल मडे ।
किक्क ग्हे पय आप, इक्क पल पंड निपंडै ॥
मडै सु पट्टमि प्रथिराज जिम, सत्त वात जोतिक जपिय ।
मानी सु सत्ति करि मवनि इह, व्यास वचन व्यासह थपिय ॥

॥ छं० ४३ ॥ ह० ३० ॥

२८ पाठान्तर -- जनमेज । मन । मान । आनी । ग्यान ॥

★ ये दोनो पाद सं० १६४७ की लिखित पुस्तक मे नही है और उनके इधर
की संवत् १८५९ की मे है ॥ २९ ॥ हुं । किलि । किली । गडि । हलाप । ठिली ।
इव । तुंगर । अवटि । सुधान । मुरतान । पान ॥ ३० ॥ मति । जानि । तोंअर ।
आन्यों । झूठी । स वरबत्ति ॥ ३१ ॥ आनि । पारष । धुम्म सुत । वसं । वली ।
शुब ॥

दूहा सोरै सै सत्योतरै, विक्रम साक वदीत ।

द्विल्ली घर मेवातपति, लेहि पग बल जीत ॥

॥ छ० ४४ ॥ सू० ३१ ॥

व्यास का कहा हुआ भविष्य नहीं टरेगा ॥

कविम तिहि जथ वन प्रमान, मुनिहि दिठ नुच्छ मुअंतं ।

बर म्लेच्छनि मत घटइ, धम्म पारम रम रंतं ॥

हुइ नव मत्त प्रमान, धूअ टरइ रवि टरइ ।

टरै न व्यास वचन, मान जम तें अजु टरई ॥

ए मव अजान मता जु ही, परी इच्छ मच्छी मुही ।

परि प्रै प्रमन्न परनीत करि, नव काटन ग्रावह जुही ॥

॥ छ० ४५ ॥ सू० ३२ ॥

माता का दान और होम करना ॥

मुरिल्ल - सनि श्रोतान भाए चहुआनं कही मान मति तन मुजानं ।

बहुरि पुछ्छे दुजराजन आनं, कियौ होमदैं दान प्रमानं ॥

॥ छ० ४६ ॥ सू० ३३ ॥

३२ पाठान्तर मानि । दृश्य । चहुआन । चाहुआन ॥ ३३ राठ पृग ।
लगे ॥ ३४ ।

† इस महाकाव्य में "हिन्दु" शब्द यहाँ पर आया है । उसकी व्युत्पत्ति वाच-
स्पत्य बृहत्संस्कृताभिधानकर्त्ता और शब्दरत्नद्रुमवाले ने पुल्लिग में यह की है—

"हीनं दूषयतीति । दूष + इड् । पृषोदरादित्वान् माधु जानिभेदे । ज्ञानिविशेषः ॥
और उसका प्रयोग मेरुतंत्र में यह दिखाया है -

पश्चिमास्नायमंत्रान्नु प्रोक्ताः पारम्य भाषया ।

अष्टोत्तरगनाशीतियेषा संमाधनान् कलौ ॥

पंच खानाः सप्तमीरा नव गाहा महाबलाः ।

हिन्दुधर्मपलोत्तारो जायन्ते चक्रवर्तिनः ॥

हीनं च दूषयत्वेन हिन्दुरित्युच्यते प्रिये ! मेरुतंत्रे ३३ प्र० ॥

और भविष्यपुराण के प्रतिमर्गपर्व के तृतीय खंड के दूसरे अध्याय में लिखा
है कि विक्रमादित्य के पौत्र शालिवाहन ने पितृराज्य पाने पर शकादि को जीत कर
आर्यदेश और म्लेच्छ देश की सीमा इस प्रकार से स्थापित की—

एतस्मिन्तरे तत्र शालिवाहन धूपतिः ॥ १७ ॥

विक्रमादित्यपौत्रश्च पिताराज्यं गृहीतवान् ॥

जित्वा अकान्दूराघर्षादधीनं, त्तिरिदेशजाम् ॥ १८ ॥

मातुल का अपने मन में मोह करना ॥

इहा --सुनत सुपन सोमेस सुअ, बज्जाए बर बाज ।

गिन्यो मु मातुल मोह मन, और अवन्निय काज ॥

॥ छं० ४७ ॥ रू० ३४ ॥

पृथ्वीराजका स्वप्नफल सुन आनन्द में फूला न समाना ॥

पद्धरी सुनि सुपन मात फल कहै राइ । दरिया तरंग मन मोज पाइ ॥

ज्यों मोर मेह आगम अनंद । राका चकोर ज्यो मुष्य चंद ॥ ४८ ॥

चंदनह बन्न ज्यौ पाय चिल्ल । तिह नाह पिष्य ज्यौ सुभग सिल्ल ॥

संग्राम भूमि ज्यौ सुभट पिष्य । गुरु विद्यवन ज्यौ पाय मिष्य ॥ ४९ ॥

घत्तार घत्त ज्यौ इष्य चोट । दानार पाइ जाचिक्क टोट ।

पडित पाइ ज्यौ गुनियग्राह । व्यापार पाइ ज्यौ साह लाह ॥ ५० ॥

परि विन पेषि ज्यौ षेल ज्वारि । छूल छैल पाइ लंपट्ट नारि ॥

आनंद सु यौ प्रथिराज पाइ । फुल्ल्यौ सु अंग अंगह न माइ ॥ ५१ ॥

बज्जे अनंत वज्जहि अनंद । दिय दान विदुष दुज भट्ट बृंद ॥

दिन दिन नरिद तन दसा बडुठ । चडुठन दीह जो दसा चडिड ॥

॥ छं० ५२ ॥ रू० ३५ ॥

बान्दीका कामगारच रामजान्बुजाठान ॥

तेषा रुपा गृहीता च दडयोगानकारयत् ॥ १२ ॥

स्वर्पिता नेन मध्यादि म्नेच्छार्यामा पृथक् पृथक् ॥

मिथुस्थानमित्तरे राट्टमाथ्यं चोत्तम ॥ २० ॥

म्नेच्छस्थान परमिथो कून नेन मडात्मना ॥ २१ ॥

यदि यह माननीय है तो स्पष्ट है कि "हिन्दु" शब्द तो "मिथु" का और "हिन्दुस्थान" शब्द "मिथुस्थान" का अपभ्रंश है अर्थात् वह यावनी नहीं है। यदि उनको यावनी भी मानें तो भी आसक्त हमारे देश में बड़ी ही प्रवृत्तता से यह माना जाता है कि संसार भर की सब भाषा हमारी संस्कृत से ही निकली है। अब एव फिर हमको बताना उड़ेगा कि यावनी "हिन्दु" शब्द किस संस्कृत शब्द का अपभ्रंश है? और जब वह संस्कृत का अपभ्रंश है तो फिर उसके क्या कर्षों करनी चाहिये?

तथा हमारे दिने इस प्रमाण से पुगनस्वनेना विद्वानों के विचारार्थ एक यह प्रश्न भी उरस्थित होता रहै कि इससे तो शालिवाहन का विक्रम पोना होना विविध होता है और अन्य शोशों के अनुसार प्रवृत्त शालिवाहन शककर्ता कनिष्क नामक सिथियन राजा माना जाता है। हमारी देशी साक्षी से विक्रम और उसके पोते शालिवाहन का '५३५ वर्ष' का अंतर असंभव होना प्रतीत नहीं होता है। इस के

स्वप्नफल सुनकर पृथ्वीराज की सर्वस्व वृद्धि कैसे होने लगी ।

कविन चढत नदी जिम, मेह नेह नवला जुबनागम ।
सिद्धदाह दिन चढत, सु गुरु सिष्यक विद्या क्रम ॥
मस्त्र ओप ज्याँ भरनि, लच्छि व्यापारह बढूढत ।
बढन भट्ट गज बम, बेलि द्रुम मीसह चढूढन ॥
जिम सरद रयनि सुद पष्प तिथि, बढन कला मांस तम गमत ।
चहुआन सूर मांमेम सुअ. इम सुदमा दिन दिन जमत ।

॥ छ० ५३ ॥ रू० ३६ ॥

कविन बढन पटन उमराव, बढन साहन तुगियन दल ।
बढन भंडारन दाम, बढन कोटार अन्नवल ॥
जमदर पानान वस्त्र, बढन दानन दिन ही दिन ।
हट्ट मम नरवारि, बढन मस्त्रन्न पिन द्वि पिन ॥
बढूढंत किति दिन दिन अमल, प्रथीराज मांमेम सुअ ।
दस दिस। जोनि दिन दिन बढन, मट्टा निमा पह जानि धुअ ॥

॥ छ० ५४ ॥ रू० ३७ ॥

अतिरिक्त शालिवाहन का बौद्ध हो जाना भी कहा जाता है और शक भी बौद्ध धर्मावलंबी माने जाते हैं क्या आश्चर्य है कि यह शालिवाहन ही शक धर्मावलंबी होकर कनिष्क नामक राजा हो गया हो और हमारे यहां उसके पहिले नाम से ही शक प्रख्यात चला आया हो ?

पाठान्तर अर । होइ । होय हानहार । जाय । ३० ॥ दिपिन । आय । जदवन । उपाय । कहौ ॥ ३६ ॥ जदवन । नपिय । अत ॥ ३७ ॥ कहौ । जनगराइ । जानंत । जानि । जान । कीनमु । मोट । मिटै । बुधि । को । कोट ॥ ३८ ॥ उपदेश । हू । जानि । धर्म । उदारि । छंडो ॥ ३९ ॥ जोर । तेउ । गए । होइ । रष । पहमि । गवार ॥ ४० ॥

२८ पाठान्तर—चहुआन । बेषो । सूझ । तोअर मग । मे वरजयो । मेटै । होय । सिरथा ।

२९ पाठान्तर - पछै । चहुआनिय । चहुआनीय । तुरकानीय । मछ । मेछि । हबै है । हिदून । हूँ । दानव । आनं । दिशा । फिर ॥

★ यह ३० और ३१ दोनो रूपक पुरानी पुरूरु स० १६४७ की लिखी मे वास्तव मे तो नहीं हैं । परंतु उसके पत्र के किनारे पर किसी अन्य ने पीछे से इन दोनो को लिख दिया है और उसके पीछे की नवीन पुस्तको मे इन दोनो के पाठ है । संवत् १८३८ की मे तो "मेवातपति" पाठ है और सं० १६४७ की प्रति मे "मेवारपति" पाठ है । बैसे ही पहिली मे १५७७ और दूसरी के मे १७७७ पाठ है ।

पृथ्वीराज का अजित अवतार होना ॥

कवित्त सहरि गहंमह सूर, नूर नवलन नवला मुष ॥
चार बरन चिर आव, गेह बिलसत महा मुष ॥
पदत मैवासन धाह, दाह दिज्जन दुज्जन घर ।
अडटनि उटत सुदंड, थप्पि थिर करत अप्प वर ॥
चिहु चक्क हक्क धर थर हरत, पिमुन पिजि किज्जय नरम ।
अबतार अजित दानव मनुष, उपजि सूर सोमह करम ॥
॥ छ० ५५ ॥ रू० ३४ ॥

लोहाना का गीख में से कूदना और अजानवाह
नाम और जागीर पाना ॥

कवित्त - षोडस गज उरद्ध, राज ऊभौ गवष्प तम ।
सझ समय चीतार, पत्र कीनो पेमकम ॥

निदान ये दोनो तो स्पष्ट रूप से स्पष्ट है । तथा हमारे पाठको के ध्यान में रहे कि उदयपुर वाले स्वर्गवामी कविराज श्यामलदासजी ने जो इस महाकाव्य का आद्योपान्त जाली बनना मवत् १९६० में १९७० तक के भीतर माना है उसका आधार दत्त श्रेष्ठ रूपको में से रूपक ३१ पर रक्खा है । उसके जाली बनने के समय के विषय में हमने आदि पर्व की उपसंहारणी 'गिष्पणी' पृ० १३५-१७८ तक वाक्य ३ और "पृथ्वीराजरामे की प्रथम मरणा" के पृष्ठ ३८ से ३७ तक वाक्य १७ में मविस्तर कथन किया है अतएव यज्ञ अधिक नहीं करने हैं ॥

३० पाठान्तर - सतै । डिली । पग । पोदि । चकवि । मेवाद । किक आइ रहि पाइ । मनि । तपिन । थपीय ॥

३१ पाठान्तर - मोरे । मतगिसे । मित्योतरि । विक्रम । शाक । दिल्ली । मेवारपनि । लद् । षग ॥

३२ पाठान्तर - अथ । वन । प्रमानं । नुछ । म्लेछनि । होय । मन । प्रमानं मान अजानं । इछ । मछी । घरी इछ मछी मही । पगिये । प्रमन ॥

३३ पाठान्तर - कद वाधा । चहुआनं । मुजानं । पुछि । दुजराजनि ॥

३४ पाठान्तर - अवनिय ॥

३५ पाठान्तर - राय । दगीयाव । पाय । मुष । पाइ । चिन्ह । पषि । सील । पिषि । विद्या बंत । मिषि । इषि । जाचिग । पडित । गुनयग्राह । छंपट । पाय । माय । दान । चडनं । दशा । चडि ।

३६ पाठान्तर - लछ । वडन । चहुआन ॥

३७ पाठान्तर - भंडारन । दाम । तरवार । बडन ॥

३८ पाठान्तर - सत्ररि । ब्यारि । दुजन । अदटन । दटन । थपि । अप । चिहु । चक । रज । कितथ ॥

देवत संभरीनाथ, हृथ्य छूटन ह्य मारक ॥
तीर कि गोरि बिछुट्टि, तुट्टि अममान की तारक ॥
अघबीच नीच परने पहिल, लोहाने लीनो झरपि ।
नट कला षेलि जनु फेरि उठि, आनि थ्यथ्य पिथ्यह अरपि ॥

॥ छं० ५६ ॥ रू० ३९ ॥★

गाथा हरषि राज प्रथिराजं, कीन मुर मामंनं ।
बगसि ग्राम गजबाजं, अजानंवाह दीनयं नामं ॥

॥ छं० ५७ ॥ रू० ४० ॥

दिल्ली किल्ली कथा का उपसंहार ॥

दूहा मुपन मुफल दिल्ली कथा, कही चंदबरदाय ।
अब अगो करि उच्चरौ, पिथ्य अकूर गुन चाय ॥

॥ छं० ५८ ॥ रू० ४१ ॥

ति श्रीकविचंदविरचिते पृथ्वीराजरासके
दिल्ली किल्ली कथा वर्णन नाम त्रतीय
प्रस्ताव संपूर्णम् ॥



३६ पाठान्तर- गवष । चित्रकार । हय । अममान आनि ॥

★ ये ३९ । ४० दो रूपक सं० १६४७ की पुगानी पुस्तक में नहीं है और इधर
की सं० १८१९ में है ॥

४० पाठान्तर—ग्रामं । बाज । अजानं ॥

४१ पाठान्तर—दिल्लीय । बरदाय । अगें । उच्चरौ । पिय । कूंअर । गुनचार ॥

उपसंहारिणी टिप्पण

जो कुछ हमने प्रथम और द्वितीय समय की टिप्पणी और उपसंहारणी टिप्पण में कहा है वह हमारे पाठकों के ध्यान में होगा और जो अब निवेदन किया जाता है वह भी उसी के साथ सदैव स्मरण में रहेगा। क्योंकि वह सब इस महाकाव्य के विषयक अनेक वाद विवादों के विचार और निर्णय करने के समय बहुत ही उपयोगी होगा ॥

अब हम तीसरे समय - दिल्ली कितली कथा—का मूल लेख हमारे पाठकों की सेवा में उस्थित है। और जो कुछ उन्होंने अब तक इस महाकाव्य के नाम में अनेक दंत कथा और वृत्तान्त पुस्तिकादि में पढ़े और सुने हैं वे भी उन्हें ज्ञान हैं। अतएव अब यह एक बहुत ही अच्छा अवसर है कि हम उन दोनों का मिलान कर के देखें कि क्या आज कल के ग्रन्थकर्त्ताओं ने भी अपने लिये वृत्तान्त ठीक ठीक इस महाकाव्य के वृत्तान्त के अनुकूल ही लिखे हैं, अथवा उनको बदल कर उनमें कुछ और अपनी मनमानी गड़न्त भी करी है? यदि उनमें परिवर्तन किया गया है तो क्या उनका ऐसा करना ठीक है? मूल में मिला हुआ अगला शेषवांश तो अब निश्चित होना कैसा कठिन हो रहा है, जिस पर भी क्या आधुनिक ग्रन्थकर्त्ताओं का मूल में विरुद्ध कथन करना मानो नवीन शेषक मिलाना नहीं हो सकता है? आश्चर्य यह है कि आज कल के ग्रन्थकर्त्ता प्रतिज्ञा तो पृथ्वीराजरासो वा कवि चंद्र के कथनानुसार अपने कथन करने की करते हैं और जब उनकी ऐसी मूल में मिलान कर के परीक्षा की जाती है तब उनके वृत्तों में रात्रि दिन का सा अन्तर दीख पड़ता है। इसके केवल दो तीन ही उदाहरण हम यहां पर दिखाते हैं, अन्यो का विचार हमारे पाठक स्वयं कर लेंगे—

(क) हिन्दी रीडर नंबर ५ अर्थात् हिन्दी शिक्षावली भाग पंचम नामक पुस्तक जो पाठशालाओं में पढ़ाई जाती है और जिससे बालकपन से ही हमारे बालकों के हृदय पर संस्कार होता है उसमें कवि चंद्र के नाम से यह कहा हुआ है—

“चंद्र कवि लिखता है कि तोमर बंस के १६ वें राजा अनंगपाल ने पृथिवीराज के जन्म के उत्सव के लिये व्यास नामक एक ब्राह्मण से मुहूर्त पूछा। ब्राह्मण ने कुछ मोक्ष कर उत्तर दिया कि यही शुभ समय है, इस कीली को गाड़िये और यह शेषनाग के सिर में जा लगेगी और फिर तुम्हारा राज्य अचल हो जायगा। यह कह कीली का धरती में गाड़ दी। परंतु राजा को विश्वास न हुआ। निदान उसने उस कीली को निकलवा डाला जो निकालने पर लोह से भरी मिली। तब ब्राह्मण ने राजा से कहा कि तुम्हारा राज्य कीली के समान अस्थिर हो जायगा और तोमर बंस के बाद चौहान बंस के राजा राज्य करेंगे और उनके बाद मुसलमानों का राज्य

होगा । राजा ने क्रुद्ध होकर उम ब्राह्मण को देश में निकाल दिया परन्तु वह अजमेर में चला गया जहां कि उम का मान अधिक हुआ ॥

(देखा हिंदी शिजावती रचम भाग पृष्ठ ११) ॥

(ख) तथा उमी पुस्तक में शाहजहाँ के समय में हुए खड्गवाह काँच के सिखे इस वृत्तान्त को भी पढ़िये

“व्यास ब्राह्मण ने तीसरे वंश के प्रथम राजा अनन्तराज को एक पश्चिम अंगुल लंबी कीली दी और उमन कता कि इसका धरती में गाडिये । शुभ मवत् १९२ अथवा इसकी मत् ७३५ में वैशाख वदी अष्टमि की राजा ने इस कीली को पृथिवी में गाड दिया । तब व्यास ने राजा से कता कि अब तुम्हारा राज्य अचल हो गया क्योंकि यह कीली जेधनाग के माथे में गडी है । जब ब्राह्मण चला गया तब राजा ने उम की बात का विश्वास न कर कीली को उखाड दिया तब उम का मोहू में भरी पाया । राजा ने मरभित्त हा उस ब्राह्मण का किन्तु ब्राह्मण और कीली को फिर गडने की आज्ञा दी । परन्तु कीली उखाड ही जगत् पृथिवी में गयी और कीली रडी तब ब्राह्मण ने कता कि तुम्हारा राज्य उम का कीले कदम में स्थिर रहेगा और उनीमवी पीढी के बाद चौदानो के राज्य रहेगा । और उनके बाद समस्तमान राज्य करेगा ॥

(देखा हिंदी शिजावती रचम भाग पृष्ठ ११) ॥

तदनन्तर “पृथ्वीराज चरित्र नामक पुस्तक में पढ़िये । - - - - - कीली ने भूमिका में इसका प्रहृत तत्पुत्रास उम की समय पाणिपत में विद्वयाम काया है-

“प्रसूत है कि पृथ्वीराज समान तम का पुस्तक शारदा धरे के उम पुस्तक (राजपुत्राना) में पृथ्वी प्रसिद्धि और प्रसूत की उम पुस्तक में उम के कि प्रसिद्धि तम मानव हुए पाप तम प्रसूत की अंशम सतार पृथिवी पृथ्वीराज कीलीत क पथल तम प्रसूत चला वनराजेन उम पुस्तक को बनाया है ।

मैन चला कि उम प्रसूत पुस्तक का प्रसूत है मरत उम पुस्तक में क्या रूप म माराश सिख तम उम म मान प्रसिद्ध म जो मरु प्रसूत का उम के भूमिका में सिख है ।

तथापि ऐतिहासिक विषय में मरु पुस्तक के उम कता भी ली मरु खगया है ।”

मैन जो यह आशय मरु में किया वह उदयपुर राज के विकगोरिया हा के पुस्तकालय में राम की एक प्रसिद्ध पुस्तक से लिया है ।

और अपनी इस प्रतिज्ञा के अनुसार उसने इस महाकाव्य के मूल पद्य का यह गद्य किया है ।

“यमुना तट पर हस्तिनापुर नामी नग्न प्राचीन बाल से विख्यात है जहाँ पांडववंशी राजा अनंगपाल तंत्र राज्य करता था । राजा की सुनीति और धर्मचरण से सर्व प्रजा मुखी और राज्यकार्य आनन्द पूर्वक चलता था । इस राजा ने अपने भुज बल से कई भूपालों का गर्व गजन कर अपनी प्रभुता के सूर्य का प्रकाश दूर दूर तक फैला दिया था सहस्रो सामन्त देश देशान्तर से आकर इस की सेवा करते थे । राजा के दो कन्या थी बड़ी का नाम सुरमुन्दरी और छोटी का नाम कमला । सुरमुन्दरी का विवाह कन्नौज के राठोड राजा बिजयपाल से हुआ था और कमला जो रूप में रति को भी लज्जित करती थी अपनी बालक्रीडा से माता पिता के हृदय को हुलसानी हुई शुक्लपक्ष की चन्द्रकला के तुल्य सुन्दरता मुघड़ाई और यौवन में वृद्धि को प्राप्त होती थी ॥

एक दिन राजा अनंगपाल अपने समस्त सामन्तों सहित हस्तिनापुर से कुछ दूर आखेट के वास्ते वन में गया । अपनी हिनहिनाहट से वज्र के तुल्य हृदय को भी कपाने और टापों के प्रनाप में शेष के सीम तक घरा को धुजाने का अभिमान रखने वाले चंचल नुरगों पर कई बाके शत्री शिकारी पोशाक पहने नेत्र हाथ में लिये चलने थे काली रात्रि के तुल्य कई मखोन्मत्त हस्त्रियों के झुड़ साथ थे जिन के गडम्यद में से झरनेव ले मगन्धित मद के पान करने को आये हुये भ्रमरों का गुंजार शब्द ऐसा प्रतीत होता था कि मानो कई चन्दीजन मधुर वाणी में महाराज का यश गाते हों । रेशमी डोरियों में बन्धे हुए कई कुत्ते अपने रक्षकों को ताने लिये जानें थे मानो मूअर सामर कुरग आदि पशुओं का गद्य पाकर उनके रक्षक में अपनी गिरामा वृज्जाने को आनुर हो रहे हों । पायदलों के ठट्टे ने चारों ओर विखर कर बन को घेर लिया और भेरी नफोरी आदि कई वाजिनत्र बजा कर पशुओं को डराने और उनका स्थान छुड़ाने लगे राजा और उसके साथी सामन्तों ने मल सभाले मूअरों के पीछे षोडे छोड़ और वान की वान में कई बड़े बड़े बराहों को भूमि पर गिरा दिया । बन में चारों ओर धूम मच रही थी त्रिचारे पशु पाण भय से डधर उधर भागने फिरने थे कि कंत कन्ती को प्रफुल्लित करने वाले सूर्यदेव ने मिर पर आकर मानो डम हिमा में शिकारियों को निवारण करने के लिये क्रोध दृष्टि धारण की ही, प्रचंड ताप में पृथ्वी को तपा दिया मूर सामन्त व मिवाहियों ने जहा तहा वृक्षों का माया देख कमर खोली और जलपानादि करके भ्रम दूर करके को लेटे, राजा भी एक बट वृक्ष की मघन माया में बैठे हुए था कि अचानक उमकी दृष्टि बन में एक स्थान पर पड़ी तो क्या देखता है कि झाड़ी की ओट में एक अजा अपने दो बच्चों को लिये बैठी है उन्नर में एक भेड़िया आकर बच्चों पर लपका चाहता था कि दानों को उठा कर ले जाय इतने में माता ने मचेत हो भेड़िये से युद्ध करना

आरंभ किया और भेटिये को भगा कर बच्चों को बचा लिया। यह कौतुक देख राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उस स्थान पर कुछ बिन्ह कर दिया कि भूल न जावे। जब अपनी राजधानी को लौटा तो दिन भर के परिश्रम से थका हुआ भोजनोत्तर वह शयन गृह में आकर निद्रा निमग्न हुआ। प्रभात होते ही गुरु व्याम देव के आश्रम पर जा हाथ जोड़ कर ऋषि से वह वन का चरित्र वर्णन किया। व्याम देव कुछ बाल तक समाधिस्थ हो बोले कि राजन् ! वह भूमि महा पवित्र और बीर है यदि वहाँ गढ़ बनाया जावे तो उम गढ़ का स्वामी सर्व भूमंडल के अधिपतियों का सर्दार होवे। राजा ने निवेदन किया कि महाराज मैं वहाँ एक नग्न बसा कर गढ़ बनाऊँगा। व्याम देव बोले कि आज निधि, नक्षत्र वार योगादि सर्व सुभ है अत एव एक लोटे की कीली मगवाओ कि वहाँ गाड़ दी जावे। अज्ञानुमार कीली मगवाई गई व्याम राजा महिंत उमी स्थान पर गये और मंत्र पढ़ कर कीली वहाँ गाड़ दी जहाँ बकरी ने वृक का भगाया था। फिर राजा से कहा कि यही गढ़ की नींव दिलवाना। हम कीली को निकालने का माह्रम मन करना यह कीली शयनाग के सिर में जाकर बैठ गई है सो जब तक यह अचल है तुम्हारा राज्य भी अचल रहेगा। व्याम के मुख में यह मन्त्र कर कि यह किल्ली शेष के मिर में जा बैठी है' राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और कहने लगा कि महाराज ! इतनी सी किल्ली शेष के मिर तक कैसे पहुँच सकती है ? एक दिन कृतहल वम राजा ने अपनी शका निवारण करने को बिना विचार उम कील्ली को निकलवा लिया। कील के निकलते ही भीतर में रुधिर की धारा छूटी और कील का मुख भी रुधिर से भीगा हुआ देखा। राजा को बड़ा पश्चानाप हुआ कि मैं केवल अपन सहाययुक्त चिन्म का मतोप करने के निमित्त उम मन्त्रि की आज्ञा उल्लघन की और अपने ही महा हानि पहुँचाई। फिर उम स्थान पर एक नग्न बनाया क्योंकि उम किल्ली को राजा ने ढीली कर दी थी अत एव उम नग्न का नाम भी ढिल्ली ही रहा जो वर्तमान काल में दिल्ली नग्नके प्रसिद्ध है। राजा की आज्ञा से वहाँ बड़े २ महल चौहट्टे और विशाल भवन बनाये गये और फिर वही राजधानी स्थापन हुई" ॥

(पृथीराज चरित्र पृष्ठ ३२-३५)

निदान इन तीनों वृत्तान्तों को जिस चद कवि के नाम के ओट से ग्रन्थकर्ताओं ने लिखा है उनको उसी कवि के मूल पद्य से मि ने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि उन्होंने (ग्रन्थकर्ता) इस दिल्ली किल्ली कथा के मूल पद्य को भले प्रकार पढ़े और समझे बिना जैसा जिसके ध्यान में केवल दंत कथाओं पर से आशय आया वह अपने अपने ग्रन्थों में लिख लिया है। इनको मूल पद्य से मिलाने पर वृत्तो में यह बड़े बड़े अंतर स्पष्ट देख पड़ते हैं—

हिन्दी शिक्षावली के कथन में ॥

१ चंद्र का मूल पद्य चाहे शुद्ध वा अशुद्ध वा जाली कैसा ही क्यों न हो परन्तु उसके अनुसार वृत्तान्त लिखने की प्रतिज्ञा करने वाले को उसके विरुद्ध कुछ भी नहीं लिखना चाहिए उपन्यास और नाटकादि लिखने के भी नियम है। ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि जहाँ स मूल कथा ग्रहण बरी हो उम लेख के वृत्तो को ऐसे बदल देना कि उनमें रात्रि दिन का भी अंतर पड़ जाय। देखो चंद्र ने अपने मूल पद्य में दो दिल्ली किल्ली कथा वर्णन किये हैं। एक तो कलहन वा कल्हन वा किल्हन राजा के समय की और दूसरी राजा अनंगपाल के समय की परंतु इन ग्रंथकर्ताओं ने दोनों के वृत्तो को घेल मेल करके एक ही कथा कर दी है। क्या मूल पद्य को पढ़ और समझ कर लिखने वाला ऐसी भूल कर सकता है ?

२ चंद्र ने मूल पद्य में कही नहीं कहा है कि राजा अनंगपाल तोमर वंश में सोलहवा राजा हुआ था ॥

३ और उसमें यह भी नहीं कहा है कि अनंगपाल न पृथ्वीराज के जन्म उत्सव के लिये व्यास नामक ब्राह्मण में किल्ली गाड़ने का मुहूर्त पूछा था ॥

४ और न यहाँ कही मूल में कहा है कि भविष्य कहने पर राजा न अप्रसन्न होकर व्यास को निकाल दिया और वह अजमेर चला गया जहाँ कि उमका अधिक मान हुआ ॥

खड्गाराय के कथन में ॥

५ व्यास का राजा को पृथ्वीराज अंगल कीली देना मूल पद्य में वर्णन नहीं किया हुआ है। किन्तु जो किल्ली का रत्न समय में गड़ी उमका कुछ परिमाण नहीं लिखा है और जो अनंगपाल के समय में गड़ी थी उसका रूपक १२ में गाँठ से अंगुल दोष्य विविध्य ६० अंगुल का परिमाण लिखा है ॥

६ नीचे राजा का समय ११२ ईश १२ वर्षों १३ मूल पद्य में नहीं कही कहा है ॥

७ नीचे को उपादन पीछे फिर उमका मापना और तब उन्नीस ही अंगुल पृथ्वी में धरना कही भी मूल पद्य में नहीं कहा हुआ है ॥

८ व्यास का अनंगपाल का कहना कि उत्तरीय उन्नीस पीछे राज्य चौहाना का हाथ में जायगा मूल पद्य में नहीं वर्णन किया हुआ है ॥

पृथ्वीराज चरित्र के कथन में ॥

९ हस्तिनापुर का नाम तक मूल पद्य में नहीं है और न उमका और अनंगपाल के राजशासन की अन्यन्त प्रणमा उममें चंद्र ने कथन की है ॥

१० एक दिन राजा अनंगपाल का हस्तिनापुर से आशेट के लिये बन में जाना मूल पद्य में विन्कुल नहीं है। किन्तु रूपक १७ में कलहन राजा का बन क्रीडा करना कहा हुआ है ॥

११ आंबेट का मविस्तर वृत्तान्त, जैसा कि वर्णन किया गया है, मूल में नहीं है ॥

१२ राजा अनंगपाल का एक वट वृक्ष की मधन माया में बैठना भी मूल में नहीं है ॥

१३ राजा अनंगपाल का एक अज्ञात एक भेड़िये के साथ युद्ध करना देखना लिखा है उसके स्थान में मूल पद्य के रूपक १७ में कलहन राजा के प्रसंग में 'मुमा और स्वान शब्दों का प्रयोग हुआ है ॥

१४ इस कौतुक की भूमि पर राजा अनंगपाल का चिन्ह कर देना कि भूल न जावे मूल में नहीं है ॥

१५ दूसरे दिन राजा अनंगपाल का गुरु व्यामदेव के आश्रम पर जाना आदि भी मूल में नहीं कहा है ॥

दिल्ली में कुतुबमीनार के पास जो एक लोहे की बड़ी कीली अब तक विद्यमान है उसके विषय में पुरातत्त्ववेत्ता विद्वानों में मत भेद है। चबूतों की ख्यातियों में कलहन, कलहन, कलहन और कलहन का चंद्र भी नामान्तर मिलता है। तथा कलहनादि नामान्तरो की चबूतों की व्युत्पत्ति हो सकती है। अतएव अनुमान होना है कि कीली पर जो नाम लिखे हुए हैं और उनमें जिस राजा चंद्र का नाम है वह यही राजा कलहन उपासक चंद्र होगा।

यस्योद्धृतं तं प्रतीयमानं चक्रं नमःप्रामाण्यम् ।
 वल्लोत्पत्तिर्गणितं चित्तं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं ॥
 नीलोत्पत्तिर्गणितं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं ॥
 यस्याद्याद्यधिव्ययनं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं ॥ १ ॥
 खिलस्यैव चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं ॥
 मूर्त्तौ चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं ॥
 यस्याद्याद्यधिव्ययनं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं ॥
 नाद्याद्याद्यधिव्ययनं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं ॥ ३ ॥
 प्राप्तेन स्वभूमिर्गणितं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं ॥
 चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं चक्रं ॥
 नेनाय प्रणिधाय भूमिपतिना भावेन विष्णो मन्त्रिम् ।
 प्राशुविष्णुदे विरो भगवतो विष्णोर्ध्वंजस्स्थापितः ॥

इस कीली के परमाणु के विषय में इलाहाबाद लियेरी इन्स्टीट्यूट की बनाई हुई हिन्दी रीडर नम्बर ५ अर्थात् हिन्दी शिक्षावली भाग पंचम में जो सन् १८९७ ई० में पांचवी बार छपी है, यह लिखा है

“इसी लाट के पास एक बड़ी लोहे की कीली लगभग १६ इंच मोटी धरती में गड़ी हुई है। धरती से ऊपर इस कीली की ऊंचाई २२ फुट है और कनिगहम

साहब लिखते हैं कि यह निश्चय नहीं हुआ कि यह कीली पृथिवी के नीचे कितनी दूर तक गई है। एक बार २६ फुट तक धरती खोदी गई थी परन्तु कीली की जड़ का पता न लगा” ।

सो अशुद्ध है। मालूम होता है कि ग्रन्थकर्त्ता ने जनरल कनिंघम साहब की सन् १८७१ की रिपोर्ट पुस्तक १ पृष्ठ १६९ ही पढ़ कर यह वृत्तान्त लिख दिया कि जिसको अब तक अनेक बालक पढ़ कर मिथ्याज्ञान उपार्जन करते चले आते हैं। यह तहकीकात पीछे के अन्वेषण से रद्द हो गई है कि जिसका वृत्तान्त उक्त जनरल साहब की रिपोर्ट पुस्तक ४ पृष्ठ २८ में लिखा है। पिछली तहकीकान के अनुसार इस कीली की ऊंचाई धरती से ऊपर २२ फुट और धरती के नीचे केवल बीस इंच और कुल लंबाई २३ फुट ८ इंच निश्चित हुई है। उक्त सभा जो अपनी पुस्तक में इस भूल को सुधार दे तो अत्युन्नत है ॥

इति ।

अथ लोहानो आजान बाहु समय लिख्यते

(चौथा समय)

पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को बत्तीस हाथ ऊंची गोष से
कूदने की उत्तेजना देना ॥

कवित्त - इक्क समय प्रियिराज । राज ठड्डा सामंतह ।

हथ बत्तीस इक गोष । चित्रसारी कहवत्तह ॥

घटिय सेष दिन रह्यौ । सबै भर भीर गहम्मह ।

नग्रनाथ नागौर । पट्टराजंत इन्द्र पह ॥

उच्चरिय बत्त इमि मत्ति करि । सोइ जोधा पञ्चह जिसौ ।

भै भित्त चित्त मै भित भिरै । इह मुथान कुद्दै इसौ ॥छं० १ ॥रू० १॥

लोहाना का कूदना

कवित्त दुचित्त चित्त सामंत । चाहि लगिय टगटगिय ।

चित्र जानि पुत्तरिय । नयन जुव्वे पग मगिय ॥

रज्जि मत्ति नादान । कन्ह उक्करिय बत्त इह ।

चामुंडा जैतंसि । रोस आक्रस्स किर्वा वह ॥

ठड्डौ सु इक्क लोहान भर । कहर कवुत्तर कुद्दौ ।

जो नेक चूकि ऐसो गिन्यौ । माप अंब सू हल्ल्यौ ॥छं० २ ॥रू० २॥

यह समय हमारे पाम की मन्त १८४३ की लिखित पुस्तक में नहीं है किन्तु उसके इधर की लिखी मन्त पुस्तकों में मिलता । तथा इस कथा का सदर्भ तीसरे समय के रूपक २९ "घोडम गज ऊरुद्ध"—में लगाकर अभिप्राय समझने से ध्यान में आवेगा कि एक दिन राजा पृथ्वीराज मायंगल के समय सोलह गज वा बत्तीस हाथ ऊंची चित्रसारी की गोत्र में सामन्तो महित खड़े थे और एक चित्रकार ने एक पत्र अर्थात् चित्र पेश किया उसको संभरी नाथ देख रहे थे कि देखते देखते वह हाथ में से छूट पड़ा । उसको लोहानो अजान बाहु ने कूद कर अधराच में डी झड़प लिया इत्यादि ।

१ पाठान्तर - अजान बाहु । पृथीराज । ठड्डा । ठड्डा । बड्डा । सामंतह । बत्तीस । कहै । वर गहम्मह । बत्त । मत्ति । उजोधा । जिजमो । भित्त । चित्त । कुद्दै ।

२ पाठान्तर—मत्ति । बत्त । चामुंडा । जैतंसि । आक्रस । चड्डौ । नेकि । बेक । असौ ॥

लोहाने के कूबने की प्रशंसा ॥

कवित्त इक्क कहै धर जीव । काज पंषिनी झरपिय ।
 इक्क कहै सो ब्रह्म । इन्द्र को पुरषेव नंषिय ॥
 इक्क कहै आकाम । ताम हो उडियन तुट्टी ।
 इक्क कहै मुरलोह । ताम कोई नर लुट्टी ॥
 कविचद किति उत्पम कहै । लोहाना तोंवर मुभर ।
 जाजुल्लि राइ मुन किट्ट चिन । नथिय हूवै दुज्जे मुभर ॥

॥ छ० ३ ॥ सू० ३ ॥

पृथ्वीराज का बौड़ कर लोहाना के पाम ग्राना और उसे हिये लगाना ॥

अरिल्ल दौरि राज पृथ्वीराज सु आयो । पमापमा अप्प उच्चयो ।
 और मूर मामंनह अगी । हियरा मझिय परि लग्यो ।

॥ छ० ४ ॥ सू० ४ ॥

उसे आप उठाकर अपने घर ले जाना और इलाज करना
 अरिल्ल-- अप्प उचाइ आप गृह आने । मत्र तवीव बहुन मनमाने ॥
 मौज मना मझि होट मुमगो । च्यारि पहर दिवमह मझि चगो ॥

॥ छ० ५ ॥ सू० ५ ॥

हकीमों का लोहाना को दवा के लिये ले जाना और नव
 दिन उसका अच्छा हो कर पृथ्वीराज के पाम ग्राना
 दूहा नव तवीव तमलीम करि लै घरि आइ लुहान ।
 नव दीहे मिर झल्लयो दूहोलन गय ठान ॥ छ० ६ ॥ सू० ६ ॥
 चद पचमो अनि मुअछ, दिण विप्र बहु दान ।
 तिथि तेरम रविवार दिन पय लग्यो चीहान ॥

॥ छ० ७ ॥ सू० ७ ॥

पृथ्वीराज का प्रमन्न हो कर लोहाना को ग्वालियर, रणथम्भौर,
 उडुछा आदि पांच हजार गांव देना ॥
 कवित्त पय लग्यन चहुवान । मौज ग्वालिर मुदिघो ।
 गिनयंभह ऊडलो । कहर मूरखर किशो ॥

३ पाठान्तर कट । बो । बहै । उ डयन । पोड । ब' । तीयर । किट्ट ।
 दुज्जे ॥

४ पाठान्तर राजा । पृथीराज । उचायो । मझिण ।

५ पाठान्तर - आने । बहुवन । मनै मानै । मुमगा ।

६ पाठान्तर झल्यो ॥

७ पाठान्तर-- पचमो । दिये । तेरमि । लग्यो । चहुवान ॥

लोहाना आजान (बाह)★नाम थप्ये बहु अप्ये ।
महम पंच दिय ग्राम । जैत ऋत्रिचद मुजाप्ये ॥
तिहि धरिय मञ्जि यट् अप्पिये ॥ लै पट्टा सीमह धरिय ।
रक्खी मुवत्त दिन तीन मह । षग्ग मग्ग अप्पी धरिय ॥

॥ छं० ८ ॥ ६० ८ ॥

आजानुबाहु का आना और पृथ्वीराज का हाथी घोड़े आदि बेना ॥

दूहा पूनम तिथि मंगल दिनह, गृह तेगिय आजान ।

आसन छंडि सु अप्प दिय, बहु आदर मनमान ॥

॥ छं० ९ ॥ ६० ९ ॥

छंद पद्धरी नव दून अप्पि मदझर गयंद । कज्जल मकोट उज्जल अनंद ॥

सै पंच दिन्न वाली पवग । गो अप्प मैरु वान)★ग्रहता कुरग ॥छं०१०॥

सै पंच दिन्न अनि उट् अच्च । कनार भार पक्कार कच्च ॥

दोइ सै दिन्न दाभी मुचग । अलकन नाम द्रवण मुअग ॥छं० ११॥

सिरपाउ भाउ नप्ये सरम्म । को गने द्रव्य मडार अम्म ॥

मामन सूर मुख नूर तथ । ★ ★ ★ ॥छं० १२॥

अव्वमराइ जामानि जट् । चामडराइ मन मुक्कि मह ॥

गोयंद राइ पीची प्रमग । उरळगि अग्गि तह मुप्प अगा ॥छं०१३॥

अप्पेन सूर मामन और । खरगोम लहै पै कीम दौग ॥

ऐ सरम मव्व मानन सूर । निन चहै नाम आजान नूर ॥छं०१४॥

जुग्गिन पुरेम कजि अप्पि जीव । ऐनी मव्वत ह्य्य पुडीव ॥

मिर पटा छाप लोहान होइ । लग्गे मुमरह मव्व पाइ लाइ ॥छं०१५॥

कप्पुर चीर मागर मुनीर । मह च्च धान जोहर मुहीर ॥

फुल्लेल अरगजा बहु मुग्ध । कोडार भार उग्गइ मुग्ध ॥छं०१६॥

कामंसु अप्पि ऐसे मुक्कित्त । परधान मान करि मानमत्त ॥

रत्तो मुस्वामि धम्मह मुम्बच्च । ग्रहि चलै स्वाभि चारे मुत्तच्च ॥

॥ छं० १७ ॥ ६० १० ॥

८ पाठान्तर लगाम । नहुवान । दिनी । रिनयिमह । उंइला । सूरवर ।
विन्नो । ★ अधिक पाठ है । थप्ये । अप्पे । जप्पे । रती । मरव्वत दिन तीन पर ॥

९ पाठान्तर—पूिम ॥

१० पाठान्तर अनंद । सै । ★ अधिक पाठ है । दिन । अछ । कछ । सै
नषे । सरस । गने । अस । मुपि । चामंडराय । मुक्कि । सव्व । मुनीर । जोहर ।
सुरत्त । ग्रहि । डोरे ॥ ★ नाठ उपस्थित पुस्तकों में नहीं है ॥

लोहाना के बीररत्न का वर्णन ॥

गाथा - लोहाना आजानं । बानं पथ भीम जुद्धानं ॥

आ आरूप सरूपं । बंकं भरं पद्धरं करनं ॥छं० १८ ॥ रू० ११॥

दूहा लोहाना तौबर अभग, मुहर सब्र सामत ।

साई काज मुधारना, ढंडोलन गय दंत ॥छं० १९ ॥ रू० १२ ॥

लोहाना का पांच हजार सेना लेकर ओड़छा के राजा जसवन्त
पर चढ़ाई करना ॥

कवित्त उंडच्छा अरि थान, कच्छ ईहां धर रत्नौ ।

नाम नाम जमवन, पद्म राजन धर पत्नी ॥

लोहाना अनवीर, लीय वारण समर्थे ।

माञ्ज मेन सामन, कछह रावन दम कथ्ये ॥

हज्जार पत्त मेना समय, हरि जुद्धार धर कथ्यो ।

कालकृति गमन सागरन दिन, टाक भेर गिर हल्लयो ॥

॥ छं० २० ॥ रू० १३ ॥

ओड़छा पर चढ़ाई को शोभा का वर्णन ॥

छंद गीता मारती मजि नथ्यो नाम युद्ध धाम केन राम पूर्य ।

पत घोर घट्टा नमृद पट्टा उम उलट्टा मूरय ॥ २१ ॥

धु धरिगि भान पुरमान हम जान हल्लय ।

कनवज्ज थान परि भगान मूरनान मल्लय ॥ २२ ॥

आजानुवाह परे अह गज्ज गाह धम्मरे ।

चह चह मद्द गज्ज मद्द भटा भद्द उणरे ॥ २३ ॥

नारद्द बक्क मूर हक्क लेयन्न लकं जुद्धरे ।

ऊड़छा उणारि कठला करि पराभण्णुरि अप्पुरे ॥

॥ छं० २४ ॥ रू० १४ ॥

ओड़छा के राजा जसवन्त का सामना करने के लिये प्रस्तुत होना ॥

दूहा -मुनी धाह जमवन नृप, आयो मेन मुमज्जि ।

ढलकि ढाल वढल मिलिय, पुव्व अडाउ अवज्जि ॥

॥ छं० २५ ॥ रू० १५ ॥

११ पाठान्तर -पयु । वक ।

१२ पाठान्तर—मथ । ढंडोल गनय दन ।

१३ पाठान्तर -उंडच्छा । थान । कछ । इही पं । । मजि गमत ॥

१४ पाठान्तर -पुरेलानं गठय पुम्परे । वर । लेयन । उंडछा । कंठला ॥

१५ पाठान्तर -चय । नृप । ममाउ ॥

लड़ाई होना और लोहाना का जीतना ॥

छंद विराज — बजे मिथु नट्टं । करी सुक्कि मट्टं ॥

हकं सूर बज्जे । मनो मेघ गज्जे ॥ २६ ॥

छुटे अग बाजी । भ्रमे मार भ्राजी ॥

मने गोम धोमं । मगो राह मोमं ॥ २७ ॥

लिये हथ्य वथ्यं । मनो जुद्ध पथ्यं ॥

धरे धीर धारी । वकें मार मारी ॥ २८ ॥

ग्रहे मीम ईमं । कग रंत दीमं ॥

जुटंतं मरहं । मने एम कहं ॥ २९ ॥

लरै यो लहानं । अमंगं जुवान ॥

जमव्वंत जोरं । नरक्केनि धोर ॥ ३० ॥

गमेने गमान । गग् धग्ग थानं ॥ छ० ३१ ॥ ऋ० १६ ॥

दूहा पेंवर भुवर जल्लनरग्ग मुर गग् मुर थान ।

जुद्ध जुग्गे जमव्वतमी, रंत जिज्यो लोहान ॥ छ० ३२ ॥ ऋ० १७ ॥

लोहाना का गढ़ पर अधिकार कर लेना ॥

कवित्त महन उभय लोहाना, नग्ग परि पाह मज्जे ।

गा धार पर पर उन्नर मज्जगज्ज विमज्जे ॥★

मय गन्तव्व नर पेन नो वध रित जिज्यो ।

पट्टु मत्तम (परि) पव्वग नो नग्ग वट्टि जिज्यो ॥

परि लुथा गोम मुन हून परि धर कित्ती गट्ट भज्जियै ।

परि जे म वपुत्तो भग्ग परि इरुयानि मन रज्जियो ।

॥ छं० ३२ ॥ ऋ० १८ ॥

इति श्री कविवंद प्रिरचिते प्रथिराजरासके लोहाना अमानवाहु

समय नाभ चतुर्थ प्रस्ताव नपूर्णम् ॥ ४ ॥

१६ पाठान्तर भनो । अगि । मनो । हथ । मनो । राम । मचै ।
लरै । यो ।

१७ पाठान्तर - थल्लनरह । मुर । जमव्वंसा ॥

१८ पाठान्तर लुहान मजे । ★ यह पाठ संवत् १८५९ वीं लिखित
पुस्तक में नहीं है ॥

† यह अधिक पाठ है । कित्तो । लिक्षी ! भज्जियो । वयठो । रज्जियो ।
लेहान ॥

अथ कन्हपट्टी* समय लिख्यते

(पांचवा समय)

पृथ्वीराज के भोरा भीमंग से बैर होने का कारण ॥

दूहा † -सुकी कहै सुक मभरो, कहीं कथा प्रति प्रान । †

पृथ् भोरा भीमंग पट्ट, किम हुआ बैर विनान ॥छ०१॥रू० १॥

१ पाठान्तर युक्त । कते सम्भरी । कते । पान । पान । प्रथु प्रिथु । वीर ॥

★ कन्ह पृथ्वीराजजी का चाचा अर्थात् काका था । वह सदा अस्त्रों के पट्टी क्यो बाधे रहता था इसका वर्णन इसमें होने से इसका "कन्हपट्टी समय" नाम हुआ है ।

इस समय में गुजरात के दूसरे चालुक्य राजा भोला भीम का नाम और उससे पृथ्वीराज के बैर होने की कथा प्रथम ही आई है । और इसमें कही भी यह नहीं कहा हुआ है कि गोमेश्वरजी को भीम ने मार डाला था और उसका बैर लेन को पृथ्वीराजजी ने उस पर चढ़ाई करके उसे मार डाला था । जिन लोगों के हृदय में यह रासो काटा सा मलना है उनके ही मानने के अनुसार भीम देव दूसरा स० १२२५ ई० ११७८ में गट्टी पर बैठा था और २३ वर्ष राज्य करके स० १२९८ ई० १२४१ में परलोक को गिधारा । और पृथ्वीराजजी का जन्म स० १२०६ में होकर वे ४३ वर्ष की वय में स० १२४९ में मरे । इस में गिद्ध है स० १२४९ तक तो दोनों राजा निर्विवाद समकालीन रहे जब रत्ना उनके मार जान का ह्रास सो यहाँ है नहीं । रत्ना वह बावेगा वहा हम उ के विषय में जी ऐसी ही मन्व-विवेचना करेगे । अतएव यह समय तो क्षेत्रक गिद्ध नहीं होता ॥

† एक पाठ की शका है "क्या दूहा और दोहा की मात्रा में कुछ भेद है" ? उत्तर-कुछ भेद नहीं है । दूहा पुराना और दोहा नया प्रयोग है । उनमें से दूहा "दु + ऊह" में बना है अर्थात् जिनमें दो ऊह हो उसे दूहा कहते हैं । और हिन्दी दोहा शब्द संस्कृत दोहा में इस प्रकार बना हुआ जान लेना चाहिए-दु + अ + उ = दु + अ + व = दु + ऊहा = दु + अ + ऊहा = दु + अ + ओ + हा = दोहा - हिंदी दोहा । षट्भाषा के प्रचार के समय में इसको दूहडिका वा दोहडिका भी कहते थे । उसका संस्कृत म लक्षण और उदाहरण यह है-

मात्रा त्रयोदशकं यदि पूर्व लघुक विराम ।

पञ्चादेकादशकं दोहडिका द्विगुणेन ॥

पृथ्वीराज के कुंअरपन का तपतेज वर्णन ॥

कब्रित कुंअरपन प्रथिराज । तपै तेजह मु महावर ॥
 सुकल वीजु दिन हुतें । कला दिन चढत कलाकर ॥
 मकर आदि मक्रमन । किरन वाढे किरनाकर ॥
 यौ सोमस कुंआर । जोति छिन छिन अति आगर ॥
 हय हथिथ देत मंके न मन । पल षंडन गढ गिरन वर ॥
 चिहु ओर जोर दसहूं दिमा । कीरति विस्तरि महिय पर ॥ छं०२॥ ह०२॥

गुजरात के राजा भोरा भीम का तपतेज वर्णन ॥

कब्रित भोरा भीम भुअग । तपै गुज्जर धर आगर ॥
 है गै दल पायक्क ★ । पग्गवल तेजह सागर ॥
 काका सारंगदेव । देव जिम ताम बड़ाइय ।
 तामु पुत्र परताप । मिघ मम मन मु भाइय ॥
 परताप मीह अरमीह वर । गोकुलदाम गोविद रज ।
 हरलिह म्याम भगवान भर । कुल अरेह मुष नीर सज ।
 ॥ छं० ३ ॥ ह० ३ ॥

तथा उसका प्राकृत उदाहरण यह है

माई दोहंडवाण गुण हं आ नं म जं ।

वृन्दावन पगकु । यजिओ रं ।

अर्थात् —

हे मात । दोहंडवाण श्रुवा वृण गागला मिन्या कर्मि रमाल चलितः
 कुप वृन्दावन ।

घनशुजे वृन्दावनस्य निवर्द्धनकुजे । माई दोहंडवाण न मनन राधिकाया
 दोहंडवा पाठ श्रुवा । गुणघु वाचयेन वृषा नयंत ॥

यह २४ मात्रा का छंद है । उ में यति पर । १ १ - । ४१ पर है । और
 छममे ६ ताल होते हैं—४ ४' २ १२' । - - - , ऐसा दाँत गान में ठीक दीपता है ॥

* यहाँ शुक और शुक्री में कविता अभिप्राय चर आर उरकी स्त्री से है ।
 क्योंकि यह पत्र महाकाव्य उनके ही संवाद में रचना गया है और आगे भी कई एक
 समयों में यही प्रयोग आवेगा । चर प्राय कवि को हीर की उपमा देता है—“आस
 अमन कवि कीर” ।

२ पाठान्तर कुअरपन । कुअरपन । पृथीराज । ★ ज्यो ज्यो अधिक पाठ
 है । जिम । बढे । कुआर । कुआर । छिन ही छि । हथि । गिनर । चिहु । चिहुं ।
 दिशा विस्तरि ॥

३ पाठान्तर गुजर । हय । गय । पाइक । ★ प्रचड अधिक पाठ । पायक ।
 सु । सारंगदेव । बड़ाई । तास । भाई । सिंह । मिघ । श्याम । भगवान । सजि ॥

उसके काका और चचेरे भाइयों की बीरता का वर्णन ॥

दूहा जोरावर जुरि जंगमति, भरे बध्य नभ गाज ।

दुरुम स्वामि छुदत सु इम, मनो तितर पर बाज ॥छं० ४ ॥ रू० ४॥

तिन पर तुट्ट बीज जौ, जिन पर राज अरुट्ट ।

राजकाज संमुह भिरन, दई न कबहू पुट्ट ॥छं० ५ ॥ रू० ५॥

गाथा - मारे रान मुरानं झालासबलं अंगं झालाल ।

जिन भंजे जैमालं । कहुयौ भ्रातराजमि पचं ॥छं० ६ ॥ रू० ६॥

पाट बंठने पर प्रतापसी को गर्व होना ॥

दूहा मारंग दे मुरलोक गन, भौ प्रतापसी पाट ।

सात भ्रात सेवा करे, तपै नेज थिर थाट ॥छं० ७ ॥ रू० ७॥

अद्धमहस दलवल अनंत, बहुत प्रब्व वर अप ।

मनरि सहम धर गुज्जरनि, मधि ओपन जिमकाप ॥छं० ८ ॥ रू० ८॥

स्वामि धम्म रने मुमन, जे ठेले गजठट्ट ।

डरै परब्वन शिपर डर, करै मनु दहवट्ट ॥छं० ९ ॥ रू० ९॥

प्रतापसी के देश उजाड़ने की पुकार भीमंग के पास होना ॥

दूहा भोरा भीम मुआठ के, कोटै एक मैवास ।

तिन उज्जारत देस को पारि पुकार नूप पास ॥

॥ छं० १० ॥ रू० १० ॥

गाथा प्राण सम्य पुकार आई तरिद भीम ररवार ।

करि नीमान मुआठ बाड राज माजि भातुरथ ॥

॥ छं० ११ ॥ रू० ११ ॥

४ पाठान्तर - जग । बय । रानि । स्वामि । छुदत । मनो । नीतर ॥

५ पाठान्तर - ज्या । अरुट्ट । पिट्ट ।

६ पाठान्तर - रान । भजे ॥

७ पाठान्तर - मारंगदे । भय । करे ।

८ पाठान्तर - प्रब । अप । मनरि । गुज्जरनि । उपनि ॥

९ पाठान्तर - स्वामि । रने । धम्म । ठट्ट । डरन । परबत । शिपर ।

करता । मनु । वट्ट ।

१० पाठान्तर - भुवाड । सं० १६८७ की में "कोई एक" के स्थान में "धर बाबय" पाठ है । उजारत । देशकों ॥

११ पाठान्तर - पुकारं । आई । निसान । निमानां । बाब । माजि ॥

बूहा—चालुक्यकह गुज्जर धरा, ईस नेति किय भीम ।

मो डम्भें तिहु पूर सुवर, को चंपे अरि सीम ॥

॥ छं० १२ ॥ ह० १२ ॥

भोरा भीम की लड़ाई ॥

छं० पद० चढि चलन राज आवाज कीन । नीम न नद् वज्जे बर्जान ॥

चिहु ओर भरनि छुट्टे तुरंग । मजि मिल्ह भाति नाना अर्भंग ॥

॥ छं० १३ ॥

धम धमकि धरनि थाने सुभंग । गज्जिय अकाम के गहर गंग ॥

भय हह हाक आतक जोर । सह सुरन पेरि भेरीन घोर ॥ छं० १४ ॥

उडि रेन सेक मृदिग अकाम । परि रोर मोर जहां नहा मेवास ॥

धरि रोम मुच्छ मुररन भीम । रम वीर वक्र मंत्रोध हीम ॥ छं० १५ ॥

चंपी सु भीम थियन मुजाम । डेरा मुदीन नूर सरित नाम ॥

जुररा गिगार नीतर वदेर । पेलन मरिन तट भइ अवेर ॥ छं० १६ ॥

इहि समय नाम परतापसीह । लट्ट बंधु साथ जग्गी अवीह ॥

ए हुने मकल बाहुर ने येर । नय मडन आइ पेलन अवेर ॥ छं० १७ ॥

माहराज नाम साहन गिगार । मरिनाम मडल बहु पिथै वार ॥

गुनि नीर दान छट्टे छट्टार । जनु भूत भाति भय भीत भार ॥ छं० १८ ॥

जमुना कि जग्गि काटी करार । गिर धुनि मडावन दियो डार ॥

गज एक वारि गीवंत इरि । नित पर मु नुट्टि जनु मिय चरि ॥ छं० १९ ॥

धरि पंग पाप जनु धरिपि धाय । भुज परचो नभम वदर मुमाय ॥

दिपि दुरद उगहि आवन आनाधुनि करि मु अरि उन पीलावन ॥ छं० २० ॥

धायो नि समुह साहन गिगार । जनु बंधु जंम उपर अपार ॥

कलपन पाइ जनु पवन आइ । हल हले पव्व जिन नित रिठाइ ॥ छं० २१ ॥

जम रुअ इअ जनु जंम द्वार । द्वय ध्रात वाच घेरे असार ॥

इक ओर वारि द्रह गहर गूल । इक जोर जोर वर उंच दूल ॥ छं० २२ ॥

परता । सनमृप परचो जाइ । डारंत अश्व असि कियो घाइ ॥

बहि सीस परन दो ह्य करार । परबूज जानि विक्रयी विकार ॥ छं० २३ ॥

जगनाय हंडि जनु बंदि दोइ । इह भति कुंभ कुंभी न होइ ॥

गज पन्यो धरनि साहन गिगार । किल्लो अकाम परताप पार ॥ छं० २४ ॥

अरसीह पुठु जग धन्यो देप । सनमुष्प क्रम्या सम सीह भेष ॥

१२ पाठान्तर—किये ॥ यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है किन्तु उसके इधर की लिखित पुस्तकों में है ॥

१३ पाठान्तर—नीमान । बजे । चिहुं । चिहुं । उर । छुट्टेनि तुंग । तितुंग । भाति ॥ १३ ॥

गज गहरी दौरि सिर पंघ सुड । दिय गुरज चीर द्वय हृथ्य सुड ॥ छं० २५ ॥
 फट्योनि संस भइ पच फारि । गज ढ्यौ जानि गिरवर विसार ।
 सुनि बत्त राज भोरा सु भीम । पायौ अनत दुप आप हीम ॥ छं० २६ ॥
 कह वाव किभौ नृप अप्प साम । तुम मो न हमहि चा करह काम ॥
 ॥ छं० २७ ॥ ॥ ॥ १३ ॥

उन सानो भाइयों का चलचित्त होना ॥

दूहा भा उमुय अहकर करि हन्यो सुवर गजराज ।

दोष हमहि लग्यौ नही । आप हि कीन अकाज ॥ छं० २८ ॥ ॥ १० १ ॥

पृथ्वीराज का उन चलचित्त मानों भाइयों को जागीर

और सिरोपाय देना ॥

दूहा सात भ्रात निज वात सुनि, जाए अप्प चलचित्त ।

प्रथीराज सुनि कुंवर ने, आप बुआय हित ॥ छं० २९ ॥

दिये हृथ्य लिषि गाम पट, रहे वाम शिर आन ।

चालुक चानुर वीर वर नि उपत मुप पानि ॥ छं० ३० ॥

बाजो मत दिने वगमि, मद्योय मत भ्रात ।

एक एक मिर पाव दिय, बहु आदर सिय आन ॥ छं० ३१ ॥

गुरु लज्जा गुरु मत्ति गुरु, पन गुरु माप नरेम ।

गुरु उर मत गुरु मूतन, गुरु गति मनि गुरु भेभा ॥ छं० ३२ ॥ ॥ १० १५ ॥

यान । राजिय । गग । १८ ॥ रैन । सैन । मिशाम । मंछ । कर्क । १५ ॥
 सुजाम । नाम ॥ १६ ॥ * इस छंद की चारो तुकें सं० १६-७ की पुस्तक में नहीं
 है । नाम । परना । मिह । बाहुन । मझ । अवेरि ॥ १० ॥ नाम । मिशान । डि ।
 पीवन । वारि । दान । छुटे । छछार । भै ॥ १८ ॥ जगि । डारि । नर ॥ १९ ॥
 पवय । जनु । धपि । नभ । बदर । सिमाय । आनि । पीठवान ॥ २० ॥ महन ।
 शृंगार । पाय । पवय । बढाइ ॥ २१ ॥ जमरूप । जम्म । जोर । जोर ॥ २२ ॥
 जाय घाय । विबरयो ॥ २३ ॥ वाटय कि दोय । कृभिय । शीय शृंगार । मिगार ।
 कीनी ॥ २४ ॥ अरमिह । तुडि । देगि । मनमुप । गृही । शिर । पघ ।
 चीरि । हय ।

२५ ॥ मुसीम । भय । फार । गी । जानि । विमाल । वन । शिम ॥ २६ ॥
 कहवाय । कीयो श्रय । शाम । साम । मो । मौ । न काम ॥ २७ ॥

१४ पाठान्तर - भ्रात । अहकारि ॥ यह सं० १६८७ की पुस्तक में नहीं है ।
 और भा शब्द भ्रान का वाचक है ।

१५ पाठान्तर निजि । भये । अय । अचल । चित्त । कुंवर । बुलाए ।
 हित ॥ २९ ॥ हय । गाम । ओयत ॥ ३० ॥ बाज । सपत्त । दिने । शिरपाव
 ॥ ३१ ॥ गुर । नरेस । गुर ॥ ३२ ॥

**पृथ्वीराज का वबार करके बँठना-उसमें प्रतापसी का श्राना
और उसे मूछ मरोड़ने पर कन्ह का मारना ॥**

सोरठी दूहा— मरु इक मोम कुमार, मम सामंतन मूर मम ।

सोभ सीम भूअ भार मो वैठे मृभ सभा रचि ॥छ० ३३॥ ह० १६॥

छंद मोतीदाम— रची मुभ मोम सभा प्रथिराज । विराजित मेरु जिमे भर माज ॥

भुजा मम कन्ह रजे चहुवान । तिन मुछ राजत है मुह पान ॥छ० ३४॥

जिनै चप चाहि कपै भर मान । कपै जनु मोरन श्रप पिवाम ॥

रहै चष वारि सुरातन एम । जवा ग्रन प्रात कियो मक जेम ॥छ० ३५॥

तहां वर चावंड राइ रजत । जुधं मधि चावंड रूप मजंत ।

नृसिधविराजनासिध जिमोह । विभीषन भा कयमाम जिमोह ॥छ० ३६॥

सबै भर और उनथ्य मुमंत । तिन मधि पीथ कुंआर रजंत ॥

मनौ सकल पष बीज को चंद । निया रम राजत ता न वृद ॥छ० ३७॥

प्रनापमि पातउ श्रान मरीग । प्रथी पति आइ नमाइय सीस ॥

ति सोहत मानुम तं मन मेर । किधौ मन मिधु मुहंत उजेर ॥छ० ३८॥

सनंमुष कन्ह प्रनापमि आइ । उई तिन वैठक माल मुभाई ॥

कहै भर भारथ बन म बान । धन्यौ परतापमि मुच्छन पान ॥छ० ३९॥

लषी चहुवान सु कन्ह अपन । कटी असि तद्व असप भपन ॥

दई असि दौरि जनेउ उतारि । इही धर अघ उपम बिचारि । छ० ४०॥

मनों सब नागर साबु कटंत । इही जनु गंठि बिचें बिच तंत ॥

पन्यौ परताप प्रथी पर आय । भई भर मध्य मुजोर अमाण ॥

॥ छ० ४१ ॥ ह० १७ ॥

१६ पाठान्तर - सोरठा । ममै । ममै । एक । कुआर । सामंतन । सीस ।
भू । वैठे ॥

१७ पाठान्तर - पृथीराज । मेर । कन्ह । रचे । चहुवान । तिन । मुछ पान
॥ ३४ ॥ जिनं । कपै । चपै । श्रपन मोर । रहे । कि उसनेम ॥ ३५ ॥ चामुड ।
चावंठ । राय । चामुड । नरसिध । विराजित । जिसी । सिमु । भांपन । जिसी
॥ ३६ ॥ सर्वे । और । ऊतथ । पथि । कुमार । कंआर । मनो ॥ ३७ ॥ पृथीपति ।

नमाईय । शीका । सोहति । मानौ । मानुम । किधौ ॥ ३८ ॥ प्रतापमी ।
आय । कहै ॥ बत । मुछन । मुछन ॥ ३९ ॥ चहुवान । अपान । तारि । बही
॥ ४० ॥ मनौ । नीगर । बिचै । पृथी । ४१ ॥

भाई के मारे जाने पर अरि सिंह का क्रोध करना और कन्ह
चौहान पर दार करना ॥

दूहा - भई हूह मझह महल, पन्यो भुमि परताप ।

हाक वीर बज्जे विषम, अरसी कुपौ आप ॥ छं० ४२ ॥ ह० १८ ॥

कवित्त भई हूह परताप । परस्यौ दिष्यो अरसी वर ।

उट्यौ कडिह तरवारि । दई भुज कन्ह वाम कर ॥

इक सोह बर ओर । गरै पणपर गहि डारी ।

एक अगनिता मद्धि । आनि कूपी घृत धारी ॥

चहुआन कन्ह अगै सुबर । ता पच्छे लोहन दग्यो ।

जाजुलित मत्त बर वीर मति । वीर वीर रस सौ छग्यो ॥

॥ छं० ४३ ॥ ह० १९ ॥

पृथ्वीराज का महल में जाना और अरि सिंहादि की लड़ाई का होना ॥

दूहा - उट्टि कुंवर प्रथिराज लपि, गयो महल निज मद्धि ।

दै किवाट मिल्ति याट जुध मच्यो कलह सभ मद्धि ॥

॥ छं० ४४ ॥ ह० २० ॥

गाहा कड्डी अमि अरमिघं । नरमंघस्य ज्ञाय्य मीमं ।

दई गुरज गुर अट्टुं । बड गुज्जरं रभ कंदाईं ॥

॥ छं० ४५ ॥ ह० २१ ॥

चात्ति दिपि चावड ॥ पिजि चावड ॥

सोह चावड ॥ मन चावडं ॥ चावड ॥

॥ छं० ४६ ॥ ह० २२ ॥

कवित्त बडिय जग उत्तग । दंग जनु दाह जुगगिय ॥

परिय रौर रात्र रन । जुगिय जुध कन्ह अभिगिय ॥

मागि डारि अरिमीह । हक्यो गोवंद मेह गनि ॥

कडिह हथ्य जम दद्ध । दई चहुआन कूप घत ॥

१८ पाठान्तर दाहा । नड । भुमि । पण परत म० १९४९ की पुस्तक में नहीं है ॥

१९ पाठान्तर - वाम । एक । और । डानीप । आनि । चहुआन । अगै । पछे । मन । सो ॥

२० पाठान्तर उटि । डिपि । मधि । मम । मजि ॥

२१ पाठान्तर गाथा । वरमिघ । मीमं । बडगुजरं । कंदाई ॥

२२ पाठान्तर - बचनीहा । छद । चःमुंडं । पिजि चाःमुंडं । चाःमुंडं ॥

करि रोस कह कर चपि सिर । दो हथ्यन भेजी उड्डिय ॥
निकमीय प्रान गोविद उर । जोति भेदि जोतिह मिलिय ॥

॥ छ० ४३ ॥ ८० २३ ॥

हरसिंह का युद्ध ॥

कवित्त - हक्कि कहर हरसिंघ । बथ्य नरसिंघ विलगिय ॥

लथ्य बथ्य लोहान । उपर नर तर परि दगिय ॥

नषि अद्ध नरसिंघ । भयो हरसिंघ उद्ध वर ॥

दौरि रात्र चामड । दर्ई नरवारि मिट्टु पर ॥

कर फौरि मुक्कि डर अद्धघर । भयो त्रिबधव बटि घर ॥

हरसिंह बम्प्यौ हरसिंघ पुर । रवि मडल बल भेदि करि ॥

॥ छ० ४४ ॥ ८० २४ ॥

दूहा भेद्यौ रवि मडल गु पट्टु । करि प्राहम्म प्रमान ॥

धनि चालक पित मान धनि । निरसि न पायौ मान ॥

॥ छ० ४५ ॥ ८० २५ ॥

नरसिंह का युद्ध ॥

कवित्त करि उपरि ने द्रि । तरट नरसिंघ मु उड्डिय ॥

तवै भरकि भगवान । आड मिर मार मु बुड्डिय ॥

जब नरसिंघ नरन । करन पट्टी पट्टुगिय ॥

घन्लि हथ्य गल ब य । तेन उदर त्रिच फारिय ॥

पर भमि मूर भगवान मिरि । नया प्रान उरड्ड अर ॥

तै है मु सवद सन लोम मर । जै जै मर मूर ओरुजय ॥

॥ छ० ५० ॥ ८० २६ ॥

कमाम का युद्ध ॥

मो फल गडि गोफुड भुजान । मद मोकड छट्टिय ।

तुट्टिय बीज अकाम । मोम सैमान जराट्टिय ॥

तुरम फट्टि कटि गुरज । मुकुट करि रेष रिपमर ॥

अमि कढ्हत बर रोम । उदर बर बट्टिय मु ओरुजर ॥

२३ पाठान्तर - शतग । पु । नीर । शर । नीर । शर । शरीर ।
हथ । दड । कुपि । घनि । यन । निरमि ।

२४ पाठान्तर - बथ । थ्य । रय । शान । उपर । रर । पिय । र ड ।
फौरि मुकि । अघ । त्रिबधव ।

२५ पाठान्तर - प्रमान । मान ॥

२६ पाठान्तर - उठिय । तब । भगवान । फट्टारिय । टप । बय । घिनि ।
फारी । भगवान । मुसद । मृत ॥

बिन पत्त मत्त जनु डंड डक । रंभ खंभ कर कटियश्वज ॥
तिहि काज साज साकल सुरर । सु गुरुर पठाइय गुरुरध्वज ॥

॥ छ० ५१ ॥ रू० २७ ॥

माधव खवास का युद्ध ॥

कविन काम धाम रिम राह । स्याम जिम धाम पिथपति ॥
पत्त लत्त दिय रोम । फट्टि क्लिपाट धाट भजि ॥
धमिय मध्य माधव पवाम । आय पत्तो तहा आरौ ॥
लगि बथ्य बिन नथ्य । मंड मल मच्चि अपारौ ॥
जम दह्ह कट्टि चलक्क चॅपि । दिह्ह पानि पावार उर ॥
मडल दिनेम मे भेदे करि । मुपाट परिट्टय ब्रह्म पुर ॥

॥ छ० ५२ ॥ रू० २८ ॥

कन्ह का युद्ध ॥

कविन परि भूमि पावार । उररि भजन किवार दुअ ॥
तब लगि कन्ह तमकि । आइ पहुच्यौ अनकलुअ ॥
मुक्कि रोम असि तमसि । घाइ मिर जाइ रह्यौ उन ॥
मनहु सक्ति बल दैन । अंग जनु हन्य भजा सुत ॥
निन हनत सिभू धुन हनिय मिर । राज ग्रंथ मधि समर हुआ ॥
हल हलकि मच्चि कोलाहलह । हाय हाय दरबार हुआ ॥

॥ छ० ५३ ॥ रू० २९ ॥

चालुको के मारे जाने से दरबार में कोलाहल होना ॥

दूहा कोलाहल दरबार भी । मुनि चालुक अत मथ्य ॥
धमिय पैरि गज मन मम । पुच्छत पुच्छत बथ्य ॥ छ० ५४ ॥ रू० ३० ॥
छिछ गधिर डट्टन गिरिय ॥ परिय मत्र परिघारि ॥
दिपि चालुक अत तेह टग । कुलह बाजि जनु डारि ॥ छ० ५५ ॥ रू० ३१ ॥

२७ पाठान्तर मुनिनि । वीत । आकास । शीम । रिपीमर । जीमर ।
उमर । कटीर । स्वत । रिगि । तरेके गुरुर ॥

२८ पाठान्तर मान । धाम । गाम । धाम । पिथपति । पत । लत । पटि ।
क्लिपाट । मरि । लगि । य । नय । मनि । जभदद । चालु । चपि । दिह । मे ।
परठिय ॥

२९ पाठान्तर तमकि । हज । मुकि । शिर । मनहु । सक्ति । इन ।
हलहलकि । मच्चि । पाठान्तर ॥

३० पाठान्तर—तय । मन । पुच्छत । बथ्य ॥

३१ पाठान्तर—बाज । यह रूपक सं० १६८७ की पुस्तक में नहीं है ॥

कवित्त - संकर घिस कि छुट्टि । छुट्टि इन्द्र कि गरुड गज ॥
कि महिष छुट्टि मय मत्त । भरिय दीयो कि दुष्ट कजि ॥
भौ कि हाम रस रोम । मद्धि रावत्त विरच्चिय ॥
कोलाहल बल कूक । मज्झ रावर हल मच्चिय ॥
चालुकक षवास तारुथ कयि । कोलाहल इन जानि घर ॥
छंडिय मयल ब्रोहिय नृपनि । हनिग कन्ह मारंगहर ॥
॥ छं० ५६ ॥ ह० ३१ ॥

दूहा - भर प्रताप दरबार के । द्वार परे मय मत्त ॥
सुनत बन इह कहि परे । मनु निम तुट्टि नछत्त ॥ छं० ५७ ॥ ह० ३३ ॥
कविन निमि पह तुट्टि नछिन्न । रोप महिपा छटि वानन ॥
परि कि दीप पानग । मिघ जनु छुट्टि छुधा तन ॥
यो तुट्टे भर भरन । भररि भैमीर मुभगिय ॥
मन्है परा पति चनन । परिय मिचान अचिनिय ॥
परि पौरि पौरि दीनी दरकि । धरकि कृह बल पौरि बिचि ॥
पेलन मव मन कलहन जनु । पारथ मम भारथ मचि ॥
॥ छं० ५८ ॥ ह० ३४ ॥

दूहा माया मोह विरत मन । तन तिनुका मम डारि ॥
जुटे पिथ्य दरवार महि । करि तरवार दुधार ॥ छं० ५९ ॥ ह० ३५ ॥
छं० त्रोटक तरवार जुधार दुधार धरे । मि मार अपार विचार परे ॥
गिरवार किवार दुकार दिए । घर द्वार उघारि सुमार किए ॥ ६० ॥
मर मार डरार मिरार मरे । धर वारि मझार सुवारि परे ।
तरवारि करार अंगार झरे । परिमार अपार सुभार रे ॥ ६१ ॥
हडवारि कचार क्रिचार करे । तर मारक वारि कन्हार करे ॥
कर तारि दै नारद नृत्य करे । विकरारनि चौसठि पत्र भरे ॥ ६२ ॥
किलकारति भैरव भूत करे । हलकारत षेतरपाल परे ॥
॥ छं० ६३ ॥ ह० ३६ ॥

३२ पाठान्तर भगीय । दीपि । मधि । रावत्त । विरच्चिय । मज्झ । मत्तिच ।
कय । जान ॥

३३ पाठान्तर--मत । वन । मनो । नछिन्न ।

३४ पाठान्तर-नछिन्न । परिय । संघ । मनो । लनहुं । अक्षितीय । दीनीय ।
बच षेलंत । म । भारथ ।

३५ पाठान्तर -विरत । पिथ ॥ यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में
नही है ॥

३६ पाठान्तर -परवारि । धरे । दये । किये । मरार । परे । झरे ।
रूपारि । कन्हार । करे । विकरालनि । करे । परे ॥

दूहा अंत कल्प जनु मचि कलह । भिरे महिष मय रुद्ध ॥

चालुक अरि चहुआन भूत । काल कलह क्ति युद्ध ॥ छ० ६४ ॥ २० ३७ ॥

छंद विराज जुगजुद्ध जुरे । मन को न मुरे ॥

धक धीग धके । बक बैन बके ॥

घट घाव घने । बलि जोग बने ॥

तरवारि कसी । घन विज्ज लसी ॥

नर मुंड नचे । मित्र माल मचे ॥

रिन घन रच्यो । रंग रत्त मच्यो ॥

घरती धरके । घन घाव रके ॥

पग हथ्य परे । कवि ओप करे ॥

मधु माघ समै । मधु जानि झमे ॥

मत्र देव श्रगे । पलके न लगे ॥

किलकार करे । घिलवार घरे ॥

जुगिनी हुलरे । रुधि पत्र भरे ॥ छ० ६५ ॥ २० ३८ ॥

दूहा पत्र भरे जुगिनि रुधिर । प्रिधिघय मम उकारि ॥

नच्यो ईम उमया सहित । रुड माल गल घारि ॥ छ० ६६ ॥ २० ३९ ॥

छंदपद्धरी-दरवार ताल रुधि भरित वारि । इक हथ्य रत्त चढ्ठी किनारि ॥

तिन मधिघ मग्न तरु जिम मजन । घर घारि मारि जे धुकत मत ॥

॥ छ० ६७ ॥ २० ४० ॥

दूहा ★ षेल मच्यो दरबार मझि । मन गवार बमन ॥

मिग श्रुक विनु घावह करे । मुभट मु अगघ कत ॥

॥ छ० ६८ ॥ २० ४१ ॥

छंद लघुनाराच धुकत धार धार मौ । वकंत मार मार मौ ॥

झुकत झार झार मौ । नकन सार तार मौ ॥ ६९ ॥

डकत भूत डाक मौ । कमत बीर बाक मौ ॥

परंत हीन पाइह्वै । झरंत हथ्य घाइह्वै ॥ ७० ॥

३७ पाठान्तर - महिष । अरी ॥

३८ पाठान्तर- जुरे । कोन । बैन । घने । झि । बने । नचे । मचे । रग ।
घरके । घावरके हय । परे । उप । करे । जानि ॥

३९ पाठान्तर- प्रिघय । प्रिघिय ॥

४० पाठान्तर- हथ । रत्त । चढ्ठी । मधि । ने ॥

४१ पाठान्तर- मन । गवार । बनु । घावह्वै ॥

★ यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक मे नहीं है ॥

लरंत मंत मंत से । धरंत घाइ घन मं ॥
 मुषग अंगुली धिरै । फली मुकर विधुरै ॥ ७१ ॥
 नचन घाइ नारद । ठटे सुघाड ठारद ॥
 भवकि रुद्धि भवभसे । बवकि गृह वट्ट मे ॥ ७२ ॥
 हवकि हाक हवकए । चवकि कुंभ चवकए ॥
 मोरित्त मुच्छ मुच्छए । चढी सु आनि चच्छए ॥ ७३ ॥
 चलन हाथ चचलं । परत वान पचल ॥
 भिदन भान मडल । भयो मु नट्ट कुडल ॥ ७४ ॥
 वहन मोप वट्टए । हरकि लगि हट्टए ॥
 कटत मीम कट्टए । गिनक पन फट्टए ॥ ७५ ॥
 फटत फफ फेफर । गटत पेवि केफर ॥
 वजन घात्र घमरे । मनौ परेव घुमरे ॥ ७६ ॥
 कुट्टे मिर करारय । कपाम ज्यौ पिजारयं ॥
 फुटत यौ सुपोपरी । कि जोग पत्र टोपरी ॥ ७७ ॥
 कटत जघ कुंभए । मनौ मुरभ गिभए ॥
 ★ परीय संज्ञ मामय । चलुकक रपि नामय ॥
 ॥ छं० ७८ ॥ रू० ४२ ॥
 सांभ हो गई परन्तु लड़ाई न रही ।

कवित्त परिय सज्ञ जग मज्ञ । टरिय ककन रकन धन ॥
 परिय पत्र जुगिनीय । करिय मित्र माल मीम घन ॥
 मुरिय न भ्रिन चालक । धरिय रसगेम कन्ह हिय ॥
 पैरि चलय दरबार । सीह गज घट्टि उठ गिय ॥
 मय मत्त मार मत्ती उररि । भररि भररि भग्गिय अनिय ॥
 है धरिय लोह बुद्ध्यौ लहरि । पेल कन्यौ किगवारनिय ॥

॥ छं० ७९ ॥ रू० ४३ ॥

दूहा कन्ह जाइ संमूह परत । कला एक मचि रारि ॥

सत सारध दूनौ कटे । भजँ अवर तजि ढार ॥ छं० ८० ॥ रू० ४४ ॥

४२ पाठान्तर धकर । मो । डकत । हँ । हथ । धाय । धिरे । धारँ ।
 बिस्तरै । धाय । भवकि । रुधि । भद्र । भट्ट । बवकि । रद । वट । हवकि ।
 हकए । चवकि । चकए । मोरित्त । मोरिर । मुह । मुछ । मुछए । आनि । छए ।
 नट । रिचकि । पन । मनौ । कुट्टे । गिरं । ज्यो । यो । मनौ । ★ यह पाठ
 सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

४३ पाठान्तर - शिव । चालुक । पेट । चलीय । घट । उपटिय । भाठीय ॥

४४ पाठान्तर — जा । समुह । दूनौ । कटे । भजि ॥

काह चौहान का युद्ध जीतना ।

करवा झरें (★ मार) सिर मार विकरार रक्तन भरत ॥
 परत धरनीय ठरें जरकि जूषी ॥
 चक्क चहुवांन चालुक्क भृत उपर चर ।
 कोपियं कन्ह मनौ काल रूपी ॥ छं० ८१ ॥
 रुड भकरुड किय तुंड मुंडन हरत ॥
 बाहि सिर सार मनौ मेह बढ़ै ॥
 कूह करि जूह समूह को कोक हर ॥
 रोस रिम राह जेम जीय छुट्टै ॥ छं० ८२ ॥
 पांनि करि पांनि अरि पांनि करनीय हक ।
 साम अरी पारि मव पेन नीच्यौ ॥
 भ्रान मोमेम नुध्य न मजन भग्म ।
 पेन पयकार पय काल पीज्यौ ॥

॥ छं० ८३ ॥ रू ८५ ॥

उलोक हनिन निनायक सेना. कथिन न त पूर्वपद ।

अयुद्धं चक्रत एषा मिना स्वामि ण युध्म ॥

॥ छं० ८४ ॥ रू० ४६ ॥

प्रतापमिह आदि के नारे जाने का समाचार

सुनकर पृथ्वीराज का अप्रमत्त होना ।

दूहा नीठ विनामन अप्प भर, गहो कन्ह चहुवांन ।
 गाए ग्रेह लं सकल मिलि, प्रथीराज अकुलान ॥

॥ छं० ८५ ॥ रू० ४७ ॥

पारि भ्रिन चालुक्क भर, मय अजमेर प्रमान ।

सात भ्रान भीमह हने, रन जी यौ भर कान ॥

॥ छं० ८६ ॥ ★रू० ४८ ॥

४५ पाठान्तर ★ अधिक पाठ है । धरति । मनौ । जम । दारि । वृषात ।

† यह रूपक सं० १-१३ की पुस्तक में नहीं है ॥

४६ पाठान्तर --हननं । यं । अयुद्ध । स्वामी । रिने । जुधं ॥

४७ पाठान्तर --अप । चहुवान । अकुलान ॥

४८ पाठान्तर --मध्य । प्रमान ★ यह रूपक सं० १६-१३ की पुस्तक में नहीं है ।

पृथ्वीराज की अप्रसन्नता सुनकर कन्ह चौहान का घर बंठ रहना, तीन
दिन तक अजमेर में हुरताल पड़ना ।

बत्त सुनी तब कन्ह ने, पिजयी कुअर प्रथिराज ।

बैठि रहे तब निज सुघर, अंदरबार ममाज ॥

॥ छ० ८७ ॥ ॥ ४९ ॥

तीन दिवस अजमेर मे । परी हट्ट हटनार ॥

हह कोह बज्यौ विषम । लग्यौ मु भूत भूत भुआर ॥

॥ छ० ८८ ॥ ॥ ५० ॥

मधि बजार चलि रुधिर नदि । मरत तूड घन मूड ॥

बरकि कन्ह चहुआन करि । तिल तिल मम तन तूड ॥

॥ छ० ८९ ॥ ॥ ५१ ॥

सात दिन तक कन्ह के न आने पर पृथ्वीराज का उनके घर

मनाने को जाना और कहना कि मंसार में यह बुराई

हुई कि घर बुलाकर चालुक्यों को मार डाला ।

कविन मान दिवस जव गए । कन्ह दरवार न आए ॥

नब प्रथिराज कुंआर । अप मनग ग्रह जाए ॥

तुम ऐसी क्यों करी । आप मिर चटिय मुफाई ॥

कहिहै मर चहुआन । हने चालुकु मुराई ॥

आएनि विषे आपन मुघर । मो रावर ऐसी करिय ॥

इह दोम अप लग्यौ खरी । वन विनरिय जग बुरिय ॥

॥ छ० ९० ॥ ॥ ५२ ॥

कन्ह का कहना कि मेरे सामने दूसरा कौन सभा में घंठकर

मोछ पर ताव रख सकता है ।

बूहा कही कन्ह चहुआन तब । मो बैठें कोइ आनि ।

सभा मद्धि संभरि अवर । मुच्छ धरै क्यों पानि ॥

॥ छ० ९१ ॥ ॥ ५३ ॥

४६ पाठान्तर—बन । पिजय । कुंअर । प्रथीराज रहै । † यह रूपक कौल-
फील्ड वाली पुस्तक में नहीं है ॥

५० पाठान्तर - हट । हटनार । भुआर ॥

५१ पाठान्तर - चहुआन । निन ॥

५२ पाठान्तर - कुंआर । अप । मिर । काइय । कहिहें । चालुक । राइय ।

विषे । करिय । लग्यौ । विस्तरिय ।

५३ पाठान्तर - कोई । आनि । मधि । संभरी । मुछ । पानि ॥

पृथ्वीराज का कहना कि तो घाय घांख में पट्टी बांधे रहा कीजिए ।

करी अरज प्रथिराज बर । जो मानो इक कन्ह ॥

सभा बुराई जो मिटै । चष बंधि मट्ट रतन ॥ छं० ९२ ॥ रू० ५४ ॥

पृथ्वीराज का जड़ाऊ पट्टी बनवाकर अपने हाथ से कन्ह
के घांख में बांध बेना ।

तब प्रथिराज विचार करि । चष आस्यो हो पट्ट ॥

बहुरि कोइ भर भोरही । धरत परै इह बट्ट ॥

॥ छं० ९३ ॥ रू० ५५ ॥

मनी बत्त सुसत्य मन । लै जराब को पट्ट ॥

राजन कन्ह चष बंधरी मनी मिरी जग घट्ट ॥

॥ छं० ९४ ॥ रू० ५६ ॥

कवित्त पाव लष्य परिमान । मोल किमति ठहराइय ॥

तौल टंक इकईय । नथन आकार सवारिय ॥

जरिय जवाहर मद्धि । अरक उद्योत प्रकासिय ॥

दिष्टि मडि देपंत । दुअन उर अंदर त्रामिय ॥

कंचन किलाव लगाय कल । पट्टी बंधिय चंद भट ॥

तिहि वेर कन्ह चट्टुआन चष । रूप प्रगटि अति पिच्चि वट ॥

॥ छं० ९५ ॥ रू० ५७ ॥ †

दूहा— पाटी बंधिय कन्ह चष । इह ओपम करि अण्णिय ॥

तन सरवर जल बीर रम । ओटा वधि सुरण्णिय ॥

॥ छं० ९६ ॥ रू० ५८ ॥ †

पट्टी रात दिन बंधी रहती थी ।

दूहा मो पट्टी निम दिन रहै । छोरि देइ द्वै ठाम ॥

कै सिज्या वामा रमत । कै छट्टत संग्राम ॥

॥ छं० ९७ ॥ रू० ५९ ॥

५४ पाठान्तर - प्रयोगज । जो । मानो । जो । चधि । ★ संवत् १६४७ की प्रति में यह नहीं है ॥

५५ पाठान्तर - पृथीराज । पट । वट ॥

५६ पाठान्तर - मानो । मति । पट । रात्र इष चष कन्ह बंधि । मनु । सरी । घट ॥

५७ पाठान्तर - परिमान । ठहराईय । तौल । मधि ।

५८ पाठान्तर - अण्णि । रण्णिय ॥ † ये दोनों रूपक संवत् १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं ।

५९ पाठान्तर—निच्चि । संग्राम ।

करि मुचित्त चित कन्ह कों । प्रथीराज रम भाइ ॥

अवर सूर सामंत सब । रहे हीप मुख पाइ ॥

॥ छ० ९८ ॥ ऋ० ६० ॥

एक बाज ऐराक वर । हम नाम अरुनीस ॥

साजि साजि राजन रजवक । कन्ह कीन बगमीस ॥

॥ छ० ९९ ॥ ऋ० ६१ ॥

जम दढ इक्क जगव जरि । एक उच मिर पाव ॥

न (मु★) नाहर वर कन्ह को । कीनी कुंअर पमाव ॥

॥ छ० १०० ॥ ऋ० ६२ ॥

कन्ह चौहान की प्रशंसा ।

कवित्त इसी कन्ह चहुआन । जिमो भारथ्य भीम वर ।

इमो कन्ह चहुआन । जिमो द्रोणाचारज वर ॥

इमो कन्ह चहुआन । जिमो दसमीम श्रीमभुज ॥

इमो कन्ह चहुआन । जिमो अवनार वारि मृज ॥

जुध वेर इम्म तुट्टै जुगिन । मिघ तुट्टि लधि मिघनिय ॥

प्रथिराज कुंअर साहाय कज । दुरजोधन अवनार निय ॥

॥ छ० १०१ ॥ ६३ ॥

दूहा जहँ जहँ राजन काज हुआ । तहँ तहँ होइ ममथ्य ॥

मेर हब्ब बथथह भरै । नर नाहा नर नथ्य ॥

॥ छ० १०२ ॥ ऋ० ६४ ॥

चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयों के मारे जाने का समाचार

सुन कर बहुत दुखी होना ।

गाथा फुट्टिय बत्त प्रहास । अनिल बमिजेम परिमलय ॥

सुनियं चालुक भीम । सारंग मुत हति चहुआन ॥

॥ छ० १०३ ॥ ऋ० ६५ ॥

६० पाठान्तर—चित्त । भाय । चाय । पाय ॥

६१ पाठान्तर ए । नाम ।

६२ पाठान्तर—गिरगाव । ★ अधिर पाव है । को । कीनी । कअर ।

६३ पाठान्तर इमो । चहुआन । जिमो । भारथ । द्रोणाचारिज । एम ।
इम । सिंहलीय । प्रथीराज । दुरजोधन ।

६४ पाठान्तर—जहां २ । तहां २ । होय । समय । हथ । बथह ।

भरै । नुय ॥

६५ पाठान्तर—व । सुनीयं । सारंग । चहुआनं ॥

जलियं चालुक नाथ । अग्नि बिलगिय उअर मझायं ॥
मुक्किय नृप नीसामं । मनिय दुष भ्रात अप्पाय ॥

॥ छं० १०४ ॥ रू० ६६ ॥

भीम का पृथ्वीराज से भाइयों के पलटे में लड़ाई मांगना ।
दूहा अति दुख मन्यो भीम हिय । लिथि कग्गद चहुआन ॥
मत्त भ्रात मेरे हने । इहै वैर अप्पात ॥

॥ छं० १०५ ॥ रू० ६७ ॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि हम तयार है जब चाहें घ्राप्तो ।
मुनिय राज चहुआन वर । दिय कग्गद फिरि तेह ॥
जब तूम मगो वैर वर । तब हम वैर मुदेह ॥

॥ छं० १०६ ॥ रू० ६८ ॥

भीम का चढ़ाई के लिये तय्यार होना पर सरदारों के कहने से
वर्षा ऋतु भर ठहर जाना ।

कविन बँचि कग्गद चालुक । रोम लग्यो अयान कह ॥
कगो मेन मव एक । चओ अजमेर देस रह ॥
तज हस्यो वीर परधान । मांग पावम्म रहै घर ॥
हरि कानिह मत्त इटक । तनै चहुआन मोम वर ॥
मुनि राज अप्प मन्यो मुहिय । मनह मव जन अवर नर ॥
उपमम्म रोम चालुक नृप । पिन पिन विनिय जेम थिर ॥

॥ छं० १०७ ॥ रू० ६९ ॥

उपसंहार का कथन ।

दूहा रहै राज अजमेर महि । मंभरेम चहुआन ।
निमि दिन यो क्रीला करै । जयो अवतार मुकान्ह ॥

॥ छं० १०८ ॥ रू० ७० ॥

इति धी कवि चन्द विरचिते प्रथिराजरासके कन्हारुषपट्ट बन्धनं नाम
पञ्चम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५ ॥



६६ पाठान्तर - कृमि । मनोय ॥

६७ पाठान्तर - कग्गर । चहुआन । पान । अथान ॥

६८ पाठान्तर - मगो ॥

६९ पाठान्तर - छँछि । कग्गर । लग्यो । अयामकह । अयासकहि । रहि ।
प्रधान । मांग । पावड । कानिह । मन्यो । उरमंमि । विनीय ॥

७० पाठान्तर - चहुआन । यों । ज्यों ॥

अथ आषेटक वीर बरदान वर्णन समय लिख्यते

छठां समय

पृथ्वीराज के कुञ्जरपन के तपतेज का वर्णन

कवित्त कुञ्जरपन प्रथिराज । वर्ष विय सपत समर तग ॥
समृह तेज अमहेज । हरन तम गेर समर गन ॥
उर किवार भुज वज्र । अग वज्रंग पलन लुअ ।
भुज भुजंग वर जोर । जोर वनह सवृन भुज ॥
अंग अंग अग जनु अगदह । पवन पाइ आपेट महि ॥
मंग डोरि श्वान जीवन लष । मवन अग अपजह तिवहि ॥
॥ छ० १ ॥ ह० १ ॥

कवित्त वर्षन सोभा नैन । मेन जनु मुदित मरिन सर ॥
हरष हाम मुष कति । बिकमि जनु कमल मूर वर ॥
मधुर सबद गुंजार । जानि गंभीर हरिय मद ॥
गयन गरुअ गज भति । चलत कुल चालि वेद बद ॥
चहुआन सूर मोमेस मुअ । धुअ जनु भुअ अवतार लिय ॥
मन हरनि हरत मन पिपि कै । जनु विधिना अप पथ्य किय ॥
॥ छ० २ ॥ ह० २ ॥

छंद पद्धरी रहै सुभट थट्ट प्रथिराज मग । जै पैज गग मुअ कपि पंग ॥
षट रस विलास अनन अपार । भुवनं भोग भट सुभट सार ॥ छ० ३ ॥

१ पाठान्तर स० १ २० वी पृष्ठक में हम का ऐसा पाठ है कुञ्जरपन
पृथ्वीराज । वर्ष विय बीम समर वरष । समृह अम तेज हेज । जोर वनह सवृन
भय । भुज भुजंग वर जोर । हरन तरोर मररन । उर किवार भुज वज्र ।
अंग वश्रअंग पलन मन ॥ बाकी दोनो नुक जैम के तैमे है ॥

२ पाठान्तर --- सोभा । नैन । मेन । उदित । मरनि । बानि । बिकमित ।
जानि । कुलि । चहुआन । सुय । मन । पिपिकै । तथ ॥

३ पाठान्तर --- प्रथीराज । कपि । अनन । ज्यो वश । छतीश । चहुआन ।
उप । मधि । जानि । मधि । पृथीराज । बानि । मधि । गुर्दव । जाय । मजि ।

मुरनाथ सग सुर सकल सोभ । बसह छतीम चहुआन ओप ॥
 नव कुलन मध्य नव नाग जानि।तिम जूथ मद्धि गज राज बानि ॥छ०४॥
 उडगनन मद्धि गुरदेव कति । बरनी न जाइ सुत सोम भनि ॥
 छूह पच मद्धि ज्यो हनुअ लका।तिम तिथ्य कथ्य षल परन बक ॥छ०५॥
 नव ग्रहन मद्धि जः सूर तोष । षग धम क्रम समर अदोष ॥
 क्रीडन अग रंगह हुलास । विश्रवा पुत्र जनु अलक वाम ॥छ० ६॥
 कर तानि बान कमानि धारि । अनभूल घान नणै उतारि ॥
 अदभूत बान विद्या अअमग । लहै दाव घाव बच्च ग अग ॥छ० ७॥
 पाइक्क अक पेलत कितेक । गहि तिन मुदत छुट्टन एक ॥
 आपेटनि पुन लषि जीव घान । गज सिघ रिछ कुपि कोल पान ॥छ०८॥
 है लपै मकरु करि भेद छेद । शिषत नयन सालोप पेद ॥
 गज चिगळ इच्छ जानन मच्च । नाटिक निवास सम सेम रुच्च ॥छ०९॥
 मम मिनप मास्त्र वसु क्रम क्रम । मत्र वेद गीत रोपन त्रम ॥
 यो तपै पिथ्य अजमेर माहि । सोमेम म् चहुआन छाहि ॥
 ॥ छ० १० ॥ ॠ० ३ ॥

पृथ्वीराज की दिनचर्या का वर्णन ।

कविन प्रथम जामि निमि रज्ज । कज्ज हैगै शिषत लगि ॥
 दुनिय जाम समीत । उडव रम त्रिनि मच्च जगि ॥
 त्रिनिय जाम भोजन । समय चत्र जाम त्रिदसिय ॥
 मुण्य मुण्य उर अप । तारि अपी उर वसिय ॥
 चरियार रटिय बदी पिय । आनि म् रामम तम ॥
 उटि त्रय म्हरन राज चर । इय पारगिय भिषार रम ॥
 ॥ छ० ११ ॥ ॠ० ४ ॥

पृथ्वीराज का आखेट के चिये निकलना ।

कविन कर पद मत ध पर । टुट आनन मुचकर रय ॥
 पट्ट ह्रीम घन म । त्रिपुल बडदीय समग पय ॥

ज्यो । तिय । कथ । मत्र । समर । त्रि । जम । वात । जनम । मत्र । पयक ।
 बग । अन । निह । गड । अ । टय । मत्र । शिषत । चमत्र । उड । शिषत ।
 क्षामन । यो । पिथ । शह ॥

४ पाशान्तर । त्रिमि । निमरत्र । बान । शिषत । जाम । वनाय । जानि ।
 भोजन । समय । शान । विश्रवा । त्रि । अपिय । वसीय । बरि । बसु ।
 महरन । पपरीय ॥

इक बंधिय इक बधिय । एक भंमिय भ्रम भीर ॥
इक्क सु मृग विफुगीय । इक्क चिकगीय दीन मुर ॥
कवि चंद सोर चिहुं ओर घन । दिध्व सद् दिग अन भी ॥
संकिय सयल्ल जिम रंक । इम अ न्य आनंक भी ॥

॥ छ० १२ ॥ ६० १ ॥

अकेले कवि चंद का बन में भूल जाना ।

कवित्त - जंगल धर मुकुमार । करत आपेट मपत्ती ॥
संग मूर सामंत । गहन गिरि पोह मुरत्ती ॥
एक महम मंग स्वान । एक मतं चीने मगह ।
उभै मत संग हिरन । करत मन पवन मुभंगह ॥
सम विपम विहर बन सघन घन । तहां मथ्य जिन तिन हुआ ॥
भूल्ल्यो मुसंग कवियन बनह । और नही जन संग हुआ ॥

॥ छ० १३ ॥ ६० ६ ॥

एक ग्राम के पेड़ के नीचे एक ऋषि से उसकी भेंट होना ।

दूहा विपन विहर ऊअल अकल । सकल जीव जड जाल ॥
परमंपर वेली विटप । अवलवि तरल नमाल ॥ छ० १४ ॥
सघन छांह रवि करन चप । पग तर पमु भजि जात ॥
मरिग मोह गम पवन धुनि मुनत श्रवन झहनात ॥ छ० १५ ॥
गिरि तट इक मरिना मजल । जिरन जिरन विहुं पाम ॥
मुनर छाह फल अमिय सम । वेली विसद विलाम ॥ छ० १६ ॥
तहां मु अंबतर रिपप डक । क्रम पन भग मरग
दव ददौ जनु दुम्म कोइ । के कोइ भूत भ्रंग ॥

॥ छ० १७ ॥ ६० ७ ॥

गाहा जप काला मृग माला । गोदा विभूतं जोग पट्टाय ॥
कुविजा खपर हथ्य । रिद्ध मिद्धाय वचनय मसं ॥

॥ छ० १८ ॥ ६० ८ ॥★

५ पाठान्तर - पन । धनु । धनुक । धनुप । नह । चय । सद । वदिय ।
इक । अग । शिफुरिय । निहु । उर । दिष । अंय । मरुल । मपल ॥

६ पाठान्तर - करन । आपेटक । मंपती । द । पोहर । संग । माय ।
तित्त । भूल्यो । कवियन ॥

७ पाठान्तर - ऊपरल । परमपर । अवलवि ॥ १४ ॥ झहनांत । झहनाठ ॥
॥ १५ ॥ गिर । झरन । झरन ॥ अंतर । तरु । जनी । अंय न रंग दुभ ॥ १७ ॥

८ पाठान्तर - विभूत । पठायं । मसं । मसं ॥

कविचन्द का ऋषि के पास जाकर पूछना कि आप कौन हैं ?

दूहा - चंद पिष्वि चरष्यौ सुमन । इह कोइ रूप अलेष ।

पग परसौं दरसौं दरस । उत्तिम भूत अरेष ॥ छं० १९ ॥

करि बंदन कविचंद कहि । को तुम आदि अनादि ।

तुम दरसन बिन दिन गए । ते सब बीते वादि ॥ छं० २० ॥

तुं † धावा करतार तुं । भरता हरता देव ।

तुं दत्ता गोरस तुहां । प्रसन होउ प्रभु मेव ॥

॥ छं० २१ ॥ रू० ९ ॥

ऋषि का पूछना कि तुम कौन हो इस बीहड़ में बन में कैसे आए ।

दूहा - कहै जंगम तुं कौन नर । क्यों आगम ह्यां कीन ।

जीब जंत घन विघन वन । जीब जीव बल छीन ॥

॥ छं० २२ ॥ रू० १० ॥

चन्द का अपना परिचय देना ।

गाहा - दरसन देव मुनिदं । चंदं विरहं च दुपदं दायं ॥

अब मुझ क्रम्य सुफलियं । दिष्ये सुकल रूप नपसीयं ॥ छं० २३ ॥

देवान वरं सिद्धाण दरणं । गुर नरिद सनमानं ॥

गय भूमि दब्ब नट्टा । पां मिज्जे पुण्य रेहायं ॥

॥ छं० २४ ॥ रू० ११ ॥

दूहा - भट्ट जाति कवियन नृपति, नाथ नाम मो चंद ।

आलस में गंगा बही, अब्ब गए सब दंद ॥

॥ छं० २५ ॥ रू० १२ ॥

जती का प्रसन्न होकर एक मंत्र बतलाना जिसके वश में बावन बीर हैं ।

कवित्त - प्रसन चंद सम जतिय । दिन्न इक मंत्र इष्ट जिय ॥

इह आराधत भट्ट । प्रगट पचास बीर बिय ॥

★ यह कृपक सं० १६४७ वाली पुस्तक में नहीं है ।

६ पाठान्तर पिपि । को । परसो । दरसो ॥ १९ ॥ त । भना । तुं । दना । तुदी । होहि ॥ २१ ॥ † यह संस्कृत त्वम् का पहिला हिन्दा रूप है ।

१० पाठान्तर - जती । तूं । कीन ॥

११ पाठान्तर - गाथा । दसनं । चंदं न विरह इदेहं पंचायं । चंदम । दंदार्द । कर्म । दिपे । सकल ॥ २३ ॥ सिद्धान । दसनं । भूमि । भूमि । पा । मिज्जे । पुण्य । रेहा इ ॥ २४ ॥

१२ पाठान्तर - नृपति । नाम । आल समे । आल समय । अब ॥

करि साधन इह साध । व्याधि नामत फल धारिय ॥
गुह उपदेसह पाइ । सकल आधीन अकारिय ॥
धरि कान मत्र लीनी कवित्र । परम पाइ अग्ने चलय ॥
करवे मृर्षागया मत्र की । रत्रि आसन अग्ने बलय ॥

॥ छ० २६ ॥ सू० १३ ॥

चन्द का मंत्र की परीक्षा करना और बीरों का प्रगट होना ।

दृहा भली बुरी निमित्त कळ मेटिन मक्के कोट ।
याही मो भवतव्यता कहत मयाने लोड ॥ छ० २७ ॥
पमु आपटक करन को सा नपति बरदाड ।
अमे मे दह भावर्ट, अकगमान दृअ आइ ॥ छ० २८ ॥
मत्र परिगया करन को, वन मझ वैद्यो चद ।
रत्रि रचना मुत्रि स्नान करि, यप दीप पट्टि छद ॥ छ० २९ ॥
रत्रि आनन गनम नद, मिद्वि बुद्धि लच्छि लाभ ।
फूनि मत्र अमैव जपत, दक्कु गरजिय आम ॥ छ० ३० ॥
गैन गहर गभीर मुनि मुनि समर भय गात ।
आनन अग गअ गज दृअ जानि उलक्का पान ॥ छ० ३१ ॥
मुप दाना माना पिता सेवक मरन मधार ।
उपवन वैद्ये चद जहं, ते पचाम पधार ॥ छ० ३२ ॥
मत्र जत्र धारत मन, आकष्य जव चद ।
प्रगट दरम दीने मवन कवि उर वध्यो अनद ॥ छ० ३३ ॥
महा पुरिय पिपे जवे, तत्र दृअ मरीर ।
दडवन अजुलि करिय, मन आनद स्थीर ॥

॥ छ० ३४ ॥ सू० १४ ॥

१३ पाठान्तर दीन । भठ ' प्रचाम । ए । नामन । धारीन । अकारीय ।
प य । अग्ने । अग्नी । करने । करने । परगया अग्ने ॥

१४ पाठान्तर निमित्त । भवितव्यता मयाने ॥ २७ ॥ को । नृपति । अमे ।
आय ॥ २८ ॥ परिगया । को । वैद्यो । स्नान । रि । चद ॥ २९ ॥ गनईस ।
तहा । बुधि । उक । गरजिय ॥ ३० ॥ गगन । आनन । अग । गअ गंज । भी ।
जानिक । उलका ॥ ३१ ॥ जहं । तहा द्वे ॥ ३२ ॥ धारता । अकषे । बध्यो ।
३३ ॥ पुरूप ॥ पिपे । जवे । मरीर । ३४ ॥

बीरों के रूप आदि का वर्णन ।

छंद पद्धरी आनंद चंद दरसंत इंद । मोभा सुभत वज्र ग दद ॥
 तन तेज तरनि ज्यौ घनह ओप । प्रगटी कि किरनि धरि अग्नि कोप ॥ ३५ ॥
 चंदन मुलेप कमनूर चित्र । नभ कमल प्रगटि जन किरन मित्र ॥
 जनु अगनिन नग छवि तन विमाल । रसना कि बैरि जनु भमर व्याल ॥ ३६ ॥
 मृग मद मय्य जनु पिउप गान । प्रभ मृदित मगन नामा रमान ॥
 मईन कपूर छवि अग हति । गिर रची जानि विभूत पति ॥ ३७ ॥
 कज्जळ मुरेप रवि नेन पति । मृत उरग कमल जनु कोर पति ॥
 चंदन मुनित्र रुनि भाल रेप । रजगुन प्रकामने अरुन भेप ॥ ३८ ॥
 रोचन लिटाट मुभ मृदित मोद । रवि वैठि अरुन जनु आनि गोद ॥
 घघर घमकि पाडन विमाल । नूतन जननि जनु अग वाल ॥ ३९ ॥
 धूमरम भूर वनि बार भीम । छवि वनी मुकट ज जटा उम ॥
 वनि विमदकठ इक वैलि माल । आभाति उदग्गन निमापाल ॥ ४० ॥
 चवकनि पृथप वनि कठ कति । रम रमन भमर जन पीत पति ॥
 नूतन एक मगीत भनि । नारद रिउख कर धरन ननि ॥ ४१ ॥
 इक परत वध्य इक लरन ह्य्य । गज तरनि केठि नन गीरन मय्य ॥
 इक प्रगट गेन उक दुरे जान । परमन रम्पर मुभन दान ॥ ४२ ॥
 त्रिन एक हन गिर गरभ दद । गरजन एक जन पग भद ॥
 उक उरठि मरद मगीत नाड । नर पत भाप नामर विनाड ॥ ४३ ॥
 उक ब्रह्म पोप मम ररन धाप । पीरान पगट उर उचन माप ॥
 दाडाग्र उरि चवन फुनिद । उर धरन न्यान जानिक मूनिद ॥ ४४ ॥
 इक गरनि मउ मुप रउ एक । कुजर महार गिर तरन तक ॥
 इक मुप्य अंगि ज्वाडा उठन । उक परह दद वरिया उठन ॥ ४५ ॥
 इक करन गात्र चक्रार एक । एक रुदन मुदन गिर उठन कक ॥
 इक करन ह्य गिरि मिषर कोड । उक रूप बहून इक एक दोड ॥ ४६ ॥
 घमकंत धरनि इक लान धान । उक स्वाम उठन उपवनह पात ॥
 पिथीय चरित ए चंद भट्ट । हापित ह्यम मन म अघट्ट ॥ ४७ ॥
 रोमव अग उम्भार देह । भैभीति भनि तहाँ दिगिप एह ॥

॥ छ० ४४ ॥ ह० १० ॥

१५ पाठान्तर उदा । उव । अग्न ॥ ३९ ॥ अग्निह । भ्रमर ॥ ३० ॥
 स्निग्मद । पिथुय । पाति । अगट्टनि । विभूति ॥ ३७ ॥ ने । पकाश ॥ ३८ ॥
 आनि । घुचर । घमकि । पायन । रमाक । नूतन । अग ॥ ३९ ॥ वलि ।
 आभाति । उदग्गन । निशापाल ॥ ४० ॥ नयन । नारद । गीम ॥ ४१ ॥ हथ ।
 तरुन । स्वध्य । दुरे ॥ ४२ ॥ शब्द ॥ ४३ ॥ ब्रह्म पोप । पागन । एक ध्यान

कविन जिन देवन दरसन । देव दानव द्विय मरुति ॥
 किन्तु जप गध्रद्व । सर्व मनमुप जिन करहि ॥
 मिश्र माधक जिन दरमि । नरमि मरुत द्विय विधम ॥
 महावीर बलवत । कवन मरुत मरुत निन क्रम ॥
 अद्भुत चरित चदह चरनि । मृग विचिन्त द्विय द्व्यथ किय ॥
 आराधि मत्र मन नार मह । मात्र ज्ञान सम्भारि जिय ॥
 ॥ छ० ११ ॥ २० १६ ॥

दूहा कुनि मुदिष्ट दूरी करन, अकल भयानक भीर ।
 विना मत्र को वमि करै महामाय वे वीर ॥ छ० ५० ॥
 अनरित फल काह करन किट्ठकर अनरित पल ।
 दिव्य बन्ध काह करन, नाना वरन अमर ॥ छ० ५१ ॥
 मन मन को दिगियत रत मय क रीसन ।
 नामम क विरिय प्रवळ मोक्ष र उदाहरन ॥ छ० ५२ ॥
 य, उर कज मरुत वरन मोक्ष विन सम्भय ।
 मो एक पत्रम विप मरुत मो एक विपन भय ॥ छ० ५३ ॥
 अकल को एक वरन मो एक लक्षण भय ।
 जो रूप लक्षण मुक्त छिन म मय रय ॥ छ० ५४ ॥
 अविनाशक जिन मन उदा रित मन वरन मर ।
 तम वरन मरुत को जिन करन पद ॥ छ० ५५ ॥
 नृमन विष्टि विष्टि करन को फल जय रमन ।
 मोक्ष मन नन अमको जय परमर मम ॥

॥ छ० ५६ ॥ २० १७ ॥

चन्द्र का बीरो को देख कर प्रसन्न होना

दूहा दिगिय चंद्र आनंद मन, धनि मुझ गुरु उपरम ।
 महा पुण्य विषे प्रमन, मो मन मिष्टि अदम ॥
 ॥ छ० ५७ ॥ २० १८ ॥

जानि कै । नान कि । मृग । अग्नि । वृद्ध ॥ चिन्तार । उठत ॥ २० १९ ॥ अनरुति ।
 स्वाम । शिपिय । शिषिय । चरिय । मठ । म । अथाहु ॥ २० २० ॥ उमार । तडा ।
 दिपि ॥ २८ ॥

१६ पाठान्तर ऊप गध्रवं । मिद्र । महावीर । अद्भुत । चरित द्व्य ।
 सावधान ॥

१७ पाठान्तर करण । भयानक । व ॥ ५० ॥ काहू कदण । वर्ण ॥ ५१ ॥
 सन । मत । दिगियत । मे पिपे । क्रन्त ॥ ५२ ॥ पत्रम । दिगियत ॥ ५३ ॥
 कोई । भेस ॥ ५४ ॥ बरस । मंडुर ॥ ५५ ॥ केड । करतह । रमम । भम ।
 आपम पद परमम ॥ ५६ ॥ १८ पाठान्तर दिपि । पिपे । असन । अदेश ॥

चन्द का बीरों की पूजा करना ।

कवित्त मनमृष अंजुलि जाई, करी दडौत सबन कहूँ ॥
 कुमुमंजलि मिर मडि । धप नैवेद समुह मड ॥
 आरति सबनि उतारि । नयन नैनह सब मिलिय ॥
 रहै पिण्णि सब वीर । जानि पनग वन पिण्डिय ॥
 किनी सुभ गति भव भावना । तित चंचल मुथ्थिर करिय ॥
 भय चद चद तन मन प्रमन । अम अभूत पुंजिय रलिय ॥
 ॥ छ० ५८ ॥ सू० १९ ॥

चन्द का पृथ्वीराज के लिये शत्रुशमन मंत्र ग्रहण करना ।

कवित्त जिन वीरन वमि करन । जोग जोगी टट मरि ॥
 जिन वीरन वमि करन । हुह आराधन वडौह ॥
 जिन वीरन वमि कर । चरन मन गुर अन्वामरि ॥
 जिन वीरन वमि करन । पैन भूतन विमवागरि ॥
 गो वीर पच हुअ मट्टज मे । जनी एह परमाद रिय ॥
 रथिराज भाग, वरदाट वर । नय समन टट मर रिय ॥
 ॥ छ० ५९ ॥ सू० २० ॥

क्षेत्रपालों (बीरों) का पूछना कि हम लोगो को क्यों बलाया है ।

हूहा पनपाल तव चर गो । विध टुकम मुद्वेव ॥
 जत्र मय आराध टन । क्यो आरग मय ॥
 ॥ छ० ६० ॥ सू० २१ ॥

चन्द का यह उत्तर देना कि हमने पृथ्वीराज की महायत्ना के लिये आप लोगो को बलाया है ।

साटक आवर्षेय च देव देव सबय, पिथ्वि त्रिा वारन ।
 त्रिपम वक महाय आय भट्ट, भट्ट भया भेकर ॥
 इच्छेय मन पेमय च वरय, दद दल दामन ।
 श्रीवीराधि मुग्द चद नमय, चनेरय मतगितं ॥
 ॥ छ० ६१ ॥ सू० २२ ॥

१६ पाठान्तर माः । शान । कही । कट्ट । नैव । मटी । मट्ट । सबन ।
 नैन । नैन । मिलिय । रिय । जानि । पिण्डिय । किनी । भवना । मुथ्थिर । प्रमन ।
 पूजित ।

२० पाठान्तर अधम आनम अम मडरि । राजि करन । विमवागरि ।
 सोड । पृथ्वीराज । मयू ॥

२१ पाठान्तर मा हुहम । मु ॥

चन्द्र का प्रार्थना करना कि जैसे आप राम रावण आदि को लड़ाई में रक्षा करते आए ऐसे ही पृथ्वीराज को भी करना ।

श्रवित महनि मच्चि जव मुरनि । जद्र अमुरा मुर जव्वह ॥
अमरन अमिय अमीय । मोहि अमुरन तव तव्वह ॥
काली मुर महियम । निपुर जिनिय महियामुर ॥
जालधर भममाम । राम दमकय अभगुर ॥
जहं जहं मुदव वकम परिण । करिय अमय तुम दव तव ।
दवाधि दव दानव दहन । चरन मरन हम रणिय अबू ॥

॥ छ० ६२ ॥ सू० २३ ॥

बीरो का प्रसन्न होकर कहना कि जब गाढ़ पड़े तब स्मरण करना ।

श्रवित पिनक मोन रहि देव । वचन चवह उच्चारिय ॥
हम प्रमन तुज मेर मुनह भट्ट मुम कारिय ॥
ममर मग तुअ राज तव मु मरत पल जानिय ।
न तुमरत मु व. न. न. निह मुन मानिय ॥
मिर आरि चद वावा उरय मदा पमन मेवम रहा ।
करि विप नद मर नरि. विचार नाम वरन कहा ॥

॥ छ० ६३ ॥ सू० २४ ॥

भरव का एक बीर का आजादन कि सब बीरो का नाम बनना कर चन्द्र का परिचयना वा ।

दूहा तव मरत उरगत मा. निह हकम हरन. ।
विचारि नाम वरन नरन जोही विचाराय चद ॥

॥ छ० ६४ ॥ सू० २५ ॥

सब बीरो का नाम गुण कथन ।

दूहा वज्रपाट ता नाम गन घन तन शोर भयह ॥
प्रथक नाम वरनत सवन । मुनत मिटे तन मक ॥

॥ छ० ६५ ॥ सू० २६ ॥

२२ पाठान्तर पिथ । वक । मुमट । घट । उरय । सुगीर । चरनम्य । मरनगन ॥

२३ पाठान्तर महन । मच्चि । अमुरान । जवह । अभिय । अमीय । मोह । तवह । राम । दममथ । जहा. । मरुट । रणिय ॥

२४ पाठान्तर मोन । वचन । उच्चारिय । उच्चारिय । पमन । हुव । हुअ । भटं । कारीय । जानीय । नहा । दैद । हमे पनमानीय । मनमानिय । मदा । प्रमन । करि । भट्टह । विचारि । नाम कही ॥

२५ पाठान्तर दोहरा । नाम ।

छंद पढरी- गुन ईस चरन गुन गहर गाहाफल सिद्धि बुद्धि जा नाम पाइ ॥
 बानिय प्रमन जो प्रथम होइ । करी प्रसन वीर पचास दोइ ॥ ६६ ॥
आइकक वीर यह प्रथम सेव ॥ तिहि प्रसन प्रमन सब जानि देव ॥
वपुलाइ वीर वृनन विनोद ॥ जिहि प्रमन मदा आनद मोद ॥ ६७ ॥
बुँडिआइ वीर बन्दौ सनेह ॥ जल मय मुथलनि करि वरसि मंह ॥
 आनल्लप्रहारिय प्रबल वीर ॥ जिहि जुगत दनुज भरहरै भीर ॥ ६८ ॥
नागीय क्रीडनह होइ कोट ॥ ब्रह्मा उपास करै टक दोइ ॥
मुलीय भज अनगज वीर ॥ बज्रह सुभजि होइ करै चीर ॥ ६९ ॥
 मममान लोटना बोर बक ॥ तिहि पीर भीत अन सक भक ॥
गड उपडनाइ तो वीर नाम ॥ क्रोधन कट नह लहै ठाम ॥ ७० ॥
सामुद्र निरन इह वीर चाव ॥ सप्तम समुद्र मनु बहत वाव ॥
सामुद्र सोप अनभग वीर ॥ दनु देव समुद्रन हरत नीर ॥ ७१ ॥
इह लोह भजनिय वीर दीम ॥ मारन पहार भजे गरीम ॥
सकला त्रोट इह नाम धारि ॥ भजे जरीर जनु मृत तार ॥ ७२ ॥
विम पाय राय सो वीर जानि । पचवन जहर जनु दूध पानि ॥
रुंडमाल नाम लोट हे देष । पिपिय भयक उक मालभय ॥ ७३ ॥
अगिया वीर कुपन वार । प्रबलप्रजारि सा वरत छार ॥
विपिया वीर वीराधि वीर । तिहि क्रोध दनुज सहै भीर ॥ ७४ ॥
जमघट नाम औषट्ट जोर । जिन महज गाज घन घोर मोर ॥
कालाइ नाम इह वीर लेपि । सब नजे भीर भे भीत देपि ॥ ७५ ॥
कुरलाइ नाम इह कलन जाइ । सुर अमुर नाग तानकै पाइ ॥
अगिन्नान्त वीर जव होत कोह । तय जगत तेज गिरमिपर घोह ॥ ७६ ॥
विपकन वीर अत्यंत बक । जिन पिपिय बक अन सक भक ॥
रगतिया वीर पग रक्त रग । अरि रक्त बाह सो करत भग ॥ ७७ ॥

२६ पाठान्तर नाम । पृथक । प्रयुक्त । वर्णन । मिट ॥

२७ पाठान्तर—गाय । नाम । पाय । बानी । प्रमन । हाथ । करो । दाय ।

॥ ६६ ॥ आइक । तिहि । लाय । जिहि ॥ ६७ ॥ बुद्धि । त । पहा । चलन । अनल ।
 प्रहारीय । जिहि ॥ ६८ ॥ क्रोध नह । करे । दाय । अनभग । दा ॥ ६९ ॥ समान ।
 तिहि सक बक अनभीत वीर । नाय नाम । हली । ठाम । ॥ मामः । जनु । बहुनु ।
 बायु । साममुद्र । शोषा । मायै समुद्र सब पिबै नीर । ७१ ॥ और । जजीर ।
 ॥ ७२ ॥ विमपापरा । पानि । मानि । रुडमाल । पिपिय । मय ॥ ७३ ॥ अगिया ।
 क्रोधन । पचवन । प्रजार । करे । विपियाइ । तिहि ॥ ७४ ॥ जमघट घाट ।

कोइलाड नाम जो मेव पाइ । तिन कष्ट होत भगौ मदाइ ॥
 कालक नाम करौ वीर मेव । निहि प्रमन काम दुग्ध कि देव ॥७८॥
 कालवे लाड नाम बिन वीर कौन । गम अगम थान जनु वहत पौन ॥
 काल घटाइ वज्र ग वान । कोपन दनज दल हरन पान ॥ ७९ ॥
 इद्र बीराइ वल इद्र जोर । त्रीगुन विलाम तन हरत गोर ।
 जम बीराइ वीर क्रान्यन्त बोह । मत्तउ समुद्र जल करत गेह ॥८०॥
 देवगिन नाम करौ मेव पाइ । सुभ धर्म कर्म दाता मदाइ ॥
 उँकार वीर रामि करौ ध्यान । जिहि प्रमन मदा आनन्द ध्यान ॥ ११॥
 झापटा वीर जब जुगत जुद्ध । नहि महत जोर दनुदेव मुद्ध ॥
 मानिक भद्र है मेर मान । ऐलन अट्टिल गट्ठ दूग पान ॥ ८२ ॥
 कपडिया वीर कहा करौ किनि । मन वित्त राग लै मुक्ति जिति ॥
 केदाइ रा. नव जुद्ध आर । दिपन्न नेक जिन जात पाप ॥ ८३ ॥
 नरमिध वीर नरमिध रूप । त्रीगुन विलाम आत्म अनप ॥
 गोरिया वीर गुन सकल जानि । नव रमन राम नाना विनान ॥८४॥
 घट घट वीर जनमे मुजान । मोपन समुद्र अरि समुद्र पानि ॥
 कुटेभ्य वीर मुनि समर वाज । दनु दलन कटक मे पगै गाज ॥८५॥
 बग नाम वीर जब समर कच्छ । बग लेन हुँड जनु नीर मच्छ ॥
 माहवगाव वज्रंग अग । अदभूत अग रूपह सुरङ्ग ॥ ८६ ॥
 मती साइ सत मतह सुधीर । पर मथ्य अथ्य भव नाय करार ॥
 महा सतोप मत संग धार । सेवक समुद्र भव नाव पार ॥ ८७ ॥

औषट । ओषट । कालाय । वीर । लेप । नज । देष ॥ ७८ ॥ कुरलाय । नाम ।
 निहि जाई । पाय बोध । पोष तब जरत सिपर गिर तेज पोष ॥ ७९ ॥ वीर ।
 बंक । पिपि । वाह ॥ ७७ ॥ कोया । नाम । भगौ । कालकाइ । कालका ।
 नाम । करौ । निहि ॥ ७८ ॥ बिन । किन । कौन । बहि । समीर । वान । दनुनि ।
 पानि । पान ॥ ७९ ॥ वीर । त्रीगुन क्रभत । जल हरन ॥ ८० ॥ नाम । कहुं ।
 करो । पाय । सहाय । मरो । ध्यान । जिहि । ग्यं । ग्यानं ॥ ८१ ॥ झापटा ।
 युद्ध । नह । माणिक भद्र । मान । पानि ॥ ८२ ॥ कपडिया । कहा । करो ।
 वीत । जिति । केदाइगय । दिषंत । नेन ॥ ८३ ॥ त्रीगुन । गोदिला । जान ।
 जानि । विनानं ॥ ८४ ॥ घटाघटे । दुजान । मे । सु जान । समुंद । यानि ।
 कुनटेभ्य । सनि । मै । परं ॥ ८५ ॥ बग । नाम कछि । कछ । लैत । हुँडि ।

भ्रमराइकाइ बल वाय बेय । भ्रम परे समर षल परे लेय ॥
 महाभ्रमराइ काइक अजीत । भ्रम होइ ताहि जाकर चीन ॥ ८८ ॥
 सहमाष अषि कर सहन जान । जानु द्रुपद मध्य रहै रच्छ दान ॥
 सह स्वाग अग नित रूप चित्र । भय भीन अभय भै करन मित्र ॥ ८९ ॥
 पेत्र पाल षिति पल करै प्याल । नाना चरित्र गोपाल बाल ॥
 भूतपनाइ वीर बलवन्त कर । तटकन्त पिडिञ्ज तन करत चूर ॥ ९० ॥
 माकिनीमार अदभूत जोर । समरन्त भक्त तन हरत रोर ॥
 वेदरी रीति भङ्गन बलाइ । कल्पत करन जे तक तपाइ ॥ ९१ ॥
 मालि बाहनह ममि सूर रूप । मेवक निवाजि वर करत भूप ॥
 ए नाम वीर मुनि चंद लेह । पहिचानि प्रमन करि विदा दह ॥

॥ ८७ ९२ ॥ ८० २३ ॥

चंद का बावनो वीर को पहिचान कर प्रणाम करके विदा करना
 और और पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे बढ़ना ।

कविन पहिचानिय कविचंद । वीर बावन सूर वर ॥
 महाकाय मदमन । अत जनु अटित दनुज छर ।
 नेज माजि चप भाजि नाम धीरज धीर धर ॥
 भीत भयक भयान । जानि अंगम अर्गान अर ॥
 करि नवान चंद पहिचान गव । वज्रपान अग्या रलिय ॥
 बहुराइ देव कवियन प्रयल । मिलन पिथ्य आगे चलिय ॥

॥ ८७ ९३ ॥ ८० २८ ॥

चंद का उस जङ्गल का वर्णन करना जहां पृथ्वीराज शालेट खेलता है ।
 कविन आग गयी गिरि निकट । विकट उद्यान भयकर ॥

जंह न पवरि दिमि विदिमि । बहुन जहं जीव पयकर ॥
 मिह कोल गज रीछ । बहुन मामर बलवन ॥
 चीनल चीन हिरन । पाइ परके भजि जन्ने ॥

मछ । मद्रवपाव । ८६ ॥ मन । मनह । परमथ । अय । नामकीर । वीर
 सय्यंग ॥ ८७ ॥ भ्रमराइ काय । परे । परै । महाभ्रमरणय । कायक । हीन ॥
 ८८ ॥ सहमाध्य अषि । जानि द्रुपद । रछि । दान । सहभाग ॥ ८९ ॥ पित्रपाल ।
 प्याल । पाल । भूतपनाय । भूतपनाइ । पिञ्जि ॥ ९० ॥ माकिनीमार । बलाय ।
 पाय ॥ ९१ ॥ मालिबाहन । नाम । लेई पहिचान ॥ ९२ ॥

रद पाठान्तर पहिचानिय । मदमन । चप भासि । धीरज । जानि ।
 अंगम अतनिर । पहिचानि । बहुशय । रिय । अगे ॥

सेही मियाल लगूर बहू । कुड कदम भरि तर रहिय ॥
पिप्पे मु जीव कवि चद ने । नुच्छ नाम चौपद बहिय ॥

॥ छ० १४ ॥ ऋ० २९ ॥

कविन ठाम ठाम जल थान । मद्धि जल जीव निवामिय ॥
हेक कुरम कुरच । हम मारम मुभ भामिय ॥
बगले बतक बिहग । मगर मछ कछ द्रह पूरिय ॥
देवि दनुज पनग निवाम । मिद्ध माधक रुचि रुरिय ॥
पर परपि बरन घन पिप्पिये । रोम हर्ष देपन नरन ॥
नुछ बुद्धि भद्र देपन भूल्यौ । कवि मुभन्ति कहै का बरन ॥

॥ छ० १५ ॥ ऋ० ३० ॥

कविन मघन वण्य घन छाह । जानि बटल नभ वामिय ॥
देपन पथ्य गिरन । वेलि अवलम्बि विलामिय ॥
मोर मोर कोकिलन । (मोर ★ चीह पापीह पुकारन ॥
मुमन मुगन्ध समह । अध मधुकर मधु आरन ॥
बहू कुटी बात निचान अच । लगूर लाग देपन फिरै ॥
दपन्त जनावर भण्य ही । जनु प्रगान नारा गिरै ।

॥ छ० १६ ॥ ऋ० ३१ ॥

कविन तह पलन पयिराज । मग नामन जहू जुगि ॥
पट मुडोरि मग स्वान । लेन न न व गहन जुगि ॥
बगुन घेरि विणपन । अप मूलन म मडिय ॥
नकर नके इक रहिय । हकि पेश पिह छडि ॥
भहराइ भगि पमु उठि चले । आवै आवै होइ गे ॥
परमपर मोर वे करत मुनि । यो मिहार चन्दह मुठहि ॥

॥ छ० १७ ॥ ऋ० ३२ ॥

२६ पाठान्तर अग्र । तहा । जह । बहूत । जहा । मोर । गीह । मामर ।
सावर । चित्रक । हिरन । पार । परकै । उगुर । पिपे । नुछ । नाम । चौपद ॥

३० पाठान्तर ठाम - । थान मधि । निवामीय कवह द्रह । प्रीय ।
पिपिये । बुधि भट ॥

३१ पाठान्तर वण्य । जानि । बदल पथ । र । ★ अधिक पाठ है । पापीह ।
सीचान । लंगूर । फिरे । देपन । जनावर । भणक ही भण्यक ही । जनु । आकास
गिरै ॥

३२ पाठान्तर तहा । मु डोरि । मग स्वान । बगुर । घेरीय । वियन ।
पडिय । हकि । भयराय । भगि । हुइ । रहिय । लहिय ॥

पृथ्वीराज के शिकार की प्रशंसा ।

कवित्त तिलक भाल ससि षण्ड । गण्ड मद भमर बिलुद्धिय ॥

सुरभि तेल सिद्धर । मुमन सपति मन मुद्धिय ॥

मुद्ध दुद्ध जिम दसन । विमद बानी जिम त्रिमल ॥

फरम मुसल अमि चर्म । हृथ पचम मोदक कल ॥

पुज्जिय मुचंद सुर इदजग । गवग्निद षण दुरय ॥

कपहि सिकार गज तुड डर । मव विघन गनपति हरय ॥

॥ छ० ९८ ॥ सू० ३३ ॥

कवित्त दुजगति अकह हिरन । इक्कनिभय मुभाय अति ।

गजननह टारन्न । विघन विय दिट्टु गनपति ॥

पट आन वर मोर । त्रनिय उणीय निमद उर ।

भगवति वाहन मिघ । वेदग जीय मुमेर थरि ॥

बरदाइ चद मुपच्यारि पग । पचम वह मुपह रहहि ॥

आनक अवर आरन्य पमु । डर थरहरि कपन रहहि ॥

॥ छ० ९९ ॥ सू० ३४ ॥

कवित्त हहरि हरिन हारियव । हेरि कानर रव रदिय ॥

अप त्राम भय मोह । विरह लग्गी नटपदिय ॥

हिय धरकक धुधरह । वदन लोडन जट निडर ॥

नकित चकित मकीन । ममग मारिय दुपभर ॥

भेरन चमककन पन रव । गिनक चित्त जिम उपरै ॥

गिल्लत मिकार मिथ कुंअर डर । पमु पीपर दल थरहरै ॥

॥ छ० १०० ॥ सू० ३५ ॥

कवित्त पोमिन वन नहि चरहि । नहिन मचरिहि कुनुद वन ॥

ईप पेन परहरहि । जीर परटु अविरन मन ॥

मयर गति लखि मुथ । काम कानन नह चापहि ॥

नह पिपै नियनारि । नहिन चप कदान रण्यहि ॥

३३ पाठान्तर गड चम्मर मदद्दुद्ध । मुग्म । सपति । दुद्ध । दूध ।
मुद्ध । बानी । निमल । चम्म । इय । पात्रय ॥

३४ पाठान्तर डक मुमिय निमद अति । गनवदन सट । गजननह ।
दिठिय । गनप न । त्रनीय । उणीय । निमम । मनीय । गजिय । विर । रहिय ।
आतंक । आरन्य । रदिय ॥

३५ पाठान्तर -हहरि । हीरन । हारीयव । रव । अय । लगिय । धरक ।
धुधर । निडर । मकित । ममग । मकरीय । दुप । भयपत्र । चमकन । पत्र ।
उपरै । विलत । कुंअर । गियद ॥

गिरि मद्धि गहिर गुडझह वमहि । नीर ममीप न मचरहि ॥
मोमेम मुतन आपेट उर । इमड ढाल उम मह चमहि ॥

॥ छ० १०१ ॥ स० ३६ ॥

कविन गिर कदर मर वरह । मरिन कच्छह घन गुच्छह ॥
निङ्गजर काल न द्रहन । वेतनल तिन मर पुजह ॥
उजर अगि पुर घरह । मैल नट उद्धह अद्धह ॥
हथ्य जोरि मव मुभिभ । उभभ दिापहि कित लद्धह ॥
फल मल टाप भ अकाम थल । वन उपवन घन मचरहि ॥
इहन इढाल इढाल विय भ्क्कारन वहु भक्करहि ॥

॥ छ० १०२ ॥ स० ३७ ॥

कविन नहि गद्वन करि गद्व । नहिन गज्जन घन गज्जन ॥
पोलन नहिय नयन । मिघ कहि बोलन लज्जन ॥
भजन मद्धि मचरन । नहिन कुचरन दुरद वन ॥
नरन लप लपनसु । पुछ गज मृत्तिय मग गन ॥
धरु धकहि धकहि नरहि चरहि । दिघ उमासन उरहमहि ॥
प्रथिराज कुवर कावट डर । गिर कदर केसर वमहि ॥

॥ छ० १०३ ॥ स० ३८ ॥

कविन बग्गुर अगिनत परन । कितिक फदन परगविद्धन ॥
कितिक मूलन मरन । कितिक स्वानन मह मिद्धन ॥
घटनरागन कितिक । कितिक चीते नकि दब्वन ॥
वाज मिचान कुहीन । झपटि चचनु फल चव्वन ॥
घन कह मिकारन ह्वै रहीं । भजि न जीव कह जै नकै ॥
वलवन वाघ हथिय अजर । पकरि हकि लीजै भकै ॥

॥ छ० १०४ ॥ स० ३९ ॥

३६ पाठान्तर नहि । चरहि । इप । परहन । परमय । मथर । मुथ ।
चषहि । पिपे । नाहि । रषहि । मभि । गृजह । उमद । महि ॥

३७ पाठान्तर- गिरि । बलह । गुछह । निङ्गर । कूलन । कूडह । सेल ।
अघह । हथ । मुभि । उम । दिपहि । इप । भु । भुपुकारनिबहुमुकरहि ॥

३८ पाठान्तर नहि । गबनु गव । गजन । न । लाजन । भुअनन । रेफ
लुंपतसु । पुछ । मग मृति । हिचकहि । दिघ । उरहसे । पृथीराज । कुंअर ।
मेहरि । बसै ॥

३९ पाठान्तर बगरि । कितिक । स्वानन । दवन । चचनु । पल । चूव्वत ।
चूवत । कहु । कहुं अथिय । हथिय । हकि ॥

कविन गाडी लिए कितेक । किनक उटन पर डारे ।
पन गणे धर कितरु । किनक ह्थी पर धारे ।
काहर कधन कितरु । किनक स्वानन मुप द्दृत ॥
बिछी मर्ष विषग । मंत्र वादी मिल लद्दृत ॥
वज्र निशान महनाइ मुर । तबल डक्क वज्रन बलिय ॥
मिक्कार पळि घन रम रहाँ । सब पहार पग बलदिय ॥

॥ छ० १०५ ॥ रू० ४० ॥

कन्ह चौहान आदि सब सरदारों का आकर पृथ्वीराज से मिलना और
कहना कि आज यहीं शिकार हो ।

कविन आइ कन्ह चहुआन । नवनि प्रियगजमु किय ॥
आइ राइ गोयद । प्रथु क आदर आदन्निय ॥
आइ चद पुंड़ीर । श्रीर मण्यह ह्मि मिल्लिय ॥
बलिभद्रह क्रम । कहर फिन्ने रम पिन्दिय ॥
अवुआ गड पावार मिलि । वरुन वध मिर हर वरिय ॥
मिठी कठी मिह पावार उट । आज केलि अदभन करिय ॥

॥ छ० १०६ ॥ रू० ४१ ॥

इह भिन्दिय मरुठ नामन नहँ गनि न ह्ठे पर नाम ॥
हान हीन परवत नजिर मयन मुदिम जम ॥

॥ छ० १०७ ॥ रू० ४२ ॥

पृथ्वीराज का शिकार मे घर की ओर लौटना ॥

छंद पद्धरी फिर चले कुअर प्रथगज गेह । मिनि नरुठ गुर यामन नह ॥
परहाम परमपर करन केलि । तारीन तकि नृप केन जेलि ॥१०८॥
मगाइ नीर रुग मुप पवारि । सब करन मडि रूर्पर धारि ॥

गोठ (भोजन) के स्थान पर ठहरना ॥

जहा हुई गोठि भोजन नरिद । तहा हुते मकल मामत वृद ॥१०९॥

४० पाठान्तर शीर । किर । कितरु । पति । ह्थी । स्वानन । मर्ष ।
बजत । निमान । महनाइ । रू । वज्रन । मिक्कार ॥

४१ पाठान्तर आय । चहुआन । पृथ्वीराज । विन्दिय । आय । गय ।
गोडद । प्रथु । आ । मण्यह । ह्मि । मिल्लिय । पिन्दिय । वरिय ॥

४२ पाठान्तर वहा । नाम ॥

★ यह तुक एमियाटिक सोसाइटी की पुस्तक मे नहीं है ॥

४३ पाठान्तर - किरि । पृथ्वीराज । गेह ॥ १०८ ॥ माणय । मगि । होइ ॥
१०९ ॥ मिठें । वरुणय । आर । कर्हिय । वन । पळिठ मुनाय । जाय । एकन ॥

चन्द बरदाई का आकर पृथ्वीराज से मिलना और पिछला सब वृत्तान्त
एकान्त में ले जाकर कहना ॥

फुनि मिले चद बरदाइ आइ । कछु कही बात पिछली मुनाइ ॥

नृप भट्ट जाट बैठे उकत । फिरि कही वत्त जा आदि अत ॥११०॥

पृथ्वीराज का भोजन करना और फिर आगे बढ़ना ।

मुष मद्धि मुष्य प्रथिराज पाइ । भोजन करन नृप बैठे आइ ॥

छह रम निवाम आहारि अत । करि कुरल पान करपूर लिन ॥१११॥

मृगमद जवाद मत्र चरचि अग । वसमीर अग मुर रहिय अग ॥

मुभ कुमुमहार मत्र कट मेलि । उम चलिय बलिय चहुआन पेलि ॥११२॥

छह अग्गा इक्क सौ नुरिय नेज । उहुन पपि बिन पपिकेज ॥

वगमीम सकल सामत जोग । दिपि वाह वाह मत्र बहत लोग ॥११३॥

मुष चाल फाल जे दिन लेत । उतंग गान पापर ममेत ॥

गज घोलि वाह घृघर मलोल । लघे न राह करन बलोल ॥११४॥

हा महत उडन हा कहत उहुह । गिर परत धक्क जिन कोट गहुह ॥

पिन मान अमलि अंगक देम ।

सब सरदारों को एक एक घोड़ा बांट दिया उसी पर सब चढ़ कर चले ।

सोमन वानि रत्रि रथ्य भेग ॥ ११५ ॥

है एक एक मत्र बटि दीन ।

चाहि मूर सकल सामत लीन★ ॥

काचिचन्द को एक हाथी देना जो महा बलवान था ॥

दिय हस्ति एक कत्रि चर बोलि ।

अहुन ताहि को सकै पोलि ॥ ११६ ॥

तल बहत पाट मुड्झै न अपि ।

अति पाइ काइ गहि लेइ पपि ॥

अनि गज्ज मुष को सकै झेलि ।

खल दलन मझ्झ पारत भेलि ॥ ११७ ॥

मुर नाथ वाह मम अग ओप ।

दिपियै खिज्यौ जनु काल कोप ॥

बिन रोम महज मे अजा जानि ।

हर कोइ बचिलै चलयौ काने ॥ ११८ ॥

११० ॥ मध्य । मुष । पृथी राज । पार । भोजन । करन फुनि । बैठि । आय ।

लीन ॥ १११ ॥ जवाद । मुभ कटहार । मेलिह । चहुवान ॥ ११२ ॥

एक । एक सो । उहुन पपि ॥ ११३ ॥ उतंग । पपर । लवे ॥ ११४ ॥ धक्क ।

जिहि । गढ । रथ ॥ ११५ ॥ हय । लिन । आहुन ॥ ११६ ॥

सकै न बोलि को हय अरूढ । छरहरौ पग बलि कवन मूढ ॥
 अगि जल्ल मझ मानै न सक । होइ रहै भूत मुनि बज्जि डरु ॥११९॥
 मुनि विरद कान चल्लन मग । तिहि चद हथ्य दिय कनक वग ॥
 ॥ छ० १२० ॥ पृ० ४३ ॥

इहा बाग धरी कवि चद मिर, हरष भयो बहु अग ।
 तू विरुम अरुम हरन, करन दरिद्रह भग ॥
 ॥ छ० १२१ ॥ पृ० ४४ ॥

एक एक मामन हय कीनिय चद हजर ।
 ब्रह्मि चलिद्य हलिय अगै मरिन तुरगन पर ॥
 ॥ छ० १२२ ॥ पृ० ४५ ॥

कवि चद का पश्वीराज की स्तुति करना ॥

कविन काग्य नबनि कविचद । छद अनर पाडिट रर ॥
 तू सुरानि मम कुअर । दय मामा भयो रर ॥
 अगिन ररु जठ चद । परन गोइर प्रअर वर ॥
 चर चद बल धोर । नज नामउ जठर पर ॥
 चर नज रहर ररुम मय । चद ममुा सां प्रर ॥
 अगपण नरु नामन मय । रर शरु प्रर ररि ॥
 ॥ छ० १२३ ॥ पृ० ४६ ॥

इहा जीराग ररि वर है कानि ररी म्या जा ॥
 जीव ब्रुा द्वीपव्य निमित रर मा मनि मुभा ॥
 ॥ छ० १२४ ॥ पृ० ४७ ॥

मत्र लोगो को अपने अपने घर विदा करना ॥
 ररुी रग वरु ग्रहन, कग्य विदा मनमान ॥
 निमा मुप्य मडे मुपन, जाते उगन भान ॥
 ॥ छ० १२५ ॥ पृ० ४८ ॥

नब लहन । मुझे । काय । पाप । उय । मन । मरुप । मझ । सरा ॥ ११७ ॥
 उंप । दिषियै । मै । चर । कान ॥ ११८ ॥ नहै । काट । पग । जठ । मझ ।
 मानै । होय । बज्जि ॥ ११९ ॥ चालन । मय ।

४४ पाठान्तर तू । तू ॥
 ४५ पाठान्तर कीनीय । चलिय । हलिय । अगै । तुरगन ॥
 ४६ पाठान्तर पाडि । कुअर । कुअर । ममवर । अगाने । वावड । प्रव ।

सकल । ररु । दरि ॥

४७ पाठान्तर जाय । बुधि । पिबह । मनि ॥
 ४८ पाठान्तर—मनुमान मुप । मडे । उगन । भान ॥

वीरों के मिलने के समाचार से पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ॥

प्रथीराज आनंद मन, मुनि ब्रीरन वर वत्त ।

फूलन तन तरु नीर लमि, टम आतम उलमन ॥

॥ छं० १२६ ॥ सू० ४१ ॥

श्लोक शुभ दिवसे शुभ वार्ता । अशुभेच्च अशुभानि च ॥

शुभ शुभ यथायुक्तं । भवति दिवमानि च ॥

॥ छं० १२७ ॥ सू० ५० ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥

कअन्त प्रथीराज चहुआन । वान पारथ वलिवडह ॥

प्रथीराज चहुआन । दंढ दडैनि अदंडह ॥

प्रथीराज चहुआन । मरिम जुध कोउ न मडै ॥

प्रथीराज चहुआन । मत्र त्रिनु रद गहि छंडै ॥

प्रथीराज चहुआन पट । कली करन अवनार कट्टि ॥

मोमम मूर पूरुई मभग । उदर पिथ्य अवतार लट्टि ॥

॥ छं० १२८ ॥ सू० ५१ ॥

दूमरे दिन मवेरे पृथ्वीराज का उठना और निन्त्य कृत्य करना ॥

दहा प्राण राज नगरे प्रथम गो इज द मन गीन ।

देहकृत्ति पुनि मर मुनि पावन पानि मुलीन ॥

॥ छं० १२९ ॥ सू० ५२ ॥

करि पावन पणिय वर मोहन मुरभि मुनेट ।

मर्दनीक मर्दन करे बटै धान ता देल ॥

॥ छं० १३० ॥ सू० ५३ ॥

नहाकर दस गोदान, दस तोला सोना और बहुत सा गन्त दान देना ॥

करि मनान गगोनकर, दिय मुगाइ टम दान ।

दम तोला तुलि हेम दिय, अनदान अमान ॥

॥ छं० १३१ ॥ सू० ५४ ॥

४६ पाठान्तर वन । लहि । इम नृा आतम उलमन ॥

५० पाठान्तर -मुभ । मुभ । वार्ता । अशुभे । अशुभानि । मुभासुभं ।

यथायुक्तं ॥

५१ पाठान्तर पृथराज । चहुआन । चहुवान । वान । चडह । पृथियराज ।

अदंडह । पुढ त्रिनु । कलि । पिथ ॥

५२ पाठान्तर -गो । देह कति पुन । मुचि । पान पानि ॥

५३ पाठान्तर पावन । मुरंभ । मुरभ । मर्दनीक । मर्दन ॥

५४ पाठान्तर--मगान । गंगोदकहि । दान । अन । दान । अप्रमान ।

महल में पृथ्वीराज का विराजना और सरदारों का आना ॥

छन्द पद्धरी-करि स्नान दान सुचि रुचि कुंआर । होइ देवरूप साष्यात चार ॥

कीनों मु महल वज्रै निसान । आनन्द सकल सामन्त मान ॥१३२॥

आये सुमहल सामत सूर । पूरन तेज वीरत्त पूर ॥

अनभङ्ग अङ्ग अनभूल बान । जिन दिठ्ठ अरिय पावै न जाना ॥१३३॥

कैमाम आइ कीनो जुहार । विद्या सु चतुर्दस मत्ति मार ॥

गोयन्दराज गहिलौन आइ । बँठो मुकुअर कमल नवाइ ॥१३४॥

चहुवान कन्ह आयो अभङ्ग । भारथ्थ कथ्य भीषम प्रगङ्ग ॥

अति अनी गुंभर बँट मुआइ । अन मित्त मत्ति बल अप्रमाइ ॥१३५॥

राजन हुंआर मधि सूर मात्र । देवतन मद्धि जनु देवराज ॥

गिरिगज मद्धि सब गिरन रज्ज । दखन्त सभा गुंभ इन्द्र लज्ज ॥

॥ छ० १३६ ॥ ६० ५५ ॥

बीरों के बश होने की बात से पृथ्वीराज का पेट फूलता है पर किसी से कह नहीं सकता ॥

दूहा बँठि सभा प्रथिराज रत्ति, आय सुरति निज चित्त ॥

वत्त बीर वरदान की, अति उमग उलमिन्त ॥

॥ छ० १३७ ॥ ६० ५६ ॥

रहे न आनंद कुंअर द्विय, उगमन रणत प्रमान ।

कहे न कामो वन वर मानो दुद्ध उकान ॥छ० १३८ ॥ ६० ५७॥

कैमाम का हाथ जोड़कर पूछना कि आपके मुख पर कुछ उत्साह दिखाई

देता है पर आप खुलकर कहने क्यों नहीं ॥

अरिन्त पानि जोगि कयमाम । बदै तत्र रात्र त्रति ॥

उर अवलोकित उलमत । सामन्त राज अति ॥

को कारन मुख चारु । न कथिहि वन यति ॥

मुंभर सूर सामन्त जु । विनवन्त राज प्रति ॥छ० १४० ॥ ६० ५८॥

५५ पाठान्तर स्नान । दान । कुंआर । कुंआर । आय । वज्रै । निमान ।

मान ॥ १३२ ॥ पूरन । तेज । वीरत्त । अभू । बान । दिठ्ठि । पन । १३३ ॥

आय । चतुर्दस । मत्ति । गोउद । आय । आइ । कुमर । कमल । नवाय ॥ १३४ ॥

चहुआन । भारथ्थ । कथ्य । अति अनी । आय । आइ मित्त । अप्रमाय ॥ १३५ ॥

कुंआर । देवतनु । मधि । मधि । रज्ज । गुंभ । लज्ज ॥ १३६ ॥

५६ पाठान्तर पृथीराज । वरदान । अन्धमिन्त ॥

५७ पाठान्तर -आनंद । कुंअर । कुमर । प्रमान । मनो । दुद्ध । उकान ॥

५८ पाठान्तर चन्द्रायना । यति । उलहमन्त । सामन्त ॥ १३९ ॥ चारु ।

कथि । वन । विनवन्त ॥ १४० ॥

पृथ्वीराज का चन्द के वीरों को वश करने का समाचार कहना ॥

द्हा तब कहै कुँअर मामन्त सम, कलि आवेटक रंग ।

भयो मुर ममै एक भय, आलम ही में गंग ॥

॥ छं० १४१ ॥ रू० ५९ ॥

कवित्त अरंजे आपेट । चन्द भुल्यो सुवट्ट वन ॥

जंगम इक तापस्म । मिल्थो बरदाइ मुद्ध मन ॥

प्रमन भयो कविचन्द । वीर मन्त्रह दीनो वर ॥

अजमायो कविचन्द । वीर बावन ढरम चिर ॥

तिन देखि अमित चरितह मुनन । वरनै कवि बरदाइ अनि ॥

अन्नेक रूप अन्नेक गुन । अनंत गति अनतह मुमति ॥

॥ छं० १४२ ॥ रू० ६० ॥

सरदारों का उपहाम करके कहना कि भाट, नट, चारन, ये सब आरत
हैं इन की बात सत्य नहीं माननी चाहिए ।

अरिल्ल प्रमन मूर सामन्त सकल वर । हासे आप परमपर मुभ्रम ॥

भट नर चारन ज आरतह । इनकी गति न मन्त्रियै मन्त्रह ॥

॥ छं० १४३ ॥ रू० ६० ॥

कैमास ने कहा कि चन्द को देवो ने बरदान दिया है वह सचमुच
कोई अवतार है ।

गाथा कथिय वर कैमाम । देवी वरदाय चन्द भट्टायं ॥

अम तिन चवै अमेसं । मन्यं रूप सत्य अवतारं ॥

॥ छं० ५४३ ॥ रू० ६१ ॥

कन्ह ने कहा कि चन्द छूट गया था यह बात सच है; इसी पर
उसने यह बात प्रसन्न करने के लिये गढ़ी है ।

अरिल्ल कहै कन्ह हम मानी सबबह । भुल्यो भट्ट मग्गा बन तब्वह ॥

हमन केलि डर जोरिय वत्तं । इह अचिज्ज मननै न बिसत्तं ॥

॥ छं० १०५ ॥ रू० ६२ ॥

५६ पाठान्तर कुमर । कुअर । काल्हि ।

६० पाठान्तर अपरजेन भयो । कविचंद । भुल्यो । बट । तापस । मिल्थो ।

चंदं । वरने । बरदाय । अनेक । अनत ॥

६० पाठान्तर प्रमन । मुभ्रम । भट्ट । नट्ट । चारन । जु । आरतह । मनियै ॥

६१ पाठान्तर - कथिय । भट्टायं ॥

६२ पाठान्तर -- कहै । मानी । भुल्यो । मग । तबह । जोरीय । शुभ हित

डवर गाम सपत्तं । अनिजं ॥

पृथ्वीराज के मन में सन्वेह हो जाना ।

दूहा —किन्ही मंनी अमनी सुकिहि, त्रिविधि जानि संमार ॥
सुनत राज विभ्रम भयो, परचौ मुचिन्त विचार ॥

॥ छ० १४६ ॥ स० ६३ ॥

इतने में चन्द का आकार आसीस बना ।

इहि त्रिवार करवह मनह, आयौ चद मुतव्व ।
दिय अमीस कर उव करि, बेद नीत वर कव्व ॥

॥ छ० १४६ ॥ स० ६४ ॥

पृथ्वीराज का चन्द को पास बुलाकर बीरों की बात छोड़ना ।

राजह मूर हकार लिय दिय मादर मनमान ।
वीर त्रिरद वरदाय प्रति, लग्गे वत पुछान ॥

॥ छ० १४७ ॥ स० ६५ ॥

पृथ्वीराज का चन्द को बडाई करके कहना कि हम लोगों की बड़ी
अभिलाषा है सो आज बीरों का दर्शन करवाओ ।

कविन कहै चद कविराज । वत पूरव जो त्रिनिय ॥
कहिय कुंअर प्रथिगज । चद चरनी गो मनिय ।
हमहि वहन अभिलाष । देव वीगनि दरम रज ॥
पार्वहिनी परमाद । मूर मामत मत अज ॥
तो मम न और निहू लोक मे । नट्ट भट्ट नाटिक नर ॥
समार पार वोहिथ समह । तोहि मान देवी सुव्र ॥

॥ छ० १४८ ॥ स० ६६ ॥

कवि चन्द का मंत्र जपना और होम करना ।

दूहा —मुनि आनचौ चद चित । कीन मन आरंभ ॥
जण्य जाप ह्वि होम मव । लग्यौ कज्ज अमंभ ॥

॥ छ० १४९ ॥ स० ६७ ॥

६३ पाठान्तर किहि । म । किहि । दिथा । जानि । चित ॥

६४ पाठान्तर इह । विचारि । तव । दीय ।

६५ पाठान्तर —राज । हकार मनमान । वरद । वरदार । लगे । पूछान ॥

६६ पाठान्तर —कहै । कुंअर । पृथीगज । चरचा । चरचि । मतिय । हमहि ।

वीरनि । वीगन । कवि । पार्वहि । मामन । निहू । मे । नट । भट । नाटिक ॥

६७ पाठान्तर —आनंद । मंत्र । जप । मम । लग्यौ । कज्ज ॥

वीरों का प्रगट होना ।

गाथा - जिय जप जाप मुहोम । आए वीर धीर आनुरय ॥

गज्जै गयन गहीरं । भय भै भीत मोर आघात ॥

॥ छ० १५० ॥ ऋ० ६८ ॥

छंद भुजंगी धमकी धरा धम धमै धरक्की । कठ पिट्टु कमट्टु कट्टु करक्की ॥

डिगी अडिग सो दिगपाल दम्म । तरक्के चके मुनि जन तपम्म ॥ १५१ ॥

भरक्के मुवाज सु वाज विल्लुट्टे । तरक्केक एक उलट्टे मुलट्टे ॥

इसो आगमं भो मुवावन्न वीर । कपे काडर धीर रण्यो सुधीर ॥

॥ छ० १५२ ॥ ऋ० ६९ ॥

वीरों के शब्द से सामंतों का डरकर सोचना कि बिना काम इन

को बुलाना ठीक नहीं हुआ ।

दूहा—मुनिअ घात वर वीर को चमके चित्त सामन्त ॥

इन गज्जे कज्ज विन किनी आप अमन्न ॥

॥ छ० १५३ ॥ ऋ० ७० ॥

दो मन्त हाथी दरार के बाहर बांधे थे वह बीरों का भयानक

शब्द सुनकर चोंके ॥

दूहा गज धमन्न गजराज वर दो हाथी दरार ॥

डिगि डिगि वन्ने रहै । काल समान करार ॥

॥ छ० १५४ ॥ ऋ० ७१ ॥

कवित्त अति वठवन्न अनन्त । गम्भ्र मानहु गिरवर पे ॥

गगन जेम गाजन्न । वध वधन ते मरसे ॥

च्यार पटे छट्टे ★ छलाल । मट्ट नट्टह सु अहो नि ॥

पवन पाइ पुरबाइ । काल रूषी कंकाल रिम ॥

मिर दिछघ दिछघ दन्तह मुभग । जरजराइ बगरि जरिय ॥

लष लष दाम पावहि पट्टे । कनक साजहाज मु करिय ॥

॥ छ० १५५ ॥ ऋ० ७२ ॥

६८ पाठान्तर -गाहा । म । गजे ॥

६९ पाठान्तर धम्मकी । धम । धमै । धम्मे । धम्मे । धरकी । कमठ ।

कठे । करकी । डि गै । डिगे । अडिग । दिगपाल । दम । तरके । करके । चके ।

मुजि । मुनि । जनं । तपमं ॥ १५१ ॥ भरके । विल्लुट्टे । तरकेक । उलट्टे । मुलट्टे ।

इसो । वीर । कपे । कपे कायर म ॥ १५२ ॥

७० पाठान्तर -सु आघात । चमके । कज्ज । किनी ॥

७१ पाठान्तर -गुमार । हाथी । रहै । समान ॥

७२ पाठान्तर -गह्व । मानहु । ते । च्यारि । पठ ★ अधिक पाठ । मद ।

दोनों हाथियों का लुड़ाकर लड़ जाना और दवार में खलमली मचना ।
दूहा - वीर सोर आघात सुनि, गज छुटि बन्धन तोरि ॥

भिरे उभय भय भीत होइ, परि दरबारहू रौरि ॥

॥ छं० १५६ ॥ स० ७३ ॥

छं० मोतीदाम - भिरे गजराज भयानक रूप । उभै मदमत्त महा जम जूप ॥

भए कइकाल कराल अरूट । लगै जनु क्रोध सु कज्जल कूट ॥१५७॥

जुरे जुग जानि गुरु गजराज । किधी कउ दानव रूप दुराज ॥

जगे प्रलकाल भयानक भूत । इसे दुइ दन्ति भिरे अदभूत ॥

॥ छं० १५८ ॥ स० ७४ ॥

सरदारों का बहुत उपाय करना पर हाथियों का बश में न आना ।

दूहा दौरि सकल मामन्त मिलि, करै अनन्त उपाइ ॥

रोम लगै छुट्टै नही- भई सुहायो हाइ ॥

॥ छं० १५९ ॥ स० ७५ ॥

विहं ओर हरषी छुट्टै, परै अगड मुमार ॥

गोला गगै गिलोल गुरु, छुट्टै न ती इमगर ॥

॥ छं० १६० ॥ स० ७६ ॥

गाथा वर बावन मु वीर । कौतिग लपन्त मूर मामन्त ॥

करै अनन्त कलाप । नह छुट्टन्न गज गग आइ ॥

॥ छं० १६१ ॥ स० ७७ ॥

चन्द का बावन बीरो से प्रार्थना करना कि आप लोग इन हाथियों को
छुड़ाकर बांध दीजिए ।

दूहा तव कर जोरिय चन्द कवि, अगै बावन वीर ॥

तुम मु छुडावहु मन्त बहु, बहुरि जरहु जज्जीर ॥

॥ छं० १६२ ॥ स० ७८ ॥

हृद हृद । अर्हानमि । पाय । गुरवाय । कफाल । दिष दिष । गरजगट । बगरी ।
रुष २ । दाम । पार्वति । पट । मात्रनु ॥

७३ पाठान्तर छुट्टै । भिरे । भै । दरवारह । रावि ॥

७४ पाठान्तर भिरे । भयानक । मदमत्त । कोट । अरूट । लगे । कजल ।

कूट ॥१५७॥ जानि । गिरगज । काऊ । दानव । लगे । जगे । प्रलं । भिरे ॥१५८॥

७५ पाठान्तर - दौरि मामन्त । करै उपाय । जगे । छुट्टै । नही । म ॥

७६ पाठान्तर - विहं । उर । परे मुगड पर मार । लगे । गुरु । छुट्टै ।

तो । अम ॥

७७ पाठान्तर - बावन । मामन्त । करै । गुरुपाई ॥

७८ पाठान्तर - बावन । बावन । म ॥

भैरव की आशा से बीरों का हाथियों को जंजीर में बांध देना ।

अग्लिल तब भैरव भुवाल वीर वर । कीन हकम कालीय ऊंच कर ॥

छोगबहु गजराज पांनि गहि । बहुरि जरो जञ्जीर थान कहि ॥

॥ छं० १६३ ॥ रू० ७९ ॥

दूहा तब काली दोरची तलपि । गज्ज छुराइ ममथ्य ॥

उभै पांनि मो रद उभै । गहै उभै वरहथ्य ॥

॥ छं० १६४ ॥ रू० ८० ॥

यह कौतुक देखकर सरदारों का आश्चर्य में होना और सब का दर्बार में आकर बैठना ।

गाथा बंधन दीन सु पाइ । कौतिगं दिष्ययं मन्ध्र मूरं ॥

मनिय मन आचिज्जं । बैठे फेरि आइ दिवानं ॥

॥ छं० १६५ ॥ रू० ८१ ॥

पृथ्वीराज का सब बीरों को प्रणाम करना, चन्द का नाम ले लेकर सब बीरों को पहिचनखाना ।

परसे वीर सु मन्ध्र । करी प्रथिराज पाइं परिनामं ॥

प्रथय चन्द कथि नामं । पहिचानि वीर वीरायं ॥

॥ छं० १६६ ॥ रू० ८२ ॥

चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि बिना कारण इन को बुलाया है इस से इन की बलि दो पृथ्वीराजका बावन घडा मदिरा बावन बकरे मंगाकर

बलि देना और भैरव आदि की पूजा करना ।

छंद पद्धरी पहिचानि राज प्रथिराज वीर । मयो उदिन मन आनंद वीर ॥

कविचंद कहिय प्रथिराज राज । इन देहु मुवठ व्याकुठ तमाज ॥१६७॥

बिन कज्ज अप्प आगध कीन । नवि विहित कुमल उम्भो सुईन ॥

बावन घट्ट वासनि मंगाइ । बावन वीर प्रति घट्ट पाइ ॥१६८॥

७६ पाठान्तर भुवाल । किन । उच । छोगबी । पांनि । जरो । थानि । कहि ।

८० पाठान्तर गन । छोराय । ममय । पांनि । मों । सं । हथ ॥

८१ पाठान्तर दीय । सु पायं । पाई । मन्ध्र देरीय । दिषय मन्ध्र । मनिय । आचिज्जं । फिरि । आय । दीवानं ॥ ४ ॥

८२ पाठान्तर — कर । करि । पाय । प्रथुक । करि ॥

८३ पाठान्तर — पहिचानि । प्रथीराज । भयो । श्रीर । कहीय । प्रथीराज । स । बाकुल ॥ १६७ ॥ कज्ज । कुगळ । लभौ । बावन । घट्ट । मंगाई । घट्ट । वान ॥ १६८ ॥ भय आनि । निदीन । आरवि ॥ १६९ ॥

वावन अजामुत भ्रष्ट आनि । दीने सु आदि भैरव निदान ॥
सिंदूर तेल पुहपनि अरच्चि । सन्तोषि पोषि सब तन चरच्चि ॥

॥ छं० १६९ ॥ रू० ८३ ॥

घीरों का प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहना कि बर मांगो सो हम दे
और अब हमको बिदा करो ।

दूहा—भये त्रिपत बीराधिबर, पूरन ठक्क उकार ॥
अनि आनन्दत उल्हमत, बोले बयन वकार ॥

॥ छं० १७० ॥ रू० ८४ ॥

मङ्गि मङ्गि महिपति तुअ । मोई समपे आज ॥
दे मुविदा न बिलम्ब करि । जु कछु चित्त तुअ काज ॥

॥ छं० १७१ ॥ रू० ८५ ॥

पृथ्वीराज की ओर से चन्द का कहना कि लड़ाई के समय हमारी
सहायता कीजिएगा ॥

गाथा जपे वर बरदाई । तुम वरं वीर देव देवाधि ॥
भो प्रथिगज सहाई । जुद्ध जय राज जुट्टाई ॥

॥ छं० १७२ ॥ रू० ८६ ॥

भैरव का चन्द को बुलाकर कहना कि जब तुम्हें टेढ़ा समय आवे तब हम
को याद करना ।

गाथा तब वर भैरव बीरं । उच्चारीगं संमुष्य चन्दं ॥
जं तुम बंकट ठौरं । तं सभारं विहित अम्हाइं ॥

॥ छं० १७३ ॥ रू० ८७ ॥

गाथा परतिषि अम्ह सुहुब्बं । करयं जुद्ध तव्व साहस्सं ॥
जय्यं चण्डिन चन्दं । तय्यं करै न हम आगमं ॥

॥ छं० १७४ ॥ रू० ८८ ॥

८४ पाठान्तर तृपति । डक । डक । वानंद तन । वैन ॥

८५ पाठान्तर— महिपति । समयै । देह । तू कछु चित्तन काज ॥

८६ पाठान्तर—जपे । वर । वीर । देवाधि । वीर देवाधि । जुट्टाई ॥

८७ पाठान्तर— उच्चारित चंद संमुषं । तुम । बंकट । ठौरं । सभारं । सभारे ।

विहित । अम्हाई ॥

८८ पाठान्तर— बन्द । जुद्ध । तब । साहस्यं । जय । तयं । हुंम् । आगमं ॥

बचन देकर बीरों का बिदा होना, सरदारों का चन्द की बात पर प्रतीत
करना और पृथ्वीराज का चन्द पर अधिक प्रेम बढ़ना ।

दूहा दइय वाच सब बीर नैं । बहुगाए कवि चन्द ॥

सब सामंत अनन्द भौ । दरमत नठुँ दन्द ॥

॥ छ० १७५ ॥ रू० ८९ ॥

सत्य करै मान्यो मकल । हरषित भय प्रथिराज ॥

प्रेम बढ्यो अति चन्द मो । साहम रीत ममाज ॥

॥ छ० १७६ ॥ रू० ९० ॥

पृथ्वीराज का चन्द से कहना कि सब सरदारों को मन्त्र बतला दो, चन्द
का सब को मन्त्र बतलाना ।

गाथा तव कुँअर कहि चन्द । देहु मन्त्र सब्ब सामन्त ॥

तव कहि मन्त्र चन्द । कीन अप्प अप्प सहायं ॥

॥ छ० १७७ ॥ रू० ९१ ॥★

चन्द को बीस गाँव और एक घोड़ा पृथ्वीराज ने दिया ।

दूहा बीस गाम कविचन्द प्रति, कर्ग कुँअर वगमीस ॥

एक वाजि माजति मजहि । दियो मु मम्भरि ईस ॥

॥ छ० १७८ ॥ रू० ९२ ॥

इति श्रीकविचन्द विरचिते प्रथिराजरासके आषेटक बीरबरदान वर्णनं
नाम षष्ठ प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥

८६ पाठान्तर वीरनैं । सामंत । नठैं ॥

६० पाठान्तर मति । करे । मंन्यो । हरषत । प्रथीराजं । सवाज ॥

६१ पाठान्तर—देहु । मंत्र । सब । अप्प । अप ॥ ★ यह रूपक सं० १६४७

की पुस्तक में नहीं है ॥

६२ पाठान्तर—ग्राम । कुअइ । कुँअर । सजि । दीयो ॥

अथ नाहर राय कथा वर्णनं लिख्यते ।

(सातवां समय)

सोमेश्वर देव का शिवरात्रि का व्रत जागरण करके सोने की
तुला दान करना और उसे बांट देना ।

दूहा ग्यारह सौ गुन तीस बदि, फागुन चवदसि सोम ॥
मिवरत्नी सोमेस नृर, निमा मण्डि जप होम ॥

॥ छ० १ ॥ सू० १ ॥

पञ्च गव्व अम्नान करि सोम महम घट मण्डि ॥
दीपदान घृत महस शिव कुमुमजलि मिर छण्डि ॥

॥ छ० २ ॥ सू० २ ॥

शिव उपास सोमेस वर पञ्च उपामि मुराज ॥
महा मोह भक्ती मुगुर, करिय किति कविराज ॥

॥ छ० ३ ॥ सू० ३ ॥

म्लोक शिवशिवा उपास्य राजन् वीरं दत्तन कामयम् ॥
कविचन्द्र महावाणी, प्रगट रूपण विस्मितम् ॥

॥ छ० ४ ॥ सू० ४ ॥

दूहा चनुर जाम जगिय नपति, कनक नृत्ता नई कीन ॥
प्रात नमै वर दुजन कहुँ वटि आ कर दीन ॥

॥ छ० ५ ॥ सू० ५ ॥

१ पाठान्तर दाटा । मे । मे । मुनि । चवदसि । मिवरत्नी । नृर ॥ उम
रूपक मे मवन् ११२९ अन्तर माक वा पृथ्वी राज का तृतीय माक है । उम का
वर्णन कवि न आदि पर्व के रूप ३५५ । ३५५, पृष्ठ १३८ मे किया है । तदनुसार
इम में अन्तर के १० । ११ वरं जाउन मे ११२० १-१० । ११ १-११ । १-२० ।
बर्तमान विक्रमी होगा ॥

२ पाठान्तर -पचगव्य । अम्नान । महम । दान । महम । कुमुमजलि ।
शिर ॥

३ पाठान्तर - शिव । म रात्र । म गुर ॥

४ पाठान्तर —शिवशिवा । राजं । रास्यं । वीर । कामयं । वाणी । रूपेन ।
विस्मितं ॥

५ पाठान्तर —जाम । नही । नमे । कही ॥

अन्न अमार अपार उठि, जिहि लीनो दिय ताहि ॥
छरम भोग भोजन भले, रही न मनमा काहि ॥

॥ छं० ६ ॥ सू० ६ ॥

उमय ईस अग मोम पुनि, अम्नुति मण्डि ममुष ॥
तब त्रिनेत नन ताप हर, मंचन मेवक मुष्य ॥

॥ छं० ७ ॥ सू० ७ ॥

शिव जी की स्तुति करना ।

कविन्त - विदिन मरुल अति चपल । विमल मति कञ्ज निअच्छिनि ॥

गीत राग रम रटिन । मती लपट विम भच्छिनि ॥

भुगति देन जन विभव । भूर भूछिन नन मोभित ॥

त्रिपुर दहन कविचन्द । केन कारन कृत लोकित ॥

श्रीविश्वनाथ ममिन गवन । गरुड त्रिलोचन रम कुमल ॥

मुष अमल कमल परिमल बहुल । भुगति चारु चर्मन भ्रमल ॥

छंद पद्वरी - गरुड कठ दीमहति वीय । 'जम चित प्रगट संमार नीय ॥

सारङ्ग उछट निन पान पानि । दिव नृङ्ग जाल जव जवनि मानि ॥१॥★

जट मुकुट गग दीमहि उनङ्ग । मोमन्त चन्द लिल्याट रङ्ग ॥

मारङ्ग मूल माङ्ग चर्म मेवक महाय अघ हरन कर्म ॥ १० ॥

कटि विकट निमट नटवन विभङ्ग । यन नृत लेय विभभूत अङ्ग ॥

बुन्द जा काम ज श्राप छट । जेजे मुट्टम माया अमूल ॥

॥ छं० ११ ॥ सू० ११ ॥

साटक कय्याली कप आल बाहू ग्रह्यो गिरिजाड मारङ्गने ॥

बीभच्छो रम नय्य निन्य रतयो, मुन्वा मदा नुङ्गयो

रुद्रो रुदरि पाय नगिन उरयो, हास्य रम शङ्कर ॥

जामन्त गिरिजानिन विरचयो, कर्नाथ कामं त्रय ॥

॥ छं० १२ ॥ सू० १२ ॥

६ पाठान्तर - अमरुन्न । उठिठ । जिहि । नही ॥

७ पाठान्तर - मडिय मुष । मडोय ममुष ॥

८ पाठान्तर - विअछन । विअछनि । विप्रमपिन । विभी । कृत । गवन । कुशल । चारु । चर्मन । भमल ॥

९ पाठान्तर - जुन । दीमहिति । जम । पान पानि । ★ "दिव नुङ्ग जाल दिव दिव न मान" सवन् १६४७ की पुस्तक में पाठ है ॥ ९ ॥ लिलाट ॥ माङ्गल । चर्म । कर्म । विभूत । अभूल ॥

१० पाठान्तर - कण्पाल । ग्रहयो । गिरिजाई । गिरिजाई । नो । बीभछो । तप । रतयो । मुनी । तुंगयो । उरथो । गिरिजां । कर्नाथ । काम ॥

साटक - वामं गौरि शृंगार हास्य नगनं, कर्नाय कामं त्रयं ॥
रौद्रं रौद्ररि पाय भार दमनं, वीरं त्रिनेत्रं ज्वलं ॥
भै भीतं दिषि अङ्ग भङ्ग अहितं, वीभच्छ नटृव्वतं ॥
मान्तं संमित जोग दीन अदभू, त्नी रस्स रस्तं शिवं ॥

॥ छं० १३ ॥ रू० ११ ॥

शिवजी की स्तुति करके सोमेश्वर देव का अपने कुमार के विवाह के
लिये नाहर राय के पास दूत भेजना ।

दूहा मा देवह करि अस्तुती, वर मोमेम कुमार ॥
नाहरराइ नरिद कै, दूत मंपने वार ॥

॥ छं० १४ ॥ रू० १२ ॥

शामदामादि में निपुण दूत का पत्र दरसना ।

गाथा सामं दामं भेवं । वेदं गुनं विग्य अंगाई ॥
जानं पनं मलीहं । ने पनं दूत दरसायं ॥

॥ छं० १५ ॥ रू० १३ ॥*

कवि का सनीचरी दृष्टि के योग पर से भविष्य में बंर दोष होने का
कथन करना ।

साटक दिष्टी दिष्ट मनीचरी वमहिनी, हंनोपि दुज्ज घर ।
पावारं परिहार बैर गुरयं, जद्दोर चौहानयं ॥
सोगिनीरि समस्त संयुत कला, भारथ्यनो द्विष्टयं ।
माबाला बर बैर ग्रेह तिगुना, के के नगे राजयं ॥

॥ छं० १६ ॥ रू० १४ ॥

कवि का कहना कि स्त्री के कारण से बंर दोष आगे रामादि बड़े बड़ों
को हो चुका है ।

कवित्त - गयी चन्द तारिका । पुत्र लज्जा बिन आन्यो ॥
षेत्र वीर्यं सम्भवे । वीर्यं लम्भवे न पान्यो ॥

११ पाठान्तर—शृंगार । कर्नाय । काम । त्रियं । त्रिनेत्र । भय । वीभछ ।
नटवत्तन । नटवलनं । अदभून । अदभुन । नो रम । नो रस्म । रमितं ॥

१२ पाठान्तर—अस्तुति । नाहरराय । के । कै । मंपने ॥

१३ पाठान्तर—दानय । गुन । विग्य ॥ * यह श्लोक सं० १६४७ और
१८५९ की लिखी पुस्तकों में नहीं है ॥

१४ पाठान्तर—हंनोपि । दुज्जम । दुश्चम । पनं । परिहारं । पावार । बैर ।
बदीव । बहुवांन । मिरिनारि । भारथ ॥

बैर दोष श्रीगम । बैर दोषइ दुर्योधं ॥
बैर दोष नघराई । बैर दोषह मुचकन्धं ॥
मा बैर दोष पण्डव वक्रिय । मान वचन ग्रह दोष महि ॥
इक दिनह समय मुन्दरि मत्रिय । मझ समय इह चरिन लहि ॥
। छ० १७ ॥ रू० १५ ॥

कामधेनु का चरित्र ।

कविन कामधेन पच्छे प्रचण्ड । त्रिपभयं चह् अधिकारिय ॥
एक एक उत्तरै । एक चहुटै रम भारिय ॥
हमी मची दिशि निजर । दीन मराप मुधेनह ॥
हौ पमु तुअ मुमनुच्छ । होइ पञ्चाल ग्रेह मह ॥
लम्भी मुपच्छ जननी वचन । यटि लई क्रम क्रम मुमर ॥
निह ग्रेह और जा मम्भवै । नो बर्नाहि डैवर मवर ॥
। छ० १८ ॥ रू० १६ ॥

प्रात समय जगते ही दूत का पत्र पठना ।

दूहा भयो प्रात जगात दुनिय, बचि मुकग्द पानि ।
आबू रा मलषान लिपि, बर गिर नागी बानि ॥
॥ छ० १९ ॥ रू० १७ ॥

उस पत्र में बीर रूप देवस्थान हिगुलाज के प्रभाव से पृथ्वीराज के
बलवान होने और नाहरराय के बल प्रताप का वर्णन था ।

कवित्त पूना कर पर वत्तह । कोरि दह नील सवायो ॥
बीर रूप इक रुद्र । धान हिगुलाज बनायो ॥
देवल एक अचम्भ । हेम पुत्तलि इक मंडी ॥
धूप दीप साषा★ सूरङ्ग । धजा पत्ताकह ठण्डी ॥
दिषन सुधान आचम्भ बर । ज्यो कवि मंत्री होइ कल ॥
कवि कहै चन्द बरदाइ बर । जो चहुआन सुहोइ बल ॥
॥ छ० २० ॥ रू० १८ ॥

१५ पाठान्तर—बीरज । लम्बं । श्रीराम । दुर्जोध । नघुराय । मचकन्धं ।
दिन । मुन्दर । इक ॥

१६ पाठान्तर - कामधेनु । पछे । प्रछे । प्रछण्ड । वृषभ । अधिकारीय ।
उत्तरै । चहुटै । भारीय । माराय । हौं । नूं । मनुष । भनुछ । लभी । मुपल । बटि ।
बीर । हीण्डे ॥

१७ पाठान्तर—पानि । धान । बानि ॥

१८ पाठान्तर - परवत्तह । प्रबतह । धान । धानि । हिगुलाज । फुत्तरि ।
पुत्तलि । ★ अधिक पाठ है । सूरङ्ग । पतःबह । दिदिन । सु धान । ज्यो । कहै ।
बो । चहुआन । चहुआन ॥

कवित्त - बर गिरनारि नरेम । सिधु बट्टी सुरतानं ॥
 तेज तुङ्ग तप तेज । बैर भजै अरि पानं ॥
 बर गुज्जर वैसाहि । जमत अड्डी सुस्त्र बल ॥
 तिन मुक्कलि दिय दूत । राज सम्भरिय पित्ति षल ॥
 परिहार नाथ नाहर नृपति । दुह बढघौ इक्क अग ॥
 जाने कि जरा जुब्बन दुवन । सामन्ता सतोष भग ॥

॥ छ० २१ ॥ रू० १९ ॥

कवित्त - इत सामन्तन नाथ । बाथ बडवानल घलन ॥
 मण्डल घल्लन नाथ । मार अग्गी पल जल्लन ॥
 अरुह कहानी कगन । मरन रष्खन अमरन बल ॥
 मुथिर अथिर करि थपन । अग जग जन दारुन दल ॥
 भअ लोक मोक हर मुहिन तन । पन अप्पन सोमेग मुअ ॥
 छत्र धर्म कलिमल मलन । तिहिन छोर पिणिय मुअ ॥

॥ छ० २२ ॥ रू० २० ॥

कवित्त - चठन पवि पिपि वाज । पिणिय मृगराज मृगनि गन ॥
 गोधन धरन गुवाल । हरि लै चलत वननि वन ॥
 महु तत्रि चठन मृहाल । अन्य तम माप लगन कट्टु ॥
 वट्टु त्रिमद विमाल । चलत वमि पवन गगन मरु ॥
 निम नाहर राड नरिन्द पिपि । ममर महिन मकरहि मरुज ॥
 गिरि लङ्क मङ्क मम वट्टु गमअ । गिरु पागि किज्जे अत्रक ॥

॥ छ० २३ ॥ रू० २१ ॥

पट्टन में चौलुक्य भीमदेव, आबू पर जैत (सलख ?) पंचार, मेवाड में
 समरसिंह, दिल्ली में अन्नङ्गपाल जैसे बलवानों में मण्डोवरमें
 नाहरराय के राज्य करने का वर्णन ।

कवित्त - उन पट्टन भीमग । ब्रह्म चालुकक लोह लुअ ॥
 अब्बू जैत पवार । लोह लरि जानि अचल धुअ ॥
 ममर मिघ मेवार । दण्ड देवार अजर जर ॥
 दीली पत्ति अनंग । लरन अड्डो मुलोह लरि ॥

१९ पाठान्तर - बट्टी । पान । गुज्जर । अडो । मुक्कलि । पित्त । षल । जाने ।
 जुबन । सामन्ता ॥

२० पाठान्तर - पठन । जलन । कहानी । रगन । अग । जगन । जगं ।
 कलिमल कलि मलन । पिणिय । मुअय ।

२१ पाठान्तर - पंथ । वाज । पिपि । मृगनी । वनन वन । महुवाल । आषा ।
 कहों । कट्टु । मट्टु । नाहरराय । मकहि ॥

परिहार नाह नाहर नृपति । इतन बीच अप बल रहै ॥

मण्डोवराइ मारु मरद । बर विरट्ट बर्क वहै ॥

॥ छ० २४ ॥ स० २२ ॥

पृथ्वीराज का आठ वर्ष की अवस्था: मे दिल्ली ननिहाल में

आना, दिल्लीश अनंगपाल के अधीन राजाओं का वर्णन ।

वित्त बरष अट्ट प्रथिराज । गयी मुमाल दिल्ली थह ॥

राज करे अनंगेस । सेव मरधरा करै मह ॥

मडोवर नागौर । सिधि जलवट्ट मुपट्टै ॥

पेमौर लाहौर । धरा कगुर लगि कट्टै ॥

कामी प्रयाग गढ देवगिर । एते मेव अग्या धरे ॥

मीमाटविया सकै मुपमु । भ्रिन अनग सेवा करै ॥

॥ छ० २५ ॥ स० २३ ॥

मंडोवर के नाहर राय का दिल्लीश्वर की भेट को दिल्ली आना,

पृथ्वीराज का रूप देखकर प्रसन्न होना और माला पहिरा

कर कहना कि जब पृथ्वीराज सोलह वर्ष का होगा

तब मैं अपनी कन्या इसको विवाह दूंगा ।

पिन आयौ नाहर राइ । मेव आदरिय दिलेसर ॥

दिपि कुवर प्रथिराज । नर अदभूत नरेसर ॥

अबर माला देवक । अक पहिराट कस्यौ उह ॥

मे दिद्धी रूपमगि । सबे उच्छाह कियो ग्रह ॥

आनद नेज राजा अनंग । प्रथिराज आयौ घरह ॥

दुद अट्ट बरम वीति गय । व्याह्य कस्यौ देव गिरह ॥

॥ छ० २६ ॥ स० २४ ॥

नाहर राय का मत पलट जाना अर्थात् कन्या देना अस्वीकार करना ।

हा लालपनै प्रथिराज न, दिय कचन वैमाल ॥

मती फिरि किन्नी अन्नम नाहर राइ विमाल ॥

॥ छ० २७ ॥ स० २५ ॥

२२ पाठान्तर - नाहृक । अत्र । जानि । 'दलीप'त । अनी । बीचि । बिरद ।

१ ।

२३ पाठान्तर - पथीराज । सर । मध । बट । पुरे । पेमौरा । कटै । इतै ।

२ । अन ॥

२४ पाठान्तर—नाहरराय । आदरी । दिलेसर । देपि । कुवर । प्रथिराज ।

दभुत । एक । पहिराय । सोधी । सबे । उच्छाह । कीयो । मह । आभग । अनग ।

थिराज । अयो । अठ । वीतिगा । व्याहयु । व्याहयु । देवगिर ।

२५ पाठान्तर - बालपनै । पृथीराजनै । फिर । कीनी । नाहर राय ॥

नाहर राय का उत्तर लिखना कि तुम्हारा कुल आवि हमारे
योग्य नहीं है ।

कविन -लिषि कग्गद परिमान । थान अजमेर पठाड्य ॥

दूत पथ अबिलव । पास सभरि वै आड्य ॥

चिनि मन आरभ । मेन पारंभ विचारिय ॥

वाल वीर प्रथिराज । देड नाही परिहारिय ॥

गग पन सुआदि मम वर नृपति । ममर जुद्ध माथे ममर ॥

कुल दुड नाम दिज्जे नही । इह कठंक लग्ये सुधर ॥

॥ छ० २८ ॥ स० २६ ॥

अरिन्द पंतरपाल को पूजे कौन । जो परहरि गो विदह मोन ॥

परहरि मित्र उमया गुन नत्र । को मडे चडाली मत्र ॥

॥ छ० २९ ॥ स० २७ ॥

दून का यह पत्र लाकर पृथ्वीराज के हाथ में देना ।

दूहा लिषि कग्गद परिहार पर विरारि मित्र करि दून ॥

लै दीनी प्रथिराज कर, मनी मज मयहन ॥

॥ छ० ३० ॥ स० २८ ॥

पृथ्वीराज का क्रोध करना, सोमेश्वरदेव का समझना ।

कविन -वडि अवाज★ अजमेर । वनि कग्गद चौगमिम ॥

परिहारह मत्र मेन । धर्म परिहरि बहुयो भम ॥

मूर नर निन नेत्र । मध्य अपियन यो राजे ॥

प्रात आम जिमवद । जवट अपत्र अनु गाजे ॥

मगल अनेक जान करन । तान वरज्यो पुत्र फिरि ॥

मजाह मात्र मिसु वन मुनि । करहि जुद्ध मम्मिय मु जुगि ॥

॥ छ० ३१ ॥ स० २९ ॥

२६ पाठान्तर परिमान । थान । वनि । मन । विचारीय । पृथीराज ।
देन । नाही । परिहारीय । नृपति । जुध । माथे । नाम । दिजे । नाही । लग्ये ।

२७ पाठान्तर पंतरपालकू । पूजे । गो । मोन ।

२८ पाठान्तर -पृथीराज । पहन ॥

२९ पाठान्तर -आवाज । धूम । मधि । अपिन । राज । उम । बुंद ।

अयन । मंत्राह माह । पूरि ॥ ★ यह शब्द अर्थात् "आवाजि और आवाज"
आविपर्व के रूपक १८१ तथा १२ पृष्ठ ३६ में भी आया है । उम पर की
टिप्पण देखो । सम्स्कृत "वाज" और "वाद" शब्द Sound, sounding,
discourse speech, and Prayer आदि के अर्थों में प्रयोग होने हैं उन में यह
हिन्दी अपभ्रष्ट शब्द बने दीखते हैं ॥

सरदारों का पत्र सुनकर क्रोध करना ।

हवित्त मुनिय वत्त सामन । वंचे कग्द परिहारी ।
सीस लगि अमकान । विज्यौ लगा वगारी ॥
मिघाने करि हन्यौ । हन्यौ केन जब कवर पढौ ॥
केन छीन मनि राह । जूद्ध ताग ममि बध्यौ ॥
बर कन्ह वीर मोमेस पह । चाहवान बक्करियै ॥
बाहन वीर अरि नीर विच । दल चौहाना तारियै ॥

॥ छ० ३२ ॥ ऋ० ३० ॥

हवित्त मुक्कै दून मुद्धन । रत्त गुन अरिन विरत्ता ॥
चिंत तनी मिर भार । मार कारज मो रत्ता ।
वर अपन जानही । प्रमान नमान मुग्गपै ॥
द्विग राजान प्रमान । देस विद्वम परगपै ॥
ते दून अपन मडोवरह । चर चरित्र अनुमरि परे ॥
भय प्रात राज दरवार गय । दिगि धार धर धर डरे ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये मजना ।

हूत तार वरज्यौ वन बह एक न आवै दाइ ॥
उन प्रथिराज नरिद ते, सज्यौ सेत मुमाट ॥

॥ छ० ३४ ॥ ऋ० ३२ ॥

सेना का वर्णन ।

रघनाराच ह्य गय मजे भर । निमान वज्जि दुभर ॥
नफेरि वीर वज्जई । मुदग झल्लरी गई ॥ छ० ३५ ॥
मुनत ईम रज्जई । तनीम राग मज्जई ॥
मुभेरि भकय घन । श्रवन्न फट्टि झझन ॥ छ० ३६ ॥
नरह नाद रिझ्जय । चमठु ताल दिज्जय ★ ॥
तुरग पति चल्लय । मनौ जलह हल्लय ॥ ३७ ॥
तरणि तेज तामसी । मनो कि नट्ट वामसी ॥
झलकि मत दतय । मनौ कि बीज पतय ॥ छ० ३८ ॥

३० पाठान्तर मुनीय सामन । वच । बर । कग्द । अममान । लगा ।
कर । पघी । छीन । बधी । कन्ह । चाहवान । चहुवान । बकारीये । बाहद ।
विचि । चौहाना । तारीये ॥

३१ पाठान्तर मुके । कारिज । जानि हि । प्रमान । निम्मान । प्रमान ।
प्रमान । रांजन । विदेम परगपै । मपन । वर चारित्र । दिगि ॥

३२ पाठान्तर --दाय । पृथ्वीराजने । मुभाय ॥

जेर जराय बंगरी । मनीं चमक्क विज्जुरी★ ॥
 मिरीसु सोभ जग्गयं । कि भान मेघ उग्गयं ॥ छं० ३९ ॥
 श्रवंत सोभ दानयं । झरंत मेघ जानयं ॥
 उपंम और दुत्तियं । षिलाब राह पुत्तयं ॥ छं० ४० ॥
 उपंम तीय उद्धरं । कि मित्र कज्जलं गिरं ॥
 जु वंरषं विराजही । वसंत वृष्ण लाजही ॥ छं० ४२ ॥
 ह्रंत चौर सीसयं । गिरं कि गंग दीसयं ॥
 दुनी उपंम लग्गयं । कि वट्ठलं कि बग्गयं ॥ छं० ४२ ॥
 जु घूघरं घमक्कय । कि दादुर मु भट्टयं ॥
 दुती उपंम मेलयं । मुहाग वाम केलय ॥ छं० ४३ ॥
 सुघंट घोर मोरयं । मुनंत श्रोन फोरयं ॥
 निलक्कं चंद साजही । मनौ गनेम राजही ॥ ★छं० ४४ ॥
 दुनी उपंम जग्गयं । दवकि लग्गि पच्चय ॥
 गह्वर्गर्ज सट्टयं । मनौ कि माम भट्टय ॥ छं० ४५ ॥
 मु पीलवान चंदयं । अरापती कि इंदयं ॥
 मुअम्मवार राजही । कि जम जोर माजही ॥ छं० ४६ ॥
 मिलंत मंछ नैनयं । निलग्गि मांग गैनय ॥
 ने रूप भूप मारमे । 'क अश्वनी कुमार मे ॥ छं० ४७ ॥
 त्रिगुंन तेज तंतनं । तिनंक कंक ममनं ॥
 मनाह रूप अंगमं । मनौ कि जोग जंगमं ॥ छं० ४८ ॥
 मनाह जोति दिण्णयं । मरीच भान भिण्णय ॥
 मुभट्ट छंद वट्टयं । कि वीर वान सट्टय ॥ छं० ४९ ॥
 आगंम विप्र बोलयं । हुलाम छत्रि चोलय ।
 मु पाइ कंबनं पनं । बुलंत ने झनं झन ॥ छं० ५० ॥
 जुरंत जाम मल्लयं । प्रभा प्रसाद वुल्लयं ॥
 निमध्य राज पिथ्थय । मु अग गंग तिथ्थयं ॥ छं० ५१ ॥
 मामंत मध्य सोभय । कि इंद्र देव लोभयं ॥
 कि पथ्थ पडब दलं । धनुक्क वान सच्चलं ॥ छं० ५२ ॥

३३ पाठान्तर—छंद । लग्गुनागाज वा नराजा । हयगय । निमान । दुभर ।
 बजई ॥ ३५ ॥ रजई । मजई । वजई । नफेरि । अवन ॥ ३६ ॥ नारद नरद
 गिण्णयं । चौमट्ट । ★ यह दूसरा पाद सं० १६४७ की पुस्तक मे नहीं है । चलयं ।
 मनौ । जलद । हलयं ॥ ३७ ॥ नरणि । ताममी । मनौ । वामसी । झलकि ।
 मनौ । बग्गयंतयं ॥ ३८ ॥ ★ ये दोनो पाद सं० १६४७ की पुस्तक मे नहीं है ।

बहुत राज प्राप्तयं । ते दूत देवि जातयं ॥
कहत अब्ब घटायं । भई ममुद्र पाटयं ॥ छं० ५३ ॥
उपाह मध्य ते चलं । मगुन्न बंदि जे भलं ॥
★ममूर मूरयं कळं । दिन सु अष्टमी चलं ॥

॥ छं० ५४ ॥ स० ३३ ॥

पिता की आज्ञा लेकर अष्टमी को पृथ्वीराज का लड़ाई के लिये
यात्रा करना ।

कवित्त दिन अष्टमि रवि वार । राज सुभ मंडि प्रस्थानं ॥
अष्ट दिसा जोगनी । भई साहाय मुध्यानं ॥
अष्ट च्यारि भय भान । राजदे अर्ध बघाइय ॥
इत मे भीम अनिष्ट । चद चौथे प्रह आइय ॥
चले नरिद धायि दूत तव । मन आनद मु छद हुआ ॥
प्रथिराज तान अग्या मगुन । चरन वदि नलि वज्र भूअ ॥

॥ छं० ५५ ॥ स० ३४ ॥

चौपाई-★तान मान आग्या परमानटि । ता समान नह धम प्रमानटि ॥
गुरु द्रोही पति प्रांही जान । सो निहचै नर नरकहि थान ।

॥ छं० ५६ ॥ स० ३५ ॥

नाहर राय के दूतों का पृथ्वीराज की चढ़ाई और मेना बल का समाचार
नाहर राय को देना ।

छंद पद्वरी नाहर नरिद जे दूत आट । समाचार मंत्र कटि ते सुनाट ॥
दिमि जीत मत्त चहुवान मूर । लपियै चरित्र मन मझ कर ॥ छं० ५७ ॥
उक महम ग्वान मंग नाम धार । देमान देन बल रग अहार ॥
निन मझ पच मै पवन पाल । पिन मान अगल लाहौर जात ॥ छं० ५८ ॥
पाभरी अग जिन पमम होत । दिपि दीप जोति निन नेन होत ॥
गनद्व मस घृत दुग्ध पान । आज्ञान वाह शिपियै बलान ॥ छं० ५९ ॥

ममूर । ममूर । भान । उग्या । ३३ ॥ शान । जानय । द्वितीय । पिता ।
पुनिय ॥ ४० ॥ उरम । वरल ॥ ०१ ॥ चोर ॥ ३२ ॥ पृथर । प्रथम ।
दुर । भदय । उपम ॥ ४३ ॥

३४ पाठान्तर शुभ । मंडि । भान । मे । भीम । अनिष्ट । चौथे । छंद ।
नरिद । धमि । प्रथीराज । आग्या ॥

३५ पाठान्तर- - आग्या । परमानीय । परमानहि । समान । धूम । प्रमानाय ।
जा । निहचै । नरकन । थानं ॥ ★ सं० १६४७ की पुस्तक में इसे अरिल्ल
करके लिखा है ॥

रेसमी डोरि पट्टी नरंम । रहै सीत छांह दुष्षित गरंम ॥
 तिन सथ्य पंच सै और डोरि । ते रषिक विन को सकै छोरि ॥छ०५८॥
 इक आइ पेस इक अश्व मोल । बलवानं अंग चष रहत षोल ॥
 मिक्कार नाम जहतह तिकान । आरंभ जुद्ध सब लपि विनान ॥छ०५९॥
 इक सत्त ऊंट भरी जीन साल । तिन धरै अंग छियै न काल ॥
 भेदैन वघ्न बर नीर धार । तिन धरै अंग जे दल पगार ॥ छ०६०॥
 सन्नाह महिम वरनी न जाइ । जिप्पनि कि देव दनुजनि उपाइ ॥
 जनु ब्रह्म होम कडि मंत्र जोर । कै इद्रं अग्नि अपे अकोर ॥छ०६१॥
 कै बरून अपि पाताल ईम । कै पवन प्रसन परसाद दीस ॥
 वाचिष्ट कडिड कै कुड होम । दीनी कि प्रसन ह्वै मात भौम ॥छ०६२॥
 असि सिलह सथ्य लीनी नरेस । जितनह समर सज सत्रुदेस ॥

॥ छ० ६३ ॥ ६० ३६ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप सुनकर नाहरराय का चौकन्ना होना ।

इहा--सुनी पत्र जब दून मुप । चमक्यौ नाहरराय ॥

ए आपन गनिये नही । वैरी विम हर घाव ॥

॥ छ० ६४ ॥ ६० ३७ ॥

अपने सरदारों से नाहर राय का कहना कि अब क्या करना चाहिए
 पहिले चौहानों से हम से और बात थी पर अब तो बिगड़ गई ।

रविन मृष्टि मकल लिय वीरि । पुच्छि परिगार विनदि मर ॥

चाह्रान पायान । कटत आपट जुद्ध वत ।

तनक भनक मी कान । दून इतत गुनि व्राण ॥

आप अचेतन रही । धरौ धर भूमि मदाण ॥

३६ पाठान्तर समाचार । मव । जिन । मर । चह्रान । मनमे । स्थान ॥
 ५५ ॥ मग । नामधार । देमान । मद्य । मे । अमिल ॥ ५६ ॥ नयम ॥ रातव ।
 पान । श्राजानवाह । बलान ॥ ५७ ॥ नरम । शीत । दुषित । मथ । डोर । ति ।
 रषिक ॥ ५८ ॥

पाठान्तर पेमि । बलवान । मिकार । नाम । जहा । कान । विनान ॥ ५९ ॥
 ऊंट । धरै । छियै । भेदैन । धरै ॥ ६० ॥ मनाह । महम । जिपन । उपाय ।
 ब्रह्म । इद्र । अपे ॥ ६१ ॥ कै । प्रामाद । कडि । प्रसन । भौम ॥ ६२ ॥ मथ ।
 जितनह । शत्रु ॥ ६३ ॥

३७ पाठान्तर --पत्रि । चमक्यौ । अपने । गिनिये । नही ॥

३८ पाठान्तर --पुष्टि । चह्रान । पायान । कान । इतह । अचेतनह ।
 मुदाय । हमहू कम । नही । मुहन ॥

मोमेम हमह कछु है नही । तिन मुहिन माला लई ॥
तब तो मनेह कछु और ही । अब तो कछु और भई ॥
॥ छ० ६५ ॥ प० ३८ ॥

सरदारों का कहना कि लड़ना चाहिए ।

दूहा कहन मुभट परिहार के । हथ्य चढी क्यों देइ ॥
मम्त्र मारि दठ भजि के । पग धार धर लेइ ॥

॥ छ० ६६ ॥ प० ३९ ॥

नाहर राय का कहुना कि आगे से बढ़कर एक बारगी उन पर बढ़ाई
करना चाहिए नही तो जीत न होगी ।

कविन मुनि मंडोवर राइ । कहत बलवंत मुभट मह ॥
द्रव्य उनह कर चढ्यौ । कहहि मुनी★ मनि बन यह ॥
जाइ अचानक पगी । बहुरि छेम्प्यौ नहि जैहै ॥
प्रथीराज उम मयल । मारि धरती सब लैहै ॥
एक मुनन गवन घेठी मुमन । मजन सेन भेगो कहुँ ॥
अ चान चरनि के बन टर । मो जनी मारग रात्रा ॥

॥ छ० ६७ ॥ प० ४० ॥

नाहर राय का सेना मजना ।

पग मारि सेन घेठी रात्रा । मजना करि ।

मभरि नभार । उम मयल । उम मयल ।

॥ छ० ६८ ॥ प० ४१ ॥

पृथ्वीराज की सेना की प्रथमा ।

कविन मदन सेन ममाने । मदन★ मन्व मन्व टारि बन मम ॥

वीर सिंगार मुभत । कत जनु रत्न वाम मम ।

मन्व उभय नवाम । मिलत मज्जी चहुआन ॥

चद देगि मन मगन । कविन तिन करे वषान ॥

पचमी मोम रिनु राज गत । मूर नेज जाजुलिन हुआ ॥

करतार हथ्य किली कही । बजि निमान चहुआन धुअ ॥

॥ छ० ६९ ॥ प० ४२ ॥

३६ पाठान्तर हथ्य के ॥

४० पाठान्तर मडोवरराई । मडोवरराय । मुनद । कह हि मुनी मनि बन
इह । ★ अधिक पाठ है । नी । नहि जैहै । डम । मन्वी जैहै । मवत । वेगो ।
बन मनी ॥

४१ पाठान्तर नाहरराय । मभरि वार । उद्योत । अनद ॥

४२ पाठान्तर मभारि । ★ अधिक पाठ है । मधि । निगार । मजी ।
चहुआन । वेषि । वषान । रिनि । हथ्य । किली । निमान । चहुआन ॥

पृथ्वीराज का आगे से बढ़कर लड़ने के लिये जोबनराय को आज्ञा देना ॥

तब सुजोबन राई । सूर साह्यो चहुवान ॥

तुम गुज्जर वैषंड । गाम मुरधर अगिवान ॥

पथ पथ परवान । धाइ अगिवानी किज्जै ॥

सगा सपन जपियै । हमनि आरोहि गुलिज्जै ॥

वामान पथ अधी प्रकृति । विन दिठुं दिठुं न कछु ॥

बन पन अड्ड परवत रहै । भेद विना जानहि न कछु ॥

॥ छ० ७० ॥ ८० ४३ ॥

जोबनराय का उत्तर दे कहना कि नाहरराय का पथ बांधा सो वह

रणभूमि को तिरछी छोड़ कहीं चला गया ।

तब सुजोबन राइ । बन जपै चहुवान ॥

अड्ड पन परवत । मत्त गुज्जर घर मान ॥

लोहानो आजान । पथ बधयो पालकनी ॥

नाहर राउ नरिद । गयो तिरछी मज मुक्की ॥

करिवर अनेक केवर गहिय । ए अगो को धाइया ॥

तिह ठाम चुक चिन्थी हती । ये नाहर राउ न पाइया ॥

सबरे नाहरराय के भग जाने पर साह्य को पृथ्वीराज का पहूँचाना

और उसकी खोज करना ॥

गयो प्राण परिहार । मज चहुआन सपनी ॥

वरज्यो जीवन राउ । पोज क्रम क्रम करिगिन्ती ॥

पथवान पुच्छयो । नदी उत्तरि निन अपिय ॥

ताने पूर नरिद । वाज नत्ता करि नपिय ॥

आनद मिलत मज्जिय नृपति । पयो पारिव माट जिम ॥

ज्यो गिट्ट भ्रम पच्छो करै । चिन दिगवर कियो तिम ॥

॥ छ० ७२ ॥ ८० ४५ ॥

४३ पाठान्तर तबै । राउ राउ । नरमान । चरवान । गुजर । गाम । मुरधर । अगिवान । परवान । अगिवानी । हाजै । रिजै । वामान । दिठे । डिठे । अड्ड । अड्ड । परवत । जानै ॥

४४ पाठान्तर तबै । तबै । योबनराय । चहुआन । चहुवान । अड्ड । अड्ड । परवान । गुजर । मान । लोहानो । आजान । पालकनी । नाहरराय । भुद । गहिय । के अगो । उघाइया । तिह । ठाम । ये । नाहरराय ॥

४५ पाठान्तर— चहुआन । सपनी । योबनराय । नीनी । पथवाल । पुच्छयो । नदि । उत्तरि । अपीय । अपीय । नषिय । सत्रिय । पारेव । ज्यो । गट्ट । मंद । पछो । चित । दिनवर । कीयो ॥

खालुक के प्रधान (वीरान) के घर नाहरराय का पता मिलना श्रीर
सामन्त सहित पृथ्वीराज का नदी उतरना ।

कुंडलिया - नदी उतरि सामंत सह । डीम संपते जाई ॥
खालुकका परधान ग्रह । पट्टन नाहर राई ॥
पट्टन नाहर राइ । मेन सज्जे मथ पच्यो ॥
त्रय हजार अमवार । वीर संधान जुसच्यो ॥
प्रात कूच उप्परै । आज मुकाम जुदुस्तर ॥
अकि प्रथिराज नरिद । मिलह मज्जी नदि उतरि ॥

॥ छ० ३३ ॥ रू० ३६ ॥

सुभट सहित सेना मे पृथ्वीराज कैसा शोभना है ।

कविन सुभट मिलह घट जोनि । भयो घट मिलह मुभट्टन ॥
कै★ दीप मध्य भूडोल । कै★ भान बदली मुभट्टन ॥
कै★ मकर मध्य प्रतिविब । कै★ मभु विभूत अधारै ॥
कै आराम म सार । हृथ्य करनार मुधारै ॥
पाहार भार उल्लै ममनि । कै★ उदधि मद्रि लका दहै ॥
त्रिय वनिन द्रव्य अरु मोह वनि । नजि जुदि वानै ग्रहै ॥

॥ छ० ३४ ॥ रू० ३७ ॥

पृथ्वीराज के ग्राम पहुंचने का समाचार नाहरराय का सुनना
श्रीर सेना इकट्ठी करना ।

बूहा भई षवरि परिहार की, नदि आयी प्रथिराज ॥
लग्यो मेन एकन करन दद वजाने वाज ॥

॥ छ० ३५ ॥ रू० ४८ ॥

घाटी पर पर्वतराय को रास्त रोकने के लिये भेजना ।

बूहा जहँ पब्वय घाटी हुती, मीना मेर मवाम ।
प्रब्वत सौ प्रब्वत मंड्यो, अनमीजो घन त्रास ॥

॥ छ० ३६ ॥ रू० ४९ ॥

४६ पाठान्तर - नदि । उतरो । उतरि । सामंत सब । मंगले । जाय ।
खालुका । परषान । राय । मेन जेन । मजे ऊपरै । मुकाम । मुदुस्तर । प्रथीराज ।
मजो । उतरि ॥

४७ पाठान्तर - ज्योनि । ★ अधिक पाठ है । मधि । भान । बदली ।
सुपटन । मुकर । मिम । विभूत । आराम मार मे । हथ । सुधारै । मधि । दहै ।
वसि । वानै ॥

४८ पाठान्तर - भई । रू । पथीराज ॥

दूहा हुकुम कीन परिहार तिन, प्रब्वत मीना मेर ।
इतने तू हकि एक टक, जितने आवत बेर ॥

॥ छं० ७७ ॥ ह० ५० ॥

पर्वतराय का घाटी रोकना ।

दूहा - सुनि प्रब्वन धायी तुग्न, घाटी रोक्यी जाइ ।
च्यारि महम मीना प्रबल, बैठे आइ बलाइ ॥

॥ छं० ७८ ॥ ह० ५१ ॥

दूहा तीन पनच धुनही करन, बडे कटन तंडीर ॥
मगुन बिना पग ना धरै, बिक्कट बन हवीर ॥

॥ छं० ७९ ॥ ह० ५२ ॥

पर्वतराय कैसे घाटी रोक कर बैठा है ।

कविन मंडोवर घर लाज । राज रप्यन परिहारन ॥
स्वामिन मक वज्रंग । जग जिन अग न हारन ॥
देत मेवामनि भेलि । मारि घर पर पसु लावै ॥
देपत कै राजान । बिरदवा नैन चलावै ॥
बैठे मु ओट रूपन उपल । करि तरकम डधे धरनि ॥
देपन वह चहुवान की । भरै जानि बिमहर वरनि ॥

॥ छं० ८० ॥ ह० ५३ ॥

घाटी हकने का समाचार पृथ्वीराज को मिलना ।

दूहा लही पवर प्रथिराज तिन । मीना मग्द अमान ॥
पकरि लोह पव्वह गह्यी । लहै का अग्यी जान ॥

॥ छं० ८१ ॥ ह० ५४ ॥

४६ पाठान्तर जहा । जह । घाटी । हुता । मीना । मीना । परबत ।
सो परबत । प्रबत । ज्यो । प्रबत । मटभो । जो ॥

५० पाठान्तर परबत । इतने । इतने । तु । जितने ॥

५१ पाठान्तर पब्वत । घाटी । रोकिन । बैठे । आनि ॥

५२ पाठान्तर—धुनही । बड्डे । कटन ॥

५३ पाठान्तर— बजरग । गग बिन अगन हारन । मेव । मेवामन । मेवामन ।
के । राजान । बिरदवा नैन । रूप उटन । भीधे । चहुवान । भरे । जानि ॥

५४ पाठान्तर पवरि । प्रथिराज । मीना । अमान । गह्यो । अग्यी । अग्यी ।
जानि ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का पर्वतराय से लड़ने को
कन्ह चौहान को भोजना ।

कविन मुनि कुपिय प्रभिराज । जानि पुच्छिय मुश्राप मलि ॥
मनु मृगराज मृगीन । जोर क्रुदिय दिगिय बलि ॥
ग्राह ग्रहन जनु जीव । देपि तृदिय मृमीन कह ॥
समर समुद जल पियत । जानि घट जन्म क्रोध मह ॥
पिजि कही कन्ह चटभान मह । रक आइ अट्टे फिर ॥
‘मर नाउ घाट तरनाह नव । प्रव्वन मम प्रव्वन भिर ॥

॥ छ० ८२ ॥ १००५ ॥

कन्ह का पर्वत से युद्ध और उसमें पर्वतराय का मारा जाना ।

छट भजगी मर मेर मीना प्रहा घोरि घाटी ।
मिले आइ कन्ह मनो लोभ आटी ॥
मटे मूल वाप कह दत ओट ।

॥७७ ना सुमेर मंड जानि कोट ॥ छ० ८३ ॥

भट नीर मार मरोम मवेग । तके नाहि पारै मविद्ध अछेग ॥
महावज्रघात उतापान मद्यौ । करे हूल हाक वर वेग हन्यौ ॥ छ० ८४ ॥
जुटे जुद्ध अनवद्ध करिद्ध टाटे । करे हथ्य वार पय मडि गाठ ॥
गिरैवान ठगे विय उत उतामहामत्र विद्या गुरु द्रोत चित ॥ छ० ८५ ॥
भट बान छाया न सुअ मरीच । मिले लोह लक्काह तत तरीच ॥
गिरै अश्व अमवार लोह जहीर । परै जानि उडर वृष गहीर ॥ छ० ८६ ॥
हय छडि नरहा हए उतारै । हहकार बज्जै महोम पुतारै ॥
परै अश्व घातमरोम मरीर । बकै केय वक्क करै के अरीर ॥ छ० ८७ ॥
मर जाल भाल उटै लोह अग्गी । जरे पय पपी गिरै स्वर्ग मग्गी ॥
भरै मुठ्ठि कन्ह मर मार बगानिकम्मै सुविद्धहुअे पग उग ॥ छ० ८८ ॥

५५ पाठान्तर पृथ्वीराज । जानि । पुच्छिय । मनो । क्रुदिय कि दिगिय बलि ।
जानि । चटभान । शान । परव्वन । भिर ॥

५६ पाठान्तर मडे । मीना । घाटी । मिले । कन्ह । मनो । लोभ । आटी ।
मर । वाप । उट । हिये । ना । मड । गाठ ॥ ८३ ॥ मवेग । हक । हाक ॥ ८४ ॥
करे । हथ्य । गिरे । बान । लगे । वाय । दत । रक । चित ॥ ८५ ॥ बान ।
रावाह । गिरै । परै । जानि । वृष ॥ ८६ ॥ तरनाह । हकहाक । बजे । मह मे ।
परै । मरोम । बकै । बक । वक । करै ॥ ८७ ॥ जरे । गिरे । भरे । भूटि ।
नकमै । बुढी । हुअै । उग । डग ॥ ८८ ॥ लगे गुजै । गुरज । शीम । कहै ।
पछारन । तुबा । मनो । बहै अश्व निषात । बटे । निघात । मनो । निकमै ।

लगे गुज्ज सीसं कहै उक्ति कोगी । पछारंत तूबा मनौ षीजि जोगी ॥
 वहै अस्सि निघघात रोसं प्रहारं।मनौ निक्कसै सबनं तंततारं ॥छं०८९॥
 लगे संग छत्ती फुटै पुठिठ पच्छी । किकंधं कहारं कटे जार मच्छी ॥
 जितं तित्त उठंत छिछ रकतं । फिरं भट्ट भीते भयानं बकतं ॥छं०९०॥
 नचै भूत वेताल पेतं भयानं । रसं वीर रस्से इसे निर्हयान ॥
 मिल्यो भूष्य कन्ह परब्वत वीरं।हन्यौ अस्सि घातं धुक्यो ता सरीरं॥९१॥
 जरघो कंध कन्ह असीघात धीरं । करी कट्टि मना षरी चग्ग हीरं ॥
 परघो झुझि प्रब्वत्त रावत्त मेर । गज्यौ नाहर गाज नाहंसवेर ॥
 ॥ छं० ९२ ॥ ॥ ॥ ५६ ॥

पर्वत के मारे जाने पर नाहरराय का स्वयं टूट पड़ना ।
 कवित्त परत धरनि परवत्त । आइ ह्विकय नाहर रन ॥
 बलबडडे मह मेर । जानि हनुमान लक बन ॥
 इक गिरत घन घाप । इक वथथनि पछ्छारिय ॥
 बहर रूप मम भूप । रूप अनभत संचारिय ॥
 मानिकक वम आयो उनह । इत नाहर गल गज्जयो ॥
 परवत्त परघो पट्ट पिणिके । मित्र वज्जन वज्जयो ॥
 ॥ छं० ९३ ॥ ॥ ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज का भी चढ़ चलना ।

छंद पदुगी चढ चन्पी राज प्रथिराज नाम । माधन मुमेन वर वरन वाम ॥
 दुल्लहै भयो मोमेस पुन । वनिता विवाह मन कक पत्त ॥ ९४ ॥
 बज्जहि निमान दम दिम गुरान । आपाट अग ज्यो मेष थान ॥
 रय वाजि करी पयदल पुत्तन । मज्यो नरिद चतुरग सेन ॥ ९५ ॥★
 मुक्की सुमुम्मि अजमेर राज । यत्तो मुजाड पट्टन समाज ॥
 बज्जी मुलागि मिधू निमान । भयभीत भेष भय दस दिमान ॥ ९६ ॥

निकसै । मवंत ॥ ८९ ॥ लगे । मणि । छती । फुटे । पुठि । मछी । कहार । कटे ।
 मृच्छी । तित्त । उठत । छिछ । रकत । फिरे । फिरं । भट्ट । बकत ॥ ९० ॥ तचै ।
 रसे । मुप । मुपरवत्त । भमि ॥ ९१ ॥ कन्ह । अस्सि । कट्टि । मनाह । षरी ।
 षष । झुझि । परवत्त । रावत्त । नाहर । मवेर ॥ ९२ ॥

५७ पाठान्तर—परवत्त । आय । ह्विकय । बट्ट । बडे । जानि । हनुमान ।
 रक । घन घाय । इक । वथन । पछारीय । पछारिय । मम रूप । संचारिय ।
 संवारीय । मानिकं । मानिकक । गज्यो । परवत्त । पिणिके । कै । सिधू । बजन ।
 बज्यो ॥

बज्जिय मुभेरि भय भकरीम । गज गजे गाह ह्य हट्ट हीस ॥
गिरनार देम अरु मिधु वट्ट । गज्जे मुगाज सजि थट्ट थट्ट ॥ ९३ ॥
दलकंत ढाल बैरष रग । सोभत विपन रिति राज सग ॥
मिलि आय पय नाहर नरिद । वीराधि वीर बहूडे सुदद ॥ ९८ ॥
हक्कारि भट्ट सेना सवान । सामत मूर करि लोह पान ॥
कन्हा नरिद आजान बाह । लगरी राव स्वामित्त राह ॥ छ० ९९ ॥
सभारि वीर चालुक्क भूप । उपज्यो व्रत्त कुडह अनूप ॥
अतनाइ नुरग नेरह मुण्डाषिजि रत्तो रोपि रन रोहि मुडु ॥ छ० १०० ॥
तिन ठाम आइ नाहर मुघेरि । वाहन हथ्य जनु करिय केरि ॥
॥ छ० १०१ ॥ २० ५८ ॥

इधर पथ्वीराज इधर नाहरराय का सम्मुख युद्ध ।

कविन उत प्रथिराज नरिद । इत मुपरिहार प्रबल रन ॥
दुअन सेन अमि कहिद । करन कलयन ममय जनु ॥
दुअन अङ्ग मनाह । दुअन नप चाप उघारे ॥
दुअन इट आरम्भ । अरुनि दुअ हथ्य दुघारे ॥
दुअ मुम्मि अङ्ग दुअ देव जनु★ दुअन धार दुअ नुछ वट्टिय ॥
मनाह रट्टि नदी मुनुछ । तम उपम चन्द्रह कहिय ॥

॥ छ० १०२ ॥ २० ५९ ॥

कविन दुअन हथ्य दुअ भूप । मप अदमून रष वहि ॥
उन्द मिलह प्रथिराज । चद्र परिहार नज गहि ॥
दुअ अक्षग मनाह । दुअन देवन आगरन ॥
दुअन तेज तन अम । हम दुअ हम समाधन ॥

५८ पाठान्तर ★ व ९८ । ९० और अ १० छद म० १६४७ की पुस्तक में नहीं है । प्रथीराज । नाव । वाम । दु । पृ ॥ ९४ । ज्यो । धान । प्लेन । मउथी ॥ ९५ ॥ मतो । वर्जा । लाग । निमान । दिमान ॥ ९६ ॥ बज्जिय । गजे मुराज ह्य हट्ट हीम । गिरनारि । वठ । गजे । थट्ट थट्ट ॥ ९७ ॥ बैरम । बडे ॥ ९८ ॥ हहाकार । भट । मवान । आजानवाह । स्वामित्त ॥ ९९ ॥ चालुक । उपज्यो । नुरग । रोहि ॥ गिन रोपि ॥ १०० ॥ ठाम । ह्य ॥ १०१ ॥

५९ पाठान्तर प्रथीराज । कटी । मनाह । मप । ह्य । दुघारे । मुभि । कटि । कटी । "उपम ॥

६० पाठान्तर — ह्य । प्रथीराज । रहि । उलिम । वृत्ति । भृगु । लल्लिन ॥

★ एषियाटिक सोसाइटी की पुस्तक में "दुअन इट आरम्भ में "दुय देव जनु" तक नहीं है । परंतु सं० १६४७ की में है ।

अवतार भूत दुअ देव सम । दुअन चिन्ह उत्तम करिय ॥
परभास षैत परब्रह्म दुति† । भ्रगु लंछन जनु घरि हरिय ॥

॥ छं० १०३ ॥ रू० ६० ॥

उसमें पृथ्वीराज का नाहरराय के घोड़े को मार डालना ।

दूहा फुनि प्रथिराज कुमार नें, हय हन्यो परिहार ॥
कंध दुअ कटि वग महिन, धुक्यो घरनि असिधार ॥

॥ छं० १०४ ॥ रू० ६१ ॥

दूहा धुक्य घरनि नाहर तुरिय, झपट्यो वध कनक ॥
तेक नोकि तक्यो तुरी बहि अमि कंध छनक ॥

॥ छं० १०५ ॥ रू० ६२ ॥

दूहा दुअ कोटल दुअ नृपति के, किन्ने हाजुर आनि ॥
दुअन बीच दुअ मुभट थट, अट्ट भणे चट्टहानि ॥

॥ छं० १०६ ॥ रू० ६३ ॥

रनबीर का सन्मुख हो पृथ्वीराज से जुद्ध करना ।

कवित्त वर पावम रनबीर । दुतिय पावम मम मज्ज्यो ।
धूम जोनि अरु मलिलं । मरुत प्राकारन बज्ज्यो ॥
मज्जि सेन अनुरंग ! वरन बहल रग धारिय ।
म्याम मेन अरु पीत । रत्त धज मत्त विचारिय ॥
उनयो धार धारहधनी । लरन तिरच्छी बुद्धिवर ॥
विज्जुलि झमकि घग पतिकर । पिनी मेन अरिजुथ्य पर ॥

॥ छं० १०७ ॥ रू० ६४ ॥

मोहन परिहार और पवार सन्मुख हो लड़ना ।

दूहा उन मोहन परिहार रन । मेर समान अमान ॥
टै टै अमि कटि विकट वनि । टै धनु टै टै वान ॥

॥ छं० १०८ ॥ रू० ६५ ॥

† पश्चिमायिक मोमाइटी की पुरतक में ' दुअ देव सम म ब्रह्म दुति' तक नही है । परन्तु म० १६४७ की म दे ॥

६१ पाठान्तर प्रथीराज । कुआरने । हन्यो कंध कट्टि दुअ ॥

६२ पाठान्तर तुरी नोकि ॥

६३ पाठान्तर दुनीय । मज्ज्यो । मुरत । प्रहकारन । मज्जि । बहर ।
घारीय । स्याम । रत्त विचारीय । उनयो । तिरछी । अट्ट पर । बुद्धि । विज्जुलि ।
झमक जुय ॥

६५ पाठान्तर —दोहरा । समान अमान । टै टै धनु टै वान ॥

कवित्त - उन मोहन परिहार । इन सुपावम पंवार बर ॥
दिष्ट दिष्ट अंकुरिय । संज्ञ जुग मौत दिष्ट धर ॥
मोहन कोपि करार । मीम पावार मुझारिय ॥
टोप कट्टि फटि मुड । अपटि पावार निझारिय ॥
फटि मुंड तुंड धर कट्टि झटि । लट्टि विफार अफार झट ॥★
कर वन तन विहार कि नुरन । जनुकि कवारिय पटुपट ॥
॥ छं० १०९ ॥ स० ६६ ॥

चामंड का पुत्र ।

कवित्त चड रूप नामट । बलन बल्यना प्रनाशन ॥
हन्यो मग दुअ अग । निरगि दत्र अगुल मापन ॥
उभै मग बलि आर । मथ्य गट्टि ह्य्य दृ ह्य्यधन ॥
उडि भेजी मुअकाम । छट्टि निनकार ददिकन ॥
परनाप भग्नि परि प्रस्थि पर । लोक नीन कीरति कहिय ॥
द्रव्यान पान निकसी गुरधि । जोति जाइ जोतिन मिलिय ॥
॥ छं० ११० ॥ स० ६७ ॥

कवित्त मिले पौन सो पौन । मिले पानी सो पानी ॥
मिले तेज सो तेज । मिले सुने मनानी ॥
मिले प्रथी सो प्रथी । मिले हरि सो हरि व्रता ॥
मिले हतामन होत । होम होम जो होता ॥
जल होत जोत जल भिरत हरि । पय मे जिम पय मिलि सुपय ॥
निमि मरत दुरत जेइ झरन रनि । मुमिलिय प्रताप सु आप स्वय ॥
॥ छं० १११ ॥ स० ६८ ॥

कवित्त मंस हट्टु रद गूद । अत बर बाज गज्ज नर ॥
भय भूधन अमन । चडिय जुगिन तिन उपपर ॥
इक्क दन गज गिद्धि । उनरि ले अत अलुडिझिय ॥
इक्क कोद जुगिनीय । करन अंचत सो झुक्किय ॥

६६ पाठान्तर पावार । झारीय । फटि । निझारीय । "★ कटि मुड तुंड
हुअ । पड हुअ । अधर फट्टिय बर पाग झट ।" स० १६६७ की मे यह पाठ है ।
वत । तत । विहार कि । कवारीय । पटु ॥

६७ पाठान्तर आय । मथ । ह्य । दृधन । दधि । प्रनाप । पर । पृथा ।
लोकं तन । द्रव्यान । पान । जाय ॥

६८ पाठान्तर - पौन । पानी । सो । पानी । सुने । सुनानी । पृष्ठी । सो ।
पृष्ठी । व्रता । होमे । भिल्लत हर । डुरन । जेई । रिन ॥

तिहि दिष्प चंद कविराज तत । अति उल्हास औपम बढि ॥
उडवत्त चग सुचंग अँग । राज कुमारि अट्टानि चढि ॥

॥ छं० ११२ ॥ रू० ६९ ॥

झूहा - धवलंगी धवली दिसा । धवल तन चहुवान ॥

धवल दीह ममुह लरघी । जस धवली तन आनि ॥

॥ छं० ११३ ॥ रू० ७० ॥

स्वामि रत्न रत्ते समुह । रत्ते नेन करूर ॥

रन रत्ते दव दाह सम । गुजत गल्ह गरूर ॥

॥ छं० ११४ ॥ रू० ७१ ॥

नाहर ? से नाहरराय का लड़ना ।

कुंडलिया नाहर सौ ममुह लरघी । नाहर राइ नरिद ॥

मडोवर माह वली । धनुवर भूपति दद ॥

धनुवर भूपति दद । मेन चहुआन हँडोरी ॥

मुर अमुरन करि मेर । मथत दरिया हिलोरी ॥

हय हथिन घन हकि । बीर छुटयो छकि छार ॥

मरदन मौ मिलि मरद । मरद बु यी मृप नाहर ॥

॥ छं० ११५ ॥ रू० ७२ ॥

बनराय का खेत मे मँडना ।

कविन हथ गयो थिर मुयिर । पत मट्टी बल थ ॥

मार मार अपार । धार लग्गा धर नाप ॥

उडिय अग पगधार । धपी द्रुगा धर लोडय ॥

धक्क हक्क उन्चार । मार अप्प दल भोडय ॥

निघघान घान भरकर करहि । नभ निमान तिन गट्ट भरि ॥

मब सूर मुरगीय कक बल । मुभर कदिह आम वर पगरि ॥

॥ छं० ११६ ॥ रू० ७३ ॥

६६ पाठान्तर - बाँज । गज । भूत । अमन । जुगिना । उपर । इक । उतर ।
बलुझिय । इक । जोगिनिय । अंवन । मो । झुकिय । तिहि । दिपि । तिन । उपम ।
उडवत । अग । कुमारि । अट्टानि ॥

७० पाठान्तर - तन । तन । चहुवान । आनि ॥

७१ पाठान्तर - स्वामिरन । रत्ते । रत्ते । नेन । दत्ते ॥

७२ पाठान्तर - मो नाहरराय । धनिबर । अहुआन । हडोरी । टटोरी ।
अमुरनु । दरिया । हिलोरी । हथिन । मौ ॥

७३ पाठान्तर - बह । अपार । लग्गा । द्रुगा । धक्क हक्क । उचार । थय ।
निघान भह । निमान । शब्द । मुरगीय । कदिह ॥

घोर युद्ध वर्णन ।

छंद विराज- कढी★ तेग तत्तं । मनो मल्ल घत्तं ॥

लगे लोह लगं । षगं षग बगं ॥ छं० ११७ ॥

दुअं बाह् बाहं । गजं गज्ज दाहं ॥

जुटे इत्त उत्तं । मनो मंस चित्तं ॥ छं० ११८ ॥

धुकं धीग धक्कं । हकं मार छक्कं ॥

भिरं भूमि रुडं । बकं वेन मुंडं ॥ छं० ११९ ॥

तुटं तूट बाहै । दत्तं दत्त माहै ॥

डकं पाइ कूदै । टिकं तेक रुदै ॥ छं० १२० ॥

चहै चाहवानं । तडित्तं कमानं ॥

रमं वीर रस्से । बहै लोह हस्से ॥ छं० १२१ ॥

गजं गेन देवी । अभूतं मुएवी ॥

नचै भूति भूमी । जकं देपि झमी ॥ छं० १२२ ॥

दिलं पत्त पालं । विहडं कपाल ॥

रुचै रुड माल । श्रवं श्रोन लाल ॥ छं० १२३ ॥

चवट्टी चिकारै । फिकार्यं फिकारै ॥

गम गिद्ध गट्टै । पलं पृच्चि चट्टै ॥ छं० १२४ ॥

भिरं भति भारी । अभूतं सुगारी ॥ छं० १२५ ॥ रु० ७४ ॥

दूहा परत भिरत तूटत मुकर । करत निवत्तं मुहत्थ ।

अपपानी बल हत्थनह । का मंगे बल तथ्य ॥

॥ छं० १२६ ॥ रु० ७५ ॥

नाहर कर नग्हा मुपय । भय भारत्थ उपाउ ।

जामु जहां जो ऊवरै । तिहि बल रोह मदाउ ॥

॥ छं० १२७ ॥ रु० ७६ ॥

७४ पाठान्तर- तेग । तने । मनो । इत्त । गजे । गज । इत्त उत्त । मनो । चित्त । धके । धीग । हके । छक्के । वेन । तुटे । तूटे । तूट बाहै । दत्ते । साहै । पाय । रुदै । चाहवान । रसे । बहै । हसे । गेन । भूमि भूमी । जके । रचै । रुड । श्रवं । चवट्टी । चवट्टी । फिकारी । फिकार्यं । फिकारै । गोमं । गिद्धं । गट्टै । चुट्टै । चित्तं । भारी । अभूतं ॥★ सं १६४० की दिल्ली पुस्तक में इस छंद का शुद्ध नाम विराज है और इतर में समावला है । यह दो लघुगु और रसावला दो गुल्लगु का होता है ।

७५ पाठान्तर- चुटत । हथ । अपपनी हथ । मगी । मगै । तथ ॥

७६ पाठान्तर- भारथ । तिहि ॥

गाथा कायर मुष्ण प्रमान । वर कमोदय मोदय मुष्ण ।
सन सित पत्र प्रमान । ईषारिय वीर वृदाय ॥

॥ छ० १२८ ॥ ६० ७७ ॥

छंद त्रिभगी हकारे सूर वज्जत नूर, नच्चत हूर. मुर मुरय ।
हय छडिय राज, तेजय पाज, लरे सुमाज, लर झरय ॥
चलि चाल बधी, तारा मधी, हँमै मुनदी दै तारी ॥
नुरसी रम मजरि, तव नव पजरि, तन घन पंजरि, वैमाळ ॥१२९॥
घन केसर रग, अबनि अग, नच्चत जग, अहि काळ ।
जपे हरि गग, गुन अनभग, चरमन अग असि झारे ।
दुनौ बबकारे, दुनौ न हारे, छोह करारे, गुन भारे ।
केसरि रँग रोरे, अमिवर झोर, भौ तन कोर, घटि फाल ॥१३०॥
मिर तट्टि प्रमानं उभया जान ध्रु ममान, मुर हाळ ॥
हिल्लोरे पग अरि घट जग ररिन अभग, जुधमोर ।
परिहार मु आप अरि उर दाप रनि रन थाप पग झोर ॥
चाटक ममान जुद्ध ममान, अरि हरि मान गुमान ॥१३१॥
पर म य पवार अमि वर उार अछरि तार नार राव ॥
रुभ पग रगी रम रम अग्गी फिर रर अग्गी परिग
रात्रिम पग प ॥ फिर न रर ररान रर अर रर रर
रर रर रर परि मार रर मार रर रर रर
रात्रि रर रर गुरजनि रर रर रर रर रर रर
रन जेन नरीम तट्टिय नीम राग घन रर पार रर रर ॥
रन लुथिय अरु थ, गुन कवि कथ्य अचरिज मथ्य रवि रर रर ॥

॥ छ० १३३ ॥ ६० ३८ ॥

छंद भुजगी हकार्यो जुमूर विराजत वीरा स्वय कठ आभूपन छंद तीर ॥
पया पेस मत्ता चवं पत्र अग्गी।रिनी छंद नाम विराजै मु लच्छी॥छ०१३ ॥

७७ पाठान्तर मुष्ण । प्रमान । रमाद । कमोद । रय । प्रमान । उषारिय ।
वृदाड ॥

७८ पाठान्तर हकारे । वज्जत । नचन । १२० ॥ कमरि । नचन । गग ।
सिरमन । बबकारे ॥ १३१ ॥ अछरि । मोनान । कुरभ । नूरभ । कुर । भगी ।
फिरि । लगी षुं । वुळ । वुळ । हुळ । झाल भाग मिर । कुमारं । हळ ॥
॥ १३२ ॥ कुरै । विरुं । कुरै । नड । नीमं । बथ । लथ उ लथ । कथ ।
सथं । रथ ॥ १३३ ॥

नव नेह नागी लछी देहू इनी । करी मूर नाहीं विराजन मूनी ॥
 हय छडि राज लरे मूर नेत्र । मनो जुद्ध आकृत भारथ्य एज ॥ छ० १३५ ॥
 चलै चाल बने तन मट आम । रुहै चद रुखी तिन जुद्ध माम ॥
 ॥ छ० १३६ ॥ ऋ० ३९ ॥

गाथा हकारे विर मेन । वजे वज्जाई पच मद्राय ॥
 मछे नव रँडा रग । भग कन्ह चितय पलय ॥
 ॥ छ० १३७ ॥ ऋ० ८० ॥

दूहा—उन मडोवर वीर के इत सभरि वै राव ॥
 दुअ लगा अम गर जुध, मुसवि चद करि काव ॥
 ॥ छ० १३७ ॥ ऋ० ८१ ॥

छंद मत्रगी—मलथ मलथ मलथ निठथाउपान उवान समान पलथ ॥
 हपग रथग धर धार तुट्टे । पर धार धीर महा वीर लट्टे ॥ छ० १३९ ॥
 पलकै रुधिया पत्र मानरजन । पर धाम वाट नन केन रज्ज ।
 भनकरन मेरी चिकारे मूर शीनवे रग मैरु नवथ तन-रि । ३०१३० ॥
 पार मृदनी मुदनी मद्रज्ज । अठली मुदनी उठे छिछ जज्ज ।
 मन जारा ताव म टार । परवार उठे तनना गिनत ॥
 ॥ ३० १३९ ॥ ऋ० ८० ॥

लोहाना आज नु बाह के युद्ध का वर्णन ।

रविन रोहानी नाजान अर वही रम्भारे ।
 लवी बाह पमारि । नेग लवी उम्भारे ।
 उम्भारे रिम्भार । वीर बाहै बड्डाली ॥
 अड्डाली अर बहिद । कथ सोहै मड्डाली ॥

७६ पाठान्तर मो मु । पट । अडी । किनो । नाम । रुछे ॥ १२४ ॥
 लरें । मनो भारथ ॥ १३५ ॥ कट्टे । करी ॥ १३५ ॥

८० पाठान्तर हकारे । बीय बजाइ । मद्राई । मदे रग रग । रग रग ।
 भग ॥

८१ पाठान्तर के । दोउन के अमराल युद्ध मो चद करीव नु काव ॥

८२ पाठान्तर—मुलथ मलथ । मलथ सलोथ । अलथ निलुथ । उवान ।
 प्रलय । हय गगरथं । तुट्टे । लट्टे ॥ १३६ ॥ पलकै ॥ रुधिया । प्रबाह । कन ।
 मनकन । चिकारे मुदनी । नचं । मैरी । तनये तनयी ॥ ५६० ॥ अलुझ । अरुझै
 मुदनी । अरुमेन । उडे । भुझ । हयन । गयन । परे । तुटे ॥ १४ ॥

सुद्धाल कंध विव षंड हुआ । विधि ओपम कवि चंद कहि ॥
आवृत्त घत्त आजान भुअ । मनु कजल कोटकि विज लहि ॥

॥ छ० १४२ ॥ ६० ८३ ॥

कवित्त लौहानें अरि फौज । चक्र चिहुंकोद फिराइय ॥
ज्यौ तूल मध्य बातूल । पवन जिम पत्त भ्रमाइय ॥
मारुत बजि आरिष्ट । वाइ चिहुंकोद झुलावय ॥
कै वाय पुरानन धज्ज । त्रिविधि विध तुग ह्लावय ॥
कै कुलाल चित चक्रित भौ । चक्र चिहू दिमि फेरइय ॥
मृगराज मृगनि ज्यौ क्रोध बल । बल समूह अरि घेरइय ॥

॥ छ० १४३ ॥ ६० ८४ ॥

कविन्—तहां पिडिझ पिथ कुंअर । लोह झारै गज मथ्य ॥

भइय भसुड विषड । भम मोभन मुतथ्य ॥

कै ★ जलधि तट्ट हवि होम । धोम धारा घन मिचिय ॥

कै ★ तडिन तेज तव घन प्रमान★ । भान चलि बट्टल पंचिय ॥

कज्जल प्रमान प्रबत टटा । रन ग्रार बुहुत जल ॥

कचन प्रनार है मुर श्रवकि । इह ओम दीमन पट्ट ॥

॥ छ० १४४ ॥ ६० ८५ ॥

दूहा जावक्र शोन प्रनार जल । इगुर फटिक बहात ॥

जोवन रद कहि रहिर तिन । दंतू मर दररात ॥

॥ छ० १४५ ॥ ६० ८६ ॥

कविन् लोहानी आजान बाह★ । जिन आरनि जस लिनी ॥

ज्यौ इक लेई कन्ह । दंग दावा नल पिनी ॥

ज्या इकले हनुवंत । बक लका गढ टाह्यौ ॥

ज्यौ इकलेई भीम । मिन कौरव नन गाह्यौ ॥

८३ पाठान्तर आजान । बाह । पमारै । उभारै । उभारै । विभार ।
बहाली । बहाली । अरिकट्ट । मोट्टै । गुडाली । गुडालि । पध छिलि पड हुआ ।
उपम । आत्रन । घन आजानु । मनो ॥ मनौ ॥

८४ पाठान्तर लोहानी । चिहू । कौद । ज्यो । तुल । मधि । भ्रमाइय ।
बलि चिहू । धज । विधिनुम । भयो । चिहू । फेरइय । ज्यो । घेरइय ॥

८५ पाठान्तर—विभि । कुआं । मठं । भईय । तथ । कै । तरह । बिचिय ।
बिचिय । ★ यह सब अधिक पाठ हैं । भाम बट्टलह । कजल । प्रमान । प्रबत ।

८६ पाठान्तर—प्रनाल ॥

ज्यो पुनि अगस्ति अप इक्कले । मोषि मञ्च मायर लयो ॥
दानव कि चंपि अंगद बलिय । नंपि उदधि परमो गयो ॥

॥ छ० १४६ ॥ ८० ८७ ॥

कवित्त बल बध्यो नाहर नारिद★ । इद्र जनु वञ्च हथ्य झलि ॥
मुकति मुफल लद्धीय । वीर ब्रह्माड नार पुलि ॥
नर नाहर ज्यो लम्प्यो । लज्ज पकह आळुङ्घ्यो ॥
मार धार निद्धार । पार मुक्किग जग मुङ्घ्यो ॥
कलहन केलि परिहार गिन । त्रिमल तेज लगिय त्रिभुञ्ज ॥
भग्गो न भमि रजपूत हो । करो नाम जिम अटल धुअ ॥

॥ छ० १४७ ॥ ८० ८८ ॥

कवित्त मुनिय मत्र मेयक्क प्रमान★ । रट्ट घट्टी फेरहि हम ॥
पेट भरन★ चत्तलन । पुट्टि दे भार चट्टहि क्रम ।
ते च्च गनियै मूर । धम छित्तन को नाही ॥
स्वामि मकरै छडि । लोभ आपन घर जाही ॥
गनियै न मूर अरि ज्ह बल । आप मेन रपि घट्टियै ॥
जै अजै भाग भपनि क्रमह । अप्पु दोम अप मिट्टियै ॥

॥ छ० १४८ ॥ ८० ८९ ॥

कवित्त वाय रूप प्रथिराज । गज्जि गयो अमि रुक् ॥
सार धार उड्डार । गुरज भज्यो मिरभूक ॥
रह्यो भान रथ पत्ति । पवन रह्यो गनि छडि थिर ॥
रहे देव टग चाहि । तचै बैताल वीर भर ॥
मडे जु राम किली प्रबल । सोइ मरन छट्टेन दिन ॥
पल पय राम पच्छे चट्टी । नाहरगइ नरिद रन ॥

॥ छ० १४९ ॥ ८० ९० ॥

८७ पाठान्तर ★ अधिक पाठ है । जिति । चीनी । ज्यो । इक्कलेह ।
इक्कलेट । ज्यो । इक्कलेट । इनवन । इनमन । ज्यो । इक्कले । मन इक्कले । सब ।
दानव । परमो ॥

८८ पाठान्तर नाहर । ★ अधिक पाठ है । इधि । इथ । मुगति । ब्रह्मांड ।
ज्यो । जल । पंकट । निक्षार । मुक्किग हो । करो । नार ॥

८९ पाठान्तर सेवन । ★ अधिक पाठ है । घटी । घटिका पुट्टि । चलि ।
को । स्वामी । जाही । रपि । भुआनि ॥

९० पाठान्तर--प्रथीराज । गजि । उक्षार । भान । पवन । मडे । यु । रासि ।
किति । सोई । पछे । नाहरराव ॥

कवित्त नाहर राइ नरिद । चित्त चिंता उनारिय ॥ १ ॥
 मन बध्यौ बल घटघौ । मरम केवल विच्चारिय ॥
 सुनहँ तौ★ कह कवित्त । सुथिर जीवन जग नाही ॥
 इह ससार असार । सार किन्ती कलु माही ॥
 ज्यौ उरगह मुष उदर परै । यौ मुदेह नाहर कहै ॥
 भवतव्य बान मिट्टै नही । नाम एक जुग जुग रहै ॥

॥ छ० १५० ॥ ऋ० ९१ ॥

दूता इह कहि रहि रन मड रूपि । ज्यौ कपि रूपम सेन ॥
 कोपि कह धायो बन्नी । ज्यौ अगि विछुठिय सेन ॥

॥ छ० १५१ ॥ ऋ० ९२ ॥

कन्ह चौहान के युद्ध का वर्णन ॥

विराज धर्यौ कन्ह यट्टी । छट्टी अपि पट्टी ॥

अगी सेन फट्टी । मनो इध पट्टी ॥ छ० १५२ ॥

बागो उरट्टी । मना कट्टु पट्टी । परे भमि उट्टी । मना मरु जट्टी ॥ छ० १५३ ॥

बने गग उट्टी । मनो नरक मट्टी । नरक के कि नट्टु । मनो आग नट्टी ॥ छ० १५४ ॥

करे सो पुनट्टी । मनो आर अट्टी । मुर मारि उट्टी । मनो रन उट्टी ॥ छ० १५५ ॥

गम् पर उट्टी । राठ शोन उट्टी । कमीनद भट्टी । मूय विनि उट्टी ॥

॥ छ० १५६ ॥ ऋ० ९३ ॥

रविन नाहर नाहर राव । फहर नाहर मुगुनर पर ॥

दिट्टु दिट्टु अकुरिय । भाग्य विम जानु विपदर ॥

हमनि फन्ह अमिरीम । नीम चकि परिप त्राम भुज ॥

पुनि उछट्टि परिहार । मार मिर कन्ह टोप युज ॥

लगो मुटाप उट्टिय फिरच । बरत धार उन मग बनि ॥

जैजया मद् जुगिन फरति । दुअन जुद्ध अदभन मचि ॥

॥ छ० १५७ ॥ ऋ० ९४ ॥

६१ पाठान्तर नाहर राव । चिता चिंता उनारिय । बलघट । विचारिय । सुनहु । मुन ह । ★ कह कवित्त । नाही । गग । उरगह । मष । तौ गुमिटी ।

६२ पाठान्तर फर । गग । रूपम । कन्ह । उता । विछुठिय ॥

६३ पाठान्तर ★ म० १५२/३ की प्रति म युद्ध नाम विषाज है और उर मे छद समावया है । १०२ ॥ मनो । उट्ट । पर । मन । मनो । मद् ॥ १०३ ॥ बहै । मनो । नरके । नाम ॥ १०४ ॥ नरक । यो । मनो । नान । मनो । कट्ट ॥ १०५ ॥ मुर । उट्टी । मारि ॥ १०६ ॥

६४ पाठान्तर - फहर । नाहर । राव । पगीर । शाम । कुनि । उछट्टि । उछुट्टि । कन्ह । उडिय । मरद । जुगिन ॥

डारि कन्ह तरवारि । कट्टि जम दड्ह मिन्यौ हिय ॥
 मच्चि जुद्ध इन वीच । धर भनीज शिष्य निय ॥
 गहि मुमिष्य पुटि आइ । घाउ जम दड्ह कियो निय ॥
 छडि प्राण परिहार । परे पान्हन ऊपर जिय ॥
 गहि रोम नपि नर भूमि पर । हनि अनियारिय उभय र्मि ॥
 तिन हनन वाय घुमन झुमन । गया निट्टि नाहर निरमि ॥
 ॥ छ० १५८ ॥ पृ० ९६ ॥

नर नाहर जिम लम्पौ । गयी नाहर जिम नाहर ॥
 घाव घट्ट घन घुमि । झमि निरुमिअ बल नाहर ॥
 कन्ह कल किर नन्ह । बरु भर मर्म पछारिय ॥
 जनु ति रंगरठ कल । तारि वाग धर टारिय ॥
 मादान बजिज रन रजिन मर । नर सु गयधरकन ररिय ॥
 गानन भूर नरुमान मुन । तिति अइ छदर धारिय ॥
 ॥ छ० १५९ ॥ पृ० ९६ ॥

बउ घट्टया मय मय । जुट्टु रागे तनारिय ॥
 वाहुवान ही नाम । नेग नगर विट्टारिय ॥
 त्रिगण जय मय । शेर रीप भाग्य ॥
 ए प्रोशन र्मिनर । तिन र मन मज्ज निरुमिय ॥
 य अ नुमीर केनु नय । वरुवन वाहर मर ॥
 नम नेज रधिर भाग्य मर । मर र्मिनि जवा पठ ॥
 ॥ छ० १६० ॥ पृ० ९७ ॥

हुडा नाहर नाहर जिम निरुमि । भिरि नाहर के मय ॥
 कहर रन्ह धरि कुपि पुटि । वली मीर नप लेप ॥
 ॥ छ० १६१ ॥ पृ० ९८ ॥

कुडलिया फिरि जुहार किय स्वाभि की । मुनिकय काम धमारि ॥
 बली मीर गडडौ लम्पौ । मरन मरन विच्छारि ॥

६५ पाठान्तर कन् । जमदड । मच्चि । जुध । शिष्य । धर । भनीज । शिष्यनीय । मियि । पुटि । जमदड । धर । मर । अनियारीय । तिन ड ।

६६ पाठान्तर घर । घम । अमि । नर । मय । मय ह । डारीय । मदान । बजि । रजि । मय । करीर । नहुवान । नहुमान । मुन । उरति ।

६७ पाठान्तर मर । तनारीय । नादान । निरुमि । मय । रडुडी । भागीय । उरम । मन मो । तिनारीय । तिनारिय । वागह । भज्यौ ॥

६८ पाठान्तर नाहर के । लेरि ॥

मरन सरन विच्चारि । मिलन अंतहपुर किष्ठी ॥
वैधि त्रिय सांड सुभ्रित्त । करि साई सौ दिष्ठी ॥
मार धार तन पंड । पंडि मारथी रिपु जुर जुरि ॥
तिल तिल तन तुट्टी । रंभ वंड्यौ हित फिरि फिरि ॥

॥ छं० १६२ ॥ सू० ९९ ॥

हूहा- सिर तुट्टे परि भूमि पर । यी राजे कविचंद ॥
कमल जानि नचंचंत सर । मरद चंद पर कर ॥

॥ छं० १६३ ॥ सू० १०० ॥

कुंडलिया कमल जानि नंच्यौ ज् मर । दिमि मोभै मग्रा ॥
मानहु जलद कमोद तजि । थल ऊण ए नाम ॥
थल ऊण ए ताम । चंद ओपम तहा पारि ॥
मानहु वीर समुद्र । दयो फल हथ्य बधाई ॥
धार धार चढि मूर । मूर कीएति विमल ॥
धनि धनि उच्चार । सीम नचंचौ मुकमल ॥

॥ छं० १६४ ॥ सू० १०१ ॥

नाहरराय का भागना और पृथ्वीराज का पीछा करना ॥

कविन्-भग्ना नाहर राई । पाई मुक्कं नाहर जिम ॥
जिम जिम भर कट्टई । रोम लगा वर निम तिम ॥
पेत मोधि चहुआन । पस्यौ तूवर पाहारी ॥
बर★ परस्यौ नहां गोइंद । परथी भट्टी अधिकारी ॥
पोची प्रसंग बंधव उभै । मोह मुवंधा वध वर ॥
तिम मिम मु तेग नाहन लमै । निम तिम वट्टे मार नर ॥

॥ छं० १६५ ॥ सू० १०२ ॥

६६ पाठान्तर—स्वामि बो । मुकिय । काम । गढो । शरन । विचारि ।
अन्तरपुर । बधि । चीय । माई । मुभ्रित । मुभृत । तिल तिल्ल । वट्टयो ॥

१०० पाठान्तर- तुट्टे । यो । राजि । राजे । जानि । नाचन । शरद कंच ॥

१०१ पाठान्तर- जानि । जाने । नचंचौ । मूर । मानहु । थल ए उण ताम ।
ऊपम । पाइय । मानहु । हथ । बधाइय । ★ किए नि । किए मु । धनि न ।
उच्चार । नंच्यौ ॥

१०२ पाठान्तर—नाहरराय । पाय । मुक्कया । कट्टई । रोम । चहुवान ।
चाहुआन । तूवर । तूवर । पाहारी । परहारी । ★ अधिफ पाठ है । तथा उलट
पुलट पाठ ऐसा है—बर गोइंद तथा पस्यौ । बध्या बंधवर । तेज ॥

त्रिविध महस्त्र नाहर★ वसंत । पत्र कायर तन झारिय ॥

वीर रूप तप भान । नीर सूके षल भारिय ॥

तत्तारि तुंअर नरिद । भयी तरु गहर पन छंह ॥

छाह स्वामि सम्ह । जह टारिय मुअग तहं ॥

फल फल किन्ति पपी वरन । विमुप न भो समुह लयो ॥

गधर्व वीर चालक वरन । मरन वीर अच्छरि वयो ॥

॥ छ० १६६ ॥ ऋ० १०३ ॥

गुज्जर वं परधान । जैन धूमि मन लट्टी ॥

एसादम चहुआन । धर धारह माड्टी ॥

महम एए असवार । धार है गै पट मटयो ॥

नाहर राट नरिद । काट पट्टन ते चट्टयो ॥

दट्टयो पन चहुआन वर । एए भाग्य माहट्टयो ॥

चामर गु छर वरि पन म । गुग विविध विधि लट्टयो ॥

॥ छ० १६७ ॥ ऋ० १०४ ॥

टोला पन पचीम । स्वामी सजुन चटाइय ॥

पाउ एह पट घम्मि । पाउ एसादम राटय ॥

चपि वीर चाडहर । राज मे शान तुच्छ हरि ॥

गठ गजै सामन । वरै वरनी नाहर वरि ॥

रविवार वीर पनाम दिवस । एसादम गैवमजन ग्रह ॥

आटम गु चर जागिनि ग्रहन । वर वज्जनि नरिद नट ॥

॥ छ० १६८ ॥ ऋ० १०५ ॥

पट्टन मे पृथ्वाराज का राज्याभिषेक होना ॥

दव दममि क दीह । नयर पट्टन चहुआन ॥

गुर पचम रीव नवम । मुवर ग्यारह ममि थान ॥

तीय थान वर भोम । मुक मनम बल किन्ना ॥

केईट्टी वर बुद्ध । राह मव काद अहिन्नी ॥

१०३ पाठान्तर मस्थ।★ अधिफ पाठ है। झारीय भान सुके । झारीय । तत्तारो । तुअर । ताअर । पन मर । पन टर । टर । स्वाभि । टारीय । तहा । भौ । गधर्व वीर चारन मरन । अच्छरि ॥

१०४ पाठान्तर गुज्जर । परधान । धूमि धूमि । चहुआन । अट्टी । नाहराय । चट्टयो । चहुआन । माहट्टयो । लुट्टयो ॥

१०५ पाठान्तर टोला । स्वामी । म्यापि । धाय । घमि । घुम्मि । धाय । ईकादम । मेलान । तुछ । वरै । वरी । वजेनि ॥

आनंद चंद बरदाइ घन । राजभिषेकन पट्टि करि ॥

साजंत भूमि जीते सुपति । तेज तुंग दुज्जन सुहरि ॥

॥ छं० १६९ ॥ ह० १०६ ॥

दूहा - तिरिय वक्र अधचक्र नन । ऊरघ वक्र प्रमान ॥

इन नछिन्न चहुआंन की । पट अभिषेक समान ॥

॥ छं० १७० ॥ ह० १०७ ॥

कविन -- इन नछिन्न कविचंद । कौन कारन ऊपावै ॥

पटभिषेक राजान । बहूत आराम प्रभावै ॥

ग्रह प्रमाद ★ तोरन ऊतंग । छत्र जंत्रह मर टावै ॥

धजा वधि पत्ताक । मंग चामर मडावै ॥

उदयन परत्र पानि ग्रहन । बहू विदेव धामर सुधरि ॥

नन का नडागन वापियन । धन मुनियन मुनियन वरि ॥

॥ छं० १७१ ॥ ह० १०८ ॥

नाहरराय का हारकर अपनी कन्या के विवाह का

लगन लिखवाकर भोजना ॥

छंद पद्धरि सब मथ्य तथ्य हूअ एक ठाम । मुक्क पम वीन गिरिनार गाम ॥

सब लोक महाजन मिले आइ । चिन्यौ मुचिन नाहर मुभाउ ॥ छं० १७२ ॥

जिहि मेल होउ मो करि उपाइ । दिगियै दीप मो नही लाइ ॥

पहुमी मुकाज भर नजन प्रान । पहुमीग काज धन देन दान ॥ छं० १७३ ॥

पहुमीय काज जग बाजि देन । उपाइ नेक पहुमी मुलेन ॥

पुत्री मुएक तिन तन कुआरि । दीमत देह जनु मदनधारि ॥ छं० १७४ ॥

बुल्लाइ विप्र लिपि लगन तथ्य । पट्टाइ दीन नृप पिथ्य जथ्य ॥

आनंद राज सब सेन अंग । फुल्ले कि कमल जनु दिगि रतग ॥

॥ छं० १७५ ॥ ह० १०९ ॥

१०६ पाठान्तर चहुआंन । चहुआंन । आन । कौन । केट शी । सबकोद
बहिनी । बरदय घन । पट । दुजन ॥

१०७ पाठान्तर तिरिय । प्रमान । चहुआंन की । पटभिषेक । समान ॥

१०८ पाठान्तर - कौन । उपावै । पाट विभेक राजान । पाटभिषेक राजान ।
आराम । ★ अधिक पाठ है ॥ उतंग । पत्ताक । उदय । उदयन । पानि । पानि ।
बुम्मह । नटाकन । घन मुनियन चुनियन वर ॥

१०९ पाठान्तर मथ्य । मथ । तथ्य । हूअ । ठाम । गिरिनारि । गाम । सब्ब ।
मिलिय । आय । चिन्यौ । मुभाय ॥ १७२ ॥ जिहि । होय । उपाय । दिगियै । नही ।
छाय । पहुमी । आंन । दान ॥ १७३ ॥ उपाय । कुवार । धार ॥ १७४ ॥ बुल्लाय ।
बुल्ल ॥ पठाइ । । पिय । जय । फुले ॥ १७५ ॥

पृथ्वीराज का ब्याहने को जाना ॥

कविन नट्टा नाहरराइ । षेन कुंड्यौ चहुआनं ॥
 राज जीति गज लम्भि । सीम लगा असमान ॥
 तुम मल्लह परहार । मत्त कीनी अमित्त जुध ॥
 बरन वीर समुहो । र ज लग्गे सुमत मृध ॥
 पचमी वार रवि रात दिन । गज नाम वर जोग गुर ॥
 गिरि नाम करन राजन्न वर । चर्यौ वीर वीरम डर ॥
 ॥ छ १७६ ॥ ऋ० ११० ॥

पृथ्वीराज का तोरण की बदना करना ॥

कविन वदि राज तोरण मुक्कग * । मुत्ति नग्ये अरि-दुत्त अरि ।
 मनो * नद विरति लट्टन । धनि नग्ये मनुष्य हलि ॥
 टाम टाम त्रिय गान । जानि जगदरि कैलासह ॥
 मुम नगार न मन । लम्भि रीट अरि रम बामह ॥
 तोरण मुत्तार आचार वरि * । अ जनवानन मठपट्टि ॥
 दिगपंत नवन मा रीट वरिन । मा वरि अरि अरि भाव वरि ॥
 ॥ छ १७७ ॥ ऋ० १११ ॥

पृथ्वीराज का नाहरराय की कन्या से विवाह होना ॥

दूता तार आचार मत्र पडित । प नि गट्टन फुनि व्याह ॥
 माम बाम बमुनाइक । धनि नाहर रव्याह ॥
 ॥ छ १७८ ॥ ऋ० ११२ ॥

नाहरराय का कहना कि आपके काम से सीम देने के

मिवाय और कुछ देने के योग्य हम नहीं है ॥

दूता नाहर राट नरिद कहि । का तुम जोग जगीम ।
 और देन हम ह कहा । काम सीम हम ईम ॥
 ॥ छ १७९ ॥ ऋ० ११३ ॥

११० पाठान्तर नट्टा । नाहरराय । डट्टो । नट्टवान । लम्भि । मल्लह ।
 मन्त । मत्त । अमित्त । जुद्ध । लगा । राति । नाम । गिरि नाम । वरन । चड्यौ ।
 वीरम् ॥

१११ पाठान्तर तारन * अत्रिक पट्ट है । मुत्ति । नद । छट्टन । नद ।
 टाम टाम । त्रिय । गान । गाम ॥

११२ पाठान्तर पडितन । पानि । फुनि । सोगमव मुनायक । सोबास
 बमुनाइक । धनि । कन्याह ॥

११३ पाठान्तर --नाहरराय । नाहरराय । कहा । देन । ओर देन । बार ।
 देन । है । काम ॥

नाहरराय की कन्या का गुण और रूप वर्णन ।

साटक—तन्मै स्याम सुरँग बाम तनयं, मन्मथ्य वल्ली कला ।
सुषु धामय तेज दीपक कला, तारुन्य लच्छी ग्रहा ॥
रूपं रंजित मंजु माल कलया, वासंत पत्रावली ।
श्रव लच्छन काम धीरज गुणै, धन्यौ दुती दपती ॥

॥ छ० १८० ॥ रू० ११४ ॥

पृथ्वीराज का जीत कर स्त्री के साथ लौटना ॥

कवित्त सभरि वैरन जीत । वीर चालूक्क काम बल ॥
उभै जोध मो जिनै । लेइ कर वत्त कामि कल ॥
बीर निमानित भगग । बगिग आनन्द निमान ॥
प्रात होत वर वीर । चहुयो सभरि दिमि थान ॥
भर विभ्रभर म्रग मग हय गइय । रहिय निम्मगन जुद्ध इछ ॥
कालक नोटे भजै विपल । मुव्वर वीर वीरह जु पुछ ॥

॥ छ० १८१ ॥ रू० ११५ ॥

अरिन्ल लै नरुनी डोला चट्टि राज । डोला लगगिराइ विराज ॥
धन रगा तोर नित्य धन्य । जिन राधो जीवन नृप मन्य ॥

॥ छ० १८२ ॥ रू० ११६ ॥

संग वरनि डोला चट्टि राज । मनो रनि दुति काम ममाज ॥
के अलि टोठनि मथ्य मुमाज । चट्टि मत्र मथ्य वजावन वाज ॥

॥ छ० १८३ ॥ रू० ११७ ॥

पृथ्वीराज का ग्यारह डोलो मर्हित होना ।

गाहा -करी जजंत मरीर । भीर भजि स्वामि का मेव ॥
ग्यारह डोल मुमथ्य । कथं पनेव सभरि ग्रह ॥

। छ० १८४ ॥ रू० ११८ ॥

११४ पाठान्तर—तन्मै । स्याम । वाम । मनमथ । वल्ली । मुग । लछी ।
गुहा । पत्रावली । श्रव । लछन । काम । गुनै ।

११५ पाठान्तर—रिन । जान । करवन । काठक ड । निमान । पगिग ।
निमानं । थान । विभर । श्रामगह । गइय । निम । भजे । पृछ ॥

११६ पाठान्तर—लगराराय । धनि लगा तोर नीय धन्य । जीवित । मन्य ॥

११७ पाठान्तर—वरनि । मनो । रनि । डोलन । पय ॥

११८ पाठान्तर—करि । भजि । मुमथ । ममरी ॥

पृथ्वीराज का विवाह कर घर पहुँचना ।

दूहा ग्रह पत्नी जितौ मयन । परनि मुचगी वाल ॥

जंभा वीतं निम्मयो । कुँअरप्पन सुहि लाल ॥

॥ छं० १८५ ॥ ह० ११९ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ।

कवित्त बंस अनल चहुआन । भयो न पिथ सम कोई ॥

जिग पडे षल पग्ग । दीन वदै मव लोई ॥

जिन नाहर राइ नरिद । पडव मह पज्जारिय ॥

जिन वभनवा सौ मिघ । सपन दृह्यौ गजाडय ॥

अरि घरन घरनि घर चैन नहि । मयन निमकन सचरहि ॥

वन गहन बहन विह्वल फिरहि । बरज ज्यौ रुदर बमहि ॥

॥ छं० १८३ ॥ ह० १२० ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिगाजराम के नाहरराइ

कथा वर्णन नाम सप्तमो प्रस्तावः ॥ ७ ॥



११६ पाठान्तर — गृह । निम्मयो ॥

१२० पाठान्तर — चहुआन । भय । पिथह । नाहरराय । नाहरराव ।
पंजायीय । सौ । वान । ठट्टी । ठट्टी । चैन नह । ज्यो ॥

अथ मेवाती मुगल कथा लिख्यते

(आटवां समय)

सोमेश्वर के मंडोवर जीतने और लूट को सरदारों में बांट कर
प्रबल प्रताप के साथ राज्य करने का वर्णन ।

कवित्त मुवमि देस गोमेस । पेस मैवास महीपन ॥
मुभट थट्टु सघट्टु । दिष्टि कुंवर क्रिय जीपन ।
मंडोवर परिहार । मारि उच्चारि जेर क्रिय ।
सामनन सम रग । लच्छि लभी मुवाटि दिय ।
दिन दसा देस दरवार दूनि । दान पगग रत्नी रहै ॥
पट्टु प्रबल पारि पच्छारि करि । अदट दट्टु अगट्टनि गहै ।
॥ छ० १ ॥ ६० १ ॥

सोमेश्वर के गुणों और उसकी गुणग्राहकता का वर्णन ।

कवित्त भरिह दड बल मड । गनं गभन डर छडहि ॥
मगपन इक पग वान । पलक मेवा मिर मडहि ॥
दुजन देव गुग गाड । पाइ पुजियहि निरतर ॥
पडिन गुनी गुनग्य । द्रव्य ले चलहि दिमतर ।
दरवार भीर मुभटन थटन । कला कलित नाटिक नटहि ॥
छनीम रग रागनि रगनि । तन ताल कटन टटहि ॥
॥ छ० २ ॥ ६० २ ॥

सोमेश्वर का मेवान के राजा मुगल (मुद्गलराय) के पास कर
लेने के लिये दूत भेजना ।

कवित्त एक मुदिन मोमेस । दूत हजूर बुलाइय ॥
मेवानि मुगल नरिद । पत्र पट्टाड लिपिदिय ॥

१ पाठान्तर—मुभट्टु । दिष्टु । कुंवर । कुवर । जिपन । उचारि । लच्छि ।
छभि । लभी । लीय । दान । पछारी । हन ॥

२ पाठान्तर—छडह । दुजन । गाड । गाग । पाय । पुजहि । पुजियहि ।
रागन रसन । तन ताठ ॥

३ पाठान्तर—हजूर । मेवाती । नरिद । पठाय । लिपि । भूमियान ।
उत रहि । हुक्म तडा । तह ॥

★प्रमान—प्रमानराय नामक कायस सोमेश्वरराज की पेशी का मुची था ॥

भूमि आस जो करहि । भरहि तो डंड सेव करि ॥
 नतर समर डर डरपि । समुद उत्तरहि पार तरि ॥
 मिर धारि हुकुम चर चलय तहँ । जहां मुगल मडल मही ॥
 गोमेस मूर प्रथिगज बल । तिम समुह चर वर कही ॥

॥ छ० ३ ॥ ८० ३ ॥

मुद्गल का यह पत्र पाकर शोध प्रगट करके दून को लौटा
 देना और मोमेस्वर का पत्रोत्तर पाकर शोध करना और उस पर
 चढ़ाई करने को आज्ञा देना ।

छद पदरी पहि पत्र पिथ मुगल नरिद । प्रजरिग रोम मेवात डद ॥
 बह दिवग सोम नृप हभ मुपग । मिम उछ्छवन कदडी मुपग ॥ छ० ४ ॥
 किम मलिल उट मुप चहै नीर । किम पवन गवन गनि धरै धीर ॥
 किम मूर मीन गुन गहै अग । किम धर्मराज धरै दया अग ॥ छ० ५ ॥
 किम तजे व्याल बल विषम मुप । मिम तजे अटी गल गरल दुप ॥
 किम राज उदधि उर अगनि दाहा किम तजे चद रवि राह ग्राह ॥ छ० ६ ॥
 धरि नाम छत्रि कयो दड देड । डह वन मुप कयो राज लेड ॥
 अर करन सेव कहि चाहवान । मन मरझ नाम गनि राज आन ॥ छ० ७ ॥
 मेवागु मोहि श्रीनाथ पाड । तिहि चरन चित्त लग्यो मदाड ॥
 भडार दड मो मरझ पान । जव तक मुलेहु हाजुर निदान ॥ छ० ८ ॥
 मिर पाव माग बुलिक प्रवीन । पहिराड चरन वर विदा दीन ॥
 फारि दून पच्छ अजमेर आड । दिय पत्र लगि मोमेस पाड ॥ छ० ९ ॥
 बत्रिय मुलेष काश्य प्रमान* मुनि सोम राज चहुआन भान ॥
 कर्तार हृथ पग दान दोड । धन मह गव जिन करी कोड ॥ छ० १० ॥
 अनमक कक हम बंक धीर । तिहि दान दड मो जुद्ध श्रीर ॥
 प्रजरिग सोम मुनि श्रवन दूता जिहि गेह पिथ अवता भूत ॥ छ० ११ ॥
 बुल्लाड मूर सामत राज । दुय घटी मुहूरत सधौ आज ॥
 मेवात मही ऊजारि जारि । पुर ग्राम नैर दीजे प्रजारि ॥ छ० १२ ॥

४ पाठान्तर पिथ । मुगल । नरिद । प्रजरिग । प्रजरिग । रोम । मेवात ।
 मुपग । उछवत्त । कदडी ॥ ८ ॥ मलिल उलटी । गीन ॥ ५ ॥ व्याल । मु.प ।
 मुप । दु.प । दुप ॥ ६ ॥ नाम । छत्रि । मु.प । चहुआन । चाहवान । मम ।
 होस । होस । आन ॥ ७ ॥ पाय । तिहि । दड मो भडार वर मरझ पादि । निदान
 ॥ ८ ॥ बुलिक परचीन । पहिराय । पछ । आय । दीय । लगि । पाय ॥ ९ ॥
 कायष प्रमान । चहुवान । भान । हृथ । दान । दीय । मदहि । कोय ॥ १० ॥ तिहि ।
 दान प्रजरिग । जिहि । गेह । पिथ ॥ ११ ॥ बोलाय । दुअ । मुहूरत ॥

षन षोदि बंक गढ ढाहि देहि । इम करिय भूमि मैवात लेहि ॥
कितीरु महिप मुंगल नरेसाबल बंधि सधि बिन करि अभेस ॥छं०१३॥
पज्जून बोलि कूरंभ राव । पुंडीर चंद जनु अग्नि बाव ।
दाहिम नरिंद कैमास संग । चामंड राव अरि दल अभंग ॥ छं० १४ ॥
गुज्जर कनंक वड राम देव । गहिलीत राव गोइंद सेव ॥
इतने मुभट्ट मजि जूह धार । बजि पच सबद बाजे करार ॥
॥ छं० १५ ॥ ॠ० ४ ॥

ज्योतिषियों से मुहूर्त दिखाकर पुण्य नक्षत्र में चढ़ाई
के लिये निकलना ।

दूहा बोलिय जोतिग गतिक दुज । घरी मुहूरत मद्र ॥
तेरमि पुण्य रु भगु दमा । चढि चले निमि अद्र ॥
घर की रक्षा के लिये पृथ्वीराज को घर पर छोड़ा ।
दूहा रत्नजु इह विधि ग्रह भय । मुनि सोमेग भआल ।
मिमु रण्णि रु मंन्हौ चह्यौ । मुगल दिमा दिमाल ॥
॥ छं० १३ ॥ ॠ० ६ ॥

यात्रा के समय अच्छे ऋगुन मिले ।

दूहा प्रथम प्रयानह मदरी । मिली अक त्रिय बाल ॥
पीतांमर अत्र धरे । दीप जाति रचि थाल ॥
॥ छं० १८ ॥ ॠ० ३ ॥
दूहा कलम कामीनी इवक मिर । प्रात होत नृप मिर ॥
मच्छ कंत्र काहार करि । घर धनि बाहम उण ॥
॥ छं० १९ ॥ ॠ० ८ ॥
दूहा - अन्य सगुन मुभ पिण्णि मत्र । गुज गहर नीमान ।
तमहर कर उज्जल अत्रनि । प्रगटे पुत्र दिमान ॥
॥ छं० २० ॥ ॠ० ९ ॥

उजारि । ग्राम । नयर १२ ॥ पति । करिअ । करिमु । मवात । कितक । मुभूमि
॥ १३ ॥ पज्जून जनु । चांडराग । जर । रामदेव । गीयद । भट ॥ १५ ॥

५ पाठान्तर - बोलिय । धरो । पुण्य । भगु दमा । चले । निमि ॥

६ पाठान्तर - रति यु विधि इह ग्रह भय । रथे । ममुह । दिना विमाल ॥

७ पाठान्तर - प्रयानह । प्रयानह । त्रिये । पीतांमर ॥

८ पाठान्तर - एक मिर । पिषि । मच्छ । वामम ॥

९ पाठान्तर - मुमुन मव । निमान ! उज्जल । अगटी । दिमान ॥

पृथ्वीराज को राज्य में छोड़कर सोमेश्वर का मेवात पर चढ़ाई
करना और उसकी सूचना पत्र द्वारा मुद्गलराय को
दे कहना कि लड़ो वा दंड दे अधीन हो।

छंद भुजंगी चह्यौ चंपि सोमेस मैवात थानं ।

रष्यौ राज प्रिथराज ग्रहं निधानं ॥

फटी फौज बैरीन की काल दिष्यी ।

तवै कग्गदं ग्रह राजं विमष्यी ॥ छं० २१ ॥

वरं वीर धारं महा बैर पुद्वं । मगै राज सोमेस मौ जुद्ध अद्वं ॥

महा तेज जाजुल्य भारी मुपगं।करै बैर सारथ्य पारथ्य जगं ॥ छं० २२ ॥

इसो मूर सोमेस दीपो मिलानं । दियं कग्गद मुगल राजथानं ॥

करो मैव मेव किमो अपि दंडं । नजौ आज पच्छं पगं षडि छंडं ॥

॥ छं० २३ ॥ १० १० ॥

मुद्गलराय का पत्रोत्तर देकर सोमेश्वर और पृथ्वीराज
दोनों से लड़ाई मांगना ।

माटक स्वस्ति श्री मउमेस राजन वरं । प्रिथराज राज वर ॥

तौ पत्तं मुनि श्रवन कग्गद वर । पल्यज आकूनयं ॥

जाजा भजन सेन माहम रने । प्रात प्रतं जुद्धयं ॥

नां किजै तिन ठाम पत्रिय वरं । छिम्या किमा कामनं ॥

॥ छं० २४ ॥ १० ११ ॥

सोमेश्वर का अपने लड़के के बध के विषय में संशय करना ।

दूहा मिसु संसो सन्हौ फिरयो । उभय काम बध बीर ।

जौ मुक्कै त्रिय अधम कृत । तौ दल मद्धि मरीर ॥

॥ छं० २५ ॥ १० १२ ॥

और पृथ्वीराज के पास मुद्गलराय के पत्र का संदेशा भेजना

और उसका रोस में आकर पिता के पास रण में आ मिलना ।

कवित्त - छल भग्गा तिय पुच्छ । तात मुक्कौ संदेसं ॥

अरिन सयन समुहौ । जुद्ध मंगन अंदेसं ॥

१० पाठान्तर - मवात । प्रिथिराज । प्रिथराज । गेह । निधानं दीषी ।
तवे । विमषी ॥ २१ ॥ मगे । युद्ध । अद्वं । भारी मुजाजुल्य पगं । सारथ्य पारथ्य
॥ २२ ॥ इसो । मेलानं । दीयो । पछं । छडि ॥ २३ ॥

११ पाठान्तर - स्वस्तश्री । सोमेस । प्रथीराज । प्रथिराज । तौ । श्रवन ।
पल्यंच । पल्यंज । प्रात । प्रातं । ना । किजै । ठाम । वित्रिय । छिमया ॥

१२ पाठान्तर - दोहरा । संहानी । पन्थी । उभै । मुक्कै ॥

बाल कठिन कर ग्रह्यौ । ध्रम रष्यन पित कागर ॥

जु कछु अग मंभवै । सोइ किज्जै सुमंत नर ॥

चढि बाल वियोगन कंत अप । सो निस रष्यौ राज सिमु ॥

सामंत्र दोह भय प्रात बर । चढि चल्थ्यौ संग्राम किमु ॥

॥ छं० २६ ॥ रू० १३ ॥

कवित्त सुन्यौ राज प्रथीराज । तात मुक्थी संदेसं ॥

भयौ रोस जाजुल्य । तुन्य पावक्क सुभेसं ॥

कवन बत्त इह तत्त । मन मंड्यौ अरि ग्रहं ॥

महिम जुद्ध विन मुद्ध । करे नह सेव गनेहं ॥

बुल्लाइ अप्प भर अप्प संग । चढि चल्थ्यौ निभि अथ्य मह ॥

पत्तौ मुजाइ तिन ठाम तव । मुण्य सयन मोमेस मह ॥

॥ छं० २७ ॥ रू० १४ ॥

पृथ्वीराज का पिता के पास पहुंच कर सब सेना को सोते हुए

पाना और मोमेस का उससे न बोलना ।

गाहा - पत्तौ पहु ढिग तानं । दिण्यौ मोनथ्य मच्च मेनाय ॥

न बुन्यौ मोमेसं । प्रथीराज मिण्टयं वैनं ॥

॥ छं० २८ ॥ रू० १५ ॥

उमका पिता को निद्रा में और शत्रु की सेना को देखभाल कर

उत्तापित होना ।

अगिन्ल मद्रा नेज्जन जगिय वीर । तात दिणिय निद्रा घन वीर ॥

पहिलोइ अरि मेन संपनिय । ज्यो अरिय घन वीज पिवनिय ॥

॥ छं० २९ ॥ रू० १६ ॥

और उमका शत्रु की सेना पर झपटना ।

दूहा सयन छडि पनि सयन मो झपट्यौ टन उन मान ॥

लीनर तीनर देपि कै । झपट्यौ जानि मिचान ॥

॥ छं० ३० ॥ रू० १७ ॥

१३ पाठान्तर भगा । पुल्ल । पुल्लि । मुक्थी । संदेसं । अरिय । मेन । अंदेश । रष्यन । यु । आय । निशि । रष्यौ । राजे । सामन्त । राज बर । चडे । चन्यौ । संग्राम ।

१४ पाठान्तर सुन्यौ । पावक्क । करे । बुल्लाय । अप । अप्प गग । चन्यौ । निशि । अयमह । पत्तौ । ठाम मुप । मेन । मोमेस जहां ॥

१५ पाठान्तर मो मच्च मच्च मेनाय । तथ । मव । नह । बुन्यौ पृथीराजं ॥

१६ पाठान्तर वीर । दिणिय । निद्रा घट और । पहिलो । अरि संपनिय संपनिय । पिवनिय ॥

१७ पाठान्तर मेन छडि पनि मेन मो । उनमान । लीनर । जानि ।

पृथ्वीराज और मुद्गलराय का युद्ध ।

कवित्त जनु कि सिध बन गज्जि । झपटि करि करनि त्रुथ्य पर ॥
जनु कि अजनिय जान । पान दनु दिण्णि हथ्यवर ॥
जनु कि भीम भीमडा । दन दतीय उछारन ॥
जनु कि गरुड गल गज्जि । बज्जि पनग बहु पारन ॥
तिम मूर झपटि मोमम सुअ । जनु अकास नारक तुटिय ॥
जम जोर रोर अरि उडुवन । मार मार मब्रुन जुटिय ॥
॥ छ० ३१ ॥ सू० १८ ॥

कवित्त उन मुगळ महि इद । इद देवन जनु पारम ॥
हर बल कर बल कोर । गोल मडिय भर भारम ॥
गहिर गुग नीमान । जानु बद्रल गुर गज्जिय ॥
बरन बरन वैरण्य । इद्र धनुषह मम रज्जिय ॥
त्य नागि धारि आतम अनन । मोर गोर अमर उटिय ॥
जानै मि विरनि धारिध लहरि । महि अजाद वृटन लुटिय ॥
॥ छ० ३२ ॥ सू० १९ ॥

ऐसे पृथ्वीराज के अन्य मूर मुद्गल के योद्धाओं से लड़े ॥

गाहा दम रजे रन रग ॥ मूर नर जग अभिताय ॥
जनु ★ धिग्ने महिष महिद्र ॥ ब्रज पान पाव अगाय ॥
॥ छ० ३३ ॥ सू० २० ॥

कन्ह का मेषात्तियो से युद्ध ॥

कवित्त उनमग दर छौर । टोर रापन मेषानिय ॥
मीम नाट मुगल नरिद ★ । कहर कुपौ घन घानिय ॥
इत मु कन्ह नरनाह ॥ दाह दावानल जल्लिय ॥
हक्क बक्क धरि घक्क । जानि महना रंभ झल्लिय ॥
चव दन मन उरझे जनुकि । मेह बुद मर कर लुटिय ॥
मरजाल हाल अनहद अबनि । निमिर पमर रविकर मिटिय ॥
॥ छ० ३४ ॥ सू० २१ ॥

१८ पाठान्तर कर । करि । जुय । आ । दि । हथ । धर । गजि ।
बजि । निम नु मूर मोमम सुअ । त्रुथ्य । उडुवन ॥

१९ पाठान्तर मही । गहर । नीपान । जानु । रजिय । जानै । मूर द ॥

२० पाठान्तर मूर । नर । अग । ★ अधिक पाठ है । महिद्र ।

२१ पाठान्तर - टोर । ठोर । मेषातीय । नाट । मगल । ★ अधिक पाठ
है । घातीय । जालय । जानि । रभ । झल्लिय ॥

कैमास का पठान बाजीदखां से युद्ध ॥

कवित्त वाम अंग पठान । विरचि बाजीद † सुपनिय ॥
 उन उप्पर कैमास । हुकम प्रथीराज सुदिनिय ॥
 सीम नाइ बल बाइ । लाइ लगिय घन रोसन ॥
 तीर तुबक तरवारि । तच्छि निकरै उर ओरन ॥
 अनहद् नद् नीसान धुनि । लगी लाग मारू बजन ॥
 रन तूर तूर तवलन त्रहक । गहक हक्क रज्जे रजन ॥

॥ छ० ३५ ॥ ६० = २ ॥

कुरंभ से राम गुजर का युद्ध ॥

कवित्त दण्डिन दिसि कूरभ । नाम नरेन निवदिय ॥
 तिन पर गुज्जर गम । करन दम इवम वदिय ॥
 ममर भ्रमर परे मूर । चपि जल जानि उछारिय ॥
 लोह लहरि बुडि जाहि । मुररि मरदान मुछारिय ॥
 अन भग अंग तन तन तकहि । कहि बकहि वज्जहि बलिय ॥
 अनभूत भूत भिरै भूत भूव । ममर भ्रोन मलिता चलिय ॥
 इतने में पृथ्वीराज का रण के बीच अचानक जा पहुँचना

श्रीर घोर युद्ध का होना ॥

छंद भुजगी ॥ जय जाय पत्ती प्रथीराज जुहु । करो मरुब सेना विरुद्ध विरुद्ध ॥
 बजे ताल काल महा मल्ल बीर । दुहु बाह येना विरु ड सुधीर ॥छ०॥३७॥
 गही बाग गद्दी कडे लोह तने । मनी कारनं काम दुर्गा विरने ॥
 स्वय मूर मूरं मही में पचारै । लगै लोह अंगं बकै मार मारै ॥छ०॥३८॥
 उहै छिछ स्त्रंगं मनो अगिज ज्वाला । हलै जानि पत्त बमत तमाला ॥
 सिनं केति षगं हिनक्केति ताजी।★भिलै भूप भूपमहावीर गाजी। छ०॥३९॥

२२ पाठान्तर— वाम । पठान । सुयं । नीय । प्रथीराज दनिय । नाइ । बाइ । छाई । तबक । तरवार । निकसै । उरन । नीमान । हक । रजे ।

† बाजीदखा नामक पठान मुग़दलराय का एक बडा लडाका सेनापति अर्थात् जनरल था और प देशी सिपाही उसके विभाग मे थे । यह वृत्त हम महाकाव्य मे जो मुसलमानी भाषा के शब्द आते है उनके विषय की शका मिटाने के लिये बड़ा उपयोगी है ॥

२३ पाठान्तर— दण्डिन । दिसि । नाम । नारि । निवदिय । गुजर । राम । दूबल । वदिय । परे । परे । जानि । लोहरि । जाहि । मरदान । मुछारीय । तकहि । बकहि । हकहि । भिरै । भुय । मलिय ॥

छिनक्कैति षगं तुटै सीस लल्लै । उटै छिछ इच्छं मनो दाह पल्लै ॥
लगै गुर्जं सीमं इसे टोर टट्टै । मनो दंग दाहं लगै वंग फुट्टै ॥ छं॥ १०॥
इसे मंत्र छत्री लगे लाग पगगे । प्रलै काल ग्याळ मनो वीर जगगे ॥

॥ छं० ४१ ॥ ६० २४ ॥

मुग्दलराय की फौज का नितर बिनर होना और
उसका पकड़ा जाना ।

कवित्त कहुँ तिमन्त धर धुकत । लकत कहुँ मुग्द घान छल ।
ठुकत काल कहुँ पत्र कुकत कहुँ मेन पाइ जल ॥
रुवत ममर भट भीर । धुकत धर मद् छक्क जनु ॥
मुकत कठ श्रम ममर । टुकत कानर फौजन तनु ॥
इम★ सोमेस राइ चहुवान मुअ । अरि मम्द जल बहूदयो ॥
चहुदिय जिहाज जम जडिह पल । मगल महि गहि कहुदयो ॥

॥ छं० ४२ ॥ ६० २५ ॥

कवि का सोमेश्वर की सेना और घोड़े हाथी आदि की
यज्ञादि अनेक उपमाओं के साथ प्रशंसा करना ॥

दूहा चमकत सार मनाह पर हय गय नरभर लगि ॥
मनो वृच्छ परि झिगिनिय । करत केलि निमि जगि ॥

॥ छं० ४२ ॥ ६० २६ ॥

कवित्त जगि मूर सोमेस । सेन मज्यो हयगय नर ॥
राका निमि जनु उदधि । चढै हल्लोर चंद पर ॥
मुन्यो श्रवन इह वैन । लरहि प्रथिराज पलनदल ॥
पुच्छ चापि जनु मिह । दिपि प्रजन्यो नयन झल ॥

२४ पाठान्तर—दुहं । वाइ ॥ गढी । मनो । काम । दुगा । महो मे । महोमै ।
पचारै । लगै । बकं । मार ॥ ३८ ॥ छिछि । श्रगं । सगं । मनो । ज्वाल । माल ।
सबंतंत माला । इनकैति । हिनकेति । भिल्लै । ★ सं० १९५३ की पुस्तक में नहीं
है ॥ ३९ ॥ झिन्कैति । तुटै । दीश । लल्ले । उटै । इछं । मनो । परले । लगै ।
लगै । दीशं । टुटै । मनो । लगै । फुट्टै ॥ ४० ॥ मंत्र । गित्री । मानो । वी० ॥

२५ पाठान्तर कहुं तमन्त । तमन्त । कहुं । कहु । घान । ठुकत । कहुं ।
कहु । सेन । मद । ठुकत । तन । ★ अधिक पाठ है । राय । चहुवान । चहुदिय ।
मुंगल ॥

२६ पाठान्तर—निर । झिगता । निशि ॥

दइ बंब दुतिय जनु गगन रव । कुटि अंदुन गज गुरि चलिय ॥
दीसंत मत्त छक्कैं नयन । मगौ प्रवत पंषह हलिय ॥

॥ छं० ४१ ॥ रू० २७ ॥

दूहा -ठनक घंट घुघर घमक, घमक घरनि बर पाइ ॥
झमकत सुंड लपेट भट, भरत देत गिर राइ ॥

॥ छं० ४५ ॥ रू० २८ ॥

दूहा -पग लंगर जंजीर जरि, कज्जल गिरवर अंग ॥
दिघप्रदंत बग घन बरन । झरत मदंग छदंग ॥

॥ छं० ४६ ॥ रू० २९ ॥

दूहा पन्त्रय कै पावस जलद, दल दाहन उठि कोर ॥
दिष्वावत दल बटलन, भर हर परत अमोर ॥

॥ छं० ४७ ॥ रू० ३० ॥

दूहा दंति पंति कज्जल बरन, दिपि दलंमळ ढाल ॥
करहरंत वरप लषी. दल मोमेम भुआल ॥

॥ छं० ४८ ॥ रू० ३१ ॥

दूहा -उठी कोर हथ गय प्रवळ दिठु दुअन छुटि धीर ॥
दिपि धनु धर हथनारि धरि. भरकि भग्हरी भीर ॥

॥ छं० ४९ ॥ रू० ३२ ॥

छंद विराज★ कियं चित्त पंगे । घटं घट्टु भंगे ॥

उतंगे मुषंगे । मनी वीर जंगे ॥ छं० ५० ॥

रसं वीर लग्गे । बढे अग अगगे ॥

डिगें नाहि डिगगे । महा मोर भगगे ॥ छं० ५१ ॥

२७ पाठान्तर --रन चढे । मून्यो । बैन । पृथीराज । पुछ । दिषि । प्रजरी ।
दई । दइय । अंदन । छक्कैं । छकैं । मनो । पंषकि ॥

२८ पाठान्तर --ठनक । घुघर । घमकि । पाय । पाय । राय ॥

२९ पाठान्तर --कज्जल । दिघप्र । दिघ । मदंग ॥

३० पाठान्तर --दिषावन । दिषावै । दल बळ दलन ॥

३१ पाठान्तर --दंन पंत । दिपि । ठळ मळ । बैगलकी ॥

३२ पाठान्तर --हथ दळ । देपि धनुष हथ नारि धरि फरकि ॥

★ इसी समय के रूपक ३२ की टिप्पणी के साथ इस रूपक को भी ध्यान में लेना चाहिए ॥

परैके अछगो । न बैरीन मगो ॥
तजै नाम पगो ॥

॥ छ० ५२ ॥ रू० ३३ ॥
गाहा - जगोयं जुघ वानं । कुभे यनं ककल्ल काय ॥
दंतं मुष्य करेय । वाहंतं वीर मुभटायं ॥
॥ छ० ५३ ॥ रू० ३४ ॥

रण में मरे और घायल कैसे पड़े देखते थे और कौन कौन
योद्धा किस किस से घायल हुए और मारे गए ।

कवित्त हय हिमहि गज चिकरि । भगर मम दिषि कुलाहल ॥
बलि पंषिनि बेताल । नदि नदिय झोलाहल ॥
गिद्धि मिद्धि किलकंत । ईम मुंझावलि मंघय ॥
हकि कंमंघ पर टुट्टि । चढी देखी दल मंघय ॥
उपमान तास कवि चद कहि । मुभन मनाह मुकालनिय ॥
जानै एक कृष्ण वृन्दावनट । राम रमै निर्गि स्वात्निय ॥

॥ छ० ५४ ॥ रू० ३५ ॥

कवित्त ★ जहै बाजीद पठान । मघन पुरमान पान तहै ।
हय कटि दुव नरीर । उभय रम्मान नाति मह ॥
उच फहर रुधान । छोट गिरि दान लव भ्र ॥
रकन क्रन मुष चणु । कफ अनमर अवनि ध्रु ॥
भरि वात्र कान निरि छोट मुठि । दिगिप एवामनि ओट करि ॥
ओडन ममेन मनाह मम । मर मुविधि कृ'ट्टुग निकरि ॥

॥ छ० ५५ ॥ रू० ३६ ॥

३३ पाठान्तर इतर पुस्तको म इस छंद का नाम रसावला वा रसावला है परन्तु हमारी म० १६८७ की पुस्तक में शुद्ध नाम विराज है हम हमने प्रयोग में लिखा है क्योंकि यहा पर उमका ही लक्षण मिलता है अर्थात् वह दो गुरुगु का होता है । घट । मनो । बहे । अगे । अग । अग डिगे । नाडि । मोर बगे । फरैके अछगो । मगे । तजै । नाम ॥

३४ पाठान्तर - कुभेयन ककल काद । इंदं मूय मुभटाइं ॥

३५ पाठान्तर - हिमहि । हिमहि । दिषि । पषिन । दि । मिद्ध । मधिय ।
जंमध । हार । निरि उपमान । उपमान । निकि ख लीनीय ॥

३६ पाठान्तर - जहा । बाजीद पठान । तह । तहा । दुअ । चपु । भिरि ।
मिलि छोह । दिषि ।

कवित्त— धुकत धरनि षावास । कोपि कयमास काल कर ॥

वज्र घात बलिबंड । हनिग तरवारि टोप पर ॥

टोप टुट्टि सिर फुट्टि । सम सुसंनाह चीर हुआ ॥

बष्पर पप्पर तुट्टि । तुट्टि हय षंड परिय जुअ ॥

जय जया सह आयास हुआ । गुमन सघन उपर झरिग ॥

देष्पत बहर करिार बर । सेन मघन विदुरी टरिग ॥

॥ छ ५६ ॥ रू० ३ ॥

जहंत रेन धर धरन । तहंत बड गुज्जर रामह ॥

तहें मुगल रपन समर । मग पतिलय मिर सामह ॥

तुरमवीध मिर टोप । फुट्टि पुपरि रन बुद्धिय ॥

तहा उटिग इरु वीर । जानि जमगान मुट्टिय ॥

तरवारि तेज नारेन हनि । धर असध तुट्टिग धरह ॥

अनभूत इष्ट अवसान बट्टि । करहि दव वदन बरह ॥

॥ छ० ५७ ॥ रू० ३८ ॥

कवित्त जहाँ मगद मरदान । कन्ह तहाँ जानि नाग भुअ ॥

मिल तक्कि तरवार । झारि उम्भारि मीम हुआ ॥

मेलिय मागद सीम । टोप कट्टिय मिर धारिय ॥

नर नाहै कटि कट्टि । अद्ध अद्ध करि डारिय ॥

धर गिरत मत मारु मरद । हय षधा अमवर जरिय ।

जै जया सह सुरपुर भयो । इम मुकन्ह है धर परिय ॥

॥ छ० ५८ ॥ रू० ३९ ॥

कवित्त- कन्ह कटत है धरनि । करनि जित नित मार मचि ।

वहै दुह्य तरवारि । छछ कवि लप्पटाइ तचि ॥

उडतहि ह्य पग न्यार । मीम हक्करि धर धारहि ॥

हंस हम के मिलहि । माल अच्छरि के नावहि ॥

३७ पाठान्तर- के माग । बलिचड । वुट्टि । बगर । पपर । वुट्टि । वुट्टि के षंड परिय जुअ । जै जया । हय । दिपन । विदुरि डरिग ।

३८ पाठान्तर- मघान । जहन । धरन । तहान । तहन । गुज्जर । राम । तहां । मुगल । रपन । पतिय । सामह । विध । मेर । बुद्धिय । उटग । इरु । जानि । यमगान । जमगान । तुट्टिग । अवसान ॥

३९ पाठान्तर- जहा । मरदान । तहां । नर नाहै कन्हक । कमकि बाहि षग झट्ट । झारि उम्भारि सीम हुआ । मेलिय । मगद । शीम । धारीय । नर नाहै कसि कट्टि । यद्ध अद्ध करि डारीय । जरिय ॥

अदभूत मयानक भगर मम । लगर लाग लगिय रनह ॥
हंकार हक्क कल कूह मवि । जयं सबद मच्चिय घनह ॥

॥ छं० ५९ ॥ रू० ४० ॥

जयजयकार का उपमाओं के सहित वर्णन ।

कवित्त मुषनि बह्दिह हंकारि । तलब टंकार लाग लगि ।
बजि भेरी भंकार । धार झंकार षाग षगि ॥
छुट्टि सीर मंकार । लुट्टि भंडार धीर मुति ॥
धुकहि धज्ज झंडार । झुकहि संडार मार धुति ॥
अचरिज्ज अवनि अंमर चरनि । बरनि कवि कहा सब सकय ॥
समरंग दुदल पिषिय सुभट । जकय केय कुक्कय हकय ॥

॥ छं० ६० ॥ रू० ४१ ॥

छंद तोटक★-भमरावलि छंदय चद कलं । पढि पिगल अच्छर जे निमलं ॥
बजई झनकार सुअस्मि घनं । पह तुंमर रिझ्झिय नाद धुनं ॥छं० ६१॥
झननं कहि पभ्ग कला दुसरी । प्रगटे जनु बिज्ज पहं पसरी ॥
उपमा तिमरी अमि वैठि चयं । फिर नागनि नाग मनौ पह्यं ॥छं० ६२॥
जु करै दल दोइय नीर मर । वहहै जनु टिट्टिय मेन परं ॥
दुनिई उपमा कवि यौ मनयी । किय भ्रगन चंद निमा जगयी ॥छं० ६३॥
जु वह वह ववक वज्जि घन । कि नचै उपमा अग ईम जनं ॥
जु फिरै गज गुजन रोग चह । पह बडल जानि किवाई वहं ॥छं० ६४॥
किमु रोपिय झुडय मूर रन । कि मुमे मुवसनं पजरि जनं ॥
जुवरै वरनी घन अच्छ वर । हलरै हिय चापि विपिटु कर ॥

॥ छं० ६५ ॥ रू० ४५ ॥

४० पाठान्तर मार मनि । उट्टि रक्कहि । अट्टि । भवानंफ । लगिय ।
जय ॥

४१ पाठान्तर बडि । घन ॥

४२ पाठान्तर ★ इस छंद का नाम इनर पुस्तको मे भमरावली लिखा है
मो अगुज है किन्तु वह तोटक वा तोटक नामक है । इनमे इनका ही अंतर है कि
तोटक चार लठगु का होता है और भमरावली पांच का । अठिर । बजी ।
रिभिय ॥ ५९ ॥ फिरै । नागनि । मनो ॥ ६२ ॥ नादन मार । वहै । अगर ।
दुनी उपमा कवि यौ मन लगि । कि भ्रगन चंद निमा महि जगि ॥ ६३ ॥
तहं तहं चढन । जानि । चढन ॥ ६४ ॥ कि रोपिय । अछ ॥ ६५ ॥ उपर ।
मनो ॥ ६६ ॥ मनो । हय । गुरजन ॥ ६७ ॥ मुजुदु । मिलन । रविनि । दिषिय ।
उड । पिस्वी । मरोर । बठी । तरिदह । कोर ॥ ६८ ॥

जु बहै सिर उप्पर राम सरं । सु मनीं अरिबिंदन भौर भरं ॥
गज सीस सिरीन जु छिछ परी । कष अंगन इंद वधू विधुरी ॥
॥ छं० ६६ ॥ रू० ४६ ॥

छुटि चक्र लगे गज कुंभ जिसे । मनु बहल पै सत चंद जिसे ॥
दुअ हृथ्य गुरू जन सीस जरी । दधि भाजन ग्वालिन कोरि हरी ॥
॥ छं० ६७ ॥ रू० ४७ ॥

जु कियो दल दोउन दुंद जुधं । मिलअंत मुइषिन दिष्टि उधं ॥
षिसयौ दल मुंगल मार मरं । बढिई प्रथिराज नरिंद कुरं ॥
॥ छं० ६८ ॥ रू० ४८ ॥

पृथ्वीराज की विजय ।

डूहा - भई जीत मोमेस सुअ, लियौ मुगल गज मेलि ।
सोधि षेत सब दिघ लहु, वीर बरनिय केलि ॥
॥ छं० ६९ ॥ रू० ४३ ॥

रन मुद्धिय क्रुद्धिय तजिय, घाइल लीन उटाइ ॥
भये मूभट जे अंत तन, दाघ दिघ तन ताइ ॥
॥ छं० ७० ॥ रू० ४४ ॥

हृअ डेरा नौबनि विहमि, पच मबद दरबार ॥
जिन भट - गे मम्त्र तन, तिन तन कीनिय मार ॥
॥ छं० ७१ ॥ रू० ४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके मेवाती मुगल कथा
नाम अष्टम प्रस्तावः ॥ ८ ॥



४३ पाठान्तर— जीति । दिघ ॥

४४ पाठान्तर— दाघ दिघ ॥

४५ पाठान्तर— निहसि । कीनीय ॥

अथ हुसेन कथा लिख्यते ।

(नवां समय)

संभरिनरेश (पृथ्वीराज) श्री गजनी के शाह
(शाहबुद्दीन) में कैसे बैर हुआ इसका वर्णन ।

दूहा संभरि वै चहुआन कै, अरु गजजन वै साह ॥
कहौ आदि किम बैर हुआ, अति उनकउ कयाह ॥

॥ छ० १ ॥ ऋ० १ ॥★

शहाबुद्दीन के भाई मीर हुसेन के गुणों और उसकी वीरता की प्रशंसा ।
कविन बंधव माहि महाव । मीर हुस्मेन वान धर ॥

निज्ज वान मु प्रमान । वान नीमान बधै मुर ॥
गान तान मुज्जान । वाहु अज्जान वान वर ॥
भेव राज परवान । उच्च जम धान जुज्ज भर ॥
उदार निन दानार अनि । नेग एक वदे विमव ॥
सकंत माहि माहाव निन । नेज अजे जयमंत श्रव ॥

॥ छ० २ ॥ ऋ० २ ॥

शहाबुद्दीन की पातुर चित्ररेषा की प्रशंसा, शहाबुद्दीन का उस
पर प्रेम, मीर हुसेन का भी उस पर आसक्त होना और चित्ररेषा
का भी मीर को चाहना ।

कविन इण्णि बधु आचार । मीर उमराव जपि जस ॥
एक पात्र साहाव । चित्ररेषा मु नाम तम ॥
रूप रंग रति अंग । गान परमान विवण्णन ॥
वीन जान वाजान । आनि वतीमह लच्छन ॥

१ पाठान्तर - चहुआन । गजन । साहि ॥

★ हमारा पाठ की सं० १६४७ वाली पुरतक में इस प्रथम रूपक के नीचे तो
इसमें लिखा दूसरा रूपक ही लिखा हुआ है, परन्तु उसके किनारे पर यह दोहा और
लिखा हुआ है सो हम को धेपक हीखना है । दूहा ॥ आनंदिय गंधर्व तब, अहो
मुनहि दिग जेन । अनि विथार कथन कथा, बिहर कही बर बेन ॥

२ पाठान्तर — साहाव । हुस्मेन । वान । निज । वान । प्रमान । वान नीसान
बंधे । गान । तान । तान । मुज्जान । मुज्जान । आज्जान । वान । परमान ।
परवान । उंच । धान । जुज्ज । उदार । सकंत । अजे ।

दस पंच बरष वाचा सुबच । सुप्रसाद साहाब अति ॥
आसिबक तास हुस्सेन हुआ । प्रीति परसपर प्रान गति ॥

॥ छ० ३ ॥ रू० ३ ॥

शाह का यह समाचार सुनकर क्रोध करना ।
कवित्त एक मुदिन सुबिहांन । साह हुस्सेन सुबुल्लिग ॥
वे काफर आतस्स उतेंग । दह दिसि नह डुल्लिग ॥
पैसंगी पासंग । लब्ध लब्धां नलवाही ॥
साईं सौं संग्राम । हक्कि हैबर गुरदाही ॥
गर्दन गुराब महि महि मषां । षाषबास अष्षिय घरह ॥
अन हल्ल नाल लम्भय रवन । करो नुच्छ तुझ्सी बरह ॥

॥ छ० ४ ॥ रू० ४ ॥

हुसैन का शाह की बात न मानना और शाह का आज्ञा देना कि
या तो मेरा राज्य छोड़ दो नहीं तो मारे जाओगे ।

दूहा सुनिअ बैन साहाब तब । प्रीत न छडी बाम ॥
कोपि कह्यौ मुरतान तब । हनौ कि छडी ग्राम ॥

॥ छ० ५ ॥ रू० ५ ॥

मीर हुसैन का देश छोड़ कर परिवार आदि के साथ नागौर
की ओर आना ।

कवित्त मुनिय वन हुस्सेन । मेन अपन माधारिय ॥
छडि नयग निम्म क । सक मन माह नगारिय ॥
निमा जाम डक आदि । लई मो पात्र परम गुन ॥
तरुनि पुत्र परिवार । मज्जि मत्र माज गु अपन ॥
परिगह मुआप अग्गे करिय । पान पान बंधी मिलह ॥
मचरघी नैर नागौर इह । तजिय दम निज मठ ग्रह ॥

॥ छ० ६ ॥ रू० ६ ॥

३ पाठान्तर दर्प । वध । म नान । अति अग । गान । परमान । विचक्षण ।
जान । वात्रान । आनि । लछन । लछन । आविक । हुमेन । प्रान ॥

४ पाठान्तर मदिन । हुमेन । आत्म । उतग । पामग । लय । लपा ।
साईं । मो । गह । अनहक । लम्भे । लभय । तुझीय ॥

५ पाठान्तर — मुनिग । छडिय । बाम । मुरतान । क । ग्राम ॥

६ पाठान्तर — हुसेन । छडिय । निस्क । सारीय । जाम । मादिल्लीय पात्र
परम गुन मयि । परगह । बंधिय ॥

मीर हुसेन का पृथ्वीराज के यहां आना ।
दूहा ले परिगह हुसेन गय । दिमि प्रथिराज नरिद ॥
संभरि वै संभारि के । मनु आयी ग्रहदद ॥

॥ छ० ७ ॥ रू० ७ ॥

मीर हुसेन को आदर के साथ पृथ्वीराज का बुलाना ।
और मीर का आकर सलाम करना ।

कविन पातिसाहि तद्दिन★ नरिद । साहि पीरोज प्रसन्नौ ॥
घर घर साहि घरन । छिति नौसान दिवन्नौ ॥
पर पठान उचीगु । मान अगिवान अगन्नौ ॥
तिन मे रप्यौ साहि । आन गज्जन घर थन्नौ ॥
लभै मुमीर जमी जहर । दुनिया दिल लगि दुअन था ।
हुसेन मीर सल्लाम करि । गौ चहुआनह पाम थां ॥

॥ छ० ८ ॥ रू० ८ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेनना और मीर हुसेन का मुन्दरदाम को
पृथ्वीराज के पास भोजना ।

कविन पारधि पट्ट प्रथिराज । रमै पट्ट पुर पामट्ट ॥
बहिल प्रीग निप्रकर । मगिष रमम धर रामट्ट ॥
गौ कुरग फदेन । टोरि बहु बधि रिनानिय ॥
जाम पर दिन आदि । मध्य पे टै मृगयानिय ॥
आयो बसाट्ट हस्मेन नर । मुन्पो राज मगया ममर ।
बुल्लाय दाम नरर थिरिय । इया प्रति चहुआन नर ।

॥ छ० ९ ॥ रू० ९ ॥

मुन्दर छाया का स्थान देखकर मीर का डेरा डालना ।

दूहा उत्तम ठाम मु छाह जल, करि मुकाम बलवीर ॥
पुलि डेरा विधि विधि बरन, तहा बयठौ मीर ॥

॥ छ० १० ॥ रू० १० ॥

७ पाठान्तर हुसन । प्रथीराज । मना ॥

८ पाठान्तर - पानसाहि★ अधिफ पाठ है । पीसान । पठान । गुमान ।
मान । अगानो । अगानो । मै । रप्यै । पानो । लभै । जु । दुनो । हुसेन सलाम ॥

९ पाठान्तर - पारिधिरा । पृथीराज । पट्टपुर । तीम । कंदैव । रिनानीय ।
पाम मधि हुसेन । तहा । बुलार । मुन्दरि । वित्रीय । चहुआन । रय ॥

१० पाठान्तर - उत्तम । ठाम । मुकाम । बर वीर । बयठौ ॥

हरम (स्त्रियों) का डेरा पीछे की ओर डाला ।

दूहा- डेरा हरम सुपिटु रषि, चिहु पष्वां बर मीर ॥

पासबांन कुल सील सम, पास रषि बर नीर ॥

॥ छं० ११ ॥ रू० ११ ॥

सुन्दर दास का पृथ्वीराज के पास जाना, पृथ्वीराज का मीर का

कुशल-समाचार पूछना और उसका सब हाल कहना ।

दूहा सुंदर दाम सुपास गय, जहां राज प्रथिराज ॥

मिलिय त्रिविधि पच्छै कुमल, कही मीर मत्र माज ॥

॥ छं० १२ ॥ रू० १२ ॥

मंत्री, कैमास, चद, पुंडीर आदि को बुलाकर पृथ्वीराज

का पूछना कि क्या करें क्योंकि दोनों तरह विपत्ति

है एक शाह का कोप, दूसरे, शरण आए

को न रखना धर्मविरुद्ध है ॥

दूहा बोलि मत्रि कैमाम वर बोलि चद पुंडीर ॥

राव पूजन प्रमंग नर, गोयंद रा गुन नीर ॥

॥ छं० १३ ॥ रू० १३ ॥

दूहा मेछ मुष देषे न नृपति विपति परी दुहु क्रम ॥

इक मरना इक रघहन, इक धर रपन ध्रम ॥

॥ छं० १४ ॥ रू० १४ ॥

चन्द का मलाह देना कि जंसे शरणागत होने पर विष्णु

भगवान ने मत्स्य रूप धर कर पृथ्वी को अपनी

सौग पर रक्खा था वंसे ही आप भी कीजिए ॥

गाथा मनमा धारि त्रिरंचं । दक्षिन पग अंगुरी नषयं ॥

मंभू मंन नरिदं । मन जुगं आदि कीन पैदामं ॥

॥ छं० १५ ॥ रू० १५ ॥*

११ पाठान्तर - पिठि । चिहुं । पषा । पापवान । शील । रषि ॥

१२ पाठान्तर यु पाम । राजन । पूछै । पुछी ॥

१३ पाठान्तर- मत्र । पुंडीर । रा वजून । गोदद ॥

१४ पाठान्तर- यक । रपन ॥

१५ पाठान्तर- * यह रूपक और इसके आगेवाले १६ और १७ रूपक संवत् १६४७ की प्राचीन पुस्तक में नहीं हैं किन्तु इनके आधुनिक पुस्तकों में हैं ॥

कवित्त - संभू मन बरदान । लियौ तप जोर ब्रह्म पहि ॥
 सरन रण्णि वसुमती । होत कलपंत काल महि ॥
 नारद धरत बताइ । मच्छ रूपं जगदीमं ॥
 दस हजार जोजन । शृग रत्रि ऊरघ मीमं ॥
 करि मत्त नाव तिहि पर धरे । अनकपित जिम गैन धुअ ॥
 ऐसेरु चंद कहि पीथ सम । गरुअ तन नूप अगग हुअ ॥
 ॥ छ० १६ ॥ रू० १६ ॥ ★

जैसे शिवजी गले में विष धारण किए हैं वैसे ही भीर को
 आप भी रखिए यह चन्द ने कहा ॥

दूहा संकर गर विष कद जिम ॥ बडवा अगनि ममद ॥
 ते रप्पहु बहुआन तिम । पा हुमेन कट्टि चद ॥ छ० १७ ॥ रू० १७ ॥ ★
 सुन्दरदास से पूछना कि अब सब स्त्रियां तो मुख से हैं और

शाह से झगड़ा होने की बात क्या मच है ?

दूहा मिलिय सु मदर दाम तह । पुच्छिय विधि विधिवन ॥
 कहीं मृगी त्रिय मव विवर । विरम माहि सो मत्त ॥ छ० १८ ॥ रू० १८ ॥
 सुन्दरदास का कहना कि दूर की ऐसी एक पातुर
 शहाबुद्दीन के पास थी उसको लेकर हुमन
 यहा चौहान की शरण में आया है ॥

दूहा पात्र एक साहाब संग । हर नूर गुन गान ॥
 ले आयी हुमेन दन । सरन तविक चहुआन ॥
 ॥ छ० १९ ॥ रू० १९ ॥

चन्द का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना कि जैसे मोरध्वज के यहां
 अर्जुन ब्राह्मण बन कर शरण गया, भगवान ने सिंह बन
 कर मांस मांगा, शरणगता द्रौपदी का चीर बढ़ाया,
 वैसे ही तुमने शरणागत को रखकर क्षत्रिय
 धर्म की रक्षा की, तुम्हारे माता पिता धन्य हैं ॥

कवित्त मोरद्वज के मरन । गयो दुज होइ सु अर्जुन ॥
 मिह रूप धरि रुन्ह । मस मग्यो करि गर्जन ॥
 देन चीर अरधंग । नूति सिर बर वत धाय्यो ॥
 देषि महा सतवंत । प्रगट गोविद उचाय्यो ॥

१६ पाठान्तर - रण्णि । मच्छ । अग ॥

१७ पाठान्तर - ते । रण्णी । चहुआन ॥

१८ पाठान्तर - तहां । पुच्छिय । मुषि । जीय । विसर । सो ॥

१९ पाठान्तर - संग । गान । हुसेन तब । तकि । चहुआन ॥

धनि धनि मात पित धनि तुअ । सरनागत धंम तै रषिय ॥
षित्री कहंत कविचंद सौ । संभरि बै तिहि सम लषिय ॥

॥ छं० २० ॥ ह० २० ॥

शाहहूसैन का पृथ्वीराज से मिलना, पृथ्वीराज का आदर देना ॥

दूहा - गयो राज सामंत सम । मिलिग साह हूसैन ॥

आदर त्रप किन्नी अदब । बिबह प्रमंनिय बैनं ॥

॥ छं० २१ ॥ ह० २१ ॥

हूसैन को दक्षिण की ओर नागीर की जागीर देना ।

दूहा लिये मध्य प्रधिराज पहुंच । गयी सुपुर नागीर ॥

धरमायन कायथ + घबल । दिसि दच्छिन दिय ठीर ॥

॥ छं० २२ ॥ ह० २२ ॥

पृथ्वीराज का हूसैन को छोड़े हाथी आदि देना और

दोनों का परस्पर प्रेम बढ़ना ॥

दूहा भोजन भण्डे त्रिविध वर, बहु आदर विधि कीन ।

मान महातम रषिय रज, राज उभय ह्य दीन ॥

॥ छं० २३ ॥ ह० २३ ॥

दूहा धरिय डोगि हूमैन निर, है वधिय हैमाल ॥

आप मु त्रिन्हिय अवग दिन, रज पटुवै गाल ॥

॥ छं० २४ ॥ ह० २४ ॥

कविन - नररुम पत्र गिरम । तीन प्रति पयन तीन मह ॥

पुरामान कमान । पत्र परमान मान जह ॥

२० पाठान्तर - इन । प्रने धन । धम । मा ॥

★ यह काव्य रमाया म० १६०७ वासी प्राचीन पुस्तक में लगी है पर प्राधुनिक पुस्तकों में है ॥

२१ पाठान्तर - त्र । प्रमंनीय ॥

२२ पाठान्तर - तय । प्रयो गत्र । दच्छिन । दयन । दै ।

† धरमायन कायथ - पृथ्वीराज का दरबार मूजी था । उसका काम है कि जो जो दरबार में आवें उनको उनकी नियत की हुई ठीर पर बैठावे । ऐसा करताव अमी तक राजपुराने में प्रचलित है ॥

२३ पाठान्तर - मय । मान । रषि ॥ उषी ॥

२४ पाठान्तर - प्री । हूमैन । बीन्हे । पठवै ॥

गज सु एक सिध लीय । सेत तन मद् रत्ति वह ॥
गुंजन मधुप कपोल । गज्ज भज्जै प्रेमल मह ॥
ह्य पंच माजि माकति मुनग । ऐराकी कुल उच्च जिहि ॥
अंमोल बज्ज इक लाल दौय । रिज्ज समिप्य गज महि ॥
॥ छं० २५ ॥ ह० २५ ॥

दूता राजन रपिय मच्च इह, प्रनवेऊ प्रति मंत ॥
उभै परमपर गंठि परि, मंचिय पेम सुमंत ॥
॥ छं० २६ ॥ ह० २६ ॥

शहाबुद्दीन का चार दूत अजमेर भोजना ॥
दूता च्यारि दूत अजमेर पुर, थिर मुक्केगु विहान ।
आपेटक बन देपि कै, तविक गण चहुआन ॥
पृथ्वीराज का हुसैन को कथल, हामी, हिमार का पर्गना देना
श्रीर शिकार में साथ रखना, यह सब समाचार दूतों का
शहाबुद्दीन मे कहना ॥

कवित्त- आपटक चहुआन । पाम हुस्मेन मंपत्ती ॥
वार आइ चहुआन । भाइ घन ताहि दिपत्ती ॥
नीति राब कुटवाल । ताम ग्रह राज मु अप्पिय ॥
★वर कैथल हांसि हिमार । राजपट्टी दे थप्पिय ॥
इह चरित देपि सब दूत तव । जाइ मंपते माहि दर ॥
चरवर चरित जुगिनि पुरह । कहिय बत्त सें मुष्घ घर ॥
॥ छं० २८ ॥ ह० २८ ॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करना और अरब खां को पृथ्वीराज के पास
भोजना कि भला चाहो तो हुसैन को निकाल दो ॥

छंद पद्धरी संभरिय बत्त साहाब दीन । उच्चरिय बैन अति कोप कीन ॥
मुक्कलौ इत चहुआन पास । कद्दौ हुसैन जो जीव आम ॥छं०२९॥
बोलयो धान तातार तव्व ॥ संजाव पांन उमराव सब्ब ॥
पुच्छी मु बत्त किय इत सार । थपी मु बत्त पुरसान वार ॥छं०३०॥

२५ पाठान्तर तोन । पत्रग . पुरामान । कमान । पच परमान मान जिहि ।
मिषलीय । मद रत्ति । गज । भज्जै । परिमल । है । उंच जिहि । दुइ । गेंज ॥

२६ पाठान्तर रपिय । घन ।

२७ पाठान्तर थिह । मुके । मुक्के । विहान । चहुआन ॥

२८ पाठान्तर चहुआन । हुमेन । मंपत्ती । आय । भाद्र । दिपत्ती ।
नीतिराज । कुटवार । ★ अधिक पाठ है ॥ कैथल । हांसी । हिमार । षटो । थपीय ।
जाय । माहिबर । चवर । चरित । जुगिनि । मुष ॥

आरब्ब सेष लीनी बुलाइ । वैत्रद्व वृद्ध बुद्धी मुताइ ॥
 वंछै सुपेम सक लेहिं साहि । लज्जी अनंत आदब्ब थाहि ॥छं०३१॥
 उच्च-यी बंन साहाब भास । आरब्ब जाहु चहुआन पास ॥
 अरब खां से कहना कि पहले हुसैन के पास जाना, जो वह पातुर
 को दे दे तो हम क्षमा कर देंगे, जो वह गर्व करके न माने
 तो पृथ्वीराज के पास जाकर हमारा पत्र देकर समझाना ॥
 अप्पै जु पात्र हुस्सेन जाम । लैआउ मम्म हुसेन ताम ॥छं०३२॥
 मुक्की सुगुनह कीनी पसाव । मै दीन पच्छ करि पिमा दाव ॥
 छंडै न पात्र हुस्सेन ग्रव्व । चहुआन मिलै मामंत मव्व ॥छं०३३॥
 जंपियौ बयन चहुआन साइ । कढ्ढौ हुसेन नागौर थाइ ॥
 अज्जीज षांव तुम सच्च उच्चालिष्यौ सु पत्र ह्म परम ह्चन ॥छं०३४॥
 कढ्ढौ हुपेन तुम देस अंत । बंछौ जो पेम मानौं मुमंत ॥
 रप्या हुमेन जो अमु परेम । चतुरंग सेन मज्जी विसेम ॥छं०३५॥
 भंजौ मुनैर नागौर देम । जीवंन बंदि बंधौ नरेम ॥
 मामंत सूर मय करौं अंत । वंधौ मुवंध मा नरुनि कंन ॥छं०३६॥
 उच्चरि गुमान नन वन थूल । मणप कहे मानौं म मूल ॥
 तुम जाउ मित्र नागौर वाम । मनि करौ एक पिन पर विनाम ॥३७॥
 तीन मौ सवार और रथ देकर अरब खां को रवाना करना ॥
 मै तीन दीन अमवार गथ्य । आहहन दीन नरयान रथ ॥
 मचरथो मेष आरब्ब राह । दो पण्य पत्त नागौर थाह ॥

॥ छं० ३८ ॥ रु० २९ ॥

अरब खां का हुसैन से मिलकर समझाना, हुसैन का न मानना ॥

दूहा गया अरब नागौर धर । मिल्यौ माह हुमेन ॥

भोजन भण्य मुभाव क्रिय । विवध प्रमन्निय बंन ॥

॥ छं० ३९ ॥ रु० ३० ॥

२६ पाठान्तर उचरीय । मुक्की । कढ्ढौ । हुमेन । नौ ॥ २९ ॥ तार ।
 सब । प । पु श्री । कीय । पुरमान । ३० ॥ आरब सेष । वृद्ध बुद्ध । बुद्धीय ।
 बछै । पिम्म । लेहि । बज्जी । आदब । थाह । ३० ॥ उच्चयी । बंन । आरब ।
 हुमेन । जा । मम्म । हुमेन । ताम ॥ ३२ ॥ मुक्की । म । पछ । हुमेन । ग्रव ।
 सब । अरब ॥ ३३ ॥ बंन । माह । घाट । अज्जीजवान । मच उच । लिपि । रुव
 ॥ ३४ ॥ बछौ । जी । यु । मानौं । रथी । जी । ती । चतुरंग । मज्जी ॥ ३५ ॥
 करी ॥ ३६ ॥ उचरि । गुमान । कहे । मानौं । जह । शीघ्र । बाम । करी ।
 निनाम ॥ ३७ ॥ मय । अमहनन । नरयान । रथ । आरब । दोष । पण्य ॥ ३८ ॥
 ३० पाठान्तर हुमेन पय । विरह । प्रमचे बंन ।

दूहा—कही बत्त हूसेन मम । जो कहि साह महाव ॥
नह मंनिय सोमंत हिय । दिय आरब्ब जबाव ॥

॥ छं० ४० ॥ ह० ३१ ॥

अरब खां का पृथ्वीराज के पास जाना ॥

दूहा गयो सेष आरब्ब दर । लही पवर प्रथिराज ॥
बोलि मझ मंडिय महल । मामंतन सब माज ॥

॥ छं० ४१ ॥ ह० ३२ ॥

पृथ्वीराज का सुलतान की कुशल पूछना ॥

दूहा मझ महल आरब्ब गय । मिलि मंनिय सनमान ॥
दौ आसन पुच्छिय कुमल । चाहुआंन सुलतान ॥

॥ छं० ४२ ॥ ह० ३३ ॥

अरब खां का कहना कि हुसैन खां को निकाल देने के लिये
सुलतान ने कहा हे ।

छंद पद्वरी उ० ४२ ॥ वैन आरब्ब सेष । मल्लाम बहून पनि एक एष ॥
कहूटी हुसेन तुम देग अत । माहाव माहि वछी मुमन ॥ छं० ४३ ॥
जुगमीत अथि उवरै न आदि । इम ताउ भाउ बहु वैन सादि ॥
जपे मु वैन जे कहे माहि । कहूटी न वतत गंभार भाहि ॥ छं० ४४ ॥
शहाबुद्दीन का संदेसा सुनकर पृथ्वीराज का मुख लाल
हो गया, भीहैं चढ़ गईं ।

मंभलिय वतत प्रथिराज मन । भ्रिकुटी करूर दिग रतत जन ॥
आरत मुष्य सून थोन बुद । कलमलिय कोप रोमन जि ॥ छं० ४५ ॥
कैमास ने डपट कर कहा कि आर्य लोगों का धर्म सुलतान
नहीं जानता इमसे ऐसा कहता है, हुसैन पृथ्वीराज के
शरणागत है, क्षत्री का धर्म उसे छोड़ने का नहीं है ।
उच्चरयो कोपि कैमास बांनि । अतासनि आर्य मिच्यौ सुजानि ॥
आरब्ब बोल बोल्यो विरुर । सुरतान जानि जंप्यो गरूर ॥ छं० ४६ ॥
प्रति बुद्ध लही प्रथिराज नूर । अतुलित्त जुद्ध सामत सूर ॥
हुसैन आइ प्रथिराज थान । जोघांन धंम क्षत्रीय आन ॥ छं० ४७ ॥

३१ पाठान्तर - हुसेन । माहाव । नह । आरब ॥

३२ पाठान्तर - अरब । बबरि । प्रथीराज । मझ । मामंता । सम राज ।

३३ पाठान्तर - आरब । मनमान । पुच्छिय । कुशल । चाहुआंन । सुरतान ॥

३४ पाठान्तर - उच थो । वैन । आरब । सेष । मलाम ॥ ४३ ॥ जुगमीन ।
मपि । उवरें । वैन । जपे । कहे । भाह । नाह ॥ ४४ ॥ तथ्य । तथ । प्रथीराज ।

कन्ह चौहान, सूरसिंह, गोयंदराज, चन्द, पुंडीर आदि का भी यही कहन
और सुलतान से लड़ने को हम प्रस्तुत है यह कहना ।

जपै मुवैन चहुआन कन्ह । द्विग पानि रत्त रोमच तन ॥
रज ध्रम विपम बुझै न माह । अनि राह जेम जपै बिगहा ॥ छं ४८ ॥
गज्जे न लज्ज कोपे मृगिद्र । उतकिण्ट मूर गिर महि न निद्र ॥
गुरु तज्जि जपि गोइद राज । लग वैन गीर गफ वत्त माज ॥ छं ४९ ॥
सज्जाल तेज सम नेन वान । निरभै मुतामु जपे पयान ॥
उच्चरयो चद पुडीर कोप । आदीन भाल रम इन श्राप ॥ छं ५० ॥
गज्जनी कौन बेनुक महाव । गफ अत्त वन्न जपे महाव ॥
हुम्मैन राइ प्रथिराज थान । मरने मुकोन बहट्टे नियान । छं ५१ ॥
दल मज्जि सीम जपे मुगाहि । रल भजि ग्रहे प्रथिराज ताहि ॥

अरब खा का अपना निरादर होता देख उठ आना और गजनी को कूच
करना तथा शहाबुद्दीन से सब समाचार कहना ।

मानी न शेष आरव्व वन । मामत मूर देप विरत्त ॥ छं ५२ ॥
आदरह मद तजि उठ्यो शेष । लपीर बदन द्विग बट्टि नेप ॥
पुच्छीय जुगति नूप महल जानि । उठि गर्व दुप मन हीन मानि ॥ छं ५३ ॥
चडि चल्थो शेष रह साह देम । गज्जने गयो मन मानि रेम ॥
गय महल माहि मिलि कहिय बत्तासिर धूनि रीम करि नैन रत्त ॥ छं ५४ ॥
उठि गयो माह बहल महल्ल । आसन साजि बैठो मथल ॥

॥ छं ५५ ॥ हं ३४ ॥

बरबार करके शहाबुद्दीन का तातार खां, अरब खां, मीर जमाम,
कमाम खुरासा खां, रहन महन खां, रुस्तम खां, हाजी खां,
गाजी खां, जम्मन खां, गजनी खां, मुहम्मद खां, मीर खां,
आदि सरबारों को बुला कर सलाह करना ।

कवित्त सजि आसन साहाब । माह काजी मन बैठी ॥

बोलि मइस तत्तार । बोलि आरब दिन जेठी ॥

भुकटी । आरक्त । मुप्य । अन्ति । कलि ॥ ५५ ॥ उचरयो । खानि । आरज्य ।
संख्यो । जान । आरज । मुग्तान । जानि ॥ ५६ ॥ प्रथीगज । अतुलित । वृद्ध ।
हुसेन । थान । जोथान । पिजीय ॥ आन ॥ ५७ ॥ जपै । चहुआन । बुझै ॥ ५८ ॥
गज्जे । कोपे । मृगेंद्र । मृगेंद्र । उनकृष्ण । नगिद्र । तजि । जपि । गोयंद । वैन
॥ ५९ ॥ तेजवान । निरभै । सताम । पयान । उच्चयो । छप ॥ ५० ॥ गजनी ।
केतक । जपे । हुसेन । प्रथीराज । थान । कौन । नियान ॥ ५१ ॥ सजि । सीम ।
प्रथीराज । मानी । आरब । शेष । विरत्त । शेष । पुच्छिय । जप । जानि । दुप ।
मानि ॥ ५३ ॥ गजने । मानि । धनि । नैन ॥ ५४ ॥ महल । मुथल ॥ ५५ ॥

मीर जमांम कमांम । षांन पुरसांन न्यान वर ॥

षांन रहंन महंनं । षांन हस्त्तंम महा भर ॥

हाजीय षांन गाजीय षां । षांन जमन बंधव मुत्रिय ॥

गजनीय षांन महुवत्ति पा । मीर पांन सब बोलि लिय ॥

॥ छ० ५६ ॥ ह० ३६ ॥

तातार खां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज पर चढ़ाई करनी चाहिए ॥

कवित्त कहै माहि माहाव । अहो तनार पांन मुनि ॥

जिन जुमत्ति उपज्जै । कही सब पांन जानि मन ॥

गौ आरव चहुआन । फेरि आयौ मु मुनिय सब ॥

सरन रषिपि हुस्मेन । बोलि सामन राज ग्रव ॥

जपिय तनार मंजो मयन । हनो राज प्रथिगज रन ॥

हे गे गुवध वधी गिनह । मेर कि गहि छट्टे मुनन ॥

॥ छ० ५७ ॥ ह० ३६ ॥

खुरासान खा का तातार खां से कहना कि उसके बल को

भी विचार लो, जन्दी न करो ॥

हूहा कहै षांन पुरमान तब । अहो पांन तनार ॥

चाहुआन सामन बल । जिन मुविविधि विचार ॥

अरब खां का कहना कि उसका बल अनुल है, तुम लोगों ने देखा

नहीं है इससे ऐसा कहते हो ॥

बूहा कहै सेष आरव अनुल । बल सामन नारद ॥

अवे न तुम दिषिय नयन । मजो सैन विन वध ॥

॥ छ० ५९ ॥ ह० ३८ ॥

शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना ॥

कहै गहि आरव तुम । कही मुर सामन ॥

कहा कति प्राक्रम कहा । सति पत्र पहु नन ॥

॥ छ० ६० ॥ ह० ३९ ॥

३५ पाठान्तर - षांन जमांम कमांम । षांन पुरसांन न्यान वर ॥

महन ॥

३६ पाठान्तर - माहि माहाव । अहो तनार पांन मुनि ॥

हनी । मरे ॥

३७ पाठान्तर - कहै माहि माहाव । अहो तनार पांन मुनि ॥

३८ पाठान्तर - बोलि सामन राज ग्रव ॥

३९ पाठान्तर - आरव । तुम । कति । मयन ॥

अरब खां का पृथ्वीराज के बल की प्रशंसा करना ॥

कवित्त - इष्ट मत्र उच्चार । दिष्ट उठु हित इक्क थर ॥
 क्रमत पेषि पच्चीस । मिलत सत एक इष्पि पर ॥
 सहम सुभर बाहंत । एक सामत पराक्रम ॥
 जामह दुप्पल कटै । ताम बाधत बीर दस ॥
 सिर परै सुहक्कै धर भिरै । परै श्रोन उठु सधर ॥
 असिधार सूर उठु किलकि । एह पराक्रम सूर नर ॥

॥ छं० ६१ ॥ रू० ४० ॥

तातार खां का अरब खां की बात को हँसी में उड़ा देना, अरब खां का कहना कि अपनी आंख से न देखने से ऐसा कहते हो ।

कवित्त ह्म्यो पान तातार । एम हाजी गम बद्रिय ॥
 जय रूनही बिन बषत । मरन भै डरै न रुद्रिय ॥
 कहि आरब तनार । अहो सामंत न दिष्पिय ॥
 अनुल नेज बल अनुल । अनुल बल देव मुग्घिय ॥
 वे साम धंम रने अनुल । अनुल मत्त कैमाम भर ॥
 उमरा अनत देपै अनत अनुल वत्त पहुने न नर ॥

॥ छं० ६२ ॥ रू० ४१ ॥

शाह का क्रोध करके तातार खां को चढ़ाई के लिये प्रस्तुत होने की आज्ञा देना ।

दूहा कहै माहि गोरी गरुअ । अहो पान तनार ॥
 कन्हि नरीक मुउच दिन । नदि अरि मझी मार ॥

॥ छं० ६३ ॥ रू० ४२ ॥

दूहा उठि गोरी दिन्ने बहुरि । गयो मु अदर माह ॥
 बहुरि पान मीर बरा । अनि चचल तुर ताह ॥

॥ छं० ६४ ॥ रू० ४३ ॥

४० पाठान्तर उचार । उठ । टक । पच्चीस । इषि । हुग । नाम । परै । सुहकै । उठै । उठे ।

४१ पाठान्तर तनार । बद्रिय । मय । कद्रिय । काहि । दिष्पिय । रषिय । साम । उमरा । अनत ॥

४२ पाठान्तर—कान्हि । नेरीक । मु । मधी ॥

४३ पाठान्तर--दिन ॥

शाह के जी में रात दिन चौहान की चिन्ता लगी रहना ॥

इहा --नपे माहि गोरी मबर । चित्त मालै चहुआन ॥

वेरोचन की माष ज्यों । कोटी भ्रग प्रमान ॥

॥ छं० ६५ ॥ स्० ४४ ॥

अरिन्ल जगन निमि अंघत मुरतानह । घरी मत्त रहि सेप प्रमानह ॥

जगि आयस दिय दीन निमानह । चिन्ता माहि चही चहुआनह ॥

॥ छं० ६६ ॥ स्० ४५ ॥

सेना के साथ चढ़ाई के लिये शाह का तैयार होना ॥

छंद मोनीदाम

भग मुर तीन धुनर निमान । चढ्यो अश्व मज्जि मिनहै मुरतान ॥

चढे सब पान गु उम्भर मीर । सजे महनाइ बजे रम बीर ॥ छं० ६३ ॥

बजे सब बाज भयानक भाइ । चित्तै हिय बुद्धि जिनै जन नाइ ॥

चढ्यो सब मज्जिप सेन गरिष्ट । परी दन दिग्ग मुधुधरि टिष्ट ॥ छं० ६८ ॥

अशकुन होना ॥

नदर मियाँन मुसेन कपोन । मनमुष माहि दियो दल दोन ॥

भयो दिमि रामिय कम्प करार । मक्खो दिवि भोमय रम गभार ॥ छं० ६९ ॥

मनमुष दपिय जवुक सेन । विरो मिदि चराह भगहि तेन ॥

क्रमे तम उपर गिद्ध असप । चवै मुर रत्र पमारिय पप ॥ छं० ७० ॥

अरब खां का कहना कि आज ठहर जाइए, अकुन अच्छा नहीं है ।

गही मुरतान मु आरब दग्ग । रही दिन आज नगुन न जग्ग ॥

रही कुहु अज्ज तनार बुद्धि । गही चाह चन्तहु मति मगुन्न ॥ छं० ७१ ॥

मुलतान का कहना कि काफिर चौहान को जीतना कौन बड़ी बात है

जो इतना बिचार करते हो ॥

कहै मुरतान अहो तुम क्रूर । भयै भय मिन्यु मु अपहु नूर ॥

कहा बल जुद्ध कहौ प्रथिराज । कितौ बल सामत जुद्धिह माज ॥ छं० ७२ ॥★

४४ पाठान्तर --चहुआन । भृग । प्रमान ॥

४५ पाठान्तर --जगन । जपन । मुरतानह । मन । रही । प्रमानह । निमानह । चहुआनह ॥

४६ पाठान्तर --मोनीदाम । निमान । माजि । मिनहै । मुरतान । ६० ॥ सजे । चित्तै । जिनै । मत्रिय । गरिष्ट । दिष्ट । पुंषी दिष्ट ॥ ६८ ॥ मियान । वामीय ॥ ६९ ॥ ऊर । पमागीय ॥ ७० ॥ मुरतान । रही । कुहु । कपी । आज । गही बल मन्हु चहि सगुन । ७१ ॥ भयै भयै । प्रथिराज । चन्तु । सामत ॥ ७२ ॥

हनों रन सूर जिके चहुआंन । गहों जुध राज सु षंडिय प्रान ॥
कहा डर काफर दाषहु मुइझाकहा भर आवघ आगरि जुइझा ॥छं०७३॥*
नमंनि चमंकि चढघी सुरतान । टमकिय गज्जिय नहु निसान ॥
जलध्यल होय थलं जल भार । अमग्गह मग्ग चलै गहि लार ॥छं०७४॥
मिल्यो इक साहन लष्व समुंद । समुइझन कंन भयो सुर मुंद ॥
चल्यो सुरतान मिलान मिलान । बढी अति चित दुनी चहुआंन ॥
॥ छं० ७५ ॥ रू० ४६ ॥

शाह का चौहान की श्रोर जाना श्रोर बूतों का यह समाचार
नागौर में हुसैन को देना ॥

दूहा- गयो साहि चहुआंन घर । दिए मिलान मिलान ।
गए मुचर नागौर पुर । कही षवरि मुरतान ॥
॥ छं० ७६ ॥ रू० ४७ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई का समाचार सुनकर सरदारों को बुलाकर
सिध तक शाह के पहुँचने का हाल कहना

कवित्त मुनिय षवरि प्रथिगज । कहिय जे चरन चरित मह ॥
बोलि मत्रि कयमास । बोलि चामड गुइझ गह ॥
बोलि चंद पुंडीर । बोलि पीचि प्रमग वर ॥
बोलि गज्जि गहिलीत । बोलि का कन्ह नाह नर ॥
बोलेति मव्व गामन भर । कही वन सो कहिय चर ॥
सामंन मंत भर मव्व मिलि । मिधु मुचपिय माह घर ॥
॥ छं० ७७ ॥ रू० ४८ ॥

लड़ने के लिये प्रस्तुत होने का सब का मत होना ॥

दूहा कहत मव्व सामन मनि । चहि दल मजौ ममकि ॥
मुनिव मत्रि कयमाम कहि । करहु निमान टमकि ॥
॥ छं० ७८ ॥ रू० ४९ ॥

हनी । चहुआंन । गहों । मय । जय ॥ ७० ॥ चयो । मुरतान । गारय । निमान
जल थल दू ७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
चहुआंन ॥ ७५ ॥

★ यह ७३ शीर ७३ का अंतर ० ७३ का शीर की पुस्तक में लही है
इतर में है ॥

४७ पाठान्तर- चहुआंन । घर । दीए । मिलान ॥ । श्रोर । मुरतान ।

४८ पाठान्तर- प्रथिगज । चरनि । कंमास । जुइझ । गृह । चीनि । गी ।

सब । मिलि ॥

४९ पाठान्तर- मुनि । मत्रि । कयमास । करहु । निमान ॥

युद्ध की तैयारी होना ॥

गाथा - भय टामंक निमानं । पत्तं निज ग्रेह मूर मामंतं ॥

बाजे बज्जि अनेकं । हय मंगे राज चहुआनं ॥

॥ छं० ७९ ॥ ह० ५० ॥

गुरुराम ब्राह्मण का आकर प्राशीर्वादि देना, बहुत कुछ दान कराना और वेद मंत्र से तिलक करना ॥

उंद रद्वी - श्रापे मुताम गुर राम राज । पडि पत्र मंत्र दृज योडि नाज ॥
 ग्रह नव मुदान विप्रि विद्व दीन । वेदंत विप्र अभिरेक कीन ॥ छं० ८० ॥
 चक्र महम हेम दिय विप्र दान । अस्मेर वेद त्रय माम गान ॥
 दिय दान भूरि परी मु चड । दीनी मु अथ्य जित ह्यथ मडि ॥ छं० ८१ ॥
 जै जया जीह जपी मु आन । मगळ मुवाच चव पडिह गान ॥
 आमिपय वयन चहुआन गान । गुरु राम जज्जि आहुन प्रात ॥ छं० ८२ ॥
 दिय तिलक पत्र पडि वेद मथ । आरोपि कठ हन मंत्र जंत्र ॥
 कज दरम वाम चक्रोर आनि । कथान जानि जंयै मु वानि ॥ छं० ८३ ॥
 पजन निरड किम दरनि दिम्म । आदरम शैमिप किम अमिररम्म ॥
 चिच्यो मु चिन जपि उमर का । मगरी मु हन हर नेजवत ॥ छं० ८४ ॥
 पित्री मु जानि जोवन पून । पच्यो कि मनो नृप रथ्य मूर ॥

भगवान का स्मरण कर यात्रा करना ॥

माकनि मध्य मज्जी मु वानि । धरि और हेम नृर अग आनि ॥ छं० ८५ ॥
 चपै मु चह्यो नृर वाम पान । जै जया मह आयाम भास ॥
 चडि च्यो वधि आवद्ध राज । मामत मध्य चडे मूछ गान ॥ छं० ८६ ॥
 नीमान ताम वज्जे मु घाव । आकाम धरा कुट्टे निहाव ॥
 संबन्त तीम अरु पंच माध । तेरस्म सेन मुभ जोग साध ॥ छं० ८७ ॥ *

५० पाठान्तर - पन । गड । मामना । चहुआन ॥

★ इस ५१ श्लोक के छंद ८० के दूसरे पद में इस दुपेन और नित्रयेसा विषयक महाबुद्धि की चहार्दी का मुकारित्वा करने को जान का मनन्द अर्थात् पुष्पोराज का नीमरा शाक ११३० माघशुक्ल १३ शुभ योग कहा है । वह जैसे कि अब तक इस महाकाव्य में आए सब मनन्द अर्थात् प्रचलित विरुपी संबन् से आदिबर्ब के श्लोक ३५५ में कहे अंतर वर्ष ९० । ९१ के जोडने में दि. जाते हैं वैसे मिक जाना है- ११३५+९० । ९१-१२२५ । २६ ॥

५१ पाठान्तर - राम । दान ॥ ८० ॥ दान अलेष । सांभ गान । दांन । स चंड । अथ । हृष । जंय । आन । पडि । गान । प्राशिष । बेंन । बहुवान । राम । जजि । प्रांन । ८२ ॥ हनमन । वाम । चक्रोर । जानि । जानि । वानि । दरस्त ।

हुसैन का भी अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज से घ्रा मिलना ॥
मजि सथ्य चढ्यौ हुस्सेन सेन । बंधे स तोन भर मीर ऐन ॥
हुस्सेन सथ्य मिलि सहस एक । उर सामि धंम बंधें सुतेक ॥ छं० ८८ ॥
प्रथिराज आइ किन्नी सलाम । आदर अदब्ब दिय राज ताम ॥
मिलि चलयौ सेन भर तेजवंत । बज्जे सुबज्ज जय हेमवंत ॥ छं० ८९ ॥
बस कोस पर डेरा बेना ॥

दम कोस जाइ दिन्नी मेलान । डेरा मुदीन जल मुभ्भ थान ॥
॥ छं० ९० ॥ ६० ५१ ॥

दूतों का सुलतान को पृथ्वीराज के चढ़ आने का समाचार देना ॥
दूहा देखि चरित नृप साह चर । गए पाम मुरतान ॥
कहैं मैं मंमुष रजै । चढि आयौ चहुआंन ॥ छं० ९१ ॥ ६० ५२ ॥
सुलतान का चढ़ाई के लिये धूमधाम से चलना ॥
दूहा सुनि चरित माहाव चर । दिय निरघोष निशान ॥
चढ्यौ मेन मज्जे सिलह । करिब फौज मुरतान ॥ छं० ९२ ॥ ६० ५३ ॥
सुलतान की चढ़ाई का वर्णन ॥

छंद मोतीदाम—चढ्यौ मुरतान सुमज्जिय फौजावजे बर वज्जत वीर अमोजा ॥
भयो गज घुंमर घंट निघोर । मनौ झुकि क्रुध भयी मुर रोर ॥ छं० ९३ ॥
गजें गज मद्र मनौ घन भद्र । चिकार फिकार भए मुर रुद्र ॥
तुरग मत्रीम कडक्क लगांम । खरक्किय पप्पर तोन मुतान ॥ छं० ९४ ॥ *
चमकन तेज सनाह सनाह । करं घर पद्धर राह विराह ॥
झलक्कन टोप मुटोप उतंग । मनौ रज जोति उद्योत बिहग ॥ छं० ९५ ॥
दमकन तेज कमान कमान । चितं चित मीर रही मइमान ॥
भले भर सांड्य धंम सगति । लपे घर जीयत जत्तिन गति ॥ छं० ९६ ॥

हरम । दिम । दिषि । परम । चित ॥ ८४ ॥ वंच्यौ मुंचि । मनौ । रथ । हावन ।
सब । मजो । वानी । ओर । आनि ॥ ८५ ॥ स चढ्यौ । मबद । आउद्ध । मव ।
सुछ ॥ ८६ ॥ नीसांन ताम । बजै स्वेन ॥ ८७ ॥ मजि मथ मंपन हुमेन । सेन ।
सतोन । एन हुमेन । मय मामि । बंधें ॥ ८८ ॥ प्रथीगज । आय । कीनी सलाम ।
जदब ताम । बजे । बज्जय ॥ ८९ ॥ कीनी मिलान । मुभ । थान । थानं ॥ ९० ॥

५२ पाठान्तर—मुरतान । कहै । चहुआंन ॥

५३ पाठान्तर—चरित । चरित । माहाव । निमान । मजे । मज्जे ।
मुरतान ॥

★ यह पद Coufield Mss. में नहीं है ।

५४ पाठान्तर—मोत दांम । मुरतान । जुमज्जिब । वजन । घंटन । कंब ॥ ९३ ॥
गजें । मनौ । भद । रद्द । रुद । सकड कड । परकिय । पपर । सतांम ॥ ९४ ॥

नमै निज सांइय पंच बषत्त । सिपारह तीस पढें दिन रत ॥
 नमै निज सेप धरंम मरंम । क्रमै रह रीति कुरान करंम ॥छं०९७॥
 दिढंबर बाचरु काछह मीर । तरुनिय एक रतें बर बीर ॥
 सबदय वेध करै तम तांह । भमतिय पंषि हने छित छांह ॥छं०९८॥
 धरै इक एक अनेक सुवान ! झलक्कत मुड तवल्लह मान ॥
 धरें घर नाहिय म्याहिय सीम । मिरक्कहि बंवर धुमर दीम ॥छं०९९॥★
 अनेक सुवान अनेकह रंग । चढे मत्र मीरह सेन अभंग ॥
 अनेक सुवान अनेकय वन । ममुडिञ्ज न हीय ममुडिञ्जन क्रन ॥छं०१००॥
 पय भर अग अनेक मुभार । अनेक मुजानि अनेक मुतार ॥
 मिरकिय मुंडिय मुड मुअद्ध । ज्वद्विय उट्टिय जानि अनद्ध ॥छं०१०१॥
 कर निय झट्टिय रग अनेक । फुरक्कहि झपटि झपह तेग ॥
 चले धर वान मुमद्विय दिट्ट । अगे हथ नारि अभूळ गरिट्ट ॥छं०१०२॥
 अगे किय मद्द गरक्क मुभार । मनो पय चळल पडवत लार ॥
 ढळें मिर ढाल अनेक मृंग । परे फरहारि उभारिय अग ॥छं०१०३॥
 बरंनह अंय्य मंय्य ज्व । मनो पट रिनि अनगह स्व ॥
 भट्टे पुर उवर अवर रेत । जळ रळ पट्टरि मकमि सेन ॥

॥ छं० १०० ॥ ह ५४ ॥

सारुंड अचलपुर में मुलतान का डेरा डालना ॥

दूहा जध्य नध्य मकमि मयन । उच थान जळ थान ॥

दिय सारुडप अचल पुर । किय मुकाम मुरनावन ॥छं० १०६॥ह ५५॥

कैमास का यह समाचार घडी रात रहे पृथ्वीराज को देना ॥

दूहा घरी मुनव निनि सेप चर । आय पाम चहुआन ॥

गये पाम कैमाम कपि । चरिन मय्य मुरतान ॥छं० १०६ ॥ ह ५६॥

★ यह तुक १०० मो० की प्रान म नहीं है ॥ करे । झलकत मनो रजि ॥ ९५ ॥
 कमान र । मान । लये । जनिन । गति ॥ ५६ ॥ उचत । पडें । रत । नमै । जिन ।
 कुरान । तरुनीय । रतें । सबदय । बर । लार । भमतिय । धरें । सुवान । झलकत
 तवल्लह । मान । धरें इक । धरनाहीय । सीम । कहि । धुंघर ॥ ९९ ॥ वान । अनेक
 सु । सेनय । मीर । वान । व्व । ममुडि । १०० ॥ हतार । जानि ॥ १०१ ॥
 डट्टिय । फरक्कहि । झपय । वान । सधिय । १०२ ॥ मद । मरक्क । मनो ।
 पग । चळल । पडन । ढळें ॥ १०३ ॥ मनो । रिनि । अनंगए । डवरे । रेणु । सेनु
 ॥ १०४ ॥

५५ पाठान्तर— जय । थान । जलथान । सारुडे । मुकाम । मुरतान ।

५६ पाठान्तर— निनि । सेवचर । आइ । चहुवान । सब । मुरतान ॥

अरिल्ल जगि मंत्री कैमास महा भर । गठिय चित्त चरित्त कहिय बर ॥
जगिय सथ्थ मज्ज निस सेनं । गयो राज यह सज्जि दुगेनं ॥

॥ छ० १०७ ॥ सू० ५७ ॥

पृथ्वीराज का उसी समय चढ़ाई करने को तैयार होना ॥
गाथा—जगिय नृप चहुवान । कहियं कैमाम मज्जि मुरतानं ॥
वज्जि निहाय निसान । मज्जि बाध सेन मुरतान ॥

॥ छ० १०८ ॥ सू० ५८ ॥

चढ़ाई की तैयारी. भगवत् स्मरण तथा दानदेना ॥

छंद त्रिभगी मयनं मद्धान, क्रिय मज्जान, वज्जि निहान, नीमानं ।
बध्धे मिलहान निज निज यान, पण्णरि पान, अमगान ॥
निज किय न न्हान दीन मुदान सब समान हमान ।
मने त्रिपान नदी मान, भ्राणिपान, जपान ॥ छ० १०९ ॥
तुळ्ही नित मज्जि चक्र तन धरि हरिचरना अरि जल मार ।
गिलकी मन कारि, क्राण उर धरि साज सब करि जमार ॥
मोज्ज हट्ट धरि राग लव परि, माज्ज यन ॥२ करि डार ।
मगे हट्ट मज्ज मारान ॥ ३ ॥ अपार आर मृग राज ॥ छ० ११० ॥
हिट्ट वडा ॥ ४ ॥ मज्ज मज्ज मज्ज मज्ज मज्ज ॥
नाम जगत्त ॥ ५ ॥ मज्ज मज्ज मज्ज मज्ज मज्ज ॥
पट्टि मज्ज मज्ज मज्ज मज्ज मज्ज ॥
चहुट्टा नृपान मग नात पै रमान अमान ॥ छ० १११ ॥
चिर्न चिना चिन्त मुमान जग उमान उमान ॥

॥ छ० ११२ ॥ सू० ५९ ॥

पृथ्वीराज का सवार होना ॥

कवित्त चित्त ईम चहुवान । चहुट्टी ह्य मज्जि मुद्रावध्र ॥
बोलि मृग सामन । वान मज्ज मुवान जुध ॥

- ५७ पाठान्तर गठिय । गयो । कहीय । ननं । मज्जि ।
- ५८ पाठान्तर चहुवान । मुदान । मज्जी कै बोध मत्त मुरतान । मज्जि कै बाध सेन मुरतान । मज्जि कै बाध ।
- ५९ पाठान्तर मवान । कीय । मज्जानं । वज्जि । यान पपरे । अम । पान । संहानं । ईमानं । इमान । त्रिपान । निजपान ॥ १०९ ॥ तुळ्ही मिर मज्जि चक्र तनं अरि कर जुध अंजुरि हरि चरन । मज्ज । मिव । जुमार । मोज्ज । हट्टं । बगत्तरि । कर्म डार । है । पषर । मुषराज ॥ ११० ॥ मज्जं । उतिव । कसेतंम । सतंसं । चहुट्टी । चहुट्टी । पैवापनं ॥ १११ ॥ जग । मानं । इमानं ॥ ११२ ॥

जय हर ! जपे राज । चल्थी थप्परि है कंधं ॥
जै मन्निय ६ राव । करी कसि मुष ऊरद्धं ॥
पुंदंत घरा पुर पुर विद्धर । करिय लोह दंतै क्रमक ॥
नाचंत तेन परव मुखल । धरनि ध्यंम धुज्जिय धमकि ॥

॥ छं० ११३ ॥ ६० ६० ॥

पृथ्वीराज का मोरहसन के डेरे में आना, मोरहसन का अपने साथियों
के साथ तैयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ॥

कविन गया राज चहुआन । माह डेरा हुस्मेनह ॥
मुनी पवरि वर वीर । गज्जि आयी मथ्यै सह ॥
करि गोमल्ल पवित्र । होइ चिने रहमानं ॥
वधि मिळह हे मणि । वीर वज्ज नीमान ॥
चहि वाह गज्जि माथय मयन । मीन नम्मि सलाम किय ॥
देपे सुवीर विरम मुमन । वर मनमान अतिन मिय ॥

॥ छं० ११४ ॥ ६० ६१ ॥

पृथ्वीराज और मोरहसन के रिश्तेदार चलने का वर्णन ॥

उद नीना माळी चहि चल्थी राव मन माज वीर राज वज्जण ॥
नह निमान मजे धन मोन काव गज्जण ॥
फौजे उरधं वीर उरधी सुर जक्की जभरं ॥
विरदंत वीर जल धीर आय भीर धर धर ॥ छं० ११५ ॥
असमन हाम गाठ आम । नव भाम अज्जर ॥
लीक मुवच्छ मूठ कच्छ । राज मच्छ धीठर ॥
मजि पान पथ्य दन अथ्य । राज मथ्य ममिल ॥
चल्लै मयल्ल डाल डल्ल, गज्ज मल्लं झुड्डिय ॥ छं० ११६ ॥
घंटा मुघोर भेरि गोर, तय तोर मद्दयं ॥
सपं मवटं नीर नह, मूर वद्द वद्दयं ॥
घर पाड धक्की है पुरक्की, गंग हक्की पप्परं ॥
उड्डी सुरेन मुदि गेन, आइ मेनं मद्धरं ॥ छं० ११७ ॥

६० पाठान्तर है । मजि । मूठ मन्वान । वान । मवान । जुद्ध । जै । ह्य ।
मन्नी । उरधं । करिय । दंत लोहे । पयव । घरनि । नाम । धुजिय ॥

६१ पाठान्तर - चहुआन । हुस्मेनह । सजि । मने । चित्थी । बजे । निमानं ।
मज । मथी । नापि । सलाम । मनमान । अतिन ।

६२ पाठान्तर - बजण । नदे । निमानं । गजण । हलकी । बकी । जकी ।
विरदंत । धुड्ड । साई । धंधरं ॥ ११५ ॥ साई । उव । अजरं । मुबछं । कछं । गछं ।

गिद्धी सुतथ्यं चली सथ्यं, सीस रथ्यं अच्छरं ।
निरषं सुवीरं निज्ज नीरं, अस्स हीरं मच्छरं ॥
पुट्टे समीरं बहि सधीरं, साइ भीरं मंभरं ॥
सेनं सहस्सं तेय दस्सं, झुझ्ज जस्स धिद्धरं ॥ छं० ११८ ॥
नारद् नद् बीर बद्, गोम सहं तद्दयं ।
सामंन मूर चढे नूर जुद्ध भूरं जद्दयं ॥
मथ्यं मृगार मंम हारं, ना उचार जंकर ।
थोनं मभष्पी भ् चरष्पी, वैनरष्पी वेचरं ॥

॥ छं० ११९ ॥ म्० ६२ ॥

मुलतान के चरों का मुलतान को जाकर ममाचार देना कि शत्रु
की सेना एक योजन पर आ गई ॥

इहा चरित लण्य माहाव चर । गण पाम सुरतान ॥
मजी सेन मामन पति । आयो जोजन थान ॥

॥ छं० १२० ॥ म्० ६३ ॥

मुलतान की सेना की तैयारी का वर्णन ॥

छंद विअपरि मुनि चरिण माहाव ताम चरावोळि मीर उमराव महा भरा,
दिय निग्घान घावनीमान । चण्यी सेन मज्जे मध्वान ॥ छं० १२० ॥
वाजिअ वीर अनेक पुवज्जे । धर पडिहाय सुगोमह गज्जे ॥
उग्यो मूर चढ्यो सुरतान । वज्जि निहाव नाळि गिगि वान ॥ छं० १२१ ॥
फौज सुपच सजी साहाव । उलट्यो सेन समुद्ध आव ॥
दच्छिन दिमा मज्जि ननार । दिम बाई पुरमान मुधार ॥ छं० १२२ ॥
हाजिय रागिय गाजिय थान । मनपुष सेन मजी सुरतान ॥
मीर जमांम थान कमान । महवति मीर पुट्टि मजि ताम । छं० १२३ ॥

घिठर । वाना । पथ । अथ । मथ । चढ । मवल । ढल । गज । मल । झस्य
॥ ११६ ॥ मदय । बढय । धकी । पुरकी । गहकी । पण्यर । उडी । मदेन । आर ।
सघर ॥ ११७ ॥ मत्तथ । मथ । रथ । अछर । निग्घयं । निग्घे । निज । अम ।
मछर । पट्टे । माम । महस । दम । झुझ । जम । धिद्धर ॥ ११८ ॥ नारद । तदय ।
तद्दय । युध । जदय । मथं । गांगारं । मगार । जंकरं । मभष्पी । चरपी । वैनरपी
॥ ११९ ॥

६३ पाठान्तर—★ म० १६६७ की मे इसका यह पाठ है—मिलि मूचर वेचर
सक्ति । लय । सुरतान । थान ॥

६४ पाठान्तर—उमदा । निघात । चढपी । मजे ॥ १२० ॥ बजे । गजे ।
कण्यी । बजिअ ॥ १२१ ॥ समुद्ध कि । दधिन । सजि । पुरतान । सघारं ॥ १२२ ॥

षान मरुस्तम हस्तम षानं । मद्धि फौज रज्जे सुरतानं ॥
 सहते वीस वीस मजि फौजं । तुंवा पंच रचे अहहौजं ॥ छ० १२४ ॥
 चिहुपष्वां गज घूमहि डमर । हृथ्थ नारि गिर वान असवर ॥
 रिन रन तूर घोर नीमान । भेरी शृग गरुड थन थान ॥ छ० १२५ ॥
 नपफेरी त्रिय विघ्न सुर डड । जोमघ पट्ट वजे घन दड ॥
 आवत झुझ डहक्क डहक्किय । हैवर हीम दरक्क गहक्किय ॥ छ० १२६ ॥
 गज चिक्कार फिक्कार सबद् । तदुल तवल मृदंग रबद् ॥
 जगी वीर गुडीर अनेक । बाजित्र अनेक गने को वेग ॥ छ० १२७ ॥
 फौज पच माजी माहाव । मीर अनेक गने को नाव ॥
 देम देम मिलि भाष अनन । त्रयायन नाम अनेक गननं ॥ छ० १२८ ॥
 फौज पच मजि चय्यौ जु माह । गज्जे धरनि गेन पुर गाह ॥
 सारु है सज्यो दिमि वाम । पहर महर उन्निम ठाम ॥
 ॥ छ० १२९ ॥ ६० ६४ ॥

सारेडे की बाइं ओर मजकर मुलतान का खड़ा होना ॥

दूहा उन्निम पथर पृट्टि जल । लयी जीय मुथान ॥
 सारु डो दिमि वाम दे । गजि राहो सुरतान ॥ छ० १३० ॥ ६० ६५ ॥
 उट्टि रेन चवर अपर । दिप्या सेन चट्टान ॥
 गुनिगत्रन बाजित्र बहक । गजे नीम असमान ॥ छ० १३१ ॥ ६० ६६ ॥

मुलतान की सेना देखकर पृथ्वीराज का मीर हुसैन की ओर देखना,
 हुसैन का अपने सरदारों के साथ तैयार होकर
 पृथ्वीराज को सलाम करना ॥

कवित्त देखि सेन मुरतन । नेन चट्टान महाभर ॥
 मज्जि फौज हुस्सेन । सेन सब मीर बीर वर ॥
 रूमी षा कमाम । वेग हुस्सेन समथं ॥

हाजीय । राजीय । गाजीय । सुरतान । जमाम । वान । कमान । पुठि ॥ १२३ ॥
 मघि । रजे । नेईम । टवा ॥ १२४ ॥ चिहु । पा । धुंमर । हथ । वान । असवरं ।
 रिनतूर । नीमान । नफेरी । त्रिविधि । पट । आवध । झुझ । डहक्क । डहक्किय ।
 ह्य । गहक्किय ॥ १२६ ॥ चिक्कार । फिक्कार । सबद । रबद । गडीर । अनंत ॥
 १२७ ॥ सजी । मीर अनेक अनेक सनाब । चाष अनेक । नाम करे सुविवकं
 ॥ १२८ ॥ सु । यु । गजे सज्यो । पहर । सघर । ठाम ॥ १२९ ॥

६५ पाठान्तर—उत्तम थलभर । लपी । घान । वाम । सुरतान ॥

६६ पाठान्तर—उडि । मंवर अबर । दिपी । सुने । असमान ॥

कासिमम षान करीम षां । षोजा कासिम काज सुध ॥

मिल है सुसब्ब लिय समथ सजि । करि सलांम क्रिय सीसउध ॥

॥ छं० १३२ ॥ ह० ६७ ॥

मीर हुसैन का कहना कि आपने हमारे लिये कष्ट उठाया है

तो हमारा सिर भी आपके लिये तैयार है, देखिए कैसे

लड़ाई लड़ता हूं । पृथ्वीराज का कहना कि इसमें

आश्चर्य क्या है मैं भी आज तुम्हें गजनी

का सुलतान बनाता हूं ॥

कविता कहै माह हस्मेन । मुनी चहुआन जइल वत ॥

आज भीम तुम कज्ज । सेन साहाब पडौ पत ॥

मो कज्जै माहस्म । करिग प्रथिराज मरन ध्रम ॥

हौं उज उम् अज्ज । करौ राजन अकथ क्रम ॥

जपै न राज प्रथीराज तव । कहा आचज्ज जपौ नमत ॥

अपौं मु छत्र गज्जन पुरह । गति सेन साहाब गट ॥

॥ छं० १३३ ॥ ह० ६८ ॥

मीर हुसैन का मलाम करके बाई ओर सेना मजना,

पृथ्वीराज रु अपने मरदारो को आज्ञा देना

कि तुम लोग मीरहुसैन को मराना करो

ओर मामतो का आज्ञापालन करना ॥

कविता करि मलाम हस्मेन । अनी बधी दिशि माह ॥

मजरा वध कर । मह मज्ज थन याह ॥

बोलि राज प्रथिराज । वीर जइव जामानी ॥

महन मोह परिहार । मूर गुज्जर रामानी ॥

तीकम बोलि तारन भर । बगारीय देवह मुअन ॥

मंडलीक बोलि परमग मुअ । जीहराज जपै सुगुन ॥

॥ छं० १३४ ॥ ह० ६९ ॥

६७ पाठान्तर —मुरतान नेन । चहुवान । मजि । हुमेन । कामम । हुमेन ।
ममथ । दपनी । करी । अकथ । कामम पान । षोजा । काश्यप । सब । मय
सजि । क्रिय मलाम । करि सीम ॥

६८ पाठान्तर —हुसेन । मुन । कन । पडो । कज्जै । माहम । प्रथीराज ।
ध्रमं । हौं उज ऊम् अज्ज । करौ । राजन । अकथं । अकथ्य । क्रम । अप्पों ॥

६९ पाठान्तर —क्रिय । मलाम हुसेन । मजे । प्रथीराज । जामानी । गुज्जर ।
रामानी । तीकम । मगुन ॥

कवित्त - चवं राज चहुआन । तुम सामंत सूर बर ॥

बर कुलीन कुल लज्ज । जुद्ध अन भग अंग भर ॥

तुम सहाइ हुस्सेन । सेन मज्जी दिषि बाई ॥

तुम अनंत बल तेज । देव बर कंठ सुहाई ॥

माहाब दीन सुरतान मी । भिरी चाल बधव विनसि ॥

मने मुचले निज सेन सजि । नाइ मीम रजि वीर रम ॥

॥ छं० १३५ ॥ सू० ७० ॥

कैमास आदि सामंतों का चार सहस्र सेना के साथ पृथ्वीराज
के दक्षिण ओर सेना सजना ॥

कवित्त दिमि दच्छिन कैमाम । गड चामड महाभर ॥

चद्रसेन पुंडीर । मिघ पम्मार अड्ड मर ॥

गरुअभाव गहिलीत । निर्भे पनि धार भार घन ॥

नंवर राड परिहार । पित्त अनमग मोट मन ॥

गाहम्म चार मज्जे मयन । अनी बधि दच्छिन नृपति ॥

रत्तामि वस्व रने मुभर । जै मनी चहुआन चित्त ॥

॥ छं० १३६ ॥ सू० ७१ ॥

पृथ्वीराज के आगे की ओर गोइन्दराय आदि सरदारों का
पांच सहस्र सेना के साथ खड़ होना ॥

कवित्त मद्धि अनी प्रथिराज । अग मज्जे भर मामत ॥

गरुअ राइ गोइद । राज मने माहम मत ॥

देव राइ बग्गारि । कन्ह चहुआन नाह नर ॥

पीनी राइ प्रमग । वीर कन कूवड गुजर ॥

मामत मूर विकसे मुमत । अरि दल तिल मन्त्र गनिय ॥

॥ छं० १३७ ॥ सू० ७२ ॥

दोनो सेनाओं का सामना होना और निशान बज उठना ॥

दृष्टा अनी बधि प्रथिराज नृप । अनी पत्त सुरतान ॥

मिली सेन दूनो निजरि । गज्जे गोम निगान ॥

॥ छं० १३८ ॥ सू० ७३ ॥

७० पाठान्तर - चहुआन । मम । लज्ज । मज्जे । रम । मनी । बाई ।
सुरतान । भिरी । बधी । विरति । नः । मान ॥

७१ पाठान्तर - दच्छिन । दायित । रम । पामार । लज्ज । गहिलीत । तीअर ।
गम । परिार । पित्त । माहउत । मज्जे । दायित । रत्ताम । रत्त । चहुआन ॥

७२ पाठान्तर - मय । प्रथिराज । अग मज्जे । मामत । रात । चंद जहुआन ।
वनकु । मथह । अनीय । समन । मत्तट्टि ॥

७३ पाठान्तर—बधी । प्रथीराज । सुरतान । दोनु । गजे । निसान ॥

हुसेन और तातार खां की सेनाओं की लड़ाई होना अंत की तातार खां की फौज का भागना ॥

छंद भुजंगी -जमे गोम नीमानं इवान सेन । धमकै धरा गान गज्जे मुगेंनं ॥
 झरं पप्पर हार डालें डलक्की । घन सेन संनाह दूनो चमक्की ॥छ०१३९॥
 मिळे मीर धीरं सुदिट्टं दुआनं । पळं एक जीव उभै सिध जानं ॥
 दिमा बाश्यं माद हुस्सेन अंनी । तिनं मडझ सामंनं मामंत मंनी ॥छ०१४०॥
 भरं जाम जदों मुमारू महनं । पळं गुज्जरं राम मंनं न मनं ॥
 सजे येन अंनी महस्सं चियार । गुहं जुझ भारी सुधारी करारं ॥छ०१४१॥
 सनंमुप तनार बीसं महस्सं । घटा बंधि भदो बकै वीर रस्सं ॥
 उडी सेन रेनं रुक्थी रथ्य मूरं । बकै दीन दीनं भर आप दूरं ॥ छ०१४२॥
 घनं वान कमान डडुं ऋि जगं । मनो जोति पद्योन प्रस्तू निहंगं ॥
 डलक्की मिठी डाल डालं दुपूरं । महानद् सद्दं मनी सिध पूरं ॥छ०१४३॥
 बजै थार थारं मुझारं करारं । परे गज्ज मुंडं ठरे मूर भारं ॥
 हकै हक वज्जी मजगी मकनी । परे रुड मुड परं थोन रनी ॥छ०१४४॥
 मिळें पान तनार हुसेन सेन । बकै उंच वाच मिर मज्जि सेन ॥
 हयं छंडि काम थयं मडि कन्ने । मयं संमुनं दूय मूर ममन्ने ॥ छ० १४५ ॥
 महस्सं थयं छंडि हुसेन मथ्यं । मयं नीन नाटै विय टिट वथ्य ॥
 मयं पान तनार मन नट्या । थय छंडि काम मन मरि गरम ॥छ०॥१४६॥
 भई फौज नीर दुध जुद्ध वीर । दिपे नम्मठ निज्ज माभिन वीर ॥
 उभै डारि ओडं न गज्जे गुमान। जयी दीन मीर मुनम मुनपी कमान।छ०१४७॥
 बजै नद् नीमान भेरी भयद । गजै श्रु ग रीम मनी मेघ नद् ॥
 उभै हथ्य पोळे मुपग करार । परे मुझझर मुध्भर फूल धार ॥छ०॥१४८॥

७४ पाठान्तर—नीमान । इवान । धमकै । गजे । पपर । डालें । डलकी ।
 चमकी । १३९ । म । दिठ । हुसन । अमी । मझ ॥ १४० ॥ जाम । गुजर ।
 राम । मंने । नदमं । जुझ ॥ १४१ ॥ मनुंमुप । महस । बकै । रम । रथ । बकें ॥
 १४० ॥ वान । कमान । उडै । मनो । ज्योति । डलकी । मनो । परे । गज । ठरे ।
 हकें । हक । वज्जी । मजगी । मकनी । परे । थोन रनी ॥ १४४ ॥ मिळें । पान ।
 ननार । हुसेन । बकै । मरि । दूध । मूर । मनं ॥ १४५ ॥ महसं हुसेन । मथ ।
 तथं । पान । महस । मम ॥ १४६ ॥ दुयं । मुद्ध । दिपे । निम्मळ । मामित ।
 उंढं । गजे । जयी । कमानं ॥ १४७ ॥ नद । नीमानं । गजें । मनो । नद । हथ ।
 परे । झरं । मुभर ॥ १४८ ॥ पवान । मनो । बन । झरें ॥ १४९ ॥ ठरे । मनो ।
 पावक । हुसेन । पानं । जुडं । डट । हथं । १५० ॥ गुटै । रगि । थयं । सुनी

उभै आम जीवं नसा मूर छुट्टी । भरी काल मवान आयं सुघट्टी ॥
 कगे अप्प ईसं दुईसं दुहाई । मनी वन्न झइअं गजं महराई ॥छं॥१४९॥
 ढरं उत्तमंगं उडै थोन पूरं । मनी काल पावकक झालं कळरं ॥
 मिले घाइ हस्सेन तत्तार पानं । जुटे डट्ट ह्थ्य उभै काल जान ॥छं०१५०॥
 तुटं आवधं मावधं लगि व्थ्यं । मुनी कन्न कथ्थन्न दिठ्ठी अकथ्थं ॥
 जमं दठ्ठ प्राहार छेदं छुल्लिका । उरा पार फुट्टे हवकके क्रमका ॥छं०१५१॥
 कलेवार पेतं ढरं दूअचेतं ॥ उभै मूर झइअं उभै माहि हेतं ॥
 भिरं वान रूमिय पानं दकेलं । परं पाइ साई हकं मेन पेल् ॥छं०१५२॥
 पगे पंड पंडं निजं मामि अगै । न को हारि मनै न को झअ भगै ॥
 हकं जाम जहों मृत मिध वीरं । घरं आवधं आवधं हारि धीरं ॥छं०१५३॥
 भगी पान तत्तार अनी विहालं । भिरी माहि फौजं टरी गज्जडालं ॥
 ॥ छं० १५४ ॥ ६० ७४ ॥

इया सहस पंच रन मीर परि । साथ मुपान ततार ॥
 परे दुमे - मुनीन मै । मै दो हिदू मार ॥ छं० १५५ ॥ ६० ७५ ॥
 ग मा नंचिय तीम कमध । करि झोगी पान ततार ॥
 दिपिय रनमुर वद् । भय रमं अद्भुत भयानं ॥ छं०१५६॥ ६० ७६ ॥
 भगिय अनी पान ततार । चपिय जद्व महा अमवारं ।
 वज्जिय वर नीमान । मज्जिय जुद्ध हिदू मवान ॥
 ॥ छं० १५७ ॥ ६० ७७ ॥

खुगमान खां का आगे बढ़कर लड़ना ॥

उः वोटक मजि संमृप प पुग्मान दल । जग डधर वंवर दण्ड डलं ॥
 वजि भेरि नकेरि भयान मुर । घनन किय घुधर घट घर ॥ छं० १५८ ॥
 गजघोर निमानत घुमरय । दिग अठ्ठ धरा धर धुंपरय ॥
 मिलिवीय अनी दुअ आवधयं । भरबछि उभै पल मावधाय ॥ छं० १५९ ॥
 झर आवध आवध झाक धरं । कटि मडल पंडल हारि ढरं ॥
 धरि पेलहि सेलहि केम कसं । रम होइ भयानक रुद्र रस ॥ छं० १६० ॥
 अमि पंड विहंडति हैवरयं । गज मुंडह मुंड ढरं धरयं ॥
 धर लुट्टहि जुद्धहि रंधरय । मिलिवीय अनी दुअ आवधयं ॥ छं० १६१ ॥

कथ्य कनेन दिट्टी अकथ्य । प्र हार । उराफार । फुट्टे । हवके । क्रमका ॥ १५१ ॥
 कलेवार । ढरं । झअं । भिरे । वान । रूमिय । पान । परे । पाय । हके
 ॥ १५२ ॥ मांड । अगै । मो । जाम । जहों । ढरे ॥ १५३ ॥ विहालं । मिली ।
 गज ॥ १५४ ॥

७५ पाठान्तर दुमेन . मै । दो । दोइ । हिदू ॥

७६ पाठान्तर -नचीय . कमध । दिपिय । वद । रस अद्भुत । भयानं ।

झरयं फिर गिद्धय रोर रुलं । धर श्रोन प्रवाहति पूर चलं ॥
 करि डक्कह डक्कति बीर नचै।सिर माल सु ईसर आनि सचै॥छं०१६२॥
 बर बीर भरे भर अच्छरियं । सुर रोर सकत्तिय मच्छरियं ॥
 हनि हक्कहि षां पुरसान रिनां।द्रिग दिष्षिय चावड राय तिनं॥छं०१६३॥
 मिलि आवध सावध दुष्भरयं । हय धाय गुरज्जत मुङ्क्षरय ॥
 क्रमि चामेड सगिय झारि झरं । जुग फुट्टिय जानु हय ममर ॥छं०१६४॥
 सम षां पुरसान सहाब परं । वहि शृंगय शृग समूर डर ॥
 दस पान हयं तज उपरयं । बदि जीह दुरी हति दुप्परयं ॥छं० १६५॥
 पग छंडिय चामेड राइ रिन । दिषि राज पुंडीर तज्यो हयनं ॥
 मिलि चपिय डारत पान धर । तत्र भगिय फौज अरुक्ष पर ॥
 ॥ छं० १६६ ॥ ६० ३८ ॥

खुरासान खां की फौज का भागकर मुलतान की फौज के
 साथ मिलना और कैमास का चढ़ाई करना ॥

दूहा भगी अनी पुरमान पा । मिलिय जाइ मुरतान ॥
 चडिय फौज कैमास तव । मज्जे मिर अममान ॥छं० ६७ ॥ ६० २९॥
 बाई और से जमान, दाहिनी और मे कैमास और
 सामने से पृथ्वीराज का चढ़ना ॥
 गाथा ओरी पा पुरमान । परिय मोर रन महमेय ॥
 बद्धिय जैतमु राज । भगिय सेन देपि मुरतान ॥छं० १६८ ॥ ६० ८०॥
 दिमि बाई जामान । दिमि दाहिनी चपिय कैमास ॥
 मनमुप चपिय माजं । जै जै जपि राइ चहुआन ॥
 ॥ छं० १६९ ॥ ६० ८१ ॥

७७ पाठान्तर भगीर । ★ अधिक पद्य उत्तर पुराणी में और प्रारंभ
 में वा है तो ही । वना । चपिय । परिय । मरिय । यज्ञ । दिग्बान ।

७८ पाठान्तर अमरावती । पुरमान । ममान । पन्नकर । पुषर । १५८
 धुमरय । अट । डी । १५९ । ते ति से हि । पत्ति नट्टे ॥ १६० ॥ मजन
 मुड्ड । १६१ ॥ पर । उर । उर । पति ॥ १६२ ॥ बीरबरे । अरिय
 मकनिय । मरिय । इन । पुरमान । दिविय । नव । १६३ ॥ जाउथ । माउ
 धुमरय । मुरान । मुजरय । चामट । जान ॥ १६४ ॥ पुरमान । माहान । मुम
 उरयं । नगी । उपम्य ॥ १६५ ॥ चावड । चामट । पुडीर । वान । भगि म
 अपुल्ल ॥ १६६ ॥

७९ पाठान्तर—पुरमान । त्राय । मुरतान । मजे अममान ॥

८० पाठान्तर—गादा । मुरमान रन । महमेय । बद्धिय । जै तस । भगी ।
 गीनी । सेन । मुरतान ॥

८१ पाठान्तर--बाई । चपिय । राय ॥

युद्ध का वर्णन ॥

छंद नाराच जय जयंति जपिय । चहं मुगज चपिय ॥
 बहंत बान वानयं । ग्रहन गोम छानय ॥ छ० १३० ॥
 करी मुफोज एकय । बहंत नाम नेकय ॥
 बहंत वीर आवध । करत वीर मावयं ॥ छ १३१ ॥
 हवकि मग मगय । बहन अग अगय ॥
 झटा पटा झमकय । करीअ रीत टक्कय ॥ छ० १३२ ॥
 ममं भर वगत्तर । हुवंत पड पटर ॥
 हरंत रुड मुडय । क्रमत जन तुडय ॥ छ० १३३ ॥
 फरं फरत फेफर । वुलंत ते डर डर ॥
 कटे सृगाः रिपयो । करत घाव घिघयो ॥ छ० १३४ ॥
 करत हक्क हक्कय । क्रमत धक्क धक्कय ॥
 चहन देत रतर । अर अरत अतर ॥ छ० १५ ॥
 भभक्कयत थोनय । बहन वेग कोनय ॥
 अरफरत गिदयो । किलक्किलत मिद्वयो ॥ छ १६ ॥
 नचत मट्टि नारिय । करत वीर नारिय ॥
 डहकि उक्क रंसुर । धम धमत भीसुर ॥ छ० १७ ॥
 फिकारियत फरिय । पल चरत रेकिय ॥
 सपूर थोन मक्कती । गुर सुरग हक्कती ॥ छ० १३८ ॥
 किल मुकठ पामय । मनन मनि तामय ॥
 कटे सुगज्ज कधरं । विहड षंड पडर ॥ छ० १३९ ॥
 करंत गज्ज चिक्करं । फिरत मूर फिक्कर ॥
 किगक्किनत वाजयं । जम ग्रहन माजद ॥ छं० १८० ॥
 बहंत थोन नदिय । चलत मूर महिय ॥
 धरं गजं विकं टय । हय अनेक संठय ॥ छ० १८१ ॥
 तरं सझडं झालयं । रजंत संगि लालय ॥
 धरं परत मच्छयी । गजं सु सीस कच्छयी ॥ छ० १८२ ॥

८२ पाठान्तर छंद लघुनागन । नराच छद । बान । वनियं ॥ १३० ॥
 आरुष ॥ १७१ ॥ हवकि । झटकय । टक्यं ॥ १३१ ॥ नरं ॥ बगतं । हुवंत ॥
 १७३ ॥ फर । पाय । सिघयो ॥ १७४ ॥ धक्कय । रनदंतरं । अरुसरंत ॥ १७५ ॥
 मभकयंत । झरफरंत । किलकि । १ ६ ॥ मठि चरियं । दियत । वीर । डहकि ।
 धम ॥ १७७ ॥ फेकियं । संपूर । मक्कती । हक्कती ॥ १७८ ॥ कामयं । गज

गजं सुमुंड ग्राह्यो । सुरंजि श्रुप चाह्यो ॥
 रजंत बीर नम्मयं । भयं दपति जम्मयं ॥ छ० १८३ ॥
 पलं अनंत पकयं । कुकातर भयंकयं ॥
 सुहत सीस अंबुज । पटं पदं द्विगबुजं ॥ छ० १८४ ॥
 कच सिवार बिथ्युर । सुगधि पंथि कदुर ॥
 वहंत पूर जोरय । करूर मद् रोरयं ॥ छ० १८५ ॥
 सुनान पति गोमयं । उचत वीर सेनय ॥
 अनेक रंग चमरी । वहत जीन घमरी ॥ छ० १८६ ॥
 वही अनेक साकते । कहत चद वाकते ॥
 अनेक रथ्य अच्छर । बरत सूर मच्छर ॥ छ० १८७ ॥
 रजोद कठ सक्ती । रजत श्रोन रक्ती ॥
 हहक रत साजय । झरत जेम वाजय★ ॥
 ॥ छ० १८८ ॥ स० ८२ ॥

पृथ्वीराज की सेना का बढ़ना, और मंडलीक का मारा जाना ।

कविन - वाज जेम चहुआन । शारि सेना झर मुझर ॥
 कोउ लत केलत । गज्ज ढाहे धर मुझर ॥
 डेलि अनी दम पट । झकक वाजनी शारी ॥
 मारि मीर अनभग । विघर नृ मेभर मारी ॥
 मंडलीक मूर पिउझिय मुभर । जुटे पान मु गज्जनिय ॥
 मंडलीक मीम नुट्टे विउगि । हरी पान विन चचनिय ॥
 ॥ छ० १८९ ॥ स० ८३ ॥

कविन - विना गीम मंडलीक । हरी गज्जनीय पान गुर ॥
 अवर मीर च्यालीम । जुझ ढाह भर मुझर ॥

॥ १७९ ॥ गज । विर । फि र । विनविन ॥ १८० ॥ नदीय । सदीय । घर ।
 गड । विकठय । मठय ॥ १ १ ॥ मठयो । प गेय । कटयो ॥ १८२ ॥ किगजम ।
 ग्राह्यो । श्रुजि । थय । चाह्यो । रजा भीर निम्मय ॥ १८३ ॥ सुभत शीम ।
 दिग । १८४ ॥ विथुर । कठर । कमूर ॥ १८५ ॥ गामय । वीर रोमय । जान
 समदी । १८६ ॥ रथ । अच्छर । मठर ॥ १८७ ॥ सक्ती । रक्ती । हहक । रत
 ॥ १८८ ॥ ★ यह नुक ए मो की प्रति म नही है ।

८३ पाठान्तर - चहुवान । मुझर । केउलत केलत । गज । वाजनी ढारी ।
 मारि मार । मडलीक । पिउगिय । गजनीय । मडलीक । शीम नुट्टे । विन मीम
 नीय ॥

परत सुअन पर सग । बुद हधिर नर बुद्धिय ॥
सुहय षग सब एक । वीर करि किलकि मुउट्टिय ॥
रनरे गान उत्तग तन- उद्व रोम झारन अमि ॥
गहि दन दनि धरि पुल हय । उट्टि मुनचिय वीर ह्मि ॥
॥ छ० १९० ॥ ऋ० ८४ ॥

साहाबुद्दीन की सेना का भड़कना श्रीर पथ्वीराज
की सेना का पीछा करना ।

रुवित्त - भरकि मेन साहाब । डररि भगो ह्य गय नर ॥
घरिय एक विन्ती । विरुह अट्टे अघाम तर ।
दिण्डि दिण्डि साहाब । गट चामट वीर वर ॥
चद्रमेन पृठीर । जाम जही भर मुम्भर ॥
कैमाम दिण्डि दिण्डि ममर । क्रमे क्रमे च्यारि गहन मुवचि ॥
उत्तग मुवीर अट्ट अरुमि । रन रन जावध गीट मचि ।
॥ छ० १९१ ॥ ऋ० ८५ ॥

घोर युद्ध का वर्णन ।

उत्तग विज्जुम ठा मचिय मन जावध गीट । भर तरि देन मुम्भर पीठ ॥
हक्के गुर अगार नार । धर नर परे वृद्धिय धार ॥ छ० १९२ ॥
जपे उभै दीन जु भान । जु. ज्य मन मचिय पान ॥
बह बट्ठ कट कट कै हाहावज्जे विपम आवध झाक ॥ छ० १९३ ॥
परि नर थरे उट्टु ए. तभमी उरुमि जारै नेक ॥
पट्ट पट्टी आवध मार । बाहे वीर वार वार । छ० १९४ ॥
अन्यो अन्य मदे नाम । आवध ग्रहे अपन नाम ॥
हह करे इण्ड संभारि ॥ उट्टे विरद धारी झारि ॥ छ० १९५ ॥
अदभुत्त वीर भैयान । मचिय कक विपम कृपान ॥
नर बर वरय हम रंभान । उट्टिय नेह ग्रेहनि जानि ॥ छ० १९६ ॥

८४ पाठान्तर - मडलीक । झुव डाट भर मुभर । बुद्धिय । उट्टिय । रनरे ।
उत्तग । उध उडि । हमि ॥

८५ पाठान्तर - घरीय विरुह । अडे । जाय मुहर भर । अघाम । दिषि ।
राय चामुंड । जाम । जही । मुभर । गहन । मुमीर । अड । दिन ॥

८६ पाठान्तर - छद । उशीर । मन । मड । देन । मुभर । हक्के । अगर ।
परै ॥ १९२ ॥ जुवान । बह बह कूक हक्के हाक ॥ १९३ ॥ थरे । उठि । तमि ।
मारें । षट षट्टि । बहि । १९४ ॥ मदे । नाम । ग्र । अप्यनै । ताम । हह । द्रष्ट ।
संभारि । उठे ॥ १९५ ॥ अदभुत्त । अदभुत्त । भैयान । मचि । ककम । कृपान ॥

तुट्टिय सेन पल तिष तीर । इन परि जुद्ध जुट्टिय घीर ॥
 तरै साई उप्पर भ्रत्य । सेवक उद्ध साई कित्ति ॥ छं० १९७ ॥
 चौसठि क्रम लोथि पथार । भर परि धरह लुम्भिय हार ॥
 उप्पर भिरै सामंत सूर । मत्तौ जुद्ध इन कहर ॥ छं० १९८ ॥
 ठेलै एक एकं वीर । गज्जै दीन जपै मीर ॥
 चावंड राव जहों जामि । मारु महन गूजर राम ॥ छं० १९९ ॥
 गोविंद राव विकसिय भाल । मानौ कोपियते काल ॥
 आवरि बीर च्यारौ बीर । धारै षग दोकर धीर ॥ छं० २०० ॥
 हक्कं बीर जपै बानि । जुट्टे इम केहरि जानि ॥
 चंपै मीर तुट्टे मार । नचै कमध अट्ट उझार ॥ छं० २०१ ॥
 भग्गै परै के अगिवान । बढी जैन राव चहुआन ॥
 सतै सहस लुथिय भार । परि रन मीर धीर पथार ॥

॥ छं० २०२ ॥ हं० ८६ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का शहाबुद्दीन का पीछा करना ॥

कवित्त परे मरि पथार । माह हक्कयो रा★ चावड ॥
 संमुह गोरी चपि । मनौ गज मौ गज आमड ॥
 चद्र सेन पुडीर । आइ मज्यौ दिमि वाम ॥
 क्रमि मनमुष कैमाम । हक्कि जद्व राजामं ॥
 पुडीर राइ चामड भर । गहे इन इनो मुकर ॥
 हे हन्यौ जाम जद्व उझर । मिलि चिहु चपिय पंड भर ॥

॥ छं० २०३ ॥ हं० ८७ ॥

मुस्तान का दकड़ा जना, उरुकी सेना का भगना, और पृथ्वीराज
 की विजय ॥

कवित्त— गह्यौ षचि मुस्तान । डारि अट्टौ है चामड ॥
 भगी सेन बेहाल । परे घन थान थान थड ॥

रमान । उट्टिय । जानि ॥ १९६ ॥ तुट्टिय तरै ॥ माऱ । उप्पर । ऊपर । भूत ।
 साई । क्रम ॥ १९७ ॥ लुथि । लुम्भिय । भिरै । गायन । दुनो ॥ १९८ ॥ एकं ।
 बर्ज । चावंड । जाम । गुजरा । राम ॥ १९९ ॥ गोइद राय । गोविंदराव ।
 मोइदराइ । विकसि । मानो । कोपीयते । आवरि । धारै । धारे । षग ॥ २०० ॥
 हक्कं । बानि । इम । जानि । चपे । तुट्टे । कमध ॥ २०१ ॥ भग्गै । परै । अगिवान ।
 बीतरा । चहुवान ॥ सतै । लोथिय । लुथिय ॥ २०२ ॥

८७ पाठान्तर— पथार । हक्कयो । ★ अधिक पाठ है ॥ गोरी । मनो । क्रमि
 मनमुष पुडीर । मंजि उद्व राजामं ॥ राय । राव । गहै । जाम । चपियं ॥

ग्रहन अग्र मुरतान । परे षां न्याजी गाजी ॥
मीर मान कम्मान । पन्यौ आरत्र अरि भाजी ॥
को गनै षान पीर ह अवर । महम मत्त तुट्टे मुधर ॥
नच्चै कमंध च्यालीम रम । जै लक्ष्मी चहुआन भर ॥

॥ छं० २०४ ॥ रू० ८८ ॥

दूहा -मंडलीक पीची परघी । तीरुम त्यार सुबंध ॥
राम वाम पंमार परि । नचि मामन कमंध ॥

॥ छं० २०५ ॥ रू० ८९ ॥

सूर्योदय से एक घड़ी पांच पल पर लड़ाई आरम्भ हुई और चार घड़ी
दिन रहे सुलतान पकड़ा गया, बीस हजार मीर और सात हजार
हाथी घोड़े मारे गए, हिन्दू तेरह सौ मरे, तीन कोस में
लड़ाई हुई, सुलतान को अपने डेरे में लाए ॥

कविन घरी एक पळ पंच । मूर ऊगत मज्ज्यौ जुध ॥
घरी च्यारि दिन मेष । ग्रह्यौ मुरतान गान उध ॥
महम बीम इक व्रत्र । परे रन मीर ममथ्य ॥
महम्म मत्त हैगे । समुह पंडे धर तथ्य ॥
मय नेर परे हिंदू मयन । काम तीन रन अद्र परि ॥
मुरतान गहिय चहुआन पट्ट । आयौ वज्जत वज्ज घर ॥

॥ छं० २०६ ॥ रू० ९० ॥

रणक्षेत्र में हूँढकर पृथ्वीराज का मोरहर्सेन को लाश निकलवाना ॥

दूहा पेत डडि प्रथीराज नूर । वजे जीत रन नूर ॥
पा हुंसेन रन पार पट्ट । उरारिग वर मूर ॥

॥ छं० २०७ ॥ रू० ९१ ॥

पातुरि का जीते जो हुंसेन के साथ कन्न में गड़ जाना ।

दूहा पन्यौ हुंसेन मुगात्र मुनि । चिनिय चिन इमान ॥
सजौ और हुंसेन मय । करौ प्रवेम अपान ॥

॥ छं० २०८ ॥ रू० ९२ ॥

८८ पाठान्तर - मुरतान । अरि । है । नामड । थान थान । मुरतान । मान ।
कमान । भागी पान । मु । तुट्टे । मधर । नचं । प्यी । चहुआन ॥

८९ पाठान्तर - दोहरा । राम । वाम ॥

९० पाठान्तर - उगन । महबी । मुरतान । पानि । पानं । वृज । ममर्ष ।
सहम । समूह । षडे । नथ । परे । मुरतान । चहुआन ॥

९१ पाठान्तर - प्रथीराज । उरारिग ॥

९२ पाठान्तर - इमान । सजौ । हुंसेन । करौ । अपान ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को पांच दिन आदर के साथ रखकर,
तीन बर सलाम कराके मीरहुसेन के बेटे गाजी को उसको
सौंप कर यह प्रण कराके कि अब हिन्दुओं पर न
चढ़ूंगा, छोड़ना, शाह का गाजी को लेकर
कुशल से गजनी पहुंचना ॥

कवित्त— रषि पंच दिन साहि । अदब आदर बहु किन्नी ॥
मुअ हुसेन गाजी सुपूत हथै ग्रहि दिन्नी ॥
किय सलाम तिय वार । जाहु अप्पने सुथानह ॥
मति हिद्द पर साहि । सज्जि आओ स्वथानह ॥
बैठाइ साह मुष्पासनह । लाय अप्प गाजी सुसथ ॥
मंपन जाइ गज्जन पुरह । करी पैर उद्धार अथ ॥

॥ छ० २०९ ॥ ६० ९३ ॥

अमीरों का मुलतान के जीते जागते लोटने पर बधाई देना और
कुशल पूछना ॥

दूहा और बधाई ऊमरा । करी आइ सुरतान ॥
अन्य सबन कीनी पयर । पुजिय पीर ठटान ॥

॥ छ० २१० ॥ ६० ९४ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके हुसेन पां चित्ररेखा पात्र
अधिकारे पातिमाह ग्रहन नाम नवम प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥



६३ पाठान्तर— सपुत । हयै । दिन्नी । सलाम । बेर । सजि । आयी ।
सथानह । बैठाय । मुषासनहि । लीय । मथ । जाय । गजनपुरह ॥

६४ पाठान्तर— उमरनि । समरनि । आय । सुरतान । अन्य । पुजीय ॥

उपसह्यारिणी टिप्पण

यह पर्व वा समय हिन्दुस्थान के इतिहास में हिन्दुओं की बादशाहत के तो नाश होने और मुसलमानों के स्थापित होने के मुख्य कारण को जान कराने-वाला है तथा यह वह कारण है कि जिसको सब मुसलमानी तारीखों ने जान बूझकर छिपाया है। हम ही में हम में लिखे वृत्तादि का मुसलमानी तारीखों में मिलना कठिन हो रहा है। अब यदि यह न लिख गया होता तो हमको इस समय वह ही जान होता कि जो मुसलमानी तारीखों में लिखा मिलता है। यद्यपि अब पृथ्वी-राज और हिन्दुओं का पक्षपाती कहा जा सकता है तथापि उसने मुसलमानों की भानि विपक्ष के वृत्तों को बिल्कुल छिपाया नहीं है किन्तु उनकी अपेक्षा उसने कुछ मन्त्रिस्तर लिखा है कि जिसमें से अन्य बातों का छोड़कर ऐतिहासिक अंश हम पृथक् कर सकते हैं। जिस हुसैन की वधा का यह समय है वह कौन था? इस का स्पष्ट पता मुसलमानी तारीखवाले नहीं देते हैं, किन्तु यूरोपियन विद्वानों ने उसका पता लगाने में बड़ा परिश्रम किया है। अब कि समय पुरुष का पता लगाने में इतनी कठिनता है अब अन्य योंडादि के जो सामाजिक टुकड़े भाग हैं उनका पता लगाना कितना कठिन है। इस विषय में बहुत कुछ लिखने की अपेक्षा हम डाक्टर होर्नली माहव का एक ऐसा नोट नीचे प्रकाशित करने हैं कि जिसमें हम हुसैन का पता और चंद्र का उसको मराठुद्धीन का वाधक बनाना स्पष्ट जान हो जाय। उक्त डाक्टर माहव का लिखना यह है

195. Hussena Khana (Husain Khan) appears to have been a son of the Mir Husain, who as related in Canto 8, was the primary cause of the invasions of India by Shahab ud din. Mir Husain or, as he is variously called Shah Hussain or Husain Khan, is there said to have been a cousin (bandhava) of Shahab ud-din, a distinguished warrior, living at the Shah's Court at Ghazni. The Shah had a beautiful mistress, named Chitrarekha, to the story of whom the 10th Canto is devoted. She was fifteen years old and very skilful in music, and was greatly beloved by the Shah. Husain fell in love with her and she with him. One morning the Shah sent for him and upbraided him on his conduct. But Husain continued to intrigue with Chitrarekha and was forced to leave the city. He carried off his family and property and Chitrarekha and fled to Prithiraj to Nagor. Prithiraj, after some hesitation,

welcomed him and gave him asylum. Hearing of this, Shahab-ud-din was furious and sent messengers to demand Chitrarekha from Husain; failing which, in they were to demand the expulsion of Husain from Prithiraj. Husain refused to send the woman back, and Prithiraj replied, he could not give up the man who came to him for refuge. Shahab-ud-din receiving this answer, at once prepared to invade India; Prithiraj, on his part also prepared for war. In the battle that ensued, Husain distinguished himself greatly, but lost his life. Chand and Rae succeeded in capturing the Shah, and thus the battle was decided in favour of Prithiraj. After five days the Shah was released and allowed to return to Ghazni taking Ghazi, Hussain's son with him and pledging himself no more to make war upon the Hindus. The pledge, it need hardly be said, was not kept by the Shah and the implacable hatred, which these events had created in his mind was never appeased till it was slacked in the blood of Prithiraj and the destruction of his Empire. The capture of the Shah, here related, is the first of the seven times, he is said to have become the captive of Prithiraj. The next occasion of his capture is related to in note 87; once more he is made captive, as related in the present. Canto Chitrarekha is said to have buried herself with the corpse of Husain. If the Humukhan mentioned here, is the son of the elder Husain, who was taken to Ghazni by Shahab-ud-din, he must have made his escape afterwards and returned to Prithiraj. The elder Husain is undoubtedly the same as Nasir-ud-din Husain who is repeatedly mentioned in the *Tabaqat-Nasiri* (Major Raverty's translation pp. 344, 361-364, 365). He was the older of the two sons of Malik Shahab-ud-din Muhammad, a younger brother of Sultan Baha-ud-din Sim the father of Sultan Shahab-ud-din. The elder Husain, therefore, was as Chand correctly states a cousin (bandhava) of the latter. In the *Tabaqat*, it is true, it is said that Nasir-ud-din Hussain usurped the throne of his uncle Ala-ud-din during the latter's temporary captivity at the Court of Sultan Sanjar of Khorasan, and that he was murdered

by his uncle's partisans on the latter's return from captivity (p. 364) But firstly, this story is contradicted by all other Muhammadan historians, who pass at once from Ala-ud-din to his son (see Major Raverty's foot note, p. 364) Secondly it is more probable that if there was any usurpation at all, it was made by Nasir-ud-din's Suri Baha-ud-din Sam, and Ala-ud-din Hussain, succeeded each other on the throne of Ghor; it is natural, therefore, that during Ala-ud-din's captivity the fourth brother Shihab-ud-din Muhammad, should have occupied or attempted to occupy the throne The writer of the Tabaqat must have confused father and son, as he has done also on other occasions (e g with regard to Ziya-ud-din Muhammad). Thirdly the description of Nasir-ud-din Husain's character : "he had a great passion for women and virgins, and had taken a number of the handmaids and slave girls of the Sultan's harem" (Tabaqat p. 364), agrees with Chand's story about his intrigue with Chitrarekha and has evidently a confused recollection of it There can, therefore, be little doubt that Chand gives substantially the true account of Husain's fortunes It may be added, that both the Tabaqat and other Muhammadan histories give a rather confused relation of an ancestor of this Husain (and of the Ghori royal family generally) who also bore the name of Husain or Hasan, having fled to India, and having lived some time at Delhi (see Tabaqat pp. 322, 323, 332); There is perhaps in this a confused recollection of the flight of Husain to Prithviraj related by Chand

अभी हमने इस कथा के नास्तिक तर्क दे रखे हैं पर अपने पाठकों को यह ज्ञान है कि नृ-अन्य जितने योद्धाओं के नाम इस में आये हैं उनका इस यत्ना मुसलमानी तारीखों में लगा रहे है और अन्य विद्वानों में भी उनके विषय में निश्चय कर रहे है, अतएव उनके विषय में फिर निवेदन करेंगे । अभी तो हमारा इतना ही काम है कि इस महाकाव्य को इतना जोश कर प्रकाशित करा दें कि विद्वान इतिहासवेत्ता उसे अवलोकन कर सकें, इत्यत्रम् ॥



अथ आषेटक चूक वर्णनं लिष्यते ॥

(दसवां समय)

एक वर्ष बीत गया, परन्तु शहाबुद्दीन के हृदय में
पृथ्वीराज का बैर सालता रहा ॥

दूहा वरष एक बीते कलह । रीस रषि मुरतान ॥
उर अतर अग्गी जल्ले । चित मल्ले चहुवान ॥ छ० १ ॥ ६० १ ॥

एक महीना पांच दिन गजनी में रह कर फिर हुसैन
का पृथ्वीराज के पास आप जाना ॥

दूहा मास एक दिन पच रहि । बद्धि घाइ हुमेन ★ ॥
पग लग्यौ चौहान के । राज प्रसन्निय वैन ॥ छ० २ ॥ ६० २ ॥

फिर पृथ्वीराज का आषेटक माड़ना और शहाबुद्दीन
का चूक करने को आना ॥

दूहा फिरि आषेटक मडि नृप । पट्ट वन घन ताम ॥
इत माहि माहावदी । आट मपत पाम ॥ छ० ३ ॥ ६० ३ ॥

नीतिराव क्षत्रिय का शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज
के आषेट का समाचार देना ॥

कबित नीतिराव पत्रीय । चरित ग्रह चहुआनं ॥
दिल्ली को वर भेद । लिषे कग्द मुविहान ॥
बरष उभै पट माम । करै मुविहान पलान्यौ ॥
पट्ट वन घन राज । बीर आषेटक जान्यौ ॥

१ पाठान्तर बीते । मकल । रषि । मुरतान । अंदर । अग्गी । मल्ले
चहुवान ॥

२ पाठान्तर -वाध । बद्धि । घाय । घाइ । थाव । हुमेन । लग्यौ । चौहान ।
वैन ॥ ★ यहा "हुमेन" से कवि का अभिप्राय हुमेन कथा नामक समय के चित्ररेखा
को लानेवाले हुमेन के बेटे गाजी हुमेन से कि जिसको पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को
हाथ पकडा कर गजनी भेज दिया था । (हुमेन कथा रूपक ९३) परन्तु शाह ने
गजनी पहुंच कर उसे भी कैद कर दिया था सो वह जेल में काल करके पीछे फिर
१ महिने और ५ दिन वहां रह कर पृथ्वीराज की शरण में आ गया ।

३ पाठान्तर—पट्ट । इत । दी । आय । संपने ॥

सामंत सूर सधंन को । बर वीरं तन पेलइय ॥
दैवान जुद्ध चहुआन भर । भिरि दुरजन भर ठिल्लइय ॥

॥ छ० ४ ॥ रू० ४ ॥

आषेट का अच्छा अवसर पा कर शहाबुद्दीन का भेद लेने
को दूत भेजना, दूत का ममाचार देना, शाह का
सरदारों को आज्ञा देना कि छिप कर
पृथ्वीराज पर चढ़ाई करो ॥

दूहा एक तप पग नरिद कौ । अरु★ मुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय । पट्टवन चहुवान ॥ छ० ५ ॥ रू० ५ ॥

कविन आषेटक वन तविक । उन गज्जने सपने ॥
माह जोर माहाव । दिण पुरमान निरत्ने ॥
इसम हय गय मुक्ति । राज पट्ट वन पिळ्ळे ॥
सामन न को मथ्य । जइज गुज्जर दिमि मिळ्ळे ॥
निकस्यो द्रव्य माहाव दिय । वर नागीर ग्रह धन ॥
उह घात माहि गोरी मुत्रग । करो चक कै मज्जरन ॥

॥ छ० ६ ॥ रू० ६ ॥

हाजी खां आदि का तयारी करना ॥

चौपाड आषेटक पट्ट चहुवान । कह पूत से मृष मुविहान ॥
हाजो पा गपपर मुक्ताजी । मर्यो चक महमद गाजी ॥

॥ छ० ७ ॥ रू० ७ ॥

शहाबुद्दीन का आज्ञा देना कि इस बात का भेद लो
कि कितनी सेना चौहान के साथ है क्योंकि
बिना भेद कुछ काम नहीं बनता ॥

कवित्त से बुझै सुरतान । दूत पच्छिम मुविहान ॥
आषेटक प्रथिराज । मथ्य कित्तक चहुआनं ॥

४ पाठान्तर- ग्रह । चहुवान । कगर । कोपि मु । बिहान । पलान्यो । पट्ट ।
जान्यो । मथह । मथा । कौ । को । पेलइय । दैवान । चहुआन । दुरजन । ठिल्लइय ॥

† नीतिराव पत्रिय नामक मुर्कबिर था कि जो पृथ्वीराज के यहा की खबरें
शहाबुद्दीन को दिया करता था । वाह यह कैसा देग रंपी पुरुष था ! ! !

५ पाठान्तर- को★ अधिक पाठ है ॥ सुरतान । पृथ्वीराज । पट्ट । चहुवान ॥

† यह रूपक सं० ६४७ की प्रति मे नही है ॥

६ पाठान्तर- गजने । सपने । दीए । फुरमान । पट्ट । पिळ्ळे । मथ । मुस ।
गुजर । मिले । द्रव । दी । नागीर । मजि ॥

तुम राजन निमांन । राज विव्वेक परष्यौ ॥
 तुम★स्वामी धंम दृग स्वामि । स्वामि द्रोही तन लष्यौ ॥
 जंगली नृपति जंपहु चरित । छल बल मंत सु किज्जियै ॥
 तनार षांन पुरसान षां । हिंदू भेद मुलिज्जियै ॥

॥ छं० ८ ॥ सू० ८ ॥

कवित्त भेद द्रुग भंजियै । भेद दुज्जन दल भंजै ॥
 राजभेद बंधियै । भेद देवनग्रह रंजै ॥
 मंत्र मोइ जिन भेद । भेद बिन मती न होई ॥
 भेद बंध बल सोइ । भेद देषै मत्र कोई ॥
 संग्रहो भेद चहुआन की । मुष उचार जो जपियै ॥
 तनारषान पुरषान षां । बलहन दुज्जन चंपियै ॥

॥ छं० ९ ॥ सू० ९ ॥

सब सरदारों का मत होना कि बिना धोखा दिए
 चौहानों को जीतना कठिन है ॥

कवित्त - चहुआन जम वान । येन मुक्कतें मुकुट्टै ॥
 कुट्टिउ दिष्ट जिहि फिरै । नेज अगियन दल पुट्टै ॥
 प्रबल नेज अम हेज । जुद्ध दैवान देव गति ॥
 एक लप्य लेपियै । एक लपियै लप्यन भति ॥
 इह जानि चरु विन्धो नृपति । इहै वन मुविहान की ॥
 तनार षांन निमुगन पा । पुच्छि पान पुरमान की ॥

॥ छं० १० ॥ सू० १० ॥

कवित्त पा पुरमान तनार । पान अरदास समपिय ॥
 चरु मडि मुगनान । थान चहुआन मुयपिय ॥
 हाजी था गाजी नु । वध निज वधी गण्यर ॥
 मुविहान नाहाव । माहि मोर दल पण्यर ॥

८ पाठान्तर - दुने । नृपति । नं दुने मायाव । माय पछिम मुगनान ॥
 प्रवीराज । मय । हिनक । केक । चहुआन । विवेक । परष्यौ । ★ अत्रिक पाठ है ॥
 स्वांमि । द्रव । स्वांमि । मांमे । नह । लष्यौ । तनार । पुरमान ॥

९ पाठान्तर - दृग । भांजीयै । दृजन । बरीयै । गृह । मोई । गोय । देयो ।
 चहुआन । जरीयै । तनार । पुरमान । दुजन । चरीयै ॥

१० पाठान्तर - चहुआन । जनमान । मुक्कतें । जह । लप । लेपियै । एक
 केषियै । जानि । विन्धो । इहै । विहान । तनार । निमुगन । पुच्छि । पुरसान की ॥

निज पान पान पुरसान पति । हथ साहि बल बघियै ॥
मिलि मीर मसूरति तत बिय । चह साहि अरि सघियै ॥

॥ छ० ११ ॥ रू० ११ ॥

पृथ्वीराज का बेखटके आनन्द से आषेट खेलना ॥

इहा रग रमै राजान बन । नही सक मन माहि ॥
तरु बेली घन गह बरिय । सुभि जल निरमल छाह ॥

॥ छ० १२ ॥ रू० १२ ॥

पृथ्वीराज के आषेट का वर्णन ॥

कविन मतह पच दीपीय । एण फदेन पच मी ॥
महम स्वान दम डोरि । ग्रहै पचान पच मी ॥
पच अग पचाम । करु चाव द्विमि मजे ॥
कुही बाज उत्तग । पप आघात मुवजे ॥
परगोम सिंह पजर गुहा । धनुष धनषिय धार घन ।
प्रथिराज राज मटे रवनि । आपेटक पट्ट मु बन ॥

॥ छ० १३ ॥ रू० १३ ॥

आठ हजार सेना और सरदारों के साथ शहाबुद्दीन का पट्टूबन
मे छिपकर पहुंचना ।

कविन पा ततार पुरमान । पान हाजी पा गाजी ॥
गण्यर पष्यर माह । मीर महमद वा बाजी ॥
अष्ट महस अमवार । तुग तिय अग बनादय ।
पेसकमी पतिसाह । कर पर पचन आइय ॥
मेनाह सज्जि अंदर मिलइ । नह पिपै जामे रंचह ॥
करि चक आइ पट्टू बनह । प्रथीराज चहुआन जहै ॥

॥ छ० १४ ॥ रू० १४ ॥

११ पाठान्तर पुरमान । पुरमान । पान कुरान । मबघ । मबघ ।
निवधी । गण्यर । मुबिहान । बिहान पवर । पान । पान । पुरमान । बघियै । अर ।
सघीयै ॥

१२ पाठान्तर - राजान । तर । बरीय । निप । ॥

१३ पाठान्तर - महाम । एण । एन । अच । करु । च बदिमि । मजे । उत्तग ।
षजे । मीह । प्रथीराज । मडे । वरन । पट्ट । म ॥

१४ पाठान्तर—पुरमान । पान । गण्यर । पष्यर । गाजी । सन्यह । सज्जि ।
नहि । पिपै । रचह । चहुआन । जह ॥

सबेरे के समय चढ़ाई करने का विचार करना ।

कवित्त दस अराक जातीय । पंच पुरसान कमानं ॥
 तकथी साहि गज्जनै । चिति षट् चहुवान ॥
 छल सज्यौ बल हारि । घात नर घात निहान ॥
 लग्यौ चपि मुरतान । वैर हुस्सेनह घान ॥
 मुविहान आन चहुआन मौ । लै फुरमान गमान धरि ॥
 मुविहांन हिदु पुज्जै नही । जमन जोर बल ब्रहुन करि ॥
 ॥ छ० १५ ॥ रू० १५ ॥

पांच सरदारों को साथ लेकर आषेट को पृथ्वीराज का निकलना ।

कवित्त आषेटक सभरिय । राज मेळान न आइय ॥
 हम्मम ह्य गय मुक्कि । तकिरु षट् बन धार्य ॥
 के हंका के हक्कि । नथ्य पछिवानह लग्या ॥
 मथ्य पंच मामत । मूल चहुआन विलग्या ॥
 पमार मलय अलषह बलिय । चाहुआन रघुवम द्विम ॥
 रुथ्यौ नरिद चालुक्क मम । मघ विटि वागह जिम ॥
 ॥ छ० १६ ॥ रू० १६ ॥

कनि चन्द का कहना कि हमें शहाबुद्दीन के आने का संदेह है
 और खोज करने पर चारों ओर यज्ञों को पाना ।

कवित्त करि विटिय चहुआन । पिप्र मय मन्त्र ममाटिय ॥
 मुविहान फुरमान । वचि कविचद मुनाटय ॥
 मूवर जोर माहाव । माट मे देन मुरगा ॥
 तोन कमान प्रमान । दण दम हथ्य नुरगा ॥
 छिन एक छिमा छिम रण्यके । चावदिसि नृप विटयो ॥
 तन तोन झारि संमुह भण । राज अदन्व मुमिटियो ॥
 ॥ छ० १७ ॥ रू० १७ ॥

१५ पाठान्तर श्रेयक । पुरमान । कमान पट । चहुान निआन ।
 मुरतान । हुसेन मृ घान विज्ञान । आन । चहुवान । मा । फुरमान । विहान ।
 पुज्जै । नही । जवन । जोर ।

१६ पाठान्तर आईय । इमम । तकि । पटू । घाईय । नथ । पयिवानह ।
 लग्या । मथ । चहुवान । पिलग्या । चाहुवान । चाहुआनि । रुथ्यौ । चालुक्क । वीटि ॥

१७ पाठान्तर - वटिय । चहुआन । मु विहान । फुरमान । विचि । साह
 संदेम मुरंगा । तौन कमान । प्रमान । इथ । छिमाछिम पकरिके । चावदिसि ।
 वीटयो । अदब । पिटयो ॥

शाह की श्रौर से आक्रमण आरम्भ होना ।

कवित चंपि लहट्टिय हथथ । जमन ठहूहे चावट्टिमि ॥
 चूक चित चहुवान । कह कट्टी मु बक अमि ॥
 हाजी घान गण्णर नरिद* । घनि पग पोलि विहथथ ॥
 तेग झार विभमार । मलय घल्ली गल वथथं ॥
 घरि अद्ध अद्ध बीभच्छ भय । जगि भयानक वीर सम ॥
 दुहुओह कट्टिड परि यार न । चूक त्रिनि छुट्टी वित्रम ॥
 ॥ छ० १८ ॥ रू० १८ ॥
युद्धारम्भ युद्ध वर्णन ।

छद विराज

घरं धार कट्टी । घनं बीज बट्टी ॥ रमं रोम थट्टी ॥ मुष मुछ अट्टी ॥ छ० १९ ॥
 परे चट्ट पट्टी । मनी मट्ट जट्टी । उन तेग बट्टी । जनी वज्र टट्टी ॥ छ० २० ॥
 जम दट्ट दट्टी । मनी नोन मट्टी ॥ उलट्टे उलट्टी । घन घट्ट घट्टी ॥ छ० २१ ॥
 कुठाल उलट्टी । उतारन भट्टी ॥ रटे मार मार । मुर आमुरार ॥ छ० २२ ॥
 पने पथार । कुठारं वरार ॥ बुटे घाय तार । किनार उपार । छ० २३ ॥
 रनी जुद्ध आरं । मनी कूट तार ॥ पयो पंन भारं ॥
 ॥ छ० २४ ॥ रू० १९ ॥

पांच सरदारों का पृथ्वीराज की रक्षा में चारा श्रौर हो जाना श्रौर इन
 सभी का यवनों के बीच में घिर कर युद्ध करना ।

कवित - पनातन भैपत्र । स्वामि ओडन थट्ट रण्ये ॥
 इरक स्वामि रन अग । इक्क उभे दम पिण्ये ॥
 मार धार प्राहार । वीय निय उपर वाहै ॥
 मनी तत घरियार । मेध जल वट्टु प्रवाहै ॥
 दनु देन जण्ण गध्वन्न जय । गन हय गय उच्चार हुअ ॥
 मुरतान मेन झुकि माहि परि । घनि नरिद मोमेम मुअ ॥
 ॥ छ० २५ ॥ रू० २० ॥

१८ पाठान्तर इय । यमन । टडे । चावट्टिमि । रिनि चट्टवान । पा । गण्णर ।
 * अधिक पाठ है । त्रिथथ । विभार । घला । वय । बीभच्छ भयानक ।
 दुहुओह । कट्ट ने ॥

१९ पाठान्तर छद रमावला । धर धर कट्टी । बटी । घटी । मुल अटी
 ॥ १९ ॥ परे चट्टी । मट्ट जट्टी । कट्टी । तटी ॥ २० ॥ दड दडी । चीन अटी ।
 उलट्टी । घट्ट घट्टी ॥ २१ ॥ कुठाल । उलट्टी । मटी । आमुरारं ॥ २२ ॥ घाय
 ॥ २३ ॥ पस्थी । युद्ध ॥ २४ ॥

२० पाठान्तर — भी । उडन । रण । एक । रिन । एक भये । पयं । शीष ।
 उपर । तत । बुद्धि । वरक । गध्वन्न । गन । उचार । मुरतान ॥

पृथ्वीराज का कमान सँभाल कर यवन सरदारों को गिराना ।

कवित्त चहुआन कमान । षंच लीने सुपंच सर ॥
बण्पर पण्पर सौ पलान । अमु ढ्यो मीर घर ॥
इजै बान तकंत । तक्कि भज्यो षा गोरी ॥
तीजै बान तकंत । साहि भंजी बिय जोरी ॥
कंमान बान चवहथ्य भिरि । षिजि किरवान विरान बढि ॥
कटि बीर अंग फरक पहर । रह्यो नट्ट कुट बस चढि ॥
॥ छ० २६ ॥ स० २१ ॥

पृथ्वीराज का तलवार लेकर यवनों का विनाश करना ।

कवित्त पा गाजी चहुआन । दिष्ट मग्दा दो उट्टी ॥
दग लगि जनु अग । घन घारा हर बुढी ॥
दूनो हथ्य उतग । नेग कढी दुहु बर्वा ॥
मनु घन घटा मझार । बीज कुडली झलकी ॥
चहुआन तुच्छ ढढर बहिय । ढरिग मीर दिय गिर द्यो ॥
जानेकि वज्र वज्री सुपति । गिरनि छेद हथ्यह धन्यो ॥
॥ छ० २७ ॥ स० २२ ॥

मुल्तान की ७५५ सेना का कट कर आगे गिरना ।

अरिल्ल— मुबर मेन संमुष मुरतान । धेन वच्छ परि जल करि जान ॥
मन पंच परि उप्पर पंच । नुट्यो मार धार करि रच ॥
॥ छ० २८ ॥ स० २३ ॥

चालुका का घोर युद्ध करके वीरता के साथ मारा जाना ।

कवित्त जूह मंन मंमूह । कूह आपेटक बज्जिय ॥
वर चालुकक नरिगे । चंपि चावहिम गज्जिय ॥
छडि थान पछिवान । हंकि संघव झुकि घाइय ॥
गही सेन मुरतान । नेज बाजी जस घाइय ॥

२१ पाठान्तर कमान । पचि । मपच । बपर पण्पर । पलान । ध-यो ।
बान । तकि । वान । कमान । बान । हथ । किरवान । विरान । झुटि । फरक
रह । नट ।

२२ पाठान्तर—चहुआन । दिष्टि । दो । उठिय । अगि । घुत । बुठिय । हथ ।
दुहुं बंक्रिय । मनो । झलकिय । चहुआन । तुछ । ढढ । ढरिग । गमीर बीय शिर ।
सिग्द । इट्यो जाने । हथह ॥

२३ पाठान्तर—बछ । ज्यनं । सत । उपर । करि ॥

विम्भाय घाय तन झंझरिय । तुटि पंजर वर धुक्किघर ॥
कटि घाइ लण्य पंचो प्रगट । उडि हंसव संमान सर ॥

॥ छं० २९ ॥ रू० २४ ॥

कवित्त- सोलंकी सिर मोर । रेह अनहल पुर रप्पी ।
दोऊ दीन पण्णर प्रमान * । कित्ति दुअ पण्णह भण्णी ॥
धूप दीप साषा * सुगंध । रंभ रानी मिलि गावै ॥
नाग पती सुर वधू । केलि करि कलस वंदावै ॥
लग्यो भरम द्विगपाल घर । जंम भरम जग्गे सुभर ॥
कविचंद मग्ग चालुकक कै । मरघो न को रवि चक्कतर ॥

॥ छं० ३० ॥ रू० २५ ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का तलवार से युद्ध करना,
पृथ्वीराज की सब सेना का इकट्ठा हो जाना ।
कवित्त मुधर जुद्ध अवरुद्ध । जुद्ध कटि मिद्ध ममानं ॥
मार मार उच्चवार । नेग कट्टी चहुआनं ॥
तुटि सिषर उर फुट्टि । बीर अद्धो अघ झुल्लै ॥
मानुं तुला की डडि । बीर बानावलि तुल्लै ॥
आपेट भग्गि एकठु हुअ । सर्व सेन प्रथिराज जुरि ।
बाजिद धान गण्णर गहर । वाम कोद उध्मं उसरि ॥

॥ छं० ३१ ॥ रू० २६ ॥

मुलतान का बढ़कर लड़ना, दो घड़ी युद्ध होना ।

कवित्त- रूप्यो सेन सुरतान । राज चट्टि नंषि सुरंगं ॥
कै तिमर भग्ग तपभानं । मिह हक्कै कि कुग्गं ॥
तब * रूप्यो राव सिघरिय । लाज मुविहान षटक्किय ॥
सस्त्र तेज बल बंधि । सेन चहुआनं हटक्किय ॥

२४ पाठान्तर— जूहं मत । चालुक । दिनि । धान । पल्लवानं । मेघव ।
घाईय । सुरतान । घाईय । घाई । झंझरिय । लप । उडि । समानं ॥

२५ पाठान्तर— रणिय । दोउ । पषर । * अधिक पाठ है । विनि दुअ
दीनह भणिय । * अधिक पाठ है । वदावै । भरंम । द्विगपाल । चालुक । रषतर ।

२६ पाठान्तर— युद्ध । मुध । उच्चार । चहुआनं । तुटि । सिषर । घर झुल्लै ।
मनो । दंड । बानावली । तुल्लै । एकठ । पृथीराज । बाजिद धान गषर । वामं ।
उध्मं । उसरि ॥

द्वै धरिय टोप उप्पर बह्यो । सार तिनंगा तारयो ॥
जाने कि तित्तु दारुन जरै । जैत वंभ पर झारयो ॥

॥ छं० ३२ ॥ रू० २७ ॥

बूहा—हय मुक्कथो सिरदार दुहु । देखि भयो नृप चूक ॥
घरी एक झरि सार बहु । ज्यों अगि संजुत्ता ऊक ॥

॥ छं० ३३ ॥ रू० २८ ॥

यवन सरदारों का मारा जाना, पृथ्वीराज की विजय ।
कवित्त - जुद्ध जुरे सिरदार । राउ रंधह बाजी दह ॥
पालि बध्य गल हध्य । हहु भंजिय रग गूदह ।
ज्यों मुष्टिक चानूर । कन्ह भंजिय अष्पारह ॥
उत्तमंग लै हर । सूर अपछर उप्पारह ॥
वाजीद षान झोरी धरिय । घाड पंच रंधर नृपति ॥
रष्वै जु साई मिट्टै कवन । निमष मांहि उतपति षपति ॥

॥ छं० ३४ ॥ रू० २९ ॥

हारकर शहाबुद्दीन का गजनी की झोर लौट जाना ।
बूहा—चूक चूक भय अमुर मुर । फिरि गज्जन दिसि षान ॥
हारि जुआरी ज्यों चलै । कर घट्टै कर जान ॥

॥ छं० ३५ ॥ रू० ३० ॥

चौहान की विजय पर चन्द कवि का जै जकार करना ।
बूहा—जी ति राज चहुवान वन । आषेटक अमुरान ॥
जै जै जै कविचंद कहि । चद मूर बष्पान ॥

॥ छं० ३६ ॥ रू० ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके राजा
बहुवन आषेटक रन मुरतान चूक करन नाम
वसम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १० ॥



२७ पाठान्तर—मुरतान । बाजि चदि । षान । हुकै । ★ अधिक पाठ है ।
रिचरिय । विहान । चहुवान । हटकिय । घरीय । जाने ॥

२८ पाठान्तर—दुहु । अगनि । उक ॥

२९ पाठान्तर—युद्ध । जुरे । मिरहार । राव । बाजीदह । बध । गर ।
हय । रंग । झाररु । उाररु । घरीरु । घाउ । घाव । सारं ॥

३० पाठान्तर—गजन । षान । युवारी । बने । चठे । जान ॥

३१ पाठान्तर—चहुवान । अमुरान । बषान ॥

उपसंहारणी टिप्पण

यह समय भी हमारे स्वदेशी इतिहास के लिये बहुत उपयोगी है। क्योंकि एक लड़ाई तो "हुमैन कथा" नामक समय में रामो के अनन्द संवत् अर्थात्, पृथ्वीराज के तृतीय मास ११३५ माघ शुक्ल १३ = ११३५ + १०। १.१ = २०२५। २६ वर्तमान विक्रमी में आगे हो चुकी थी और दूसरी उमके एक बरस पीछे यह "आखेटक चूक" नामक हुई है। इस लड़ाई के होने का समय कवि ने स्पष्ट न बनाकर प्रथम रूपक में—बरस एक बीते कलह—से पहिली के एक वर्ष पीछे इसका होना वर्णन किया है अर्थात् पहिली के सं० ११३५ + १०। १.१ = १२२५। २६ में एक जोड़ने से ११३५ + १ = ११३६ + १०। १.१ = १२२६। २७ वर्तमान विक्रमी होता है। वैसे ही "अखेटक" शब्द के नियत समय के अर्थ में "फाल्गुण" मास का होना भी प्रकाश किया है। प्राचीन समय में हमारे देशी राज्यों में वर्ष भर के अनेक त्यौहारों में फाल्गुण मास में जिस दिन ज्योतिषी आखेट का मुहूर्त देते थे उस दिन एक बड़ा त्योंहार मनाया जाता था। इसी में यदा कवि ने "आखेटक" शब्द में फाल्गुण का संकेत अर्थ में माना है। अब यह त्यौहार लुप्त हो जाता चला जाता है, तथापि वह प्राचीन राज्य उदयपुर में इस समय तक भी माना जाता है और उसको वहां "अहेरिया" वा "महरन का गिकार" करके कहते हैं। और उसका सविस्तर वृत्तान्त कर्नेट टीड माह्व ने अपने परम प्रसिद्ध ग्रंथ "राजस्थान" में यह लिखा है ॥

"The merry month of Phalgun is ushered in with the Ahairea or spring-hunt. The preceding day the Rana distributes to all his chiefs and servants either a dress of green, or some portion thereof, in which all appear habited on the morrow, whenever the astrologer has fixed the hour for sallying forth to slay the boar to Gauri, the Ceres of the Rajpoots: the Ahairea is therefore called the *Mahoorat ca sikar* or the chase fixed astrologically. As their success on the occasion is ominous of future good, no means are neglected to secure it. either by scouts previously discovering the lair, or the desperate efforts of the hunters to slay the boar when roused. With the sovereign and his sons all the chiefs sally forth, each on his best steed, and all animated by the desire to surpass each other in acts of prowess and dexterity. It is very rare that in some one of the passes or recesses of the vally the hog is not found; the spot is then surrounded by the hunters, whose vocife-

rations and soon start the *dhokra* and frequently a drove of hogs. Then each cavalier impels his steed, and with lance or sword, regardless of rock, ravine, or tree, presses on the bristly foe, whose knowledge of the country is of no avail when thus circumvented, and the ground soon reeks with gore, in which not unfrequently is mixed that of horse or rider. On the last occasion, there occurred fewer casualties than usual, though the Chandawut Hamira, whom we nicknamed the "Red River," had his leg broken, and the second son of Sheodan Singh, a near relation of the Rana, had his neighbour's lance driven through his arm. The young chief of Saloombara was amongst the distinguished of this day's sport. It would appeal even an English fox-hunter to see the Rajpoots driving their steeds at full speed, bounding like the antelope over every barrier, the thick jungle covert or rocky steep bare of soil or vegetation." with their lances balanced in the air, or leaning on the saddle bow slashing at the boat".

TOD'S RAJASTHAN, VOL I, PAGE 435.

और उन्होंने इस वृत्तान्त में के "अहेरिया" शब्द पर जो टिप्पण दी है उसमें पृथ्वीराज जी के इस आखेटक के विषय में यह कहा है --

"In his delight for this diversion, the Rajpoot evinces his Scythic propensity. The grand hunts of the last Chohan emperor often led him into warfare, for Prithirai was a poacher of the first magnitude, and one of his battles with the Tartars was while engaged in field sports on the Ravi."

TOD'S RAJASTHAN, VOL. I, PAGE 485.

यद्यपि रूपक ४ के वाक्य-वरष उभै षटमाम-का अर्थ दो वर्ष और ल महीने का भी हो सकता है, परन्तु प्रथम रूपक के वाक्य-वरष एक बीते कलह-की उम के साथ संगति मिलाने से उस का अर्थ एक वर्ष का ही होता है अर्थात्, वर्ष अर्थात् दो छमाही । सो षठक विचार देखें ।।

जैसे "हुसैन कथा" वाली रामो की संवत् ११३५ की लड़ाई का कारण हुसैन और चित्रसेना का पृथ्वी राज के शरण आना था; वैसे ही इस आखेटक वृत्त की लड़ाई का कारण उनके बेटे गाजी हुसैन का रूपक २ के अनुसार एक महीने और पांच दिन पीछे फिर पृथ्वीराज जी के पास चला आना है ।।

तथा रूपक ४ एक अपूर्व वृत्त प्रकाशित करता है कि हमारे एक हिन्दू-नितिराव पत्रीय दिल्ली में विराजे हुए हिन्दुओं की बावसाहस नाश करवाने को पृथ्वीराज जी के यहां की मुकबरी साहाबुद्दीन को लिखा पढ़ा करते थे । ऐसे जीव, जी धन्य हैं ! ! !

अथ चित्ररेषा समयौ लिष्यते ।

(ग्यारहवां समय ।)

चित्ररेषा की उत्पत्ति पूछना ।

दूहा पुच्छि चद बरदाइ नै । चित्ररेष उतपत्ति ॥

षां हुसेन षावाम कहि । जिम लीनी अमपति ॥ छं० १ ॥ ह० १ ॥*

कविन - गज्जनेम अवदेम । साहि पल्लान कुमान ॥

बदक स्वामि भेहरा । छडि गप्पर छिति आबं ॥ *

जल जोवन माहाव । दीन दुरेगे करि गिन्निय ॥

हिदंबान मेछान । थान थानह करि लिन्निय ॥

बजि विषम वाइ मुरतान प्पन । माहि बदी मत्र दीन पति ॥

अनसंक कंक मनु लकपति । जनु जोवन तन रवित पति ॥

॥ छं० २ ॥ ह० २ ॥

शहाबुद्दीन का घर बरखा पर चढ़ाई करने की
इच्छा कर सरदारों से पूछना ॥

कविन - दिसि आरब मुरतान । दिष्टि आलोकि बंक मुअ ॥

आकपै दिमि डुल्लि । अचल चालंन चित्त दुअ ॥

सज्जि सेन चतुरंग । जंग अनमग विचारिय ॥

बोलि पान पुरसान । पान जिने अधिकारिय ॥

मारुफ पान ततार पा । पान पान सेरिन मुबर ॥

काली बलाइ कलहंत रिन । बोलि वीर पच्छे सुनर ॥

॥ छं० ३ ॥ ह० ३ ॥

१ पाठान्तर - पुच्छि । बरदाइ नै । उतपत्ति । लीनिय । अमपति ॥ * इस समय में कवि ने हुसेन शा के कठे अनुसार जैसे शहाबुद्दीन ने चित्ररेषा को प्राप्त किया था सो वर्णन किया है ॥

२ पाठान्तर - पल्लानि । एलानं । कसंबि । बदकर । सामि । दुरेगे । गिन्नीय । गिनिय । हिदंबान । मेछान । पान । लिनीय । मुरतान । शहाबदी । मनी । जन । जर ॥

३ पाठान्तर - दिसि बर आरब साह । दिष्टि । मुअ । डुलि । सज्जि । विचारिय । पान । पुरसान । पान । जिने । अधिकारीय । मारुफ । पान । ततार । पान पान । रिन । बलाइ । पछे ॥

अरब खां नवता नहीं है इसलिये उस पर चढ़ाई
होनी चाहिए यह आशा थी ॥

मुहा -★ आरब पति अर सिध तट । विन सलाम सुरतान ॥

तिन उप्पर सज्जिय सयन । कहर छंडि फुरमान ॥ छ० ४ ॥ ६०४ ॥

चढ़ाई की सेना की संख्या ॥

कवित्त—सत्त पंच वारुध विसाल ★ । लष्य दुइ तुरी लषिमा ॥

आरब्बी सैं पंच । लष्य इक सोधि सुलिमा ॥

काबिल्ली उर देज । रोम रोमी पंजावी ॥

लोहानी जल वान । सेष गोरी आरब्बी ॥

लष एक लष्य लष्या मुहा । पारेवह जिन पंष लिय ॥

चालंत कटक गोरी प्रबल । भूषी चाली पंचनिय ॥

॥ छ० ५ ॥ ६०५ ॥

सेना की धूम का वर्णन ॥

छंद भुजंगी—चली पंषिनी सध्य चौसठु थानं। चली अंग पती सुदती प्रमान ॥

तिनं दंत कंती तडित्ता समानं । छ० ६ ॥

घजा पंति फेरंत भादब्ब भारं । शबककं मनो सूर संगी कि सारं ॥

बजै त्रंब त्रंबाल गज्जै कहरं । बज्जै तट्ट सट्टं पपीहं ददूरं ॥ छ० ७ ॥

घरं बंक यद्धोर उद्धोर घटं । बरं वर भज्जै घरै वित्र बट्टं ।

अगे चल्लियं अगिगवानं समीरं । तिनं पुठु घुसनि षा बधि भीरं ॥ छ० ८ ॥

घरै छत्र सीसं विराजंत गोरी । षिलै पंति देवं विचें किद्ध होरी ॥

बकीथान थानं छुटें मानु पट्टं । जगी जोग जालं जलट्टं सुधट्टं ॥ छ० ९ ॥

चलै आरबं उप्परे साहि सज्जी । कमट्टं पिठं उध्यलं सेस दज्जी ॥

बिटे गट्टु गोहार केथान थानं । मनो सागरं बीच बढानलानं ॥ छ० १० ॥

बजे थान थानं सुत्रंबाल दूरं । गहे षग मीरं वदै मुष्य कूरं ॥

४ पाठान्तर—सिद्ध । नट । सलाम । सुरतान । उपर । सजिय । फुरमान ।
॥ ★ अरब खां नामक कोई छोटा राजा वा सरदार उस समय सिधु तट पर के
देश का पति था कि जिसके पाम चित्ररेखा थी ॥

५ पाठान्तर—सत्र । वाहन । ★ अधिक पाठ है ॥ लषु । दोइ । लषिना ।
आरबी । पांच से । लष । लीनां । कबिली । वान । सेष । गोरी । आरबी । लष ।
लषां । मुहां । पारेवाह । पंचिय । गोरी । पंचनीय ॥

६ पाठान्तर—सष । चौसठि । थानं । अंग । सदती । प्रमानं । तडिता ॥ ६ ॥
पति । फहरंत । भदबा । शबकें । मनो । गजी । बजै ॥ ७ ॥ पद्धोर उद्धोर । घटं ।
बर । बटं । अगे । चलियं । अगिगवानं । पुठि । घुरसान ॥ ८ ॥ घरें । गोरी । थानं
२ । छुटे । पट्ट । मानो । ग उट्टै सुराने ॥ ९ ॥ उधरें । सजी । कमठं । उधल ।

शाह का निमुरति खां को अरब खां के पास भेजना कि चित्ररेषा
को बेकर पर पर गिरै तो हम क्षमा करवें ॥

बरं मोकले मेलनि स्रुति षानं। कही आरबं लगि पायं विहानं ॥छं०११॥
दियो चित्ररेषा लियो दंड दोनं । भिरै षेत मोसौं कहूं अज्ज कोनं ॥
षम्यो तापना आरबं निठु निठुं। गयो काहरं धीरजं दिठु दिठुं ॥छं०१२॥
अरब खां का साबर राजा मानना और चित्ररेषा
को बेना स्वीकार करना ॥

दियो जाइ फुर्मान निरुत्त ईसं । लियो आरबं आदरं नाइ सीसं ॥
दई चित्ररेषा सिताबी सुडोरं । तिनं उप्परं गुंज भौरान कोरं ॥छं०१३॥
इकं सेत हृथी दु आबं अराकी । पलंगी रजकी धरें अंतपाकी ॥
मतं एक सषी दई चित्ररेहा । बनी मुद्ध बानै उरं मद्धि नेहा ॥
॥ छं० १४ ॥ रू० ६ ॥

निमुरति खां का अरब खां को शाबसी दे कहना कि तुमने शाह
के बचन माने और हिन्दु धर्म को न मान कर म्लेच्छ कुल
कर्म को धारण किया सो ठीक किया ।

कवित्त --कह्यो साहि जो बचन । सोइ तुम काज सुधारयो ॥
तेइ बचन सति होइ । हिंदु धम्मं न बिचारयो ॥
मेछ धन्यो कुल क्रमं । जोगि ग्यानह जिम धारहि ॥
सेवक मत सुभाइ । देन आलम नाकारहि ॥
पुरसान पान सुरतान पति । दल बहल पावस मिलिग ॥
चतुरंग सज्जि बौरंग मिलि । सिद्ध चरित सिद्धन चलिग ॥
॥ छं० १५ ॥ रू० ७ ॥

शहाबुद्दीन का सेना समेत सज्जकर चलना ।

कवित्त -गज्जनेस आएम । सूर चतुरंगन सज्जिय ॥
बीर बाल ससि बट्टि । मोह पूरन जिम भज्जिय ॥

षसी । बिटे । गढ । कैं । षान षानं । बडवानलानं ॥ १० ॥ षानं षानं । गहै ।
षुष । निमुरति । षानं । कह्यो ॥ ११ ॥ भिरें । मोसू । कही । कोनं । तापनां ।
निष निठं । दिठि दिठं ॥ १२ ॥ फुरमानं । निमुरत्त । नांग । शीषं । सडोरं ।
षपरं । भवरानं । झोरें ॥ १३ ॥ हृथी । आरब । अराकी । रजकी । षष्यें ।
षाने ॥ १४ ॥

७ पाठान्तर—सोय । साज सुधारो । होई । झंर । बिचारो । धरो । कर्म ।
षोग । ग्यानह । सुभाय । सुभाई । पुरसान पान । सजि ॥

करक निसा दिन मकर । सेन बद्धी तिम चंगिय ॥
मिलि अनंग आनंद । रंज आनंद सुजंगिय ॥
द्वादस सहस्र वारुन समह । दोह लष्प सज्जे सुभर ॥
पारन सुअन्य आरंभ दल । चढ्यी साह मधि दुप्पहर ॥

॥ छं० १६ ॥ रू० ८ ॥

चलते समय शाह का चित्त चित्ररेखा में मत्त गयंद को भांति
लगा हुआ था ।

गाथा — चित्तं मत्त गयंदं । फुंतारं नथि उत्तरयं ॥

त्यौ चित्ररेषय चित । सुविहानं मंडियं नेह ॥ छं० १७ ॥ रू० ९ ॥

सेना की शोभा का वर्णन ।

छंद पद्धरी - चढि चलयौ साहि साहाब कूर । चल चले समुद मरिता सुपूर ॥
सुरतान छत्र अप-अप समान । मुर पंच बीर उर पति पांन ॥ छं० १८ ॥
काली बलाइ सेरन वितंड । सो अरिन फौज पारंत दंद ॥

ततार पांन पुरसान पांन । सो मामि ध्रंम राषत गुमानं ॥ छं० १९ ॥

मारूप पांन मारु मरद । दल मझि जानि नरसिघ मद्द ॥

ततार पांन निमुदति बीर । आग्ब मरद मझै गभीर ॥ छं० २० ॥

महबूब पांन महबूब माह । दल मझ अकं उग्यौ उगाह ॥

वर बीर महन मझी मरद । लज्जा कि अंग चंद मु मरद ॥ छं० २१ ॥

कंकर कराव मैदान भान । जादेत सेष मा ध्रंम पांन ॥

पानी प्रवाह ढिग साह थूर । झिलि मिलिग सिद्ध अंगा करूर ॥ छं० २२ ॥

नीसान जोर बज्जे मु नद्द । भद्व कि मास घन गरज सद्द ॥

हल्ल विरद्द बाने विवेक । जाने कि बन्न रति राज नेक ॥ छं० २३ ॥

गज सीस चौर सेतह सुत्राह । हरहार गंग छट्ट प्रवाह ॥

चमकंत नाल उप्पम मु जोह । समि बाल जानि घन घटा सोह ॥ छं० २४ ॥

८ पाठान्तर — आक । चतुरंगि । मजेय । भजिय । निशा । बडी ।
बनीय । जंगीय । ममुंद । समद । दोय । लपु । मजे । दुपहर ॥

९ पाठान्तर — चित्तं । मत्त । पुनारं । नथि । उत्तरयं । विलं ॥

१० पाठान्तर — साह । सपूर । सुरतानं । समानं । समानं । पति । पांन ।
॥ १८ ॥ बलाय । ततार पांन पुरमानं पांन । सामि । ध्रुम । गुमानं ॥ १९ ॥

मारूप पांन । मरद । मझि । जानि । नरभीह । ततार पांन निमुदति । आरब ।
मझै ॥ २० ॥ पांन । मझ । अगाह । मझी । मरद । चंद । सारद्द । सरव ॥ २१ ॥

मैदान । मैदान । भान । ध्रंम । पांन । पांन ॥ २२ ॥ नीसान । बजे सनद ।

सिप्पार तीस ते पढत मुष्प । आध्रंम हृथ्य तसवी सुरष्प ॥

है परष परष साई सुकीय । छुट्टंत अरम जनु किरन कीय ॥

॥ छं० २५ ॥ रू० १० ॥

शाह की सेना की प्रबलता देखकर अरब का अपना बल भंग
होना कहना ।

दूहा सुनि अवाज आरब मुपसु । वर उत्तर तिय मुंद ॥

बल भग्गी इन भंति वर । ज्यों तत्त तवे पर बंद ॥

॥ छं० २६ ॥ रू० ११ ॥

अरब खां का आज्ञा मानकर चित्ररेषा को भेंट में देना ।

अरिल्ल आरब धान तत छन मानिय । ज्यों मुकिया पिय आग्या जानिय ॥

जै फुरमान बंदि सिर धारिय । चित्ररेष दीनी सो नारिय ॥

॥ छं० २७ ॥ रू० १२ ॥

चित्ररेषा बेइया के रूप का वर्णन ।

साटक बेइया बछित भूप रूप मनसा, शृंगार हारावली ।

सोय मूरति लच्छि अच्छिन गुनं, बेली सु कामावली ॥

का बनें कवि उक्ति जुद्ध मनय, त्रीलोक्य म साधनं ॥

सोयं बाल तिरत्त उष्ट विद्रमं, का मोद जोगेश्वरं ॥

॥ छं० २९ ॥ रू० १३ ॥

साटक रूपं नहि कटाच्छ कूल तटयो, भयं तरंगं वरं ॥

हावं भावति मीन प्रमित गुनं, सिद्धं मन भंजनी ॥

सोयं जोग तरंग रूवति वरं, त्रीलोक्य ना तः समा ॥

सोयं साहि सहाव दीन ग्रहियं, आनग क्रीडा रसं ॥

॥ छं० २९ ॥ रू० १४ ॥

भदव । गडर सद । हूले विरद वानें । जाने वन । कनुगज ॥ २३ ॥ शीश । छुट्टें ।

उपम । जानि ॥ २४ ॥ सिपार । मुष । इथ । रव । माई । अरम ॥ २५ ॥

११ पाठान्तर—आवाज । समुद्र । उत्तरिय । भो । तये ॥

१२ पाठान्तर--धान । छन । मानिय । सुकीया । जानिय । फुरमान ।
धारीय ॥

१३ पाठान्तर--वोंयं । लच्छि । अच्छित । बेली । बरनें । युक्ति । मन । तिरत्त ।
जोगेश्वरं ॥

१४ पाठान्तर--नत । कंटाक्ष्य । तटयो । मान । प्रसित । भजनी । रुवति ।
त्रीलोक्य ता । त्रिलोक्य । नह । समा । साहाव । ग्रहीयं ॥

विना युद्ध चित्ररेखा को लेकर गोरी का लौट आना ।

ब्रूहा—अंग सुलच्छिन हेम तन । नग धरि सुंदरि सीस ॥

गोरी ग्रहि गोरी गयी । विना जुद्ध बुझि रीस ॥

॥ छं० २० ॥ रू० १५ ॥

चित्ररेखा के साथ शाह के भावर और प्रेम का वर्णन ।

ब्रूहा—जिम जिम साह सु आदरिय । तिल तिम बद्धिय पेम ॥

क्रम क्रम फल गुन बद्ध इय । बेली नमै सु तैम ॥

॥ छं० ३१ ॥ रू० १६ ॥

चित्ररेखा के सुलतान को बश करने का वर्णन ।

कवित्त --बसि कीनी सुरतान । चंग जिम भ्रमे डोरि कर ॥

ज्यौ भावी बसि लाइ । बचन उद्योत बाल सुर ॥

ज्यौ बसि जीवन मंन । प्रात बसि जेम क्रम्म गुर ॥

ज्यौ बसि नाद कुरंग । बास बसि जेम मधुबकर ॥

महिला सु मुक्कि सब बस्सि भय । महिला महिल सुमत्ति बसि ॥

एकंग एक अंदर महल । रहै साहि सुरतान रसि ॥

॥ छं० ३२ ॥ रू० १७ ॥

चित्ररेखा की कथा सुन कर कवि का आनंदित होना ।

ब्रूहा --पंषी पेम परेव जिम । सुमन मनोहर मिष्ट ॥

सुनत कथा संमूल इह । अनंदिय मन इष्ट ॥

॥ छं० ३३ ॥ रू० १८ ॥*

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराजरासके चित्ररेखा

वर्णनं नाम एकादसो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ११ ॥



१५ पाठान्तर—लछिन । शीष । गृहि । युद्ध ॥

१६ पाठान्तर—आदरीम । बद्धिय । जिम २ फलगुन वाघइय ।

१७ पाठान्तर—कीनी । सुरतान । भ्रमे । लोई । मंत । क्रम । नद । बसि ।
मधुकर । सुमत्ति । बसि । मत्ति । रहै । सुरतान । रस ॥

१८ पाठान्तर—यह । आनंदीय ॥

* यह दोहा Caulfield, Ms. में नहीं है, परन्तु वह हमारी सं० १६४७ और सं० १८५९ की पुस्तकों में है ।

अथ भोलाराय समय लिखते ।

(बारहवां समय)

भोलाराय भीमदेव का बल कथन और राजा सलष को
संभरि-राज (सोमेश्वर) की सहायता का वर्णन ।

कवित्त-- छत्तीसा^१सुकुवार । चैत पुष सिन दुति पारिय ॥
भोराराय भिमंग । सोर शिवपुर प्रज्जारिय ॥
आरज सांइ सलष । राज संभरि संभारिय ॥
चहुआन सामंत । मंत कैमास पुकारिय ॥
घरजान पवारह पट्टना । बोले बंक दुराइ दिल ॥
कैबार कथ्य नथ्यह तनी । पंगे राज क्रिसान षल ॥ छं० ॥ १ ॥
शुकी का शुक से इच्छनी के विवाह की सविस्तर
कथा पूछना ।

ब्रूहा - जंपि मुकी सुक पेम करि । आदि अत जो बत्त ॥
इच्छनि पिथ्यह म्याह बिधि । मुष्य सुनते गत्त ॥ छं० २ ॥
इघर चौहान तपता था उघर आबू का राजा सलष पंवार
बड़ा प्रतापी था उसका वर्णन ।

कवित्त - तप तेज चहुआन । भान दिल्ली इच्छा वर ॥
बीर रूप उप्पज्यौ । पन्न रष्य जुगिनि भर ॥
आबू वै अनभंग ॥ जंग षगौ षल दासन ॥
जोग भोग षग मग । नीर^२ पित्री अवघारन ॥
कित्ती अनंत सलषेज भुअ । धुअ प्रमान पन रष्यई ॥
चव वरन सरन भुजदंड भर । दल दुज्जन भिर भष्यई ॥ छं० ॥ ३ ॥

सलष को एक बेटा जंत नाम का और मंदोदरी और
इच्छनी नाम की दो बेटियां थीं ।

ब्रूहा - जंत पुत्र सलषेज लघु । इच्छनि नाम कमारि ॥
वर मंदोदरी सुंदरि । बियन^३ रूप उनिहार ॥ छं० ॥ ४ ॥

१. मो-बीआलीसा ।

२. को-बीर ।

३. मो-बियन ।

बड़ी मंडोवरी का विवाह भीमदेव के साथ होना ।

गाथा—सो अप्पी बर भट्टं । रुद्रं बर माल थानयं भेवं ॥

सिद्धं सिद्ध सुपुत्रं । नामं जास भीमयं रायं^१ ॥ छं० ॥ ५ ॥

भोला भीमदेव के बल परामर्श का वर्णन ।

कवित्त -अनहलपुर आभ्रन । राज भोरा भीमंदे ॥

देसां गुज्जर षंड । डंड दरिया से बंदे ॥

सेन सबल चतुरंग । बीर बीरा रस तुंगं ॥

अति उतंग अनभंग । बियन पुज्जै बल जंगं ॥

कलि काल कित्ति मित्ती इतिय । पलटि प्रीति^२ क्रत जुग करन ॥

भोरा नरिद भीमंग बल । उभै दीन तक्कै सरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

गाथा -तक्कै चाल्क रायं । त्रैलोकं चरनयं सरनं ॥

मुरषंडं जं बलयं । सा बलयं भीमयं राजं ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीमदेव के मंत्री अमर सिंह सेवरा का वर्णन ।

कवित्त -भीमराज राजिद । राइ राइन उचारन ॥

अति अचंभ बलहू । द्र ग्गपति सेव सधारन ॥

वाहन बटं बटवान । तुंग तेरह हिमारं ॥

मिद्ध बट्टी बटवान । थान थट्टा धर धारं ॥

आरब्ब गरब दरब दिल दल । चाल्ककां चिनां चढ्यो ॥

मंत्री सुरायं जना जहर । अमरमिह मेवर पट्ट्यो ॥ छं० ॥ ८ ॥

मंत्र बल से अमर सिंह का अमावस्य को चन्द्रमा

उगाना, ब्राह्मणों का सिर मुंडा देना, दक्षिण और पश्चिम

दिशा को जीतना ।

कवित्त -जिन अमरमीह सेवरा । चंद मावमि उगाइय ॥

जिन अमर सीह सेवरा । बिप्र सब सीस मुडाइय ॥

कहर कर पाषंड । चंड चारन मिलिबत्तं ॥

दुज दोपंजर हेम । देहि उत्तर धन हितं ॥

नर नाग देव छंदां चलै । आकर्षे आवंत कर ॥

विदरम्भ देस दष्षिन दिसा । सब जिती पच्छिम सुधर ॥ छं० ॥ ९ ॥

१. मो-मो भीम नर रायं ।

२. को कृ ए-किल ।

३. मो-रीति ।

४. मो-बट ।

५. मो-प्रति में "थान थट्टा धर धारं" के स्थान पर "तुंग तेरह हिमारं" है ।

६. ए-पुराइ ।

इच्छिनी के रूप की बड़ाई सुन भीम का उसपर घ्रासक्त होना ।
कवित्त— जहोरा पारकक । सर्व सोढा पज्जाई ॥

बारी बंभन वास । ठाम ठटा छड्ढाई ॥

माही मालहन हंस । पालि आबू धर लगा ॥

आगेही सलषान । दई मंदोदरि सग्गा ॥

आचंभ रूप इच्छिनि सुनी । जन-जन वत्त बषानियां ॥

भोरा अभंग लग्यो रहसि ॥ काम करककै प्रानियां ॥ छं० १० ॥

आबू की ओर से आनेवालों के मुंह से इच्छिनी की बड़ाई

सुन सुन जैन धर्मो भीमदेव भीतर ही भीतर कामातुर हो ध्याकुल हुआ ।
कवित्त— द्रव्य दार उदार । मरन कज्जै मुह नषै ॥

कैवत्ता आबूअ । दिसान जितिहि मुष लप्यं ॥

जेहा तुंग तुरंग । चंग जेवाहन बट्टी ॥

पांवारी कथ झूठ । तेसु पहिचानी हट्टी ॥

श्रानान राग लग लिये^१ । पट्टनवै पट्टै सरां ॥

जै जैन धर्म उगाइयां । तेन कूर लगो करां । छं० ११ ॥

देखने सुनने और स्वप्न में मिलने से कामान्ध होकर भीमदेव
रात दिन इच्छिनी के ध्यान में पागल सा हो गया ।

दूहा -- मादक उनमादक नयन । सोषन द्रप्पन वान ॥

इक मुपनंतर राग मुनि । इक दिष्टान विनान ॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त— मादक उनमादक । समीपु सोषन अरू द्रप्पन ॥

बिय असोक अरबिद ॥ चंद चंदन उर जप्पन ॥

विमल तान उवान । सुबनि नामे इच्छिनि सज ॥

पट्टनवै पट्टयो । लाज भगी^२ वर अग्रज ॥

सपनानु राग बढ्ढयो नृपति । अरू श्रोतानन राग भय ॥

पंमार मोहि टारै सलष । अनष एन आबू मुलय ॥ छं० ॥ १३ ॥

गाथा रोगता मनमथं । विह्वल चंपि अंग अंगाइं ॥

सुनि इच्छिनीय नामं । झुट्टं सच्चेव लष अप्पाइं ॥ छं० ॥ १५ ॥

लषं लष लहिज्जै । इच्छिनिय नामाईं झुट्ट सच्चाइं ॥

चाउ दिसा विभूति । चतुरंगं मुक्कियं भीमं ॥ छं० ॥ १६ ॥

गाथा -- दिष्टानं श्रोतानं । सुपनानं रागय हुंती ॥

तीनं राग प्रमानं । चाल्लुकं रोग लग्गियं तीनं ॥ छं० १४ ॥

१. मो—लष ।

२. मो—मुट्टि ।

३. मो—मडो ।

भीमदेव का राजा सलष के पास अपने प्रधान को पत्र देकर भेजना कि
इच्छिनी का विवाह मेरे साथ कर दो और जो पूर्व वाग्दान के
अनुसार चौहान को दोगे तो तुम्हारा भला न होगा ॥

कवित्त— तिन प्रधान पट्टाइय । लिषिष आबू दिसि रायं ॥

तुम बड्डे घर बडे । बानि बड्डे चित चायं ॥

संध सगप्पन सध्थी । चूरि चालुक परिहारां ॥

पज्जाई दो बार । बाल बांरू रूकारां ॥

नग हेम मुत्ति मानिकक घन । कहि न जाइ लष्या लिषां ॥

इच्छिनि सुचित्त चहुआन बर । ती आबू गिरि सर' भषां ॥छं० १७॥

सलष के बेटे जैतसी की वीरता का वर्णन, भीमदेव के दूत
का आबू पहुंच कर राजा का सलष से मिलना ।

छंद पदरी - सज्जी सुभीम चतुरंग लच्छ । पट्टाय सलष पावार पच्छ ॥

तस १३ नाम जैतसी वीर । जित्तिया सिष बट्टी सधीर ॥ छं० ॥ १८ ॥

रावन सुमेघनहह' समान । भंजइ इन्द्र आरूठ थान ॥

इन भिरवि बट्टिठ बघुषेल स्रब्व । रषि आस रंन पंमार अब्व ॥छं०१९॥

तिन बंधु भीम हम्मौरसेन । मेवाति भंजि ठिल्ली बलेन ॥

दैवत्त बांह द्विग कमलरूप । अनपुच्छ लोइ जानियै भूप ॥ छं० ॥ २० ॥

दिग घरनि घरनि सलषेज वीर । भंजए जाइ घवलह सधीर ॥

बंधन सुवास पट्टन प्रजारि । ता समह भीम मंडग मुरारि' ॥छं० २१॥

तिही दूत आय परनाम कीन । परमार हृथ्य कग्गद मुदीन' ॥छं० २२॥

पंवार सलष की प्रशंसा ।

अरिल्ल—पांवारी परिगिह प्रतिछीनी । बल कीर्ने बज्जी रस भीनी ॥

जिन घम घरा भारथ घर लीनी ॥ तीनों पन कित्ती रसभीनी ॥छं०२३॥

गाथा— कित्ती कित्ति गनिज्जै । जानिज्ज सलषयं देवं ॥

सैसब वै पोगंडं । कित्तिरं बट्टयौ जसयं' ॥ छं० ॥ २४ ॥

गाथा— पत्री पत्र गनिज्जै । मानिज्जै' कित्तयौ गुनयं ॥

सौयं दून प्रमानं । साहसं तेव सलषयो राजं ॥ छं० ॥ २५ ॥

१. को ए कू साइर ।

२. को कू ए—सदर ।

३. मो—मदन हरारि ।

४. मो० मे यह पद नहीं है ।

५. मो—सत्रयं ।

६. को कू ए—बट्टिजी ।

पंवार सलष पर चालुक्य भीमदेव का जंपना और पत्र
में लिखना कि मन्दोदरी दिया है अब इच्छिनी को भी
देवो नहीं तो ग्राबू की गद्दी से हाथ धोओगे ।

कवित्त—पतिपहार मोरा सु । बीर जंप्यो चालुककं ॥

रंक अजुह पमार । भीर जानी भरतककं ॥

अति उतंग भारथ सु । चंग पथ पार्थ न मानिय ॥

बेनतेय सुत इंद्र । करन कित्ती जिन ठानिय ॥

लच्छन उतंग इच्छिनि सुनिय । तिन चालुकक न वीसरिय ॥

मंदोद मंद मंदोदरिय । लै कग्गर फिर इसरिय ॥ छं० २६ ॥

बूहा—कै इच्छिनि परनाथ मुहि । रषिष सगप्पन संधि ॥

जौ चित्ते चहुआन को । गढ़ तें नष्यो बंधि ॥ छं० २७ ॥

भीमदेव के प्रधान को पांच दिन तक आदर के साथ

राजा सलष का रखना, छठें दिन दरबार में आ उसका
पत्र और भेंट उपस्थित करना ।

कविद्ध—तिन प्रधान आवंत । अरघ साईं सलष दिय ॥

दिवस पंच भोजनं । दुजन आदर अदब्ब किय ॥

षट्ट अग संझहमु । पान कग्गर कर अप्यो ॥

रस रसाल गुज्जरह । नरिंद रायं गन थप्यो ॥

आरब्ब तेज ताजी तिसल । जर जरीन आभरन वर ॥

देवंत भेष लग्यो बनै ॥ दुअ सुदीन रिझ्झय सुनर ॥ छं० ॥ २८ ॥

सलष की बीरता की प्रशंसा और उस पर चालुक्य
भीमदेव के कमर कसने का वर्णन ॥

बूहा—अब्बू वै है गै समर । समर सप्पन तेज ॥

समर उभै समरंग करि । समर सुपुज्जै हेज ॥ छं० ॥ २९ ॥

कुंडलिया - षेमकरन षंगार भर । वर उद्धरन नरिंद ॥

भीमजैत परतापपति । वर पहार वर चंद ॥

वर पहार वर चंद । नरन रूपह नाराइन ॥

अब्बू वै द्रुग भान । अब्बु बंध्यो जिहि पायन ॥

ता उप्पर चालुकक । बीर बंधी तिम सीमह ॥

नर न करन करतार । कन्ह कुंभह वर भीमह ॥ छं० ३० ॥

राजा सलष और उसके पुत्र जैतसो की मुजग्राहकता और
उदारता का वर्णन ।

कवित्त—जै अब्बू वै भार । लाज अब्बू गज रप्यो ॥

मान प्रमान समदान । अंग कवित्तन कवि सप्यो ॥

डोलौ लंमन होइ । घाइ बज्जै रस भीरं ॥

सलष सुतन पामार । समद लज्जा मुख नीरं ॥

मिलि मंत तंत इक्क सु करन । करक कसम सगुनं सुबर १ ॥

संवरन मंत मंतह रवन । भान दान दिष्ये सुबर ॥ छं० ३१ ॥

चालुक्क को मंदोदरी देकर नाता किया, परंतु भीमदेव ने
इच्छिनी के रूप पर मोहित हो अपने प्रधान को भेजा ।

चौपाई—मंदोदरी दीनं पामारं । बर चालुक्क सरप्पन भारं ॥

मुनि इच्छिनी तनरति अवतारं । पठय दिये परधान बिचारं ॥३२॥

सलष ने विचार किया उसे वह प्राण देकर भी न पलटंगा ।

चौपाई—अब्बू वै दूजो न विचारं । गढ़ अब्बू किरि उंच करारं ॥

जो इच्छिनि इच्छन बर अर्षं । गहि करि प्राण मान गढ़ रषं ॥३३॥

भीमदेव का पत्र पढ़ कर जैतसो का क्रुद्ध होना ।

छंद त्रोटक- नर रिङ्गय देषि रसाल रसं । जिवदेव नरिद किये बसयं ॥

जर पट्टन रच्चत अंबरयं । रज रंमि फिरंगत संमर्यं ॥ छं० ३४ ॥

समरू वन रूव बधन्न दुनं । न फिरं तिन ह्यथन सीस पिनं ॥

अति उंच उतंग तुरंग तुरं । धरि चषि गिलंद उडंद पुरं ॥ छं० ३५ ॥

निमिषं जुग जोजनयं बिसष । चित्त चंचल नारि चछं सुरषं ॥

घनसार विहरात आभरनं । अजु आजु निसा दिन सादरन ॥ छं० ३६ ॥

उर मंदोदरि सुंदरीयं । तिन पच्छति इच्छिनि सुंभरयं ॥

इति दषिषयं कग्गर बंचिनियं । तहां जैतकुमार उठ्यौ सुनियं ॥ छं० ३७ ॥

जैतिसिंह का तलवार संभाल कर कहना कि भीमदेव का मन पाषंड से

आकर्षण आदि का मंत्र वश में करके बहुत बढ़ गया है पर उत्तर के

क्षत्रियों से कभी काम नहीं पड़ा है ।

कबित्त—तेग झारि पंमार । जैत जग ह्यथ बत्त किया ॥

मंगै हेल सुगल्ह । तात अरिवेक छिति दिय ॥

मोरा भीम नरिद । बंध पाषंड प्रगट्टे ॥

आकर्षन मोहन मंत्र । जंत्र जुग जुग जे घट्टे ॥

घन द्रव्य देस बलि बल करन । जानै ना उत्तर अस्यौ ॥

धाराधि नाथ धारी धरनि । बहल बेल नाथह धरयो ॥ छं० ३८ ॥

१. मो—सुबर ।

२. को० क० ए—रषं ।

३. क—थी ।

४. मो—ठ्यो ।

गाथा - न थानी घन घती । षग तमस उज्जलौ षरयं ॥
सोयं जैत कुमारं । भारतन थेव नध्ययो धरयं ॥ छं० ३९ ॥
जैतसी का कहना कि पाषंड से अपना बल बढ़ाकर भीमदेव
अपने को अमर समझता है यह उसकी भूल है ।

कवित्त - तेगक्षार पामार । जैत जग हृथ्य उचारिय ॥
अरे भीम पाषंड । सत्र डंडह हनि जारिय ॥
हैषुर पग सुभूमि । दान विद्या अधिकारिय ॥
रूपदान रसग्यान । तत्त नह मत्त बिचारिय ॥
मोरे सुमत्ति भूलै अमर । बुद्धि समर सघन सकल ॥
परधान बंध कीजै मती । रथ जुत्तह पट्टूम कल ॥ छं० ४० ॥
भीमदेव के प्रधान का भीमदेव के बल की बढ़ाई करके कहना
कि वह पुंगल गढ़, आबू, मंडोवर और अजमेर सब जीत लेगा ।

कवित्त -- बंधि पारि परधान । धान थानह द्रव सचिय ॥
ता पच्छे हेगै भंडार । अप्पन धर पत्तिय ॥
ता पच्छे मामंत । नाथ मिलि एक मुवत्तिय ॥
भोरा राइ दिसान । सैध सगपन की कथिय ॥
आरब्ब तेज गढ़ उद्धरन । षेमकरन सिंगार सिर ॥
मुरदेस सलष सुत जैतसी ॥ नव मुकोटि नागौर नर ॥ छं० ४१ ॥

दूहा - घाट किराडू पारकर । लोद्रा लौ जालेर ॥

पुंगल गढ़ आबू सहित । मंडोवर अजमेर ॥ छं० ४२ ॥^१

छंदत्रोटक - नवकोटि मरूस्थल वीरबरं । दश अठु सुअबुं द राज घरं ॥
सर नागत रषिय कोन बरं । धन धनि नरिंद मुलोइ नरं ॥ छं० ४३ ॥
राजा सलष का उत्तर देना कि गोवर्धनधर श्रीकृष्ण
हमारी सहायता करेंगे ॥

साटक - जा रष्या ह्य गर्व प्रीछित रिषं, दावा नलं जालयं ॥
सोयं मातुल नंद बंधि सलिता^२, कावेरि नौ प्रीतयं^३ ॥
जि रष्यौ बर पानि प्रब्वत महा, गोवर्द्धनं धारनं ॥
सोयं सा हरि रिषिय धूवति वरं, जे दृठु गोल्केश्वरं ॥ छं० ४४ ॥

छंदत्रोटक -- सिय मंति सुमंतिय तत्त गुरं । हरि रषिय बालक बिप्पनरं ॥
जम लोकसु आनिय बंध तपं । क्रितकाल सुगोकुल कालयपं ॥ छं० ४५ ॥

१. यह दोहा मो० प्रति में नहीं है ।

२. मो - सरिता ।

३. को - दू - ए - बालयं ।

भयकोपमयं दिवनाथवरं । हरि रष्विय कूट सुअटुधरं ।
 धर धार बरष्विय मेघघनं । जल मुक्कि तुवंतत बुंदजनं ॥छं०४६॥
 कर कोमल पंकज पाइ हरी । करनी कृत धाइय देव करी ॥
 नूप राज सुद्रोपद पुत्तवरं । किय कोटि दुकूल कला निकरं ॥ छ० ४७ ॥
 रधि पंडव मंडव लष्वि ग्रहं । सलषानिय पत्ति सुतत्त वहं ॥ छं० ४८ ॥

दूहा - जिन रष्वी हरि भक्तिवरं । दैहथ्य हम तेग ॥

दुहुन भंति मंडन मरन । सुर नर रष्वी बेग ॥ छं० ४९ ॥

कवित्त -षेमकरन पंगार^१ । महन गोइंद त्रिलोचन ॥

पंच भ्रत पंचौ सुबंध । स्वामि संकट रन मोचन ॥

लै संकथा^२ सिर पांन^३ । मरौं पंडिवति पंच सम ॥

गोइंद सलष नरिद । जोति रष्वन भारतभ्रम ॥

उत्तरिय गढ आबूधनी । रहिय विनग आबू नूपति ॥

कढघौ सुभूत नूप नीठ कै । स्वामि धूम रष्वन सुभति ॥छं० ५०॥

ऐसेही वाक्य जंतसी के भी कहने पर प्रधान का यह कह कर-
 जाना कि सावधान रहना तुम पर हम राजा को लेकर आवेंगे ।

दूहा— हम कहि जैत सुतात सम ॥ गढ वपु रष्वी सच्छ ॥

हम तुम जाइ सुराज पै । लैआवें बर पच्छ ॥ छं० ५१ ॥^४

राजा सलष का अपने यहां तयारी करना और इंछिनी को

बिवाहने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना ॥

कवित्त -गय मलषांनी राव । वीर अगार गढ रष्वै ॥

बर आबू की लाज । षेम क्रंनह सिर भष्वै ॥

बंधो राव धरनि । वीर पामर सुर सष्वी ॥

प्रजा पुलंत नरेस । ग्राम षद्दू दिसि रष्वी ॥

वर मुक्कि वीर धारह धनीय । हृथ्यराज परवान लिषि ॥

सोमेस पुत्र प्रथिराज कौं । दै इंछिनि सगपन सुबिषि ॥छं० ५२॥

कवित्त —बर उद्धरन नरिद । षेम क्रंनह गढ साहिय ॥

जोग मग लछिभयन । षग मगह मुति पाइय ॥

बहुत सिद्ध साधन सुमंडि । जोग आरंभ बिचारिय ॥

मुक्कि त्रिगुन गुन गहै । छिमा सडै क्रमनारिय ॥

१. छ० को० ए०—उद्धरन ।

२. मो०—पुंष्यो ।

३. मो०—भार ।

४. मो० प्रति वै यह दोहा नहीं है ।

हम परत भूमि पंचह सुधर । पहिलै मोघर चंपिहै ॥
गोइंद परे बड़ गुज्जरै । आबू आनि मुजपिहै ॥ छं० ५३ ॥
भीम देव का सत्रष पर चडाई करने के जिषे ग्रने सामंतों से
सलाह प्रौर उन्हें उत्तेजित करना ।

कवित्त —आसोंजै रानिग राव । परबत बेहानै ॥
सो बन गिरि संथान । राव सामंत सिवानै ॥
चार बकिर चालुक्क । राइ भोरा भुवपत्तिय ॥
कहिठ अपौ पंमार । षंडि छंडौ छत पत्तिय ॥
आरद्ध उघाइ मंडली । गुज्जर राइ गरब्बियौ ॥
प्रथिराजराज राजंग गुर । तपि तरक्कस तषियौ ॥ छं० ५४ ॥
चालुक्य प्रौर चौहान से जो बिवाह का झगड़ा पड़ा है उसका
घर्षन चन्द करता है ॥

दूहा —चालुक्का चहुंआन सौ । बंधे तोरन माल ॥
ते कबिचंद प्रकासिया । जे हूंदे दल हाल ॥ छं० ५५ ॥
जैतसि का भीमदेव के संदेसे पर महाक्रोध प्रकाश करके पिता से
कहना कि यह कभी न होना चाहिए ।

दूहा —पठर कुंवर जैतह अनुज । मंगे भोरा राइ ॥
आबू तर उपर करी । कै इच्छिनि परनाइ ॥ छं० ५६ ॥
कवित्त —तत्र त्ररिय जेन पामार । मलय नदन इह कथिय ॥
भोरा भगुर राइ । राइ प्रज्जुन^१ मुष सषिय ॥
रा भोजन भुअ पत्ति । कुलह कुंडल कलिमडिय ॥
सस्त्र बस्त्र करि नस्त्र । तिनां दंतन तिन षंडिय ॥
गुज्जरिय ग्रंवर गो उपपरिय । गेहरि गल नचचन कहै ॥
चालुक्क भष्य बध्यहतनी । किम प्रगट्ठ इच्छनि लहै ॥ छं० ५७ ॥

दूहा —जिन दीनी जीयन मरन । दई हथ्य हम तेक^१ ॥
और न बितन बितिये । सो रन रषष एक^२ ॥ छं० ५८ ॥

कवित्त —तत्र भीमवत्त सत्तषान । जैत बंधी उच्चारिय ॥
भूमि तात अपरनी । रुधिर छूटै गल सारिय ॥
आदि अवनि ब्योहार । धनी धर धार न षंडै ॥
धन लुट्टन गोआल । परह पुक्कारन छड ॥

१. पु० को० ए०—संधार ।

२. को—पान ।

३. भी—तेष ।

४. भी—एक ।

देखिये दीन घर घर फिरै । गरुअतन हरुअतनै ॥

निद्रा पियास छुध मोह^१ तजि । दुख सुष्य इक्क न गनै ॥ छं० ५९ ॥

बूहा—हूअ घर घर बुल्लियै । कुजस कहै सब कोइ^२ ॥

बहु उचार मुख उच्चारे । जुद्ध बिनाइ लषोइ ॥ छं० ६० ॥

सबकी सलाह का यही होना कि चौहान के पास पत्र भेजा जाय ।

बूहा—सकल परिगह एक किय । षट दिस पूजा सद्धि ॥

कागर दै चहुआन कौ । पठइय दूत समद्धि ॥ छं० ६१ ॥

दूत का दिल्ली में जाना और पृथ्वीराज को लड़ाई के लिये प्रचारना ।

छंद वृटनाराच - परदि पुत्ति भेदि भेदि ढिल्लि दिस्सि संभरं ॥

सलष राज काम साज सुद्ध बत्त बिस्तरं ॥ छं० ६२ ॥

सरंन काज चालुकं सबालुकं समत्तियं ॥

रखे जु षेमसी करंन राज पुत्ति षित्रियं^३ ॥ छं० ६३ ॥

चढंत यं गिरा गिरं धरा धरं सुहल्लियं ॥

सतं मुखं जुसत्तमूर सत्र चूर चल्लियं^४ ॥ छं० ६४ ॥

मुनंत मंत्र मंत्रियं सुसोम पुत्र मज्जियं ॥

सुसेन सोभ सोभियं सुछित्त छत्र छज्जियं^५ ॥ ६५ ॥

सलष का पत्त पढ़कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ।

बूहा—सुनि कगगर नृपराज प्रथु । भी आनंद मुभाइ ॥

मानौ बल्ली सूक ते । बीरा रस जल पाइ ॥ छं० ६६ ॥

मंत्री को पृथ्वीराज ने पांच हाथी, सौ घोड़े, पांच सौ रथया आदि बिया
और आप सलष की राजधानी की ओर गया, यह सुनकर

भीमदेव कुढ़ गया ।

कबित्त—पंच हस्ति सत बाजि । द्रव्य दीनो सत पंचं ॥

धरमत्ती मेवात । दियो हिंसार मुखं बं ॥

तेग एक धुरसानि । इक्क माला गुन दानं ॥

आदर सजुत बोल । मुविक मंत्री अगिधानं ॥

संभाग राज सोमेस सुअ । सलष राज कीनो गवम ॥

सुनि बात राय भोरंग हिय । मनो घाव दीनो लषन ॥ छं० ६७ ॥

बूहा—करि जुहार भीमंग सो । चलयो जैत कुंआर ॥

शेमकरन षंगार कौ । दै सिर उप्पर भार ॥ छं० ६८ ॥

१. मो—बुध सोह । २. मो—सोइ ।

३. को—क-ए—पत्रियं । ४. मो०—सतं मुखं जुसत पत्र सूर पत्र चल्लियं ।

५. क-को-ए—सत्रियं ।

इच्छिमी का पृथ्वीराज से ब्याहा जाना सुनकर भीमदेव का
सरदारों से सलाह करना ।

दूहा—गढ साह्यो सुनि भीम ने । कन्यावर प्रथिराज ॥

बोलि मंत्रि सज्जन कह्यौ । दुहूं बाजएं बाज ॥ छं० ६९ ॥

भीमदेव का सलष पर क्रोध प्रकाश करना और दिल्ली दूत

भोजना की उसे चहुआन शरण न रखलै ॥

छंद पदरी - जं बात सुनिय सलेषज बीर । परि तत्त तेल जनु दूंद नीर ॥

प्रजरंत रोस चालुकक भान।धर धरिग धरा षल संरु मान ॥छं०७०॥

बंधू समेत पाताल मेन । जमराज धून को करे हेत ॥

डंकिनी पास पीठी मिडाइ । को तिरै समुद बिन हृथ्य पाइ ॥छं०७१॥

को हृथ्य सिंध पुच्छी जगाइ । को लेइ नाग मनि सीस लाइ ॥

को काल गेह गहै षचि हृथ्या।धालै जु कौन तत अगि बध्या॥छं०७२॥

रष्य सु कौन चालुकक धून । संभर्यौ कौन त्रैलोक हून ॥

मैं सुन्यो कनं जुगिगिनि पुरेस । परमार रषि अप मध्यदेस ॥छं०७३॥

ज्यौं पियौ कृष्ण दावानलेस । त्यौं पिउ गदूढ आवूअ देस ॥

गढ चढै मान मन धरिग भारामम करों जारि मंगारमार ॥छं०७४॥

मुक्कले दूत दिल्लीय थान । रष्ये न मरन ज्यौं चाहुआन ॥ छं०७५ ॥

भीमदेव का बारो घोर मित्र राजाओं की सेना बुलाना और

बढ़ाई की तयारी करना ।

कवित्त -जपि भोरा भीमंग । अंग कंष्य रम बीरह ॥

बिषम झार उद्धार । बारि बोरें अरि नीरह ॥

दिसि^१ दिमान कगर । प्रमान पट्टे पट्टनवै ॥

बारिधि बंदर सिंधु । बाज सोरठ ठट्ठनवै ॥

कच्छे न जध्य जद्व जहर । सेन इक्क भए आनि भर ॥

चालुकक राइ चालंत दल । अम्भर घुम्भर घुमर बर ॥ छं०७६ ॥

आबू पर बढ़ई की तयारी ।

कवित्त -बर गिरनार नरेस । कियो साहस चालुककी ॥

लोहानी कट्ठीर । सेन बंधे भुअलुककी ॥

आबू उपपर कूच । बीर भीमदे दिज्जै ॥

बर निसान मुर गउज । गच्छि^२ जैत्रे अरि पिउजै ॥

१. मो-छार ।

२. को० कु० ए०-२म ।

३. को० कु० ए०-गदिर ।

सहनाइ न फेरिय बीर बजि । सिधुअ राग सु आदरी ॥
पंमार भीम पूजी सहर । बजी कूह गुन गहरी ॥ छं० ७७ ॥

भीमदेव की सेना के कूच की धूम का वर्णन ।

छंद भुजंगप्रयात्—धरा धूरि पूरा।सिरं सेत नेता।षहं षंड षंड । उडी रेन रेतं॥
मदं गधं भीरं । लगे झीर भारं । मनो कज्जलं कूट । कलषंठ थारं ॥छं०७८॥
ढलं ढाल ढालें । चलं ब्रनं ब्रनं । मनो केलि पंचं । रगं वा सुन्नं ॥
चलें चौर चावदिस वात पत्तं । मनो भीरयं भीर वासंत मत्तं ॥ छं० ७९ ॥
नवं नद् नीसान बज्ज अघातं । गजै गैन कै सिध कै गिगिरातं ॥
नवं नद् नफफेरि भेरी सभालं । तरक्कंत तेगं मनो बिज्जु नालं ॥ छं० ८० ॥
करक्के नरं षाल षगं षनक्के । मनो काल ह्थ्यं सुविज्जु झलक्के ॥
अलं वेथलं वेथलें तथ्य नीरं । मनो नंषियं बान रघुनाथ बीरं ॥ छं० ८१ ॥
जलं वेत षुट्टी बनं वेत तुट्टी । थलं वेत छुट्टी फन वेत उट्टी ॥
धरं रेन उट्टी सुलग्गो अभानं । दलं वेत बद्धी पयानं पयानं ॥ छं० ८२ ॥
करी आनि सेना सुआइ गिरहं । मनो पारसं चंद आभा सरहं ॥
कवी बीय औपंम चित्तं बिचारी । उरंहूव माला सिवं ज्यो अघारी॥छं०८३॥
चिहूं कोर डेरा कहूं पीत सेतं । मनो ग्रीषमं अंत उट्टि मेघ मेतं ॥छं० ८४॥
गाथा --आभा सरदं प्रमानं । सेनं सज चालुकं बीर ॥

छिति छत्रीयं छत्रं । जनु बहल छुटि संकरं मेघं ॥ छं० ८५ ॥

छंद भुजंगी—निसानं निसानं निसानंत बज्जै।दिसानं दिसानं दिसानंत गज्जै॥
तमंते तमंते तमं तेज भारे । झमंते झमंते झमंकार झारे ॥ छं०८६ ॥
पुजै नाहि बानं कमानं प्रसारे।इसे राइ चालुक सेना समारे॥छं०८७॥
गाथा—मत्ता मेघ दिसानं । रिस्सानं चालुकं राइ ॥

नैनं तेजति तुट्ठं । ज्यो तत्ताइं अगिगयं बुहं ॥ छं० ८८ ॥

श्राबू की शोभा वर्णन ।

कबित्त—बलि भीमंग नरिद । गद्ध मप्पी चिहूं पासं ॥
नारि गौर सावात । बीर धावै रस रासं ॥
बिय ऊंचो षट कोस । पंच मुर मध्य लंबाइप ॥
बागवान जलयान । जानि कैलास बनाइय ॥
गिरि गंग सहित तिथ्यह जहां । देवघान उद्यान तह ॥
रिषि संत जती जंगम जुगी । रहहि ध्यान आरंभ मह ॥ छं०८९ ॥

भीमदेव का वैदिक धर्म छोड़कर जैन धर्म मानना ।

ब्रूहा—ठानिज्जै मानिज्ज भत । हानिज्जै गुर ग्यान ॥

वेद धर्म जिन भंजए । जैन धर्म परिमान ॥ छं० ९० ॥

ध्रमर सिंह सेवरा की सिद्धि का वर्णन ।

कवित्त—अमर सीह सेवरा । मंत्र भेद उप्पाइय ॥

जैन ध्रम बाचिग । मंत्र कर कगर वाइय ॥

मोर सोर पप्पीह । जीह दददुर सुर लाइय ॥

हथ इथ्य मुझैन । भेद अद्धी निसि आइय ॥

नाइक्क एक दषिण तनी । दषिण दर कूची दइय ॥

चौसटिठ देवि परसाद करि । मंत्र भेद अमरै ठइय ॥ छं० ९१ ॥

भीमदेव का रात के समय कूच करना ।

दूहा—चढघो भीम भोरा सुभर । अंधारी निसि अद्ध ॥

रौरि परी गढ उप्परै । भेद सबै वर षद्ध ॥ छं० ९२ ॥

छंद भुजंगी—उसदेति सदे कुसदं गभीरं । चयं चंद बोधं अबोधं सरीरं ॥

हको हक्क बाजी गजे मेघ नद् । जगे लोइ लोयं कुसदे कुसदं ॥ छं० ९३ ॥

गली बलि छत्ती छितीता छितानी । कमट्टं विमट्टं निठं जाहि रानी ॥

छत्ती छत्र मंत्रे विमंतेति भारे । मुनी क्रन चालुक्क सेवक्क सारे ॥ छं० ९४ ॥

कुंडलिया जिनी ओंडां हंमीर ही । तिन मलषानी भार ॥

दियो कोट चालुक्क कौं । सो दीहा संसार ॥

सों दीहा संसार । भीम अप्पी गढ अद्धौ ॥

कहै बंधु वीरम । राज षंगर गढ चढ्ढौ ॥

हक्यो भीम कुमार । मुक्कि मावित्ता कोडां ॥

चढघो जुद्ध पमार । गयो हमीरसी उंडां ॥ छं० ९५ ॥

गाथा - बलभे बलभो बातं । नह अच्छी वीय भेदयो ॥

भेदै अच्छरि कुलयं । पावारं प्राति बालायं ॥ छं० ९६ ॥

कवित्त वार दीह लगि नवमि । बहुरि रिन रत्तह लग्या ॥

पामारां चालुक्क । सेन लुथिन भोमग्गा ॥

दनु सुदेव है हैयकरत । षल हलि गिरि अंन ।

कोटि तिथि घारीह । धरत धारह पति तंनं ॥

इम भिरत पंच दम वासरह । सूर उद्ध उद्धरन धर ॥

कर हनिग राव गुज्जर दलां । मार मार उचरंत सिर ॥ छं० ९७ ॥

कवित्त—मार मार उच्चार । धार धव दग् भीम दल ॥

षेम करन षंगार । देषि भर भीर तऊ बल ॥

सिर उद्धुत उतकंठ । हंस रस कीय कटारै ॥

अति निसंक अरधंग । कमघ कीनों पंमारै ॥

वह पंकधार धारह घनिय । जुवन जुत्ति जुमहर गनी ॥

ता पच्छ मुगति लम्भय सुवर । चित्ति चित्ति मुनि सिर घुनी ॥ छं० ९८ ॥

कवित्त - आसति अस्तुति अस्त । वस्त छित्री छित रष्ठी ॥

कहै तो रष्ठी हेतु । केइ अगय इह भष्ठी ॥

ईस अचल दिषि अचल । अचल डुलै न पाइ तिन ॥

धू धू धू मंडलह । सार बज्ज्यौ सारन झिन ॥

वेहथ्य दरद्री द्रव्य जचौ । अचल सचल मिर दिष्यइय ॥

षंगार षेम षेमह करन । जित्ति कित्ति अभिलष्यइय ॥ छं० ९९ ॥

बूहा - अचल कहै गिरि सिर धर्यौ । तहिन तें पन पानि ॥

रुधिर सुधिर सस्त्र षस्वौ । घन्नि घन्नि सलषानि ॥ छं० १०० ॥

कवित्त - रष्ठी रष्ठी सलषानि । जूह सलषानि पवारं ॥

वर भीमंग नरिद । सीम दीनौ भर भारं ॥

उद्धं राव उद्धरन । कोट नव कोटी लाजं ॥

पूजा पूज पहार । लाज विम्भ्रतिय साजं ॥

महनसी टंक मारू मरद । गज्जिघार सिर वहिग बन ॥

जाने कि सद् पर सद् गिरि । सुत हंक्यौ मंतह पवन ॥ छं० १०१ ॥

बूहा - मत्त मन मातंग बर । छह पत्ता मुष मंडि ॥

ते षंडे सौ षंड ए । जम किकर कित छंडि ॥ छं० १०२ ॥

गाथा-- छुट्टा मुत्तिय पृहपं । तुटा रुधिराइ धार धारयं ॥

जानिज्जै षहमगं । जग मगं वेह यो पहयं ॥ छं० १०३ ॥

सलष ग्रीर भीम की सेना से घोर युद्ध ।

छंद भुजंगी - मिले सेन पंमार चालुकक एतं । कूह रेन जुट्टे मनौ प्रेत हेतं ॥

झरं सीस तुट्टे विछुट्टे बिहारं । करे गल्ल यजें पिसाचं चिहारं ॥ छं० १०४ ॥

तरक्कंत घायं परें षाइ कच्छी । मनौ नीर मुक्कें तरप्फंत मच्छी ॥

कियौ जुहरं जालिबालानि तत्यै । बढघौ राउ भोरा सिरें अब्बुमत्यै ॥ छं० १०५ ॥

षर्ष चक्करंची मुरंची झनक्कें । बज्ज्यौ जानि घरियार संघ्या ठनक्कें ॥

रुधि घार वारं भई भूमि रती । रमै जानि वासत निस्संक छती ॥ छं० १०६ ॥

सलष का मारा जाना, उसकी बीरता की बड़ाई ॥

कवित्त— षेमकरन षंगार । उद्ध उद्धरन गह्यौ गिरि ॥

बल बरसिध ततार । सार लगै प्रहार सिर ॥

मंस अंत तुट्टई । वीर बंटई जुराज्यौ ॥

जरासिध जोरयो । जोर दिष्यिय ज्यौ पाज्यौ ॥

दिषि मंत मत्त मती उमा । जै जै जै जंपत मुभर ॥

पंमार पंच पंचौ मिले । रह्यौ एक औसाफ घर ॥ छं० १०७ ॥

कवित्त - षेमकरन षंगार । जुरत जौ हर संपन्निय ॥

लिय गिर गुज्जर राइ । कंध निन हंस उडन्निय ॥

सिर तुट्टै धर भिरिग । ढरत कर लई कटारिय ॥

कर कत्ती सुकमंध । कंध बिन करिय पवारिय ॥

बरन बिनत वित्त कबित्त यौ । लुलषिष पमार सुलष्यन ॥

सक्क सों काल कमघज्ज किय । मुकवि चंद कित्ती भषन ॥ छं० १०४ ॥

कुंडलिया - अब्बुअपति पामार पह । लिय गिर गुज्जर राइ ॥

ता पछ वित्त कवित्त यौ । कह्यौ चंद बरदाइ ॥

कह्यौ चंद बरदाइ । कज्जभर बित्त कबित्ती ॥

पट्टन वैहै गै पलान । मुरधर संपत्ती ।

मलष अलष करि कित्ति । मुयसु संमारह जानिय ॥

करन नंद करिवार । गढ्ढ चंपत बष्यानिय ॥ छं० १०९ ॥

भीमदेव का आबूगढ पर अधिकार करना ।

कवित्त - परे शक्ति रन बीर । मरन ज्यौं जानि जम्म बर ॥

पुत्र मित्र सज्जन मुलच्छि । टरे नन काल काल कर ॥

घरी लच्छि घर घरघो । धारि उद्धार पमारं ॥

सह परिगह छह पुन । तुट्टि धारा घर धारं ॥

धुअ धाई भीम^१ लीनौ सुगढ । मुकल पच्छ पुनिम सुदिन ॥

जय दंद^२ बत्त चालुकक मृनि । नभ लग्यौ सलषान तन ॥ छं० ११० ॥

एक महीना पांच दिन आबू में रह कर भीमदेव का अपने

राज्य को लौटना ।

डूहा - एक मास दिन पंच रहि । गढ मुक्यौ तिन बार ॥

पट्टन वै पट्टन गयौ । अब्बू वै सिर भार ॥ छं० १११ ॥

अपने राज्य में आकर भीमदेव ने शहाबूद्दीन को पत्र लिखा

कि आप सारंडू आइए हम आप सिलकर पृथ्वीराज को

जीतें, पत्र बेकर मकवान को भेजना ।

छंद भुजंगी - यपी यान यानं सुअब्बू प्रमानं । गवौ राज पट्टं सु पट्टं निघानं ॥

दियं कग्गदं साहि सुरतान गोरी। करीं भेद^३ वत्तं बर्धौ पिथ्य जोरी ॥ छं० ११२ ॥

घप्यौ साहि गोरी सुमारुंड आवै । हमं सब्ब सेनं पसौ कित्त धावै ॥

दऊं गढ्ढअब्बू रजंबू निघानं । साहि चौहान करि षग्ग पानं ॥ छं० ११३ ॥

तहां मुक्कल्यौ बीर मकवान राजंलिषे कग्गदं चालुकं राजकाजं ॥ छं० ११४ ॥

मकवान से भीमदेव का कहना कि केवल इच्छिनी के ही

कारण से मैंने सलष को सकुटुंब स्वर्ग लोक को भेजा है ।

डूहा—पूत परिगह बंधु सह । मै मुक्कलि लग^४ लोग ॥

एकै इच्छिनि कारनह । मति सलषानि अजोग ॥ छं० ११५ ॥

और मेरे मन का दुःख तब दूर होगा कि जब चौहान पर चढ़ाई करके,
सुलतान मुझसे मिलजाय, और दिल्ली का राज्य अपने हाथ से नष्ट करके ।
गाथा—मम मनरंजन भंजो । सर्जो सेनाइं संभरी देसं ॥

जो मिलई सुरतानं । भंजो राज दिल्लीयं पानं ॥ छं० ११६ ॥

भीमदेव के कागद के समाचारों का सारांश ।

कुंडलिया - कगार गुरिय सहाबदिस । भरि लिषि भोरा राइ ॥

तुम घरि संभरि उत गहो । हिम नागौर निहाई ॥

हम नागौर निहाइ । बंधि सभर गिरि अबू ॥

जौ मिलंत मुहि ०ाइ । देउं घन अंबर दबू ॥

पहु पाकर पटनेर । सीम भण्णर ही अगार ॥

गुज्जरवै गरू अत्त । लिखे गोरी दिस कगार ॥ छं० ११७ ॥

घोड़े, चमर, पद्मीना आदि भेट दे कर शहाबुद्दीन के

यहां भीमदेव का दूत भोजना ।

कवित्त—बहन बटी सौ तुरग चमर पसमी चौरंगा ॥

पंच घाट पंचास । अस्सि तंबोली धंगा ॥

उभय मत्त गजराज । सेत बलभद्र ममानं ॥

लिषि कगार चालुबरु । वोलि सारंग मकवानं ॥

सालोभ अंगनन झूठ मन । चित उदार सच्ची कहन ॥

इन दूत मुलच्छिन होहि नृप । तब मुराज हृथ्यह गहन ॥ छं० ११८ ॥

पत्र पढ़कर सुलतान ने कमान खींचकर कहा किया तो मैं म्लेच्छों

को मारूंगा या खुरसान रहूंगा ।

बूहा --सुनि कगार गोरी गहअ । कर षंची कम्पान ॥

कै भंजो मेछान दल । कै रंजो पुरसान ॥ छं० ११९ ॥

कवित्त - षां तनार पुरसान । पान न्याजीषां हस्तम ॥

षां पिरोज पाहार । बली निमुरति जुद्ध जम ॥

तुंगीषा निरहुंति । अगवानी दल पानी ॥

है उजबक उज्जाकूं रेह । रण्यन मै दानी ॥

चालुबरु लिखे कम्मद जुवै । बपतवान दस्सन दुनम ॥

हंमीर मिले हंमीर वर । वर भीमानी भीम रम ॥ छं० १२० ॥

सुलतान ने कहा कि दान, खज्ज, विद्या और सम्पत्ति ये

सामने में नहीं होते ।

बूहा --कही बत्त सुरतान नै । जे' सारंग वर बीर ॥

दान खग विद्या विभो । एनह बंदै सीर ॥ छं० १२१ ॥

अरिल्ल—दानरु षग बिभीदी बंदे । लच्छि बीर पाषंड उमंडे ॥

को अष्वै लच्छी परिमानं।मोहि आज चरका चहुआनं ॥छं०१२२॥

गाथा—भूमी द्रव सुलच्छी । बंका बीरां इवं कियं भूमी ॥

नह बंकी घर कबं । बंक बीराइं बंकियं होई ॥ छं० १२३ ॥

पृथ्वी वीरभोग्या है भीमदेव मुझसे क्या शेखी मारता है मैं उसे
भी मारुंगा ।

कवित्त— बीर भोग वसुमती । बीरं बंका अनुसरई ॥

बीर दान भोगवै । बीर षगह गुर करई ॥

अन्न पान रस द्रवै । लगै काइर नह अच्छी ॥

है पुर षगह धार । बीर भोगह बर अच्छी ॥

जंपै न बीर सारंगतं । भोरा नाम अभंग भर ॥

भुगवै कौन को भुगिहैं । करौं चरकका पगवर ॥ छं० १२४ ॥

श्लोक - न कस्यापि कुले जाता न कस्य नरनारियम् ॥

हयक्षुर लङ्ग धाराच । बीरभोगी वसुधरा ॥ छं० १२५ ॥

पह सुनकर सारंगदेव मकवाना का क्रोध करके भीमदेव की
बड़ाई करना ।

दूहा -सुनिय मत्त मारंगवर । केहा देहा नेह ॥

दई दुहथ्ये विजरै । हिंदू मेछन छेह ॥ छं० १२६ ॥

छंद भुजंगी— न हिंदू न मेछं बरै काहि कोया।बरै ताहि तायं रसं बीर भोयं॥

कहै बत्त भोरं सुभोराति नाम।भज्यौ ध्वव अब्ब लभ्यो सीस नामं॥छं०१२७॥

शाहाबुद्दीन का फिर कहना कि पहिले चौहान को मारुंगा पीछे
भीमदेव चालुक को ।

कवित्त पुनि गज्जन वंमाहि । कहै भोरा भीमंदे ॥

घर पाषंड निदान । बीर विद्यादिय बंदे ॥

दीहा दोती मंझ । मोहि चहुआन चरकका ॥

ता पच्छै गल्हवान । गल्ह करिहै घर घक्का ॥

पाषंड डंड रच्चै नही । जिम्मीजर कंकर बरा ॥

संभरिय काल कंटक हनौं । तापाछें गुज्जर घरा ॥ छं० १२८ ॥

मकवाना सुलतान की बात सुन बोला कि चालुक का इस जब
बलता है तो काल कांपता है ।

कवित्त—सुने सह सुलतान । बोल बासीठ बुसदे ॥

रस रसाल केरी करकि । कर चौपि लुहदे ॥

भीमां सौं भारथ्य । चाव लगे सुरतानं ॥

मुसलमान दीवान । बंक बोत्यौ मकवानं ॥

चालुक्य राह चालंत । काल कलह छंडन करे ॥
मेवार अजैपुर गञ्जनै । तीन राइ तिज्जर डरे ॥ छं० १२९ ॥
चालुक्य के प्रागे जालंधर, बंग, तिलंगी, कोंकन, कच्छ, परोट
मरहट्ठे प्रादि कोई नहीं ठहर सकते ।

कवित्त - नहि जालंधर वार । बंग चंगी न तिलंगी ॥
कुंकन कच्छ परोट । थट्ट सिधू सरभंगी ॥
गवरि गवर गुज्जरी । सबर मरहठ अरु पंडं ॥
मुरि मरहठ नंदवार । राइ मालव गुन छंडं ॥
चामिली बार डर सिधबर । सकहि न मंडन षग रुकि ॥
चालुक्य राइ चालंत दल । काल कलह मंडै न झुकि ॥ छं० १३० ॥

जिस भीमदेव ने बघेलों को जीता, प्राबू को तोड़ा और जावनों
को हराया उसको जीतना सहज नहीं उसे ब्रह्मा ने अपने हाथ
से बनाया है ।

कवित्त - जिन जूना जंगाल । बाढ बाढेल उछट्टी ॥
जिन आमावळि अंग । देव बाघेल पलट्टी ॥
जिन भरि भोरा भीम । पालि चंपी आसेरी ॥
जिन जोग बेग जट्टौ । निकारि अब्बू अतसेरी ॥
मकवान बोलि अगवान सौ । मकरि ताम मम जुद्ध सचि ॥
ए धरनि भीम भंजन घहण । अप्प कियो हरतार रचि ॥ छं० १३१ ॥

मुनकर मुलतान को प्रांखे क्रोध से लाल हो गईं और वह
उसको मारने पर उद्यत हुआ ।

कवित्त - कलह न छंडे काल । देश पुब्बेस पुलंगी ॥
अग्निवान दधि प्रभा । वाइ कूनारस मंगी ॥
मुसलमान दीवान । साह अग्गे इह बुल्यो ॥
लरै चंपि चट्टुआन । कारु षगर सं तुल्यो ॥
मुनि श्रवन मग्ग रत्ते नयन । बयन साहि तत्ते तमसि ॥
जानै कि अग्गि सिचिय सु घुत । ताम तेज चड्यो विहुसि ॥ छं० १३२ ॥

कवित्त - मदपानी कि करै । कि जंपै मतिहीना ॥
कि वायस ना भयै । कि न कवि करै सुहीना ॥
अबघ बाल कि कहै । बलह सौ कि नह होई ॥
प्रासवंत कि करै । पुष्पावंतह कि जोई ॥

किं करै काम अंती कठिन । किं न करै लोभी नवन ॥
किं करै न तसकर त्रप्यवर । अबुध इष्ट सत्तह सुमन ॥ छं० १३३॥
बजीर ने समझाया कि दूत नहीं मारा जाता, इसमें
बड़ा प्रयत्न होगा ॥

कवित्त - रमन रोस सुरतान । हसम हाजुर फुरमानं ॥
बर बजीर बरजंत । अब लगै सुबिहानं ॥
अवध बसीठर भट्ट । नीति हिं तुरकानं ॥
स्वामि सकल बोलंत । बध्ध अरु सप्य धानं ॥
जल्लान आन साहाबदी । हल हलाल किज्जै गमन ॥
अनहल आलिल भैरवा । षलक धान षग्गह हसन ॥ छं० १३४॥
छंद मोतीदाम-षयं षग षत्तिय मत्त प्रमान । भयी रस वीर हलाहल जान ॥
तमी तम लगि नभी नभ भान । उधौ जनु बद्दल फुट्टि प्रमान ॥ छं० १३५॥
शहाबुद्दीन को महा क्रोध हुआ, एक सामंत ने बजीर से कहा
कि तुम ठीक कहते हो पर यह कैसी गंवारों
सी बात करता है ।

रिसं रिस रत्त तमी तम नैन । उरं घन वीर सिरं लगि मैन ॥
हुकम हजूर वजीर सुपान दलं । दल प्रब्ब भई रस धान ॥ छं० १३६ ॥
वजीरन मद्धिन्न क्रियो बल माहि । लगी जनु विज्जल श्री घन चाहि ॥
करी करुना रस केलि सुभ्रत्त । मगी वर साहि कमान अहित्त ॥ छं० १३७॥
बुल्यौ बर गामिय गुज्ज गवार । कहै सुरतानप सेन उबार ॥
टगट्टग चाहि रहे सब लोइ । दिष्यो वर तेज अद्भुत्त सोइ ॥ छं० १३९॥

यह सुन मकवाना को क्रोध आगया, उसने सामंत को
एक हाथ मारा कि सिर जुदा हो गया ॥

छंदभुजंगी-बढी वीर बल्ली मुऊभी अभत्ती।पर्यौ सीस अर्ग मनौ साहि मत्ती॥
उठी छिच्छ उंची रुधि छीन छीनं । मनौ वीर मत्ते सिवा जाल पीनं॥ छं १४॥
धरी एक रवि मंडलं छिद्रकारी । तुटे कंध कामंध भौ जुद्ध भारी ॥ छं० १४१॥

इस पर ऐसा हाहाकार मचगया ।

छंद गीतमालती ठलकंत ढालें, चंद्र सालें, बंध हालें, प्रब्बतं ॥
रस रसनि रागं, बहुत्त आगं, वीरजागं, उर्वतं ॥
उर्वी न पावै, देव गावै, सार, भावै वीरयं ॥
मकवान धानं, भेदि भानं, करि प्रमानं, धीरयं ॥ छं० १४२॥
बहु मंत कंतिय, भंति भंतिय, दंत दंतिय, उम्भरं ॥
नग नग निमानं, बुद्धि दानं, निव पारानं नीसरं ॥ छं० १४३॥

मकवान का अपने चित्त में सुलतान के संवेसा न मानने
पर विचार ।

दूहा - कही चित्त मकवान नैं । नह मंनी सुरतान ॥

अप्पन अप्पन सथ्य सों । बल मडै चहुआन ॥ छं० १४४ ॥

कवित्त - करि सिद्धानी आन । बंग जे सुन हित हिंदू ॥

ते हिंदू मुष निद । निगम निदे गुन जिंद ॥

इक्क बार सुनि बंग । सहस पातक रजपूतन ॥

नरकह सोधि नरककह । कबन कहुँ न्रक पुत्तन ॥

रजपूत मुक्ति' षग चित्तषरि । विधि विनान यों न्रम्मयो ॥

कलि जाहि मिटै महि मंडलहि । पे न मिटै तन श्रम्मयो ॥ छं० १४५ ॥

इषर चालुक्क राय का अपनी सेना सजना ॥

गाथा—सजी सेन असुरायं । उप्पमं चंद देवियं बरयं ॥

जानिज्जै परमानं । कै हल्लियं बद्दलं साहि ॥ छं० १४६ ॥

कवित्त—बद्दल दल बल उभरि ॥ सेन धु मर घट धुम्मरि ॥

सयन बयन जकि नयन । मयन मत्ते अनु धुं मरि ॥

अरि अरिष्ट सम दि'ट । धिष्ट धारन धर धुम्मर ॥

अग्नि झाल विन धूम । इसे दण्डिय गज झुम्मर ॥

चालुक्क राइ मज्जे मयन । हय हिसार न उच्छरै ॥

सिद्धान बंस सिद्धान गति । सिद्धइष्ट गुन विस्तरै ॥ छं० १४७ ॥

उधर शहाबुद्दीन ने तो अपने सामंत के मरने पर क्रोध कर
मकवान को एक तीर मारा और मकवान ने हैजम हुजाब
के सिर में एक तेग ऐसी मारी कि दोनों गिर गए ।

कवित्त—सुनि माहाब वजीर । बोलि बल की अप्पानां ॥

क्रक्कस कर तें वर । कमान तानी लगि कानां ॥

छल छुट्टी छातीह । हनत सारंग सुषानां ॥

मार मार उच्चार । वेग कहुँ मकवानां ॥

हैजम हुजाब सिर उच्छटी । बीजलि कै अंबर अरी ॥

क्रानां अंजि पुप्परि षला । मही अग्नि उच्छटी परी ॥ छं० १४८ ॥

कवित्त—हैजम धुकि धर पर्यो । पन्यो माझी मकवानां ॥

रस रसाल लुट्टीय । अंब लगिय सुरताना ॥

गवो साहि बोसाफ । साष भग्मिय दुनियाना ॥

बुरे बुरी सब बोइ । कहुत संजम सुनियाना ॥

करतार हृथ नेती कला । कियो मुलभ्रमै अप्पना ॥
 पापंग देह मट्टी मिलै । दीदे देषि मु सुप्पना ॥ छं० १४९ ॥
 भीमबेव ने अपने दूत का माराजाना मुन बड़ा क्रोध किया
 और गजनी पर चढ़ाई के लिये वह सेना सजने लगा ।

कवित्त—मुन्यौ भीमर बध्यो । बसीठ षोलै षज्जीनां ॥
 करि सिद्धानिय आन । मेट मेछाइन दीनां ॥
 बंग सद् कंनान । जीह् जंना जन बद्धौ ॥
 असी सहस्स सेना । सजन गोरी जर कद्धौ ॥
 ढल्लानं मलंढी चाल जनु । असम समुदसेना तिरिय ॥
 मय मोह छंडि रत्ते विषम । दइ दिवान गुन दुस्तरिय ॥ छं० १५० ॥
 छंद फारक—रतानी बानी यूबानी । नीलानी सोहै सावानी ॥
 भुरवानी बानी बोलंदे । सिहानी सकर तौलंदे ॥
 सोरठ्ठी बह निहट्टायं । हरम जहूरहु बदायं ॥
 अग्गिबान कमान सस्त्रायं । सर सस्त्र कमा मय यंत्रायं ॥
 ॥ छं० १५१ ॥

दूहा—ढल्लानं हल्लौ हलं । चौरा नंच बदंत ॥
 भोरानं भुअ उप्परै । मै छुट्टा मै मंत ॥ छं० ॥ १५२ ॥
 दूहा—घोरानं छत्रं छतं । मोरानं मंथ्यान ॥
 सारन्नी पण्वर जरी । हेमानी गत्तान ॥ छं० ॥ १५३ ॥
 सेना सजने पर आग लगने से अपशकुन होना ।
 कवित्त नीला नीनी जूह । घाम लग्गी चालुककां ॥
 हक्कारी हाकंत । सध्य सत्तरि वै अक्कां ॥
 गोम गज्ज उछरीय । घाम घर कं पि हलक्किय ॥
 नाग भाग सत दीह । नीय तन कं प सलक्किय ॥
 प्रज्जाल माल हिचाल हलि । कलि कलाप कलि उल्लटिय ॥
 पहु राइ पिद्ध छित्तंग छिति । नित नियंग सुर उच्छटिय ॥ छं० १५४ ॥
 दूहा—बोली बंधनि हाय धन । पंमारे चहुआन ।
 बीरं दाइ बसीठियां । है हिंदू सुरतान ॥ छं० १५५ ॥
 दूहा—जित्ती घर चहुआन की । जित्ती ताइ तुषार ॥
 परठी पट्टनवै परत । मग्गां दान सवार ॥ छं० ॥ १५६ ॥

१. यह छन्द मो० और क० प्रतियो में वही है ।

२ क० कौ-बोली ।

३. मो-जित्तीक ।

भीमबेब का प्रतिज्ञा करना कि जो पुरासान के राज्य पर
शहाबुद्दीन रहै तो मेरा नाम नहीं ।

छंद भुजंगी-करी राज भोरा प्रतंग्या प्रमानं । हसे बोल अषे सु उंचेह मानं ॥
रहै साहि गोरी पुरासान थानं । नहीं नाम चालुकक भीमं परानं ॥छं० १५७॥
धरूषो नाम रजपूत सू बंध लट्टी । इती दोष दंदं दहै जो न कट्टी ॥
धरै ध्यान छत्री डुलै चित्त मंझी । परे नक्क आब्रत बुझसै न सुझसै ॥छं० १५८॥
जिते बाल उपबैन झूठे उचारै । धरै नाम छत्री न सस्त्रं पचारै ॥
इमं^१ बीर बीरं कहो भीमराजं । गजे गुंग नीसान ईसान गाजं ॥छं० १५९॥

उधर शहाबुद्दीन ने अपनी सेना सजी ।

कवित्त गज्जनेस गोरीय । सेन ह्य गय अपसज्जिय ॥
षां ततार पुरसान । भीर माही पव रज्जिय ॥
ह्य गय नर असुरान । मुनी चावहिम वनं ॥
पट्टनवै पट्टन । बीर गोरी जुध मत्तं ॥
मैमंत राज प्रथिराज पर । अब्बू वै ऊपर करै ॥
मुरतान सेज सज्जे मुने । धर गिरजल रज उच्छरै ॥ छं० १६० ॥
मुलतान और चालुक के अपनी अपनी सेना सजाने
पर चहुबान का भी दिल्ली और नागौरादि में
अपनी सेना सजाना ।

हुहा - दिल्ली वै सेना सजय । रंजन रन रावत्त ।

मधुर महुब्वति षानवर । दिय कग्गद गुन मत्त ॥ छं० १६१ ॥

छंद हनूफाल रावत्त रत्त दिसान । सजि चालि^१ सेन मुरतान ॥

साहंड गोरिय आइ । बहु सेन असेष^१ सुजाइ ॥ छं० १६२ ॥

प्रब्बाह सेन समुद् । मिटि गई छित्ति सरद् ॥

नागौर दिल्लीय राज । हज्जार अठु विराज ॥ छं० १६३ ॥

सुभ च्यारि सहस प्रमान । षट उभै सेना मान ॥

चालुकक भोरा भीम । को काल चंपै सीम ॥

बर करै तमकत रीस । तिहि जगै जगिगिरीस ॥

सोझति चालुक राइ । मनु बीर कच्छि^१ प्रवाइ ॥ छं० १६४ ॥

कैमास का मति उपजाना कि ऐसे में अपने दोनों शत्रुओं

से लड़ने का अच्छा अवसर है ।

कवित्त—चाहुबान सामंत । मंत कैमास उपाइय ॥

बंदि लग हुंकार । बंध बंधान उचाइय ॥

दस गुं-गां बल देषि । साजि साधन सु मुग्धह ॥
 दुहु मुष्पांहीं लगि । बीच चंपी सुम्रदंगह ॥
 गोरीय एक गुज्जर धनी । मुष विचित्र घनि संभरी ॥
 हज्जार डून द्वादस भरह । दो मिलगि दुहु दिसि बुरी ॥ छं० १६५ ॥

कबित्त - साहंडै साहाब । दीन मुरतान विलग्या ॥
 सोझनी भर भीम । राव लगह अगदग्या ॥
 नागौरें सामत । ईम चहुजान पियार्ई ॥
 अम रानि गुज्जर पनी । जानि अरंग बजाई ॥
 दो बीच हजारी अट्ठ नव । ग्रंहा मत परट्टयो ॥
 चामंड राइ कैमास सम । पीनी पग्य बरट्टयो ॥ छं० १६६ ॥

कैमास की उपजाई मति के निरवय के लिये नागौर में मता
 मंडना अर्थात् सब रासंतो की मना होना उसमें कैमासादि का
 अपना अपना विचार प्रकाश करना ।

कबित्त मनौ मडि नागौर । राइ कैमास विचार ॥
 दल समुह मुरतान । मिल्यो नाहर परिहारं ॥
 सोझनी चाहुकक । राइ भाग बढि लग्या ॥
 नुछ अराज मजि अह । जियन कज्जं नह भग्या ॥
 चामंड जंत उच्चारयो । बाचारो लंवी मुभुअ ॥
 मुरतान सेन कितस कहै । हम ठेले पुरमान धुअ ॥ छं० १६७ ॥
 उसमें चामंड राव और जंत राव की प्रतिज्ञा ।

कबित्त - कही- तो बंधी साहि । धाय चालुक विडारों ॥
 हम स्वामि काज मामंत । मरन तन तिनुक बिचारों ॥
 अप्प अंग मुज्जीव । पुत्र बंधव पिजि भामं ॥
 चक्रवर्ति तिन मान । वीत रागी करि जानं ॥
 अंतरौ एक कैमास सुनि । मरन तुच्छ मारन बहुल ॥
 उन असमो नन आम हम । निरगुन ए वे सहित मल ॥ छं० १६८ ॥

१. ए-प्रदंभी ।

२. कृ० को०-बावारी

३. कृ० को०--'सेन' नहीं है ।

४. कृ० को०--'कितक' की जगह 'कितक' है ।

५. मों-कहै ।

६. कृ० को०-धामि ।

७. सो०--'अप्प अंग मैं मुजीव' ।

बागरी श्यात् देव राव बगरी का कथन ।

कवित्त — पहिलै भंजौ भीम । कहिग बगरी बिसाले ॥
महनसीह^१ परिहार । देह दुज्जर मुंछाले ॥
राज दुअं जह जहह । जीभ जहो जा मानिय ॥
ओ^२ छाही सारंग । देव पट्टे पर बानिय ॥
चालुक्क चंपि घूनी घरा । सो सुरतानह संभरी ॥
बेदलह घाइ बघाइयां । बोल उचा उं चां मरी^३ ॥ छं० १६९ ॥

राव बड़ गुज्जर का कथन ।

कवित्त — रा प्रथिराज प्रसंग । राव बोले बड़ गुज्जर ॥
तिन तोली तरवारि । माह उप्पर दक्क दुज्जर^४ ॥
कैमासै गढ़ सौंपि । कछौ कोटां रा रष्वन ॥
तुं मंत्री सस्त्रघार । भार भारी भर^५ भष्वन ॥
आलोच^६ अबारी संभरिय । मति बिहत्त ते बत्त हुअ^७ ॥
आरीर ह्जारी पंच सें । चाहुआन षल घत^८ तुअ ॥ छं० १७० ॥
लोहाना का घागे होना और सेना ले अहां चाहुवान सेना फेरता
बा बहां जा मिलना ।

कवित्त — लोहानो भयो अग्य । तोन सै पंच हलक्किय ॥
पंच हजारह लेन । एक दस अठुह भेरिय ॥
उच्छंगी संनाह । टारि ते सुभट सनेरिय ॥
मिले जाय जहां अग्य^९ । फौज चहुआन सुफेरिय ॥
उत्तंग ढाल बैरष बनिय । पज्जूनह सो टारियह ॥
अस पत्ति सेन नष षग कहि । सावन सार मुनत्त यह ॥ छं० १७१ ॥
सामंतो का मत हो जाने पर चाहुवान ने अपनी सेना के दो भाग
किए, एक चामुंड राव जैतसो के साथ मुलतान पर चढ़ा एक
और दूसरा चालुक्क भीम देव पर ।

कवित्त — मतो मंडि सामंत । सेन बंटे चहुआनं ॥
जैतसि राव चमुंड । मुक्कि कैमासहयानं ॥

१. क० को०—महनसिह ।

२. मो०—ऊहा ।

३. मो०—“ऊचा उं चां मरी” की जाह “बाल उवाए उं मरी” ।

४. को० क०—उज्जर ।

५. क० को०—हर ।

६. मो०—आलोष ।

७. मो०—“मति बिहत्त ते बत्त हुआ” की जमह—“बत्त बहुत्तति बत्त हुआ”

८. मो०—बत्त ।

अड्डे ए संबोधि । चंपि चालुक मुष लग्गा ॥
 जित्ते मिल्ले संभरी । जोग सहै अप भग्गा ॥
 बंटई फौज प्रथिराज भर । अर्क बार राका हरी ॥
 वर लाज लई घर संभरी । संभरि वच कंधह धरी ॥ १७२ ॥
 बुधोरी चढाइयो की सेना की शोभा का बर्णन ॥

छंद भुजंगी — बंटी फौज दूनो चढ़े चाहुआनं। भरं स्वामि दूनो भरे चित्तवानं ॥
 तिनं की उपमा कबी चंद पढ़्ढे। मनो कर्क अरु मक्र निसिदीह बढ्ढे ॥ छं० १७३ ॥
 दुई इक्क मनै उमनै नसाई । करी संभरी भ्रत्य दूनो दुहाई ॥
 भ्रितं मुष उंचं दिपै चाहुआनं । मनो डंमरी बाल उगो विभानं ॥ छं० १७४ ॥
 फिरै उंच तेजं तुरं गंति ताजी । जिनै ' देषतै नैन गत्यै^१ न लाजी ॥
 षचै बाग उट्ठै चुट्ठकै हरेवं । मनो मंडियं मौज केकी परेवं ॥ १७५ ॥
 पहू पाइ मंडं तनं वित इंधी^२ । मनो पानुरं चातुरं तं विसंधी ॥
 कबी चंद ओपमं दंती करती । मनो कज्जलं कूट घावै धरती ॥ छं० १७६ ॥
 धिनं^३ उपरं ढाल नेत्रे सुरंगं । तिनं ओपमा चंद चिती मुचंगं ॥
 जरे पाटनारी बिचं हेम गुंथे । मनो षज्जुरी केलि जुग मेर मंथे ॥ छं० १७७ ॥
 ठनकंठ घंटा चं अंग मोरें । मनो कूलटा छैल चित चालि चोरें ॥
 झंमै दंत दंती सुनेनं^४ विराजै । मनो विज्ज लत्ता नभं मध्य छाजै^५ ॥ १७८ ॥
 मुषं सूर सूरं मुमुच्छी विराजै । तिनं चंद बीजं गत ' देषि लाजै ॥
 पटे वीय पासं उपमा सुकब्बी । मनो राह बीयं रनं चंपि रब्बी ॥ छं० १७९ ॥
 सजे आवधं सूर छतीस डब्बे । मनो राह रूपं ससी कोटी डब्बे^६ ॥
 करी सेन गोणं मिलानं दवानं । वढी वेय बाजू सरित्ता किजानं ॥ छं० १८० ॥
 गह्यो मुष गोरी प्रथीराज राजं । मनो राह अरु भानं मिलि जुद्धसाजं ॥
 मुषं रोकि मुतानं को चाहुआनं । उते रोकि कैमास भोरा मुहानं ॥ छं० १८१ ॥
 दूहा — षीची षग परट्ठ वर । वर भीमंग चालुक ॥
 तिहुं दिस तिहुं वर घाइया । ज्यो पच्छिमी आरक्क ॥ छं० १८२ ॥

१. मो०—तिनी ।

२. क० को० मो०—गति अंन ।

३. मो०—अधी ।

४. क० धिनं । को० मो०—तिनं ।

५. को० क० मो०—सनेनं ।

६. मो०—साजै ।

७. मो०—गती ।

८. मो०—रतं ।

९. मो०—हृष्ये ।

कुंडलिया--मुच्छ उच्छटिय बंक भरि । हसि कपोल भय लोल ॥

जौं जंबुक बर घत्ति है । तौ सिधानै तोल ॥

तौ सिधानै तोल । लोल लंबी हलि बाहं ॥

मनों बीर सौ अंग । उठे सिर गंग प्रवाहं ॥

तन उत्तंग आरत्त । मत्त आरत्त सुदिट्टी ॥

मानौ चालुक राय । देव दूसासन उट्टी ॥ छं० १३ ॥

इधर सुरतान का मुख अर्थात् मुहाना रोक और उधर भीम से

लड़ने के लिये चौहान का नागौर जाना ॥

बूहा--रोकि मुष्प सुरतान को । चहुवान दै वान ॥

बर बसीठ भोरा सुभट । चलि नागौर निथान ॥ छं० १८४ ॥

छं० विअष्यरी--नागौरें चहुआन पिथाई । चंद विअष्यर छंदह गाई ॥

सोझती चालुक मुष्प लगा । नागौरें गोरी दल पग्गा ॥ छं० १८५ ॥

असपति गजपति नरपति बीरं । धा तिहुं दिसि मज्ज सरीरं ॥

ज्यों कुरपेत किस्न मति कीनी । भारथ बेन मेन मति भीनी ॥ छं० १८६ ॥

सामदान करि भेद सुदंडं । बंधे वर चहुआन विपंडं ॥

जिन चहुआन परद्वर लीनी । बहुत दोष देवरान भीनी ॥ छं० १८७ ॥

सुबर बीर कीनो वर असं । किस्न सुगोकुल मयुरा कंसं ॥

गोरी वै मद पान उमत्ता । तिन बसीठ हंते बिन मत्ता ॥ छं० १८८ ॥

पिझ चालुक निसान बजाए । दल समूह मजि दुम्भैर घाए ॥

दुहुं बंध्यो नर बैर प्रमानं । उत गोरी सम्हो चहुआनं ॥ छं० १८९ ॥

चालुक मतो विचार न कीनो । अमर सीह बोल्यो मति झीनो ॥

भैरु भट्ट सुबंधन लीला । करो मंत्र वर मंच अकीला ॥ छं० १९० ॥

जुद मंत बंधो गुरतानं । अरु गोरीसाहो चहुआनं ॥

छल बल करि कैमासह बंधो । सुचि सुमंत्र सुचि क्रमं विरुघो ॥ छं० १९१ ॥

कबित्त--मिलि धर भीमंगराव । चाव पत्तो पति गुज्जर ॥

बिपम बैर उद्धार वीरत्त सुदुज्जर ॥

चाहुआन सुरतान । काम कंदल क्रत लगं ॥

देवंग बटल सीम । मार जरजीज सुजगं ॥

कलमलिय उअर परताप तन । छुध पियास निद्रा गमिय ॥

अनुराग तरुनि षल षेध जियादुअ दुराह चालुक दमिय ॥ छं० १९२ ॥

१. को० क० मो०--सम्हो ।

२. मो०--"सुचि सुमंत्र सुचि क्रमं विरुघी"--की जगह "सुचि सुक्रम सुचि मंत्र विरुघी ।"

३. मो०--उज्जर ।

४. मो०--जरि ।

कवित्त—सोझती है गै उमार । दल अरि संपत्ती ॥

सुभर सार भीमंग । गज्जि गज्जन अतिरत्ती^१ ॥

आयस रहमि विचार । मुष्प मंत्री आभाषिय ॥

तिहि निसाह परधान । अंध लच्छी उप्पासिय^२ ॥

पामार राम रन उद्धरन । गुर गुरीठ पैरंग गुर ॥

रानिग झाल पग झालि नर^३ । वीर देव बघ्वेल धुर ॥ छं० १९३ ॥

कवित्त—सोढा सारंग देव । गंग डाभी सु गुज्जगुर ॥

बर चाविग^४ मुदेव । धरि बाघेल धंमधुर^५ ॥

अमर सीह सेवरा । वीर विद्या बल जासं ॥

मित्र अट्ट मिलि काज । चित चितिय चित सारं ॥

उच्चरै गरुव भीमंग तब । करी मंत्र उच्चार चित ॥

पंमार सरन चहुआन गथ । लहौ हीर सगपन्न हित ॥ छं० १९४ ॥

सब सामंतों का गुज्जर नरेश से कहना ।

छंद पदरी—सम कही सबन गुज्जर नरेस । चित्ती सुसब्ब कारन सुरेस ॥

पम्मार सरन चहुआन रप्प । औगुन अनेक अण्वेव नण्व^६ ॥ छं० १९५ ॥

साहाब दीन सारंग मद्धि । उम्भरे कोप बोल्थी विरुद्ध ॥

चितेव चित्त सज्जी समंत । मो कज्ज लज्ज मनकंथ संत ॥ छं० १९६ ॥

उच्चरिग नाम सारंग देव । पुच्छो सुराव पुरंभ भेव ॥

सनमध सगपन चाहुआन । उच्चरिग मंत्र चित्ती उरान ॥ छं० १९७ ॥

जै जंपि तांम पैरंभ राव । बूझै न मंत्र कौ अंम ठाव ॥

अपराध कौन पम्मार कीन । ताहन्य मशोदरि तुमहि दीन ॥ छं० १९८ ॥

अब रचौ बुद्धि मो राज मार । सब होइ सोइ लग्गी उहार ॥

उच्चरिग झाल रानिग ताम । गत मोव^७ न कीजै पत्त काम ॥ छं० १९९ ॥

पतिसाह बैर बंध्यो बिराह । समाज रूह मनु सिर गजाह ॥

बघ्वेल मुजंपे वीर देव । अनभूत भेव कारज्ज एव ॥ छं० २०० ॥

सनमंध कुंवर कचरा सुकाज । ता सोह सगपन संधि^८ लाज ॥

तुम करहु सधि सम चाहुआन।मिलि जुरी जुद्ध मुरतान ठान ॥ छं० २०१ ॥

हन भंजि पित्त गुज्जर नरेस । पित्त काज कित्ति बद्ध असेस ॥

सेवरा ताम त मे अमरसीह । तुम कही बत्त सांची^९ सलीह ॥ छं० २०२ ॥

१. मो०—अति अती । २. मो०—उपासिय । ३. कु० को० मो०—बल ।

४. मो०—चारचक्र । ५. मो०—धर्मधुर । ६. मो०—तप ।

७. मो०—चित । ८. मो०—बंधि । ९. मो०—संची ।

बलि^१ बबन वेद भीमंग राव । चहुआन थान उच्चन्यौ दाव ।
 बंधियै बंध उत्तंग साव । उध^२ गज्ज माह प्रथिराज राव ॥छं० २०३॥
 प्रथिराज काज कैमास अथ्य^३ । सामंत सूर सब तास सथ्य^४ ॥
 करि अथ्य माहि विद्या अभूत । अति इष्ट अग्यकारी सनूत ॥छं० २०४॥
 बसि करौ जाइ दाहिम सोइ । चहुआन काज बूझै न जोइ ।
 बसि करौ सब्ब सामंत सूर । बल द्रव्य इष्ट^५ अथ्यीस पूर ॥छं० २०५॥
 उद्धरौ आनि नागौर देस । भीमंग बद्धि कित्ती असेस ॥
 प्रथिराज आइ लग्गो^६ सुपाइ । सामंत सूर भर सथ्य आइ ॥छं० २०६॥
 बसि करौ सब्ब दल सजौ सार । भंजौ सुजाइ साहाब भार ॥
 हनि षेत जित्त गज्जन नरिद । जस बडे पहुमि उद्धार इंद ॥छं० २०७॥
 भति सुनी भीम सब अमरसीह । भल भलो पद्धि सब भषी लीह ॥
 नागौर अमर सज्ज्यो पयांन । निरमत्त सथ्य सज्जै सयान ॥छं० २०८॥
 भैरव सुभट्ट बंभन सुलील । चारंन चंद्र नंदन छवील^७ ॥
 लिय द्रव्य सब्ब सथ्यां सुभार । नागौर चले मति मंत्र तार ॥छं० २०९॥
 फिर निशान का बजना और अमरसीह का दाहिम को बांधने
 का पाबंध करना ।

बूहा—इह कहि गहि बज्जन बिलसि । बज्जि निसान निहाय ।

करि पाबंध सुअमर बर । बंधन दाहिमराय ॥ छं० २१० ॥

पाटरिया रान का कहना कि कैमास को छल करुके बांधूंगा ।

अरिल्ल—छल करि बर बंधो कैमासं । सजौ सेन सुरतानह पासं ॥

बोलि^८ रान पाटरिया बीरं । झाला अनी साधि सो घीरं ॥२११॥

अमर सिंह सेवरा के मन्त्रबल से कैमास को वश में करने का
 निश्चय करना ।

कबित्त—बर पट्टन बंरांन । तेन^९ झाला अधिकारिय ॥

मतो मंडि चालुक^{१०} । अमर सेबर सुधि भारिय ॥

भैरौ भट्ट प्रमान । बुद्धि कायप अधिकारिय ॥

सो मत्तै सो मत्त । बुद्धि सेनह बिच्चारिय ॥

१. मो०—ललि ।

२. मो०—“उधगज्जगाह” की जगह “उधंग जंग” ।

३. मो०—अधि ।

४. मो०—सधि ।

५. छं० मो०—द्रष्ट ।

६. मो०—लग्गो ।

७. को० छं०—सुलील ।

८. मो०—बोलीय ।

९. मो०—तेन ।

१०. मो०—“मतो मंडि चालुक” की जगह “सो मने चालुक” है ।

दल मलहि सैन बहुआन को । अरु भंजै सुरतान दल ॥
मंत्री सराज कैमास बर । साम दाम^१ कीजै सुछल ॥ छं० २१२ ॥
चालुक्यराज की सेना की चढ़ाई और अमरसिंह का मन्त्र

प्रारम्भ करना ।

गाथा—चढियं चालुक सेनं । चहुआनं साधनं भीरं ॥

दिसि कैमास प्रमानं । अमर सिंह मुक्कियं मंत्रं ॥ छं० २१३ ॥

अमर सिंह के मन्त्रबल की प्रशंसा ।

कवित्त—जिन अमरसि सेवरा । आनि देवंग परब्वत ॥

जिन अमरसि सेवरा । द्रव्य आन्यौ अनिश्रब्वत ॥

जिन अमरसि सेवरा । चंद मावसि उग्गाइय ॥

जिन अमरसि सेवरा । पदमनि मात रिझाइय ॥

षट उभय कोस उद्योत हुआ । विप्रसीस मुडिय मकल ॥

चित्त मंत धर्म आधम बर । सुबर मंत्र किज्जै मकल ॥ छं० २१४ ॥

छंद मोदक—इति मोदक छंदह वंध गती । जग्गि सस्त्र मुंतिव वधमती ॥

दिसि अट्ठ दुरी दुरितान कला । चित्त मुक्कलि च्य र वसीट बला ॥

॥ छं० २१५ ॥

जिन मंत्र बसीठन चित्त करं । नव निक्कर नेह अत्रत्तधरं ॥

षिति बीरति बीरय मंत्र मुषं । तिन रायन राज निब्वत रुपं ॥ छं० २१६ ॥

छंद बिअष्वरी - भैरों भट्ट मुबभन लीला । चारन चंद्रानन्द छबीला ॥

महातम अमरसीह गुणग्याता^२ । साम दाम^३ भेद सुबिधाता । छं० २१७ ॥

जिन अमरसी^४ अमरि रिझाइय । चालुक सेन सुमंत्र बढाइय ॥

मावस चंद जेन परगास्यौ । जेन^५ जैन धमह अभ्यास्यौ ॥ छं० २१८ ॥

सिंगी हेम भरे नग पासं । लच्छि प्रसंनिय दारिद नासं ॥

भोरा राय भुअंग वजीरं । भौ प्रसंन सुरसुरी सुनीरं ॥ छं० २१९ ॥

बाद जीति^६ सिर विप्र मुंडाइय । कुंम षप्पि जिन साष भराइय ॥

बोल्थौ कुंम कलक्कल बानी । नीर मध्य दुरगा सुसमानी ॥ छं० २२० ॥

इष्ठ गंठि तहां दिष्ट विचारिय । वेद उपाधिक रैभ विचारिय ॥

रथ षटघात हेमसिर छत्रं । चढि नागौर अमरसी मंत्र ॥ छं० २२१ ॥

बर चौरासी सध्यसु आसं । छलन राजमहि मंत्र कैमासं ॥

है दुज धरत नील पट बजर । रतन हेम नग मुत्ति सुपंजर ॥ छं० २२२ ॥

१. छं० को० मो०—दान ।

२. छं० को०—अमर सिंह महाग्याता ।

३. छं० को० मो०—दान ।

४. छं० को० मो०—अमरसिंह ।

५. छं० को०—जिने ।

६. छं० को०—नीति ।

घट में कहै सुकीर प्रगासै । सुनत सुवीर ध्रंष भर नासै ॥
 जै भर धर चालुकक प्रजाए । अमर महातम बुद्धि रिझाए ॥छं० २२३॥
 इन विधि नर नागौर संपत्ते । हीह निसा गुन करे सुरत्ते ॥
 छल छंदै बंदे कर भूपन । लच्छि केर करनी कर रूपन ॥ छं० २२४ ॥
 कैमास के यहां सन्धि का पत्र लेकर वहां का भाट भेजा गया
 उसने चालुक्य की बड़ाई करके पत्र दिया ।
 दल कैमास भई सुअवाजं । भोरा राइ वसीठन साजं ॥
 चेटक चंचल नंचल कानं । आर भटी देपे सब्बानं ॥ छं० २२५ ॥
 भेदि मट्ट कैमास कलाप । आदर अधिक कियो सुअलाप ॥
 मुत्तिय माला कंठ मुबानी । भोला राव दई सहनानी ॥छं० २२६॥
 मुन्निय' पत्र पढे परवान । वीर मंत्र पूजा मह दानं ॥ छं० २२७ ॥
 छंद नाराच - कल्प केलि मेलि मद चंद चारु पट्टनं ।
 तमेग दुग्ग सुग्ग सुभ्रम बन्ध कट्टन ॥
 नरिदं नील मील संच बंचयं भुअप्पती ॥
 चरित्त चारु चालुकं नरिद को नरप्पती ॥ छं० २२८ ॥
 गाथा- न को न को नरप्पती । पत्ती चालुकक गइयो सीसा ॥
 किं चहुवान सुमंती । कैमासं जानयं वीरं ॥ छं० २२९ ॥
 चालुक्य राज का पत्र ।
 साटक - स्वस्ति श्री जय भूपरिप भीमं भयं वन्तंते ॥
 पाया पात्र लवंत देव पिनयो मत्रान् मही नप्पते ॥
 हेमं कोटिव पग्ग पग्ग वलयं, देवा चरित्त भयं ॥
 द्दारिद्रं यद ईव आनन रयो, द्विष्टा स या पावयं ॥ छं० २३० ॥
 साटक - जं तं वारिधि वंघनेव चलयं भीमं भयानं बलं ॥
 कल्पं केलि मगोरि मारव दिमा, बघ्य पुर बन्दरं ॥
 दीवं देवण देव हव्वम पुरं, हव्वी हज्जावं पुरं ॥
 सोयं भीम वलिष्ट मध्य वलय, लेन कल दुस्तर ॥ छं० २३१ ॥
 गाथा - इंदो वारिधि बंधो । वारिधि मद्धे' मुइंद्रन द्विष्टा ॥
 वारिधि अंचन इदो । सा भीमं रूपयं भूपं ॥ छं० २३२ ॥
 गाथा—भूपति भीम नरिदं । भूभारं काज अवतार ॥
 तुं कैमाम न जानं । तो नं तो छंडि चहुवानं ॥ छं० २३३ ॥
 छंद पारक रू'मानी : बानी पुब्बानी । नीलानी मोहं सब्बानी ॥
 मुरबानी बानी बोलंदे । मिघानों सकलं तोलंदे ॥
 सोरट्ठी घट्टी निहट्टेयं । हर बंजहु रावर वट्टेयं ॥ छं० २३४ ॥

१. मो०-पत्री ।

२. मो० कृ० को०-सरसा ।

३. मो० "पात्रल" की जगह "एतल" । ४. मो०-च । ५. मो०-बानी ।

छंदश्लोक-आगे वानक वानक सस्त्रकं।सत्र मस्त्रक मंत्रक मंत्र तयो॥छं२३५॥

ग्रपनी बड़ाई लिखकर एक स्त्री का चित्र लिखा कि यह स्त्री लो
श्रीर कई ग्राम श्रीर धन देंगे तुम आनन्द करो ।

चित्र देखकर कैमास का मोहित हो जाना ।

अरिल्ल --लिप्यो चित्र पुतल परिमानं । ज्यौं कैमाम भयो बमि प्रानं ॥
वायत्र सें पषा कर डुल्लै । त्यौं कैमाम मंत्रवठ भुल्लै ॥छं०२३६॥

कबित्त गुज्जर वैधर देहि । देइ धोरहरा ग्रामं ॥

मति संपूर कैमास । देइ बहु द्रव्य मुतामं ॥

मध्य पहरजं मध्य । द्रव्य आवे बंदर वर ॥

सो अप्पो चालुकक । करै कैमाम इन्द्र घर ॥

को सुनै कहै को जंपि को । को उत्तर तिन देइ फिरि ॥

कैमास मत्र किन्नी वसै । लिप्यो चित्र पुतलि लहरि ॥छं० २३७॥

अरिल्ल--साधि भरै घट सोइ प्रगामं । मुर नर नागनि^१ कोनिग आसै ॥

सब भ्रत सहर महर सब मिल्यो । नट गति एम^२ अचम गति पिल्यो ॥

॥ छं० २३८ ॥

बूत ने लाले नामक एक खत्री को रूपवती लड़की के द्वारा वश
करने का मंत्र आरम्भ किया ।

बूहा- घट्ट सदय विधि दुज्ज दुअ । जैन धम अभिलाप ॥

भवन मडिझ कैमाम कहि । अमर महातम भाव ॥ छं० २३९ ॥

अरिल्ल --पित्री एक मुनैर^३ सुमती । कलत्र एक सुरवर की गती ।

हठ हित केलि रसं रस मडिया । मनि आभरन नारि सब^४ छंडिय ॥२४०॥

छंद विअष्वरी - पित्री एक नाम जिन लाले । ताके मुगध प्रौढ त्रिय बाले ॥

मध्या भान बाल सिरन्हाई । प्रौढा कै वार निसि आई ॥छं० २४१॥

अप्पन प्रौढ मुगध गति लीनी । च्यारो जाम रमी रस भीनी ॥

प्रात बालबेल्ह रस^५ जान्यो । भूषन बिन शृंगार मुहाग्यो ॥छं० २४२॥

पित्री सोइ जुनैर^३ हिसारं । बिन त्रिय एक कन्यो शृंगारं ॥

तिन हित मानं केल तिथि मंडी।मीनह मनु अवबन सिर छंडी ॥२४३॥

पित्री एक मुगध सुमती । तहा मंत्र आरंभन जत्ती ॥

हरि हरि तहां कन्यो उच्चारं । पढ़े बंद गुन मंत्र बिचारं ॥छं० २४४॥

१. क० को०-नागति ।

२. क० को०-राम ।

३. मो०-सुमैर ।

४. को० क०-सिर ।

५. मो०-“बेल्ह रस” की जगह “बलभरइ” ।

मंत्र श्लोक - ॐ नमो गिरे^१ गर्जस्य । जल्पं जल्पेषु जालपम् ॥
तत्स्वर्यं मंत्रं विष्टवंसं । सारं धारं निवर्त्तयेत् ॥ छं० २४५ ॥

बूहा - असूच नयन लक्ष्मी अलष । नर कुमंत्र बर प्रब्व ॥
आकरषे तिन चारनह । भैरों भट गंधब्व ॥ छं० २४६ ॥
बूत समय जान उस स्त्री को साह्नुने लाया ।

बूहा - अमर सिंह पासे प्रसन । मानि मंत्र जल जध्य ॥
तत्र तरुनि आनी चिहुनि । सुन सुमंगल कथ्य ॥ छं० २४७ ॥
उस स्त्री के रूप का वर्णन ।

कवित्त - कुटिल केस बय स्याम । गौर गुन बाम काम रति ॥
चोर घनी उन्नित नतंब । जानि रवि बिब बीय गति ॥
चष चंचल उद्दिय नरीह^२ । करी मनीं ब्रह्म अप्प कर ॥
ता समां न कोई जान । नांहि असमान जान घर ॥
कवि चंद कहै का व्रन करि । पदम गंध मुषचंद सरि ॥
जुब्बन तुरंग सुमनह करन । मानों मार अवंगि घरि ॥ छं० २४८ ॥

कवित्त - चंद बदन चष कमल । भौह जनु भ्रमर गधरत ॥
कीर नास बिबोष्ठ । दसन दामिनी दमवकत ॥
भुज भ्रनाल कुच कोक । सिध लंकी गति बारुन ॥
कनक कंति दुति देह । जंध कदली दल आरुन ॥
अल संग नयन मयन मुदिन । उदित अनंगह अंग तिहि ॥
आनी सुमंत्र आरंभ बर । देषत भूलत देव जिहि ॥ छं० २४९ ॥

बूहा - कोटि ईम कीए सुव्रत । विमति मत्ति परमान ॥
तहां मंत्र पत्ते सुबर । गहै काल न्नित पान ॥ छं० २५० ॥

छंद त्रिभंगी - संचारी देस, कुजर भेसं, करि षोडेस, शृगार ॥
आकर्षत मंत्रं, एक सबस्त्र, दर्पन हस्तं, कर्तारं ॥
कबरी करतारं, कज्जर सारं हार सुधारं, निष्कारं ॥
मुष मंडन नीलं, कर नष नीलं, नेवर^३ नीलं, सुद्धारं ॥ छं० २५१ ॥
बै संधि समानं, उप्पय जानं, कव्वि बषानं, रितुरारजं ॥
रितुराज चढंतं, फागुन अंतं, बलि आमंतं, इन सारजं ॥
हरि हरि शारं, मुष उच्चारं, बिहु बिम्भारं, थनघोरं ॥
धन बंट किसोरं, मृष उच्चारं, बिहु बिम्भारं, थनधीरं ॥

१. मो० छं० को०-गिरा ।

२. को० छं०-“उद्दिय नरीह” की जगह “उद्दित नरीह” ।

३. मो०-बीलं ।

घन घंट किसोरं, मुष तंमोरं, प्रोढन भोरं, इन जोरं॥छं०२५२॥

आवक रंग पायं जेहरि शायं ओपम आयं मिलि चंदं ।

कंचन घर^१ घुघ्वर बजि रस दुग्भर रति समउग्भर मैजानं ॥

पीरे घन भोरं, लगि मन मोरं, अमी सझोरं मन मालं ।

बलि अलि बेकारं हल हित तारं ससि सम रारं पहु रारं॥छं० २५३॥

चलि चंचल नेनं, संभरि बेनं, कवि छवि देनं पचिहारं ।

नर नागन ओरं, देवन जोरं, रचि पचि^२ ओरं, तन थोरं ॥

कटि किकन रोरं, गंधव डोरं, ढपै सरोरं, सिर सोरं ।

चिहु चक्रित नेंनं, तट्टिय^३ अंनं, मधु रस बैनं रस सेनं ॥ २५४ ॥

ढल कंतिय वेंनी भिभरनेनी, जुग फल देनी रस मेंनं ।

बसतर तन मंडिय भूषन थंडिय गुन बहु मंडिय दुषछंडी ॥

तारक बिन सस्सिय आभा लस्सिय भाइ प्रसंसिय भव षंडी ।

आवरदा लज्जिय संभर रज्जिय, नन नं नज्जिय, थन थोरं॥छं०२५५॥

चलः चंचल नेंनं, मधुरित बैनं, भंभरि भेंनं, बनि रोरं ॥

प्रज्जंक सुगंधं नव नव नथं सपि नावंथं हरि होरं ।

आचिज्ज सरस्सय किंकन कस्सय हहं हस्सय दुजदोरं ॥ छं०२५६ ॥

गाथा—पारवती जिन मंत्री । कामनषं रषियं बरयं ॥

इन दिष्टि सुधामय बाले । आनंग नाम अग सो मिलय ॥छं०२५७॥

छंद नाराच—अनंग अंग अंग मानं अंग अंग नितयं ॥

कि बाल काम साम काम काम काम पत्तय ।

मनों कि मेंन सागरं सुबुद्धि ताक मोदयं ॥

मनों कि ह्याय भायकै विचित्र चित्त सोधयं ॥ छं० २५८ ॥

कवित्त—अंग चरित्र कि चित्त ।^४ चित्तं मनमय विकारिय^५ ॥

मानों मेंन तरंग^६ । ^७ अनंग आनंग प्रचारिय ॥

किछौं जोग मन भजन । रजनि सायक सुषसागर ॥

मनों मयन रबन । सेत सज्जी रति नागर ॥

सरिता सुरूप^८ लोइन लहरि । रहै मीन मन मोरं^९ परि ॥

घन हाइ भाइ गुन ग्राह सम । कवि का ब्रंन करै^{१०} करि॥छं०२५९॥

१. मो०—घन ।

२. मो०—ऊरं ।

३. मो०—तुट्टिय ।

४. क० मो०—चित्त ।

५. मो०—आधिकारिय ।

६. मो०—तुरंग ।

७. मो०—अंग ।

८. मो०—संपूर ।

९. मो०—धीर ।

१०. मो०—कहे ।

आश्चर्य है कि कैमास ऐसा मंत्री बालचरित्र के वश पड़ जाता है ।

गाथा—आचिञ्ज बालचरियं । किहो जंम्म जंम्म विन हरियं ॥

कै विधि पुब्वह लिषियं । जो मन मारुत सुष मुषांइ ^१ ॥छं०२६०॥

वचनिका—प्रयम सदा दुज्जन राइ कैमास मंत्री दुष्टां तो ॥

उन मंतो कामां तो ॥

अमर महा तम देवि प्रसादां तो । कैमास दुष्टां तो ॥छं० १६१॥

दूसरेहंस राव बोल्थो। दुर्लभ राइ कुमारां तो ॥ पात्रांतो पानिग्रहनांतो॥

पर्यंकांतो कामांतो । रति सांतो घट बोलांतो ॥ छं० २६२ ॥

छंद त्रिभंगी—घनं नकि घटंतो भजि भजि मंतो । इय कलि तंतो^२ गुनवंतो॥

सकृति गुन मुंदरि अंमरि संचरि मिश्रन मंजरि रातवंतो ॥^३

लवली पुष्फं जरि करकिय धंजरि मिलि मीनं जरि^४ जुगजंतो॥

विछित्त सिर मंडिय हों प्रभु मंडिय प्रभु मन मंडिय सुम संतो॥छं०२६२॥

दूहा—रूत^५ बाले बाल गुन । रही चित्र परिमान ॥

कै आई अहि लोक्तें । कै अमरेष वषांन ॥ छं० २६४ ॥

मुरपुर नरपुर नागपुर । इह आचिञ्ज सुकीन ॥

घनि मंत्री सेवर अमर । दाहिम^६ सुबल सुछीन ॥ छं० १६५ ॥

अमर सिंह के मंत्र के बस में कैमास ऐसा प्रबल स्वामिभक्त
मंत्री फंस गया ।

कवित्त—जिन मंत्री कैमास । द्रव्य उद्धरि घर लीनी ॥

जिन मंत्री कैमास । प्रलै जहव कुल पीनी ॥

जिन मंत्री कैमाम । लियो षट्टू निधि धारी ॥

जिन मंत्री कैमाम । जंग संभरि उद्धारी ॥

मंत्री अनास कैमास सों । मति उचार अमरा कियो ॥

गंधर्वं घाट दुर्गा विसार । मंत्र विसेषन जे भयो ॥ छं० २६६ ॥

जा दिपंत मंत्रियमु । पंचदस नयन प्रपत्ती ॥

तहां बध्यो मेवात । राज मंगल गुन रती ॥

होत बरस नव दून । जाइ थट्टा रन भंज्यो ॥

उभै बीस इक मास । अद्ध अद्धे गुन सज्यो ॥

१. मो०—दुषांइ ।

२. मो०—त्रयवंतो ।

३. मो०—यह नुरु नहीं है ।

४. मो०—'मिलि मीनं जरि' की जगह 'मिलि मिलि मंजरि' पाठ है ।

५. मो०—रूरति ।

६. मो०—दाहिमा ।

भंजयो बीर बंभनति वस । अब अमंत्र मंत्री' कियो ॥

कैमास भयो षल वसि विषल । मंत्र सस्त्र सत्रह गयो ॥ २६७ ॥
दूहा - यों^२ वसि भयो कैमास वर । ज्यों रोगी भेषज ॥

ज्यों नट वसि कपि नंचई । ज्यों त्रिय बसि पति सेज ॥ छं० २६८ ॥
कैमास ऐसा मंत्रभुग्ध हुआ कि पृथ्वीराज को भूलकर चालुक्यराज
के वशवर्ती हो गया ।

अरिल्ल - यों बसि कियो दाहिमा प्रमानिय । कोह मोह लोह मद ठानिय ॥
इक^३आन फिरी चालुककह मान की मेटी आनि प्रथीपति जानिकी ॥ २६९ ॥
दूहा कियो बसि कैमास तहां । अमर महातम उठ्ठि ॥

सजल सहर भीमग वर । प्रथक आनि संगुठ्ठि ॥ छं० २७० ॥

कैमास के वश होने से नागौर में भीमराय चालुक्य की शान गिर गई ।
कबित्त - मंत्री भी कैमास । काक नृमणो नेह जिदि ।

सामि धम मुक्कयो । नीत मुही अनीन ग्रदि ॥

मादक उनमादुक समणिय । सोणन द्रव्य दानिय ॥

वध धम्म छठ्यो । अध काया उतमानिय ॥

लज्जा सुमंत मन सकि रह्यो । रयि पति पक अलुइयो ॥

चालुकक आनि नागौर फिरि । मरन अध न- मुइयो ॥ २७१ ॥

चन्द्र बरदाई को स्वप्न में इस समाचार की सूचना हो गई ॥

आनि फिरि भीमंग । नैर नागौर घरं घर ॥

वसि कीनो दाहिम । धरनि भी कंष धर ड्ढर ॥

सुपन बीर बरदाइ । भरकि उन्चो जु चरित तह ॥

जहं मत्री भर मुभर । करिण वसि वमन देव जहं ॥

धूमंग धूप डंवर परिय । किल किलत डमरू करह ॥

दनु देव नाग सब बसि करन । कितक बध बुली नरह ॥ छं० २७२ ॥

यह जानकर चन्द्र ने देवी का आह्वान और उसकी स्तुति की ।

दूहा - इह चरित दिधि मात तहां । कटक संपती अप्प' ॥

चंद जप्यो जप जुगति सम । निसि सुपनतर जप्प' ॥ छं० २७३ ॥

छंद भुजंगी - चढी सिंह देपी प्रकृति पुरण्ण । महा तेज जागृत्य चंद मुण्ण' ॥

दिखे वाज वानी समानी न जंपा । बुकपे बधूरं नचे मेर तंपी ॥

१. मो०-भुकी ।

२. मो०-वति ।

३. मो०-'इक' नहीं है ।

४. कु०-'आन'-इतना और अधिक है ।

५. मो०-त्राय ।

६. मो०-पाय ।

सुभं सेत स्यामं रगं रत्त पीतं । मनो दिष्वियं धनुष नभ अभीतं ॥
 बजै बक डोरू त्रिसूलंत हृष्यं।स्वयं बाक बानी बिराजंत तथ्यं॥
 मिल्यौ अमर राह सु कैमास भानं।भयौ अंधकारं दलं सा बयानं ॥
 बधे जेन घट्टं मध्यं अंधकारं । गई मत्ति चंदं भयौ सीत तारं ।
 कवी दिष्वियं रूप सा दिव्य अगौ।पतालं^१नषं सिष्य ता अम्भलगौ॥
 जयं जै जयं जै ^२जपे चाहुआनं । तबै चंद कम्बी परतीत मानं ॥
 उमा कै विसासी परतीत पावै । जहां अब्बिसासी तहां देवि नावै॥
 उद्यो चंद आसी पुरं प्रात राई । दई निरत नांही चहूवान जाई ॥
 किधों केवल मरन सरनं विचारों।किधों जैन ध्रमं जुगं पाइ टारों॥
 ॥ छं० २७४ ॥

चन्द स्वयं कैमास के पास नागौर की ओर चला ।

डूहा—सुकविचंद चलयौ सुनिज । पुर नागौर निघानं ॥

जहां कैमास पलटि तन । करत केलि अह्वानं ॥ २७५ ॥

नागौर पहुँच कर चन्द ने सब बात प्रत्यक्ष देखा और घर घर
 यह चरबा सुनी ।

छंद मोतीदाम—जहां तहां गल्ह सुनी परवानं। सुमित्तिय दांमय छंद बषानं ।
 जहां महानं गल्ह सुनी परवानं । सुमि^१त्तिय दामय छंद बषानं ॥
 बजी ग्रह ग्रेह घरं घर बात । मनो त्रिन उड्डिये वाय अघात ॥
 कियौ बमि-दाहिम मंत्रिय राज । बजी मुर सब्ब अकित्तिय बाज ॥
 उडी बर नैरनि नैरनि तत्त । गई अजमेर सुनी भ्रतबत्त ॥
 घरद्वर कंपिय ध्रम परान । भयौ बसि दाहिम देव सुजान ॥
 सुनी चहुआन कही कविचंद । भयो नूप बत्त अगाह दमंद ॥
 स पट्टय बस्त जित्यौ कयमास । करौ जिन षग्गह षित्रिय आस ॥
 भयो सपनंत चलयौ कविचंद । जहां कयमास पलहि सरीर ॥२७६॥

यह देखकर चन्द ने बड़े क्रोध से भैंरो तथा देवी का अनुष्ठान
 प्रारम्भ किया ।

डूहा—दिष्वि नयन झल हलि भयौ । झल हल हल्ल्यौ अंग ॥ १ ॥

क्रोध लगि किलि कुप्पबौ । दिष्वित डिभ नरंग ॥ छं० २७७ ॥

छं०भुजंग प्र०—कहे चंद बंडी महो भट्ट भैलं।तुवं लुट्टि विप्रं तनी।लछि जोरों।

महो चारनं नंदनं दीन सानं । घटं मध्य काली कलं कल किलानं॥

१. पाठांतर—बलानं ।

२ मो०—अपियं ।

३. मो०—नुमुत्तिय ।

मयं घट्ट घट्टं बमंभंत जोरं । पुलै देव बोलै हुलै होइ सोरं ॥
 वियो घट यप्पे हयं थरथरानं^१ । जयं जैन भग्गी भलं भरभरानं ॥
 कहै कोनं आरंभ जीत्यो मुजेनं । वजी हक्क चंदं लग्यो सीसनेनं ॥
 थरं थप्पि थानं वियं घट्ट मंडे । बजै सस्त्र दूनो जिनै सद् संडे ॥
 द्रुगे धाम धामं पियं पट्ट पांनी । ढिली जैन धमं सबं राजधानी ॥
 फिरे पछिमंत्रं महा मंत्रं जंत्री । हरे षंड षंडं सबं सस्त्र छत्री ॥
 मिले राज मक्षं^२ मरज्ज्याद छुट्टी। उमा सत्त सामंत की सक्ति पुट्टी ॥
 निरालंब लंबी वियं वीरबाहं । त्रिषा रतपुज्जी नही रत राहं ॥
 विथा जध्य लग्गी तथा तो प्रसादं। कथा काल जैनं भयो एकबादं ॥
 जहां वेद बांनी सती सत्त पाटं । तहां जैन जंपै सु पाषंड वाटं ॥
 हुंकार हंघा घटं घाट उठ्यो । छलं छेद भेदं^३ दुअं धूम बुठ्यो ॥
 धरं धार झारा धरा कंय ठानी। मिटी बूद माया सु आकास बांनी ॥
 दुजं दोइ उहुं छटे सुग्गं मग्गं । घटं घाट फुट्या भ्रमं धाम भग्गं ॥
 छलं छत्र मोहं महं मूल तुठो । परा पेष तें जैन धमं सु लुठ्यो ॥
 महा मंत्र मंत्री दिठी माउ मांनी। कबी चंद मंत्रं सिधी सो समानी ॥
 ॥ छं० २७४ ॥

संग्राम काले संग्राम ईश्वराय संग्राम भूपाय स्मरणं कृत्व मंत्रं ॥
 संग्रामे प्रविसे तु जया संग्रामे विजयां भूपाल हारे स्मरणं कृत्वा ॥ *
 चन्द्र का देवी की स्तुति करना ।

साटक—चामंडा वर षग्ग मंडित करा हुंकार सदा धरं ॥
 प्रभासं सहसंध सत्य तपसं रूंडाल माला धरं ॥
 लग्ना * हस्त मुष्ठी प्रचंड नयना पायानु दुग्गेश्वरी ॥
 काली कल्प कराल काल वदनां अंगे कलिंगे^१ जया ॥ छं० २७९ ॥
 माया तूं वृंदार माल कलया जीनं जगद ब्रह्मानी ॥
 माया तूं माहेश्वरी जह कहं अग्गोचरं गोचरं ॥
 सिष्णं रिष्ण * सपट्ट नंचत वसा हिंगोल हुं हुं करं ॥
 साहुंका हुंकार इक्क मुनयं जातं दलं दुज्जेनं ॥ छं० २८० ॥

१. मो०—पुरहरानं ।

२. मो०—मध्य ।

३. मो०—छलं छेद भेदं दुअं धूम बुठ्यो की जगदं छलं छेद दूयं धरं धूम उठ्यो है ।

४. मो०—प्राप्तमान । * यह मंत्र एशियाटिक सोसाइटी की प्रति में नहीं है ।

५. मो०—लग्नी हस्तमुष्ठी प्रचंड नीनी पायानु दुग्गेश्वरी ।

६. मो०—कलिंगे जया की जगद कालिंगेश्वरी है ।

७. मो०—रष्ण ।

षगं जा मिति श्राम श्राम श्रमियं तस्यास्य मंत्रे मुषं ॥
 सा मंत्रे उच्चरार धार धरियं^१ अभंभं अभंगा अरी ॥
 जग्यानं जय जोग जोग पतयं पाषंड षंडायनं ॥
 काली लंक ललंति कति त्रिपुरा तस्यासि ध्यानं धरं^२ ॥
 चन्द्र का देवी से बर मांगना कि जैन की माया को जीतें ।
 राई तू उमया अषंड तनया दाता दुगी नासिनी ॥
 संतुष्टा मुर नाग निनर गना दैत्यानि संत्रासिनी ॥*
 यस्या चारु चवंति चारु कमलं संतुष्टयं साधुनं ॥
 जैनं^३ बर्दस बद्रगाड चरमं जै जै सुजिह्वामन ॥ छं० २८२ ॥
 दूहा सुविधि सिद्धि सेवर गुवर । बाद सिद्धि परमान्त ॥
 जंच मत्र जा रूप मौ । लगे गेन अगमान । छं० २८३ ॥
 छंद भुजंगी उठे चंद चंद बरदाय गीर । भयो नेत्र जाकन संती अधीरं ॥
 बुल्यौ बीर बानीय ज्यौ गेन पनी । मनो उगिय बीर मिथदिष्ट जानी ॥
 महा मंडियं बीर अंकुससिरान । तजा नेत्र तन उठी वीर वानं^४ ॥ छं० २८४ ॥
 कवित्त - जिन मंत्री मंताय^५ । द्रव्य उदधि धर लीनी ॥
 जिन मंत्री रिनथभ । ठेलि जह्न कूल दीनी ॥
 जिन मंत्री दुंडार । ठार कूरंभक सारी ॥
 जिन मंत्री जंगली । जग समरि उद्वारी ॥
 मंत्री अभासि^६ कयमास सौ । मंति उचार अमरा कियो ॥
 बम्भरी भट्ट द्रुग्गाइ इम । घट विघाट उम्भा वियो ॥ छं० २८५ ॥
 उद्यो चन्द बरदाइ । विरद द्रुग्गा सम्भलि सुर ॥
 सुमन सस्त्र तजि मित्र । पत्र बञ्चिय जुमित्र बर ॥
 कल कलंत^७ कल्यांन । कलह घटन आघट्ट बर ॥
 भट^८ निघाय^९ रागी सुनट । भट साहस धम्मं^{१०} धुर ॥
 दिप्यो सु चारु मंत्री घरा । मति अचार^{११} कर लिषयो ॥
 गन्धर्व^{१२} - गांन चरन अमर । बर पाषण्ड सुविष्यो ॥ छं० २८६ ॥

१. मो०-भंगा ।

२. मो०-घनं ।

★ ये दो चरण रायल एशिपाटिक सुमाइटी की प्रति में नहीं हैं ।

३. मो० 'जैनं बर्दस याइ चंदि चरनं' । ४. मो०-चंडी ।

५. मो०-सिरानी ।

६. मो०-बानी ।

७. मो०-कैमार ।

८. मो०-गीनी ।

९. मो०-अनासि ।

१०. मो०-कस्यांत ।

११. मो०-नट ।

१२. मो०-घिम ।

१३. मो०-वि ।

१४. मो०-उच्चार ।

१५. मो०-हंकि हंकारह छंदियो मनो बसर गुह सिष्ययो ।

समाचार पाकर चन्द का मंत्र व्यर्थ करने के लिये अमरसिंह
का मंत्र प्रयोग करना और घट स्थापन करना ।

सम^१ हो चन्द कबिन्द बाद । अंकुस सिर मण्डिय ॥

मंत्र देव उच्चार । हंकि हंकारव छंडिय ॥

अमरसिंह बर भट्ट । बीर बम्भन विच्चारिय ॥

मंडि वीर पाषण्ड । मंत्र जंत्रह उच्चारिय ॥

मंडयी कुम्भ सलिलरु सुमन । धूप दीप अच्छित घरिय ॥

सेवर सुगन्ध आडम्बरह । हथ्य जोरि बीनति करिय ॥ छं० २४७ ॥

छन्द भुजङ्गी —

महाबीर बीरं चितं जाप लीनी । जिनें कुच्छितं लुचितं पंथ कीनी ॥

जिनें जग्य ध्रमं चरं नेति^२ भंजै । सुध्रमं उथापे अध्रमं सुरजे ॥

बधं जीव टार्यो सुलोभं निवान्यौ । सतं सील आचार अंगं अधान्यौ ॥

रषे पंच भूतं प्रथी अप्प तेजं । ग्रहे नाहि धातं अघातं सुनेजं ॥

दमं दान ध्रमं दयाजूह मंड्यो । मुअं अमर उप्पासनं तासपंड्यो ॥ छं० २८६ ॥

एक घड़ी तक चन्द का भ्रम में पड़ जाना । फिर संभलकर अपना
अनुष्ठान करना । देवता आदि का आश्चर्य के साथ दोनों का बल देखना ।

कवित्त— बोल्यो घट्ट सुघट्ट । बीर हुंकतिय ॥

ता पछै मंत्री न मंत्र । आरंभ सुयतिय ॥

इक्क मुट्टि दुअ मुट्टि । चंद संमुह पठि नंषिय ॥

घरी एक भ्रम भ्रम्यो । जागि द्रुग्गा जस लगिय ॥

बुल्लयो बीर कविचंद मुष । हल हलंत हेमावलय^३ ॥

सु प्रसंन मात भट्टह भइय । बस^४ पाषंड भ्रमाव तिय ॥ छं० २८९ ॥

कह्यौ बीर कविचंद । प्रगट आचिज्ज दिषायौ ॥

कुंभ मध्य पाषंड । वानं विद्या इन मायो ॥

दनुज देव मानुष । सकल आचिज्ज सु जान्यो ॥

है मनुष्य गति लेइ । उपल जिम मिदै न पान्यो ॥

सोचलै रिझ्ज जल जिमि प्रबल । भट्ट सरस रस बुल्लयो ॥

गंधव बीर चारन अमर । धंमर उच्चित डुल्लयो ॥ छं० २९० ॥

१. मो०—छंद २८७ के आदि के दो तुक का पाठ इस प्रकार है—‘जनमय
अचक्रजकज । मंच आरम्भ सुमण्डिय ॥ पउमावइ परतषि । हंकि हंकारव
छण्डिय ।

२. क० को०—नन्ति + मो०—‘ध्रमं चरं नन्ति’ की जगह ‘ध्रमं चरं नीति’—है ।

३. मो०—हेमावतीय ।

४. मो०—सब पाखण्ड भ्रमाववीध ।

राजा बसुव षट्टनी । चंद कहीं उप्पर आइय^१ ॥
सबें माय चालुक्क । अमर भए तुग महाइय^२ ॥
रह्यौ भान रथ षचि । देव लगि तुग तमासे ॥
कुटिल दिष्ट छुटईन^३ । आज मत लम्भ^४ कैमासें ॥
उचर्यौ चंद उरह्कक्यौ । आरंभ्यौ बर मंत्र कै ॥
आचिज्ज लोइ दिष्वत^५ भयो । अह प्रारंभ न तंतकी ॥ छं०२९१॥

चन्द ने अमरसिंह की माया काटने के लिये योगिनियों के जगाने
का मन्त्र प्रारम्भ किया ।

छंदभुजङ्गी—कियो मंत्र आरम्भ प्रारंभ कब्बी जगी चौमठी देवि तो तेज हब्बी ॥
चित्त चन्द कब्बी तहां रूप तैसी । मनो अर्क राकान छित्र मिलै मौ ॥
मुषं चन्द कब्बी पढै दिव्य बानी । रिजें मात कब्बी निन में समांनी ॥
रिजें थावर ताहि जंगम कैसें । मुनें पय बानी मुनी मोन जैसें ॥
मुनें कान नारी मुधा बाल भगी । मनो नर्क उत्तर्क संदेस जगी ॥
बुलै कंठप्रावं लिषे चित्ररेषं । लगे मंत्र मांनो मजीवं मुषेप ॥
रहे मोन मन्दं मुगन्धं सुवातं । मुषं कै मुगारें मुरंनं अघावं ॥
रथं पेचि अर्क अरुन मुनावे । रह्यौ मोह माया क्रमं न न धावे ॥
चल्यौ प्राव रीझे गनि कैंकी लीनी । रमम्भो भयानं अदभूत निन्ही ॥
नगं म्दगी चित निनै मुअप्यी । चल्यौ प्राव रीजे कत्री माहि नषी ॥
षी एक चन्द ठठक्यो मु म्दबी । मनो गजिजयमझ पापान पुद्वी ॥
मंगी मूदरी मोहि दे अन्व उट्टीवरी रीरि नूती करमान बुट्टी ॥ छं०२९२॥
अमरसिंह का बहुत पापण्ड फेंकाना ।

दूहा - अमरसिंह सेवर सुवर । किय अनर पाण्ड ॥
मिर रपे धर नचई । धर पपे तनि मुण्ड ॥ छं० २९३ ॥

चन्द का पापण्ड भंजन में सफल होना ॥

कविता - कहे चन्द मुनि वाज । देय आमीस उक्क पय ॥
तक मुकिन किन नर । बोकि बानी मुरङ्ग हय ॥
जै जै जै उच्चार । कछ्यौ कपि निम निम नच्या ॥
सब देषत बोठ्यौ । बहुत रचना कर रच्यौ ॥

१. मो०—राजा बसु षट्टनी । चं० उरह्कक्यौ भयो । २. मो०—महायो ।

३. ए—छुटईन । ४. मो०—मनिकपि ।

५. मो०—हकमो । ६. मो०—दिपि ।

७. मो०—मनो पय बानी मुनी मोन जैसें ।

८. मो०—हाल ।

पाषण्ड डण्ड^१ सेवर भ्रमिय । घंट भंजन उप्पाय क्रिय ॥

मानुछ न जानिय देव गति । भ्रम भग्नी^२ सुव चन्द जिय ॥ छं० २९४ ॥

दूहा—तिनहु न तिन देषिय नयन । मयन सकल विघ्न वीर ॥

ते कयमास नरिन्द गति । कढहन मतहि मुध्रीर ॥ छं० २९५ ॥

कबित्त—सत्त मुमतियं तत्त । बाद लग्यो चिहु पासं ॥

हय हय हुंकार वन । कुम्भ बुल्यो बल भामं ॥

नव निरतं नव घात । नवति बल मंत्र उचारहि ॥

एक एक सम्भवहि । एक एकन पढि डारहि ॥

लागंत चन्द बरदाइ तन । भ्रमत भ्रम्यो हृदिकय उमा ॥

नन जग्य न निद्रा पण्डि वर । मुमति मन्न चिन्तिय उमा ॥ छं० २९६ ॥

छन्द पढरी गवरी मद्धथ गवरी व ईम । जग्गायो चंद मंत्र मत्रमीम ॥

अत्रिवेक गारुडिय मात पास । लग्ये न लिप्य अग्नि ताम^३ ॥ छं० २९७ ॥

दूहा—श्राममुष भ्रंसीय उर । रमिय काय धृत श्रारि ॥

जे जै जै उच्चार बर । पार न लम्भे पार ॥ छं० २९८ ॥

चालुक्थ राज का मन्त्र नष्ट होना ।

छंद भजंगी -

मिटे मंत्र मंत्रं^४ सूचा^५ मन्त्रं भ्रम विधिमनी मन्त्र मंत्री थकाजं ॥

सत्रे मंत्र मन्त्री मन्त्री न मन्त्री ॥ मन्त्रा पढरी मन्त्र मन्त्र मन्त्री ॥

कडी व । देव निवारी मन्त्री । मनो न ज न ई मन्त्री मन्त्री ॥

दईवद मन्त्री मुन्गी नद वकी । नई ट मन्त्र मन्त्र मु जरी ॥ छं० २९९ ॥

गाथा—सक प्राम मन्त्रिनी । मन्त्रिनी मन्त्रिनी मन्त्रिनी ॥

कि नी कनि मुदेवं । रिपदान उरकर्ये ते ॥ छं० ३०० ॥

चन्द का अपरमिण को पाद मे जास्ता ।

दूहा—घरी एक किय याद वर । को जिते कविचद ॥

अमरनिह भवर नुवर । भयी किति मुनगद ॥ छं० ३०१ ॥

वर पाषंड न पुज्जयी । किए अमर घन तं ॥

को जिते कविचद गों दुगागडाडक मत ॥ छं० ३०२ ॥

अरिल्ल जे पापड बहुत अभ्यास । चंद मीन वप ज्यों ग्रहि प्रासे ॥

छिनक एक विद्या गुन सधी । वर पापड मडि कवि बंधी ॥ छं० ३०३ ॥

१. मो०—मंड ।

२. मो०—मानुछ जानियतु देवगति ।

३. मो०—'भ्रम भग्नी' की जगह—'भ्रमभग्नी' ।

४. मो०—जाया ।

५. मो०—मंजन बरीय ।

६. मो०—जाम ।

७. मो०—जाम ।

८. मो०—मन्त्री ।

बूहा—बड़ा जैन सुजैन लागि । जीता चंद चरित्त ॥

भामीं भट्ट सुमंत^१ क्रिय । मरन जियन करि हित्त ॥ छं० ३०४ ॥

लुट्टि लये पाषंड सब । छुट्टि मंत्री कैमास ॥

हर हरंत आयास लागि । चंदन छंडे पास ॥ छं० ३०५ ॥

चन्द्र की सेना का युद्ध करके शत्रुओं को भगाकर कैमास के पास जाना ।

छंदभुजंगी—महदेव देवात चालुक्यक चंपे । तहां तूं सहायं भयं राग जंपे ॥^२

निसा एक रत्ती असो जंग घायी । पलं श्रोन षोचीन भूची अषायी ॥

हहं^३ हार हंक्यौ मयं मात साथे । सदा देव दुगे अनाथं न नाथे ॥

सवा लष्व सेना गजं बाजपूरं । अगं वान कंमान सजि गैन दूरं ॥

झमी झंम नेजे छिता^४ छत्र पत्रं । महा ग्रब्ब श्रब्बं लबी मंत्र जंत्रं ॥

घरा घर षंडे सुमंडे विसष्वे । परी^५ घर पाइक्क काइक्क लष्वे ॥

विना सामि सेना सुपंचं हजारं । तिनं मंश सामंत पचीस भारं ॥

मुषं मंत्रि कैमास दिव कासमीरं । बियौ बगरी राव स्वाकित्त घीरं ॥

तियो जाम जदो लघु बंध जाजा । घरै लाज गुज्जर घरा राम राजा ॥

षटो षग तोनं जयं जैत छत्रं । गुरू राव गोयद सत छत्र रत्तं ॥

सयं सिंह साना हनौ अष्ट काली । जिनें द्रुग्ग देवं समं तेज झाली ॥

दसं गौर गाजीव साजीव सामं । सुनी संभरी राव स्वामित्त तामं ॥

अषा राव हाडा चयं चंड देवं । जिनें द्वादसी धबल एकाहि सेवं ॥

तनं तुंग लंगा अभंग विचारं । जिनें मारिया राय जंगी पछारं ॥

बली राइ बंकी विरूदान बंके । जिनें ढाहि दुंढेरिया राइ हंके ॥

बरं जोर कूरंभ रांजंग सूरं । जिसौ पथ्य पत्ताय मझ्झे लंगूरं ॥

नियं राइ नीहर^३ तनौ रथ सथी । जिसौ राव संतन तनौ भीष रथी ॥

महा मल्ल सज्ज्यौ बियौ मल्ल भीमं । बरं तास चंपेन को जोर सीमं ॥

महं बंदनं देवतो पास सेवं । धुती मंत्र मुषं मयं जंपि एवं ॥

हु हुंकार हककी सती सा बिचारं । चढे मत्त अगे सुपंचं हजारं ॥

महा सेन सत्तर तनो लष्वसाई।सुन्यो राइ किल्ली दियो रति वाई॥छं०३०६॥

कबित्त—बर बंधे वसीठ । ठीठ पाषंड निवारे ।

घोरहरा ग्रामान । सेन संभ्राह संभारे ॥

तोरी रति त्रीजाम । जाम बोल्यौ जहौंनी ॥

होजा जारन जाइ । गस्त चौकी भीमौनी ॥

१. मो०—सुमित ।

३. मो०—अहंकार ।

५. मो०—फरी ।

२. मी०—कंपे ।

४. मो०—सिता ।

६. मो० को०—नाहर ।

हल्लाल हल्ल सेपंच दुति । सेनी झल्लि दुरा^१ नरन ॥
सेलंघ नेज भज्जह भिरिय । बंसी जान विषान वन^२ ॥छं० ३०७॥
कैमास का लज्जित होना ।

चौपाई-बंसी जान बषान प्रमानं । रह्यो लज्जि कैमास निघानं ॥
चौमट्टी मनों ग्राव सुडारी । उठै सीस संमुह क्यो भारी ॥छं० ३०८॥
कवित्त - उठ्ठावै नह सीस । लज्ज दाहिम चहुवानं ॥
उठै सीम नह ईस । लज्ज कुल पन कुल पानं ॥
उठै सीस नह ईम । करै भारय बहु काजं ॥
उठै सीस नह ईस । देव गति देवनि साजं ॥
उठै न सीस संमुह सरस । लज्ज विरहां भार सिर ॥
कैमास काज लग्गी गवनु । विसर बीर दिष्यो विघ्नर ॥छं० ३०९॥
धम्ब का कैमास को आइवासन देना ।

बुहा—बर बरदाइ नरिदं कवि । दै आसिष छिति राज ॥
तूं लज्जित कैमास बर । मंत विरोधन काज ॥ छं० ३१० ॥
कैमास को लेकर पृथ्वीराज के सामतों का चालुक्य राज पर
चढ़ने को प्रस्तुत होना ।

कवित्त- चंद सुचंडि प्रताप । मित्र कैमास छुडाइय ॥
मेटि आनि चालुकक । आंन चहुआन चलाइय ॥
लाज राज कैमास । सीस ठंके न उघारै ॥
सबला सों संग्राम । लरन रति बाह विचारै ॥
उज्जली रेन उज्जल दिसा । जस उज्जल कों घाईयां ॥
दाहिम राइ दाहर तनै । सिलह सुरंग बनाइयां ॥ छं० ३११ ॥
सध्य राव चांमड । सध्य सज्जिय परिहारं ॥
महन सिंह बल्हार । नाम रानो षग झारं ॥
रामों हा चंदेल । राव भट्टी मह नंगी ॥
भर भट्टी बहु सध्य । सार अग्गी तन दंगी ॥
जाजुल्य तेज नरसिध नर । बाहुवान कूरंभ गुर
सामंत सत्^३ सतह सुपति । सुवर बीर भारय भर ॥ छं० ३१२ ॥
परम पवित्र पमार । जान उद्यांन पैचाइन ॥
सारंग सिमु चालुकक । राज रघुवंस सुभाइन ॥

१. मो०-दुरान दल ।

२. मो०-बल ।

३. मो०-सुर ।

रत्ति बाहुभन चित्ति । सेन सज्यौ विन राजं ॥
 तरुन तेज तम हरन । मेघ मंते जनु गाजं ॥
 कल हंत केलि मंडिय बिषम । गरुअ ग्रब गहिलोत गुर ॥
 लंगिरय लोह लगोरसै । स्वामि धम जिन भार घुर ॥छ० ३१३॥
 अचल वरुन अत ताइ । कन्ह विन बीरब्रसिगं ॥
 रानिहुर रठौर । साल^१ झिल्लन रन रग ॥
 बा बारो बरमिघ । रेह राषन अजमेर ॥
 दहिया जंगल राव । जग मग्गह घर मेर ॥
 ठंठरी टाक चाटा चपल । अकल मति जिन उद्धरिय ॥
 ठिल्लै सुवज्ज वज्ज ग तन । षल षडै वजन बलिय ॥छ० ३१४ ॥
 बर जद्व जै सिघ । राव जघारी सुभ्रर ॥
 किलहन कनक नारिद । इन्द्र दल दण्णय दुभ्रर ॥
 बली बाह हरमिघ । रेह रषै चहुआनिय ॥
 सुवर वरै ब्राह्म । बलिय सभरि घर जानिय ॥
 अजमेर मुक्ति चहुआन की । ए ल्लहै भारथ भिरन ॥
 दिन एक वीर बल बड षल । उभय लम्भि लड्डु जिरन ॥छ० ३१५॥
 चालुक्य राजा का सेना प्रस्तुत करना ।

छंद भुजंगप्रयात

फिरी गम्न चौकी सुचालुकु राई । सथे सठ हज्जार मकवान घाई ॥
 रन पाटरी रान ता नाम सीह । वलं बैर बैरीन को चपि लीह ॥
 जिने देषिया जुह जाड च सब्बं । जिने कछ पचालची^२ सोषि अब्ब ॥
 षटंबीय सन्नाह सज्जे सुभगं । रुकै रूक अग अरी कोटि सग ॥
 तिनकी उपमा कवीचंद गाई । सुते कठ राषत गोरष्य पाई ॥
 तिन हाथ लै हाथ सज्जे उपाई । तिनकी मयूख ह्यं होड लाई ॥
 सुयं कंठ सोभातर टोप सोमा । ससी अष्टमी अद्धये भानं लोभा ॥
 जरे जंजरायं भरं रांग मिल्लै । मनो नौ ग्रह ताडिका होड षिल्लै ॥
 हयं पष्यरे पष्यरं जंजारायं । कपी सीस द्रोनं मनो लक कायं ॥
 फिरै गज्ज राजं मदं तेज गाजी । तिनं देषतें बहलं कति लाजी ॥
 बली वीर कैमास सामुष्य अगों । मनो राम कामं कपी कूट लगों ॥
 मुनी कन्ह भोरा जु चालुकु वीरं । छुडायो^३ है कोय कैमास भीरं ॥
 इकं नाम चंदं बरंदाइ बानी । जिनें भंजिया च्यारि मो मंत्र पानी ॥

१. मो०-सार ।

२. मो०-वी ।

३. मो०-रंम ।

४. मो०-गदि ।

दिसा क्यारि रष्यो निरष्यो प्रमानं । जहां सज्जियं सूर चहुआन थांनं ॥
 रजं मोद वंकी करव ही कमानं । धुनै तूल धूनी मनो कट्टे यानं ॥
 हुकमं नरिदं सुचालुकक दीनी । रह्यो आज चौकी सुझाला नवीनी ॥
 चिहू कोद हथथीन की वीरटं फेरो । निमा आज रष्यो मुमंतीति मेरो ॥
 चढी चौकक चौकी सुझाला निमांनी । उठी क्रूर दिष्टी स्वयं मेन जानी ॥
 रष्यो यो महामेन भीमंग राजामिले मल्ल मल्ल अधमं सुसाजं ॥छं० ३१६॥

चालुक्य की सेना का वर्णन ।

दूहा सज्जि सेन चालुकक भर । रहे लोह करि कोट ॥

पयदल गज वठ ह्य चपल । भए आनि गव जोट ॥ छं० ३१७ ॥
 छंद भुजंगी-महा सेन मेनं गभीरं गरज्ज । मनो मेघ माला सुकाला धरज्जं ॥
 झमं झमं झमंति झाला नियानी । चढी चक्र चक्री चवट्टी सुबानी ॥
 सयं सहम ते नेज कैमाम अगं । सयं तीन सथं जयं जाज लगं ॥
 सयं पंच अट्टा सु जामानि तळ्ळे । सयं अट्ट अट्टे रमं राम ॥
 दुहं बाह सेना वरं वीर वाही । मनोकु डयी छाट्टि मा ॥
 अहं मेव सामंत स्वामित लगं । सु मानो कि से ॥
 भय ऊन ऊनं दिठं दिट्ट चौकी । मनो अंकुरी टिट्ट ॥
 घरे दिग्ग षगो भिरे अल्ल भल्ले । घरी एक भग्ने नही दोय बल्ले ॥
 भगे सीह रायं भई क्ह महं । सुती राव भौरा भने कविव चंदं ॥छं० ३१८॥
 कविन कलह भग सामंत । काम कैमाम कुमल्लिय ॥

गज्ज अज्ज अरुजाज । अनुज फिरि पन्चो दुमल्लिय ॥

अल्लानी अरफुट्टि । छट्टि संका सामंता ॥

ज्यो लट्टी परनारि । धोग मित्त्यो धावता ॥

असमान हल्लि भूमिय धरिय । धाय धमंक धमंक धर ॥

बंदियहि बाह बाह दुदल । प्रथीराज राजंग बर ॥ छं० ३१९ ॥

चालुक्यराज का घोखा करना ।

दूहा -- भर मिरि चौकी चपि चलि । मिलि ठिलि जहा दलराइ ॥

सबर जुद्ध दरबार भो । चढि चालुकक रिसाइ ॥ छं० ३२० ॥

युद्ध का वर्णन ।

छं० भुजंगप्रयात् -

धमं धाम धामंत धामं निसानं । निसा स्याम बज्जी सुभेरी भयानं ॥

त्रिगं तंछि तेजी ह्यं हिन हिनानं । छुटे अंदु हस्ती मद जाजु रानं ॥

१. मो०-कठ ।

२. मो०-रष्यो ।

३. मो०-मंडली ।

१. मो० क० को०-झालानी ।

हयं^१ हाय हायं दलं हिदवानं । महाबीर जग्गे सुदग्गेह मानं ॥
गिरें रत रावत्त तुट्टे वितानं । परी हल्ल हल्लं सुसामंत पानं ॥
कथा उच्च भारी सुभारह पुरानं।सुनें धंम बढ्ढे सुममं गियानं॥छं०३२१॥

कबित्त— मिले मल्ल आलंग । जंग भोरा भुअंग जगि ॥
कै कुलाह कंतार^२ । धारा डंडूर पूर लगि ॥
है हुलाह छुट्या कि । सिघ मगल मै मत्ता ॥
कै^३ अप्पां अप सेन । राव^४ रावत्त ★ विरत्ता ॥
आवृत^५ सेन उत्तर दिसा । ईसाने लगिय लहुरि ॥
घावंत घाम सामंत सों । सूर समर लग्गे समरि ॥ छं० ३२२ ॥
चंडिय देवि पसाइ । हस्ति तोरै मै मत्ते ॥
चढ्यो राव भीमंग । चौर मोरह सिलहंते ॥
कै अप्पानी रारि^६ । काइ वाम कि डंडूरिय ॥
कै छुट्टा संग्राम । सिघ संकर निज्जूरिय ॥
कै चौर धाम धुज्जिय धरा । कै कलाळ^७ कलपंत हुआ ॥
जा जंपि जंपि जंपन कहै । जपे राज भीमंग भुअ ॥ छं० ३२३ ॥
नां अप्पानी रारि । नाहि वाइ सुडंडूरिय ॥
नां छुट्टा संग्राम । सिघ संकर निज्जूरिय ॥
है हक्कां धर कंप । चंप उत्तर थी लगिय ॥
चौकी गस्त गुराइ । कोट कोटन इन भगिय ॥
सा दुग्ग देव सत्तरि पती । पति पहार ठेल्यो करिय ॥
आहंन हंन हंनेव हठ । निसि निसान सहह भरिय ॥ छं० ३२४ ॥
सप्तमी को घोर युद्ध का आरम्भ होना ।

बूहा—सद्दं सद्दं उसद्दं भय । बज्जा बज्जिय लग्ग ॥
जूना जंजर हैर^८ बल । भई सुरासुर जग्ग ॥ छं० ३२५ ॥
संभरि सों लग्गे समर । अंमर कौतिग एव
धरी सत्त सत्तमि दिवस । उग्यो उडगन देव ॥ छं० ३२६ ॥

१. मो०—भयं ।

२. मो०—कुशार ।

३. मो०—“कै आसेना अप्प । अप्प रावत्त विरत्ता” ।

४. छं०—महान् ।

★ राव० ए० की प्रति में नहीं है ।

५. मो०—आवृतसेन ।

६. मो०—कै बफनी पार ।

७. मो० छं० को—कुलाळ ।

८. मो०—चौर ।

छंद भुजंगप्रयात् —

घरी सत्त सत्तं उग्यो चंद मानं । वरं बीर चालुकक षगं षगानं ॥
 बजी जूह कृहं कलं कोकनदं । मनो गज्जियं मेघ नदं प्रसदं ॥
 कुलं बीर जग्गे मुषं नीर भारी । परे लोह आवृत्त सा व्रत सारी ॥
 बहै षग घारं गजं सीस भारी । मनो धूम मश्को उटे अग्नि झारी ॥
 तमी तेज भग्गे जगे तेज षगं । बजै जंग नीसान ईसान मगं ॥
 करे अप्प अप्पं नृपं बे दुहाई । नचे रंग भैरुं ततथ्येन घाई ॥
 बहै बांन आव्रत सावर्त्त तेजं । तहां चंद कम्बी उपमां कहेजं ॥
 लगे अंग अरि गजि मुग्गीव भारी । फिरंतं ज जंगम दीसै उतारी ॥
 परें संघ बंधं असंधं निनारे । मरोरंत चौरं मनो मूर बारे ॥
 फिरें^१ मद्धि ढालं रिनं मंझ रीति । तिन मुक्कियं कुंत वारी निव्रती ॥
 ॥ छं० ३२७ ॥

युद्ध की तयारी का वर्णन, सरदारों का सेना समेत प्रस्तुत होना ।
 कबित्त -- है ^२ पग गै पग रथ अरथ । बढि बढी नर लग्गा ॥

कै घायां घन नंत । भयें भंभरि^३ भर भग्गा ॥
 चालुककां चंप्यो सयंन । सें दल सामंता ॥
 गौरीरद कैमाम । भूप भोरा घावंता ॥
 रथ सथ मिलह सज्जन कह्यो । गहकि गज्जि भोरा सुभर ॥
 को करे काल सों चाल क्रतःमहन रंभ मानो अमर ॥छं० ३२८॥
 हकान्यो रा भीम । मत्त में गल गज्जानां ॥
 सहस पंच साहन समंद । ढाले ढल्लानां ॥
 जंत्र मंत्र गोला गहक्क । छोनी सब संक्रिय ॥
 साहन वाहन बर बिरद् । आव्रत उत्तंकिय^४ ॥
 लल्लरिय लोह अप्पां अपन । झर उझार लग्यो गपन ॥
 हल हले सैन सामंत । दल । मनो अंत^५ जम जुथ्य पन ॥छं० ३२९॥
 ना छुट्टा रासिघ । डाम बडूरन उठ्यो ॥
 ना हकान्या आप । सेन भारथ्य न जुन्यो ॥
 सा मंतारी हाक । घाक उत्तर दिसि लग्गी ॥
 अप्पांनी सेना सुनत^६ । भारथ भि^७ भग्गी ॥

१. मो०—हृत्वि ।

३. मो०—भूभर ।

५. मो०—सामंद ।

७. मो०—सुमंत ।

२. मो०—हैयष गैयष ।

४. मो०—उत्तगिय ।

६. मो०—अंठ ।

सन्नाह राव सज्जी सुकसि । विधि विधान लग्गिय अमर ॥
 चालुकक राइ चित धूमरी । सार धार लग्गी समर ॥ छं० ३३० ॥
 महन रंभ आरंभ । जगि^१ भोरा सनाह सजि ॥
 तब लगि दल ह्वक्यो । राज कंठीर कन्ह रजि ॥
 भर अभंग चालुकक । रोस आकास प्रमानं ॥
 हाला हल तंमस्यो । तपसि तामम तम भानं ॥
 त्रैनेत जगि प्रलैकाल जनु । बधि बधि गज्जे उभय ॥
 बंभान जग्य जे उपने । करो सोइ निर्वीर मय ॥ छं० ३३१ ॥
 दुहं आरम्भ होना ।

षग उभारि दल सारि । तारि कइहन दुज्जन वे ॥
 औडन हंयह नगि । धंषि भ्रत चालुकन रवे ॥
 कडि रबध धर लट्टि । ल्थि पर ल्थि अहुट्टिय ॥
 श्रोन धार षल हलिय । मोह माया भ्रम छट्टिय ॥
 तुटि अंत दंत पाइक डुरहि । बहर रूप धावे अछग ॥

पग पगति सिम पग रग मुगति भुगति लम्भ किती मुजग ॥ छं० ३३२ ॥

बूहा - किती गजन लाली नृपति । सुर विध्वमन काल ॥

बीस महम पारस पारय । मनो वीर बर माल ॥ छं० ३३३ ॥

छंद मोतीदाम -

समग अमग विमग विमग विसाल । रहे जुरि चालुक देवन साल ॥
 जुरे बर वीर दमो दिमि पति । मनो घन भद्रव व्रतन भति ॥
 दोऊ दिसि धाव बढे करि साज । मनो चव चग कुलगन बाज ॥
 परे बहु दनिय भतिय काल । वरै वर ढडि विवानन बाल ॥
 मनो मुगधा मन मान प्रमान । रही इम अच्छरि रछि विमान ॥
 सुदेव जय जय नंषि पुट्प । करे दोउ चंद सुकीरति जप्प ॥
 इकै श्रद्ध कीरति अमृत एक । कलूक कवित मुघारै विसेक ॥
 सुर चिछंत नहि वीर बलांत । बह वर बान कमा मय थान ॥
 भ्रमंतिय गिट्टिय रुट्टिय^० भान । रही^१ इछ अच्छरि अच्छ विमान ॥
 ॥ छं० ३३४ ॥

१. मो०—लगि । २. मो०—नंषि । ३. मो०—बाभु ।

४. मो०—किन्ति गजन जग्यो नृपति । ५. मो०—मनो घट भद्रव सह निरति ।

६. मो०—पतिष । ७. मो०—निवानन ।

८. मो०—अधि । ९. मो०—नय ।

१०. मो०—पारै न जान । ११. मो० इम ।

बाजिद खाँ का लड़ना श्रीर बीरता से मारा जाना ।

दूहा—महि षानं बाजीद भिरि । पंच सहस्र तिन सध्य ॥

भर चालुक सेवक बली । जे घल्ले जम ह्यथ ॥छं० ३३५॥

कवित्त—जुद्ध जूह सिरदार । द्वावि दीने बडवानै ॥

नल कूबर मनि श्रीव । जमल भग्ना तरकानै ॥

पुब्ब श्राप नारद समूह । किति दरमन हरि पाइय ॥

उत्तयंग उत्तरै । हर लै मूर बघाइय ॥

उप्पारि षानं बाजीद लिय । षग मग बोहिध्य से ॥

चालुक भीम परपंच परि । चपि चरि षगह पिसै ॥छं० ३३६॥

अष्टमी के युद्ध का वर्णन

दूहा—भर पर भर वज्रं पुभर । हय गे दल भर नुट्टि ॥

चंद सीस अड्ढी चढ्यौ । वर आटमी अहुट्टि ॥छं० ३३७॥

सै बंधन बधन बहम । पच पंच लै तन ।

दल छिक्कन छिपै मुगति । आप भत अपतत्त ॥छं० ३३८॥

सिमिर आइ कायर तनह । श्रीपम मूर प्रमान ॥

वे तट्टे ए तन गुन । विधि विधान दे वान ॥ छं० ३३९ ॥

बालापन जुद्धनरन । लई बडपन किनि ॥

धनि हाला हउ विनि तया । भई वज्र जिमि किति ॥ छं० ३४० ॥

छंद नाराच -परट्टि सेन मज्ज वीर वज्रए निमानय ।

नराच छंद चंद जपि निगल प्रमानय ॥

गज गजे हलं मले हले चले गिरद्धरं ।

कसंमसे उकस्म मेम कच्छप उचछरं ॥

उपारि भूमि दट्ट तब्ब कंध भानि मुक्कयं ।

जुराह रूप जुद्ध भीम सीम नाग धुक्कय ॥

मुभ्रंत सध्य विद्युरं अनेक भानि वाहई ।

मनों कि दंड चच्चरीय गालकं उछाहई ॥

झनंकि षग सौं निसा चमू चमक्कई ।

मनों कि चंद चंद सो धरा न भूमि मुक्कई ॥

अनेक भानि सा दुरं वजंत वान सापरं ।

मनों कि जीव जंत पांनि उच्छयं उछाररं ॥

बजंत राग पंच षट् मोह बंधि आनयं ॥

अबंत सेन संधि भूप चंद जपि पानयं ॥

दुरंत चौरं गज्ज सीस सस्त्र मग्न जत्तरे ॥

मनों कि कूट सीसतें सुगंग भूमि विस्तरें ॥ छं० ३४१ ॥

चावंडराय के युद्ध का वर्णन

अरिल्ल—जस धवली लट्टी कैमासं । चावंडराइ बंधव अभ्यासं ॥

सस्त्र मग्न तन' तिरु निल बंड्यौ।बली जूह भारथ फिर मंड्यौ ॥छं०३४२॥

कवित्त—धनिव सूर सामंत । लोन ह्वै मिले अरिन अट ॥

इक मागिय हुइ षार^२ । भाग चौसठि षार घट ॥

ते दुसेन मुष धरनि । लज्ज सो निट्ट उतारे ॥

मार मार विस्तार । सार सन्हो गहि डारे ॥

उर धर्यौ सिधु^३ सिधुर सुभट । उदर मध्य फुट्यौ अबित ॥

चामंड राइ दाहर तनौ । सौन नेह बंध्यौ अमित ॥ छं० ३४३ ॥

एक बीस इकईस । एक इकतीस सहस बर ॥

इक्क सहस इक डेढ । इक्क वर उभय सस्त्र झर ॥

एक एक इक लष्य । विलष बल पुज्जहि देव ॥

ते जगिय बीर बीराधि । बीर बीरा रम सेवं ॥

मारु महंन नाहर वलिय । हलिय कित्ति दष्षिन वयह ॥

निडुर नरिद पजून बल । हाइ हाइ करे दिसि दसह ॥ छं० ३४४ ॥

बूहा—हय हय गय नह सूर बर । दिष्षि भयानक देव ॥

जंबूरा हंभीर मों । भर भारथ वित्तेव ॥ छं० ३४५ ॥

यह युद्ध संबन् ११४४ में हुआ ।

★ ग्यारह सें वालीस चव । बंधव पुत्र अहुट्टि ॥

सुफिरि राज सेना नृपति । भी भारथ संजुट्टि ॥ छं० ३४६ ॥

कवित्त—हय गय नर आहुट्टे । लुधि आहुट्टि लुधि पर ॥

इक हय दुअ विहय । उच्च चढ़ि पित्त मट्टि धर ॥

बलि वामन रामह सुबीर^४ । पंच पंडो बल भारी ॥

जरासिध नर केस । नरनि नर सिध उचारी ॥

इन समह समर इत देव मय । क्रत छापर ककियुग्न मसि ॥

इत करिय सोह करिहै न को।करो सुकोइ न बत बुसि॥छं०३४७॥

तरनि तेज तप हरन । भरन पोषन दोषन बल ॥

उदर ब्रति जं करिय । उदर कट्टे सुमध्य मल ॥

१. मो०—तिन ।

२. मो०—त्रवार ।

३. मो०—बाप ।

३४६—★ यह बोहा एशियाटिक सोसाइटी की प्रति में नहीं है ।

४. मो०—राव हमीर ।

बल भट्टी जं करिय । करिय कर दंत मत्त गहि ॥

बरी एक इक पाइ । षग टिक षग षेत रहि ॥

जंबूर लग्ग भग्गान तउ । बर बुल्ल तामस बयन ॥

चालुकक आंन जंपे मुषह । रत्त मुष्ष अग्गी नयन ॥ छं० ३४८ ॥

बूहा—नयन बयन तन अग्गि जगि । कित्ति अग्गि जग जग्गि ॥

बर विताल जंगम विहंसि । दयसीस नर षग्गि ॥ छं० ३४९ ॥

रन षग्गा भग्गान को । पत्ता चालुक राइ ॥

हंमीरां हंमीर बर । भो वर बीर विभाइ ॥ छं० ३५० ॥

उन सरदारों का नाम कथन जो लड़ते थे ।

कबित्त—सुअन^१ सूर सामंत । मंत लग्गे विरुञ्जानं ॥

रा चामंड जैतसी । राम बड गुज्जर दानं ॥

उदिग वांह पग्गार । कन्ह कूरंभ पजूनं ॥

षीचीराव प्रसंग । चंद पुंडीर सु इनं ॥

महनंग मेर मारू मरद । देवराज वग्गरि सलष ॥

देबराज कुंअर अल्हन अनुजाइन वीरा रस लषि अलष ॥ छं० ३५१ ॥

निडुर बर नर सिघ । बीर भोंहा भर रूपं^२ ॥

बीर सिंह बर सिघ । गरुअ गोइंद अनूपं ॥

रा बड गुज्जर राम । बलिय बंभन रस बीरं ॥

दाहिम्मौ नर सिघ । गरुअ सारंग रन घीरं ॥

चालुकक बीर रन सिघ दे । दे दुवाह दुज्जन दहन ॥

सुर तांन गहन मोषन चहै^३ । चालुककां लग्गे महन ॥ छं० ३५२ ॥

घट्टिय घट्ट निघट्ट । घांन दिष्षे इन भंतिय ॥

ज्यो प्रात उडग्गन चंद । दीह दीपक ज्यों कंतिय ॥

तमसि तमसि सामंत । जाइ बर बीर सुरुष्यो ॥

उभय पुत्त इक बंधु । भीम भारथ बल बंध्यो ॥

ओहनय हथ्य लग्गी तनह । उपम चंद सारह करिय ॥

धूमली रत्ति में बंक षग । मनो चंद ह्वै विस्तरिय ॥ छं० ३५३ ॥

नर नाहर ज्यों लस्यो । अयुत नाहर घर षडिय ॥

नाहर राइ नरिद । षेत माया तन मंडिय ॥

ढंढी रिइक्षी ढाल । हाल चालुकह कइठै ॥

आंन राज प्रथिराज । लाज सांई सिर चइठै ॥

१. मो०—सुग्रीव ।

२. मो०—भूपं ।

३. मो०—कहै ।

हसि कहिरू बाग कद्विदय बली । मिलि मस्वीरि संन्ही लन्थी ॥
 जाने कि अग्नि लग्गी बनह । दंस दाव दव प्रज्जर्यी ॥
 बड़ गुज्जर राजैत । छत्र देषं पट्टनवै ॥
 वै नीसांनी मार । घाट गिर वर घट्टनवै ॥
 अधरा षंडन षग्ग । झग्ग झूरे सुपमारह ॥
 मनो सराली जंग । पांन कुट्टे गंमारह ॥
 रा राम देव देवत्त नुअ । जाजै जौरि जुह्धिय किय ॥
 नर नाग देव देवी विहसि । पंजुलि पंज प्रहास किय ॥ छं० ३५५ ॥
 जिन थक्का जरि देव । सेव थक्की मातंगी ॥
 धर थक्की धर भार । भारथ क्यो शिव मंगी ।
 कर थक्का करि वार । वांन थक्का कम्मांन ॥
 मुष थक्का मुष मार । ठांन थक्का नुरकानां ॥
 थक्कान जैन जज्जर बलां । कलिन राम गुज्जर अरी ॥
 चालुकक राव गुज्जर पनी । घाय घाय पुंमर परी ॥ छं० ३५६ ॥

दोहा—परिय रार हिंदवान गों । मोसनी रनि बाह ॥

दिल लग्गा वरदाइ बल । जो हंरे हथं वाह ॥ छं० ३५७ ॥

युद्ध का वर्णन ।

कवित्त—हय हय हय उच्चार । देव देवा सुर भोजिय ॥

हय हय हय उच्चार । पाउ प्राउं चर ब्रजिय ॥

बह बह नह रावा । नरुठ पग पग मट्टन ॥

एह अह उतमिय । अति नर भर भर पट्टन ॥

हय राव राम हर हय किय । भुव माल महह डले ॥

मंगल पनेव भार प किय । जिन भु ब्रह्म मायन पुले ॥ छं० ३६४ ॥

दोहा - मर्य श्यांन वपन मु ब्रह्म । पच पंचले तन ॥

पंच पच पंचह मिल । आप भूत अह बत्त ॥ छं० ३५९ ॥

छंद भ्रमरावल नव जंपि नऊ रम वीर ननी । भमरावलि छंद मुकिति सचै ॥

रस भी छह नीय नवं नव थान । दियी मुप रूप मु चालुक पान ॥

भयो मृष वीर मु भूप नरिद । भयो रस कान्न कट्टन कंध ॥

भयो अदभूत भयानक व्रत्त । भयो रसहाम उमा क्रतपत्त ॥

भयो रस रुद्र अदभूत जुद्ध । भयो तिन मध्य सिगार विरुद्ध ॥

भयो रम मंत भई तिन मुत्ति । दिपै जनु पल्लव लाकिन गति ॥

टगं टग चाह रहे पल हार । उठे तहां हंकि मुवीर हंकार ॥ छं० ३६० ॥

पूहा - दल बल कल साईं बिमल । मरन महरत संधि ॥

चाहुभान चालुक के । लगे बीर गुन बंधि ॥ छं० ३६१ ॥

छंद रमावला -

सूर साईं रनं । वीर चक्के वनं ॥ मोह मते जनं । सार पीवं पनं ॥

बार बीरा इनं । काल जुट्टे जनं । पग पगं घनं । ज्वाला लगभं मनं ॥

अश्व तुट्टे ननं । रक्त जापें पिनं ॥ लोह बज्जे पन । डिभ डिभी रनं ॥

तार तारं पिनं । काल अंमे ननं ॥ रक्त अग निनं । लोह न्हा ' मनं ॥

तीय छुट्टे इनं । मात पित्त रनं ॥ स्व मि जिन्ने तन । पिंड मारे घनं ॥

देव कालं कलं । ग्यान छुट्टे छलाओम पावै ननं मुनि मग्गं रन ॥ छं० ३६२ ॥

छंद भुजंगी ह्रस्व गौर गौरग मोरंगे मोरं । प्रजाळन वीरं निमानन भोरं ॥

मुपं मंच कैमास नैभं जिभीर । कही चद नटी वर जाम पीरं ॥ छं० ३६३ ॥

आर्या पारसं भद्रवं चंद्रानारका तार नयाः प्रीरगा वीर संघ गुर छुट्टे छबंधं ।

कल ह्यगा पमानं । देव जग्या दिवानं ॥

गुजर राय रायं । चन्द बह्यो विनाय ॥ छं० ३६४ ॥

स्वर्य भोगराय के मुट्टु का वर्णन ।

कविन हाड हाड विक्रजाई । नेन लगभ नर नके ॥

दिपिप रिपिप अरिपिप । भिपेप नाभिपय म लल्लै ।

ग्रहन अकअ ज्यो मान । राट लसो नर केन ॥

यो लगि मर अ भीमग । राट लसो पन जनं ॥

ले चलयो वपि दिपे सकल । कलनि रव मुट्टु सडिव ।

भिदवान ननि मिर्वां गुपन । विदवन मल भारथयिनि ॥ छं० ३६५ ॥

छन्द बेली । रत्नल

प्रनाद मुगद मु जावय मर । वीर विरं नरेतर । नंचर ॥

पंज मो पज मनेह मिल भर । मेनिय सारि सुधारि सुव मिर ॥

ठिल्लिय फोज मिठे बल । दु दरि । शिप अलाग भयो मणि मुंदरि ॥

अपय अपप मिठे भर भीमर । पार अपार सरद्वर धुं प्रग ॥ २० ३६६ ॥

पानि निषेध बजी झरभो झर । जाननि ना जननी पाय पजर ॥

मे हथ बाह सय भर मुम्भिय । गोहिल मुट्टि परे पय रभिय ॥

हथिय हंकि भिरचो प्रभु भीमिय । लप्य सवाय जिही दल जीमिय ॥

उत्तर उत्त तुरंगति छडिय । जहव षग दि । करि मडिय ॥ छं० ३६७ ॥

१ ए०-में नहीं है ।

२. मो०-दिदिमान ।

३. मो०-जामरीरं ।

४. कु० मो०-कलहृदगा ।

५. मो०-भूतर ।

६. मो०-दल ।

७. मो०-सुम्भर ।

८. मो०-सारधर ।

९. मो०-दलदल ।

लुब्धिय जलुब्धिय पलुब्धिय तनंषिय । हुंकत देव सिरं परि पंषिय ॥
 रुंडन मुंड परे दरवारिय । जानि कि कूर सुकट्टु कवारिय ॥
 सें हथ हथिय मों जुज पारिय । जानि चनूर^१ कि मूर मुरारिय ॥
 सें गुर बंध सु जांम सु चष्ययासैं दल रांमति गुज्जर नष्यय^२ ॥छं०३६४॥
 तीन सु तुग किए तन^३ कूंजर । मीडत जानि मिली भुज पिंजर ॥
 तीन निमेष जग्यौ जदु मुच्छिय । जयं^४ जयजोर पढे उर लच्छिय ॥

भोला राय को लिए हुए हाथी का गिरना घोर मरना ।

चंपिय पांनि हियं दल कुष्यिय । राय समेत पस्चौ धर धुक्किय ॥
 प्रांन गयौ गज गुज्जद हारिय । स्वामि गुरज्जन चंद प्रहारिय ॥छं०३६९॥
 पृथ्वी पर गिरने से भीमराय का महाक्रोध करके कौमास पर टूटना
 भूमि परे भयो भीम भयानक । भीम कि भीम गजाधर जानक ॥
 षग तुटें कर कडिड कटारिय । सो कयमास ग्रह्यौ कर भारिय ॥
 राड पनौ निरयौ निज चालुक । दत^५ कं कंठ लग्यौ मनो कालक ॥
 कष्य घन्यौ कयमास उचाइय^६ । पटन राइ जै सिध दुहाइय ॥छं०३७०॥
 कंन परी गुर गुज्जर रामहि^७ । जैत पवार सुमोहिल रांनहि ॥
 तेन लगे चल चालत तानहि । सिध परे बछ् मे गजवानहि ॥
 हक्कि हमीर हस्यौ मुष तद्विडय । तुम सामंत किना मुष पद्विडय ॥
 गहि गल भीम समक्कि हिलौन्यौ । अंब पन्यौ तर जानि झंझोन्यौ ॥छं०३७१॥
 फिरि करि वाहि नरिद कटारिय । सें मुष मल्ह^८ हमीर निवारिय ॥
 गौ भजि भूप जहां रज पत्तिय । रुड्व झरें जल ज्यों गिर गतिय ॥
 अप्य गज्यौ भर भीम महाभुज । उभय मुषग सुबंक दुअंनुज^९ ॥
 आय मिले भर भीम समध्यह । जंपिय जीह हरी हथ तथ्यह ॥छं०३७२॥
 अंभिय बीर महा बर बीरह । सोढा सारंग देव सधीरह^{१०} ॥
 चोरा चाचिग देव सधीवह^{११} । बीर बढेल सु जुह अरेवह ॥
 सध्यह सत्त सहष् सु सध्यिय । जुह मच्यौ सम सूर समध्यिय ॥
 भीर भई भर सामंत सूरह । बीर जग्यौ सम बीर करूरह ॥छं०३७३॥

१. को०—जा बिचनूर ।

२. मो०—नचय ।

३. को०—कू० ए०—केर ।

४. मो०—कू०—जय ।

५. मो०—नीम ।

६. मो०—दंनिय ।

७. को० कू० ए०—उचारिय ।

८. मो०—कान्हहि ।

९. मो०—मेल्लि ।

१०. मो०—उनिय षग सुबंक विय बुज ।

११. को० कू० ए० में यह तुक नहीं है ।

१२. मो०—चोरा चाचीय देव सुदेवह ।

कैमास पर भीड़ बेख कर चामंडराय का सहायता पर पहुँचना।

कवित्त—तामस मय चामंड । आप तथ्यहृ संपत्ती ॥

चरन बंदि मयुरेस । सुने कारन क्रत तत्तो^१ ॥

सुभट पंच सैं सध्य । सिलह बंधी सबधीरं ॥

परसि तिथ्य कटि पाप । अप्य आवरेसु बीरं ॥

देधियै भीर कैमास सिर । सेंघि रारि उससे अरुन ॥

हहकारि हक्क चामंड गजि^२ । सब्ब^३ लोह कदूढ लरन ॥

॥ छं० ३७४ ॥

घोर युद्ध का वर्णन ।

छंद भुजंगी—कढे लोह सोहं जपे आंन ईसं । समं ज्वाल पावकक में धूम दीसं ॥

बजे लोह रथ्य^४ रजे रारि संघी । षिले पेल वीर दुअं पति बंधी ॥

घवककंत संगी हवककंत वीर । भभवककंत श्रोनं अमेनति घीर ॥

पलं^५ षंड तुट्टु कटि हड्डजाम । बघै वीर वीरत्त अंगं उघामं^६ ॥ छं० ३७५ ॥

असी झाक बाजंत पावकक उट्टुं । जरै टट्टरं घज्ज उम्भार मुट्टुं ॥

हरै अंत अंती पयं रुसि^७ तुट्टुं । कटि^८ पाइ पानि घर सीस लुट्टुं^९ ॥

असी अग्गि उड्डे लगें टोप दसैं । उठै श्रोन छिछं तिनं ताप रसैं ॥

परें हाथ चामंड बाजी बिभंगं । नरं रुथ्य संताह षंड अलगं ॥ छं० ३७६ ॥

रिनं राइ चामंड षेलं करूरं । मनो भग्गलं नट्टु मंड्यौ विरूरं ॥

चट्ट्यौ गज्ज^{१०} पामार सिध समथ्यं । तिनं गज्जयं चंपि चामंड तथ्यं ॥

चप्यौ अरव चामंड गो भूमि मगं । उठ्यौ अस्मि मगं^{१०} ह्यो सं समगं ॥

फट्यौ सीस कंधं समं झाक ताहं । गहैं^{११} दंत दंती घमक्यौ घराहं ॥ छं० ३७७ ॥

फटे कुंभ प्राहार श्रोनं अजेज । महामट्टु फुट्ट्या मनो रंगरेजं ॥

चली कुंभ साडंभ भेजी डपट्टुं । मनो भजियं कन्ह सोदद्धि मट्टुं ॥

पर्यौ सिध भूमं करै हक्क उठ्यौ । ह्यौ असि विभाग धोनी अपुठ्यौ ॥

हहकारि सारंग सोढा समथ्यं । समं आइ चामंड सों सेल हथ्यं ॥ छं० ३७८ ॥

१ कृ० को० ए० मुनिय कायरन क्रत तत्ती ।

२. मो०—गति

३. मो०—सबहि ।

४. म्ये०—रस्स ।

५. मो०—पलं पब्बु तट्टुं करैं ।

६. मो०—बेंघे वीर वीरं सुअंन उघामं ।

७. मो०—इविक ।

८. मो०—कटे ।

९. मो०—सलष ।

१०. मो०—उठे असि इम्भं ।

११. मो०—गज्ज ।

ह्यौ अस्सि दाहिम्म सा सीस मंधे । जरासंध फट्या जरा जानि संघे ॥
 ह्यं सद् जपेव वट्टेल बीरं । समं अश्व चामंड चंप्यो सुधीरं ॥
 ह्यौ सेल दाहिम सीसं सुदेसं । फट्टे टट्टरं पुट्टि उट्टे परेसं ॥
 ग्रहे^१ बांह चामंड चंप्यो सुऊरं । विना अभ्रु नष्पो कलेवं सभूरं ॥छं० ३७९॥
 चट्ट्यो अश्व वट्टेल चामंड बीरं । जयं सद् जपे सुरं सीस धीरं ॥
 चट्ट्यो अश्व चामंड चंपे अरेसं । बिबं षंड षंडं षरंतं परेसं ॥
 परे संड मुंडं सु सामंत ह्य्यं । मनो कोपि कोरों दलं पारि पय्यं ॥
 परीहार सिंहं लग्यो लोह रस्सं।मनो सूक षंषं सुरं मुष त्रस्सं॥छं० ३८०॥
 नृभो धार ईसं गहक्के बहंके । हनो सद् जपे लषे भीमघंके ॥
 तबे सां पुला आय बोरंम देवं । नूपं अप्प अडो उहसे उरेवं ॥
 दुअं उंच गातं दुअं उच्च ह्य्यं । दुअं सामि धमं सुघारंत मय्यं^२ ॥
 दुअं सेत अश्वं सिरं गेन सारं।दुअं आइ आभासि सेलं उभारं॥छं० ३८१॥
 दुअं वाहि सेलं तनं मज्ज भग्गे । ॥
 विना बाज दूनं कठे षग्ग ढानं । जुटे अंगदं भीम दुजोघजानं ॥
 उभै षग्ग भग्गे कठे जंम दढं । जुटे ह्य्य बय्यं समय्यं सनदं ॥
 घबक्कं हवक्कं जंम दढं पानं । लषे सीसयं फूल नष्पे सुरानं॥छं० ३८२॥
 करे तर्पनं रत्तपिंडं पलोरं । करे केस कु स्सं नूमै तिथ सारं ॥
 वरं^३ रय्य रोहे चढे खग मग्गं । घनं घनि वानी सबै सेन लगं ॥

भोलाराय की सेना का भागना ।

गहक्केव क्रम्यो सु कैमास जामं।भहराइ सेनं भगी भीम तामं॥छं० ३८३॥

बुहा—दस सहस्र दुअ भुज परत । रहि दरवार झुझाइ ॥
 हसम सहित हैवर मुमति । कतिहुन वांन सिराइ ॥छं० ३८४॥
 दरसि राज पट्टन मुपति । गति फर पारस लग्ग ॥
 मनो इन्द्र इन्दी वरन । मुष मुष कंकन लग्ग ॥ छं० ३८५ ॥
 लुथिय रही दरवार गुथि । षरिय पंच अम रीस ॥
 नित महि सक कैमास सय । रहिग अठारह बीस ॥छं० ३८६ ॥
 अप्याही अप्यां जुरिग । भग्गा धर वर धाइ ॥
 मुआ न को मत्त जा करह । कढ्डी कढ्ढन पाइ ॥ छं० ३८७ ॥
 कवित्त—आयो कढ्डी स्वामि काज । साहस सागंतां ॥
 वारह से बानेत । सुलत दुडन धावंता ॥

हैवै लगै ह्य्य । तथ्य भोरें राकज्जें ॥
 जो वित्त कवित्तयी । देव दरवार सु गज्जै ॥
 संभ्राम लग्गि संकट सु पड्डु ग्रहास पिणिय पहर ॥
 तुट्टिय सु सस्त्र छिन्निय सिरनागहत ननन ब्रह्म गहर ॥छं० ३४८॥

छंद रसावला —

हिंदु हिंदू ररी । लोह उड्डु^१ शरी ॥ मुक्क उक्कीबरी । मुक्क मुक्कैसरी ॥
 राग रंगै तरी।भीर भागै परी॥झल्ल मल्लै ढरी।ढल्ल कल्लै टरी ॥छं० ३४९॥
 कद्धि कूटं करी । ईम ईमं अरी ॥ भीम लग्गी घरी । राइ तुंगं परी ॥
 गोम हेमं लरी । आइ छा उग्गरी^२॥कंज कूरंभरी।दाहिमानी भरी ॥छं०३९०॥
 जड्डु हड्डु करी । पैर वज्जीषरी ॥ सून सेनं टरी । लुथि पा घरी ॥
 कौन जंभं शरी । केयकेनी बरी ॥ जैत उप्पा भरी ॥... .. ॥छं० ३९१॥

कवित्त — काकड्डी सुभ्ययी । रह्यौ रानिग देव उर ॥

जैन सहू घरि छत्र । मंच त्रिबह्यौ मंडि सिर ॥
 गहअ राव पैरंभ । रह्यौ ग्यारह से सेंभर ॥
 पारिहार पावार । नेह निव्वह्यौ मुनिव्वर ॥
 जानै न चंद अतन आनत । महम तीन तेरह परिग ॥
 गुज्जरिय ग्रेह सदेह मिटि । महस मत्त दह निव्वरिय ॥छं० ३९२॥
 चहुआनां रे सेन । ममुद विच बडवा गोर ॥
 अगि सु षग्ग षग्गयो । सुनमरन घन घन कोरं ॥
 स्याम छोह दद्धयी । रोम नथ्ययी सु गड्डी ॥
 दुति औपम कबि चंद । चंद पारस विच ठड्डी ॥
 झुलई लोह लहरें सुनन । तुटि गुरज्ज अरि छड्डिलिय ॥
 कद्धयी ममर चालुकक रन । अप्प पंच मिलि अप्प जिया ॥छं० ३९३॥

पृथ्वीराज का राज्यस्थापन होना ।

जित्यौ रति रति वाह । सिंघ लीनो गज घेरिय ॥
 बलि दाहिम कैमास । दियो चालुक मुष फेरिय ॥
 बरति संग वे थान । रा भोरा हय मंडिय ॥
 दिसि दिसानं कग्गद प्रमान । भाव भावन लगि छंडिय ॥
 दुँढयो वेत सामंत भर । आपन षर उत्तारयो ॥
 तिन रानि रारि चहुआन दल । मंत सुमंत विचारयो ॥छं० ३९४॥

१. मो०—सम्भ ।

२. मो०—माह ऊठापुरी ।

छंद भुजंगप्रयात-

पर्यो अष्ठी हाडा हयं हड्डभन्गी । लर्यो छोह भीमं सिरं छत्र लम्बी ॥

पर्यो पंथ मारा^१ उपरिहार पाली । जिने ब्रह्मचारी चितं किति आली ॥

पर्यो मास मोहल्ल मल्लीन बल्ली । जिने देह रती करी सस्त्र डिल्ली ॥

त्रिभै जैत बंध पर्यो धार नाथं । मही राव भागै नहीं जासु हाथं ॥छं० ३९५॥

सहृदेय सोनिग चौहृथ्य हृथ्यै । रदी रंभ डिल्ली गुनं गैत तथ्यै ॥

असारी असंभी जयं जोग ध्यानं । कवीचंद कित्ती करै का वषानं ॥

घाबू का राज्य जैतसी को सौपना ।

रति वाह वित्यो जयं जैत सूरं । बदे ग्रेह सामंत तत्ते सपूरं ॥

मजं वाज लुट्टे रु छुट्टे पवारं । दियो राज अब्बू सद्रुगं अघारं ॥ छं० ३९६ ॥

परे स्वामि कांमं जु सामंत सथ्यी । प्रकारे^२ सु चंदं दिसा सुद्ध षथ्यी ॥

जयं पथ्यराजै सु सोमेसपुत्तं । धर्यो संभरी राव सो छत्र हित्त ॥ छं० ३९७॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय सौं जुद्ध

सामंत विजै नाम द्वावस प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १२ ॥



१. मो०—प्यवार परिहार ।

२. मो०—प्रकाशे ।

अथ सलष जुद्ध समयो लिष्यते ।

(तेरहवां समय ।)

सिंहावलोकन

दूहा—गह उगगह निगह करन । भिरन भूप चहुआन ॥
सिंघालोकन कथ्य कथि । सो कवि चंद वषांन ॥ छं० १ ॥
कवित्त—घन निघन दोइ घपहि । घपहि रन वीरव काइर ॥
छुट्टे बल वे पांन । वीर हक्के बल साइर ॥
अघम जुद्ध नह आदि । जुद्ध हिंदवान हिन्दु बर ॥
चाहुआंन सुर तांन । कहो कलहंत केलि भर ॥
आदेव सेव चहुआंन किति । चालुक्कां लगे भिरन ॥
सम मुगति बंध बंधै बलिय । सुबर वीर लगे तिरन ॥ छं० २ ॥
बाथा—ठिलिय ढाहन सस्त्रं । बज्जिय आशज राज राजेन्द्रं ॥
ग्रामं पुर अजमेर । जगे सय वीर विकंदं ॥ छं० ३ ॥
दूहा—सयन सिंह लगा सुअरि । मुनि करि वर प्रथिराज ॥
सा वंडे सन्ही चढ्यो । तहं गोरी प्रति बाज ॥ छं० ४ ॥
गाथा—भारद्वाज सु पंषी । उभयं मुष उद्दरं एकं ॥
त्यो इह कथ्य प्रमानं । जानिज्यो कोविदं लोयं ॥ छं० ५ ॥
उधर भोला भीमदेव से सरदारों को लड़ाई ठनी इधर
शाहाबुद्दीन को खबर साने दूत गया, उसका लौटना
और पृथ्वीराज से विनय करना
दूहा—उत भोरा भीमंग सों । सूरन संध्यो सार ॥
इत प्रथिराज नरिंद को । दूत संपते वार ॥ छं० ६ ॥
अंग भसम जंगम जुगति । जटा जूट सिर मंडि ॥
कसिल गोट भ्रिग चर्म पट । बड आडंबर हंडि ॥ छं० ७ ॥
नयन जोति वत्तन विदुष । असन दंभ कहं आंन ॥
षवरि होन बुल्ले निरुट । दुवा दीन चहुआंन ॥ छं० ८ ॥

१. छं० को० मो०—कै ।

२. को०—मुक्ति ।

३. मो०—विष्य दुवाह ।

साटक—वै चहुआंन नच्यिद' इदं अवनी भूपाल भूपालयं ॥
 जंबू दीप महीप दीप निबलं किस्तीति विस्तारयं ॥
 षगं त्रास मैवास त्रास त्रसनं गर्भा न गर्भं गलं ।
 तोयं जैति जिहानं भानं तपनं मोनं दष्टा जे बलं ॥ छं० ९ ॥

वार्ता—अचहु अँ चहुआंन गाजी । षलक तो षग राजी ॥
 मैवास मार बाजी । पर्व तो सरन साजी ॥
 मैभीत भूषं त्रषेवं । फल पत्र कंदं भषेव ॥
 आवास निर्वास नैरं । जहां तहां तजमि घतूर षेरं ॥
 अजमेर पीर सहाई । दुसमंन पैमाल लषो देब हाई ॥
 पीर पैगंबर दुवाह गौर सारे । अन मीन मइजिन दंत चारे ॥
 ढिल्ली तषत थिर राज तेतें । गंग जल जमन रवि चंद जेतें ॥ छं० १० ॥
 दूत का आकर पृथ्वीराज को खबर देना कि तीन लाख सेना के
 साथ शहाबुद्दीन आता है ।

बुहा—सुनि दुवाह जंगम चरन । आडंबर तन तिच्छ ॥
 रिभिय गल्हां गुर सुतन । कहो षबरि की मिच्छ ॥ छं० ११ ॥
 कहै दूत दिल्लेस सुनि । चरचि बत्त चहुआंन ॥
 हम आए तब उन कियौ । बाहिर नगर मिलानं ॥ छं० १२ ॥
 कहै विवर सांई सुनौ । गज्जमेस सह भेव ॥
 तीन लष साहन सबल । अकल अनंम अतैव ॥ छं० १३ ॥
 बंके मुष बंके चपन । बंकी करन कमानं ॥
 बंक दीह सम करि गनौ । बंके षग अमानं ॥ छं० १४ ॥

दूत का बंधरे के साथ शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन करना ।

छंद पढ़री—कर जोरि अरज तिन करी राइ । गनि कहैं सेन जे जुरे आइ ॥
 दस सहस सेन षगगर अगंज । अति उंच गात सादूल पंज ॥ छं० १५ ॥
 बत्तीस सहस कविली करूर । जम जोर जोध निज्जरि गरूर ॥
 कसमीर कहूर सत्तरि हजार । कमनैत काल मुठी समार ॥ छं० १६ ॥
 हबसीह संम त्रैपन हजार । कर धरें कहूर कत्ती बाजार ॥
 पैंतीस सहस रुंमी रहस्सि । तिन गहै लोह महमह इहस्सि ॥ छं० १७ ॥
 सैंतीस सहज सज्जे फिरंग । तिन लंन झूल टोपी फिरंग ॥
 सत्रह हजार सज्जे पठानं । अनभंग जंग अनभूल दानं ॥ छं० १८ ॥
 दस सहस सेन सज्जे सज्जट । बाराह वैर बल घट अघट्ट ॥
 पत्रह सहस पस दान साह । अंगन अगंज को सकै गाहि ॥ छं० १९ ॥

पचीस सहस सागिरद पेस । कामीक कमल पेवे असेस ॥

सुलतांन षबरि इह सेन पाइ । बगसी सहाब बरनी सुनाइ ॥छं०२०॥

तिन मद्धि इक्क लष अकल जीव । जानै न भज्जि^१ वज्जी करीव ॥

तिन मद्धि मीर के चमर धार । तिन माया न मोह पिण्णिय लगाए ॥

॥ छं० २१ ॥

तिन मद्धि मिले केतबल साज । सम रंग जंग जनु परत गाज ॥

पञ्चास सत्स तिन महि असंक तिन चित्त अभै भै भीत बंका ॥छं०२२॥

तिन मद्धि तीस बहरी वलाइ । हुकमी हसंम जनु सोर लाइ ॥

तिन मद्धि सहस दस समर धारा अरि मार सार जै करै सारा ॥छं०२३॥

तिन मद्धि पंच सें सत्र चूर । रन रंग नैन लषियै करूर ॥

पंच बीस पंच दिन करें निवाज । हक अहक वस्त जिन नही काज ॥

॥ छं० २४ ॥

अय काल पाक अस्नान अंग । छल छेद भेद जिन नही रंग ॥

संमरन संग जिन नही इव । अल्लाह लाह व्यापार भव ॥

की रीय करी जिन देह एक । पैराति परन पज्जी न टेक ॥छं०२५॥

डूहा — कहै दूत प्रथिराज सम । मिछ सेना वरजांर ॥

सहर निकसि बाहर भए । बंन बज्जि घन घोर ॥ छं० २६ ॥

शाहाबुद्दीन की चढ़ाई का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का क्रोध करना ।

कवित्त — सुनत सुवन सोमेस । भंम भैभीत भयो तन ॥

रोस रग प्रज्जलिग । मगि संघ्राह अमर जन ॥

हयन हुकुम करि देन । मंत गज अंदु न पुल्लिय ॥

नालि गोल जुत जंत्र । हसम हा नुर सह बुल्लिय ॥

लोहांन बोलि आदर अनत । विवरि बत्त दूतन कही ॥

विफरि वीर डक्कन सुनत । जनु कि पुंछ मिडिय अही ॥छं०२७॥

सोहाना का क्रोध करके शाहगोरी के नाश करने की प्रतिज्ञा करना ।

पुच्छ चंपि जनु चिल्ह । चिघ सोबत जग्गाइय ॥

हक्कार्यो कि वराह । दंग जनु अगि लगाइय ॥

बरड छता कै छेरि । गाय व्यानी जग्गानिय ॥

कै जग्गाए वीर । भीर भारष मग्गानिय ॥

विरघयो लोह लोहांन सुनि । जत्र कत्र मेछन करों ॥

सोमेस आंन सुरतांन धर । तर ऊपर गज्जन करों ॥ छं० २८ ॥

घाबूपति सलष घादि का घपनी सेना तयार करना ।
 सुनि अवाज सुविहांन । सलष अब्बूपति रष्षन ॥
 सहस सत्त सजि सेन । गिलन गोरी भर भष्षन ॥
 गजन पंति डुलि ढाल । तत्त तोषार पष्षरिय ॥
 जंत्र गोर गहरांन । मिलन मेछांन मष्षरिय ॥
 अनमूत भूत संनाह सजि । बजि निसांन घन घुम्मरिय ॥
 इम जेत सुवन हुवननि दहन । लरन लोह मन गुंमरिय ॥छं०२०॥
 पुनि गुज्जर बलि बंड । लोह अन डंडनि डंडन ॥
 रहसि राम रन जग । नथन अन नथथन संडन ॥
 अठु सहस असवार । सार पाहार प्रव्रत्तिय ॥
 दांन ध्यान असनांन । सोक संसार निर्बत्तिय ॥
 अनचित्त आइ सारोंड सह । जनु अकाल पावस मंडे ॥
 आवाज साह अवनननि सुनत । सकल सुष्ष विध्रम छंडे ॥छं०३०॥
 पुरोहित गुरु राम का घाशीर्वाब बेना ।

फुनि आई गुर राम । माम भुज डंड समर जिहि ।
 जानु भारथं द्रोण । श्रोन बरषत सस्त्र जिहि ॥
 अश्व अयुत तिहि तीन । ग्यांन विग्यान विनांनिय ॥
 मंत्र जंत्र आराध । मथथ जिन बीर विग्यांनिय ॥
 आसीस आंनि चहुआन दे ॥ कहा विरम माजिन चली ॥
 चंपै न सीम साहाब सक । धक धकि धर करिही प्रली ॥छं०३१॥

ब्रह्मा—दिषि डरांन डूबर सबन । गहकि गज्जि नीसान ॥
 घर धुंमर अंमर^१ मिलिय । मुबित रोस रीसांन ॥ छं० ३२ ॥

थोड़ी सी सेना के साथ शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये
 पृथ्वीराज का निकलना ।

कवित्त—सहस पंच दस सेन । अल्प चहुवांन संघातिय ॥
 बाल पोस प्रत्यंग । सस्त्र सत्रंग निधातिय ॥
 चमर तबल टंकार । हुंक हुंकार हुकारिय ॥
 लोह छक्क घर धक्क । कक अनसंक वकारिय ॥
 सहस तीस सह सेन मिलि । गिलन मेछ गज्जे गहर ॥
 तिन संग बीर बेताल चढि । पढत भंत बड्डे कहर ॥ छं० ३३ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये साहंडे पर चढ़ाई करना

कवित्त—सजि घायी चहुआंन । साइ साहंड मु संभरि ॥
 उत जित्थी चालुकक । रति रति बाह सुसंभरि ॥

धनि सुभाग प्रथिराज । बीर भोरा विह्वार्यौ ॥
अरि अनंत कलहंत । सेन सामंतन शार्यौ ॥
लग्गयौ षग उड़ि हृथ्य तें । त्रिया नयन मत्ता मयन ॥
गाहंन गहन दुज्जन दलन । सुबर सूर सज्जिय सयन ॥ छं० ३४ ॥
लोहाना आजान बाहु का पांच सौ सेना के साथ आगे बढ़ना ।
लोहांनो अगिवांन । सेन सै पंच हलक्किय ॥
पंच सहस सों सोम । पुत्त करि तीन षलक्किय ॥
गौ डंडा नीसांन । एक दस अठु सुभेरिय ॥
ओछंगी सभ्राह । फौज चहुआन सुफेरिय ॥
उतंग ढालकी वैरषों । कोहंके अट्टारहा ॥
निमि जाम तीनि वित्ते पतिय । पंजूगय सुढारहां ॥ छं० ३५ ॥

तातार खां का सुलतान से चौहान की सेना पहुँचने का समाचार कहना ।
अरिल्ल तौ प्रक्षन कीनो चहुवांन । बल जल धर धंमर परिमान ॥
आयो अनो बंधि सुरतान । कही पांन ततार प्रमांन ॥ छं० ३६ ॥
सुलतान का अपनी सेना को तयार करना ।

दूहा—दल सज्जिग सुरतान ने । है गै गगन गभीर ॥
जनु भदों भर उनमत । बाइ भान चँपि सीर ॥ छं० ३७ ॥
सुलतान का उमराओं से कहना कि अब की प्रवश्य जीतना चाहिए ।
बोलि उंमरा मीर सब । यों जंप्यो सुरतान ।
अब के पग गढे गहौ । भजो खेत परान ॥ छं० ३८ ॥

सुरासान खां तातार खां आदि सरदारों का बादशाह की
बात सुन आक्रोश में आना ।

कवित्त -षां पुरसांन ततार । षान रुस्तंम अधिकारी ॥
बली षांन पीरोज । नाम रोजन रज धारी ॥
षां रूमी हबसी हुआब । षांन षांना रुस्तम षां ॥
जमन जुद्ध बर मुद्ध । मुद्ध अनुरुद्ध मुस्त षां ॥
सुरतान बमाऊ हृथ्य धरि । गहकि गज्जि षग हृथ्य लिय ॥
रष्य सुजीय हम साह सुनि । जौ बंधे चहुआंन जिय ॥ छं० ३९ ॥
सब सरदारों का सजकर धाबा करना ।

बोलि मांन सुरतान । बाह लंबी पस्सारिय ॥
है हीना पुरसांन । मरन साई अधिकारिय ॥
सरन जाइ पुरसांन । बंधि वा रूप महंगल ॥
षेलि षांन सजि प्रांन । सैन सज्यौ विसि जंगल ॥

बढि सुबर भिस्त अरु बयन जिय । आनंछौ गौरी गरुव ॥
घाए सुधूम बहर मनौ । सस्त्र धार धावै धरुव ॥ छं० ४० ॥

सेना की चढ़ाई का आरम्भ होना ।

छंद मोतीदांम—सज्यौ बर गौरी साह सयन । सुमोतिय दांम बरंन बयंन ॥
छिति छत्र हिली पति बज्जहि लोह । उगे जनु अंकुर बीज सुदोय ॥ छं० ४१ ॥
बजे रन तूर वरह्य^१ कष । जग्यौ जनु बीर दुती सिर पंन ॥
बजे रन रंग रजो दन मोद । फले बल मध्य कला कृत क्रोध ॥ छं० ४२ ॥
हलं हल बहुल सहल बांनि । उपट्टिय सत्तय सिध प्रमानं ॥
बजी रन रंग सुरंगय भेरि । धरी हथ नारि छतीसउ फेरि ॥ छं० ४३ ॥
बजी सहनाइन फेरि उपंग । बजे दस पंच स सिधुअ रंग ॥
बजे रव रंग निसानं दिसानं । बजे घन श्रंबक डोल निसान ॥ छं० ४४ ॥
बजे धरियारि रनं किय घट । बजे घनि घुघर पण्वर अट ॥
बजे तंबल सुर तंग तूर । बजे रन बीरति झालरि रुर^२ ॥ छं० ४५ ॥
बजी सिर चोट दमांमन रीस । नचै जनु गंगय अगय ईस ॥
फिरें गज राजत गज्जत पंति । करी मनौ कज्जल पव्वय कंति ॥ छं० ४६ ॥
बनी गजराजन वैरष पति । मनौ बनराइ बसंत हलत ॥
चले बनि पतिय दंतिय जोर । बुरै छह रंग नछत्र हिलोर ॥ छं० ४७ ॥
चढे गज अंडन बघिय पांनि । चढें गज राज चले गिर जानि ॥
छरं छर पाइ इती छर होइ । पुजै नह वान कमानह कोइ ॥ छं० ४८ ॥
सउज्जल दंत न उप्पम बांनि । मनौ बग पति पनी घट जानी ॥
बदै नन अंकुस कूह चिकार । सहै तन वज्जय वज्ज प्रहार ॥ छं० ४९ ॥
जरें नग दंत न हेमरु मुत्ति । मनो घन मंजह विज्ज पवंत ॥
छयं घन पट्ट सु छिछय तांम । झरें झरना जनु पव्वय स्यांम ॥ छं० ५० ॥
मचै तहां कहुव कीब झकोर । करै तहं दहुर घुघर सोर ॥
घरें घर पाइ हरे हर जोट । चलावत मेर कहां कही कोट ॥ छं० ५१ ॥
बियं बिय बीरंग जें गज लेहि । लरें नह सायर ढिग समेहि ॥
बनी बर नारिय रेसम रंग । चढें गिर इद वधू मनो चंग ॥
तिनं उपमा बरनी नन जाइ । प्रलै घन संकर छुट्टिय पाय ॥ छं० ५२ ॥
डूहा—पाइ दाइ घर वर घरै । सद मद रोसत जंग ॥
दुअन दिषाअै देषियै । जनु बिस भरे भुजंग ॥ छं० ५३ ॥

१. छं० को०—रवह्य ।

२. छं० को०—रुर ।

३.—छं०—बनी । को०—बनी ।

**बीहान की सेना का पूर्व और पच्छिम दोनों
घोर से चढ़कर मिलना ।**

निसि पद्धरी नरिद ती । सजिज सेन चहुआन ॥
मिले पुष्व पच्छिमहुतें । चहुआन सुरतान ॥ छं० ५४ ॥
हय गय दल बद्दल सुअन । नर भर मिलि चतुरंग ॥
चाहुआन हैं वैजु सों । बढिय रारि रन जंग ॥ छं० ५५ ॥
सुरासानियों का बीहानों पर टूट पड़ना ।

घरी एक पल बिपल हुआ । लोह षोलि पुरसान ॥
उररि परे दोउ दलन बल । चाहुआन तुरकान ॥ छं० ५६ ॥
लै संभरि पति सगुन वर । पुठि पवन प्रथिराज ॥
जुगिनि चक्र अचक्र बर । सो सन्ही अरि काज ॥ छं० ५७ ॥
लौ जुगिनि प्रथिराज बल । संमुह दे पति माह ॥
च्वारि घरी धरियार ज्यों । चन्चर सी सम राह ॥ छं० ५८ ॥

शाह की सेना का युद्ध वर्णन ।

छंद रसावला - साह गोरी भरं । सेन संभं फिरं । ★ ★ ★ ★ ★ ॥
लोह कढ्ढे करं । बीज झपं झरं । अस्सि वंकी करं । चंद वीयं वरं ॥
नेन रत्ते करं । कंध कढ्ढे करं । बं वजे घुघरं । मुषजा कंदरं ॥५९॥
बीर बड गुज्जरं । सेन बढी परं । अस्मि मारं झरं । उत्तकंठं परं ॥
रंभ हुँठे बरं । लुधिय आलुष्यरं । सेन भग्गं परं । लेहु ले उच्चरं ॥६०॥
पंथ ते उत्तरं । भार नपे सरं । जोग दिष्वे नरं । सिद्ध तारी पुरं ॥
बजीयं यों करं । मुत्ति बंधं परं । सूर नांही डरं । स्यार पच्छे परं ॥६१॥
बूहा - उनंगे सुरतान दल । सारुण्डे चतुरंग ॥

दीह दुघटी रन मिले । सोभर नी कि जंग ॥ छं० ६२ ॥

**दोनों सेनाओं का मुठभेड़ होना, सलष राज
का भी आकर मिलना ।**

छंद भूजंगप्रयात—

जुग जंग लगे हलक्के गुमानं । ढलक्के सुने जा चढ्यौ सूविहानं ॥
नियं नद् नीसान बज्जे विहानं । परी अल आलंम हुआ जान थानं ॥
चढी चक्क चक्की हुआं सोर झोरं । मनो भेष घोर कियं सोर मोरं ॥
कहैं षान जादै अबे सू विहानं । चढ्यौ साहि सदै अरे चाहुआनं ॥६३॥
भरक्के भराहुं उने हंस नद् । भए बंध हीनं घने मेछ अद् ॥
असौरा अछैहु भगे बंध फौजं । मित्यौ आय फौजं सलष्वंति सौजं ॥

उतंगं सु गतं भरं बध्य घातं । सनेही सुभट्टं मनो सिह बातं ॥
अलग्गं सुलग्गं उछारंत मेछं । उड़ी पति गतं बंधे रेस रेसं ॥
कला सूर एकं असू रंस चौकी । सहै कौन मारं विसूरं सु सौकी ॥

॥ छं० ६४ ॥

सलष की प्रशंसा ।

कवित्त- ढंडो रज्जहि ढाल । मुरें गौरी दल अविहर ।
अविहर दल विहरंत । परे सिल्ला रति असि झर ॥
असि झर भर भिगई । मलिक दावानल लग्यौ ॥
दावानल प्रज्जर्यौ । पिठु सु समान विलग्यौ ॥
सूरिमा हाक संभरि ससिक । चिगुन सद लय दल सहुअ ॥
दल प्रलय होत को अंग मे । पण्णर लण्ण सलण्ण तुअ । छं० ६५ ॥
त्रिगुन त्रास पामार । भिरिग चौकीय चकाहिम ॥
चका व्यूह अहिवन । मनो जै द्रच्छ सु दाहिम ॥
घरि धारह धारार । धार धारह आबट्टिय ॥
आहुट्टिय मनो सिष । सिष ए काम उपट्टिय ॥
जज्जरिय गात आघात उठि । प्रभु अबु अठट्टह अठिल ॥
घरि एक सार संभरि सुभरारन त्रिघात नंचिय नठिल ॥ छं० ६६ ॥

आजाणबाहु लोहाना का मारकर भागना ।

लोहांनो आजांन बाह । वाहन वहि लग्यौ ॥
त्रिगुन त्रांस त्रिसीय । मार भारी भर भग्गौ ॥
तव जग्यौ सुरतांन । पान षग्गह पंधारिय ॥
वाह वाह आलंम । अभग आलम कहि मारिय ॥
बिस्तरिय बहुसि हिंदू तुरक । किरकि कंक मंजन करिय ॥
संभरिय धरिय संमर तनिय।कम्बि मुष्प अस्तुति धरिय ॥ छं० ६७ ॥

झुहा—जहां जहां रन अंकुरिय । तह तह चंपिय राज ॥

मिच्छ सेन एकत करिय । मनो कुलिगन बाज ॥ छं० ६८ ॥

सलष राज की बीरता का वर्णन ।

कवित्त—ढंडो रिज्जे ढाल । ढाल ढंडोरि ढंडोरै ॥

मुरें ढालंढी चाल । चाल अरि माल विछोरै ॥

अरि विछोरि अरि माल । सलष उभ्रो पय पय ससि ॥

हल्लि नाग गिरि नाग । तेग कढ्ढे बढ्ढे कसि ॥

दन देव दच्छ गंध्रभ मन । अजुत जुद्ध विष्णै अदय ॥

अहुमान सेन सुरखान सौं । सुजनु अंत लग्गे सवय ॥ छं० ६९ ॥

बड़ गुज्जर और तातारका का युद्ध वर्णन ।
 बड़ गुज्जर रा राम । उक्त ततार मंडि रन ॥
 सार धार उझरिय । श्रोन झंझरिय गगन तन ॥
 लोह हह उहुंत । हंस छुटंत श्रीर सर ॥
 फिरत रूंड बिन मुंड । दंत बिन सुंड सार झर ॥
 अद्भुत भयावह समर मचिय । रचिय रक्त काली कहूर ॥
 एक लरत गिरत धुंमत घटत । भटकि नट्ट मंडिय बहूर ॥छं०७०॥

छंद हनुकाल—कहि हनुं कालय छंद । मिलि साहि गोरिय दंद ॥
 ततार घान मसंद । बड़ गुज्जर राम नरिंद ॥ छं० ७१ ॥
 नट वरह मंडिय प्याल । पर वृत्ति हाल विहाल ॥
 झरि रार रक्तह भीर । उठि अग अगनित बीर ॥ छं० ७२ ॥
 कठि लोह कोह दुदीन । बजि तार झार सुझीन ॥
 कऱ कंठ कंठिय जानि । करै देव दुंदुभि गान ॥ छं० ७३ ॥
 नचि चक्क चक्कि गरिट्ट । अरि भक्त इष्ट सु दुष्ट ॥
 बनि सार धार करक्कि । परि सीस भूमि तरक्कि ॥ छं० ७४ ॥
 उडि छिछ इच्छ प्रकार । रुघि बहै अंगन धार ॥
 इन भेष राजत बीर । मधु माघ वृछ सरीर ॥ छं० ७५ ॥
 सुनि श्रवन समझन वेन । आवृत्त घाय प्रचैन ॥
 परि अंग अंग निनार । वजि दिव्य देवन तार ॥ छं० ७६ ॥
 असि बजत सार सरीर । जनु झिलत सूरत नीर ॥
 अंग अंग घाइ घनक्कि । जलजात बोलत थक्कि ॥छं० ७७॥
 सुरतान आन कहंत । सुनि सेन सथ्य गहंत ॥
 टरि धरिय मध्य मध्यांन । चहुवान देषिय भान ॥ छं० ७८ ॥

दोनो सेनाओं का एक घड़ी तक एकमेक हो जाना और
 घोर युद्ध होना, आकाश न सूझना ।

कवित्त—भान दिष्पि धुम्मरी । रैन उड्डी धर धूमर ॥
 चक्रित देव गंधब । ईस चक्रित गुन अमर ॥
 टोप नेत चक चेत । अगि उडिबी असि टोपं ॥
 मुकर मध्य जनु ईस । नेत देषत त्रय कोपं ॥
 धरी एक एकभिकक हुआ । महन रंभ मच्यो सुविय ॥
 एक परत गिरत तुटत सुतनाइम छित्रिय छिति पर सुभिय ॥छं०७९॥

कैमास का साथ छोड़ कन्ह चौहान का भी साहंड़े में घा जाना ।

दूहा - कन्ह छंडि कैमास फुनि । सुधि साहंड़ां रादि ॥

तनक भनक सी सुनत ही । जानि कै धप्पी धारि ॥ छं० ८० ॥

कान्ह का बड़ी वीरता से धावा करना ।

कवित्त—धारि घाप धपि कन्ह । आनि अनचित परी रन ॥

वसीह सम संघरन । जानि दव दंग सुक्कवन ॥

कै आषाढ उडूर । तोरि तर मूल उछारिय ॥

कै ब्यानी वाघनि सुपत्त । उकति आषेट उछारिय ॥

रूठो कि रिच्छ राषिस दलन । समर सेन धक्कह धरिय ॥

नंपंत जानि सरवर सुभर । कठि सरोज मत्ती करिय ॥ छं० ८१ ॥

बोनो घोर के सरदारों का महा क्रोध कर करके युद्ध करना ।

छंद भुजंगी—

पर्यौ घाइ सुरतान सुविहांन गोरी । चंपे चाइ चहुआंन गौ पंच डोरी ॥

विश्यौ वंक सूरं सलष्वं पवारं । नृपं सार टट्टी किसारं किवारं ॥ ८२ ॥

विश्यौ कन्ह कंकं झंडा मड्डि गाढी । मनो राष्यसी सेन में कपि ठाढी ॥

गहै दंत दंतीय भुज्जं उषारं । धरा कडिठ मूला मनो मार डारं ॥ ८३ ॥

दुवं वीर हक्क महावीर मटं । भये रंग रत्तं मनो मल्ल हटं ॥

लगै सस्त्र अन संघ हृथीन टारं । मनो कोपियं भीम पाक्षार फारं ॥ ८४ ॥

तुटै टोप टूकं मुंडडंत दीसं । मनो चंद तारा नपै हृथ्य रीसं ॥

लगी नाग मुष्पी गजं सीस भारी । मनो द्वार हंघे पिरक्की उषारी ॥ ८५ ॥

हुले सेल सालें बरं वीर दीसं । मनो सिद्ध तारी लगी सीस ईसं ॥

परं तेन दीसं बरं वीर कोई । लगै धार धारा रजी रज्ज होई ॥ ८६ ॥

पर्यौ राउ रघुबंस बरसिह जोरं । जिनें मुत्ति लक्ष्मी बरं वीर भोरं ॥

बजें धार धारं गजं सीस तेगं । नचें जानि बीजं घनं मध्य वेगं ॥ ८७ ॥

लगै कुहुक वानं गजं जोर सीसं । उठे छिछ इच्छं गिरं उक दीसं ॥

भरं सुंड रक्तं सहं अंग डोरं । श्रवें वट्टली मेघ गेरुन धारं ॥ ८८ ॥

धुमें मुक्कि सीसं भटं लोह छक्कं । उमें जानि भूतं महा मंत्र हक्कं ॥

किरें कंड विन मुंड रस रोस राचे । मनो भगारं नट्ट विद्या कि नाचे ॥ ८९ ॥

परै अक्व हुंत्तं सिरं जोर सूरं । तुटें धुप्परी हड्ड ह्वै मूर मूर ॥

लगै गुजं सीसं भजी भंति छुट्टें । मनो मंघनं दडि मंघान उट्टें ॥ ९० ॥

१. को०—इस तुककी जगह यह तुक है "मनो को पियं भीम पाक्षार फारं ।

२. को०—इस तुक की जगह यह तुक है "धारा कडिठ मूला मनो मार डारं ।

हुअै छीन छीसं छरी मार छक्कै । झरं रक्त डोरी महा मल्ल हुक्कै ॥
 भिरै सस्त्र विन वष्य भर भीर भीमं । परै लोथि जूथं बिनं जीव हीमं ॥११॥
 लरंतं जदीसै परं तेन कोई । लगे षग षगं श्रमे मल्ल होई ॥
 तुटैं दंत दंती कि रक्का निनारें । मनो कज्जलं कूट तें चंद झारें ॥१२॥
 दोऊ क्रन्न हस्ती चुबै रुद्धि भारी । मनो कूट तें उत्तरै भूमि रारी ॥
 बहै वानं कंमान मिटि थान थानं । तहां पंति पंवीय पावै न जानं ॥१३॥
 उते थान गोरी इते सिंध राई । मनो वीय मिघं पलं काज घाई ॥
 चेंपे गिद्धि मंसं उई रुद्धि छुट्टै । मनो रक्त धारा नभं मेघ बुट्टै ॥१४॥
 मुर्यौ साहि गोरी महाबीर धीरं । तसब्बी तिनष्पी लिए विद्धि तीरं ॥
 धरी ध्यार ज्यौं चच्चरं षग संध्यौ । पछे साहि गोरी सु चौहांन रुध्यौ ॥१५॥
 कवित्त - करिय पार सो भंत । रुधिर जल रजि' सज्जिय सर ॥

केस रज्जि सेवाल । मकर कर अंब मीन नर ॥

पुप्परि कच्छ सुअच्छ । बसैं तहां गिद्ध सिद्धबर ॥

रभ अंभ तहां भरै । फुल्लि पोइन मु मुष्ण नर ॥

जल देहिं ताहि तारिन छुट्टै । मात तित्तु गुरु मनि घुअ ॥

नन करिय कोइ करिहे न को । करें जु ए सामंत भुअ ॥छं०॥१६॥

दूहा - पुनित गुनित गुर मंत्र गुर । धुर वदल दल गाजि ॥

सूर अमर संचरि समर । दिषन राम गज साजि ॥ छं० ॥ १७ ॥

घाकाश में देवांगनाओं का बीरों को धरन करना ।

कवित्त गज आगि जनु जगि । पवन बमि मंत्र बीर बर ॥

धर अमर धमधमिय । क्रमिय सह सेन ह्यनि हर ॥

तीर तुबक तरवारि । कुनि किरबांन कटारिय ॥

दुरित' ढाल गज माल । जानु जल जोर अटारिय ॥

हुअ धुंघ धरनि सुद्धि न नयन । श्रवन वयंन न संभरहि ॥

अछह अकाम अनंद मय । बैठि त्रिमान सुबर बरहि ॥ छं० ॥१८॥

गुरु राम का एक मंत्र लिखकर श्लेच्छों की सेना पर डालना ।

दूहा राम मंत्र इह जत्र लिषि । कगद सर मुष रषि ॥

षंघि कठिन कमान कर । म्लिच्छ सेन पर नषि ॥ छं० ॥ १९ ॥

छंद विभूत पढि हृथ धरि । संमुह समर उडाइ ॥

अचल बिल जिन जिन तनह । धीरज तिनहि छिडाइ ॥छं०॥१००॥

१. को०-०-रिज सविय ।

२.-हं-दुरति । को०-दुरहि ।

मंत्र के बल से शाह की सेना का माया में मोहित हो
जाना, इधर से काजी खां का मंत्र बल
करना और युद्ध होना ।

छंद भुजंगी—करी मंत्र बिद्या गुरं राम गानं । ठमे सेन मिछं हरे हेम जानं ॥
महा मोह मोहै रहै ठान ठानं । मनो चित्र असवार भ्यंती विनानं ॥१०१॥
हते भूत से भीत पीजे षईसं । बंधे सब्द सूरं विना रोस दीसं ॥
रहे साहि गोरीय तत्तार षानं । तियो मान काजी महा मंत्र वानं ॥छं१०२॥
कहै साहि गोरी सुनो मान काजी । लियं बेलि हज्जूर तहं मीर हाजी ॥
करी जोर बिद्या सुजंनार दार । करों क्यों ऊबेलभी क्या विचारं ॥१०३॥
तबं काजियं दस्त दुअ मुष्व फेरी । जपे जाप पीरां दुबो सेन हेरी ॥
तबै मेछ सेनं सहं मोह भग्गो । सबै हिंदु सेनं फनी बद्र लग्गो ॥छं० १०४॥
गुरं गरुड आह्वान राम उचार्यो । तत्रं बंधनं नाग तिन षंडि डार्यो ॥
भए सेन हुसियार दोऊ करारे।षिझे रोस असमानं पिष्वे डरारे ॥छं० १०५॥
षिरे षग युरसानं षां जेरषूनी । बढी बाग गुररामं जम धार डूनी ॥
तजी मंत्र बिद्या सजै सार सारै । बजी षग अग्गीय ओडनं डारै ॥छं०१०६॥
सरं जाल षै काल उड्यो अनुदं । बहै बाह जम दाह क्रुदं घनुदं ॥
उडै जंत्र गोरी नरं नारि धारी । घकें मंत मंते गिरे ज्युं अटारी ॥छं० १०७॥
उड्यो सोर असमानं कुहरामं जैसो । षिझे जानि गंगेव बल बंध जैसो ॥
फिरे हंड भक हंड विन सुंड दंती । परें पीलवानं चढे पंषि पंती ॥छं०१०८॥
दृहा—सुनि सहाब साहाबदीं । है छंडिब गजि' तक्कि ॥

मिले सामि कर भर सुभर । दल चहुवानं सु रुक्कि ॥ छं० १०९ ॥

मारुफ खां का शाह ये कहना कि अब बड़ी भीड़ पड़ी जिन
काजी खां पर खुरासान का द्वार मदार या उन्होंने
तसबीह छोड़ बी, हिम्मत हार बी ।

कहै मीर मारुफ खां । परी भीर सुरतान ॥

तिन तसबी नंषी करह । जिन कंठन पुरसानं ॥ छं० ११० ॥

खुरासान खां आबि सरदारों का फिर एकत्र होना

और लड़ने को तयार होना ।

कबिल—खां पुरसानं ततार । षान हुसेन बिमाही ॥

षान षान रुस्तम । षान निज बंध समाही ॥

षां जलाल षां लाल । षान बिलची षां गष्वर ॥

केली षां कुंजरी । साहि भग्गी बल पष्वर ॥

जिन भुजनि साहि साहिब तूंग । जिन हिल्सां चढयो सुभर ॥

तिन धीर भीर संमुह परिय । विझि नंधी तसबीहि कर ॥छं० १११॥

छंद भुजगी—

मिली मंडली फौज गोरी नरिंद । मिले दीन दोइ कहै चंद दंद ॥

गहै दंत दंती तजै मोह तुच्छं । दोऊ दीन धावै सुघारै सुमुच्छं ॥छं० ११२॥

करै संभारी दीन साहिब राई । उनके उनाहं दुदीनं दुहाई ॥

सु पैठंत पीठं गलं बध्य घल्लै । धकै धीग धक्कै ह्लाए न हल्लै ॥छं० ११३॥

कढी बंध अस्सी गजं सीस लस्सी । मनो बीज चंदं किते रस्स सस्सी ॥

तुटी भूमि भारी पुरं तार पायं । बजै षग जंजं झनंके झनायं ॥छं० ११४॥

तजे वीर अश्वं उपमानं असी । मनो चच्चरी बाल हड्ड तैसी ॥

करै घाट औघाट निघट्ट घट्टं । तिनंकी उपमा कही चंद भट्टं ॥छं० ११५॥

भरं भूमि भारी पुतारीति बज्जै । गहे षग झोर धनकेति तज्ज ॥

बरं वीर धावंत ओपमं असी । मनो मल्ल धावै हड्ड तक्कि तैसी ॥छं० ११६॥

तरंफंत सीसं धरयं निनारे । मनो मीन तुच्छं जलं में उछारे ॥

नियं नट्ट अस्तूति जंपी न जाई । मनो भंगुरं नट्ट विद्या बनाई ॥छं० ११७॥

कबित्त—तोन धान अहमद् । तीर विय सहस लोकि तब ॥

अंगुर अट्ट भलक्क । वाइ बंधे नंधे कब ॥

मेघ धार बरषंत । टोप उप्पर चहुआंनी ॥

मनो जैत षंभ परि तत्त । वीर पावस वुट्टानी ॥

घरी एक मुट्टी नैषियत बर । विझि किरवांन विचारि नर ॥

पष्वर प्रमान पट्टन सबर । धर तुग्यो लम्यो सुघर ॥ छं० ११८ ॥

पष्वर लष्व सलष्व । भयो पुरसांन धान दल ॥

एक एक भुज अमित । सेन रुक्वए अकल षल ॥

धार धार बज्जै प्रहार । गुरज बज्जै तन रज्जै ॥

मनो घट्ट धरि पार । प्रहर पूरन प्रति बज्जै ॥

यो बज्जि सार आतुर इतिय । ज्यो डंडूरिय बूद धर ॥

पंम्मार सार धारह धनिय । ईस अनंदि य माल गर ॥ छं० ११९ ॥

दूहा—गरल धरन गल माल धर । टपकत बुंदन रत्त ॥

भेष भयानक भंति तिहि । कंपति दिषियि रज्ज ॥ छं० १२० ॥

कोइक कमल कहि कहि हसत । कोइक हंकत हंक ॥

मार मार कोई कहत । मुदित माल शिव अंक ॥ छं० १२१ ॥

कबित्त—पुरसांन तत्तार । धान रुस्तम अधिकारिय ॥

एक सबमि रन अग । द्वै द्वै दुहुं बांह विघारिय ॥

पुट्टि पवन बल्लोच । साहि रष्वे सुरतानं ॥

मावसि राह नरिद । आइ चढथा मुष भानं ॥

मध्यांन टरिय निसि मुदित भय । कमल विमल छक्किय विछुरि ॥

सारस सुरंग को तरति तर । उडि पंषी अंषी निजरि ॥छं० १२२॥

छंद त्रोटक—चकचक्कि विचक्कहि थान बरं । उडि पंष सकोतर चित्त धरं ॥

सपयोनिधि मडि पतंत रवी । समनों दिसही दिस दून छवी ॥

सत पत्र मुदेक मुदै उघरें । निसि विप्प सुग्यांनह तेज हरें ॥

मनमथ्य चढे जुबतीन जनं । सुविषै विरही जन कंप तनं ॥

नन दिष्पिय पंथ निहारि मगं । उलती वर दिष्ट निहारि मगं ॥

उतरी जनु चंगय डोरि डरी । विरही जन दिष्ट सुधान फिरी ॥छं० १२३॥

साटक—मोदं मोद हसंत कंमुद कला चक्कीय चक्की चितं ।

चंदै चंद वढंत तत्त कलयो भानं कला छीनयो ॥

मतं मन्मथ जानं बांनति बरं अंगुष्ट ते उच्छुदं ॥

सासत पन्थ तत्र काइर मष वीरा रसं मूरयं ॥छं० १२४॥

अपनी सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन ।

छंद त्रोटक - इति त्रोटक छंद उदंत कलं । रस बीर जगावत बीरबलं ॥

घन नंकि त्रिघोष निसान बजं । बर बद्धिय बंवरि छत्र सजं ॥

बडि गोरिय साहि सयंन मुषं । नन मुझ्जय मूर दिसान चषं ॥

नत्रभ्रिति निरेहिय बीर रसं । जिन को जम व्रह्मय दैव कमं ॥छं० १२५॥

घनि हथ्य मराहिय दीन दुहं । कवि जीह प्रमानय सार वहं ॥

प्रथिराज विराजत सेन मज्ञं । सुमनों वडवानल दद्ध दज्ञं ॥

दोय दीन दुहाइय दंडे पढे । चठि साग प्रहार पयोनि गढे ॥

कटि कंध कमंध गिरै दुमरै । उछरै मनु प्रव्यत बीर हरै ॥छं० १२६॥

नव हंसन एरु न मुक्कि चलै । नव लुट्टि नई मुकनै न पुलै ॥

लगि सस्त्र भए जर अंग इसे । तन बाहत जंगम जानि जिसे ॥

निकरें नव हंस उमंग मगै । तिन पंजर फेरिन आइ लगै ॥छं० १२७॥

कवित्त चलत मेर नन चलहि । चलन सब सथ्य हथ्य चलि ॥

चलन भान नन चलहि । चित्त नन चलै मोह पुलि ॥

अश्व चलन नन चलहि । चलन रह्यो असु असुमय ॥

सो ओपम कवि चंद । कहिय आनंद हथ्य सय ॥

निघनिय नारि अकुलास त्रिय । अग्यानी जी मुट्टई ॥

इम अश्व षांव ततार को । सार धार बर तुट्टई ॥ छं० १२८ ॥

मुरिल्ल — नागौरें मंत्री सत मिल्ल्यो । भोरा राह भुअंगम फिल्ल्यो ॥
सावंडे संमुह सुरतानह । चक्कर षग कियो चोहानह ॥ छं० १२९ ॥

पृथ्वीराज का विजय पाना, शहाबुद्दीन का बांधा जाना ॥

छंद मुकुंदडामर - चहुआंत उदंडिय चंडिय चंपिय साह सुसद्विय बंध धरै ॥
हाकंत हनंत ससोम हनं दन बदन बंदित दूरि करै ॥
भुअ कंपित जंगित संरित गोरिय लुधिय अलुधिय पलधिय परे ॥
पल एक सुनीन कियो तिल मतह भारि भयानक भूमि टरे ॥
सामंत सितुंग सुरंग तुरावघ आवघ आवघ अगि क्षरे ॥ छं० १३० ॥
धरकंत मुमीर गंभीर गहं ग्रह ग्रब्व गुंडावन बीर बरे ॥
नर वीर दिवादिब देवस पुब्रह ग्रब्व गुजाइय तुंग ठरे ॥
जय पत जपत भमंतिय जुगिनि श्रोन सुषप्पर चंपि करे ॥ छं० १३१ ॥
तुरयं तुर तांन प्रमांन कमांनय मुद्धिअय भांन जुआंन अरे ॥
जुग जीत पथं सुधि अंधन बंधन सथ्यन बंधिय बंधि धरे ॥
जितयो चहुआंन गह्यो मुरतान हयो नुरकांन क्रिसांन जरे ॥ छं० १३२ ॥

इस युद्ध में सलघ राज की वीरता का वर्णन ॥

कवित्त ह्य हृथिय कननकि । बज्जि क्षननं क्षननं कहि ॥
दंति दंन आहुरहि । पड षडेन ठनं कहि ॥
घट घट लगिय सग । फोर पत्तिय पतिवानं ॥
मनु षंचे बलराम । हव्य हथिनपुर जानं ॥
षंचे कि द्रोत हनवन कपि । कै कन्ह षंचि गोवरधनह ।
कर करी दंन सऊग्न धरन । यो मृध्मे हथ्यी रनह ॥ छं० १३३ ॥
विद्धिअ राज प्रयिराज । गहिय करियान चरि कर ॥
रोस मुत्रिनि बरीय । दंनवाही मुकुभ धर ॥
धार मुत्ति आहरिय । पति लग्गे नृभि बीर ॥
मनह रोस गहि षग । टरै धाराधर नीरं ॥
कै दुतिय चद बहल बिचह । पति लगि उडगन रहिय ॥
धर धुकरुन संत सुदिषियहि । मनहु इन्द्र बज्जह बहिय ॥ छं० १३४ ॥
ब्रह्म — जिन लग्गे तिन बंत किय । धर धर धुक्किय धार ॥
पहर एक पर हृथरें । मिर मिर बुढ्यो सार ॥ छं० १३५ ॥
सस्त्र अस्त्र सिर सिर परहि । डरहि न जन कुमदंग ॥
भीर स्वामि संकट लषत । परत कि दीप पतंग ॥ छं० १३६ ॥
गाथा पतत पतंग रूपं । धूपं धरा जानि विषमाय ॥
हरन स्वामि भय चितं । हित वियन जन्म मरनाई ॥ छं० ॥ १३७ ॥

बूहा—ठांम ठांम सिधू बजहि । बजहि सार मुष मार ॥
तन तरवर जहं तहं डरहि । जे झूसार मुछार ॥ छं० ॥१३६॥
सलबराज का घोर युद्ध करना, उनकी वीरता की बड़ाई ।
स्वामि सलब लषियत लरत । भंजि मीर बहुआंन ॥
हंकास्यो ना जाह मिछ । तो सम को पहुआंन ॥ छं० ॥१३९॥

कवित्त—तूं अब्बू पति घनी । राज रष्वन दिल्ली घर ॥
तूं चालुक चंपनी । भार भंजन गुज्जर घर ॥
भडर अकल आजांन । पान भंजन मेछाइन ॥
अपमुष आयो साहि । ताहि सही इच्छाइन ॥
प्रथिराज प्रबोधिय घर घर । हंकि साह उप्पर परिय ॥
जांने कि अग्गि उछांन वन । वंस थूर दव प्रज्जरिय ॥ छं० १४० ॥
पृथ्वीराज का सलब की सहायता करना ॥
फुनि प्रथिराज नरिंद । करिय ऊपर जैतह रन ॥
भरनि भार भंभरिय । हंकि हुंकरिय सिध जनु ॥
मद गज ढहनि कि तरनि । तरनि लुप्पन जनु जलघर ॥
अकह कधिय करि बार । काल कुप्पिय जीवनि पर ॥
सोमेस सुअन विरचंत रन । चढ पट घट भट्टह लुटिहि ॥
इय अयुत बस पिष्वत नरह । भुजति भार अंनक फुटहि ॥१४१॥

पृथ्वीराज की वीरता की प्रशंसा ।

भरनि भीर षल भलत । रेन चल मलति पवन करि ॥
लोष लोष पर परति । अकं नहि सकत गवन करि ॥
ओन छिछ उछरंत । सुभट सुभति जनु किसुव ॥
गजन ढाल कंदुरति । मार संघर तक मघ भुव ॥
विरचंत विफुरि सोमेसमुअ । सहस करन बर कर बडिय ॥
वन वृंद पियन बडवा नलकि । क्रस्न जांनि संमुह कडिय ॥ छं० १४२ ॥

बूहा—हाला हल इह पिधिय जहं । झाला हल झंकाल ॥
उतरन कुप्पो सलब लष । काला हल कंकाल ॥ छं० ॥ १४३ ॥
सलब राज के युद्ध की घोरता का वर्णन ।

छंद मोतीदांम—

कुप्पो रन साहस लषिय लष्य । रूपे रन रोह अरेह विपष्य ॥
करफकर बज्जिय सारन मार । भरभर हंकत हुक्क करार ॥
तरसर तेग तरफकर अंग । जिससित होत घनं घट भंग ॥
चढे मुख मेछ ससंब मसंब । जिससित टूटत तेक असंब ॥ छं० १४४ ॥

लरप्यर पध्यर सध्यर तोम । मनो जनमेजय चिल्लिय होम ॥
गिरंत उठंत कमंध विहाल । हहंरुत मुंष भसुंड विहाल ॥
इसो रन रंग सलष्व सरूप । मनो मुत्रकुंद क्रिजगि विरूप ॥ छं० १४५ ॥
म्लेच्छों की सेना का मूंह मोड़ना, मुलतान का हाथी
छोड़ छोड़े पर चढ़कर भागना ।

बूहा—मेछ सेन बहु झरि परिय । केविडु रिगगय डग ॥
फिरौ मुष्व सुरतान की । हृथिय छंडि हय मंगि ॥ छं० १४६ ॥
म्लेच्छ सेना और मुलतान की भगेड़ का वर्णन ।

छंद भुजंगी—

कुसादे कुसादे कहे पान जादे । रिग्यो साह आलम सब सेन बादे ॥
सबै सेन दिष्यो इसी साह मुष्वं । मनो प्रात चंदं मुकंती अरुष्वं ॥
बरें पारि बेरु समुद् न रक्कै । जबै साह गोरी पुरासान चुक्कै ॥
फिर्यो एक लष्वं सलष्वं पवारं । मनो रोहियं रोह वाराह दारं ॥ १४७ ॥
भग्यो साहि गोरी विलं देहि मथ्यं । तबै रुद्धियं आनि पंम्मार सष्वं ॥
रषत्तं वषत्तं ह्यं हृथ्य सथी । भग्यो साहि गोरी विवानं न कष्वी ॥
इकं दीह चौहांन फल द्वै प्रमानं । छुट्यो रुद्धि कैमास सुरतान पानं ॥
॥ छं० १४८ ॥

इस युद्ध में सलष्वराज के यश पाने का वर्णन,
मुलतान का बांधा जाना ।

कवित्त—चामर छत्त रषत्त । तषत्त लुट्टै सब कोई ॥
जस लड्यो पामार । सेन सागर मथि जोई ॥
रतन कित्ति संग्रही । रज्ज आबू तन धोई ॥
हय गय दल बल मथित । कित्ति फल लम्भिय सोई ॥
बंध्यो सुचैपि पुरसान पति । रतिवाहै चालुक जिनिय ॥
जै जया देव जंपत जसह । तब सुचंद कित्ती सजिय ॥ छं० १४९ ॥

बूहा—जीति लियो जय पति रनह । बर चतुरंगी मोरि ॥
पष्वर लष्व सलष्व हुआ । गोरी ढाल ढंडोरि ॥ छं० १५० ॥
मुलतान को जीतकर सलष्वराज का लूट मचाना ॥

कवित्त—जीत लियो जंपत्त चारु चतुरंग सु मोरी ॥
इक लष्व पषर प्रमानं । ढाल गोरी ढंडोरी ॥
पान सुरति परि खेत । खेत गोरी उप्पारी ॥
रिन बुढ्यो बहुआनं । साह झोरी करि डारी ॥
बज्जे सुबीर बज्जन नूपति । बहु लुट्टे सुरतान गै ॥
नीसान पान पुरसान पति । चामर छत्त रषत्त मै ॥ छं० १५१ ॥

सुलतान की सेना का भागना, चौहान का पीछा करना,
पृथ्वीराज की बोलाई फिरना ॥

ब्रह्मा—भै भग्ना सुरतान दल । लै लग्गा चहुआन ॥

ताप तेज तुंगी तरुनि । प्रथीराज फिरि आन ॥ छं० १५२ ॥

पृथ्वीराज के जीत की जय जय कार मचना ॥

कवित्त—कहि जित्यो चहुआन । गरुअ गोरी दल भज्यो ॥

कहि जित्यो चहुआन । ईस सीसह धर रंज्यो ॥

कहि जित्यो चहुआन । चंद नागोर सुनंगे ॥

कहि जित्यो चहुआन । सत्त सामंत अभंगे ॥

जित्यो सु सोम नंदन कहिय । सहिय सद् सुर लोक हुआ ॥

पामार पष्प सलष्प नह । धरनि काज धर पंक सुअ ॥ छं० १५३ ॥

पृथ्वीराज के सरदारों की बीरता की प्रशंसा ॥

छत्र धार सुविहान । छत्र धारी लोहांनी ॥

पत्र धार जो गिनिय । कुक्क लग्गिय आसानो ॥

मंत्र धार पामार । सलष्प भंज्यो मेछानो ॥

जनु गुवाल गो डंड । सेन हंक्रिय सुरतानो ॥

जित्यो जुवान चहुआन रिन । मुरिग वैर बलिबंड बर ॥

धर गवरि नाह नंचिय रहसि । गह्यो जाहि भंजे सुषल ॥ छं० १५४ ॥

पृथ्वीराज का जीतना, तेरह खां सरदारों का पकड़ा जाना,
सारुंडे का टटना ॥

अरिल्ल—जित्यो वे जित्या चौहानं । भग्गा सेन सन्या सुरतानं ॥

तेरह षान परे परमानं । सारुंडै तोरघो तुरकानं ॥ छं० १५५ ॥

इधर शहाबुद्दीन को बंड देने, उधर कैमास का चालुक्यों
को जीतने का वर्णन ॥

कवित्त—साह बंड 'डंडयो । मेह मंड्यो नागोरिय ॥

भट्टिय रा भटनेर । राव सिघातन तोरिय ॥

जा रानी जग हृथ्य । मंडि मंडोवर पासह ॥

जै जै जै प्रथिराज । देव सहेति अकासह ॥

आरज्ज लज्ज सुरतान कहि । फिरि मिलान दीनो पुरां ॥

जो सय कय कैमास किय । चालुक्यां सोझति धरां ॥ छं० १५६ ॥

साह के बांधने, भीमदेव के जीतने और इंदिनी के
ब्याह की प्रशंसा ॥

एक दीह इक धरिय । राज लहु बेलडा ॥

दुसवाह संजित्त । साह गोरी गहि बडा ॥

बर भीमंग नरिंद । षोदि कठघौ कैमासं ॥
बर बज्जे नीसांन । राज जित्त्यौ रन भासं ॥
बर बंधि साहि गोरी गह्यौ । बर इछनि पानी ग्रहन ॥
नव दीह नवंमिय नेह नव । सुवर चंद बत्तां कहन ॥ छं० १५७ ॥
सं० ११३६ के माघ सुदी में मुलतान को बांधना, माघ ब० ३ को
इच्छनी का पाणिग्रहण करना, डंड लेकर मुलतान को छोड़ना

और फिर लट्टबन में शिकार को जाना ॥

ससिर सु मगह अंत । तीस षट बीर समंधर ॥
ग्यारह सें परवीन । साहि बंध्यौ गोरिय बर ॥
माह प्रथम बर तीज । बीज रवि सप्तम खानं ॥
बर पाणिग्रह मंडि । सुवर इच्छनि चहुआंनं ॥
मुकह्यौ माहि घन डंड ले । बर बाजें नीमान धन ॥
आषेट फेरि मंडिय नपति । बन षट रवि चंद मन ॥ छं० १५८ ॥

शुकी से शुक ने जो कथा बालुवधों के जातने ।। कही उसे
सारुंडे में कविचन्द ने वर्णन किया ।

दूहा - सुकी सरस मुक उच्चरिय । प्रेम सहित आनद ॥

चालुवकां सोझति मध्यौ । सारुंडे मे चद ॥ छं० १५९ ॥
इति श्री कविचंद विरचिते प्रियराज रासके सलष जुद्ध पाति
साह ग्रहन नाम त्रयोदश प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १३ ॥



अथ इंछिनि व्याह कथा लिष्यते ।

(चौदहवां समय)

शुकी के प्रश्न पर शुक का चालुक्य के जीतने, शहाबुद्दीन के बांधने और इंछिनी के व्याह का वर्णन करने लगा ।

ब्रूहा— कहे सुकी शुक संभलौ । नीद न आवै मोहि ॥

रय निरवानिय चंद करि । कथ इक पूछौ तोहि ॥ छं० १ ॥

सुकी सरिस शुक उच्चरघो । धर्यो नारि सिर चत्त^१ ॥

सयन संजोगिय संभरै । मन मैं मडय हित्त ॥ छं० २ ॥

घन लट्ठी चालुक संघ्यो । बंध्यो षेत पुरसांन ॥

इंछनि व्याही इच्छ करि । कहों सुनहि दै कांन ॥ छं० ३ ॥

शाह को बंड बेकर छोड़ने पर राजा सलष ने

पृथ्वीराज के यहां लग्न भेजा ।

मुक्कि साह पहिराइ करि । दंड दियो सलषांनि ॥

लगन पठाइय विप्र करि । बर व्याहन पिथ्यान ॥ छं० ४ ॥

पठयो प्रोहित भान कर । कनक पत्र लिखि लगन ॥

श्रीफल बढ़ल रत्तन जरि । पिषिषि होत जिहि मग्न^२ ॥ छं० ५ ॥

कवित्त— अब्बू वै अब्बू समप्पि । सीम वधी दह गुन्निय ॥

पावारी इंछनिय । व्याह सोघन बर मन्निय ॥

लच्छि ग्रेह कूबेर । अत ग्रीषम दिन धारी ॥

परनि राज प्रथिराज । हृद्य श्रीफल अधिकारी ॥

नर नाग देव गंधर्व गुन । गान जान^३ मोहें सकल ॥

अश्रु उतग लच्छन महज । थान नधि वधी विकल ॥ छं० ६ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इंछिनी का रूप नाम याचि पूछना ।

ब्रूहा— प्रथु पूछत बंभननि सुनि । कही बाल किन वेस ॥

कितक रूप गुन अगरी । सुनन मोहि अदेस ॥ छं० ७ ॥

इंछिनी को सुन्दरता का वर्णन ।

साटक— बाले तन्वय मुग्ध मध्यत इमं स्वपनाथ वै संघयं ॥

मुग्धे मध्यम स्याम बांमति इमं मध्यान्ह छाया पगं ॥

बालप्पन तन मध्य जोवन इमं सरसी अवग्गी जलं ॥

अंगं मद्धि सुनीर जे मल ससी सुभ्र्मै सुसैसव इमं ॥ छं० ८ ॥

कवित्त--अति सुरंग वय स्याम । संघि वय संघि जुरिय बर ॥

ज्यों दंपति हथ लेव । पंथ जोगिंद मिलत गुर ॥

नयन मयन आरुहिन । धर्यो आरुहन थान दिन ॥

कछु कज्जल अंकुरिय । करिन आवे पें लज्ज मन ॥

ज्यों करकादि निसा मकरादि दिन । करक आदि सै सब मुगुर ॥

मकरादि बाल जोवन जदिन । काम धुरा लीनी सुधुर ॥ छं० ९ ॥

दूहा--स्याम सु बांम अनंग भय । घटी न घट्टि क्रिसोर ॥

बालघन बैवेस तन । मनो भरें घन चोर ॥ छं० १० ॥

कवित्त--षट हृथी बहु हेम । रतन गुर पाट पटंबर ॥

पीत रत्त गुन सेत । स्यांम नग सुन गति अंमर ॥

सो मंगी चालुबक । सोइ दीनी प्रथिराजं ॥

मनु इंद बधू सच्चिव । काम बंधी चढि पाज ॥

बर बरनि राज सेंभर घनी । मुफळ बधि फल संग्रहिय ॥

इंछनि अवाज आवाज क्रम । अदिन भंजि के दिन सजिय ॥ छं० ११ ॥

साटक--नां पतनी नल राज राजन बधू दमयंति नो इंद्रयं ॥

नां सच्चिव सुनाथ नायक घरं लच्छीन घरया घरं ॥

नां रत्ती मनमथ्य रत्ति कलया मदोदरी रावनं ॥

सोयं सा प्रथिराज इंछनि बरं समयी न लभ्मै कवीं ॥ छं० १२ ॥

पृथ्वीराज का ब्याहने के लिये यात्रा करना ।

दूहा--तिहि सुंदरि ब्याहन नपति । रिति ग्रीषम दिन संघि ॥

चढयो मूर सभरि धनिय । मुष मंचन षल बधि ॥ छं० १३ ॥

घर अंबर तर जलघ बल । रुहुं न मूर तप सीत ॥

अगम पंथ नर घरनि मुष । बिलमत दंपति मीत ॥ छं० १४ ॥

साटक--पंथं दुस्तर वाय मुकुलिनसरं ज्वाला इला दुस्सहा ॥

क्रीलायां घन क्रयन यांइ मृयनं नर्जीव शब्द घरा ॥

आवर्तं वर तत मित्त करनी धूमाय विदिसा दिसा ॥

सरनं मरनय पंथ ग्रीषम षपं सुष्वं अहं प्राणिनां ॥ छं० १५ ॥

दूहा--प्राणी पंथ न सुष्व जल । मरन मुनिश्चय मानं ॥

दीह उदय दिसी मुदय भय । सुरति स्वयंबर ठानि ॥ छं १६ ॥

१. छं०-साह ।

२. छं० को०-तरं ।

पृथ्वीराज के साथ सामंतों का वर्णन ।

कवित्त—सथ्य कन्ह चहुआन । सथ्य निडुर रधि राजं ॥
सथ्य सोम सामंत । अलह पल्हन प्रति साजं ॥
बलिय गरुअ गहिलीत । बलिय भोहा बर सिध नर ॥
दाहिमो कैमास सथ्य । सूरौ चावड गुर ॥
मति भद्र मंति साधन सकल । लौहांनी स्वांमिन्न धुर ॥
चतुरंग सूर वय रूप गुन । लिए राज राजान गुर ॥ छं० १७ ॥

पृथ्वीराज की वारात की शोभा वर्णन ।

छंदपद्वरी—

चठि चलयौ राज प्रथिराज राज । रति भवन गवन मनमथ्य साज ॥
सिर पहुप पटल बहुसा षबास । अवलंब रहिय अलि सुर सुरास ॥
मुष सोभ जलज कद्रप किसोर । दीजै सु आज नप कोन जोर ॥
चिति काम बार रजि अंग और । संकर्यौ जान मनमथ्य जोर ॥
जिम जिमति लाज अरु चढत दीह । लज्जा सुजांनि संकलिय सीह ॥
जिम जिम सुनंत नप श्रवन बत्त । तिम तिम हुअत रस काम रत्त ॥
मधु मधु बेन मधुरी कुंभारि । रति रचिय जांनि सेंसव सबारि ॥

॥ छं० १८ ॥

श्लोक—साय दीपसमो दिष्टे । जैति जैति विजै जिते ॥

देवासुर मनुष्यानां । काले केक न गच्छति ॥ छं० १९ ॥

कवित्त—कोन काल वमि पर्यौ । काल ग्रह कोन न बंध्यौ ॥

कोन काल जित्तयो । काल किहि षाइ न रंध्यौ ॥

मठ विद्वार वापीन । विरध सुर थावर जंगम ॥

सुबर राज राजिद । कोन दिष्ठी न अमंगम ॥

ज्यां बंध्यौ साहि गोरी सुबर । मर तिन कति नंतयो ॥

इछनिय इच्छ इच्छा सुफल । सुबर बीर बीरह जयौ ॥ छं० २० ॥

साटक—बीरं जा बर बीर भीमति बरं कामं तनं उष्यया ॥

पंथे वानति वान मानति वरं कुरनंद केवं कुरू ॥

घासा मानय बीर वामन बलिं पूरोरवा भयंयं ॥

तू पत्नी प्रथिराज कालति रहं कालं जसं वसंतै ॥ छं० २१ ॥

पृथ्वीराज को घाते हुए सुनकर सलषराज का वृमघाम से
अगवानी करना ।

कवित्त—सुनि आबत चहुवांन । करिय अग्यीन सलष बर ॥

हय गय कच्छि सुमच्छि । आवि उम्महिय राष बर ॥

पट अंबर रुजराब । जेब नंगन जगमगिय ॥
फुल्लिय मानहु संझि । चित्त चकचौघिय लगिय ॥
चहुआन रत्त तोरन समय । लगन गोधूरक संघयो ॥
जानै कि अकं राका दिवस । इक्क थान उगि रुंधयो ॥ छं०२२ ॥
बोनों राजाओं की सेना के मिलने की शोभा का वर्णन ।
जिम सावन भादव सिधु । घुमरि घन घटा मिलत दुअ ॥
जनु समुद्र अरु गंग । उमडि मिलि हुहुन थोभ हुअ ॥
जनु सुर अरु सुक्र । सिगि रिषि गननि गगन मिलि ॥
जनु दधि मथि सुर असुर । करन मधुपान विभिर ठिलि ॥
तिम संभरेम अब्बूधनी । अनी बनी रस विरस भरि ॥
नग जोति जरकज दीप दुति । नही श्रवन बाजव करि ॥ छं० २३ ॥

सलषराज की प्रशंसा ।

पंच हस्ति मद वहि गिरद । गरुअ गरजत मेघ जनु ॥
तुरी बीस अंराक । तेज तन अगिन पवन मनु ॥
जर कमर जनेउ । हथ्य सकर नग मडिन ॥
सत्त मुषम पर काल । हेम त तन तन छडित ॥
वारोठि विवह वस्तन ममझि । सह चक्रत पिष्पित रिय ॥
विवहार विबुध जोतिग गिननासलष किति जातन कहिया ॥ छं०२४ ॥
तोरन आदि बांधकर, कलस धरकर, मोती के प्रक्षत छिड़क कर
मंगलाचार होना ।

डूहा — तोरन कर वर बद तह । मुत्तिय अच्छित डारि ॥

मनो चद त्रिय भेष धरि । अच्छित अच्छ उछार ॥ छं० २५ ॥

साटक — बदे बिद कलसस तोरन वरं तुगे रसं मन्मथ ।

सुष्यं साजति सक्र चक्रति कला निग्राह नु ग्राहनी ॥

जा निज्जे त्रैलोक उम्भति पुरे बदे कवी उप्पमे ॥

दुअ पास दुअ नारि दिष्यत वर मनो नैर वर दिष्यय ॥ छं० २६ ॥

नगर में स्त्रियो का बारात की शोभा देखना ।

कबित्त — नृपति काज अलि दिषहि । अलिन दिष्यत नर नारिय ॥

जनु मिलतराज प्रथिराज । नयर बिय वांह पसारिय ॥

जनु वन्ही गुर देव । सति स्वाहा हाहा हुअ ॥

जै जै जै उच्चार । राज रवनी रजत रुअ ॥

पंमार सलष बंदत बलिय । दिषिय कला मनमथ्य पिय ॥

दिष्यै सुभिया दुरि दुरि नयन।मनहु तरंग कि काम तिषा ॥ छं०२७ ॥

छंद पद्धरी-चित काम बीर रज्जयं ओर । संकुस्वी जानि मनमथ्य जोर ॥
 दुरि दिषे बाल क्षीनेति वस्त्र । उपमान चंद जंपंत तत्र ॥
 जाने कि जार परि मध्य मीन । पुज्जै कि दीप भोडल प्रवीन ॥
 इक करन पलटि इक करन लंत । घुंघट्ट बदल लज्जा सुभंत ॥ छं० २८ ॥
 घुरलिय रैन जनु बदल जोट उझकंत चंद जनु आनि कोट ॥
 कर उंच बाल अच्छित उछारि । जनु कमल बाइ बसि ओस झार ॥
 गावंत गान बहु विधि सवारि । कलयंठ कंठ जनु रति घमारि ॥
 मुसकंत हास दिषिये विसाल । विकसंत कमल जनु चंद ताल ॥
 तनु अँठि मेंठि भोहै ि वाल । मूरछघो मेन जग बही प्याल ॥ छं० २९ ॥

सुहासिनी स्त्रियों का कलश लेकर द्वार पर धारती उतारना ।

डूहा—कलस बंदि सुभगा सिरह । महुर मद्धि सय मेलि ॥
 बहुरि सुहाग सुहागिनी । बई काम रस बेलि ॥ छं० ३० ॥
 कनक थार आरति उदित । सुभग सुवासिनि लाइ ॥
 जनु कि जोति तम हर परह । नव ग्रह करत बघाइ ॥ छं० ३१ ॥
 महुर पंच से थार धरि । दुति दूलह जिय जानि ॥
 काम कसाए लोइननि । हन्यो मदन सर तानि ॥ छं० ३२ ॥
 सलष की रानी दूलह की शोभा देख प्रसन्न होना ।
 सषिन ओट सलषह घरह । दूलह दुति दूग देषि ॥
 कोटि काम छत्रि पिषिषि पिय । जनम सफल करि लेषि ॥ छं० ३३ ॥
 स्त्रियों का महल में जाना और बारात का जनवासे ग्रामा ।
 महल झुंड महरनि बहुरि । जनवासह जुरि जानि ॥
 सोभि माम मामंत मह । जनु वितन शनि भानि ॥ छं० ३४ ॥

जनवासे की तयारी का वर्णन ।

छंद पद्धरी-बहुरी बरात जनवास थान । छत्रि सोभ सुवन भुवभंति भान ॥
 संग मुमट थाट मामंन सूर । बलवंत मंत दिपिये कहर ॥
 अंग अंग अंग उन्हास हास । जनु लच्छि लाह सोभा प्रकास ॥
 सत धन अत्राम माला सुरंग । सुभथान जैत आवू दुंरा ॥ छं० ३५ ॥
 जालीन नोप पोभा न पार । रवि सोम कति क्रनन प्रसार ॥
 पंच रंग व्रंन विव्रत सुवेस । बहु गरथ रूप मंडित जुवेस ॥
 रसंम गिरुम दुन्नी च मंडि । तिन जोति होति दुति विच पंडि ॥ छं० ३६ ॥
 हादसह सेत्र त्रिठाप पंवि । तिन दिग्ग मूड गादीय संधि ॥
 प्रति सेत्र सेत्र फूजन अमार । तिन सोभ गंध रंग रंग पार ॥
 झुझ लाष पान बीरा बनाइ । धनसार मद्धि बीरन लगाइ ॥

कुंभ कुमन कुंभ जहं तहं छुटंत । बातीन अगर धूपन लुटंत ॥
 कईमन जष्य मचि कीच भूमि । नाना सुरंग रहि गंध धूमि ॥
 मस्साल दीप प्रञ्जरि फुलेल । केतकी करन बेली गुलेल ॥
 ऊड़त कपूर पवनं पषानि । तिन सरस गंधि सक्कि न बषान ॥
 सूरंत क्रांति सोभा विसाल । सोभंत जुरे तहं श्रब भुमाल ॥ छं० ३४ ॥
 प्रथिराज कुंवर कुवरनं नरिद । धरि भूप रूप अवतार इंद ॥
 मनु काम रूप रति भ्रमन चित्त । अश्विनि कुमार ससि सोभ मित्त ॥
 नग कनक मंडि वासन विव्रित । ससि सूर सोभ सुभ सज्जि छत्र ॥
 वर विप्य अप्य गज गाह धारि । जनु सोम उभय आरति उतारि ॥ छं० ३९ ॥
 आसन अस्स प्रथिराज आइ । तहां पंच सबद बाजे बजाइ ॥
 संग एक कुंवर जल पान धार । ड्यौडी न रुकि सामंत भार ॥
 गुर राम चंद कवि ढिग आई । परधान कन्ह काइय अताई ॥
 पुनि कन्ह काक गोइद राइ । परिपुनं क्रोध जे गलत लाइ ॥ छं० ४० ॥
 पुंडीर धीर पाबस्स संग । दाहिम डूव जम जोर जंग ॥
 जैतसी सलष लष्यनह सिघ । छिति छत्र ध्रंम जे इष्यि रंघ ॥
 बलिभद्र सिघ कूरंभ राइ । अनि नांम सूर कित्तक गिनाइ ॥
 प्रथिराज इंद दिकपाल सूर । अंग अंग वदि सब जोति नूर ॥ छं० ४१ ॥
 दूहा—गवष जाल महलनि महल । फिरे चारु मन सर्व ॥

सोंज सोभ अंतन लही । दिष्यत भगगत^१ गर्व ॥ छं० ४२ ॥

महलनि सालनि महलमंडि । दासी सालनि गान ॥

मंडप मंडित बेद धुनि । सुभटन सोभ समान ॥ छं० ४३ ॥

जहां तहां आनंद उमग । आनंद उछाह अनंत ॥

वंस छत्रीय छत्रीस छह । भाट विरद भनंत ॥ छं० ४४ ॥

छंद मोतीदांम —

गहने नग जोतिन हीरन लाल । पटंमर पूर झरप्यिय झाल ॥

मनि मानिक मोतिन हीरनि हार । भगीरथ भंत हिमगिरि धार ॥

रितं रित भूषन भांति अनेक । धरे धन पंतिय आनि घनेक ॥

रंग रंग वारनि वारनि वार । धरे नवला नष भूषन भार ॥

तिते सब संचि सवारिस ओप । झलंमल झालन डालन नोप ॥

सकुंकम कूपन बंदिन पोति । सुहाग सुमंगल अष्ट न होत ॥ छं० ४५ ॥

दूहा—अष्ट मंगलिक अष्ट सिघ । नवनिघ रत्न अपार ॥

पाटंबर अंभर वसन । दिवस न सुम्नहि तार ॥ छं० ४६ ॥

जनवासे में भोजन का नेवता देकर सलषराज का लौटना ॥
 फिरिय चार करि फिरिय सब । भोजन कारन बोलि ॥
 भाव भगति आदर अमित । देव पूजि सम तोलि ॥ छ० ४७ ॥
 इच्छिनी का शृंगार आरंभ होना, शृंगार वर्णन ॥
 जनवासें पधराइ बर । बरी सिंगार अरंभ ॥
 जुरि जुबन मुर सुंदरी । जे रस जानत डिभ ॥ छ० ४८ ॥

छंद त्रोटक—

बिन बस्तर अंग सुरंग रसी । सुहलै जनुसाष मदन कसी ॥
 लव लोनइ लोइ उबट्टनकों । कि बस्यी मनु काम सुपट्टन कों ॥
 द्विग फुल्लिय काम विरामन कें । उधरे मकरद उदै दिन कें ॥
 बिन कंचुकि अंग सुरंग षरी । सुकली जनु चंपक हेम भरी ॥ छ० ४९ ॥
 सुभई लट चंचल नीर भरी । तिनकी उपमा कवि दिव्य घरी ॥
 तिन सों लगि कें जल बूंद ढरै । सुछटै मनु तारक राह करै ॥
 जु कछु उपमा उपजी दुसरी । मनो माटय स्याम सुमुक्ति घरी ॥
 अति चंचल ह्वै विछुटै मुपतें।मनों राह ससी सिसुता बषतें ॥ छ० ५० ॥
 मुमनों सति स्वात अमुन इयं । तिन की उपमा बरनी न हियं ॥
 कबहं गहि सुक्त सिषंड बरें । मनो नषत केसन सिंदु सरें ॥
 जु सितं मित नीर लिलाट घसें । मुमनों भिदि झोमहि गंग लसें ॥
 जल में भिजि भूह कला दुसरी । सु लरै मनु बाल अलीन षरी ॥
 बुधि वित्त उपनं किनीक कहौ।जिन पाट अभी वन वेद लहौ ॥ छ० ४३ ॥

दूहा - मयति मत्त अस्नान करि । मुभ दपति दिन मोधि ॥

चाहुआन इच्छिनि वरन । मयन गीनि श्रवगोधि ॥ छ० ५२ ॥
 करि मजन अगोछि तन । घृप बामि ब्रह्म अग ॥
 मनो देह जनु नेह फुलि । हेम मोज जनु गग ॥ छ० ५३ ॥
 तन चरक कुदन मनो । कै केसर रग जुक्ति ॥
 पीय बास छवि छीन लिय । और छीन मव जुक्ति ॥ छ० ५४ ॥
 अंग अग आनंद उमगि । उफनत वेनन माझ ॥
 सधी मोभ मव बसि भई । मनो कि फली माझ ॥ छ० ५५ ॥
 निरपत नागनि बसि भई । किनर जण्य किनेक ॥
 सब मोभा मसि मानि कें । सांची इच्छिनि एक ॥ छ० ५६ ॥
 प्राग माघ अस्नान किय । गज गजे घन घाइ ॥
 विश्वनाथ सेए सदा । प्रथीराज तो पाइ ॥ छ० ५७ ॥

कवित्त - कमल भाल जनु बाल । मकर कर मंडि इच्छिनिय ॥

निरषि नैन प्रतिबिब । करहि निवछार निच्छिर्निय ॥

प्रमुदित अगनि अनंग । कोक कूकन उच्चारत ॥
 एक रमन रस रंग । बात बातन मुच्चारत ॥
 गंध अर वस्त्र गहनं करनि । हास भास मंडीर रिय ।
 तिन मध्य पवारी पिष्पियै । जनु विधिना अप्पन घरिय ॥छं०५८॥
 श्रवननि लगत कटाच्छ । जनु पवन दीपक अंदोलित ॥
 मुसकनि विकसत फूल । मधुर बरसति मुष बोलति ॥
 इठलनि अलसति लसति । सुरति सागर उद्धारति ॥
 रति रंभा गिरजादि । पिष्प तां तन मन हारति ॥
 तिह अग अंग छवि उक्ति बहु । छंद बंध चंदहु कहिय ॥
 जीरंन जुग महि अत्र इह । कलू एक कीरति रहिय ॥ छं० ५९॥
 कमल विमल लज्जा सुगंध । बाल विस माल लाल उर ॥
 भूषन सोभ सुभंत । मनो सिंगार सुचिर धर ॥
 अल्प जलप रति मंद । चंद बाहनि कुल तारुनि ॥
 सो इच्छिनि पामार । राज लहिय अति सारनि ॥
 सत च्यारि बरष बरनि सुंदरिय । सुर विसाल गावत गरज ॥
 चहुंआन सुअन सोमेस कहि । विधि सगयन साई अरज ॥छं० ६०॥

छंद मोतीदाम —

सजे पट दून अभूषन बाल । मनो रति माल विसालति लाल ॥
 धर्यो तन वस्त्र सुकोर कुआर । मंडी जनुसिभ मनमथ रारि ॥छं० ६१॥

छंद कंठाभूषन —इक गावही रम मरम रम भरि विमल सुंदर राजही ॥

मनो वंद उडगन राति राका मोम पति बिराजही ॥
 इक त्रित रंगन काम अंगन अजम लज्ज की सुंदरी ॥
 मनो दीप दीपक भाल बालय राज राजन उच्चरी ॥छं०६२॥
 मुभ सरल बांनिय मधुर ठानिय चित्त भंजय भोगयं ॥
 द्विग निरधि निरधि कटाच्छ लगहि जुक्त रभन भोगयं ॥
 अलि रूप नयनं मनहु वयनं चलिहि तिष्य कटाप्ययं ॥
 स्तुतं निकरहि वार पारह करत तकि तनतच्छयं ॥छं०६३॥

ब्राह्मण लोग विवाह की विधि करने लगे ।

कवित्त - विधि विवाह दुज करिय । करिय तब अंग वाम जन ॥

निरधि नयन मुख कंति । भयो रोमंच स्रब्ध तन ॥

फुलिंग नयन मुख वयन । भयो आरूठ काम मन ॥

चित्त बसीकरन समह । भयो आनंद स्रब्ध तन ॥

अभिलाष मिलन हित हिलन मन । काकविद कवितह करै ।

प्रथमह समागम मिलन को । बहुत अडंबर विस्तरै ॥ छं० ६४ ॥

डूहा—सोंघा सुगंध घन डंमरी । सुमन सुदिष्ट पसार ॥

धूप अडंमर धुंधरिय । झल मल जल समदार ॥ छं० ६५ ॥

पृथ्वीराज के रहने को जो बाग सजा गया था

उसकी शोभा का वर्णन ।

छंद पद्धरी—

बरबग मग चिहुं दिसा दिषिष । जहां तहांति सुमन अति बैठि पिषिष ॥

कच मग भूमि चिहुकोद गस्सि । नारिग सुमन दारिम विगस्सि ॥

प्रतिबिब तास दिषिय सरूप । बसंम एम जंप अनूप ॥

नव बधू अंग नवजल प्रवेस । मुमकंत दत दिषिय सुदेस ॥ छं० ६६ ॥

प्रतिबिब चंप देषे फुलीन । दीपकक माल मनमथ्य दीन ॥

उप्पम और उर एक लगिग । संजीव मूरि जनु जोति जगिग ॥

हल हलै लता कछु मंद वाय । नव वधू केलि भयकंक पाय ॥

उपमां उर कवि कहीय तांम । जुठवन तुरग अगि ओगि कांम ॥ छं० ६७ ॥

पाटीन दिषिष चकचौघि होइ । ससिपरह उठि घन घटा दोइ ॥

सुभ माग सरल सूधी सुवानि । ससि क्रम चली घन छेकि जानि ॥

फुल्ले सुगंध के वरनि फूल । देषंत वग पावस्स भूल ॥

घन वर अनंद अगें निसंब्व । जनु रंक इच्छ पासै सुदब्ब ॥ छं० ६८ ॥

नल नलिनी नीरू चह वचनि उडि । धरधार गंग जनु उठिरुबुडि ॥

विट विटनि वेलि झुलि वेल फूलि । जनु काम ग्रह वाग तर छत्र झूलि ॥

कदलीन पत्र हलि पवन जोर । जनु करत पषा नृप पिथ्य ओर ।

कलरव करंत दुजनेक थान । संगीत कांम चट सार गांन ॥

निरतंत केक केकीन संय । पावसह जानि गिर रमत रंग ॥ छं० ६९ ॥

डूहा—नंदन वन वैकुंठ जनु । इंद्र लोग सुर बाग ॥

वृंशवन भूलोग जनु । सोभा सुभग सुभाग ॥ छं० ७० ॥

गाहा—तिहि थानं रजि राजं । उत्तरियं बीर सा साजं ॥

सब संबल बियानं । जानं वदायइं बीजयी चंदं ॥ छं० ७१ ॥

कवित्त—को इंद्रो गुर राज । भानं सत्तम अधिकारी ॥

भानं नवम प्रथिराज । राह दुष्टम अधिकारी ॥

बर बज्जी नीसान । बंदि लीनं नृप राजं ॥

प्रीय त्रिया हित बंधि । सोइ इंछिनि बर पाजं ॥

त्रियांह तात अरु बाल सह । उचरें मुख इंछिनि कुनहि ॥

धनि धनि गवरि पूजा लखी।सुबर सुबर सुंदरि समहि ॥छं०७२॥

ब्रह्म वेद सद्यइय । अग्नि होतय बर राज्य ॥

स्वाहा अग्नि विवाह । रति कामह गुन गावय ॥

दुहिति नाम दुहुरिषि । दुहृति परहं दुहं गोती ॥
 राजं गुरु उच्चरै । सलष बहुआंन सकोती ॥
 अनेक भाव दिष्यहि सुदिव । दिव दिवांन दुं दुभि बजइ ॥
 प्रथिराज राज राजन सुबर । तिहित लषे रतिपति लजइ ॥ छं० ७३ ॥
 कुंदन ओपति अंग । मग जनु चंद किरनि सिर ॥
 बैनी सुभग भुजंग । फूल मनि सीस मीस थिर ॥
 पट्टिय धुंठित मेंन । तिमिर कज्जल छवि छीनिय ॥
 भुअजुग गोस धनुष्य । वदन राका रुचि भीनिय ॥
 सुक नास नेंन फूले कमल । कंबु कंठ कोकिल कलक ॥
 दुल्लह सुचित्त फंदन मनहु । फद मंडि रषिय अलक ॥ छं० ७४ ॥
 ब्राह्मणों का मंडप स्थापन करना ।

दूहा - फुनि पंडित मंडप मंडिय । बेद पाठ आधार ॥
 षट करमी सरमी अनिघ । गुर सगह गुर भार ॥ छं० ७५ ॥

दूलह का मंडप में घाना ।

तिन दूलह मंडप बुलिय । हम सत घमम निसान ॥
 जनु बहल ब्रज क्रिस्न पर । सुरपति बहुरि रिसान ॥ छं० ७६ ॥
 देषि सोभ प्रथिराज त्रिय । बारत राई नोन ॥
 हर्ष हास मुष चष उदित । जनु कमल विकस रवि भौन ॥ छं० ७७ ॥
 कवित्त - देसन देस नरेस । भेस अमरेस अमर भति ॥
 सील सत्त गुनवंत । दांन षग कहन कोन मति ॥
 जरकस पसम जराउ । गंध रस सरस अमीवर ॥
 तेजवंत उहार । बडम विवाहर प्रथ भर ॥
 मंडप्य जान दुअ दिसि मिलत । हास तर्क जात न गन्यौ ॥
 दीपति नगनि निसि दीह भयावर दाई दिव वर मन्यौ ॥ छं० ७८ ॥
 स्त्रियों का दूलह की शोभा देख मग्न होना ।

दूहा - साल अटा जालिन गवष । रष्यत नव रनिवास ॥
 छत्र छाह छवि करत जित । भमर मत्त रस वास ॥ छं० ७९ ॥
 नग मोती गहने अगन । गिरत न सुखि समहार ॥
 काम लहरि छवि छोल उठि । दुति दरियाब बेपार ॥ छं० ८० ॥
 स्त्रियों का मंगल गीत और गाली गाना ।
 मंगल गावत भुंभकनि । कोकिल कंठी नारि ॥
 सुषर पुरुष जोवन छके । सुनहि सुहाई गारि ॥ छं० ८१ ॥

बुलह बुलहिन का पट्टे पर बँठकर गंठ जोड़ा होकर नमोश पूजन करना ।

पटां त्रैठि पट गंठि गुह पूजे प्रथम गनेस ॥

दुब कुल वारि विचार कर । ब्याही बांम नरेस ॥ छं० ४२ ॥

नक्षत्रह, कुलदेवता, अग्नि, ब्राह्मण की पूजा कर साषोक्चार होना ।

ग्रहन पूजि ग्रहदेव पुजि । पूजि अगानि दुज देव ॥

साषोक्चार उचार धुनि । प्रसन भए नृप देव ॥ छं० ४३ ॥

चंद्र सूर तहां साषि दिय । बन्ह बारुन बुध वाइ ॥

प्रोहित गुर उपदेस करि । बांम अंग तब आइ ॥ छं० ४४ ॥

ब्राह्मणों का प्राणीर्वाद के मंत्र पढ़ना ।

पढि संकल्प विकल्प तजि । भजि भगवति भगवंत ॥

तम सु पाइ परसाद करि । चिर जिओ इच्छिन कंत ॥ छं० ४५ ॥

सप्तशराज का कन्या दान बेकर विनय करना ।

अठभूपति पट गंठि त्रिय । विनय जोरि कर कीन ॥

इह कन्या नृप सोम सुत । दासपंन पन दीन ॥ छं० ४६ ॥

कान्ह चौहान का कहना कि अंसे शिव के साथ गौरी है वैसे ही

यह होगी ।

कही कन्ह तब जैत सम । मंडन संभरि ग्रेह ॥

ज्यों गवरी सिव लच्छि प्रभु । त्यों मन बाढी-नेह ॥ छं० ४७ ॥

लगन साधकर तब राजा का ज्योनार करना ।

लगन साधि आराधि नृप । पुनि ज्योनारि जिवाइ ॥

छ रस अन अंतन लही । क्यों कबि कहै वनाइ ॥ छं० ४८ ॥

ज्योनार के पकवानों का वर्णन ।

अग्नि पक्क घृत पक्क कर । दूध पक्क बेपार ॥

तेल एक लषिये नही । जहं तहं लूट अमार ॥ छं० ४९ ॥

छंद भुजंगी—

रहस्यं रहस्यं अनेकत भंती । धनं जोति मिष्ठांन पानं प्रभंती ॥

उदंडं पुडंडं गुडंडंति मासं । किते व्रन-प्रंनं किते बीर भासं ॥

किते स्वाद स्वादं प्रथी देव वंश्रे । तहां केवलं व्रनि आवर्तं गंछे ॥

मरे एक वारं भ्रितं षंड मट्टी । दिषे स्वाद राजं चलै देव बंधी ॥ छं० ९० ॥

घनं अंमरं डंमरं दिसि प्रमानं । उठै जत्र तीनी सुमंघं विधानं ॥

अंगं अंग अंगं सलप्यत नारी । महा लालचै काम भसु भी निनारी ॥

हृचं लेव राजं सुदंपति बधे । मनो मिस्स अगो गुरं चित्त संघे ॥

बधे अंचलं अंचलं इन प्रकारं । मनो बंधिये मौन मन मध्य धारं ॥ छं० ९१ ॥

लियी हृथ्य राजं त्रिया हृथ्य सोहै । मनो पैसि सत पत्र कंमोव सोहै ॥
जर्न अंग अंबं बरं मालघारी । मनो काम अगं जु विद्या पसारी ॥
छिउं छित राजै नरं नाह नारी।मनो जीवनं काम लज्जी उघारी ॥छं०१२॥
परं पुठ्व कथ्यं कथी कथिब चंदं । रही लजि मनो रति फिरि दहन हहं ॥
दिवै तिऊक ददि अछि अछत सारे । मनो उगि अंकूर सुष सेन भारे ॥
दिवै कंकनं हृथ्य चहुआन राजै । मनो रति बंध्यौ दई छाप छाजै ॥
रहै एक ग्रेहं घरी अद्ध भारे । तहां वेद मंत्रं दुजं जा उघारे ॥ छं० १३ ॥

कवित्त—सुभत बीर तन ताम । बाल राजै दिसि वामं ॥
मनहु मुति पहिचान । रति बंधी कर कामं ॥
अति सोभा सोमई । चंद ओपम तहं वर वर ॥
मनो मकर मकरेस । आय चंगई अप्प घर ॥
सज्जे सुरति मनमध्य वर । कै इंद्रानी इंद्र परि ॥
संप्रति लच्छ लच्छिय सुबर । संपति तन सज्जेउ वर ॥ छं० १४ ॥

रूहा—बर सोभे वर राजपति । लिय दच्छिन हत वामं ॥
मनो व्याह पूरन करै । सुन्नित वीरतम हामं ॥ छं० १५ ॥
पृथ्वीराज के विवाह का वर्णन कविचन्द्र अपनी सामर्थ्य से
बाहर बतलाता है ।

परनि बीर प्रथिराज वर । बहुत कहै रस जोइ ॥
कबि वर वरनत नां वने । बर भूषन तिन गोइ ॥ छं० १६ ॥
नख बुलहिन की शोभा का वर्णन ।

छंद पदरी - -

लज्याति मानं गुन भव कटाछ । अल पहति जलप सुलपह सुलाछ ॥
भोर भर अभय भय सील नील । सरसात पिम रस पिम चील ॥
गुंजंत ग्राम सोभिल कुआरि । तिहि हरत हरनि मनमध्य रारि ॥
तन सात नितंबनि तहं प्रमान । बर हरै बरनि पिष लटि प्रमान ॥
सित असित सुवृत्त कटाक्ष बाल । शृंगार मध्य भूषन रसाल ॥
रस हास मध्य शृंगार होइ । संकर सुभाग उप्पनै लोइ ॥छं० १७॥

साटक—कामं जा गढीइ लज्ज गढने भय भ्रत भव कोटकं ॥

धु घट्टं पव डोडि वामति बके ऊषी सुकागछ रसे ॥

जाति जात न जासि जोगित बरं भंजे मनं विभ्रमं ॥

नां वीसंत गता गतेस सैनं द्रगं चलं निभलं ॥ छं० १८ ॥

छंद नोटक—बरनं गुरु अछिउर अति पयो । इति नोटक छंदय नाम नयो ॥
श्रिय नाम सुबद्धि काहलं । वन पति विपति सुग्राहन्यं ॥

बरनै बरनं बरनीन कथं । सु चङ्घा जनु मेघ प्रथमं रथं ॥
 प्रग अंचल अंचल बाल ढंके । तिहि काम बिरामन बांन थके ॥छं०९९॥
 नब बास सुनूपुर सह गुरं । नूप आगम जाइ बघाइ घरं ॥
 गज ज्यो मनमस जंजीर जरी । क्रम निद्रुत निद्रुय पाइ भरी ॥
 दस पंच सषी नूप पास गई । ति मनो सुष श्रीफल हाथ दई ॥
 करुनातिमुचीरस भौर सता । भ्रम भौ अभिलाषरुद्रम्ब जिता ॥छं०१००॥
 नूप पुठु मुखं अवलोक करै । सु मनो घन रंक विलोकि गुरै ॥
 ति कंही न बनै कविचंद कथा । सु लजै रसना अरु बीर जथा ॥
 सुकछुक कहों दिठि क्रमं क्रमं । सुमनो मनता बरनी न भ्रमं ॥छं०१०१॥

प्रथम समागम का वर्णन ।

ब्रूहा—अैन सैन रति मैन सय । प्रथम समागम बाल ॥
 नेह देह दुअ एक हुआ । परे प्रेम रस जाल ॥ छं० १०२ ॥
 गाहा—इत्तं सुष्व गनिज्जै । लज्जीजै जोहयौ कब्बी ॥
 ज्यो वारिज बिपनं मझं । सुझमै ना यहि गरुआयं ॥ छं० १०३ ॥
 मूलं वर मकरंदं । विजी पुर षाई सुंदरी वीयं ॥
 मालचि दंपति वासं । चाहुआनं वीरयो पती ॥ छं० १०४ ॥
 जभ्रम भ्रमैति चित्तं । आवै नहुँय ग्यानयं चितयं ॥
 जंभ्रमि भ्रमि सह रूपं । अवलोकं इछनी करियं ॥ छं० १०५ ॥
 इवक जगी बिस बाले । काम भयंक षयो द्विगर्यं ॥
 जानिज्जै गम सैसं । नैनायं जोग व सनायं ॥ छं० १०६ ॥
 उअर उरोजति सद्धे । बुढी बालाय दिद्रुयो नैनं ॥
 कुच तुछ अंकुर उट्टे । मनो प्रीतम विभ्राव हीयो चढयं ॥ छं० १०७ ॥
 बौपाई—नैननि प्रथम प्रमानिय पुढ्व । सेवालय रोमावलि रुढ्व ॥
 अग्यानय जोवनति कुंआराअब जान्यो सैसब चलि भार ॥छं०१०८॥
 इहिबिधि मस गस भय रजनी । बाल लता बाल्हम गहि सजनी ॥
 यो ढग मग सुंदरि विरुमाई । ज्यो वेलिय अवलंब लहाई ॥छं०१०९॥
 बुलहिन को लेकर बूलह का जनवासे में आना और
 हाथी घोड़े घन आदि लुटाना ॥
 ब्रूहा—पांवारी प्रथिराज वर । पुनि जनवासे जाइ ॥
 एक सहस ह्य हृथ्य वर । दीने तुरत लुटाइ ॥ छं० ११० ॥
 होत प्रात जग्गिय सलष । भंत अनेक तिभोग ॥
 जुकछु देव देवंस मति । सो लक्ष्मी नहि लोग ॥ छं० १११ ॥
 छंद भुवगी—सुइदं सुइद सुइदति राखं । सुतो देवियै कोटि कोटेक साजं ॥
 छषं छष भाई नटं नटु रागं । मनो देवियै यंद सहस्रहेन आगं ॥

जिते तार झंका नञ्चे निनारे । मनो देखिये भान ससि लष्य तारे ॥
 सुभंग सुतालं मृदंगं बजावै । हहा हूह सुगं सुगंधवं गावै ॥छं० ११२॥
 घनं पक्क वानं समानंत नेहं । करे प्रथ्यिराजं अप अप्प देहं ॥
 करे राज राजं सबै व्याह काजं । मनो दिष्यये राज मूजग्य साजं ॥
 परे अगग राजं छिती छत्र जोरी । मनो उन्नयो मेघ आषाढ कोरी ॥
 फिरै दास भारी बुलै राग बेनं । मनो नभ्यसी मास कै बीज गेनं ॥छं० ११३॥
 बजै ग्राम नारी छतीसो सुरागं । मनो बोलयं मोर आषाढ गाजं ॥
 बजै घुषुष नारियं रंग भारी । मनो दादुरं जोति मनमथ्य सारी ॥
 रंगे कासमीरं सबै त्रस्त्रघारी । किधो बद्दुलं रंग कै ग्रहन गारी ॥
 किधो इंद्रबद्धू चढ़ी नीर धारा । किधो रात्र वासत भूपालवारा ॥छं० १४॥

दूहा - गति त्रिजांम भय प्रातबर । इह मनुहार प्रमानं ॥

बर दिष्यो बहुआन नूप । रत्ति काम उनमान ॥ छं० ११५ ॥

गाहा—रत्ति काम दुअ दाहं । कै दुषंकरी कत्तरी बाले ॥

सो इछनि पात्रारी । लभ्भी नूप मुक्तिका रूपं ॥ छं० ११६ ॥

छंद हनुफाल -इति मुरुति सकृति सकोर । जिन लभि न पारस चोर ॥

जिन काम बान झकोर । गुन मुदित मुदित सथोर ॥

चित मित मितह जोर । मनो उदय निषत्रन चोर ॥

मुष जुगति भृगति उपाय । का करिहि मुक्ति अमाइ ॥ छं० ११७ ॥

मुष करन दिन प्रति जीह । दिन मुफल घरियति ग्रीह ॥

प्रति राज राजन जोर । पावार सलषति ओर ॥

मनुहार मडित थोर । नूप चलन ग्रेह सत्रोर ॥

है गैति रथ बर वाजि । नूप दए दान विराजि ॥ छं० ११८ ॥

दहेज में सलषराज का बहुत कुछ देकर भी संकुचित होना ।

कवित -सहस एरु रथ साजि । दासि बिय तिपति इक्क मधि ॥

इक्क इक्क करि सथ्य । किरनि धनौ प्रति प्रति बधि ॥

मो हाथी इह भाति । माल मुत्तिय उतंग बर ॥

लछ्छि पटंबर अंग । दए राजिद राज गुर ॥

इतनौ देत सकुष्यो नूपति । तै दिनता चरनन गहिय ॥

प्रधीराज राजन मुत्रर । सलष फेरि चल्पी समिय ॥ छं० ११९ ॥

पांच दिन तक सब जातियों को भोजन कराया गया ।

इहा—पंच दिवस प्यारी बरन । भुजत अन अपार ॥

छरस अन छह रितिन मुष । अब्बू वै वाचार ॥ छं० १२० ॥

पलकि^१ चार अचार करि । समद करी सब सख्य ॥

है हृषी जर कस बसन । को कवि बरनै कथ्य ॥ छं० १२१ ॥

भारत की विवाह का वर्णन ।

छंद पदारी-पहिराइ राइ पावार सख्य । नह बुद्धि बरन बर विविध कथ्य ॥

इक करी सत्त ह्य सोम राइ । औराक जाति जे पवन पाइ ॥

सिर पाव पंच जरकस पसंम । सूत रूपोत रेसम नरंम ॥

सोइ विदा कीन डूलह बनाइ । जमदार सोंपि संभरि गनाइ ॥ छं० १२२ ॥

कलघूत कलस दस गवित हृष्य । इक उंच कुंडि जल न्हान सथ्य ॥

दस थार कनक प्रतिबिंब सूर । बाटका बीस बिअ अभुत नूर ॥

ता सक्क पंच दुब मनह थार । वाबौठ एक हिम जटित लाल ॥

पालकनि हेम रेसम निवारि । अनि ठांम नंह को लहै सार ॥ छं० १२३ ॥

कठ लौनि बीस सोवन मटाइ । पल्लान ऊच दावन चढाई ॥

मन बीस पंच इह सोंज श्रव्व । जिन कोय करी छित्रीस ग्रव्व ॥

दुअ हृष्य साजि माझे जिजीर । रूपेन साज सज्जे वजीर ॥

हंडवाइ बीस मन साजु सुद्धाउज्जल रज रजकक जनु उफनि दूध ॥ छं० १२४ ॥

दस सहस हेम दासीन सग । तिन देषि रंग रंभ होत भंग ॥

सामंत सत्त इक रस्स अग । पहराइ तिनह नृप नमिय पग ॥

इक तुरी जात औराक थान । अगीय अंग पग पवन मान ॥

इक इक्क बटुअ मालाति इक्कामुद्रकी इक्क इन पुहचि किकक ॥ छं० १२५ ॥

सिर पाव उंच सरकस अनुप । तिन दिषि होत हैरांन भूप ॥

बंधन बनंक कायथ्य संग । पसवान लोग जे रषिक अग ॥

लघु दिष्य और असवार पाल । करि सुमन सब्ब अब्ब भुआल ॥

पंच सै सोम रनिवास नाम । रेसम सूत गनि पंच ठांम ॥ छं० १२६ ॥

सब हर्ष सहित समदे नरेस । सजि चले सुभट सब अप्प देस ॥

इछनिय मट्टि पिथ बैठ ढाल । गज गाह घुरें दुहुं अंग भाल ॥ छं० १२७ ॥

भारत का विवाह होकर राजमेर की ओर चलना ।

दूहा—चल्यो व्याहि संभरि धनी । मंगन भए निहाल ॥

पुह चावन धन संग भए । नृपगुन चवें रसाल ॥ छं० १२८ ॥

पंच कोस परथिथ्य कह । विदा मंगि अबु ईस ॥

ओर देन तुम सोंभ कह । काम तुम्हें हम सीस ॥ छं० १२९ ॥

नवमि मंडि बहुरे घरह । वे सज्जे अप देस ॥

नृपति व्याह दुअ रस रह्यो । हिम गिरि जानि महेस ॥ १३० ॥

आरिज आरिज सलष तें । इच्छनि इच्छा पुरि ॥
भुज मंडल मंडित दिनह । तिर दधि अच्छित जूर ॥ छं० १३१ ॥
चलन राज प्रथिराज बर । बरनि पत्त बर राज ॥
मद्धि अमोलक सुंदरी । डोला सट्टित साज ॥ छं० १३२ ॥
यीं आयी नृप ग्रेह बर । सुनि अवाज त्रिय कांन ॥
मानों बीर दुहाइयां । कांमहि नंषन बान ॥ छं० १३३ ॥
बारात के अजमेर पहुंचने पर मंगलाचार होना ।

कवित्त—सोमेसर संभरिय । राज आवत प्रथिराजह ॥
है गै रंभ सुसाज । इंद चल्ल्यौ लष साजह ॥
कोटि कोटि मनु इंद । इंद दिण्षो इंदासन ॥
एक एक दंपतिय । बरह बंधे विधि साजन ॥
दुज मानं वेद मंगल त्रियह । मुत्ति अछित बंदहि सुबर ॥
नृप मौर मुष्य मुत्तिय लगहि । सो अपम कविगज घर ॥ छं० १३३ ॥

अरल्लि—

लगत मुत्ति नृपति सुपति मुष वर । मांनों भानं* उनग्रेह सुतागक ऊबरं ॥
मिलि सो फिरि चलहि ससिगन भानं कों।मानहु लषद्वै ानि आने आंनकों॥
॥ छं० १३५ ॥

दूहा—बंदि लियो बरनी सुबर । त्रिया हेत लजि गान ॥
मांनों बैसंध सुंदरी । चलत समप्पत दान ॥ छं० १३६ ॥
शुकी पूछने पर शुक का इच्छिनी के नषशिष का वर्णन करना ।
बहुरि सुकी सुक सो कहै । अंग अग दुति देह ॥
इच्छनि अंछ बयानि कै । मोहि सुनावहु एह ॥ छं० १३७ ॥
छंद हनूफाल - धन धवल गावहि बाल । मनमध्य तिध्य विसाल ॥
बहु फुल्लि केवर फूलि । बग बैठि पावस भूलि ॥
धन धवल दे मनमध्य । आनंद अंगनि सध्य ॥
जनु रंग पाये दब्ब । नल नलन नीर चहब्ब ॥ छं० १३८ ॥
घर घर गंग कि उट्टि । फिर नम्भ परसि अपुट्टि ॥
बट बिटप बेलिय झुल्लि । ग्रिह बाग तर छत्र झुल्लि ॥
नृप परनि पुत्रि पवार । जनु जुबन सैसुब रारि ॥
इह रूप राजित देव । इन्द्र इन्द्रनी अहमेव ॥ छं० १३९ ॥
सोइ सलष राज कुंआरि । नृप लसी ब्रह्म सवांरि ॥
लछि लच्छि पूर सहज्ज । व्रत नाथ व्रत करि कज्ज ॥
कविराज ओष प्रकार । आवै न कोटि विचार ॥
सिष नष्य ब्रंन सुरसं । किम करय मंद सुमत्त ॥ छं० १४० ॥

जगि रंग जोबन जोर । ससि बिलसि बयक्रम थोर ॥
 बर उदै गुन बर गौर । बै स्यांम राजत और ॥
 बनि केस देस सुवेस । कवि कहत उप्पम तेस ॥
 चढि मेर नागिन नंद । ससि गहत समुष फद ॥ छं० १४१ ॥
 उपम्म कवि कहि वाम । जुब्बन तरंग अगि काम ॥
 पाटीय चक्रचुंधि होइ । मिसि परह उठि घट दोइ ॥
 लिलाट आउ प्रकार । मनमध्य अंगन थार ॥
 तिन मद्धि मुत्ति तिलक्क । कवि कहत ओपम थक्क ॥ छं० १४२ ॥
 हरि कठिन गंगय मान । ससि भेद प्रस चलि जान ॥
 कविराज ओपम दीय । दछि पुचि ससि मिलि हीय ॥
 तिन मध्य भ्रग मद ब्यंद । कवि जंपि उप्पम छंद ॥
 ससि उड़त मद्धि कलंक । हर अत्त अंकह अंक ॥ छं० १४३ ॥
 लछिन्न हरि तन ताह । ससि थान बंठी राह ॥
 अति हलत चपलह भौह । कवि कहत उप्पम सौह ॥
 ससि धरत जूप सु अंन । तिहि चलित चक्रित नैन ॥
 मन धरत उप्पम आंन । अभि संधि अलि सुत जान ॥ छं० १४४ ॥
 बर बाल नैन झकोर । ग्रह जियन वानह जोर ॥
 जिम भए भोरह चोर । मै भरै धाम झकोर ॥
 इक कही ओपम चाइ । पंनन कि उडि फल षाइ ॥
 जनु वाग छुट्टिय अंन । तिम होत चक्रिन नैन ॥ छं० १४५ ॥
 सित असित नैन उचार । मनो गह तारक चार ॥
 तिन मद्धि सोभै रत्त । त्रिधि धरिय मगल गत्त ॥
 रसवास नामिक नीय । निल पुहप चक्क दीय ॥
 मनो लज्जि मंजरि मध्य । कल प्रगटि दीपक मध्य ॥ छं० १४६ ॥
 नव हलन मुत्तिय नाम । तमु किच ओपम भास ॥
 रस ग्रहन अमृत चाइ । तप करै ऊरध पाइ ॥
 मुष कीर सोभित जोम । जनु चुनत कनकत ओम ॥
 जगिनाय पुर मन रज्जि । कवि कही उप्पम सज्जि ॥ छं० १४७ ॥
 अघ अघर रत्त सुरंग । समि वीय रंग तरंग ॥
 उत्तग रंग मुभाल । जनु फुलि कमुद्दिनि ताल ॥
 कै पक्क विब संभाल । मुक इसिय प्रसिय न आल ॥
 तिन मध्य दंतन कंत । जनु बज्ज राजत पंत ॥ छं० १४८ ॥

फुनि कही ओपम साज । सुत स्वाति सीपय राज ॥
 सति इक्क ओपन अछ्छ । बत्तीस लछ्छन लछ्छ ॥
 इक अलक सुम्मत मुष्प । कवि कहत ओपम सुष्प ॥
 ससि मुक्कि मधुरय अंक । बर भजत विभय कलंक ॥ छं० १४९ ॥
 जनु जनम धारा रेष । कै मिल नगी चलि सेष ॥
 कल ग्रीव रेष त्रिवल्लि । कवि राज ओपम भल्लि ॥
 ससि मिलत पुब्बय बैर । गुरदेव सेव सुसैर ॥
 गर पोति जंति विचारि । ससि चरन फदय डारि ॥ छं० १५० ॥
 ससि समर दंद प्रमान । जिति राह बैठो थान ॥
 कै संघ श्रीबर जानि । कर अंगुलि इक थान ॥
 कालंक दिठवन जोर । कवि इक्क उप्पम दौरि ॥
 जनु कमल कोर प्रकार । सिमु भ्रंग बैठे वार ॥ छं० १५१ ॥
 रस सरस कुच कहि चंद । उर उकिर आनंद कंद ॥
 ससि बदन मदन सु जोर । चित रहै चाहि चकोर ॥
 कलि काकि कंत्र अनूप । उर उदिन रवनि' रूप ॥
 कथि कलभ कुंभ प्रमान । छवि स्यांम रंग सुदान ॥ छंद १५२ ॥
 गुन गौठिय मुत्तिय माल । कुच परस कंत विसाल ॥
 विय सिंभ मीस कि चंग । चट्टि चलिय गंग सुरंग ॥
 नव रोम राजिय राजि । कही कपी ओपम साजि ॥
 मनो नाभि कूप प्रमान । भरि भूरि^२ अमृत थान ॥ छं० १५३ ॥
 अमृत आवहि जाहि । पप्पील रंगहि चाहि ॥
 उर उदित सुभगय बाल । आनंग रम समि बाल ॥
 जनु कछिछ क्रीडें ताल । हिम फाव लगि रमाल ॥
 सुभ निरयि त्रिवली तेह । कविचंद ओपम एह ॥ छं० १५४ ॥
 बयसिमु मिलनह बाल । सि ढ मडि काम विसाल ॥
 रिपु उभै सुम्मिय आनि । छवि लघि लंक प्रमान ॥
 नित्तंब उत्तग रज्जि । मनमध्य चक्र बिसज्जि ॥
 पैरंग पिडिय डार । मित सीन उष्ण तुसार ॥ छं० १५५ ॥
 नव रंभ गति विपरीत । छवि षंभ देवल जीत ॥
 गज सुंड सुलप सरूप । मनो कुंद कुदन भूप ॥
 किष्ठी करभ कोर प्रकार । तिन मट्टि उतरत ठास ॥
 मनो मीन चित्रत देह । छवि छरत पिडुर एह ॥ छं० १५६ ॥

धन धूमि धुधर हेम । कवि कहौ ओपम एक ॥
 मनो कमल सौरभ काज । प्रति प्रीत भमर विराज ॥
 कह कहों अंग सुरंग । रति भूलि देखि अनंग ॥
 लवि लछछि पूर रह्यज्ज । चित वृत्त मानो रज्ज ॥ छं० १५७ ॥
 सो सलष राज कुंभार । नूप लही ब्रह्म सवार ॥
 इन लछछि इछनिय रूप । कुल बधू लछछिन भूप ॥
 रति रूप रमनिय रज्जि । छवि सरल दुति तन सज्जि ॥
 रसि रसित रंगह राज । तिह रमन हुआ प्रथिराज ॥ छं० १५८ ॥

कवित्त—नयन सुकज्जल रेष । तषिष तिषन छवि कारिय ॥
 श्रवनन सहज कटाछ । चित्त कर्षन नर नारिय ॥
 भुज मृनाल कर कमल । उरज अंबुज कलिय कल ॥
 अंध रंभ कटि सिध । गमन दुति हस करी छल ॥
 देव अरु जषिष नागिनि नरिय । गरहि गर्व दिष्यत नयन ॥
 इछिनी इषि लज्जा सहज।कितक सक्ति कन्विय वयन ॥छं०१५९॥
 दर्पन दल नष जोति । सुरग महदी रुचि रुरिय ॥
 एडी इंगुर रंग । उपम ओपियै सु संचिय ॥
 सो तिन सकल मुहाग । भाग जावक तल बंधिय ॥
 विकसित अंग अंग अंग । चारु मुसकनि बै सधिय ॥
 दिषंत नैन दंपति कजहि । हर्ष सोभ वषंत अकल ॥
 रति काम काम गहि गछनि । और उप्पम लुट्टिय सकल ॥छं० १६०॥
 जेहरि नूपुर नद । मद् घृधर कोतूहल ॥
 विछिय निमद् निमाल । सद् भिगुर कल कूहल ॥
 अगुठनि जटित अनोट । षोट कुदन नग मंडित ॥
 निरषत द्रप्पन नैन । बदन बीरी रद षंडित ॥
 हाव अरु भाव संप्रम विभ्रम । बड पुन्य करि प्रभु पिरय लहि ॥
 इछनिय इछ अछ्छर अवनि । सुनिय सोभ ससि कन्वि कहि ॥१६१॥
 जरकस धुधर घमंड । जानु रवि किन्न कदली ग्रह ॥
 कसुंभ लरे नीसार । रंग छवि छंछि हंड हर ॥
 पीत कंच की संचि । षंडि कस अंग उपट्टिय ॥
 कंकस कर वर वरत । गंध हरदीय उपट्टिय ॥
 आलोल नैन गति बचन बहु । सचिन सोभ मंडिय तनह ॥
 फुलिय सांस कवि चंद कहि।मनहु बीज धर की धनह ॥छं० १६२॥

शोभा कहते कहते रात बीत गई ।

बूहा—सुनत कथा अछि बत्तरी । गइ रत्तरी बिहाइ ॥

दुज्ज कही दुकि संभरिय । जिहि सुष श्रवन सुहाइ ॥ छं० १६३ ॥

आरिजु आरि जस लषहीं । सो इंछिनि इच्छा पूर ॥

भुव मंडल मंडित दिनह । सिर दधि अछ्छित जूर ॥ छं० १६४ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके इंछिनि

व्याह वर्जनं नाम चतुर्दश प्रस्ताव संपूरणम् ॥ १४ ॥



अथ मुगलजुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पन्द्रहवां समय ।)

इंछिनी को क्याह कर लाने पर मेवात के राजा मुगल का
पूर्व बैर निकालने का विचार ।

बूहा—प्रथीराज राजत सुबर । परनि लच्छि उनमानं ॥

दिसि मुगल संभर घनी । बैर षटक्यौ प्रान ॥ छं० १ ॥

बैर षटक्यौ पुब्बवर । मति मंत्री मेवात ॥

बर उद्वित संभर घनी । अरत बीर भय गात ॥ छं० २ ॥

मेवात राज का विचारना कि रास्ते में पृथ्वीराज
को मारना चाहिए ।

कवित्त—बैर षटक्यौ पुब्ब । करिय सोमेस सुराजं ॥

सो आने सोमेस । तात मुगल भजि काजं ॥

सारंग बैर सारंग । देखि कढ्यो तिन बैरं ॥

सो संभरि प्रथिराज । मत्त बढ्यो धर बैरं ॥

हम मत्त मत्त गुरजन कहै । सर्व बैर लज्जी अवन ॥

प्रथिराज राज काटन मत्तै । तिहित पंथ कीजै गवन ॥ छं० ३ ॥

यमुना को एक घाटी में मुगलराज का छिप रहना ।

चित्त मुगल चित्यो । राज प्रथिराज वैर बर ॥

मद्वि धान मेवात । रह्यो चपे सुद्विल्लि धर ॥

द्विल्ली वै बर घाम । सुयल अंगन मेवातं ॥

तन मत्त उप्पन्नो । बीर बीरा रस गातं ॥

मुगल नरिद मेवात पति । कूच राज चित्यो सुबर ॥

बट्टह मुएक जमुना विकट । मुघट घाट ओघट नयर ॥ छं० ४ ॥

पृथ्वीराज के डेरे में कैमास को छोड़ सब का सो जाना, कैमास
का उल्लू की बोली सुनना ।

छंद माधुर्य -

जग जोति विगिने निनि अभिगिनी रत रतति अंबरं ॥

सामंत मूर मुयान निदा भ्रमित क्रोध सुउत्तरं ॥

अति चनुर विनय ममुद मिनय कित बिहु चक्र विस्तरी ॥

कैमास जाय व मरुत निदा बीर सर सुअमरी ॥ छं० ५ ॥

आवृत्ति रत्त रुहंग नील रु धान पुब्बय उत्त यो ॥
संनाह स्वामि नरिद तामय कलह विसिय विस्तर्यो ॥
बोलि धूधूअ साद दीकिय महसती^१ सुर उपफस्या ॥
इह सुनि रु सूरं धरि करूरं बीर बीरह उच्चर्यो ॥ छं० ६ ॥
कैमास का बाई घोर देवी को देखना ।

कवित्त—बर निड्डुर राठौर । राज सूतो ढिग बीरं ॥
और सब्ब सामंत । पास कैमास अधीरं ॥
नद वेहड बंकट सु । भ्रमत आषेटक आइय ॥
क्रोध सजल उच्चरिय । सह मोदें तन हाइय ॥
मत्ते सुभ्रमर पत्ते सुग्रह । घग बंधे निद्रा ग्रहिय ॥
जगै न कोइ जाप्रत सुस्मित । वाम दिमा देवी लसिय ॥ छं० ७ ॥

देवी की बोली सुनकर कैमास का गुरूराम पुरोहित से सगुन
पूछना, पुरोहित का कहना कि इसका सगुन चंद्र से पूछिए ।

बोलत देवी सुनिय । जगि निड्डुर नृप पासं ॥
राज गुरू जगाय । बोलि नत्री कैमासं ॥
राज गुरं दुज राम । बलिय बंधन अधिकारिय ॥
सार सिध रन द्रोन । तेन भारथ भर भारिय ॥
कवि चंद्र बोलि चाचिग महर । सगुन संधि सद्धिय लगन ॥
आवै न मंत्र मंत्रीय घन । सुबर चित्त अधियय अगन ॥ छं० ८ ॥

साटक—जे मत्ताते कारन बरं पुड्डवं ग्रयं प्रातयं ।

जस्या सस्त समस्त अस्त कुंभकं सुयसं समुद्रं बरं ॥
निघोषं यमयाय धारन धरे विद्याधरा उद्धरं ।
सोयं सो प्रथिराज बैरत बरं मोमेस तिय अगियं ॥ छं० ११ ॥
चंद्र का पृथ्वीराज के वंश की पूर्व कथा वर्णन कर मेवातियों
के साथ बैर का कारण कहना ।

छंद पढ़री—न बस भइग आना नरिद । दस पुत्र भय गति न वैर कंद ॥

चहुआन नाम चहुआन वैर । बोसल कुलान लप्पने नैर ॥

आवुत्त बीर बुंढा सुरधिषि । तिहि बंस भइग चहुआन सधिषि ॥

जैसिध देव तिहि बंस बीर । धारं करिय अइर जज्जर सरीर ॥ छं० १० ॥

दौर्यो जु बीर संभरि सुहंत । पट्टन प्रवास अरि हर्यो कंत ॥

छंडाय सब्ब मेवात भुम्म । आवुत्त जुड मंडयो रुम्म ॥

तिहि बंस भयी सोमेश सार । जंभए बीर परवत विहार ॥
 उत्तरयी आइ जंगल सुदेस । गहिया नरिद बजे प्रवेश ॥ छं० ११ ॥
 विष्वान मग जिम हुत उचीर । साधयी जुद्ध किय सुद्धि हीर ॥
 तिन पाट प्रथि प्रथिराज तप्पि । आबू नरिद पावार थप्पि ॥
 जस आति भूमि अरु भर सदंद । मुग्गल मयंक तारका चंद ॥
 डंडोर बैर षल करिय पंग । पारस परिय साहर अनंग ॥ छं० १२ ॥
 तिहि वेर जगि मुग्गल नरिद । जंपयी बीर कबिचंद छंद ॥
 इह कहिर राज निद्रा प्रसीय । चिता न राज चिता बसीय ॥
 चहुआन बीर बर सोमनंद । तिन तेज ब्रह्म मानों रविद ।
 निसि सेन अैन अवनी अनंग । फुनि क्रील केलिनि सिप्य रंग ॥ छं० १३ ॥
 भौ प्रात भान झलमल्यो अंग । फुल्लेति कमल उडि चले अंग ॥
 छल छैल चोर मन भए पंग । हंभार सब्द गो करि उतंग ॥
 द्रुम द्रुमति रोर पंषिय करंत । करें क्रम सुम्भ रव सुद्ध संत ॥
 चकीय चक्क करि मिलिय रंग । भगि रोर चोर त्रय तन अनंग ॥ छं० १४ ॥
 ऊषरे पूज देवह कपाट । जग्गेति विप्र वर क्रम घाट ॥
 उच्चरहि वेद वा नीति अंग । अंमल प्रवाह जनु जलह गंग ॥
 बहु भंति क्रम आचरत लोह । बंदैति पुज्ज गुरू देव दोह ॥
 आध्रन पुहप अलान दान । मंडे सुजन नर धान धान ॥ छं० १५ ॥

सवेरे उठकर पृथ्वीराज का अपने सामंतों के साथ
 शिकार को निकलना ।

तब जगि नंद सोमह कुमार । अनभंग अंग अरि कुल पयार ॥
 कैमास बोलि सामंत सूर । बडि चल्थी राज आघेट दूर ॥
 मुग्गलराज का आकर रास्ता रोकना ।

इत्तने होत बज्जी अवाज । मुग्गल सु आइ करि सकल साज ॥
 एकैति पंच गिरि कंठ ठैर । मगयी आनि तिन पुब्ब बैर ॥ छं० १६ ॥
 संभरिय वैन सामंत नाथ । ज्यों मुन्यी बैर लगि सीस माथ ॥ छं० १७ ॥
 तुरंत पृथ्वीराज का शत्रुओं के बीच में घुसना, माफी बड़वानस
 समुद्र पीने के लिये बसा हो ।

कविस — बडि आवाज गिरि गाज । राज भय अंग न आनिय ॥
 ज्यों कमल पानि जोगीनि । कुंभ थीकट जिब पानिय ॥
 मूढ मत्त गुंग सवाद । मान कल तंत सूर भय ॥
 यों सोमेश कुमार । दिधि चित्र बट अंग त्रय ॥
 करि सिलह अंग हू तेज करि । कठिद वाग कड्डी असिय ॥
 जाने कि नियन सागर जलह । बड़वानस मध्ये क्षतिय ॥ छं० १८ ॥

पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन ।

भो बडवानल राज । समुद्र सोषन मेवाती ॥

भो बडवानल राज । जानि रषि अंजुल घाती ॥

भो बडवानल राज । मोह वित रागत सौ सौ ॥

भो बडवानल राज । ज्यों दोस आदोस स दो सौ ।

प्रथिराजन जानिय मान तप । महन रंभ बंछे बलह ॥

ज्यों बंछे अवधि सुंदरि पिया । त्यों कलहवंत बंछे कलह ॥ छं० १९ ॥

दूहा—कलह कूर बद्धिदय निजरि । भयो समुद्र अरि सैन ॥

बा वारो मंगै नृपति । हृष्य जोरि मति दैन ॥ छं० २० ॥

कवित्त—कितक बत्त मेवात । राज मेवात पत्त कह ॥

ता उप्पर चहुआन । तेग बंधै सु राज इह ॥

मुक्कि बलिय कूरंभ । कहि मारत न हृष्य कहि ॥

नृप होइ जुद्ध सुरतान सों । कैपंग राग संभ्रौ लरै ॥

गामी गवार मेवात पति । राज राज सम्हौ भिरै ॥ छं० २१ ॥

दूहा—नृप छुट्टत बर हुकम मुष । दिठुही घावंत ॥

बर मुगल सामंत रन । दल दारुन गाहंत ॥ छं० २२ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला —

बोल बुल्ले घनं । स्वामि सद्धे रनं । लगियं सगरं । धार धारं धरं ॥

रोस लगै जदं । सिष मद्दे मदं । बीर बीरं वरं । ओष नषे धरं ॥ छं० २३ ॥

सार सज्जे इसे । बज्ज बज्जे जिसे । सार अगें शिलें । रुक रुंड विलें ॥

रंग रत्ते रनं । कंठ प्रल्लै मनं । लाग बज्जी जरं । मेष गज्जे धुरं ॥ छं० २४ ॥

टूक तुट्टै षगं । बिज्जु बालं लगं । तीर छुट्टै इसे । रत्ति तारा जिसे ॥

सार उड्डै रनं । भद् ज्यों जिगनं । पार मत्ती भरं । कम्बि जीहं सरं ॥ छं० २५ ॥

पिष पंथं वरं । लोह लग्ये लरं । कन्ह एकं अपं । अग्नि पीए घपं ॥

काल जिते तनं । मेटि आवा गमं । काल जिते तिते । प्रम्भ यों ही मिते ॥ छं० २६ ॥

सूर सूरं धरं । ठाम लड्डी नरं । मित्त इत्ती रनं । रित्र छुट्टै तनं ॥

हृष्य कित्ती कियं । बंध छुट्टै जियं । क्रंमनासा नदी । श्रंम कीने सदी ॥ छं० २७ ॥

धार धारं धरं । बीर भग्जै भरं । कालकूटं कर । जम्म जुद्धं वरं ॥

बीर मत्ते परं । रुक छक्के धरं । लोह लग्ये नरं । तार बज्जे हरं ॥

कंठ जित्ती जिनं । क्रंम भग्जे तिनं । लाज सिधू गिरे । बीर बीरं तिरे ॥ छं० २९ ॥

पोति सड्डी मनं । सिद्ध पुज्जै बनं । मुख्य मुक्कै ननं । धार मुक्कै घनं ॥ छं० ३० ॥

कवित्त—सोलंकी सारंग । जंग अंमिन मुष लगिय ॥

हय मय भर उक्कवार । आनि मुगल मुष पगिय ॥

भर हनि षुहिय मुष्य । तेग लंबी उष्मारिय ॥
धम धरियारै धत्ति । लत लोहा करि झारिय ॥
सम रंग सार टिङ्गिय पहर । गहन इक्क मञ्चौ सयन ॥
मुगल नरिद चहुआन भर । अंग अंग सध्यौ तयन ॥ छं० ३१ ॥

बूहा—कायर मुष अैसे भए । ज्यौं चित्त पुत्तल पांन ॥
सूरन मुष अैसे भए । ज्यौं नष सुंदरि जान ॥ छं० ३२ ॥
असित असित दोइ बीर है । ता पट कैंबर अंत ॥
ज्यौं जाती तन संग्रह्यौ । बर भारथ्ये कंत ॥ छं० ३३ ॥
मुगलराज को चारो घोर से घेर कर बांध लेना ।

छंद पद्धरी—उतरिय घाट पलेट सुबीर । पत्तेति सूर सामंत तीर ॥
घर्यौ सुराइ मुगलय राज । गिरवर कि सिध ग्रज्ज्यौ अगाज ॥
जानै कि विट तारक मयंक । संकन निसक गहि षग बंक ॥
रुककंत सूर सामंत सत्त । बल घर्यौ राज मेवात पत्ता ॥ छं० ३४ ॥
उप्परिन हृथ्य हृथियार छत्त । बिन नेह पिया मनुहार पत्त ॥
अंगन अनंग तन में छिगाइ । रहै मून मनह तन ज्यौं लुपाइ ॥
बंध्यौ सुराज मुगल नरिद । छंडाय सस्त्र भारथ्य इंद ॥ छं० ३५ ॥
मुगल को कैब करके इंछिनी को साथ लिये पृथ्वीराज
आनंद से घर आए । -

कवित्त—बंधि राज मुगल नरिद । जित्त अप्पधान संपत्तिय ॥
देस देस अनगेस । कित्ति मुष्य मुष्यन कहिय ॥
रिन अड्ढौ अरि अंग । षग कोइ षंतिय पावै ॥
जस बंध्यौ सिर मौर । व्याह दल दुज्जन आवै ॥
आषेट करिव अरि निग्रह्यौ । इंछिनि रत्तौ हंस सर ॥
कलि केलि रमै कामिनि कमल । मनौं मनमत्तौ भ्रिंग भर ॥ छं० ३६ ॥
इति श्रीकविचंद्र विरचिते प्रथीराज रासके मुगलकथा वर्णनं
नाम पंचदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १५ ॥



अथ पुंडीर दाहिमी विवाह नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(सोलहवां समय ।)

राजा सलष की बेटो के व्याह के वर्ष दिन बड़े सुल के साथ बीते ।
 दूहा - बरस व्याह बीने सकल । सुंदरि सलष कुंशारि ॥
 विधि बिधि भोग संजोग रजि । नवल मुगध सुपियार ॥ छं० १ ॥
 गाथा- रन जय पत नरिंद । पुत्तय मुनं च निरमला कितो ॥
 नव नव मुगध मुरन । चोजुत्त रज्ज सुष्याह ॥ छं० २ ॥
 चंद पुंडीर की कन्या का रूप गुण सुनकर पृथ्वीराज का
 उस पर प्रेम होना ।

दूहा - चंद पुंडीर नरेरा घर । सुंदरि अनि सुकुमार ॥
 प्रेम प्रगट राजन भयो । गुन पुच्छत विस्तार ॥ छं० ३ ॥

चंद पुंडीर की कन्या का रूप वर्णन ।

छंद हनूफाल - गुन बाल बेस कमान । सैसब्ब सुषंचत बांन ॥
 छुटि नष्य क्रमन' आंन । सैसब्ब वै संघि जांनि ॥
 लज रत्त जाहि नरंत । सैसब सुतुच्छ बलमंत ॥
 नप त्रिमल उप्पम नास । अरघंत तो मति भास ॥ छं० ४ ॥
 नव नास उप्पम षुट्टि । मनु काम मंजरि फुट्टि ॥
 सोरंग ओपम पाइ । धम बांन बाल बराइ ॥
 बर जंघ ओपम अम्भ । मनु बाल कदली ग्रम्भ ॥
 सोइ बदलि कदली चंद । छंवि करत रत्त सुदंद ॥ छं० ५ ॥
 जलरूप बिट बिराज । उर मदन सदन सुपाज ॥
 सैसब सुवै कहि छंदि । जोबन्न गुन कनि मंडि ॥ छं० ६ ॥

पुंडीर का कन्या देना स्वीकार करना ।

दूहा - सुनि श्रोतान नरिंद हुअ । कहिय बत्त पुंडीर ॥
 रूप अनूपम राज बरि । दिय राजन हित हीर ॥ छं० ७ ॥

१. क०-क्रमन ।

सुभ लगन बिचार कर चंद पुंडीर का कन्या बिबाह देना ।

लगन सुदिन हयलेव करि । चंद सत्त गजराज ॥

एक अग्न रुत्तरि सुहय । नग मोती बहु साज ॥ छं० ८ ॥

परनि राज पुंडीरनी । सुत चंदानि कुंआरि ॥

दइ बिधिना करि निमई । ब्रह्मा विरचि सँवारि ॥ छं० ९ ॥

पुंडीर दाहिमी की कन्या के साथ पृथ्वीराज के
प्रानम्ब बिलास का बर्णन ।

नव जोवन जोरी नवल । छंदानित्त नवल्ल ॥

बात बिनोद बसंतरै । सुनी दाहिमी गल्ल ॥ छं० १० ॥

कवित्त—नवल पुहप फल नवल । नवल नारी नव जोवन ॥

द्रव्य देषि होइ निजरि । कवन औसा सिध साधन ॥

चित्त चलै साधकक । विषम जोवन बै मांही ॥

कामी कलह विच्छन्न । बहुत पचि हारो कांही ॥

पुंडीर कुंआरि सों रस रमत । दाहिम्मी चित्तह लगी ॥

सुभ लगन जोग दाहिम्म बर । दाहिम्मी राजन मगी ॥ छं० ११ ॥

बिबाह का बर्णन ।

द्रुवन ढार उद्दार । भार फल पति भर भग्ने ॥

गढ बयांन सुभ थान । सोभ कैलासह लग्ने ॥

दोइ महम दाहर दिवांन । पुत्र तीनह परिमानं ॥

दोइ पुत्री सुविसाल रूप रति अंग सुजानं ॥

दाहिम सुराज कायम्म कलि । षल केवा सेवा करन ॥

प्रचंड वाह महि उप्पियहि । लष्य एक लष्वन भिरन ॥ छं० १२ ॥

काल प्रात कैमास । षलक चामड पग षद्विय ॥

सूर नूर सम सथ्य । सकक पूजा सुर सिद्धिय ॥

मेवाती मुगल सुतथ्य । पुत्रि इक्कह परनाइय ॥

बिय पुत्री मिर ताज । सुती प्रथिराज व्याहिय ॥

दोजांन मान चहुआंन दल । प्रथम कलस संभर घनिय ॥

उच्छाह बहुत मंगल करहि।गीत गांन अलि सुर बनिय ॥ छं० १३ ॥

बिबाह का फेरा फिरना ।

करि तोरंन प्रकार । सार भारह फन संकिय ॥

चौबेदी चौसाल । पिठु पच्छिम दिसि पंकिय ॥

कमला सन मुक्त कमल । बेद धुनि दुज क्रिय सञ्जिय ॥

चैत सुकल पथ तीव्र । लगन गोधूलक रञ्जिय ॥

लता सुजोग जमघंट तजि । लगन सुद्ध मम सुद्ध यति ॥
मंगलाचार फेरा सुफिरि । अचल राज अजमेर पति ॥ छं० १४ ॥

बहेज में घाठ सखी, तिरसठ दासी, बहुत से
घोड़े हाथी बेना ।

सषी अट्ट सिर ताज । अंग शृंगारि सुरैंग बर ॥
सट्टि तीन दासी सुचंग । बरष सत अट्ट सरम्भर ॥
एक सत सुभ सुरैंग । ढोइ पर्वे वैराकिय ॥
दोहृषी दस ढाल । रहे छहरिति मद छाकिय ॥
सुष पाल रत्रत सोभा सुशनि । सत पुत्तलि सेवा करै ॥
डाइ चौदिद्ध दाहिम दहन । भुज भुजंग कीरति करै ॥ छं० १५ ॥
सात गज्ज सु विसाल । सित्त साहन सुअ चंगल ॥
जर जरकस सिर पाव । सट्टि माला नग निमल ॥
सहस्र एक सो ब्रन । हुन्न दीनी चौहानं ॥
जिन मंग्यौ तिन दियौ । करी कीरति सुप्रमानं ॥
उच्छाह कियौ दाहिम प्रथ । गढ उप्पर थंभह कर्यौ ॥
प्रति पुच्छि चंद दाहिम बराषरचि वित्त जल घर भर्यौ ॥ छं० १६ ॥

दूहा - अति आनुर राजन मिलन । दाहिमी मुख दिट्टु ॥

ज्यौं बहल में कुमुदिनी । चंद चमकयो निट्टु ॥ छं० १७ ॥

पुंजीराज और पुंजीरनी की जोड़ी की शोभा का वर्णन ।

कवित्त - बर समुद्र बहुआन । रतन मों रतन उपज्जै ॥

दाहिम्मी उर प्रम्भ । कित्ति आभूषन रज्जै ॥

इह सुबंध बंधनह । जुगति बंधन बर राजिय ॥

इह अमोल मोलन । बहमोल ग्रह फिरि माजिय ॥

इह परषयो कविन किस्ती चसम । वह चसम परष्वन परषयो ॥

इह सोभ राज राजन महि । वह घर कंचन धरकयो ॥ छं० १८ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके पुंजीरनी दाहिमी
विवाह वर्णनं नाम षष्ठदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १६ ॥



अथ भूमि सुपन प्रस्ताव लिष्यते ।

(सत्रहवां समय ।)

पृथ्वीराज का कुंअरपन में शिकार खेलना ।

कवित्त— कुंअरपन प्रथिराज । राज आषेटक विल्लहि ॥
जोग्वने मझ रवन । मूल पच्छिम दिसि मिल्लहि ॥
भालि बीर वाराह । हक्क बज्जी चालदिसि ॥
मुक्कि थान पंचान । मिले सूर संमूह घसि ॥
लोहानं बीर आजान भुअ । लोहा लंगर घाइया ॥
इह थान चुक्कि अपथान मुकि । पंचां नन रव छाइया ॥ छं० १ ॥
हाथी घोड़े घादि का इतना कोलाहल होना कि शब्द सुनाई नहीं पड़ता ।

बुहा— पंष मबद गुंजत सुगज । है हीसत सद स्वानं ॥

गिर गुंजत परसद् बहु । सद् न सुनियै कान ॥ छं० २ ॥

सिंह का क्रोधित होना ।

कवित्त— सद्पति संभरिय । कान मंडे रव सभलि ॥
ज्यों षल बयन असंत । विप्र षोजै निगम मिलि ॥
गुन अंगुन कुल बधू । सती पति वृता मानि मन ॥
नाग अंग चंपयी । किमार अग्न फुल्यो मन ॥
विश्वयी एम पंचाननह । बाय बास सुमंन फुलिय ॥
द्विग षोलि द्विष्ट अगया सकल । तेज अंग कायर हलिय ॥ छं० ३ ॥

बुहा— कानन सद्न संभरत । कूह कलह आषेट ।

बह सूतो बर जग्गयी । सिमु दंपति घटि पेट ॥ छं० ४ ॥

कवित्त— दिष्ट राज अंभरिय संभरिय संपत्ते ।

के हंके हक्काह । केक चावदिसि घत्ते ॥

के पाइल बर बान । मूल घारी उठि नठु ॥

के असवार करार । हीन काइर हूँ तठु ॥

के गए मुक्कि पाइल अगय । धीर छंठि तक्कर परत ॥

दिष्ययी लंग लंगावली । बियी न कोइ धीरज घरत ॥ छं० ५ ॥

सिंह का महा क्रुद्ध होना ।

सुनिब सूर बर हक्क । घक्क बज्जी चावदिसि ॥

नरन सद् कानन प्रसद् । सिध किन्नो सु क्रोध घसि ॥

बीरा रमु बिहुरिय । पुंछि सिर झारि झपट्टिय ॥
 दीप नयन प्रज्जरिय । लंग दिसि लगे लपट्टिय ॥
 बल अतुल तोल तोलंत पय । बुल्यो मन सहह गुहिर ॥
 फटिय घरकि मानहु गगन । भिस सनेह संगन बहन ॥ छं० ६ ॥
 बूहा—आषेटक दरसे सकल । सिमु मिघनी त्रिच मिघ ॥
 स्वान देखि मुहु रव करत । ओलंघे नरसिघ ॥ छं० ७ ॥

सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज का तलवार से
 सिंह को मारना ।

कवित्त—सबै सेन अवसान । मुक्किर लग्यो बर तामस ॥
 तब पंचानन हक्कि । घक्कि चहुआनां पामिस ॥
 लै कमान बिय बांन । घंचि नंध्यो विय चुक्यो ॥
 समर सिघ सब सथ्य । तथ्य चावहिसि हक्यो ॥
 इंजरिय डहकि विज्जुल लहकि । षग कढ्यो सोमेसजा ॥
 चंप्यो नरिंद अवसान तकि । बंडो डारिय हृष्यता ॥ छं० ८ ॥
 चंपि स्वामि बिहुरिय । लोह संजुरि नग मुक्यो ॥
 लोहा लंगर राइ । बीर अवसान न चुक्यो ॥
 स्वामि सथ्य परिवथ्य । रुंड घर वर उष्वारे ॥
 रुहिर अंग झंझरिय । सिघ शरिय अष्वारे ॥
 बन राय बीर बन हित रूप । सूर स्वामि धंमं मुरसि ॥
 चर नग बीर तल बज्जय । सबर जोर जम ददुठकसि ॥ छं० ९ ॥

बूहा—लगे लोह उचाइ करि । अरु चावहिसि चाहि ॥
 हृष्य आइ कर तोन द्रढ । बर कमान कर साहि ॥ छं० १० ॥

कवित्त—द्रढ कमान मुठिय प्रमान । गह्यो तकि तोन जोर कर ॥
 बरकि बरकि बंगाल । चित्तत चंचल मु बोलि गुर ॥
 गुंजि गरज भूभांन । जग देवत्त रत्त जुअ ।
 नचि निवेस तत्रि बाल । सिघ सम बीर इक्क हुआ ॥
 आषेट तजिय चल्लिय सुभर । बिबिघ मिघ दिष्यन दिसा ॥
 सम बीर बीर एकत भए । तहा दिष्यो सोमेस जा ॥ छं० १० ॥
 षेघ लगि छुटि बीर । सुबर दिषि बार अष्ट क्रम ॥
 सोमेसर सुअ सूर । ल्यो पर तौजिम रबितम ॥
 मुष्टि दिष्टि मरदां मरद । मिले पंचानन सूरं ॥
 पिता जात बेबंध । द्रव्य अघो अघ पूरं ॥
 जय भाग लक्षिय सिघह मुह्य । तुला मूल लंगी चढ्यो ॥

उप्यमा चंद सुनि सुपन ७थी । सुबर बीर देही दहघी ॥
 उप्यमा चंद सुनि सुपन ७थी । सुबर बीर देही दहघी ॥ छं० १२ ॥
 पूंवीराज के शिकार की भूम घाम का बर्जन, पूंवीराज का
 एक पेड़ की छाया में अपने सरवाणों के साथ बैठना ।

छंद पदरी—आषेट रमत प्रथिराज रंग । गिरवर उत्तंग उछान दंग ॥
 उत्तंग तरुन छाया अकास । अनेक पंषि क्रीडाहि हुलास ॥
 सुब्बा सरास छुट्टे सुगंध । तहां अमत भोर बहु बास अंध ॥
 फल फूल भार नमि लगी साषानासा सुगंध रस जिह्व चाष ॥ छं० १३ ॥
 पन्नग प्रचंड फूँकर फिरंत । देषंत नरह ते करत अंत ॥
 अनेक जीव तहां करत केलि । बट बटपि छांह अवलंबि बेलि ॥
 इक घाट विकट जंगल दुअर । तहां बीर मूल पिष्यल कुंआर ॥
 वामंग अंग चामंड राय । चूकै न मूँठि सी काल घाइ ॥ छं० १४ ॥
 दाहिनि दिसा कन्हा मुजोध । सम ब्रह्म सस्त्र सम ताहि क्रोध ॥
 लोहांन पिठु बैठी प्रचंड । जनार जोर जम देन दड ॥
 ढिग कन्ह बैठि पुंडीर घीर । आजान बाह बखी सरीर ॥
 चामंड अंग कैमास काल । जीवार जोय पसु घरनि घाल ॥
 तिन अगग आइ पज्जून राइ । सब षेल निपुन पसुदाइ घाइ ॥ छं० १५ ॥
 दुअ ओर और सामंत जूह । षेदानि जोर करि करी कूह ॥
 कर जोरि मेन सात सहस सथ्य । उहुंत पषि गहि लेंइ हथ्य ॥
 जुर वाज कुही तुर मती घारि । उहुंत जीव ते लेंहि पार ॥
 सब लेंहि स्वान ते रौस भूमिमा पिषियै जु करक विन मंस भूमिमा ॥
 । छं० १६ ॥

सकल अनेक उठु वराह । बट बटि मंसनह तुट्टि घाइ ॥
 सा मरन सूर परि बथ्य लेहि । ते बटि बटि सब सथ्य देहि ॥
 षरगोस स्वान नह लहत बाटि । फिरि चढ़े जीव ते भोठ चाटि ॥
 अगमाल पवन उठि चले भागि । तिन परसु तीर सरवसि भागि ॥
 ॥ छं० १७ ॥

अनजीव जीव वष्यांन कोन । सिकार लगि इन हाल होन ॥
 सब सथ्य तथ्य हुअ एक जुट्टि । गज्ज्यो मु सिध जनु गगन फुट्टि ॥
 घपि चन्थी बीर प्रथिराज घीर । लंगरिय लोह तह इक्क तीर ॥
 दिष्यो सुजाइ सिधनिय बालाअवतार धरिय जनु पुहमिकाल ॥ छं० १८ ॥
 गर राइ गुंग गज्ज्यो गरूर । उच्छाइ पुछ मनु पुहमि चूर ।
 हुअवान हथ्य हाकंत ब्याल । दहरनि बीरि मनोद बटि ब्याल ॥

आकास सीस दूढ़ प्रचंड । जम रूप जीव ताडंत तुंड ॥
 हन्यो सुराइ संजम कुंआर । छुट्यो सु तेज जनु तीर तार ॥ छं० ११ ॥
 भए लथ बथ नर जीव जोघ । नप अगग केलि जनु मल्ल क्रोध ॥
 गल वाह घल्लि दब्यो सुसूर । फार्यो सु उदर जम ददूढ पुर ॥
 हथवाह एक केहरिय कीन । पय हृथि अंषि करि कंन हीन ॥
 आये सु दौरि सब सथ्य जाम । लंगा सघनि इम कहिय स्वांम ॥
 ॥ छं० २० ॥

संजम राय के बेटे का बीरता बिलखाना ।

डूहा - संजम राइ कुमार बल । करि संजम नृप धंम ॥
 इकक मिवक एकत भए । अण्य चर्म पसु चर्म ॥ छं० २१ ॥
 गजनि कुंभ जिसि हृथ्य हनि । फारि चीर घर डार ॥
 संजम राइ कुमार सौ । बथ्यन मारि पछारि ॥ छं० २२ ॥
 रीछ गेस बाराह हनि । दठुन बदूढे कोरि ॥
 तिते जीव उर मझते । कठि जम ददूढे फोरि ॥ छं० २३ ॥
 गिरि परबत नद षोह सर । लघत लगी न वार ।
 लंगा इककन लघयो । अनी धार घर धार ॥ छं० २४ ॥

पृथ्वीराज का प्रसन्न होना और उसकी पीठ ठोकना ।

कवित्त - भौ प्रसन्न प्रथिराज । बोल बुल्यो मुलगरिय ॥
 इत्तो देऊं प्रचंड । पच जो मदि मोडि जिय ॥
 अढा गज मु अढ । पाट अढा तबूल ॥
 अढा बेस सुदेस । करो आदर संमूल ॥
 बोलंत बैन प्रथिराज मुनि । जीव लज्जि नीची नजरि ॥
 लगाइ कंठ ठुकि पिठु कर । भलो भलो सब सथ्य करि ॥ छं० २५ ॥

डूहा - जब देवत दिवाइहै । तब सच्चा मुझ बैन ॥
 भ्रिग तिसना ज्यो देविय । प्यास न बुझी नैन ॥ छं० २६ ॥
 सुपनतर की प्यास ज्यो । भजै मही किहि भति ॥
 जब दैहीं तब पूजिहै । जो मन मझह पति ॥ छं० २७ ॥

सब लोगों का आगे बढ़ना, एक शकुन मिलना ।

इह कहि करि अगों चले । मिले सूर सब संग ॥
 तब दिष्यो इक सगुन बन । भए सबन मन पंग ॥ छं० २८ ॥
 शकुन को बेस कर सब को आइचर्य होना ।
 बत कहत प्रथिराज ने । पिष्यो सगुन नृपति ॥
 सक न साथ अचरिब भयो । देवत इहै चरित ॥ छं० २९ ॥

एक सर्प को नाचते हुए देखना ।

कवित्त—अहि सुरंग मनि दुत्ति । देवि मंडै तंडव गति ॥
 बालमीक विल अग्र । इक्क फनि कुटिल क्रोध मति ॥
 इक्क ह्थ्य बिब विहथ । थांन उंचौ रवि संह्यौ ॥
 बर संमल उर चंपि । तेज जाज्जुल्लि सुचिन्हौ ॥
 आचिज्ज देषि प्रथिराज तत्र । हक्कार्यौ पामर सहर ॥
 धावर सु कन्ह चहुआंन कौ । बोलि वीर चच्चिग महर ॥छं०३०॥
 महर कहर करिवार । भार जिन जुद्ध कन्ह बर ॥
 नरनाहां बर गढ । गाह गिर दीह दुअन घर ॥
 मति जोतिग सहदेव । सगुन आगम गम जानै ॥
 प्रबल मैबासन मारि । उघपि थप्प थिर थानै ।
 बिर दैत बमित आजांन भुअ । उर किवार वर बज्ज जुअ ॥
 छट्ट न किमह जै क्रोध तजि।दुअ महिष निवारै भुजनि दुअ॥छं०३१॥

पृथ्वीराज का इस सर्प की देवी के शकुन का फल पूछना ।

छंद पढरी—आयो सुमहर महरन नरेस । जिहि सुनत चढि भगि जात देस॥
 उन्नद अंग उत्तंग कंध । बर बाहु वज्ज अरि घर असंध ॥
 बेहथ कलाइय ह्थ्य जाहि । पग दोरि त्रियन बर रह्यौ गाहि ॥
 महिषी सु उभय पय टांसि जाइ । कलहंन क्रोध दिख्य बलाइ ॥छं० ३२॥
 रष्यत सु निजरि सब अग पच्छ । चुक्कवै चोट हनि तुच्छ तच्छ ॥
 छल छेद भेद तस करन राव । पर भूमि थ्रप्प इस धरै दाव ॥
 दुअ सहस महर जिन संग जोध । कमनैत काल अनमी अबोध ॥
 बहु वषभ गाय महिषीन तुंग । छेली छयल्ल गडरन्न पंग ॥ छं० ३३ ॥
 धुंमत मथांन जिन घरन घोर । आगम अघाढ जनु घटा सोर ॥
 बेपार दुग्ध जिन घरन षर्चं । अनभंग बुद्धि जिन समर चर्चं ॥
 बिरदैत एक वाने न धार । चमरैत एक इक तवल तार ॥
 सिर वही बिदर पग पच्छ देन । त्रिग समर देषि मिर लवत गेन ॥छं०३४॥
 गुज्जर अहीर असि जाति दोइ । तिन लीह लोपि सक्कै न कोइ ॥
 चाचिग हजूर कुंम्मार आइ । करियै हुकंम मिर ल्यौ चढाइ ॥
 बुल्ले सुवैन चहुआंन राउ । कहि सगुन सर्प देवी प्रमाउ ॥ छं० ३५ ॥

ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से आपको बहुत धन मिलेगा ।

पूहा—महर कहर गति वैन कहि । ज्यौं बुल्लै तुजवैन ॥
 धरी एक सन्ही रहै । तौ लभै नूप वैन ॥ छं० ३६ ॥

कुंडलिया —मंने संभरि बार सुनि । इह अपुत्र गति इच्छ ॥
 मझ छदन घरि इक मै । आवै भूमि ह लच्छि ॥
 आवै भूमि ह लच्छि । पषि माता इह सारी ॥
 दल जित्ते पुरमान । किति जग ज्यों विसतारी ॥
 इन सगुननि बहुआन । तुच्छ दुष अतिहि अभन्नी ॥
 बिन जुद्ध इह लगन । द्रव्य निकसै आभन्नी ॥ छं० ३७ ॥

दूहा —कुटिल दिष्ट तिन चिन्त करि । कही महर इक बात ॥
 सो ब्रह्मा नन जानई । बात भविष्यन घात ॥ छं० ३८ ॥
 पृथ्वीराज का देखना कि सर्प प्राधा बिल में है और प्राधा बाहर,
 उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारो ओर नाचती है
 और राजा पर प्रसन्नता दिखनाती है ।

कवित —संभलि पिथ्य कुमार । व्योम दिष्यो स्रप सारिय ॥
 अढी बंबी मध्य । अढ उँची अधिकारिय ॥
 ता फनि ऊपर मनि प्रमान । देवि चावदिसि नचै ॥
 दिष्यो इछ मन मंडि । राज दिसि सगुनह संचै ॥
 आवै न पच्छ तथ्यह निजरि । नृपति हियं अत्यंत सुष ॥
 जंपयी महर धावर धनू । सगुन बीर जान सरुष ॥ छं० ३९ ॥
 देवी का इतने में उड़कर ग्राम की डार पर बंठना और साग
 गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना ।

दूहा —इतें देवि उडि बैठि अंब । चंच गिराइय साग ॥
 दौरि महिर तव हृष्य किय । लै नरिद तुअ भाग ॥ छं० ४० ॥
 सर्प सर्पिनी का मिलना और वहां से दूसरी जगह उड़ जाना ।
 सर्प आनि सर्पिनि मिलिय । भषु दीनी तिन षाइ ॥
 निय आसन थल छंडि कै । अन्न स्थल उडि जाई ॥ छं० ४१ ॥
 इह अचिउज पिष्विय सकल । चाचिग पुछि फिरि बत ॥
 तुम जानो सब फल सगुन । महर कहर मत तत ॥ छं० ४२ ॥
 इस शुभ शकुन का फल वर्णन ।

छंद पदवी —तत बत महर तिन कही बत । या सगुन लाभ वरन्यो न जत ॥
 दिन तुच्छ मद्धि धन लाभ होइ । ता पच्छ कंक दुअ राह जोइ ॥ छं० ४३ ॥
 तुम जेत होइ भग्गो बलान । धन जुद्ध लाभ लभे बलान ॥
 इह लगन महरन इनो देव । पक भूमि अ पेय तो करै सेव ॥ छं० ४४ ॥
 संसार किति बहु चक होइ । बंदै सुवाह बल दीन दोइ ॥
 सागुन्य सगुन फक कहे जइव । प्रमुदित मन बहुआन तब ॥ छं० ४५ ॥

जिम मेह मोर आनंद होइ । राका रयनि आनंद तोइ ॥
रिति राइ पाइ तरु फलत फूल । जिम सिद्ध सेव हिय हरत सूल ॥ छं० ४६ ॥
जिम मंत्र सक्ति साधक लहंत । रस घात रसाइन लहि चहंत ॥
जिम इष्ट लाभ आराध वंत । प्रमदा मुद्दित जिम आइ कंति ॥ छं० ४७ ॥
तिम भयो सुख्य प्रथिराज अंग । बजि पंच सबद बाजै सुरंग ॥ ४८ ॥
शिंकार बंद कर के बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना ।

बूहा—पंच सबद बाजिन्न बजि । तजि भ्रगया चहुआन ॥
कानन मध्य सु उत्तरिय । किस्नी कुअर मिलान ॥ छं० ४९ ॥
डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वीराज का
शिंकार की बातें करना, सरदारों का सस्कार करना, सब का
ठंडा होना, भोजन की तयारी ।

छंद नाराचा—कर्यौ मिलान राजयं । बरनि कन्वि राजयं ॥
फिरंग सू फनक्कसी । जरददु जंज रक्कसी ॥ छं० ५० ॥
सुबंन वंस राज्जतं । उभं सुमद्वस मद्दसतं ॥
फिरंन सूर लगगतं । अजब्ब जेव जग्गतं ॥ छं० ५१ ॥
गिरिद् डोरि रेसमं । सुपंच रंगयं भ्रमं ॥
तने तानव तंबुअं । करे सुपद्धरं भुअं ॥ छं० ५२ ॥
विछाइ कैदुली चयं । घरे प्रजक वीचयं ॥
सवारि सेज पय्यर । सुगंध फूल विध्यरं ॥ छं० ५३ ॥
गरम्म रुम तोसयं । ढक पलंग पोसयं ॥
कनक मै सिघासन । अछादितं सुवासनं ॥ छं० ५४ ॥
घरे सुपिट्टु तक्किए । अतल्ल संत ढक्किए ॥
अगें अबन्नि अंगनं । सिका करै छिरक्कनं ॥ छं० ५५ ॥
कुंमकुमा गुलाबय । सुनेक छटि आबयं ॥
तहां सु वैठि पिध्ययं । करै अषेट कथ्ययं ॥ छं० ५६ ॥
अनेक भंति चंदयं । पढै विरद् छंदयं ॥
सामंत सन्न नम्मियं । मिलान अप्प कम्मियं ॥ छं० ५७ ॥
सैं ह्य्य चाहुआनयं । दए कपूर पानयं ॥
षवास पास वानयं । हजूर उध्भ आनयं ॥ छं० ५८ ॥
विरण्ण बट्टु जंबुअं । विरस जट्टु अंबुअं ॥
गयंद बंधि अंबुअं । भरंत मद्द बिदुअं ॥ छं० ५९ ॥
करंत केलि सारसी । मलप्य ते महारसी ॥
विरद् नैक बोलते । पलक्क चण्ण षोलते ॥ छं० ६० ॥

महावतं पुकारतें । हूठं न लीं अहारतें ॥
पियंत नीर पों गरें । गरज्ज नष्भ ज्यो गरें ॥ छं० ६१ ॥
कपोल लोल हल्लते । चबेल मुंड झल्लते ॥
गिलोल चोट लगतें । विरष्ण ओट भगतें ॥ छं० ६२ ॥
दिपंत दंत उज्जलं । पहार पंति कज्जलं ॥
दुरद्द हद्द बेसके । दिये गनेस भेस के ॥ छं० ६३ ॥
सुपीलवान उष्भयं । चरष्ण गहु षुष्भयं ॥
करे तुरंग काइजं । भरें भमंन बाइजं ॥ छं० ६४ ॥
मिटै डरं पसीनयं । पलान दूरि कीनयं ॥
न्हवाइ नष्ण तिष्णयं । अछादि कंघ रष्णयं ॥ छं० ६५ ॥
रतम्ब दे ब्रहासयं । करे त्रपत्त घासयं ॥
ता पच्छ जाइ साहनी । अराम पंड वाभनी ॥ छं० ६६ ॥
कहं करं भलारयं । भरी रषत्त भारयं ॥
अनुचर उतारयं । संभारि ढार ढारयं ॥ छं० ६७ ॥
हुलास सेन उप्पजै । भोज्जन भष्ण निप्पजै ॥ छं० ६८ ॥

सब लोगों के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना ।

दूहा — करि मिलानं मध्यांनं हुअ । त्रिपति भोज छह भंति ॥
एकत मिलि आहार हुअ । रही न मन कछु षंति ॥ छं० ६९ ॥

संध्या होने पर सब लोग घर लौटे ।

मादक में नउ दीप किय । बद्धि सुगंधन तार ॥
निसि आगम बहुरे ग्रहन । जित तित भूपन भार ॥ छं० ७० ॥

पृथ्वीराज का घर पहुँच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को
स्वप्न में देखना ।

चढि करि संभरि वार चलि । ग्रेह सपत्नी जाइ ॥
अंधारी दारुन निसा । भू सुपनंतर आइ ॥ छं० ७१ ॥

भूमि देवी के रूप सौन्दर्य का वर्णन ।

कवित्त — पीत बसन आरुहिय । रत्त तिलकाबलि मंडिय ॥
छूटिय चंचल चाल । अलक गुंथिय सिर छंडिय ॥
सीस फूल मनिबंध । पास नग सेत रत्त बिच ॥
मनों कनक साषा प्रचंड । गहै काली उप्पम रुच ॥
मनो सोम सहायक राहु होइ । कोटि भान सोभा गही ॥
अदभूत द्रव्य ससि अहि गत्यो । साष सुरंग भनावही ॥ छं० ७२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस
समय यहाँ क्यों आई हो ।

ब्रह्मा—सुरंग त्रिया सोमो नृपति । वचन सुपन कहि लाल ॥
का तू सुंदरि किन बरन । क्यों ऊँची इहि काल ॥ छं० ७३ ॥
भूमि देवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूँ, मेरे लिये
सुर असुर सब शंकित रहते हैं पर जो सच्चा वीर
मिले तो मैं बहुत रस भवती हूँ ।

कवित्त—वीर भोग वसुमती । वीर भोगी वर चाहौं ॥
हाई भाइ कटाच्छ । वीर वीरां तन साहौं ॥
वीरां भी पढ़री । विना वीरां वर बंकिय ॥
हूँ दिव्य नारी एह । । सुरां असुरांनह संकिय ॥
मिष्टानं पान बहु भोग रस । रस सुगंध वीरन द्रव्यौं ॥
अनभंग वीर ओहित वरि । रस अनेक निहचै श्रमौं ॥ छं० ७४ ॥

गाथा—पंक जनय नीवामं । सुपनंतर राज दिट्ठायं ॥
जानिज्जै रति अंगं । कामं उछाह दीपयं मालं ॥ छं० ७५ ॥
राजा का विचार में मग्न होना ।

कवित्त—मन लगौ विभमित विचार । राज चिंता उप्पनिय ॥
भोमि बयन मन मझस । सु कर वर गहि कर लिन्निय ॥
सुम लच्छिन उत्तंग । अंग अंग गुन पिन्निय ॥
ता समांन छवि वांम । आंन करतार न रिन्निय ॥
मानीक वंस दानव कुलह । भोमि चरन्न निवास करि ॥
जै जया सबद सुरपुर भयो । करै केलि कलि इंद्र सर ॥ छं० ७६ ॥
पृथ्वीराज से भूमि का कहना कि षट्पू बन में अगनित धन है ।

ब्रह्मा—कहै भूमि प्रथिराज सौं । स्तुति दै करि मन सुद्धि ॥
बसं द्रव्य अगनित सगुन । षट्पू पुर बन मद्धि ॥ छं० ७७ ॥
अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वारा पर में था, उसने वहाँ
असंख्य धन रक्खा है ॥

कवित्त—अजैराल चक्रवर्ते । दुग्ग अजमेर द्वापरह ॥
तिहि बानिक पुर सिद्ध । लिषिय संजीत अपारह ॥
हेम कोटि हा हून । इन देवर घर मझह ॥
चरी आइ इक पहर । देव देवी तत सुझह ॥
अस्नान काल पूजादि यह । तहं पत्ती दुज राज वर ॥
अप्यी असीस मंगी लछिय । काम कही दुजराज नर ॥ छं० ७८ ॥

इकक सहस्र अपि द्रव्य । फेरि विप्रह अप्रमानं ।
सुनी सलछि बर बिप्प । दई सुमहा बर धानं ॥
फिरि पत्ती तहां राज । दियो तब श्राप दुज्जबर ॥
अप्प भयी सुइ राज । रहै घन रधि गइयौ घर ॥
मो मति द्रव्य तिहि धान रहि । तास मोह राजन करै ॥
षायो न कोइ वैहै न को । यो अरत्त अर्जुन फिरै ॥ छं० ७९ ॥
दूहा—को गहुँ षायोति को । को विलसै करि भेव ॥
माया छाया मध्य दिन । ज्यो बिषया बल देव ॥ छं० ८० ॥
इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथीराज रासके भूमिस्वपन
नाम सप्तदशो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १७ ॥



अथ दिल्ली दान प्रस्ताव लिष्यते ॥

(अट्ठारहवां समय ।)

अनंगुपाल के दूत का कैमास के हाथ में पत्र देना ।

दूहा — दिय पत्री कैमास कर । अनंगपाल कहि दूत ॥

बर बंची सामंत सत । निमत अषपर नूत ॥ छं० १ ॥

पत्र में अनंगपाल का अपनी बेटी के बेटे पृथ्वीराज को लिखना
कि मैं बड़ा दुःखा, बहिकाधम जाता हूं, मेरा जो कुछ है
सब तुम्हें समर्पण करता हूं ।

साटक- स्वस्ति श्री अजमेर द्रोन दुरगे । राजाधिपो राजर्न ॥

पुत्री पुत्र पवित्र पथ्य अघनौ । पित्री सब तावन ॥

मा बूढा इह बिद्ध तप्य सरन । बट्टी निवर्तं तन ॥

आभूमं पुर ग्राम ह्य गय समं । संकल्पितं त्कार्यं ॥ छं० २ ॥

पत्र पढ़कर सब का विचार करना कि क्या करना चाहिए ।

दूहा — बंची पत्र कैमास कर । नृप सामंत समंत ॥

आइ दूत दिल्ली पुरह । सुबर विचारहु मत ॥ छं० ३ ॥

कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिए, कोई कहता है

पहिले पृथा कुंभारि का ब्याह रावल समरसिंह के साथ

करना चाहिए ।

चौपाई — इक कहै दिल्लीय चलि राजं । मातुल बोलि तुमं प्रथिराजं ॥

इक कहै भगिनी परनाइय । समर सिंघ चित्रंग सुराइय ॥ छं० ४ ॥

कवित्त — समर सिंघ रावर नरिद । चित्र चित्रंग देव दुति ॥

तिन सगपन संमुहौ । राज जानंत राज गति ॥

कै दिल्ली दिसि चलहि । बाल सेंवर अधिकारिय ॥

सोमेसर पितु मते । करिय जिन बोल सुभारिय ॥

आवै न मंत बिय बंध वृत । अनंगपाल संमुह चलिय ॥

ता पञ्च प्रथा आगम सु प्रथ । देवमत्त ब्याहं पुलिय ॥ छं० ५ ॥

राजा सोमेश्वर सब सामंतों को एकत्र कर परामर्श करता है

कि क्या कर्तव्य है, पुंडीर राय ने सलाह दी कि याता

दुःखा राज्य न छोड़ना चाहिए ।

सिंघ सामंत र नृप्य । बैठि सब सध्यय मंतर ॥

कैमासह चामंड ; राय रामह बड गुज्जर ॥

हाहुलि राय हमीर । सलष पांमार जैत सम ॥
कह्यौ राज हम मात । तात अप्पी दिल्ली तम ॥
पुंढीर राइ हम उच्चरै । करी सकल आदर सुधर ॥
उप्पाइ अनैत महि लिज्जिये । आदि ध्रंम अंमर असुर ॥ छं० ६ ॥
चंद बरबाई का मत पूछना ।

बीपाई—सब भट पूछि पूछि कबि चंदह । तुम बरदाइ लहौ बुधि कंदह ॥
किम अप्पै पितमात धरंनिय । सब बिरतंत कहौ मन करनिय ॥ छं० ७ ॥
चंद ने ध्यान करके देवी का आह्वान किया और
देवी की आज्ञा से कहा ।

तब बरबाइ सुद्ध मन कीनो । सुमरिय सकति ध्यानं मन लीनै ॥
देवी आइ कह्यौ बर तंतं । सो अप्पै प्रथिराज सुमतं ॥ छं० ८ ॥
व्यास ने जो भविष्यत बाती कहौ थी वह सुनाकर
चंद का कहना कि आप का राज्य खूब तर्पंगा ।

कवित्त—पुब्ब कथा बरतंत । कहौ व्यासह ज्यों चंदह ॥
सही भविष्यत बात । सुनी मो होइ नरिदह ॥
तोंअर बद्दी जाइ । पय समप्पै चहुआनं ॥
तर्पे तेज रवि जेम । कहों सरसें परवानं ॥
इह मत्त सत्त मन्नी मनह । अरु पुब्बह मंत्री सपुन ॥
सामंत सित्त धर ध्रंम रत । सो पुब्बहु सच्चहु अपुन ॥ छं० ९ ॥

दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना (?) को बैराग्य क्यों हुआ ।

दूहा—इत हजूर बुलाइ करि । पुछत पिध्य कुंआर ॥
क्यों मानुल हुआ धर अरत । सो कहौ सत्त विचार ॥ छं० १० ॥

दूत का अनंगपाल की प्रशंसा ।

गाथा—दिल्ली अनंग नरिदं । दंदं दहन दुअनं दलनायं ॥
त्रिगुन तेज सुअंगं । पुहमी इंदं पहमी सरनायं ॥ छं० ११ ॥
अनंगपाल का प्रताप कथन ।

दूहा—बंक नृपति इक अंक लौ । मिटत करभर पांन ॥
इम इच्छै अबनी अटल । सनु न मुनियै कान ॥ छं० १२ ॥

कवित्त—गत्र गज्जत दरवार । घुरत दमंम बह धुअ ॥
बज्जत ह्य घुर तार । गाल गुज्जत सु डंट मव ॥
तंत तान क्षंसार । भमर गुंआर बास रस ॥
मुकट बंध राजान । लीन सेवंत हुकंम बस ॥
यों अबनि इंद्र तूंअर तर्पे । कर्पे रोर मौजन मनह ॥

धव बरन सरन सुष्वब रसहि । दुष्वन^१ किहि दिट्ठिय तनह ॥छं० १३॥

अनंगपाल के राज्य में दिल्ली की शोभा वर्णन ।

अनंगपाल तोंअर सुढाल । सोअ वासंत दिल्लीय बर ॥

धर सुहार कार्लिद पार । अठार वन धर ।

वर विहार प्रक्कार । विपन वाटिका बिराजिय ॥

ग्रिह उतांन वतांन । गोष जाली उच साजिय ॥

सब लोक असोक अनंद में । अप्प अप्प रह उद्धरिय ॥

जाजंन जाप अढा परषि । होम धोम धू विध्थुरिय ॥ छं० १४ ॥

अनंगपाल का बुढ़ावस्था में सपना देखना कि सब तोंअर

लोग दक्षिण दिशा को जा रहे हैं ।

अति तोंअर परिवार । बुद्ध बहु रिद्ध अनूप ॥

धम क्रम बहु रीति । चलै सब लोक सु कूपं ॥

वीर सेन सुत वीर । पाल बहु काल धरंनिय ॥

मन लग्गी वीराग । करत क्रन ऊंच करनिय ॥

निसि मध्य सुपन पिण्ठिये दुरय । सब तूअर दक्षिन चलै ॥

आरत्त माल कंठह कुसुम । हरि मग्न षोनी मिलै ॥ छं० १५ ॥

स्वप्न से जागकर अनंगपाल का हरि स्मरण करना ।

अनंगपाल पहु सुपन । देखि अप्पन चल चित्तैह ॥

हरि हरि हरि हरि चवै । इष्ट फुनि भूत बिहत्तह ॥

निसा जांम इक सेष । अप्प सुपनी फुनि पिण्ठिय ॥

अप तरुनि सम उट्ठि । तिथ्थ थानक तप दिण्ठिय ॥

इह लण्ठि चित्त चंमकि नृपति । पांणी पाय अँदोलि अप ॥

नरसिंघ नाम जंपिय पृथुक । सुत पुन नहीं पविस्त वप ॥ छं० १६ ॥

दो घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक सिंह जमुनाजी के किनारे आया

है, दूसरा उस पार से तैरकर आया, दोनों सिंह आमने सामने

बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे, इतने में नीब झूल गई,

सबेरा हो गया ।

घटिय उभै निसि सेष । ताम सुपनी फुनि पिण्ठिहि ॥

तट कार्लिदी तीर । सिंघ क्रीडत दिव दिण्ठिहि ॥

ताम समै इक सिंघ । पार उत्तरि जल आयी ॥

उभै स्यंघ सा मिल्या । नेह क्रीडा वरसायी ॥

बैठो सुसिध हथ मंडि करि । बैठि सनंमुख सिध दुअ ॥
जग्गायो बीर सिधह सुतन । नाम मुपिष्णो प्रात हुअ ॥छं० १७॥
अनंगपाल का ध्यास जगजोति को बुलाकर स्वप्न का प्रष्ण करना ।
तब तूंअर चित भ्रूत । उठि एकंत मंत हुअ ॥
हरि जोतिह जग जोति । बोलि दैवग्य तथ्य दुअ ॥
दिय आसन तमोर । बचन आभासि भाव दिय ॥
कहो मुपन विरतंत । आदि अंत कारंन तिय ॥
संभलें सुपन मन दुज दुमन । देषि राज बुल्यो न हसि ॥
क्रित कहौ सब छंडो दुमय । सब निम्मान सुकाल बसि ॥छं० १८॥
ध्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चौहान का राज्य होगा जैसे सिंह
घाया था, सो तुम भला चाहो तो अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो ।
तब दैवग्य विचारि । एक एकन मुख लोकिय ॥
सब गंठी निम्मान । एक कारन चिन दो किय ॥
कहैं सुनौ सुन बीर । दिल्ली चहुआंन निवास ॥
ज्यो दिष्यो तुम सिध । मिलै तूंअर मम तासं ॥
तप सद्धि तुमह सद्धो सरग । जो इष्यो उहुन अपन ॥
तूंअर बिनास अगह अतुल । सब भविस्य कारन सुपन ॥छं० १९॥
इस भावष्यबानी को सोचकर विचार करना कि दिल्ली का
राज्य अपने दौहित्र चौहान को देना चाहिए ।
इहा- सबै भविस्य बिचार मन । पुत्रि पुत्र चहुआंन ॥
तिहि अप्यो दिल्लीय मुदत । पमरें किति प्रमानं ॥ छं० २० ॥
अनंगपाल का मन में यही निश्चय कर लेना कि पृथ्वीराज को
राज्य देकर बनवास करना चाहिए ।
कवित्त- बालप्पन पन ज्वान । गतह त्रिदृप्पन आयी ।
एक समे एकंत । चित्त परब्रह्म लगायो ॥
पुत्र होइ संसार । भूमि रष्वे षल षंडे ।
बढ़े वंस विसतार । किति दसहूं दिसि हंडे ॥
अब करों जोग जंगम जुगति । भुगति भुगति मंगो हरिय ॥
पुतीय पुत अप्गों पुहमि । इम चितन मन में धरिय ॥छं० २१ ॥
अनंगपाल का मंत्रियों को बुलाकर भक्त पूछना ।
६८ पदरी- बोलेति मंत मंती प्रमानं । स्वामित ध्रम जे अंग जानि ॥
रामह सुराज चितै सदाय । धुर ध्रंम रूप बांनी बदाइ ॥ छं० २२ ॥
एकंत महक राजन बगदु । गुदराइ बोलि दरबांन तहु ॥

संसार विरत मन दिष्य राज । चीकट कुंभ जल बूंद धाज ॥ छं० २३ ॥
अग्यांन चित्त ज्यों दिद्ध ग्यांन । लोभीय चित्त ज्यों हरि न ध्यांन ॥

कुलटा मुनें नहि लज्ज जेम । कपटीय मनह नहि प्रेम नेम ॥ छं० २४ ॥
बानिक बनज नहि प्रीति अंग । दिष्यो सराज इन परि बिरग ॥

बुल्ले गु बिनय करि बैन एव । कहु दुचित्त अज्ज मन लगत देव ॥ छं० २५ ॥
प्रति वात कहिय अब हमहि ईम । विनु पुत्र सत्रु संसार दीम ॥

नृप वंस अंस जो पुत्र होइ । अत्रनीय अप्प रप्येति सोइ ॥ छं० २६ ॥
पुत्री मपुत्र चहुआंन पिथ्य । तिन देंउ राज मो सरन तिथ्य ॥

मंत्रीन मंत तव कहिय राज । चव जुगति जुगति जे भूमि काज ॥ छं० २७ ॥
जिहि जियत जीय घर रमै ओर । तिहि नृप मही कहि लोक ठौर ॥

जनमंत पुब्व जिन तप्प होय । करि कष्ट कष्ट तप भूमि जोइ ॥ छं० २८ ॥
घर पाइ राइ घर धर्म बढ़ि । घर धर्म क्रम सुलोक चढ़ि ॥

जो गंग जुगति कल कठिन काम । कहु षंगघार बिश्राम ठाम ॥ छं० २९ ॥
हम मीष मांनि अनंगेस राइ । भूमिय मु तजै मुष कित्त जाइ ॥

मंत्रीन राज तव कहीय बन । मानो कि वैर गहि गुंग गत ॥ छं० ३० ॥
मंत्रियों का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनता से होता है
इसे न छोड़ना चाहिए ।

अरिल्ल ते मंत्री जंपिय नृप बत्ते । किहि गुन राज भूमि अनुरत्ते ॥

गति अगति जिन घर पर अप्पी । तिहि घरपनि घर कैवंडु न रप्पी ॥ छं० ३१ ॥

कविन - जो घरपनि घर छंडि । भ्रम्यो नल राय हेत त्रिय ॥

जो घरपनि घर छंडि । तो राम रप्पी न भीयनिय ॥

जो घरपनि छंडि । भ्रमिय मुन पंड पंड वन ॥

घर कारन त्रिकम । कियो करगामिय भापन ॥

घर मंडि न छंडि जतंग नृप । निथ्य भ्रमन राजद नन ॥

घर काज राज घर पंडिये । बिन न दिष्यटि राज मन ॥ छं० ३२ ॥

मंत्रियों की बात न मानकर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना ।

अरिल्ल - कहिय मत्र नह ननिय राय । दिषि कागद अजमेर पठाय ॥

मुनि बनी नृप भर किल्ल ज्ञान । राका वर उदधि परमान ॥ छं० ३३ ॥

कवि चंद का मत सुनकर पृथ्वीराज का लिली जाना निश्चय करना ।

बूहा मुनिय राज कवि चंद कथ । उर आनद अपार ॥

पित्त मानुल मिट्टन नृपनि । कियो गुगवन विनार ॥ छं० ३४ ॥

कैमास का भी यही मत होना ।

थपिय मन कैमाम सोइ । घरनि घरनिय पथ्य ॥

चढ़ि चहुआन मुयंवरि । पुर दिल्लीय मयन ॥ छं० ३५ ॥

कवित्त - सुनहि राज तूअर नरेस । एक बर बुद्धि विचारिय ॥
एक बनिक पाहार । सु बय अंगह तिह सारिय ॥
ताहि बाल बय नन्ह । सील वृत दुल्लभ लीनी ॥
क्रंप काल मन हुल्यी । चित्त मति सत उपन्यी ॥
अनगेस राज तोअर प्रगट । उह मुमंति जिन लेइ उर ॥
मम भूमि मुनिक राज्यंद मुनि । धंम धुरा रणै न धर ॥ छं० ३६ ॥
दूत ने आकर समाचार दिया, पृथ्वीराज का धूम धाम से दिल्ली
की ओर यात्रा करना ।

दूहा - कही इत मारी विवरि । आदि अन्त जो बन ॥
चढि चहुआंन मु मंचरिय । जुगिनि पुर ले बन ॥ छं० ३७ ॥
चोपाई - लै सम मूर चढ्यो चहुआंन । ऊगत मूर देव प्रति मानं ॥
सगुन सकल मंमूह वनि आए । गयो राज दिल्ली समचाए ॥ छं० ३८ ॥
गयो राज दिल्ली परिमानं । मिले मूर अनगेस निधानं ॥
देपि भूमि दिमि थानं प्रामानं । राजा मुख वढ्यो चहुआंन ॥ छं० ३९ ॥
अनंगपाल ने दौहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा
दिन दिखला कर दिल्ली का राज्य लिख दिया ।

दूहा मानुल पित भिटयो मु पदु । मिलि अनि उच्छव कीन ॥
वासुर मूर रवि इद वाक । लिपि दिल्ली पुर दीन ॥ छं० ४० ॥
पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का वर्णन ।

छंद उधोर पयो हर पाइ पाइह अन । दह जुग मत्त रत मुरंत ॥
भाएंद चंद छंद उधोर । प्रति पग कही पत्रग जोर ॥ छं० ४१ ॥
किपि वर धटी महरन मन । दुज घन वेद विद्यत्र सत ॥
आनन हेभ पदु मुडार । मानिक मुनि मुति उजार ॥ छं० ४२ ॥
मज्जित कलस विप्र धितोद । राजन अनिहि मानिय मोद ॥
धुनि वर विप्र मंडन वेउ । माननी माल मज्जत तेउ ॥ छं० ४३ ॥
वज्जहि नहुक वज्जज भार । गानहि मान ग्राम मुतार ॥
ननि त्रिय पाच भरह मुभाव । ननिहि निघ विप्रम नाव ॥ छं० ४४ ॥
गज्जिन सघन मिदुर धनि । अत्र गु पुष्प सोभत पति ॥
धनत्रे चढिय निरवति नारि । गोपन रघु पुराजकुंआरि ॥ छं० ४५ ॥
दमकत दमन हम विरात्र । मानहु नडिन अश्व अग्रज ॥
वसनह रममि रज्जित जोर । मत्रि गिन नघन वामत्र जोर ॥ छं० ४६ ॥
राजत धवन रवनि नाटक । राका मनहु मोभ मयंक ॥
सोभत लाल कुंडल कंति । मनू बघू इंद इद मिलंत ॥ छं० ४७ ॥

चडि सु पट्ट सोहत दंति । मनो इंद्र ऐरापति ॥
 मांडत विप्र वेद सुवेद । जग्यहि जपति भेदहि भेद ॥ छं० ४४ ॥
 पट्टहि पुत्ति पुत्त अरोहि । विजत नृप्प चामर सोह ॥
 मांडत मुकुट उत्त सुमंग । रचि बहु घात मौल सुरंग ॥ छं० ४९ ॥
 दुत्ति कलस करिय तास । मारिच कोटि इंद उहास ॥
 धुअ सम मंडि छत्र अजेर । मनो हरि बाल विब सुमेर ॥ छं० ५० ॥
 तिलकह जटित रजित भाल । झल हल करहि दीप उजाल ॥
 चरचहि मुत्ति कुंदन थाल । पूरति सुपट्ट पूजति बाल ॥ छं० ५१ ॥
 चरचति सुकर अनंगपाल । सोहति कठ मोतिन माल ॥
 दुज वर चवै असिष वेद । माननि गांन तन सु अषेद ॥ छं० ५२ ॥
 हय गय हथ दिल्लिय देस । समप्पहि पुत्ती त नरेस ॥
 षोडस दान पूरन मान । अप्पे विप्र धेन सुआंन ॥ छं० ५३ ॥
 थप्प विप्र गेव सुग्यांन । ग्रहन सुतप्प तप्पिय थान ॥
 बद्रिय नाथ धरिय सु ध्यांन । ॥ छं० ५४ ॥
 तजि ग्रह मोह माया जाल । सज्जिय जोग बच्चिय काल ॥
 रच्चिय बांन प्रस्थह रूप । क्रमि रह ताप तप्पिय भूप ॥ छं० ५५ ॥
 हय गय तरुनि द्रव्य सुदेस । तिन वर तज्जिय राज नरेस ॥
 संवन ईस तीस रू अठु । चलि नृप हेम गहि कर अठु ॥ छं० ५६ ॥

कवित्त—एकादस संबतह । अठ्ठ अग हति तीस भनि ॥
 प्रथि सुरति तहा हेम । मुद्ध मगमिर सुमास गनि ॥
 सेत पष्प पंचमीय । सकल वासर गुर पूरन ॥
 मुदि म्गसिर सम इद । जोग मद्धहि सिध चूरन ॥
 पट्ट अनंगपाल अप्पिय पट्टमि । पुत्तिय पुत्त पवित्त मन ॥
 छंडघो मुमोह सुष तन तरुनि । पति बट्टी सज्जे सरन ॥ छं० ५७ ॥

सुभ लगन दिस्सा कर बडी तयारी और विधि के साथ अनंगपाल का
 बुध्वीराज को पाट बाँठाकर अपने हाथ से राज्य तिलक करना ।

छंद पदरी—

सुभ लगन दीन दिल्लिय नरिंद । तुम करहु राज जनु पट्टमि इंद ॥
 सुनि श्रवन सह आनंद अंग । राका रयन जनु दधि तरा ॥ छं० ५८ ॥
 बुल्लाइ फेरि दुज वर प्रमान । थपि लगन मगन अमृत समान ॥
 जिन वचन ब्यास मिट्टै न कोइ । सहजइ कहंत मुष सिद्धहोइ ॥ छं० ५९ ॥

मंडप्य मंडि सुतधार बांनि । रचि व्याहृ कृश्न रुकमनि मानि ॥
 उच्छव अनंत बाजंत बाज । जिन घुमर घोर रव गयन लाज ॥ छं० ६० ॥
 नृत्यंत नृ य पातर प्रवीन । तिन रष्य अंग मुनि मन अधीन ॥
 सब नगर उड्डि गुड्डी अनंत । कैलाम विपन बांनिक बसंत ॥ छं० ६१ ॥
 आरास सुन्नन बनिकाच छोह । देषंत नेंन मुनि मगन मोह ॥
 बहुरंग व्रंन विव्रित अवास । साला मुरंग गौषन उजास ॥ छं० ६२ ॥
 अंगन अंग दिषि रहत भूलि । त्रिगुन निवास सुरवास फूलि ॥
 जाजिम पट्ट जरकम जराव । अवनीस दिषि जकि घरत पाव ॥ छं० ६३ ॥
 छुटंत तार सहजह मुरंग । भुंगीन भंग भय भ्रमत अंध ॥
 नव ग्रही वास सुर वास साज । तहां बैठि आंनि अनगेस राज ॥ छं० ६४ ॥
 बुल्लाय सब्ब अय भर समान । द्विगपाल जोर तन तेज भान ॥
 लघु बेस तरुन के वृद्ध वीर । कछ वाच साच वज्रंग श्रीर ॥ छं० ६५ ॥
 इंद्रान मोड़ जिन अंग भंग । संग्राम रंग जनु कप्पि पंग ॥
 मच्छर हुलास जिन अंग सोह । त्रिन जरत उठिठ सिर समय कोह ॥ छं० ६६ ॥
 नव रस विलास निय नारि रंग । अनिवरत रंग भीषम प्रसंग ॥
 षग दान मान परिमान जोइ । कवि कहै व्रंन जो आंनि होइ ॥ छं० ६७ ॥
 कुल रीति नीति हिंन राह । दारुण दुसह दुम्भ दुवाह ॥
 अस बैठि भूप सब समा आंनि । मुर इंद्र कोटि नेतीस जांनि ॥ छं० ६८ ॥
 तहां घरिय सिधामन कनक कंति । जिन हीर लाल पीरोज पति ॥
 मानिकक चूनि मनिमुति भति । चकबोध दिष्ट बुधि भूलि जंति ॥ छं० ६९ ॥
 नृमान लषित गुण्यह उपाइ । तहां बैठि भूप कुल सुद्ध आइ ॥
 आमन्न अस्मु तहां धीरय आंन । मुरजपि तथ्य जै जया वान ॥ छं० ७० ॥
 प्रथिराज बोलि बैठाय पाठ । धुनि करन वेद तहां विप्र ठाठ ॥
 विय कंध पच्छ त्रि चमर द्वार । रजि रूज जांनि अश्विनि कुमार ॥ छं० ७१ ॥
 घरि कनक दंड मिर छत्र सीप । मिर चद कंति कैलास ईस ॥
 गायंत गांन कामिनि उनुंग । कलयंठ मुर करत भंग ॥ छं० ७२ ॥
 मुमकत हसंत अँडत अलोल । सहजन कटाच्छ छंडत सलोल ॥
 रस भरिय एक आलमय भंग । मुनि देषि अंग मति होत पंग ॥ छं० ७३ ॥
 इक अलसि फेरि अँठति अलोल । छंडन अमिन सित श्रवन कोर ॥
 अंगन अवास सालानि चूरि । जालोन गौष भरि रहौ पूरि ॥ छं० ७४ ॥
 बंदीन ठाठ बिरदह बुलंत । नत्र रस विलास रसना तुलंत ॥
 सधि लगन मुहूरत बुज प्रवीन । अनगेस राज तब तिलक कीन ॥ छं० ७५ ॥
 बजि सबद पंच बाजे बजंत । तिन सोर घोर दरिया लजंत ॥
 जिन तित अति उड्डव रजं । बरपाह पाइ जनु जग गजंत ॥ छं० ७६ ॥

दिल्ली के सब सर्दारों का आकर पृथ्वीराज को जुहार करना ।

छं० भुजंगी—

तहां बैठयं राज दिल्ली प्रपानं । सिरं आतपत्रं सु दीनो निघा नं ॥
बजै हुंदुभी भीत^१ आकास थानं ।.....॥ छं० ७७ ॥

मिले आइ सब लोइ ते सूर बीरं । जिनै आदरं राइ दीनो सरीरं ॥
मनक्केति ताजी किनक्के करीनं । महामत्त दीसे सुमत्ती सुभीनं ॥ छं० ७८ ॥

बूहा - करि जुहार भट सुभट घट^२ । प्रजा महाजन आइ ॥

सब काहू मन यों भयो । ज्यों जलचर जल पाइ ॥ छं० ७९ ॥

बड़ी तयारी के साथ सजकर पृथ्वीराज की सवारी निकलना ।

सत हृथी दस सित हुआस । मानक मुत्तिय लाल ॥

सवा लष्व सोन्न महुर । गनै और को माल ॥ छं० ८० ॥

चढन जोग हृथी तबें । मंगवायो मदमंत ॥

जनु घन बहुल पवन बमि । बग पंकति ता दंत ॥ छं० ८१ ॥

जो रावर जंजीर बसि । पवन न पावै जान ॥

अग्न मंडि डारै प्रबल । सायर अजा समांत ॥ छं० ८२ ॥

छंद पदरी -

आरूढ इंद्र मम गज गरुर । ज्वालानि जोति जनु किरन सूर ॥

जरकस जराव औछार मडि । मुरराज विपन मांभान पदि ॥ छं० ८३ ॥

रेसंम रास नारी बनाड । घृधपर घमक कंचन जराइ ॥

आरूढ राज आमन अनद । मुर पुफक विष्टि दुअ दीन वदि ॥ छं० ८४ ॥

लंगरी राव पच्छे अरोह । कर कनक दड मिर छत्र रोह ॥

बिय ब्राह्म चमर दर गाह धारिरवि चद किरनि जनु मिर पमारि ॥ छं० ८५ ॥

तिन पच्छ पंति दंतीन साजि । मामत सूर सब चढ़े गाजि ॥

तिन पच्छ तुरी तने निवानि । बर पवन रूढ मन भए जानि ॥ छं० ८६ ॥

छनीस बज्र बज्जे मु बाज । विरदैन विरदं चद राज ॥

अवधारि मध्य बाजार बीच । केमरि कपूर तहें अगर कीच ॥ छं० ८७ ॥

जित तित गिरंत जारीन फूल । छबि छलै छैल नवला अभूल ॥

मन मगन मुक्त अष्वित उछार । जलजान मनो बमि ओस द्वार ॥ छं० ८८ ॥

सब परज अरज प्रभू करत एह । इक भमि ग्रेह थिर राऊ देह ॥

नर नारि निगषि मनु मुदित मोह । लगि चद सूर चिरजीव होह ॥ छं० ८९ ॥

षट दरस दरसि आसिष्य देत । प्रथिराज वंदि गिर मोलि लेत ॥

फिरि राज आइ अंदर अवास । जहं रहत मुग्ध मध्या मुवास ॥ छं० ९० ॥

सनमान कीन रनिवास राइ । जस मभि सत्त सत्त सिद्ध पाइ ॥ छं० ९१ ॥

पृथ्वीराज का रनिवास में घाना, रानियों का मंगलाचार करना ।

दूहा -अन्य नृपति गन सुंदरिन । मधि अंगन रनिवाम ॥

दिष्यत छवि छक्की सकल । मिल त्यंजन' दिन तास ॥ छं० ९२ ॥

कनक किउ कुंदेरनह । भरत कि भरिता अंग ॥

जलज नैन मुष कर चरन । जनु धरि अंग अनंग ॥ छं० ९३ ॥

मधुर कंति मुष मधु मुदित । उदित अर्कं त्राकार ॥

तोरि तन तहनिय कहत । धरनि गहौ तुम भार ॥ छं० ९४ ॥

गाथा - बनिता बिनय सुकरिय । धरिय धम केन अंगायं ॥

के छवि छकित छलीयं । भइयं ववमि पिष्यि पिथ्यायं । छं० ९५ ॥

दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थबास के लिये जाना ।

दूहा जुगिनपुर बहुआन दिय । पुत्रीपुत्र नरेस ॥

अनंगपाल तोंअर तिनिय । किय तीरथ परवेस ॥ छं० ९६ ॥

यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का आश्रय होना ।

कवित्त -सुनि सोमेसर मूर । द्वियै वडिय आनंद मुष

अति अनद त्रिमलय । धनि मो पुत्र दीह ॥ १ ॥

वर बाने वंधियै । मिचे मामत रू गव ॥

गोधर लगन नडडन नृपनि । बाण ॥ ३ ॥ १ ॥ १ ॥

मानगिय मान जानै साल । नप परतीत समत ॥ छं० ९७ ॥

छद पद्धती नदहि विवेक अविवेक पाट । विदहि मुकुट सो कट बाट ॥

नग नगन जरहि किरनी जगड । जाइ कि अगनि अनरित्त वाइ ॥ छं० ९८ ॥

पृथ्वीराज का प्रनाय वर्णन ।

छंद चोटक भयभीत मनत नडडन कडा । अनियं गुरदेइ गुमंग मडा ॥

वर वज्रि निमान दिमान भुअं । नृप राज मुकाज ज्यौं ध्रंम मुअं ॥ छं० ९९ ॥

प्रगटी जनु कामय कोटि कडा । करि उज्जल गज्ज मुषंत मला ॥

विसरे द्रगगाल दगो दिगयं । प्रगटी जनु काम कला मगिय ॥ छं० १०० ॥

रन नकिय पाइ कमन्ड भुअं । छति मित छिाधिप चित्त धुअ ।

प्रगटे प्रयुपात्रक पंन कल । निनमे प्रथुराज प्रथून बलं ॥ छं० १०१ ॥

परधाननि भीम कुंआर तिनं । नृप सेवन जास मुपाइ गनं ॥ छं० १०२ ॥

दूहा भन वृनिय नृपराज तपि । दिल्ली ह्वै धन साज ॥

जानिजै जंगल नृपति । मन उदद्धि गुन पाज ॥ छं० १०३ ॥

आशीर्वाद ।

मित छ अग सामंत सजि । वजि निषोष मुनंद ॥

सो गसर नंदन अटल । दिल्ली सुबमि नरिद ॥ छं० १०४ ॥

इति श्री कविसंघ धिरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल

दिल्ली दाम नाम अष्टदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १८ ॥

अथ माघो भाट कथा लिष्यते ॥

(उत्रीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना ।

कविवत्त - किय निवास प्रथिराज । आइ चहुआंन वीर वर ॥
 पुज्ज घाम जुगिनी समान । बाल दीय धान थिर ॥
 दस दिसान दस महिष । किन्न^१ सह नयर दीन बलि ॥
 अवर देव पुज्ज सु सेव । नंवेद धूप मिलि ॥
 पुज्ज सु दीय दानानि अय । अय पंषि दीय बंडरस ॥
 कपै सुसीम तहां रापि भट । जसजुप्रगद्धो दिसि विदिस ॥छं०१॥

शाहाबुद्दीन के कवि माघोभाट का गुण वर्णन ।

छंद भुजंगी - कवी कम्बिचंद सुमाघी नरिदं । सुरंतान भट्ट^२ मधू माद इंदं ॥
 कवी एक भंडी भिडिभी प्रमानं । किने तार झकार विद्या मुजानं ॥ छं० २ ॥
 विघं मंत्र पत्री पढ़े वेद बानी । तिन भट्ट कोन जु पूजै गियानी ॥
 पढे तर्क वित्तर्क चौसठिठ विद्या । तिन रूप के भेद चौरास सद्या ॥ छं० ३ ॥
 सतं मद्धि घटियं सुपोडम प्रमानं । इने छद विचछंद भेदे कलानं ॥
 महा रूप रंगति गंगा प्रकारं । तिन वाइकं भट्ट बोलन सारं ॥ छं० ४ ॥

माघो भाट का दिल्ली आना और यहां की शोभा पर मोहना ।

छंद त्रोटक दिपि भट्ट सुयानक दिल्ली घरं । जमना जल राजन पापहरं ॥
 तिह धंम मुनं त्रिप धिन दई । मोइ दिल्लिय राजस राज भई ॥ छं० ५ ॥
 इंद पथ्य मु पूरब नाम घरं । इन काज मु पंडव जुद्ध जुरं ॥
 अब पंथ पती पति पाव हरे । रवि की तनया तन तेज दुरे ॥ छं० ६ ॥
 इतनी विधि देपन धान गयो । श्रग लोक समान मु तेज तयो ॥ छं० ७ ॥

दूहा - इहि विधि दिषिय सकल त्रिग । पुर ठिल्ली उत्तमानं ॥
 धान वीर चहुआंन को । प्रति कैलाम समानं ॥ छं० ८ ॥
 पृथ्वीराज के इन्द्र के समान राज्य करने का वर्णन ।
 इंद रूप ठिल्लिय नृपति । इन्द्रासन पुरि ठिल्लि ॥
 सखीशा इछिनि मुन्नत । सुवृत वृत्त गुन किल्ल ॥९॥

१ - मो - किल ।

२ - मो - पुज्जेति सेव ।

३ - मो - दिष्यतई ।

४ - मो - गई ।

सुरपति सम सामंतपति । अति अनूप मति सार ॥
 कनिष्ठ आंन त्रिदुत्रांन सब । इह गुरु अर्त्त भार ॥ छं० १० ॥
 इह चरित दिग्विन नयन । गयो भट्ट नूप थांन ॥
 मय' मनुं सुमन सुरष्वि कै । रच्यौ प्रथी पर आंन ॥ छं० ११ ॥
 माधो भाट का पृथ्वीराज के दरबार में भेद लेने को श्राना
 और अपने गुणों से लोगों को रिझाना ।

कवित्त - दिषि भट्ट माधो नरिंद । राजधानी चहुआंती ॥
 इत भेद अनुमरै । इत लग्यो परिमानी ॥
 हिंदु भाष षट रस । मेछ पारमी उच्चारै ॥
 जहां अछिर कोइ कहै । वान तैहीं विधि मारै ॥
 भाषा कविन नाटिक सकल । गीत छंद गुन उच्चरै ॥
 जानन तर्क वित र्त्त मव । राग बिरागह अनुसरै ॥ छं० १२ ॥

गाथा - हिंदू हिंदू अवचने । रचने मेछायं मेछयो बयनं ॥
 जं जं जेम समुझसै । तं तं ममुझायं माधवं भट्टं ॥ छं० १३ ॥
 ध्रमाइन कायस्थ का माधो भाट को सब भेद देना ।

कवित्त - ध्रमाइन कायथ मुरंग । मिन्धौ वर भट्ट प्रमानं ॥
 जू कछु भेद चहुआंन । दियो निहचै सुरतानं ॥
 विभ्रम मुभ्रम विमाल । कहौ निभ्रम परिमानं ॥
 कग्गद मंत चलाइ । मंत मग्गी चहुआंन ॥
 दै लेइ दांन संभरि घनी । गेर मनम् करभानं वर ॥
 मय मंत मंत चितान करि । दयो दांन इत्तोति नर ॥ छं० १४ ॥
 पृथ्वीराज का माधो भाट को बहुत कुछ इनाम देना ।

दूहा - दम हृथी मैं मत्त करि । भग् मडन मुख भग्ग ॥
 अरि षंडन मंडन फवज । लेइ बीर बहु बग्ग ॥ छं० १५ ॥

कवित्त - दम हृथी सत एक । एक कत्री कंमानं ॥
 कंजी तीनति पंच । वान सोहै परिमानं ॥
 दियो साह सुरतान । भट्ट दीने परधानिय ॥
 छह मोती वर माल । कनक इरु तोल सुजानिय ॥
 दिय प्रथिराज सुराज बलि । द्रव्य सवर चतुरंग विधि ॥
 माधव सुभट्ट रंजे नूपति । चंद कही अमनुति समधि ॥ छं० १६ ॥

दूहा - हेमरु है गी अवरह । सर में बुद्धि गंभीर ॥
 सत्त सुमति आमिस्त गति । माधो भट्ट सुबीर ॥ छं० १७ ॥

बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माधो भाट को दिल्ली में रक्षना ।
कवित्त—दियो दान बर भट्ट । मास रखे दिल्लीधर ॥

बहु भोजन प्रति स्वाद । इंद इंद्रास देव गुर ॥

मन लीनो नृप हृथ्य^१ । भट्ट नृप^२ इंद प्रमान्यो ॥

गए दरिद जनमंत । चित्य चिता घट भान्यो^३ ॥

अप्ये सु दांन सामंत सब । सुवृत्त मत्त वृत्तह सुधरि ॥

भं पूर पूर पूरन कवी । जा चंग्या भग्गी सुउरि ॥ छं० १८ ॥

दूहा—जात जात जे जात है । गए गवन किन भीन्ह ।

इत्तय बन पूरन नहीं । मत्ति गरुअ तन चीन्ह ॥ छं० १९ ॥

बहुत सा दान (जितना कभी नहीं पाया था) लेकर माधो भाट
का गज़नी लोट ग्राना ।

अरिल्ल - लै सुदांन गञ्जन पुर आयो । इतौ दांन जनमंत न पायो ॥

महादांन विद्या परकार । दियो राज चौहांन विचारं ॥ छं० २० ॥

माधो भाट का गहाबुद्दीन के दरबार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने
आदि का वर्णन करना ।

छंद पद्धती

गरु अन्न मन कविगज राज । प्रगार हाग्य अदभत विगज ॥

तिहि जाइ कीन नृप किति चैन । निम निम मुहाय गुरनान चैन ॥ छं० २१ ॥

संभरिय बन उभरि उरन । गुरनान वैन गोरी विरख ॥

मानुलह बंग चहुआंन राज । दै गयी मरुल दिन्दीन काज ॥ छं० २२ ॥

है गै भंडार विन किति भूमि । कली राज मार आवृति कमि ॥

दैवत्त करे इह मनुछ लंड । कली बंज जनम आवृत्त मोड ॥ छं० २३ ॥

अनगेम राज तजि निथ्य जाइ । मामत मूर वर मिले जाइ ॥

अजहूति सेन इक मनी नथ्य । गोरी महाव इह घात तथ्य ॥ छं० २४ ॥

दूहा—फट्टिय बत्त प्रहाम सब । वसि दिल्लीय चहुआंन ॥

बंदिन माधो आय कहि । सम गोरी गुरनान ॥ छं० २५ ॥

है गै दिल्लीय देम सब । अरु जु अवर द्रव अप्य ॥

सो सब दै चहुआंन को^४ । अर्नंगपाल गय तप्य ॥ छं० २६ ॥

अर्नंगपाल के बनवास का वर्णन ।

लै चन्थो संग निज तछनि । दै दिल्लीय अनगेम ॥

मन वच क्रम बढी चल्थो । साधन जोग जोगेस ॥ छं० २७ ॥

१. मो—बरभट्ट ।

२. मो—नृप बर ।

३. मो—जान्यो ।

४. मो—दान ।

५. मो—सथ्य ।

६. छ—सो सम पय प्रियराज कू^५ ।

यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होना ।
सुनत सटप्पट लुगि मन । उर गोरी बर वीर ॥
पल पल षिन जुग जान जिय । बढिय विपम षल पीर ॥छं० २८॥
शहाबुद्दीन क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिये चलना,
फौज की शोभा वर्णन ।

छंद भुजंगी -

चढ़यी मंभि सुरतान साहाब ताजी । जरं जीन अंमोल साकति साजी ॥
बरं बासनं रत हेमं ह्मेलं । मनी मुत्तिमाला बनी लष्य जेल ॥ छं० २९ ॥
जरं हेम छत्रं सुभं सोभ सीसं । उव लाल थंभं सिरं मूर दीसं ॥
अगे लक्करी लाल दो सहम मोह । जिनं आइ जक्की सह कोइ कोह छं० ३० ॥
अगे साहि गोरी निसूरति पानं । लगयी बदि माघी पढै त्रिद्वानं ॥
दिसा दाहिनी पानं तत्तार गोरी । दिस पां पुरामानं रजि वाम जोरी छं० ३१ ॥
उभै पुठिठ मम रेज मुलतान पानं । मुन साहि महमुंद मोहित पानं ॥
मुष अग वेतं छसे रत्न माहं । सिनं चौर बाने सित गज्ज गाह ॥ छं० ३२ ॥
कही बत्त गोरी तिनं मो मवाही । कहे जेव जव्वाव पुञ्जत साही ॥
अपं सेन मथ्यं सह मूर मथ्यं । तिन जाति बाने कहै वोन कथ्ये ॥ छं० ३३ ॥
चले आइ मो सेषची मन्न थान । ग्य छति दरार माहाव तान ॥
दर रणिय दरवन अप मन्ति आव । नै योति उमरति मव अप भायं ॥
॥ छं० ३४ ॥

दूहा ओर रीति अप मज्ज गय । नमि पय सेष चिमन ॥
अप्य प्रमंसिय विवह परि । वेति यधरि पन ॥ छं० ३५ ॥
मीष मु पुच्छिय मेम पट्ट । बोलि पंचदस पान ॥
आमन छडिय अप्य तिन । मिथ आदर मनमानं ॥ छं० ३६ ॥

शहाबुद्दीन का तानारण्यां आदि सरदारो को

इकट्ठा करके सलाह पूछना ।

छंद पदरी गोरी ततार गुर लज्ज भार । पुरमान पान मति सिधुमार ॥
निसूरति पानं जेहान मीर । ममरेज पान बल लाज नीर ॥ छं० ३७ ॥
आजानं पानं सेरन वितंड । मुलतान पान मुहबति बंड ॥
मारुन मीर जमुनह सुमीर । साहाब पान गरुअत गभीर ॥ छं० ३८ ॥
रुस्तम पानं षल संक जास । गज्जनी पान गिन साहि आस ॥
गजनीय लज्ज गुर तेज गंज । महमुंद मीर अरि तेज भंज ॥ छं० ३९ ॥
गोरीय वनं काली बलाड । मृगराज जेम मृग अरि पलाइ ॥
साहाब सलाम सब करी आइ । चीमन सेष नमि परिस पाइ ॥ छं० ४० ॥

बढ़े सु सब कर कर समुद्रिठ । धिन एक बैठि साहाब उठिठ ॥
गयो सेष बाग तरु चंप नूप । बैठकक तथ्य चौरा अनूप ॥ छं० ४१ ॥
आसन मंडि बैठो मु साहि । बैठकक दई उमराव ताहि ॥
उच्चर्यो बीर गोरी सु संच । पुच्छिय जु सत्र मंत्रह प्रपंच ॥ छं० ४२ ॥

शाहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के विल्ली पाने का समाचार
कहकर उसके जोर तोड़ने का मत पूछना ।

कवित्त — कहिय साहि साहाब । षान तत्तार सुनो सत्र ॥
बसि दिल्लिय चहुआंन । कही माधो जु चड कब ॥
अनगपाल गय तप्प । देस है गै सु द्रव्य सह ॥
सो समप्पि चहुआंन । अप्प सज्ज्यो सुबंन रह ॥
अति मत्त अग बर जोर हुआ । अरु लंभी चतुरंग श्रिया ॥
सधियै बैगरन धेत षल । जो लौं जोर न बत्रिया ॥ छं० ४३ ॥

तातारखां का सलाह देना कि विल्ली पर चढ़ाई करना चाहिए

तब कहै षान तत्तार । साह साहाब चित्त धरि ॥
अरि अनंत बर जोर । याहि सधियै मनद करि ॥
तब दिष्यो बल जोर । सूर सामत समथ्यं ॥
अन्त तेज मत अर्नेन । बेग रन बहै सुहथ्यं ॥
दल जोर जोर भंडार घन । करि सुचित्त भर एक मन ॥
भरहथ्य जीव दिल्लिय सहर । मम करि अरि सद्धन मयन ॥ छं० ४४ ॥

तातारखां की बात का सब लोगों का सकारना, हस्तमखां का
मंत्र देना कि जब तक सेना तयार हो तब तक एक दूत
विल्ली जाय सब समाचार हिवुघ्रों के ले घाबै ।

छंद पदरी पुरमांन षान कहि सुनि ततार । संची सु बत्त जंपी सुडार ॥
दल मेलि वेग सद्धी सुमंत । बंधीय बंधान अरि करिय अंत ॥ छं० ४५ ॥
जेहान बीर जंपे तमंक । तुम उरो मीन छट्टी न अंक ॥
सद्धिये दोरि करि मत्रु सथ्य । नन होइ कांम दष्यी सुहथ्य ॥ छं० ४६ ॥
जंपी सु षान निसु रति तद्व । धिन बंत्र वन डिष ६ गव्व ॥
चच्चरन देषि चहुआंन तुम्ह । जंपी सत्रत मंत्रह गुरंम ॥ छं० ४७ ॥
उद्धरिय षान माहाब सक्क । वै वृद्ध भये बुद्ध जक्क ॥

झंपियै जुद्ध पावक पाइ । बंध्यो विराम ना निजरि आइ ॥ छं० ४८ ॥
बल तुच्छ अरिय सद्धी सु साहि । बल दुष्ट जोर बंध्यो न जाइ ॥
मुलतान षान हसि कहिय बत्त । मम रेज षान नाषी विगत ॥ छं० ४९ ॥

पंजाब गरुव छंड्यो गुमान । धन मद् मंत वयची प्रमान ॥
 कार्लिंग पुलै जिम जुध पुलाइ । गरु अत्त साहि साहाब जाइ ॥ छं० ५०१ ॥
 उक्कसैं षान सेरन वितंड । विकसे कहिय कर षग मंड ॥
 गोरिय अवनि तुम गनी गति । भय भीत मृत्य दीसहि सुमत्ति ॥ छं० ५१ ॥
 बिनसंत काज क्यों पातिसाह । पूछै सुमंत अच्छै सुभाह ॥
 जंपयो बत्त काली बलाइ । मो बिना सेन गोरी पलाइ ॥ छं० ५२ ॥
 काल ग्रहंत मन आइ मुझ्झ । मंडयो जुद्ध मो बिन अबुझ्झ ॥
 तमस्से मीर तब फते जंग । पुज्जेन सेन पंषी कुलग ॥ छं० ५३ ॥
 सम बरन साज सज्जै न संग । हरि तेज तेज दण्यै अभाग ॥
 अरि सार जैत जानौ न भेव । उच्चरौ मत गुन गुबर गोव ॥ छं० ५४ ॥
 तब मीर जमन गज्जनी षान । महद्द मीर मारत्त षान ॥
 उठे मुक्यार तम तेग झारि । बुल्ले बिहंसि मत्ते विचारि ॥ छं० ५५ ॥
 थिर जुद्ध मंत रच्चौ सु सब्ब । बैटनह मूर नहि धम अब्ब ॥
 कीयो हुकंम साहाब अब्ब । ग्रहि तेग हने प्रथिराज तब्ब ॥ छं० ५६ ॥
 स्तम कही साहाब अज्ज । मुक्कली दूत जुध करी कज्ज ॥
 लधि आवै चर मु हिइ चरि । तब लगि सेन सज्जौ मुइत्त ॥ छं० ५७ ॥
 मन्यो सुमंत सब चित्त सार । मड्यो सुमंत बर चरन चार ॥
 स्तम वाह धरि चवत दीठ । बुल्लाइ सिध बर चर गरीठ ॥ छं० ५८ ॥
 छंद भुजंगी स्वय भेद प्रकार भेदं प्रमान । सुनौ षान तत्तार षान मुमानं ॥
 स्वय साहि साहाब साहाब मूरं । मनो भेद बभान छुटघा बरूरं ॥ छं० ५९ ॥
 षान तेज तेजं प्रकारंत न्यारे । वही कदिव चंदं उपम्मा उचारे ॥ छं० ६० ॥
 दूहा कहत चंद बर भट्ट फुनि । सकल कथा परिमानं ॥
 जु कछू भट माघो कही । सम गोगी सुरतानं ॥ छं० ६१ ॥

छंद पद्वरी—

उच्चर्यो चंद बरदाइ मडि । सरतानं षान आरज्ज छंडि ॥
 वर बीर धीर तत्तार षडि । काली बलाइ सेरन बितंडि ॥ छं० ६२ ॥
 हबसी हुजाव पुरसानं बंध । पीरोज षान निज बंध सिध ॥
 पर दार पीरि दस दस प्रमानं । राजन अनेक भर मुग्ग्ध षानं ॥ छं० ६३ ॥
 तिन व्यंति सभा दिण्णी नरिद । मनो जामिनी तेज रवि सबर इंद ॥
 बदै न चंद तत्तार षानं । पीरोज बंध हबसी समानं ॥ छं० ६४ ॥
 पुरसानं षान जल्लाल बीर । सेरन वितंड माघो सरीर ॥
 हुस्सेन सूर भट्टी प्रकार । साहै जु साहि ज्यौ चंद सार ॥ छं० ६५ ॥

बैरंम षानं जमनेम जोर । जमजोर बहै तिन बरु मुखोर ॥
 पीरोज षानं माही मरद् । मोभंत तेज ससि बर सरद् ॥ छं० ६६ ॥
 उन्नो ग षानं गाभरु मीर । वेधंत सन घातह मु तीर ॥
 तुम तेज षानं ममरेज मीर । पुग्मानं लज्ज निज मुष्ष नीर ॥ छं० ६७ ॥
 फतू व मीर तुगी तुगानं । पुज्जै न नाम तम तेग पांन ॥
 नव नेह षान मैदान मीर । रुम्मी रुहिल्ल तम तेग धीर ॥ छं० ६८ ॥
 दिल्ली बढाल ढाहन प्रकार । सभरे मुष्ष भए रत्त भार ॥
 पारषि रण्य पावंग जान । जानहि जु स्वांमि ध्रम प्रमान ॥ छं० ६९ ॥
 फिफि पूछि जाइ इत सबनि कट्ट । उच्चरं वत्त चहुआन थट्ट ॥
 भय भीत रीत माधव मुभट्ट । हो देषि जाइ इह तथ्य घट्ट ॥ छं० ७० ॥
 सोमैस सूर तस पुत्तमान । मारन हमीर जाने गियान ॥
 दातार ओर पोहचे न दान । दै गयी अनग दिल्ली निघान ॥ छं० ७१ ॥
 बर राज अनंग तिथ्यह जु जाइ । है गै मु लच्छि दोहित पाइ ॥ छं० ७२ ॥
 माधव भाट की बात पर विश्वास न करके शाह का दूत भेजना ।

दूहा साह बरी मुरतान तव । माधी कह्यौ न मान ॥

भट्ट जानि जीहं गुनौ । दूत मु पठय प्रमान ॥ छं० ७३ ॥

दूतों के लक्षण का वर्णन ।

कवित क जानी कम्मान ॥ अंक रेमम प्रति भासै ॥

दन अंगक निय तोन । साहि गोंगी मुफि जासै ।

इत भेद अनुसरै । लषि हिदयार चरिन ॥

मो मनह मुरतान । थान मो कति दम रत्त ॥

इत के इत भवह मुरतन । सब गु चरिन जपिन लषै ॥

उच्चरं वत्त माधी मुरतन । गुनिज विधि असूत भाषै ॥ छं० ७४ ॥

दूहा इन मुखलि उन गथ्य बर । दिगि छिन्नी पन्मान ॥

माधी भट्ट मु नथ्य कहि । दूत पठय मुरतान ॥ छं० ७५ ॥

चाहुआन मुरतान बर । करत गुज परिमान ॥

मिलत पुत्र रजिन हुने । बारा रग उत्तान ॥ छं० ७६ ॥

कवित - नै दुम्मे मुरतान । अपर गज्जन प्रदवान ॥

आपटक हम करहि । दूत मुखके गिवात ॥

जु रुम्भेद अनुसरै । तलथ्यानं परिवानिय ॥

भय अयंक ध्रम पड । काल कलहं गुन ठानिय ॥

ज कही नाइ मसूर वा । मरन वान विनड बर ॥

हबसी हुआब मुखलि नूपति । मुबर वीर मत्ते गहर ॥ छं० ७७ ॥

भेद दुग्ग भंजियै । भेद उरजन धरि छिज्जै ॥
भेद भूमि अनुसार । भेद दिल्ली धरि लिज्जै ॥
भेद पण्य मन नथ्य । भेद प्रिग कंक न होई ॥
भेद गुरुअ गुरु ग्यान । भेद विन तान न जोई ॥
अबुल भेद वर रत्रियै । गुन मज्जन मज्जन वरन ॥
सुरतान दीन माहाब दी । भेद साहि कीजै गवन ॥ छ० ५८ ॥

गाथा पुरमान प्रति षान । पीठ नथ नथिय जान ॥
पुंगी नथ्य पमान । वस्त्र नथ्य मय्ययो वक्य ॥ छ० ९ ॥
अ गजनी नरिद । बुल्ल्या वीगट बीर माह्म ॥
विन जगत जग्याय । तो जिनै निश्चय षलय ॥ ८० ॥
दूहा विन जगत जो जगियै । पग माह विन हाय ॥
मेछ पिच्छ किर सान गुर । विवरि गुरज्जन माथ ॥ छ० ८१ ॥
पातसाहि पित्री मुछिति । मति रण्यन परिमान ॥
जौ भंजै चौहान तू । कहै दूत मोट ठान ॥ छ० ८२ ॥

अरिल्ल माधो बत्त मुमत्त प्रमानिध । तऊ दून मुक्कलि गुन ठानिय ॥
नव नव नव धन मध्य प्रमन । कह्यो मन गोरी मुविहान ॥ छ० ८३ ॥
दूत भेजकर प्रपनी सेना को तयारी करना ।

छद पद्वरी करि मत साह गोरी अचभ । आरंभ चक्क भत्र दंड अंभ ॥
जत्र थल निथ्यलन करि प्रमान । उनध्यो मेछ जनु मध्य भान ॥ छ० ८४ ॥
गगन मगन पुर षेह छाया । सुदयै न भान मिटि पथ ताय ॥
अग्ने मुरुमल्ल मरुवि मकोर । मृही मृ वदन अलि किसल शोर ॥ छ० ८५ ॥
वक्की चक्र चक्र चकी भूमि । रस नाठ विराठ तऊ रुदिड त्रुमि ॥
विन वननि तुट्टि छर छरन नीर । पंजरै पव साइर नभीर ॥ छ० ८६ ॥
तव करै पवन गवन प्रकार । उरभन धना यज हलन लार ॥
वाजत टमक तन्नल बटोर । नाचत सिस जनु गग मोर ॥ छ० ८७ ॥
सुदयै न नैन दिमि त्रिदिमि थान । मन रस मुद्धि नट्टी प्रमान ॥ छ० ८८ ॥

इति चाहुभान चतुरग दिमि । मजि मुमन माधुञ्ज ॥
जुरुछ मन गुन उच्चरिय । वर कोविद माधुञ्ज ॥ छ० ८९ ॥
मनि माधुव कोविद सुबर । कदी वत्त गुन वृत्त ॥
तऊ साहि गोरी नृपति । फेरि मृत्कले दुत्त ॥ छ० ९० ॥

बोलि दूत चव^१ अग्न लिय । दिय कगगर धुमानं ॥
सुद्धि सिध अरु सोब बर^२ । दिय इनाम ध्रन्वानं ॥ छं० ९१ ॥
शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की घोर जाना ।
चल्यो दूत दिल्ली दिसा । लिये शाह फरमान^३ ॥
भेष सुसोफिय तन्न सजि । चित्त अंबितिय मानं ॥ छं० ९२ ॥
दूत को दिल्ली चहुंचकर अनंगपाल के बनबात और पृथ्वीराज
के न्यायराज का समाचार विदित होना ।

गाथा—दिल्ली दूत सपत्तं । फिरि फिरि देखंत न्याव नृप नैरं ॥
यह धुमानं सुग्रेहं^४ । दिशं बर पत्र हृथ धुमानं ॥ छं० ९३ ॥
षबरि श्रब धुमानं । दिशं नृप आदि सूर मामंतं ॥
अनंगपाल तप सरनं । दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं ॥ छं० ९४ ॥
ध्रमान कायस्य का सब समाचार सामंतों के रहने
आदि का दूत को बतलाना ।

कवित्त—विवरि षबरि धुमानं । कही चहुआंन मेन बर ॥
पष्य^५ सत्त राजानं । सुवाम कीन पिथ्यपुर ॥
पष्य पंच कैमास । राव चावंड पष्य चव ॥
वसि वित्ते दिन अठु । पष्य लोहांन रसे सुव ॥
चहुआंन कन्ह पष एक हुअ । बसिय बास दिन पंच हुअ^६ ॥
सामंत^७ अवर आगम इछे । सवन^८ बास चहुआंन रथ ॥ छं० ९५ ॥
ध्रमान का सब समाचार लिखकर भेजना ।

ब्रूहा - लषि करि इह बंधी विवरि । राज धूम चहुआन ॥
दिय कगगर तसु दूत कर । बर कागर ध्रम्मान ॥ छं० ९६ ॥
सब समाचार लेकर दूत का लौटना ।
षवरि सत्रे लीनी नृपति । चलिय दूत निज मग ॥
आतुर पति गज्जन नमिय । सौफी वे सह जग ॥ छं० ९७ ॥
अरिल्ल—दूत आइ दिल्ली परिमानिय । राजघान जुगिगि पहिचानिय ॥
निगम बोध दिष्यो चहुआंन । रहे पट दीह फिरे तिन थानं ॥ छं० ९८ ॥

१. मो०—बचन ।

२. मो०—मब^१ ।

३. मो०—में यह तुक नहीं है ।

४. मो०—गेहं ।

५. मो०—मो०—परक ।

६. मो०—भय ।

७. मो०—रसन ।

दूत ने छ महीने रहकर जो बातें देखी थीं सब शाह को जा सुनाई ।

दूहा— रहे दूत षट बीह बर । लषि चरित्त षट मास ॥

जु कछु चरित षट मास कै । कहै विवरि सुद^१भासतुं ॥ छं० ९९ ॥

क्रम दिल्ली दिल्ली बयर । दिल्ली नृप चहुआन ॥

गौ तीरथ बन सज्जिकै । प्रगटि दिसांन दसना ॥ छं० १०० ॥

प्रथीराज चहुआंन बर । लै दिल्लीपति मूद ॥

जानत सकल जिहनां बर । बजि निर्घोष सुदंद ॥ छं० १०१ ॥

शाहाबुद्दीन का लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना,

उभरावों की तयारी का वर्णन ।

कवित्त— साह बदी सुरतना । आइ गज जुद्ध निरषिय ॥

अगड मध्य चौगांन । बीस गजमत्त^२ सज्जकिय ॥

सहस एक गज झुंड । मंडि मडल अविघानिय ॥

तदां गोरी बर बीर । दंति हक्कै दिन मानिय ॥

गज एक सेत निज रोहि बर । चडिय पिटु तत्तार षां ॥

सुरतान धान निसुरत्ति पा । चढि सुगज्ज बाई रषा ॥ छं० १०२ ॥

दिसि दष्यिन साहाब । माहिजादा चढि दतिय ॥

अबर सब्ब उभराव । चढे गज बंधि सुपतिय ॥

लाल झंड सम सिघ । हेम रज्जंत साहि सिर ॥

हैदल पैदल अबर । गनिक को गर्न गहब्बर ॥

महमंदचंद महावत्त सौ । बोलि साह पुर मान दिय ॥

गज भूत सिघ गज मुष्य है । आनि सुअगडह अहु किय ॥ छं० १०३ ॥

दूहा-- इहा कहत तिन चर चवन । दिय हुवाह मुरतान ॥

निरपि साह उची निजरि । बे बुल्ले घुरसान ॥ छं० १०४ ॥

बारुन बर बानै विविधि । असु अंनप आलोल ॥

ठाढा कौतूहल कबल । करत दान नव^३ लोल ॥ छं० १०५ ॥

छंद उघोर— मंडित उत्तंग उत्तिम छंद । मूरघ सोभा सोमह नंद ॥

छत्र विसाल बर दुति सीस । बाल विसाल उडगन ईसा ॥ छं० १०६ ॥

आसन सिघ मंड्यौ राज । सामंत सूर भर करि साज ॥

राज चहुआन प्रथी नरेस । घडिय चंद देव सुरेस ॥ छं० १०७ ॥

१. मो०—सुधि ।

२. को०—हु० ए०—गमंत ।

३. मो०—करवानन ।

मास बिसिय मंडी रेर । नह निसान थानह भेर ॥

है गैगुंजि माना भंति । छत्र विराज छत्रनि मंति ॥ छं० १९८ ॥

मिलिभर जहां तहां भरि भीर । सूर समध्य जुद्ध सधीर ॥

जित तित दिषिष रंग सरंत । आगम जानि फूलि बसंत ॥ छं० १०९ ॥

बसन विराजि दसन कुआरि । लोल कलोल सुंदर नारि ॥

गावति हभति अलि अलि रासि । दग दुति कमुब किरनि प्रकासि ॥ छं० ११० ॥

जब लगि बढे वीर जराइ । तब लगि गहिन साहि बघाइ ॥

जब लगि बढत बर जर जांम । तब लगि करन मत्तन कांम ॥ छं० १११ ॥

सुनि उर लगि अगि उदार । परति न पिनक चैन दुवार ॥

बर चर चवत बार विचार । सिर दह वार नंमि उदार ॥ छं० ११२ ॥

दूत का ब्योरेवार विल्ली का समाचार कहना ।

दूहा - सुनत बत्त पुरसान^१ बर । बोले दूत हजूर ॥

पुछै साहि सुबित्त करि । बिबपरि षबरि संमूर ॥ छं० ११३ ॥

बचनिका - सुरतान सु विहां सुलतान साहाब दीन ॥

करि करतार कि जोर । जामु कित्त जै अरु दल की जोरि जोरि ॥

जनु दरियाव की हिलोर । मिलते सों मुह जोरै ॥

अन मिलत सों षल षंजि कठोरै^२ । सुरतान मुचिर दूतान ॥

आनि कही कायथ धुमान । दिल्ली की षबरि विबरि लिषि दीनी ॥

अनंगपाल तूंअर बन बास लीनी ॥

देस है गै कोस पुत्री पुत्र प्रियीराज की दीनी ॥

पष्व सत हुए वास कीनें । तरुनि पुत्र परिवार सुष चैन ॥

पष्व पष्व कैमास कों भए आए । मास इन दिन अठु भए चावंड बसाएं ॥

तीन मास लोहान बीतें । बीम रोज कन्ह चहुआन हतें ॥

और सब सामंतकी बसही आनी । कितेकों आननें मांनी ॥

चौहांन वास की आग्या दीनी । सब सामंत सीम नांमि लीमी ॥

रोज बाईस तिस पर हमको राह लगे । पडि पतंग जग्गि सानगे ॥

जबलगि न बैरी जराइ । तब लगि साह मारि करि आइ ॥ छं० ११४ ॥

छंद्र पदरी — उच्चर्यौ दूत प्रति गजनेस । चहुआन तेज दिष्यो असेस ॥

अनगेस राज तजि तिष्य जाइ । सामंत सूर सब मिले आइ ॥ छं० ११५ ॥

संकुरे सकल मुम्मिया भयान । सेवंत आन दरबान थान ॥

इक भजत भोमि तजि गहन ग्रेह । निय नारि रंमिम सक्केव न नेह ॥ छं० ११६ ॥

इक मिलत आनि तजि गहन एंड अंग । षल षग षंडि बेसै जु जंग ॥

अजहूं सुखेन इक मनी नध्य । गोरी सहाब इह घत्त तष्य ॥ छं० ११७ ॥

संबत् ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना ॥

ब्रह्म—ग्यारह सैं अडतीस भनि । भो दिल्ली प्रथिराज ॥

सुन्यो साहि सुरतान बर । बज्जे बज्जि सु बाज ॥ छं० ११८ ॥

अरिल्ल—ग्यारह से अडतीसा मानं । भो दिल्ली नृपरा चहुआनं ॥

विक्रम बिन सक बंधी सूरं । तपे राज प्रथिराज करूरं ॥ छं० ११९ ॥

कलिजुग अरु द्वापर की संघी । साको धम्म सुतह बल बंधी ॥

ता पच्छे विक्रम वर राजा । ता पच्छे दिल्ली नृप साजा ॥ छं० १२० ॥

कहि चरित्त दिल्ली परिमानिय । सब गुन साह बिबेकत जानिय ॥

सबैं चरित्त कहे प्रति भट्टं । सोइ दूत अष्वे प्रति घट्टं ॥ छं० १२१ ॥

दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना, शाह का

खुरासान खां खादि से मत पूछना ।

छंद द्वैअष्वरी—दूत आइ दिल्ली प्रतिथानं । हेम सु है गै मुद्रित मानं ॥

तपे राज दिल्ली चहुआनं । नाकरघू नागेंद्र प्रमानं ॥ छं० १२२ ॥

एक बराह थिरं बेराहं । सकल कृत्य सुरराज समाहं ॥

को अग्या भजै न विराजं । अप्प लज्ज सम सामेंत लाजं ॥ छं० १२३ ॥

मुष छुट्टै जो बैन प्रमानं । तो घल्लै अगि जुलित नथानं ॥

सुनो साहि गोरी सुरतानं । एक अंग एक मन ठानं ॥ छं० १२४ ॥

पुव्व लोइ दालिद्रो नासं । सबे मुक तत्र टंक विलासं ॥

दड हथ्य जोगिद सुदिष्यो । नहि सुदंड प्रज्जा सिर पिष्यो ॥ छं० १२५ ॥

दुज उचिष्ट नह उष्टं अल्ली । छीन लंक कोइ छीन न भल्ली ॥

कठिन कक्कुच त्रिया प्रकारं । कोइ न कठिन दुअन अधिकारं ॥ छं० १२६ ॥

कसं हेम सोनार सुबीरं । कोइ न कसी दरिद्र सरीरं ॥

भै निरभै संसार सुजानं । सुनि सुनि राज वृत सुरतानं ॥ छं० १२७ ॥

मोवृत अवृत सुवृत गुन जानी । कहै दूत बिधि विधि परिमांती ॥

मोहै मझ अवत्त अभिलाषं । भोज प्रवाह सुभंत बैसाष ॥ छं० १२८ ॥

यो आवे बढ्ढै कवि मझं । इती राज अप्पे प्रति दिझं ॥

सेत सुमंत सुमंतह सारी । भो मुष मंद मंद अभिसारी ॥ छं० १२९ ॥

यो जंपिय चहुआन सुमंतं । त्यो अभिलाष गई मति तंत ॥

बोलि षान तत्तार प्रकारं । कहो मत सो किज्ज सारं ॥ छं० १३० ॥

अनंगपाल भो तिष्य सुनिज्जै । चाहुआन दिल्ली प्रति रज्जै ॥ छं० १३१ ॥

तात्तार खां का दिल्ली पर चढ़ाई करने की सलाह देना ।

ब्रह्म—कहै षान तत्तार बर । अवृत चरित्त सुमंत ॥

जे चरित्र दिल्लीय नृपति । कहि गोरी गुनमंत ॥ छं० १३२ ॥

कवित्त— कही धान तत्तार । सुनहि गोरी सुरतानं ॥
मोहि मत्त जो किजियो । सजिये सेन परमानं ॥
कही बत्त माघो सुभट्ट । सोइ लिषि कायथ कग्गर ॥
सोइ दूत कहि बत्त । सुत बोले न झट्ट बर ॥
घरमानं नाम काइय सुघर । तेनु चरित लिष्ये सबे ॥
अप्ये सुहृथ्य बंदीन ते । सुवूत बीर बीरह तवै ॥ छं० १३३ ॥
तात्तारखां का मत्त मान कर सुलतान का सेना
सजने के लिये घाशा बना ।

दूहा— मानि मत्त तत्तार बर । मति गोरी सुरतान ॥
लिषि घरमानह कग्गरह । सुविधि विद्धि परिमान ॥ छं० १३४ ॥
गाथा— माघव कोविदं भट्टं । गीतं काव्यं रसं गुनं ॥
नट्टं चित्रं महा विद्या । पिगलं भरहं तथं ॥ छं० १३५ ॥

छंद मोतीदाम—

निरंजन भट्ट सुमाघव बीर । कही तिन बत्त सुसत्ति सधीर ॥
इहै कहि मत्त सुमत्त प्रमानं । सजी चतुरगिनि सेन निधानं ॥ छं० १३६ ॥
कवित्त— सेन साजि चतुरंग । लिषे कग्गर परिमानं ॥
थानं थानं प्रति जानं । साहि कढ्ढे फुरमानं ॥
माइ सेन सजि थट्ट । सक्क सवै उमरावं ॥
चडिहै कंधे झपटि । जानि उलट्यो दरियावै ॥
विधि रूप दैव गोरी नपति । गरुअ मत्ति भंजन सयन ॥
तत्तार धान पुरसानं थां । करे मत्त सच्चे बयन ॥ छं० १३७ ॥

गाथा— मुनि श्रवणं चर बत्तं । वज्जानं धाव नीसानं ॥

निज है वर आरोहं । चढियं सजि गज्जनी साहं ॥ छं० १३८ ॥
कहि तत्तार गहि बग्गं । बसो छरोज अजर हो ग्रेहं ॥
रोज पंच मिलि सयनं । करि सुबसि सिध बहुभानं ॥ छं० १३९ ॥
कहिय साहि बर बत्तं । मुनि तत्तार सह तुम साजं ॥
अरि आघात समर्थं । सडि सुसिद्धि निद्ध कज्जायं ॥ छं० १४० ॥
शाह की सेना का धूम धाम से कूच करना ।

छंद पट्टरी—

चडि तमकि चढयो गोरी सहाव । उल्लटयो जानि सामरन आव ॥
पुठि प्रवाह मिलि चलिग सेना । विधि विधि प्रवाह सर अरि जलेन ॥ छं० १४१ ॥
द्वादसह कोस किन्नो मुकामं । डेरा सुदीन नारोल गामं ॥
मिलि पुठि भाइ सब सेन भार । द्वै लष्य मीर गरुअस गार ॥ छं० १४२ ॥

बाज्रिन् बीर बज्जत बिसाल । नारद नंदि तिन भूकुटि ताल ॥
 विन्ती त्रियाम उगयी सूर । दल चदयो सत जनु सिधु पूर ॥ छं० १४३ ॥
 संक्रमन सेन हूओ हुलास । चलि विषम सुषम वेराह भास ॥
 पुर धूरि पूरि धूर्त्रिय भांन । गह्वर सुवत मुनिये न कांन ॥ छं० १४४ ॥
 दर कूच कूच उत्तरिय सिध । दल विषम वृत् उर साहि विद्ध ॥
 किन्नी मुकांम आवार आर । डेरा सुदीन दळ उंच ठार ॥ छं० १४५ ॥
 झंडे अनंत गडि विविध रंग । फुल्ल्यो बसंत बनराह चंग ॥
 चर बले धरनि दिल्ली सुधांन । दळ कहै चरित पुरसान पांन ॥ छं० १४६ ॥
 दूहा —कहै चरित सुरतांन मीं । जे देवे तिन दूत ॥
 धूरि निसांन भद्रव भरिय । इम दिषिय अदभूत ॥ छं० १४७ ॥

छंद भुजंगी —

धूरै नद् नीसांन उगंत मूरं । वरं बीर बाज्रिन् बज्जे कहरं ॥
 घनं पष्वरे बाज्र दंनौ मयन्नं । दलं मज्जि मन्नाहयं श्रव्यन्नं ॥ छं० १४८ ॥
 रन्वियं पौज भरं सों अठु साहं । तहां चौर मोर गुरं गज्ज गाहं ॥
 तहा बिट्टियं दंनि ऊपन मत । नहां छत्र रंगं त्रियगे डरंनं ॥ छं० १४९ ॥
 तहा बीर माही उमाही सुरानी । तहां डाल बहु रंग अंगी दुरानी ॥
 दिमा बांम तत्तार गोरी मु अत्री । दिमा दाहिनी घान पुरसान रत्री ॥ छं० १५० ॥
 मुष भग बेनड सेरंन पांन । रनं बैरष रत गज गाह ठानं ॥
 तिनं रत उच्छारि कारत डार । रज रत झंडं नर ताल हालं ॥ छं० १५१ ॥
 बनी मा हे पुट्टे विन्नें माहि म ज । अगें भग बाजी हयं नारि माजं ॥
 अगें बांन गीरं सजे जुद्ध मारं । मुषे मारमारं । छं० १५२ ॥
 सुर दीन दीनं कलि कूरु फुट्टी । भरं आइ काल भरी जुद्ध घट्टी ॥
 उडी डंवरं अंबरं रेनु पूरं । वरं बाज्र आघात बज्जे कहरं ॥ छं० १५४ ॥

साह की दो लाख सेना का सिधु के पार उतरना ।

दूहा —गज्जनेस सब सेन जुरि । आयी सिधु उलंघि ॥
 कूच कूच आनुर षरिग । दोइ लष्य दठ संघि ॥ छं० १५४ ॥
 पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर अपने सरदारों से परामर्श करना ।
 कवित —सुनिय बत पृथिवराज । बोलि कैमास मंत्र वर ॥
 कंह काइ' चहुआंन । बिरदि बज्जैति नाह नर ॥
 रा पज्जून पबिस । सलष पमार जैत सम ॥
 बांम देव जहों जुवान । पर संग राव प्रम ॥

पुंडीर सेन चंदह सुमति । हुलोहांनो आजान भुअ ॥
मिलि सकल मंत पूछिय प्रथुका सनमानिय सोमेस सुअ ॥ छं० १५५ ॥
कैमास का मत बेना कि हम लोग प्रागे से बढ़कर रोकें ।
कहिय मंत कयमास । सुनौ सामंत सब्ब भर ॥
गज्जनेस आयी सु सज्जि । सब सेन अप्प पर ॥
कूच कूच उम्भार । सुन्यो उत्तार सिधु नव ॥
सिध मंत सुभ रच्यो । फौज चंपी न होइ हद ॥
आयो सुराव चावंड तव । कहा विरम रच्यो सयल ॥
इह मंत सिलहसज्जे सहलि । चडि रन चंपहु दुष्ट बल ॥ छं० १५६ ॥
इस मत को सब का मानना ।

बूहा—मानि मंत सामंत सब । हरषि राज प्रथिराज ॥
बत्त परठिय ग्रेह गय । अप्प अप्प जुस साज ॥ छं० १५७ ॥
पृथ्वीराज का सबेरे उठ कर कूच करना ।

अरुनोदे बैरां विहसि । बज्जि निसान निहाइ ॥
चडघो राज चहुआंन तव । चिति अप्प जुघ चाइ ॥ छं० १५८ ॥

कवित्त—तषत सुरंग सुरंग । सुरन धंमान हृथ लिषि ॥
साम दान अरू भेद । दंड निरने बितेष-सिषि ॥
इहत काल इह धरिय । साहि सज्जे चतुरंगिय ॥
सुनि अवाज सुरतांन । हिंन करिहै रन जंगिय ॥
प्रति कूच कूचनि करि प्रसति । चाहुआंन न करै बिषम ॥
मो मति मानि माधव सुकथ । सुबर वीर बज्जे सुषम ॥ छं० १५९ ॥
चडघो राज प्रथिराज । करन मुक्कघो प्रति साजिय ॥
बाइ गंठि बंधईय । सुबर मानंक सु ताजिय ॥
मंत्र बंधि कैमास । कन्ह चहुआंन सु निहुर ॥
अवृत बत्त सज्जए । सूर सामंत तत्त गुर ॥
विधि रूप भूप जानन सकल । तत्त मंत बत्तहु सुबर ॥
संग्राम सूर साधै सकल । षग सितल बप्पी सुकर ॥ छं० १६० ॥

बूहा—चडघो राज प्रथिराज बर । सजि सुभट्ट अप्पान ॥
विकसे अंबुज वीर बर । काइर कंपत प्रान ॥ छं० १६१ ॥

कवित्त—चडघो राज प्रथिराज । मंगि गज रूप सुताजिय ॥
विप्रिय जाति सुभाति । हेम नग साकति साजिय ॥
बंधि सत्त सै नोन । बान तीषे सुभाल जल ॥
बोकि कन्ह चहुआंन । मंत्र कैमास बुद्धि बल ॥

बोले सु सब्ब सामंत भर । अरु जु सूर सप्यें सयन ॥

आए सुराज भग्या सुसजि । चले जुद्ध सिर सजि गयन ॥ छं० १६२ ॥

पृथ्वीराज की सेना का वर्णन ।

छंद त्रोटक —

चढि राज चल्थी सब सेन सजं । उडि षेह रजं रुकि अंब रजं ॥

सुर त्रंबक रोर तहत्र हयं । सहनाइय सिधु बसंन हियं ॥ छं० १६३ ॥

विकसे अरुबिंद जुबीर उरं । किन नंकिय कातर नारि नरं ॥

दल संग जु सिद्ध पयांन सजं । हरषे नचि जुग्गिनि जुद्ध रजं ॥ छं० १६४ ॥

दह सत सहं सदलं मिलियं । नव कोस मुनन्त मिलान दियं ॥

अति कूचह कूच दलं धरियं । जल पंथह जाइ सु उत्तरियं ॥ छं० १६५ ॥

युद्धारंभ होना ।

दूहा — कूच कूच गोरी सयन । जकि आयी जल पंथ ॥

सुहि बैसाष रूग भूगु दसै । सज्ज्यी जुद्ध समंथ ॥ छं० १६६ ॥

दिषिय रेन डंबर डहर । चढिय चाइ चहु प्रांन ॥

सुर आनंद अनंद किय । काइर कपि पुलांन ॥ छं० १६७ ॥

युद्ध वर्णन ।

छंद मुकुंद डामर —

ढलकृतिय ढाल निसान नहि मिय चंचल सूर चढे कसियं ॥

त्रक टोप सरूप रंगा दह हथल जोप सनाह विधि जरियं ॥

रुम मंस उक्रमत मुंछ तिरछिय दान मगानन न्हान कियं ॥

नचि नारद तुंमर अबर आनद ईस सु सिगिय नह दियं ॥ छं० १६८ ॥

षढि अच्छरि ईसय सीस निरप्यन बीर जु जुद्ध बिनोद नचं ॥

सुर रच्चिय रथ्य अयास सुबासिय गोद चवट्टिय मांनि सचं ॥

नृप रच्चिय फौज सुपं ब प्रपंचिय गज्जिय गेन सिरं धरियं ॥

भरमंनिय अप्प सु जेत प्रकासिय बदि बिरह प्रती परियं ॥ छं० १६९ ॥

बर सांइय सुभ्रर जीव कलप्पिय मंनि अनंत सु सीस भुअं ।

पल वारि पलद्धर श्रोन सकृतिय डिभु अगिडिय त्रित्त धुअं ॥

सुप नैन मुरत्तिय श्रोन मुरत्तह मुंछह भोह उभं धुकजं ॥

नृप दिषिय सुभ्रर सूर अनंदिय के कसि बीरति फौज सजं ॥ छं० १७० ॥

कवित्त - इत रचिग सेन सामंत । जुद्ध मारु रा भष्यन ॥

मोर व्यूह आकार । अप्प दुर्जन दल दग्गन ॥

एक पंथ निहुर नरिद । सप्य कैमास राम भर ॥

दुतिब पंथ अत ताइ । बलिय बलिभद्र सार सर ॥

पिंड पाइ नव राज हुअ । रचइ पुंछ पञ्जून भर ॥

पृथीर चंच कीनी नृपति । महन रंभ मप्यो सुधर ॥ छं० १७१ ॥

दक्षिण दिसि कैमास । बांम दिसि कन्हति सज्जिय ॥
 च्यार सहस सेना सजंत । नील फर हर ढल रज्जिय ॥
 सकट व्यूह सजि सुभर । कग्ग चामंड अग्ग करि ॥
 मंत्र राज ढंडरिय । ठंठ मारु महंन घरि ॥
 चंदैल माल भौहा सुभर । उभय चक्र सज्जे उभय ॥
 प्रथिराज अनी दक्षिण दिसा । विषम बीर सज्ज्यौ सुरय ॥ छं० १७२ ॥
 अवर अनी सामंत । षरे नव वीय महाभर ॥
 सोलंकी रन बीर । सुतन विस्सह सुराज बर ॥
 षीची राव प्रसंग । हीर पम्मार सहध्धं ॥
 सुवर बीर अबसांन । करन प्राक्रम अकथ्यं ॥
 पम्मार दोइ सिघह सुअन । सुअ प्रसंग सागर बरन ॥
 बघ्घेल भीम लष्वन सुअन । राम बांम द्वय हक्करन ॥ छं० १७३ ॥
 बांई दिसि चहुआंन । कन्ह सज्ज्यौ दल बहल ॥
 सहस तीस सजि सेन । मध्य सामंत अट्टबल ॥
 हर सिघह बर सिघ । हक्क हंभीर गंभीरह ॥
 मंडली कमल नाल । भान भट्टी बर नीरह ॥
 उदिग षगांर बिरदैत बर । सोलंकी सारंग उर ॥
 सिर कन्ह छत्र सज्यो नूपति । भार सयंनह जुद्ध भर ॥ छं० १७४ ॥
 मुष अगगों पम्मार । सलष सम जैत सु सज्जिय ॥
 लोहांनो आजान । तिन मद्धि विरज्जिय ॥
 सहस पंच सेना समथ्य । पम्मार सिघ सम ॥
 मध्य सूर सामलो । भीम चालुक्क पर जम ॥
 ठंठरी टांक चाटा चपल । घवल जसह लोहांन सुअ ॥
 लोहांन बंध केमरि समय । अग्र भाग सब सूर हुअ ॥ छं० १७५ ॥
 मध्य भाग प्रथिराज । सहस सेना सु च्यारि सजि ॥
 चंद्र सेन पुंडीर । राइ पर सिघ सिघ गजि ॥
 विस्स राज लष्वन बघेल । राइ रामह कनकू सम ॥
 कूरंभह उज्जून । भीम चहुआंन भीम क्रम ॥
 भाषरह दास मंधे समय । चाहुआंन नूप कन्ह सुअ ॥
 गोइंद राव भुअ ह्धय नूप । पुठ्ठि सु रज्जिय ॥
 आंम देव जहों जुवांन । नूप पुठ्ठि सु रज्जिय ॥
 स्याम चमर पष्वरह । स्यांम गज ढाल सु सज्जिय ॥
 लंगी लंवर राव । अल्ल परिहार सूर बर ॥

अचल अटल चहुआन । सिंह बारह अभाग भर ॥
 जंघाल राइ भीमह सुवर । सागर गुर रिन झूरि बल ॥
 सामंत सकल सज्जे समय । कज्ज राज प्रथिरात्र दल ॥छं०१७७॥
 उत गोरी सुरतान । सज्यो सेन अघ चंद्रं ॥
 अर्द्धचंद्र ततार । षान पुरसान सु वृंदं ॥
 अर्द्धचंद्र बर सार । षान पीरोज स इंदं ॥
 मधि कलंक जल्लाल । बीर रस बीर समंदं ॥
 उज्जल निसंक दोउ कोर बर । तेज ताप सुरतान डर ॥
 चहुआन राह लगन फिर्यो । पूरन पुनिमासी सगुर ॥छं०१७८॥

छंद भुजंगी —

इसी लीन जो गिद जो गिद भासै । उड़ी गिट्ट पच्छे मनो मीन भासै ॥
 कहे नह नंदी सुनारह बीरं । मनो जोग जोगाधि को अंत नीरं ॥छं० १७९॥
 करक्केंत बान धरक्केंति बेनं । गए लज्ज पांबी फटे पक्क पेनं ॥
 मयं मत्त दंतीन की पति सोभै । तिनं देषते इंद के चित्त लोभै ॥छं० १८०॥
 झटक्कंत दंती सुपंती प्रकारं । बलाकंति पंती बगं मेघ सारं ॥
 झरं डंमरं रेन रुकि भूर नरुभ । कलापंत पंतीन की सत्त सधुमं ॥छं० १८१॥
 दूहा - दिषिय रेंन डंमर डहर । चढयो चाय चहुआन ॥

मूर अनंद अनंद किय । कायर कंपि परान ॥ छं० १८२ ॥

सज्यो सेन जंगल मु पट्ट । जिम बहल आकास ॥

ढलकि ढाल ढिल्ली मिली । बिषम बीर रम रास । छं० १८३ ॥

घोर जुद्ध होना, मुलतान को सेना का भागना ।

छंद भुजंगी —ढलक्की मिली ढाल ढाल दुसेनं । चढे देव देवे रचै रघ्य गेनं ॥
 हकं हकर बज्जी गजं तारं नारं । महा जुद्ध लग्यो उठ्यो धोम
 धारं ॥ छं० १८४ ॥

छुटे बान हच्चाइ अप्पार भारं । जभी दामिनी इंद भादो सुढारं ॥

मिली कन्ह अन्नी पुरासान अन्नी । महा पेत मत्ती गजं गाह रन्नी ॥छं० १८५॥

छुटे बान कम्पान हक्यो मुगेनं । उवं जुद्ध दिठ्ठं न प्राचार सेनं ॥

उभै जुद्ध मंडयो महा भार भारं । भरं दून भग्गे धरं धार धारं ॥छं० १८६॥

गिरं उत्तमंगं धरं सूर नचै । भरं सीम कंमालियं माल संचै ॥

करे जोगिनी जोग उच्छार बीरं । पिये ओन धारं अपारं सुधीरं ॥ छं०१८७॥

मिले पेत पुरसान षां कन्ह धायो । उरं झारि सींगी अपुठ्ठं गिरायो ॥

१. मो-भारि ।

२. मो-हवाय ।

पर्यौ भूमि पुरसांन षांनं सुषाए । अनी भग्गि गय और सुरतांन ठाए ॥

॥ छं० १८८ ॥

परे सहस दो षांन कडि षेत साजं । बजी जैत देषी प्रथीराज राजं ॥

भगी फौज सुलतांन देषी बिहालं । कुप्यो साहि पुरसांन किय नेंन लालं ॥

॥ छं० १८९ ॥

फौज को भागते बेखकर सुलतान का क्रोध करना ।

डूहा—भगी फौज सुरतांन दिषि । कोप्यो साहि सहाब ॥

बहुरि मिलत जनु मेघ घुरि । सावन बहल आब ॥ छं० १९० ॥

सेना को ललकार शाह का फिर जोर बांधना ।

कबित्त—हृन्कि सूर सुरतान । साहि बंध्यो बल भारी ॥

अगोई चौरंग । राज रष्वन अधिकारी ॥

सुनै साहि सुरतान । साहि जीवन सुरतानं ॥

सुबर बीर हिंदवानं । कलह चपै हिंदवानं ॥

दीजै न दान दुर्जन घरह । दइ दुवाह ऊभो नूपति ॥

मुरि भग्यो साहि सुरतांन कों । साल रहै जीवन सुपति ॥ छं० १९१ ॥

तातारखां का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना,

पृथ्वीराज की विजय ।

तब कही षांन तत्तार । साह मंनी परिमानं ॥

रुप्यो साहि नरिद । साहि पुरसांन सवानं ॥

घरी एक आबद्ध । बीर बीरह रस सध्या ॥

षेत परे तत्तार । साह गोरी गई सत्या ॥

मुह मेल साह चहुआंन हुआ । हैथप्परि दौरे असुर ॥

चामंड राइ दाहर तनय । जै सबह उचरंत उर ॥ छं० १९२ ॥

डूहा—दंतिपत्ति हल्लिय विहर । जलद कि पढवय पाइ ॥

बाइ सहाई कै अनल । कै ग्रीषम लमि लाइ ॥ छं० १९३ ॥

छंद माधुर्य—दव दवरि दवरित सेंन डमरित गउज गहरित सह्यं ।

बिरहंत भद्व जलद हद्व कीच मचिबत भट्टर्यं ॥ छं० १९४ ॥

गिरि पंषि उल्लसि उडय दस दिसि बाय देग छरि छरें ।

देषंत मन गति होत पंगुर दान वरषत गिरि सरें ॥ छं० १९५ ॥

गज पंति दंतिन कंति उउजल बग्ग पंति कि राजए ।

रवि किरन बहल मध्य मानहु अन्य सोभ सु साजए ॥ छं० १९६ ॥

बर करत अनतहु षग्ग पुम्कत उडत किरष सुषंठि कै ।

इल चंद मानहु कोपि उडवन अड रषनीय छंडि कै ॥ छं० १९७ ॥

हल मलिय है दल दलित पैदल सैल सिषरह फट्टियं ।

गोपीय कन्हं जनु अगन्हं सार मार उहट्टियं ॥ छं० १९४ ॥

दूहा—गज्जन समबर रोस रस । बज्जिग मार अपार ॥

षोलि षग संभरि बलिय । जनुपाइक पुंतार ॥ छं० १९९ ॥

छंद रसावला —

करी मत्त भारी बहै सार घारी । दुह्थ्यं करारी । तुटै दंत जारी ॥ छं० २०० ॥

रदं क्लिचच झारी । माने मच्छ वारी ॥ लगें वान भारी । गिरं टिट्टि
चारी ॥ छं० २०१ ॥

लगें संग भारी । मनो ब्रज तारी ॥ उठें छंद घारी । मनो धूम
झारी ॥ छं० २०२ ॥

लगें केक टारी । धनुं चंद्र घारी ॥ लगि दंति अंती । अिनाली सुहंती
॥ छं० २०३ ॥

भरंके उछारें । बकें मार मारें ॥ ठहै गज्ज जारी । गिरं श्रंग सारी ॥ छं० २०४ ॥

दूहा—गज्जन गज गज्ज सुभट । रहै रोकि रन रंग ॥

छिति छज्जे छित्री इसे । जिसे भीम अनभंग ॥ छं० २०५ ॥

छंद पद्वरी —

अति उद्ध जुद्ध अनबद्ध मूर । बलवंत मंत दीसै करूर ॥

झलमलहि संग फुटि परहि तुच्छ । उप्पमा चंद जंपै सुअच्छ ॥ छं० २०६ ॥

दल स्यांम हृदय सोभै प्रमानं । मानो कि पंचमो भाग भानं ॥

बर संग फुट्टि सिप्पर प्रमानं । छर स्यांम राह सुभै समानं ॥ छं० २०७ ॥

मानो कि राह ग्रहि ससिय आइ । छट्टी कि किरन बदल नचाइ ॥

किरवानं वंक बद्धी बिसाल । ससि बनिय डोरि करि चक्र चाल ॥ २०८ ॥

सिप्पर सुस्यांम हेमह मुहंत । मानो कि चक्र हरि धरिय संत ॥

लै संगि अंग है हनि उठाइ । उप्पमा चंद जंपै सुभाइ ॥ छं० २०९ ॥

मानो कि ह्य्य ह्यिनापुरेस । षंचै मु बलिय बलिभद्र भेस ॥

प्रधिराज करिय करि संग मुद्ध । लागत भेस दीसंत उद्ध ॥ छं० २१० ॥

मानो कि रांम कामह प्रमानं । षंचैति द्रोन हनमंत जानं ॥

ठहि पर्यो गज्ज वर षेत भूमि।मानो सुअ सुरनिय अंत झूमि ॥ छं० २११ ॥

दूहा—चक्र रूप दोइ दीन दल । बल अभूत बलवंत ॥

जानि जुगंतह जम लरें । करन प्रधीपुर अंत ॥ छं० २१२ ॥

छंद विअष्वरी—पूरन ससि सुरतानं नरिदं । भारथ राह भिरें भर दंदं ॥

हींदू सेन षडे रिन षंतं । जित्तन दल धुरसान सुहेतं ॥ छं० २१३ ॥

डोरु ह्य्य डबै कर डबै । सींधू राग श्रवै सुर गावै ॥

नचै बर बेताल त्रिषाइ । नारद नह करै किलकाई ॥ छं० २१४ ॥

सुर रत्तं सुर बीर प्रमानं । उडै उछंग अरिन निदानं ॥

बाहिम्मी बाहिर अधिकारी । महन साह मोरी षग रारी ॥ छं० २१५ ॥

जंपे मेछ कुसाद कुसादे । पारसीय मीरं रसबादे ॥
 पां ततार पुरसांन पवानं । गहें सूर संमुह रन वानं ॥ छं० २१६ ॥
 पंच बांन वह ते अधकोसं । सङ्घो नाह नरिद सरोसं ॥
 रुद्यू दिष्ण साहि सब षानं । गहिय तेग अनमित्त जुवानं ॥ छं० २१७ ॥
 बूहा — मिले खेत रन रंग रस । पां ततार कैमास ॥
 विषम रुद्र रत्तो बिहसि । मनो तेग रस रास ॥ छं० २१८ ॥

छंद मोतीदाम —

मनों रस रासय तेगय तार । करकर बज्जिय रीठ करार ॥
 चलंतह बांन सुभांन छवान । निरष्वत अच्छरि व्योम विमान ॥ छं० २१९ ॥
 छुटे गज बाज अनंदिय जात । मनो लागि गोम उदोत उदात ॥
 भिरें भय घोम सु धूधय भार । लबे न को सूरति एक दुरार ॥ छं० २२० ॥
 फिरें धर बज्जिय झार करार । ठिलें नठिलाइ न मधिय हार ॥
 नदं भति जोगिनि नंचिय बीर । मिटी सिर मालह संकर पीर ॥ छं० २२१ ॥
 मिले कायमास ततार सुअंग । हन्यो कयमासह जानुय संग ॥
 फुटी जुग जंग तुरंग समेत । पर्यो हय मुच्छ ततार सुषेत ॥ छं० २२२ ॥
 बिना सिर नंचिय सट्टि कमंध । चले असि टेकि सु तुट्टिय रंध ॥
 षिलें विक्र मंध कमंध सुवीर । सहस्सह पंच परे रन मीर ॥ छं० २२३ ॥
 भगी रन फौज सु चंडह साहि । जिते र१ हिंदुअ ठठ्ट मुठाहि ॥ छं० २२४ ॥
 पृथ्वीराज का मुलतान की सेना का पीछा करना ।

बूहा — भगी अनी ततार लषि । दल परमारह चंप ॥

घप्यो राज प्रथिराज तब । लेहु लेहु मुष जं ॥ छं० २२५ ॥

छंद पद्धरी — घप्यो मुराज प्रथिराज हकि । उर रोहि सेन उप्परें धकि ॥
 मिलि फौज अट्टकिय एक ठाम । आघात रीठ मत्ती उरांम ॥ छं० २२६ ॥
 किलकार हकक बज्जी करार । आवद्ध तुट्ट मुष धार धार ॥
 चंप्यो पटाटि चामुंड राव । हल हल्ल हूक मते हलाव ॥ छं० २२७ ॥
 बीमच्छ मंत बिय भर अरूर । आवद्ध जांम मच्यो करूर ॥
 संगें सुसंग असि असी घाइ । पट्टा सुपट्ट बज्जे निहाइ ॥ छं० २२८ ॥
 जम ददुद ददुद जुट्टें विरांम । छुलिका सुघाव जुट्टे मुजांम ॥
 पाट्ट सुवीक परहार पार । मिले लष्य बष्य मुंझे मुझार ॥ छं० २२९ ॥
 कर केश केस एकह अलुझस । छुरिका सअंनि बाहें सुलझस ॥
 मुट्टंत अंत चंपंत पाइ । तुट्टंत सीस अनु विषम बाइ ॥ छं० २३० ॥
 किन नरं परत दंती सभार । है परें बिहूँड बंई सघार ॥
 है नै परंत धर पूरि पारि । बन ओन अब पूर्यो सवारि ॥ छं० २३१ ॥

लगे ससंग नेजा सुढाल । सोहंत पाल तरवर सुहाल ॥
 कच्छपह सीस गजराज नूप । धर परे ह्य गय मगर रूप ॥ छं० २३२ ॥
 तुट्टे सुबांह मनुं मीन पांन । सोहंत मीन बर विविघ जान ॥
 सोहंत सीस अंबुजह सूर । से वाल बिकुर रज्जे बिरुर ॥ छं० २३३ ॥
 विगसंत नैन सुरंगी न दिट्ट । अंबुज निसानि मधुकर बयट्ट ॥
 षप्पर सुभरै कालिका वारि । विन हंस सूर उड्डु उन्नारि ॥ छं० २३४ ॥
 पट्टाटि पर्यौ चामंड घाइ । विहरंत विषम बज्यो सुघाइ ॥
 दिध्यौ सुघाइ साहाब दिट्ट । आवद्ध मंत मत्ती सुरिट्ट ॥ छं० २३५ ॥
 मिल्ल्यो सुघाइ चामंड राइ । ह्य ह्ये उन उन्न उनाइ ॥
 ह्य परे बध्य लगेव सूर । थल घाब रिट्ट मत्ती करूर ॥ छं० २३६ ॥
 चंपे सुमीर उप्परह घक्कि । सामंत मूर लगे विहक्कि ॥
 धर परे षेत तहां दस्स मीर । सामंत पंच परि षेत तीर ॥ छं० २३७ ॥
 धरि लियो साहि चामंड राइ । नव सहस मीर तुट्टे सुघाइ ॥
 चामंड राब ह्य दिव षवास । साःल नाम पावार तास ॥ छं० २३८ ॥
 भग्गौ सुषेत सुरतान सेन । जै जया सद् सुर सद् गॅन ॥
 जे परे मीर सारंत षेत । वरदाय चंद ते गनिव हेत ॥ छं० २३९ ॥

कवित्त- पर्यौ भीम चहुआंन । बंध भापरह महाभर ॥

सामदास त्रय बंध । सुतन चहुआंन नाह नर ॥
 पर्यौ षेत जस घवल । सुअन लौहान समध्यं ॥
 केसर केहरि रूप । बंध लौहान सुतध्यं ॥
 रन परे पंच सामंत बर । षेत रीठ मत्ती भरन ॥
 चामंड राइ दाहर तनय । गहत साहि पण्णल सुरन ॥ छं० २४० ॥
 परघो षान सेरंन । वितंड मुलतान षान धर ॥
 मारू मीर सुभीर । मीर जेहांन महाभर ॥
 मीर जभुन जनीय । षान महमुंद मीर वर ॥
 फत्तेजंग मीरह सुभीर । हासन ह अनर ॥
 काली बलाइ विरदैत बर । मीर अवन्न सुजुझ मन ॥
 दस परें षेत वानेत तब । गहत साहि षण्णल सुरन ॥ छं० २४१ ॥
 अवर अनी सामंत । परे रन मीर महाभर ॥
 सोलंकी रन बीर । सुतन बीसह सुराज भर ॥
 षीची राब प्रसंग । सुतन सागरह समध्यं ॥
 मंडन बंध षसंग । हीर पामार सु ह्यं ॥
 पामारनीरध्वण सिंधु सुअ । सुत प्रसंग सागर सुअन ॥
 बध्धेक भीम षण्णल सुवन । राम वाम ददय डरन ॥ छं० २४२ ॥

झूहा—सहस एक हिंद अवर । परे घाइ रिन बेत ॥
 सहस आठरह असुर दल । परे सुबंधन नेत ॥ छं० २४३ ॥
 सहस सात हय बेत रहि । परे पंच से दंति ॥
 लुथि कोस पंचह प्रचर । परे सुपाइल अंति ॥ छं० २४४ ॥
 बेचर भूचर हंसचर । पलचर रुघिचर चार ॥
 ग्रप आनंदिय राजकहुं । बलि जै जंपि उचार ॥ छं० २४५ ॥
 सूरन सीस जु ईस जुरि । सुर रज्जे बर रथ्य ॥
 रजि अच्छरि आसिष्य दिय । बर लढे बर हृष्य ॥ छं० २४६ ॥
 चामंडराय का सुलतान को पकड़कर पृथ्वीराज
 के हाथ समर्पण करना ।

कवित्त - बंधि साह चामंड । दियो प्रथिराज सुहृथ्यह ॥
 राज मानि पतिसाह । आनि मुष्यासन तथ्यह ॥
 कियो दंड पतिसाह । सहस अट्टह हय सुब्बर ॥
 सोइ अट्ट प्रथिराज । दियो चामंड महाभर ॥
 मुक्यो सुराज सुरतानं गहि । रोहि सुवासन पठय घर ॥
 जित्यो सुराज प्रथिराज रिन । जय जै सहय सुर अमर ॥ छं० २४७ ॥
 सुलतान को एक महीना दिल्ली में रखकर छोड़ देना ॥
 बंधि साह सुरतानं । राज दिल्लीपुर पत्तो ॥
 दंड मंडि सुविहान । राज जस जस गुन रत्तो ॥
 चामर छत्र रथत्त । सकल लट्टे सुरतानं ॥
 मास एक बर वीर । रषिष्य मुक्यो सुविहानं ॥
 जय जय सुमन कितिय कवित्त । डोला राज नरिद बर ॥
 मामंत सूर प्रथिराज सम । भयो न को रवि चक्र तर ॥ छं० २४८ ॥

झूहा - माघी भट्ट सुमंत कथ । सुमत चित्त परमानं ॥
 सबर साहि गोरी नृपति । बंधि छडि उनमानं ॥ छं० २४९ ॥
 इस विजय पर दिल्ली में ध्यानंद मनाया जाना,
 बहुत कुछ दान दिया जाना ।
 बंदि बघाय दिल्ली सहर । जीते आवत राज ॥
 द्रव्य पटंबर विविध दिय । बज्जा जीत सु बाज ॥ छं० २५० ॥
 दुजिय सुबदिय प्रति दुजह । प्रिथ्या व्याह विगति ॥
 किमि फिर बंध्यो साह रिन । किम धन लढ सुमति ॥ छं० २५१ ॥
 इति श्री कविबंद बिरबिते प्रथिराज रासके माघी भाट कथा
 पातिसाह प्रहम राजाविजय नाम उर्नाचिसभो

अथ पद्मावती समय लिख्यते ।

(बीसवां समय ।)

पूर्वविशा में समुद्र शिषर गढ़ के यादवराजा विजयपाल का वर्णन ।

दूहा—पूरब दिस गढ गढनपति । समुद सिषर अति द्रुग ।

तहँ सु विजय सुर राज पति । जादू कुलह अभग ॥ छं० १ ॥

हमम ह्यगगय देस अति । पति सायर म्रज्जाद ॥

प्रबल भूप सेवहिं सकल । घुनि निसान बहु साद ॥ छं० २ ॥

विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटो का वर्णन ।

कवित्त—घुनि^१ निसान बहु साद । नाद सुरपंच बजत दिन ॥

दस हजार ह्य चढ़त । हेम नग जटित साज तिन ॥

गज असंघ गजपतिय । मुहर सेना तिय संघह ॥

इक नाथ ङ कर धरी । पिनाक धरभर रज रष्वह ॥

दस पुत्र पुत्रिय एक सम । रथ सुरङ्ग उंमर डमर^२ ॥

भंडार लछिय अगनित पदम । सो पदम सेन कूबर सुघर ॥ छं० ३ ॥

कूबर पद्मसेन की बेटो पद्मावती के रूप गुण आदि का वर्णन ।

दूहा—पदम सेन कूबर सुघर । ता घर नारि सुजान ॥

ता उर इक पुत्री प्रगट । मनहुँ कला ससिभान ॥ छं० ४ ॥

कवित्त—मनहुँ कला ससिभान । कला सोलह सो बन्निय ॥

बाल बेस ससिता समीप । अंभित रस पिन्निय ॥

बिगसि कमल धिग भमर । बैन षंजन मृग लट्टिय ॥

हीर कीर अरु बिब्र । मोति नष सिष अहि घट्टिय ॥

छत्रपति गयंद हरि हंस गति । विह बनाय संचे सचिय ॥

पदमिनिय रूप पदमावतिय । मनहुँ काम कामिनि रचिय ॥ छं० ५ ॥

दूहा—मनहुँ काम कामिनि रचिय । रचिय रूप की रास ॥

पसु पंछी सब^१ मोहनी । सुर नर मुनियर पास ॥ छं० ६ ॥

सामुद्रिक लच्छन सकल । चौसठि कला सुजान ॥

जानि चतुर दस अंग षट । रति वसंत परमान ॥ छं० ७ ॥

पद्मावती एक दिन खेलते समय एक सुगो को बेस कर मोहित हो गई

और उसने उसे पकड़ लिया और महल में पित्रे में रखा ।

सषियन सँग खेलत फिरत । महलनि बाग निवास ॥

- कीर इक्क दिषिय नयन । तब मन भयो हुलास ॥ छं० ८ ॥
- कविस्त- मन अति भयो हुलास । विगसि जनु कोक किरन रवि ॥
 अरुन अघर तिय सघर । बिब फल जानि कीर छवि ॥
 यह चाहत चष चक्रित । उहजु तबिकय झरपि झर ॥
 चंच बहुदृय लोभ । लियो तब गहित अप्प कर ॥
 हरषत अनंद मन महि हुलस । लै जु महल भीतर गई ॥
 पंजर अनूप नग मनि जटित । सो तिहि मँह रष्यत भई ॥ छं० ९ ॥
- पद्यावती कीर के प्रेम में खेल कूद भूल कर सदा उसी को पढ़ाया करती ।
 दूहा— तिही महल रष्यत भइय । गइय षेल सब भुल्ल ॥
 चित्त बहुदृयो कीर सो । राम पढ़ावत फुल्ल ॥ छं० १० ॥
- पद्यावती के रूप को देख कर सुग्गे का मन में विचार करना कि
 इसको पृथ्वीराज पति मिले तो ठीक है ।
 कीर कुँवरि तन निरषि दिषि । नष सिष लौ यह रूप ॥
 अरता करी बनाय कै । यह पदमिनी सरूप ॥ छं० ११ ॥
- कविस्त— कुद्विल केस सुदेस । पौह परचियत पिक्क सद ॥
 कमल गंध वय संघ । हंस गति चलत मंद मद ॥
 सेवत वस्त्र सोहै सरीर । नष स्वाति बूंद जस ॥
 भमर भंवहि भुल्लहि सुभाव । मकरंद वास रस ॥
 नैन निरषि सुष पाय सुक । यह सदिन मूरति रचिय ॥
 उमा प्रसाद हर-हेरियत । मिलहि राज प्रथिराज जिय ॥ छं० १२ ॥
- पद्यावती का सुग्गे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है ।
 दूहा— सुक समीप मन कुँवरि की । लम्यो बचन कै हेत ॥
 अति विचित्र पंडित सुआ । कथत जु कथा अमेत ॥ छं० १३ ॥
- गाथा— पुच्छत बयन सुबाले । उच्चरिय कीर सच्च सच्चाये ॥
 कवन नाम तुम देस । कवन यंद करै परवेस ॥ छं० १४ ॥
- सुग्गे का उत्तर देना कि मैं दिल्ली का हूँ वहाँ का राजा पृथ्वीराज
 मानो इंद्र का अवतार है ।
 उच्चारिय कीर सुनि बयन । हिंदवान दिल्ली गढ अयन ॥
 तहाँ इंद अवतार बहुबान । तहं प्रथिराजह सूर सुभारं ॥ छं० १५ ॥
- पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना ।
 छंद पदारी— पदपावतिहि कुँवरी संघस । दुज कथा बहत सुनि सुनि सुदस ॥
 हिंदवान थान उत्तम सुदेस । तहँ उदत द्रुग दिल्ली सुदेस ॥ छं० १६ ॥
 संभरि नरेस बहुबान थान । प्रथिराज तहाँ राजंत भान ॥
 बैसह बरीस बोडस नरिद । आबानबाहु भुज कोक यंद ॥ छं० १७ ॥

†संभरि नरेस सोमेस पूत । देवंत रूप अवतार धूत ॥
 सामंत सूर सब्बे अपार । भूजान भीम जिम सार भार ॥ छं० १४ ॥
 जिहि पकरि साह साहाब लीन । तेहुं बेर करिय पानीप हीन ॥
 सिगिनि सुसह गुन चढ़ि जैजीर । चुक्कै न सबद बेधंत तीर ॥ छं० १९ ॥
 बल बैन करन जिम दान पान । सत सहस सील हरिचंद समान ॥
 साहस सुक्रम विक्रम जुबीर । दानव मुमत्त अवतार धीर ॥ छं० २० ॥
 दिस ध्यार जानि सब कला भूप । कंद्रप्य जानि अवतार रूप ॥ छं० २१ ॥
 दूहा—कामदेव अवतार हुआ । सुअ सोमेसर नंद ॥

सहस किरन झल हल कमल । रिति समीप वर विंद^१ ॥ छं० २२ ॥

पृथ्वीराज का रूप, गुण मुनकर पद्मावती का मोहित हो जाना ।

मुनत श्रवन प्रथिराज जस । उमग बाल विधि अंग ॥
 तन मन चित चहुवान पर । बस्यो सु रत्तह रंग ॥ छं० २३ ॥
 कुंबरी के स्वामी होने पर विवाह करने के लिये मा बाप का
 चिंतित होना ।

वेस बिती ससिता सकल । आगम कियो बसंत ॥

मात पिता चिता भई । सोधि जुगनि कौ कंत ॥ छं० २४ ॥

राजा का बर बूँडने के लिये पुरोहित को देश देशांतर भेजना ।

कवित्त—सोधि जुगति कौ कंत । कियो तव चित्त चहीं दिस ॥

लयो विप्र गुर बोल । कही समझाय बात तस ॥

नर नरिंद नर पती । बड़े गढ़ दुग असेमह ॥

सीलवंत कुल सुद । देहु कन्या मुनरेसह ॥

तब चलन देहु दुज्जह लगन । सगुन बद दिय अप्प तन ॥

आनंद उछाह समुदह सिषर । बजत नद् नीसांन घन ॥ छं० २५ ॥

पुरोहित का कामाऊं के राजा कुमोदमनि के यहाँ पहुँचना ।

दूहा—सवालष्य उत्तर सयल । कामऊं गढ दूरंग ॥

राजत राज कुमोदमनि । हय गय द्विब्ब अभंग ॥ छं० २६ ॥

पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर कुमोदमनि को लगन बढ़ा दिया ।

नारिकेल फल परठि दुज । चौक पूरि मनि मुत्ति ॥

देई जु कन्या बचन बर । अति अनंद करि जुत्ति ॥ छं० २७ ॥

†को० छ—मैं यह तुक नहीं है ।

१. को—चिंद ।

कुनोदमनि का बड़ी धूम से ग्याह के लिये बारात लाना, पद्मावती
का बुझित हो कर सुग्गे को पृथ्वीराज के पास भेजना ।

छंद भुजंगी—

विहिंसितबरं लगन लिप्ता नरिदं । बजी द्वार द्वारं सु आनंद दुंदं ॥
गढनं गढं पति सब बोलि नुंते । आइयं भूप सब कटु बंस जुते ॥ छं० २४ ॥
बले दस सहस्रं असम्वार जानं । पूरियं पैदलं तेतीसु धानं ॥
मंत मद गलित सै पंच दंती । मनों सौम पाहार बुग पति पंती ॥ छं० २९ ॥
बलै अग्नि तेजी जु तते तुषारं । चौवरं चौरासी जु साकसि भारं ॥
कंठ नग नूपं अनोपं सु लालं । रंगं पंच रंगं ढलकंत ढालं ॥ छं० ३० ॥
पंच सुर साबद् वाजित्र वाजं । सहस सहनाय भ्रिग मोहि राजं ॥
समुद सिर सिवर उच्छाह छाहं । रचित मंडपं तोरनं श्रीयगाहं ॥ छं० ३१ ॥
पदमावती विलषि बर बाल बेली । कही कीर सों बात तब होइ केली ॥
झटं जाह तुम्ह कीर दिल्ली मुदेसं । बरं चाहुवानं जु आनी नरेसं ॥ छं० ३२ ॥
सुग्गे से संबेसा कहलाना और छिट्ठी देना कि रत्नि की तरह
मेरा उद्धार कीजिए ।

बूहा—आनो तुम्ह चहुवानं बर । अब कहि इहै सँदेस ॥

सांस सरीरहि जो रहै । प्रिय प्रथिराज नरेस ॥ छं० ३३ ॥

कवित्त—प्रिय प्रथिराज नरेस । जोग लिषि कग्गर दिन्नी ॥

लगु नव रग रचि सरब । दिन द्वादस ससि लिप्ता ॥

सैं अरुग्यारह तीस^१ । साष संवत परमानह ॥

जोवित्री कुल सुद्ध । वरनि वर रष्वहु प्रानह ॥

दिष्वंत दिष्ट उच्चारिय^२ बर । इक पल ६ बिलंब न करिय ॥

अलगार रयन दिन पंच महि।ज्यों रुक्रमनि कन्हूर वरिय ॥ छं० ३४ ॥

१ शिव पूजन के समय हरन करने का संकेत लिखना ।

बूहा—ज्यों रुक्रमनि कन्हूर वरी । ज्यों वरि संभरि कांत ॥

शिव मंडप पछिछम दिसा । पूजि समय स प्रांत ॥ छं० ३५ ॥

सुग्गे का छिट्ठी लेकर छाठ पहर में दिल्ली पहुँचना ।

लै पत्री सुक यों चलयो । उद्यो गगनि गहि वाव ॥

जहँ दिल्ली प्रथिराज नर । अट्टु जौम में जाव ॥ छं० ३६ ॥

सुग्गे का पत्र पृथ्वीराज को देना और पृथ्वीराज का चलने के
लिये प्रस्तुत होना ।

दिय कग्गर नृन राज कर । पुलि बंचिय प्रथिराज ॥

सुक देखत मन में हँसे । कियो चलनको साज ॥ छं० ३७ ॥

चामंड राय को दिल्ली में रख कर और सरदारों को साथ लेकर
उसी समय पृथ्वीराज का यात्रा करना ।

कवित्त—उहै घरी उहि पलनि । उहै दिन बेर उहै सजि ॥

सकल सूर सामंत । लिये सब बोलि बंब बजि ॥

अरु कविचंद अनूप । रूप सरसै बर कह बहु ॥

और सेन सब पच्छ । सहस सेना तिय सण्णहु ॥

चामंड राय दिल्ली घरह । गढपति करि गढ भार दिय ॥

अलगार राज प्रथिराज तब । पूरब दिस तत्र गमन किया ॥छं० ३८॥

जिस दिन समुद्र सिषर गढ में बारात पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी
पहुँच गया और उसी दिन गजनी में शहाबुद्दीन को भी समाचार मिला ।

जा दिन सिषर बरात गय । ता दिन गय प्रथिराज ॥

ताही दिन पतिसाह कौं । भइ गज्जनै अवाज ॥ छं० ३९ ॥

यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज
का रास्ता घामे बढ़ कर रोका और इधर इसकी सूचना खंद ने

पृथ्वीराज को दी ।

कवित्त—सुनि गज्जनै अवाज । चढघौ साहाब दीन बर ॥

पुरासान सुलतान । काम काविलिय मीर घुर ॥

जंग जुरन जालिम जुझार । भुज सार भार भुअ ॥

घर घमकि भजि सेम । गगन रवि लुप्पि रैन हुआ ॥

उलटि प्रवाह मनौ सिंधु सर । रक्कि राह अडौ रहिय ॥

तिहि धरिय राज प्रथिराज सौं । चद बचन इहि विधि कहिय ॥

॥ छं० ४० ॥

बारात का निकलना, नगर की स्त्रियों का गौष प्रादि से बारात
देखना, पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना ।

निकट नगर जब जानि । जाय वर विद उभय भय ॥

समुद्र सिषर घन नह । इंद दुहुँ ओर घोर गय ॥

अगिवानिय अगिवान । कुँअर बनि बनि हय सज्जति ॥

दिष्णन को त्रिय मबनि । चढि गौष छाजन रज्जति ॥

विष्णुषि अवाम कुँवरि वदन । मनौ राह छाया सुरत ॥

अंघति गवष्णि पल पल पलकि।दिषत पंथ दिल्ली सुपति ॥छं० ४१॥

सुग्गे का आकर पद्मावती को समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर भुंगार
करना, और सस्त्रियों के साथ शिव जी की पूजा को जाना वहाँ पृथ्वी-
राज का उसे उठाकर अपने पीछे घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर
रवाना होना, नगर में यह समाचार पहुँचना, राजा की सेना का पीछा
करना, पृथ्वीराज के साथ घोर युद्ध होना ।

छं० पट्टरी— दिषत पंथ दिल्ली दिसान । सूष भयी सुक जब मिल्यो आन ॥
 संदेस सुनत आनंद नैन । उमगिय बाल मन मध्य सैन ॥ छं० ४२ ॥
 तन चिकट चार डार्यो उतारि । मज्जन^१ मयंक नव सत सिंगार ॥
 भूषन मंगाय नष सिष अनूप । सजि सेन मनो मनमध्य भूप ॥ छं० ४३ ॥
 सोवन्न थार मोतिन भराय । झल^२ हल करंत दीपक जराय ॥
 संगह सधिय लिय सहस बाल^३ । रुकमनिय जेम मज्जत मराल ॥ छं० ४४ ॥
 पूजिय गवरि शंकर मनाय । दछिछिनै अंग कर लगिय पाय ॥
 फिर देषि देषि प्रथिराज राज । हस मुद्ध मुद्ध चर पट्ट लाज ॥ छं० ४५ ॥
 कर पकरि पीठ हय परि चढ़ाय । लै चलयो नूपति दिल्ली सुराय ॥
 भइ षवरि नगर बाहिर सुनाय । पदमावतीय हरि लीय जाय ॥ छं० ४६ ॥
 बाजी सुबंब हय गय पलांन । दौरे सुसज्जि दिस्सह दिसान ॥
 तुम्ह लेहु लेहु मुष जपि जोष । हन्नाह सूर सब पहुरि क्रोध ॥ छं० ४७ ॥
 अगो जु राज प्रथिराज भूप । पछछै सु भयो सब सेन रूप ॥
 पहुंचे सुजाय तत्ते तुरंग । भुअ भिरन भूप जुरि जोष जंग ॥ छं० ४८ ॥
 उलटी जु राज प्रथिराज बाग । थकि सूर गगन घर घसत नाग ॥
 सामंत सूर सब काल रूप । गहि लोह छोह इम सारि धार ॥
 घमसान घान सब वीर पेत । घन श्रोन बहत अरु रुकत रेत ॥ छं० ५० ॥
 मारे बरात के जोष जोह । परि हंड मुंड अरि पेंत सोह ॥ छं० ५१ ॥

पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना ।

दूहा— परे रहत रिन पेत अरि । करि दिल्लीय मुष रुष ॥

जीति चलयो प्रथिराज रिन । सकल मूर भय सुष्य ॥ छं० ५२ ॥

पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का समाचार मिलना ।

पदमावति इम लै चलयो । हरषि राज प्रथिराज ॥

एते परि पतिसाह की । भइ जु आनि अवाज ॥ छं० ५३ ॥

अबसर जान कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को पकड़ने के विचार से सेना सजना ।

कवित्त— भई जु आने अवाज । आय शहाबदीन सुर ॥

आज गहो प्रथिराज । बोल बुल्लंत गजत धुर ॥

क्रोध जोष जोषा अनंद । करिय पंती अनि गज्जिय ॥

बांन नालि हथनालि । तुपक तीरह श्रब सज्जिय ॥

पदै पहार मनो सार के । भिरि भुजान गजनेस बल ॥

आये हकारि हंकार करि । पुरासान सुलतान दल ॥ छं० ५४ ॥

१. ए० छ—मंडान ।

२. को—कल ।

३. को—यव रस बाल ।

४. छ—दुरि ।

शाहाबुद्दीन को सेना का वर्णन, पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लेना ।
 छं० पद्धरी—पुरासान मुकान पंवार मीर। बलक मो बरं तेग अब्क तीरं॥
 रुहंगी फिरंगी हलंगी ममानी । ठटी ठट्ट बरंगीव डालं निमानी ॥ छं० ५५ ॥
 मोजारी चषी मुष्व जंवरक लारी । हजारी हजारी इकें जोध भारी ॥
 तिनं पष्वरं पीठ ह्य जीन मालं । फिरंगी कनी पाम मुकनात लालं॥छं०५६॥
 तहाँ बाध बाधं मरुती रिछोरी । घनं मारसंमूह अ६ चौर झोरी ॥
 एराकी अरब्बी पटी तेज ताजी । तुरककी महावानं कम्मानं बाजी ॥छं०५७॥
 ऐसे असिव असवार अगेल गोलं । भिरे जून जेते सुतते भमोलं ॥
 तिनं मद्धि सुलतानं साहाब आपं । इसे रूप सों फौज वरनाय जापं ॥छं०५८॥
 तिनं घेरियं राज प्रथिराज राजाचिहौ ओर घन घोर नीसानं बाजं॥छं०५९॥

पृथ्वीराज का तेग सँभाल शत्रुओं पर टूटना ।

कवित्त—बज्जिय घोर निसानं रान चौहान चिहौ दिस ॥
 सकल सूर सामनं । समरि बल जंत्र मत्र तस ॥
 उट्ठि राज प्रथिराज । बाग मनो लग वीर नट ॥
 कइत तेग मनो वेग । लगन मनो वीज झट्ट घट ॥
 थकि रहे मूर कौतिग गिगन । रगन मगन भइ थोन घर ॥
 हर हरषि वीर जगे हुलम । हरव रंगि नव रत वर ॥ छं० ६० ॥
 बित रात घोर युद्ध हुमा, पर किसो तरह जीत न हुई ।

हुहा—हरव रंग नव रत वर । भरी जुद्ध अति चित्त ॥

निस वासुर समुक्षि न परत । न को हार नह जित ॥ छं० ६१ ॥

युद्ध का वर्णन ।

कवित्त—न को हार नह जित । रहेइ न रहहि सूरवर ॥
 घर उप्पर भर परत । करत अति जुद्ध महाभर ॥
 कहीं कमध कही मध्य । कही कर बरन अत हरि ॥
 कहीं कंध बहि तेग । कहीं सिर जुट्टि फुट्टि उर ॥
 कहीं दंत मंत्र ह्य गुर गुपरि । कुंभ भ्रसुंडह रुंड सब ॥
 हिंदवान रान भयमानं मुत्र । गहिय तेग चहुवान जव ॥छं० ६२॥
 पृथ्वीराज की बीरता का वर्णन, शाहाबुद्दीन को कमान डाल
 पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना ।

छंद भुजंगी—

गही तेन चहुवानं हिंदवानं रानं । गजं जूय परि कोप केहरि समानं ॥
 करे रुंड मुंडं करी कुंभ फारे । बरं सूर सामंत हुकि गर्जं भारे ॥ छं० ६३ ॥

करी चीह चिक्कार करि कल्प भगो । मवं तंजियं लाज' ऊमंग मग्गे ॥
वीरि गज अंध चहुआन केरो । घेरियं^१ गिरहं चिहो चक्क फेरो ॥ छं० ६४ ॥
गिरहं उडी भान अंधार रैनं । कई सूधि सुझ्झै नहीं मझिज नैनं ॥
सिरं^२ नाय कम्मानं प्रथिराज राजं । पकरिये साहि जिम कुलिगवाजं ॥

॥ छं० ६५ ॥

ले चलयो सितावी करी फारि फोजं^३ । परें मीर से पंच तहें घेत चौजं ॥
रजंहुत पंचास झुझ्झे अमोरं । बजै जीत के नह नीसान घोरं ॥ छं० ६६ ॥

पृथ्वीराज का जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना ।
बूहा—जीति भई प्रथिराज की । पकरि साह लै संग ॥
दिल्ली दिसि मारगि लगी । उतरि घाट गिर गंग ॥ छं० ६७ ॥
पद्मावती को वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के निकट
ब्रजभुजा के स्थान में पृथ्वीराज का पहुँचना ।

वर गोरी पद्मावती । गहि गोरी सुरतान ॥
निकट नगर दिल्ली गये । ब्रजभुजा चहुआन ॥ छं० ६८ ॥
लग्न साथ कर धूम धाम से बिवाह करना ।

कवित्त—बोलि विप्र सोघे लग्न । सुघ घरी परदिठिय ॥
हर बांसह मंडप बनाय । करि भांवरि गंठिय ॥
ब्रह्म वेद उचरहि । होम चौरी जु प्रति वर ॥
पद्मावती दुलहिन अनूप । दुल्लह प्रथिराज राज नर ॥
मंडयो^४ साह साहाबदी । अट्ट सहस है वर सुवर ॥
दे दान मान घट भेष की । चढ़े राज द्रुगा हुजर ॥ छं० ६९ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुलहिन के साथ
अपने महल में आना ।

कवित्त—चढ़िय राज प्रथिराज । छाड़ि साहाबदीन सुर ॥
त्रिपत सूर सामंत । बजत नीसान गजत घुर ॥
चंद्र वदनि मृग नयनि । कल ले सिर सनमुष्य जुष ॥
कनक थार अति बनाय । मोतिन बँधाय सुष ॥

१. छं०—वाल ।

२. छं०—करीयं ।

३. को०—सब ।

४. को०—में "ले चलयो निकसि सब फारि फोजं" लिखा है ।

५. छं०—इंदयो ।

मंडल भयंक वर नार सब । आनंद कंठह गाइयव ॥

ढोरंत चवर किवकर करहि । मुकुट सीस तिक जु दियव ॥छं ७०॥

महल में पहुँचने पर आनंद मनाया जाना ।

ब्रूहा —चढ़े राज दुग्गह त्रिपति । सुमत राज प्रथिराज ॥

अति अनंद आनंद सैं । हिंदवानं सिर ताज ॥ छं० ७१ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथीराज रासके श्री प्रथीराज

समुद सिखर गढ़ पद्मावती पानि ग्रहणं जुद्ध पश्चात् पाति-

साह प्रथीराज जुद्धं श्री प्रथीराज जुद्ध विजय पाति-

साह ग्रहनं मोषनं नाम विंशति प्रस्ताव

संपूर्णम् ॥



अथ प्रिया व्याह वर्णनं लिष्यते ।

(एककीसवां समय ।)

चित्तौर के रावल समर के साथ सोमेश्वर की बेटे के
विवाह की सूचना ।

कवित्त - चित्र कोट रावर नरिद । सा सिघ तुल्य बल ॥
सोमेश्वर संभरिय । राव मानिक सुभग्ग कुल ॥
मुष मंत्री कैमास । पांन अबलंबन मंडिय ॥
मास जेठ तेरसि सुमधि । ऐन उत्तर दिसि हिंडिय ॥
सुकवार सुकल तेरसि घरह । घर लिन्नी तिन बर घरह ॥
सुकलंक लगन मेवार घर । समर सिघ रावर बरह ॥ छं० १ ॥
सोमेश्वर का अपनी कन्या समर सिंह को देने का
विचार करके पत्र भेजना ।

बुहा - उत्तर दिसि आहुट्टु को । दे कग्गद लिषि बत्त ॥
सोमेश्वर कीनो मतो । भगिनि दिये प्रथु पत्त ॥ छं० २ ॥
समर सिंह के गुणों का वर्णन ।

चौपाई - प्रवत्तवै' पहुमी बल राजं । अरु जोगिंद सबन सिरतांज ॥
समर सिघ रावर वित्तिज्जं । पुत्रि प्रिया चित्रंग मुदिज्जं ॥ छं० ३ ॥

कवित्त - बर प्रब्रत वैराज । नरन उत्तिम चित्रंगी ॥
बर आहुट्टु नरेस । समर साहस अनभंगी ॥
बर मालव गुज्जर नरिद । सार बंधो बर अड्डी ॥
उंच सगपन कियै । पुत्त आवै घन अड्डी ॥
बर बीर धीर जाजुलति तप । शिवप्रमाद अविचल घरह ॥
प्रियकज्ज अज्ज मन संभरो । सुनि संमर कीजै बरह ॥ छं० ४ ॥

बुहा - सोमेश्वर नंदन मतो । पुच्छि कन्ह चहुआन ॥
आदि धंम घर पंथ ए । हिंदवान कुल भान ॥ छं० ५ ॥

कवित्त - हिंदवान कुल भान । धंम रष्वन सुवेद बर ॥
लै मुंजांनी ढाल । जुद्धम संग्राम सार गुर ॥
सो चित्रंग नरिद । प्रिया दीनी प्रथिराजं ॥
हेम हथं गय अधिय । देन दिल्लीय सब साजं ॥

गरु अत्त बत्त गहिलौत गुर । सिंगी नाद निसान बर ॥
कालंक राइ कुप्पन बिरद । महन रंभ चाहंत वर ॥ छं० ६ ॥
बूहा - सो भागिनी दीनी प्रिया । सकल रूप गुन लच्छि ॥
चित्रंगी रावर समर । अंगन अवृत सु अच्छि ॥ छं० ७ ॥
पत्र लेकर गुरुराम पुरोहित और कन्ह चौहान का जाना ।
कुंडलिया - बाल वेस भागिनी प्रिया । अरु समर केलि चित्रंग ॥
राज गुरू गुरुराम सम । ताजी तेरह तुंग ॥
ताजी तेरह तुंग । मुत्ति नग माल सुरंगी ॥
बर दाहिम कैमास । बीर बंधव मुकि रंगी ॥
नृप कग्गद गहि ह्यथ । कन्ह अग्या बर एसं ॥
नर उत्तिम चित्रंग । दई बर बाल सुवेसं ॥ छं० ८ ॥

पूथा कुंभरि के रूप का वर्णन ।

बूहा - बर बरनल भगिनी प्रिया । कहि न परै कवि चंद ॥
मानौ रति की रूप लै । घरि आई मुष इंद्र ॥ छं० ९ ॥
चोपाई - सुफल दियो फल लड्यो नाहि । इद्र सुबल बलि नवला वाहि ॥
सीस मूर मुष भगनि कुबेर । इन ममानह सुदर हेर ॥ छं० १० ॥
पूथा कुंभरि और समरसिंह के उपयुक्त दम्पति
होने का वर्णन ।

कवित्त - स्वाहा ज्यो ग्रह अगनि । मीय ग्रह राम काम रति ॥
नल दमयंत सयोग । द्रुपद कन्या अरजुनपति ॥
इद्र मची वा जोग । जोग गवरिय अरु शंकर ॥
भानर नास्तिनि कन्ह । सोम रोहिनी नारि घर ॥
फल अप्प ह्यथ सो दीन नृप । लच्छि महुज लच्छी सुनन ॥
दुज राज राम ग्रह लगन लिषि । मद्धि महरत चिति मन ॥ छं० ११ ॥
इंद्र जोग पंचमी । सुबर पंचमि अधिकारी ॥
भोम बीय नृप थान । सूर ग्रह केत उचारी ॥
इम सुमंत ग्रह लगन । व्याह दंपति दपति गन ॥
और सबे सुभ जोग । होइ सय जात धान धन ॥
इक मास लगन बर थप्पि कै । दिल्ली वै दिल्ली गयो ॥
सुरतान दंड लीनों सुकर । सुकर धंभ कारज ठयो ॥ छं० १२ ॥
लगन का शोभा जाना ।

बूहा - थप्पि सु लगनह राज ग्रह । सोधि पुरान उरान ॥
बाजपेय मुष उद्धरे । प्रिया व्याह उनमान ॥ छं० १३ ॥

कवि चंद्र कहता है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं
 सकता पर जहाँ तक बर्नंगा उठा न रक्खूंगा ।
 बहुत मोहि कहत न बने । बरनत कविन कठोर ॥
 गुन मैं बोरिन अप्पि हों । कछु बरनिहों सुधोर ॥ छं० १४ ॥
 स्त्रियों के शरीर की उपमाओं का वर्णन ।

कवित्त बिधानजाति—

अहि ससि सन उतंग । पिक्क उर केहरि करिवर ॥
 अलक बयन चष चंच । जीह कटि जघन बराबर ॥
 किस्न सकल चल अचल । अदिठ अलसंत चलंतह ॥
 चंदन नभ वन भवन । अंब गिरि व्यंज बसंतह ॥
 सुमनि सरद भय भीत निसि । रति पति लंघत मंदगति ॥
 अबला सुअंग ओपम इतिय । कही चंद इन परि विगति ॥ छं० १५ ॥

डूहा—को कवि ओरम बाल की । कहिवे कों समरथ्य ॥

सब संयोग बनाइ कै । काम चढघौ मनुरथ्य ॥ छं० १६ ॥
 पूया कुंघरि के रूप तथा नव यौवनावस्था का वर्णन ।

छंद मोतीदाम—

बरनों ससि जुब्बन की वय संधि । तिनं उपमा बरनी बल बंधि ॥
 मिली सिसरं रिति राजह जोर । चंप्यौ न तनं विपनं नह कोर ॥ छं० १७ ॥
 कवे बलि चंचलता चलि जाइ । धरे कबहुं धन धीरज पाइ ॥
 तिनं उपमा बरनी कविचाई । पदावत काम नई गत ताई ॥ छं० १८ ॥
 करं सिर ठंकि सैवारत बार । सिपावत काम मनो चट सार ॥
 दुती उपमा बरने कवि चंद । चले घट रूप दिखावत इंद ॥ छं० १९ ॥
 त्रती उपमा बरनी कवि चाह । लरें दुअ कोर मनो समि राह ॥
 उठे धन घोर विराजत वाम । धरें मनु हाटक सालिग राम ॥ छं० २० ॥
 किघों फल तिदुअ कंचन जान । धरे मनु भ्रंग सुधा रस पान ॥
 तुछं रूम राजिय राजत वाम । पपीलकि सोवन पंभ विश्राम ॥ छं० २१ ॥
 जु बंकिय भोंह न तुच्छ मरूर । उठ मनु मच्छ धनक अंकूर ॥
 सुबालय उष्टत मोर सुदीस । मिले जनु मगल है ससि रीस ॥ छं० २२ ॥
 कहूं उठि लागित मोर सुसीर । उठे मनु अंकुर काम सगीर ॥
 तुछं द्रग सोभत कज्जल ताम । चढ़े जनु वाहन बत्तिय काम ॥ छं० २३ ॥
 दुहें कुच बीच सरोमय तट्ट । लगी मृग मद्दय छीन सुघट्ट ॥
 तिनं उपमा बरनी कवि रंग । पिपे जनु कालिय के सुतभ्रंग ॥ छं० २४ ॥
 कवे मिलि श्रोंग द्रिगस्सुतु लेहि । मनो सिसु जुब्बन तारिय देहि ॥
 सविभ्रम हाइ उभारित चक्र । इमं द्रिग इष्य कटाच्छ सुवक्र ॥ छं० २५ ॥

इते गुन लच्छिन तच्छिन बाल । करी मनो काम सिरी रति माल ॥
भई जब बाल चढंतय बेस । दई तब पिथ्य नरिद गिरेस ॥ छं० २६ ॥
रावल समर सिंह का गुग वर्णन ।

दूहा— नर नरिद जोगिद पति । मुंजी ढाल विरद ॥

उडगन निकट नरिद विय । सेवत रहत गिरछ ॥ छं० २७ ॥*

कवित्त - सिंगी रा अबधूत । बीर चिचंग नरिदं ॥

कमल पानि सारथ्य । अरुन तेज कहि चंदं ॥

बर कप्पन कालकं । विरद साहन सुरतानं ॥

बर प्रब्वत वैराज । भोग जोगह बड़ दानं ॥

सो महन रंभ आरंभवे । एक रंग रती रहै ॥

कलिकाल घाम छिप्य नही । झलहलंत दुज्जन दहै ॥ छं० २८ ॥

श्रीफल बेकर पुरोहित को तिलक चढ़ाने को भोजना और इस संबन्ध से
अपने को बड़ भागी मानना ।

दूहा— फल श्रीफल दुज हथ्य कै । जाइ संपती देव ॥

आज हनदे पाप हम । मिलि चित्रगी सेव ॥ छं० २९ ॥

भोजन भाव अनंत किय । दिसि उत्तर ग्रह रपिय ॥

पाप जन्म चहुआन की । गय दुज राज सु इप्पि ॥ छं० ३० ॥

पुरोहित का चित्तौर में पट्ट चकर बसंत पंचमी को तिलक देना ।

कवित्त— आज हनदे पाप । समर संमुह ग्रह भग्गे ॥

वय अक्रम मन नट्ठए^१ । क्रम सुकृत^२ फल जग्गे ॥

पंच दिवस रहि थान । जंपि दुज राज सु आइय ॥

बर बसंत बैसाष । लगन पंचमि थिर पाइय ॥

चतुरंग लच्छि चिचंक दिय । छुयन राम बिप्रह मुतह ॥

जाने कि अगिग समसान की । देखि सुतन लग्गे मु जंह ॥ छं० ३१ ॥

पृथ्वीराज के विवाह की तयारी करने का वर्णन ।

बाजपेय राज सू । होइ कलजुग धम्म गुर ॥

और जगनि ना होई । व्याह मंडयो सुध्रम धुर ॥

रथ चौसठि प्रमान । रथ बर जोग प्रमानं ॥

बार बार पर बाज । बीर सज्जे उनमानं ॥

सा इक्क इक्क कर ना किरनि । सत्त सत्त सो बेद^३ विधि ॥

चित्रंग राव रावर सुध्रम । करन मती प्रथिराज सिधि ॥ छं० ३२ ॥

* यह दोहा मो० में नहीं है

१. क० मो०—अक्रम नट्ठए ।

२. को० क० ए० अकृत ।

३. मो०—बेद ।

हेम हयं गय जुगति । सचे मिष्टान पान बर ॥
 बर कुबेर लक्ष्मिन । पार प्रथिराज राज नर ॥
 चाव हिसि बर गान । दान चाव हिसि अप्पे ॥
 ब्रह्म वेद क्रम छेद । मूर नहि सोरथ थप्पे ॥
 जे जोग भोग जोगिंद नव । सो उगगत महि भुल्लई ॥
 प्रथिराज राज राजन बली । बलिन जग सम तुल्लई ॥ छं० ३३ ॥

बुहा - धरम सुधिर राजन बली । देव देव दुति चाव ॥

चाव हिसि सो देषियै । लच्छि मोल लषि भाव ॥ छं० ३४ ॥

छंद मोतीदाम - जयं जय छंद जयं गुन रूप । कटावत हेम सु बारह भूप ॥
 दिसं दिसि पूरि नृपं नृप थांन । मनो विधि जग कि देवन थांन ॥ छं० ३५ ॥
 रसं रस तोरन बंधत बार । मनो नट वत्त कला गुन चार ॥
 सुभै अति सोभ सुभद्रह हेम । मनो बर मेर बिराजत तेम ॥ छं० ३६ ॥
 सबै बर बीर फिरै जिहि पास । मनो बर भान कलान प्रकास ॥
 कड़े गर सुंदरि नान प्रकार । मनो ससि भान उगे इक बार ॥ छं० ३७ ॥
 बिराजत मुत्तिन बंदरवार । मनो भुअ आन मयूष प्रचार ॥
 ग्रहं ग्रह उंच सु पंति विसाल । मनो कयलासय सोभति हाल ॥ छं० ३८ ॥
 कथा कविचंद सु उप्पम थोर । बिराजत पतिय कंतिय चोर ॥
 घरें घर अंम्रत पच प्रकार । जचें तिन देत संतोष अहार ॥ छं० ३९ ॥
 टगं टग लगिय दिष्ट प्रकार । दिये चहुआंन कलाधर सार ॥
 भली विधि रूप प्रकार प्रकार । सुभै जनु इंद्र सु जातिह द्वार ॥ छं० ४० ॥

कवित्त - नहिन हेम पर भास । लच्छि कुबेर लच्छि गुन ॥

थान थांन नवनिद्ध । देव जंपै सुदेव मन ॥

अनिम महिम गरिमास । लभि देवात मद्धिधिय ॥

अष्ट मिद्धि नव निद्धि । राज द्वारह वर बंधिय ॥

जीतिय जितिक सुरतांन निधि । प्रिया व्याह त्रिमत् करै ॥

धनि धनि धन नव पंड हुअ । लंक पंक गड्डिय डरै ॥ छं० ४१ ॥

पृथ्वीराज ने ऐसी तयारी की मानो इन्द्रपुरी है ।

साटक - हेम हेमय द्वार दाहन गनं । दीसंत लच्छी बरं ॥

पंच दहन सु क्यारि रत्न गुन ए । सिद्धात सारं गुरं ॥

संभया दाहन तारु नैव तनयं । धन पौर संघं गुनं ॥

जानिइत्रै मुर लोह इंद्र उदितं । धामं सचीवं बरं ॥ छं० ४२ ॥

पृथ्वीराज का चारो दिशा में निमन्त्रण भोजना, घर घर में तयारी होन इ
छंद हनुफाल - धनि धंम धनि प्रथिराज । गुन दच्छि लच्छि विराज ॥

मधि जमुन में यों धाम । सुर नाक सुर विश्राम ॥ छं० ४३ ॥

घज इंव फरहर रूप । सुरतान पट्टय भूप ॥

त्रैलोक न्योतें काज । मनो देव व्याह विराज ॥ छं० ४४ ॥

विधि वरन वरन सु धाम । कुब्जेर बरविय काम ॥

बर धंम जगि प्रकार । सम दान विनयह सार ॥ छं० ४५ ॥

फिरि राज राजन चाल । लछि देव एवति पाल ॥

षट पाल कै प्रथु पाल । ॥ छं० ४६ ॥

मति धंम भूपति साज । आनंद उछव विराज ॥

जगि जोग जुगनि नैर । उच्छाह घर घर कैर ॥ छं० ४७ ॥

बिधि भान सुरपति भान । चहुआन तिन सम मान ॥

नब नेह ग्रह ग्रह दान । कवि करै कौन बपान ॥ छं० ४८ ॥

बर जीह फनपति होइ । चहुआन व्याहक जोइ ॥ छं० ४९ ॥

हाथी घोड़े सेना घाबि की तयारी का वर्णन ।

छंद वृद्धनाराच - परट्टि सेन सज्जि वीर बज्जए निसानयं ॥

नाराच छंद चंद जपि पिगलं प्रमानयं ।

गजं गजं हिलं मल चला चलं गरिट्टयं ॥

कसंमसं उकस्सि सेस कच्छ पिठु उट्टयं ॥ छं० ५० ॥

पर्यौ मुभोम भार सो वराह कंध उन्नयं ॥

चले सयन्न बंधि भूप चंद जपि बोलयं ॥

मनों दसति काज सेन मेलि इंद्र तोलयं ॥

दुरंत चौर गज्ज सीसता सिंदूर राजयं ॥ छं० ५१ ॥

मनों त्रिजाम कंठ सूर चंद बंधि लाजयं ॥

.....

फिरंत डोरि कुंडली मुबाज राज दिषही ॥

कै हृथ्य भोर चंद कब्बि ता भ्रमंत पिप्पही ॥ छं० ५२ ॥

सु नष्वई सुरंग घाप बाज ताज उट्टही ॥

मनों कि डोरि चक्करी सुहृथ्य हृथ्य नष्वही ॥

सुबीयता सुरंग चंद उप्पमा सु रई ॥

मनोकि तार नम्भतेय काल तेज तुट्टई ॥ छं० ५३ ॥

लजै भजै मनं गतीय पुब्बता कबी कहै ॥

सु अंधिका कुरंग गति भान देषिता रहै ॥

रज रजं जराइ राइ छित्तयं किरावलं ॥

उपम्म चंद कडिबता कही तहां उतावलं ॥ छं० ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तयारी का वर्णन ।

कवित्त — पंच राइ पंचाल । लिन्न वैराट बद्ध वर ॥

जैत सींह भोंहा भुआल । का कन्ह नाह नर ॥

रा पञ्जून नरिद^१ । पांन ठंठरिय सिधनग ॥

दह रावत आजांन । बाह बंधव सुवन्न अग ॥

बंधन सुमौर मेवार पति । अति उछाह आनंद धरि ॥

संजुरिय^२ जांन छत्रन सहस । सहस अद्ध बञ्जन सुधरि ॥ छं० ५५ ॥

बुद्धा — जस वेली वर हृथ्य लै । फल पुच्छै चित रंग ॥

बर सोमेसर हृथ्य दै । ग्रह सज्जै रस जंग ॥ छं० ५६ ॥

रावल समर सिंह का ब्याह के लिये पहुँचना, रावल की शोभा वर्णन ।

आयो बर रावर समर । तोरन संभरि वार ॥

बाल वेस बनिता बनी । मनो संग रति मार ॥ छं० ५७ ॥

सूर रूप रात्रर समर । वेस बाल सत पत्र ॥

प्रीत चंद कमनिय कुमुद । परस सरस सित^३ रत्त ॥ छं० ५८ ॥

नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा वर्णन ।

छंद मोतीदाम —

बढ़ी घर जाहिन बाल^४ बिसाल । रही लघुवेस लगी चित्रसाल ॥

तनं सुध बालय अबल लेहि । चयं चपला कुलटा गति केहि ॥ छं० ५९ ॥

हलावत चंचल अंचल नारि । मनो विधि देहि कटाच्छन गारि ॥

बंघे सुर नारि कयं सुर रंग । उरि निरखे घन विद्युत अंग^५ ॥ छं० ६० ॥

झमं झम होई सुहेम किरन्न । सती पर होइ मयूष अरुन्न^६ ॥

मची बर बीरन पीकह^७ कौच । बरष्य कि मंगल सूर सु बीच ॥ छं० ६१ ॥

झमं झम होत करं नप पान । परी छवि होइ रवी मसि जानि ॥

तिन मुष यो नष में झलकाइ । न दिष्यहि उंच रहै ललचाय ॥ छं० ६२ ॥

दियै नग चीर चिराकन वाम । रचै जनु दीपक कामय स्याम ॥

सु उज्जल भोन चिराकनि जोति । फिरै तहां बाल जराइन कोति ॥ छं० ६३ ॥

१. क० ए०—रा पञ्जून पूरन । २ मो०—संमिलिय ।

३. मो०—हिततथ । ४ मो०—वाम ।

५. ए० क० को०—दुरि देखत मेघ नडिन मु अंग । ६. मो०—अरंग ।

७. मो०—बीरह पीकन ।

उदै जनु लिच्छमी कंति ^१विगास । किधौ तप तेज किराज विलास ॥
कहै कवि चंद उधम्म प्रकास । बन्यौ जनु प्रप्पन ^२तेज विलास ॥छं० ६४॥

समरसिंह के पहुं बने पर मंगलाचार होना ।

कवित्त—बर कलस्स बर बंदि । बंदि तरुनिय सर लिन्नी ॥

ग्रह सुरंग कवि चंद । तहां उप्पम बर दिन्नी ॥

धन चंदन बर पठु । सिद्धिय सोभा सुफटिक मनि ॥

धन प्रवाल पुंभिय विलास । सिर सोभ सुरंग फुनि ॥

उत्तरिय बीर रावर समर । बर जोगिंद नरिंद गति ॥

शृंगार बाल भूषन कहीं । जु कछु चंद बरदाइ मति ॥छं० ६५॥

द्रुहा—स्याम बेस नन बालभय । घटि न कछूब किसोर ॥

दोष बाल बरनत कविय । भयौ भेर घर चौर ॥ छं० ६६ ॥

बर सुवस्त्र तजि बाल नें । सैसब ^३मिस सुंझारि ॥

अब भूषन जब ग्रह करहि । जोवन चढत सवारि ॥ छं० ६७ ॥

शृंगार का वर्णन ।

छंद त्रोटक—

तजि मञ्जन सज्जि सिंगार अली । प्रगटी जनु कंदप जोति कली ॥

जुसैवारिय केस सुरंग सुगंध । तिनं बर गुथि प्रसून सु बंधि ॥ छं० ६८ ॥

तिनं उपमा सु कहै कवि सुद्ध । लग्यौ ससि राह अध्रमय ^४जुद्ध ॥

चलें अलकें अलि चंचल घट्ट । लगी जनु कालिय नागिनि पट्ट ॥ छं० ६९ ॥

जर्यौ ससि फूल धर्यौ मनिबद्ध । उग्यौ गुर देव किधौ निसि अद्ध ॥

बियं उपमा कबरी सु अलप्प । चढे मनु ^५मेर ससी लय श्रप्प ॥ छं० ७० ॥

सी मंति सुमुत्तिय बंधि संवारि । तिनं उपमा बरनी सु विचारि ॥

परी रवि होड मयूषन तार । भए जनु सिद्ध उघातम धार ॥ छं० ७१ ॥

बनी कबरी बर पुत्तरि बांम । अध्यातम पाठि पढावत कांम ॥

धर्यौ बर भाल तिलक्क मिलाइ । मनौ ससि रोहिनि आनि मिलाइ ॥

॥ छं० ७२ ॥

मनौ ससि बीयक तीय समान । तिनं सिरसाइ लिलाट सुजांन ^६ ॥

दुती दुतियं बरनो कवि चंद । दुन्यौ छवि देखि सरहू को इंद ॥ छं० ७३ ॥

बनी बर भौंह सु बकिय एह । मनौ धनु कांम घर विन जेह ॥

कहौ वर नासिक ओपम एह । सु काम भवन्न कि दीरु तेह ॥ छं० ७४ ॥

१. ए०—विगास ।

२. मो०—दर्पण ।

३. मो०—विमाक ।

४. मो०—शोणव ।

५. मो०—अध्रमय ।

६. मो०—मनो ।

७. ए०—सुजाति ।

द्रगं उपमा दुति यौ दमकै । सु मनो सुत षंजन के षमकै ॥
 जु दिषै वर भाइ दुलोचन कोर । मुचावत काम कमान के जोर ॥छं०७५॥
 शार्टकन की उपमा इतनी । जु कही कवि चंद सुरंग घनी ॥
 जु सुन्यौ रवि राह ग्रह्यौ ससि है । सु फिरै दुहु बीच सहायक ह्वै ॥छं०७६॥
 उपमा सु कपोलन की चिलकै । जु मनो ससि ह्वै रवि में झलकै ॥
 जुटि गंठिग मुत्तिय पंतिन की । तिनकी उपमा कवि नै मनकी ॥छं० ७७॥
 दुअ पास कपोलन तेज छुट्यौ । मनो तारक लै ससि उगि उठ्यौ ॥
 जु चिबुक्कन की उपमा हिलज्यौ । मनो भ्रंग सुता सितपत्र तज्यौ ॥
 कल ग्रीव चिबल्लिय रेष वन । सु ग्रह्यौ मनु कन्हर पंच जन ॥
 विय बाल सुमालन लाल सजै । सुघसी जनु भारति नभ तजै ॥छं० ७९॥
 गुंथी पट स्याम सु मुत्तिय माल । भयो जनु तीरथ राज विसाल ॥
 उठी पट कुट्टिय कंचुकि वाम । कि जीयन को त्रिपुरं चलि काम ॥छं०८०॥
 कछू छबि छत्तिय की वरन । सु रह्यौ मनो काम तिन सरन ॥
 बर लंकिय लंकय सिध कितौ । वर मुट्टिय मांहि समाइ तितौ ॥ छं० ८१ ॥
 * पसरे नन द्रष्टि न ठौर रुकै । *मृगतिसनह देषि मनो सु चुकै ॥
 कटि मेषल उप्पम एह घरं । मनो नौग्रह सिध सहाइ बरं ॥ छं० ८२ ॥
 सुभंत समुपित अंगुरि तत्र । मिले गुरु मंगल हस्तनि षत्र ॥
 बनी कर पौंचिय पट्टय स्याम । तिन उपमा बरनी वर ताम ॥ छं० ८३ ॥
 लटकै बर अंग सु फूदन लाष । झुलै मनु नागिनि चंदन साष ॥
 बरनों मनि बद्धि बढंत नितंब । सुभे जनु उज्जल द्वै रवि बिब ॥छं० ८४॥
 सकोमल जंध सु रंग सुदार । भ्रमी मन चित षरादिय मार ॥
 सजे बहु वार सिगार सुरत्ति । चली तव हंस उथप्पन गति ॥ छं० ८५ ॥
 सु एदिय उप्पमता कवि एह । रची जनु कौरिय कुंद नरेह ॥
 बरने नख की उपमा कविता । सुजरे मनु कुंदन मुत्तियता ॥ छं० ८६ ॥
 †जल बूंद पुहप्प कि द्रप्पन दुत्ति । †कि तारकि तेज कि होर प्रभत्ति ॥
 बर गोप्प सुगंध सुजानियनं । ग्रगटै बर वास सदेव घनं ॥ छं० ८७ ॥
 षट दून चबग्गुन में वरनं । सिनगार अभूषन ए कहनं ॥
 तब सज्जिय बालत मोर मुखं । उपमा कविचंद कही मुखं ॥ छं० ८८ ॥
 इन भाइ सुमुत्तिय गुंज^३ बहोइ । त्रिगं अघरं प्रतिबिब सजोइ ॥
 करै रंगरत्त दुकूल सु ओर । झुलै मुख ऊरघ पाइ झकोर ॥ छं० ८९ ॥

१. को०—प्रयाग ।

* ये दो पंक्तियाँ शो०—प्रति में नहीं हैं ।

२. प्रो०—कवितास ।

† ये दो पंक्तियाँ शो०—प्रति में नहीं हैं ।

३. शो०—नख ।

बन्यो मनबंछ मनोरथ जंम । करे जह चंद जु धूरिक क्रम्म ॥
 मिले कि कंहू अधरा रस पान । कहै कविचंद सु जीरन जानि ॥ छं० ९० ॥
 सु देखि कह्यो कबिरूप अभ्यास । मनो उठई मकरंद सुवास ॥
 सजे षट दून अभूषन बाल । मनो करि काम करी रात माल ॥ छं० ९१ ॥
 सु लज्ज सु संकर सों मन अंध । मनो अरनामद भ्रमग सुबंध ॥
 धरघो तन कौरव वस्त्र कुँआरि । मंडी जनु संभ मनंमथ रारि ॥ छं० ९२ ॥

पांच सौ बैदिक पंडित, दो सहस्र कोविद, एक सहस्र मागध
 आदि गुण गाते हुए, ऐसी धूमधाम से राबल
 समरसिंह का मंडप में आना ।

कवित्त— सय सुपंच वर विप्र । बेद मंत्र अधिकारिय ॥
 उभय सहस कोविद् । छंद तक्कह^१ अनुसारिय ॥
 सहस एक मागध सु । सित्त पौरांन पवित्रिय^२ ॥
 सहस अट्टु डाहालगत । गाइन सुर जित्तिय ॥
 उडिरेन धेन गोधूल कह । सहस दोष कट्टन धरिय ॥
 संभरिय ग्रेह^३ आहुट्टु पति । मिलि विधान^४ मंडप भरिय ॥ छं० ९३ ॥
 बिबाह मंडप की शोभा का वर्णन ।

छंद नाराच— विधान धान मंडपं । जवांन जग^५ पन्नयं ॥
 बिपण्ष चारि कित्तनं । समर्घ देव रत्तनं^६ ॥ छं० ९४ ॥
 धुनह् धुंम्म सालियं । अषंड लंन वालियं ॥
 प्रजान पुन्य पानयं । सु पंच कोटि दानयं ॥
 सभूत भेम लच्छिनं । अभूत दान दच्छिनं ॥ छं० ९५ ॥
 दमित्त काम लंबरं । कलक कित्ति रावरं ॥ छं० ९६ ॥
 भ्रमेन भूमि भारियं । ग्रहंत पांनि धारियं ॥
 कुसंभ चीर गंठियं । प्रथा प्रसंग पट्टियं ॥ छं० ९७ ॥
 सु सदियं जयं जयं । सु सद विप्रयं लयं ॥
 अरुन्नयौ सु उदयं । सिकार सदयं सयं ॥ छं० ९८ ॥
 अविज्ज सिद्ध चारनं । बिचार बार बारनं ॥ छं० ९९ ॥

दूहा— परनि बीर रावर समर । बहुत कहूं रस जोह ॥
 कवि वर बरनत ना बनत । और सुभष बहु होह ॥ छं० १०० ॥

१. ए० को० छं०—सर्क ।

२. मो०—पवित्तिय ।

३. मो०—एह ।

४. ए०—बिधान ।

५. मो०—जय ।

६. यह तुक मो०—में नहीं है ।

करे चंद बरदाइ दुहुं । बार बार मनुहार ॥
 राज राज ढिग ढिग फिरै । मनो समहु रवितार ॥ छं० १०१ ॥
 कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहाँ विवाह मंडप में
 इन्द्राविक बेवता जय जय कर रहे हैं और लगन का
 समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है ।

कवित्त — चौहानन के ग्रेह । इंद्र जचि^१ होय अग्नि बर ॥
 अष्ट देव सत सील । नाम^२ संतोष मंत्र बर ॥
 सहस गयन बर राज । घीर ढिल्ली अधिकारिय ॥
 जच्छ देव गंधर्व । जयति जै जै उच्चारिय ॥
 दिव देव लगन आवै घरी । तिम तिम बाढै पेम रस ॥
 ज्यों चढ़े समुद हिल्लोर बर । तिम सु बीर बढूढति जस ॥ छं० १०२ ॥
 दान मकल सामंत । न्यांत अगै अधिकारिय ॥
 इंद्र साज कुम्बेर । इंद्र वासम न विचारिय^३ ॥
 बचन रचन सचि कहहि । देव सचि कहै ग्यान सधि ॥
 अष्ट जोग भुल्लै सभोग । निरवंत सकल सिधि ॥
 जे जे नरिद संभरि धनी । संभरि विधि संभरि चरित ॥
 भूपाल बीर दरबार बर । तिहित देव लागे सुगत ॥ छं० १०३ ॥
 सामंतों और राजाओं ने जो जो बहेज दिया उसका वर्णन ।

छंद भुजंगी—

प्रयंमं सुकन्हं निवंतयो सु राजं । कही उप्पमा चंद कम्बीति साजं ॥
 शतं^४ एक बाजी करी पंच दूनं । दियो राज कन्हं निवती स ऊनं ॥ छं० १०४ ॥
 लछी वस्त्र हेमं नगं पारि पारं । तिनं देषते देव गती विचारं ॥
 दियं निहुरं राइ रद्वीर राजं । भुजंगादि भुल्लै कहै सब्ब साजं ॥ छं० १०५ ॥
 दियं बंध राजं सलष्यं पवारं । धनं राइ कुम्बेर लक्ष्मै न पारं ॥
 महा दंत दंतीन की पंति बंधी । दरब्बार मानों नगं जोति संधी ॥ छं० १०६ ॥
 दियो जाम जहों सु लदो जुवानं । सहसं दसं हेम गज एक पानं ॥
 दियो राज पीबी प्रसंगति बीरं^५ । उभै इन हृषी ह्यं सत्त सूरं ॥ छं० १०७ ॥
 रजनी सु बस्त्रं अनेकं प्रकारं । विषं बीर बीरं महा बीर सारं ॥
 दियो राज गौइंद आहुट्टु राजं । दियं तीस हृषी महातेज साजं ॥ छं० १०८ ॥

१. मो० बव ।

२. ए०—नास ।

३. मो०—प्रति में "दान बरवत जजवारिय" पाठ है ।

४. को० छ० ए०—विष ।

५. को०—पीरं ।

इकं माल मुती उतंगं सरूपं । तिनं देखतें भानं क्रनं न भूपं ॥
 अतताइ बीयी लियो नाहि राजं । हुतो ईस भक्तं उदै देव साजं ॥छं०१०९॥
 त्रिया रूप आगें महा पाव लच्छी । तिनं राज राजं निरष्पी अनछी ॥
 दिगो राम राजं रबुभं व वीर । तिनें पार कुम्बेर लम्भै न तीरं ॥छं०११०॥
 उमै सत बाजी उमै सत हृथी । तिनं सथ्य एकं किरन्नी बिरष्पी ॥
 उऐ एइ राजं दियो एक भानं । दसं तेज राकी एराकी प्रमानं ॥ छं०१११॥
 दिथं सत बंधं कनकू बिराजं । उमै सहस हेमं इकं बाज राजं ॥
 क्रियो राज न्योने अजमेर वीरं । सदा सागरं गौरयं लाज नीरं ॥छं०११२॥
 दिऐ पंच बाजी सुरंगं तुरवकी । जिने घावतें बाइ की गति थककी ॥
 दिथी राज बंदं पुंडीरं सु वीरं । महा हेम सहसं उमै बाज तीरं ॥छं० १३॥
 दिथी राज कैमाम न्योनी नरिदं । घरं पंचमी भाग लच्छी स व्यंदं ॥
 जिनी राज राजं दरब्बार हेमं । तितो पंचमी भाग अप्पी सु तेमं॥छं०११४॥
 दिगो बाइ चामंड लच्छि प्रकारं । नवं निद्धि सिद्धं सुलम्भै न पारं ॥
 रह्यो एक वस्त्रं उमै पंच बाजी।दियो राजराजिद राजिद साजी॥छं०११५॥
 दिगो अन्हनं अंता स्ती प्रकारं । तिऐ तात के नग लिल्ले सुधारं ॥
 हरं हेर रूपं गरुडं मु लच्छी । जिनं देखतें इंद्र को प्रब गच्छी ॥छं०११६॥
 दिथी दान सूछम्भं सादल्ल मोती । इकं बाज वीरं रजं पंच कोरी ॥
 दिगो राज बंदेन भोंडा बिरारं।तिनं न्योत की कोइ लम्भै न पारं॥छं०११७॥
 नं पंच मुनी इथी अहु पाठा । जिनें दब को छेह आवै न पाला ॥
 बेंने माहि गोरी लही तस्सवीरं । दई राज चौहांन न्योतें सरीरं ॥छं०११८॥
 सतं पंच बाजी सतं अहु हृथी । तिनं देखतें तेज कुम्बेर नथी ॥
 दिथी राज जंत्राल ब्रह्मों नरिदं । तिनें नाम भीमं महातेज कंदं ॥छं० ११९ ॥
 दमं बाज पंच इकं मुति मालं । तिनं नेज आवुत्त रवि किरन झालं ॥
 बतं पीनि चारं सतं समरकडी।गुरं राम दीयी मनी राज इंदी ॥छं०१२०॥
 लियो ना सुराजं कडू नाहि रष्पी । पछे धमं राजं सु राजं बिसष्पी ॥
 दिथी वीर बालुक बावार वीरं । सिरं काज राजं सुभारथ्य भीरं ॥

॥ छं० १२१ ॥

नृपं हृष्य देतं सु सेवकक मंडै । महा छत्र छपी न छत्रीन बंडे ॥

हृष्यो राज प्रधिराज ई हृष्य तारी । तिनं भारती कौन आवै प्रकारी ॥

॥ छं० १२२ ॥

१. ए० को० छं०- में "तिनं अं व अं व बिरष्पी सुलच्छी पाठ है ।

२. ए को० छं०-सूछल ।

३. मो०-नवं ।

४. को०-बाळ ।

५. ए० छं० बीवं ।

दियो टांक चाटा अपल्ल प्रकारं । इकं बाज तेजं मनो अग्नि सारं ॥
 दियो बग्गरी देव देवाधि दानं । सहस्संत बाजी दियं बाइ पानं ॥छं०१२३॥
 दियं अंबरं छाव सै पंच भूनं^१ । तिनं तेज आवुअ देवंत भूनं ॥
 बुल्यो सर्वं सामंत को गर्भं भारी । पछे दोन सीसं दियं हृथ्यतारी ॥छं०१२४॥
 दियो राज हम्मीर हाहुल्लि इदं । तहां कम्बि चंदं उपम्मा सु छंदं ॥
 मृगं नाभि कप्पूरयं गुंट बाजी । दियो मुद्ध^२ मुष्टं तनं तेज साजी ॥छं०१२५॥
 इकं कास मीरं पची संती वंभं । इकं भद्र जाती सु हृथ्यी अवंभं ॥
 सबं सट्ठि हज्जार भारं प्रमानं । दियो चारके कष्ट सोभिन्नं दानं ॥छं०१२६॥
 दइ एक मालं सुमुत्ती सुरंगं । दिनं एक को मौल आवै सुभंगं ॥
 दियो नीति रायं सुवित्रीय दानं । विज्ञथो राज चहुवान बल्यो न पानं ॥
 ॥ छं० १२७ ॥

दई भानं भट्टी निधी ताप कारं । उभे एक बाजी तुछं द्रव्य धारं ॥
 दियो बीर पाहार न्योतो प्रमानं । तिनं दान कैमास को आह पानं ॥
 ॥ छं० १२८ ॥

मुरं दोइ बाजी सु तत्त प्रकारं । दई लण्व भूनं अघं तानि तारं ॥
 दियं अल्हनं दानयं मत्ति घट्टी । इकं बाज रूपं अघं सहस पट्टी ॥छं० १२९॥
 इतो अब्ब सामंत दीनो प्रमानं । सगा रथ्यदानं करै को बधानं ॥छं०१३०॥
 कवित्त—जालंधर बर बाइ । बीर थट्टा मुलतानी ॥
 बंग तिलंगी तुच्छ । कारनही निद्वानी ॥
 बर गोत्तम दिसि गंग पार । परबत दिसि राजं ॥
 मारु मालव राज । बीर बीरह गति राजं ॥
 कुंकुन सकुंब कार्लिंग दिसि । कंदलेस कछ अच्छु गति ॥
 नूपराज राज राजन बली । सुबर बीर जा बीर मति ॥छं०१३१॥
 पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है
 दोनों की प्रशंसा ।

कवित्त—बलिय राज प्रथिराज । सुभ्रत सगपन सु द्रष्ट^३ गति ॥
 न्रम्बल को बल राह । सबर बीरह सुबीर मति ॥
 मुत्त मत्त रजपूत । फिरे चाव दिसि धारं ॥
 अंग अंग तनु छुलै । क्रम्म सा क्रम्मय सारं ॥
 मति गरुब राज राजन बली । धरै अंध लम्भ सुधर ॥
 चित्रंग राव रावर बली । उंच सम्पन तत्त बर ॥ छं० १३२ ॥

१. ए०—भूनं ।

२. मो०—धुमीव ।

३. मो०—दृष्ट ।

कवित्त - अति उदार पट्ट पंगं । सुनिय जग बत्त श्रवन्नं ॥
 बलिय भाव आदरन । पर्व सम पवित समन्नं ॥
 बहुरि गरुड तौअर त्रिनेत । मानव मातुल गुर ॥
 तिहित राज चित्तयौ । ध्रंम मूरति बिवाह धुर ॥
 इक मात पुत्र आनंग वर । द्वै भगनी द्वै पुत्र जनि ॥
 संसार संभरिय राज गुर । भए सलष या परि सुभनि ॥ छं० १३३ ॥

पृथ्वीराज और पृथाबाई के नाना अनंगपाल का वर्णन ।

अनग पाल तौअर सु । ध्रम्म धारन उद्धारन ॥

बंस बीय मातुलह । भए द्वै बीर सुभारन ॥

कलि तारन अरि देह । जुगनि किस्ती विस्तारन ॥

चाहुआन कमघज्ज । बंस मातुल गुर पारन ॥

प्रथीराज दिल्ली नृपति । चित्रंगी वर चित्तयौ ॥

पंचमि विवाह पंचमि धरिय । भले मुहरत में भयी ॥ छं० १३४ ॥

कवित्त - व्याह मद्धि करनेस । जग्य मघें चित डोले ॥

इती पाप कविबंध । देव देवासुर बोले ॥

ज्यौं चारन घर निद । जाइ भुक्त अनुधारी ॥

सा सुरिद संग्रहै । दोष लगं जुग भारी ॥

ग्यार सें अन भषह सुवत् । महा दोष अति ही सुबर ॥

बडबंध होइ निग्रह धरन । लषु बंधव हुअ नरक पर ॥ छं० १३५ ॥

विवाह का देव विधि से होना, बहुत सा दान वहेज देना ।

छंद पद्धरी-तिन मध्य विराजत राज राज । निर्मलिय कला रवि तेज साज ॥

ज्युं जुगति जूबर करन भोग । आए सु राज राजन सभोग ॥ छं० १३६ ॥

आए सुराज तिस्सुत नरिद । हाडाल क्रन क्रन्नह मुभ्यंद ॥

पंचाल देस सोमेस सूर । झलकंत मुष्य नमल मनूर ॥ छं० १३७ ॥

आए सु बीर किन्नाट कर्न । धूमह सुदेव धूमह सुपन ॥

एलवी देम भांडेर वीर । आए सु कोषि मुख तिनह नीर ॥ छं० १३८ ॥

देवत्य व्याह चहुआन कीन । दंध्यं सु व्याह सम बरह चीन्ह ॥

अप्पी सु पुत्रि सिबरह सु प्रेह । कल बढी कला जिन लीन देह ॥ छं० १३९ ॥

अप्पे सु एक सिव ग्रह प्रमान । आन्नन्न व्याह द्रुगह निघान ॥

मे मत्त मत्ति मंतह सु कीन । सिगार तार सत सहस दीन ॥ छं० १४० ॥

हुअ व्याह जनक सीता प्रकार । मिलि जग्य राज राजन सुभार ॥

संभरि नरेस सोमेस पुत्त । रस मानि बीर अब घूत घुत्त ॥ छं० १४१ ॥

साटक—ऐ सोमेस सुव्रज संभरि अयं । तारंय सूरं वरं ॥
सा दुज्जं दुज धम्म देवति धरा । ग्राहं ग्रहंजं बलं ॥
तामध्यं नृप अंस सोम नृपयं । नामं नरिदं धुरं ॥
प्रिध्पू नाथ सनाथ जग्य करनं । राज्यंयद राजं गुरं ॥ छं० १४२ ॥
ध्याह के पीछे बर्बर में घाना ।

कवित्त- दलन मंत्र सब राज । आइ दरबार सु इंदं ॥
ज्यों नछिन्न बिटयो । सरद सोहै अति इंदं ॥
कनक पंति नग व्यंट । भान बिठघौ सुमेर बर ॥
जस बिठघौ बल लोई । ईस बिघौ सु जटढर ॥
यों बिठघौ राइ सेमेस सुअ । सबल राज राजन गरुअ ॥
आरति बीर देषति नृपति । भान चंद लगै हरुअ ॥ छं० १४३ ॥
पृथ्वीराज की प्रसंसा ।

बूहा— हरुअ सु लग्ग सु अर गिरि । गरुअ लगै प्रथिराज ॥
चावहिसि लछ्छी सु जन । काजन मुक्किय काज ॥ छं० १४४ ॥
बूहा—लयौ जनम या कज्ज नृप । घर घर धरपति काम ॥
चाव हिसि भूपति सुभे । जु कछु भूमि पर हाम ॥ छं० १४५ ॥
छंद पढरी— जो कछु राज राजन नरिद । सो भये काम प्रथमीस इंद ॥
नर वर नृपति दीसं प्रमान । उज्जले गग ज्यों धम ध्यान ॥ छं० १४६ ॥
बर मुबर बीर पग मुक्कि धीर । बहु द्रव्य इंद्र राजन सरीर ॥
नव लच्छि अंग ग्रह ग्रह प्रमान । उच्छास लोइ मडै निधान ॥ छं० १४७ ॥
कनबज्ज बीर मुक्को सु लच्छि । तिहि देषि इंद्र को प्रब्व गच्छि ॥
कुम्बेर कोपि अंतह निरषि । सो ब्रन धार ग्रह ग्रह बरषि ॥ छं० १४७ ॥
कनबज्ज बीर मुक्की सु लच्छि । तिहि देषि इंद्र को प्रब्व गच्छि ॥
कुम्बेर कोपि अंतह निरषि । सो ब्रन धार ग्रह ग्रह बरषि ॥ छं० १४८ ॥
बहु बंधि संधि मनु देब काज । मंगल सु जोर नीसान बाज ॥ छं० १४९ ॥
राबल का रनिवास में जाना ।

बूहा—बर बंदे मुंदरि सकल । चावहिसि फिरि पंति ॥
मनुं अंग अंग अन्न गनह । रति बर राजति कंति १५० ॥
कवित्त—बरति चाइ उप्पर । उतंड अच्छित मुत्ताहल ॥
ससि उप्पर ससि किरनि । धीर सुषे गुन चाहल ॥
चावहिसि अंमना । अंगनं मित गुन मंडहि ॥
एक एक कों मिलत । एक लज्जा तन बंडहि ॥

प्रिया दिषिषि ऋषि चित्रंगपति । अच्छित मंत्रह विक्रति ॥

बोबत ओट ओटन किये । अनय नारि नषे सुवत ॥ छं० १५१ ॥

तिलक होना, प्रौर भावरी फिरना ।

छंद भुजंगी -- विय अंग अंगति अंग तिरंगं । बुले बेद बेदं मुजं मंत्र भंगं ॥

कला की अनेक प्रकारंत व्याहं । टरं लग्न साहं महं मत राहं ॥ छं० १५२ ॥

दियं हस्त थालं तिलककति राजं । तहां चंद कब्बी उपम्माति साजं ॥

मनों क कमोदंत ज्यो इंद साजं । मिल्यो जाइ चंदं सु मुत्तीति पाजं ।

॥ छं० १५३ ॥

दिसा देव मंत्रं अमंत्रंति घारें । नृपं घंम सोधं विधी देव टारें ॥

बुले बिप्र अंगं सु विद्धी सुवेदं । मनों देवता श्रग्न भूले सषेदं ॥ छं० १५४ ॥

नृपं राह दिदुं करूरति टारें । फिरें भावरी भान सुम्मेर सारें ॥ छं० १५५ ॥

ऋषीकेश बंध प्रौर चन्द के बेटे जल्ह प्रादि को दिया तब रावल
फेरा फिरे ।

कवित्त- श्रीपति साह सुजांन । देस यंभह सँग दिघो ।

अरू प्रोहित गुर रांम । ताहि अग्या नृ । किधो ॥

रिषिकेस दिय ब्रह्म । ताहि घनंतर पद सोहै ॥

चंद सुतन कवि जल्ह । अमुर सुर नर मन मोहै ॥

कवि चंद कहै वर दाय वर । फिरि मुराज अग्या करिय ॥

करि जोरि कह्यो पीथल नृपति । राव सत भावरि फिरिय ॥

॥ छं० १५६ ॥

दोहा -- निगम बोध गोतंम रिष । थिरि जेहि दिल्ली थान ॥

दास भगवती नाम दे । प्रिथीराज चहुवान ॥ छं० १५७ ॥

रिषीकेम अरु राम रिष । बहु विघ देकर मान ।

प्रिया कुंवरि परनाय कै । संगि चलायै जान ॥ छं० १५८ ॥

प्रत्येक भावरी में बहुत कुछ दान देना ।

कवित्त— एक फिरत भावरी । साठि मेवात गांम दिय ॥

दुतीय फिरत भावरी । दुरद दस एक अगरिय ॥

त्रितिय फिरत भावरी । दयो संभरि उदक कर ॥

चौथी भावरि फिरत । द्रव्य दीनो अनंत वर ॥

चहुवान चतुठ चावहिसा । हिंदवान वर भान बिधि ॥

गुन रूप सहज लच्छी सुवरासहज बीर बंधी जु सिधि ॥ छं० १५९ ॥

रावल समरसिंह के पुरुषों को चित्तौर मिलने का इतिहास बर्णन ।

छंद भुजंगी —

अनेक अनेक प्रकारंत सब्बी । करै राज धम्म सुतं धम्म कब्बी ॥

मिले सर्व छित्री इते व्याह राजं । तिलभ्रमै नहीं नेक राजं सुमाजं ॥ छं० १६० ॥

महं भाजनं रंग रामं प्रकारं । कला अट्टु मानों सु हृथ्यं पसारं ॥

रतं नील रेनं किते स्याम सेतं । तहां ओपमा चंद बरने सहेतं ॥ छं० १६१ ॥

गुरं भानं चंदं अरी राह राजै । मनो एक नषित्र सज्जे बिसाजै ॥

उडंतं अबीरं घनं सार रंगं । तिन देवता बास भूलंत घंगं ॥ छं० १६२ ॥

किते भेद भेदंत मिष्ठांन रूपं । तिनं वास देवं लगै सोम भूपं ॥

बिघं कुंड मंडप्य मंडे उतंगं । तिनं वास झोरं अली भूल संगं ॥ छं० १६३ ॥

जिती बिट्ट चित्रंग गावै अपारं । दियं विप्र गारी सबं भक्ति सारं ॥

तुमं मद्धि छित्री न जानंत ततं । तिनं बंस कोनं सु पुछ्छै अभीतं ॥ छं० १६४ ॥

रसं रच्चि छच्छी बडी पगग डट्टी । तिनं हुंदि ठंडात नीके लिपट्टी ॥

बडे राज देवत बीसल्ल नारी । सराघार भारं बली सन्नुघारी ॥ छं० १६५ ॥

तुमें चित्त चित्रंग चित्तं विचारं । तुमं ब्रह्म बंसं हूरें सन्नु भारं ॥

दियो राज हारीत रिषं प्रमानं । कन्थी तप्य एकं गए कंग पानं ॥ छं० १६६ ॥

सिवं लिग बिझे तुठयो सो अघाटं । तिनं ठांम नामं घन्थो मेद पाटं ॥

रमै विप्र सायं सु हारीत रिष्यं । करै सेव बालं स आवत्त सिष्यं ॥ छं० १६७ ॥

किते छेद भेदं किते गान गावै । किते देवता सेव पुष्यं चढावै ॥

करै रिष्य तप्यं दिनं गंग न्हावै । तहां उज्जलं गंगषं नीर घावै ॥ छं० १६८ ॥

करै अंग कष्टं सघं पंच अग्गी । महा तेज छीनं तनं पंच नग्गी ॥

रियं पूरनं तप्य तथ्यं स अगं । लियं लष्य हारी अहारी सु मगं ॥ छं० १६९ ॥

जिती काल बेसं बहै बाल पत्या । तिनं देषिकं सद् जाजुल्य गत्या ॥

रिषं उंच तेनं पिनं मोल चायं । नहीं मुष्य मडयो लियो झेजि पायं ॥ छं० १७० ॥

बाल्यो अट्ट सीसं किते उट्ट पायं । महा तेज दुष्यं दिष्यो रिष्य रायं ॥

ममो मंत्र मंत्री नमो घौसपालं । दियो राज बस जमं कौ बिमालं ॥ छं० १७१ ॥

रयं मंत्र प्रम्मान दिष्यो सुरिष्यं । दई भूमि जुगं जुगतं विसष्यं ॥

तिनं बंस चित्रंग चित्रं सु राजं । पर नीति बीर प्रिया बाल काजं ॥ छं० १७२ ॥

छंद गीता मालवी — डलकंत बेनिय बाल सैनिय भ्रग नेनिय गावई

मधुरं सबट्टं रहसि बहं हृद हृदं भावई ॥

वै स्याम सोरं गुनति गोरं चित्र सोरं सोहई ।

गुञ्जंतं^१ थोरं उठे कोरं बेस थोरं मोहई ॥ छं० १७३ ॥

विवाह की शोभा का वर्णन ।

कवित्त -विधे शृंगार रत्न बीर । हास कहना तन वारिय ॥

रत्न भयानक मंत । करी कहना ता वारिय ॥

कहना तजि रस अट्टु । भयौ नून राज त्रिवाहं ॥

सुष सनेह धन गेह । राज जोगिदति साहं ॥

सुष व्याह सजन सम वून रवन । गई नट्टि त्रय जांम निशि ॥

सहदेव देव देवन चलह । भुगति मुगति धन राज बशि ॥ छं० १७४ ॥

ब्रूहा -सा सुंदरि सुंदरि मुकय । रस^१ दरसन परिमानं ॥

मनों देव देवाल बजि । बर दुंदभी निसानं ॥ छं० १७५ ॥

छंद भुजंगी -बजे दुंदभी भेरि देवाल धानं । करे युक्ति रूपं अनेकं प्रमानं ॥

त्रिपं भीर असीं दरबार धानं । मिळे षंड षंडं सुराजान जानं ॥ छं० १७६ ॥

प्रिया रूप आगें प्रथी कौन असी । जनकं सुदारं सिया रूप कैसी ॥

भुगती मुगती हितं ताइ कारं । सबे दिखियं राज राजं दुआरं ॥ छं० १७७ ॥

महा भोजनं ते प्रकारं खिलासं । तिनं स्वाद तें देव छंडे न पासं ॥

रचे अग्नि स्वाहा सुदे गति होऊ । महा जग्य जापं अवृतंत सोऊ ॥ छं० १७८ ॥

छिन्न छिन्न लंका सपत्नी विराजें । दिनं यष्ट गेहं रहै द्वार साजें ॥

सुई राज लच्छी न पूजें सुहंती । जये देवता जग्य मे जीमवंती ॥ छं० १७९ ॥

कवित्त -बहुत मंसधन सार । अमन वलमीन ममंकृत ॥

अनेग जोग फल अनत । पान मिष्टान असंकृत ॥

छिति छित्री विधि मजहि । देइ लज्जी लछि रूपं ॥

रंक रंक गति छति । होइ राजिद सुभूपं ॥

नवनीन सुनीन पुनीत प्रभु । चाहुआन रजे सुभर ॥

जानिये राज राजन कै । सुरा धान माया सुधर ॥ छं० १८० ॥

अग्र दीप धनमार । बंटी मृगमह पान रस ॥

बहुत सरस रम राज । दिखि प्रतिव्यंत्र अप्य जस ॥

अरति ब्यंद अरविंद । कमल कैरव ससि सागर ॥

भुगति मुगति संग्रहै । मुकति भजै अति आगर ॥

मय मंत कूअ^२ अष्या अपम । ल धन बतीस सुवधि गुन ॥

तिहि काज भोज राजन करता । उच्छाहं प्रथिराज मन ॥ छं० १८१ ॥

ब्रूहा -माया मोष^३ सु देखि कै । गति भूले चालाहि^४ ॥

मानों मंत्र सुमंति^५ गति । बर ब्रह्मा वस भाहि ॥ छं० १८२ ॥

१. को०-ह०-सर ।

२. मो०-कुआ ।

३. मो०-सोष । को०-सोष ।

४. मो०-ह० को०-चलाहि ।

५. ए०-को०-ह०-मंत ।

पृथ्वीराज के नाम बहेज देने का वर्णन ।

कवित्त— एक एक रन जोग । गरुड हरुअत्त चित्त विधि ॥
 सांम दांन लघुमंति कंति मग्गीति संति सिधि ॥
 अबलि बाज गज एक । उभै अप्पै नर वस्त्रं ॥
 हेम हीर रजक्रीय । पार पावै ना मंतं १ ॥
 गरुअत्त गरुअ भय भ्रत्त सों । सत्त हृथिय कर निय जुगति ॥
 प्रथिराज राज राजन बलिय । देव दांन राजन भुगति ॥ छं० १८३ ॥

कवित्त— राज दांन विधि देत । लगि आचिउज धांन त्रिय ॥
 नाग लोक सुर लोक । रबी मंडल नर नर हिय ॥
 ह्यति कंति कंतियति । हृथ्य पंतिय रवि राजै ॥
 सु कवि चंद बर दाइ । देषि देवाधि सु लाजै ॥
 बदि राज धांन संभरि घनी । किहि बिधि लछी लछें गुनौ ॥
 बैरु सुगंग उडगनति १ नभ । पत्त तरोवर गिर घनौ ॥ छं० १८४ ॥

डूहा— दांन मांन निरमांन गुन । भगति रत्ति नप जोर ॥
 कहा दिष्षि कोइ लेइ निधि । भयौ भरें २ घर चोर ॥ छं० १८५ ॥

डूहा— तन अग्गै मन चलत है । मन अग्गै तन जाइ ॥
 जिहि बिधि दांन सु उच्चरै । तिहि बिधि पाप सु जाइ ॥ छं० १८६ ॥

डूहा— क्रम्मसु अति विधिनां रची । अंग रोर सिर पान ॥
 तिन मंजन सोमेस सुभ । घनि मंभरि चहुआन ॥ छं० १८७ ॥

चौपाई— दिसि दिसी पूरिय हय गय राज । प्रिथीराज सुरपुर सम साज ॥
 बाजै पंच सबद बनि रंग । रहबनि द्वादस सूर अभाग ॥ छं० १८८ ॥

कवित्त— एक दीह निड्ढरह । राज रष्यो चित्रगी ॥
 ★दुतिय दीह सामंत । गरु अ गोविन्द अभगी ॥
 त्रितिय दीह पज्जून । बल्लि कूरंभ मुधारी ॥
 चतुर दीह नर नाह । कन्ह कीनी किति भारी ॥
 पंचमै दिवस कैमास बलि । बलि सुराइ सम जग्य किय ॥
 छट्टें सु दीह पुशीर घनि । धीर रषि कीरत्ति लिय ॥ छं० १८९ ॥

कवित्त— सत्तम दिन रघुवंस । राम करनी कर मेरं ॥
 जिहि नंदी पुर भजि । समर मनुहारि सुबेरं ॥

१. मो०—मंत्र ।

२. ए० क० को—उडगति । ३. मो०—प्रस्थो ।

★ ए० को० क० प्रति में “दुतिय गोविन्द सु दीह । गरुअ सामंत वर्णनी” पाठ है ।

अष्टम दिन अचलेस । अचल कीरति बिन रष्यी ॥

नवम दिवस पाहार । जगत दारिद्र सु नंभी ॥

दसमें पैवार धाराधि पति । सलष सु लषि पूरुष विधि ॥

दिन एक एक रष्ये सवन । पंच अ्यार लुट्टाय निधि ॥ छं० १९०॥

रावल का बारह बिन तक बारह सामतों ने अपना यहाँ नेवता किया ।
कुंडलिया— रष्यि उभय षट्^१ बीर बर । बर जंधारो भीम ॥

जिहि ओलें प्रथिराज की । को अरि चपे सीम ॥

को अरि चंप्य सीम । देव दुज्जन अधिकारिय ॥

तिहि रष्यी चित्रंग । समर रावर ग्रह चारिय ॥

विधि विधानं न्रम्मान । द्रव्य अर्चन करि चष्यो ॥

रावर समर नरिद । न्योति द्वादस दिन रष्यो ॥ १९१ ॥

बारह बिन तक रहकर रावल का कूच की तयारी करना ।

दूहा— षट् बीर बीस रष्यो सु नूप । भर सु भाति बहु राज ॥

दिन बारह चित्रंग पति । बज्जे बज्जन बाज ॥ छं० १९२ ॥

कवित्त- बजि बाजन अनुराग । सबर उच्छव बर धारिय ॥

नूर धूप तें अछछ । पंड हथिनापुर सारिय ॥

हुअ उछछाह दिल्लीस । बधि गुडिय ग्रह^२ धारं ॥

मनो सोम कल कोट^३ । करिय कल बल बिस्तारं ॥

घन ग्रहति ग्रेह उच्छाह हुअ । चाहुआन रवि वट्टयो ॥

वेनिय मुजस्स पुरषातनह । बल अनंत घट चढ्ढयो ॥ छं० १९३ ॥

बरात लोटने की शोभा का वर्णन ।

छं० मोतीदाम— इति छंद सुछंद सुचंद प्रकार । सु मुत्तियदाम पयं पय चार ॥

परे गजनां जिहि कंकन हार । इसो गुन पिगल नाम उचार ॥ छं० १९४ ॥

दसों दिहि पूरी न्रपत्तिय सेन । बिराजय राज अनंद सु अंन ॥

सुधि सुधि बीर प्रकार प्रकार । चले सग दपति ज्यो रति मार ॥ छं० १९५ ॥

ठनंकिय घंटनि हृथियय पूर । किनं किय बाजिय साजिय सूर ॥

इकं इक हृथियय दासिय पच । इसी सरसं गुन रच्चिय सच ॥ छं० १९६ ॥

विधि विधि पूरन पत्तिय सोम । तिनं किय प्रज्जल सज्जल व्योम ॥

रहं रह राजत साजत सेन । मनो दिव देव दिधाधिय तेन ॥ छं० १९७ ॥

तुरंगनि तुंगनि की प्रति हीस । रंग तिन मंद सुमूंदह ईस ॥ छं० १९८ ॥

१. ए०-कु०-बर ।

२. मो०-कोटि ।

३. मो०-बर द्वार ।

४. ए० कु०-बिलिय ।

ब्रह्मा—ईस मंद संकर उदित । ब्रह्म ध्यान सिव पान ॥

संभरि घर चित्रंगपति । को सन मानन जान ॥ छं० १९९ ॥

कवित्त—बर सु बुद्धि साधन सरीर । जोगह अधिकारी ॥

कर अदग जग दग । सरन रष्यन जुगचारी ॥

माया सों नहिं लिपत । नीर नीरज समान बर ॥

यों चित्रंग नरिंद । चतुर विद्या कोविद नर ॥

गोरी सु बंध सुरतान रन । जस लेयन जै जैति बर ॥

सा लच्छि रूप भगनी शिषा । परनि राज पत्नी सुधर ॥ छं० २०० ॥

ब्रह्मा—जहां परनि चित्रंगपति । करी उलटि बिपरीत ॥

सिर अप्पो जुगिगनि नृपत । देव लोक दिवजीति ॥ छं० २०१ ॥

धनंगपाल का बहुत कुछ दान देना ।

कवित्त—बाजे बीर सु बाजि । राज बज्जा सो बज्जा ॥

जस बज्जा बज्जा सु । धम्म क्रमं चित रज्जा ॥

सम न कोई चित्रंग । गरुड गहिलोत गरुड मति ॥

धनि सुधम्म अरु दान । दियो दिल्लीस बहु भैति ॥

सर मंडि बीर बुट्ठ दिवस । सत्त अट्ठ अरु पंच भति ॥

अगरें बांन बर काम कृत । इकरु बार घट्टइ सुगति ॥ छं० २०२ ॥

रोला^१—जो दिन रही बिल्ली प्रति मानिय देव गति ॥

रति संपति सुख ग्रेह प्रार आर भति ॥

दुहुं तन सुमन निरषिय लोइ बर ॥

मानों सची संजोग मुरपति आगु घर ॥ छं० २०३ ॥

ब्रह्मा—कनक क्रीड सुष्ये जयति । रनिन कहै कवि चंद ॥

बर जानै कै दंपनी । कै^१ दीपक कै चंद ॥ छं० २०४ ॥

कवित्त—मति मध्या भय बाल । बिनौ प्रौढा अधिकारी ॥

लच्छी सोज सहज्ज । रूप रति सुरन सु सारी ॥

घीरं तन सिय सार । विरह मंदोदरि नारी ॥

पति सु वृता रुक्मनी । गिनी^१ कच्छिनि अधिकारी ॥

सा प्रथीराज भगनी शिषा । देव जग्य सम जग्य किय ॥

आनंद रुइ आनंद कथ । सोम नंद जस बंद लिय ॥ छं० २०५ ॥

१. ए०-छं०-को०-चीपाई ।

२. ए० को०-को ।

३. ए०-को० छं०-गिनी ।

कवित्त—अरुन तरुन उदयंत । सिद्ध सिक्कर किक्कारिय ॥
 विसि उत्तर ईसान । विसा दस दसन उछारिय ॥
 बिमल नाग बल्लिय विनोद । केलिय अबिलबिय ॥
 वागवान दरिमीय । रवन राजन कर संभिय ॥
 संचार सुमन सौरम्भ बर । भ्रमर रोरि रंगिय करिय ॥
 आगम अरंभ बर बरष फल । जगति जोति ब्यासह घरिय ॥

॥ छं० २०६ ॥

ब्यास जगजोति की भविष्यद्वाणी ।

कहुत ब्यास जगजोति । नयर नागोर बसंतह ॥
 जोइ नंदे सोइ नंद । हसै सो रहौ हसंतह ॥
 इंद्रपद्म पुर आदि । राज राजन बहुआनह ॥
 अमर बेलि कीरति । अछेह साधन सुरतानह ॥
 आचिज्ज बत्त हिंदुअ तुरक । हमल हेल हल्ले भुअन ॥
 प्रथमंन पुब्ब पच्छिम पथिर । होत बत्त गंधव सुअन ॥छं० २०७॥

कवित्त—रुधिर अकभित न्हान । छत्र पुब्बह पच्छिम पर ॥

कोलाहल कमिनिय । कज्ज हारम्य देव हरि ॥
 समर सुन्य^१ मंडलीय । अमर विञ्चार बार^२ किय ॥
 द्रुपद राय पंचाल । दुसह द्रोपदिय चीर लिय ॥
 ★सोइ समय वरष इकईस मय । हरषवंत जुगनि कहिय ॥
 बंचे विचार हिंदू तुरक । इक्क अचल कीरति रहिय ॥छं० २०८॥

सभों का अपने अपने घर लौटना ।

कवित्त—★“अप अप गेह गुरंम्य” । राज राजन संपत्ते ॥

भोरा राव भिमंग । बत्त पुच्छै जग जित्ते ॥
 पामारिय प्रारंभ । सोर संपरि^३ आदानह ॥
 सा इंडै सोमेस । पुत्त बंधन सुरतानह ॥
 हेला हमीर हम्मीर सों । विजय राज कमधज्ज किय ॥
 अच्छर अच्छम्भ^४ गल्हां गरुआधरनि पंच बहुआन लिय ॥छं० २०९॥

१. ए०—सुन्य ।

२. मो०—सार ।

★मो० प्रति में “सोई समय समय पठ विष वरष” पाठ है ।

★ मो० प्रति में यह पंक्ति नहीं ।

३. ए० को० कु०—संभि ।

४. ए०—अबंध ।

कवित्त--धरनि पंच बहुआनि । आनि फेरिय कर जितौ ॥
 ता पछ हिं तुरक । सबै^१ बीतक ज्यौ वित्यौ ॥
 धीर मीर संग्रहिग । भीर भंजिय भिरि राजन^२ ॥
 जै जै तन चहुवान । देव दुंदुभि घन बाजन ॥
 जिहि ग्रहन पानि रावर समर । इअ आगम जोतिग कहै ॥
 अप अप्प क्रम केलिय कहूल । लिष लिळाट तितौ लहै ॥छं०२१०॥

ब्रह्मा--सत्तरि सत तिय अग करि । रज रज अप्प ब्रह्मास ॥
 लीन सगोरी दंड घपि । षट् सित्त पंचास ॥ छं० २११ ॥

साह गोरी का राबल का बहेज देना ।

कवित्त--सत्तरि सत तिय अग । बीर गज राज सु अप्पिय ॥
 ते लीनों सुरतान । साहि गेरी गोरी किय ।
 पंच सित्त पंचास । एक सौ तुंभ तुरंगम ॥
 सौ दासी चतुरंग । सत्त ढोलिय अच्चंभम ॥
 चतुरंग लच्छि चित्रंग दे । बर सोमेसर थप्पियै ॥
 बुल्लाइ^३ सजन रावर समर । पंच कोस मिलि जंपियै ॥छं०२१२॥

प्रथा व्याह की फल स्तुति ।

सुने ग्रहै उग्रहै । बत्त बिय सम उच्चारै ॥
 लिषै दिषै अरु सुनै । सुद्ध मंत्री सुद्धारै ॥
 प्रथा व्याह संभरै । पंच भौ अंचन लगै ॥
 सेम फनमित सुभट । काल पंमी नन लगै ॥
 साधवीसीय भगनी प्रिया । प्रथा बरन चित्रंग पर ॥
 इन सम न कोइ भुवनह भयो।नन ह्वैहै रवि चक्क तर ॥छं०२१३॥
 इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके प्रिया विवाह वर्णनं
 नाम एकादशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २१ ॥



१. ए० को० छं०--प्रति में नहीं है ।

२. ए० को० छं०--रावन ।

३. छं०--बीलाई ।

अथ होली कथा' लिख्यते ॥

(बाइसवां समय)

पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा और छोटे बड़े का विचार छोड़कर अबोल बकते हैं इसका वृत्तान्त कहो ।

ब्रूहा - एक दिन प्रियु नृप पुच्छयो । कहि कविचंद विचारि ॥
नर नारी लज्या गई । फागुन मास मझार ॥ छं० १ ॥
बाल वृद्ध जुष्वन पुरुष । बुल्लें बोल अबोल ॥
मात पिता गुर ना गिनैं । निकसैं टोला टोल ॥ छं० २ ॥
च्यार बरन इक्कत मिल । कलह रूप कलहत ॥
षाधि अषाधि न जानहीं । ज्यों मन^२ नहि विलसंत ॥ छं ३ ॥
या पुच्छी कविचंद कौ । हिय हरष्य मुषदाय ॥
जु कछु भयो सु कहौ तुम । तुम बानी बरदाय ॥ छं० ४ ॥

चन्द का कहना कि चौहान वंश का दुंडा नामक एक राक्षस था उसकी छोटी बहिन दुंडिका थी ।

दुंडा नाम राषस हुतो । चहुवाना कुल महिम्न ॥
तस लघु भगिनी दुडिका । जौवन रै सुष सञ्जि ॥ छं ५ ॥

दुंडा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन दुंडिका भी भाई के पास गई, दुंडा भस्म हो गया तो भी दुंडिका बंठी रही, उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते बीता ।

दुंडि गयो वानारसी । सत्त बरस तप किन्न ॥
तब दुंडी सुनकैं गई । रही भ्रात सुष बिन्ह ॥ छं० ६ ॥
दुंडे तन मन जग्य मैं । बाल कियो भसमंत ॥
प्रियीराज चहुवान भय । भए सूर सामत ॥ छं० ७ ॥
तब दुंडी बंठी रही । सत्त बरष जग जान ॥
पवन स्थाय सेवा करै । ताको सुनौ बषान ॥ छं० ८ ॥

१. मो० और को० प्रति में यह (होली) समय नहीं है ।

२. ए०—माहि ।

तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर दुंडिका से कहा कि
मैं प्रसन्न हूँ वर मांग ।

तब गिरिजा सु प्रसन्न भय । मंगि दुंडी बरदान ॥
हम सहै तब सह करनि । भण्डि करै नर जान ॥ छं० ९ ॥

दुंडिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल बूढ़ सब को
मैं भक्षण कर सकूँ ।

बाल बूढ़ भण्डन करौ । हम को दै महमाय ॥

यह बानी सुनि सामुही । रण्या करनी राय ॥ छं० १० ॥

गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि दुंडिका
की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सकें ।

तब गिरिजा पति सौं कह्यौ । दुंडी रण्य सु वत्त ॥

दुंडी नर भण्डन करै । सोय विचारी मत्त ॥ छं० ११ ॥

गिरिजा शिव मिलि यौं कहै । एक अपूरव वत्त ॥

जोगी अंगम बाहुरै । ये राषे नित नित ॥ छं० १२ ॥

शिवजी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली
बकें, गबहे पर चढ़ें, तरह तरह के स्वांग बनावें उनको
छोड़ और जिसको पावें वह भक्षण करै ।

विहल विकल बानी असुर । बोलाहि बोल अनन्त ॥

एता नर मारीत जवि । अवरनि कौ करि अंत ॥ छं० १३ ॥

शिव अग्या पवनह दई । प्रियमी घर सहु अंग ॥

फागुन मासह तीन दिन । करौ अनेरो रंग ॥ छं० १४ ॥

रासभ परि चढ़ि चढ़ि हसहि । सूप सीस घर लेहु ॥

गोसा बंधे गलि फिरै । हो हो सबद करेहु ॥ छं० १५ ॥

दुंडिका ने जब आकर बेसा तो सबों को गाली बकते, पागल से
बने, गाते, बजाते, आग जलाते, धून रास उड़ाते पाया ।

दुंडी आइ जहां तहां । दिष्ये लोग अज्ञान ॥

हो हो करि रासभ चढ़ें । ए कवि कहै बधान ॥ छं० १६ ॥

चटक चटक दिन प्रति भवें । मद मादक अप्रमान ॥

नर नारी सब बति गई । ए पन मन अनुमान ॥ छं० १७ ॥

सिंधु राग बजावहीं । गावहि नवला गीत ॥

हो हो करि हाहा करै । ए मंडी विपरीत ॥ छं० १८ ॥

धरि धरि अगनि प्रजारहीं । उक्ति धूर अरु राष ॥

नाथें गावें परस्पर । त्रिया दिवावत काष ॥ छं० १९ ॥

इहि विधि बाउ जवाविउ । फगुन मास मों भाव ॥
लज्ज भएज बिष्पन गई । भावै षाव सुपाव ॥ छ० २० ॥
इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना
आया घर घर आनन्द हो गया ।

इहि विधि दुरित निवारियो । मिथी मत्री उर दद ॥
आयो चैत मुहामनी । गृह गृह भयो अनद ॥ छ० २१ ॥
जाड़ा बीतने और बसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा
करते और दुंदिका की स्तुति करते हैं ।

श्लोक गतेनु षार समये । वसंते च ममागमे ॥
होलिका प्रब्व पूज्यंते । ढुहा देवी नमोऽस्तु ते ॥ छ० २२ ॥

इति श्री कबि चंद्र बिरचिते प्रियौराज रामके होनी कथा
समय नाम बाबीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥

अथ दीपमालिका कथा लिख्यते ।

(लेइसवां समय)

बृहवीराज ने फिर चन्द्र से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व
होता है उसका वृत्तान्त कहो ।

ब्रूहा - फिर पूछी पृथिवराज नृप । कहो चंद्र कवि मन्व ।
होतु मुकार्तिक मास महि । दीप मालिका प्रबन्ध ॥ छं० १ ॥
चन्द्र का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ।

कहि कविचंद्र नरिंद सुनि । जो पुच्छो कथ मोहि ॥
दीपमालिका उत्पत्ति सब । कहै सुनाऊं तोहि ॥ छं० २ ॥
सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था,
सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब
लोग उससे प्रसन्न थे ।

सतयुग सतवृत राजसय । प्रणय दियायो देव ॥
तामुन सोमेगर कहिय । सुर नर करन मुमेव ॥ छं० ३ ॥
बहुन पुष्प पालं प्रजा । रिद्ध दिद्ध मंडान ॥
च्यार वर्न चंद्र आश्रमहि । दान मान परियान ॥ छं० ४ ॥
उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग लगे थे वहाँ एक
बैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ।

ता नगरि मन्यावती । नरित समुद्रह नट्टि ॥
बारी बाग विचित्र नर । ग्यान ध्यान घटि घट्टि ॥ छं० ५ ॥
तहां वसे मनश्रम द्विज । वेदवंत बल वृद्धि ॥
ताही नागी नागरी । ताछर नाही रिद्धि ॥ छं० ६ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन वशा में जीना घोर दुःख भोगने
से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करे ।

बबर न कोई नर दुषी । सुय भोगरी अनंत ॥
नारी कहि जिनु रण्य सम । व्रिया जीव तुम कंत ॥ छं० ७ ॥
विष्णा जीवन मनुष्य को । जो धन नाही पास ॥
सातें को उचार कर । करै रहै बन वास ॥ छं० ८ ॥

सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया ।
तब सतिश्रम आदर करिय । ग्यान ध्यान चित्त देखि ॥
जीवन जनम विद्या गयो । पाप उदय तन देखि ॥ छ० ९ ॥
गाया -सपनो अथ्य विहूनी । सेत्रे रने न भापयो दीनी ॥
मंगह मरन मह गोत । श्रीरि नेम न मानि कित ॥ छ० १० ॥
सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को
बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कटा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो
हमारा सब काम वही करती है ।

दोहा -सति सरम मन वरष लो । सेरे विष्णु नरंत ।
विष्णु बतायो ब्रह्म कीं । नाको पार न अन । छ० ११ ॥
तब ब्रह्मा मु प्रसन्न भय । रुद्र बनायो ताम ॥
रुद्र कह्यो माया बरहु । करे हमारी काम ॥ छ० १२ ॥
तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई श्री - उसने
चौवह रत्न दिए ।

त्रियन बरस त्रिय माम दिन । त्रिय घटी पल उन्न ॥
मु प्रमन भइ सा कामिनी । दिय चौदही रत्न ॥ छ० १३ ॥
सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए,
ऋद्धि विद्धि से क्या होता है ।

तब सतिश्रम ऐसी कही । कहा रिद्ध अरु विद्धि ॥
मेवो नरपति नाह को । एह वातएहु तिद्ध ॥ छ० १४ ॥
दिन पद्धर बुधि उपजी । दिन विहल्लि बुधि जाइ ॥
दीन दियायी बुद्धि वर । बुझै दीर लछि जाइ ॥ छ० १५ ॥

गाया को कौन पथीयो । कौन जचीओ ॥
कह कहन नामियं सीस । दुभर^१ गअर चक्र अं किन्नयं किन कायवं ॥
॥ छ० १६ ॥

ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की समावस सोमवार
को लक्ष्मी उसके पास आती है ।

दोहा -बंभन बुद्धि विक्रम हुइ । तइं दिणै लछिवाम ॥
कार्तिक मावस सोम दिन । लछि आवहि तिहि पास ॥ छ० १७ ॥
लच्छी जल निधि ही बसी । निकसि तिहू दिन दिन्न ॥
अगर कपूर सुदीप घर । जहां षान उर पिन्न ॥ छ० १८ ॥

ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने
कहा कि बर मांग ।

बंभन राज सेवती । बरस भये दुअ च्यार ॥

तब राजा बरदान दिय । मगी मन्नि विचार ॥ छ० १९ ॥

ब्राह्मण ने दीपदान बर मांगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को
उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जलें ।

तब बंभन ऐसी मॅगी । दीपहु दान विचारि ॥

कार्तिक मास समुद्ध दिन । दीप नवै ससारि ॥ छ० २० ॥

अच्छे लोयन अछि तहां । अच्छे लोयन निपान ॥

नर नारी उद्दिम रहै । पीक परी तिहिपान ॥ छ० २१ ॥

राजा ने कहा कि तुमने क्या मांगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि
होती है, अन्न घन गांव मांगना था, अस्तु अब घर जाओ ।

कहा मॅगी तुम देवता । पश्चिम बुद्धी विप्र ॥

अन घन गांव गंमार मगि । घर जाओ तुम विप्र ॥ छ० २२ ॥

ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल और सवा सेर रुई मांगाई ।

अपने घर तब आय करि । तेल लियो मन एक ॥

रुई सेर सवा लई । इह तन की जु विवेक ॥ छ० २३ ॥

कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो
मांगा था सो बीजिए ।

कार्तिक आयो कल्पतरु । विप्रह भयो उछाह ॥

मंग्यो हतो सु देउ प्रभु । पडह बाज बहु नाय ॥ छ० २४ ॥

राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले ।

तब आयस नरपति क्रियो । कोय न बालै दीप ॥

आज्ञा भग जो को करै । ताहि बंधाऊ चीप ॥ छ० २५ ॥

लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अंधेरा पाया केवल ब्राह्मण
के घर दीपक देखकर वही आई और विचार किया कि यहीं

सवा रहना चाहिए ।

लच्छि समंद निस्मरी । भाई नगरहु तध्य ॥

अंधारी अहि पूरजे । मु दीपक दिठ्ठी जध्य ॥ छ० २६ ॥

बंभन के घरि दिष्य करि । आइ सही दरवार ॥

अह निसि वासै हम वसै । लच्छी कहै विचार ॥ छ० २७ ॥

लच्छी बच्छी क्या करै । दारिद दहि मुहि मत्त ॥

तू पाला घर थान रहि । सदा दुचितै चित्त ॥ छ० २८ ॥

मो संगि सध्यि जु निरवहौ । नदी पत्रनि गिर दंद ॥
रात दिठु वासौ बसों । सं छंड्यौ मनि दंद ॥ छं० २९ ॥

लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म
मैं तेरे घर बसूंगी ।

तब लच्छी सु प्रसन्न हुई । कट्टे रोर करंक ॥
सात जनम तुरि घर वसौ । एक वसन अकलंक ॥ छं० ३० ॥
तब दारिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने बूंगा ।
तब दारिद्र जु भजि चलयौ । बंमन पकर्षी धाय ॥
इक छोरी तुम पुब्व सो । लच्छिक देव न जाय ॥ छं० ३१ ॥
दारिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस
नगर में न आऊंगा ।

तब दरिद्र वाचा दई । मो कू नू दे जान ।
बहुरि न आऊँ इह पुरी । असौ कहीं बषान ॥ छं० ३२ ॥
उसी घड़ी से उसके यहाँ आनन्द हो गया, हाथी घोड़े सूमने
लगे । उसी दिन से यह दीपमालिका चली ।

घरि लच्छी आनंद मन । हय गय मान महंत ॥
दीपमालिका तदिन ते । एह चली महि वन ॥ छं० ३३ ॥

चारो विशा में दीप मालिका का मान्य है । यह कथा
कवि चन्द ने कह सुनाई ॥

पुब्व पछिम उत्तर दछिन । दीपमालिका मान ॥
पान पान परिमान मन । काम मनोरय थान ॥ छं० ३४ ॥
कही चंद आनंद सो । पुच्छी नृप प्रियीराज ॥
दीपमालिका प्रगट हुई घरि घरि मगज साज ॥ छं० ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रियराज रासके दीपमालिका
पर्व कथा समय नाम तेशीसमों प्रस्ताव संपूरणम् ॥



अथ धन कथा लिष्यते ।

(चौबीसवां समय)

खट्टू बन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी
के कंद करने की सूचना ।

बूढ़ा— षट् आषेटक रमै महिम सुरस्थल^१ धान ।

नागौर गोरी ग्रहन । सय त्रिमल परधान ॥ छ० १ ॥

पृथ्वीराज का कैमास की बीरता, बुद्धिमत्ता आदि की
प्रशंसा करके प्रश्न करना ॥

कवित्त— मंच जोग कयमास । मंच प्रथिराज सु पुच्छन ॥

तूं मंत्री मंचंग । मंत्र जानहि सुभ लच्छन ॥

सांम दांन अरु भेद । डड निरनै करि लष्यै ॥

बहु मंत्रह उप्पाइ । राज मंत्रह करि रख्यै ॥

मंत्रह मुमंत्र मन अनुसरै । अरु मंत्र भेद जानै सकल ॥

बदभुत चरित्त पाषाण लिषि । बचिन किन आवै अकल ॥ छ० २ ॥

तू मंत्री कयमास । मंत्र पय पय उप्पावहि ॥

तू मंत्री मंत्रग । मंत्र मंत्रीन दिषावहि ॥

तू मंत्री सामंत । स्वाम धम्म विच्चारै ॥

घर समूह सग्रहै । मंत्र करि अरिन त्रिडारै ॥

तुम जोग मंत्र मंत्री न कोइ । मह बत्तन उच्चारै कै ॥

संसार सार मंत्रह प्रबल । कहौ मंत्र विच्चारि कै ॥ छ० ३ ॥

पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र

पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है,

इसके अर्थ करने में सब भटकते हैं,

सो तुम इसका अर्थ करो ।

ककवित्त- सलिल सुवर पाषांन । मध्य पूतली अचंभं ॥

सलिल मत्त तन जा बिसाल । उप्पम रिस रंभं ॥

१. मो०—मस्थल कु०—पुरस्थल ।

* मो प्रति में "सामि धम्म सुविचारै" पाठ है ।

ता उप्पर ब्रिय नाम । प्रगट प्राकार उचारै ॥
भूलि भूलि भ्रमि लोइ । मुद्ध मनसा करि डारै ॥
बंचौ मु वीर कंमास तुम । बियो बच नाहि बनिय ॥
भूतह भविष्य अह ब्रतमन । इह अपुव्व में कथ सुनिय ॥ छं० ४ ॥
पुतली के सिर का लेख "सिर कटने से धन मित्त

सिर रहने से धन जाय" ।

बूहा—सिर कटूं धन संग्रहै । सिर मज्जं धन जाइ ॥
सो मंत्री कंमास तू । मंत्रहि करे उपाड ॥ छं० ५ ॥

पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके
कंमास से परामर्श करना ।

कवित्त - श्रवन राज दग रत्त । श्रवन जानहि परिमानन ॥
बेद दिष्ट देखै मु । भेद अम्भेद मु ग्यानन ॥
पसुअ नयन आचरहे । धनह परिमान मु लपड ॥
विपत्ति लोइ संमार । मार द्विग टरफय दिपड ॥
मंत्रीन दिष्ट मंत्र तनी । मंत्र भेद अनुगर मरति ॥
ग्रमानं वीर जाने सकल । मुद्ध ग्यान प्रौढह मुमति ॥ छं० ६ ॥

कवित्त - तिष्ण तरगत पर्यौ । मत्र तारक हरि मुद्धरि ॥
बद्धरि अध कलार । राज दंडह लिय उद्धरि ॥
सारपंग जक जीव । मयन गिरात धान जुगि ॥
अविल अवेटक भूलिह । डण्डि जव चित्त मित्त परि ॥
भूल्लहि मुदान गिरमान गति । मरन मत्र नहि लिप्यवै ॥
म नी न मत्र भुञ्जे नत्रे । अधि विचार निधि दिप्यवै ॥ छं० ७ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि गुना है कि वीर बाहन कोई राजा
था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था
सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्जश मरेगा
और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है ।

छंद पद्धरी—अत्र कहीं मत्र तुम पुच्छ लोइ । मनि यहीं नैम जिन करी सोइ ॥
पापान अंक में नियो राइ । वृत्तन सोइ मत्र केंहु गुणाइ ॥ छं० ८ ॥

१. मो०—रस ।

२. मो०—को प्रति मे "श्रव जानन परि मानन" पाठहै ३. मो०—लल्लहि ।

४. ए०—ग्रमान ।

५. मो०—पन्थी ।

६. मो० क०—बद्धरि ।

७. मो०—मन ।

बाहन सुवीर कोइ भयो राइ । तिहि पाप क्रम लीनी उपाइ ॥
 संसार तकल तिहि दुष्प दीन । सेवकन सेवनिह द्रव्य कीन ॥ छं० ९ ॥
 प्रज गीड़ माल संग्रह्यौ कोरि । भरि जनम मूढ़ भंडार जोरि ॥
 संसार सकल तिन दुष्प पाइ । सब श्राप दीन इह अगति जाइ ॥ छं० १० ॥
 विन बंस हंम इह तजै देह । इम प्रजा सकल कहि अप्पग्रेह ॥
 कितनेक दिवस तिन तज्यौ श्रीर । भंडार पाहि बह मुनी वीर ॥ छं० ११ ॥
 कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर
 के राबल समरसिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचन्द,
 शहाबुद्दीन भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं ॥

अप पान कढ़न नहि जाइ राइ । चित्रंग राव लिज्जै बुलाइ ॥
 मिलि मुभट ताम रुदुठी भंडार । तिन बिना दंद मर्च्च अपार ॥ छं १२ ॥
 कनवग्ज राव जैचंद देव । नर असी लष्य तिन करत सेव ॥
 गज्जन नरेस साहाब साह । दस लष्य मैच्छ सेवंत ताह ॥ छं० १३ ॥
 गुज्जर नरिद भीमंग देव । तिन अप्प अब्ब^१ परिकंक केव ॥
 दिल्लीस तेज तूअर नरिद । तस बद्ग्यो वैर उपजै सु दंद ॥ छं० १४ ॥
 बा तुच्छ मेन इह मत्त मानि । मिलि ममर सध्य पुछि लच्छवानि ॥ १५ ॥
 पृथ्वीराज का कैमास की इस सलाह को मानकर उसको
 सिरपाव देना और उसकी बड़ाई करना ।

चौपाई - राजा द्विग कैमास बुलाइय । पहराइय मुउच्च सिरपाइय ॥
 बगलि अप्प आरोहन बाजन । करी मुपारस मुसर कि राजन ॥ छं० १६ ॥

पूहा हरषि राज प्रथिगज कहि । मनि कैमास दै नाम ॥
 मति कैमास^१ कैमास तुम । सकल मुमति के घाम ॥ छं० १७ ॥

दूहा जां मंत्रह पूछन नृपति । माई अंग सु काम ॥
 समर मिष रावर मिले । धन काढै अभिराम ॥ छं० १८ ॥

पृथ्वीराज का बन्ध पुंडीर को बुलाकर चिट्टी दे
 समरसिंह के पास भेजना ।

मानि मन्त्र चहुआन इह । बोलिय चंद पुंडीर ।

समर सिंह रावर दिसा । दै कग्गद मति घीर ॥ छं० १९ ॥

राबल की भेट को छोड़े हाथी आदि भेजना ।

दूहा दस हैवर इरु बग बर । अरु दिय सिगिनि पानि ॥

कहि जुहार विधि जंयौ । नृप पुच्छिय कुसलानि ॥ छं० २० ॥

१. ए०-प्रच्छ ।

२. मो०-उपज्यौ ।

१. मो०-कैमास ।

खन्व पंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े
घन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना,
क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर हैं ।

कवित्त - लै कग्द प्रथिराज । बीर पंडीर संपन्नो ॥
सुबर जोर माहाब । मंडि गोरी घन यन्नो ॥
बर भोरा भीमग । चंवि चालुक्क बिलग्गा ॥
नाहर राउ नरिद । सेन लप्पा अमि दग्गा ।
आषड ब्रव्य दित्ती घरा । मुनि चढहे त्रिगपाल सजि ॥
कदिये मंत्र मंत्री अपुन । बर त्रिभूति लच्छी सुरजि ॥ छं० २१ ॥
रावल समरसिंह के योगाम्याम और जल कमल की तरह
राज्य करने की प्रशंसा ।

कवित्त समरसिंह रावर नरिद । समर मह संभर जित्तन ॥
अरु जोगिद नरिद । चिन्न जोगिद ममन्नन ॥
कमल माण सो भनि । चद लिल्लाट वीय दुति ॥
नयन रभ आरंभ । जोग पारभ सिभ मति ॥
मुंजीव ढाल जीपन विरद । नाग मुषी मिल्लार बनि ॥
सा चित्र कोट ओटह नृपनि । मन्नन रभ मडहि मुमनि ॥ छं० २२ ॥
पत्र पहुंचकर समरसिंह ने हंसकर खन्व पंडीर से कहा कि संसार
की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध
लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है
कोई भोगता है यह बंब गति है ।

दूहा बंवि बीर कग्द गति । ह्मिय चिन्न वर बंक ॥
कछु लज्जा सगपन मु हित । ग्य पंडीरा संक ॥ छं० २३ ॥

कवित्त ह्मि जोगिद नरिद । वत्त से मुष उच्चारिय ।
* एक ग्रध्र समूह । मस लड्डी पल हारिय ॥
श्रव्व प्रिद्ध धिटयी । मस चापौ जै कारिय ॥
तब सुमंत उप्पनो । मस लड्डी गहि डारिय ॥
भुगवति कोइ गहुंनि कोइ । कोइरु पढ कोइ लम्भवै ॥
दवान दुसंकह देवगति । जो निम्मान सु निम्भवै ॥ छं० २४ ॥
खन्व पंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज
आपका बड़ा भरोसा रखते हैं सो चलिए ।

कवित्त - सुनि रुबत पंडीर । बत्त जंपी सुनत्त जोइ ॥
सुम जोनिद नरिद । मत्त जंपौ सुनत्त होइ ॥

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है ।

सुअ सोमेस नरिद । सुवत सगपन मिस पुच्छिय ।
 तुन बहुआना^१ गरुअ । मुष्ण कड्ढी किम ओच्छिय ॥
 सामंत नाथ सामंत बल । मेर ठेलि दच्छिन घरहि ॥
 प्रथिराज आज राजिद गुर । इंद फुनिद न सो डरहि ॥छं० २५ ॥
 शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुघ्नों का सामना है
 इस लिये सहायता में आपको चलना चाहिए ।

कवित्त—अग्गीइ रावर ममर । करन साहम बहुवानिय ॥
 हलहल अग प्रचंड । सभ सोभै गर बानिय ॥
 * अग्गी अग जुगिद । अग्गि लग्गी विहन्नानिय ॥
 अग्गे व काल मुनियै दुसहू । सह पिच्छे फिरि ठडुयो^३ ॥
 चित्रंग राव रावर ममर । संभरि वै दिसि चड्ढयो ॥छं० २६॥

रावल समरसिंह का सेना आदि सज्जकर चलना
 सेना की तैयारी का वर्णन ।

रिग्यो सबर^४ नरिद । सज्जि है गै चतुरगिय ॥
 ह्य गय दल चतुरंग । जयि माहा भर जंगिय ॥
 महा मुभर गज्जत । वूदि घुरघर आहुट्टिय ॥
 सेस सहस फन फट्टि । मरुलि सल मलि साहुट्टिय ॥
 फड्ढयो मु सेम फन चंद कहि । तब फूकर करि जग्ययो ॥
 फन किन्न उद्ध कुडल करिय । तब मु सेम बल भग्ययो ॥छं० २७ ॥

छंद भुजंगी -

बरं विटिय ममर सहस नरिद । मनो विटिय उड्ढगन अम्भ चदं ॥
 किघो इद्र पामं सब देव राजे । विघो मेर तीर मु पव्वे विराजे । उ००८॥
 उठ्यो छत्र मीस विराजे कला की । मनो इद्र इदी बर चद जाकी ॥
 दुनीना उम्मा करी का बपाना । मनो हेम के दड पर चद जाना ॥छं० २९॥
 कछू स्याम पाट विराजे करारी । मनो वट्टे मोम कालक कारी ॥
 मयमद् गज सबद् मु उट्टे । बरगपन दान मनो मेध बुहडे । छं० ३०॥
 बजे ता जजीरं अनेक सबद् । मनो बुल्लिय अग्गुर माम भद् ॥
 धजं धज्ज हालं विराजे फिरती । मनो मडिय वग्ग धन मडिअ पती ॥३१॥
 गजं उपपरं हाल मोरं ठलवके^५ । मनो वेल उग्गी गिर कज्जलवके^६ ॥

१. मो० को०—बहुआना ।

* यह पकित मो०—प्रति में नहीं है ।

२. मो०—उट्टयो ।

३. मो०—समर ।

४. मो०—सफल ।

५. मो०—बन्ध ।

६. मो०—ठलवके ।

७. मो०—कज्जलवके ।

सितं अद्भुतं हृज्जार विठ्ठी नरिंदं । तिनं उप्पमा दिष्पि जंपी सु चंदं ॥ छं० ३२ ॥
 सबै सेन चतुरंग सज्जी अनेकं । मनो पारसं भान ग्रह एक एकं ॥ छं० ३३ ॥
 परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के
 पास नागौर को चले ।

दूहा— करि मत्तो चढ्ठे नृपति । समर राव चहूवान ॥

नागौरह आए धरा । मद्धि कट्टि मेलान ॥ छं० ३४ ॥*

धर्मायन कायस्थ ने यह समाचार चुपचाप दूत भेजकर शहा-
 बूद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चित्तोरपति धन
 निकालने नागौर आए हैं ।

धर्मायन कायस्थ लभे । परठि दूत पतमाह ॥

दिल्लि वै चित्तोर पति । धन कढ्ठे धरमाहि ॥ छं० ३५ ॥*

समरसिंह का दिल्ली के पाम पहुंचना और दूत का
 पृथ्वीराज को समाचार देना ।

कवित्त— जाइ सपत्ती समर । चंपि दिन्नी धरवानं ॥

चहुआना रै हथ्य । दूत दीनी कुरमानं ॥

असम विषम साहसी । रत्न माया रतुरत्नं ॥

कमल पत्त जल जन । मध्य अरु न्यारो जन ॥

छिप्पै न कलक काटन कलक । राज वध बंधी नही ॥

दस कोस कोस दिन्नीय तें । राज मृक्कि राजन तही । छं० ३६ ॥

पृथ्वीराज का आध कोस आगे से बढ़कर आगवानी करना ।

कवित्त राज दे दरबार । मुबर आनद उपत्ती ॥

पुंवर पाप कट्टनह । समर जिन समर माग्ती ॥

मुबर वीर जोगिद । चद विरदात्राल दिन्नी ॥

दिल्ली तें अधकोस । राज अगे होइ दिन्नी ॥

मंडरी मडि देषे सु कवि । मति डमरि लभै न दुइ ॥

समरह सु ग्रेह अरु समर अलि । समर मुबय अरु समर जुइ । छं० ३७ ॥

समरसिंह का अनङ्गपाल के घर में डेरा देना, दो दिन रहकर

सब सामतों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन

निकालने का क्या उपाय करना चाहिए ।

कवित्त— अनेंगपाल ग्रह जा विमाल । समर उत्तरिय प्रिया पति ॥

विधि अनेक भोजन सु ब्रत । राज उत्तर सु सार भति ॥

* छं० ३४-३५ मो.—प्रति में नहीं है और को. प्रति में ये ४० छंद के बाद मिलते हैं।

१. मो०—पुत्र ।

उभय दिवस बिलीय । सब सामंत सु पुच्छिय ।
साम दान अरु भेद । कंक भजि कद्दौ लच्छिय ॥
कं कहन बंक तुम अनुसरहु । समरमिह रावर मुमन ॥
उप्पाइ मिट्टि सोमंत करि । सु बर बीर कद्दौ सुधन ॥ छं० ३८ ॥
कैमास ने कहा कि मेरी सम्मति है कि शहाबुद्दीन के घाने के
रास्ते पर दिल्लीपति रोकें, और भीमदेव चालुक्य का
मुहाना रावल समरसिंह रोकें और तब धन
निकाल लिया जाय ।

कवित्त मति सुचारु कयमास । द्रव्य कद्दहन उच्चारिय ॥
सेन सुष सुरतान । राज दिज्जै प्रयुभारिय ॥
चालुककां चंपे न सीम । रावर मुष दिज्जै ॥
अप्य अप्य मुष रषिय । कद्दिड लच्छी बर लिज्जै ॥
आलाभ जुच्छे पय लाभ तुछ । सु रुछु काम किज्जै नही ॥
गोइंदराज धीची सुमनि । मिलि विभूति कद्द गही ॥ छं० ३९ ॥
रावल समरसिंह का इम मत को पसंद करना और
मंत्री की प्रशंसा करना ।

कवित्त तत्र वित्रंग नरिद । चंदपुंडीर वरज्जिय ॥
तुम कुमंत बल मंन । भंन जानी न मरज्जिय ॥
ते मत्री मंत्रंग । निर्गम आगम मत्र बुझै ॥
अंगन कै छुट्टन । घरह मुझै मन बुझै ॥
अरि अरिन मुप्य दक्कहि मुभर । तत्र मु द्रव्य मिलि कद्दिदयै ॥
सुरतान भीर भंनै ममर । मुमन मत करि चद्दिदयै ॥ छं० ४० ॥
नागौर के पास सब का पहुँचना, सुलतान के रुख पर पृथ्वी-
राज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना ।

कवित्त - जाइ संपनी ममर । मध्य नागौर प्रमानह ॥
सुरताना रै मुष्य । कोट अहो चहुआनह ॥
धन असंष कद्द तहां । साह चर वर पगघाइय ॥
चरचि वित्त सब सरित । वित्त करि हृथ्य दियाइय ॥
साहाब सुकर फुरमान दिय । गांमी छल बल लगया ॥
कद्दौ सुलच्छि आहुट्ट पति । मुष चहुआन विलगया ॥ छं० ४१ ॥

दो दो कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा बना ।

कवित्त उभय दूत नागौर । दूत चहुआन पास दुअ ॥

मब चरित्त घरि चित्त । लषन लष्यो सुमेन मुअ ॥

है कोसां चहुआन । कोस चित्रगराज दुअ ॥

अवन गवन जानहु सुवत्त । अनुमरहु पथ जुअ ।

मन मध्य कथ्य जानहु सकल । चल्लहु कागर राज लै ॥

घन धंम अर्थ कट्ठइ चरित । कही वन दिप्यै सु लै ॥ छं० ४२ ॥

दूत का शाह को समाचार देना कि नागौर में घन निकालने
के लिये दिल्लीपति आगए ।

दूहा कलि चरित्त नागौर पहु । दूत मरत्त आइ ॥

दिल्ली वै कट्ठै मुघन । बज्जा बज्जन वाइ ॥ छं० ४३ ॥

नागौर को समाचार पाकर सुलतान का उमरा खां के साथ

डङ्गा निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना ।

कवित्त वज्जा बज्जन वाइ । देशि देवान दुमकह ॥

चित्रकोट रावर नरिद । कहुन भुज अकह ॥

मभरि वै आट्टहु । लच्छि वट्ठन वन्तीमह ॥

गज्जन वै मुरतान । दूत लै आइ चरीतह ॥

मुनि सच्छ नच्छ नीमान किय । बोलि उम्मरा पात मह ॥

सज्जी सुमज्ज सभरि दिमा । चाहुआन किज्जै वमह ॥ छं० ४४ ॥

शाह का चक्रधूह रचना कर के चन्दना, सेना की

सजावट का वर्णन ।

कवित्त माह वदी सुरतान । चक्का व्युहं रवि चन्लिय ॥

एक एक असवार । विच्च पाइक तिह मिल्लिय ॥

ता पच्छै गज पति । पति अगवार समूह ॥

जमर जंग औराक । गौर जंबूरति जूहं ॥

ता पच्छ पति पुरसान षां । ता पच्छै बंधी अनिय ॥

तत्तार षान निमुरत्ति षा । हासिमरू षोषर पनिय ॥ छं० ४५ ॥

पृथ्वीराज की बाईं ओर से बचाता सुलतान धूमधाम से चला

शेषनाग को कँपाता पृथ्वी को धसाता रा. १ दिन चलकर

नागौर से आध कोस पर जा पहुंचा ।

कवित्त—वाम कोह प्रथिराज । भुक्कि सुरतान सुचल्लय ॥

सज्जि सेत्र चतुरंग । समर दिसि समर सुहल्लय ॥

भूमि घसिय घस भसिय । सैस कसमस्सि उक्रस्मिय ॥
 कमठ विमठ हुआ पिट्ट । दढ्ढ कूरंभ करस्सिय ॥
 रिंगयी सबल पुरसान दल । करि मुकाम सकयी न कोइ ॥
 नुर अढ कोस नागौर तें । सज्जि बाज चंप्यो सु जोइ ॥ छं० ४६ ॥
 यह समाचार सुन समरसिंह का धन पर मंत्री कैमास को रख-
 कर आप सुलतान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना ।

कवित्त—समर सिघ मुनि श्रवन । वीर नीसान दिषदे ॥
 सज्जि सेन चनुरंग । नरकि' तोषार चढंड़े ॥
 थिर थप्यो कैमाम । लच्छि उप्पर गहि रषिय ॥
 तरकि तोन सजि द्रोन । बलिय पारय मम दिषिय ॥
 भारथ्य कथ्य कवि चंद कहि । समर सार बर चल्लवै ॥
 उछ्छारि सेन मुरनान को । हय अठुनि करि हल्लवै ॥ छं० ४७ ॥
 जैसे समुद्र में कमल फूने हों इस प्रकार से मुलतान की सेना ने
 डेरा दिया ।

★ पूहा—साइन कर पनिप मपुद । कपुद प्रकृन्डिय रंग ॥
 उतरि सेन गुरनान वैह । मह आई ममरंग ॥ छं० ४८ ॥
 सबेरे उठते ही समरसिंह आगे मुलतान के दल की ओर बढ़ा,
 उसकी सेना के चलने से धूल उड़ने लगी ।
 प्राण उदित रवि रन रंग । ममर समर दिमि जगि ॥
 तब लागि दल मुरनान के । पेह मु उहुन लगि ॥ छं० ४९ ॥
 धूल उड़ने से भ्रम दिशा धूंधरी हो गई दोनों दलों का हवियार
 सज सज कर लड़ने के लिये तैयार हो जाना ।

कवित्त—पह मुपेह डंनरिय । दिमा धुयरी मुराजै ॥
 श्रग मग उछ्छरै । चिन उछ्छरै पराजै ॥
 पवन वेग मंजुरै । श्रवन लगा अमि मंत्रं ॥
 रथ कुवेर चढ्ढये । वान बढ्ढये मुमंतं ॥
 दोउ दीन कर दुंद दल । लरन लोह मज्जे मु बर ॥
 चंप्यो नरिद आठुठु पति । अगनि सार उड्डिय दुजर ॥ छं० ५० ॥
 लड़ाई का आरम्भ होना ।

कवित्त—घन नरिद मुरनान । वान दोइ वीथ समाहिय ॥
 दोइ मुष्य अरि सक्कि । मिथ बन की गति साहिय ।

१. रा० को० कृ०—तरिक ।

★ यह पहा (७२४) मो० प्रति में नहीं है ।

घार घार बज्जै प्रहार । नद् लग्गे^१ नीसानं ॥
 संभरि बै सुरतान । मीर उट्टे सुकि पानं ॥
 घरि च्यारि लगि तरवार झर । बहु उझार लगिय फरन^२ ॥
 दोउ दीन भीन घट घुम्मि घन।उछरि सैन लग्गे लरन ॥छं० ५१॥
 युद्ध का वर्णन ।

छंद पढरी -बलवंत सबल पाहार पुंज । कर धरै पग घायी सु नंज ॥
 लै पत्र चंी कालिका नारि । पर बत्त गहै गय दंत भार ॥ छं० ५२ ॥
 सिर तीर बुंद बरषंत वारि । सिर नपै वृंद अप्पित अपार ॥
 पग सों पग वज्जै करार । घन टहै घाइ जनु मत्त बार ॥ छं० ५३ ॥
 मस्संद मीर महुवत्त पान । ढाहनह धीर घायी परानं ॥
 प्राहार कुंन किय पुंज राज । सममेल चले हनि पग गाज ॥ छं० ५४ ॥
 तुट्यो सु मीम संभेन पानि । ढाहे कमंघ महुवत्ति पान ॥
 लघु बंधु न्स्तमा हनिथ सूर । वर माल बरे ले चली हूर ॥ छं० ५५ ॥
 जं जंत सबद जंयै जगत । पाहार करी अविगत वत्त ॥
 पाहार पुंज हस्तम पान । मुह जुरे मरद हूये उतानं ॥ छं० ५६ ॥
 है हयो पग हस्तम मरद । बाह्यो पग पुंजा दरद ॥
 तुट्यो मीस सा पुंज राज । अच्छी वरै करि उदं काज ॥ छं० ५७ ॥
 नारद नद् ग्रह इंद मद् । पलचरी कालिका करै नद् ॥
 प्राक्रम सूर देयै पहार । घनि घन्नि कहै भर सकल सार ॥ छं० ५८ ॥
 ब्रह्म पुरि भेदि गय सूर सार । अखि उंच क्रम पामेव वार ॥ छं० ५९ ॥
 कवित्त बलिय फौज पाहार । दुनिय भारतय जिन मंड्यो ।
 अरि अछरि बर लीन । धार धारहु तन बंध्यो ॥
 ईश मीस संगह्यो । इयरु तें हथ्यन मुक्यो ॥
 सुर मुरिय कहै जानि । मरम सिंगारहु चुक्यो ॥
 जानयो गवरि कहै मानि किय । रुहा जानि नंदी हस्यो ॥
 जानयै चंद इय कव्व करि । चंद लिलाटहते घस्यो ॥ छं० ६० ॥
 कवित्त -मुत्ति लहत सामंन । सिद्ध मन डोलन लग्गा ॥
 चुकि समाधि जगि सिभ । बंभ आराधन भग्गा ॥
 ★ आनुनुवा तजि सूर । तुवा मृगन आराधी ।
 तन तुट्टिग अधि^३ धार । पग नहि अछरिबाधी ॥

१. ए० कृ० को०-भग्गो ।

२. मो० प्रति में "बल उझारिय पग झरन पाठ है ।

★ "धिति संपुट बलभल्यो । तुवा सगन्न आराधी"मो०-प्रति में ऐसा पाठ है ।

३. मो० अति ।

अचरिज्ज एक आतम गमन । देह मटी मुक्की निमुष^१ ॥

षंघेरि षाल मुक्किय जगत । सुकर किति चल्लिय सुरुष ॥ छं० ६१ ॥

डूहा षां ततार रुस्तम मुभर । अरु जे मीर समंद ॥

सोइ तत्ते गहि तेग षरि । वर बीरा रस मंद ॥ छं० ६४ ॥

डूहा- चंद बंध पुंडीर वर । लण्णन लण्णा सार ॥

मिले मीर मरदान मुष । घरि कर षग करार ॥ छं० ६३ ॥

कवित्त षां ततार रुस्तम हुजाव । मुस्तफा महमद ॥

† है सज्जे वर मार । तथ्य आए मीरबद ॥

मार मार कहि धीर । मिले लण्णन लण्णमर ॥

सार घार वज्जंत । भिर्यो मुग हम्मीर गुर ॥

पुण्डीर मुबर साहम वरह । वरिव षुद् पद्दे सुषल ॥

कोतिग्ग देव देषन सिग । अरिय भूत नचे अकल ॥ छं० ६४ ॥

छंद हनुफाल आए मुमीर मसत । वर षग धारिव इद ॥

हक्कंत हक्क करार । वज्जन कर करतार ॥ छं० ६५ ॥

त्रिघाय षग त्रिकट । घहि मार मामत जूट ।

पुडीर लण्णन लोइ । भर मार आए सोइ ॥ छं० ६६ ॥

बाहै दुसार करार । लरि लण्ण लण्णन मार ॥

झंडे मु षग उझट्टि । तुट्टे मु झल्लर नट्टि ॥

उकि उक्कि ईस रनद् । नारद् नाव उमद् ॥

भगि मीर पुरं पुर तार । जुरवंत मीर जुझार ॥ छं० ६७ ॥

भज्जंत सेन महाव । गज्जंत लण्णन गाव ॥

तनार नूरि हुजाव । रुस्तम मद्मुद आव ॥ छं० ८ ॥

बाहै मुलण्णन सार । त्रिमि टोर छिप्पर लार ॥

चौहनी लण्णन घार । परममि मीर झुझार ॥ छं० ६९ ॥

गय मूर मंडल भेदि । भल कहत अच्छर वेद ॥ छं० ७० ॥

कवित्त- चंद बंध पुंडीर । नाम लण्णन लण्णे मुर ॥

दुंद देवि पञ्चार । दियौ हुंकार हक्कि गुर ॥

ईस सीस आनंद । पिड गिट्टिन मन भाइय ॥

दूर सूर अच्छरि विमान । चक्कि देवन आइय ॥

१. मो०-निमग ।

† मो०-प्रति छंद ६४ की प्रथम दो पंक्तियों का पाठ "सां ततार रुस्तम हुजाव, सान मुस्तफा महामर, है सज्जे वर सार, तथ्य आए मूर सरव" है ।

२. मो० मुनद् । ए०- वरद् ।

आतंम सोई उतपति चल्थो । देव धान विश्राम भय ॥

जम लोक लोपि बसि ब्रह्म पुर । जमि सेन दोउ सह जय ॥ छं० ७१ ॥

छंद दुमिला - छह गुर लहू पाय अछिर दायं त्रिचि त्रिचि रायं इंदोई ॥

दुमिलानय छंदं पढ़य फुनिदं रुहि कविचंदं गुनगोई ॥

बज्जै रन तालं असि बर झालं भर भर झालं भभीर ॥

पारस सुविहान छुट्टिय थांनं चढ़ि मध्यांनं छुटि तीर ॥ छं० ७२ ॥

गंजी जननं जरि भंगै द्विकरि लरि रज उच्छरि गगनेदं ॥

घर धीर घरंतं जोग जुगंतं लरि लरि जोर जरि मेछं ॥

किरवांन करककै बिज्ज तरककै छिच्छ उछककै इन भेसं ॥

दो उप्पम भासं माघव मासं अनि उन्हामं दुति केसं ॥ छं० ७३ ॥

उडि सकै न गिद्धं सरवहि विद्ध हसयनि मिद्धं दै तारी ॥

षप्पर अधिकारी षड उकारी जै जै कारी किलकारी ॥

गज दत न बद्धै दै पग चद्धै कुन मु कद्धै सिर चद्धै ॥

कंदल परि उट्टै सीम विछुट्टै हनहि न रद्धै भर बद्धै ॥ छं० ७४ ॥

दूहा सस्त्रन सस्त्रन उअरिय । मन वर छुट्टिय नाहि ॥

ज्यों मध्या प्रिय तुच्छ निसि । सेरो सहर समाहि ॥ ७५ ॥

रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला रोस राजं भरी । चित्रकोटे मुगी १ ॥

हथ्य बथ्य जुरी । जुट्टि सोहै पुरी ॥ छं० ७७ ॥

नीच दीनं परी । बीर हक्कं उरी ॥

कुंत कद्धै छुरी । हथ्य वथ्य करी ॥ छं० ७८ ॥

दंद कद्धै करी । कंग्र मोभै घरी ॥

कथि आलुध्यरी १ । मम्मता विछुछुरी ॥ छं० ७९ ॥

देवता संभरी । बिल्ल राजं भरी ॥

जोग मत्ते जुगी । रंभ हूट्टै वगी ॥ छं० ८० ॥

बीर जा संभरी । छुट्टि छुक्कै करी ॥

मात पित्तं उरी । षत्त कन्है नरी ॥ छं० ८१ ॥

... .. । किति जुगं करी ॥ छं० ८२ ॥

१. मो०-सरी ।

२. मो०-सरी ।

३. मो०-लोपि लोचं परी ।

ब्रह्मा—किति जोग करनह समय । मिले सकक सासेन ॥

आए भीर मुकूह कहि । परिय सिंह सिर जेन ॥ छं० ८३ ॥

अरिल्ल—कोप्यो रावल राज महाभर । सेना गाह सहाबह लिय पर ।

हिंदुअ सेन हक्कि भर उठे । पंन पांन मिर मारह बुट्टे ॥ छं० ८४ ॥

छंद भुजंगी -उठे पंच षांनं बरं आमुरानं । बजे भेरि नफकेरि त्रवे^१ निसानं ॥

धमककं घरा नाग गज्जै मुगेनं । चडे देव कौतिग देषत नैनं ॥ छं० ८५ ॥

मिली अछ्छरी रथ्य अप्पार रजै । नचै नारदं ईसुरं अप्प कज्ज ॥

करे कड दौरै भर आपुरानं । जुटै सूर सामंत लग्गे भरान ॥ छं० ८६ ॥

षगं १अ बाहै झरै टोप मथ्यै । मनो झल्लरं देवल कृटि हथ्यै ॥

जुरै पांन सामंत दोमार मारं । कहै दीन रामं जपै इष्ट सार^२ ॥ छं० ८७ ॥

षडे आइयं अषष आकब मीरं । छुटै धंम धीरज्ज कयं अधीर ॥

तबै आइ चामंड दाहिम रायं । हयौ सेल मीर गहककं गुरायं ॥ छं० ८८ ॥

समं सेल सानं बहै षग कट्टं । पर्यौ अण्व चामड भग्गै मुषट्टं ॥

उठे चोडं रायं गहै षांन सारं । तुटै मंडलं तुट्टिहै भाग पार ॥ छं० ८९ ॥

ढह्यौ षांन हय्ये मु चामंड रायं । इनै देषि मीर निकट्टं सु तायं ॥

बहै षग ढाहै चढघौ अप्प सायं । हली फौज साहं चपे असुरायं ॥ छं० ९० ॥

तबै केलियं पान षानां कुलाह । दुअं धारि षग तट्टे हिंदु थांह ॥

तबै आइ अड्डो भरं अत्ताई । लिए भिण्णरं घाव निच्छे सुनाई ॥ छं० ९१ ॥

बहै १अ षग करे मार झट्टं । मनो रंभयंम दुअ मीम कट्ट ॥

गुरं गज्जते अत्ताई अषंगं । भरककं सुसेना सबै मीर भग्गं ॥ छं० ९२ ॥

इकं सेर नमीर साहब्ब षानं । दुअं बध पुत्तं मु आरब्ब जानं ॥

दुअं धंम धारी उर जागियानं । उभै दौरि बंधं लगे आसमानं ॥ छं० ९३ ॥

चपे मीर मुष्यं चवै मार वानं । लगे दात्र घावं करे षग पानं ॥

इयं जुद्ध आनुद्ध देण्यो अपारं । भरं निडुरं देषि घायौ सुभारं ॥ छं० ९४ ॥

हए निडुरं सगि ह्य बंध मीरं । मनो सीरं इक्कं बरे दो सरैरं ॥

हने तेग तुरियं मुकमज्जरामं । ढह्यौ अंस ओहंस उद्यो तिमायं ॥ छं० ९५ ॥

उठे निडुरं हक्कि रट्टौर^३ रानं । सिना^४ बीस चौडं मुषं मानि भानं ॥

इते आइ दीनों तुरंग अपानं । चढघौ राव हयमीर कमघज्ज भानं ॥ ९६ ॥

घये आइ तते करे अप्प पानं । भगे मेन मीरं बहै पंच पांनं ॥

बढी जैत देशी वरं हिंदुआंनं । ॥ ९७ ॥

१. ए०-को०-अंवे ।

२. मो०-चारं ।

३. मो०-सीस ।

४. मो०-रतौरे ।

५. मो०-छके ।

रिझें नार छंअच्छरी गिद्ध सिद्धं । मनं बांछि त्रेमं जयं जस्स लिद्धं ॥
जयं जंपियं जोगिनी जे गमत्ते । करी किति चंद गय गेत्तं पत्ते ॥छं०९६॥

पृथ्वीराज को विजय, शहाबुद्दीन की सेना का भागना ।

कवित्त - घरिय अद्ध दिन रह्यो । माह माहव यत्र भगिय ॥

गात धंभ निरवान । हृथ्य मामंतन जगिय ॥

पर्यो षानं आरुव । जेन मेना हंडोरिय ॥

केलीषां कुंजर कुलाह । तट्टि नित्त मगं विलोयि ॥

चहुआनं सेन चत्र दंत चट्टि । तनु नित्त रव रतपयो ॥

सुरतांन भीच पंचो परन । जलधि मध्य पनगयो ॥छं० ९९ ॥

सूर्यास्त होना ।

गाथा -अथ वन दीड् पु गीरं । माद्वित्र सेरन हनि निहुग्य ॥

करि प्राक्रम अगारं । जलनिधि मद्धि गन पतंगं ॥छं० १००॥

रात होना । सेना का डेरे में घटना ।

कवित्त -जत्र निद्रि नय पतां । पनं दिद्रिय तम ग्रामिय ॥

कायर पंरुज मुदिग । कुमुद उष्वरि अलि वासिय ॥

तर को चित्त व्रिहंग । वाम विरहनि दुष वट्टिय ॥

सजोगिनि शृंगार । चित्त कामह रथ चट्टिय ॥

चक्रवाक चित्त चक्रित हन । चोर बिट्टय मन उल्लसिय ॥

ओमरे सेन विय उत्तरिय । स्वामि धंम मन मे बसिय ॥छं०१०१॥

गाथा -निमचर विरचिन चित्तं । चित्तं जाग्रत उभय सयनेयं ॥

जामं सर सरि हितं । वामीयं काम सपनायं ॥ छं० १०२ ॥

अरिच्छ -पतन पतंग मुदिषिय अंब । मानहु मीय सुद्ध प्रति व्यंबं ॥

नय मयूष कोदह उषारं । मानो निमिर जोग जंभारं ॥छं०१०३॥

चामंडराय आदि सरदारों का रात भर जागकर चौकसी करना ।

कवित्त -जत्रहि राज प्रथिराज । सेन उत्तरिय रयन गत ॥

तवहि सुराजन कज्ज । रहे सामंत मु जगत ॥

राचां मंड निडुरकमंघ । अत ताइय ईस बर ॥

सु गुरु जैत पामार । अिय मंजन अलष्य भर ॥

अवरं मु सब्ब सामंत भर । चडे राज चौकी समथ ॥

गुर लज्ज अवर भर सज्जि रहि । है पण्पर चवरार ह्य ॥छं०१०४॥

१. मो०-तंग ।

२. मो०-पतत ।

अरिल्ल—डैरा करि बर राज महाभर । तुछ अतर मिलि रहै सिध गुर ॥

चौकी सेन चढ़े भर सिधं । सक एक एक सूर अमंगं ॥छं० १०५॥

दूहा—राम रैन पावार भर । अरु सु कन्ह भत्तीज ॥

फुनि रघुवंसी राज घर । सब चौकी सजि नीज ॥ छं० १०६ ॥

अरिल्ल—

सजि चौकी अप सथ्य सकल मिलि । चढ़त सूर भर न्यप बरज्ज' बलि ॥

गुब सामंत अयति अप्य गढ़ि । रहै सुच्चारि दुअ चौकी चढि ॥ छं० १०७ ॥

इक चौकी बर सिध राज सज । भर दुअ चढ़े अप्य अप्पन कज ॥

धांन धांन जकि रहे सूर बर । सज्जि सनाह रहे जु हंस नर ॥छं० १०८॥

शाहाबुद्दीन के सरदारों का रात को चौकी देना ।

छंद भुजंगी—चढ़ी साह चौकी सुरतान धांन।दोई दीन बज्जै निसानं रिसानं ॥

चमकक सनाहं उपमा सु चंड़ी।मानो चंदनी रैन प्रति व्यंब मंडी ॥१०९॥

फिरै पति दंती नकी कति एमं । मनो कज्जल बूट कगूर हेमं ॥

फिरै प्यरी पति कदंत बाजा । तिन देखते बंदरं द्रोण लाजी ॥छं०११०॥

लो पाय्नी बोलनं मेछ सथ्यं । मनो प्रबतं बदरं केलि कथ्यं ॥

इक एक चित्ते दुअं चित्त नांही । तिनं षचियं सार साध्रंम सांही ॥१११॥

षिषी मुख बोलै सुरतान दोही । करै भूमि दुजन पुरं काल कोही ॥

इसी सेन जोरी मुगोरी नरिंदं । मनो बटियं पारस नभ्र चंदं ॥छं०११२॥

पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन ।

अरिल्ल - सिलह सजि प्रिधिराज महाभर सेन सह ।

मनो प्रप्पन प्रति व्यब प्रगट्टिय जानि ग्रह ॥

यापर ओपम ओर विचार लो अप्पियं ॥

ज्यो बहर में चंद दुरै कछ दिपियं ॥ छं० ११३ ॥

घुरि निसान घन सह सवनं न सभरै ।

हय गय साजिय साज हककतें उभरै ॥

भेरि भनंकिय भंकिन फेरिय नहयं ।

*एक तबे उत दिष्य दल बल बहयं ॥छं० ११४॥

शाहाबुद्दीन के सेना का वर्णन ।

कवित्त— पां हस्तम ततार । धांन चौकी बे लग्गा ॥

धां नूरी हुजाब धा । महमद अमि जग्गा ॥

१. मो०—बररजि ।

२. मो०—पचियं ।

३. मो०—प्रति में "है गी साजिय साज ककतें उभरै"; पाठ है ।

* मो०—प्रति में ए 'उन बे उन दिष्य' पाठ है ।

केली षां भष्वरी रोम घोषर षां पत्नी ॥
बर भट्टी मह नंग । स्वामि मंर्यो सा अत्री ॥
बीरंग बीर बज्जर विरज । बर चरित्त चिहं दिसि लगे ॥
सुरतान कांम अरि भंजनौ । सुबर बीर वीरह पगे ॥छं० ११५॥

सुलतान के सरदारों के क्रम से सज्जकर खड़े होने का वर्णन ।

कवित्त—अग्निवांन उजवक्क । घाइ घावइ सुरतानी ॥
ता पाछे साहाब । षांन बंध्यो तुल सानी ॥
ता पाछे नूरी । हूजाब सेई संचारी ॥
केलीषां कुंजर कुलाह । किन्नी कुट वारी ।
बांनिक विराह दुल्लाह बर । भाई षा भट्टी सु सिर ॥
प्रिधिराज राज आहुठ्ठ तें । बर निसान बज्जे दुमर ॥ छं०११६॥

घड़ी दिन चढ़े सुलतान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का
आगे बढ़ना, दोनों सेना का साम्हना होना ।

कवित्त—सुलतानां रे मुष्प । समर उत्तर्यो नरिदं ॥
मनों विद्धि विद्वान । मांड अजाद समुंदं ॥
दोऊ सेन उत्तरिय । धम्म अप्प अप्पन उच्चारिय^१ ॥
अरि समूह करि प्रांन । जुद्ध बर मंडि उछारिय ॥
पहु फट्टि निसा पहु फट्टि कर । धरिय बज्जि धरियार धन ॥
प्राची सुमंत दिमि वर मिलिय^२ । अमर कित्त चित्ते सुमन ॥ छं०११७॥
प्रातःकाल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन ।

छंद गीतामालची -नव नवय प्रातय विरह प्रावय संव दिव धुनि बज्जियं॥
झलकंत पवनह मधुर गवनह अंसु अश्व हरज्जियं ॥
विछुरंत चंद सुमंत दंदं दिवम ता गम जानयं ॥
पहु फट्टि चीर परिग पीर तोरि भूषन नापयं । छं० ११४ ॥
नव मिलिह अलिनी हले नलिनी सह मंद प्रकासयं ।
नय मुदिय कुमुदिय अचित्त प्रमुदिय सत्त पत्त सुभासयं ॥
जुग जपन अजय धरत मजयं चित्त मरन विचारयं ।
सामंत सूरय चहे नूरय देव तूरय तारयं ॥ छं० ११९ ॥
धरि अद्ध भानय चडि प्रमानय राज सेनय सज्जियं ।
उम्मारि वीरय बधि तीरय अप्प अप्पय गज्जियं ॥ छं० १२० ॥

१. मो०—विच्चारिय ।

२. कु०—सिलिय । ए०—मिलिय ।

३. मो०—पाठय ।

४. मो०—नव ।

कवित्त—अह्न सूर उगंत । डाल दुवकी सुरतानिय ।

ठांम ठांम मधगंध । सज्जि चल्लै अगवानिय ॥

घर तर गिर धावत समूह । जूह चतुरंग जगाइय ॥

दिल्ली बै सुरतान । धुक्कि नीसान बजाइय ॥

जा हथ्य हथ्य कविचंद्र कहि । अल्लह देइ सुपाइयै ॥

ततार पांन निसुरत्ति पां । सुबर सेनरि गाइयै^१ ॥ छं० १२१ ॥

रावल समरसिंह का सब सरबारों से पूछना कि क्या हास है

कौन बूढ़ है धीर डरता है । सभों का उत्साह

पूर्ण वीरता का उत्तर देना ।

कवित्त—प्रात समर रावर नरिद । साहस गत पुच्छिय ॥

कहै सब्ब सामंत । मत्ति जंपौ मति अच्छिय ॥

कोन वीर को धीर । कोन साहस को कातर ॥

कवन दूत अवधूत । जोग काबंध समातर ॥

बंधनह कोन को बंधियै । अरु किन बंधन तन छुट्यौ ॥

चित्रंगराज राजंग गुर । रहसि मंत बर छुट्यौ^२ ॥ छं० १२२ ॥

रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़कर

स्वामी का साथ देता है वही सच्चा वीर है ।

इहै वीर अवजोग । प्रांन पति सथ्य न छुट्टै ॥

चुक्कै न वीर अवसर प्रमान । जिहि जोग अहुट्टै ॥

इक बंधन बंधियै । इहत तन बंधन अगै ॥

स्वामि संकरें छाड़ि । स्वामि हक्कारति भग्गै ॥

सोई वीर धीर साहस मुई । सुइ रन वीर सुवीर हुई ॥

चित्रंग राव रावल चत्रै । जल बुडतं रन कीर सोइ ॥ छं० १२३ ॥

दोनों सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना ।

बुहा—उदित अर्क दिसि पुव्व पट्टं । जगे सेन दोइ जंग ।

अव्व अप्प बल बढ्ढए । बल बज्जंगी^३ अंग ॥ छं० १२४ ॥

पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना ।

कवित्त—तब प्रथिराज नरिद । समर उत्तरिय चढ़ाइय ॥

सज्जि सेन चतुरंग । को^४ दात्र लसाइय ॥

१. ए०—को०—क०—रंगाइए ।

२. मो०—छुट्यौ ।

३. मो०—बज्जंगिय ।

४. मो०—कोई ।

स्याम सेत धजबंधि । नेत निवकरि निवकाश्ये ॥

बंदि बीर विम्भूत लुलिय लिल्लाट लगाइय ॥

नारद् दद् तुंबर सुचिर । निव समाधि जगाय बसि ॥

अदभुत जुद्ध दोउ दीन की । अप्य आन दिष्यै रहसि ॥ छं० १२५ ॥

सुलतान का रणसज्या से मजकर सवार होना ।

दूहा सुनि रू वत सुरतांन चढि । गजि नयमिय अपमिद्ध ॥

अरुभर सकल मनाह कसि । चढि अवधत गनद्ध ॥ छं० १२६ ॥

हिन्दुओं के तेज के आगे भीरों का धीर छूटना ।

दूहा जब हिंदू दल जोर हुआ । छट्टि मीर धर धंम ॥

★ असमय आर बपान चलि । करन उद्धमा क्रम ॥ छं० १२७ ॥

एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर से रावल समर सिंह
का शत्रुओं पर टूटना ।

दूहा इत राजन उत समर बर । हुआ दल मज्जि अमर ॥

तन तुरंग तिन बर करन । नमिय तेज हय नंप ॥ छं० १२८ ॥

पुद्गारम्भ, पुद्ध वर्णन, अरब खां का मारा जाना ।

छंद भुजंगी -

मिले लोह हथियं सु बथ्यं हकारे । मनो दाहनी मन मै गंघ भारे ॥

दिठी दिठ्ठू दूनं भरं आमुरानं । पलं कूह वज्जे उभै सिध जानं ॥ छं० १२९ ॥

जपे इष्ट मंत्रं मृषं राम नामं । कहै मेच्छ दीनं ग्रहै मुट्टि वाम ॥

छुटे तीर भारं द्रमं के निगानं । मनो भादर गजिय मध्वानं ॥ छं० १३० ॥

वज्रं भेरि तुरं बज्रं मंप नद् । मनो मज्जई दीर अनहद् सहं ॥

भिरें मेच्छ हिंदू लरं लोड तने । मनं रस मीम यह देव पत्ते ॥ छं० १३१ ॥

हुए षंड षंडं भरं सो अ उगं । मनो देव दाने मिहथ्ये बिलगं ॥

पिजे लोह आरव्व वाहै ककरं । हली पीज चहुथान गय मूर नुरं ॥ छं० १३२ ॥

तबं आइ ठट्टी भरं मिष गेनं । तनं आवरे वीर रूपं पथेन ॥

दिठं दिठ्ठू लग्गी समं पान पानं । हयती हयती मृष आसुरान ॥ छं० १३३ ॥

तुरी छडि राजं महे संग पानं । हए सेल सथ्यं फटे पान थानं ॥

जुटे सेल संम्हो बहै षग झट्टं । परे टट्टरी झट्टू लग्गी सुषट्टं ॥ छं० १३४ ॥

भई भीर सिधं अनुद्ध अपार । कहै वीर धीरं मुषं मार मारं ॥

रह्यो आइ अड्डो पतीघार स्यामं । हयो षग पानं सु पमार रामं ॥ छं० १३५ ॥

★ मो०-प्रति में 'अमरम मय साह करि आखखां प्राकम' पाठ है ।

१. मो०-टट्टर ।

दृष्टो मारबं षांन दो दीन साषी। जिने दीनके धंम की लाज राषी॥छं०१३६॥
पाँच घड़ी बिन चढ़े बीरता के साथ लड़ कर अरब खां का मारा जाना ।
कवित्त - पंच घटी दिन चढ्यो । उमरि आरब्ब षांन लरि ॥

हिंदुअ सेन समूह । छोह छंड्यो सुकंक अरि ॥
असि प्रहार चढि धार । मन तुट्यो तन तुट्टिय ॥
अस्त बस्त बज्जी कपाट । दढीचन जुट्टिय ॥
पग पगति सिभ पग पग मुगति । भुगति भूमि कित्तिय चलिय ॥
धनि सेन साह सुरतांन दल । दरिय बीर मुत्ती बुलिय ॥छं०१३७॥

खुमान खां का क्रोध करके लड़ने को माना ।

कवित्त एकादस दिन जुद्ध । उमड़ि आरब्ब षांन जुरि ॥
★ बल षट्थी पतिसाह । षबरि पुम्मान षांन सुनि ॥
परि अरिष्ट मु बिहांन । भए सब सध्य उतारै ॥
अप्य अप्य मुष छडि । मंडि करि वार करारै ॥
षरियार सधन समघाइ बजि । लरत लोह भए लल्लरिय ॥
दोइ दीन दुंद दारुन दरिय । करै बीर गुन गल्हरिय ॥ छं०१३८ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद मोतीदाम - सुअंत कमंत बढै अनदोस । परै घन वत्त सरोसिय रोस ॥
लठै जनु सांड भयानक भंति । करै घन गज्जं घन बन कंति ॥ छं० १३९ ॥
बहै असि अंक निसंरु नि नारि । उतारत भाजन सून कुंभार ॥
तकै सिरहंन तकत्तिय घाउ । बहै करि वार मनो बहि बाउ ॥ छं० १४० ॥
जहां तहां धुक्कत उठ्ठन एक । सरफे तरफे रत तच्छिय तेक ॥
हलंमल होत षरम्भर भीर । वहै असमान अनुद्विय तीर ॥ छं० १४१ ॥
बहै सर पष्वर निकरि जात । तकै तन घट्ट करेन निघात ॥
परै वर बज्ज गुरज्ज मिरन । वहै मिर रत के पब्व शिरन ॥ छं० १४२ ॥
अदम्भुन आवध बज्जिय मार । उहै जिमि वृक्ष सुनइ किनार ॥
हलंमिल है दल पैदल । क । भय इम युद्ध शरी भर क ॥ छं० १४३ ॥
ग्यारह बिन युद्ध होने पर सुनतान की सेना का निर्बन होना । रावल
समरसिंह का तिरछी ओर से शत्रु सेना पर टूटना

कवित्त - एकादस दिन जुद्ध । मवर संभट पंच घटि ॥
बल षट्टिय पतिसाह । षग षरभरिय षांन जुरि ॥

★ १३६ पंक्ति मो० धनि में नहीं है ।

१. मो०-संग्रह ।

हाइ हाइ आरिष्ट । सकल हिंदून सेन करि ॥
समर सिध मुष छंडि । जाइ भंज्यौ तिरछौ परि ॥
घन घाइ बजाइ सु फोज फिरि । लरन लोह कढ़ै भिरन ॥
बोउ दीन दीन उण्णम बिसल । मद मैगल छुट्टे लरन ॥ छं० १४४ ॥
छंद त्रिभंगी मद मोष कि झुट्टं दो वर जुट्टं संकर तुट्टं आहुट्टं ।
भर भर भूआलं बूथर हालं कर बजि तालं तर तुट्टं ॥
करि कर बर कुंतं सजि बलवंतं भिरि गज दंतं चढ़ि दंतं ।
करि घन समान बीर भरानं उण्णम जानं करि नंतं ॥ छं० १४५ ॥
युद्ध वर्णन ।

तज्जे सब सस्त्रं बीर सुमित्रं बजि अनुरत्त उत्तमे ।
उर उर बर घट्टे रुधि रस लूट्टे छबि बल पट्टे रग रंगे ॥
घर घरति फुरक्कं चलत न दिष्यं अंतर रुष्य अवरुष्यं ॥
बगं अध जानं कौ किग्वानं गिल हित पानं जह भष्यं ॥ छं० १४६ ॥
है वै हिदवानं तजै न धानं द्रोन समानं गुर पिंडं ॥
रितु राज बसंतं दीपति चितं संकुचि जंतं मिल थंडं ॥
नेजे बर धानं बलि लछि ध्यानं मीर धरानं भ्रमि दंदं ॥
सब सेन समाहं सुरपनि छाहं को तिग राह लै चदं ॥ छं० १४७ ॥

सुरासान खां का घोर युद्ध करना ।

कवित्त - षां पुरसानं ढहाइ । षानं पुरसानं गहन पति ॥
सत्त दून भर समर । समर आहुन्ति मडि छिति ॥
सेन नवत भ्रित नवत । नवत गजराज माज नव ॥
ते समस्त नब मंत्र । यंत्र नत्र नव्वत सब ॥
दिन अदित हंस इक सध्य उडि । रन आहुट्टिय बीर बर ॥
दिष्यहि सुजध्य गंधव गुननि । जुबर कित्त बिस्ती सुभर ॥ छं० १४८ ॥

समर सिंह की बीरता का वर्णन ।

कवित्त - पर्यो समर षाबास । समर जिन्नं मुरशानी^१ ॥
परि भट्टी मह नग । सम्त्र वाहे सुविहानी ॥
पर्यो गौर केहरी । रेह अजमेरां मरिषय ॥
स्वामि धम जस रत । कित्त भारथ भर भविषय ॥
रषवंस पंच पंचौ मिले । बर पंचानन नाम क्रपि ॥
चित्रंग बीर पंचो परत । चढयो भान मध्यान नमि ॥ छं० १४९ ॥

कवित्त — चक्रत भानं मध्यांन । बीर गण्डर उगगरि धर ॥
 सुमरि सेन सामंत । ओट तत्तार धान भर ॥
 बज्र घात आरिष्ट । बीरता रिष्ट गरिष्टिय ॥
 लुथिय लुथिय आहुट्टि । लुथिय लुथियन पर जुट्टिय ॥
 धारंग छुट्टि अन छुट्टिहै । डंक बज्जि बज्जी विपल ॥
 हरुवंत देखि उम्भे हसब । उघरि सिंभ दिध्वं सुपल ॥छं० १५०॥

बड़े बड़े बीरों का मारा जाना ।

पल उघघरि दिषि मिभु । ब्रह्म दिष्यो ब्रह्मासन ॥
 प्रकृति पुरुष दिष्योन । प्रकृति दिष्यो गुरु वासन ।
 धान धान जम पुच्छि । रंग पुच्छे पछ गृह फिरि ॥
 भौ अचंभ कविचद । लोक मंगे सु लोग सुरि ॥
 लम्भी जु मुगति पग मग करि । जोग भग जिन मुक्कयो ॥
 सामंत सूर मिलि सूर ग्रह । फिरि न तिनन तन चुक्कयो । छं० १५१॥
 गण्डर खां घोर तातार खां दोनों का मारा जाना ।

दूहा — उभय सहस गण्डर परिग । थल बिहचो सुरतान ॥
 समरसिंघ रावर सिमुख । परिग बीर' बिय धान ॥छं० १५२॥
 याकूब खां का घोर यद्ध वर्णन ।

छंद भुजंगी —

पर्यौ धान आपूब मुष्यं समाहं । बजे टोप टंकार के तार साहं ॥
 कटे कंध कामंध नचे विभंगं । मनो अगि लगी ममीपं न दंगं ॥छं० १५३॥
 करे बीर मंगं सुभट्टं करं क । मनो उच्छरे मीन जल मझ्म पंकं ॥
 करे दोह दोही समं त्रिय कोटं । परे बीर बीरं नूरत्तान जोटं ॥छं० १५४॥
 मथी सेन दूनं भई धोर थोरी । मनो वारिज पंति दंती ककोरी ॥
 बजे घाइ अघघाइ निघघाइ घट्टु । पट्टे वेद त्रिग वरुं जवान मट्टु ॥छं० १५५॥
 परे ढाल मालं विराजं कला की । मनो भीति गोष भिदै नीर जाकी ॥
 जिनै नीर मुष्यं धगं नीर झरुंके । मनो माधव माम वे वंक फुल्लै ॥छं० १५६॥
 किरव्वान कुंतं सरै पंमु कक्की । मनो बीज लट्टी कुलट्टा मानकी ॥छं० १५७॥
 जब आधी घड़ी दिन रह गया तो निमरत खां घोर तातार
 खां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया ।

दूहा — रहिग जांम तन अद्ध घटि । टरिन बीर जुध वार ॥
 वां निमुरत्ति तत्तार वां । लयी सेन सिर धार ॥ छं १५८ ॥

घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार
लेकर टूट पड़ना ।

छंद भ्रमरावली —

जयं जय सह मु सहिय सूर । जु अच्छरि पुक्क उछारत दूर ॥
हहा हुहु गंध सुगंधव गांन^१ । पच्यो घरि एक उभै रथ भांन ॥१५९॥
भव^२ रंड मुंडय सुगुंथय माल । भ्रमंय उपावहि दुंढहि लाल ॥
जु षिझै चहुवान कृपान कसी । मुमनो दुति दोझर गी निकसी ॥छं १६०॥
तुटि पट्टन मौ उपमाहि लह्यौ । सुपर्यौ जनु मेर सुरंग कह्यौ ॥
नव जंपि नवै रम बीर नच्यो । भमरावलि छद सु चंद रच्यो ॥छं १६१॥
नव नंचिय रंडति मुंड हस्यो । तिन ठौर विभच्छ भयानक सौ ॥
परि लुण्ठिअ लुण्ठि तहां सरसं । सुभयो रस शंकर रुद्र रसं^३ ॥छं १६२॥
रुधि सों गज राजति दांन झरै । कवि चंद तहां उपमा उचरै ॥
छबि मो घन स्यांम हरत परी । मनो विव बलै नदिद्वै उतरी ॥छं १६३॥
उपमा दुसरी रंग बेषि कहै । जमुना जल में मग्मनि बहै ॥
घन अच्छरि अच्छ बटाच्छ करै । रम भेद भृगार पनाह हरै ॥छं १६४॥
तिन जारन गाड़न को न बचै । रनमं रस तीय मु मत्य नचै ॥
घरकै घर काइर विसत वियं । करुना रम केलि कुलान कियं ॥छं १६५॥
बर बीरन जुद्ध इती संपज्यौ । तिहि ठौर भयानक सौ उपज्यौ ॥छं १६६॥
रावल की बीरता का वर्णन ।

दूहा - अति प्राक्रम रावर मुभर । कूरैभ नसिंध जग्गि ॥

रघुवंसी अति क्रम्म गुर । कथ्य करन कलि लगि ॥छं १६७॥

शाह का प्रबल पराक्रम करना । हिन्दू सेना का घबड़ाना ।

गाहा - जब मच्चि रीठ अपारं । कि अति क्रम्म जवनय साह ॥

भर हर हिंदुअ भग्गं । रुर धरि पग्ग घाय कूरभ ॥ छं १६८ ॥

रावल का क्रोध कर स्वयं सिंह के समान टूट पड़ना ।

कवित्त - जबहि सेन चनुरंग । साहि भरि जंग आइ जुगि ॥

तबहि राज रघुवंस । झुकित बर पग्ग अप्प गहि ॥

हनिय मत्त गजराज । सिंध कर मय्थ सिद्ध बहि ॥

मनो बसत रंगरेज । मट्ट फुट्यौ सुरंग ढहि ॥

दौरे मसंद किलकार करि । घुअ समान माहस धरै ॥

बज्जे बहन असिधर सबर । सुकवि चंद कीरति करै ॥छं १६९॥

१. मो०—जांन ।

२. मो०—भवो ।

३. मो०—हसं ।४.

४. को० कृ०—संसर ।

५. मो०—सिध ।

बोनों सेनाओं का लब्ध पथ्य होकर घोर युद्ध करना ।

छं० विराज—

जुरे हिंदु मीरं बहे षग तीरं । मुखें मार मारं बहै सूर सारं ॥ छं० १७० ॥
 भिरै इम भारं तुटै* षग तारं । अकथ्यं करार कहे देव पारं ॥ छं० १७१ ॥
 जुटे पंच षानं करवकै कमानं । रघूवंस रायं धरै षग धायं ॥ छं० १७२ ॥
 नरं सिध रूपं जुरै नेरु जूपं । महंमूद षानं रघूवंस रानं ॥ छं० १७३ ॥
 ह्यौ सेल मीरं पर्यौ मध्य वीरं । कही फौज साहं बहै कछ्छवाहं ॥ छं० १७४ ॥
 दुअं तीन षानं ह्यं तीहि यानं । बहै षग झट्टं सुबा हिम घट्टं ॥ छं० १७५ ॥
 बहै धार धारं करै मार मारं । हकौ हल्ल मीरं नयो नाग पीरं ॥ छं० १७६ ॥
 सिरै तुट्टि तारं मिले षान सारं । अनुज्जं अपार ... ॥ छं० १७७ ॥
 बहावंत धायं मनो वृष्य वायं । गए सूर भेदं बरी अच्छ मेदं ॥ छं० १७८ ॥
 दुअं फौज राजं जु साहाब गाजं । रहै दोस सामं करै सामि कामं ॥ छं० १७९ ॥
 करै देव साषी सबै किति भाषी । ... ॥ छं० १८० ॥

राबल के क्रोध कर लड़ने का वर्णन ।

कवित्त — ह्वं ततो रघुवंस । भीर भंजन चहुआनिय ॥
 भयो दुलह तिन बेर । बरन बरनीं सुरतानिय ॥
 बीर मत्र उच्चार । लोह अछ्छित उछ्छारै ॥
 मिलि अछ्छरि करि गांन । लोन गिद्धनि उत्तारै ॥
 पुजंत कलस शपि घवल सिर । कलह केलि भावरि फिरहि ॥
 मंडप्य वेत मानिनि मुगल।सस्त्र कटाछ मु झुकि करहि ॥ छं० १८१ ॥

युद्ध की शोभा का वर्णन ।

छंद त्रोटक --

दोउ दीन मु दुदुभि लोह मिले^१ । अंग अंग करवकत^२ जग विले ॥
 सहनाइ नफेरिय नैरु बजं । सु मनो घट भदव माम गज ॥ छं० १८२ ॥
 घन टोप मु रभिय तेज पुले । जनु पतिय वाग हनेक मिले ॥
 घन पाइरु पति झनकत यो । मनो मोर कला करि नाचत यो ॥ छं० १८३ ॥
 झुं झुरी दिस दिस्स* सबंग दिमा । दिशि पीत मु पतिय अद्ध निमा ॥
 गज बंधि सनेन चमकनि यो । मुमनो लुगि ऊक परव्वत ज्यो ॥ छं० १८४ ॥

*यद्द पंक्ति मा०—प्रति मे नहीं है ।

१. मो०—युवन ।

२. मो०—मिले ।

३. छ०—अरवकन ।

★ को०—१०—प्रति में "दक्षिण जीविय नीति" पाठ है ।

किरवान कढंत कला दुमरी । सुमनों झर होरिय सी पमरी ॥
 कटिकंध^१ कमंधन छुट्टि जुरी । मनो वीज कला छय छुट्टि परी ॥ छं० १४५ ॥
 असवार सु पष्वर कडिठ तबै । सुमनों घर बटत^२ बधव है ।
 करि फुट्टि बगत्तर रत्त रयो । मनु जावरु मै जल बटत ज्यो । छं० १८६ ॥
 भभकंत भसुडन हंड परी । बडि पावक ज्वाल मनो निकरी ॥
 दुहु बीच भसुडन देव लसै । मनो वाल गनेस हि पूजि हमै ॥ छं० १८७ ॥
 सिर फूटत भेजिय उड्डि चली । सु मनो दधि मट्ट उपट्टि हली ॥
 तरकै घन घंटन घट्ट सुधं । सु फिरं जल मुक्कय मीन उध ॥ छं० १४८ ॥
 गज उप्पर ढाल गिरै बर तै । सु गिरें गिरि केलि मनो जरतें ॥
 गिरि केलि कमंधन चंत परे । मनो भेष पिसाचन साच करे ॥ छं० १८९ ॥
 † बडि बडिठ घन घट सीस जरं । जनु बद्दल बद्दल वीज अरै ॥
 जु सनाहन घाइ सुभै तन मे । झर होरिका सी प्रगटी घनमे ॥ छं० १ • ॥
 चवमठियों तारिय दै किलकी । सु नचै जनु गोपिय पेम छकी ॥
 घन घाव मु बिहल यो घुरकै । मनो ब्रोळि कबूनर द्वै सुरकै ॥ छं० १९१ ॥
 दुनिय उपमा कविता सुर कै । मनो पूर नदी हय ज्यो फुरकै ॥
 तर वारनि तेज परै तरसी । घन घुम्महि मध्य मनो झरमी ॥ छं० १९२ ॥
 तिन उप्पर पषिय बंधिय पति । मबो पह इद्र धनकिय पति ॥
 पिलवान हलै करि पील गिरै । कलसा मनो देवल के विहरै ॥ छं० १९३ ॥
 घन छिछ उपम करै सुरपै । मनो मेघ प्रवालनि कै वरषे ॥
 घन नाइ रही घन घुष्पगिय । सु नचै मनो बालक वित्तरिय ॥ छं० १९४ ॥
 इक सूरह की उपमा बरनों । दर मध्य गरज्जत सिंघ मनो ॥
 मुर तीन हजार म लोह मिले । तिन मे दस तीन कमध पिल्लें ॥ छं० १९५ ॥
 दस रावर है वर घेत चढघो । टुक की टुकरा नव टूक बढघो ॥
 दोइ दीन रहै इतनै उनमान । मनो तारक प्रात विचद समान ॥ छं० १९६ ॥
 रावल का शत्रु सेना को इतना काटकर गिराना कि सुलतान
 और उसके सेनानियों का घबड़ा जाना ।
 कविन दसहै बर कटि ममर । छोरि गज गाह हृथ लिय ॥
 छिछ भ्रोन सब अंग । पुहप जनु वृष्टि देव किय ॥
 किल किंचित रस भर्यो । लुधिय पर लुधिय अहुट्टिय ॥
 सीस हक्कि घर जुट्टि । छुट्टि अरियन फिर ुट्टिय ॥

१. क०-को०-ए०-बंध ।

२. मो०- 'दधव बंटत' ।

३. ये दोनो पक्तियां मो०-प्रति मे नही है ।

३. ए०-बडिल ।

४. ए०-को०-प्राण ।

विडडूर्यो देषि मुरतान मन । सेन सब्ब मन विडडूर्यो ॥
अटि हार कोइ पुज्जे नही । बल अभून आतम कर्यो ॥छं०१९७॥
पृथ्वीराज का प्रपती कमान संभाल कर शत्रुओं का नाश करना ।

कविन तत्र पृथिवीराज नरिन्द । साह मम्हो गत्र साहिय ॥
पत्र त्रान कम्मान । साहि गोरी झकि बाहिय ॥
सरकि सेन सब घरकि । पडुक्क जगल भए ठडुडै ॥
पथ्य जेम भारथ्य । कुष्ण सारथ सम' गडुडै ।
बर करकि करकि कमान कर । पंग तेज छुटथी मत्रल ॥
नट डोरि जानि पडुह चडयो।पुधिर कोरि मडी निलक ॥छं०१९८॥

मुलतान का प्रपती सेना को ललकारना कि प्राण के लोभ से जिसको भागना हो सो भाग जाओ मैं तो यहीं प्राण दूंगा ।

कुंडलिया तत्र जपे मुरतान अप । जीवन जाइ मु जाउ ॥
हं जीवत रन रुक्कहो । मो मति इहै मुभाउ ॥
मो मति इहै मुभाउ । ताहि निरपन बल एही ॥
रर नारी घन छांह । तूल अगं जिम देही ॥
बीन छटा जिम प्रान । नई जाया मिल कुंपै ॥
ग्रह लोभी ग्रह जाउ । साहि आरुम इम जपे ॥ छं० १९९ ॥
सब लोगों का मुलतान की बात मुन बड़ाई करना ।

कवित्त - मुबर वीर गजनेस । अंग चौरग वात मुनि ॥
राज रक धिल्लै विचार । नर नाग देव मुनि ॥
तुम गजजन ये साह । दाव दिज्जे नहि दुज्जन ॥
जम आजम भं मरन । जद्दु बंधं सज्जन इन ॥
दिसि अदिमि और दुष सुप्य गति । ए सरीर लग्या रहै ॥
उच नीच चंगत चरु गति । पति विपति जिय सब महै ॥छं०२००॥

बुहा - का काया मायातिका । का ग्रहनी ग्रह कोन ॥
अपन अपिय मिहवनें । जो देपिये मुलोन ॥ छं० २०१ ॥
मुलतान का तातार खां से कहना कि संसार में सब स्वार्थी हैं
मरने पर कोई किसी के काम नहीं आते ।

कवित्त - सुनहि धान ततार । अप्य स्वारथ सब लग्ये ॥
पसु पपी बर जिते । तत सोइ तत मग्ये ॥

त्रियं बंध सेवक सुमंत । तन पैं तन चाहैं ॥
 सुर नर गनधर और । जग्य जापः अवगाहै ॥
 आचेत अवर परबमि परे । भयन विन मरदंग कह ॥
 जम हृथ जीव पंजर परें । पंच मलाकह तुछछ मह ॥ छ० २०२ ॥

दूहा जमर काल मो व्याल ध्रम । पंजर तुद्रुन नेम ॥
 पां ततार अरदाम मुनि । मो आलम मति एम ॥ छ० २०३ ॥

शाह का कहना कि सत्तवा सेवक, मित्र, स्त्री वही है जो स्वामी के
 गाढ़े समय मुंह न मोड़े ।

कवित्त मो सेवक मुनि स्वामि । स्वा म मंरुटे छुड़ावैं ।
 ★मो मु मित्र अप्पनौ । चित्र मित्तें न दुरावैं ॥
 ★सो बंधव अप्पनौ । दमा अवदमा न कथ्यै ॥
 सोइ त्रिया अप्पनी । आम मुक्कें अमु मध्यै ॥
 मति मोइ जेण पग उप्पजें । तत्त मोइ तत्तह मिले ॥
 हम परत भिरत सुरतान मुनि । गज्जन भें गज्जन वने ॥ छ० २०४ ॥

गुलतान की सेना का फिर तमक कर लौट पड़ना और लड़ाई करना ।

कवित्त तमकि तेज गोरी । नरिद चिन डोळें वरुं माह्यौ ॥
 अधभ भृत्त विन अच्च । पृट्टि गोरी न ममाह्यौ ॥
 सुवर बीर सुरतान । सेन चहुआन डेंडोरिय ॥
 पगी जानि पारण्य । जेम दरियाव हिलोरिय ॥
 पछ्छिलो वलन सुरतान दिषि । भिघ लोक अक्किलरकयो ॥
 मुरि गयो सेन सुरतान की । छत्र सीन तव नषथौ ॥ छ० २०५ ॥
 पांच खां और पांच ख्वासों का घोर युद्ध मचाना ।

कवित्त पंच पान सुरतान । पंच पावाम मु च्छिट्टिय ॥
 पामवान सुरतान । पास बाजू दोइ ट्टिय ॥
 रन हंध्यौ सुरतान । सेन चहुआन डेंडोरिय ॥
 मनु पलट्यौ नट भेम । बीर कइना रस सज्जिय ॥
 भर भीर तीर छट्टिय दिपिय । तव मु ओट आलम गहिय ॥
 तत्तार पांन घुरतान पां । मंत मडि सब दिषि कहिय ॥ छ० २०६ ॥

कवित्त - जब मुषान पावास । भरर लुगिय भय तप्पन ॥
 बहिय सार मुष मार । छंडि गोरिय बल प्रप्पन ॥
 लाल डंड सिर छत्र । देषि मुरतान साहि पर ॥
 तव वीर भर सुभर । हलै हल हल धराधर ॥

बिचलिय सुफौज सुरतान लषि । तब छुट्टिय घर घीर सचि ॥

षानह सुपंच षावास भिरि । सिर पर आवघ रीठ मचि ॥ छं० २०७ ॥

कवित्त - इत सुषान षावास । उतह सामंत सिध भर ॥

रिस रिन मत्ती रीठ । तुट्टि ताइय मसंद घर ॥

गह गहंत उव्चार । कही राजेंद्र राज गुर ॥

तबह षान रिस ग्रम्ब । ह्य्य बाहंत हंस घर ॥

जै जै सुसद् जुगिनि करहि । कर षप्पर उनमंत मत ॥

दुख लरै दीन बल स्वामि कैं । घुरत ग्रंब ग्रंबान ॥ छं० २०८ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला हिंदु मेछ्छंभरी । ताल बज्जै हरी ॥

घाय घायं घुरी । मत्त छबके परी ॥ छं० २०९ ॥

साहि साहाबरी । पान झुझं परी ॥

राज रावल्लगी । कंघ कंघे घरी ॥ छं० २१० ॥

सीत तुट्टे तुरी । डक्क नद् करी ॥

ईस सीसं जुरी । नचि नारदगी ॥ छं० २११ ॥

येइ येई घरी । गिद्ध सिद्ध करी ॥

जस्स जंगल्लरी । पान षावासरी ॥ छं० २१२ ॥

जंग जुद्धे भरी । भीर राजं परी ॥

मार मादुच्चरी । हिंदु साबंतरी ॥ छं० २१३ ॥

हल्ल हल्लं घरी । मन्न इहं मुरी ॥

फौज पिछ्छी फिरी । राज राजंगरी ॥ छं० २१४ ॥

घीर छुट्टे घरी । बोलि रावल्लरी ॥

हनौ मीरघरी । अश्व छडे परी ॥ २१५ ॥

हाय हाय मुरी । बद्धिय बंबरी ॥

काल दिट्टं मुरी । मद् घट्टं करी ॥ छं० २१६ ॥

दिषिब राजंतरी । छडि हंसं हरी ॥

कंक बंक करी । मीरषानू नरी ॥ छं० २१७ ॥

ठा ३ षानं ठरी । अप्प हौरें अरी ॥

कद्धिठ कीरं मरी । बाहि षां नरी ॥ छं० २१८ ॥

सेस बिच्छेदरी । रंभ थंभं ठरी ॥

देषि दाहिम्मरी । पीप मा निहुगी ॥ छं० २१९ ॥

बल्ह सारौ सरी । दूर राजं बरी ॥

देषि लोहं अरी । षग षगं भरी ॥ छं० २२० ॥

जुद्ध भूतं करी । काम सामंतरी ॥
 भीर पछ्छी परी । बद्धि हंसे सुरी ॥ छं० २२१ ॥
 भाल भल्लै सुरी । राज कित्तं करी ॥
 अट्टु षानं गिरी । इअ रावल्लरी ॥ छं० २२२ ॥
 और सखं सरी । षानं ढाहे धरी ॥
 कित्ति चंदं करी । नाम ले अन्नरी ॥ छं० २२३ ॥
 वीह दसं बरी । सेष सेषं परी ॥
 संक सुछ्छं सुरी । भान षानं परी ॥ छं० २२४ ॥
 भेद चल्ले सुरी । हर सें अंबरी ॥
 बिंद दुढे फिरी । जेत राजंगिरी ॥ छं० २२५ ॥
 कित्ति देवं करी । फौज हल्लै धुरी ॥
 चल्ल विच्चल्लरी । कुस्स कुस्मं मरी ॥ छं० २२६ ॥
 । देव नषं षरी ॥ २२७ ॥

कन्ह का पुरासान खां को मारना ।

छंद मोतीदाम - पर्यो जहाँ सेन मुरावर मार । मनो मदमत्त कँठीर गुंजार ॥
 नयो सिर नाग मुमंडिय जंग । घुरें मुर जोरय^१ अंबक संग ॥ छं० २२४ ॥
 वहै करि वार सु सगिय मूर । परे पर नार असूर पनूर ॥
 गही बर सिद्ध ष मूर समंत । भयो जनु आनि कै ईसर अत ॥ छं० २२९ ॥
 नचं दय तारिय चौमठि नारि । बरें वर मूरय देय धमारि ॥
 मिले सम कन्ह अनी पुरसान । वकं दुइ ईमह आन समान ॥ छं० २३० ॥
 दुअं बर धारिय संग गुमानं । हए हिय कन्ह मुपान उरानं ॥
 पच्यो पुरमान सु बंधव नेत । बढी अनि देयि प्रथी पनि जेत ॥ छं० २३१ ॥

पुरासान खां के गिरते हिन्दुओं की सेना का फिर तेज होना ।

दूहा परे षेत पुरसान षा । ढहि घन घाय अचेत ॥

फिरि दल हिंदू जोर हुआ । बजि वरताई षेन ॥ छं० २३२ ॥

पृथ्वीराज का ललकारना कि सुलतान जाने न पावै इसको पकडो ।

सब सरदारों का टूट पड़ना ।

छंद मोतीदाम मिले बर हिंदु तुरक्क सुतार।कटक्कट वज्जिय लोह करार ॥
 उडे बर षग न टूक निनार । मनो छुटि मूर किरन्न प्रहार ॥ छं० २३३ ॥
 कहै^२ बर छुट्टि सुबोल उबार । जपे उर राम कहै मुष मार ॥
 भिरें भर मीर सु सामंत मुद्ध^३ । कहै कवि कथ्य सु अंघिन लद्ध ॥ छं० २३४ ॥

१. मो०-जोरय ।

२. मो०-बहै ।

३. मो०-शुद्ध ।

बहै स्वर' संग दोऊन अपार । ठहै वर मीर सुअंग अगार ॥
 चंपे दल साहि जके चहुआन । गहौ सुरतान हनौ षग पान ॥ छं० २३५ ॥
 फुले मनो साइप धम्म सुरत्त । बढयो मन साहि गहन सुवत्त ॥
 चवै चहुआन अहो वर सूर । करौ सब मीर षरगय चूरि ॥ छं० २३६ ॥
 तपे गहि रात्र सु संग त्रिभाग । छुटे घर मीर सु धीरज नाग ॥
 चवै मुष मार सुचावंड राइ । दनों सुरतान करौ इरु घाइ ॥ छं० २३७ ॥
 सुने बलिभद्रय पीप सु अल्ह । नरां सिर निडुर रष्वन गल्ह ॥
 चंपे चव सामंत घाइ परेस । बहै वर सेल कियो इह भेस ॥ छं० २३८ ॥
 लगी वर सेल कमदं निसास । फुले मधु' माधुअ केसु पलास ॥
 कटे वर षग कमद निसार । तुटे वर देवल अंड अघार ॥ छं० २३९ ॥
 हुकै वर सामंत जुद्ध अनुद्ध । परे असि टेकत उठि कमध ॥
 चले वर नालय रुद्धि प्रनाल । नवै वर सूर अपच्छर माल ॥ छं० २४० ॥
 छुट्यौ घर धीरज मीर अभंग । बढी वर जैत सु दिषिय जंग ॥
 फटी वर फौज अनश्रिय जात । अघाइय गिद्ध रु मिद्ध सुमात ॥ छं० २४१ ॥
 नचै वर नारद बीर निसान । येई येइ कट्टन वै थिरतान ॥
 रिसै' अति ताइ तुनार मुडांन । मिले महु जोर हुए मरदान ॥ छं० २४२ ॥
 हए हिय नेज ततार सुतन । पर्यौ घर मुच्छि कहौ धनि धनि ॥
 करै मुष किति नयै कुममन । हली वर फौजय साहि मुनन ॥ छं० २४३ ॥
 डहै वर मीर सु साहिज मन । ॥ छं० २४४ ॥

घोर युद्ध होना, शाह और पृथ्वीराज का सम्मुख युद्ध ।

दूहा — अति संकर वर जुद्ध हुआ । इन राजन उत माहि ॥

दोऊ नैन अंकुरि परे । बजि श्रीग रम ताहि ॥ छं० २४५ ॥

शाहाबुद्दीन का तलवार से और पृथ्वीराज का कमान से लड़ना ।

उअ रुप आइ सहःवदी । इय रुप आरय राज ॥

इय कर पोले षग वर । उअ कमान कर माज ॥ छं० २४६ ॥

दोनों नरेशों का युद्ध वर्णन ।

कवित — जवहि साह आलम्भ । क्षुक्क - कमान अप्पगहि ॥

तबहि राज प्रथिराज । तेग पक्करिय अप्प रहि ॥

वह बरधत वर तीर । षचि वरधत सार डहि ॥

इहै तेज षग क्षमहि । करी तुट्टे कमध बहि ॥

१. ए-ऊ०-को०-वर ।

२. ए०-ऊ०-को-डहै वर ।

३. मो०-मनु माधव ।

४. मो०-रवै ।

५. मो०-मुक्ति ।

आलम्भ राज दुअ जुद्ध हुआ । नह दिष्यो दानव व सुर ॥
बर दाय चंद इम उच्चरें । करत किति गैन्ह अमर ॥ छं० २४७ ॥

घोर युद्ध यर्जन । शाह की सेना का भागना ।

छंद त्रिभंगी —पढ़ मंदह रतन^१ अटुह रतन^२ पुनि वमु हरनं रस रहनं ॥

त्रभंगी छंदं पढ़ सु चंदं गुन वहि दंदं गुन सोई ।

अंतं गुर सोहै महि लय मोहै सिद्ध समोहै यह होई ।

विज्रू वर षगं असि मर लगं भिरि जग रजि रंघं ॥ छं० २४८ ॥

बज्रें रिन तालं माहो मालं षग मु षालं भिरि चालं ॥

राजा प्रथिराजं असबर झालं साहि सु साजं भिरि भाजं ।

क्रिबान रुकंतं सजि बलवंतं भिरि भय अंतं कलमंतं ।

षपर अधिकारी चौसट्टि नारी दैदै तारी किलकारी ॥ छं० २४९ ॥

उक ईसर नहं नचि उन महं रजि रज सहं जुरि जंगं ।

अदभुत रस अंग षग उन्नंग सार सुभंगं परि रंगं ॥

सामनं सूरं चट्टि विन्नूरं बजि रन तूरं अमि चूरं ।

तुट्टं धर मीरं साह गुह्रीरं गजि गंभीरं भिरि वीरं ॥ छं० २५० ॥

नचि मीर कमंधं हसैं तमिद्धं भिरि भिरि जुद्धं षग षद्धं ॥

नवं हय हंसं तेज तरंसं सहित मरंसं करिगंमं ॥

बुल्लिय सुबिहानं हिंदुअ रानं कट्टि कृपानं गहि पानं ॥

झारे षग झट्टं विज्रल छट्टं वाहि विकट्टं नचि नट्टं ॥ छं० २५१ ॥

हनि हनि मामंतं जानि जुगंतं भिरि भर जंतं अरि अंतं ।

चच्चर चहुआनं गह गह वानं साहि मुतानं बलगानं ॥

छंडे सिर छत्रं साहि मु तत्रं गोधीरत्रं मनमंतं ॥

बहरी तजि बाजं रुहि गजराजं लरि षग साज कह काजं ॥ छं० २५२ ॥

तने षरि राजं साहि सु साजं जे जुग काज रस साजं ॥

आलम अरु राजं दुअ दे हाजं^३ हनि हनि बाजं भिरि वाजं ॥

दिषवी तहां राजं तजि गज राज हेंवर साजं गुत गाजं ॥

गहि कर कम्मानं तीर सुतानं लगि असमानं वहि वानं ॥ छं० २५३ ॥

त्रिस झल्लर टोवं राजन घोषं अगि वर जोष बहु कापं ॥

है हनि सु बिहानं कर अप्यानं महि सुरतानं बलवान ॥

१. ए०—क०—को०—हरणं ।

२. ए०—क०—को०—हरणं ।

३. मो०—राजं ।

उड़ि बिसि बिसि भाजं मीर अकाजं पण्डि सहाजं गहि बाजं ॥
भग्नी बर फौजं साहि सु जौजं मन करि भौजं घरि घौजं ॥ छं० २५४ ॥

शाह की सेना का भागना घौर शाह का पकड़ा जाना ।

ब्रह्मा— भगी अनी पुरसान षां । छुट्टि मीर घर धंम ॥

गह्या साह आलंम कर । विचलि सुभर तजि श्रंम ॥ छं० २५५ ॥

मुलतान की सेना के भगेड़ का वर्जन ।

छंद भुजंगी— कुसादे कुसादे कहैं पानजादे ।

ग्रह्यो हृथ्य गोरी अबैं साहि बादे ॥

लग्यो चित्र कोटी सुरसान साह्यो ।

बजे वे निसानं सजित्यो सराह्या ॥ छं० २५६ ॥

गयो भगि कूरंभ मरहठु वाली ॥

गयो सत्त मुक्के नृपं वे पंचाली ॥

सबैं सेत बंधी रहे सेत मुक्कैं ।

गयो हृबसी रोमसा धंम चुबके ॥ छं० २५७ ॥

बरा रीत गौरं भगे रंड मुडं ।

पर्यो मझ्झ सामंत गोवाल कुडं ॥

भग्यो कंनरी हस्त बे हस्त बान ॥

भग्यो बेदरी बल कदी छडि पान ॥ छं० २५८ ॥

बदं वे कुसादी पर्यो कासमीर ।

मुलतान षट्टू छुट्यो हृथ्य तीर ॥

भग्यो प्रब्वती एलची झारषंडी ।

जिने भुज्ज गोरी ग्रहं लाज मडी ॥ छं० २५९ ॥

भग्यो वे बंगाली करनाट वाली ।

भग्यो भागि सांद्रोह कूरंभ वाली ॥

पर्यो भूक्षि सा वदरी बद् तीनी ।

जिने ठेलि चहुआन सब सह दीनी ॥ छं० २६० ॥

बयं बिदु वाली भग्यो सथ्य सभं ।

जिने लोहूची लगि अंची न कबं ॥

मयं मेछ बहु मय मक्क राया ।

जितें भागतें बार लाभी न काया ॥ छं० २६१ ॥

भग्यो ब्रह्मा जा पुत्र अक्की कुचीरं ।

जिनें भग तें भगि सुरतान धीरं ॥

भग्यो गज्ज पीरा उषा वृत्त नाथं ।

भग्यो अगिवानं सु मानं सु साथं ॥ छं० २६२ ॥

पर्यौ धान आवूत्र संसार साषी ।

जिने दीन बंदेन की लाज राषी ॥ छं० २६३ ॥

रविवार अतुर्बंशी को समरसिंह का यह युद्ध जीतना श्रीर घन
निकालने को चलना ।

कविति - गहि लीनी मुरतान । समर लिन्नी जमुभारी ॥

चामर छत्र रषत । वषन लुट्टे रन रारी^१ ॥

चित्र कोट चव रंग । साहि दिन्नी चहुआनं ॥

चनुर दसी रवि वार । वीर बज्जे परवानं ॥

बुल्लयो बीर कैमास तब । घन कदठन चल्लो सपुह ॥

आरब्ब राव भीरा मुबर । चंपि जु रष्यो गंज उह^२ ॥ छं० २६४ ॥

पृथ्वीराज के मुलतान को पकड़ने पर जय जयकार होना ।

दूहा - परे सेन गोरी गइअ । गहि लीनी मुरतान ॥

सोमेसर नंइन मुकर । जै लिन्नी जय पान ॥ छं० २६५ ॥

इस विजय पर चारों ओर भ्रानन्द ध्वनि होना ।

कवित गह्यौ साहि आलम्म । मुजस लीनी चहुआनं ॥

षलक धान भगिय विहाल^३ । परे है गै घर यानं ॥

मीर मसंद मसंद । कटे सामंद हथ्य भर ॥

दुअ राजन भर जुरे । मुबर लिन्नी सु अप्पकर ॥

जै जै सबह जुगिनि करै । सीस गहै ईसन समथ ॥

कवि कहै चंद भारध्य बर । करिय राज्य प्रारंभ कय ॥ छं० २६६ ॥

राजगुरु का कहना कि अब विजय कर के एक बोर दिल्ली चलिए
फिर मुहूर्त बदलकर आइएगा ।

दूहा - करिय जैत राजन सु बर । चलिय लछिछ बर साज ॥

तव विचार राजन गुर । कही राज सिरताज ॥ छं० २६७ ॥

तव रावर बर राज गुर । कहिय राज प्रथिराज ॥

दिल्ली दिसि ग्रह चलिये । फिरि सु मुहूरत साज ॥ छं० २६८ ॥

राजा का पूछना कि पीछे लौटने की क्यों कहते हो

इसका कारण कहो ।

फिरि राजन इम उच्चरिय । मुनी अहुठु नरिद ॥

का कारन पीछे फिरै । सो कारन कहि नंद ॥ छं० २६९ ॥

१. मो०-नारी ।

२. मो०-बहु ।

३. ग० छं० को०-विहान ।

उनका उत्तर देना कि इस विजय का उत्सव घर पर चलकर
करना चाहिए ।

तब सिंघ फुनि उच्चरिय । अहो समंतन राज ॥

साह गह्यो तुअ जेत हुआ । ग्रह करि मंगल काज ॥ छं० २७० ॥

यहां राव दाहिम के साथ सेना चन्ब भट्ट और सामंतों को
छोड़कर शुभ काम कीजिए ।

रहै अप्प सेना सुसथ । अरु दाहिम्म सुराज ॥

भट्ट चंद सामंत सथ । करि सुभ मंगल काज^१ ॥ छं० २७१ ॥

बहां से लौट कर तब धन निकालना चाहिए ।

जतन लछि बर किजियौ । रहौ सुभर अप्पानि ॥

जब रह फिर इरजिद इत । तब कट्टे लछि आनि^२ ॥ छं० २७२ ॥

पृथ्वीराज का दाहिम का मत मानकर दिल्ली चलना स्वीकार करना ।

गाथा—कहि प्रथिराज नरिदं । जु कछु कहै सिंघ दाहिमं ॥

सोइ थप्पिय द्रढ मंतं । चलि रार्जिद दिल्ली मग्गेयं^३ ॥ छं० २७३ ॥

फागुन सुबी तेरस को दिल्ली यात्रा करना ।

दिल्ली मग्ग सु चलयं । फागुन सुदि त्रयोदसी दिवसं ॥

क्रमे सु दस दिन मग्गं । अवरं रण्वि सब्ब भार तथ्यं ॥ छं० २७४ ॥

रावल के साथ दाहिम प्रावि सरदारों और सेना को छोड़कर

और कुछ सामंतों और सेना को लेकर दिल्ली यात्रा करना ।

बूहा—सकल सध्य रावर सुभर । अरु दाहिम गुर राज ॥

भट्ट चंद बर दाइ बर । आनि समत सकाज ॥ छं० २७५ ॥

कबित्त—बड़ सामंत सु काज । अचल पुंडीर मंत्र गुर ॥

राम रैन पावार । चंद हाहुल्लि सेन वर ॥

रण्वि पास नृप सिंघ । रहै थह लच्छि सुभट्टं ॥

और सकल सब सध्य । जुद्ध जस लहन सुषट्टं ॥

ता मद्धि राज संबोधि थपि । सु गुर मंत्र बरदाइ थिर ॥

चठि चले राज दिल्ली दिमा । लैं जद्द पज्जून भर ॥ छं० २७६ ॥

राव पज्जून, कन्ह प्रावि राजा के साथ चले ।

बूहा—जाम देव पज्जून नर । वलि भद्र जेत अरु सिंग ॥

कन्ह काय चहुमान वर । चले राज गुर संग ॥ छं० २७७ ॥

१. मो० करि चल दिल्ली साज ।

२. मो० प्रति में "जब आऊ दिल्ली सुबी तब कट्टे लछिमान" ।

३. ए० छं० को—मग्गय ।

शात्रु को जीत कर होलिका पूजन के निकट राजा चले ।

अरिय जीति ग्रह दिशि चले । आइ निकट हूतास ॥

चलत पथ राजन नैं । पूजा करनह जास ॥ छं० २७८ ॥

होलिका की पूजा विधि से करके शाह को लिए घर की ओर चले ।

कवित्त -- निकट सुदिन हूतास । पूजि इन भंति राज नर ॥

चंदन कुमकुम अगर । नंषि श्रीफल प्रमथ फर ॥

निरि परदण्डिन राज । मांनि बर विप्र वेद धुर ॥

घुरे नद् नीसांन । गांन नर तर्क नचें बर ॥

ज्वा ननिय माल नृपय नृपति । अति सुदेव नइवेद जुत ॥

दिन बीच चले जोगिन पुरह । ग्रहिय मेछ सग्रहनि भति ॥ छं० २७९ ॥

कुमार का पंनल आध कोस आगे बढ़कर मिलना ।

दूहा - ग्रहिय साहि ग्रहें गवन । आइ मिले सुकुमार ॥

मधुसाह अघ कोस पर । छंडि तुरिय पै पारि ॥ छं० २८० ॥

राजा का कुमार को सवार होने की आज्ञा देना ।

चढन राज बर हकुम दिय । रेत सुमनहु साज ।

जैत हुई आनंद करि । ग्रह जित्तन सुभ काज ॥ छं० २८१ ॥

चैत्र बदी सप्तमी को महलों में पहुँचे ।

गाथा - ग्रहन जित्त अरि ग्रहिय । चैत्र बदी सप्तमी दिवसं ॥

गुरुवारं सुभ जोग । राजा सपन्न धवल मङ्गलें ॥ छं० २८२ ॥

महल में सब स्त्रियों ने प्राकर निछावर किया ।

आये राज सुधाम । गए ग्रह मद्धि माल सुभ तथ्यं ॥

बोली आइ सव त्राम । निवछावरं करि गई ग्रहें ॥ २८३ ॥

स्त्रियां अपने अपने घर गईं । राजा ने विश्राम किया और वे

नाना भोग विलास कर सुखी हुए ।

गई ग्रह ते त्रीय । राजन सुख विस्त्रमियं तथ्यं ॥

अति मादक उनमादं । करि सुष सेंन रमन रस क्रीड़ा ॥ छं० २८४ ॥

दूहा -- क्रीडि वाम नृप रंग करि । नेह संपूरन काज ॥

दीय बचन रष्यन सुजन । डोली साह सुराज ॥ छं० २८५ ॥

साहाबुद्दीन की डोली मंगाकर उसे भोजन कराया और आज्ञा दी

कि इन्हें सुख से रक्षाय जाय ।

डोली साह साहाब की । दोइ रकेव बर सथ्य ॥

सो डोली काज इस असुर । करि हुकंम मर मथ्य ॥ छं० २८६ ॥

दस आदम साहाब कज । रषि भोजन न्य पास ॥
 सुष सच्चाब तुम रषियौ । रहै राज सुभ भास' ॥ छं० २४७ ॥
 शाह के पकड़े जाने और दिल्ली पहुँचने का समाचार पाकर
 उसके अनुचरों का आतुर होना ।

सुनिय बत्त गढ़जन पुरह । ग्रहत साह की घत्त ॥
 अनुचर आतुर अति भयो । उर जानी अविगत्त ॥ छं० २८४ ॥
 एक बीर ने दौड़ आकर यह समाचार तातार खाँ को दिया ।
 डर जानी अविगत्त जब । भजि आयौ भट मझिझ ॥
 कहर हक्कि पानीय चढि । कहि ततार अग गुझ ॥ छं० २४९ ॥
 तातार खाँ ने खत्री को तुरंत पत्र देकर दिल्ली भेजा कि आप
 बड़े भारी राजा हैं अब कृपा कर शाह को छोड़ दीजिए ।

गाथा - सुनिय तातार सु तब्बं । रहनं तुछ दिल्लीपुर राजं ॥
 पित्री आतुर पठयं । बेगं साहि दंड कइजेनं ॥ छं० २९० ॥
 हुहा - तुम जाहु लु चहुआन प्रति । कहु सलाम सब सथ्य ॥
 तुम सु बढे हिं न में । छुटे साहि सुभ बत्त ॥ छं० २९२ ॥
 खत्री का पांच सौ सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना ।
 पित्री चलि चहुआन पै । करिके सबन मलाम ॥
 पंच सत्त असवार लै । कोस सत्त मुक्काम ॥ छं० २९३ ॥

खत्री शकुनों का बिचार करता, बारह कोस नित्य चलता हुआ
 दिल्ली की ओर बढ़ा ।

छंद पद्वरी - धर मग चलयो पत्रीस हिंदु । अति चित सुरतान बंद ॥
 द्वादसह कोस प्रति चलै मग । निज मंत्र इष्ट चित वन मु लग ॥ छं० २९४ ॥
 अपसगुन सगुन चितौ विचार । दिभि बाम सिघ दिष्पी दहार ॥
 उल्लूक सबद दिय गिरह सीम । दाहिन सुपत्त मृग ःगी ईस ॥ छं० २९५ ॥
 मृतक रथी सनमुपह आइ । फुनि समुष ग्राम लगी स लाइ ॥
 अति उअर पित्रि आनंद जग । आतुरह चलयो दिल्ली समग ॥ छं० २९६ ॥
 खत्री लोरक का दिल्ली के पास पहुँचना ।

कवित्त - तब पित्री लोरकक । चले दिल्ली पुर मगं ॥
 पंच सत्त असवार । उर मु चिता मन भगं ॥
 बामी देव अवंत । तार उछ्छव सिर उप्परि ॥
 मृग समूह दाहिने । चल्यो पहुँचि पिगी निक्करि ॥

बंदेव चित्त मन मत्त हुआ । चलयौ कूच पर कूच धरि ॥
आए निकट दिल्ली सु तट । मन चिंता अंदेस हरि ॥छं० २९७॥
लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में
ठहरना और वहीं भोजन करना ।

गाहा -मन चिंता अंदेहं । पित्री आई दिल्ली मसेनं ॥
अहनि मिरह मे क्रमियं । आयं डाक चौकि लोरष्वं ॥छं० २९८॥
तहां उतरि लोरष्वं । बाग निरष्वि उत्तिमं छाहं ॥
भोजन करि बहु भंतं । आहारे अन्न तध्याहं ॥छं० २९९॥
दो घड़ी दिन रहे दिल्ली में प्रवेश किया ।

दूहा दोइ घरी दिन पछ्छ रहि । चलयौ दिली पुर मांहि ॥
अति उज्जक वस्त्रंग वर । प्रावर पित्रि उछाह ॥छं० ३००॥
नगर में घुमते ही फूल की डाली लिए मालिन
मिली । यह शूभ शकुन हुआ ।

नैर प्रवेश सगुप्त हुआ । मालनि फूल उछंग ॥
लिए बंदि पित्री सुमन । मुक्कि महुर सुभ नंग ॥छं० ३०१॥
खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुंचना ।
चलि पित्री दरबार मग । जहां राज थियराज ॥
अवर सूर सामंत सुभ । बैठे सभा विराज ॥छं० ३०२॥

उधोड़ी पर से समाचार भिजवाया कि तातार खां का भेजा बकील
आया है । राजा ने तुरंत साहूने लाने की आज्ञा दी ।
लोरक ने दरबार में आकर सलाम किया ।

कवित्त -गय पित्री दरबार । हार पालक सम अष्विय ॥
कूरम केहरि कहों । साहि उक्कील सुलष्विय ॥
गय केहरि नूप निकट । कह्यो गजजन पुर त्तं ॥
पठ्यो षान ततार । साह छंडावन बत्त ॥
नूप बोलि कह्यो हज्जूर तिहि । एका एकी मध्य लिय ॥
सनमुष आइ चहुवान को । सीस नाइ तसलीम किय ॥३०॥
सभा में बैठे सामंतों का वर्णन । राजा की आज्ञा से लोरक
का सलाम कर के बैठना ॥

कवित्त -सभा विराजत राज । आइ बैठे सुखर भर ॥
कन्ह काइ चहुवान । जैत बलिभद्र सिंह नर ॥
जांम देव पज्जून । बड़े सामंत लज्जभर ॥
और सकल भर राज । बैठि तहां महल रंग जुरि ॥

आए सुतांम लोरकक तब । मिलि सलाम राजन करिय ॥
बैठन हुकुम राजान किय । करि सलांम बैठो नरिय ॥छं० ३०४॥
लोरक ने तीन सलाम करके तातार खां की अर्जी
राजा को दी ।

दूहा—तब पित्री प्रथिराज कीं । करि सलांम तिय वार ॥
लिषि अरदास ततारषां । समपी बीर विचार ॥छं० ३०५॥
मधु साह प्रधान को पत्र दिया कि पढ़ो ।
मधु साह परधान कर । दिय पत्री षत्रीस ॥
किय हुकम्म बर राज नें । बंचे साह जगीस ॥ छं० ३०६॥
ततार खां की अर्जी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना ।

साटक—स्वस्ति श्री राजग राजन बरं धर्माधि धर्म गुरं ॥
इंद्रप्रस्त सु इंद्र इंद्र समयं राजं गुरं वर्तते ॥
अरदासं ततार पांन लिपियं सुरतांन मोक्षं करं ॥
तुम बड़े बड़ाइ राजन सुरं राजाधिपो राजनं ॥छं० ३०७॥
राजा ने अर्जी मुनकर हंस दिया और खत्री को विदा किया ।

दूहा—तब पित्री अरदास किय । बंचि मुनाइब राज ॥
तब राजनं प्रसन्न हुआ । दई मीष यह राज ॥ छं० ३०८ ॥
उठि राजन दीने बहुरि । यह पित्री गय अप्प ॥
मन चित्ता लगी घनी । राजन देषत तप्प ॥छं० ३०९॥
दूसरे दिन लोरक फिर दरबार में आया ।
बहुरि सु आए दिन अवर । मिलि राजन किय बत्त ॥
सैमुप राजन उच्चरिय । मन सु अगोवर तत्त ॥छं० ३१०॥
लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह को छोड़ने की
प्रार्थना करना । पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी
नाम क्यों पड़ा ?

छंद पदरी- षत्रीस वेंन थम अप्पि राज । चहुवान वंस तुम हिंदुलाज ॥
चीतोर स्वांमि कै सभरेम । चालकक राज जिहि धगग षेस ॥छं० ३११॥
कमधज्ज मंगि तिहि व्याहि अप्प । जैचंद उरहि दिय अनुज नप्प ॥
कइ बार साहि बंधयो पांन । दीनो केवार जिहि जीव दान ॥छं० ३१२॥

१. ए०-क०-को०-गुहोर ।

२. मो०-क०-को०-ए०-वर ।

३. को०-क०-ए०-सुअर ।

४. क०-ए०-नाय ।

तब लोरक सम' पुछे नरेस । गोरी सु नांम किहि विधि कहेस ॥

सम राज अष्वि षत्री तिवार । नृप राज एह अद्भुत विचार ॥छं० ३१३॥

लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन
बैठा, वह बड़ा कामी था । पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान
न हुआ, तब शाह निजाम की टहल करने लगा ।

कवित्त - बैठि पाट अमुरांन । साह जलाल प्रमानं ॥

अनेत तेज घग ताप । अनेत दातार दिवानं ॥

पंच सत्त दस हरम । साह कामी तप भारी ॥

हमल हरम निज जानि । *हनं कर असि बर नारी ॥

सुत ताप राज डरतें गहन । काम पैर निसि माह मन ॥

सुरतानं पैर अग्गें धरिग । सेष निजाम सु हूअ प्रसन्न ॥छं० ३१४॥

शेख निजामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशिर्वाद दिया कि तुम्हें ऐसा प्रतापी
बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं
को जीत विल्ली पर तर्पणा ।

प्रसन्न निजाम सुसेष' । लेष साईं इमलेषं ॥

अहो साह जलाल । आलि तुझ समय सदृषं ॥

महा प्रबल तप तीन । दीन हिंदू दल' आलम ॥

धरि करिहै निज पानं । जोर जुगिनि पुर जालम ॥

अज्जाब नारि तिहि पाप तें । अमुघ कित्ति दुनियां रहै ॥

दस दिसा दप्प असुरांन दल । लिहि लिलाट तित्तौ लहै ॥ छं० ३१५ ॥

शाह घर आया । चित्त में विन्ता हुई कि जो यह लड़का ऐसा प्रतापी
होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा । इतने ही में एक बेगम को गर्भ
रहने का समाचार मिला । शाह ने सिर ठोका और उस बेगम को
निकाल दिया । पांच वर्ष बीते शाह मर गया, बजीर लोग सोच में
पड़े किसे गद्दी पर बैठावें । एक शेख ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर
बालक को दिखाया ।

छंद विम्वषरी—आयो निज सुरतानह गेहं । वेन निजाम उवर दुष लेहं ॥

जौ मुझ सुत ह्वैहै बलकारी । तौ मुझ मारि लेइ घर सारी ॥ छं० ३१६ ॥

१. मो०—समह ।

* मो०—प्रति में "हनं कर बर कर नारी" पाठ है ।

२. लो०—प्रसनि जानि हंसेष ।

३. ए०—हो—हो—बलि ।

तितें नारि इह प्रभह घरयो । दासी कांन साह अनुसरयो ॥
ततपिन साह सीस हनि नारी । समह गरभ घर मंड' सुधारी ॥छं० ३१७॥
बरष पंच अनि ऊपर बीतं । हुअं साह सुरतान सुअतं ॥
सबै षांन मिलि मंत्र विचारं । कवन सीस अब छत्र सुधारं ॥छं० ३१८॥
सेष एक मधि गोर निवासी । तिहि अद्भुत रस दिषिष प्रकासी ॥
अषिषय माइ जहां मिलि षांनं । कुदरति' कथा एक परमानं ॥छं० ३१९॥
झूठी होइ ती सजा लहीजै । सच्ची हूअै निवाजस कीजै ॥
सबै षांन मिलि पूअै वत्तं । कहिवे सैष सु क्या कुदरत्तं ॥ छं० ३२०॥
बीबी फतेसाह की घरनी । कुदरति गोर मद्धि एक घरनी ॥
गोरि मद्धि इक चेलरु वासं । देष सरूप कोटि रवि भासं ॥ छं० ३२१ ॥
सबै षांन मधि गोर सिधाए । करि अंगु री तिहि सेष दिषाए ॥छं० ३२२॥
उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया ।

दूहा -गोरि दिखाई षांन तिहि । ततपिन भंजी पाज ॥

निकस्यो सूरति सरस को । जोति भांन महाराज ॥ छं० ३२३ ॥

ज्योतिषी को बुलाकर जन्मपत्र बनवाया उसने कहा कि यह जलालुद्दीन
से भी बढ़कर प्रतापी होगा । इस की जाति गोरी है । यह
हिन्दुस्तान पर राज्य करेगा ।

कवित्त -जोति रूप महाराज । साहतें प्रगट सवायो ॥

षांनो षांन जिहान । बेगि निज्जूमि बुलायो ॥

लिषिय जनम तिय लेष । मेष तत पिन इम अषी ॥

नाम साह साहाब । जाति गोरी तिहि दषी ॥

बहुतेज तषत तज जगि है । घरा हिंद सम लगि है ।

दस दिसा साह दोही फिरै । घन बीरा रस भुगि है ॥छं० ३२४॥

लोरक ने शाह की पूर्व कथा इस प्रकार कह सुनाई ।

दूहा -जाते बहु रिन भगि है । फुनि तिहि गहि है पांनि ॥

पुब्ब कथा पित्री कहै । मुनहु राज बहुआंन ॥ छं० ३२५ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान शूङ्गारहार
नाम का हाथी है उसको शाह बहुत चाहता है । उसको घोर तीस
हजार उत्तम घोड़े दो तो शाह छूटै ।

कवित्त -तब मुराज प्रथिराज । कहै पित्री सुनि वत्तं ॥

हम आलम गति कहै । सोइ मानै करि सत्तं ॥

गज सु एक सिधली । नाम शृंगारहार गज ॥
अति पीय साह साहाब । लखै निसि दिन आलम सुज ॥
अप्पी सु मोहि वह डड करि । तीस सहस हय नेक बल ॥
छुटै जु साहि साहाब तब । हम तुम रहै मु प्रेम भल ॥छं० ३२६॥
कव्त्री ने कहा कि जो आप मांगेंगे वही बूंगा पर शाह छूटना चाहिए ।
दूहा - तब पित्री इम उच्चरै । सुनौ राज प्रथुगज ॥

जो मंगो सो देउ तुम । छुटै साहि बर आज ॥ छं० ३२७ ॥
पत्र लिखकर दूत को बिया कि जो इकरार हुपा है वह भेजो ।
यप्पि वत्त इह पत्र लिखि । दियो दूत के हृथ्य ॥
जो कछु कियो करार कर । सो पठवो तुम अथ्य ॥ छं० ३२८ ॥
पत्र पाते तातार खां ने हाथी घोड़े भेज दिए जो बस विन में रात
दिन चलकर पहुंचे ।

तब ततार षां मुक्कि दिय । रजत हयगय नंग ॥
अहि निस आतुर आइचर । उभय मृ दम दिन संग ॥ छं० ३२९ ॥
दण्ड पाने पर सुलतान को छोड़ देना ।
कवित्त दिय सु दंड सुरतान । गय मु इक्कति पंचह हय ॥
अैराकी बर उंच । उभय पष्ये मु निरम्मय ॥
नाम पट्ट शृंगार । पट्ट रिति मद् पट्ट झर ॥
अलि गुजत मकरंद । वाम भज्जंत अवर डर ॥
है सहस नीम अनि माज भल । दिय सु दड मुरतान तय ॥
मुक्यो मु राज प्रथिराज तब । चलयो साह गज्जन पुरय ॥छं० ३३०॥
सुलतान का गजनी पहुंचकर अपने उमराओं से मिलना ।
दूहा चलयो मेच्छ गज्जन पुरय । दे सुदड प्रति पिथ्य ॥
मिलिय उम्मरा अपने । करिय खैर सम सथ्य ॥ छं० ३३१ ॥
शाह के महल में आने पर तातार खां खुरासान खां का बड़ा
मानन्द मनाना ।

गयो साहि आलम महल । करी बैर बर अप्प ॥
मिलि ततार घुरसान षां । बड़ वषत्त मिलि तप्य ॥ छं० ३३२ ॥
पृथ्वीराज का शृंगारहार को सामने रखना । हाथी की बड़ाई
और राजा की सवारी की शोभा का वर्णन ।
कवित्त वह मु पट्ट शृंगार । मत्त गज राज पटा झर ॥
रहै नरिद मुख अगग । रास रेसम फंद पर ॥
जब राजन चदि चले । तबहि मुख अगग निरष्ये ॥

जे अनंत गज प्रबल । ते सु प्रमल सह घण्वै ॥
जब चढ़े राज टामंक करि । तब अजब्व सोभा लहै ॥
आतस चरित्त अदभूत लिषि । दुभ कपोल बूंदन बहै ॥छं० ३३३॥
हाथी के रूप और गुणों का वर्णन ।

कवित्त सत्त हथ्य ऊरद्ध । हथ्य नव देह लैंबाइय ॥
दस हथ्यां परिमानं । पीठ छर्त्ता गिर दाइय ॥
भद्र जात उतपंन । दुरट्ट हद पाट शृंगारं ॥
जो खबर कहि चंद । कोट गढ़ ढाहन बारं ॥
च्यालीस कोट चालंत मग । लिये लोह च्यालीस मन ॥
दिन प्रति गुलाल थानं ~~कर~~ । षभारें डारंत घन* ॥ ३३४ ॥

सब सामंतों को साथ ले एक दिन ~~कि~~ के लिये राजा का
जाना । वहां कहू चौहान का आना ।

एक सुदिन राजन्न । चढिव सिक्कार प्रपत्ते ॥
और सकल सामंत । जाइ सय पच्छ मिलंते ॥
सत्त सहस असवार । मिले मुष राज सुरत्ते ॥
जांम देव पञ्जन । मान मरदन मरदत्ते ॥
सिघह पवार सुभ सथ्य तहै । जैन राव वलिभद्र सम ॥
चहुआन कह नर नाह वर । आतुर बरि आयेव श्रम ॥छं० ३३५॥

गाथा—परि कर सकल सिकारं । लीने सब राजनं राजं ॥

अवर सूर सामंतं । धरियं साज अप्प सा काजं ॥ छं० ३३६ ॥

एक अनुचर का आकर एक सूअर के निकलने का समाचार देना ।

दूहा तब प्रथिराज नारिद प्रति । कही सु अनुचर एरु ॥

सुभ वराह एरुल प्रबल । कही पव रे मु विवेरु ॥ छं० ३३७ ॥

राजा का आज्ञा देना कि उसे रोको भागने न पावै ।

तब प्रथिराज सु उच्चरिय । अरे सिकारी साज ॥

मति एकल बन जाइ भजि । करि रोकन को साज ॥ छं० ३३८ ॥

चारों ओर से नाका रोक कर सूअर को खदेरना और उसके
निकलने पर राजा का तीर मारना ।

कवित्त—एक दिसा कूकरह । एक दिसि मूलह धारिय ॥

एक दिसा पेदा अनंत । एक दिसि और प्रचारिय ॥

एक दिसा राजंग । एरु दिसि अनि अनुचारिय ॥

एक दिसा सामंत । एक बहु भांतिय तारिय ॥

कौं अर्थात् सब राजन करिय । हृदिक सोर उच्छारि भर ॥

निकसंत सु सूकर अष्य स्ह ॥ हूने तीर वंचे सु कर ॥ छं० ३३९ ॥

सूधर का भरना सरदार का राजा कौं अर्थात् करना ।

दूहा -लग्यो बांन ताराह उर । पर्यो वेत धर मुच्छि ॥

मिले सकल सामंत तब । कही 'बन घन' अच्छि ३४० ॥

बड़े आनन्द से राजा राज को लोटता था कि एक पारधी ने एक शेर निकलने का समाचार दिया ।

घन अनंद राजन भरिय । चल्यो राज चढ़ि बाज ॥

तब सु एक पारधि कही । नाहर घान सु राज ॥ छं० ३४१ ॥

राजा का आज्ञा देना कि बिना इसको मारे तो न चलेंगे ।

तब सुराज से मुष्य कहि । सुनो सब प्रति सूर ॥

बिन सुघन अग्यार में । आन राज हूँद नूर ॥ ३४२ ॥

एक नदी के किनारे वृषभ को मारकर सिंह खाता था राजा ने पारधी को आज्ञा दी कि तुम उसको हांको ।

कवित -नदि सु एक जल किदु । तहं सु एकह सुभ कोहर ॥

बहु तर वर जल छीन । थान सोभंत मनोहर ॥

ता नीचै केहरी । हनिब इक वृषभ अहारै ॥

अति अरिष्ट आभूत । कोइन पग अग संचारै ॥

उच्चरै राज दिल्ली धनिय । पारडी हक्को तुमें ॥

बड़ मुभट आन सोमेस की । बिन अग्या घातन रमै ॥ छं० ३४३ ॥

राजा का शृंगारहार गज पर चढ़कर सिंह को मारने चलना

और सिंह को हंकारने की आज्ञा देना ।

कवित -तब सु राज प्रथिराज । पाट शृंगार मगि गज ॥

बड पष्वर तन रज्जि । दंति कट्टार बंधि सज ॥

उभय पष्व असवार । गिरद रष्वे करि राजन ॥

तीरंदाज अभूल मूल रष्वे करि राजन ॥

सैं मुष्य राज यों उच्चरे । हक्कारो केहरि सकल ॥

सा वचन सुनन करि कूह भरागज्ज सु केहरि अप्य बल ॥ छं० ३४४ ॥

कोलाहल सुन सिंह का क्रोधकर निकलना । राजा का तीर मारना

और तीर का पार हो जाना । कूरम्भ का बड़ कर तलवार से

दो टूक कर डालना । सब का प्रशंसा करना ।

निसांनी -सुने गह्वह केहरी उठ्यो हक्कारे ।

कंपि धरदर मेदिनी गल्हन गल्हारे ॥

कोहक काल अभूत कैं पचायन भारे ।
 गात सु दीरघ हृथ्य गुर जीहा जक झारे ॥ छं० ३४५ ॥
 नष तिष्ठा गिर वज्र कैं पुंछन तिष्णारे ।
 कंध सु जड्डा केहरी नेनां ज्यों तारे ॥
 दिष्णौ मरद महावली कंधा उप्पारे ।
 गज्जत गज्जत आइया अरियन कैं थारे ॥ छं० ३४६ ॥
 सिंह सु सन्हा चल्लिया गजराज संभारे ।
 तव राजन गज चपिया हेंवर ठट टारे ॥
 तीर सनंमुष नंषिया कोइ लगै न्यारे ॥
 नेरां आयां जंत राव सिंगनि उम्भारे ॥ छं० ३४७ ॥
 छोड़े मोह सु हल्लिया नाहर ललकारे ।
 पारधि एकैं चपिया हृथ्यल पछ्छारे ॥
 राज कमान सु षचि कर तरीन तिष्णारे ।
 फूटि दुवा सूवार पार गल्लन जिम्भारे ॥ छं० ३४८ ॥
 करिहै तत्ता कूरंभ झुक्या असि झारे ॥
 बाहे बन्बर वीचह्वं द्वै टूक निनारे ।
 मनो सबन विच मुम्भि थारहि तंतू सारे ।
 भल भल सब सेना कहै कूरंभ करारे ॥ छं० ३४९ ॥
 घनि माता अरु घनि पिता पज्जून पचारे ॥ छं० ३५० ॥
 राजा के शिकार करने पर बाजे बजने लगे ।

दूहा—घन सिकार राजन करिय । हनि बराह अनि अट्ट ॥
 बाजे बज्जन सुबर^२ वजि । करि राजन पट्ट पट्ट ॥ छं० ३५१ ॥
 सब सरदारों में शिकार बंटवा दिया ।
 हनि सिकार बाराह बर । दीए सब सामंत ॥
 बंठि सु दीनौ अबर भर । करि उच्छाह अनंत ॥ छं० ३५२ ॥
 राजा का दिल्ली लौटना, कबि चन्द का आकर फूलों की वर्षा करना ।
 कवित्त—तब प्रथिराज नरिद । आइ दिल्ली पुर मझं ॥
 अप्प चित बर अवर । बैठि सिंहासन रज्जं ॥
 अवर सूर सामंत । सकल सभ्भा भर मंठे ॥
 तव सु चंद बरदाइ । आइ कुमुमावलि छंठे ॥
 बैठे सु सबनि उच्चार करि । सुनिय गान नायन सकल ॥
 दिल्लीय नैर दिल्लीय पति । करि अनंद दंडे सुषल ॥ छं० ३५३ ॥

राजा का गुरु से धन निकालने चलने का मुहूर्त पूछना ।

ब्रूहा—एक सुदिन देवंग सों । बोलिय राज नरिद ॥

देउ मुहूर्त दुज सु गुर । तिहि हम करे अनंद ॥ छं० ३५४ ॥

राजगुरु का बंसाष सुदी तीज को मुहूर्त निकालना ।

तब दुजराज सु उच्चरिय । सुनि सामंत सु नाथ ॥

सेत त्रतिज बंसाष दिन । सुभ दिन चलो समाथ ॥ छं० ३५५ ॥

सुभ संजोग अंतर घरी । कहत बचन देवगि ॥

सोइ सुदिन आनंद करि । चली सुराज गुनगि ॥ छं० ३५६ ॥

पृथ्वीराज का मुहूर्त पर घूमघाम से यात्रा करना ।

कवित्त—चडिय राज सुभ जोग । करि सुमंगल अनंद गुर' ॥

दौ मु विप्र धन चंड । दीन अनि दान लोक कर ॥

बडि सामंत रु सूर । करे उच्छत्र उमत्त पर ॥

बजत नह नीसान । चबै जै जया देव नर ॥

सेनह सु सथ्य है पंच सय । नैर निकरि बाहिर चले ॥

मत्तह सुछक्क कुल्लाल घट । भरि बारन मै मत मिले ॥ छं० ३५७ ॥

एक बेश्या का शृङ्गार किए मिलना । राजा का

शुभ शकुन मानना ।

ब्रूहा नैरनाइका एक चलि । तन आभ्रन अलंकि ॥

देखि त्रिपति रह सिर मिले । दुअ आनंद असकि ॥ छं० ३५८ ॥

रात दिन कूच करते हुए राजा का चलना ।

गज राजन द्वादस रहे । सुभ संयोग सुभ माथ ॥

करिग कूछ उतिम प्रचर । पडि लमकर प्रथि माथ ॥ छं० ३५९ ॥

कूच कूच राजन चले । सथ मामत अभग ॥

पंच सत्त असवार सग । पडि मिलि सावैत सग ॥ छं० ३६० ॥

रावल और सामंतों तथा सेना का आगे बढ़कर

राजा से मिलना ।

दीह निसा चहुआंन चलि । आइ अचानक राज ॥

तब जानी जब दिष्ण नृप । मिलि सब सेन समाज ॥ छं० ३६१ ॥

सब सरबारों और रावल के मिलने से बड़ी प्रसन्नता का होना ।

कवित्त—मिले सुभर अप्यान । जानि आतुर पडि राज ॥

हाहुलि रा पुंठीर । अचल बौहान सु साज ॥

राम रैन पावार । सु गुर गुरराज समाजं ॥
 अवर सुभर सामंत । बहुत परिकर सम राजं ॥
 इत्तने आइ सब बैठि मिलि । तब जानी जब दिषिष नृप ॥
 सुनि बेनि षवरि आतुर तुरत । मन प्रमोद आनंद वप ॥ छं० ३६२ ॥
 गाथा—आतुर षडि^१ राजानं । मिलियं सेना सु अप्प भर मगं ॥
 हुअ आनंद अपारं । मिलियं सिंघ राज सामंतं ॥ छं० ३६३ ॥
 रावल से मित्कर राजा का प्रेम पूर्वक शिकार और शाह
 के वण्ड का समाचार कहना ।

कवित्त—मिके राज वर सिंघ । प्रेम पूरन राजन भर ॥
 घरी दोइ बैठे सुतथ । बत्त सिकार कहिय गुर ॥
 अरु सु दंड पतिसाह । कृत्य कारन कहि राजन ॥
 सुनि दाहिम्बरु चंद । सुभट^२ सब कही सभा जन ॥
 चल राज सिंघ प्रति सब कही । अरु कदूदन लछी गहिय ॥
 आयी सु राज षह अप्पनै । एक निसा राजन रहिय ॥ छं० ३६४ ॥
 शाह के पकड़ने और वण्ड देकर छोड़ने घाबि का सविस्तार
 समाचार कहने पर बड़ा आनन्द उत्साह होना ।

कवित्त—बजि नरिद जय पत्त । बीय बज्जा घन बज्जै ॥
 ताइप घर गजराज । राज दरबारन गज्जै ॥
 चामर छत्र रषत्त । तषत लीनो सुरतानी ॥
 उत्तर वै साहाब । गयी मुलतानह पानी ॥
 छंडयो छत्र सुरतांन सिर । राज छत्र सिर मंडयो ॥
 बाजंत नद् नीसान घन । बंधि साह दंडि छंडयो ॥ छं० ३६५ ॥

गाथा—जित्ते बज्जन बज्जं । सज्जे सेन सब सुभट्टायं ॥
 सुद्धे षेत सु सूरं । उप्पारियं केरु मुभट्टायं ॥ छं० ३६६ ॥
 राजा का गुरु से लक्ष्मी निकालने के विषय में
 परिश्रमों का प्रदन करना ।

कवित्त—बर बंधयो सुरतान । लच्छि कदूदन क्रम दिसा ॥
 भई षवरि कै मास । राज अग्गी होय लिषा ॥
 सत्त मंत जोतिगी^३ । सब्ब जोतिग उप्पारै ॥
 द्विष्टि राह ग्रह दुष्ण । मंत्र अंत्रह वर टारै^४ ॥

१. ए० छं० को०—वरि ।

३. मो०जोतिषी ।

२. ए०—सुनि ।

४. मो०—वर टारै ।

पुछ्यौ बीर चहुआन तब । धन अरिष्ट गुन संभवै ॥
छछिन्न लछि अरु बचि विधि । तब बहि मंतत सुभवै ॥छं० ३६७॥

धन निकालने के विषय में राजा ने कैमास को बुलाकर परामर्श किया । कैमास ने कहा कि मैं चौहानों की पूर्व कथा सब जानता हूँ, आप को देवी का बर है यह निश्चय जानिए । इस धन के निकालने के समय देव प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे ।

कवित--धन कहुठन चहुआन । बोलि कैमासह पुछिय ॥
बहु अद्भत जम सुन्यो । आइ कहुठन बर लछिय ॥
पुब्व कथा चहुआन । हों जु आगम सब जानो ॥
देवी सुर बरदाई । कहीं सु उर अंतर आनो ॥
अद्भूत वत्त धन निकरत । दोह बीर दानव जगे ॥
सो सूर घोर घोरज्ज जिय । छंडिय सत्त काइर भगे ॥ छं० ३६८॥
पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू बन में चले, वहाँ एक पत्थर का शिलालेख कैमास को दिखालाई दिया ।

हुहा--सो खट्टू रहे थान बर । द्रव्य अजै जै राज ॥
ता देषन चहुआन फिरि । गो आषेट बिराज ॥ छं० ३६९ ॥
उस शिलालेख को देखकर सब प्रसन्न हुए घोर आशा बंधी ।
अति आदर आषेट नृप । पति पुर खट्टू पास ॥
पाहन एक पयाल में । सपेण्यो कैमास ॥ छं० ३७० ॥

कवित--सपेण्यो कैमास । आम बंधी मन संती ॥
ज्यौ बाल चंद निसि करक । मकर दिन मास वसंती ।
यों उद्दिम नृप सेव । सेव नृप सेव सुमंती ॥
ज्यां कन कलंक लागि अंक । सुबर बर वीर अमंती ॥
बच क्रम्म क्रोध अम्भर अरस । सुमन वाम ज्यौ वायबर ॥
लछिनह लछि अरु बचि विच । हुबर हीर तनह सुनर ॥छं० ३७१॥
कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा ।

इहा--मंत्री नृप सामंत सम । परी सु पाहुल पास ॥
रास थंभ जनु ग्वाल लिखि । लागि बंचन कैमास ॥ छं० ३७२ ॥
ऊरध अंगुल सट त्रिसठ । तीर कहत चवसट्टि ॥
तहां अछर त्रिम्यो सु इम । सरमै इव्य अनिट्टु ॥ छं० ३७३ ॥

भरि प्रसंक अंगुल भरिग । तिय अंगुल सत^१ अंक ॥
अंगुल अंगुल अंक में । एकादसौ प्रसक ॥ छ० ३७४ ॥
भवतव्यह जो दुज लष । घरी दीह पल मास ॥
हृदय क्रोध ज्यो द्विग लयै । त्यों लषी कंमास ॥ छ० ३७५ ॥

उसे पढ़कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना
प्रारम्भ किया ।

बंछि उचारि सुमंत तिहि । सरमय^२ मप्पिय बाह ॥
मंडि सु अंगुल विगुलह । द्रव्य निरत्तिय ताह ॥ छ० ३७६ ॥

दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल
समरसिंह पूजा करने लगे ।

ग्रह सु दुष्ट दूरी करन । धन अरिष्ट नृप जोइ ॥
सोइ पूजा क्रत चित्र पति । तिन पर वज्जन होय ॥ छ० ३७७ ॥
चन्द्र यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जगजोति कह गए हैं
कि पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर करके नागौर बन के धन
को पावेंगे ।

पहिलै अप्पिय चंद बर । कहिय व्यास जग जोति ।
बीर सघन नागौर धन । ★ लभ अरिष्ट प्रथु होत ॥ छ० ३७८ ॥
राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी
चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूँ ।
कवित्त—पुछि राजा गुर मिघ । सृ गुरु देवागिन सत्ति पति ॥
धन अरिष्ट गुन होइ । ताम मेटन्न रचौ मति ॥
सोइ सुभ काज सु राज । सुजम संप्रहो सक भनि ॥
सुर सुकाज सुद्धरै । अप्प उद्धरत कज्ज गति ॥
बुल्लिय सु राज सम चित्र पति । तुम कारन पुज्जो सुग्रह ॥
आरिष्ट सु गुन दूरी करन । या मंगल कज्ज सुग्रह ॥ छ० ३७९ ॥
तब चन्द्र को बुलाया, उसने कहा कि आप स्वामी निकालिए,
जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है ।

भाषा— बुल्लिय भट्ट सु चंद । हो राजन लछि कवित्तज्ज ॥

ज्यों बंध्यो निरमान । मेटन कवन सोइ विधि पत्र ॥ छ० ३८० ॥

रात को सब सामंतों को रखकर रखवाली करो ।

दूहा —थान निररषिय राज बदि । अछिर द्रव्य सु अछ ॥

सुबर सूर सामंत मिलि । निसि सथ रष्या अछ ॥ छं० ३८१ ॥

कुछ सरवार साथ रहे कुछ सोए । सवेरे वह स्थान खोवा गया,
वहाँ एक पुरुष की मूर्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे,
उनको कैमास ने पढ़ा ।

कवित्त —सथ्य तथ्य निसि रषिय । दीन वासन ग्रह थानह ॥

अबर सब्ब सामंत । कीन पारस विश्रामह ॥

रैनि मध्य त्रिन चंद्र । जगे सामंत स्वांमि तँह ॥

नीद सयल हुआ सथ्य । षनिय सम द्रव्य राज यह ॥

षोदंत पुरुष इवकह प्रगट । सिलह घत सनह सुमय ॥

नहि सकय अंरु लिष्यो मुरार । बंवि राज कैमास तय ॥ छं० ३८२ ॥

उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब मुनो जो मुझे देखकर

तुम न हँसो तो पाखान को देखो (?)

दूहा - मुनो सूर सामंत सब । सु हृदय सकल रजान ॥

जो न हसै मुहि बवर' कोइ । तो दिष्यो पाषान ॥ छं० ३८३ ॥

सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे ।

न्याय नाम कैमास तुझ । दुज दीनी सुद्धाइ ॥

ज्यों बेली फल भारतें । न्याइन मै सुभ्भाइ ॥ छं० ३८४ ॥

शुभ मुहूर्त आते ही कमान की झूठ में ताली थी वह देखी (?)

भयौ समय इमरत्तरी । ज्यों वय संघि सुजाल ॥

मध्य मुट्टि कमान की । रही रति तिन ताल ॥ छं० ३८५ ॥

उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे
देख सब भागे ।

तब दिष्यो वह थान तिन । सस्त्र अनी छिति भजि ॥

श्रप मु दिष्यो चव सबल । रहे दूरि मत्र भजिज ॥ छं० ३८६ ॥

विक्रम संबत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीराज
ने असंख्य धन पाया ।

साक सुविक्रम इवक दह । तीसर अठु संपत्त ॥

चहुआनां न्यप सोम सुअ । लक्ष्मि वित्त अनमित्त ॥ छं० ३८७ ॥

चन्द्र ने मन्त्र से कीलकर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे ।

अप्य मंत्र बंधयीं सु कवि । द्रव्य निररष्यी जाइ ॥

विहूँ दिसा जी देखियै । दिष्ट न प्रावे ठाइ ॥ छं० ३८८ ॥

कवित्त—दिष्वा जीयह प्रमान । मध्य राजा रघुवंसिय ॥

बाहन सोसत पुत्त । तात अग्यान न गसिय ॥

दुष्ट देइ दिन मान । राज अग्या सुन मानै ॥

सोक अग्गि तन दह्म । गयो सुरलोक निधानै ॥

रचि मंत्र जंत्र पुत्तलि करिय । होम दिष्ट दानव जलिय ॥

चित्तै सु चित्त कविचंद तहं।करिय बात इह ह्म भलिय॥छं०२८९॥

अग्ग की बात मानकर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहाँ आए ।

गाथा— गृह वरदाइय बत्तं । कट्टन लच्छि भयं क्रमयं ॥

तुछ अंतर भर सेनं । आए लच्छि ठाइयं राजं ॥ छं० ३९० ॥

राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काटकर धन निकालो ।

ब्रह्मा— यह आए बर राज धर । दिय हुकम्म सिल कट्टि ॥

हुअ हुकम्म राजनं को । कडै सिला सिर कट्टि ॥ छं० ३९१ ॥

शिला काटकर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी
कांपने लगी ।

कट्टि सीस सिल कट्टि करि । दियो बचन षोदान ॥

तब सु कंभि भअ धर धरिय । हांक सुनी न्रप कान ॥ छं० ३९२ ॥

शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊँचा खोदा

तब खजाने का मुँह खुल गया—

कवित्त—सस्त्र अनी छिति षनी । सेन सुत्ती चावहिसि ॥

सपत घात पाषाणं । तीस अंगुल दल बल कसि ॥

द्वादस अंगुल उंच । निठु करि प्रीवह' लाइय ॥

उधरि मुण्ण वर द्रव्य । कही कवि चंद न जाइय ॥

सिल तरति हलंतल भ्रम्म हलि । द्रव्य परण्णिय मध्य ग्रसि ॥

सामंत सूर इम उच्चरै । भली बीर कैमास लसि ॥ छं० ३९३ ॥

बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला ।

सुनिय बत्त चहुआन । भयो आचिज्ज सम्भघन ॥

भूमि किंत्ति संजुत्त । ग्रहे आबं अभंग धन ॥

पुर सु तिण्ण धर मध्य । क्रोध जाजुल्य नैन रत्त ॥

मुर लंगर विच बंधि । प्रीव' लीनो उछंग तत्त ॥

षोडशो भूमि द्वादस सु ह्य । हुंकि बीर दानव गजिय ॥

कवि चंद दंद मन महि बंध्यो।चित्त चित्त ब्रह्माड लगिया॥छं०३९४॥

१. ए० इ० को०—जावह ।

१. ए० इ० को०—याव ।

उस राक्षस ने माया करके लड़ना प्रारम्भ किया ।

छंद भुजंग प्रयात् —

प्रकारे सुचारु भुजंगं प्रयातं । षगप्पत्ति गायं अहृप्पत्ति गातं ॥

स्वयं वीर दानव्य हृद्यो हृकारं । वरं बंध रक्की षरक्के प्रहारं ॥छं० ३९५॥

वरं व्योम ब्रह्मं षहं पत्ति संवधौ । करे कोटि माया निसा पत्ति हंक्थौ ॥

पयं पाइ उठुं महा रोम' झुम्मी । मनो चक्क फेरै कुलालं स भुम्मी ॥

॥ छं० ३९६ ॥

पिनं रत्त दीसै पिनं मत्त माया । पिनं रत्त पीतं पिन स्याम छाया ॥

पिनं मेघ रूपं पिनं अग्गि सीसं । पिनं कोटि रूपं पिनं एक दीसं ॥छं० ३९७॥

पिनं बाल वृद्धं पिनं वै किसोरं । भयं भीम भीतं पिनं दिव्य गोरं ॥

पिनं मोह माया पिनं दठु बज्जै । पिनं मोहनी मोह रूपति सज्जै ॥छं० ३९८॥

पिनं मै विडाली पिनं विप्र माया । पिनं मेछ रूपं षगं हृष्य घाया ॥

हयं ग्रीव रूपं पिनं मझ्झ दीसै । पिनं गज्जियं सिध आवत्त रीसै ॥छं० ३९९॥

जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति की कि मां
प्रब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले ।

कवित्त - तोरि वीर संकर समूह । छडि गजराज थान गय ॥

भयौ समूह अरिष्ट । बुंढि लक्ष्मी न मत्ति हय ॥

सत्त मत्त छुट्टयो । अप्प अप्पन संभारै ॥

भो अचिज्ज सामत । व्याम बचनं न बिचारै ॥

कविचंद्र मंत्र आरंभ बर । उमा उमा कहि बंचयो ॥

अप्पिये बचन मृहि मात इह । तुअ काली कलजच्चयो ॥छं० ४००॥

हूहा - करि अस्तुति रुविचंद्र बर । अहो मात बरदान ॥

इह माया मैं बहु तन । कहुं लच्छि तुअ पान ॥ छं० ४०१ ॥

देवी की स्तुति ।

छंद विराज—सुनी देवि बानी । चही सिध रानी ॥

मयं मत्त माया । तुंही तूं उपाया ॥ छं० ४०२ ॥

अरी जुद्ध भण्णं । प्रकृती पुरिष्णं ॥

निराधार बंधी । निसंघे निसंधी ॥ छं० ४०३ ॥

चिहूँ चक्क षंडी । इकं पाइ मंडी ॥

अपीं तोहि तोही । जगत्रन्न मोही ॥ छं० ४०४ ॥

निसा पत्त मारै । दया बज्ज तारै ॥

तूही मंत्र मंत्री । तनं जा पवित्री ॥ छं० ४०५ ॥

तुही आसमानं । तुही भूमि धानं ॥

तुही बाग बानी । कला निद्धि रानी ॥ छं० ४०६ ॥

कवी चंद चंदं । कूकरै रुरि दंदं ॥

कलं षग धारै । प्रनेता उचारै ॥ छं० ४०७ ॥

निसा बीर बढ्यो । इहां आइ ठढ्यो ॥ छं० ४०८ ॥

देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया ।

ब्रह्मा--मात प्रसन्नन गुन गहिर । दियो हुंकि हुंकार ॥

दियो बर सु दानव मलन । कियो देव जयकार ॥ छं० ४०९ ॥

बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ । दानव मारा गया ।

कवित्त--तव प्रथि राज नरिद । बीर दानव हक्कारिय ॥

सबद द्रुग संभर्यो । पच्छ दीनो हुंकारिय ।

दिवत सथ्य सब तथ्य । कथ्य कोइ बैन न मंडै ॥

भीत सीत भय अंग^१ । रंग^२ रस रोस सु चंडै ॥

अरु नाइ प्रान सम ग्रेह तिह । कज्जल कूट समान सुइ ॥

मन चित चंद प्रारुध्यनह । जबै देवि डर आन उइ ॥ छं० ४१० ॥

बल उत्तंग सुमेर । रुक्मि संकिन मग मुक्किन ॥

छिनक मंत निय संत । तेज आहुटि बल तक्किन ॥

सबर बीर कविचंद । मंत्र दुरगा तव पढ्यो ॥

करी नवनि कर जोर । जाइ अगै भयो ठढ्यो ॥

अस्तुति अनेक उच्चार मुष । चरन चंपि द्रढ कर गहिय ॥

घन जोग कथा पूछी सहित । उचिन चंद अप्पन कहिय ॥ छं० ४११ ॥

चन्द ने स्तुति करके इस राक्षस और घन की पूर्व कथा पूछी ।

ब्रह्मा--करि अस्तुति द्रढ चरन गहि । पूछी भट्ट विगति ॥

जु कछु आदि पुच्छै सहित । कहत सु बीर विमत्ति ॥ छं० ४१२ ॥

देवी ने कहा कि जी लगाकर तू इसकी पूर्व कथा सुन ।

कहै वीर कविचंद नुअ । पूव कथा कहूं मंडि ॥

जिन लच्छी घर मुक्किये । घर रख्ये घन छंडि ॥ छं० ४१३ ॥

सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलयुग में वीरता प्रधान है ।

जुग सु आदि हुअ मंत्र गुर । त्रेता जुग हुअ सत्त ॥

द्वापर जुग पूजा प्रसिध । कलि जुग वीरं दत्त ॥ छं० ४१४ ॥

रघुवंश में आत्मन्व नामक एक राजा हुआ है उसकी
कथा कहती हैं ।

गाथा—हुअ आनंद सु बीरं । बुलिय मु प्रसन्न होइ कल बानी ॥
मुनि उत गति मु कवी । कहि अब रघुवंस आदि संकेतं ॥छं०४१५॥
वह राजा बड़ा अभ्यायी था धर्म विरुद्ध काम करता था ।
कवित्त—“तिहि तजिय सु रघुवंस । पुत्र मारंत इह षिज्जि ॥
चित्त कीनौ चरचित्त । मरन अंग आगम लषिज्ज ॥
जो बरजै बहु बार । धंम मानै न भयंकर ॥
सोक अग्नि तिन दक्षिन् । प्रान छंडौ रत्तियंकर* ॥
† सत बरस राज तय अन करि । कित्ति धंम संगह यइय ॥
आधंम कित्ति ज्यो मंडनह । सो उव्वरि बीरनि रहिय ॥छं०४१६॥
यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कर्मों को देख ऋषियों ने
शाप दिया कि जा तू राक्षस हो जा ।

कविन -निहि बाहन बरु सूर । धरम रण्यो रघुवंसी ॥
वेद धंम उध्यापि । काल कंटक बल कंसी ॥
सज्जि तेज जाजुल्य । जग्ग विध्वंसिय सब्बल ॥
कमल समूह भरिष्ट । जीति दणपाल धंम पल ॥
मारग हत्ति उध्यापि करि । दिब सराप सब रिण्णि मिलि ॥
जा वीर दान दानव मु बरि । अमर सिंह बल जीति इलि ॥
॥ छं० ४१७ ॥

उसका शरीर भस्म हो गया और वह बेल्य
होकर यहाँ रहने लगा ।

मिलि अयास आयास । आप मिलि आप अहुट्टिय ॥
मिलि समीर समीर । धरा धर धार आहुट्टिय ॥
तेज जोति चहु पीर । सुवर मंगल फिरि आइय ॥
विहि अधंम जरि तास । माहि सो कछु न समाइय ॥

* मो०—“निहि तजिय डर रघुवंस पुत्र चारण पुच्छ सिज्ज ।”

१. मो०—अंकर ।

† मो०—गति में इन दो पदों के स्थान में तीन पद दिए हैं जिनमें से अंतिम पद तो चारों प्रतियों में समान है किन्तु मो० प्रति में दोनों में एक का सारांश मिलता है यथा—मो०—“सत बरस राजा ने सबक राबंत अन कर, सब सौरभ्य विह बरि अंत करि कित धर्म संगह रहिय ।”

आकास मध्य ता मध्यर्ते फटिक बीर है चीर हुआ ॥
 ते बीर बहुत दानव अतुल । भये काल धानय रह्य ॥ छं० ४१४ ॥
 इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल
 पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई ।
 बहु वित्त बर काल । चंद बरदाइ धान हम ॥
 को जीवत देख्यो न । मरत देख्यो न न जे हम ॥
 मात ग्रम्भ जम निका । राम तामस करि नच्यो ॥
 इल हट्टे अंगनै । कौन रूचै को रुच्यो ॥
 जीरन सु जगा संसार भी । लच्छि न जीरन भइय इह ॥
 आयंत जात धंधो सकल । ग्यानवंत जानहि सु इह ॥ छं० ४१९ ॥
 तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब धन निकालने
 में दैत्य दुःख न दे ।

दूहा— तब प्रथिराज नरिंद बर । अरु सुभंत्रि कविचंद ॥
 इष्ट बत्त बर संसुहै । ज्यो दानव करै न दंद ॥ छं० ४२० ॥
 इष्ट मंत्र का साधन करते यज्ञ करते हुए खोदकर लक्ष्मी
 निकालना प्रारम्भ किया ।

छंद त्रोटक— कढ़ि लच्छिदिसंक्रम दीन नृपं । निज मंत्र बलं कल तत्र जपं ॥
 भुज भान सुरं भज भान दिसं । बर इष्टय चंद कविद कुसं ॥ छं० ४२१ ॥
 सब देव क्रमं क्रम दीन नृपं । जय जग्यरु जाप करंत तपं ॥
 धन गंध सुगंधन की हलितं । चलि सीत न तप्प सुभं मरुतं ॥ छं० ४२२ ॥
 धन सार मृगम्मद होम जरै । तिन उप्पर भोरन झोर परै ॥
 छड़ि धूम चिहूं दिसि छाया धनं । करि मंत्र सुदेव बलि बलनं ॥ छं० ४२३ ॥
 देव ने चन्द से कहा मेरे पिता रघुवंशी धर्माधिराज थे मैं
 उनका बेटा आनन्दचन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने
 न्याय से संसार को जीता, इस लिये शाप से
 मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम बीर पड़ा ।

कवित्त— नृप पूजी रघुवंस । नाम धृम्माधिराज सुभ ॥
 बिय बाहन नृप सूर । पुत्र आनंद चंद हुआ ॥
 सब जिते द्रगगाल । माल लिश्री अधूम छलि ॥
 राज नीति सब मुक्कि । क्रम बंध्यो अक्रम कलि ॥
 अदभूत मरन छिन भंग गति । बित्त बित्त क्रम अनुसरिब ॥
 तप भंग गच्छता जानि नह । नाम बीर दानव धरिय ॥ छं० ४२४ ॥

बीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैंने ही यहाँ रक्खा था ।

बैबगति से इसीको लेकर मेरी यह गति हुई ।

दूहा - कहै बीर सुनि चंद तुअ । अप्प कथा कहौ मंडि ॥

जा मुक्की लच्छी धरनि । सो रष्यों उर संडि ॥ छं० ४२५ ॥

हों रष्यों इन भंति करि । अहो चद बरदाइ ॥

रघुवंसी अति मोह मय । अबगति कोइ सुभाइ ॥ छं० ४२६ ॥

माया छाया पुत्तरी । क्रोधवंत हम बीर ॥

रहै छंडि है लच्छि यह । नम्मिंत तुम इह धीर ॥ छं० ४२७ ॥

बीर का अपने पिता रघुवंश राज की प्रशंसा करना ।

कवित्त - क्रोध लोभ जानी न । मोह माया न अलंकृत ॥

मोह गीत अरु सीत । जगि जा जापय सुकृत ॥

बहु बिबेक निमान । राज विसतरहि नीति बहु ॥

नब निवर्त धुनि बेद । कर्म छेदन अभेद लहि ॥

सो बहि साइ सेसब सुलप । जोवन बै विष अल्प मन ॥

रघुवंस बृद्ध आवस्त त्रिय । जोग मग सो छंडि^१ तन ॥ छं० ४२८ ॥

चारों युगों के धर्म का वर्णन ।

श्लोक - सत जुगे बंधयो देवो । त्रेताया सोम जाघयो^२ ॥

द्वापरे वाहनो सूरु । कलिजुगे बीर भीषम ॥ छं० ४२९ ॥

सतजुगे ब्रह्मपुत्रश्र । चेतायां बीर भक्षय^३ ॥

द्वापरे षिन्नि वशस्य । कलिजुगे सूद्र ग्रहनि का ॥ छं० ४३० ॥

बीर का अपने बल का वर्णन करके अपने सामने

धन निकालने को कहना ।

कवित्त - हम सु भयंकर बल । भट्ट सुभटन हंकारहि ॥

हम प्रचंड प्रब्त । कनिष्ट अंगुलि उप्पारहि ॥

सत्तो समुद प्रमान । सु तत छिन तिरि दिष्वहि ॥

सुनि न होइ देखी न । तोइ ब्रह्मंड सु लष्वहि ॥

दैवान दुसंकह दुष्ट गति । देव जोग को गद्ववै ॥

आतम्म मनुच्छन जीव बल । मो देखन घन कद्ववै ॥ छं० ४३१ ॥

शब्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने

से शत्रु राजा धन निकालेंगे ।

१. मो०-बंडि ।

२. मो०-बोधयो ।

३. मो० लक्ष्य ।

अरिल्ल—*बुल्लै चंद सुनो बर बीर । तुम त्रिकाल दरसी अति घीरं ॥
तुम अनंत बल रूप सरूपं । कद्दुई धन तुम बचन सु भूपं ॥ छं० ४३२ ॥

गाथा—कहै बीर चंद बर बंदं । हो देवाधि देव बलवंतं ॥
तुम देशत गत पापं । होइ प्रसन्न देहु बर बचनं ॥ छं० ४३३ ॥
चन्द की सुन्दर बानी सुनकर बीर ने प्रसन्न होकर धन
निकालने की आज्ञा दी ।

दूहा—सुर बानी सुन भट्ट की । मन प्रमोद बरबीर ॥
दई बाच कद्दुई सु धन । प्रसन देव करि घीर ॥ छं० ४३४ ॥
बीर की बात सुनकर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि
शुभ कर्म कराओ और आनन्द से धन निकालो ।

अरिल्ल - बीर बचनति चंद प्रकासिय । कहै राज गुरजन प्रति भासिय ॥
करो होम देवान मंत्र जप । सब प्रसन्न हुअ लहै धन नृप ॥ छं० ४३५ ॥
चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रसन्नता
के लिये जो कहो वही करें ।

कवित्त - तुम समान कोइ आन । पान पन दान मान मन ॥
कवन श्रवन रस राग । दैव परंग अंग नन ॥
राजस तामस सत्त । मत्त जोगिद विराजहि ॥
जैह एक गुन कोटि । रत्ति सो बोलन लाजहि ॥
महदेव' सेव तुम चरन रत । पति पवित्र मन मोह धरि ॥
हिडयो सु बीर उत्तर दिसा'इह पसाव चहुआन करि ॥ छं० ४३६ ॥
बीर का कहना कि मेरी प्रसन्नता के लिये पंडित से जप कराओ
और महिष का बलि देकर धन निकालो ।

दूहा—कहै वीर कविचंद सौं । हों सु प्रसन्नौं तोहि ॥
तीन लोक में जुगति बनि । मुझमत नाही मोहि ॥ छं० ४३७ ॥
पंडित बोलि रुज करी । होम दान ग्रह मान ॥
महिष मोहि पूजा करी । ती कद्दुई पाषाण ॥ छं० ४३८ ॥
बानव यह कहकर स्वर्ग गया । चन्द का राजा से कहना कि शाह को तो
तुम बांध चुके अब रावल के साथ धन निकालो ।

कवित्त - सुरग गयी दानब्ब । बत्त बल महिष उचारिय ॥
मंत्र तंत्र वंध्रयी । बलन अप्पन सम्हारिय ॥

* मो० प्रति में "बुल्लै धन चन्द सुनो बर बीर" पाठ है और धन शब्द यहां विशेष है ।

बर गज्जनी नरिंद । बंधि छंड्यी चहुवानं ॥

घन कद्वदन^१ तिन थान । बज्जि निर्घोष निसानं ॥

आनंद मंत्रि कंमास बल । तिथि घरी बल पुच्छिवर ॥

जै जया मिह आहुट्ट पति । मिलि विभूत कद्वी सुभर ॥ छं० ४३९ ॥
 राजा ने रावल को बुलाकर ज्योतिषी पंडित को बुलाया, पंडित ने होम
 की सामग्री मंगाकर वेदो आदि बनवाकर शुभ अनुष्ठान का
 प्रारम्भ किया ।

छंद त्रोटक तब बुल्लिय राजन राज गुरं । मु मनो गुर राजत देव दरं ।

बुलि बेद सु पंडित जोतिगयं । जिनु बुद्धि सु ब्रह्मय मुद्ध लयं ॥ छं० ४४० ॥

तिन मगिय होम प्रकार सयं । रचि जग्य अकार प्रकार मयं ॥

मिटई^२ जिह दोष^३ सु होइ जयं । ॥ छं० ४४१ ॥

कठि लच्छि दिसा क्रमि देवि न्रपं । कवि चद अनदिय मत्र जपं ॥

विधि भान सूरभिय भान दिमं । मब देव क्रमत्रम होइ रस ॥ छं० ४४२ ॥

जय जग्य रु जाप करै बलिना । धन गध मुगंधन की हलिता ॥

सु रची र्वनीय मवै अवनी । धज हल्लन बेदिय मडि फनी ॥ छं० ४४३ ॥

झरि चदन पाटरु पाट करी । अनुराग सु कुकम होम जरी ॥

नव रत्त कला कल सान छुटे । मनु द्वादम भान इहां प्रगटे ॥ छं० ४४४ ॥

धुनि मुनिय बेदन होन रूप । प्रगयी कमलानन तास मुखं ॥ छं० ४४५ ॥

छ प्रधानों को पास रखकर राजा ने पत्थर खोदकर हटवाया ।

कवित्त कट्टि बौर पापान । राज घट रणिय प्रधानं ॥

चंद भट्ट गुरुगाम । कन्ह रणिय चहुआनं ॥

रण्ये अत्ता ताद । ईम लद्धी वर भारी ॥

देव बन्त सत्रोग । भोग लद्धी रन रारी ॥

रणियजै भीम रव्वम बल । अरु रण्ये पुंडीर सह ॥

अनबत्त अग्य लै स्याम की । पच दीह तिन थान रहि । छं० ४४६ ॥

वह स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला,

उसमें एक सोने के हीराजटित हिंडोले पर सोने की पुतली सोने

की बीणा बजाती और नाचती हुई निकली, उसका नाच

देखकर आश्चर्य होने लगा ।

षोडि थान पाषान । ग्रेह निकर्यो अच्चंभम् ॥

हेम हीर हिंडोल । हेम पुत्तरी सुरंभम् ॥

१. मो०—कद्वदन ।

२. मो०—सहि ।

हेम हृष्य वाजिन । नृत्य पुत्तरि जरि अत्रिय ॥
इह अचंभ पुत्तरी । जानि सर जीवन मंत्रिय ॥
आलिंग नयन करि सियल गति । तिहि दिष्यत मन मयन रुकि ॥
आचंभ चंद देखत भयो । रंभ कि नृत्यत तार चुकि ॥ छं० ४४७ ॥

पुतली को देख गुरुराम का घ्रावचर्य करना ।

झूहा - सुर उद्योत गुरुराज तिहि । पुत्तरि दिष्य अचंभ ॥
रति पति मन संमुह धरै । घट सु घटिय आरंभ ॥ छं० ४४८ ॥
चन्द का कहना कि यह मायारूपी है ।

कहै चंद गुर राज मुनि । यह माया बल रूप ॥
न करि मोह कर गहि सु दुज । मूर्छि^१ बहोरिय नूप ॥ छं० ४४९ ॥
राबल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुतली किसका अवतार है ?
राज गुरु कहि चंद सो । हो कबिराज विचारि ॥
कोन रूप अवतार किय । क्यों लच्छिय पर नारि ॥ छं० ४५० ॥
चन्द ने कहा कि ठहरिए तब कहूं गा और उसने बीर को स्मरण
करके पुतली का भेद पूछा ।

कवित्त - तन सु चंद बर दाइ । राज गुरु बचन अप्प सर ॥
छिन इक धरौ विलंब । कहों बर बीर पुच्छि नर ॥
करि अस्तुति कलि बानि । बीर देवाधि देव मुनि ॥
हम मनुष्य मय मोह । तास नहि लहै अंत पुनि^२ ॥
पुच्छइ सु देव आपुब्ब कथ । कोन रूप इह पुत्तरिय ॥
रह लच्छि यान सुर केम तत^३ । कोन काज बर सुद्धरिय ॥ छं० ४५१ ॥
देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि रानी है ।

गाथा - सुर बांनीयं चंदं । सुप्रसन्नं देव मय कन्वी ॥
इह तेजं रिधि रानी । संपेषे सु चंद गुरु कन्वी ॥ छं० ४५२ ॥
यह ऋद्धि साक्षात् लक्ष्मी का रूप है इसे तुम बने सटके भोग
सकते हो । यह देव बानी सुनकर चन्द प्रसन्न हुआ और राबल
का संशय मिटा ।

कवित्त - इह मु कृत्य बल रूप । देव देखह सु मोह मत ॥
माया छाया सु लच्छि । अनुसरै सु लच्छि रत
इह लच्छी बर रूप । तेज जाजुल्य प्रमानं ॥
हम वचन इह रिद्धि । तुमहु सुप्रसनं सुषानं ॥

१. मो०-मुरकि ।

२. मो०-कुनि ।

३. मो०-तन ।

भोगवन काज संभरि सुपहु । इह बिधिना अप कर गदिय^२ ॥
सुनि चंद बचन आनंद हुआ । राज गुरु संसय मिटिय ॥छं० ४५३॥
इस हिंडोले को पूजन में रखना यह कहकर देव अगतर्धान हो
गए । राजा फिर धन निकालने लगे ।

बूहा—हिंडोली बर हेम करि । सिंघासन सुरराज ॥
वह प्रसन्न होइ रषियौ । पूजन हरि गुर राज ॥ छं० ४५४ ॥
बिन धरि माया अप्प दुरि । गए सु अमर देव ॥
फिरि कहुन लगे सु द्रव । लहै सुरप्पति भेव ॥ छं० ४५५ ॥
कुबेर के से भण्डार सा धन निकलना, सब को आश्चर्य होना
और तब सुरेंद्र को देखना ।

कवित्त—कलस बंक ब्रंशकक । लोह संकर बर बंध्यौ ॥
रजत कलस अरु हीर । रत्त अंतर चित्त संध्यौ ॥
हेम कलस नग भरिग । कंति दीपन जनु अग्गी ॥
सुबर कलस पाषान । मद्धि मन तेज उपंगी ॥
आचिज्ज चंद बरदाइ भय । ग्रह कुबेर करि लष्यौ ॥^१
गुरराज राम भट्टह सहित । फिरि सुरंग सब दिष्यौ ॥छं० ४५६॥
पुतली का बिना कुछ बोले चन्द और राबल को और तीक्ष्ण
कटाक्ष से देखना ।

कवित्त—ता पच्छें कवि चंद । राज गुर संमुह दिष्यौ ॥
ब्रह्म धान शिव धान । धान पति नाक विसष्यौ ॥
नवति बीर ग्रह जोग । सिद्ध नव निद्ध सु अठौ ॥
च्यारि अंग लछी प्रमान । धूम द्वादस अंग दिठ्ठा ॥
सा अंग बाल पुत्तलि अर्चंभ । हाइ भाइ विभ्रम बहै ॥
लाबनि चित्त उत्तर रहति । बंक कटाछन चित्त है ॥ छं० ४५७ ॥
चन्द और राबल का मूर्च्छित होकर गिरना । कुछ बेर में
संभल कर उठना ।

कवित्त--मुच्छि पर्यौ कवि चंद । मुच्छि दुजराज पर्यौ कल ॥
नाच भंग तन भंग । अष क्षल मलिय नैन जल ॥
उष्ट कंष तन दवेद । भेद बल बिन^१ कवि किष्ठी ॥
चदिय अंग पिडुरिय । गात सोभत जल भिष्ठी ॥

१. मो०—सपहु ।

१. मो०—लिष्यौ ।

२. ए० इ०—बटिय ।

४. ए० इ० को०—कंठ ।

सिखल चरन गति भंग ह्वै । वै बिलास अभिलाष गति ॥
जगोव मुच्छि दुजरज सब । देव एव चित्रं सुभति ॥ छं ४५४ ॥
उठने पर राज गुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन
निकला अब क्या प्राज्ञा है ।

ब्रूहा—मुछि उठ्यो गुर राज तब । पुछ्यो संभरि बार ।
जु कछु सुबर अज्ञा नृपति । धन निकर्यो अप्यार ॥ छं ४५९ ॥
धन के कलश प्रादि का दर्शन । रावल और पृथ्वीराज का एक
सिंहासन पर बैठना ।

कवित्त—सत्त^१ कलस त्रंक्किय । सत्त अग्र मंडि रजक्किय ॥
हेम कलस सत्त पंच । कलस पापान गतक्किय ॥
सत्त अद्ध बाजित्त । सहस अध पग्ग प्रमानं ॥
हेम हीर हिंडोल । एक आचभ सु थानं ॥
जान्यो न देव देवाधि गति । दैव जोग सिंहासनह ॥
चित्रंग राव रावर समर । मम सुराज प्रथु आमनह ॥ छं ४६० ॥
एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और
रावल आए ।

एक सुदिन संध्या समय । विश्वासनि के थान ॥
एक अचंभो देखियै । जो आवं चहुआन ॥ छं ४६१ ॥
उभय राज वर बन करि । चले सुथानक देव ॥
निरुट देखि देवी सुमट । गए सिध वर सेव ॥ छं ४६२ ॥
आए नृप चित्रंग पति । अरु संभरी नरिद ॥
तब लगि राम मु विप्र ने । करिय अविज्ज मु चंद ॥ छं ४६३ ॥
पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुज का वर्णन ।

छंद भुजंगी समं चह्दियं समर रावर नरिदं । तिनं वाम भुज्जं समं मूर नद ।
धनं सथ्य मध्यं दोऊ वीर राजं । तिनं देपतें वामता काम लाजं ॥ छं ४६४ ॥
उठी मुच्छ आनं धुनी लगि गेनं । मनो चंद बीयं सियं कीय हेनं ॥
दोऊ राज राजभ्रता राज सककी । दोऊ धर्म वंडे जमं बंड हक्की ॥ छं ४६५ ॥
दोऊ रत्तं माया ननं अगग लग्गे । मनो कंजं पत्रं जलं भ्रिटि भग्गे ॥
उभै मूर नूरं विराजंत राजं । जिनै सोभियं कंठ रह् हिंदु लाजं ॥ छं ४६६ ॥

१. ए० कृ० को०—सित्त ।

२. ए० कृ० को०—सित ।

३. ए०—सिचंकी अ ।

४. ए०—वत्त ।

५. ए० कृ० को०—अप ।

वेद मंत्र ने दोनों राजाओं के लिये पूजा की और इस महिष बलि
बढ़ाया । चतुःषष्टि देवि ने प्रसन्न होकर हुंकार किया ।

कवित्त—वेद मंत्र हुआ राम । उभय कारन क्रित किश्री ॥
समर समरसन कीन । राज उनहार सुलिश्री ॥
दम महिष्य बल भंजि । चंद्र मंत्र प्रारंभे ॥
नृप आज्ञा नन दीन् । सस्त्र मंगे प्रारंभे ॥
आरंभ मंत्र चवसट्टि जगि । है हुंकारव सद हुअ ॥
गत दंद चंद्र चंदाननहु । मात प्रसन्नन मन जुअ ॥ छं० ४६७ ॥
राजा ने सिंहासन हाथ में लेकर देवी की स्तुति की
देवी ने प्रसन्न होकर हुंकार किया ।

बूहा—सिंहासन प्रथिराज ले । मात वरंनन कीन ॥
मात प्रसन चहुआन कीं । जं हुंकारव दीन ॥ छं० ४६८ ॥
देवी पृथ्वीराज को आशीर्वाद देकर अन्तर्धान हो गई ।

कवित्त- हुआ प्रसाद चवसट्टि । हृथ्य सिंहासन अप्पिय ॥
बल अप्पी प्रथिराज । कित्त कलसा लगि थप्पिय ॥
विय सपत्त लभ्मे न । पुत्र लभ्मे सु धान तुअ ॥
मन मु वंस जय लभे । सज्ज अनुवृत पित्त जुअ ॥
पूजनह धान रबिवार कहि । अदिष्ट मात अंतर भइय ॥
सुभ लच्छि सुभग्रह आइ तेह । बर सुहेम हत्थां दइय ॥

पृथ्वीराज ने सिंहासन और लक्ष्मी मंगाकर रावल के साम्हने
रक्खी । रावल ने कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई
है, तुम्हारी है । पाटन के यादव राजा की कुबेरि
ससिव्रता की सगाई का विचार ॥

कवित्त - मंगि सिंघासन राज । लच्छि चतुरंग सु अप्पिय ॥
समर सिंघ रावर नरिद । अग्गे धरि जप्पिय ॥
रंजि राज आहुठु । राज दिल्लिय दिस आइय ॥
वर पट्टन जहो नरिद । लिखि बूत पठाइय ॥
श्रोतान राग चहुआन हुआ । क्या जपि ससिवृत्तकिय ॥
पावस प्रमान कट्टिय बिकट । सुबर राज यो मत्त किय ॥ छं० ४७० ॥

गाथा—सिंघासने सुरेसं । अरु सु लच्छि सा ह्यं ग्रहियं ॥
सो अग्गे बर सिंघं । मुक्के राज परिकरं सम्बं ॥ छं० ४७१ ॥

रावल समरसिंह का धन लेने से इंकार करना और कहना
कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्हीं लो ।

कवित्त—रंजि राज दष्षिन गिरेस । राजन प्रति बुल्लिय ॥
तुम सु बड़े राजिद । कहा गुन कहै सु भल्लिय ॥
हम सु तुम्म सगपन^१ । जानि आए तुम सथ्यं ॥
तुम लहुए लहुआन । मुष्य कढ्ढो सु अरथ्यं ॥
तुम कहिय बत्त अब जो हमै । तुम समान नहिं प्रीति भति ॥
उच्चरो वचन तुम राज बरासो हम हृदय सुमत्ति गत्ति ॥छं० ४७२॥

पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात से रावल को
क्रोध आ गया तब उन्होंने अनुचरों को धन ले लेने को कहा ।

बूहा—अति क्रोधित रावर समर । जब दिष्षो प्रथिराज ॥
तब अनुचर प्रति उच्चरिय । लेहु लच्छि धरि साज ॥ छं० ४७३ ॥

पृथ्वीराज से रावल का घर जाने के लिये सीख मांगना
पृथ्वीराज का कहना कि बस बिन और ठहरिए
शिकार खेलिए । रावल का आग्रह करना ।

कवित्त—तबहि जुगबर समर । राज राजन प्रति बुल्लिय ॥
हम सु सीष संभवे । चलें चित्रकोट सु थल्लिय ॥
तब राजन उच्चरिय । रहो दस दिन सब थिल्लिय ॥
रमें सरस आषेट । करें क्रीला घर दिल्लिय ॥
तब कहव राज आहुटपति । अहो राज राजन^२ गुर ॥
हम चलें राज काजंथ गुर । भर सु सब्ब समनेह उर ॥छं० ४७४॥

प्रेमाशु भरकर रावल ने बिदा मांगी, पृथ्वीराज उठकर
गले से गले मिले ।

बूहा—भरे सु सकल सनेह करि । रावर मंगिय सीष ॥
तब मुराज राजन गुर । उठि मिलि सज्जन ईष ॥ छं० ४७५ ॥
पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा
सदा ही स्नेह बनाए रहिएगा ।

देत सीष प्रथिराज नृप । इह बुल्लिय गुर राज ॥
होत सगप्पन ग्रेह रह । रष्वत रहियो^३ काज ॥ छं० ४७६ ॥

१. ए० क० को०—अवपन्न ।

२. मो०—राजन ।

३. मो०—रहिक ।

रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो बेह हैं, हमको
तुम से बढ़कर कोई प्रिय नहीं है ।

नृप सन रावर उच्चरिय । तुम सम नेह न कोइ ॥

जीव एक पंजर उभय । महन लोइहै दोइ ॥ छं० ४७७ ॥

रावल समर सिंह गदगद हो विदा हुए और अपने बेश
की ओर चले ।

तब सनेह नृप नैन भरि । अमुअ आप सु राज ॥

समर सिंघ चितौर कों । दिय अग्या सु समाज ॥ छं० ४७८ ॥

रावल को विदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया
और रावल के यहां हाथी घादि भेट भेजा ।

अब रावर सीषह सु करि । चढ़ि दषिषन गिर राह ॥

तब मुराज प्रथिराज गुर । बोलि चंद बिरदाह ॥ छं० ४७९ ॥

कवित - तबहि राज प्रथिराज । बोलि कैमास चंद बर ॥

दिय अग्या बर सेव । कीए आएस राव गुर ॥

*जुगम भिष बर क्रमिय । लेहु परिकर करि वेसं ॥

गय सुपंच मद गंध । सत्र हय साज सुरेसं ॥

लै चले चंद बर दाइ बर । जहां राज रावर मुभर ॥

सैधरी बसत अन्नक सुर । करि अस्तुति मुष कोटि तर* ॥ छं० ४८० ॥

रावल ने चन्द को मोती की माला देकर विदा किया

और आप विसौर को कूच किया ॥

बूहा - राजन बर रषिषय प्रसन । करिय सब्ब सामंत ॥

माल मुत्ति दिय चंद कवि । चलयौ चित्रगढ भंति ॥ छं० ४८१ ॥

कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का
दिल्ली चलना ।

अरिल्लआर—

फिरि आये कैमास चंद बर । मिले राज नहं पूर्न प्रेम भर ॥

डिन्नी पुर आवन चहुआनह । अनि तोरन उच्छव संमानह ॥ छं० ४८२ ॥

कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया । राजा खट्टू
बन में शिकार खेलता चला ।

कवि - तंवि राज कैमास । सोई अतर सिल लीनह ॥

द्रव्य ताम उभरीय । भरिय कर हासे तीनह ॥

* मो०—“मग सिंह ब्रिहि कविय” ।

१. मो०—जर ।

एकादस गअ पूर । पंच संभरि पुर धानह ॥

बासुर सत संक्रमे । भरिय भंडार विधानह ॥

संचरिय राज मृगया बहुरि । पुर षट् पारस रवन ॥

कर पत्र रूढ जट्टा सुषह । आइ राज भेंटघा सुजन ॥ छं० ४८३ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत से धन को बराबर भाग कर के सब सामंतों
को बांट दिया । सरबारों का बांट का वर्णन ।

बंटी दियो प्रथिराज । भाग किन्ने सह श्रव्वर ॥

एक भाग कैमास । तीय अप्पे नरसिघ नर ॥

पंच भाग चावंड । भाग अडौ बर कन्हं ॥

द्वादस भाग नरिंद । दियो परिगह सब थनं ॥

प्रथिराज दिष्ट आवै नही । चिकट कुभ ज्यां जल अभिद ॥

लगै न नीर पत्रह कमल । भिदं न मति छीवै उच्छिद ॥ छं० ४८४ ॥

हूहा—एक भाग दिय विप्र कर । करै राज सुष कंद ॥

धन लम्भिय प्रथिराज धन । कथी कथ्य कवि चंद ॥ छं० ४८५ ॥

बड़ी धूमधाम से दिल्ली के पास पहुंचे, राजकुमार ने आगे से

आकर दण्डवत किया । बड़ा आनन्द उत्सव हुआ ।

कवित्त—अति तोरन उच्छवह । आइ दिल्लीय निकट वर ॥

रेन कुमार सु आइ । सुबर सामंत मधुत्तर ॥

सत्त ब्रूअ असवार । कहत नामी अग्गै भर ॥

छंडि तुरिय पय लगिग । दीय सा चदन सीष गुर ॥

बंदे व चढ़े तुरियं समथ । आए नंद उछाह घर ॥

चिन्ने मलेच्छ लभ्यो सुधन । अति तोरन उच्छव नयर ॥ छं० ४८६ ॥

जेठ सुदी तेरस रविचार को राजा दिल्ली आए ।

गाथा—अति तोरन उच्छाहं । आए जेठ सुदि त्रयोदसियं ॥

सुभ जोगं रविवारं । गहनं साह बदिढ जस भारं ॥ छं० ४८७ ॥

महल में आने पर रानियों ने आकर मुजरा किया ।

हूहा—ग्रहन साहि जस बदिय घर । आइ धवल मधि साक ॥

त्रिया सकल आई सु तहं । मुजरा करन सु हाल ॥ छं० ४८८ ॥

वाहिमा, प्रादि रानियां न्योछावर कर राजा की सीख पा

अपने महल में गईं ।

गाथा—दाहिमी प्रथु भट्टी । पुडीरी आइ नूप डिंगं ॥

करि न्योछावरि सकल । नूप दी सीष गइय ग्रह अप्पं ॥ छं० ४८९ ॥

रात को राजा पुण्डरी को महल में रहे । सबेरे बाहर आए ,
मन में शाह के दण्ड का विचार उठा ।

राजा धवल संपत्तं । गये ग्रह रति तथ्य पुंडीरं ॥
करि रस अनंग क्रीडा । बढ़िय सुवेलि सुमन मन मथी ॥छं० ४९०॥

सुमन बेलि मन मथ्यी । करि क्रीडा हुआ बर प्रातं ॥

अंतर साल वयट्टं । मन विचार साहयं दंडं ॥ छं० ४९१ ॥

बाबशाह से जो घोड़े आदि दण्ड लिया था सब सरदारों में
बांट दिया । अपने पास केवल यश रक्खा ॥

कवित्त — दंड सुबर पतिसाह । दीय ह्य बंटि रात्र बर ॥

बीस सुभर ह्य कन्ह । बीस ह्य उंचह निदूढर ॥ ४

बीस दूअ रघुबंस । बीस उभय दाहिम्मं ॥

असताइ अल्हन पहाड़ । बीस ह्य जैत गुरमं ॥

औरह सु सकल भर बीस अघ । बंटि बंटि दिय सबन नर ॥

रष्यन सु गल्ह राजंद गुर । जस रष्यी निज बर सुकर ॥छं० ४९२॥

गाथा — जस रष्यी कर अप्पं । मुत्तिय माल लालयं द्रुबं ॥

आरोही पुर दत्तं । कवि दीनी सु अवर कर साहं ॥ छं० ४९३ ॥

डूहा — सकल दंड पतिसाह कौ । बंटि दियौ सब सूर ॥

तपत राज अति षत्रिवर । ग्रीषम वित्तिय पूर ॥ छं० ४९४ ॥

इति श्री कविचंद्र बिरबिते पयिराज रासके षट्ठू बन मध्ये

प्राखेटक रमन घनसंग्रहन पातिसाहबंधनं घनकथा

नाम चौबीसमो प्रस्तावः ॥ २४ ॥



अथ शशिवृतावर्णनं नाम प्रस्ताव ।

(पचीसवां समय)

शशिव्रता की आदि कथा वर्णन की सूचना ।

ब्रूहा—आदि कथा शशिवृत्त की । कहत अब्ब संमूल ॥

दिल्ली वै पतिसाहि ग्रहि । कदिढ लच्छि उन मूल ॥ छं० १ ॥

ग्रीष्म में पृथ्वीराज का बिहार करना ।

अरिल्ल—

ग्रीषम ऋतु कीइत^१ सुराजन । षिति उकलंत वेह नभ साजन ।

विषम वायु तपित^२ तनुभाजन । लगि सीत सम्मीर मुकाजन^३ ॥ छं० २ ॥

कवित्त—लगि सीत कल मंद । नीर निकटं सु रजत घट^४ ॥

अमित सुरंग सुर संघ । तनह उवटंत रजति पट ॥

मलय चंद मल्लिका । घाम घारा ग्रह सुब्बर ॥

रंजि बिपन बाटिका । तीस द्रुम छांह रजति तर ॥

कुमकुमा अंग उवटंत अति । मधि केसर धनुसार घति ॥

क्रीलंत राज ग्रीषम सुरिति । आगम पावस भइय भति ॥ छं० ३ ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आरम्भ होना ।

माथा—ग्रीषम वित्तिय कालं । आगम पावस दीह मक्षेनं ॥

दिसि दष्विन वर देशं । नाइक^५ आइ चंद्रोदयं नामं ॥ छं० ४ ॥

राजा सभा में बैठे थे कि एक नट आया, राजाने आबर

कर उसका परिचय पूछा ।

सभा बिराजित राजं । तहां नट आइ पत्त संगीतं ॥

मिलत मान दिय राजं । पुच्छिय विगति देस रह मक्षं^६ ॥ छं० ५ ॥

नट को गुण दिखलाने की आज्ञा देना ।

ब्रूहा—इह संभरि त्रप उच्चरिय । अहो सु नट गुरराइ ॥

गुन उचार^७ कछु किजियै । ज्यो दिज्जे दानाइ ॥ छं० ६ ॥

१. ए०-क०-को०-क्रीलंत ।

२. ए० क० को०-तपि तम तन ।

३. मो०-राजन ।

४. मो०-घट ।

५. ए०-क०-को०-नाइक ।

६. ए०-क०-को०-मक्षं ।

७. मो० ए०-उचार ।

नट का कहना कि मैं नाटक आदि सब गुण जानता हूँ
आप देखिए सब दिखाता हूँ ।

गाथा— नाटक प्रमान कथय^१ । सुनि राजन घी दिल्लीसं ॥

पात्रं घर के सब्बं । गुन सुनियै चितयं लायं ॥ छं० ७ ॥

दूहा— अवसर तत्त प्रगट्ट किय । जंत्र मृदंग मुतान ॥

करिय राग श्री उंचकर । करन नृत्य बहु गान ॥ छं० ८ ॥

देवी की बन्दना करके नृत्य आरम्भ करना ।

आदि सकल अस्तुति करिय । पहुपंजलि पटिदेव ॥

कहि मंगल^२ घरनी निरषि । करन नृत्य अति भेव ॥ छं० ९ ॥

चंद चारु मागघ सुअरु^३ । गीत प्रबंध प्रसन्न^४ ॥

उघटि त्रिषटि सब प्रमुष दे । देषि विगति सुर भिन्न^५ ॥ छं० १० ॥

नट का नाच के आठ भेद बतलाना ।

तब सुनट्ट इम उच्चरिय । हो राजन नर इंद ॥

बहु विवेक संगीत कल । अष्टह नृत्य सुनद ॥ छं० ११ ॥

आठों भेदों के नाम ।

श्लोक— मृदंगी दंडिका ताली । कहली श्रुत धुंठरी^६ ॥

नृत्य गीत प्रबंधं च । अष्टांगो^७ नृत्य उच्यते ॥ छं० १२ ॥

नृत्य देख कर बैठने का हुक्म देना ।

दूहा— कहिय नृपति अष्टंग मुधि । रंजि राज कल गान ॥

बहुरि हुकंम बैठन्न दिय । फिरि पुच्छिय थह न्यान ॥ छं० १३ ॥

राजा का नट से उसके निवास स्थान का नाम पूछना ।

तब राजन यों उच्चरिय । अहो सु नटवर राय ॥

कोन ग्राम ठौरह मु तुम । कहो सु गुन प्रति भाय ॥ छं० १४ ॥

नट का कहना कि देवगिर में मैं रहता हूँ वहाँ का राजा सोम-

वंशी जादव बड़ा प्रतापी है । राजा की बड़ाई ।

तब नट नमि करि उच्चरिय । सुनहु राज दिल्लीस ॥

सोम वंश जद्व नृपति । देव गिरी वसि जीस ॥ छं० १५ ॥

कवित्त— देवगिरी जद्व नरेश । अति प्रबल तपत तप ॥

संगीतरु बर कला । लहन शुभ ग्यान सुभत बय ॥

१. मो०—कथियं ।

२. मो०—घरती ।

३. मो०—सुअरु ।

४. मो०—प्रमान ।

५. मो०—तान ।

६. मो०—धधरी ।

७. ९०—हुं—को०—अष्टांगो ।

ग्यान^१ तान^२ गुन लहन । भेद सुन ग्यान विचारं ॥
तास राज संमीप । रहों नट विद्य उचारं ॥
ता ग्रह सु पात्र अनेक गुन । रहैं सु तहं निशि दीह पर ॥
राजंत राज जह्व नृपति । ज्यों सुदेव पति नाक गुर ॥ छं० १६ ॥
मैं उनका नट हूं आपका नाम सुन यहां आया ।

गाथा — तिहि ग्रह नट वर रूपं । आए मंगेव सीष कुरषेतं ॥
तुम गुन अति संभरियं^३ । आवन हूअ एम दिल्लि मझेनं ॥ छं० १७ ॥
राजा का पूछना कि उसकी कन्या का विवाह किसके
साथ निश्चय हुआ है ।
कहि संभरि नृप राजं । हो नट राइ सुनहु बर बचनं ॥
किहि व्याहन बर संगं । को राजन कवन घर मझं ॥ छं० १८ ॥
नट का कहना कि उज्जैन के कमधज्ज राजा के यहां
सगाई ठहरी है ।

पर चर उजेन मझं । करि पामरि सगप्पनं राजं ॥
शुभ अंत करि आदं । व्याहन मन कीन राइ कमधज्ज^४ ॥ छं० १९ ॥
ब्रूहा — कै सगपन जह्व नृपति । करै सु दिसि कमधज्ज ॥
कोई पुत्र अनूप है । तिन गुन व्याहन कज्ज ॥ छं० २० ॥
व्याहन मन कमधज्ज करि । सगपन राजदोरं^५ ॥
पंम्मारी दिय पुत्र पर । तिहि पुत्री बर ठौरं ॥ छं० २१ ॥
पुत्री बरी उजेन दिसि । पहिले पंग स पुत्त ॥
अवन गवन पुर आदि दे । पढि जह्व ग्रह तत्त ॥ छं० २२ ॥
यादव राजा ने सगाई के लिये ब्राह्मण उज्जैन भेजा है । पर
सड़की को यह सम्बन्ध नहीं भाया ।

गाथा — पठवन किय दुज जहों । पुत्री दीय पुरी^६ उज्जेनं ॥
तिहि पुत्री नारत्तं । व्याही पंग पुत्त अज इदं ॥ छं० २३ ॥
नट का शशिव्रता के रूप की बड़ाई करना ।

ब्रूहा — सुनि राजन क्यों करि कहों । जो शशिव्रता रूप ॥
जीह एक व्रत्तन न बनि । तिन गुन व्रत्त अनूप ॥ छं० २४ ॥

१. मो०—तान ।

२. मो०—मान ।

३. ए०—हु०—को०—इंद ।

४. ए०—हु०—को०—संभरिय ।

★ व्याहन कीन कमधज्ज ।

५. मो०—रजदोर ।

६. ए०—हु०—को०—पुरि ।

सभा उठने पर राजा का नट को एकाग्रत में बुलाना ।
तब राजन ऊठी सभा । फिरि दीनी सब सीष ॥
अंदर नट बुलाइ कै । पुछिय विगति बिसीष^१ ॥ छं० २५ ॥
नट का शशिव्रता का रूप वर्णन करना ।

कवित्त — कहै सु नट राजिद । ब्रह्म आमोदक दिन ॥
चंद कला मुख कंठ । लच्छि सहजहं सरूपतन ॥
नेन सु मृग शुक नास । अघर बर बिब पक्क मति ॥
कंठ कपोत मृनाल भुज्ज । नारगि उरज सति ॥
कटि लंक सिद्ध जुग जंघ रँभ चलत हंस गति गथेद लजि ॥
सा नृपति काज नृमिय तरुनि । मनो मेनिका रूप सजि ॥ छं० २६ ॥
दोहा — कहै गुन बरनीं राज कहि । कुंअरी जह्व नाथ ॥
विघना रचि पचि कर करी । मनुं मेनिका समाथ ॥ छं० २७ ॥
उसका रूप सुन राजा का घ्रासक हो जाना और नट से
पूछना कि इसकी सगाई मुझ से कैसे हो ।

अरिल्ल —

सुनि राजन लगे ओतानं । लगे मीन केतु क्रत बानं ॥
कहै नट सौं राजन बर प्रेमं । मह सगपन सा करहि सुकेमं ॥ छं० २८ ॥
नट का कहना कि इसका उत्तर पीछे दूंगा । मुझ से इस
में जो हो सकांगा उठा न रखूंगा ।
दूहा — पुनि नट वर यौ उच्चरिय । फिरि कहिहों राजिद ॥
जौ मुझ कीयो होइ है । तौ करि हौं नृप इंद ॥ छं० २९ ॥
राजा का नट को इनाम बेकर विवा करना, नट का कुरुक्षेत्र
की ओर जाना ।

तब राजन नट सीष दिय । गज सु एरु है पंच ॥
चल्यो दिसि कुरवेत प्रति । परसन हरि चरनंच ॥ छं० ३० ॥
प्रीषम बीतकर बर्बा का आगमन हुआ, राजा का मन शशि-
व्रता की ओर लगा रहा ।

अरिल्ल —

प्रीषम रिति बिली सुम राजं । पावत आगम भई समाजं ॥
सुनि नट वैन अ । ब जह्व कथ । नन घोरज्ज हंम आतम ह्य ॥ छं० ३१ ॥

राजा का शिव जी की पूजा करना, शिव जी का प्रसन्न
होकर आधी रात के समय वर्णन देना ।

दूहा—हर सेवा राजन करत । क्रमिय मास जब संग ।

अद्ध निसा शिव आइ कै । दिय सु वचन मन रंग ॥ छं० ३२ ॥

शिव जी का मनोरथ सिद्ध होने का वर देना ।

जो कामन मन सद्धई । सो पूरे हर ईस ।

नन चिंता करि राज गुर । आयी गुन तुछ दीस ॥ छं० ३३ ॥

राजा का स्वप्न में वर पाकर प्रसन्न होना और किसी

तरह वर्षा ऋतु काटना ।

कवित्त - हुआ प्रभात जब राज । सुपन मन मद्धि राज रस ॥

प्रसन होई शिव शिवा । काम सीझै सु इंद जस ॥

मन जाने वर अप्य । लगि भोतान राज उर ॥

चित्र महावतगेंद^१ । बहुरि उतरै न अवर पर ॥

नन धीर करत पावस मुरिति । छिन छिन जुग जुग जात जिय ॥

वर मोर सोर ददुदुर बचनालगि तपत तन असम किय ॥ छं० ३४ ॥

वर्षा की शोभा का वर्णन-राजा का शशिव्रता के विरह में व्याकुल होना ।

कवित्त - मोर सोर चिहुं ओर । झटा आसाढ़ बंधि नभ ॥

बच दादुर झिगुरन । रटन चातिग^२ रंजत सुभ ॥

नील बरन बसुमतिय । पहिर आभ्रन अलंकिय ॥

चंद बधू सिर व्यंज^३ । धरे बसुमत्ति सु रज्जिय ॥

बरपंत बूब धन मेघ सर । तत्र सुमरै जह्व कुंअरि ॥

नन हंस धीर धीरज सुतन । इष फुट्टे^४ मनमथ्य करि ॥ छं० ३५ ॥

वर्षा वर्णन-राजा का विरह वर्णन ।

छंद पदरी —

घन घटा बंधि नभ मेघ छाय । दामिनिय दमकि जामिनिय जाय ॥

बोलंत मोर गिर बर मुहाइ । चातिग रटत चिहुं ओर नाइ ॥ छं० ३६ ॥

दादुरन सोर दस दिस डराइ । रह पंथ पथिक थकि पाइ साइ ॥

विरहिनी रुरि जिन^५ पंथ नाह । तिहि बूंद लगत जनु ईध जाह ॥ छं० ३७ ॥

दंपती करै क्रीला उमंग^६ । मनमथ्य रहसि बढि अंग अंग ॥

विरहनी रटत पप्पीह^६ नार । प्रफुलित लता लल्लरिय बार ॥ छं० ३८ ॥

१. ष० छं० को०—नयंद, नयंद ।

३. को०—अयंद ।

५. को०—उरतय ।

२. को०—चातुक ।

४. ए०—तिन ।

६. को०—पप्पीह ।

घन बृह लता ललिपुष्पक^१ मंत । सब रंग रंग पावसह कंत ॥

उम्भरिय चलिय सलिला संपूर । चलि मिलिय संग सायरह नूर ॥छं० ३९॥

रति करन क्रीलनह^२ राज थाह । नन हंस घीर मन सुष्य ताह ॥

नहि सजे सुष्य लषि बिषम वाइ । तन होत तपति शीतन सुहाइ ॥छं० ४०॥

नन प्रीत सुहय गय नारि मांहि । अतिताप जंत तन रोम मांहि ॥

नन नीद सुष्य^३ नन राज अंग । लग्गेषु बाग मन मध्य पंग ॥ छं० ४१ ॥

भेदेव अंग अंग रोम राइ । जानै न कोइ बर अवर भाइ ॥

यो करत गई पावसी विषमम । किय सुमन^४ दसा दक्षन करंम । छं० ४२ ॥

वर्षा बीत कर शरद का प्रागमन ।

दूहा - गत पावस आगम शरद । गई गुडल नभ मान ॥

ज्यों सद गुह मिलि अंदरद । *मिलि प्रगट्ट गुह आन ॥ छं० ४३ ॥

शरदागमन-शरद वर्णन ।

सुनिक बंक उत्तरि सरित । गय बल्ली^५ कुमिलाइ ॥

जलधर बिन यों मेदिनी । ज्यों पति हीन त्रियाइ ॥

छंद पद्धरी- नम्मलिय^६ कला उगयो सोम । कंदर्प प्रगट उदित^७ व्योम ॥

सरिता सुनीर आए निवांन । पंगु रन हरै त्रिय द्रग लजान ॥

मल्लिका फूल सुगंध वाय^८ । सजोगि कंत रहि लप्पटाइ ॥

फल फूल सकल लूंत अंब । जस प्रभा सुम्भ सुनि राज व्यंब ॥

देवास पूजि नृप रजि बिबेक^९ । सिर छत्र चौर राजंष^{१०} तेक ॥

आगम्म शरद रितु चलन साजं । आनंद उभर उमगे सु राज ॥

अति प्रीति सूर सामंत काज । पति नाक सभा हेमंत लाग ॥

किय सुमन चलन गिरि दःनेस । श्रोतान राग लग्यो अमेस ॥ छं० ४५ ॥

अरिल्ल पावस रितु क्रीलंत सु राजन । फिरि आइय दिन सरद समाजन ॥

करन राज क्रीला आषेटं । संक्रमि देस मट्टि मन भेटं ॥ छं० ४६ ॥

राजा का अपने सरदारों के साथ शिकार के लिये तय्यारी करना ।

कवित्त- सम सिकार कजिराज । सबर चतुरंग सु सज्जिय ॥

सघन सूर सामंत । अप्प अप्पन भर गज्जिय ॥

रंजि राज प्रथिराज । राज क्रीलन मन लाइय^{११} ॥

बर पट्टन जद्दवन । दूत राज पै पठाइय ॥

१. ए०-पुष्प ।

२. ए० कु०-कील ।

३. मो०-सुष्य ।

४. मो०-दिसा ।

५. मो० मिले पषट ।

६. मो०-बेसी ।

७. मो०-विर्मली ।

८. मो० कु० को०-उदित बु । ९. ए० कु० को०-बाइ ७

१०. ए०-कु०-को०-बिबेक ।

११. मो०-राजत अनेक ।

श्रोताम राग चहुआन हुआ । कथा जंपि ससिवृत्त किय ॥
अब कहत कथ विस्तार किय । जो राजन इतन करिय ॥ छं० ४७ ॥
राजा का शिकार के लिये सवार होना ।

गाथा—तुछ दिन अन्तर क्रमियं । राज^१ क्रीलंत अप्प घर मझ्झं ॥
एक सुदिन राजानं । क्रीलन आषेट अप्प चढ़ि चलियं ॥ छं० ४८ ॥

झूहा—क्रील राज आषेट चढ़ि । अन्तर दिन हुआ आदि ॥
मिलिन जोग विधि लिषियबर । करि सनद्ध चढ़ि सादि ॥ छं० ४९ ॥
माघ बबी मझ्झसवार को शिकार के लिये निकलना ।

अरिल्ल—क्रीलन राज^२ चढ़े आवेटं । माघ बद्धि दुतिया दिन भेटं ॥
दिन सुभवार सु मंगल लहियं । करन शिकार अप्प चढ़ि चलियं ॥ छं० ५० ॥
राजा की धूमधाम का वर्णन ।

कवित्त—चढ़िय राज प्रथिराज । साज आषेट लिए सजि ॥
सथ्य सुभट सामंत । संग सेना सु तुच्छ रजि ॥
जाम देव का कन्ह । अत्त ताई निडुर गुर ॥
मति मंत्री कैमांस । राव चामंड जुझ्झ^३ भर ॥
परमार सिंघ सूरन समथ । रघुबंसी राजन सुबर ॥
ईतनें सहित भर सेन चलि । उडी रेनु आयास पर ॥ छं० ५१ ॥
बन में जानयरो का वर्णन ।

बागुर जाल बयल्ल । हिरन चीते सु स्वांन गन ॥
कालबूत, भ्रग, बिहंग । विवाह तट्टीय चलत बन ॥
सर नावक बंङ्क । हरित जन बसन विरज्जिय ॥
गै जिमि गिरि करि अगग । अप्प बन सति सज्जिय ॥
है भारि भईय कांनन सकल । मग अमगग दल संचरिय ॥
षिल्लन शिकार चढ़िदय नपति । प्रथिराज महि संभरिय ॥ छं० ५२ ॥
शिकार का वर्णन ।

इन^४ सु साज मृगया सु । बाज उत्तंग अंग बर ॥
निमष निमष संचरहि । निमिष जोजन जोजन सर ॥
छित्त लिये जिम पवन । वेग जगै जिम अगिय ॥
घट छुट्टै जिम सह । उरह चक्रवाक बिसगिय ॥
यो बंघि राज आषेट बर । वपु सुव सुअ दिषे सु चष ॥
घह मंगि अंषि मंगल पवन । सबै होइ जोजन समष ॥ ५३ ॥

१. मो०—इअणेश । २. मो०—भाइय । ३. मो०—बहीन ।
४. छं०—राजन । ४. ए०—हन । ४. मो०—हर ।
५. ए०—छं०—को०—राजन । ५. मो०—बिकसिय । ५. मो०—माल ।

धुर धुरंत धन स्वान । अप्प पंजर तीतर बर ॥
मच्छ जाल बगुरि हि । फंद फंदैत सुबर धर ॥
घनक वान हक्कां सु । सिंघ पंजर जल रष्वन ॥
षांट धैर विसमिल्ल । तार तारक्क चित्र पन ॥
सर हद् मूरस लग्गी रमत । भुलै साष श्री नाथ पति ॥
कविचंद विरद वनन करै । श्रवन सुनै दिल्लिय त्रपति ॥ छं० ५४ ॥

शिकार पर जानवरों का छोड़ा जाना ।

गाथा--जित तित छुट्टे षंषी । थाबर जलह जंगमं जोती ॥
ससि सालं हरि पालं । भूपालं काल प्रति पालं ॥ छं० ५५ ॥
भालू, सुन्नर आदि का आगे होकर निकलना ।
भालक आइ सहीयं । बाराह कोस अठुयं पंचं ॥
आतुर परि राजानं । अति अदभूत रूप शूकरयं ॥ छं० ५६ ॥
राजा के बन में घुसने पर कोलाहल होने से शूकरों का भागना ।
दूहा - गये सुवन राजन मुभर करन घात सु प्रपंच ॥
कोलाहल सुनि सूकरह । उठि त्रय कोस पुलंच ॥ छं० ५७ ॥
तिहि को हर इक प्रबल षह । षोदि मुहै डर तार ॥
किरि अषो राजन्न प्रति । ध्यीरो कोल उचार ॥ छं० ५८ ॥
सब सरदारों का भी वहां पहुंचना, एक बधिक का आकार
शूकर का पता देकर राजा से पंदल चलने के
लिये निवेदन करना ।

और सकल मामंत भर । आइ संपते तथ्य ।
अरज राज प्रथिराज सम । कही बधिक इह^१ कथ्य ॥ छं० ५९ ॥
त्रय सु दिवस राजन क्रमिय । तीस कोस त्रै अग्य ॥
जंगल धरतें वेद त्रय । सिल नालूर सुरंग ॥ छं० ६० ॥
बधिक कही इह राजप्रति । घात करै सुभ संच ॥
दल समूह तजि चल्लियै । तुबक गही तुर तंच ॥ छं० ६१ ॥
राजा का तुरंत छोड़ा छोड़ तुबक कन्धे पर रल्ल बाराह
की लोज में चलना ।

तब राजन्न तुरंग तजि । गहि दिढ तुबक सुकंध ॥
कोहर मध्य बाराह बर । करिय चोट सुर संघ ॥ छं० ६२ ॥

१. ए०--मुक्क ।

२. मो०--इक ।

२. मो०--धारी ।

सुभर को राजा ने मार कर बधिक को इनाम दे कर सुम्बर बारी
में बिधाम किया, समय होने पर भोजन की तय्यारी होना ।
कवित्त - हुनिग राज बाराह । अप्प बधिक इधाम दिय ॥
सुभर सरुल सामंत । रंजि राजन्न सुभंतिय ॥
बारी को सदुआन । तास घरा ग्रह सुम्बर ॥
तहं विराम करि राज । अवर सामंत अप्प जुर् ॥
जब भई गोठि तय्यह सुबर । तब परिहार सु सद् किय ॥
सामंत मुभर राजंन^२ अप । आहारे बिजन मुलिय^१ ॥ छं० ६३ ॥
चारों ओर राजा के शिकार की बड़ाई होना ।

बुहा - दिल्ली वैहै वेगहत । खना* अषेटक राज ॥
चात्रदिसि मुर जंपई । घन चहुआन समाज ॥ छं० ६४ ॥
कवित्त - उभय सत्त मृग मुदित । बंधि फे दैत रहित बर ॥
यों बंधे मृग बीय । कहै ओपमा चंद बर ॥
मन बंधि कुलटा विटप । ग्यांन बधि पुकतित आवै ॥
दिन बंधि आवै कुमति । काल नर बुद्धि डुलावै ॥
आनई लज्ज गुल जस पकरि । आंनि संचि आवै अजस ॥
आनई क्रोध वर कलह को । यों आने भ्रग बीय गस ॥ छं० ६५ ॥
नाम स्वान गति सीह । पत्त पर भवत बाय पुर ॥
कल दूढ़ अगिग सु ज्वाल । जीव पुज्जै न चित्त जुर् ॥
दीप नयन प्रज्जरै । क्रम लंबे कंधे डारे ॥
कहि ओपम कवि चंद । बीज चंचल बति हारे ॥
अति ज्वाल परिग्रह रोमभर । दुति तरंग छिति जल छलिय ॥
पामर रुषाट पंजर विहर । राज पास दसदिसि चलिय ॥ छं० ६६ ॥
राजा का झकेले बधिक के साथ शिकार के पीछे चलना
ओर सरदारों का राजा के पीछे चलना ।

कवित्त - इक्क समय राजन्न । करन क्रीला घर अप्पं ॥
बिपन मध्य संक्रमन । करन भाषेट सु तप्पं^१ ॥
ग्रह करि तुपक मु राज । भ्रग छती घर चल्लिय ॥
अवर सूर सामंत । फौज पच्छे घरि हल्लिय ॥

१. मो०-राजप्रति ।

१. मो०-राजान ।

२. मो०-राजान ।

२. मो०-लय ।

* ए०-ऊ०-फो०-बीगहन वरन अषेटक राज ।

३. आषेटक ।

कर हृथ्य डार वृछन सुपर । चले राज तुछ बधिक सथ ॥
लग्यो सुरंग आषट की । क्रम्यो राज पर भूमि पथ ॥ छं० ६७ ॥

शुकी का शुक से पूछना कि दिल्ली के राजा के गन्धर्व विवाह का
समाचार कहो शुक ने कहा कि जादव राजा ने नारियल
देकर ब्राह्मण को भेजा ।

पुच्छ कथा शुक कहो । समह गंधवी सुप्रेमहि ॥
स्रवन मंमि संजोगि । राज ममधरी सुनेमहि ॥
... .. इम चितिय मन मक्षि ।

कै करो पति जुगनि ईसह । ईस पुज्रै सु जगीसह ॥
शुक चिति बाल अति लघु सुनत । ततविन विस उपजै तिहि ॥
देव सभा न जुददुव नृपति नाल केर दुज अनुसरहि ॥ छं० ६८ ॥

ब्राह्मण का जंचन्द के यहाँ जाकर उसके भतोजे वीरचन्द
से ससिन्नता को सगाई का संदेसा बेना । एक गन्धर्व
यह सुनता था बह तुरन्त देवगिरि की ओर चला ।

नाल केर दुज गहिय । द्वार जै चंद गयो बपु ॥
करी षवर हे जमह । अप्प अंदर बुलाइ नृप ॥
नाल केर दुज आनि । कह्यो राजन अब धारी ॥
देव मु गिरि त्रिप भ्रात । पुंज ससि वृत्त कुपारी ॥
सौ दइय बंध नृप बीर कहु । लगन मास दिन पंच वर ॥
सुनि श्रवन एह गंधव कष । चल्लौ मु दछ्छन देव घर ॥ छं० ६९ ॥

गन्धर्व का शशिव्रता के पास आना, वह बन में विचर रही थी ।

पूहा—चल्पी मु दक्षिन देव गिरि । जहां शशिवृत्त कुमारि ॥
विपन मद्धि क्रीडा करन । समह बाल चितचारि ॥ छं० ७० ॥
सोने के हंस का रूप धरकर गन्धर्व का दिल्लीलाई देना, शशिव्रता
का उसको पकड़ना और पूछना कि तुम कौन हो । हंस का कहना
कि मैं गन्धर्व हूँ देवराज के काम को आया हूँ ।

कवित - हेम हंस तन धरिय । विपन मद्ध विश्राम लिय ॥
दिष्ण तास शशिव्रत । अतिहि अचरिष्ण मानि जिय ॥
बल कर गहिय सु तत्व । हृत्व ले करि तिहि पुच्छिय ॥
कवन देव तुम धान । कवन माया तन अच्छिय ॥
उच्चर्यौ हंस ससिन्नत सम । मति प्रधान गन्धर्व हम् ॥
सुरराज काज आप करन । तीन लोक हम बाल गम ॥ छं० ७१ ॥

शशिव्रता का पूछना कि हम पहिले कौन थी और हमारा पति कौन होगा हंस का कहना कि तू बिजरेषा नाम की अप्सरा थी, अपने रूप और गान के गर्व में इन्द्र से लड़ गई इससे दक्षिण के राजा की बेटा हुई।

कवित्त—कहे बाल सुनि हंस । कवन हम पुंज जम्म कह ॥
 कवन पति हम लहँहि । लेष विचचार लहो इह ॥
 तब हंस उच्चर्यो । सुनिहि शशिवृत्ता नारी ॥
 चित्ररेष अपछरि । सगीन अति रूप धरारी ॥
 तिहि गरब इन्द्र सम कलह करि । क्रोध देवबडी सुरम ॥
 दच्छिन नरेस नृप तान बँधु । पुंज ग्रहै अवतार सुम ॥ छं० ७२ ॥
 हंस ने कहा कि पञ्ज अर्थात् काम्यकुब्ज नरेश के भतीजा वीरचन्द्र के साथ तुम्हारे मा बाप ने सगाई की है पर वह तुम्हारे योग्य बर नहीं है।

चौपाई—कहे हंस सुनि बाल विचारी । पग बधुर बीर स पुतारी ॥
 तिहि तु दई मातु पितु बंधं । सो तुम जोग नहो बर वध ॥ छं० ७३ ॥
 उसकी प्रायु एक ही वर्ष है, इस लिये दया करके राजा इन्द्र ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है।
 तेम रहे बर वरष इक्क महि । हय गय अनत झुझि है समतहि ॥
 तिहि चार करि तुमहि पै आयो । करि करुना यह इन्द्र पठायो ॥ छं० ७४ ॥
 शशिव्रता ने कहा कि तुमने मां बाप के समान स्नेह किया सो तुम जिससे कहो उसी से मैं ब्याह करूं।
 तब उच्चरिय बाल सम तेहं । तुम माता सम पिता सनेहं ॥
 मुझ सहाय अवरि को करिहो । पानि ग्रहन तुम चित अनुहरिहो ॥ छं० ७५ ॥
 हंस का कहना कि दिल्लीपति चौहान तुम्हारे योग्य बर है।

चौपाई—

तब बोल्थो दुजराज बिचारं । सुनि ससिवृत्त कथ इक सारं ॥
 दिल्ली वं चहुवान महा भर । सो तुम जोग चिन्तयो हम बर ॥ छं० ७६ ॥
 उसके सौ सरदार हैं, उसने गङ्गानीपति को पकड़कर दण्ड लेकर छोड़ दिया।
 सत सामंत सूर बलकारी । तिन सम जुद्ध मु देव बिचारी ॥
 जिन गहियो सर बर गजजन वै । हब गय मंडि छंडि पुनि हिय वै ॥ छं० ७७ ॥
 महाबली चालुक्य भीमदेव की जीता है। यह सुन शशिव्रता का प्रसन्न होकर कहना कि तुम जाओ और उन्हें लाओ जो वह न आबेंगे तो मैं शरीर छोड़ दूंगी।

गुज्जर वै चालुक भीमतर । ते दिन राति डरै जंगल घर ॥
बरन जोग तुम तेह विचारं । सुनि की मुंदरि हरष अपारं ॥ छं० ७४ ॥
तहां तुम पिता कृपा करि जाउ । दिल्ली वै अनुराग उपाउ ।
मांस षटह हों वृत्तह मंडों । थ्युना आवे ती तन छंडों ॥ छं० ७९ ॥
हंस वहां से उड़कर दिल्ली आया ।

तब उड़ि चलयो देह दिम उत्तगि । ढिग ससिबन रषि निज सुदरि ॥
जुगिनि पुर आयो दुजराज । सोबन देह नगं नग साजं ॥ छं० ८० ॥
बन में शिकार के समय हंस का आना उसे देखकर आश्चर्य में
आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना ।

कवित बय किसोर प्रथिराज । रम्य हा रम्य प्रकार ॥
सेत पष्य विय चंद । कला उदित तन मारं ॥
विपन मध्य चहुआन । हंस दिष्यो अप अषिय ॥
चरन भगग दुति होत । हेम पछ्छी वियलषिय ॥
आचिज्ज देषि प्रथिराज बर । घाइ न्रपति बर कर गहिय ॥
आपुब्ब दुज्ज गति त कथ । रहसि राज सों सब कहिय ॥ छं० ८१ ॥

दूहा विपन मध्य आचिज्ज इह । दिषिष राज प्रथिराज ॥
दूत दूत कलद्योत तन । हंस सरुप विराज ॥ छं० ८२ ॥
संध्या को हंस रूपी दूत का सबको हटाकर राजा को पत्र देना ।
संज्ञ सपत्ती न्रपति पै । दूत सु जह्व राइ ॥
बर कग्गद न्रप हृष्य दै । कहि श्रोतान बघाइ ॥ छं० ८३ ॥
दूत का कहना कि एकान्त में कहने की बात है । इतना
कहकर चुप हो जाना ।

कह्यो दूत मन अप्पनै । जो व्रनो विधि जोइ ॥
दोषु' जानि नन व्रनं बहि । न्रप श्रोतान न होइ ।' छं० ८४ ॥
चोपाई - अति सु मनह चिते परि मान । मानहु थके सिघ जल बांन ॥
दारुन श्रष्य एक सोइ जाइ । चितौ कहा सु अनह षाइ ॥ छं० ८५ ॥

दूहा - इह कहि बत्त ठठुक्कि रहि । उत्तर एक न आइ ॥
मानो उरग छछूदरी । कंठ लगावहि घाई ॥ छं० ८६ ॥
गाथा - मुष जंपी मन बत्तं । इतं जे नवाइ हिर पुछ ॥
बर चहुआन कमानं । किम जहों नभों नम नाउं ॥ छं० ८७ ॥

हंस का कहना कि शशिव्रता का गुण कहने को शारदा भी
समर्थ नहीं है ।

हुहा—इह अष्ठी चहुआन सों । नतो मार कहि आइ ॥

सुनिवेकों ससिवृत्त गुन । सारदऊ ललचाइ ॥ छं० ८८ ॥

चन्द्र और सूर्य के बीच में शशिव्रता ऐसी सुशोभित
है मानों शृङ्गार का सुमेर हो ।

राका अरु सूरज्ज विच । उदै अस्त दुहु बेर ॥

बर शशिवृत्ता सोभई । मनो शृङ्गार सुमेर ॥ छं० ८९ ॥

शशिव्रता के रूप का वर्णन ।

इन वै इन रूपह तरुनि । इन गुन आवै मान ॥

सो बर बर कविचंद कहि । सुनहु तो कहूँ प्रमान ॥ छं० ९० ॥

छंद त्रोटक -

बय संधिरु बाल प्रमान व्रनं । कहि त्रोटक छंद प्रमान सुनं ॥

बय स्यामज्जु शैशव अंकुरयं । अह अंत निसागम संकरयं ॥ छं० ९१ ॥

जल सैसव मुद्ध समान भयं । रवि बाल बहिक्रम लै अथयं^१ ॥

बरसै सब जोवन मधि अती । सु मिलें जनु पित्तह बाल जती ॥ छं० ९२ ॥

जुर ही लगि सै सब जुब्बनता^२ । सु मनो ससि रंतन राज^३ हिता ॥

जु चलै मुरि मारुत झकुरिता । सु मनो मुरबेस मुरी मुरिता ॥ छं० ९३ ॥

कलकंठ सु कंठय पंष अली । गुन जपि कवित्त सु चद बली ॥ छं० ४ ॥

कवित्त—ससिर अंत आवन बमन । बालह मैमव गम ॥

अलिन पंष कोकिल मुकंठ । सजि गुड मिलत भ्रम ॥

मुर मारुत मुरि चले । मुरे मुरि वैस प्रमानं ॥

तुछ कों परसिस फुट्टि । आन फिस्सोर रंगानं ॥

लीनी न अमि नक स्याम नन । मधुप मधुर धुनि धुनि करिय ॥

जानी न वयन आवन बमत । अग्याता जोवन अरिय ॥ छं० ९५ ॥

कवित्त—पत्त पुरातन झरिग । पन अंकुरिय उठु तुछ ॥

ज्यों मैमव उत्तरिय । चढ़िय मैमव किसोर कुछ ॥

सीतल^३ मंद मुगंध । आइ रिति राज अचानं ॥

रोम राइ अंकुच नितंव । तुच्छ सरसानं ॥

बढ़ै न सीत कटि छीन हूँ । लज्ज मान टंकनि फिरै ॥

ढकै न पत्त ढकै कहै । बन बसन मंत जु करै ॥ छं० ९६ ॥

१. मो०—अथमियं ।

२. मो०—रोष ।

★ मो०—सु लनो जनु शैशव योवनता ।

३. मो०—सीत ।

पृथ्वीराज का शशिव्रता का रूप सुनकर उसके मिलने की
 चिन्ता में रात दिन लगे रहना । सबेरे उठते ही
 राजा के दूत से पूछना ।

दूहा - श्रवण भव श्रोतान न्यप । मन बछे चहुआन ॥

मनु ससिवृत्त कुंआरि कौ । पर्यो उर द्वर बान ॥ छं० १७ ॥

कवित्त - निसि नरिद चहुआन । चित्त मनोरथ्य विवारै ॥

भई दीह सब निशा । निशा सयनंतर घारै ॥

सयनंतर ससिवृत्त । चाटु चटु बैन उचारै^१ ॥

चारु चाह बर बयन । मान माननि संभारै ॥

देवान मनोरथ चित्त बर । भव भव छन्नन कह करै ॥

भौ प्रात दूत पुच्छे न्यपति । जहोवै चित्त घरै ॥ छं० १८ ॥

हंस का राजा देवगिरि का जैन्व के यहाँ सगाई भेजने
 और शशिव्रता के पण ठानने का वृत्तान्त कहना ।

दूहा बर बंध्यो ससि वृत्त कौ । अरु न्यप भान कुंआर ॥

बँही दिन कमघज्ज के । नाम बीरबर भार ॥ छं० १९ ॥

ससिवृता वृत्त आइ है । बरु देख्यो बर कीन ॥

न्यप वै भान स्वयंबरह । एक ब्रत बर लीन ॥ छं० १०० ॥

जैत धंभ मंड्यो नृपति । बान हनन वृत्त लीन ॥

ता काजं दिसि दिसि नृपति । घर घर कगर दीन ॥ छं० १०१ ॥

इह अमंत^२ न्यप वर जिनै । कियो न मन्नें ताम ॥

दारुन वृत्त लीजै नही । इह कहि पूरि सु ठाम ॥ छं० १०२ ॥

इह मुनंत प्रस्थान दे । बर पचमि रवि वार^३ ॥

पच्छ चलाइ गवन्न मुनि । कानन बीरत^४ वार ॥ छं० १०३ ॥

दोऊ बाल पावक बनि । मुनि परि उठुह गात ॥

मानों त्रीय चनुई^५ शी । कै गशि उठिय प्रात ॥ छं० १०४ ॥

मुनि कै आसन उठि बर । कुंठत फिरत सु जोइ ॥

कत कंत के करत ही । कान भन क कुछु होई ॥ छं० १०५ ॥

बीर चंद जैचंद बंधु । देव पुंज कुअरि ॥

न्यप पठये चहुआन पे । दे शशिवृत्ता नारि ॥ छं० १०६ ॥

शशिव्रता की बिरह जल्पना का वर्णन ।

आगम बीर बसंत कौ । शिसिर संरते अंत ॥

प्रीतम पतन सु प्रीत कौ । देन बांह सो कंत ॥ छं० १०७ ॥

कवित्त—शशिर सु विद्युरत बन । वियोग विद्युरत बन कंते ॥
 दुहन आस रहि सास । कंत आयो न बसंते ॥
 उपवन पत्त झंझरिय । बिरह पंजर संझंझरि ॥
 आस अनहिन हुलसि । विपन हुलसै सु समंझरि ॥
 अनमेष जपत इच्छा सघन । आनंद उर भूषन तजै ॥
 दोऊन होइ कवि चंद कहि । असु रषिषरु घज सम सजै ॥छं०१०८॥
 शशिव्रता का चित्ररेषा के अथतार होने तथा पृथ्वीराज
 के पाने के लिये रात दिन शिश्र जी की पूजा
 करने का वर्णन ।

कवित्त—चित्र रेष बाला विचित्र । चंद्री चन्द्रानन ॥
 स्वर्ग मग उत्तरी । चित पुत्तरि परमानन' ॥
 काम वान सुंजुरी । बाल अंजुरी सु लच्छिय ॥
 मार कलह उत्तरी । पुंभ अच्छरी सु लच्छिय ॥
 लछिन बत्तीस लच्छी सहज । रति पति चित्त समंघरै ॥
 संग्रहै वृत्त चहुआन को । गवरि पुज्ज दिन प्रति करै ॥छं०१०९॥

दूहा बरनी जोग बरघ्न को । बर भुल्लै करतार ॥
 तिहि कारन दुंदुत फिरै । सत्त समुद्रह पार ॥ छं० ११० ॥
 वह आप अथ मिल गए बेर न कीजिएँ चलिए ।
 जा कारन दुंदुत फिरत । सो पायो दीलीस ॥
 अब जद्व ससिवृत्त चढ़िय । दीनी ईस जगीस ॥ छं० १११ ॥
 मैं महादेव जी की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूँ ।
 शिवा बानि शिव बचन करि । हो येठयो प्रति तुझ ॥
 कारन कुंअरि वृत्त को । मन कामन भय मुझ ॥ छं० ११२ ॥
 शशिव्रता के रूप गुण का वर्णन ।

सुभ लच्छ जद्व प्रिया । कचियै का सु विवेक ॥
 हंस कहै राजन सुनिय । उत्तिम लच्छिन केक ॥ छं० ११३ ॥
 काव्य-पीनो रूपीन उरजा, सम शशि बदना, पद्म पत्रायताष्टी ॥
 व्यंबोष्ठी तुंग नासा, गज गति गमना, दक्षिणा वृत्त नाभी ॥
 संस्निग्धा चारु केशी, मृदु प्रथु जघ्ना, वाम शृंग्या सु बेसी ॥
 हेमांगी कंति हेला, वर रुचि दसना, काम बाना कटाक्षी ॥छं०११४॥

पृष्ठीराज का पूछना कि तुम सब शास्त्र जानते हो तो
चार प्रकार की स्त्रियों के गुणादि का वर्णन करो ।

अरिल्ल -

मुनि प्रथिराज हंस फिरि पुच्छिय । तुम सब जान सु लच्छिन लच्छिय ॥
चारि जुगति त्रिया परकारं । कहू दुजराज सु लच्छिन सारं ॥ छं० ११५ ॥
हंस को बेर होने के भय से कोई बात अच्छी नहीं लगती ।

दूहा -- कही हंस जदो सु कथ । लगि श्रोतान सुराज ॥

छिनन हंस घीरज घरं । लगै बान सम साज ॥ छं० ११६ ॥

हंस कहता है कि स्त्रियों की बहुत जाति हैं पर
शशिव्रता पद्मिनी है ।

कहै हंस बर राज मुनि । अति अनेक है जाति ॥

पदमनि है जद्व कुंअरि । आंन तरुनि अनि भांति ॥ छं० ११७ ॥

राजा का उत्तम स्त्रियों का लक्षण पूछना ।

राज कहै दुजराज मुनि । करि बरनन कथि सोइ ॥

को लच्छिन उत्तिम त्रिया । कहियै सो सब जोइ ॥ छं० ११८ ॥

हंस का पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी, और संखिनी इन
चारों का नाम गिनाना ।

चारि जाति है त्रिय तन । पदमिनि हस्तिनि चित्र ॥

फुनि संखिनिय प्रम्भान इह । मन नह रंजिय मित्त ॥ छं० ११९ ॥

राजा का चारों के लक्षण पूछना ।

छंद पद्वरी -

मुनि हंस बैन उर लगी बत्त । विधिना लिषंत क्यों मिटे पत्त ॥

श्रोतान राग उर लगे राज । तन लगे बान समरह सु साज ॥ छं० १२० ॥

बुल्लस राज फिरि हंस बत्त । मुनि श्रवन बेंन मन भयी रत्त ॥

पुच्छनह राज सब त्रिय विवेक । उच्चर्यो हंस सा बत्त एक ॥ छं० १२१ ॥

तुम देव अंस जानी सु भेउ । हम कहन परम दुज लहै केउ ॥

लच्छिन प्रकार चत्र त्रिय त्रिवेक । करि बरन मुनावहु भांति नेक ॥ छं० १२२ ॥

हंस का लक्षण वर्णन करना ।

गाया—कहै विवेक सुहंस । त्रिय प्रकार चार लहि इंदं ॥

मुनि राजन सुभ वांती । आनंदे श्रवन मझ्जेनं ॥ छं० १२३ ॥

दूहा—तब दुजराज सु उच्चरिय, रे संभरि पुर इंद ॥

पदमिनि हस्तिनी चित्रिनी, संखिनि संषन नंद ॥ छं० १२४ ॥

स्त्रियों के उत्तम गुणों का वर्णन ।

अरिल्ल—रक्त जीभ मृग अंक सु लच्छिन वान इहि ॥

बचन सु अमृत धार रती रति जानं जिहि ॥

इला^१ सील कुल वाल छती छामोदरी ॥

इन गुन नृप भय चारु सु चारु जु संवरी ॥ छं० १२५ ॥

पद्मिनी का वर्णन ।

कवित्त - कुटिल केस पदमिनी । चक्र हस्तन तन सोभा ॥

स्निग्ध दंत सोभा विसाल । गंध पद्म आळोभा ॥

सुर समूह हंसी प्रमानं । निद्रा तुछ जंपै ॥

अल्प वाद मित काम । रत्त अभया भै कंपै ॥

धीरज्ज छिमा लच्छिन सहज । असन बसन चतुरंग गति ॥

आवंक लोइ लगै सहज । काम वान भूलंत रति ॥ छं० १२६ ॥

हस्तिनी का वर्णन ।

उद्धं केस हस्तिनी । वक्र अस्तन दसनं दुति ॥

मधुर गंध गरनाट । भुल्लि भ्रम काम वाम रति ॥

गूढ सवद मन जा । विषान रंगन छामोदरि ॥

चित्र नयन चंचल । विसाल बरनी जंमोदरि ॥

छिन रुदय हसय विहसय लहय । वसि चित्तह चित पुत्तलिय^१ ॥

नीवीय मान जानें बहुत । कंत चित्त जाइ न कलिय ॥ छं० १२७ ॥

चित्रिनी का वर्णन ।

दीर्घ केस चित्रिनी । चित्त हरनी चंद्रानन ॥

गंध अग चित्र निद्र । कोक शब्दन उच्चारन ॥

सील नील लज्जा प्रमानं । रत्ति भै भय घन मारै ॥

अलस नयन रस बलित । कलित कल वोल उचारै ॥

धीरज्ज छिमा छबि लोक करि । अवलोकन गुन औसरै ॥

विस्तीर्ण मंत्र मोहन पढै । चित्त वित्त कंतहु हरै ॥ छं० १२८ ॥

संधिनी का वर्णन ।

अल्प केस कुच मूल । धूल दंती उच्चारन ॥

धूल उदर लंकीस । धूल क्रिस लंगघ बारन ॥

घोर निद्र^२ तन तास । अल्प रसना रस छंडै ॥

अल्प सील गंभीर । सबद कलहंतर मंडै ॥

१. छं०-ए०-दली ।

२. मो०-कुत्तारिय ।

३. मो०-नीद ।

आचार धन नहि सुद मन । विधि विचार विभचार घन ॥
 आसंष संष संषिनि गुननि । मुष्ष नाह पावै न तन ॥ छं० १२९ ॥
 शशिप्रता के रूप तथा नक्षत्रिशोभा का वर्णन ।

दूहा - सुनी श्रवन चहुवांन बर । देवगिरि नृप भान ॥

रूप अनूप अनूप गति । कहि ओपम सुनि कान ॥ छं० १३० ॥

छंदनाराच- चढंत वेस सामयं । अरंभ ग्रेह कामयं ॥

उठति एहि हल्लिता । वियद्ध चंद्र चल्लिता ॥ छं० १३१ ॥

नषं सुरंग रंजनं । तरक्क दप्पं कंजनं ॥

हलंत पेंड रच्चयौ । अरुन्न नील कच्चयौ ॥ छं० १३२ ॥

रही सु कंति थावकं । चलंत हंस मावकं ॥

दो हंस अंग अंगुरी । उपंम काक विज्जुरी ॥ छं० १३३ ॥

मराल होइ मुक्कियं । चरंन चंपि लक्कियं ॥

सुरेष पिड मुष्मियं । अनंग अंग लुष्मियं ॥ छं० १३४ ॥

दीपंत जंघ पिडुरी । भराइ काम सुंठरी ॥

दुनी उपंम जंघ की । किघों उलट्टि रंभ की । छं० १३५ ॥

त्रितिय उपंम जंघरी । धराद काम की करी ॥

कनक्क षंभ रंभ सी । अनंग रंग रंग सी ॥ छं० १३६ ॥

नितंब तुंग मंडली । सयन्न काम की हली ॥

उतग भाग अग्रता । मनो तुलाकि दंडिता ॥ छं० १३७ ॥

छछीन हीन लंकयं । कमान काम अकयं ॥

सरोम राइ राजई । उपंम कच्चि साजई ॥ छं० १३८ ॥

मुमेर शृंग रुंदकै । चढै पशील चंद्र कै ॥

उपंम कच्चि ठट्टई । धनक्क मुद्धि चट्टई ॥ छं० १३९ ॥

थनं विपान थोरयी । अनग वान ओरयी ॥

सुरंम रोम बाल सी । जु केवलं प्रवाल सी ॥ छं० १४० ॥

उपंग चंद्र ग्रीव की । मनो अनंग सीव की ॥

दुती उपंग तं लहै । कपोत कंठ कंक है ॥ छं० १४१ ॥

चिबुक्क चारु बिद की । हरयी कलंक चंद्र की ॥

दसन्न जोति कामिनी । मनो दमक्क दामिनी ॥ छं० १४२ ॥

हसंत छच्चि में कही । सु लच्चि रंक ठंकही ॥

सुरंग ओठ अट्ट सी । सु अट्ट रेष चंद्र सी ॥ छं० १४३ ॥

१. ए० क० को०-त्रायकं ।

२. ए० छ० को०-नारयी ।

दसन्न चारु मानयं । प्रभात कै प्रमानयं ॥
 दिषंत जोति नासिका । सु गति कीर त्रासिका ॥ छं० १४४ ॥
 धुभी जराइ राजई । उपंम कठिव साजई ॥
 मनो तरकक बिछ्छुरे । मिलंत चंद उछ्छुरे ॥ छं० १४५ ॥
 तटंक कन्न राजई । उपंम ता समाजई ॥
 सुकाम बाम चाढिकै । घरे षरास बाढिकै ॥ छं० १४६ ॥
 सुमत्ति नास जीपकै । चुनंत कीर सीपकै ॥
 सुभाइ वंक नैन की । हरंत चित्त मैन की ॥ छं० १४७ ॥
 हलंत नैन भूव ले । घरंत चंद जूव ले ॥
 लिलाट आइ सौभई । अनंग धान लोभई ॥ छं० १४८ ॥
 सुरंग केस पासयं । सु मुत्ति मंडि भासयं ॥
 किरंत सूर साजकी । अहार दूध भास की ॥ छं० १४९ ॥
 त्रिषंड मंडयो गुही । उपंम काक विञ्जुही ॥
 सोवन्न षंभ दुस्तरि । उरग त्रीय उत्तरी ॥ छं० १५० ॥
 शृंगार भार भारियं । विलोकि काम पारियं ॥
 श्रवन्न मंडनं घरी । अनंग चित्त ही हरी ॥ छं० १५१ ॥
 विसाल बाल त्रिभरी । कबिद बुद्धि विरतरी ॥ छं० १५२ ॥

राजा का पूछना कि अक्सरा का अवतार क्यों हुआ ।

हुआ—जंपि राज दुज राज सम । तुम मति रूप अलोइ ॥

कवन काज अवतार इत । स य कही तुम मोइ ॥ १५३ ॥

हंस का त्रिवरण कहना ।

हंस कहै राजन्नमुनि । कहीं उतपत्ति त्रियेन ॥

सुनहु राज मन प्रमन होइ । त्रिवरि कहीं सब बेंन ॥ छं० १५४ ॥

इन्द्र और चित्ररेखा के झगड़ा तथा शाप का वर्णन ।

कवित्त - एक समै सुर ईस । अप्प पुर इन्द धान गय ॥

आगम देव मुनेव । नाग पति अति उछाह भय ॥

अरघ पाद करि धूम । करै मंगल अपुव्व सुर ॥

सुम आसन रजि रुद्र । करै घर सार वारि हर ॥

अस्तुत्ति करन लगौ सुरिद । तब प्रसन्न भय ईस प्रति ॥

उच्चरिय कूट जट इंद सों । सुभ दिष्यौ अच्छर नृपति ॥ छं० १५५ ॥

पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप इन्द्र का देना ।

रंभ धृताची मैन । मंजुबोषा सुरंग त्रिय ॥

उरबसि केसी नारि । तुरत तिल्लोत्तमानि पिय ॥

किय शृंगार सुंदरिय । आइ उम्भी सुर बामं ॥
देधि त्रिया मन प्रमुदि । हुआ मन उदित कामं ॥
अब सरस नृत्य कारनह कजि । जंत्र मृदंग^१ उपन्न सजि ॥
अस्तुति अनेक पढि घोष त्रिय । पहपंजुलि सुर इंद्र कजि ॥ छं० १५६ ॥
अनेक स्तुति करने पर शिव जी का प्रसन्न होना ।
तब सु कोप धरि ईस । दियो सुर थाप पतन धरि ॥
और रंभ किय नृत्य । सुबर अन्नेक विद्धि पर ॥
बहु त्रिवेक कल मान । ताल मडै त्रिगन मुर ।
रजि राज मुर ईम । दीन बर बानि रंभगुर ॥
अति प्रमुदि चित्त कैलाम पति । उभय देव आनंद हुआ ॥
सुभ सभा बिराजै राज मुर । सुबर प्रमोदिय मन सँभुअ ॥ छं० १५७ ॥
शिवजी का प्रमन्न होकर बर देना कि तेरा जन्म राजकुन
में होगा और ब्याह भी छत्रधारी से होगा । पर
तेरा हरन होगा और तेरे कारण घोर जुद्ध होगा ।
इहा - करि प्रसन्न मुर राज त्रिय । मुप अस्तुति मुर कीन ॥
बर बानी पुर इदकै । यह मुवाक्य सिव दीन ॥ छं० १५८ ॥
परै तुझ उत्तिम धरनि । पृथ्वी भमि नारिद ॥
दुअ पष्ठां मिर छत्रहै । करि सेना हर इद ॥ छं० १५९ ॥
बग्न ईम तें बर लहै । हरन होइ तुअ नारि ॥
कलह केनि भावन भवन । त्वै है जुद्ध अपार ॥ छं० १६० ॥
शिव की उसी बानी के अनुसार वह अपने
समान पति चाहती है ।
कही बानि कैलाम पति । मैनकेस मुनि नारि ॥
परस दोष भरतार सम । करत सु कील अपार ॥ छं० १६१ ॥
दिन पूरा होने पर उत्तम पति पाकर फिर अप्सरा योनि पावेगी ।
गाथा - तुछ दिन अंतर क्रमियं । आगम भरतार यंमि उद्ध लोकं ॥
फिरि अच्छरि अवतारं पांमै तुझ ईस बर बानी ॥ छं० १६२ ॥
शाप के पीछे शिव जी कैलास गए अप्सरा मृत्युलोक में
गिरी, वही जादब राज की कन्या शशिव्रता है
और तुम्हें उसने पति बरन किया है ।
कविन - ई सराय पुर नारि । अप्न करि ईस थान चलि ॥
धर अस्तुनि कर इंद्र । प्रमुदि अनि वर बानि फलि ॥

चलै थान कैलास । परी अच्छरी 'मृतं पुर ॥
जहव ग्रह त्रिय जाइ । उअर उप्पजी कुंअरि बर ॥
देवास थान तपि भान नूप । तिहि पुत्री ससिवृत कुंअरि ॥
सोई वाच रुद्र देवह सुत्रिय । तुअ कारन साथह उअरि ॥ छं० १६३ ॥

हंस कहता है कि इस अप्सररा का अवतार
तुम्हारे ही लिये हुआ है ।

दूहा- और सुबर संकेत 'सुनि । हंस कहै नर राज ॥
मैन केस अवतार इह । तुअ कारन 'कहि साज ॥ छं० १६४ ॥
हंस कहता है कि राजा जादव ने शशिव्रता को कान्य-
कुब्जेश्वर को व्याहना बिचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें
मन अर्पण कर शिव की आराधना की । शिव
की प्राज्ञा से मैं हंस रूप धर तुम्हारे
पास आया हूँ । शीघ्र चलो । राजा
का प्रस्तुत होना । बस
सहस्र सेना सजना ।

छंदवाधा हंस कहै नूप राज विचारं । जो पूछौ कारन कृत्यारं ॥
देव गिरि जहौं नूप भानं । ता पुत्री ससिवृत सुजानं ॥ १६५ ॥
सो मंगी कम घज्ज सुराजं । तिहि गुन सुनि चहुवानं मुताजं ॥
छडे तमि पित मान सुजान । बरन वृत्त लीनै चहुवानं ॥ छं० १६६ ॥
हर सेवा सुमंडय कलेसं । तप आचरन क्रम्म सदेम ॥
हौं गुन तास हंस भय रूप । पुछि त्रिय वारन रुनिय सु भूप ॥ छं० १६७ ॥
दील्ली वै अच्छे दृढ़ नेम । हो पठयौ सु तुझ प्रति प्रेम ॥
प्रसन ईस अंबिका समेनं । बुलयौ राज संल सनेत ॥ छं० १६८ ॥
चढ़न कहिय राजन सो हेमं । उड्डि चली दक्षिण तुम देम ॥
सुनत श्रवन चढ्यौ नूप राजं । कहि कहि दूत दुजन सिरताजं ॥ छं० १६९ ॥
भय अनुराग राज दिल्ली वै । दस सहस्र सज्जी नूप हेवै ॥ छं० १७० ॥
राजा का कहना कि जादव राजा के गुणों का अर्पण करो ।

गाथा- जंपै दुज सम राजं । तव गुन व्रन कीन अपारं
हम गुन किम संभरियं । लगे श्रोतान राग कि.व जहौं ॥ छं० १७१ ॥

हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना ।

दूहा— हंस कहै राजन्न सुनि । इह उतपति अनुराग ॥

श्रवन सुनी संभरि सु पदु । कहीं वृत्त संलाग ॥ छं० १७२ ॥

कवित्त— देवगिरि नृपभान । सोम वंसी सुतपं नृप ॥

तिन अनंत बल सेज । बहुल है गै पैदल तप ॥

नयर मध्य कोटीस । बसै बानिक्क अनंत लछि ॥

धर्म तप्पनह पार । न कोऊ दास रहै इछु ॥

सा एक लष्प पयदल पुलत । षग जोर धूनों वहै ॥

जद्व नरिद सब गुन कुसल । धन प्रताप दिन दिन लहै ॥ छं० १७३ ॥

उनके बेटे और बेटो के रूप गुण का वर्णन ।

तास पुत्र नारेन । पुत्रि ससिवृत्ता प्रमानं ॥

दुअ अनंत मूरत्ति । रूप मकरद सु जान ॥

भग्निनि भ्रात दुअ प्रीत । पिता माता प्रिय मानं ॥

अति उछाह रग रमै । असन इक ठाम प्रघानं ॥

सबरिष्य भई सत्रहऽरु दुअ । अति अभूत लच्छिन प्रबल ॥

लालित सरूप पिय चंद सम । राजकुंअरि राजै अतुल ॥ छं० १७४ ॥

एक आनन्वचन्द खत्री था उसकी बहिन चन्द्रिका कोट

में व्याही थी, वह विधवा हो गई और भाई

उसको अपने यहां ले आया ।

तिन राजन के मंत्र । नाम आनंद चंद भर ॥

तिन भगिनी चद्रिका । व्याह व्याही सु रुरि घरि ॥

नैर कोट हिस्सार । ताम षित्रीय प्रमथ बर ॥

अति सु प्रीति नर नारि । सुष्प अनुभव दीह पर ॥

कोइक दिवस भर तार वहि । तुच्छ दीह परलोक गत ॥

वानई बहनि फिर आप ग्रह । अति सु दुष्प निमि दिन करत ॥ छं० १७५ ॥

वह गान श्रावि विद्या में बड़ी प्रवीणा थी ।

दूहा— अति प्रवीन विद्या लहन । गान तान सुभ साज ॥

केइक दिन अंतर वहिग । गइ अंते बर राज ॥ छं० १७६ ॥

उसके पास श्राविप्रता विद्या पढ़ती थी ।

तिन संगह ससिवृत्त सुअ । पठन विद्य सुभ काज ॥

देवि कुंअरि अदभुत अवय रंजित है अति लाज ॥ छं० १७७ ॥

उसी के मुख से आपकी प्रशंसा सुन कर वह आप
पर मोहित हो गई है ।

कवित्त—अब षिन्न चंद्रिका । कहै गुन नित चहवान ॥
जेस पराक्रम राज । तेइ बरने दिन मानं ॥
राजकुंअरि जब सुनै । तबै उम्भरै रोम तन ॥
फिरि पुच्छै ससिवृत्त । सहि एकंत मत्त गुन ॥
जे जे सु पराक्रम राज किय । सोइ कहै षिन्न समथ ॥
श्रोतान राग लग्यो उअर । तो वृत्त लिनो सुनो सुकथ ॥छं०१३४ ॥
यों ही दो वर्ष बीत गए, बाल्यावस्था बीतने पर
काम की चटपटी लगी ।

झूहा—यों वरुष दुअ वित्ति गय । भइय बैस बर उंच ॥
तव कामन सु कनेव मुर । करे सेव मुवि मव ॥ छं० १३९ ॥
तभो से नित्य शिव की पूजा कर के वह तुम्हें मिलने की
प्रार्थना करती रही ।

हर मेवा निस प्रति करै^१ । मन वचा क्रम वंध ॥
बर चहुआन मु कामना । मेवा ईम मगंध ॥ १८० ॥

कवित्त— कहै हंस सुनि राज । करों ब्र नन मु कह्यो गुर ॥
दिवम च्यार प्रजत । ओर मो सरन लहो पर ॥
सेवत नित प्रति ईम । मास पंचह वित्तिय वर ॥
एक सुदिन सिव मिवा । ववन संपुट लगगी कर ॥
देवाधि देव सुनि ईस वर । करि सुचिन्न कूंअरि सु व्रत ॥
पारश्य रंड माली सरम । पर मंगा गवरी करत ॥ छं० १८१ ॥

झूहा—इह सुनि दस दिन गए बहि । सुनि रहि वचन सुईस ॥
एक सुदिन ससिवृत्त ने । किय द्रढ नेम जगीश ॥ छं० १८२ ॥
बर बरिहों मंअरि सु पहु । बियो पुरुष मुझ अत ॥
मिलन क्रिया हर माम प्रति । भविर्व संनर घात ॥ छं० १८३ ॥
शिव पारंबतो का असन्न हो कर सपने में बर बेना ।
बचन सिवा मित्र वाच दिया । पति पावै चहुआत ॥
बर प्रमुदिय प्रथमाधि पति । हुअ मुअनंतर मान ॥ छं० १८४ ॥
कै जानै मन अप्पनी । कै षिन्न कै ईस ॥
और शिवा सुनि ईस प्रति । किय अस्तुति वर दीस ॥ छं० १८५ ॥

प्रसन्न हो कर शिव पार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है
कि जयचन्द व्याहने ध्यावेगा सो तुम रुक्मिणी
हरण की भांति इसे हरण करो ।

कवित्त - हुआ प्रसन्न मिव सिवा । बोलि हूँ पठय तुझ प्रति ॥
इह वरनी तुम जोग । चंद जोसना वान वृत ॥
ज्यों रुक्मिनि हरि देव । प्रीति अति बढ़े प्रेम भर ॥
इह गुन हंम सरूप । नाम दुजराज भनिय चर^१ ॥
बुल्लिय सु पिता कमधज्ज नर । व्याहन पठयौ सुर गुर दुज ॥
आवे सु भ्रात जैचंद सुत । कमध पुंज व्याहन सुकज ॥छं०१८६॥
राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों व्याह
रचा और क्यों प्रोहित भेजा ।

दूहा - फिर राजन यों उच्चरिय । मुनि दुजराज मुजान ॥
पिता व्याह क्यों कर रचिय । क्यों प्रोहित पठवान ॥ छं० १८७ ॥
हंस का कहना कि राजा ने बहुत दूँदा पर बंध की इच्छा उसे
जयचन्द ही जंचा । वहां श्रीफल ले प्रोहित को भेजा ।

कवित्त कहै दुज सकल बांनि । अहो ठिल्ली नरेस मुनि ॥
देवगिरी जद्व नरेस । रचि बहु भाति व्याह गुनि ॥
अति रचना विधि करिय । तासु गुन कहि न सकों बर ॥
संषपक दुज कही । मुनि ह राजन कहै नर ॥
प्रोहित सुहन्य जदुनाथ लै । पठइय श्रीफल सुदिन धरि ॥
कनवज्ज दिमा इकमास प्रति । चलि^२ राजन गुर मिलि सुजुरि ॥
॥ छं० १८८ ॥

प्रोहित ने जयचन्द को जाकर श्रीफल और
वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया ।
मिले राज जयचंद । सु गुर प्रोहित समत्थं ॥
पठए जदव सुनाथ । वस्त श्रीफल सुभ सत्थं ॥
हय साकति सजि पंच । सहस इक वस्त्र पटंबर ॥
मुक्ति माल जुरि पंच । अवर जो वस्त व्याह पर ॥
हेमंग पंच सत लेइ दुज । सुर राजन अगै धरिय ॥
ते वस्त अनेकं बिधि सुबर । रंजि राज अप्पन सु जिय ॥छं०१८९॥

१. मो०-बर ।

२. मो० चलि राजगुर ।

टीका बेकर प्रोहित ने कहा कि साहे को बिन
थोड़ा है सो शीघ्र चलिए ।

मिलि प्रोहित जैचंद । दियो श्रीफल सुविद कर ॥
जे पठई बर वस्त । अग लै धरिय राज बर ॥
सोइ श्रीफल कमधज्ज । दियो सुइ अवघ पुंज नर ॥
अति उछाह माननिय । मिले रस हास परसपर ॥
बोलयो तब प्रोहित सुबर । अहो राज पंगुरन सुनि ॥
लै चलै बींद ननकरि १ बिलंबादिन तुच्छे साही सु पुनि ॥छं० १९०॥

प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तयारी और
उत्सव करने की आज्ञा देना ।

बूहा — हूँ प्रसन्न बहु पंगुरे । दियो हुफुक सुअ बंध ॥
प्ररि सयथ जब अप्प पर । अति पर घर सुअ नंध ॥ छं० १९१ ॥
सज्जि सेन चतुरंग नर । देवगिरि कज व्याह ॥
अति अगनित सथ द्रव्य लिय । नर उच्छव करनाह ॥ छं० १९२ ॥
हंस कहता है कि वह पचास सहस्र सेना और सात सहस्र
हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो । पृथ्वीराज
ने दस सहस्र सेना लेकर चलना-विचारा ।

छंद पद्वरी —

चढ़ि चलिय सब्ब रठोर सेन । उठि रेंन रथ्य रुक्किय मुगेन ॥
दस लष्य सेन सज्जिय कमंध । वारुनिय गंधद्रे सजि मदंध ॥ छं० १९३ ॥
सा अढ लष्य पै पुलिय नैर । हज्जार सात मंगल सु धैर ॥
दर कूच धरे बल वंस वीर । व्याहनह काज उच्छव मु वीर ॥ छं० १९४ ॥
कह हंस राज राजन सु वत्त । चढ़ि चलो कलू रष्यन सुकृत्य ॥
तुम योग नारि वरनो २ कुमारि । हूं पठय ईम नुअ वत्त नारि ॥ १९५ ॥
उन लियो वृत्त तुअ दूढ़ नेम । नन करि विरम्म राजने सु एम ॥
इक मास अवधि दुजकहै वत्त । व्याहन सु काज मन करी ३ रत्त ॥ छं० १९६ ॥
बर ईस भयो अरु सिवा बानि । सुख लहौ बहुत हम दुअ बषानि ॥
सुनि सुनि श्रवन अनुराग कौन । तन रोम अंग उम्भादि चीन्ह ॥ छं० १९७ ॥

१. मो०—विरम ।

२. मो०—वरि ।

३. मो०—हुंजारि ।

४. मो०—वत्त ।

दस सहस्र सेन सजि पास राज । चढ़नें सुचित करि बाज साज ॥छं० १२८॥

पृथ्वीराज का शशिवृता से मिलने के लिये संकेतस्थान पूछना ।

दूहा - कह संभारि बर हंम सुनि । कह जदों संकेत ॥

कोन थान हम मिलन है । कहन बीच संमेत ॥ छं० १२९ ॥

ब्राह्मण का संकेतस्थान बतलाना ।

गाथा - कह यह दुज संकेतं । हो राज्यं द घीर ढिन्लेसं ॥

तेरसि उज्जल माघे । व्याहन बरनीय थान हर सिद्धि ॥ छं० २०० ॥

राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊंगा ।

दूहा - तब राजन फिरि उच्चरै । हो देवस दुजराज ॥

जो संकेत सु हम कहिय । सो अष्ठी त्रिय काज ॥ छं० २०१ ॥

हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहाँ

अवश्य पहुँचिए ।

अरिल्ल—

सो अधिष्य हंम नेम सु दृढं । तुम अवस्य आवो प्रभु गढं ॥

सेन माघ त्रयोदसि सा वहि । हाहर सुकलेव थान मुति भावहि ॥ छं० २०२ ॥

इतनी वार्ता करके हंस का उड़ जाना ।

दूहा - इह कहि हंस सु उड़ि गयो । लग्यो राज श्रोतान ॥

छिन न हंस घीरज घरत । सुख जीवन दुख प्रान ॥ छं० २०३ ॥

दस हजार सेना सहिज पृथ्वीराज का तैयारी करना ।

दस सहस्र हेंवर चढिय । नम दिल्ली चहुआन ।

हुकम सद्दि साहन कियो । दे मूरन विलहान ॥ छं० २०४ ॥

राजा का सब सामंतों को हाथी घोड़े इत्यादि बाहन देना ।

छद भुजंगी -

दियो कन्ह चहुआन मानिकक बाजी । जिनें देशतें त्रितकी गति लाजी ॥

मुषंमझ्झ पायं कढै वाज राजं । मनो वग्ग भीषं कृतं कढिठ पाजं ॥ छं० २०५ ॥

दियो बाजि इंदं बरं जाम देवं । दिपै तेज ऐसै चिरं पंष एवं ॥

घरै पाइ ऐसे इलं मझ्झ जेसे । सुनै जैन ध्रमं घरै पाइ तेसे ॥ छं० २०६ ॥

चढ्यो राव कैमास विन्तं तुरंगी । रहै तेज पासं उछहंन अंगी ॥

१ चमककं नालें विसालं खुरंगी । मनो बीज छब्बी कि आभा अनंगी ॥ छं० २०७ ॥

उड़ै झार झारं पयं नाल झारी । समं बूद घावें मनो चार तारी ॥

चढ़े राजहंसं सु चाभंड १ जोटं । मनो तेज बंधी मुनी बाइ मोटं ॥ छं० २०८ ॥

डुलै 'कंन नाहीं सिलीका सुग्रीव । मनो जोति बंधी 'सुनवातदीव' ॥
 चढ्यो राज धीची प्रसंगं पहापा । उडै वास ज्यो वाय 'वगै अनूपा छं०२०९॥
 बंध चौर चित्तं चमककंत चाहं । हरद्वार छुट्टै कि गंगा प्रवाहं ॥
 चढ्यो राज पट्टं अजानंत बाहं । कही कब्बिगजं उपम्माति चाहं ॥छं०२१०॥
 दियै 'बीच तारी कोई नाहि पुज्जै । बलं ताहि दिष्वै सरित्ता अमुझै ॥
 दियोमृगराजं चढ्यो देवराजी॥उडै पंखि पाजी रही पच्छ लाजी ॥छं०२११॥
 चढ्यो निड्डुरं राइ अंगं अभंगं । छुट्टै जानि तारान के व्योम मगं ॥
 चढ्यो हाहुली राइ जंबू नरिदं । बढ्यो बांन ज्यो तेजकम्मान चंदं॥छं०२१२॥
 चढ्यो लंगरी राव लंगा सुबीरं । किधो वाय बढ्यो बुअं जानि धीरं ॥
 चढ्यो राज गोइंद आहुठु राजं । किधो वाय बुंदं स छुट्टीय साजं ॥छं०२१३॥
 चढ्यो राव लष्वं सु लष्वं पवारं । भ्रमें अंग ऐसे उपम्मा विचारं ॥
 किधो अगि दंडं ब्रजं बाल फेरं । किधो भोर हृथं किधो चक्र हरं ॥छं०२१४॥
 किधो राति बोहिष्य भ्रमि भोर नारं । कही चंद कब्बी उपमाति चारं ॥
 चढ्यो चंद पंडीर राजीव नामं । तिनं 'ओपमा चंद देषी विरामं ॥छं०२१५॥
 जिनें गति जीती सयन्नं पगारं । चली अंषि के पंष चित्त बघारं ॥
 चढ्यो अत्त ताई उतंगं तुरंगा । मनो बीज की गति आभा अनंगा ॥छं०२१६॥
 चढ्यो राव रामं 'रघुवंस वीरं । गति सूर जिनी मृगं चंद भीरं ॥
 चढ्यो दाहिनंदेवनर सिंध कैसे।मनो चित्तकी अर्थ की गति जैसे ॥छं०२१७॥
 चढ्यो भोज राजं पहारं त्रिनेतं । फुट्टै सद् तेजं अवाजं 'त्रितेतं ॥
 चढ्यो वीर जोदं कनककं कुमारं । चली कृत्य पूरन्न आचार पारं ॥छं०२१८॥
 चढ्यो राव पज्जून कूरंभ वीरं । बढे लोह अगं धनं जैतपूरं ॥
 चढ्यो सामलो सूर सारंग ताजी । गही होइ बंधी वयं वाम पाजी ॥छं०२१९॥
 चढ्यो अल्हनं बीर बंधव्व पानं । चढ्यो दान ज्यो ग्रहनं जुद्ध वानं ॥
 चढ्यो लष्व लष्वी सलष्वं बघेला । बढ्योनेत ज्यो देह देष सु हेला ॥छं०२२०॥
 चढे सब्ब सामंत छल बलत वीरं । मनो भान छुट्टी 'किरनी कि तीरं ॥
 चढ्यो बाज राजं प्रधीराज राजं।तबै पष्वर्यो बाज साकत्ति साजं॥छं०२२१॥
 उडै सूर ज्यो हंस तुट्टै कमधं । बरं ओपमा चंद जंपी कविदं ॥
 द्रुमं ज्यो मरोरै 'शिरंस्वामि हेतं । मयूरंकलाबाज रची बंधि नेतं ॥छं०२२२॥

१ ए०-कंन ।

२. ए०-सुनि बात ।

३. मो०-वेगै ।

४. मो०-वाच ।

५. मो०-उपमा ।

६. मो०-रघोवंस ।

७. मो०-त्रिनेतं ।

८. मो०-किरनी ।

९. ए०-धिरं ।

चढ़े सब्ब सामंत सामंत बीरं । तबै जगियं जानि जोगाधिधीरं ॥
 जगी जोग माया सृ जगगीय थानं । प्रलीनं प्रलीं ज्यों प्रलीन प्रमानं । छं० २२३ ॥
 जगें बीर बीराधि डोरुं बजावै । नचै नहू नंदी त्रिघाई त्रिघावै ॥ छं० २२४ ॥

माघ बढी पञ्चमी शुक्रवार को पृथ्वीराज का यात्रा करना ।

दूहा —^१ आगम निगम जानि कै । चलि चप सुक्रवार ॥

माह वहि पंचमि दिवम । चढ़ि चलिये नुर तार ॥ छं० २२५ ॥

चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना ।

छंद त्रोटक - कवि चंद सु व्रंनन राज करं । सोइ त्रोटक छंद प्रमान घरं ॥
 जिहि च्यार परे सगना सगनं । सुभ अचिछर लाइ तजै अगनं ॥ छं० २२६ ॥

विवहार धरै बरन सु बरं । पढ़ि पिंगल बाहन केन हरं ॥

वर चोजन चार सुरंग इलं । तहां झौर न मोर सुरंग हूलं ॥ छं० २२७ ॥

गज उप्पर ढाल ढलविक तरं । सुकहों तहां केलि^२ अचिज्ज बरं ॥

तहा पल्लव लल्लित रत्त वचं । तहां जे घन दंतिय पंति रचं ॥ छं० २२८ ॥

झमकै बर नंग भयूप कसी । निकमी तहा केतक सी विकमी ॥

सु चलै बर मंद सुगंध प्रकार । बढी दिमि दस्म मु उज्जल मार ॥ छं० २२९ ॥

बजै महु रंग सु गंधन भ्रंग । बजे सहनाइ न फेरि^३ उपंग ॥

हल बर लत्त पवन्न झकोर । घरघर होहि पिलपित जोर ॥ छं० २३० ॥

बुलै कल कंठ मु कंठह सह । तहां चढ़ कवि वसीठ उवह ॥

सनेम कुसंम रु अंकुस पानि । हुने हर काम असो गज जानि ॥ छं० २३१ ॥

अतमी बर पुपफ मु वाढ़हि भृंग । बजै गज पानि सु इंदुब रंग ॥

लता ललितह हलावन ढाल । उतह जम लगय रगतिताल ॥ छं० २३२ ॥

विकामित केसर^४ कुंकुम काम । सरोज मूरंभ अनूपम नाम ॥

उहा मिटि ताल तरंगिनि काम । उहा चलितेनिय ना तिहि ठाम ॥ छं० २३३ ॥

उहा बरहा जनु उप्परि केल । किने तब ढीठ हिया छबि मेल ॥

हले जनु नेजे षजूर बसंत । ढली बन राह मुढालह मंत्र ॥ छं० २३४ ॥

तजी बर बाल सुरंग सुभेस । चल्यो प्रथिराज सु दषिषन देस ॥

विरदै चहु विप्र कहै कविचंद । सही चहुआन प्रथी पर इंद ॥ छं० २३५ ॥

दूहा चढ़ि चलिय प्रथिराज बर । देवगिरिधर राज ।

तव सुकन्ह बरदाय बर । पुच्छिय बिगत सुकाज ॥ छं० २३६ ॥

१ ए०—अगम निरागम ।

२ मो०—अचिज्ज ।

३. मो—ललित ।

४. ए०—उत्तम ।

५. मो०—गिन ।

६. ए०—कुंकुम ।

७. मो०—सरूप ।

कहत कन्ह बरदाय बर । अहो राज सुभ मानि ॥
कही पथान सज्यो कहां । सोहम कहो प्रमान ॥ छं० २३७ ॥

चलने के समय राजा को भय दिलाने वाले शकुनों का होना ।

कवित्त - चढ़त राज प्रथिराज । सगुन भै भीत उपन्नो ॥
स्यांम अंग तन छिद्र । कलस सं ३हं सपन्नो ॥
रत्त वस्त्र आरुह्य । रत्त तिलकावलि छुट्टिय ॥
मुकत माल छुट्टियं । केस छुट्टिय कस तुट्टिय ॥
लुट्टिय अनंग भय भीत गति । मन अलुम्भ निद्रा असति ॥
विभ्रभाइ भाइ उनमोद पति । मंद मंद सक्रति हसति ॥ छं० २३८ ॥

राजा का इन शकुनों का फल चन्द से पूछना ।

अरिल्ल-सो भय भीत देषि कवि पुच्छिया जंपि कही मति मोहि सु अच्छिया ॥
तुम सब जान निमान प्रमानं । जंपि कही कविराज सुजानं ॥ छं० २३९ ॥
चन्द का कहना कि इस शकुन का फल यह होगा कि या तो कोई
झगड़ा होगा या ग्रहबिच्छेद ।

बूहा - पाछे बीर सगुन्न भय । ते कहंत कविचंद ॥

कै दंदगेनय ऊपजै । कै नवीन ग्रह दंद ॥ छं० २४० ॥

चन्द ने राजा को जंचन्द के पूर्व बर स्मरण दिलाकर कहा कि
इस काम में हाथ देना मानों बंठे बंठाए भारी शत्रु को जगाना है ।

कवित्त सीस डोलि कविचंद । चित्त अंदेह उपन्नो ॥

पुढब बर चहुआन । बर कमधज्ज दिपन्नो ॥

सवर जोर मंग्राम । निबर अंगम्यो न जाइय ॥

को जम हृष्य पसारि । लेह ग्रह अप्प बुलाइय ।

मंडाय पेट डंकिन सरसि । कीन बांह सायर तिरै ॥

असगुन जानि चहुआन चलाइ विधान निमित्त करै ॥ छं० २४१ ॥

वय, पराक्रम, राज और काम मद से मस्त राजा ने कुछ ध्यान न
दिया और वक्षिण की ओर शीघ्रता से बहू चला ।

कवित्त - बेस मद् बल मद् । और बंध्यो सुरतानी ॥

राज मद् उनमद् । काम मद्ह परिमानी ॥

अरु श्रवनी श्रीतान । तीन बंध्यो चहुआनं ॥

दल बहल पावस्स । चलयो बछिन घर वानं ॥

'छतीस कुली बर वंस विय । चढ़ि प्रथिराज नरिद चलि ॥

उपवन्न बंब बज्जी बिषम । खान धान द्विगपाल हलि ॥छं०२४२॥

पृथ्वीराज से पहिले जंचन्द का देवगिरि पहुँचना ।

दूहा - इन अगों कमधज्ज लै । आइ संतो थान ॥

माघ नवमि त्रंबक बजै । चहुआना परिमान ॥ छं० २४३ ॥

जंचन्द के साथ की एक लाख दस हजार सेना का घर्षन ।

जंचन्द का घाना सुन शशिवृता का दुखी होना ।

कवित्त - 'एक लष्व दस अग । सेन सज्जे कमधज्जं ॥

बीय सहस बारुभ । सत्त हज्जार फवज्जं ॥

अद्ध लष्व पैदल्ल । अद्ध साइक वहंतं ॥

सजि समूह चतुरंग । दिसा दछिन 'परजंतं ॥

सुनि श्रवन कुंअरि शशिवृत्त लिय । सुनि अवाज बर बीर घन ।

चहुआन वृत्त लीनी अधम । प्रान हीन कद्धन सुमन ॥छं०२४४॥

शशिवृता मन ही मन देवताओं को मनाती है कि मेरा

धर्म न जाय और उसका प्राण देने को प्रस्तुत होना ।

दूहा - मिलि पूजै बर बीर कौ । करी भगति घन भाइ ॥

बाला प्रान 'सुकद्धनह । अंतर धम्म न जाइ ॥ छं० २४५ ॥

सखी का समझाना कि व्यर्थ प्राण न दे, देख ईश्वर क्या करता

है । ईश्वरी लीला कोई नहीं जानता । सखियों का श्रीरामचन्द्र,

पाण्डव आदि के प्राचीन इतिहास सुनाकर धीरज धराना ।

"कहै सषी समझाइ कर । पुढब कथा कहु मडि ॥

घरी अद्ध जो सुनिहि तुअ । प्रान बाल नन छडि ॥ छं० २४६ ॥

छद् पद्वरी - मिलि बाल ताहि रचि कहै बन । संग्रहन भवन क्यों मिटे पत्त ॥

देवान बत जानै न कोइ । लिष्वे जु अंरु मिट्टय न सोइ ॥ छं० २४७ ॥

बल बीर जुद्ध पंडव नरेश । बन ग्रह्यौ राज मुक्कघी सुदेश ॥

'जिप्पनह सब्व दृगपाल जोग । संध्यो सुजोग तजि राज भोग ॥ छं०२४८ ॥

बलि राइ जग्य आरंभ सत्य । जित्तनह इंद्र आरंभ पत्त ॥

मुक्किध सुयान तिन मान षंडि । सेवह सुदेव पाताल मंडि ॥ छं० २४९ ॥

कट्टन कलक शशि जग्य कीन । का कुष्ट अंग छिन मान हीन ॥

नधु राइ कीन राज सु अनूर । का कुष्ट काल संद्र्यौ कूप ॥ छं० २५० ॥

१. मो०-छतीस ।

२. ए० छ० को०-एह ।

३. ए० छ० को०-परजंतं ।

४. मो०-कद्धतह ।

५. मो०-कही ।

६. मो०-जिप्पनह ।

श्रीराम हृष्य पकर्यो प्रवीन । आरन्य बहुत दुष सीय कीन ॥
 गुरुदेव त्रिया तारा प्रमान । शकशोरि परी देवन समान ॥ छं० २५१ ॥
 सिय लई निशाचर रूप चीह्न । मिलि देव जुद्ध आरंभ कीन ॥
 भातम्म घात 'मंडी विशाल । पावै न सुष्प वे भ्रमें काल ॥ छं० २५२ ॥
 तिय मात तात बंधह सु देहि । बाला विचित्र ते वृत्त लेहि ॥
 कुल जाहि ध्रंम ग्रह राजनीति । जैमंडहि बाल गुर जनन जीति ॥ छं० २५३ ॥
 शशिवृत्त जु वक्तिय मत्ति मानि । हित काज मत्ति हम दै प्रमान ॥
 पंषी न पच्छि को लगै धाइ । आवै न वृत्त पै जंम जाइ ॥ छं० २५४ ॥
 आवै न मेह ग्रह लगै अगिग । पावै न जीव को दान मगिग ॥
 मानै न विनति तिन मंत सुझ्म । जनु कान हीन गुर कही गुझ्म ॥ छं० २५५ ॥
 मनै न बाल उर मत्त मान । चित्यो सुतात कदढन परान ॥ छं० २५६ ॥
 चौपाई—मिलि बाल रचावै बाले । तन मनमने न चित व्रत साले ॥
 बहुत करे सिंगार सार । मनो मृतक नव रंग न धार ॥ छं० २५७ ॥
 छंद पदरी—राजन अनक पुत्री त्ति व्याह । शशिवृत्त देव कन्या सिवाह ॥
 चहुआन चित जुगिन 'पुरेस । आवृत्त बीर जिन करहु भेस ॥ छं० २५८ ॥
 निब्वरै बाद जो करी मंत्र । साधम्म वीर कदढै जु कंत ॥ छं० २५९ ॥
 राजा का पृथ्वीराज के प्राने और शशिवृता के प्रेम का समाचार
 जानकर हंमीर संमीर (?) से मत पूछने लगा ।

डूहा—कंति कंति प्रति बद्धई । चढ़ै चाइ चहुआन ॥

मो पुच्छै प्रति तान जो । बीर चंद दै दान ॥

हंमीर संमीर का मत वेना कि बीर चन्द को कन्यादान दीजिए ।

गाथा—बीरं चंद सुदानं । पानं विधाय नित्तयो गुरयं ॥

बुल्लै नृप हंमीरं । साइ संमीरं साइ मंगायं ॥ छं० २६१ ॥

डूहा—जे हंमीर संमीर गति । समुह सु दुज्जन भेव ॥

जिन बड़वानल कुप्पयो । सार मत्ति प्रति सेव ॥ छं० २६२ ॥

सार भार संसार कौ । नव निधि नव प्रति पान ॥

व्याह वीर शशिवृत्त कौ । अप दीजै प्रति दान ॥ छं० २६३ ॥

कन्या के प्राण देने के विचार और शकुन विचार से राजा भानु
 ने चपचाप पृथ्वीराज के पास बूत भेजा ।

बाल प्रान कदढत सुपुनि । सगुन एक मन मान ॥

बढि अवाज चहुआन की । अली मुन्यो अप काम ॥ छं० २६४ ॥

यों सु सुनिय नप भान नैं । पुत्रि प्रलय व्रत कीन ॥
चर पिण्डिय चहुआन पै । जह्व 'मोकल दीन ॥ छं० २६५ ॥
राजा ने पत्र में लिखा कि शिव पूजा के बहाने शिवाले में तुम
को शशिवृता मिलेगी ।

मुक्काए मति वंतिनी । नप कग्गद दे हृष्य ॥
पूजा मिसि बाला मुमर । संभु थान मिलि तथ्य ॥ छं० २६६ ॥
इधर पृथ्वीराज के सरदारों का उत्साहित होना ।

कवित्त—हय गय दल चनुरंग । कंरु मंड्योति कन्ह सिर ॥
राजह्व वग्गरी । राम रघुवंम जुद्ध जुर ॥
निडुर रा रठौर । सेन मज्जे भ्रत रज्जे ॥
एक एक मंपज्ज । एक एकन गुन लज्जे ॥
जुगिगनि डहकि बंबरि लसथ । जिम जिम शंकर सिर 'धुनिय ॥
अत ताइ उन उत्तंग बर । बावारो सारह 'मुनिय ॥ छं० २६७ ॥
कवि कहता है गन्धर्व व्याह शूरवीर ही करते हैं ।

गाथा—सार प्रहारति भेवो । देवो देवत्त जुद्धयो बलयं ॥
गंधर्वी प्रति व्याहं । सा व्याहं सूर कलयामं ॥ छं० २६८ ॥
पृथ्वीराज का धाना सुनकर मन ही मन राजा भान का
प्रसन्न होना, परन्तु बीरबन्ध का सशंकित होना ।

कवित्त—मन 'सद्धि संभुहिय । भान आवाज राज सुनि ॥
भान लद्धि जो मद्धि । लाज लम्भी जु सूर धुनि ॥
प्रिय विरहिनि रिधि रंक । कै ध्यान लम्भे जोगिंदं ॥
बलह काम कलहंत । कि कह विश्वासत इदं ॥
संभरिय कान संभरि नृपति । बीर चंद आगम विप्रम ॥
निह काल काल भंजन गढ़े । बड़े सार सारह विभ्रम ॥ छं० २६९ ॥

इहा—मार धार पूजे नहे । पिति सामंत न नाथ ॥
आवृत्त बीर क्यों पूजई । देव देवतह साथ ॥ छं० २७० ॥

गाथा—दुख वंस अंम सरिसं । बज्रं बाहु बलयो बलयं ॥
बज्रं दुष्टिंति रिष्टं । सानिष्टं अष्टयो किलयं ॥ छं० २७१ ॥

अरिल्ल—बर बरिष्ट बर लोभ प्रकार । लष्व लष्व सा मंतह सार ॥
तिन बर बर अंगम प्रति जानिय । सो देवत देवतइ मानिया ॥ छं० २७२ ॥

१. ए० क० को०—छिप्य ।

२. मो०—कलि ।

३. मो०—अनुय ।

४. मो०—मुनय ।

५. कलयामि ।

६. मो०—मध्य ।

कवित्त—अति प्रचंड बलवंड । वीर ^१बाहुरू तत्ताइय ।

माया हीन मसंद । दंड दारुन डर नाइय ॥

दल दुंदन सिंधु रहि । बाहु दंतन उष्पारहि ॥

एक एक संग्रहै । एक शस्त्र करि डारहि ॥

दैवत्त बाहु दैवत्त भर । देवगिरि संम्हो चलिय ॥

बर बीर धीर साधन सकल । अकल महरति मति कलिय ॥ छं० २७३ ॥

दूहा—अकल बीर रस अफल भुज । कलि न जाहि सामंत ॥

भीम भयानक बल सु वृत । जे भंजै गज दंत ॥ छं० २७४ ॥

^१लभ्मै जस लिष्वीय बर । दैव जोग नह ^२हृथ्य ॥

पुब्ब दई प्रथिराज कौ । सोइ प्रन मन समरथ्य ॥ छं० २७५ ॥

चाहुआन के कृत सयन । मरन सरन प्रथिराज ॥

उभै सिध दुअ बीध पल । उभै सिध सिर ताज ॥ छं० २७६ ॥

गाथा—घटिका उभय सु देवो । रहियं निकट राजनं ग्रामं ॥

जानिज्जै नृप नैरं । दिष्य न कार्जैव सोभियं नैनं ॥ छं० २७७ ॥

दूहा—रंध्र गवष्वनि नैर मधि । जारि न बित प्रमान ॥

मानहु नृप प्रथिराज कौ । रंध्र नैन ^३प्रत प्रान ॥ छं० २७८ ॥

पृष्ठीराज का नगर में होकर निकलना, स्त्रियों का

शरीरों से देखना, शशिवृता का प्रसन्न होना ।

कवित्त—दुहं पास नृप नयर । राजा दिष्ये प्रति राजं ॥

मनों हृथ्य बर नयर । राज संगुह प्रति साजं ॥

कोट कठिन मेखल सु । कटि द्रिग पलक उधारिय ॥

राज कित्ति सभरन । गोष श्रवनन संभारिय ॥

किकिन सुपाइ घंघर सु गज । राज निसान सबद् प्रति ॥

चहुआन राव आगम सु व्रत । कमल हीय बद्धिय मुरति ॥ छं० २७९ ॥

राजा भान के हृदय में पृष्ठीराज का आना सुनकर

हर्ष शोक साथ ही उदय हुआ ।

दूहा—काम कलह रत बद्धि प्रति । सुनिय भान नृप कान ॥

आनंदह दुष उप्पज्यौ । मरन सु निभय मान ॥ छं० २८० ॥

श्लोक—मंगलस्य सदा व्याहं । अव्याहं सु मंगलं ॥

ब्रह्मा चकितं समो दृष्टे । ^४जेक कंज सु कंजसि ॥ छं० २८१ ॥

१. सो०—बाहुरू तगाइय ।

२. सो०—लभै सुअस लिष्वंत बर ।

३. सो०—नन ।

४. सो०—सजि ।

५. सो०—कंजे कंज सुहं कजसि ।

पृथ्वीराज की सेना का उमङ्ग के साथ नगर में घूमना ।

कवित्त - फिरिंग पंति बिहु पास । सूर उम्भी चाव हिसि ॥

अतित जुद्ध आवद्ध । मत्त वरषंत बीर असि ॥

और व्याह मंगलह । व्याह मंगल अत्रिकारिय ॥

परि पिशाव दानव । सु बुधि मगह विच्चारिय ॥

नन करहु तात दुष पुत्त को । घर लीनी जम मद्कें ॥

प्रथिराज राज राजन बलिय । को पुज्जै रन बहिकें ॥ छं०-८२ ॥

डूहा - को पुज्जै बद्ध ३सुरन । बयन सयन प्रथिराज ॥

अवत जित्ति जित्तिय सयल । ३को मंडै कृत काज ॥ छं० २८३ ॥

गाथा - को मंडै कृत काजं । साजं जुद्धय सूर योवनं ॥

तारिज्जै सजि राजं । बकिम भूमायं विषमयं होई ॥ छं० २८४ ॥

देवालय में शिव पूजा के लिये शशिवृता का जाना । पृथ्वीराज का वहाँ पहुँचना ।

देवालय भगवती । पूजैवं पूजयो बालं ॥

सुबर पुछ्यौ प्रथिराजं । कुज संसा बीरयो हृथ्यं ॥ छं० २८५ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ।

डूहा - विषम ठौर बंकम विषम । कल सोभित वृत कद ॥

जो प्रथिराजह अग मे । मनो प्रथी पुर इद ॥ छं० २८६ ॥

मनो राज पृथ्वी पुरह । घनि सुध्रम्म लवलेस ॥

मानहु बीर नरिद को । रति आयो अविशेश ॥ छं० २८७ ॥

सखी का शशिवृता से कहना कि तू जिसका ध्यान करती थी वह आ गया, देख ।

यों करंत १ दुत्तिय बियौ । ३था श्रवन सुनि मंत ॥

जाकों तें पतिवृत्त ३लिय । सो आयो अलि कत ॥ छं० २८८ ॥

शशिवृता का घ्रांस उठाकर देखना । दोनों की घ्रांसे मिलना ।

श्रवन नयन का मेल कै । भय चंचल चल चित्त ॥

श्रोताने दिष्टान अरु । मिलि पुच्छै ३दोइ मित्त ॥ छं० २८९ ॥

१. १० हं० को०-वरषभ ।

२. १० हं० को०-नर ।

३. मो०-मंडै को ।

४. मो०-सोभन ।

५. मो०-दुद्धिय ।

६. मो०-लियौ ।

७. मो० दोय ।

मारे लाज के कुछ बोल न सकी पर नैन की सैन
से ही बात हो गई ।

चंद्रायना — कर्न प्रयंत कटाछ सुरंग बिराजही ।

कछु पुच्छन कों जाहिपै पुच्छत लाजही ॥

नैन सैन में बात स्रबनन सो कहै ॥

काम किधों प्रथिराज भेद करिना लहै ॥ छं० २९० ॥

नैन श्रवण का संवाद ।

दूहा — नैन श्रवणन पुछई । तुम जानें बहु भंत ॥

मेरे जीय अंदेस है । कही न मैं पिय जंत ॥ छं० २९१ ॥

श्रवणन सन नैना कही । 'तुम जानी चहुआन ॥

काम नृपति कौ रूप धरि । आवत है इन थान ॥ छं० २९२ ॥

हंस ने पहुँचकर शशिवृता से कहा कि ले पृथ्वीराज शिवालय
में तुझ से मिलने आ गया ।

ताम हंस आयी समधि । कही अहो शशिवृत् ॥

चाहुआन आयी प्रछन । मिलन थान हर सित्त ॥ छं० २९३ ॥

कवित्त —^१ धरि गांम जद्व नरिद । उभे विहु पासं ॥

एक नंषिय रंभा मु । करन आरंभ प्रवास ॥

एक एक गुन करहि । सब्ब फूले सत पत्रं ॥

तिनु मध्यह शशिवृत् । भई कम्मोदनि मंत्रं ॥

^२ गित पुच्छि पुच्छि परिवार सब । पुच्छि बंध रज्जन सकल ॥

आवृत् तात अग्या सुग्रहि । भईय बाल बुध्या विकल ॥ छं० २९४ ॥

दूहा — विकल बाल जहं सकल हुआ । बुद्धि विकल प्रति साज ॥

^३ भान वचन सच्चै सुकरि । जिन अप्पी प्रथिराज ॥ छं० २९० ॥

गाथा — बीरं चंद सुव्याहं । सो व्याहं जोगिनीपुरयं ॥

संभरि क्रन शशिवृत् । अगम बीराइमं जनंत तयी ॥ २५१ ॥

माता पिता की आज्ञा ले शशिवृता का देवालय में जाना ।

कवित्त — पुच्छि मात पित पुच्छि । पुच्छि परिवार ग्रह सब ॥

में वृत् लियौ निवद । गवरि पुज्जन बाल जब ॥

तिन थानक सब देव । नीति आरंभ व्रत लीनी ॥

तब प्रसाद उप्पनौ । मोहि इच्छा व्रत दीनी ॥

तिन काल व्रत लीनी समै । गवरि प्रसाद सु पुञ्ज फल ॥

बारंज बात तुभ मोह हुआ कहै और अब लहि 'अफल ॥ छं० २९७ ॥

दूहा—दुष देवल की छंडनह । उर सिचन अंकूर ॥

दीह काल बल वीचि बदि । लिय समान मंपूर ॥ छं० २९८ ॥

शशिवृता के रूप का वर्णन ।

बाला बेनी छोरि करि । छूट्टे चिहर सुभाइ ॥

कनक थंभ ते ऊतरी । उरग सुता दरसाइ ॥ छं० २९९ ॥

कबित्त—तजि भूखन बर बाल । एक आविज्ज उपपौ ॥

लता हेम पर चंद । उभै षजन ढिग चिन्हौ ॥

श्रीफल उरज विमाल । बाववर भ्रग सुपत्ती ॥

सुकि मुत रग अरन्नि । करी भग्गावल वत्ती ॥

सोभंत उरगपति भुअ शरन । हम मुनि चर बर करी ॥

सुध काज चढै पप्पील सुन । काम पनिनी दुख डरी ॥ छं० ३०० ॥

बस बासियों के साथ शशिवृता का शिवालय में आना ।

दूहा—ते दासी दस बाल ढिग । तिग बरने कवि चद ॥

तिन में बाल सुमोभियै । मनो प्रथीपुर इंद ॥ छं० ३०१ ॥

शशिवृता का रूप वर्णन ।

छंद त्रोटक मय मंजन मडिन बाल तन । घनसार सुगंध सुधोरि घन ॥

नव लोइन अजित मजि चली । कि मनो कम कुंदन पंभ हठी ॥ छं० १०२ ॥

सुभ वस्त्र सुअंग मुरंगनमी । सुहली मनु साष मदन्न कमी ॥

जरि जेहरि पाइ जराइ जरी । सजि भूषन नभम मनो उनरी ॥ छं० ३०३ ॥

सिगरि लट यो विथरी बिगमें । शशि के मुख तें अहि सें निकसैं ॥

रंग रत्त उवट्टुन उज्जल के । तिन मे कट्टु सेत मुधा चलि के ॥ छं० ३०४ ॥

नव राजियरोम बिराज इसी । जमना पर गंग सरस्वति सी ॥

परि पान सु कुंकन मज्जन कै । नव नीरज अंजन नैननि कै ॥ छं० ३०५ ॥

दूहा—छुटि अग मद के काम छुटि । छुटि मुगध की बास ॥

तुंग मनो दो तन दियो । कचन थंभ प्रकाम ॥ छं० ३०६ ॥

कुंडलियां—घर उप्पर कुब कनि परी । राजस तामस रंग ॥

तीजी तिहि सन काम मिलि । सो ओपम कवि अंग ॥

सो ओपम कवि अंग । मदिन मिलि काम पतंगी ॥

बहुत घर संमूह । करी भइ फेरि पतंगी ॥

*बरं सिर दार बिमार । सेंभु बहुआन नाह नर ॥

गंग यमुन भारतथ । हृत्थ जोरंत सु अट्टर ॥ छं० ३०७ ॥

१ मो०—नवक ।

२ मो०—बर ।

*छं० ३०७ के दोसरे अंतिम पद अशुद्ध है । पाठ चारों प्रतिषों में समान है ।

बूहा— तिमिर बीर गवनं कुवट । त्रिगुण तेज रवि त्रास ॥

चवनित विक्रम परिस की ।^१ काम ज्वाल बल हास ॥ छं० ३०८ ॥

कुंडलिया— करि मज्जन सज्जन सुक्रम । आभषण न समान ॥

केहं काके कोहि दिसि । सजि सषि नैन कमान ॥

सजि सषि नैन कमान । केश बागुरि विस्तारिय ॥

हावभाव कट्टाच्छ । ठुंकि षुठ्ठी दिय भारिय ॥

बेठि नैन न्यप मूल । पेम^२ देषन गह सज्जन ॥

मन मृग पिय कृत काज । ताकि वंघन किय भज्जन ॥ छं० ३०९ ॥

छंद नाराच— सुगंध केस पासयं । सुलग्गि मुत्ति छंडियं ॥

अनेक पुप्प बीचि गुथि । भासिता त्रिषंडियं ॥

मनों सनाग पुप्फ जाति । तीन पंथि मंडियं ॥

दुती कि नाग चंदनं । चढंत दुद्ध पंडियं ॥ छं० ३१० ॥

सिंदूर मध्य गुच्छता । अगमद विराजयं ॥

मनो कि सूर उगतें ।^३ गहे सु पुत्र लाजयं ॥

सु तुत्छ सुच्छ पाट आट । प्रेम वाट सोभियं ॥

मनो कि चंद राह बान । वे प्रमान लोभयं ॥ छं० ३११ ॥

कनक काम कुंडिलं । हलत तेज उभरे ॥

ससी सहाइ मान भाइ । सज्जि सूर दो करे ॥

दूती उपम्म बिंद की । किरन्न चंद दिठुयं ॥

मनों कि सुर इंद गोदि । अप्प आनि विठुयं ॥ छं० ३१२ ॥

भुवन्न बंक संक जूअ । नैन अग्न जूवयं ॥

ऊरद्धता चपल्ल गति । अच्छ आनि ऊवयं ॥

कटाक्ष नैन बंक संक । चित्त मान वकयं ॥

सुछंडि वै सु कुच्चितं । श्रवन्न बान नपयं ॥ छं० ३१३ ॥

सुगंधता अनेक भांति । चीर चारु मंडियं ॥

सु केहरी कटि प्रमान । बीच बंधि छंडियं ॥

सुरंग^४ अंग कंचुकी । सुभंत गात ता जुरी ॥

बनाइ काम पंच बान । ओट जोट लै घरी ॥ छं० ३१४ ॥

सुरंग^५ माल लाल बाल । ता विसाल छंडियं ॥

सु पुंअ बैर जानि काम । अग्गि संभ मंडियं ॥

^६दुती उपम्म मुत्ति माल । यों विसाल ता कही ॥

१. मो०—इल ।

२. मो०—वेदन ।

३. मो०—वहस रहे काजयं ।

४. ए० छं० को० अप्प ।

५. ए० छं० को०—रंग ।

६. मो० लाल माल ।

७. ए०—उरी ।

जु भारयी सु^१ गंग लै । सुमेर शृंग तें बही ॥ छं० ३१५ ॥
 जराइ चौकि स्याम पाट । रत्ति पत्ति तें पुली ॥
 सुरंग तिथ्य थान मंडि । ईस शीश तें चली ॥
 सुवर्न छुव्रघंटिकादि । षोडसं बषानयं ॥
 सु मुत्ति तात मोर तन्न । ^२गोदरं वषानयं ॥
 सुगंध गोप चिन्ह मंडि । पीत रत्त जावकं ॥
 बनाइ कें चौडोल लोल । चद्धिता सु मुंदरी ॥
 सुदोषिता सुरंग थान । अस्तु तास उच्चरौ ॥ छं० ३१७ ॥
 शशिवृत्ता का चंडोल पर चढ़ कर देवी की पूजा को ग्राना ।
 दूहा— सजि शृंगार शशिवृत्त तन । चढ़ि चौडोल सुरंग ॥
 पूजन कौं बर अम्बिका । आई बाल सु अंग ॥ छं० ३१८ ॥
 तेरह चंडोलों को चारों ओर से घेरकर राजा भानु
 की सेना का चलना ।
 सज्जि सेन जद्द त्रपति । दसत तीन चौडोल ॥
 लकरि लाल से पंच अग , दस दिसि लष्वन लोल ॥ छं० ३१९ ॥
 सूर्योदय के समय पूजा के लिये ग्राना ।
 राजा की सेना का वर्णन ।
 कबित्त - अरुनोदय उद्यमह । सुच्छि लिल्लै सु बंध भर ॥
 उमय सहस नाजित्त । ढोल त्रंबकी सुमत गुर ॥
 अद्ध सहस नफ्फेरि । सहस सहनाइ सुरगी ॥
 सुवर बीर पूजा प्रमानं । कीनी मति चंगी ॥
 बिन पुंज संग सेना सकल । अकल अपूरब वत्त बर ।
 चर सकल विकल अलि कुलन कौ।मुचित मित्त इक्कह सुधिरा॥छं०३२०॥
 गाथा— गुज्जर वै गुज्जर धनी । सथ्य सेनाह सब्बयो बीरं ॥
 जानैनि सबर अद्धं । उग्ये बा तिमिर तप हरनं ॥ छं० ३२१॥
 मन्दिर के पास पहुँचकर शशिवृत्ता का पंडल चलना ।
 हरनंत पति सुरंगं । साहस मंत्राय गिद्धयो रनयं ॥
 देवालयं पासं । सा पासं बालयं चालं ॥ छं० ३२२ ॥
 शशिवृत्ता के उस समय की शोभा का वर्णन ।
 छंद नाराच— बली अली बनं बनं । सुमत सथ्य संघनं
 विहंग भंघयो पुरं । चलंत सीभ नोपुरं ॥ छं० ३२३ ॥

अलीन जुध्थ आवरं । मनो विहंग सावरं ॥
 चुवंत पत्त रत्त जा । उवंत जानि अंवजा ॥ ३२४ ॥
 कलिंद सोभ केसयं । अनंग अंग लोभयं ॥
 उठंत कुंभ कुच्चयं । उपम कब्बि सुच्चयं ॥ छं० ३२५ ॥
 मनो जरंत बाल की । धरौ सु आनि लालकी ॥
 सुभंत रोमराजयं । प्रवील पति छाजयं ॥ छं० ३२६ ॥
 मनोज कूग नाभिका । चलंत लोभ आलिका ।
 सुरंग सोभ पिडुरी । धरादि काम पिडुरी ॥ छं० ३२७ ॥
 नितंब तुंग सोभए । अनंग अंग लोभए ॥
 मनो कि रथ्य रंभ के । सुरंभ चक्क संभके ॥ छं० ३२८ ॥
 नषादि आदि अच्छनं । मनो कि इंद्र द्रप्पनं ॥
 ढरंत रत्ता एडियं । उपम्म कब्बि टेरियं ॥ छं० ॥ ३२९ ॥
 मनो कि रत्त रत्ताजा । विकंत पत्र अबुजा ॥ छं० ३३० ॥

गाथा—^१मड मे रण्णत बाले ॥ लगा सेनाय पास चिहु बीरं ॥
 धरि धीरं तन दुरयं । रोमं राज रोमयं अंचं ॥ छं० ३३१ ॥
 कान्यकुब्जेश्वर को देख कर शशिवृता का बुल्लो होना
 और मन में चिन्ता करना ।

दूहा—बाल धरवकृति ववनि गति । ग्यान मोह विष पान ॥
 त्यों कमधज्जे देवि कै । वर चित्तं चहुआन ॥ छं० ३३२ ॥
 एक और कान्यकुब्जेश्वर की सेना का जमाव होना और
 दूसरी और पृथ्वीराज की सेना का घेरना ।

कवित्त—देवि सुभर लच्छिनति । फौज चतुरंग रिगावै ॥
 अरो सेन सम भार । धार भंजत मग पावै ॥
 बहु गिरष्टता रिष्ट । हक्कि अप्पन पर धावहु ॥
 सुबर स्यंध आलस्य । स्याल सूग्री करि पावहु ॥
 उठुं न बीर बोरहु उठत । सुबर मंच फुनि करिय वर ॥
 अर्भंग सेन भद्व सरिस । अर्भंग अंग सज्जे कहर ॥ छं० ३३३ ॥
 पृथ्वीराज की सेना का चारों ओर से घेरना ।

दूहा—चाहुआन सब सेन जु रि भिरि रुंधे चहुपास ।
 देव दुतिय देवहु दरस । बल बडुदिय आयास ॥ छं० ३३४ ॥

१. मो०—पवील ।

२. मो०—दधर्वन ।

३. को०—मड ।

४. मो०—अधिम सु ।

५. मो०—सुग्री ।

जैबन्द और पृथ्वीराज की सेना की तुलना ।

कवित्त — असुर सेन कमधञ्ज । सु सुर प्रथिराज सेन बर ॥

अमृत किति संग्रहो । मदह भौ क्रोध वीर 'तर ॥

महन मोह रंभनी । तहां शशिवृता समानं ॥

दुहुन बीच सिम्भयै । हेत चहुआन सुजानं ॥

अक्कित राह पच्छै फिरग । चक्र तेग सद्धिय सुबुधि ॥

अलि सकति सेन माया विषम । सुबर बीर बद्धिय सु सुधि ॥छं० ३३५॥

दोनों सेनाएं तलवार लिए तैयार हैं । जिसने द्रोपती का पण
रक्खा वही शशिवृता का पण रक्खेगा ।

ब्रूहा - दुहूं तेग तारुन्य तन । सयन सुकृति प्रतिकाल ॥

जिन रष्यो द्रोपत्त पन । सो २रष्वं प्रति बाल ॥ छं० ३३६ ॥

देह कंचुकि दह दून अलि । विच सुंदरी अमूल ।

डोल तीक्ष संयोग भति । भी भारथ्य समूल ॥ छं० ३३७ ॥

गाथा भारथ्यं प्रति राजं । सज्जे सेनाय बीर बीरयं ॥

घोरं घोर सधीरं । अधीरं ३स्रब्ब सेनायं ॥ छं० ३३८ ॥

ब्रूहा - देधि बाल पारस फिरिय । मेर भान प्रति मान ॥

ज्यों शशि पछ पारस सुभति । शंकर सोभत थान ॥ छं० ३३९ ॥

मठ को देख कर शशिवृता के मन में काम उत्पन्न हुआ और
उसने मनही मन शिव को प्रणाम किया ।

शंकर रस आचार किय । मढ़ दिष्पिय प्रति जोइ ॥

मन लगिय बंधत सु पय । मन कद्रप रस भोइ ॥ छं० ३४० ॥

तीस डोलियों के बीच में शशिवृता का चौडोल था जिसको ५०० बासी
घेरे हुई थीं । ५००० सवार और ५०००० पंवल सिपाही साथ में थे ।

कवित्त - १ दहति तीन चौडोल । मध्य चौडोल बाल भय ॥

भमर टोल झंकार । दासि बिटिय सु पंच सय ॥

सित्त पंच असवार । पति मंडिय चावहिसि ॥

त्रद लष्व पैदल्ल । सथ्य आयो सुअंग कसि ॥

मंगल विवेक विधि उच्चरे । बंधी बंदन मार करि ॥

उत्तरी बाल देवल सुठिग । लगि पाइ परदच्छि फिरि ॥ छं० ३४१ ॥

१. ए०-हु०-को०-वसि ।

२. ए०-हु०-को-रष्वं ।

३. मो०-सर्व, सरव ।

४. ए०-हु०-को०-वसत ।

शशिवृता ने चौडोल से उतर कर पृथ्वीराज के कुशल की प्रार्थना की ।
बूहा —उतरि बाल चौडोल तैं । प्रीति हेत प्रथिराज ॥

जिन देवत जु संपज्जौ । सो मंडन प्रथिराज ॥ ३४० ॥

बाजों का शब्द सुनकर सामंतों का चित्त पलट जाना ।

मंडन रन छंडन कलह । दल दैवत सु जुद्ध ॥

बर वज्जे बाजित्र सुनि । भौ सामंत विरुद्ध ॥ छं० ३४३ ॥

विरुध जुद्ध बंधन सुदल । स्वामि ध्रम्म चित्त पान ॥

दुतिय ध्रम्म जानै नही । धनि सामंत बषान ॥ छं० ३४४ ॥

गाथा —बद्धे दलं समूरं । लष्णं सेनाय अवृतं बलयं ॥

ते जगो रस बीरं । जानिज्जै जोग जोगायं ॥ छं० ३४५ ॥

सेना में बीर रस का जागृत होना ।

छंद भुजंगी —जग्यौ बीर बीरं सु डोंरु बजावै ।

महा चित्त चित्तं सुमंतं निपावै ॥

जग्यौ बीर बीराधि बिराधि रूपं ।

मनो ईश शीशं नचै बीर 'रूपं ॥ छं० ३४६ ॥

बूहा —भयो बीर बीरह तिगुन । नच्यौ रुद बहु भेद ॥

सो दिष्यौ दिष्यौ 'नहै । सो देषन गुन छेद ॥ छं० ३४७ ॥

नह तारक्क सु जुद्ध बर । नह देवा सुर मान ॥

सो दिष्यौ कमधज्ज सी । चाहुआन बलवान ॥ छं० ३४८ ॥

चाहुआन कमधज्ज बर । बरै षटक्क सुबद्ध ॥

देवगिरि 'उग्गाहिये । करि भारथ्य न सद् ॥ छं० ३४९ ॥

बेवालय के पास सब लोगों का चित्रलिखे से खड़े रह जाना ।

छंद भुजंगी —सुमद्दे विसद्दे विसद्दे निसानं ।

'रहे देव थानं 'बटे देव थानं ॥

रहे सब्ब योही टगी टगा लगे ।

मनो चित्रलिष्य त्रिचित्रंत ठगे ॥ छं० ३५० ॥

गाथा —जो इज्जै मन चरियं । हरियं एक कगयो सबदं ॥

सब सेना कमधज्जं । विंटे वा बाल सर साय ॥ छं० ३५१ ॥

ससियों का अछंद के भाई को शशिवृता का बर

कहना जो उसे बिय सा लगा ।

१. ए०-क०-को०-सूप ।

२. मो०-नहीं ।

३. मो०-नु-उवाहिए ।

४. मो०-रहे ।

५. क०-को०-बद्धे, ए०-बद्धे ।

बर जैचंद सुबंधं । प्रोहित पंग रषियं १आह्यं ॥

सहचर का सुपदियं । हलाहलं बाल्यं मनयं ॥ छं० ३५२ ॥

अपनी सेना सहित वह भी शिवपूजन के लिये वहाँ आया ।

दूहा — चट्टी पुंज नव साज बर । अह भर लिन्ने सथ्य ॥

शंभु थान पूजन मिसह । चलि बर आयी तथ्य ॥ छं० ३५३ ॥

तब तक पृथ्वीराज के भी ७००० सैनिक हथियारबंद

कपट भेष धारण किए हुए भीड़ में घँस पड़े ।

तब लगी दल चहुआन के ग्रह गुपति कर आह ॥

रुक्मिण कौ नन मध्य लिय । बोलै संमुह घाइ ॥ छं० ३५४ ॥

कबित्त — सहस सत्त कप्परिय । भेष कीनी तिन वारं ॥

गोप तेग गहि गुपत । कपट कावरि सब भारं ॥

किहुन फरस किहुं छुरी । चक्र किन हाथन माही ॥

किन त्रिसूत किन उंड । सिंगि सब सथ्य समाही ॥

सा अंग सिंह चहुआन लै । इतन इत बताई हरि ॥

सा अंग बाल उतकंठ करि । पै लग्गी परदच्छि फिरि ॥ छं० ३५५ ॥

शशिवृता ने चौडोल से उतर कर शिव की परिक्रमा की

और पृथ्वीराज से मिलन होने की प्रार्थना की ।

अरिल्ल — फिरि परदच्छि बाल अपु लग्गी ।

सुमन काम कामना सुभग्गी ॥

मन मन बंधि कियो हथ लेवं ।

सुमन मंत्र प्रारंभ सुदेव ॥ छं० ३५६ ॥

*दोहा — उतरि बाल चौडोल तें । प्रीत प्रात छुटि लाज ॥

शिवहि पूजि अस्तुति करी । मिलन करै प्रथुराज ॥ छं० ३५७ ॥

शशिवृता का शिव जी की स्तुति करना ।

छंद हनूफाल — प्रारंभ मंत्र सु राम । तिहि जपौ अजपा नाम ॥

हरि हरी बरुन विरति । कवि कही चंद किरति ॥ छं० ३५८ ॥

श्रुत कछ्छी बेद पुरान । ज्यों सुन्यौ श्रवन निआन ॥

तन स्याम अम्मर पीत । रघुवंस राजस रीत ॥ छं० ३५९ ॥

दूग कमळ कमला पान । मधु मधुर मिष्टत बान ॥

जिन नाम १जनमह २कोट । कंद्रप्य लावन मोट ॥ छं० ३६० ॥

१. ए०—क०को०—आहि ।

२. क०—किए, कियत, कियत ।

३. ए०—क०—को०—अजपाहि ।

* यह दोहा मो०—प्रति में नहीं है ।

४. ए०—कु०—को०—कोट ।

गंभीर साइर मान । आदिष्टवान प्रमान ॥

नह बाल बृद्ध किशोर । उर बरन स्याम न गौर ॥ छं० ३६१ ॥

अरि दहन उग्रस कोट । पीबै कि गोपिन 'पोटि ॥

भ्रम भूलि ब्रह्म भुलाइ । सुरनाथ नाथ नचाइ ॥ छं० ३६२ ॥

निज पानि पदम कटाच्छ । जिन भ्रमिय भूतल लाछ ॥

आदित्य कोटि प्रकास । मय सक्र कोटि विलास ॥ छं० ३६३ ॥

आराम कल्प निधान । सुर तीन कोट प्रमान ॥

नव रूप रेष अनंग । परकार गर्व विभंग ॥ छं० ३६४ ॥

पर पाप लिपत इहै न । भुअ भुक्ति मुक्ति सु दैन ॥

काकुस्थ कहना कार । गुन निद्धि सुम्भर भार ॥ छं० ३६५ ॥

रन रंग धीर सधीर । भव पार कद्वदन तीर ॥

सुर सरी नाथ नचाइ । भ्रम भूल ब्रह्म भ्रमाइ ॥ छं० ३६६ ॥

चतुरान घट्टु सु धूमि । सुरपति फनपति तूमि ॥

तारुण्य रूप प्रकास । सहभूत अंग निवास ॥ ३६७ ॥

त्रय मंत्र जपित वार । हर दीन तैह हंकार ॥ छं० ३६८ ॥

अरित्ल - बाले चित्त विषम्म प्रमानं । हय गय दल रुंध्यो चहुआनं ॥

कुंकुम कलस सलेवर हेमं । देव दैव साधारन नेमं ॥ छं० ३६९ ॥

पंगी पय सतह परिमानं । संमुह दलन रुंध्या चहुआनं ॥

गहह गहह कित्ती अविसेशं । सुबर चित्त चिते जुनरेशं ॥ छं० ३७० ॥

गाथा - बर छित्ती छिति धारी । सारं संग्राम नेहयो बलयं ॥

अगैई मृग जूयं । ना झुककै मृगयं राजं ॥ ३७१ ॥

उद्धरे सेन सेनो । संग्रामं वीर सुभट्टायं ॥

कालिदीय सुरगे । सो अंगो सुद्ध भूतायं ॥ छं० ३७२ ॥

पृथ्वीराज सात हजार कपट बेषधारी कामरथी

वीरों के साथ देवी के मन्दिर में बँस पड़े ।

कवित्त - सहस सत्त कप्परिय । भेष कीनो तिन वारं ॥

कपट कंध कावरिय । घसिय देवी दरवारं ॥

सर्व सस्त्र आरंभ । हस्त आरंभ सुरी सल ॥

घसिय भीर सम्पूह । जूह पाई समंडि कल ॥

दल प्रबल उदधि ज्यों मथन कज । भुज सुकिइन चहुआन बिय ॥

शशिवत्त बाल रंभह समह । मिलिय गठि बंधन सुहिय ॥ छं० ३७३ ॥

१. भी०-कोटि ।

२. ए०-हु०-को०-वृत्तयो ।

३. ए०-हु०-को०-मुसंभामे ।

४. ए०-हु०-को०-भूताय ।

पृथ्वीराज और शशिवृता की चार आँखें होते ही लज्जा से
शशिवृता की नजर नीची हो गई और पृथ्वीराज
ने हाथ पकड़ लिया ।

दिठु दिठु लम्बी समूह । उतकठ सु भगिगय ॥

निप लज्जानिय नयन । मयन माया रस पगिगय ॥

छल बल कल चहुआन । बाल कुअरपन भंजे ॥

दोषत्रीय मिट्टी । उभय भारी मन रजे ॥

चौहान हृथ्य बाला गहिय । सो ओपम कविचंद कहि ॥

मानों कि लता कचन लहरि । मत्त बीर गजराज गहि ॥छं० ३७४॥

पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने गुरुजनों
की खबर आ गई और इससे आँस में आँसू आने लगे
पर उन्हें अशुभ जानकर उसने छिपा लिया ।

चंद्रायना - गहत बाल पिय पानि । मु गुग जन संभरे ॥

लीचन मोचि सुरंभ । सु अंमु बहे परे ॥

अपमंगल जिय जानि । मु नेन मुष बही ॥

मनो धंजन मुष मुत्ति । भरवकत नषही ॥ छं० ३७५ ॥

दुहु कपील कल भेद । सुरंग ढरक्कही ।

सज्जन बाल बिसाल । सु उरज षरक्कही ॥

सो ओपम कवि चंद । चित मे बस रही ।

मनु कनक कसौटी मंडि । अग मद कसरही ॥ छं० ३७६ ॥

गाथा मृग मद कसयति चित्त । मित्त पुनरोपि चित्तय बसय ॥

अजहं कन्ह वियोगे । कालिंदी कन्हयो नीरं ॥ छं० ३७७ ॥

गहियं गह गह कंठो । वचनं संजनाइं निठुयो कहियं ॥

जानिज्जै सत पत्रं । बघे मदाइ भवरयं गहियं ॥ छं० ३७८ ॥

तप तंदिल में रहियं । अंगं तपताइ उप्परं होइ ॥

जानिज्जै कसु लालं । घटनो अंग एकयो सरिसौ ॥ छं० ३७९ ॥

अपमंगल अल बाले । नेनं नषाइ नष कि सलयी ॥

जानिज्जै धन कृपनं । सपनंतरो दत्तयं धनयं ॥ छं० ३८० ॥

जिस समय पृथ्वीराज ने शशिवृता का हाथ पकड़ा पृथ्वीराज
के हृदय में द्रव, शशिवृता के हृदय में कृष्णा और उन शशि
के शत्रुओं के हृदय में बीभत्स रस का संचार हुआ ।

१. मो०-कामुषि ।

२. मो०-करसही ।

३. ए०-पत्त ।

४. ए०-हु०-को०-शब्दाय ।

कवित्त—गहि शशिवृत्त नरिंद । सिढी लंघत ढहि धोरी ॥
 काम लता कलहरी । पेम मरुता झकझोरी ॥
 बर लीनी करि साहि । चंपि उर पुठ्ठि लगाई ॥
 मन सुरंग सोई 'वत्त । कंत लगि कान सुनाई ॥
 नृप भयो रुद्र करुना सुत्रिय । बीर भोग सुभर गति ॥
 सगपन मुहास बीभच्छरिन । भय भयान कमधज्जदुति ॥छं० ३८१॥
 वरिवृत्त से एक घरी ठहर कर पृथ्वीराज शशिवृता को
 साथ ले कर चल दिए ।

दोहा—बीर गति सधिय सुमति । वृत्त अवृत्त न जाइ ॥
 घरी एक आवृत्त रषि । सुबर बाल अनुराई ॥ छं० ३८२ ॥
 शशिवृता के पिता ने कन्या के बैर कमधज्ज ने स्त्री
 के बैर से लड़ाई का विचार किया और सेना साजी ।
 बाल सु बैर स बैर त्रिय । भान विरुद्ध न कीन ॥
 सकल सेन साधन घरी । कलहंकृत गति चीन ॥ छं० ३८३ ॥

वरिल्ल—आवृत्त वृत्त गुन निग्रह रात्र । देव जुद्धो देवतह साज ॥
 है गै दल मज्जे तिहि बीर । हरी बाल चहुआन सधीर ॥छं० ३८४॥
 शशिवृता के पिता का कमधज्ज के साथ मिलकर
 पांच घरी दिन रहे सकट व्यूह रचना ।

कवित्त—घरिय पंच दिन रह्यो । गंत जह्व प्रारंभिय ॥
 मिलि कमधज्ज नरिंद सकन व्यूह आरंभिय ॥
 अद्धं सध्य अप्पनौ । चरन मडियबाम दिमि ॥
 व्यूह चक्र विय पाइ । सध्य उम्भौ नरिंद कमि ॥
 उद्धवन भार अंगत सकट । सबर पुंज अप्पन सजिय ॥
 रघुनाथ साय वलियं बिहमि । हुंकि सु लछिमन तहें रजिय ॥छं० ३८५॥
 कमधज्ज की सेना का वर्णन ।

छंद रसावला—भरं भीर भाजी । कहं कूह वाजी ॥
 सुने पुंज राजी । मनो मेघ गाजी । छं० ३८६ ॥
 सनाहं सु साजी । चहुयो बीर वाजी ॥
 बगं मेल ताजी । सबें सेन साजी ॥ छं० ३८७ ॥
 करों काम आजी । सिरं मोहि लाजी ॥
 उठी मुच्छि एनं । सिरं लगि गेन ॥ छं० ३८८ ॥
 कमंडं निहारी । सयनं विहारी ॥
 कमानै निहारी । तरक्कस्स झारी ॥ छं० ३८९ ॥

अरी तुंग तारी । फिर 'गज्ज भारी ॥
सरोसं विहारी । मया मोह जारी ॥ छ० - १० ॥
महंतं विडारी । ॥
किए नैन रतं । रसं रोस पत्तं ॥ छ० ३९१ ॥
मुरं बीन वीरं । करी आज तीरं ॥
परै मोहि गतं । हरे शशिवृत्तं ॥ छ० ३९२ ॥
असी जा पहारं । चढ्यौ धार धारं ॥
लियो वृत्त भारी । पगं सीस ढारी ॥ छ० ३९३ ॥
पर्यौ मढ धाई । असीजा पुलाई ॥
बजी कूह कूहं । अवाजं मजूहं ॥ छ० ३९४ ॥

घरियाल के बजते ही सब सेना जुट गई ।

कवित - सुनि वज्जी 'घरियाल । लाग 'नीमानन बाजिय ॥
इक किन दोऊ सैन । चंपि चावदिसि साजिय ॥
महन रंभ मा जग्य । मध्य मोहन शशिवृत्त ॥
असुर मु सुर मिलि मयहि । मूर बमी रजपूतं ॥
आरंभ पत्र मंड्यौ कगट । कगट मुक्कि कद्विहय लपट ॥
दुहं बीच जदों कुंअरि । उभय सिंह सारह झपट ॥ छ० ३९५ ॥
बहुभ्रान और कमधज्ज शस्त्र लेकर मिले ।

दूहा - चाहुभ्रान कमधज्ज वर । मिले लोह जल छोह ॥
भर भर टट्टर वज्जही । वंमह लगिय कोह ॥ छ० ३९६ ॥
शत्रुता का भाव उच्चारण करके दोनों ने अपने अपने हथियार कसे ।
गाथा - उच्चरियं अरि भायं । मायक कस्मेव अप्प अप्पायं ॥
कद्वे लोह करारं । मार मारं जंपि जी हाई ॥ छ० ३९७ ॥
इहा - अवृत्त घाइ वट भंग कौ । करन मतहु वर वीर ॥
मनहु काल कपि दल निरनि । लेन लंक मति घीर ॥ छ० ३९८ ॥
'घर घीरतन वीर वर । करिय न पंग प्रवाह ॥
चच्चर सीचव रंग गति । विधि बधन रिन चाह ॥ छ० ३९९ ॥
दोनों सेनाओं के युद्ध का वर्णन ।

छंद मृगगी - मिले चाइ 'निघाइ सा पुंज राजै । लगे पंग अंगं सुरंगति छाजै ॥
मिले हृथ्य बथ्यं सु सथ्यं निनारै । मनो वाहनी मत्त 'मय मत्त भारै ॥
॥ छ० ४०० ॥

-
१. मो०-गज्ज । २. ए०-कू०-को-घरि, घरी पंख । ३. मो०-नीसानत ।
४. ए० कू० को०-फलक । ५. मो०-घन ।
६. मा०-निष्वाण । ७. में०-मै ।

किष्णो जुद्ध लगे कि मल्लं सवारै ॥ ॥
 सरै लोह पंती परै श्रोन रुद्रं । मनो रत्त धारा बरष्वै समुद्रं ॥ छं० ४०१ ॥
 उडै छिछि इछं सनाहं सुभिज्जै । मनो पुफरत्तं नभं देव पुज्जै ॥
 सुनै ईस सद्दं निसानं गहारं । बजै धार धारं घनं कै प्रहारं ॥ छं० ४०२ ॥
 मनो पट्टनं मंजि कंसी डकारं । दुती 'ओषमा चंद जपै विचारं ॥
 बज मल्लरी देवल द्वार मारं । उडै सार किची कि रच्चै प्रहारं ॥ छं० ४० ॥
 मनो क्षिगनं भट्ठवं रैनि मारं । ॥
 *सबै सस्त्र मंत्र भरं जम वाहे । विज्जै षग कट्ठै बिहथ्यै समाहे ॥

॥ छं० ४०४ ॥

करं कंस मत्तं पलं पारि छंडै । रुधं धार हल्लै प्रसादेति मंडै ॥
 सिवा लीति सोभै 'प्रनाली अनेकं । फिरै अच्छरी पंति बिय बार वेकं ॥
 ॥ छं० ४०५ ॥

बहै नाग मुष्ठी सु सोहै विकनं । फटै हस्ति कुभं ठनंकंत घंटं ॥
 वियं वांहं षंचै गिरै गज्जराजं । मनो द्रोन षंचे कपी काज पाजं ॥ छं० ४०६ ॥
 विजै दंत दती भरं कंध डारै । मनो कोपियं भीम हृथ्यी उच्छारै ॥
 भरं लोहि गद्दी भ्रमै भति छट्टै । मनो देवलं इष्ट चलि डोरि तुट्टै ॥
 ॥ छं० ४०७ ॥

लगै लोह हृथ्यी सिरं वंबिझारै । तिनं गात तिद्रु जरै अगि लारै ॥
 परै षोपरी तुट्टि भेजी सुभावैदधी 'भाजन जानि वायस्स आवै ॥ छं० ४०८ ॥
 फटै बीर बीरं सुबीरं सुघट्टं । मनो कर्क करवत्त विहरंत कट्ठं ॥
 नचैजा कमंधं करै हाक शीशं । चरंमं सुभज्जै हसं देषि ईशं ॥ छं० ३०९ ॥

युद्ध के समय शूरवीरों की शोभा वर्णन ।

गाथा— मानिवक प्रति ताजं । हेमं हेमेल विद्ध साधरियं ॥

जानिज्जै निसि मद्धं । निरमल तारक सोभियं गैनं ॥ छं० ४१० ॥

मुच्छी उच्चस बंकी । बाल चंद सुष्मियं 'नष्मं ॥

'गज गुर घन नीसानं । रीसानं षंग षल याई ॥ छं० ४११ ॥

अरिल्ल— दहकि बज्जि नीसानति 'नद्दं । सबै सेन संग्राम बिवद्दं ॥

इक्क अंग चावट्टिसि सेनं । जरै राज रत्ते 'रस नैनं ॥ छं० ४१२ ॥

१. मो० उप्पमा ।

२. ए० क० को०—प्रनाली ।

★ ए० क० को०—सबै शास्त्र मंत्र भजैरं समाह ।

विजै षग कट्ठै बिबी हृथ्य वाह ।

३. मो०—भोजनं ।

४. मो०—गेनं ।

५. मो० को०—नत्त, गत ।

६. ए० क० को०—नद्दं, बिवद्दं ।

७. मो०—रत्त ।

छंद रसावला—लगी कर कोह । लगे घन लोह ॥

छकै अति छाह । महा तजि मोह ॥ छं० ४१३ ॥

भरा भर भार । तुटे तरवार ॥

मची घन मार । परंत प्रहार ॥ छं० ४१४ ॥

धुकंत धरन्नि । सरोस सरन्नि ॥

निफूटत रुन्नि । बरे सु बरन्नि ॥ छं० ४१५ ॥

करे घन घन । महा इत मित्त ॥

लरै बर लत्त । फटे रिन षत्त ॥ छं० ४१६ ॥

कटारिय एक । लगंत अनेक ॥

सु चंदन साष । संजोइय भाष ॥ छं० ४१७ ॥

धरै अति धीर । मनो बर बीर ॥ छं० ४१८ ॥

कमघज्ज की शोभा वर्णन ।

कवित्त—सबर बीर कमघज्ज । अरघ अप्पिय षग मग्गं ॥

इष 'अच्छित्त उच्छरहि । जानि परिमानन मग्गं ॥

मार धार पुंषियै । बीर मंगल उच्चारै ॥

सबै साथ बंदियहि । सकल पूजा संभारै ॥

बर मुक्क बरन बरनी सुबर । इह अपुब्ब पिण्ठो नयन ॥

उप्पनो बीर सिगार सँग । रुद्र बीर चौरी नयन ॥ छं० ४१९ ॥

दूहा—सिर सोहत बर सेहरो । टोप ओप अति अंग ॥

बगतर बागे केसरे । रुघि भीजत विषमंग ॥ छं० ४२० ॥

सकट भग्ग लइ बरग बर । कमघज बीर विसेज ॥

मिले बीर बीरत्त बर । दोऊ देवत तज ॥ छं० ४२१ ॥

शशिवृता का बहुआन प्रति सच्चा अनुराग था ।

देव तेज देवत्त गुन । अवृत मत्ति गुन कंति ॥

शशिवृत्ता बहुआन सौ । सुवृत मंत गुन पंति ॥ छं० ४२२ ॥

सांइ सूर सांई सु गति । दल दुंदुभि देवत्त ॥

विघरं कर बीरह करह । सुबर बीर मारुत्त ॥ छं० ४२३ ॥

कालकूट कीनी विषम । कोलाहल बन कीन ॥

अवृत वृत्त अंतह भवै । सो भारण्य प्रवीन ॥ छं० ४२४ ॥

भारथ दिग्घिय तत्त मति । अवृत चित्त बल छीन ॥

जिन गुन प्रगटित पिह क्रिय । सो भारण्य प्रवीन ॥ छं० ४२५ ॥

कंठ कील कीली सुवृत्त । वृत्तत जुद्ध सम पाइ ॥
 सुबर बीर भारथ्य गुन । उठे बीर विरुत्ताइ ॥ छं० ४२६ ॥
 षल संकुल अंकुल प्रकृत । चतुर चित्त विरुत्ताइ ॥
 मनु बड़वानल मध्य तें । समुद सत्त गुन भाइ ॥ छं० ४२७ ॥
 वीर थान विभ्रम भइय । नयन रत्त सम सार ॥
 मानहु बर धरि अढ में । नाकपत्ति गिरि झार ॥ छं० ४२८ ॥

पृथ्वीराज की श्री शेषजी से उपमा वर्णन ।

कबित्त—नाक पत्ति संभरिय । उभैं काया अधिकारिय ॥
 वह जित्यौ बलि राइ । यहन दुजजन सम सारिय ॥
 छित्ति पत्ति अति अम्भ । दुहन आभा पति बुद्धं ॥
 वह गोरी सुरतान । इहति दानवति विरुद्धं ॥
 षग पुलै दुहुन पुज्जै न को । दोऊ बाउ बर बीर रन ॥
 लै चल्थौ हरिव शशिवृत्त को । पहु पंजलि पुज्जै तरन ॥ छं० ४२९ ॥

बुहा—तरन तेज तम हरन बर । बाल बहिक्रम उच्छि ॥
 मानों रति आरुढ़ करि । बर बारधि मति लच्छि ॥ छं० ४३० ॥
 लच्छि सु लच्छिह लीन हरि । इह लीनी संगाम ॥
 षटि बढि मंत्रह समन बरि । दोऊ बीर बढि ^१वाम ॥ छं० ४३१ ॥
 गाथा --चावदिसि न्रप ^२बिठ्यौ । पुंजं सेनायं सेनयौ बीरं ॥
 धर धरनी आधारं । सा धारं डुलियं शीशं ॥ छं० ४३२ ॥
 उस युद्ध में धीरों को आनन्द होता और कायर डरते थे ।
^३मुरिल्ल - बढि सस्त्र दुहाइय बीर रसं । दुहु सेन सुधावत अंग कसं ॥
 मुष वीर विगस्सिय रेन ससी । भय कायर चंद प्रभात दिसी ॥ छं० ४३३ ॥
 छंद विराज - लगे लोह सारं । दोऊ बीर भारं ॥

महा तेज तारं । बरं कंज झारं ॥ छं० ४३४ ॥
 धरी यार सारं । परें कै प्रहारं ॥
 भए पार पारं । मनो प्रात तारं ॥ छं० ४३५ ॥
 करै मार मारं । बबकै बकारं ॥
 चलै हृदि पारं । पलं मच्चि गारं ॥ छं० ४३६ ॥
 चर मंस चारं । दिषै प्रेत दारं ॥
 धरै धार धारं । टरै जे न टारं ॥ छं० ४३७ ॥

१. मो०—काम ।

२. मो०—बिटं ।

३. मो०—प्रति में यह छन्द जोटक नाम से लिखा है ।

डकै भूत डारं । डरै सीस डारं ॥

उड़ी बीर रैनी । भ्रामि भौर सैनी ॥ छं० ४३८ ॥

अवध्यं न गोपं । इसे बीर कोपं ॥ छं० ४३९ ॥

दूहा कोपि बीर कायर धरकि । परषि पर्यंपन जोग ॥

यह गति छंहे बीर बर । परै परत्तर भोग ॥ छं० ४३० ॥

कवित्त - बांन पथ्य बलभीम । मत्त 'सिवरी अधिकारी ॥

१गंभीरां गुर सिध । नेह करनह क्रत १धारी ॥

बल मुजग्य सक्रह विमाल । पुग्धारथ सारी ॥

सुर सिधि बुद्धि गनेश । क्रम्मन घुन घू अधि नारी ॥

सामंत सूर सूरह विरुध । बीर बीर पारस फिरिय ॥

बर सिध सिध रषै मरन । बर कोबिद कोबिद डरिय ॥ छं० ४४१ ॥

कवि का पृथ्वीराज को कलि में बीरों का सिरताज कहना ।

दूहा सु रिधि बुद्धि बुध्यां तरन । मिरन सूर दुति राज ॥

चाहुआन प्रथिराज कल । मंडि बीर सिर ताज ॥ छं० ४४२ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का मुकाबला होना ।

चाहुआन कमधज्ज बर । मिले लोह छुटि छोह ॥

धार मुरै मुष ना मुरै । मरट मुच्छ क्रत जोह ॥ छं० ४४३ ॥

चाहुआन कमधज्ज दुनि । रति नाइक प्रति धीर ॥

सारंगी सारंग बल । इह लग्गी अनि बीर ॥ छं० ४४४ ॥

धन्य है उन शूरवीरों को जो स्वामिकाय्य के लिये प्राणों
का मोह नहीं करते ।

अरिल्ल

द्रव्य वस्य नन होइ प्रमान । अप्पन 'प्राण स्वाम कृत दानं ॥

जिन जग जित्ति किात्त बसि कीनी । मरन मूर सस्त्रह बर लीनी ॥ छं० ४४५ ॥

दूहा - कहां पंच पंचौ बसत । कहा प्रकृति प्रति अग ॥

कहां हंस हंसह बसे । कोन करै रन जंग ॥ छं० ४४६ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का युद्ध ।

इह कहि कबिद्वय सार कर । पोलि षग्ग दोउ पानी ॥

मानहु मत्त अनंग टै । धूत छुट्टै 'जम आनि ॥ छं० ४४७ ॥

१. मो०-मिवरं ।

२. मो०-गंीरं ।

३. मो०-भारी ।

४. मो०-भूल ।

५. मो०-बसैं ।

६. ए० कृ० को०-काम ।

७. मो०-यम ।

घोर युद्ध वर्णन ।

छंद भुजंगी—

मिले हृथ्य बध्यं न सध्यं स धारे । मनो बारुनी मत्त गज दंत न्यारे ॥
 उडै लोह पंती परे श्रोन १रुंदं । मनो रुद्धि धारा बरष्पंत बुंदं ॥ छं० ४४४ ॥
 धुमे घाय घायं अघायं अघायं । धुमै झार झारं झनक्कै झकायं ॥
 करै जोगनी जोग काली कराली।फिर पैट घाये महा विक्कराली ॥छं० ४४९॥
 परे सूर वाहै बहुथी कृपानं । कढी तांत बाढ़ी मल चारि जानं ॥
 धमां धम्म मत्ती मोह माहि १धानों।पिजारे सतं रुव पीजंत मानों ॥छं०४५०॥
 महादेव मालानि में गूथि मध्यं । १रुहै वाह वाहं वहै सुर हृथ्यं ॥छं० ४५१॥
 मुरिक्कल — १हाहरे रूप कायर प्रकार । २छडीति लज्ज अरु बीर मार ॥

अभ्यसै सूर जिन सूर रूप । देवत्त भूप दिखै अनूप ॥ छं० ४५२ ॥

युद्ध की यज्ञ से उपमा वर्णन ।

कवित्त — विषम जग्य आरंभ । वेद प्रारंभ शस्त्र बल ॥

है गै नर होमियै । शीश आहुत्ति १स्वस्ति कल ॥

क्रोध कुंड विस्तरिय । कित्ति मंडप करि मंडिय ॥

गिद्धि सिद्धि बेताल । पेषि पल साकून छडिय ॥

तुंबर सु नाग किनर सु चर । अच्छरि अच्छ सु गावहीं ॥

मिलि दान अस्म अप्पन जुगति।भुगति मुगति तत पावहीं ॥छं०४५३॥

दूहा -- करि सुचार आचार सब । समद कित्ति फल दीन ॥

गुरुजन, मिसि करुना करिय । कायर हाहर कीन ॥ छं० ४५४ ॥

कमधज्ज का सवथ्यूह रचना ।

कवित्त — मिलि जह्व कधज्ज । अहिर व्यूह आरभिय ॥

पुच्छ मु लषि मनि बंध । पांइ गुज्जर पारभिय ॥

सुधर मंडि वर बीर । पंग बंध्रह रवि गद्धै ॥

फन अप्पन भय पुंज । जीभ कूरंभ सु ठहुं ॥

हयनारि जोरि जंबूर घन । दसन हद्ध दुग मुष्प करि ॥

मनि भयो मेर मारुफ़ षां । १चच्चर सीचो रंग परि ॥ छं० ४५५॥

गाथा — अप्पं व्यूह आरंभी । प्रारंभो बीर भद्रायं ॥

जानिज्जै चव रंगं । चतुरंग इक्क घंटायं ॥ छं० ४५६ ॥

१. ए० छं० को०—रुंदं ।

२. मो०—ध नों ।

३. मो० वहै ।

४. मो०—हारे ।

५. मो० छडी लज्ज जये बसि मार ।

६. ए०—सुस्ति ।

७. को०—पच्छर ।

ब्रूहा— घटिय घट्ट अघटन घटिय । पदिय सार दुअ सैन ॥
 पंगराइ बंध्यौ सु वृत । किये रत्त बर नैन ॥ छं० ४५७ ॥
 रत्ते नैन विषम्म गति । दावानल प्रथिराज ॥
 बीर चंद घन उन्नयो । सार सु बुद्धन आज ॥ छं० ४५८ ॥
 पृथ्वीराज का मयूरव्यूह रचना ।

कवित्त— मोर व्यूह प्रथिराज । सथ्य सज अप्पन कीनौ ॥
 चुंच केश मंडली । कन्ह चहुआन सु दीनौ ॥
 पांइ पिंड विधि पंष । गरुअ गहिलोन बीर सजि ॥
 पुंछ राज रघुवंश । चरन पुंडीर चंद रजि ॥
 दुहु लोह कट्टि गरियार नें । सारघार में श्रम्मि भर ॥
 पल पंच तरंगनि हक्कि जल । जानि कमोदनि नंचि सर ॥ छं० ४५९ ॥
 दिशि वर लषिन फवज । चपि चतुरग रिगावहु ॥
 अरि सयन्न संभार । धीर भंजै मग पावहु ॥
 बहू गरिष्ट तारिष्ट । हक्कि अप्पन पर धावहिं ॥
 सु बर सिध आलसै । स्याल मूघौ करि ध्यावहिं ॥
 उठुं न बीर बीरह उठत । सुबर मंत फुनि फुनि करे ॥
 वरसै न अंब सर मेघ कौ । जो न ममर सरवर भरे ॥ छं० ४६० ॥

गाथा—समर सु मध्यो सैन । तार अकार बीर भद्रायं ॥
 केवल गति कल रूपं । भूयं वीर जुद्धयो समरं ॥ छं० ४६१ ॥
 बीररस में शृंगाररस का वर्णन ।

ब्रूहा—समर जुद्ध मच्चिय समर । हालाहल बर मति ॥
 कोलाहल पविन कियो । काम रूप बर जित्त ॥ छं० ४६२ ॥
 छंद नाराच- बरत काम रूपयं । असी वहै अनूपयं ॥
 लगै सु गौरि पासयं । परक्रिया कटाछयं ॥ छं० ४६३ ॥
 सरंत तीर सोहयं । उरंद मुठ्ठि छोहयं ॥
 हला हलं हलं मलं । मिलंत अंग संभिलं ॥ छं० ४६४ ॥
 कडा कडी कडककयं । दडा दडी दडककयं ॥
 पडुं सिरं पडककयं । डकंत बीर डककयं ॥ छं० ४६५ ॥
 विसै न ज्यो वडककयं । तुटंत तेजि डककयं ॥
 हडा हडी हडककयं । ॥ छं० ४६६ ॥

१. मो०—जल ।

२. ए० क० को०—लच्छन ।

३. ए० क० को०—मंत्र ।

४. मो०—ममूर ।

५. को०—सति ।

६. ए० क० को०—कटा कटी ।

निरष्वि पत्ति नाकयं । परंत हीय धाकयं ॥
 बरंत अच्छरी बरं । भषंत गिद्धनी भरं ॥ छं० ४६७ ॥
 लगंत लोह सो लरं । अरिम मत्त संमंर ॥ छं० ४६८ ॥

अरिल्ल —

आरिष्टन सम दिष्टन दिष्विय । बीर चंद गह गह मुष भष्विय ॥
 यद भरि होंन न परत सुबंधं । बर भारथ बीर रस संघं ॥ छं० ४६९ ॥

गाथा — उठुहि एक प्रमानी । धावंताय पंचयो सयनं ॥

१वाहंत वर लोहं । साइनं देषयो बीरं ॥ छं० ४७० ॥

रुधिरं पत्र तसतयो । दो मस काय हक्कयो सिरयं ॥

अति गति दुष्ट प्रकारं । अगिनत होंइ बीर सम सेनं ॥ छं० ४७१ ॥

अगनित गने न जानं । ई कोइ कोपि हृदयो सहसं ॥

बर बीरा र सुभट्टं । दावानलं पंगयो बीर ॥ छं० ४७२ ॥

पृथ्वीराज की धाजा पाकर कन्ह का क्रुद्ध होकर झपटना ।

बूहा — तव चहुआन सु कन्ह वर । ठढो करि गुरराज ॥

हुकम त्रपति छुट्टीति इम । ५जनु तीतर पर बाज ॥ छं० ४७३ ॥

कवित्त — मुष छुट्टत त्रप बैन । नैन दिठो धावंतो ॥

क्रम बंध वल मोह । छोह बंध्यो सु बरतो ॥

सु बर सेन चहुआन । सिंग जदूनं नवाई ॥

जनु मंदिर बिय बार । ठंकि इक बार बनाई ॥

तकसीर करन दोउ अंस बर । कित्ति मग करतव्य कर ॥

अथवंत रविह आदित्य दिन । अगनि सार बुद्धिय कहर ॥ छं० ४७४ ॥

गाथा — मुष छुट्टा त्रप बैनं । कै दिठाय धावता नैनं ॥

बज्जी वाहु सुबारं । धारं ढारि ६मत्तयो धरयं ॥ छं० ४७५ ॥

कन्ह का युद्ध बर्णन ।

बूहा — मत्त ढरहि संमुप भिरहि । स्वामि सनाह ससूर ॥

आज मुष्य चहुआन कन्ह । सिंधु सत्त को नूर ॥ छं० ४७६ ॥

गाथा — सइं सिद्धत नूरं । कारूरं करनयो नथ्यी ॥

एको अंग सुरंगो । दिष्ये वा बीरयं बीरं ॥ छं० ४७७ ॥

घनयं लछि नरिदं । निहि संत्रिय सायरो नथ्यी ॥

कलहंत बल विषमं । जुषमं देहीय लज्जती सूर ॥ छं० ४७८ ॥

१. मो० सोलरं ।

२. को०—व्याहंतं ।

३. मो०—काम ।

४. मो०—मनु ।

५. मो०—नमाई ।

६. ए० छं० को०—मत्तयो ।

कढ़ै लोह दुहृथं । सत्तं घरियाय बज्जयी अंगं ॥

चावहिसि चतुरंगी । अनुरंगी सेन सब्बाइं ॥ छं० ४७९ ॥

दूहा - अनुरंगी सेना 'सकल । सह मुरद्ध विरुद्ध ॥

अनुघ बुद्ध भारथ्य में । दान मान मु प्रबद्ध ॥ छं० ४८० ॥

गाथा - बर अथवंत सु दीहं । झुझं तिन जोतयं कलयं ॥

घरिघट अघट नरिदं । मा बुद्धं बीर भद्रायं ॥ छं० ४९१ ॥

पृथ्वीराज के बीर सामंतों का प्रशंसा ।

मुरिल्ल - बीरभद्र अरु रुद्र जलपिय । कहौ सत्त संकरषण थपिय ॥

तुम सकल कलित भारथ फिरि दिप्यौ । इन समान कोई बीर विसप्यौ ॥

॥ छं० ४८२ ॥

गाथा - को दिठौ सम बीरं । सामंतं स्वामयो क्रमयं ॥

इक्कं करन प्रमानं । अंगद कामेय रावनो भिरयं ॥ छं० ४८३ ॥

चोपाई - राम कांम अंगद अधिकारी । स्वामि कांम सामंतव घारी ॥

जिन ह्य गय तन तिन वर जान्यौ। सुमत ध्रंम स्वामित्त पिछान्यौ ॥ छं० ४८४ ॥

'सुपति ध्रम्म जिन तंत प्रमानिय । मुकति मुर्ग बेवल सुनि बानिय ॥

घट्टिय घट्ट विघट्ट सुषंडघो । सुपथ साथि आपथं सु मंडघो ॥ छं० ४८५ ॥

जिन छंडिय मंडिय क्रत धारिय । सार कदिह ह्य तज्जि सु धारिय ॥

'परनि प्रहार सार तजि सारं । जइता तज्ज लगत तम तारं ॥ छं० ४८६ ॥

छंद विराज - लगे बीर सारं । किए मत्त पारं ॥

बहृथंत धारं । अनुज्जा प्रहारं ॥ छं० ४८७ ॥

तुटं धार धारं । मनौं श्रुत तारं ॥

अवित्तं विहारं । कलिदी कहारं ॥ छं० ४८८ ॥

मनौं नभ धारं । सु भारथ्य सार ॥ छं० ४८९ ॥

★चोपाई - सार धार भारथ प्रहारं । मानहु दुत्तय अंग विहारं ॥

धार तिथ्य कै तिथ्यह राजं । जनक काम कामनि सिरताजं ॥ छं० ४९० ॥

कवित्त बर अथवंत सु दीह । झुझिअ लच्छिन जद्व भर ॥

लोह धार लगि विषम । ईस लीनौ जु शीश कर ॥

१. ए० कृ० को०-सुबन ।

२. ए० कृ० का०-प्रबुद्ध ।

३. मो०-नट्टौ ।

४. को० मो०-कृतयं ।

५. मो०-भरयं ।

६. ए०-सुमति ।

७. मो०-परति ।

★ मो०-प्रति में बरिष्क ।

८. मो०-रुन ।

रह्यो न तन दक्षान सु मंस । पल चरन न षाड्य ॥
अख षस्त्र पथर 'पलान । दुढंत नन पाड्य ॥
बरि लियन बीर अंतर मिल्यो । *अच्छर *सुच्छर ना लियो ॥
मिलि गय सु भान सुत भान की । दिव दुंदुभि बज्जत बियो ॥छं० ४९१॥
अगनि झार घर धार । सार वज्जी प्रहार असि ॥
कंरु दिष्ट सिंघा सुरारि । भग्गो नल गंभरि ॥
शस्त्र घात आघात । बथ्य अन बथ्य सु लगा ॥
मूरत अंतरित सेन । मिले दूती मन भग्गा ॥
सिरदार सैन नप द्वै करिय । दोऊ घाव घन घुम्मि घट ॥
उबर्यो कन्ह प्रथिराज क्रम । झड्डिख पुंज बंध्यो सुभट ॥छं० ४९२॥
इस युद्ध को बेल कर देवताओं का प्रसन्न हो कर
पुण्यवृष्टि करना ।

छंद भुजंगी -

बजी दुंदुभी आज आयास धानं । करे लोह लोहं *मुलोकंति गानं ॥
कहै चंद सूरं महाबीर पाई । परे पुष्क बर विष्ट वज्जं त्रिघाई ॥ छं० ४९३॥

साक्ष हो गई परंतु कमधज्ज की अपनी न मुड़ी ।

कवित्त— जोति लियो जै पत्ति । चारु चतुरंग स मोरी ॥

बर बंध्यो नप पुंज । ढाल जह्व न ठंडोरी ॥

बर 'लच्छिन परि घेत । कन्ह बहुआन उपायिय ॥

घेत दूढि प्रथिराज । सुभ्रत मोरी करि डारिय ॥

इतनें सु भान अस्तमित भये । दोऊ सेन बर उत्तरिय ॥

मुक्की न बग्ग कमधज्ज की । रोस राह विसरन भरिय ॥छं० ४९४॥

बजी संक्ष धरियार । सार बज्यो तन झंझर ॥

जनु कि बज्जि झननं क । ठनकि घन टोप स 'उच्चर ॥

अनल अग्गि सम जग्गि । जेन घज बंधि सलग्गा ॥

मनु द्रप्पन में बैठि । नेत बहवा नल जग्गा ॥

घन स्यांम पीत रत रंग बर । त्रिविध बीर गुम बर भरिय ॥

हर हार गंठि रुठि उमां । किम उतारि पच्छो धरिय ॥छं० ४९५॥

कमधज्ज का अपने बीरों को उत्साहित करना ।

छंद भुजंगी—भिर्यो राम रन बीर कमधज्ज बीरं ।

करो आज सर्वं *सुभिम्बीर धीरं ॥

१. मो०— प्रथाम ।

२. मो०—अरसर ।

३. मो०—मुरसर

४. ए० छं० को०—लोकेसु ।

५. मो०—कवियन ।

६. ए०—उच्चर ।

७. ए—सत्तिवरि ।

गुहै माल ईशं नचें जोग बीरं ।

निरं तंत प्रेतं धरं धीर हीरं ॥ छं० ४९६ ॥

सब रन भूमि में तीन हाथ ऊंची लाशें पड़ गईं ।

दूहा—परि पथ्यर सथ्यर सुरन । गनक गर्ने नहि जाइ ॥

हृथ्य तीन लुथ्यह चढ़ी । मुरबी 'मद न माइ ॥ छं० ४९७ ॥

संज्ञ सपत्ते न्रपति बर । नव नव रस अरपंत ॥

बर प्रथिराज नरिद दुति । सो ओपम कविकंत ॥ छं० ४९८ ॥

तीन घड़ी रात्रि हो जाने पर युद्ध बंद हुआ ।

कवित्त - धरिय तीन निसि गइय । बार बार सुक्र सु आगम ॥

पंति परी अरिजह । बीर विध्यो अरि आगम ॥

कोट बलन सोभं । विसाल सामंत सूर यँभ ॥

जम देकल उप्पनी । बीय गय गिरी सेत रंभ ॥

प्रथिराज देव दानव दलन । लच्छि रूप जह्व कुँअरि ॥

नव रस विलास पूजा करहि । बर अच्छरि भइ पहूप सरि ॥ छं० ४९९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की समुद्र से उपमा वर्णन ।

श्रम सु अंग बिटयो । मुघा 'बिटयो जु बाल रस ॥

अमिय चंद बिटयो । समुद बिटयो बइवा तस ॥

अरि कै दिल विष उरग । मंत्र ससि वृत्त प्रेम झर ॥

लहि न मुद्धि सब बसन । आइ लग्गेति रोस भर ॥

बजि बीर बार दुज दल सघन । लाग निसानन न्रत्य पर ॥

प्रथिराज सेन बंधी स अति । मु कविचंद उच्चारि बर ॥ छं० ५०० ॥

युद्ध में नव रस वर्णन करना ।

भान कुँअरि शशिवृत्त । नैन शृंगार सुराजै ॥

बीर रूप सामंत । रुद्र प्रथिराज बिराजै ॥

चंद अद्भुत जानि । भय कातर करुना मय ॥

बीभछ अरिन अमूह । सात उप्पनी मरन भय ॥

उप्पज्यो हास अपछरि अमर । भी भयान भाबी बिगति ॥

कूरंभराव प्रथिराज 'बर । लरन लोह चिते तरनि ॥ छं० ५०१ ॥

१. ए०—सद ।

२. मो०—बीदयो ।

३. ए० इ० को०—छर ।

राम रघुवंश का कहना कि जिस बीर ने युद्धरूपी काशी क्षेत्र में
शरीर त्याग करके इस लोक में यश और अंत में

ब्रह्म पद न पाया उसका जीवन बूया है ।

कहै राम रघुवंस । सुनौ सामंत सूर तुम ॥

अमर नरन बंछहि सु । जुद्ध किन कथ्य नरिंद भ्रम ॥

घार तिथ्य बर आदि । तिथ्य काशी सम भज्जै ॥

असि बरुना तिन मध्य । लोह तेजं सम गज्जै ॥

सिब सिद्ध जोग । सज्जै सकल । अकल अपूरब बत इह ॥

लभ्यो न बीर जिन ब्रह्म पदाछिनक मद्धि गति लम्भि इह ॥ छं० ५०२ ॥

गुरुराम का पृथ्वीराज को बिष्णु पंजर कवच देना ।

पढ़ि सुमंत्र गुर राम । बिष्णु पंजर सनाह दिय ॥

केस कंस मरदन्न । नंद नंदन लिलाट क्रिय ॥

भोह भुअद्धरं धरि समुह । नैन निज्जिय नाराइन ॥

बदन दिद्ध श्रीकृष्ण । हृदय थप्पी मथुराइन ॥

कटि जंघ गुर्वद रक्षा करन । चरन थप्पि अमरन सरन ॥

गुर इष्ट समरि प्रथिराज को । इह सुदिद्ध रक्षा करन ॥ छं० ५०३ ॥

कमधज्ज और जह्व की मृत फोज की शोभा वर्णन ।

बूहा—परि पारस जह्व सयन । मिलि कमधज्ज प्रमान ॥

पट बिय ग्रह मनु नछिन लै । पति सु मडिय भान ॥ छं० ५०४ ॥

किन किन बीरों का मुकाबला हुआ ।

छंद त्रोटक—परि पारस पंग नरिंद घनं । मनो भान सुमेर कि पति वनं ॥

घन सह सुरंग निसान धुनं । मनो बज्जन दुंदुभि देव ननं ॥ छं० ५०५ ॥

चव दून निसान सु कन्ह घनी । जु कियो मिरदार मु पंग अनी ॥

दिसि लच्छिम बालुकराय अर्यो । तिनके मुख कन्ह पजून लर्यो ॥ छं० ५०६ ॥

हुअ ईस दिसान दिसा नृप मान । तिनके मुख भौ रन भाठिय भान ॥

दिसि पूरब भी पुरसान घेंधार । तिन के मुख मडि सलण्य पवार ॥ छं० ५०७ ॥

अग्निनेव दिसा वन सिंघ अचाइ । तिन के मुख मडिय निहूदुर राय ॥

दिसा जम लच्छिन बंधिय फोज । तिनके मुख चामंड दाहूर कोज ॥ छं० ५०८ ॥

सुनै रति छत्र उठ्यो कर बीर । तिन के मुख मडिय चंद पुंडीर ॥

जु बायु दिशा दिशि इंद्रयपाल । तिनके मुख भीम भिरे दिनमाल ॥ छं० ५०९ ॥

सु उत्तर दे प्रभु पंग कुंआर । तिनके रघुवंस बजावत साद ॥

बडे गुर जंबुर हृष्यह नार । मनो गज भह्व की उनिहार ॥ छं० ५१० ॥

१. ए० पति ।

२, ३. पति मो०—पति में नहीं है ।

४. ए० छं० को०—हृष्य हृष ।

छुट्टे गुरजं विवयान सैं । षह तें पलटे मनो तारक से ॥

पति बंधि सनाह सयान करै । अरि के मुख सामंत सूर लरें ॥ छं० ५११ ॥
रात्रि व्यतीत हुई और प्रातःकाल हुआ ।

भयें प्रात जगंतय सूर षरे । तिन कें लरतें ब्रह्मण्ड डरे ॥

गये सब्ब निशा पहु फट्टि ननं । दोउ संगम अंग विअंग घनं ॥ छं० ५१२ ॥

प्रिय प्रातक सीत चलै मधुरं । निशि लीय उसास निसास डरं ॥

बर तोरत तारक भूषन सो । मुष मूदि कमोदनि ना बिगसो ॥ छं० ५१३ ॥

पहु फट्टिय बीर प्रमान नषै । रवि रत्त सुतत्त वियोग लषै ॥

जु भई गति सिध्यल ना मागरी । सर छिप्पन केलि कला निसरी ॥ छं० ५१४ ॥

श्वजि हुंदुभि देव निसान घुअं । प्रगटे सत पत्र सुरंग हुआं ॥

बर रंग जवा सन जोति फिरी । घन देहि असीस चकौ चनुरी ॥ छं० ५१५ ॥

घन रोर चकोर कमोद भगे । जु गए दुरि चोर मु देव जगे ॥

जमुना हुलसी जमराज हंस्यो । जु गयी निमरं भजि तेज सज्यो ॥ छं० ५१६ ॥

बर इंद्र अनंदिय चंद कह्यो । जु सज्यो रथ उंच अरुन्न गह्यो ॥

मु चलयो चक्र एकहु चक्र कह्यो । मु गह्यो कमलं कर की अकरयो ॥ छं० ५१७ ॥

बर उद्वग नीर पवध्र उछं । जु चले सब क्रमज जगि गछं ॥

जु भयो घन ध्रंम मिटी वनिता । वल जाप अजाप न सो जपता ॥ छं० ५१८ ॥

गाथा -- गई सब्बरी मु सब्बं । फट्टी पहुवै नठुयो तिमिर ॥

नम चूरन प्रति किरनं । तरुन बिराड तरुनयो रचयं ॥ छं० ५१९ ॥

प्रातःकाल होते ही घोड़ों ने ठीं लगाई, शूरवीरों ने तयारी

की और दोनों तरफ के फौजो निशान उठें ।

कवित मुफट किरनि पहु बीर । परिय आरत्रि निसा गय ॥

उभय षट्ट प्रगटीय । हक्क बोलन हयनि हय ॥

तिमिर तेज भंजन । प्रमान कमधज्ज नरिदह ॥

मान तुंग चहुआन । जग्य जंपिय कवि चदह ॥

नव गेंह नवभिमिय नव निसा । नव निसान दिशि मान घुरि ॥

सामंत सूर भुज उप्परै । रहसि राज प्रथिराज फिरि ॥ छं० ५२० ॥

शूरवीरों के पराक्रम से और सूर्य से उपमा बर्णन ।

गाथा - सुत्रटं किरनं बीरं । पारस मिसह सेन कमधज्जं ॥

उदयं अस्तमि भानो । मेर पच्छि दच्छिनो फिरयं ॥ छं० ५२१ ॥

रूहा -- दष्विन पत्त सुमेर फिरि । यों पारस पहु पंग ॥

सार धार धारह मिले । सुबर बीर प्रति अंग ॥ छं० ५२२ ॥

१. को०--हुत्त ।

२. को०--बट्टि ।

३. ए०--अवासनि ।

४. ए० हु० को०--षट ।

श्रीपाई— सार धार प्राहार प्रकार । मनौ मत्स्यन पंति विभार ॥

उठे बीर सत्तों विरसाइ । भान पयान न मत्स्युचाइ ॥ छं० ५२३ ॥

पृथ्वीराज का शत्रु हो कर विष्णु पंजर कवच को धारण करना ।

गाथा— ग्रह सुद्धा प्रथिराजं । अष्ट ग्रहं वंकमो विषयं ॥

विष्णुं बीर सुधारं । पंजर भंजे राजयो अंगं ॥ छं० ५२४ ॥

उस पंजर में यह गुण था कि हजार शस्त्र प्रहार होने पर भी शस्त्र नहीं लगता था ।

दूहा— सा पंजर दिय राज बर । सस्त्र लगै नहिं चाइ ॥

कोटि अंग घावह घने । भुज प्रमान सो पाइ ॥ छं० ५२५ ॥

बैकुंठ वासी विष्णु भगवान् पृथ्वीराज की रक्षा पर थे ।

गाथा— बैकुंठह बर वासी । सासी गहनाय गिरन सा धरियं ॥

सो रक्षा चहुआनं । अनरष्या मत्रयो धरयं ॥ छं० ५२६ ॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से कमधञ्ज की सेना की तैयारी होना ।

दूहा— बज्जि राग चौहान भर । उत कमधञ्ज नरिद ॥

सार धार बज्जिय विषम । कहि अनन कवि वंद ॥ छं० ५२७ ॥

आगे यादबराय की सेना तिस पीछे कमधञ्ज की सेना, तिस

के पीछे हाथियों की कतार देकर हामी और धरबी,

का सेना सज कर युद्ध के लिये चलना ।

छंद त्रोटक— मुर तीन फवज्ज सु बंध थपी ।

अग जद्व राइ नरिद रूपी ॥

तिन पच्छ सु बीर सुरंग अनी ।

बिच बंधिय हृथिय पंति घनी ॥ छं० ५२४ ॥

बर हव्वसि किन्नर हूमि बिचै ।

झननंकत पाइक पंति नचै ॥

तिन सौर सुगंध बिछाइ धनं ।

बहु जुझ कपट्टिय मंडि डनं ॥ छं० ५२५ ॥

हय उच्छरि वेह अयास लबी ॥

नव तुट्टि तिनं बनि बारि भागी ॥

अरबी सरसीरुह संकुचिता ।

चकई चक मूकति चूक तता ॥ छं० ५३० ॥

१. मो.— नितम्बनि ।

२. ए० छं० को०— संकुरित, संकरित ।

पवनं गवनं नन पंष वहे ।
नव नेज घजा 'धन लगि रहै ॥
फन फू ६ फनं पति को विसरी ।
मुदरी दिग अहु दृगं घुँघरी ॥ छं० ५३१ ॥
घन बज्रत घंट सघट घन ।
नव नीरथ नारि निभंग मन ॥
ढलकै गज ढाल सुनेज बनं ।
चमकै बल के मन चौज मनं ॥ छं० ५३२ ॥
तिन की उपमा कविचंद करी ।
मनों मेघ महेंद्रव बीज झरी ॥
घन मन्त्रिय नद् बिबंक सुरं ।
सुभिहै बिब हथ्य घजा विथूरं ॥ छं० ५३३ ॥
गज नद् ज जीरन के घुरयं ।
मनों वधिय सिंगुर सा सुरय ॥
तिन के कछु दान कपोल झरे ।
सु मनी नभ के वरसे बदरे ॥ छं० ५३४ ॥
बजि लाग निमान घमंक सजी ।
सहनाइन सिधुंभ राग बजी ॥
नव नारद सारद ते किलकं ।
नव बंदि बिरद् नदे हलकं ॥ छं० ५३५ ॥
घन देषि अरिष्ट मुबाल डरी ।
मुदरी नव आनद चित्त हरी ॥
कमघज्र कला चढ़ती बर पेषि ।
मुंदरी ससिवृत्त दइ शशि लेखि ॥ छं० ५३६ ॥

सेना की सजावट की शोभा वर्णन और उसे देख कर भूत बेताल
योगिनी आदि का प्रसन्न हो कर नाचना ।

निसाणी- फौज रची तिन दोय घन मध्य मसंदा ।
जालिम जोघ जुवान सेर रस बीर रजिदा ॥
अगं उधभा अप्प आइ जादव्य नरिदा ।
मनी उधभै मेर कै अह्डी अग डंदा ॥ छं० ५३७ ॥

१. मो०--घन ।

२. मो०--चमकै बलकै यमकै जमनं ।

३. ए०--हु०--हो०--वति ।

४. मो०--पेषि ।

पीछे ठाढ़े राठ बड़ बल जे विचरंदा ।
 जानकि उत्तर उन्नया घन लीह सहंदा ॥
 पाइक पति अपार बर जनु मोर नचंदा ।
 बाग गहिगहि बाज कीन रन बीर नषंदा ॥ छं० ५३८ ॥
 बीरा रस्स उतावल न रहै बरजिंदा ।
 अलबेला सु उछंछला अनमी अवलंदा ॥
 गाहड़ मल्ल गुमान गुर गुन गात सुरंदा ।
 बजे निसान नफेरियान घोर घुरंदा ॥ छं० ५३९ ॥
 लस बीर सुनंत तन तामस्स भरंदा ।
 सुनि चौसठ्ठी जुगिन किलकि किलकंदा ॥
 भूत भयानक भाव भरि भहरें भहरंदा ।
 येइ येई गति बेत्र पाल किलकार करंदा ॥ छं० ५४० ॥
 बावन बीर 'वल्लिष्ट बल करि बिलसंदा ।
 देखें देव विमान चढ़ि कौतिग अनंदा ॥
 तारी दै दै तान तुट्टि नारह नचंदा ॥ छं० ५४१ ॥

गाथा— नंचै नारद सिद्धं । बुद्धिवंत सुभट्टाई ॥

बंधे बुधिवर भट्ट । सहकारं बीर भट्टायं ॥ छं० ५४२ ॥
 सुसज्जित सेना से पावस की उपमा वर्णन ।

चौपाई— नाम नाम जिम पूरन स्याम । तडित बेन धुषकी घर घाम ॥

गजित सिंह अपास सबह । करनि भजिज होतेजिन मह ॥ छं० ५४३

गाथा— मदंक रीति भग्गा । चाकास यो सद्यो सहं ॥

सो क्रमं वर मंचं । फेरे अकुंस सीसए मारं ॥ ५४४ ॥

अंकुस लगा कर हाथी बड़ाए गए और शस्त्र निकाल कर
 शूरवीर लोग आगे बढ़े ।

बुहा--अकुंस मारि प्रहारि गज । बंधन अध पूजान ॥

शस्त्र कटिठ समुह भिरन । घनि संभरि चहुआन ॥ ५४४ ॥

कमघज्ज के शीश पर छत्र उठा उसकी शोभा ।

अल्लि—उठ्यो छत्र कमघज्ज नरिदह शीश पर ॥

मनों कनकक दंड पर ज्युं इंदी इंदवर ॥

घोड़ों की टापों से आकास में धूलि छा गई ।

हय घुर उच्छरि बेह अयासह धुंधरी ।

बान मंग प्रथिराज देवनह उत्तरी ॥ छं० ५४६ ॥

चहुआन का छोड़े पर सवार होना ।

बुहा—बहकि निरह नष्वर भिदै । यह पारथ पवित्रान ॥

सो प्रति सारह उत्तरन । फिरि चढ्ठयो चहुआन ॥ छं० ५४७ ॥

उस दिन तिथि बसमी को युद्ध के समय के तिथि योग
नक्षत्रादि का वर्णन ।

कवित्त—देव दसमि दिन दीह । दीह पढरो नरिदं ॥

गुरु पंचम रवि नमो । सुवर ग्यारमो सुचंदं ॥

त्रतिय धान बर भोम । सुक्र सप्तम बर कीनी ॥

नृप सुपनंतर आइ । ईस १जीपन बर दीनी ॥

चौमठ्ठि पुठ्ठि वि पुठ्ठियन । अरिन सेन संमुह २परे ॥

त्रिबोष सह बज्जंन सब । सुवर लोह कढ्ठे करे ॥ छं० ५४८ ॥

युद्ध वर्णन ।

छंद त्रिमंती—कविचंद्र सुवरनं करै सुकरनं सूरह लरनं भर भिरनं ॥

तिरभंगी छंदं नाग नरिदं कथ्य करिदं दुष हरनं ॥

१पढ़ मंदह मत्ता पुनि अठ मत्ता असु वसु मत्ता रस मत्ता ॥

घन घाइ सघता सूर सरता में गल मत्ता करि घत्ता ॥छं०५४९॥

बज्जै बर कोहं लगी लोहं छक्कै छोहं तजि मोहं ॥

सूरा तन सोहं स्वामिन दोहं मत्ते डोहं रिन डोहं ॥

बर बान बिछुट्टे बगतर फुट्टे पारन घुट्टे धर तुट्टे ॥

तरवारनि तुट्टे धम्भरलु ट्टे अंग अहुट्टे गहि सुट्टे ॥ छं० ५५० ॥

बीरा रस रज्जं सूरस गज्जं सिधुअ बज्ज गज गज्जं ॥

अच्छरि तन मज्जं बरे बर जज चित्ते बज्जं मन मज्जं ॥

कायर रन भज्जं तज्जि सलज्जं स्वामि सु कज्जं भर सज्जं ॥

जम दढ्ठ सु सज्जे ह्य्यह मज्जे छिन्छन छज्जे रिन रज्जे ॥छं० ५५१ ॥

घायल सामंतों की शोभा ।

सोरठा—रिन मंते सामंत । घाइ अंग तज्जे घने ॥

मनो मत्त ३मय मंत । बिना महावत रारि मिलि ॥ छं० ५५२ ॥

सूरवीरों का क्रोध में धाकर युद्ध करना ।

छंद, मुजंगी—कठे लोह कोहं कुदीनंति बज्जै ।

सजे सामसं राज सा ४तुक्क तज्जै ॥

१. को०—जीयन ।

२. मो०—परै, करै ।

३. ए०—छं०—को०—परि मंदह मत्तापुर नन्दी ।

४. ए०—छं०—को०—मैं ।

५. मो०—सास्विक ।

१कटे कंधे सूरं मिले सार कोहं ।
 सना हंत सूरं फिरै १वेश सोहं ॥ छं० ५५३ ॥
 उड़े टोप टूकं बजै सार घंटे ।
 मनो अग्न दंभी लगी बंस फुट्टै ॥
 मनो मीन माया जलं सब्ब तुट्टै ।
 ॥ छं० ५५४ ॥

असी मंस तुट्टै करं कंस हल्लै ॥
 मनो कग्गदं काल बूतं सु चल्लै
 सु भट्टं सु सूरं कुघट्टं सु कीनं ।
 उलथ्ये सभेजी घृतं जान धीनं ॥ छं० ५५५ ॥
 चक्षुयो पावसं जद्दुबं संभरेशं ।
 दलं बहलं सहलं ते नरेशं ॥
 घनं घोर घंटा निसानं दिसानं ।
 तिनं भूलियं सब्ब आषाठ मानं ॥ छं० ५५६ ॥
 झबै दामिनी तेग देगं प्रमानं ।
 पढ़ै भट्ट बीरं बुलै मोर बानं ॥
 लगै बाइ बुठ्ठे सरं सार गोरी ।
 रुघि नार मानो प्रवाहै स १जोरी ॥ छं० ५५७ ॥
 करै कायरं त्रीय करुना प्रमानं ।
 लगै बाह कालंदि चंपे समानं ॥*
 ऊनं त्रीय जंपी उनं पीय जंपी ।
 सोई ओपमा चंद बरदाइ थप्पी ॥ छं० ५५८ ॥

कवि का कथन कि उन सामंतों की जहां तक प्रशंसा की
 जाय थोड़ी है ।

ब्रह्मा—देवप्पति देवह सु दुति । मति सामंत सधंत ॥

जिन अच्छरि सच्छरि कहीं । सो जस बढि बर कंत ॥ ५५९ ॥

बाधा—जस घवली वर बढयं । त्रय लोकं साध १यो तरयं ॥

जानिज्जै परिमानं । सतं समुद् सीचयो नीरं ॥ छं० ५६० ॥

१. ए०-क-को-रडे ।

२. ए०-क०-क०-वेस ।

३. ए०-जारी ।

*ए०-क०-प्रतियों में इसके आगे ये दो पंक्तियाँ हैं ।

उने मीन प्राप्तं उने सत्र सारं । लभ्यो काइरं कामनी ना प्रभासं ॥

४. ए०-क०-को-छी ।

५. ए०-मीय

छंद लक्ष्मणोटक—मिलि जुद्ध मच्यौ । रन बेत रच्यौ ॥

सम सार सच्यौ । नत्र एरु मुच्यौ ॥ छं० ५६१ ॥

रस बीर षच्यौ । तन रारि तच्यौ ॥

कहै जाई वच्यौ । ॥ छं० ५६२ ॥

जुगनि जितनी । किलकें तितनी ॥

घन घाइ घुरें । पट सीस परें ॥ छं० ५६३ ॥

दोउ बीर बड़े । लगि लोह अड़े ॥

घट घाइ पड़े । झुर होइ झड़े ॥ ५६४ ॥

सस केश डफें । तन सों तडफें ॥

फिफरा फड़कै । कठि सों कड़कै ॥ छं० ५६५ ॥

पग हथ्य परें । ढी चाल ँदुरें ॥

घक घीग घकें । मुष मार बकें ॥ छं० ५६६ ॥

रस बीर छकें । हक हक हकें ॥

बहु सूर लरें । नृप भार परें ॥ छं० ५६७ ॥

कमधज्ज के बीर सवास का युद्ध और पराक्रम वर्णन ।

दूहा—सुबर बीर सावास भिरि । मुक्कि सु ग्राम घमारि ॥

सो ओपम कविचंद कहि । झुकि कड्डी परिहार ॥ छं० ५६८ ॥

अरिल्ल—मोह पारि जिन छंडिय सूर । तिरन बीर भारथ्यह पूर ॥

दैव जुद्ध आकृति अबुद्ध । कड़े लोह दुव कोदह जुद्ध ॥ छं० ५६९ ॥

छंद विराज—कड़े लोह बीरं । महा मल्ल तीरं ॥

हको हकक वज्जी । गिरं जानि गज्जी ॥ छं० ५७० ॥

कडें मत्त मंती । अवृतं न दंती ॥

वहै लोह सारं । प्रहारंत भारं ॥ छं० ५७१ ॥

सनके सनंक्की । रथं भान थक्की ॥

हलक्कंत सूरं । बजे देव तूरं ॥ छं० ५७२ ॥

उतं मंग तुट्टै । घरी दोम लुट्टै ॥

घरी इक जानं । सु भारथ्य मानं ॥ छं० ५७३ ॥

दूहा—सुबर बीर सावास विजि । कड्डी बंकी अस्सि ॥

सोभै सीस गयंद कै । मनुं तेरस को सस्सि ॥ छं० ५७४ ॥

१. ए०—क०—को०—रच्यौ

२. मो०—डरे ।

३. मो०—बरी ।

सबास तो मारा गया परंतु उसका अर्धांड यज्ञ युगान युग जलिया ।

कवित्त—सुबर बीर साबास । विविक्त कदवी सु बंकि असि ॥

सुभ्रै सीस गज राज । अट्ट तेरसि कि बाल ससि ॥

मुट्टि चंपि द्रग पानि । नीर वानं सुद्धारह ॥

मनु मुत्तिय बारुन्न । बंदु बंधे इन बारह ॥

साम रम देन पावरि धनि । स्वामि सु अंतर फुनि मिलिय ॥

जीरन 'युमास सदेस सदि । गल्ह एक जुग जुग चलिय ॥ छं० ५७५ ॥

सबास के मरने से कमधज्ज को बड़ा दुःख हुआ और उसने अपने

मंत्रियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिए ।

सुबर बीर कमधज्ज । राज संमुह अरि झारिय ॥

मरन धूज साबास । मरन अप्पन्नी विचारिय ॥

सब सु सध्व पुच्छयी । तंत मंतह उच्चारिय ॥

सकल मंत रजपूत । मंत मो देहु सुचारिय ॥

हारिये धूम जिते सुसब । ता उप्पर तन रषिये ॥

मो मंत सुनी तोहं कहूं । दुज्जन दल बल मरिषिये ॥ छं० ५७६ ॥

मंत्रियों का कहना कि समय पड़ने पर सुग्रीव, बुर्योधन,

श्री रामचन्द्र, पांडव, अर्जुन इत्यादि सब ने

अपनी अपनी स्त्रियों को छोड़ दिया ।

एक समे सुग्रीव । त्रिया रषी न अप्प बल ॥

एक समे दुरजोध । क्रुभि पुक्कार मंडि कल ॥

एक समे श्रीराम । त्रिया अप्पनी न रषी ॥

एक समे पंडवन । चीर कदूत द्रग लषी ॥

रषिय न गोप पारथ बलिय । ससि सुबैर तारकक बर ॥

त्रिघात वात गोविंद बिना । जीव रषिन सबंग गहि ॥ छं० ५७७ ॥

कमधज्ज के मंत्रियों के मंत्र देने के विषय में कवि की उक्ति ।

बुहा—भल भल तुरी चढत बर । तिन अप्परन अवार ॥

मरन जानि भूतंग हर । कट्टर चढे तुवार ॥ छं० ५७८ ॥

कवित्त—सु कवि गत्ति ननग्रही । कु कवि गतिय सु क्रम बदन ॥

सकिल वानि बोलै न । कठिन कुम्बचन सु स्वदन ॥

छूटत घोट कवित्त । चित्त लहु गुरन प्रकासं ॥

अघट घाट गुन करै । घाट सुद्धं न प्रगासं ॥

अच्छरि सुरंग जै जै करहि । बेन प्रस्तावन पढिदये ॥
घन घट्ट घट्ट झुझ्यो करै । कुकुरि जे महि चढिदये ॥छं० ५७९ ॥

दूहा—फेरि पंति पारस सु वृत । अर्गति करी नहि गति ॥
जिन साई सघनी कला । बनि सामंति सु मत्ति ॥ ५८० ॥
मंत्रियों के मंत्र के अनुसार कमधञ्ज ने अपनी घनी मोड़ली ।
सुनति मत्ति पारस फिरि । सुभट सेन कमधञ्ज ॥
एक लष्व दल लष्व में । घनि सामंत सु रज्ज ॥ छं० ५८१ ॥
कमधञ्ज की सेना के फिरने से सामंतों का बिल बढ़ा ।
गाथा—लगा दल बल कलनं । सिधुर असमान सीस गोरनयं ॥
बल बढ़घा सामंतं । कायर कर षेव सूर क्रम छलयं ॥ छं० ५८२ ॥

दूहा—बल छत्रिय मंत्रिय तरन । भिरि भंजै गज दंत ॥
रंभ अरंभन वूढए । अचछे अच्छरि कंत ॥ छं० ५८३ ॥
झुकि भारी भगवान भिरि । राम कुलह कुल चंद ॥
सार-सार समुह भिन्यो । स्वामि सु मेटन दंद ॥ छं० ५८४ ॥
रघुवंसी कमधञ्ज झुकि । बंध सु पंग नरिद ॥
सो ओमें देखी सबर । कहि तत्तो कविचंद ॥ छं० ५८५ ॥
वसि कीनो सामंत जुरि । बल अबुद्धि बुद्धि घेन ॥
छिति संग्रह संग्राम किय । बल बलिष्ट बल तेन ॥ छं० ५८६ ॥

गाथा—इंकी काल उछारे । उछारंत मत्त नो हृष्यी ॥
मत्ती मत्त मुमतं । सो दिट्ठो भारथं नथ्यी ॥ छं० ५८७ ॥

कवित्त—कहै मात बड़ कीय । सुरत मत्ती अष्वारै ॥
दुति पहार संभार । बीर बीरह बिच्चारै ॥
रघिर बूढ कंदल । परत कंदल परि उठुं ॥
सार धार निरधार । सार धारह असि बुठुं ॥
चावंड राइ दाहर तनी । तिन बोहिष चढ़ि उत्तरै ॥
बीजलह दाग तिलकं मिसह । अदग दग नहि विस्तरै ॥ छं० ५८८ ॥

गाथा—सो दग्गंत तिलकानं । सो दिष्टाय सारयो सरयं ॥
अपकिली मिस दग्गं । ना लगगंत तासयं कुसलयं ॥ छं० ५८९ ॥
बिस कुल में चामुंड है उसको दाग नहीं लग सकता ।
दूहा—तिन कुल दग्ग न लग्न बर । जिन कुलबल चावंड ॥
दोष रहित अच्छरि अभी । किए वंड पावंड ॥ छं० ५९० ॥

१. मो०—छलनं । २. ए० कु० को०—छल । ३. ए० कु० को०—पयो ।
४. मो०—सुविचारी । ५. ए० कु० को०—चावंड ।

अरि मंडल षंडल करन । तिरन मोह मति 'सिध ॥
 रस्स बली बीरा विषम । ले भारथ्य सकंध ॥ छं० ५९१ ॥
 दुपहर के समय कमधज्ज की फौज फिर से लौट पड़ी ।
 कंध बंध संधिय निजर । परी पहर मध्यान ॥
 तब बहुन्यो पारस फिरिय । फिन्यो 'भीछ चहुआन ॥ छं० ५९२ ॥
 कमधज्ज और चहुआन खड्ग लेकर अनी घम्म में प्रवृत्त हुए ।

कवित्त - छल संज्जयी बल जोग । बुद्धि बलजोग पसारिय ॥

चहुआन कमधज्ज । षग षत्रीवस डारिय ॥

रत्तन जुद्ध विरुद्ध । सह सह मति कीनी ॥

चावदिसि विढदुरै । बीर बीरं रस पीनी ॥

संग्राम घाम घंमार परि । काम घाम घम्मर तजि ॥

सामंत सूर सामंत बर । धीर बीर धारहति लजि ॥ छं० ५९३ ॥

शूरबीर हाथियों के दांत पकड़ पकड़ कर पछाड़ने लगे ।

दूहा - में लज्जानी लज्ज बर । गब्ब दब्ब सामंत ॥

अंत अलुङ्गय पंति पय । भिरि भंजै गज दंत ॥ छं० ५९४ ॥

भै वृत्त अवृत्त सरीर गति । सिध सरोज सु पान ॥

सूर बदों सामंत दुज । जिन अप्पं जिय दान ॥ छं० ५९५ ॥

जीव दान अप्पन सु वृत्त । दल दतिय बदि कंत ॥

हनुमान जिम द्रोन बर । बारधि मंत 'सुपंति ॥ छं० ५९६ ॥

चौपाई - बार बारधि बर पति सुमान । सूर धीर सामंत सुजान ॥

दल बल बल विछोरहि बीर । षग मुष झलकंतह नीर ॥ छं० ५९७ ॥

महाभारत में अर्जुन के अग्निबाण के युद्ध से इस युद्ध की उपमा देना ।

कवित्त - षग मुष बर चद्धिये । घाइ तुट्टै है राजं ॥

बार बार हक्कही । करै अग्या बिन साजं ॥

'बाल स्वामि अग्या । विभंग चित ओपम चंदं ॥

त्रिय कठोर निर्दंन । क्रमे अग्या गुन मंदं ॥

करतलह सु कवि कित्तिय सुबर । पथ थक्कै अजान जिम ॥

भारथ्य वीर पारथ्य जिम । अगिवान सामंत भ्रमि ॥ छं० ५९८ ॥

घोर संग्राम का वर्णन ।

छंद हनुफाल - इति हनुफालय छंद । कवि पढ़ै भारथ चंद ॥

भ्रम भ्रमहि बीर प्रकार । ज्यों चक्र चक्रिय धार ॥ छं० ५९९ ॥

परि षट्टै एक विषट्ट । बर बीर भंज्या पट्ट ॥ छं० ६०० ॥

१. ए० छं० को०-छंद, छंद । २. नो० श्रीव । ३. ए० छं० को०-सुपावि ।

४. नो०-श्रीव वाजि ।

५. ए० छं० को०-परि ।

दूहा - पट्टन भंज्या बीरवर । ज्यों दहीच सु अस्ति ॥

देवकाज बज्जी लियो । सोइ बर तत्त सबति ॥ छं० ६०१ ॥

कवित्त - बस त्रतीय प्रहार । घाइ बज्जै घट घुम्मे ॥

मार मार उच्चार । सार सारहु बर घुम्मे ॥

एक मार संमार इरु । सु मारति तै मारै ॥

एक झार उझार । एक जारति उझारै ॥

घरि एक तरंगनि जक्कि जल । कमल जानि नंच्योति सर ॥

सामंत सूर सामंत बल । पहर बज्जि बज्जे पहर ॥ छं० ६०२ ॥

दूहा - नहर बज्जि पर पहर बर । पहर पहर आवृत्त ॥

मत्त दंत मद्दह सुकै । वान राज सावृत्त ॥ छं० ६०३ ॥

वान राज सावृत्त दुति । छिति छी आकार ॥

घनि सूर जे अंग में । घनि शिल्लै सु दुधार ॥ छं० ६०४ ॥

गाथा - दुद्धार सार महियं । हय गय नर बीर बीरायं ॥

जुद्धिय धीमति धीमं । सा बीरं बीरयो राजं ॥ ६०५ ॥

बीरं राजिय बीरं । बीरं बीर सु बीर मुष बीरं ॥

बीरं होइ सबीरं । सो बीरं उच्चियं नथ्यी ॥ छं० ६०६ ॥

दूहा - नथ्यह मुञ्जी बीर बर । वल वंकम घट वाइ ॥

घरी एक आच्चिज्ज भौ । जोति मग विरुझाइ ॥ छं० ६०७ ॥

छद भुजंगी -

विश्वशाय उट्टे रनं रोस बीरं । महा मत्त दंतीन की पंति भीर ॥

गहै दंत घावै सु बाहै पचारै । महा मत्त बोले सुवारं अषारै ॥ छं० ६०८ ॥

कली क्रिन् कूदं करै इरि दंदं । बजै सार सारं महा काल मंदं ॥

महा ठट्ट घट्ट अहुट्टै जु थट्ट । बजै घाइ ऐसे बकै जानि भट्ट ॥ छं० ६०९ ॥

रुधि धार रनी सु मत्ती उछारै । इमी बीर बत्ती सु भारथ्य भारै ॥ छं० ६१० ॥

दूहा - भारथ्यह नथ्यी सुवृत्त । अवृत्त वृत्त गति देव ॥

जिन साई दुज्जन हृत्यो । सो साई प्रति सेव ॥ छं० ६११ ॥

सेव देव देवन सुबल । संघत गिद्ध सु मंस ॥

मोह पान माया सुकृत । उडत मुक्कि तिन हंस ॥ छं० ६१२ ॥

हंसन हंसिय हंस बर । मुगति सरोवर बीय ॥

तनु छंह्यो उह मंडि कै । निसा भ्रम्म नह नीय ॥ छं० ६१३ ॥

हू साई पर हूप्यरें । परम तंत पद पाइ ॥

देवगिरि भंजन मती । रा चामंड विरुझाइ ॥ छं० ६१४ ॥

कवित्त—रा चामंड जैतसी । राम बड़ गुजर बुल्लिय ॥
 बलियभद्र बलिराम । सार धारह मति पुल्लिय ॥
 कलह किती विस्तरै । राह निड्दुर सम सारं ॥
 दुहु बोल दुध चरन । मरन किती अधिकारं ॥
 बैकुंठ लेन लिन्ने सु षग । विहूँग मग पंवी सुगति ॥
 नरसिंह सिंह छंडै नहै । सार धार मारह दिपति ॥ छं० ६१५ ॥

गाथा—सारं धार वरदियंति । रुधिरं छंडेव सूरयो अंगं ॥

जानिऊजै मधु मासं । सा फूलेव षण्णरो वनयं ॥ छं० ६१६ ॥

अरिल्ल -रत्त सु रत्त सु बीर उडाइय । घाइ मृदंग उपंग बनाइय ॥

के माया मोह गति छंडै । काल दंड कालह कृत छंडै ॥ छं० ६१७ ॥

बुहा—काल दंड षंडन करै । भिरै बीर भारध्य ॥

सुबर बीर सामंत गति । दै दुवाह पारष्य ॥ छं० ६१८ ॥

पारथ पारत्थिय सुवृत्त । सारधिय बहुवान ॥

मानहु बीर समुद्र गति । तिरन मते ध्रम पान ॥ छं० ६१९ ॥

प्रातःकाल से युद्ध होते संध्या हो गई और कमबख्त की

सेना मुड़ गई परंतु चौहान की सेना का बल न घटा

ध्रम्म पार सामंत बर । उदे अस्त भी भान ॥

बहुरि पंग पारस फिरिय । बल न घट्यौ बहुवान ॥ ६२० ॥

दोनों सेनाओं के बीर युद्ध से संतुष्ट न हुए तब इधर से

श्रीमराय और उधर से मृत बवास के भाई

ने कूट होकर धावा किया ।

कवित्त -बल छंड्यौ न विराज । सूर उष्मे दुअ पासं ॥

अंधारौ रा भीम । स्वामि सन्नाह सुभासं ॥

दुहु वाहां सामंत । दून दह दहु अधिकारिय ॥

अमर बधं बावास । षग षोल्पी षिभि सारिय ॥

अंधार राव जोगिंद बर । भुगति मुगति अप्पन अनिय ॥

तामस न बुझ्यौ दोउ सेन कौ । वजि निसान आभा धुनिय ॥ छं० ६२१ ॥

गाथा—आभ सुनिय सु देवो । बज्जे साराह मुंदरे बज्जे ॥

नीसानं मिति सारं । साहारं पारबं होई ॥ छं० ६२२ ॥

बुहा—पर पबरस पबिभ गति । रा निड्दुर राठौर ॥

बंधु दोष जान्यो नहै । स्वामि ध्रम पति मीर ॥ छं० ६२३ ॥

स्वामिकाव्य के लिये जो शरीर का मूल्य नहीं करता वही
सच्चा स्वामिभक्त सेवक है ।

कुंडकिया— तजिय पुंज षावास बर । तिरन तुंग तन श्रष्य ॥
चरन लग्नि बछ्यो मरन । सो सांइ भ्रत तप्य ॥
सो सांई भ्रत तप्य । जन्म जानत जंजारे ॥
... .. ॥

मयन मत्त विच्छुरिय । मोह पारी तजि पगिय ॥

धनि निड्डुर रट्टीर स्वामि छल स्वामि सु जगिय ॥ ६२४ ॥

गाथा - जगिय स्वामित कामं । ध्रमियं बीर बीर विस्तारं ॥

तिम तिम तामस तेजं । सेनं सज्जि मुक्ति साधीरं ॥ छं० ६२५ ॥

शशिबूता का व्याह भय है जिसमें अनन्त धीरों को मुक्ति मिली ।

मुक्ती धारन धीरं । पंजर सज्जेव मध्यनो परयं ॥

बर ससिवत्त सु व्याहं । दाहं देहाइ दुष्वनो तजयं ॥ छं० ६२६ ॥

कमधज्ज के बस बड़े बड़े शूरवीर थे थे

बसों इस युद्ध में काम आए ।

दूहा— देह दुष्व कट्टिय सुक्रम । रन जित्तिय सुग पान ॥

पंच इन पंचो परिग । सुनिय बीर रस पान ॥ छं० ६२७ ॥

गाथा— परियं बीरति नामं । सुरति त्रीइह नंदह घट्टी ॥

सजले सूर सुघारी । भारी भरनेव भारयं भिरयं ॥ छं० ६२८ ॥

कमधज्ज के जो वीर मारे गए उनके नाम ।

दूहा - परे सूर तिन नाम कहि । बरनत बनै विसेष ॥

देव देव अस्तुति करहि । नाग रघ्यौ सिर सेष ॥ छं० ६२९ ॥

छंद भुजंगी परे बीर बीरं तिनं नाम आनं ।

पर्यौ पुंज राजं महा वीर थानं ॥

पर्यौ देव सिद्धंत सादुल्ल बंधं ।

मुर् षग नाही भयो रंध रंधं ॥ छं० ६३० ॥

पर्यौ किल्ह कामं जु जहौ जुवानं ।

तिनं कट्टिया जेन गयदंत मानं ॥

वर्यौ बीर भट्टी कियौ अंग घट्टं ।

जिनं मोरिया पंभ रा मीच थट्टं ॥ छं० ६३१ ॥

पर्यौ राइ राइं अजम्मेर सूरं ।

जिनं स्वामि धर्मं तण्यौ सिध पूरं ॥

पर्यौ अंग अंगं सु जर्जोन रायं ।
 लगे पंच दूनं महा बीर चायं ॥ छं० ६३२ ॥
 परे पंच बंधो बलीभद्र बीरं ।
 जिनें अंग अंगं कियौ सा सरीरं ॥ छं० ६३३ ॥

कवित्त —परत देव वर क्रंन । सरन रष्वन साई बर ॥
 परि मुष रन पुंडीर । सार सारंग देव धर ॥
 पर्यौ बीर बलिभद्र । जात पावार पवित्रं ॥
 धार धनी चढि धार । सलष लष्वन दुति मंत्रं ॥
 लाषन्न सिंह भुज पाइ बर । अरिन पाइ उहुइ लिय ॥
 धनि धमि सूर सामंत बर । जुग जीरन जीरन सुजिय ॥ छं० ६३४ ॥

सूरबीरों की प्रशंसा ।

डूहा —जुग जीरन जीरन सुबर । बरन कित्ति सा सिद्ध ॥
 सुबर बीर सामंत बर । गति न पुज्जै सिद्ध ॥ छं० ६३५ ॥
 सिद्ध न पूजै गति तिन । छाया मोहन माय ॥
 इन छाया मंडी तहां । धंम छांह रहि छाइ ॥ छं० ६३६ ॥
 धंम छांह रहि छाइ बर । करिय सूर सामंत ॥
 सो करनी करिहै न को । करिय बीर गुन मंत ॥ छं० ६३७ ॥
 गुननि मंत गंभीर गुर । जै जै सद् सु सिद्ध ॥
 बरन बिहुसि बरनिय बरहि । रंभ अरंभन सिद्ध ॥ छं० ६३८ ॥

गाथा —रंभा अरंभं वरयो । अच्छी अच्छीव अच्छरी सरनौ ॥
 केकी गवनी कित्ती । साकित्ती बंधयौ रष्यी ॥ छं० ६३९ ॥

चौपाई —बद्धि रषिष कित्तिय परिकार । सार सिध उत्तर बन पार ॥
 जोग सिद्ध जोगाधिय अंत । बजि डक डमरु उमया कंत ॥ छं० ६४० ॥
 उमा कति जोगाधि सु जानै । बीर सगुन बीरा रस मानै ।
 जै जै सद् भयो जिन वार । राज द्वार धरियार विभार ॥ छं० ६४१ ॥

डूहा —राज द्वार धरियार बजि । सार बजिज रति सार ॥

सूर सुमति सामंत की । बीर उतारन पार ॥ छं० ६४२ ॥

श्लोक —सु उतारन पारति बीर भटं । षटकै धन नद् उमद्व षटं ॥
 जननकत हृष्यत हृष्य करं । मनु पाइक पति पुंतार बरं ॥ छं० ६४३ ॥
 किधौ केवल की मुगति मति पान । किधौरस बीर बिभक्त सु मान ॥
 किधौ कहना करकै किनु काय । मनों मय मल भिरं रस आम ॥ छं० ६४४ ॥

- किष्ठीं विधि बंधन बंधहि धोर । पढ़े दोउ मंत्र सु वीरह और ॥
 करे दोउ बीर दुहाइय मुष्य । मनो रवि उगव मासम मुष्य ॥ छं० ६४५ ॥
- दूहा—पुष्य मास रवि उगयो । भूमि न छिन्न सीस ॥
 मनहु बुद्ध बंदन सु बुधि । करन काम क्रत ईस ॥ छं० ६४६ ॥
 क्रतन ईस बल बुद्धि बल । बुद्धि पराक्रम संधि ॥
 सुबर बीर संग्राम गुन । अति गुन निर्गन बंधि ॥ छं० ६४७ ॥
- गाथा - बंधे बुद्धि सुधारे । प्राहारे बीर सु भट्टायं ॥
 निजंत नेह सुधारी । आहारी अंकुरी बीरं ॥ छं० ६४८ ॥
- दूहा अंकुरि बीर शरीर गति । सुभट सुषट्ट सुभट्ट ॥
 अघट घट्ट नह कियो परे । परे बीर दह पट्ट ॥ छं० ६४९ ॥
- कमधऊज का स्वेत छत्र देल कर चामुंड राय का उसे काट देना धोर
 सब सेना का आश्चर्य और कमधऊज की सेना में हाय हाय मच जाना ।
- कवित्त -हाइ हाइ आरिष्ट । दिष्ट अंबरिय सूर बर ॥
 मुकि कर बल चामंड । करहु गोलक उप्पर घर ॥
 गोलक तुं बा भग । बंध भगै चहुआनं ॥
 स्वेत छत्र दिशि सीस । पर्यौ कमधऊज निधानं ॥
 घरी एक विभ्रम भयो । सार सार प्राहार बर ॥
 जानै कि मति दंतिन कला । कूट मंत्र धारह सुधर ॥ छं० ६५० ॥
- दूहा धारा हर बित्यौ सुधर । चर चरिष्ट चतुरंग ॥
 रा निड्डुर रठौर बर । रुप्यो वेत भ्रत भंग ॥ छं० ६५१ ॥
- गाथा पगुर पाइ सुधारं । पंगु भयो चित तिन बीरं ॥
 नह पंगुर कर नैनं । पंगुर नां सूरयो बैन ॥ छं० ६५२ ॥
- दूहा बयन सूर चंचल भइय । निहचल पग सिर नाग ॥
 अदग दग भजै सकल । करत अदग न दाग ॥ छं० ६५३ ॥
 अदग दग मग्गिय सु कृत । बर बीरा रस पान ॥
 छित्ति छित्ति स्वामित्त गति । सु कति सु अप्पन बान ॥ छं० ६५४ ॥
- कवित्त घरी इक्क रंग । रग सवरथ बिछोरिय ॥
 पगी जानि पारष्य । जेम दरिया हिल्लोरिम ॥
 यों 'षग घपि दोउ सेन । सूर मामत त्रिलोकिय ॥
 मनो मत्त उठि द्रष्टि । पिय बीयोग विसोकिय ॥
 मुम्मयी धार धारह घनी । मुनिय कित्ति मित्तह पनी ॥
 सामंत सूर सामंत गुन । सु 'बर बीर सत्तह सुनी ॥ छं० ६५५ ॥

छंद रसावला—सार सुद्धी अनी । मत्त मत्तं धुनी ॥

कह मञ्ची घनी । अंत सुद्धं रनी ॥ छं० ६५६ ॥

बीर बीरं अनी । देव बज्जी धुनी ॥

नेह भंज्यौ घनी । काल १जैसो पनी ॥ छं० ६५७ ॥

बीर बीरं बनी । रत्त रंगं रनी ॥

सार सारं धुनी । जोति मगं जनी ॥ छं० ६५८ ॥

पिड सारे घनी । कन्डि २चंदं तनी ॥

... .. । मुक्ति ३लुद्धं फनी ॥ छं० ६५९ ॥

बूहा—फनि मनि लट्टन काज गुर । भौ गुर इत गुर देव ॥

सार सूर संम्हौ भिरिय । बरन पथ्य मुख सेव ॥ छं० ६६० ॥

कमबलज का छत्र गिरने से सूरबीरों को भय न हुआ ।

गाथा—लगिय त्रास न सूरं सुभटाइ मत्तयो दंती ॥

जानिज्जै परिमानं । भारथ्यं बीरयो कंती ॥ छं० ६६१ ॥

बूहा—हल देवत विछरत्त बर । परषिय जंपहि जोग ॥

सुबर सूर सामंत गुन । ४श्रुग मत्त ५मति भोग ॥ छं० ६६२ ॥

स्त्रियों की प्रशंसा ।

भोग जोग दुभ विद्धि विघ्न । दान भुगति संगाइ ॥

त्रीय कहै नट्टे सु त्रिय । त्रियन गती मुह पाइ ॥ छं० ६६३ ॥

त्रियन गति पावहि पुरुष । धरन धरत्तिय ताम ॥

सूर घोर सूरह भिरत । बर विश्राम तजि जान ॥ छं० ६६४ ॥

चौपाई—एक एक उट्टै परिमानं । सुमति मत्त मंत्रिय गुरु दानं ॥

६षम टेकि बाहै बर पगं । ज्यों बावन छलि भूमि ७विगंगं ॥ छं० ६६५ ॥

बूहा—भूमि विभग कीनिय सुवृत । देवत्तह प्रति देव ॥

महन रंभ मच्यौ सु भर । गुन थम न प्रभ भेव ॥ छं० ६६६ ॥

मरन सीस मुक्यौ सु वसु । रस पारायन देव ॥

दुतिय मुतिय दुति बैर तिन । भ्रम भग्ना जुग भेव ॥ छं० ६६७ ॥

अवृत वृत्त विभ्रम ८ भइग । हय गय दुल चतुरंग ॥

चाहुआन कमधज्ज सों । भय बीरा रस भंग ॥ छं० ६६८ ॥

गाथा—भौ बीरा रस भंग । जंग जुग तीय बीर सु ९भट्टाई ॥

सद्विर सुद्विर सुषटं । साठट्टई षट्ट्यौ भंगं ॥ छं० ६६९ ॥

१. मो०—जैसे, जैसे । २. ए० इ० को०—चित ३. मो०—कुट्टे ।

४. ए० इ० को०—स्वई । ५. को०—माहि । ६. मो०—सवय ।

७. मो०—वर्ष । ८. बी०—ए—वश्य । ९. ए० इ० को०—सुद्वय ।

रात्रि का कुछ प्रसन्न बीतने पर अश्रुमा का उदय हो गया और
दोनों सेनाओं के बीच विश्राम के लिये रण से मुक्त हुए ।

मुरिल्ल—उद्ध सेन भगौ चतुरंगह । लुथ्य लुथ्य आलुथ्य विभंगह ॥

कल किचित किचित रस भारी । इते अस्तमित भानं सारी ॥ छं० ६७० ॥

गाथा—अस्तमितं बर भानु । पायानो परम संतोषं ॥

जानिज्जै जस बंधुअ । नव चंदनं तिलकयो दीयं ॥ छं० ६७१ ॥

चंद्रायना—दुरि निसान गत भान भइग बर ।

सिधु संपती जाइ तिमिर चढ़े गुर ॥

कुमुद बिमुद अंकूर सूरतन धरियं ।

मानो तम को तेज सु तत्त उधरियं ॥ छं० ६७२ ॥

मुरिल्ल—बर भान संपती घान गुरं । सरसीरुह उदित मुदित बरं ॥

बर बीर क्रमोदनि की सु गती । सु भए रिसिराज उदोतपती ॥ छं० ६७३ ॥

सूर्योदय से अमर अकबा अकई और शूरवीरों को आनन्द होता है ।

रूहा—निसि गत बंधे भान बर । भंवर चक्कि अह सुर ॥

मंतह मत्त पयान गति । बर भारध्य अंकूर ॥ छं० ६७४ ॥

रात्रि को संयोगिनी हनी और रण से क्षमित सेना विश्राम करती
है पर कुमोदिनी और वियोगिनी को कल नहीं पड़ती ।

कवित्त—कुमुद उधरि मूँदिय । सु बंधि मत्तपत्र प्रकारय ॥

चकिय चक्क विच्छुरहि । चक्कि शशिवत्त निहारय ॥

जुवती जन चढ़ि काम । जाहि कोतर तर पंवी ॥

अवूत वूत्त सुंदरिय । काम बद्धिय बर अंधी ॥

नव नित्त हंसह हंसह मिले । विमल चंद उग्यो सु नभ ॥

सामंत सूर नप रषिष कै । करहि वीर वीश्राम सभ ॥ छं० ६७५ ॥

गाथा—विश्रामं बर लैही । मूरं सूरयो धरयं ॥

धायं अंग विअंगं । जानिज्जै कैतु यो लग्गी ॥ छं० ६७६ ॥

रूहा—तम बद्धिय धुंधर धरा । परष पयं पन मुष्य ॥

तम्म तेज चावहिसह । जुक्कनि भग्गि अरुष्य ॥ छं० ६७७ ॥

जुक्क भग्गि आरुष्य बर । रोकि रहिग बर स्याम ॥

सुबर सूर सामंत गुन । तम पुच्छे नप ताम ॥ छं० ६७८ ॥

१. ए० छं० को०--भगौ

२. ए०--सारी ।

३. ए० छं० को०--मानु कु जानु ।

४. मो०--बोटक ।

५. ए० छं० को०--बद्धी च्छ उदित बरं ।

६. ए० छं० को०--केन, केत ।

सहस्रों सेना में भी छिपा हुआ बहुमान का शत्रु बच नहीं सकता ।

गाथा— जै जै घर बहुमान । एक होइ सध्ययौ सूरं ॥

को रण्यो परमानं । अरि रण्यै कद्वयौ मच्छी ॥ छं० ६७९ ॥

चोपाई— कोटि महसि अरि होइ प्रमान ।

ता भंजै निश्चै बहुमान ॥

हरि कशिवृत्त जाइ पहु इंद ।

रुक्रमनि ब्याह बरिय गोविंद ॥ छं० ६८० ॥

गाथा— गोविंदं प्रलि ब्याहं । सनमानं सूरयो वृत्ती ॥

अप रण्यै अरि जुद्धं । रण्यै स्वामि मरनयो अप्पं ॥ छं० ६८१ ॥

बहुमान के सामंत स्वामिकार्य के लिये प्राण को कुछ वस्तु नहीं समझते और यह स्वभाव बहुमान का स्वयं भी है ।

ब्रह्मा— अप्प वृत्त इह सूर किय । सूर वृत्त चहुआन ॥

स्वामि रहै लज्जै जलनि । भौ वृत्त १वृत्तिय पान ॥ छं० ६८२ ॥

गाथा— कालिंदी तन स्यामं । लगे नध्य अगनतं स्यामं ॥

भय अवि वृत्तिय तामं । अन्यं जानि तत्तयो मारं ॥ छं० ६८३ ॥

सामंतों का पृथ्वीराज से कहना कि आप दिल्ली को जाय, हम सड़ाई करेंगे ।

अरिल्ल— तत्त सार प्रति प्रति प्रमानं । जाहु राज दिल्ली चहुआन ॥

गुन बढ़े हंम बढ़े सस्त्रं । दुष्य मानि सुनि सुनिय विरत्त ॥ छं० ६८४ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि सूर्य बिना चंद्र तथा तारागण से कार्य नहीं हो सकता, हनुमान के समुद्र लांघने पर भी रामचंद्र जो के बिना कार्य नहीं हो सका । मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जा सकता ।

कवित्त— दुष्य मानि सो रत्त । सुनै सामंत सूर वर ॥

१चंद्र उडगन काम । सन्यौ कहं दिष्यि सूर नर ॥

गान काम न न सरै । अहन जो होइ तेज वर ॥

काम राम १नन सरै । हनु २कूद्योति लंक घर ॥

नन सरै काम मंगल सु विधि । जो मंगल बाहुत्त तप ॥

सामंत सूर इम उच्चरै । कद्वि मोहि मुझहुति अप ॥ छं०

१. मो०—वृत्तपी ।

२. मो०—चंद्र उगन काम सन्यौ ।

३. ए०३० को०—तन ।

४. मो०—उद्योत ।

तुम्हें रण में छोड़ कर मैं बिल्ली में जाकर आनन्द कहां यह मैंने नहीं पढ़ा है ।

दूहा मुहि कद्विह तुम रही वर । जियत जाहि उन यान ॥

ऐसी रीति अरीत वर । पढी नह चहुआन । छं० ६८६ ॥

गाथा जम्मन मझिं सुरंगं । सो जपेव मूर नुम तत ॥

दिन भौ रव संग्रामं । 'सम्मान दारेंति एव गसं ॥ छं० ६८७ ॥

राजा का उत्तर सब को बुरा लगा परंतु किसी ने राजा की बात का उत्तर न दिया ।

विष लगा नृप बैनं हाला हलयो तनयो मूरं ॥

उत्तर दिय नह राजं । गाम निस भा बुद्धि जन बत्तं ॥ छं० ६८८ ॥

कवि चंदावि सब सामंतों ने समझाया पर राजा ने न माना और

यही उत्तर दिया कि शत्रु के साम्हने से भागने वाले क्षत्री

को धिक्कार है, मैं प्रातः काल भारत मचाऊंगा ।

कवित्त बार बार भर कहिग । राज मानै न तत्त 'मत ॥

बीर चद ता अगग । चलै प्रधिराज हारि गत ॥

मो भंजै अरि गज्ज । मोहि ' मंजै अरि भंजै ॥

ता छत्री कुल लज्ज । छत्र धरि सिर हति 'लज्जै ॥

जं होइ प्रात दिण्णो सकल । महन रंभ इत्ती करौं ॥

चहुआन चित चितह सुरा । वर भारथ गुन विस्तरौं ॥ छं० ६८९ ॥

गाथा- विस्तरि गुनयो प्रातं । रत्तं रत्त सूर बीरायं ।

चावदिसि बर वीरं । सा धीरं मत्तयो वीरं ॥ छं० ६९० ॥

सब का यह मत होना कि सूर्योदय से प्रथम ही युद्ध

आरंभ हो जाय ।

दूहा- मत्ति बीर संमुह 'भिरत । कठिन शस्त्र अति पान ॥

भान पयानह दीह गुन । लोह पयान पयान ॥ छं० ६९१ ॥

सूर्योदय से प्रथम ही फौज का तैयार हो जाना ।

नोटक- बिन भान पयानति लोह कडे ।

जल मत्तिय रत्तिय वीर पडे ॥

दोउ वीर दुबं दिशि धूंध धरी ।

कलहं तत केलिय ता उचरी ॥ छं० ६९२ ॥

१. मो०-समान दारें गिय वगसं ।

२. ए० कु० को०-वत ।

३. मो०-वै ।

४. मो०-वण्जे ।

५. मो०-भिरत ।

रण मरमाते निहृदर का घोड़े पर सवार होना और साठ
घोषाघों को लेकर हेराबल में बढ़ना ।

गाथा—अंकुर बीर सुभट्टं । अघटं बट्टाइ क्रोधयो कलहं ॥
हय मुखधा चलि शंघी । निहुर सथ्यस सठयो बीरं ॥ छं० ६९३ ॥
शूरबीर लोग माया मोह को छोड़ कर आगे बढ़े ।
बूहा—बीर बीर बीराधि बर । 'बड़े लोह तजि छीह ॥
सूर धीर सामंत गति । नहिं माया नहिं मोह ॥ छं० ६९४ ॥
तीसरे विषय का युद्ध वर्णन ।

रसावला—जिते सूर पत्नी । लगें लोह तती ॥
नचे सूर छत्ती । उड़े काल पत्ती ॥ छं० ६९५ ॥
'जुटे जोष पत्ती । उड़ी रेन गत्ती ॥
महा बेन तत्ती । कला कोटि कत्ती ॥ छं० ६९६ ॥
ग्रवै ग्राव गत्ती । सुरं पंच छत्ती ॥
मचे कह मत्ती । पचे रोस रत्ती ॥ छं० ६९७ ॥
करे घाव कत्ती । इसे सूर चित्ती ॥
शिष्ट फल्ल सत्ती । घुमें घाइ घत्ती ॥ छं० ६९८ ॥
भजै भीम मत्ती । हनमान जत्ती ॥
अनाभूत अत्ती । दिषे दार दत्ती ॥ छं० ६९९ ॥
रधि धार 'हककं । भभवकं भभवकं ॥
घका वीग घककं । बकं मार बककं ॥ छं० ७०० ॥
इसे चित्त अककं । छुटे मत्त छककं ॥
डकारंत डककं । त्रिलोकंत हककं ॥ छं० ७०१ ॥
मनो मोह थककं । हको हकक बककं ॥ छं० ७०२ ॥
युद्ध करते हुए बीरों की प्रशंसा ।

कवित्त—हको हकि बजिय प्रकार । सार बज्जे सु बीर बर ॥
सुबुधि बुद्ध आबुद्ध । मत्त लग्गे असि बर भर ॥
इकन रुद्ध आरुद्ध । नहु नारद अघिकारिय ॥
रंभ सिंभ आरंभ । सिद्ध बुद्धं दे तारिय ॥
घनि घति सूर दिन घनित बल । छल छत्रिय अंकुर रजि ॥
कलहत काल कालह विषम । सुबर बीर बीरत रजि ॥ छं० ७०३ ॥

१. मो०—उद्धि ।

२. यह छंद मो० प्रति में नहीं है ।

३. मो०—हक ।

ब्रह्मा—वीर रज्जि वीराधि भर । बलिय वीर मन सज्जि ॥
 सुबर सूर सामंत के । मंत कलह तुटि बज्जि ॥ छं० ७०४ ॥
 मंत कलह बज्जिय तुटहि । घठहि अघट तुटि मंस ॥
 सुबर सूर सामंत कौ । बर उड्डे तन अंस ॥ छं० ७०५ ॥
 हंसति उडुहि अंस दे । कंसत केसिय प्रान ॥
 बर पंषिय पावै न जन । बर छुट्टै किरवान ॥ छं० ७०६ ॥
 शूरवीर सामंतों का रणमत्त होकर विचित्र कौशल से
 शस्त्राघात करते हुए युद्ध करना ।

रमावला—पंष छुट्टै ननं । सूर भत्ते घनं ॥

घ.व बज्जे घनं । टूक टूक तनं ॥ छं० ७०७ ॥
 आज इक्कं मनं । बान नंसं १घनं ।
 भीतकं विष्घनं । कीय लीयं पनं ॥ छं० ७०८ ॥
 जच्च सुक्खी बनं । जानि कुल्लालनं ॥
 धौदि कड्डे गनं । देव चड्डि विमनं ॥ छं० ७०९ ॥
 पेपि इक्कं मनं । कुहक बानं घनं ॥
 नारि छुट्टै पनं । ॥ छं० ७१० ॥
 गज्ज ते गगनं । सार वे सगनं ॥
 सिद्धता मगनं । लीह ज्यो लगनं ॥ ॥ छं० ७११ ॥
 इक्क इक्कं गनं । कुंभ हथ्थी २छिनं ॥
 रुद्धि धारा घनं । दुद्ध मानो घनं ॥ छं० ७१२ ॥
 दोड पट्ठे दनं । ओप इम्मं इनं ॥
 इष्ण वेस मनं । मल्ल गिज्जं गनं ॥ छं० ७१३ ॥
 गोरियं छन छनं । टक होयं रनं ॥
 सूर ह्वै तन तनं । नेमत फन फनं ॥ छं० ७१४ ॥
 बार पारं जनं । रोस चड्डे रनं ॥
 लग्ग मे बंभनं । रुंड केसि भनं ॥ छं० ७१५ ॥
 गिद्ध सिद्धं मनं । टारि रण्वै तनं ॥
 दद्धि ज्यो उप्फनं । अस्सि वाहै बनं ॥ छं० ७१६ ॥
 मीन जातं पनं । पिष्घनं चिम्मनं ॥
 कोन को चिम्मनं । भूत प्रेतं धुनं ॥ छं० ७१७ ॥
 जुग्मनी जित्तनं । पत्त घनं तनं ॥
 नारदं नंभनं । भुरिा मै मंभनं ॥ छं० ७१८ ॥
 अंभरं मंभनं । विष्णुता सुंभनं ॥ छं० ७१९ ॥

शूरवीर स्वामिकार्य साधन करने के लिये वीरता से रण में
प्राण दे कर पूर्ण कर्मों की संधि को लांघ
कर स्वर्ग पाते हैं ।

कवित्त—सूर संधि विधि करहि । क्रम संधी अस तोरहि ॥
इक लष आहुटहि । एक लष रन मोरहि ॥
सुब्र वीर मिथ्या । विवाद भारथ्यह षंडै ॥
'विच्चि वीर गजराज । बाद अंकुस को मंडै ॥
कलहंत केलि काली विषम । जुद्ध देह देही सु गति ॥
सामंत सूर भीषम बलह । स्वामि काज लग्गेति मति ॥ छं० ७२० ॥
स्वामिकार्य में जो वीर रण में मारे जाते हैं उन का शिर
भी महादेव जी की माला (हार) में गुहा जाता है ।

ब्रूहा—'स्वामि काज लग्गे सुमति । षंड षंड घर घर ॥
हार हार मंडै हियै । गुथ्य हार 'हर हार ॥ छं० ७२१ ॥
गाथा—सिर तुट्टै पुर तारं । 'लार तुट्टि वीरयो सिरयं ॥
घर तुट्टै प्राहारं । सा बज्जै तारयं तारं ॥ छं० ७२२ ॥
तारं तार प्रहारं । देवल दरियाइ मल्लरी बज्जं ॥
बज्ज ते सिर सारं । प्राहार पच घट्टि काई ॥ छं० ७२३ ॥
तीसरे दिन एकादशी सोमवार को युद्ध होते होते पांच घड़ी
चढ़ झाई शूरवीर मार मार कर हाथियों की
'कला कला को पछेसते जाते थे ।

कवित्त—घटिय पंच दिन घटघो । उमरि आरध्व पुंज चिरि ॥
एक दिना दोउ सेन । मोह छंडघो क्रम निक्करि ॥
वान गंग पसयो । वीर ग्यारसि दिन सोमं ॥
सूर वीर सामंत । सूर उड्डे रन रोमं ॥
क्रत काम काज साई विभ्रम । दल दंतिय पंतिय^१ गमे ।
सामंत सूर साई त्रिभ्रम । रोम रोम राजी 'भ्रमे ॥ छं० ७२४ ॥
इधर पृथ्वीराज ने क्षतिवृत्ता की उत्कंठा पूर्ण की ।

ब्रूहा—रोम राज राजी भ्रमहि । 'घोर यनी दुंढि बाल ॥
उतकंठ उतकंठ की । ते पुज्जी प्रतिपाल ॥ छं० ७२५ ॥

१. ए० छं० को०—वेचि ।

२. मो०—हाव ।

३. मो०—पुर्वे, पर्वे ।

४. मो०—वैरि ।

२. मो०—पति काज लग्गे तिमत ।

४. को०—लारयं ।

५. मो०—भ्रमै ।

साटक—साता से उतकंठ रंभति गुना रुभा अरं भावरं ॥
 संघ बिद्धि सु सुख कारन मिते देवंगना सुंदरी ॥
 आ बंदे मिति चंदुकारन मिते निर्भासितं भासितं ॥
 पाषंडं तजि लीन सूरति वरं आरंभ पारं भनं ॥ छं० ७२६ ॥
 सम्मिलन के प्रारंभ में पृथ्वीराज ने प्रण किया कि
 मैं तुझे तीनों पन में एक सा धारण किए रहूँगा ।
 गाथा—आरंभ प्रारंभी । उतकंठा किनयी वृतयं ॥
 साधा घरी सु धरयं । रन छुट्टे तीनयी पनयं ॥ छं० ७२७ ॥
 यह वर पाने के लिये कबि का शशिवृता को धन्य कहना ।
 मुरिल्ल - बालप्पन जुववन पन बीर । दई बीर वडपन्नह १धीर ॥
 बडपन्नह मति सु तजि डिढाइ । धनि लई तिहुं पन्न-बडाइ ॥ छं० ७२८ ॥
 दूहा - बालप्पन जुवपनह गति । कथ तिय पनहति काज ॥
 भर कहुँछे ग्रं राज गुन । नह चल्लै प्रथिराज ॥ छं० ७२९ ॥
 पृथ्वीराज का घटस प्रेम देख कर पर पकड़ कर शशिवृता का
 कहना कि बिल्ली चलिए ।
 नह चल्लै पृथिराज रिन । लज्ज लपट्टिय पाइ ॥
 त्रय जोरै कर हृथ्य दो । चलि संभरि वै राइ ॥ छं० ७३० ॥
 उक्त विषय पर पृथ्वीराज का विचार में पड़ जाना कि क्या करना चाहिए ।
 लज्ज परबत हूँ रही । बैन तजै नृप पास ॥
 दुहूं बीर मंडन सु बुधि । अति गतिय रति त्रास ॥ छं० ७३१ ॥
 यह देख शशिवृता का कहना कि मेरी लज्जा रलिये ।
 फिरि बुल्ली लज्जी सुनहि । हों मडन तन बीर ॥
 मो बिन इक्कं काज नृप । बुद्धि न आवै तीर ॥ छं० ७३२ ॥
 राजा का कहना कि तेरी सब बातें रस कसूम (अफीम
 के शर्बत) के समान मेरे जीवन भर मेरे साथ हैं ।
 तूं वै एकह पन रहे । रंग कसूम प्रमान ॥
 हों नन छैडों पास तुअ । तीनों पनह समान ॥ छं० ७३३ ॥
 तूं लज्जी मो सध्य है । दान धग्न अह रूप ॥
 मो चल्लै तीनों चल्लै । संधी चवै न भूप ॥ छं० ७३४ ॥
 मुन रे वै लज्जी चवै । हूं मंडन नर लोइ ॥
 मो बिन अप्पन १ लज्ज है । नर २ निभासन होइ ॥ छं० ७३५ ॥

१. मो०—भीर ।

२. मो०—मंतह ।

३. मो०—कड़, कन्न, कन्न ।

४. मो०—विर्भासन ।

शशिबुता का कहना कि मैं भी क्षम लक्ष्मी प्रायकी
प्रसन्नता का चत्म करती रहूँगी ।

वे बुल्सी लज्जी कलह । क्रत के काम सुनंत ॥

इसके पल पल मंडनी । हो रज्जन रजकंत ॥ छं० ७३६ ॥

'पृथ्वीराज का कहना कि बहुमान का धर्म ही लज्जा का रक्षणा है ।
अरिल्ल - 'लज्जी सुनि सुनि हसी प्रमान । तू जानै सुनि 'बैन निघान ॥

लज्ज रूप मंडन बहुमान। सुबर बीर 'आकास निघान ॥ छं० ७३७ ॥

तू अपने धर्म अनुसार सत्य कहती है ।

बूहा—तू लज्जी सच्ची चर्च । तत लणि ध्रम प्रकास ॥

आवृत्तह गुन भक्त किय । जोग सुहंदा चार ॥ छं० ७३८ ॥

इस प्रकार शशिबुता और पृथ्वीराज का परामर्श होता रहा,
पृथ्वीराज रूप रस में मत्त था और उसके स्वामिधर्म में रत
सामंत उस तक कोई बाधा न पहुँचने देते थे ।

छंद पढ़री—निम्बयी बाद वे वर 'प्रमान ।

मानहि न बत्त लज्जी निघान ॥

वै जाहु जाहु तन रूप छंडि ।

जिन चलै लज्ज लज्जी त्रिषंडि ॥ छं० ७३९ ॥

कहि बीर राज आए स वीर ।

मानहु कि छुट्टि घन बर सरीर ॥

आभास भार तूट्टैति अंग ।

जोर वरज हर मत्तीत जंग ॥ छं० ७४० ॥

क्रनत केलि क्रत करहि काम ।

सोभहति सूर दक्षिन ति'ताम ॥

अति स्वामि ध्रम नह बाम मगन ।

लग्यो न सूर जिम स्वामि दग्ग ॥ छं० ७४१ ॥

प्रधिराज दिष्ट दिष्टत प्रमान ।

अरि भजत मनहु' तिन अग्नि जान ॥ छं० ७४२ ॥

यद्यपि सामंत बड़े बलवान थे किन्तु तब भी पृथ्वीराज
का मन युद्ध ही की ओर लगा

बूहा—अग्नि पान सामंत बल । ध्रत धीरत न जोष ॥

सस्त्र लणि लग्यै न मन । तउन पत्र पति जोष ॥ छं० ७४३ ॥

-
१. बी०—लज्जा सुन रहसी प्रमान । २. ए०—ह० को—बी सुन निघान ।
३. नो०—आकार । ४. ए० ह० को०—प्रमान । ५. नो०—मान ।

शशिवृता की आशा पूषी, शिवजी की मुंडमाल पूरी हुई
और भगवती रुधिर से तृप्त हुई ।

त्रिय त्रिघाह सूरन भए । त्रिरति उमापति मुंड ॥

उमा त्रपति रुधिरं भई । घनि सूरन भुज दंड ॥ छं० ७४४ ॥

शूरवीरों के शीष्यं और बल की प्रशंसा ।

सूर सुघनि भुज दंड बल । बल विक्रम ज्यों पाय ॥

बल किन्नी छल छंडयो । बर बीरा रस चाइ ॥ छं० ७४५ ॥

कवित्त—बीर घाइ आघाइ । बीर बिरुमाइ सेन बर ॥

लष्य लष्य इक मद्धि । लष्य उम्भरे लष्य झर ॥

दल दंतन विच्छुरे । घाइ है वर किन तंकहि ॥

एक लष्य रंघियै । षग षगनि ज्ञाननंकहि ॥

ठननंकि घंट घंटय परहि । कज्जल कूट विवान भ्रम ॥

साम्रंत सूर सामंत हय । करहि चंद अस्तुति सु क्रम ॥ छं० ७४६ ॥

शशिवृता के व्याह की देवासुर संग्राम से उपमा वर्णन ।

छंद पद्धरी—आसंभ सेन सेना विरुद्ध । शशिवत्त व्याह दैवान जुद्ध ॥

नर मयहि मेघ रथ गज सु वादि । होमियै षग रिस अग सादि ॥ छं० ७४७ ॥

उच्चरे बैन बाजंत बीर । सद्धे जु उद्ध बुद्ध सरीर ॥

दैवत्त दुर्ग छिति मति अकूर । निर्घोष दोष बज्जै सपूर ॥ छं० ७४८ ॥

हय गय गंभीर तन तुंग ताम । सूरह सु बीर विश्राम जाम ॥ छं० ७४९ ॥

गाथा - रन घन तन विश्रामं । संग्रामं इक्क घरी पाइ ॥

दावानल चहुआनं । सा बीरं बीर बीराघं । छं० ७५० ॥

बीराघं बर बरयो । सा भज्जै आवनं गवनं ॥

मोहं सलाकं भंजो । नां सज्जं पंजरी दिवो ॥ छं० ७५१ ॥

शूरवीरों का कहना कि हमारी जय तो हुई किन्तु अयचंद

का भाई कमघउज क्यों जीवित जाने पाये ।

घोपाई - नह सज्जै पंजर प्रतिमान । कहै मूर निहचै प्रतिमान ॥

बीरचंद बंधव कमघउज । जीवत त्यामि जाइ क्यों लज्ज ॥ छं० ७५२ ॥

गाथा - हम बहुलं बेसतयं । बंधे तेग मुक्कि न्रप जायं ॥

जीवत सुनि कमघउजं । ना मुक्कै लष्ययो बलयं ॥ छं० ७५३ ॥

मुरिल्ल - लष्य लष्य बर सुभट सु भट्टह ।

अघट बट्ट सु घट्टै न घट्टह ॥

सुवृत्त बीर छत्रिय छिति राजै ।

मनो ईद घन मद्धि बिराजै ॥ छं० ७५४ ॥

गाथा यों रज्जै नृप भरयो । सरनं सूर सूर गत्ताइं ॥

उग्नं तो रवि मानं । यों रत्ताइ रत्तयो मुषयं ॥ छं० ७५५ ॥

राजा का कहना कि उसे मार कर क्या करोगे ।

बूहा — सत्य सु तुझ कटघो सु सब । सुभट भट्ट बड़ मृत्य ॥

क्यों न जाइ जीवत घरह । कहा करोगे मृत्य ॥ छं० ७५६ ॥

प्राताताई का कहना कि उसे युद्ध में खंड खंड कर ही दूंगा ।

छंद भुजंगी —

तबै उच्चयो अत्तताइ अभंगं । सज्यो गैन सीसं जुच्यो जुद्ध रंगं ॥

हनों याहि भंजों सु गंजो पलानं । करों षंड षंडं जु मंडै बलानं ॥ छं० ७५७ ॥

इसी प्रकार गुरुराम की आज्ञा होने से घोर युद्ध का होना ।

तबै गज्जि क्रम्यो गुरुं चाहुआनं । अगे जोगिनी जगि क्रम्यो गुरानं ॥

क्रम्यो सध्य जहो स जामानि तामं । दुअंबद्ध हहुा चले बंध ठामं ॥ छं० ७५८ ॥

मिली रारि अंकं दुअंकं प्रमानं । परे जादव राइ अरु चाहुआनं ॥

कहै भूलि भारत्य इत्तें सपूरं । उठे कंदलं हविक ते कौन सूरं ॥ छं० ७५९ ॥

नरं रक्त बीज बिन केन दिट्टं । इत्तें हंकि सामंत की बुंद उट्टं ॥

मिले घाइ घायं असी पंगदाय । मिली रीठ आवद्ध साबद्ध घायं ॥ छं० ७६० ॥

परे सीस भारं चहुआन धार । मनो इभ झंकोर अवूज झार ॥

गजं वाज तुट्टं परे षंड षंड । नचनं पिनाकी करं सज्जि दडं ॥ छं० ७६१ ॥

कटे तुच्छ हहुं सु मंसं निमंसं । परे सूर मुझ्झति मध्य उतसं ॥

तिनं सत्त नामं जुअं जू बषानं । रठ निद्धुर कन्ह वर वीर जान ॥ छं० ७६२ ॥

तहां अत्तताई रु गोविद मानं । उठे हविक हाक सु पज्जुन पान ॥

रघुवंस भीमं तिनं नाम जानं । परीहार नन्ह तिन नाम ठान ॥ छं० ७६३ ॥

इत्ते उगरे कंदलं चंद कब्बी । मनो देपियं जानता जोति हब्बी ॥

परे पंथ रायं दहे राज सत्तं । मुर पचरा वृत्त मा वेद वृत्तं ॥ छं० ७६४ ॥

दुहुं पष्व लग्गे तिनं नाम जानं । तिनं जाति चदं रु सूर बषान ॥

पन्थो झुझि रघुवंस परताप राजं । परघो राव चालुक्क ता जंत लाज ॥

छं० ७६५ ॥

पन्थो दलपती राउ दल सब्ब संध्यो । पन्थो कन्ह राजा दलं नेत बध्यो ॥

झंडा गाड्डु बीरं पन्थो राजा पीची । जिने कित्ति लच्छी तियं लोक सीची ॥

छं० ७६६ ॥

पन्थो जावली राव सारग सूरं । तिने झग्गरी अक्करी छंडि हूरं ॥

पन्थो दाहिमा देव मिलि धार पंती, ररे अंत कंती मिंराज सुंदती ॥ छं० ७६७ ॥

यो किलहनं राव मालहन हुंसं । तुटघो सार धारं मिल्यो हुंस बंसं ॥

पन्थो अंगरी राव दहिमा नरिसं नृप कित्ति भव्यी मकी कित्ति चंद ॥ छं० ७६८ ॥

पन्थी टांक सूरं मिल्यो सूर मंदे । मिल्यो सार धारं जमं डंड बंडे ॥
चढथी धार धारं घनी धार नाथं । मुकी मोह माया लई किति हाथं ॥
॥ छं० ७६९ ॥

पन्थी राव मोरी मुर्यो श्रव सथ्यं । नन पाइ चल्ले चलै हथ्य वथ्यं ॥
परे सूर हक्केव घक्के कलेवं । सिरं जुद्ध आनुद्ध देषत देवं ॥ छं० ७७० ॥
करे जोगिनी डक्क हक्कं गहक्कं । गर्ज बीर सूर मु आवद्ध घक्कं ॥
चलै श्रोन अंमान पूरे प्रनारं । अद्धभूत माया न रच्यो मु भार ॥ छं० ७७१ ॥
तवै अत्तताई लग्यो लोह रस्स । भगी फौज कमघज्ज दित्स विदित्सं ॥
परे सेत सेते न थान मु दित्सं । लगं अच्छरी माल नम्म सु जिस्स ॥ छं० ७७२ ॥
अनंछित्त अंगं बरं अत्तताई । भई जीत चहुआन प्रथिराज राई ॥ छं० ७७३ ॥

रण में अगनित सेन को मरा बेस कर निहृदर का कमघज्ज से
कहना कि अथ तू किस के भरोसे युद्ध करता है । पृथ्वीराज
तो शशिवृता को लेकर चला गया ।

दूहा परे सुभर दोऊन दल । निहृदर देयो बध ॥
कोन भुजा बल जुध करे । मुनि कमघज्ज अमुद्ध ॥ छं० ७७४ ॥
बाला लै प्रथिराज गय । गह्य वग कमघज्ज ॥
रोस रीस बिरसोज भय । रह राजे अनबज्ज ॥ छं० ७७५ ॥

पृथ्वीराज शशिवृता को लेकर आध कोस आगे जाकर खड़ा हुआ ।

कविन - अद्ध कोस नृप अगग । बीर ठढघो करि ठड्डो ॥
मद समूह गजराज । छडि पट्टे बल गढ्ढो ॥
लाज बधि सकरिय । बीर बधयो सु अष्ट कमि ॥
अरिन बीर छडे न । क्रुन्न मडे दिलीय दिसि ॥
मनमत्थ महावत बधि अति । मन मत्तो उन को धरे ॥
घन घाइ रुधिर छुट्टे परे । अमर पुहप पूजा करे ॥ छं० ७७६ ॥

अपनी और कमघज्ज की सब सेना मरी देखकर यदुव का
हार मानना और सब डोली पृथ्वीराज को सौंप देना ।

पूब राज प्रथिराज । पूब जैचंद बध बर ॥
पूब सूर सामंत पूब नृप सेन पंग बर ॥
पूब सेन डंडोरि । पूब शोरी करि डारिय ॥
पूब घेत बिधि नाम । बानगंगा पय झारिय ॥
आसेर आस छडिय नृपति । विपति सपति जानीय भर ॥
सुठिहार राज प्रथिराज की । घरे सबह चौडोल बर ॥ छं० ७७७ ॥

पृथ्वीराज ने तेंतालसी शोलियों सहित बीच में शशिवृता
को लेकर दिल्ली को कूच किया ।

चौपाई—गो दिल्ली दिल्ली प्रति वीर । सूर चाइ जर्जर किय श्रीर ॥
किति सजी त्रैलोक प्रमानं । अंग कियो जर्जर बहुमानं ॥ छं० ७०४ ॥

डूहा—डोला ग्यारहु दून दस । एकादस तिन मद्धि ॥
मद्धि अमोलिक सुंदरी । काम विरामन सधि ॥ छं० ७०९ ॥
डोला घाइन बंधि नूप । बजि निसान त्रिषोष ॥
सब सामंत समंघ चढ़ि । बिच सुंदरी अमोष ॥ छं० ७१० ॥
शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज तेरस को दिल्ली पहुँचे ।

गाथा—बिच सुंदरी अमोषं । दोष नैव बालयो मद्धि ॥
तेरसि गुन अधिकारी । संपत्ते राजयो येहं ॥ छं० ७११ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा वर्णन ।

डूहा—इन परंत पत्नी सु ग्रह । सुबर रात्र प्रथिराज ॥
हय गय दल बल मथत बर । रंभ सजीवन काज ॥ छं० ७१२ ॥

चामुंडराय की प्रशंसा ।

सह जहों चामुंड बर । बर बर जुड बिहद ॥
सुद करै सामंत की । बर घीरउज सु बुद ॥ छं० ७१३ ॥
युद्ध में कमधउज घोर यदव को जीत कर शशिवृता को लेकर
पृथ्वीराज दिल्ली जा पहुँचे ।

चाहुआन चतुरंग जिति । निगम बोध रहि राज ॥
बर शशिवृता जितिगो । घाम सु दिल्ली साज ॥ छं० ७१४ ॥
शशिवृता के साथ बिलास करते हुए सब सामंतों सहित
पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करने लगे ।

गाथा—तपय सु नरपति दिल्ली । दीह दीहं पदरे राज ॥
जै मंगै कृत कामं । सां देवं सोइयं देहि ॥ छं० ७१५ ॥
दीहं पासा क्वं । साक्यं भूपयो सव्यं ॥
जे नष्ये ते मंगै । देवानं देवयो दीहं ॥ छं० ७१६ ॥

डूहा—सारिन साली पंस बर । सारि पंस बर भोग ॥
सुबर सूर सामंत लै । करि दिल्ली प्रति भोग ॥ छं० ७१७ ॥

इस जय के प्राप्त होने से चहुआन का यश और बावसाह से बँर पड़ा ।

जे जे जस लहो सुबर । बँर नृपति मुरतान ॥

सुबर बँर बर बह्यो । सुबर जिति चहुआन ॥ छं० ७ ८ ॥

पृथ्वीराज शत्रुओं को पराजय कर के प्रबंड बावसाह को

बंड दे कर नीति पूर्वक दिल्ली का राज्य करता था ।

कवित्त - भई जीति चहुआन । अरिय भजे अभंग भर ॥

जे जे सूर बवान । देब नखें मुमन्न वर ॥

लै शशिवृत्ता राज । अप्प दिल्लीय संपत्ती ॥

अति तोरन आनंद । चित्त रत्ती मन मत्ती ॥

अरि अबनि कोन मंडे मनहु । षग्ग दाग अरि षंडइय ॥

कवि चंद दंद दारुन कयहि । इ न अडड करि डडइय ॥ छं० ७८९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथोराज रासक शशिवृत्ता

कथा नाम पचीसमो समय संपूर्ण ॥



अथ देवगिरि समयौ लिख्यते ।

(छब्बीसवां समय)

जयचन्द की सेना ने देवगिरि गढ़ को घेर रक्खा ।

बूहा — ना चल्लै कमधज्ज ग्रह । गढ़ घेर्यौ फिरि भान ॥

मानहु चद सरद् 'जिम । गिरि नछिप्र परिमान ॥ छं० १ ॥

कुंडलिया गढ़ घेन्यो फिरि भान को । दूत सु दिल्लिय मुक्किक ॥

यह अजोग मयोग करि । अदिन कज्ज हम रुक्किक ॥

अदिन कज्ज हम रुक्किक । प्राण इन के दुष मुक्कै ।

इन समान भर सत्त । जीव जावतै धुक्कै ॥

* प्रथम पुंजा लखिन । कुंआरि ससिदत्त धीर बह ॥

धन भर लज्ज सुबंध । घेरि मह वीर राजगढ़ ॥ छं० २ ॥

राजा जयचन्द के भाई ने कन्नोज को और देवगिरि के

राजा ने पृथ्वीराज के पास सब समाचार भेजा ।

दूहा — इन कग्द चहुआन ई । उन मुक्कलि कनवज्ज ॥

इहं वीर कबिचंद इह । कै वज्जै कै बज्ज ॥ छं० ३ ॥

दूत ने लज्जा के साथ जयचन्द को पत्र दिया । जयचन्द

के पूछने पर दूत ने युद्ध और पराजय का हाल कहा ।

कवित्त — सुवर वीर कग्दह पंग करि अप्पि सु जपिय ॥

बहु दुचित्त सजुन । लज्ज आजुत्त प्रकपिय ॥

सुर मुक्किय कर पग । नैन नीजे नृप दिट्टी ॥

तब पहु पग नरिद । कुगल जानी न गरिट्टी ॥

१. ए०-कृ०-को०-दिन ।

२. ए०-कृ०-को०-परजानि ।

३. ए०-कृ०-को०-ग्रह ।

४. ए०-कृ०-को०-कमधज्ज ।

* छंद २ की अनिम शीर्ष वक्तियों का चारों प्रतियों में समान मूल पाठ इस प्रकार है — "प्रथम पुंज लखिन कुंआर ससिदत्त मुधीरह । धन भर लज्ज सुबंध राजगढ़ के 'सत्रीरह' — यह कुंडलिया छंद के नियम से बिगड़ पड़ता है परंतु यह कवि की भूल नहीं है, लेखकों की असावधानी या भूल से ऐसा हुआ है क्योंकि उन्हीं शब्दों के हेर फेर से शुद्ध पाठ हो गया है और अर्थ में भी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं हुई ।

पुच्छी सु बात इह करिय तम । जानि सोक कह उप्पनिय ॥
संग्राम तेज भंजन धिरत । मरन कहौ मारन पुनिय ॥ छं ४ ॥

दूहा - दुज्जन दवने पीर के । वज्जे पै वर केक ॥

भर भीरी रहि अंक के । मरन सरन के केक ॥ छं ५ ॥

कुंडक्रिया - तब पहु पंग नरिद प्रति । इत सु उत्तर जप्पु ॥

इह अपुब्ब कथ सुनि नृपति । जीते हार सु अप्पु ॥

जीते हार सु अप्पु । देषि कह्यो चहुआन ॥

ढिल्ली बै अघकोस । वीर मुक्यो तिहि थानं ॥

आइ सेन घन घाइ । अद्ध भर पारि अमुर जब ॥

दिधि निद्धुर कमधज्ज । वग्ग सेना पचय तब ॥ छं ६ ॥

दूहा देवगिरि गढ घेरि फिरि । 'हौं मुक्यो नृप काज ॥

मती मंडि रा पंग पै । वे पुक्कणि प्रथिराज ॥ छं ७ ॥

चीपाई इह कहंत नृप पंग सु अण्णी । वियो इत नृप अंघन दण्णी ॥

दुचित चित्त मुक्की बर बानी । कुसल वीर कमधज्ज न जानी ॥ ८ ॥

दूहा भयो स्वेद सुर भंग भौ । नैन झलक्यो पानि ॥

कं फिरि दंद सु उप्पनो । कं वर बंधव हानि ॥ छं ९ ॥

कविन - कही कुसल तन इत । कित्ति कुसलत्तन भगिय ॥

जेनि रहे कमधज्ज । रहे सो जम्भह लगिय ॥

जे निकलंक ग्रह आदि । कलंक कालंक मु कुप्पे ॥

दे विधानं जिम्मान । कौन मेटे को थप्पे ॥

भय जोइ सिध जम्बक हरे । काकलब पप्पील गहि ॥

जदिनह भई भाबी विगत । जिम रक्खं तिमि तिमि सुरहि ॥ १० ॥

कवित्त - यह कहंत पहु पंग । इत तिय आन सपत्तो ॥

वाचा शीतल जपि । अंग आरम्भ न सत्तो ॥

चडि नरिन्द कमधज्ज । तीन तन सज्जन बारो ॥

मिलि यहव चहुआन । वीर परिहै ससि भारो ॥

दाहिम्मराय चामुंड सौं । सब्ब साथ नृप थप्पयो ॥

ते काज राज सम्है सुमति । लिषि कग्गद महि अप्पयो ॥ ११ ॥

जयचन्द की महा कोष से कहना कि पृथ्वीराज की कितनी
सेना है । उन्हें मेरा एक मीर बंधा जीत कर बांध सकता है ।

१. क०-होन ।

२. मो०-पुकारि ।

३. ए०-को०-आनी ।

४. मो०-कहै ।

५. मो०-दो ।

क्रोध भरिय कमधञ्ज । काक बर बोल उचारै ॥
 जो भञ्जै ग्रह अपन । कौन अप्पनी विचारै ॥
 अरे सुनहु भर सुभर । जुझस भग्यो पति छंडै ॥
 बेचि बीर गजराज । बाद अंकुस कौ मंडै ॥
 चहुआन सेन कितिक है । एक मीर वंदा बधै ॥
 लक्ष्मयो राज अप अप्पुनह । लोह धार मो सम सधै ॥ छं० १२ ॥
 अयचन्द ने मंत्रियों से मत करके अपने स्नेही राजाओं को
 सेना सहित घाने को पत्र भेजा ।

कुंडलिया - सुनि सुमंत मंत्रिय समत । कुमति मंत क्यों मंत ॥
 बचन भेद जिहि हम कही । सोइ गही बल तंत ॥
 सोइ गहि बल तंत । बल न अप्पन पहिचान्यो ॥
 उदो राग उच्च-यो । संब तेता करि मान्यो ॥
 उनने कुंवरी 'बरी । तिनं कु करै तिन गुनी ॥
 सु बरि एक बुल्ले दुवान । सो सब सह सुनी ॥ छं० १३ ॥
 पत्र भेज कर अपनी तयारी की छाजा दी । सबारी के
 लिये घोड़ा तय्यार कराया ।

कवित — बर अयचंन मु दीह । आइ चनुरंग सपत्नी ॥
 मझस महल नृप बोल । बंचि कग्गद कर लिनी ॥
 निसा मंत उप्पाइ । सहस नव लिषि बर पट्टै ॥
 इष्ट भ्रत सगभ्र । मु भ्रत बहु फट्टत पट्टै ॥
 वज्जित त्रिघोष अरि घोष पर । छोरि पंग दिखे सु ह्य ॥
 रवि रथ्य तथ्य आवहि जु समा । गान गिरब्बर नाग सय ॥ छं० १४ ॥
 घोड़े की प्रशंसा वर्णन ।

भुजंगी — तियं फेरियं अश्व दीसैति पंगा । तिनं देखते छांह कंपन अगा ॥
 तिनं ओपमा चंद बरदाइ कैसी । दिखे तीर मानों लुट्टै अंग तैसी ॥ छं० १५ ॥
 पर्यं मझस मंडै तिमं चित्त इध्वं । पर्यं पातुरं चातुरं तो बिसष्यं ॥
 धुरं वज्जतें भूमि भुज्जै धसबकै । फनं फेलि से संमुहुं फूंक सबकै ॥ छं० १६ ॥
 द्रुमं सीस दीसै सु केकी पुछंगी । मनो मडियं नील कंठ उछंगी ॥
 तिनं भाल संमेलयं घाट मझसै । छिलै पूर ऐसैं सरित्तान सुझसै ॥ छं० १७ ॥

१. मो०—मूरी ।

२. छं०—मुवरन ।

३. ए०—जात ।

४. ए०—निर्ध ।

५. छं०—बर्ष ।

६. मो०—कठी ।

७. ए०—विलै ।

डुलै कंन नाही छुरी कास ग्रीवं । मनो देवियं सीष निर्वति दीवं ॥
 दिवै कञ्चि चंदं सुरंगं सु मेसी । दुहं पण्व नाहीं तिनं घोरि कैसी ॥ छं० १८॥
 सुभै सालिग्रामं समानंत अंधी । तिनं पूजिगे चित्त चित्तंत नंधी ॥
 पिये अंजुली नीर दीसौ उपंगा । फिरं कच्च रञ्चीन में रत्त गंगा ॥ छं० १९॥
 दिसानं दिसानं सगे जाति राकी । कही चंद कब्बो उपमा सु ताकी ॥ छं० २०॥
 कवित्त — त्रितिय नयन रुद्र कै । उड्डि घन अगिग तिनंगा ॥

तास मध्य ते प्रगटि । तेजवंता सु तुरंगा ॥

भुअपत्ती संग्रहे । पीठ मडै पल्लानं ॥

अंबर करत बिहार । देवि कोप्यी मघवानं ॥

प्रगट्टि नषि दिय वञ्ज सों । गयन गवन तब मिट्टि गय ॥

कहि चंद मनहु पहुपंग तें । फेरि आज पण्वरत ह्य ॥ छं० २१ ॥

जयचन्द घोडे पर चढा । तीन हजार उंका निशान घोर

तीस लाख पंदल सजकर झट से तय्यार हुआ ।

चङ्गल पंग ह्य सज्जि । सज्जि गजराज सज्जि नर ॥

यो जानी मुर असुर । करै कमघज्ज विया पुर ॥

बजि त्रिघोष त्रिय सहस । मीर बंदा दम लष्वित ॥

तीम लष्व पाइवक । सुवक पारंक विअष्विय ॥

जू मन विराग बल बीर सजि । दल सज्ज्यो गंजन अरिन ॥

पहु पंग बीर परतषि लै । किरन सु सम सज्जो किरन ॥ छं० २२ ॥

जयचन्द ने प्रतिज्ञा की कि जादव घोर चौहान

दोनों को मार कर तब मैं राजसूय यज्ञ करूंगा ।

दूहा - ३३ गाा रहुंंग त्रिय । बघि जट्टव चहुआन ॥

जय्य अरंभ जु मंडिहीं । ता पच्छै परवान ॥ छं० २३ ॥

सेना की शोभा वर्णन ।

कवित्त—चङ्गल पंग मिलि सेन । पूर जिम नदिय मिलन त्रिन ॥

बज्जि बीर वा तूल । जत्य कध्यह उड्डै विन ॥

एकट्ठां फुनि जम्म । तुट्टि जू जू फल लड्डो ॥

देव क्रम्म करि जोग । आइ एकट्ठ अरुड्डो ॥

बंधेत काल डोरी तनै । छूटि धार घन मिलहि तिम ॥

आवृत्त क्रम्म लिष्वे बिना । मिलै न गंचो पंच २जिम ॥ छं० २४ ॥

१. २१ छं० मो०—त्रि में नहीं है ।

२. ए०—को०—पहु ।

३. ए०—हुष ।

४. ए०—हु०—जिम ।

५. ए०—को०—पंच ।

६. ए०—हु०—को०—जिम ।

जयचन्द्र की स्त्री का बिरह वर्णन ।

बूहा --इह अवस्थ पद्म पंग की । बाल अवस्था कौन ॥

जियन आस नहिं सांस तन । डरहि देखि अलि जोन्ह ॥ छं० २५ ॥

गाथा - बाले मलयं चंपं । दै दै चंपत उरह उरहीती ॥

तिन बिपरीतं बामं । कामं रस जग्गयी धनयो ॥ छं० २६ ॥

भ्रमरावली --बढ़ि बाल वियोग सिंगार छुन्यो ।

सुख की अभिराम कि काम लुट्यो ॥

घन सार सुगंध मु घोरि घनं ।

बनि जानि प्रकीन रूपान वनं ॥ छं० २७ ॥

तल पत्ति तजे तल पत्ति मनो ।

बहु बाढ़िहै अंग अनग घनों ॥

नव चंदन अंग अनंग जरै ।

दिप दीपक भीन में भान बरै ॥ २८ ॥

लगि मोदक से अन मोदकयं ॥

दिसि प्राचिय देखि परी धुक्यं ॥

प्रति वृत्ति सरत्ति यपी पयन ।

उमगे तहां अंसुअ द्वै नयनं ॥ २९ ॥

घन ज्यों तन छडि न उत्तर देइ ।

लगि कानन नाम पिया अलि लेइ ॥

कछु बर भोहन उत्तर देत ।

मनों दस वस्थन दंग अचेत ॥ छं० ३० ॥

चषयं सुभि चंचल रंजनयं ।

सु मनो गहि मुत्तिय पंजनयं ॥

बिय भाव सु अंसु अनंदि लता ।

हर नंभिय रष्व तिगी पतिता ॥ छं० ३१ ॥

तिन अंग अबेतकिता भ्रमयं ।

दुष दूषन भूषन से तनयं ॥

दिषि दिषि बली अलिके अकरें ।

लय सास उसासन तानि परे ॥ छं० ३२ ॥

पन प्रान प्रियान प्रयाम पुटं ।

लमि साहस एक घटी न घटं ॥

१. ए०--हु०--मो०--अति ।

२. ए०--हु०--को०--उरहीति ।

३. मो०--बैत, कैत ।

४. ए०--हु०--को०--अवस्थन ।

सु श्वनं सव तै विमनं मन तै ।
निब निहचल शैनि गई गिनतै ॥ छं० ३३ ॥
बलि सीत सुगंध सुमंदय बात ।
मनों लगि पाबक अंभन जात ॥
हुलावन अंचल शीतल काज ।
लगै मनो तीर तश्निय जाज ॥ छं० ३४ ॥
भुअंगम भोजन अंगम नारि ।
करै कदना रसकी उनिहारि ॥
सबै सु सषी मिलि पूछत ताहि ।
मनों ब्रह्म श्रोत सुने रस जाहि ॥ छं० ३५ ॥
चढघौ कुटिलं रथ वित्तह घाइ ।
सु जे मरविद समादक लाइ ॥
इनं रिति नारि न मुक्कह नाह ।
लगे बिहजानि कुमुदिन राह ॥ छं० ३६ ॥
नदीय निवान अपीत सयं ।
नव पंथय सुझसय बुझस कयं ॥
बजि भारत तत्त समीत प्रकार ।
उई घन धम्म बहै अनिवार ॥ छं० ३७ ॥
करै तर तुंग गई सुधि घाम ।
तजी पहू पग नरिद सु वाम ॥ छं० ३८ ॥

अथचन्द्र की चढ़ाई का वर्णन ।

पदरी- चढ़ि चत्यो पंग कमधज्ज राय । सो छिन्न भिन्न डम्मरित छाइ ॥
पदरी छंद बरनो सुरंग । लहु बरन बीच विचि अति सुरंग ॥ छं० ३९ ॥
दलकंत डाल तरवर प्रमान । हलके हलन गज नग समान ॥
अपसुकन सुकन वित्तहि न चित्त । त्रिम्मान वत्त गुन धरत तत्त ॥
॥ छं० ४० ॥
कदवत्ति सलिल जहां सलिल पंक । चित्त चित्त बकं जे करें कंक ॥
चल्ले नरिद अरि पुम्ब गाव । भुमियां ससंक सब लगत पांथ ॥ छं० ४१ ॥

१. ए० को०-सुषानं

२. ए० को०-नैनि ।

३. मो०-तश्नित ।

४. ए०-सजे ।

५. ए० को०-अपीत ।

६. मो०-नचहि ।

७. ए० त्रिम्मान, विमान ।

गढ़-घेरि पंग किय अप्रमान । मानों कि मेर पारस भान ॥
पंगह सुबीर गढ़ करि गिरह । सबरी परस चंदा सरह ॥ छं० ४२ ॥
चढ़ अमरसीय चढ़ि अमरसिध । महिलौत स नरवर लहु सु बंध ॥
पंगुरा सुमर लगि उं व गत । जाने कलंक लंगूर यत्त ॥ छं० ४३ ॥

जयचन्द्र का दक्षिण की ओर चढ़ चलना ।

कवित्त - दिशि दक्षिण को बलिय । गयी कमधज्ज चित्त करि ॥
यों फिरंत तहें सूर । भित्त आगस्ति पान फिरि ॥
पंच तत्त बिय बिरह । छुट्टि लगी सु पच पथ ॥
तोइ काज हम करें । चरन सेवकह जंपि तथ ॥
तो अंब प्रपी अब जानि बस । जस क्रीड़ा घर दगनह ॥
कच्छू सु जोसि बलि जोति तन । हबि सहक भेदे मनह ॥ छं० ४४ ॥

हाथियों की शोभा वर्णन ।

गज्जनेस कमधज्ज । दान बरषंत बीर सजि ॥
नव अंगुर इक विहथ । सूर तन इक प्रवाह लजि ॥
सिरी सत्त सोभै । बिसाल सि, र विराजै ॥
मनु कज्जल गिरि शिखर । सूर मंगल तन साजै ॥
सज्जिय अनेक ग्रप पंग ने । गामी तर गोड़न बियो ॥
जाने कि अकामह भान दिन । ऐ वसट्टु गिर पय दियो ॥ छं० ४५ ॥

बूहा - रंभ ऊन तट पंशुरी । लगि बधू सित माल ।

भंग सुना की पंति तें । बड़ी विरह बनमाल ॥ छं० ४६ ॥
राजा भान का यह समाचार पृथ्वीराज को लिखना ।

बान पंग पहु पंग परि । मिली क्रंन की कान ॥

इह अपुब्ब बर भान सजि । दे कगद चहुआन ॥ छं० ४७ ॥

उक्त समाचार पाकर काम क्रीड़ा प्रवृत्त पृथ्वीराज का बीरता
के जोम में आजाना ।

रति पति पत आलुझिध घन । तिहि कगद मुकि दूत ॥

तजि सिगार भौ बीर रस । जिमि आयी बर धूत ॥ छं० ४८ ॥

बाल कमोदनि पीय डिग । ससि समान रस पान ॥

बर बिलोकि जो देखिये । तो चहुआनह भान ॥ छं० ४९ ॥

कवित्त - लाज सरस चहुआन । जोम उज्जै जुध मुसम ॥

त्रियन पाइ दिवि काम । बेर दिष्ये बु बीर सम ॥

बरि इक पंग नरिद । कलैंक उननि करि देखै ॥
इत सु अह्व राइ । सजन अप्पनी सु लेवै ॥
सुरतंत स्वामि अभिलाष रिन । प्रव्व राज मद्दह नूपति ॥
मार सुर नरिद संकर भयी । अति निकलं कह चित दिपति ॥५०॥
इधर शहाबुद्दीन की चढ़ाई, उधर जयचन्द की राजा भान से
लड़ाई देखकर पृथ्वीराज ने चितौर के रावल समर सिंहजी
को सब बृत्तान्त लिख कर सहायता चाही और सम्मति पूछी ।
इहा—घरी एक बंधी सुनी । पै मुककलि प्रथिराज ॥
बीय सोम अप्पन चढ़न । लै दीनी रस पाज ॥ छं० ५१ ॥
चढ़त गज प्रथिराज को । चढ़ अबाज सुरतान ॥
समर सिध रावर दिशा । दै कगद चहुआन ॥ छं० ५२ ॥
कवित—दिल्ली धर गोरी नरिद । बंध पल्हन प्रपनी १।
धां हुसेन कै बैर । अनगपालं मु मिलत्ती ॥
तिर भर जल गंभीर । हमम है गै कमघउजी ॥
देवगिरि दिसि भान । बीर पावस जिम सज्जी ॥
घर लई सब्ब साहिब जुरत । भान न उप्पर मुककही ॥
चित्रंग राज रावर समर । इह अवसान न चक्कही ॥ ५३ ॥
समर सिंह ने पत्र पढ़कर कहा इस समय पृथ्वीराज को दिल्ली
में एकले न छोड़ना चाहिए । मेरे साथ अपने सावंत और
अपनी सेना दें मैं पंग से लड़ लूंगा ।
बंचिय कगद समर । समर साहस उच्चारिय ॥
तव सुमंत बर नपति । मंत जानै न विचारिय ॥
हम सुमंत जो करै । राज दिल्ली मति छंडी ॥
इह गोरी सुरतान । अनगपालह फिर मंडी ॥
सामंत 'देहु हम संग बर । रन रुधै पहुपंग नर ॥
आरंभ महन रंभ मती । इह 'सुमंत कुमलंत घर ॥ ५४ ॥
समरसिंह की सलाह मान पृथ्वीराज ने अपने सावंत चामुंडराय
और रामराव बड़गुजर के साथ अपनी सेना रवाना की ।
कुंडलिया—समुद रूप गोरिय सुबर । पंग ग्रेह भय कीन ॥
चाहुअन तिन बिबध कै । सो ओपम कवि लीन ॥
सो ओपम कवि लीन । समर कगद लिय हृष्यं ॥
भिरन पुच्छि बट सुरंग । बंधि चतुरंग रअध्यं ॥

समर सु मुषकलि सोर । लोह-फुल्यो जस कुमुदं ॥
रा चामंड जैतसी । रा बड़गुज्जर समुदं ॥ छं० ५५ ॥
राबल समरसिंह ने अपने भाई अमर सिंह को साथ लिया ।
ये लोग देवगिरि की ओर चले ।

हुहा— अमरसिंह बंधव समर । समर समोकलि दीन ॥
ते सामंतन संग लै । देवगिरि मग लीन ॥ छं० ५६ ॥
हम सु राज बहुबान नें । राधे घेरी राइ ॥
पंग 'ओट बर कोट हूँ । देवगिरि गढ़ जाइ ॥ छं० ५७ ॥
जयचन्द को गढ़ घेरे देख चामंडराय ने बड़ाई की ।
इसर राजा भान मिला ।

कवित्त— देवगिरि गढ़ घेरि । छोह मंड्यो बर पंगं ॥
'रन त्रिघोष प्रमान । बीर बाजे रन जंगं ॥
चिहुदिसान उड़ि चक्र । उनीझी झंझर लग्गा ॥
द्वादस दिन रन मंडि । राव चामंड भिरि भग्गा ॥
सामंत पंग वित्ते नृपति । छल सज्जे बलहारियां ॥
दाहिम्न राव दाहिर तनय । रत्ति बाह बिच्चारियां ॥ छं० ५८ ॥
मिलि जद्व चामंड । रत्ति बाहं मंपन्नो ॥
जोइज्जे सथ टारि । साथ टारिजै अपन्नो ॥
अंत साथ सो साथ । और सब साथ 'मुपन्नो ॥
कै भर तरकस बंध । धान मन 'आकन्नो ॥
जीवंत दान भोगह समर । मरन तित्परैभ 'भिरन गति ॥
ए करै बात उभैत नर । ता स राज मंडल 'मिलति ॥ छं० ५९ ॥
राजा भान और चामंडराय की सेना का वर्णन ।
हृथ्य हृथ्य सुझनैन । मेघ डंमरि मडि रज्जी ॥
निशि निशीथ अंतरी । जान उत्तरि सथ सज्जी ॥
बिज्ज बीर झलकंत । पवन पच्छिम दिशि बज्जे ॥
भोर सोर पप्पीह । अवनि सक्रित घन गज्जे ॥
बढ़ी जु सिलह निशि सत्त मिलि । 'घसिय पंग दरबार दिमि ॥
चामंड राइ दाहर तनी । लरन लोह कट्टीति रिसि ॥ छं० ६० ॥
राजा भान का मिलना देखकर जयचन्द को क्रोध करना ।

१. ए०—ओर ।

२. ए०—इन ।

३. ए०—मुपबंध ।

४. ए० छं० को०—आकष्य ।

५. ए०—भिरन ।

६. मो०—मिलति ।

७. ए०—बवन ।

८. ए० छं० को०—सधिय ।

घसि नरिद चामंड । कूह बज्जी रन जंगं ॥
 भर भग्नी बीकी समूह । छग्गा रन जंगं ॥
 रन नरिद वाहन कुआर । सारह हसि सिल्लै ॥
 पंग टटी बौछार । जिते भिजे तित मिल्लै ॥
 आरिष्ट काल बज्जत घरी । उषरि मेह घन सार जल ॥
 जग्यौ जोध कमधज्ज अब । मनो सिष जुटपी सु छल ॥छं० ६१ ॥
 तब रावत उच्चरे । राज जोरी बर पंगं ॥
 जिन चंपे बल पुंछ । रोस जग्यौ नृप दंगं ॥
 नाग पति कोसि । अप्प बर कन्ह जग्यौ ॥
 राह सुमनि बित्तए । जम्म जुग राज मुकायो ॥
 उच्चरे बीर कुट वार रिन । रन हंघ्या अप डिभरू ॥
 संभरे बीर कमधज्ज की । भये रोम गति विम्भरू ॥ छं० ६२ ॥

अमरसिंह ने जयचन्द के हाथी को मार गिराया ।

अमरसिंह आहुहु । नाग मुष्पी बर कदुडी ॥
 क्षीश क्षोभि गजराज । नाग मुष नगिनि चदुयी ॥
 हाड हटक्की हृथ्यि । बीर षच्यौ कर सहे ॥
 कै हयनापुर चन्द । बीर षचं बलिभद्रे ॥
 दंती मुभगि घर पर पन्यौ । इल घुच्यौ दत अद्धकवि ॥
 सिष हति भूमि बर सुम्भई । मिलत भूमि हृथ्यह तिरव ॥ ६३ ॥

हाथी के मारे जाने पर जयचन्द का क्रोध करना और स्वयं टूट पड़ना ।

हस्ति काल जम जाल । काल रुध्यों चामंडह ॥
 सुनत पंग रस भगं । सीस लग्यौ ब्रह्मंडह ॥
 रन रुंघ्यौ बछ्छरू । मीन गति नीर प्रमानं ॥
 जगि बीर पदुपंगं । तोन वारध्थ प्रमानं ॥
 जग लोह कोह कद्विदय सु असि । भिरत न अपु अरि तक्कए ॥
 रहि जाम एक निसि पच्छली । चढ़ि विमूर हय नष्यए ॥छं० ६४॥

रसावला —

पंग जंगं घुलं, कूह मच्छी हुलं । सार तुट्टे पलं, षग मच्चे षलं ॥ छं० ६५ ॥
 हाल हाला हुलं, सोइ बिर्यौ तलं । गिद कोलाहुलं, अंत हंती रुलं ॥छं० ६६॥

१. छं०—प्रति में "पंगु पुष" की पाठ ऊपर दिया हुआ है ।

२. ए०—राषण, राषण । ३. ए०—जंपं । ४. ए०—दंसं ।

५. ए०—मूठी मटठी ।

६ मो०—हीन ।

सुदपीयं छलं, अर्म अस्ति तलं । वीर निह्नीचलं, सिद्ध टड्डे रलं ॥ छं० ६७ ॥
संभु मालं गलं, ब्रह्म चित्ता चलं । भूत बिस्ता तलं, पथ्य पारथ्यलं ॥ छं० ६८ ॥
देव देवा नलं, फट्टि फारथकलं । घाय छउजे चलं, सूर घुम्मी रलं ॥ छं० ६९ ॥
तारचौ सट्टलं, बाइ भूत तलं । रीति पछ्छी बिनं, तार आयासनं ॥ छं० ७० ॥
सूर उग्यो ननं । कोर चढ्ढे फनं ॥ ॥ छं० ७१ ॥

लड़ाई सतम होने पर जयचन्द का अपने घायलों को उठवाना ।

बूहा—रन मुक्के गो भान चढ़ि । सब सामंतन सथ्य ॥

भ्रत बीर पहु पंग ने । षत सु बुढघौ तथ्य ॥ छं० ७२ ॥

इस युद्ध में मारे गए सूर सामंतों के नाम ।

कवित्त—पन्थो बंध गोइंद । नाम हरचन्द प्रमान ॥

पन्थो बंध नरसिध । रेह रष्वन चहुआनं ॥

पन्थो कन्ह पुंडीर । बीर जैचन्द सु जायो ॥

पन्थो सूर बाबेल । हविक कपि जिम बल घायो ॥

चनुरंग सव्य मिल्लिय वही । असिन ठार बडगुजरे ॥

सामंत हथय बर बज्र सम । षेत सु दुंडहि पंगरी ॥ छं० ७३ ॥

रणभूमि में जयचन्द के घोड़ों की चंचलता और तेजी का वर्णन ।

रिस छुटघौ कमघज्ज । बोल बंका बर बोले ॥

ज्यो वावन बल रूप । कुहर धानह बल भेल्हे ॥

रावन पबय समान । काज कैलास मुलावै ॥

कै बलि बंधन पाज । द्रोन हनुमंत जु ल्यावै ॥

गिरिराज काज माइर मथन । कै अमरस मिल्लिय नही ॥

‘नंधयो अश्व कमघज्ज नै । सो उत्पम कवि भाषही ॥ छं० ७४ ॥

बेबगिरि के किले की नाप और जंगी तैयारी का वर्णन ।

मापि पंग गढ़ देखि । कोस द्वादस बर ऊंचो ॥

दहति कोस विसतार । कोठ मरहथ्य त्रिपुंचो ॥

नारिगोरि सा बत्ति । राज मंडी चावदिसि ॥

ढोह मंडि पाषान । तीर बरधंत मंत्र असि ॥

पावस्स मास बीती उभै । जुरि कमघज्ज सु छंडयो ॥

मंत्री सुमंत्र परधान ने । फेरि भंत्र तत्र मंडयो ॥ छं० ७५ ॥

जयचन्द का राजा भान को मिलाने का प्रयास करना ।

बल बंधयो कमघज्ज । किल्ह मंज्यो भंभान ॥

लगि चरन पहु पंग । बंदि लीनी फुरमानं ॥

दूत भेदयो मंडि । द्रव्य नंधे चावहिसि ॥
कछु सलोभ कछु मोह । मेल्हि पर ध्यान पल्हनिसि ॥
अप्पनी साथ ले सिंघ तब । जियत मरन ते उद्दए ॥
जम जीव जार पंजर परे । कोइन कलि महि छुट्टए ॥ छं० ७६ ॥
संवत ग्यार सेंजुत । अदिस उन लग्गिय पंचं ॥
मरन अग्गि जानिय न । गोऊ पल्हन जो पंचं ॥
दिन नछिन्न रोहिनी । समय च्यालीस बिअगल ॥
मत्त बीर जद्व नरिद । भग्गी ग्रह भगल ॥
जगयो धार धारह घनी । भोज कुंअर रन मड कै ॥
सा धम्म धम्म छंडे नही । गो अधंम छिति छडि कै ॥ छं० ७७ ॥

इधर अमर सिंह का घोर युद्ध करना ।

बज्जि कूह समूह । अमर^१ उठुं समरं भिरि ॥
पंड मुष्य भी कोट । समर बध सुद्धेजुरि ॥
रा चार्वेड जैतसा । राव बड्गुज्जर घाए ॥
आहुठुं कमधज्ज । सार बज्जे सुरझाए ॥
बर यंग जंग भज्जी सहर । लुथिय लुथिय आलुथिय परि ॥
चदुइने अरिय संग्राम भिरि । षट् सहेस सेना गिरी ॥ छं० ७८ ॥

जयचन्द का किले पर सुरंग लगाना ।

परत पंग आरोहि । सुरंग दीनी सुभान गढ ॥
नाग^२ समूह डरी । ढाहि देवल सुरग मड ॥
थान थान नर उठें । चद तस उप्पम पाइय ॥
कालबूत^३ कागद् । पंग इह काज उडाइय ॥
अज्जैन सखिदिय सेन बी । दच्छ देव बर बोलही ॥
सामंत सूर संग्राम कल । ताप तुरंग न डोलही ॥ छं० ७९ ॥

चौपाई- बहु परपंच किए पहुपंगं । गढे तूटंत मग्ग मन अंगं ॥
गिरि सम्पूह बंरु भर ठट्ट । मती मडि मुक्यो बर भट्टं ॥ छं० ८० ॥

जयचन्द का कीर्तिपाल नामक भाट को भीमदेव और
चामंड के पास संधि का संवैसा लेकर भेजना ।

कवित्त — कितिपाल बर भट्ट । बंधि^४ फुरमान पग रन ॥
जहं जह्व चामंड । द्रुग्ग दोय छत्रन जुरन ॥

१. ए०-ठडे

२. छ०-समूह घडरी ए०-समुहरडी, समूरः घरी ।

३. ए०-कागच्छ, कागछ ।

४. ए०-हुं को०-फुरमारस ।

बोज चक्क बहुआण । पन्थो सभपन मिस अट्टी ॥
उह मारन इत मरन । बज्जि बाहं बिन घट्टी ॥
आतुक्ख-मि-त्ती बंधो जिनन । जुद्ध मोहि क्यो पूजिही ॥
भुंगार भोग आनन्द रस । सबे बीर रस चुक्किहो ॥ ८१ ॥
राजा भान को समझा कर जयचन्द के दूत का बल कर लेना ।

तब बसीठ नृप पंग । भान एकत्त मंत करि ॥
मिली पंग कमधज्ज । जंम संसार जंम डरि ॥
तमस भेद नृप एह । बाल उत्तर गढ़ भेदं ॥
अरि अमंत जह्व । नरिद कीनी घर छेदं ॥
लमि कान बात मंत्री कहो । आहुष्टां बल गड्डियां ॥
त्रिय पुत्त हत्त पुत्री लिये । दुज्जत्त जनम सुवद्धियां ॥ छं० ८२ ॥

बूहा - बिष घर दुज्जन सिष फुमि । अग्गि अनंग अनेह ॥
ए अपना ना लेषिये । ये परि अप्पे छेह ॥ छं० ८३ ॥

कथित - हसि जहो चामंड । पंवार हृथ्ये दिय तारी ॥
सुनि बड़गुज्जर राम । मतो अप्पो मो भारी ॥
सामि एक बंदी स । प्रीति जल जंतं तक्की ॥
लियो अधर सम रस्स । वात सा दोहमन ककी ॥
क्यो जामन मंत रहंत इत । केह कंत जो मंगयो ॥
सो मंत पंग कमधज्ज ने । अप्प हेत सो उगयो ॥ छं० ८४ ॥

बूहा - इह उत्तर नृप पंग सो । कहै सु जह्व राय ॥
दूष बिनट्टो सुद्ध हिय । किन अप्पन मुष पाड ॥ छं० ८५ ॥

चौपाई - उठे भट्ट तिहि ठौर विचारी । क्यो उठि जोगी कथा ज्ञारी ॥
मन की मत्ते रही मन माया । ज्यो तरंग जल जले ममाया ॥ छं० ८६ ॥

कथित - मतो मंडि नृप पंग । गट्ट मुक्के घर लीनी ॥
पट्टन पाट नरिद । थान थानं रचि दीनी ॥
उभे बीर जीजन प्रमान । भारह रचि गाढी ॥
अप्पनगे कमधज्ज । हाम राजमु मन बाढी ॥
कनबज्ज नरिद अज्ज समन । जोगी मिसि कर कद्धयो ॥
दिसि विदिसि पंग जीपन सुबल । रचि बतुरंगी चद्धयो ॥ छं० ८७ ॥

जयचन्द का विचारना कि वह धन छोड़ कर यदि यह
भरती मिली भी तो किस काम की ।

द्रुहा -कीन हीन कौ नीर बिन । को तप भान नरिंद ॥
सह धन घर मुक्की मिले । लज्ज एह जय चंद ॥ छं० ८८ ॥
इसके परिणाम में बहुमान और राजा भान को यश मिला
और जयचन्द नवमी को कन्नौज को फिर गया ।
जस्स तिलक ग्रह भान कौ । जोगिन पुस्तर चिन्ह ॥
मोकलिजै आहुट्ट पति । पग्न पंग करि हीन ॥ छं० ८९ ॥
गयो पंग कनवज्ज दिसि । धन रण्वे धन मास ॥
नव नवमी नव सरद निसि । तिन मुक्की अरि त्रास ॥ छं० ९० ॥
इति श्री कबिचंद विरचिते प्रथिराज रासके बेवगिरि युद्ध
वर्णनं नाम छाबीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २६ ॥

अथ रेवा तट समयौ लिख्यते ।

(सत्ताइसवां समय)

देवगिरि से विजय कर चामंडराय का ग्रामा ।

ब्रूहा — देवगिरि जीते सुभट । आयौ चामंडराय ॥

जय जय नृप कीरति सकल । कही कबिजन आय ॥ छं० १ ॥

चामंडराय का पृथ्वीराज से रेवा तट के बन की प्रशंसा करके
वहां शिकार के लिये चलने की सलाह देना ।

मिलत राज प्रथिराज सों । कही राय चामंड ॥

रेवा तट जो मन करो । बन अपुम्ब गज भुंड ॥ छं० २ ॥

उक्त बन के हाथियों की उत्पत्ति और शोभा वर्णन ।

कवित्त — विन्द लिलाट प्रसेद । कयो शंकर गज राजं ॥

एरापति धरि नाम । दियो चढ़नै सुर राज ॥

दानव दल तिहि गंज । रंजि उमया उर अंदर ॥

होइ रूपाल हृस्तिनी । संग बगसी रचि सुंदर ॥

औलादि तास तनु आय कें । रेवा तट बन विस्तरिय ॥

सामंत नाथ सों मिलत इह । दाहिमै कथ उच्वरिय ॥ छं० ३ ॥

राजा का चम्ब से पूछना कि मुख्य चार जाति में से यह किस
जाति के हाथी हैं और स्वर्ग से इस लोक में क्यों आए ।

अरिल्ल — च्यारि प्रकार पिण्ठि बन वाहन । भद्र मंद मृग जाति सधारन ॥

पुच्छि चंद कवि को नरपत्तिय । सुरवाहन किम आइ धरत्तिय ॥ छं० ४ ॥

चम्ब का वर्णन करना कि हेमाचलपर एक वृक्ष था जिसकी शाखें सी
सी योजन तक फैली हुई थीं मतवाले हाथियों ने उन्हें तोड़

दिया । इस पर क्रोध करके मुनिवर ने श्राप दिया कि तुम

मनुष्यों की सवारी के लिये पृथ्वी पर जन्म लो ।

कवित्त — हेमाचल उपकंठ । एक वट वृक्ष 'उसंगं ॥

सी योजन परिमान । साव तस भंजि मतंगं ॥

बहुरि दुरद मद अंध । ठाहि मुनि बर आरामं ॥

दीर्घ तपारी देखि । श्राप दीनों कृपि तामं ॥

अंबर बिहार गति 'मंद हुआ । नर आरुढ़न संग्रहिय ॥
 संभरि नरिद कनि चंद कहि । सुरग इंद्र इम भुवि रहिय ॥छं० ५॥
 अंग बेश के पूर्व एक सुन्दर बनखंड है वही वह गजयूथ बिहार
 करता था । वहां पालकाभ्य नामक एक थोड़ी भवस्था का
 शूषीद्वार रहता था उसे इन सभों से बड़ा स्नेह हो
 गया था परंतु राजा रोमपाद कंदा डालकर
 हाथियों को चंपापुरी में पकड़ ले गया ।

अंग देस पूरब्ब मदि । बन पंड गहब्वरि ॥

उज्जल जल दल कमल । बिपुल लुहिताच्छ सरब्वर ॥

श्रापति गज को जूथ । करत क्रीड़ा निसि वासर ॥

पालकाभ्य लघु बेस । रहत एक तहां रुषेसर ॥

तिन प्रीति बंधि अति परसपर । रोमपाद नृप संभरिय ॥

आषिट जाइ फंदनि पकरि । दुरद आनि चपापुरिय ॥ छं० ६ ॥

पालकाभ्य मारे बिरह के मरकर हाथी के रूप में जनमा ।

दूहा - पालकाभ्य के बिरह करि । अंग भए अति धीन ॥

मुनि बर तब तहूँ आय के । गज चिगछग्गु न कीन ॥ छं० ७ ।

गाथा - कोपर पराग पत्रं । छालं डाल फूल फल कंद ॥

फली कली दे जरिय । कुंजर करि थुलय तनय ॥ छं० ८ ॥

उधर ब्रह्मा के तप को भंग करने के लिये इन्द्र ने रंभा को भेजा

था उसे शापवश हथिनी होना पड़ा वह भी वहाँ आई ।

कवित्त ब्रह्मा रिष तप करन । देपि कंप्पी मघवान ॥

छलन काज पहु पठय । रंभ रुचिरा करि मानं ॥

श्राप दियो तापसह । अवनि करिनी सु अवत्तरि ॥

कम्म बंधि इक जती । लषित हूओ सुपनंतरि ॥

तिहि ठाम आइ उहि हस्तिनी । बीर लियो पोगर सुनमि ॥

उर सुक अंस धरि चंद कहि । पालकाभ्य मुनिवर जनमि ॥ छं० ९ ॥

पालकाभ्य उस के साथ बिहार करने लगा ।

दोहा - तायें तिन मुनि करिन सों । बांध प्रीत अत्यंत ॥

चंद कहाँ नृप पिण्य सम । सकल मंडि बरतंत ॥ छं० १० ॥

१. को० ए०-मंद ।

२. ए०-डलं, डालं, छलं ।

बन्द ने उस बदन और जम्बुओं की प्रशंसा करके कहा कि
आप अबश्य वहाँ चलकर शिकार खेलिए ।

कवित्त - सुनहि राज प्रथिराज । विपन रवनीय करिय जुथ ॥

रेवा तट सुंदर समूह । गजवंत चवन रथ ॥

आषेटक आर्चंभ । पंथ पावर रुकि पिल्ली ॥

सिध बट्ट दिलि समुह । राज पिल्लत दोइ चल्ली ॥

जल जूल कूह कमतूरि मृग । पहपंगी अरु पर्वतह ॥

चहुआन मान देखें नृपति । कहिन बनत दक्खिन सुरह ॥ छं० ११ ॥

एक तो जयबन्द पर चलन हो रही थी दूसरे अच्छा रमणीक

स्थान सुन पृथ्वीराज से न रहा गया ।

बुहा - एक ताप पह पंग की । अरु रवनीक 'जु थान ॥

चारुडराव बच्चन सुनि । चढ़ि चढ्यौ चहुआन ॥ छं० १२ ॥

पृथ्वीराज धूम से चला । रास्ते के राजा संग हो गए, स्वयं

रेवानरेश भी साथ हुआ । इस समय सुलतान के भेदुए

(नीतिराय) ने लाहौर से यह समाचार गजनी भेजा ।

कवित्त - चढत राज प्रथिराज । बीर अगनेव दिसा कमि ॥

सब भूमि नृप नृपति । चरन चहुआन लगि घसि ॥

मिल्यो भान विस्नरो । मिल्यो षट्ठल गड्डी नृप ॥

मिल्ली नंदि पुर राज । मिल्यो रेवा नरिद अप ॥

बन जूथ मृग मिषह रु गज । नृप आषेटक खिल्लई ॥

लाहौर थान मुरतान नप । बर कग्द लिधि सिल्लई ॥ छं० १३ ॥

मारू खां और तत्तार खां ने बिरली पर आक्रमण

करने का ★ बीड़ा उठाया ।

बुहा - पां तनार मारूफ पां । किये पान कर साहि ॥

घर चहुआनी उररे । बज्जा बज्जन बाइ ॥ छं० १४ ॥

यह समाचार पा आहाबुद्दीन का चढ़ाई की तयारी करना ।

साटक - प्रीं मूर गोदिय वर भरं, बज्जाइ मज्जाइने

सा मेना चुरा बधि उठक, ततार मारूफयं

१. मो०-सु ।

★शाहीन समय में यह नियम था कि जब कोई कठिन कार्य या उपस्थित होता था तो दरबार में पान का बीड़ा रक्त कर अपेक्षित कार्य की सूचना दी जाती थी अतएव जो सरदार अपने को उस काम के करने योग्य देखता वह बीड़ा उठा लेता ।

सुहृद्गी सार स उम्प राव सरसी, पस्लानयं धानयं ।
एकं जीव साहाब साहि ननयं, बीयं स्तयं सेनयं ॥ छं० १५ ॥

तातार खा खादि सभों ने कुरान हाथ में लेकर
अपथ करके प्रस्थान किया ।

बूहा-- अहि बेली फल हृष्य लै । तो ऊपर ततार ॥

मेच्छमसूरति सति कै । बंच कुरानी बार ॥ छं० १६ ॥

ततार खां का कहना कि चन्द पुंढीर को मार कर
एक दिन में दिल्ली ले लूंगा ।

कुंडलिया-- बर 'मुसाफ ततार खां । मरन किति 'नन बान ॥

मैं भंजे लाहौर घर । लैहं सुनि सु बिहान ॥

लैहं सुनि सु बिहान । सुनै दिल्ली सुरतानं ॥

लुथि पार पुंढीर । भीर परि है बहुआनं ॥

सुचित्त चित्त जिन करहु । राज आवष 'उषापं ॥

मञ्जनेस आयस्स । चले सब छूप मुसाफं ॥ छं० १७ ॥

चन्द पुंढीर ने पृथ्वीराज को समाचार लिखा । पृथ्वीराज का

छः कोस लौट कर कूच का मुकाम करना ।

बूहा-- षट मुर कोस मुकाम करि । षडि चल्थो चौहान ॥

चंद बीर पुंढीर को । कागद करि परिवान ॥ छं० १८ ॥

पृथ्वीराज का पंजाब तक सीधे शहाबुद्दीन की सेना के रक्त पर
जाना और उधर से शहाबुद्दीन की सेना का घाना ।

गोरी वै दल सुंमुहौ । गौ पंजाब प्रमान ॥

पुंढ रू पच्छिम दुहु दिसा । मिलि चुहान सुरतान ॥ छं० १९ ॥

उसी समय कन्नौज के दूतों का यह समाचार जयचन्द से कहना ।

दूत गये कनवज्ज दिसि । ते आए तिन थान ॥

कथा मंड बहुआन की । रुहि कमघज्ज प्रमान ॥ छं० २० ॥

पृथ्वीराज का रेवा तट धान । सुनकर सुसतान
का सेना सजकर चलना ।

रेवा तट आयौ सुन्थो । बर गोरी बहुआन ॥

बर अवाज सब मिट्टी कै । सजे सेन सुरतान ॥ छं० २१ ॥

१. ए०--सु साफ ।

२. ए० क० को०--तन ।

३. ग०--उषानं ।

पृथ्वीराज का कहना कि बहुत बड़े शत्रुकी अगों
का समूह शिकार करने को मिला ।

दूत बचन संभलि अर्पति । बर आपेटक विल्ल ।

रेवातट 'पदर घरा । जूह मृगन बर मिल्लि ॥ छ० २२ ॥

राज्य मंत्रियों ने यह सम्मति दी कि अपने आप झगड़ा मोल लेना
उचित नहीं किसी नीति द्वारा काम लेना ठीक है ।

कवित्त - मिले सम्ब सामत । मत्त मंड्यो सु नरेसुर ॥

दह गूना 'दल साहि । सज्जि चतुरंग सजी उर ॥

मवन मंत चुक्को न । सोइ बर मंत विचारी ॥

बल घट्यो अप्पनी । सोच पछछिलो निहारो ॥

'तन सट्टी लीजै मुगति । जुगति बंध गोरी दलह ॥

संग्राम भीर प्रथिराज बल । अप्प मत्ति किज्जै कलह ॥ छ० २३ ॥

यह बात सुन कर सामंतों का मुसका कर कहना कि भारत का
बचन है कि रण में मरने से ही बीर का कल्याण है ।

सुनिय बत्त पज्जून । राव परसंग 'मुसक्यो ॥

देव राव अगरी । सेन दे पाव कसक्यो ॥

तन सट्टै 'सहि मुकति । बोल भारध्यो बोलै ॥

लोह अंच उहुंत । पत्त तरवर जिम डोलै ॥

सुरतान चंपि मुष्वां लग्यो । दिल्ली नृप दल बानिवो ॥

भर भीर धीर सामंत पुन । अवै पटंतर जानिवो ॥ छ० २४ ॥

पज्जून राव का कहना कि मैंने सब शत्रुओं को पराजित किया
और शहाबुद्दीन को भी पकड़ा । अब भी उस से नहीं डरता ।

कहै राव पज्जून । तार कट्यो तत्तारिय ॥

मै दण्डियन वै देस । भीर जहव पर 'पागिय ॥

मै बंध्यो जंगलू । राव चामड 'मु मध्ये ॥

बंधन वास विरास । बीर बड़ गुज्जर तथ्ये ॥

भर विभर सेन चहुआन दल । गोरी दल 'कित्तक गिनी ॥

जानै कि 'भीम कोरव सुवर । जर समूह तारवर किनी ॥ छ० २५ ॥

१. ए०-अघार ।

३. मो -नट्टै लीजै, ए०-मद मटें ।

५. ए०-सट्टि ।

७. मो०-बु ।

९. ए०-भीम, कोक, कोक, जौरी ।

२. मो०-बल ।

४. मो०-मुसक्यो ।

६. मो०-परिहरिय ।

८. मो०-कित्ती ।

जैत राव का कहना कि शहाबुद्दीन की सेना से मिलान
होना लाहौर के पास अनुमान किया जाता है घत एव
अपनी सब तैयारी कर लेनी उचित है
आगे जो आप की इच्छा हो ।

कहै जैत पंवार । सुनहु प्रथिराज राज मत ॥

जुद्ध साहि गौरी । नरिंद लाहौर कोट गन ॥

सबै सैन अप्पनी । राज एकठु सु किज्ज ॥

इष्ट भ्रत्य सगपन सु । हित कागद लिषि दिज्जै ॥

सामंत सामि इहि मत है । 'अर जु मंत चित्त नूपति ॥

घन रहै धम्म जमु जोग ह्वै । दिपति दीप दिव लोकानि ॥ छं० २६ ॥

रघुवंस राम का कहना कि हम सामंत लोग मंत्र क्या जानें केवल
मरना जानते हैं, पहिले शाह को पकड़ा था अब भी पकड़ेंगे ।

बहु बहु कहि रघुवंस । राम हंकारि सु उठ्यो ॥

सूनी सब सामंत । साहि आए बल छुट्यो ॥

गज व सिध सा पुरिष । जही बंधै तहा मुझै ॥

'असम समी जानहि न । लज्ज पकै आलुझै ॥

सामंत मंत जानै नही । मत्त गहै इक मरन की ॥

सुरतान सेन पहिले बंध्यो । फिर बंधो तो करन की ॥ छं० २७ ॥

कबिचम्ब का कहना कि हे गुज्जर गंवारी बातें न कहो इन्हीं
बातों से राज्य का नाश होता है । हम सब के मरने
पर राजा क्या करेगा ।

रे गुज्जर गांवार । राज लं मंत न होई ॥

अप मर छिज्जै नूपति । कौन कारज यह जोई ॥

सब सेवक चहुआन । देम भगै धर विल्लै ॥

पबिछ काम कह करे । स्वामि संग्राम इकल्लै ॥

पंडित भट्ट कवि गाइना । नूप सोदागिर वार हुआ ॥

गजराज 'सीस सोभा वरन । क्रन उड़ाइ वह सोभ लह ॥ छं० २८ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो बात आगे आई है उसके
लिये जुद्ध का सामना करो ।

परी बोर तन दंग गम । अग जुद्ध सुरतान ॥

अत्र इह मंत विचारये । लरन मरन परवान ॥ छं० २९ ॥

१. ए०-अर जुद्ध ।

२. ए०-छुट्यो ।

३. ए० छं० कौं-वनी, वसनी ।

४. वा०-सोस ।

५. ए.-वम ।

बसंत संग ब्रह्मराज कै । है दिग्धिय परवान ॥
बज्जी पञ्चर बंड रै । चाहुआन सुरतान ॥ छं० ३० ॥
ग्यारह अञ्चर पंच घट । लहु गुह होइ समान ॥
कंठ सोम वर छंड कौ । नाम कछौ परवान ॥ छं० ३१ ॥

पृथ्वीराज के घोड़ों की शोभा वर्णन ।

छंड कंठशोभा—फिरे हय बञ्चर पञ्चर से । मने फिर इंद्रुज पंच कसे ॥
सोई उपमा कविचंद कये । सजे मनो पौम पबंग रये ॥ छं० ३२ ॥
उर पुट्टिय सुट्टिय दिहुय ता । वपरी पय लंगत ता, धरिता ॥
लग्ये उड़ि छितिय चौ नलयं । सुने पुर केह अबसनयं ॥ छं० ३३ ॥
अग बंधि सु हेम हमेल घनं । तब चामर जोति पवनं रनं ॥
ग्रह अटुस तारक बीत घगे । मनो सुत के उर भान उगे ॥ छं० ३४ ॥
पय मंडिहि अंसु धरे उलटा । मना बिटय देखि चलै कुलटा ॥
मुष कट्टिन घूँघट अस्तु बली । मनो घूँघट दै कुल बद्ध चली ॥ छं० ३५ ॥
तिनं उपमा बरनी न घनं । पुजे नन बग पवनं मनं ॥ छं० ३६ ॥

श्राधी रात को दूत पृथ्वीराज के पास पहुंचा और समाचार
बिया कि अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख
सेना के साथ सुलतान लाहौर से चौबह कोस पर आ पहुंचा ।

कुंडलिया—नव बज्जी बरियार घर । राज महल उठि जाइ ॥
निसां अट्ट बर उत्तरे । दूत संस्ते जाइ ॥
दूत संपत्ते जाइ । घाइ चहुआन सु जगिय ॥
सिध बिहर्ष्ये मुक्कि । साहि साही उर तगिय ॥
अट्ट सहस गजराज । लष्व अट्टारह ताजिय ॥
उमै सत वर कोस । साहि गोरी नव बाजिय ॥ छं० ३७ ॥

पृथ्वीराज ने दूत से पत्र लेकर पढ़ा-हिन्दुओं के बल में
शौर मच गया ।

दुहा—बचि कागद चहुआन ने । फिरन चंद सह धान ॥
मनो बीर तनु अंकुरे । मुगति भोग बनि प्रान ॥ छं० ३८ ॥

१. ए०-क०-को०-मजन सिम ।

२. ए०-क०-को०-उर उप्पर पुट्टिय विट्टियत ।

४. ए०-क०-को०-बीत पने ।

६. ए०-क०-को०-राजिय ।

३. ए०-वो, वी ।

५. ए०-उड़े ।

७. क०-उर ।

मची कूह दल हिंदु के । ^१कसे सनाह सनाह ॥
बर बिराक दस ^२दस भइ । बजि निसान अरिदाह ॥ छं० ३९ ॥
दूत का दरबार में आकर पृथ्वीराज से कहना कि मुसलमान
सेना खिनाब के पार घा गई । चन्द पुंडीर ने उसका
रास्ता बांध कर मुसे इघर भेजा है ।
*बा बसू नूप मुक्कते । दूत आइ तिहि वार ॥
सजी सेन गोरी सुभर । उत्तरए नद पार ॥ छं० ४० ॥
पंचासज गोरी नूपति । बंध उतरि नहि पार ॥
चंद बीर पुंडीर नें । थवि मुक्के दरवार ॥ छं० ४१ ॥
मुलतान का अपने सामंतों के साथ युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ।

कबित्त षां माइक ततार । षान पिलची बर गइहे ॥
चाभर छत्र मुजकक । गोल सेना रचि गइहे ॥
नारि गौरि जम्बूर । मुबर कीना गजसार ॥
नूरीं षां हुज्जाब । नूर महमद मिर भार ॥
बज्जीर षान गोरी सुभर । षान षान हजरत्ति षां ॥
बिय सज्जि सैन हरबल करिय । तहां उभी सजरत्ति षा ॥ छं० ४२ ॥
शाहजादे का सरदारों के साथ सेना हरबल रचना और सेना के मुख्य
सरदारों के नाम स्थान और उनका पराक्रम वर्णन ।

रचि हरबल सुरतान । माहिजादा सुरतान ॥
षां पैदा महमूद । बीर बंध्यो सु विहान ॥
षां मंगोल लल्लरी । बीस टंकी बर षचै ॥
चो तेगीसह वाज । बान अरि प्रान सु अचै ॥
जंहमीर षान जह गोर बर । षा हिंदू बर बर बिहर ॥
पच्छिमी षान पठान सह । रचि उम्पै हरबल गहर ॥ छं० ४३ ॥
रचि हरबल पठान । षान इसमान रु गष्वर ॥
केली षां कुंजरी । साह सारी दल पष्वर ॥
षां भट्टी मह नंग । षान घुरसानी बब्बर ॥
हबस षान हुज्जाब । मब्ब आलम्म जास बर ।

१. ए० क०—करै सनाह अनाह । २. ए० क० को०—दस दस ।
३. ए०—उत्तर धी नदि पार, मो०—बट मुक्यो दरवार ।
* यह बोझ ए० को० और क० प्रति में नहीं है ।

तिन अग अट्ट गजराज बर । मय सरकक पट्टे तिना ॥
 पंच बिन पिंड जो ऊपजे । जुड होइ लज्जी बिना ॥ छं० ४४ ॥
 महाबद्धीन का इस पार तीस दूतों को रक्ष कर चिनाब पार करना ।
 करित माय बहु साहि । तीस तहँ रषिष फिरस्ते ॥
 आलम धान गुमान । धान उजबकक निरस्ते ॥
 लहु मारुफ गुमस्त । धान दुस्तम बजरंगी ॥
 हिंदु सेन उप्परें । साहि बज्ज रन अंगी ॥
 सह सेन टारि सोरा रच्यो । साहि चिन्हाव सु उत्तन्यो ॥
 संभले सूर सामंत नृप । रोस बीर बीरं दून्यो ॥ छं० ४५ ॥
 यह सुन कर पृथ्वीराज का क्रोध करना और दूत का
 कहना पुंडरी उसे रोके हुए है ।

बुहा - तमसि तमसि सामंत सब । रोस भरिम प्रधिराज ॥
 जब लगि रपि पुंडीर नें । रोक्थो गोरी साज ॥ छं० ४६ ॥
 अहां पर सुलतान चिनाब उतरने वाला था वही पुण्डरी ने
 रास्ता रोका । घोर युद्ध हुआ । चन्द्र पुण्डरी घायल हो
 कर गिरा । सुलतान चिनाब पार होने लगा ।

भुजंगी -
 अहां उत्तन्यो साहि चिन्हाव मीरं । तहां नेज गड्यौ ठठुक्के पुडीरं ।
 करी आनि सहाब सा बंधि सोरी । धके धींग धींगंधकावें सजोरी ॥ छं० ४७ ॥
 दोऊ दीन दीन कढी बंकि अस्सी । किघों मेघ में बीज कोटि भिकस्सी ।
 किए सिप्परं कोर ता सेल अग्गी । किघों बहरं कोर नागिन्न नग्गी ॥ छं० ४८ ॥
 हबकके जु मेछं भ्रमंतं जु लुट्टै । मनो घेरनी घुम्मि पारेव लुट्टै ॥
 उरं फुट्टि बरछी बरं छब्बि नासी । मनो जालमें मीन अढी निकासी ॥ छं० ४९ ॥
 लटक्के जुरनं उई हंस हल्लै । रसं भीति सूरं चवगगान विल्लै ॥
 लगे सीस नेजा भ्रमें मेजि तथ्यें । भवे वाइसंभात दीपति सथ्यें ॥ छं० ५० ॥
 करै मार मारं महावीर घीरं । भये मेघ धारा बरषकत तीरं ॥
 परे पंच पुंडीर सा चंद्र कठघो । तवै साहि गोरी स चन्हाब चठघो ॥ छं० ५१ ॥
 सुलतान का चिनाब उतरना और चन्द्र पुण्डरी का गिरना
 देख कर दूत ने बड़ कर पृथ्वीराज को समाचार दिया ।
 कबित्त - उतरि साहि चिन्हाव । घाय पुंडीर लुब्धि पर ॥
 उप्पान्यो बर चंद्र । पंच बंधव सु पथ्य घरं ॥
 विधि इत बर चरित । पास आयी बहुमानं ॥
 उप्पर गोरी नरिद । हास बद्धी सुरतानं ॥

बर मीर घीर मारुफ दुरि । 'पंच अनी एकठ जुरी ॥
 मुर पंच कोस लाहोर तें । मेच्छ मिलानह सो करी ॥ छं० ५२ ॥
 पृथ्वीराज ने कोष के साथ प्रतिज्ञा की कि तब मैं सोमेदबर
 का बेटा जो फिर सुलतान को कंद करूं । पृथ्वीराज ने
 चन्द्र ब्यूह की रचना करके बढ़ाई की ।

ब्रह्म—बीर रोस बर बर बर । मुक्ति लगै असमान ॥
 तौ नंदन सोमेस की । फिरि बंधी सुरतान ॥ छं० ५३ ॥
 चन्द्रब्यूह नृप बंधि दल । घनि प्रथिराज नरिंद ॥
 साहि बंध सुरतान सौ । सेना बिन विधि कंद ॥ छं० ५४ ॥
 पञ्चमी मङ्गलवार को पृथ्वीराज ने बढ़ाई की । (कवि ने उस
 दिन के ग्रह स्थिति योग आदि का वर्णन किया है)

कवित्त—बर मंगल पंचमी । दिन सु दीनी प्रथिराजं ॥
 राह केत जय दीन । दुष्ट टारे सुभ काजं ॥
 अष्ट चक्र जोगनी । भोग भरनी सुधि रारी ॥
 गुर पंचम रवि पंच । अष्ट मंगल नप भारी ॥
 कै इंद बुद्ध भारथ्य भल । कर त्रिसूल चक्रा बलिय ॥
 सुभ धरिय राजा बर लीन बराचठघो उदै क्रूरह बलिय ॥ छं० ५५ ॥

ब्रह्म—मो रचि उद्ध अवद्ध अध । उगि महब विधि 'कंद ॥
 बर निषेद नप बंदयो । को न भाय कविचंद ॥ छं० ५६ ॥

त्रिम प्रकार चक्रबाक, साधु, रोगी, निर्धन, विरह वियोगी लोग
 रात्रि के श्रवसान घोर सूर्योदय की इच्छा करते हैं उसो प्रकार
 पृथ्वीराज भी सूर्योदय को चाहता था ।

मंत्रिन—प्रात सूर बंछई । चक्र चक्रिय रवि बंछे ॥
 प्रात सूर बंछई । सुरह बुद्धि बल सो इछे ॥
 प्रात सूर बंछई । प्रात बर बछि वियोगी ॥
 प्रात सूर बंछई । ज्यौं सु बंछे बर रोगी ॥
 बंछयो प्रात ल्यो ज्यो उनन । बंछे रंक ररन बर ॥
 बंछयो प्रात प्रथिराज नें । सती सत्त बंछति उर ॥ छं० ५७ ॥
 पृथ्वीराज की सेना तथा बढ़ाई का वर्णन ।
 शमाली भय प्रात रत्तिय, जुरत दीसय, चंद मंदय चंद यो ।
 भर तमस तामस, सूर बर भरि, रास तामस छंद यो ॥

बर कज्जियं नीसान बुनि, बर बीर बरनि अँकुरयं ।
 धर धरकि धाहर, करषि काहर, रस मिसूर स कूरयं ॥छं०५४॥
 गज बंद बनकिय, रत्र 'भन किय, बनकि संकर उदयो ।
 रन नंकि 'भेरिय, कन्ह होरिय, बंधि दान धन 'हयो ॥
 सुनि बीर सद्दह, सबद पदुडई, सद् असद्दह छंडयो ।
 तिह ठौर अदभुत, होत त्रप दल, बंधि दुज्जन पंडयो ॥छं० ५९॥
 सन्नाह सूरज सज्जि घाटं, बंद शोपम राजई ।
 मुकर में प्रतिव्यंब राजग, सत धन ससि साजई ॥
 बर फल्लि बंबर, टोय बायो, त रोस सीसत आइए ।
 नप्वित्र हस्त कि, भान चंपक, कमल सूरहि साइए ॥ छं० ६० ॥
 बर बीर धा जोमिद पत्तिय, कब्बि ओपम पाइयं ॥
 तजि मोह माया, छोह कल बर, धार तित्यह धाइयं ॥
 संमार शंकर बंधि, गज जिम, अप्प बंधन हृष्ययं ।
 उनमत्त गज जिमि, नंख दीनी, मोह माया सथयं ॥ छं० ६१ ॥
 सो प्रवल मह जुग, बंधि जोगी, मुनी आरम देवयो ।
 सामंत धनि जिम, पित्ति कीनी, पत्त तरु जिम भेवयो ॥छं०६२॥

दूहा—कंम गाह इक मुगत की । क्यों करिजे बाषान ॥

मन अनंष सामंत नै । 'कच कर बति पाषान ॥ छं० ६३ ॥

बाई विष धुंधरि परिय । बहर छाए भान ॥

कुन धर मंगल बज्जही । कै चढि मंगल आन ॥ छं० ६४ ॥

दोनों धोर की सेनाओं के चमकते हुए अस्त्र शस्त्र धोर
निशानों का वर्णन ।

दिष्ट देषि सुरतान दल । लोहा चक्रत बान ॥

षहकि फेरि उड़गन चले । निसि आगम फिरि 'जान ॥ छं० ६५

धजा बाइ बंकुर उड़ति । छबि कविद इह भाइ ॥

उड़गन चंद नरिद बिय । लगी 'मनों अइ पइइ ॥ छं० ६६ ॥

मे सनि संकहि बजतहि । बाजे कुहक सुरंग

मेटे सद्द निसान के । सुने न श्रवनति अग ॥ छं० ६७ ॥

जब दोनों सेनाएं साम्हने हुईं तब मेजारपति रावल समरसिह

ने आगे बढ़कर युद्ध आरंभ किया ।

१. ए०—मनयिय ।

२. ए०—भोरिय ।

३. ए०—वर्णजयो ।

४. की०—श्री कृष्णकर वर्ता ।

५. की० ए०—नाम ।

६. ए० छं०—बायो—बायो ।

अनी दोउ बन घोरें ज्यों । 'बाय मिले कर घाट ॥

बिचंगी रावर बिना । करै कोन दह वाट ॥ छं० ६४ ॥

कवित्त - पवन रूप परबंइ । बालि असु असि वर झारै ॥

मार मार सुर बज्जि । पत्त तरु अरि सिर पारै ॥

फहकि सह 'फेफरा । हहु कंकर उष्वारै ॥

कटि भसुंइ परि मुंड । भिइ कंटक उष्वारै ॥

बज्जयी विषम भेवारपति । रज उडाइ सुरतान दल ॥

समरथ्य समर 'सम्भर मिलिया।अनी मुख पिण्वा सबल॥छं०६९॥

रावल, जैत बँवार, चामंड राय और हुसैन बां का क्रमानुसार
हरावल में आक्रमण करना । पीठि सेना का पीछे से बढ़ना ।

रावर उप्पर घाई । पन्थी पांवार जैत विधि ॥

तिहि उप्पर चामंड । कन्थी हुस्सेन घान सजि ॥

घक्काई घक्काइ । दोह हरबल बर मझी ॥

पच्छ सेज आहुट्टि । अनी बंधी आलुझी ॥

गजराज विथ सु सुरतान दल । दह चतुरंग बर बीर बर ॥

घनि घार घार घारह घनी । बर भट्टी उष्वारि कर ॥ छं० ७० ॥

हिन्दू सेना की चन्द्र व्यूह रचना ।

छत्र मु जीक सु अप्पि । जैत दीनी सिर छत्रं ॥

चन्द्रव्यूह अंकुरिय । राज 'दुअ इहां इकत्रं ॥

एक अग्र हुसेन । वीथ अग्रह पुंडीरं ॥

मझि भाग रधुवंस । राम उम्भौ बर बीरं ॥

सांवलौ सूर सारंग दे । उररि घान मोरीय मुख ॥

हथनारि 'गोर अबूर घन । दुहं बांह उम्भति 'रष ॥ छं० ७१ ॥

वो पहर के समय चंद्र पुंडीर का तिरछा रुख दे कर शत्रु
सेना को बबाना ।

छुट्टि अड बर घटिय । चढथी मध्यान भान सिर ॥

सूर कंध बर कडिह । मिले काहर कुरंग बर ॥

घरी अड बर अड । लौह सौं लौह जु रुक्के ॥

मन अगी अरि मिले । चित्त में कंक परक्के ॥

१. ए० ह० को०-बाबा मिलेक वाट, कर घाट ।

२. ए० ह० को०-कीकरा । ३. ए० ह० को०-मनमथ मिल, मिसी, मित्थी ॥

४. छं० मो०-कुब ।

५. ए० ह० को० जो, जीरी ।

६. छं०-सख ।

पुंडीर भीर भंजन भिरन । करन तिरच्छी लग्गयो ॥

नव बधू जेन संका सुबर । उदो जानि जिम भन्गयो ॥ छं० ७२ ॥

पृथ्वीराज धोर साहाबुद्दीन का सम्मुख धोर युद्ध होना ।

योगिनी भैरव आदि का ध्यानसे नाचना ।

भुजंगी —

मिले चाह चहुवान सा चंपि गोरी । स्वयं पंच कोरी निसानं अहोरी ॥

बजे आवछं संपरे अड कौसं । बने अग नीसान मिलि अडकोसं ॥ छं० ७३ ॥

बरं बंबरं चौर माहीति साई । हले छत्र पीतं बले यार चाई ॥

बुले सूर हक्के दहक्के पचारं । बले बन्ध दोऊ धरं जा 'अपारं ॥ छं० ७४ ॥

उतमंग तुष्टुं परै श्रोन धारी । मनो दंड सुक्की अगीवाइ बारी ॥

नचं कंध बंधं हकं सीस भारी।तहां जोग माया 'जकी सी बिचारी ॥ छं० ७५ ॥

बकी सांग लग्गी बजी धार धारं । तहां सेन दूनूं करै मार मारं ॥

नचै रंग भेरू गहे ताल बीरं । सुरैंग अच्छरी बंधि नारद तीरं ॥ छं० ७६ ॥

इसी जुद्ध बधं उब्बद्धे उभानं । भिरै गोरियं सेन अरु चाहुवानं ॥

करै कुंडली तेग बग्गी 'प्रमानं । मनो मंडली रास तं कन्ह वानं ॥ छं० ७७ ॥

फुठी आवघं माहि सामंत सूरं । बजे गोर ओरं मनो बज्ज झूरं ॥

रुगै धार धारं तिनै धरह तुष्टुं । दुहं कुंभ भग्गे करंकं अहुष्टुं ॥ छं० ७८ ॥

फुटी श्रोन भोमं 'अपं बिब राजं । मनो मेघ बुद्धे प्रथीमी समाजं ॥

पराक्रम राजं प्रथीपति रुखी । रनं रंधि गोरी सहं जंग जुटयो ॥ छं० ७९ ॥

सुलतान का घबराना । तातार सां का बंधं बिलाना ।

बूहा—तेज छुट्टि गोरी सुबर । दिय धीरज तसार ॥

मो उम्मे सुरतान को । 'भीर परी इन वार ॥ छं० ८० ॥

उक्त युद्ध की बसंत ऋतु से उपमा वर्जन ।

मोतीदाम—रतिराज व जीवन राजत ओर । चंपी ससिरं उर शीशव कोर ॥

उनी मधि मद्धि मधू धुनि होय । तिनं उपमा बरनी कवि 'जोय ॥ छं० ८१ ॥

सुनी बर आगम 'जुम्बन बैन । नच्यो कबूं न सु उद्विं बैन ॥

कबहुं दुरि क्रंनम 'पुच्छत नैन । कही किन अन्ध दुरी दुरि बैन ॥ छं० ८२ ॥

१. ए०—अपारं ।

३. ए० छं० पमागी ।

५. ए० बरीं ।

७. ए०—जुद्धय ।

२. मो०—बुकीय विचारी ।

४. छं० ए०—अपी ।

६. ए० छं० को०—कोह, कोय, होइ ।

८. मो० ए० को०—पुच्छय ।

क्षधि रोर बसै सब कुंभनि बज्जि । उभै रतिराज १ मुजोवन सज्जि ॥
 कही बर शोन सुरंगिय रज्जि । चये २ रन दोउ बनं बन भज्जि ॥ छं० ८३ ॥
 ह्य मीनन लीम भये रत रज्जि । भम विभ्रम भाव परी गहि नज्जि ॥
 मुर मास्त फौज प्रथम चलाइ गति लज्जि सकुचि कछे मिलि भाइ ॥ छं० ८४ ॥
 दहि सीत मधूप न कंदिहि जीव । प्रकटै उर तुच्छ सोऊ उर भीव ॥
 बिन पल्लव कौरहि ३ तारहि रंभ । गहना बिन बाल विराजत अंभ ॥ छं० ८५ ॥
 कलि कंठन कंठ सखी अलि पंष । न उडिय भंग नबेलिय अंष ॥
 सजी चतुरंग सखी बन राइ । बजी इन उप्पर संसव जाइ ॥ छं० ८६ ॥
 कवि मत्तिय जूह तिनं बहु घोर । बनं तब संघय चंद कठोर ॥ छं० ८७ ॥

रसावला —

बोल पुञ्चै घनं, स्वामि जंये मनं । रोस लगो तनं, सिध मदं मनं ॥ छं० ८८ ॥
 छोह मोहं बिनं, वांन छुट्टे ननं । नाम राजं घनं, ध्रंम सातुवकनं ॥ छं० ८९ ॥
 मेच्छ वाहं बिनं, रत्त कंधं ननं । डल्ल जा डाहनं, जीवता सा हनं ॥ छं० ९० ॥
 वान जा संघनं, शंषि जा बंधन । स्याम सेतं अनी, पीत रत्तं घनी ॥ छं० ९१ ॥
 कूह मन्वी बरी, रोस दंती फिरी । फौज फट्टी पुनं, सूर ऊभे घनं ॥ छं० ९२ ॥
 लेहु लेहु बकरी, लोह कदुठे अरी । कन्हू वा संभरी, पाइ मंडे फिरी ॥ छं० ९३ ॥
 बीर हक्कं करी, नैन रत्तं बरी । पंड जा षोलियं, बीर सा बो लियं ॥ छं० ९४ ॥
 बीर बज्जे घुरं, दंति पट्टे छुरं । झार सं कोरीयं, जावकं डारियं ॥ छं० ९५ ॥
 दंत रुढी परे, अग फूल झरे । हेमयं नारियं, जावकं डारियं ॥ छं० ९६ ॥
 आननं हंकयं, अंग ४ जानंचयं । सत्त सामंतयं, वांन सा पथ्ययं ॥ छं० ९७ ॥
 फौज दोऊ फटी, जानि जूनी टटी । ॥ छं० ९८ ॥

सोलंकी माधव राय से खिलजी जां से तलवार का युद्ध होने लगा ।

माधव राय की तलवार टूट गई तब वह कटार से लड़ने
 लगा । शत्रुओं ने अघर्म युद्ध से उसे मार गिराया ।

कवित्त — सोलंकी माधव । नरिद बिलची मुष लग्गा ॥

सुबर बीर रस बीर । बीर बीरा रस पग्गा ॥

दुअन बुद्ध जुध तेग । इह हृथ्यन उष्मारिय ॥

तेग तुट्टि चालुक्क । बथ्य परि कदिठ कटारिय ॥

अग अग हक्कि ठिल्ले बलन । अघम जूद्ध लग्गे लरन ॥

सारंग बंध घन घाव परि । गोरी वी दिझी मरन ॥ छं० ९९ ॥

१. ए०—सजीवन ।

२. ए० क० को०—नर ।

३. ए०—तारै लीम ।

४. ए०—त्राम ।

धीर गति से मरने पर मोक्ष पद पाने की प्रशंसा ।

धरम हृदयिक जुटिक । जपन सेना समुंद गजि ॥
 हृम गम बर हिल्लोर । गकअ गोइंद द्विष्य सजि ॥
 अनम अठेल अभंग । नीर असि मीर समाहिय ॥
 अति दल बल आहुट्टि । पच्छ लज्जी पर बाहिय ॥
 रज तज्ज रज्ज मुक्किक न रह्यी । रज न लगी रज रज भयो ॥
 उच्छंगन अक्कर सो लयो । देव विमानन चडि गयो ॥छं० १००॥
 जै सिंह की बीरता और उसकी बीर मूर्य की प्रशंसा ।
 परि पतंग जै सिध । पतंग अप्पु न तन दइसे ॥
 नव पतंग गति लीन । करे अरि अरिघज घज्जै ॥
 तेल ठाम बात्तीय । 'अगलि एकल विरुझाइय ॥
 पंच अप्प अरि पंच । पंच अरि पंच लगाइय ॥
 आरलि कुंजारी बर बन्यौ । दै दाहन दुज्जन दवन ॥
 जीतेव असुर महि मंडलह । और ताहि पुज्जै कवन ॥ छं० १०१ ॥

बीर पुंडीर के भाई की बीरता और उस के कर्मघ का खड़ा होना ।

रूपौ बीर पुंडरी । फिरी पारस सुरतानी ॥
 शस्त्र बीर चमकंत । तेज आरहि सिर ठानी ॥
 टोप ओप तुटि करच । सार सारह जरि भारे ॥
 मिलि नछिन्न रोहनी । सीस ससि उड़गन चारे ॥
 उठि परत भिरत भंजत अरिन । जै जै जै सुर लोक हुआ ॥
 उठ्यौ कर्मघ पलपंच चव । कौन भाइ कप्यौ जु धुअ ॥छं० १०२॥

पञ्जून राय के भाई पल्हान राय का खुरसान खाँ के हाथ से मारा जाना ।

दुजन सल कूरंभ । बंध पल्हन सक्कारिय ॥
 संम्हौ पां घुरसान । तेग लंबी उम्मारिय ॥
 टोर टुट्टि बर करी । सीस परि तुट्टि कर्मघं ॥
 मार मार उच्चार । तार तं नचि कर्मघं ॥
 तहें देवि वर वरह 'हस्यौ । 'हय हय हय नचि कस्यौ ॥
 कविचंद 'शैलपुत्री चकित । विषि बीर भारंभ नयो ॥छं० १०३॥

जै सिंह के भाई का मारा जाना ।

सीलकी सारंग । धान बिलबी मुख कग्गा ॥
 बह पंगानी भूत । इते बहुजान बिलग्गा ॥

१. मो०-अनलि ।

२. ए०-तानी ।

३. मो०-मदी ।

४. मो०-हय हयं ।

५. ए०-सबल, छं० को०-सयन ।

है कैंधे न दिये पाये । कन्ह उमरि विय बाधिय ॥
 गज गुंजार हुंकार । घरा गिर कंदर गाजिय ॥
 जय अवति देव जे जे करहि । पहुपंजलि पूजत रिन्ह ॥
 इक पन्थी बेंत सौधै सकल । इक रह्यौ बंधे धुन्ह ॥ १०४ ॥
 गोइन्द राय का तसार खां के हाथी और फोलवान को मार गिराना ।
 करी मुख आहुट्ट । बीर गोइंद सु अण्वे ॥
 कबिल पील जनु कन्ह । बंत दासुन गहि नण्वे ॥
 सुंड दबं भये बंड । पीलवानं गज मुखयो ॥
 गिद्धि सिद्धि बेताल । बाइ अंधिन पल रुक्यो ॥
 बर बीर पन्थी भारथ्य बर । लोह लहरी लगात मृत्यो ॥
 तसार पान सम्हो सु कृत । तिष हकिक अबर डुल्यो ॥ छं० १०५ ॥
 नरसिंह राय के सिर में घाव लगने से उसके गिर जाने
 पर चामुंडराय का उसकी रक्षा करना ।
 षोळि षग नरसिंह विद्विष पज सीसह झारिय ॥
 तुटि घर घरनि परंत । परत संभरि कट्टारिय ॥
 चरन अंत उरअंत । बीर कूरंभ करारो ॥
 तेग घाइ चुककंत । झरी झर लोह सँभारो ॥
 चलि गयो 'क्रमन क्रम्मन चलं । डुल्यो न डुल्ल तन हृथ्य बर ॥
 तिन परत बीर दाहर तनो । चामंडा बज्जी लहर ॥ छं० १०६ ॥
 रात हो गई दूसरे दिन सबेरे फिर पृथ्वीराज ने शत्रुओं की छा घेरा ।
 भुजंगी -
 छुटी छंदनी छंद सीमा प्रमानं । मिली डालनी माल राही समानं ॥
 निसा मान नीसान नीसान घूअं । घुअं घरिन मूरिन पूर कुअं ॥ छं० १०७ ॥
 सुरत्तान फौज तिनै 'पति फेरी । मुखं लगि चहुआन पारस्स घेरी ॥
 भये प्रात मुज्जात संग्राम पालं । चहुव्यान उट्टाय सालोपि पाल ॥ छं० १०८ ॥
 जैत राय के भाई लक्ष्मण राय के मरते समय अक्सराशों का उसके
 पाने की इच्छा करना परंतु उसका सूर्य लोक भेद कर मोक्ष पाना ।
 कवित्त - जैत बंधे इहि पन्थी । लण्व लण्वन की जायौ ॥
 तहं झगरी मह माय । देवि हुं कारी पायौ ॥
 हुं सारे हुंकार । जूह गिद्धनि उडायौ ॥
 गिद्धिन तैं अपछरा । कियी चाहत नहि पायौ ॥

१. मो०-न क्रवत क्रवतत ।

२. ए०-नर दुल्लत ।

३. ए०-छंदानं, छं०-मो०-छंदनी, छंदनीमा । ४. ए० छं० को०-पाते ।

अब तरन सोह उतपति ययो । देवदान विभ्रम वियी ॥
 जम लोक न शिवपुर ब्रह्मपुर । भान यान भान वियी ॥ छं० १०९॥
 तन संझरि पावार । पन्यो घर मुच्छि चटिय विय ॥
 बर अछर विटयो । सुरंग मुक्के सुरंग हिय ॥
 तिहित बाल तत काल । सलष बंधिब दिन आइय ॥
 लिखिय अंग विष अष्य । सोई बर बंध दिवाइय ॥
 जनम मरन सह दुह सुगति । नन मिट्टी भिटह न तुअ ॥
 ए वार सुबर बंटहु नहीं । बंधि लेहु सुवकी बहुअ ॥ छं० ११० ॥
 महादेव का लक्ष्मण का सिर छपनी भाला के लिये लेना ।

बुहा—राम बंध की सोस बरं । ईस गह्यो कर चाइ ॥

अधिय दरिद्री ज्यो भयो । देवि देवि ललचाइ ॥ छं० १११ ॥

एक पहर बिन चढ़े अंधा योगी ने त्रिसूल लेकर घोर युद्ध मचाया ।

जाम एक दिन चढ़त बर । जंचारी झुकि बीर ॥

तीर जेम तत्तो पन्यो । घर अष्यारे भीर ॥ छं० ११२ ॥

कवित्त—जंचारी जोगी । जुगिद कद्यो कटारी ॥

परस पानि तुंगी । त्रिसूल मष्यर अधिकारी ॥

जटत वान सिगी । विभूत हर वर हर सारी ॥

सबर सह बह्यो । विषम मद गंधन झारो ॥

आसन सद्विदु निज पति में । लिय सिर चद अझित अमर ॥

मडलीक राम रावत भिरत । नभो बीर इत्तो समर ॥ छं० ११३ ॥

शास्त्र सजकर सुलतान का युद्ध में टूटना । लंगरी राय का घोर युद्ध
 मचाना । लंगरी राय की बीरता की प्रशंसा ।

सिलह सजिज सुरतान । झुकि बज्जे रन जंग ॥

सुनें श्रवन लंगरी । बीर लग्गा अनभनं ॥

बीर धीर सत मध्य । बीर हुंकरि रन घायो ॥

सामंता सत मझि । मरन दीनं भय सायो ॥

पारंत झनक हक्कंत रन । पग प्रवाह पग पुल्लयो ॥

विभूत चंद अंगन तिलक । बहसि बीर हकि बुल्लयो ॥ छं० ११४ ॥

लंगा लोह उचाइ । पन्यो भुंमर वन सझी ॥

जुरत तेग सम तेग । कोर बहर कछु सुझी ॥

१. मो०—मयो ।

३. मो०—तिहित काल सतकाल ।

५. मो०—रावन ।

२. ए०—बडय ।

४. मो०—मो०—अधिर ।

६. ए०—रिन, तरिन ।

यों लग्गो सुरतान । अनल दावानल दग्गं ॥
क्यों लंगूर लग्गया । अगनि अगै मालगं ॥
इक मार उझार अघार मल । एक उझार मुझारयो ॥
इक बार तन्यौ दुस्तर रूपे । इजें तेग उभारयो ॥ छं० ११५ ॥

कुंडलिया —तेग झारि उझारि बर । 'फिरि उपमा कबि 'कथ्य ॥
नैन बान अंकुर 'बुहुरि । तन तुट्टे बहि हथ्य ॥
तन तुट्टे बहि हथ्य । फेरि बर बीर स बीरह ॥
मरन चित्त सिचयो । जनम 'जिन तजी ज बीरह ॥
हथ्य बथ्य आहित । फेरि तबके ठर वेगा ॥
लंगा लंगरि राह । बीर उच्चाइ सु तेगा ॥ छं० ११६ ॥

लोहाने की बीरता का वर्णन । चौसठ सार्धों का मारा जाना ।

कवित्त— लोहानी मद मुंद । बान मुषके बहु भारी ॥
फुट्टि सु ठट्टर स्वान । पिट्ट उरठ निकारी ॥
अनी किबारी लागि । पुट्टि घिरकी उच्चारिय ॥
बट्टारी बर कट्टि । बीर अवसान संभारिय ॥
एक भर मीर उरझारि 'झर । करि सुमेर परि अरि सु फिरि ॥
चवसट्टि बान गोरी परै । तिन रादव इक राज परि ॥ छं० ११७ ॥
मानि लोह मारुफ । रोस विहडुर गाहकके ॥
मनु पंचानन बाहि । सद् 'सिरहद् हहकके ॥
दुहूं मीर बर तेज । सीस इक सिघह बाही ॥
टोप टुट्टि बहकरी । चंद 'ओरमता पाई ॥
मनु सीस बीय श्रुंग विज्जुलह । रही हेत तुट्टि भान हति ॥
उतमंग सुहै बिब टूक ह्वै । मनु उडगन त्रप तेज मति ॥ छं० ११८ ॥

चौसठ नाम मारे गए भीर तेरह हिन्दू सरदार मारे गये । हिन्दू सरदारों के नाम तथा उनका किससे युद्ध हुआ इसका वर्णन ।

भुजंगी —

परे बान चौसट्टि गोरी नरिद । परे सुभर तेरह कहै नाम चंद ॥
परे लुचिलुधयी जु सेना अलुधरी । लिखे कंक अंक बिना कौन बुझी ॥ छं० ११९ ॥

-
१. छं०—फेरि उपमा । २. अं०—तत्त्व । ३. मो०—परै ।
४. ए०—क० को०—सिम । ५. ए०—उच्चार ।
६. ए०—कर । ७. ए० क० को०—राह । ८. मो०—सिरहस, सिरहसु ।
९. ए० क० को०—उपमा सु, उपमा सुई ।

पन्थी गोर जैत मध सेस डारी । जिने राषियं रेह अजमेर सारी ॥
 पन्थी कनक आहुहु गोविंद बंधं । जिने मेछ की पारसं सब्ब बंधं ॥छं० १२०॥
 पन्थी प्रथ्य बीरं रघूवंस राई । जिनें संधि बंधार गोरी गिराई ॥
 पन्थी जैत बंधं सु पावार भानं । जिनें भंजियं मीर बानेति बानं ॥छं० १२१॥
 पन्थी जोध संग्राम सो हुंक मोरी । जिनें कट्टियं वैर गोवंत गोरी ॥
 पन्थी दाहिमो देव नरसिंघ अंसी । जिनें साहि गोरी मिल्यो पान गंसी ॥
 ॥ छं० १२२ ॥

पन्थी बीर बानेत नावंत नादं । जिने साहि गोरी गिल्यो साहि जादं ॥
 पन्थी जावली जाल्हते सैन भण्वं।हए सार मुष्यं निकस्संत नण्वं ॥छं० १२३॥
 पन्थी पाल्हनं बंध माल्हन राजी । जिनें अग गोरी क्रमं सस भाजी ॥
 पन्थी बीर चहुआन सारंग सोरोंबजे दोइ ग्रैहं ज आकास तोरं ॥ छं० १२४ ॥
 पन्थी राव भट्टी बरं पंच पंचं । जिनें मुक्ति के पंच चलाइ संचं ॥
 पन्थी भान पुंडीर ते सोम कंमं । मिले जुहमयं बज्जयी पंच जंमं ॥छं० १२५॥
 पन्थी राउ परसंग लहु बंध भाई । तिनं मुक्ति अंसं छिनं मंसि पाई ॥
 पन्थी साहि गोरी भिरं चाहुआनं । कुसादे कुसादे बवै मुष्य पानं ॥छं० १२६॥

दूसरे दिन ततार लॉ का शाहाबुद्दीन को बिकट व्यूह के मध्य में रक्ष कर युद्ध करना और सामंतों का क्रोध कर के शाह की तरफ बढ़ना ।

कवित्त —दस हथ्यी सु बिहान । साहि गोरी मुष किशौ ॥

कर अकास बादी । ततार चवकोद स दिशौ ॥

नारि गौरि जंबूर । कुहक बर बान अघातं ॥

गज्जि भग्न प्रथिराज । चित्त करयो अकुलातं ॥

सो मोह कोह बर बज्जि कैं । ब्रज उन धारय धमसि कैं ॥

सामंत सूर बर बीर बर । उठे बीर बर हमसि कैं ॥ छं० १२७ ॥

अट्ट अट्ट जोजनह । मीर उड़ि संगी केरी ॥

तब गोरी सुरतान । रोस सामंतह धेरी ॥

चक्र श्रवन चौडोल । अग सेवन पंवासी ॥

सूर कोट ह्वै जोट । सार मारनह हुलासी ॥

बर अगनि बगी हल्ली नहीं । पहर कोट सुजोटे हुअ ॥

बर बीर रास समरह परिव।सार 'धार बर कोट' हुज ॥छं० १२८॥

१ ए०—मिल्यो ।

२. मो०—निसकसत ।

३. जिने मुहमयं बज्जयी पंच जंमं ।

४. ए०—नेवन ।

५. मो०—हुसी, हुसी ।

६. ए० छं० को०—धरि ।

७. ए०—हुज ।

रसावला —

मेलि साहू भरं, षग्ग षोले करं । हिंदु मेछं जुरं, मंत जा जंभरं ॥छं०१२९॥
 दंत कडुवे करं, उप्पमा उप्परं । केद भीलं जुरं, कोपि कडुवे करं ॥छं०१३०॥
 कंधं ननं धरं, पंष जण्यं फिरं । तीर नंवे करं, मेघ बुदुवं बरं ॥ छं० १३१ ॥
 आबधं संभरं, बंक तेगं करं । चंद बीजं बरं, अढ अढं धरं ॥ छं० १३२ ॥
 वीय बंधं धरं, कित्ति जपे सरं । अस्सु दुंढे फिरं, रंभ बंछे बरं ॥ छं० १३३ ॥
 यान थानं नरं, धारधारं तुट । भ्रंम वासं छुटं, ॥ छं० १३४ ॥
 साह गोरी बरं, षग्ग षोले करं । ॥ छं० १३५ ॥

कुरासान खां का सुलतान के बचन पर तैश में आकर
 घोर युद्ध मचाना ।

कविन षां पुरसान ततार । पिड्डिस दुज्जन दल भव्वं ॥
 बचन स्वामि उर षटकि । हटकि तसबी कर नषं ॥
 कज्जल पति गज विथुरि । मध्य सैन चहुआनी ॥
 अजे मानि जै रारि । बियम तेरह चपि प्राणी ॥
 धामंत फिरस्तन कडि असी । दहति पिंड सामंत भजि ॥
 बर बीर भीर बाहन 'कहर । परे घाइ चतुरंग सजि ॥छं०१३६॥
 रघुवंसी के घोर युद्ध का वर्णन ।

भुजंगी - पन्यो रघुवंसी अरी सेन जाड़ी । हुतो बाल बेमं मंषं लज्ज डाड़ी ॥
 बिना लज्ज परुषे सची दुंढि पिण्णी । मनो डिभरू जानि के मोन कृष्णी ॥
 ॥ छं० १३७ ॥

पन्यो रुक रिनवह अरि सेन माही । मनो एक तेगं झरी नीर दाही ॥
 फिरं अहुबट्टे उपमान बढ्ढे । विश्वंक्रम बसी कि दारुण गढ्ढे ॥ छं० १३८ ॥
 परे हिंदु मेच्छं 'उलथी पलथी । करे रंभ भैरं ततथ्ये ततथ्यी ॥
 गहे अंत गिद्धं बरं जे कराली।मनो 'नाल कट्टे कि सोभे स्रनाली ॥छं०१३९॥
 तुटे एकटं गाडि के षग्ग घायो । मनो विक्रम राइ गोबिंद पायो ॥
 गहे हिंदु ह्यथं मलेच्छं भ्रमायो।जनों भीम ह्यथीन उप्पम्म पायो॥छं० १४०॥
 ननं मानवं जुद्ध दानव्व ऐसो । ननं इंद तारकक भारथ्य कैसो ॥
 शकं बज्जि संकारयं अपि उट्टे । बरं लाह पंचं बध पच छुट्टे ॥ छं० १४१ ॥
 मनो सिघ उक्खे अरुहसंत छुट्टे । रनं देव साईं गए आव पुट्टे ॥
 धनं घोर दुंढं उतकंठ फेरी । लगै सगरं हंस हज्जार एरी ॥ छं० १४२ ॥
 तुटे वंड मुंडं बरं जो करेरी । बरह'इ रिजें दुहं दिन्न भेरी ॥ छं० १४३ ॥

१. ए०—करह ।

२. मो०—ठकथी ।

३. ए०—को०—घाड ।

लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तू उदास क्यों है ?
उसने उत्तर दिया कि आज किसी को बरन करने का व्यवसर नहीं मिला ।

कवित्त - पच्छे भी संग्राम । अग्न अप्छर विष्चारिय ॥

पुछे रंभ मेनिका । अज्ज अत्तं किम भारिय ॥

तव उत्तर दिव फेरि । अज्ज पहुनाई आइय ॥

रम्भ बैठि औयांन । सोसतह कंत न पाइय ॥

भर सुभर परे भारण्य भिरि । ठाम ठाम चुप जीत सय ॥

उपकीय पंथ हल्लै चरपी । सुबिर स भी देखीय 'तथ ॥छं०१४४॥

रम्भा ने कहा कि इन बीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या वे

सूर्य में जा समाए ।

कुंडलिया—कहैं रंभ सुनि मेनकनि । ए रहु जिन मत जुष्य ॥

अरिय अनंमति जानि करि । जुति आवें ग्रह रथ्य ॥

जुति आवें ग्रह रथ्य । ब्रह्म शिव लोकह छंडी ॥

विश्व लोक ब्रह्म करै । भान तन सों तन मंडी ॥

रोमचि तिलकक बसि बरी । इंद्र बधू पूजन जही ॥

ओपम्म जोग नन हुअ बहुरि।अब तारन बरहै कही ॥छं०१४५॥

हुसैन खां घोड़े से गिर पड़ा, उजबक खां खेत रहा, मारुफ खां,

तातार खां सब पस्त हो गए, तब दूसरे दिन सबेरे मुलतान

स्वयं तलवार निकाल कर लड़ने लगा ।

कवित्त—खां हुसेन डरि पन्थी । अस्व फुनि पन्थी सार बहि ॥

मुसल फेरि मति सीव । वान उजबकक घेत रहि ॥

खां ततार मारुफ । वान वाना घट घुम्मै ॥

तव गोरी सु बिहान । आइ दुजबन मुष मुम्मै ॥

कर तेग मल्लि 'मुद्विय सुबर । नहि मुलतानह पन करी ॥

अदि हार दीह पलटे मुबरातबहि साहि फिरि पुकरी ॥छं०१४६॥

मुलतान ने एक बान से रघुवंस गुसाई को मारा, दूसरे से भीम भट्टी को,

तीसरा बान हाथ का हाथ ही में रहा कि पृथ्वीराज ने उसे

कमान डालकर पकड़ लिया ।

तब साहिव गोरी नरिंद । सतवान समाहिय ॥

पहिल बान बर बीर । हुने रघुवंस गुसाइय ॥

दुजै बानत कंठ । भीम भट्टी बर भजिय ॥

चाहुआन तिय वान । वान अदं घरि रजिय ॥

चहुआन कमान सु सधि करि । तीय बान ह्य ह्य रहिय ॥
तब लुगि बंधि प्रथिराज नैं । गोरी वै गुज्जर गहिय ॥छं० १४७॥
सुलतान को पकड़कर और हुसैन खां तातार खां आदि को विजय करके
पृथ्वीराज दिल्ली गए । चारों ओर जै जैकार हो गया ।

बहि गोरी सुरतान । बान हुसैन उपाय्यो ॥
बां ततार निसुरति । साहि सारी करि डान्यो ॥
बामर छत्र रषत्त । बषत्त लुट्टे सुलतानी ॥
जै जै जै चहुआन । बजी रन जुग जुग बानी ॥
गज बंधि बंधि सुरतान को । गय दिल्ली दिल्ली नृपति ॥
नर नाग देव अस्तुति करै । दिपति दीप दिव लोकपति ॥छं० १४८॥

एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया ।
दूहा -समै एक बत्ती नृपति । बर छंड्यो सुरतान ॥
तपे राज चहुआन यो । ज्यो ग्रीषम मध्यान ॥ छं० १४९ ॥
एक महीना तीन दिन कैंब रखकर नौ हजार घोड़े और बहुत से
माणिक्य मोती आदि लेकर सुलतान को गजनी भेज दिया ।
मास एक दिन तीन । साह संकट में हंडो ॥
करिय अरज उमराउ । दंड ह्य मंगिय सुद्धो ॥
ह्य अमोल नब सहस । सत्त सै दिन ऐराकी ॥
उज्जल दंतिय अट्ट । बीस मुर ढाल सु जक्की ॥
नग मोतिय मानिक नवल । करि सलाह संमेल करि ॥
परि राइ राज मनुहार करि । गज्जन वै पठयो मुघरि ॥छं० १५०॥

इति श्री कबिचंद्र विरचिते प्रथिराज रास के रेवातट पातिसाह
ग्रहणं नाम सप्तबीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २७ ॥



अथ अनंगपाल समयौ लिख्यते ।

(अट्ठाइसवां समय)

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप करने चला गया था परंतु उसने पृथ्वीराज से फिर विग्रह क्यों किया, इस कथा का वर्णन ।

ब्रुहा - दिय दिल्ली चहुआन कों । तूंअर बढी जाइ ॥

कहौ बंद क्यों पुक्करिय । फिर दिल्ली पुर आइ ॥ छं० १ ॥

अनंगपाल के बद्रिकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली का निर्द्वं शासन करना ।

रष्वि बीर प्रथिराज कों । गो तीरष्यह राज ॥

व्यास बचन आनंद सजि । तिहुँ पुर बज्जन बाज ॥ छं० २ ॥

जुगिनिपुर प्रथिराज लिय । वज्जि त्रिघोष सुवंद ॥

अनंगपाल तूंअर बरन । किय तीरष्य अनंद ॥ छं० ३ ॥

यह समाचार बेश बेशांतर में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली में निर्द्वं राज्य करता हुआ स्वजनों को मान देता है और उपकार को न मान कर अनङ्गपाल की प्रजा को बड़ा दुःख देता है ।

पढरी - तूंअर नरिंद तप तेज आनि।प्रथिराज व्यास बचनह प्रमानि॥छं०६॥

त्रिमान ग्यान मेटे न कोइ । इंद्रादि अंत कलपंत होइ ॥

दस दिसा अमिट घरती अकास । 'चंद्रादि सूर ग्रह ग्रह प्रकास ॥

ब्रह्मा टरंत टारंत काल । राहुंत पंच भूते विचाल ॥ छं० ५ ॥

विष्यात बात दस दिसि कहंत । विष्युरी देस देसन तुरंत ॥

अप अप्य आनि दीजै निवास । तूंअर नरिंद परजा निकस ॥ छं० ६ ॥

निरदै नरिंद इन विधि विसास । आनंग लोक हिरदै निवास ॥

उपगार को न मानै विवेक । संसार माहि ऐसे अनेक ॥ छं० ७ ॥

अग्नि, पाहुना, विप्र, तस्कर आदि परदुःख नहीं जानते । पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनङ्गपाल पराए की भांति तप करता है ।

कविस - तसकर बेलक विष्य । बंद 'दुरजन अति लोभी ॥

प्राहुन अहि बल उवाल । काल त्रिप इन में मोभी ॥

१. ए०-इ०-की०-चंद्रमा सूर दिन दिन प्रकास ।

२. ए०की०-दुरजन ।

इन पर चिंता नाहि । बहुत करि जोषं कहिये ॥

'अप्य सहज चालन । चिन की बात न लहिये ॥

प्रथिराज लोक तूअर घरह । अरुवि दिष्ट मंडे तनह ॥

भोगवै धरा जीवत धनिय । संक न कोइ मानै मनह ॥ छं० ८ ॥

सोमेश्वर अजमेर में राज्य करता है और पृथ्वीराज को दिल्ली मिली

यह सुनकर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा ।

बूहा - सभरि वै मोसेस नृप । अनि उतग आचार ॥

दिल्ली प्रथि तूअर दइय । सुन्यौ षिज्यौ महिपार ॥ छं० ९ ॥

मालवापति ने चारों ओर के राजाओं को पत्र लिखकर बुलाया । गवखर,

गुण्ड, भदौड़ और सोरपुर के राजा आए । सलाह हुई कि पहिले

सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय ।

कवित्त - चदेरी बतुरंग । सेन हय गय पल्लान ॥

ठीर ठीर कग्गदह । दए मालव धरवान ॥

गष्वड गुंड भदौड । मोरपुर मूर ममाहे ॥

मिलि आए महिपाल । अप्य बल मेन उमाहे ॥

एकंत मत्त सोमैस पर । धुर सभरि वै ठिज्जिये ॥

प्रथिराज तुँअर दिल्ली दिमा । फिगि कलहनर किज्जिये ॥ छं० १० ॥

मालवापति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना महित

चंबल नदी पार होना ।

बर मालव महिपाल । चढघौ चहुआन 'मु उप्पर ॥

सेन सजी चनुरग । दियो मेलानह सो पुर ॥

हय गय घट्ट अघट्ट । घाट चबिल परि आइय ॥

घुरि निसान घमसान । थान थानह हल्लाइय ॥

जादव नरिंद हरिबंस कुल । अति जानुर अजमेर पर ॥

उत्तन्यौ सरित समित सकल । धुस धरा रावत धर ॥ छं० ११ ॥

सत्रुओं के आने का समाचार सुन कर सोमेश्वर अपने सामंतों

को इकट्ठा करके बोला कि पृथ्वीराज को तो अर्नगपाल ने बुला

लिया इधर सत्रु चढ़े हैं, ऐसा न हो कि कायरता का ब्रह्मा लग

और नाम हँसा जाय ।

सुनि सोमैसर मूर । चिति मन मंत उपाइय ॥

बर प्रथिराज नरिंद । अर्नगपालह बुल्लाइय ॥

रज रजवट रविशयै । राव रावतन कीजै ॥
 रहै गल्ह संसार । आव जल अंजुल छोजै ॥
 मो बंस अंस आनल अटल । कोइ न कहो काइर कहिय ॥
 अप्पान सुम्भ संबोधि नृप । जुद्ध घात पुष्पत लइय ॥छं० १२ ॥
 सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल हैं इससे इनको रात के
 समय छल करके जीतना चाहिए ।

सिंघ पँवार ब्रसिंघ । गौड़ संजम चहुआन ॥
 बाहन बीर सधीर । राज गुर राम सुजान ॥
 मंत मंनि भर अवर । करे समचित्त अनेकं ॥
 तुम लज्जा धर धीर । बीर बीराधि बिवेकं ॥
 संभगिय सोम पुच्छन बयन । कहिय बत्त सम तत्तकल ॥
 छल बल अनेक छत्रिय करनातुच्छ सत्य पुजै न षल ॥छं० १३॥

ब्रूहा—चंद्र चंद्र निमि चंद्र मति । ऋतु मरह गुरवार ॥
 तेरसि तकि सज्यो सयन । रचि रति वाह विचार ॥ छं० १४ ॥
 सोमेश्वर ने कहा कि तुम ने नीति ठीक कहा पर रात को छापा
 मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी ।
 कवित्त—रति वाह छत्र जुद्ध । अधम वित्री परिमानं ॥
 कूड कपट मारियै । अधम नित्रा गति जानं ॥
 मल मोचन रति रवन । सेन पूजन जल न्दानं ॥
 मंत्र जाप जपंत । करै नह यात सुजानं ॥
 तुम मंत तंत संची कहिय । इह अधम्म धूम हारिये ॥
 जो गिनइ पुष्प निदा अपर । लछ रति वाह विचारिये ॥छं० १५॥
 सामंतों ने कहा कि सेतु बांधने में श्रीराम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने
 में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप के मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस के मारने
 में छल किया, इस में कोई बूषण नहीं है ।
 छल तक्यो श्री राम । सेत साइर तब बंध्यो ॥
 छल तक्यो सुग्रीव । बालि जिउ ताइह संध्यो ॥
 छल तक्यो लछिमना । सूर मंडल अरि बेध्यो ॥
 छल तक्यो नरसिंघ । अंगकुस नष उर छेद्यो ॥

१. ग० क० को०—पुस्तक ।

३. ए० क० को०—शल ।

५. मो० रवि ।

७. ए० क० को०—दूध दूध ।

२. ए० क० को०—बिवेकं ।

४. ए० क० को०—रति, रति ।

६. ए० क० को०—छत्रि ।

छल बल करंत दूषन न कोइ । किस्न कलह कंमह करिय ॥
सोमेस राज तकि अप्प विधि । रनिवाह छल मन घरिय ॥ छं० १६ ॥
इहा - ससि त्रिमल ससि सूर अप । दिथ अस अस्त्र उतान ॥
प्रयुक्त जोग जिन साल 'घर । मत्रोजन सव्वान ॥ छं० १७ ॥
सोमेदवर के सामंतों का युद्ध के लिये तयारी करना ।

भुजगी

ग्रहे सूर सोमेस मा आयुधेसं । इक सोमई राज जोगिद भेमं ॥
तजे मोह माया ग्रहणी कहणी । तजे बध पुत्त हरि वित्त मत्री ॥ छं० १४ ॥
इक मामि धम्मं ग्रहे अग लाज । *तिनं सस्त्र झल्ले जधं किनि काजं ॥
न काया न कामं घरे राम राजं । हवै हाक सूर कपे काइराज ॥ छं० १९ ॥
पत्रं विस्तुकान्ता जलं जान्हवीयं । वपुं उद्धरे कोटि सौ पाप कीयं ॥
बरे रभ वामं दुतो साम कामं । मनो दाहिनावृत्त धीरभ रामं ॥ छं० २० ॥
तिन सस्त्र हल्ले जुधं क्रिय काज । हुवै हाक सूर कपे काइराज ॥
मुर द्वादस आयुध दड धारै । निनं नाम चद मु छद उच्चारै ॥ छं० २१ ॥
नमी नन्न वंम ग्रहे सूल पामं । परस्मं अमत्री सकती विकामं ॥
ग्रहे न्न नोमार भल्ली क णनं । जुध काज नालीक नाराज जान ॥ छं० २२ ॥
सर चक्र मारंन वजं गदायं । दड मुद्गर भिडिमालं मघाय ॥
हृत्त मन्त्र मेठ सावल्ल घमं । ग्रहे मूरना अप्प अप्पन्न बग्गं ॥ छं० २३ ॥
छरिका कती कन्न बक्री कुंतायं । *फलक्क कनीका भुसुडी बताय ।
लिप मक दुस्फोटकं पारिघायं । पटीम छतीम ग्रहे आयुधाय ॥ छं० २४ ॥
पट्टन के यावव राजा ने आकर डेरा डाला । अजमेर जीतने का
उत्साह जी मे भरा था ।

इहा पट्टन जादव आय ग्रप । क्रिय डेरा बरवान ॥
मुनि सोमेसर दौरि करि । ज्यो निधि रक प्रमान ॥ छं० २५ ॥
अनि आतुर अजमेर पहु । आइ कुलिगन बाज ॥
यो रस रत्ता सूर भर । मुकति त्रिया धरि माज ॥ छं० २६ ॥
बारों ओर खलबली मच्च गई । सन्नगण तया नारव आनन्द से
नाचने लगे ।

कवित्त - अप्प अप्प मुख अरिन । सूर संमुह झल्लारिय ॥
हाइ हाइ उच्चार । धरनि अंबर तुटि डारिय ॥

१. मो०-अर ।

* वह पंक्ति मो० प्रति मे नहीं है ।

२. ए० छं० को०-पलक्कं ।

३. मो०-दुस्फोटं ।

धमकि चित्त त्रिपुरारि । अष्ट गन नारद नंचिय ॥
 सेस सट्पटि सलकि । दिसा दंतिन तन अंचिय ॥
 मनो कि जलद तुट्टिय तडित । बर पट्टन आहुट्ट भर ॥
 रति बाह प्रात हूं ते दियो । अगनि सार बुढयो कहर ॥छं० २७॥
 योद्धाघो की तयारी तथा उनके उरसाह का वर्णन ।

रसावला —

कट्टि षगं लगं, आइ जुट्टे अंग । जानि सूरं उगं, लग्गि षगं बगं ॥ छं० २८ ॥
 जानि प्रल्लै जगं, सामि धम्मं मग । षंड षंड अगं, श्रोनि 'तुट्टे रगं ॥ छं० २९ ॥
 पानि बाहै षगं, सूर साधे स्रग । देवि ताली ठगं, ठाम ठाम ठगं ॥ छं० ३० ॥
 डंक्कनीयं डगं, एक एक दिगं । सूर रोपे पगं, नग मानो नगं ॥ छं० ३१ ॥
 सार धारं तमं, जानि ऊकं अगं । बसं जालं दगं, फुट्टि 'षोपं षगं ॥ छं० ३२ ॥
 दडि मट्टं भगं, हंस उहुं मगं । मार मारं रगं, मृष्व बोले दगं ॥ छं० ३३ ॥
 लट्ट चट्टं परं, लध्व बध्वं भरं । अंत श्रोनिं सरं, जानि पळ्ळै सर ॥ छं० ३४ ॥
 कट्टि षंडं गुं, हध्व जगं जुरं । जानि वित्ति पल, चंच गिद्धी पल ॥ छं० ३५ ॥
 ईस सीसं स्रं, माल मध्ये षलं । मूर जहो बलं अरुभ तुट्टी कलं ॥ छं० ३६ ॥
 भूर भूपं मिलं, आयुधं अत्तुलं । ॥ छं० ३७ ॥

ब्रूहा — सार मार मन्ची कहर । दोउ दलनि सिर मधि ॥

प्रौढा नायक छयल रमि । प्रात न बंछे छंधि ॥ छं० ३८ ॥

सोमेश्वर नें पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पर उखड़ गए ।

कवित्त सोमेश्वर भजि सूर । सूर उहसारिग सरि सरि ॥
 सार फुट्टि चहुआन । भिरिय जहो भरि लरि लरि ॥
 धरी एक तिन रत्त । सार मंगल सिर बुट्टिय ॥
 संभर वैर सु आनि । सार भग्गि जु सिर तुट्टिय ॥
 भग्गइ सूरमा दुहं सयन । किहि न कोई बर चंपयो ॥
 उप्पारि लियो अजमेर पहु । दागन 'किहुं दीयो गयो ॥ छं० ३९ ॥
 हध्विय डाल ढलकि । घालि लीनो अजमेरी ॥
 परि लंगा लंगरी । सेन दुज्जन दल फेरी ॥
 भाग बीर प्रथिराज । अरिन उप्पारि स लीकी ॥
 इन सोमेश्वर राव । सत्त हध्विन बर कीनी ॥

१. ए० इ०—दुव्हे ।

२. ए० इ० को०—लागी ।

३. नो०—चोपे ।

४. ए०—धलं ।

५. नो०—किन ।

जिम तिमर सूर भंजै सुभर । गुरु गल्हान न कवि टरै ॥

जब लगै भूमि साइर ^१सुन्नितातव लगि कवित सु^२उब्बरै ॥ छं० ४० ॥
संसार में एक मात्र कवि कथित यज्ञ के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है।
दूहा—रह्यो न को रवि मंडलह । रहि कवि मुष्य मु भल्ह ॥

जीरन जुग पाषान ज्यों । पूर रहंदी गल्ह ॥ छं० ४१ ॥

यावव राजा ऐसा घायल होकर गिरा कि मुंह से बोल न सकता था ।

फिरि जह्व भर देस दिसि । समर घाइ लै सैन ॥

अवर चित्त तें अवर परि । कदिठ न सककै बैन ॥ छं० ४२ ॥

सोमेश्वर उसे उठा लाया बड़ा यत्न किया । एक महीना बीस

दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया ।

सोमेश्वर ने बहुत दान दिया ।

ग्रिह सोमेशर आनि तिन । मास एक दिन बीस ॥

रषि जतन किय न्हान जब । दियो दान मु जगीस ॥ छं० ४३ ॥

पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना । उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात

पाऊंगा शत्रुओं को मजा चलाऊंगा ।

सुनिय ^३बत्त प्रथिराज नृप । चिति भविष्यत बत्त ॥

अरियन तो आहोड़ियं । जो लभ्भीजै घत्त ॥ छं० ४४ ॥

इधर विल्ली की प्रजा ने बत्रिकाधम में अनङ्गपाल के पास जाकर
पुकारा कि महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए ।
कवित्त—अनंगपाल प्रज लोक । जाइ बट्टी ^४पुक्कारिय ॥

हम तुम सेवक सामि । छंडि ग्रह राज निकारिय ॥

नहि अदब्ब मन्नयो कूर मच्चौ चहुआनं ॥

हो अननेस नरेस । गई दिल्ली घर जानं ॥

जा जियत राज घर पर बसिय । नीति न्याय न प्रकासिये ॥

नर नाग देव निदं सकल । निप करंत तहै बासिये ॥ छं० ४५ ॥

अनङ्गपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मंत्री को बुलाकर समाचार कहा ।

मंत्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास

न करना चाहिए ।

सुनिय तेज आजुल्य । इत परघान पठाइय ॥

हम भँडार घर घान । द्रबन खम्बह भरि लाइय ॥

१. मो०—सुषति ।

२. मो०—विस्तरै ।

३. मो०—बबर ।

४. मो०—पुकारय, निकारय ।

व्यास बचन संभारि । कहै तब मंत्री पुच्छह ॥

देस ऋषी घन आदि । राज ग्रहयो गढ़ सब्हह ॥

त्रिप सेव देव दुज्जन उरग । इन ठिल्लै नन मुक्कियै ॥

बर बंध पुत्र अरु तात न्रप । इन बिसास घर चुक्कियै ॥छं० ४६॥

राज्य प्राप्त करने के लिये गत ऐतहासिक घटनाओं का वर्णन ।

घर काजै कौरवन । पंड जानिय न 'बंध गति ॥

घर काजै 'दसग्रीव । बंध बंधयो भभिषन मति ॥

घर काजै नल राइ । बंधवन षेत न अप्पी ॥

घर काजै बलि राइ । देव देवाधि उथप्पी ॥

घर काज मुंज त्रिय के कहै । भोज प्रहारन मत क्रियो ॥

घर काज कन्ह तूंअर अध्रम । पुत्तह से मुष 'बिष दियो ॥छं०४७॥

तूंअर वंश ने सर्वदा भूल की, पहिले किल्ली को उखाड़ा फिर

आपने पृथ्वीराज को राज्य दिला दिया ।

बृहा - तुम तूंअर मति चूकना । करि किल्ली ठिल्लीय ॥

फुनि मत अप्पन ही करिय । प्रथीराज घर दीय ॥ छं० ४८ ॥

राजा हाथी घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परंतु राज्य की मर्प

मणि के समान रक्षा करे ।

राज दान गज तुरिय 'द्रव । देत न लगे बार ॥

घरतिय रष्यन यो सुदूढ़ । अहि मनि रष्यन हार ॥ छं० ४९ ॥

अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मंत्री लाचार होकर

दिल्ली की ओर चला ।

मंत्रि सु मंतह सीष लै । चलि दित्लिय चहुआन ॥

आइस को जोइम का हा । 'इह अत ध्रम्म प्रमान ॥ छं० ५० ॥

पृथ्वीराज से मिलकर मंत्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रमत्त

हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम

से आकर मिलो ।

चंद्रायना - मिल्यो त्रिपह सोमंत बसीठ जु मुक्कल्यो ॥

सा चहुआनह पास नरिद सु इवकल्यो ॥

धिज्यौ अनंग नरिद भूमि हमहीं तजो ॥

कै मिली आइ चहुआन सुबुद्धिय मंत जो ॥ छं० ५१ ॥

इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना ।
 बोल्यो हंकि नरिंद बसिंठ जु दुब्ब-यो ।
 तब कमधञ्ज नरिंद न उत्तर सभ-यो ॥
 बात अनंक्रन कीन हीन हुई उठ्यो ॥
 क्षपि लृहट्टिय हृथ्य बीर बर टट्टयो । छं० ५२ ॥

बसीठ का कहना कि जिसका राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं ।
 दूहा - उठ्यो बीर बसीठ बल । करि जुहार चहुआन ॥
 घनी उमै घर लुट्टियै । इह अविञ्ज परिमान ॥ छं० ५३ ॥
 पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते हैं ।
 कविन - रे बसीठ मति ँठीठ । बोल बोलै मनिहीना ॥
 सने रात उप्पनं । किनें सक्कर ँपय दीना ॥
 ँघर कर छुट्टी संगि । हृथ्य चढ्ढें मरदाना ॥
 फार बत्रै जो मूढ । होइ ताही जिय ज्याना ॥
 सट्टीय बुद्धि नट्टिय ग्रति । तुम बिमत्ति दिन लहि बहिय ॥
 उगमै सूर पच्छिम ँ अरक । तो दिन्ली घर तुम नहिय ॥ छं० ५४ ॥
 मंत्री का यह सुनकर उदास मन हो चला आना ।
 दूहा - सुनि यह बत्त सी इत चलि । बिन आदर मन मद ॥
 हीन दीन दिष्पन इमौ । मनो कि ँ वासर चद ॥ छं० ५५ ॥
 मंत्री ने अनङ्गपाल से आकर कहा कि मैंने तो पहिले ही कहा था,
 यह दैत्यवंशी चौहान कभी राज्य न लौटावेगा ।
 पृथ्वी तो आप दे चुके अइ बात न खोइए ।
 कविन - तूंअर बीर बसीठ । साम सरेम मु अष्पिय ॥
 तुम बूढत्तन कुमल । वत्त पहिले हम भष्पिय ॥
 वह बलिष्ट दैवान । दैत्यवंमी चहुआनं ॥
 मूज अय उपरै । देय नह तास प्रमानं ॥
 तुम दई भूमि निज हृथ्य करि । अथ्य मित्त नन षोइये ॥
 सभरहि देस देसन नृपति । तो बूढत्त बिगोइये ॥ छं० ५६ ॥
 अनङ्गपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़
 आया । पृथ्वीराज माना की मर्याद को सोचने लगा और उत्तने
 कमास को बुला कर पूछा कि मेरी सांप छछूंदर की गति
 हुई है अब क्या करना चाहिए ।

-
१. दीठ, डठि, छठि । २. ए०-पर । ३. मो०-घर कर सेगिय बुद्धि ।
 ४. ए० क० को०-विपति । ५. ए० क० को०-परक ।
 ६. ए० क० को०-बासुर । ७. मो०-तोअर ।

अनंगपाल न न मानि । कूच किन्नी दिल्लीय दिसि ॥

भूत भविष जानी न । किय रत्तेत नयन रेरिस ॥

अप्प सेन सजि जूह । आइ दिल्ली घरवानं ॥

मात पिता मरजाद । वित लग्यो बहुआनं ॥

कैमास मंत पुच्छ्यो नृपति । कहौ कहा अब किजिये ॥

अहि ग्रहिय छछुंदरि जो तजै । नैन जठर भषि छजिये ॥छं. ५७॥

जो लड़ाई करता हूं तो अपनी मा के पिता (नाना) से लड़ता हूं

और जो छोड़ देता हूं तो अपनी हीनता प्रगट होती है, सो अब

क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो ।

बूहा — जो मारौं तो मातपित । छंडौ तो बल हानि ॥

कहि मंत्री मंत्र गपति । न्याय रीति विधि जानि ॥ छं० ५८ ॥

कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए, इन्होंने पृथ्वी

बी है इनको आप न बीजिए, जो न मानें यहीं आकर भिड़ें तो

फिर लड़ना चाहिए ।

कवित्त— सुनो नृपति बहुआन । न्याय तो कलह न किज्जे ॥

इन दीनी घर अप्प । अप्प तो इनह न दिज्जे ॥

जो निमान प्रमान । होइहै सोइ नियानं ॥

जब लग्यो गढ़ आइ । जाइ तब जुद्ध जुरानं ॥

सजिं कोट ओट सामत सथ । नारि गोर जंबूर वहि ॥

लग्ये न जोर छिज्जे सुभर । इन सामंत लगंत नहि ॥ छं० ५९ ॥

अनंगपाल ने धूमधाम से युद्ध आरम्भ किया । कई दिन तक

लड़ाई हुई अन्त में अनंगपाल की हार हुई ।

अनंगपाल बल मंडि । सुभर दिल्ली गढ़ लग्या ॥

लेहु लेहु करि दौरि । अप्प बर अप्प बिलग्या ॥

नारि गोरि आतस्स । कोट पारस भर घाह्य ॥

जे भर मंडे आइ । सोर करि मोर उठाइय ॥

लग्ये न घात नूअर नृपति । दिवस च्यार मंडिय ररिय ॥

पुज्यौ न वान पानप घटत । दिल्ली घर दिल्ली करिय ॥छं० ६०॥

हार कर अनंगपाल का फिर बड़ीनाथ लौट जाना ।

चीपाई — दीह च्यारि दिल्ली नृप भारी । बर बहुआन संमुहै हारी ॥

गोतं चर फिर रावर छंडियाबद्री छोर सरन ग्रह मंडिय ॥छं० ६१॥

घाधी सेना को वहीं और घाधी को अजमेर के पास छोड़ कर
अनंगपाल लौट गया ।

अनंगपाल पंडिय गयो । सैन सु बंधिय थट्ट ॥

अद्ध सैन अजमेर पर । 'टारे हृथ्य सुभट्ट ॥ छं० ६२ ॥

मंत्री सुमन्त की सलाह से अनङ्गपाल ने माधो भाट को सुलतान
शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा ।

बीर बसीठ सुमंत मिलि । स्वामि बचन 'समुझाइ ॥

मती मंडि चहुआन को । माधो भट्ट चलाइ ॥ छं० ६३ ॥

माधो भाट जाकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को
जीतने की इच्छा से चढ़ चला ।

माधो भट्ट सु मुक्कल्यो । मिल्यो जाइ मुलतान ॥

चढयो साहि गोरी सुबर । मिलि बंधन चहुआन ॥ छं० ६४ ॥

तू अर अह चहुआन के । घर बज्यो बहु दद ॥

माधो भट्ट सु मुक्कल्यो । बर गज्जनै नरिद ॥ छं० ६५ ॥

नीतिराव क्षत्री ने अनङ्गपाल के गोरी के पास दूत भेजने का
समाचार पृथ्वीराज को दिया ।

नीति राव पित्री सुबर । तूंअर निहि परधान ॥

गोरी दिसि नूप अप्प दिसि । भेद दियो चहुआन ॥ छं० ६६ ॥

अनंगपाल मान्यो नही । बरजिय पंडि नरिद ॥

तूंअर अह चहुआन के । रहै न एकै बध ॥ छं० ६७ ॥

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आप को
पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ
फँसाकर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं ?

कवित दई भूमि मापित्त । लई हम हृथ्य पसारह ॥

सो पाओ फिर किम सु । बोल बोलहु अविचारह ॥

तुम बिरद्ध तप जोग । राज चाहो सु करन अब ॥

दयो राज तुम हमह । कहा उपजी चित्तह तब ॥

मंगी जू आइ फिरि भूमि तम । सोब राज पाओ नहीं ॥

जो गयो जंत बलि ग्रेह जम । कही सु फिरि आवै कहीं ॥ छं० ६८ ॥

जैसे बादल से बूँद गिर कर, हवा से पेड़ के पत्ते गिरकर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटते नहीं जा सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म में आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए ।

जलद बूँद परि धरनि । कवहुँ जाई न 'नम्भ फिर ॥

पवन तुट्टि तरु पत्र । तरु न लगै सु आइ धिर ॥

तुटि तारक आकास । बहुरि आकास न जाअै ॥

मिष उलंघि सबजह । सोइ फुनि हनि नहु षाअै ॥

अप्पिअ सु पहिमि तुम उदक सह । सो पाओ र्जै जनम ॥

तप्पी सु जाइ बद्दी तपह । मत विचार राजस मनम ॥ छं० ६९ ॥

आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए, उसे तो हमने

कई बार बाँध बाँध कर छोड़ दिया है ।

तुम गोरी पतिमाह । कहै जिन 'मत भरमावहु ॥

सत्त भ्रम साहसस । काइ पर कहै गमावहु ॥

सामंतनि सुलतान । बार बहु गहि गहि छंड्यो ॥

उन अपत्ति के सथ । सपति तुम मत सु मंड्यो ॥

जिम लगि जह्य विघवा चरन । अप समान होवन कहै ॥

मंगो मु द्रव्य कारन स धम । कछु अप्प चित्तह चहै ॥ छं० ७० ॥

हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला । संदेशा सुनते ही

अनंगपाल क्रोध से उछल उठा ।

अरिल्ल सुनि सु दूत आयी हरद्वारह । कथिय अनग सम मकल विचारह ॥

सुनत श्रवन अति रोस 'भुकिन मनु । जिम सु सिप चुक्कत कुलिंग जनु ॥

॥ छं० ७१ ॥

अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिखकर दूत को गजनी की

ओर भेजा । पत्र में लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए

हम और आप मिलकर बिल्ली को बिजय करें ।

कवित्त अनंगपाल भुकि आप । इत डिग हुंते साह जे ॥

तिनह कहाँ तुम जाइ । कहाँ साहव लिष्ठी ते ॥

दिय पत्र 'तिन हथ्य । घरा देत न चहुआनह ॥

तुम आवहु चढ़ि अतुर । कूच पर कूच मिलातह ॥

मिलि अप्प एक एकह सुमेति । लरि सु लहि दिल्लिय घरा ॥

तुम मस छंडि तप बद्रिकर । अब सु पाई रुप्ये घरा ॥ छं० ७२ ॥

१. मो० को०—अश्रम ।

२. ए० क० को०—मन ।

३. ए० क० को०—भुक्कन ।

४. ए० क० को०—फुनि ।

दूत ने आकर अन्नंगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अन्नंगपाल के हरिद्वार आने का समाचा मुलतान को सुनाया मुलतान सुनते ही चढ़ चला ।

गए दूत गज्जनै । साहि सम बत्त बदै बर ॥

तप सु छंडि तौबरह । आइ हरद्वार लियन घर ॥

पहुमि मंडि प्रथिराज । राज अप्पै न इबक निल ॥

देवादर चढ़ि साहि । भूमि लिज्जै सु उभय मिलि ॥

मुनि साह घाव नीमान किय । चढघौ सेन चतुरंग सजि ॥

हय गय समूह साकति सकल । अनंगपाल साहस्स कज ॥ छं० ७३ ॥

मुलतान शाहबद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सरदारों का वर्णन ।

चढ़त साहि साहाब । चढघौ तत्तार खान बर ॥

षान पान 'धुरसान । पान मारुफ महा भर ॥

कालिम पान कमाम । मीर नासेर अभगह ॥

अलूषान आलीरु । चढिय हय गय चतुरंगह ॥

मथ सयन सकल सारद्व 'लष । उभय महस मत मत्त इभ ॥

नीमान बज्जि नौबति निहसि रहे गज्ज घर पुर मु नभ ॥ छं० ७४ ॥

छद लघुनाराच ॥ चढघौ सहाब सज्जिय । निमान जोर बज्जिय ॥

मिले 'सु साह उम्मर । सजै अनूप समर ॥ छं० ७५ ॥

गयंद मह गंधयं । मुझै न राह अघय ॥

पग ठिलै पहारय । नग पर निहारय ॥ छं० ७६ ॥

सकाज बाज साजय । कुरग देवि लाजय ॥

अनू चाल उज्जवै । मसूर वित्त रिझवै ॥ छं० ७७ ॥

रजोद मोद उप्पली । सपूर सूर पप्पली ॥

रिधै सु साहि आतुरं । कपे मु अग कातर ॥ छं० ७८ ॥

लगन छीन उल्लहं । षंडे जु दरि दुल्लह ॥

न आन पान जानयं । उड़ान ज्यौ सिचानयं ॥ छं० ७९ ॥

करंत इल्लगारयं । सु आर मिधु पारयं ॥ छं० ८० ॥

सिन्धु पार उतरकर, बीस हजार सेना साथ देकर मुलतान ने ततार खों को अन्नंगपाल को लाने के लिये हरिद्वार भेजा ।

ततार खों के आने का समाचार सुनकर अन्नंगपाल

बड़े हर्ष से उससे मिला ।

१. ए०-पुरसेम ।

२. ए० क० को०-नासेन ।

३. ए०-मथ, लषि ।

४. ए० क० को०-जु ।

कवित्त - सिंधु उत्तरि सुरतान । कष्टी सम षान ततारह ॥
तम अनगेसह लैन । जाहु जैह तैह हरिद्वारह ॥
सहस बीस लै सेन । अनैंग सम मिलिय सोनपुर ॥
बिलम करहु जिन बहुत । अभैंग सजि आव आतुर ॥
करि नबनि षान ततार चलि । पहुँक्यौ हरद्वारह सहर ॥
करि षवरि तब्व अति प्रीत तन।मिल्यौ राज अनगेस बर ॥छं०८१॥

अनंगपाल ने बहुत से घोड़ों मोल लिये और सेना भरती करके
लड़ाई की तैयारी की ।

दूह - तहँ तोंअर अनगेस नूप । लए मोल बहु बाज ॥
उभय सहस सेना सजित । रषिष सुभर किय साज ॥ छं० ८२ ॥
तीन सौ बीर जो अनंगपाल के साथ बंरागी हो गए थे वे
भी तलवार बांध कर लड़ने के लिये तयार हुए ।
सत्त तीन भर सुभर जे । निज बंराग सरूप ॥
तिन बंधी तरवार फिरि । बदलि भेष बहु रूप ॥ छं० ८३ ॥

तातार खां ने रात भर रहकर सवेरे उठते ही अनंगपाल के साथ
कूच किया । अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर आगे से
बढ़कर उसने सुलतान को समाचार दिया, सुलतान आकर
अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ
सलाह करने लगे ।

कवित्त - मिले षान ततार । बन मन तत्त रत बर ॥
दै निमान पहु फटन । चले ५२ सोन उभै मर ॥
भए साह दल निकट । रषिष जोजन जुग अंतर ॥
दैई षवरि सुलतान । चढ़्यौ साहाब समंतर ॥
दस कोस अग अनगेस कहूँ । मिल्यौ जाइ साहिब मुहित ॥
बैठे सु उत्तरि अति प्रीति पर।भनहु उभै जन इक्कचित्त ॥छं०८४॥

अनंगपाल ने सब वृत्तान्त सुनाया, दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वी-
राज आप आकर हाजिर हो जाय तो उसे जीव दान करना
चाहिए । सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र
भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को
राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी से लौटाओ
तो आकर युद्ध करो । पृथ्वीराज ने कहा
कि एसी कोटि लड़ाई क्यों न करे अनंग-
पाल सब राज्य उलटा नहीं पा सकता ।

पद्धरी - सुरतान समिलि नृप अन्नगेस । किय अनग समह पतिसाह पेस ॥
 गज पंच मत्त पंचास बाज । साकत्ति सज्जि दिय अनगराज ॥ छं० ८५ ॥
 किरवान 'तोन कम्मान एक । मिरपाव स्वातसुत माल मेक ॥
 दे प्रीति चढ़े निस्सान पाव । आए सु मोनपुर उभे ठाव ॥ छं० ८६ ॥
 मिलि साह अनग बैठे मुमत्त । तत्तार पानघाना मुचित्त ॥
 कहि अनगपाल नृप पुब्ब कथ्य । चहुआन मन न माने ममथ्य ॥ छं० ८७ ॥
 जंवे सु साह चढ़ि चलो प्रात । भंजे सु जुगनियय पुरह जात ॥
 जो मिलिह अप्प चहुआन आनि । दीजे ती उभय मिलि प्रात दान ॥ छं० ८८ ॥
 मनी सु राज अनगेस मन्न । उच्चय्यौ तांम तत्तार पन्न ॥
 देवो सु अप्प दूतह पठाइय । लिप्यो सुवत्त मम त्रिपम दाई ॥ छं० ८९ ॥
 चर चार चाहि हक्कारि लीन । लिषि तत्त पत्त तिन ह्थ्य दीन ॥
 अनगेस पुत्रि सूत तुम्म अप्प । तुम समपि राज गय बद्रि तप्प ॥ छं० ९० ॥
 करि तप्प आइ । फरि अन्नगेस । दिज्जे सु इनहि ह्य गय मु देस ॥
 आनो न चित्त चहुआन और । जग्गे मु सामि न विरम्म चौर ॥ छं० ९१ ॥
 भुगई न जाइ पर लेइ बस्त । समपौ सुराइ आनग ममस्न ॥
 गो चार पहर चारै सु गोइ । कबहूँ न घेन बर धनी होइ ॥ छं० ९२ ॥
 थनवार अस्ब सौंवे सु राज । ना होइ ओय पनि ताम बाज ॥
 करमनी कृष्णि रण्णो सुभाय । तिन भोग सुभर रावर सुभाय ॥ छं० ९३ ॥
 अप्पो सु देस अनगेस रस्स । जिन करो अप्प मइस्सह विरम्म ॥
 भयें विरस सुष्ण पावै न कोइ । हम देन सीष तुम हितू होइ ॥ छं० ९४ ॥
 भये बीरस सुष्ण कह भयो पंड । कुल सकल नास भौ वप्पु पंड ॥
 अप्पो न भूमि जो जीय सुद्ध । तो सज्जह आनि इन समहि जुद्ध ॥ छं० ९५ ॥
 दिय पत्र इत प्रथिराज जाइ । सुनि श्रवन अप्प बहु दुष्ण पाइ ॥
 अनगेस राज सुलतान जोर । ऐसे जु सजै कोटिक्क ओर ॥ छं० ९६ ॥
 पावै न तऊ दिल्ली मु थान । झुकि राव घाव कीनो निसान ॥ छं० ९७ ॥
 पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट लगा कर सब सरदारों के साथ
 कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला ।
 गाथा—झुकि किय घास निसानं । चढ़ि प्रथिराज बाज साजेय ॥
 सब सार्भंत समेतं । दिय डेरा मु दोइ अज्जनय ॥ छं० ९८ ॥
 दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सुलतान से
 कहा । जो सब सरदार विरक्त हो गए थे वे भी
 स्वामि के काम के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए ।

ब्रह्मा - देखि दूत गये साहि छिग । कही पत्रि प्रथिराज ॥

चढ़्यो सूर सेंभर धनी । ह्य गय दल बल साज ॥ छं० १९ ॥

सामत सूर समस्त बर । भय संसार बिरत ॥

स्वामि धम्म साधन सु बर । मरन लरन मन रत ॥ छं० १०० ॥

सुलतान ने दूत से समाचार सुन कर चढ़ाई का हुक्म दिया ।

अरिल्ल -

संभलि बल 'चरं सुलतानं । निहसे बज्जि सु बीर निसानं ॥

भयो हुकुम साहाब अमानह । सजहु अमीर उम्मरा वानह ॥ छं० १०१ ॥

पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूब का समाचार पृथ्वीराज

को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा ।

ब्रह्मा चर सु दिषि चहुआन के । साह पत्रि कहि राज ॥

सुनत राज प्रथिराज बर । चल्थो जुद्ध कज माज ॥ छं० १०२ ॥

धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला, जब दोनों

सेनाएं एक दूसरे से दो कोस पर रह गईं तब

पृथ्वीराज ने डङ्कू पर चोट दी ।

श्लोक -

सजि साज चल्थो प्रथिराज बरं । सन सामन सूर मपूर भरं ॥

विररंत महाब्र बीर बली । तिन सों किन जान न रार कली ॥ छं० १०३ ॥

परमें भिरि भारथ पारथ से । न बढे अप ऊपर आनन से ॥

जुघ कों तिनके मुष कोंन जुरे । न मुरें मुष धार अनी मुपुरे ॥ छं० १०४ ॥

सजि साहन सेंन हजार दस । रह सेर सवान सु बीर रस ॥

गज सत दमं मुर मन गजं । तिन देखि बंध्याचल पड्व लजं ॥ छं० १०५ ॥

धमके धन घुष्वर घंट वनं । भननंकत भीरनि क्षीर भनं ।

गति देखि तरंग कुरंग दुरें । तिनके उर अट्टन कोट परें ॥ छं० १०६ ॥

चहुआन चढ़्यो बतुरंग दलं । सजि भीरव भून विताल बलं ॥

चर चौसठ जुगिनि सध्य चलीं । किलकें करि भारथ बैर रली ॥ छं० १०७ ॥

चमकत सनाह सु जोनि इमी । मु करं मधि सूरति बिब जिमी ॥

सजि टीप रंभाबलि हृथ्य लयां बनि राज सु पष्वर सा वलयं ॥ छं० १०८ ॥

दोई कोस रह्यो बिच साहि दलं । चहुआन निसान बजे सबलं ॥ छं० १०९ ॥

१. ए०-बरं ।

२. छं० ए०-सुरतानह, निसानह ।

३. मो० बज्जे ।

४. मो०-पसरें ।

५. ए० छं० को०-सत मुरं मधमत्त गजं ।

६. ए०-हाथ ।

७. मो०-परकर ।

८. मो०-बनयं ।

पृथ्वीराज के पट्टे चने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने
सरदारों को भी बड़ने का हुकम दिया ।
दूहा सजि आयी चहुआन जुध । सुन्यो श्रवन पतिसाहि ॥
हुकम वान उमरान हुआ । सज्यो अंग सत्ताह ॥ छ० ११० ॥
आगे तालार खां को रक्खा, मारुफ खां को बाईं ओर और खुरासान खां
को दाहिनी ओर अन्नगपाल को बीच में करके पीछे आय हो लिया ।
गाथा मुष सु रिष्ठी ततार । बाईं दिमा वान मारुफ ॥
दाहिन वान पुरसानं । मद्धि अनगसे पुट्टि साहाबं ॥ छ० १११ ॥
पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूहरचना की । आगे कैमास
को और पीछे चारुंडराय को कर दिया ।
सजि ठट्टी सुलतानं । सुनि चहुआन श्रप्प व्यूहानं ॥
मुष कीनी कैमासं । चारुंडराइ पुच्छ सज्जायं ॥ छ० ११२ ॥
अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अन्नगपाल को
को कोई मारे नहीं, जीते ही पकड़ना चाहिए ।
दूहा मद्धि फौज प्रथिराज रचि । कह्यो सु कर करि उंच ॥
अनंग राज जीवत गहो । इह मु रचो परपन ॥ छ० ११३ ॥
दोनों दलों का सामना हुआ, कैमास ने युद्धारम्भ किया ।
जिन मु हनो अनगसे जिय । गहो सु जीयत सास ॥
इनें दुदल दिठ्ठाल भय । लई वग कैमास ॥ छ० ११४ ॥
दोनों दल का सामना होते ही घमसान युद्ध होने लगा ।
बिह दल बल सिधू बजै । उपजत सूर उहास ॥
व्योहनि पर नष्यो वयंग । करि कलकी कैमास ॥ छ० ११५ ॥
कैमास ने शस्त्र संभाल कर युद्धारम्भ किया । युद्ध का वर्णन ।
भुजगी
लई वग कैमास बीरं अमानं । धमके धरा गोम गज्जे गुमान ॥
उतें उप्पगी बाग ततार वानं । मिले हिंदु मीरं दोऊ दीन मान ॥ छ० ११६ ॥
'वजे राग सिधू सु मारु अवगगे । गजे सूर सूरं असूरं सु भगगे ॥
चढ़े व्योम विम्मान देखंत देवं । बढ़े स्वामि कज्जै सु सज्जै उंभेवं ॥ छ० ११७ ॥
छुटे नाल गोला हवाई उछंगं । न शित्रंमनों जानि नुट्टे निहंगं ॥
करष्ये चलै वान वानं कमानं । भई अँध धुंधं न सुस्सेति भानं ॥ छ० ११८ ॥

१. ए० क० को०-गहै बहे । २. मो०-साह । ३. ए० क० को०-वोहनि ।
४. ए० क० को०-वजे । ५. ए० क० को०-मज्जे ।
६. ए० क० को०-जउमं । ७. मो०-बुद्धे । ८. ए० क० को०-सुस्सेति ।

मिले सेल भेलं समेलं अपारं । सनाहं फटें हीय होवत्त पारं ॥
 मदं मत्त दंतं उषारे मसंदं । मनों भिल्लिया पव्व उष्वालि कंदं ॥छं० ११९॥
 लगै नाग नाग मुषी सूर ऐचै । ह्यधनापुरं जानि बलिभद्र पैचै ॥
 झरं ओझरं झार झारं झनकै । करै गज्ज चिक्कार 'ताजी किनकै ॥छं० १२०॥
 हूअं पूरनं जाम मध्यान जंत्री । मिले दिठु तत्तार आनंग मंत्री ॥
 चलै मातुलं ओर हक्कै कमासं । हन्यो षान षगं पहुँचे वृहासं ॥ छं० १२१॥
 तकै तूवरं पै लयो गज्ज राजं । धये दाहिमा पागरा छडि वाजं ॥
 जरी सेल गाढी विचं 'पीलवाना'बियो घाव कीयो सु कड्डुं क्रपानं ॥छं० १२२॥
 कटी दंत लौ सुंड लोही भभवकै । मनों सारदा कंदरा थी उबकै ॥
 पन्यो कज्जलं कूट ज्यो तूटि हथ्थी।तजे तूअरं भज्जिगे सब्ब सथ्थी ॥छं० १२३॥
 भगंदंत वाली किधो सु प्रतीकं । महा दिघ्न कायं अरज्जुन्न झीकं ॥
 दबी द्वादसं कोस भू घंट मद्धे । पढे वेद बानी पुरानं प्रसिद्धे ॥ छं० १२४ ॥
 पन्यो दाहिमा भीम ज्यो गोल कूडै । घटो कल्ल पथ्थं न सथ्थं उमडै ॥
 अलुइयो पगं अग में इष्म राजं । हरी जेम कूदे करी पथ्थ गाजं ॥छं० १२५॥
 किलावा रह्यो पग में लग्ग पासी । ग्रह्यो जीवती बद्रिकाश्रम्म बासी ॥
 सनडुं रहि कड्डियं अद्ध विद्धी।चढी हथ्थ दिल्ली न कारज्ज सिद्धी ॥छं० १२६॥
 उभै मोत मानो 'रहे लग्गि छत्ती । पल्ले भीर सामंत की आइ पत्ती ।
 पुरासान मारुफ तत्तार जोरी । करे एक फौजं घण्णो साहि गोरी ॥छं० १२७॥
 इत चहुआनं भूजा के भरोसै । मनो 'लंघनो मिघ तुट्टो सरोसै ॥
 'गडं इदपथ्थं सु हायं सु कज्जे । उभै दीन जुट्टे करे षगं घज्जे ॥छं० १२८॥
 रसं लूक लगै हुए टूक टूकं । रिनं षत्त पट्टं 'पुराने अचूकं ॥
 घटे जाइ आघाट बैकुंठ थानं । मिट्ठो नट्टु गोटा जिसी आव जानं ॥छं० १२९॥
 बरं चंग चंगे परी हूर सूरं । रचें रंडमालं महेसं गरूरं ॥
 सिवा श्रोत घण्पी सु कीनी डकारं।करे षचरा भूचरा किल्लकारं ॥छं० १३०॥
 उडै रेनं गेंतं भयो अघकारं । पराए न अप्पं न सुइसै लगारं ॥
 इसी भांति भारथ्थ मंतो करूरं । घरी उचार षचे रह्यो रथ्थ सूरं ॥छं० १३१॥
 हरद्वार लो जाइ लायो सु भग्गी । सबे सेन भग्गी तिनं लार लग्गी ॥
 रह्यो पातिसाहं भुजं लाज झल्लै।परं षचि माइक्क छंडै सु भल्लै ॥छं० १३२॥
 गनें कौन नामं अनेकं फवज्जं । लग्यो दाहिमा कै तुरंगम कज्जं ॥
 बडं गुज्जरं कम्मघज्जं पुंडीरं । छलं पारि दीन्यो करे नाहि सीरं ॥छं० १३३॥

१. मो०-बाजी ।

२. सो० ह० को०-पति ।

३. ए०-लंघनं, लंघने, लंघनं । ४. मो०-प्रति "हकं एक एकं सहायं सु कज्जे"

५. मो०-सही कै ।

६. ए० ह० को०-पीकी ।

घरे सिप्परं अहु हूँ काल भेसं । लियो संग्रहे चौडरा गज्जनेसं ॥
 फटे पारसं सत्त साहस मीरं । परे पंचसै वेन हिंदु सु बीरं ॥ छ० १३४ ॥
 उभै पाहुने कीन चंदं प्रकासे । ठले मुष्ण मंगे प्रथीपत्ति पासे ॥ छ० १३५ ॥
 शाहाबुद्दीन को चाखंड राय ने पकड़ लिया, पृथ्वीराज की जय हुई,
 सात हजार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए ।

कवित्त—बंघि साहि साहाब । लियो चावड राय बर ॥

हय कंधह लै डारि । गयो निज सथ्य सेन नर ॥
 नीर उतरि पति अगुर । षेत हूँदुयो प्रथिराजं ॥
 मुसलमान सत सहस । परे सामथ करि काजं ॥
 पंच सै सुभर हिंदू सु परि । उभै सत्ति झोरी सु जगि ॥
 जित्त्यो सु राज सोमेस मुअ । 'घने जैत बज्जे बजिग ॥ छ० १३६ ॥
 पृथ्वीराज का मुलतान को कैद में भेज कर अनंगपाल को आदर
 महित दरबार में बुला कर उनके बर पड़ना ।

मुसलमान घर गहि । दाग निज सुभर दिवायो ॥
 लिये जीति प्रथिराज । समह सामंत घर आयो ॥
 सभा बैठ भर सुभर । कह्यो कैमास राइ गुर ॥
 अनगेसह लै आउ । चलयो मत्री सु लेन घर ॥
 आन्यो सु राज अनगेस तैह । प्रथीराज लग्यो सु रय ॥
 सनमान प्रान अति प्रीति मो । भाव भगत राजन करय ॥ छ० १३७ ॥
 दाहिम राव को हुकम देकर मुसलमान को दरबार में बुलाना, उसके
 आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बड़े
 बुद्धिमान हैं आप इस शाह के बहकाने में क्यों आ गए ?
 दियो हुकम दाहिम्म । ल्याउ दीवान साह कहु ॥
 सब देखे सामंत । मुक्कि आनन अपत्ति बहु ॥
 आन्यो साहि हजूर । मिल्यो प्रथिराज राज बर ॥
 बैठि साह साहाब । मुष्ण देखे जु सुभर भर ॥
 बाल्यो जु राज प्रथिराज बर । अनंगराइ तुम अति सुमति ॥
 भरमो सु केम कहि साहि के।इह तो पति उत्तरि अपति ॥ छ० १३८ ॥
 हुहा—कहै राज प्रथिराज गुर । सुभर बोलि बर अग ॥
 अनंग सीस उब न करै । नाग दमन सिर नग ॥ छ० १३९ ॥

१. ए० क० को०—बजै ।

२. मो०—गुर सुभर ।

३. ए० क० को०—गानि ।

सरदार गहलौत ने कहा इसमें महाराज अनंगपाल का दोष नहीं
है यह सब प्रपंच बीवान का रचा हुआ है ।

कवित्त - कहे 'गज्जि गहिलौत । कछुँ सामंत सुनौ सहु ॥
अप्प अनी 'एकंत । 'असुर सुरतान बही कहु ॥
समुद सजल जल पार । ससी लगनी सु कलंकह ॥
सूर गिलँ रम राह । पंथ लट्टाइ गोय बहु ॥
दसरथ्य श्राप काक मु विक्रम । दइ दिवान त्रिपरीत गति ॥
पतिसाह कही सुनतें सकल । अनगपाल नट्टी सुमनि ॥ छं० १४० ॥
चामुंड राय का कहना कि कुसंग का यही फल होता है ।

बुहा—बदे राइ चामड बर । इह अवस्थ होइ अंग ॥
जब सु मानसर तजि करे । हस काग की संग ॥ छं० १४१ ॥
सामंतों ने जितनी बातें कहीं, सब अनङ्गपाल नीचा सिर किए
सुनता रहा, कुछ न बोला ।
जिते बचन सामंत कहे । तिते सहे अनगीस ॥
धील चील्ह सम सुनि रह्यौ । उठ्यौ न ऊरघ सीम ॥ छं० १४२ ॥
पृथ्वीराज का शाह को एक घोड़ा और सिरपाव (खिल्लत)
बेकर छोड़ देना ।

भाव भगति प्रथिराज ने । कीनी अति महिमान ॥
इक्क बाज सिरपाव दे । छंडि दियो सुरतान ॥ छं० १४३ ॥
शाहाबुद्दीन का छोड़े हाथी और दो लाख मुद्रा बंड देना और
पृथ्वीराज का उसे सामंतों में बांट देना ।

कवित्त—छांडि दियो सुरतान । डंड कबूल कियो सिर ॥
बीस 'हस्ति सत बाज । 'उंच जाति गातह मिर ॥
उभे लष बर द्रव्य । दियो साहाब सु बंड ॥
सो प्रथिराज नरिद । अद्ध दीनी चामुंड ॥
अध दंड सब सामंत कहुं । बंदि दियो चहुआन बर ॥
दे दंड पत्त नर बर सुभर । प्रथीराज छीवे न कर ॥ छं० १४४ ॥
म्लेच्छ को जीत कर पृथ्वीराज दिल्ली आया ।

बुहा—मेच्छ बंध चहुआन ने । लिये हयगय भार ॥
फिरि प्रसन्न प्रथिराज किय । दिल्ली कोटह बार ॥ छं० १४५ ॥

१. छं०—गज्जि ।

२. मो०—एकंत ।

३. ए० छं० को०—असुर न निबही कहं ।

४. मो०—कछू लै ।

५. ए०—हस्ति ।

६. ए०—ऊंच जाति सुतहि मिर ।

बरष एक पच्छे नपति । तब लागि भर सबलान ॥
समी ह्यगय दल सजे । चतुरंगी चहुआन ॥ छं० १४६ ॥
राजा से राव पञ्जून, गोयन्द राय आदि सामंत आकर मिले ।
कवित्त - मिल्यो राव पञ्जून । मिल्यो मोरी महनसिय ॥
मिले राव पुंडीर । गए दुज्जन बल नसिय ॥
मिले निडर रठ्यौर । मिल गोईद गहिलीत ॥
मिलि षीची पञ्जून । जाम जहौं पहिलीतं ॥
आरंभ राव कनकू मिल्यो । रघुवंसी ह्य जा रही ॥
कविचंद मिल्यो जयचंद को । नाम समट्टा भारही ॥ छं० १४७ ॥
अनंगपाल का मंत्री से पूछना कि अब मुझे क्या करना उचित है ।
अरिल्ल - तब सुमंत परधानह पुच्छिय । कही मंत मंत्री मत अच्छिय ॥
किहि विधि क्रम्म धम्म जस रणै।मुनि परधान एह विधि अण्ये ॥ छं० १४८ ॥
मंत्री ने कहा कि महाराज आप अब बूढ़े हुए मृत्यु समय
निकट है और पृथ्वीराज को दिल्हो आप वे चुके हैं
अब इसका मोह छोड़ कर धर्म कर्म कीजिए ।
दूहा - अनगपाल तिन पावि ग्रह । अरु बर बंधव साल ॥
वृद्ध जोग वपुजोग घरि । चरि जरा अरि काल ॥ छं० १४९ ॥
जोगिनपुर प्रथिराज को । देव दियो दिन बित्त ॥
मोह बध बंधन तजे । धर्म क्रम कीजे चित्त ॥ छं० १५० ॥
मंत्री का कहना कि संसार के सब पदार्थ नाशमान हैं
इस को चिन्ता न कीजिए ।
कवित्त - न रहै सर वापीय । अनुप गढ़ मंडप बहुज्जं ॥
न रहै धन बन तरुनि । कूप प्रबन फिरि छज्जं ॥
न रहै ससि रवि भोम । जाइ थावर अरु जगम ॥
न रहै सात समंद । धरै भंजय सोइ अगम ॥
जानहु न प्रलै चतुरंग तम । प्रलै इहै सो दिण्णिये ॥
राषी न बित्त आंचितका । जीमन मरन विसिण्णिये ॥ छं० १५१ ॥
रानी का सलाह बेना कि पृथ्वीराज से आधा पंजाब का
राज्य ले लो अथवा जो व्यास जो कहें सो कुरो ।
पुनि बरज्यौं नृप त्रीय । जीय तिय तीय उतारिय ॥
तत्रिय मान धरवार । पुच्छयो व्यास हँकारिय ॥
चाहुआन अरि भज्जि । होइ धर अनग नरैसं ॥
पंच नदी करि अद्ध । बँटि अप्ये अघ देसं ॥

तुम कहौ जोति 'जग जोति बिय । इह अपुब्व कय मंडिकैं ॥
कै ग्रही पंथ बढी सरन । धरा काम कलि छंडि कै ॥ छं० १५२ ॥
ध्यास जी का कहना कि बलवान पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य
करने दीजिए । आप गुरु का ध्यान करके तप कीजिए ।

कहै ध्यास अनगेस । तपे दिल्ली चहुआनं ॥
बहु बर बल छज्जि है । बंध मोषन सुलतानं ॥
तुम बढी तप जाहु । धरा संदेस न आनहु ॥
इह निम्मान प्रमान । पुब्व संबंधन जानहु ॥
निम्मलो ध्यान गुर ग्यान करि । हरि भजि निम्मल १ होइहै ॥
नन करो चित्त दुविधा नपति । अत्त पुरत्तन षोइहै ॥ छं० १५३ ॥
राज्य धन सम्मान मांगने से नहीं मिलता और

न बल से स्नेह होता है ।

न लहै मांग्यो देस । बेस पुनि मांग्यो न लहै ॥
न लहै मंग्यो मान । पान फुनि मांग्यो न लहै ॥
न लहै धन मंगत्त । गत्त फुनि रूप १ बिनानं ॥
पुब्व निबध्यो बंध । लहै सोई परिमानं ॥
तुम जान ग्यान मतिमान गुर । नेह न लभ्ये जोर बर ॥
आतम्म बित्त अनचित्त तजि । इहै मत्त तुम सत्त करि ॥ छं० १५४ ॥
मेरा मत मानो कि बड्डीनाथ जी की शरण में जाकर
कन्दमूल फल खाकर तप करो ।

अरिल्ल— मानि मत तुम तूवर छडिय । जाइ सरन बढी तप मडिय ॥
कंद मूल आहार अचानिय । कै बन फल तन धारन पानिय ॥ छं० १५५ ॥
पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल की बडी सेवा की । जब तेरह महीने बीन गए
तब अनङ्गपाल ने बौहित्र (पृथ्वीराज) से कहा कि अब मुझे
बड्डीनाथ पहुँचा दो वहाँ बैठ कर तप और भगवान का
भजन करूँ, पृथ्वीराज ने कहा कि आप यहीं बैठकर
तप भजन कर सकते हैं ।

कवित्त— अनगराइ अति सेव । करै प्रथिराज राज अति ॥
मास एक वृष वित्त । बहुरि उपजी सु राज मति ॥
कह्यौ पुत्रि सुत सभह । मोहि मुक्कलि बढी विस ॥
तहां १ बपु साधन करौ । धरौ २ हरि ध्यान अहो निसि ॥

१. ए०—तन, इ०—मम । २. मो०—बोइये, होइये । ३. ए०—निनानं ।
४. मो०—तप । ५. ए०—बहि ।

बोल्यो सु राज चहुआन बर । रहीं इहां साधन करो ॥
तप तुला दान धर्मह बिबिध । ध्यान ग्यान हिरदे धरो ॥छं०१५६॥
पृथ्वीराज ने बहुत समझाया पर अनङ्गपाल ने एक न माना । उसे
बद्रीनाथ जाने की लौ लगी रही । तब पृथ्वीराज ने बड़े आदर
के साथ दस लाख रुपये सात नौकर और दस ब्राह्मण
साथ बेकर उन्हें बद्रीनाथ पहुंचा दिया । अनङ्गपाल
वहां जाकर तपस्या करने लगा ।

कही सुत सोमेस । राज अनगेस न मानी ॥
बपु साधन तप काज । बद्रि दिसि मनसा ठानी ॥
तब पुत्री बर पुत्र । लष्य दह द्रव्य सु अप्पौ ॥
सत अनुचर इक जान । बिप्र दस एक समप्पौ ।
चल्यौ अनंग बद्री सरन । पहुँचायो प्रथिराज नृप ॥
तह जाइ राज तोंवर सुवर । तपे राज उग्रह सु तप ॥ छं०१५७॥
पृथ्वीराज को सहानुभूति ब्यालुता और बीरता की प्रशंसा ।

धनि सु चित्त प्रथिराज । करुन रस आप उपन्नौ ॥
द्रव्य दरक सत अद्र । पुन्य कारन भरि दिन्नौ ॥
सबै सुमर अनगान । आनि आदर ग्रह बासिय ॥
धनि धनि जंपै लोइ । कित्ति भू मडल भासिय ॥
आषेट दुष्ट दुञ्जन दलन । करै केलि स्रामत सथ ॥
कवि चंद छंद वंधिय कविन । प्रथिराज भारथ्य कथ ॥छं०१५८॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल
द्विस्त्री प्रागमन फिरि प्रथिराज जुरन बद्री तप सरन
नाम अठाबिसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २८ ॥



अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

(उन्तीसवां समय)

पृथ्वीराज साठ हजार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार गजनी में पहुंचा ।

कवित्त—दिल्लियपति प्रथिराज । अवनि आपेटक षिल्लिय ॥

साठ सहस असवार । जाइ लगा घर दिल्ली ॥

धूनि धरा पतिसाह । रहे पेसोर सुधनाय ॥

सध्य लिये सामंत । दिली कैमास सु जानय ॥

अगया सु रमय प्रथिराज बर । गजजन वै घर धूसिये ॥

दूसरो इंद्र दिल्लेस बर । सुभर सरस ढिग सुम्भिये ॥ १ ॥

दूतों ने जाकर गजनी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है ।

दूहा—गई षबर धम्मन की । उट्ट चढे असवार ॥

दिल्ली घर लिजै तषत । दिसि गजजनै पुकार ॥ छं० २ ॥

प्रथीराज साजत पवेंग । है गै नर भर भार ॥

दिल्लपति आपेट चढि । कुहकबान ह्यनारि ॥ छं० ३ ॥

ढेरा करि पेसोर नृप । सहस सट्टि सुभ बाज ॥

सोन पंथ विच पंथ दोइ । गल गजजै अग्राज ॥ छं० ४ ॥

शाहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्तचर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर गजनी में जाहिर किया ।

कवित्त—गोरी पठए दूत । चले च्यारों चतुरन्नर ॥

लीय षवरि प्रथिराज । चले पच्छे गजजन घर ॥

किय सलाम जब दूत । तबहि तत्तार सु बुद्धिसय ॥

कहा करंत दिलेस । चढत गिरबर घर धुज्जिय ॥

संग सत्त षट्ट सामंत चलि । तीन पाव लष्यह तुषी ॥

अनि सूर बीर नरवर सकल । उड़ी षेह घर उप्परी ॥ छं० ५ ॥

१. ए०—षिल्लिय, दिल्ली ।

२. ए० क० का०—धरतिय ।

३. ए० क० को०—मत्तिय ।

४. ए०—पंथ ।

५. क० को० ए०—सित्त ।

आषटक दिन रमय । संग स्वानं घन चीते ॥
 नावक पावक बिपुल । जविक दिन जामह जीते ॥
 सहस तुरी बध्वह सु । लंब सिरपां मिर 'पुट्टिय ॥
 जुरां रू बाज कूही गुहा । धानुक्की दारू धरा ॥
 बहु काल भाल वदकं बिला । जम भय तव जितिय धरा ॥ छं० ६ ॥
 मुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी
 हाथ में तसबीह (माला) लूंगा ।

रमै राज आषट । सत्त एकल बल भंजे ॥
 पंच पथ्य परिगाह । रंग अप्पन मन रंजे ॥
 सहस एक बाजित्र । सूर किरनह सपेवे ॥
 सुनि गोरी साहाब । दाह दिल महन किमेवे ॥
 जित्तौब जन्व प्रथिराज कीं । तब तमवी कर मडिहीं ॥
 टामंक सह नदह करों । जुगति साह तव उडिही ॥ छं० ७ ॥
 खुरासान, रुम, हबश और बलख आदि देशों में मुलतान का
 सहायता के लिये पत्र भंजना ।

दूहा देस देस कग्द फटे । पेसंगी पुरसान ॥

रोम हबस अरु बलक में । फट्टे पहु अप्पान ॥ छं० ४ ॥
 पांच लाख सेना लिए मुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना
 और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना ।

कवित्त - सिलह लोह सज्जंत । लष्प पचह मिलि पप्पर ॥
 कूच कूच षरि घंर । गुरज धारी लष गप्पर ॥
 कोस दहं दह कूच । आइ गिरवान मनत्तौ ॥
 दौरि त्त दिल्लेम । जाम कर त्रय दिन वित्तौ ॥
 मुक्काम कियो प्रथिराज नृप । तहा षवरि कहि दूत सब ॥
 गोरी नरिद है गै सुभर । सजि आयौ उप्पर सु अप ॥ छं० ९ ॥
 चंद्र शुषल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने कूच
 किया और वह घघर नदी पहुंचा ।

चैत मास रवि तीज । सेत पण्यह कल चदह ॥
 भयो सुदिन मध्यान । चढयो प्रथिराज नरिदह ॥
 कटक सबर हिल्लोर । भार सेसह करि भ गेगय ॥
 चढ़ि सामंत सकज्ज । नह सुर अंमर जगियय ॥

१. मो० को० क० पुच्छिय ।

२. ए० क० को०-जु ।

३. मो०-ठंडिहीं ।

४. मो०-अमर सु जगियय

गज रोर सोर बंधे घटा । सिलह बीज सिलकावलिय ॥

१पपीह चीह सहनाइ सुर । नदि घघर मेलान दिय ॥ छं० १० ॥

शाहाबुद्दीन की सेना के कूब का वर्णन ।

हुहा —आयो आतुर उपरह । पैसंगी पतिसाह ॥

२पच्छाई बादल प्रबल । भग्गे राह विराह ॥ छं० ११ ॥

बरन बरन तहां देषिये । बंटा रव गजराज ॥

सन्नाहा सन्नाह रजि । पष्वर सष्वर साज ॥ छं० १२ ॥

भई हलोहल सेन सब । पान व्यूह बर षेत ॥

लष्व एक भर अंग मै । छत्र धन्यो सिर जैत ॥ छं० १३ ॥

हुअ टामंक सु दिसि बिदिसि । हुअ संनाह सनाह ॥

हुअ हलोहल सुम्भरन । दोऊ दिन इक राह ॥ छं० १४ ॥

सेना का वर्णन ।

चोटक —हुअ सह सु सह नह भरं । घन घेरिक कीय सु फौज बरं ॥

लष लष्व मिले दल संमिलयं । नर भद्व बाहल संमिलयं ॥ छं० १५ ॥

सु अगे हथनारि अपार सजं । तिन देषत काइर दूरि भजं ॥

तिन पिठु हजार उमत्त चन्ने । छह रित्त करंत करी तिहले ॥ छं० १६ ॥

तिन त्रिठुह फौज गहब्बरयं । धरि गोरिय मुठु करं धरियं ॥

कमनेत अभूल सु लष्व लियं । तिन मध्य ततारह छत्र दियं ॥ छं० १७ ॥

लष दोय गुरज्ज स गण्वरियं । पुरसान दियं दल पष्वरियं ॥

बलकी उमराव सु सत्त सयं । निमुरतह लष्व हुकम्म भयं ॥ छं० १८ ॥

पुरसान तनं दल उपटयं । मनुं साइर सत्त उलट्ट भयं ॥

५जल वानिय पानिय अद्ध मरं । लोहानिय पानिय षेत षरं ॥ छं० १९ ॥

हुबभी उजवक हमीर भरं । कलवानिय रुम्मिय अग्न धरं ॥

सरबानि ऐराकि मुगल्ल कनी । बहु जाति अनेक अनेक भती ॥ छं० २० ॥

मुसलमान सेना का व्यूहबद्ध होकर नदी पार करना ।

कवित्त —फौज बंधि सुरतान मुष्व अगे तत्तारिय ॥

मधि नायक सुरतान । नील पुरसान सु भारिय ॥

मोती निमुरति षान । लाल हुबसी कोलंजर ॥

पाबि पीठि रुस्तम । पना बहु भांति अवर नर ॥

उत्तरिय नह गोरीस पहुं । बज्जा दस दिसि बज्जिया ॥

मानों कि भद उलटी मही । साइर अंबु गरज्जिया ॥ छं० २१ ॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना सज्जत कर चामंडराव को आगे किया ।
पूहा - दिल्लीपति फौजह रची । दियो जैत सिर छत्र ॥

चामंड रा अग्य भयो । मनो सु गिरवर गत ॥ छं० २२ ॥

पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़व्यूहाकार रचना की ।

कवित्त - फौज रची सामंत । गरुड़व्यूहं रचि गड्ढिय ॥

पंथ भाग प्रथिराज । चंच चावंड सु गड्ढिय ॥

गाबरि अत्ताताइ । पांइ गोइंद सु ठढ्ढिय ॥

पुच्छ कन्ह चौहान । पेट पम्मारह पढ्ढिय ॥

मुंडाल काल अगो घरे । ^१कढे बोइ कलहन्न किय ॥

चालंत बान गोरै प्रबल । मानहु अधकि मार दिय ॥ छं० २३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना । एक हजार मीरों का कमास
को घेरना ।

तत्तारह उप्परह । चित्त चावंड चलायो ॥

दुह फौज अगंज । दुहं भुज भार भलायो ॥

मीर बान बरषंत । धार धारा हर लग्यो ॥

बाही चामंडराइ । भूमि तत्तारह भग्यो ॥

उत्तरे मीर सं पच दुइ । दाहिम्मै किन्नो दहन ॥

पहिलै जु सुइस दिन पहिल कै । मच्यो जुद्ध जानें महन ॥ छं० २४ ॥

तत्तार खा का घायल होना । मीरों की बीरता ।

भूमि पच्यो तत्तार । मारि कमनेत प्रहारै ॥

एक घाव दोइ टक । परे धारन मुहु धारै ॥

पुर बज्जै पुरतार । चमकि चामंड चलायो ॥

भरै बथ्य सिर हथ्य । एक बहु लष्वन धायो ॥

जब परे बूंद तब बीर हुआ । सत्त घरी साहस घरै ॥

तिनमा ^३कटक त्रिबिधी घड़ा । एक एक पग अनुसरै ॥ छं० २५ ॥

कमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना ।

षान षान आर्षुंद । अठु सहस बहु गष्वर ॥

परिय पंति अबनेस । पारि बहु ^४अष्वर गष्वर ॥

^५हयो नेज चामंड । बीर दो सहस लरै भर ॥

हस्ति एक बिन दंत । तमह तिन मथो सहस कर ॥

१. ए०-कढे दोई कल किय ।

२. ए०-पुर ।

३. ए०-कमंड ।

४. मो०-परिकर, कु०-गष्वर ।

५. कु०-पयो, ए०-मथी ।

दाहिम्म रात्र मुरछयो पन्थो । दोन्थो जैत महाबलिय ॥
मानों कि अग जज्जर बही।कलि मङ्गले रिन बट कलिया॥छं०२६॥
चावंडराव ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुलतान की सेना
में कहर मच गया ।

घपी 'सेन सुरतान । मुठ्ठि छट्टी चावदिसि ॥
मनु कपाट उघन्थो । कूह फुट्टिय दि'स बिदिसि ॥
मार मार मुख किन्न । लिन्न चावंड उपारे ।
पर सेन सुरतान । जाम इक्कह परि धारे ॥
गल बथ्य घत गाढो ग्रह्यो । जानि सनेही भिटयो ॥
चामंडराइ करि वर कहर । गोरी दल बल कुट्टयो ॥ छं० २७ ॥
जैतराव के युद्ध का वर्णन ।

जैत राइ जडधार । लियो कर दंत मुष्प कर ॥
परे बज्ज सिर धार । मनो मेना सिर उष्पर ॥
धुरसानी बंगाल । मनहु 'डंडूर रमावे ॥
भरै पत्र जोगिनी । डक्क नारद् बजावे ॥
अपछरा गीत गावत इला । तुंबर तंत बजावहीं ॥
मुरतान सेन दिल्लेस वर । 'मग मग जम गावहीं ॥ छं० २४ ॥
युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव

घोर खुरासान खां का तुमुल युद्ध हुआ ।
सिर धूनत पतिमाह । घाह सुनि सेना सथिय ॥
लुथ्य लुथ्य मुह धार । परे बथ्यन सो बथिय ॥
जम सों जम आदुरे । मूर जुट्टे दोड घुट्टे ॥
नई गंठि तन जोग । मूर मुंडावलि घुट्टे ॥
धुरसान जैत अब्बुवनिय । धार धार मुह कट्टिया ॥
ऐसो न जुद्ध दिष्पो सुन्थो । दाहन मेछ दबट्टिया ॥ छं० २९ ॥
मनु द्वादस सूरज्ज । हथ्य चंद्रमा महा सर ॥
जिन उपपर षलमल्लै । ताहि धर गोरिय सुम्भर ॥
कटक कूह किलकार । सार परमार बजायो ॥
भिरि भंज्यो सुरतान । एक एकह मुख घायो ॥
सिर सार धार बुढयो प्रहर । तब दोन्थो पज्जून भर ॥
निमुरत्ति षान लष्बह बली । लष्ब एक पाइल सुभर ॥ छं० ३० ॥

१. मो०—मुठ्ठि ।

२. मो०—मुठ्ठि ।

३. ए०—उपारे ।

४. ए० क० को०—छुट्टयो ।

५. ए०—क०—को०—दंडूर ।

६. ए०—बाग ।

घोर युद्ध हुआ । निसुरत खां मारा गया । दोपहर के
समय पृथ्वीराज की विजय हुई ।

भुजंगी—

मचे १ कूह कूहं, बहै सार २ सारं । चमक्के चमक्के, करारं मु धारं ॥
भभवकें भभवकें, बहै रत्त धारं । सनक्के सनक्के, बहै वान भारं ॥ छं० ३१ ॥
हवक्के हवक्के, बहै सेल भेलं । हलक्के हलक्के मची डेल ठेलं ॥
कुके कूक फूटी, सुरत्तान ठानं । बकी जोग माया सुर अप्पथानं ॥ छं० ३२ ॥
बहै चट्ट पट्ट, उघट्ट उलट्टं । कुलट्टा धरै अप्प, अप्प उहट्टं ॥
दडक्कं बजै सध्य, मध्य सुट्टं । कडक्क वजै सेन, सेना मुघट्ट ॥ छं० ३३ ॥
बहै हध्य परमार, सिरदार सार । परि सेन गोगी, बहै रत्त धारं ॥
पन्थीषान निरसुरत्ति सेना महित्तं हुआ सूर मध्यान, दिन्नेम जित्त ॥
॥ छं० ३४ ॥

एक लाख कालंजरी का घावा, कान्ह चौहान के घाँस की
पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना ।

कवित कालंजर इक लष । मार सिधुरह गुडावे ।
मार भार मुष चत्रे । सिघ मिघा मुष धावे ॥
दौरि कन्ह नरनाह । पटी कुट्टी अप्पिन पर ॥
हध्य आइ किरवान । हंड माला किन्निय हर ॥
बिहु बाह लष लोहै परिय । जानि करिव्वर दाह किय ॥
उच्छारि पारि धरि उपरें । कलहकियो कि उधानकिय ॥ छं० ३५ ॥

भुजंगी—

छूटी अषि पट्टी, मनो उगिग मूरं । गिरे काइर मूर बद्धे सनर ॥
लियं हध्य करिवार, भंजै कपारं । पिये जोगनी पत्र, कीये डकारं ॥ छं० ३६ ॥
बहै अच्छरी हध्य, अन्नेक सध्यं । करं सूर मम्हालिये घल्लि बध्यं ॥
करे कज्ज माई, समप्ये सुघट्टं । लिय कन्ह गोरी, तन मारि थट्टं ॥ छं० ३७ ॥
कालञ्जर के टूटते ही मुलतान की सेना का भागना । कन्ह
चौहान का कमान डाल कर मुलतान को पकड़ लेना ।

कवित कालंजर जब परिय । भगिय सेना पातसाहिय ॥
पंच फौज एकट्ट । कन्ह करवारि सम्हारिय ॥

१. ए०-कू०-को०-कूक कूक ।

२. ए०-कू०-को०-घोरं ।

३. मो०-ध रं ।

४. ए०-धरा ।

५. मो०-धारं ।

६. ए०-अपनि ।

७. ए०-कू०-को०-करिवार ।

८. कू०-मम्हाहिय ।

घर पारे बहु मीर । सथ्य जब सेना भगिगय ॥
 गर घती कंमान । लियो गोरीय उछंगिय ॥
 उत्तरे मीर पच्छे फिरे । हाय हाय मुष हुंकन्यो ॥
 पज्जून झेलि मुष मीर कौ । कन्ह लेइ गोरी बन्यो ॥ छं० ३८ ॥
 पज्जूनराव का मीरों को काट काट कर डेर कर बेना ।
 कन्ह का सुलतान को पकड़ कर अपने घर ले आना ।
 जनु उद्यान हलाइ । पवन चल्लै ज्यों बांधै ॥
 त्यों पज्जून नरिद । जमददुई सांधै ॥
 परे मीर सै सत्त । बिए रन छंडिव भज्जे ॥
 चामर छत्र रषत्त । तषत लुट्टे ज्यों सज्जे ॥
 कन्ह नरिद पतिसाह लै । गयो थान अप्पन बलिय ॥
 पंमार सिघ लग्यो सु पय । चाब भाव कीरति चलिय ॥ छं० ३९ ॥
 कन्ह का सुलतान को अजमेर सेजाना और उसे
 वहां किले में रखना ।
 रहै कन्ह अजमेर । *गयो चहुआन जैत लिय ॥
 धरि अगोरी नरिद । दौरि प्रथिराज मुद्ध दिय ॥
 गयो अप्प अजमेर । †लिय पतिसाह नरिदह ॥
 दिन किज्जै महिमान । पास ठढढा रहै वृंदह ॥
 बैठारि तषत सिर छत्र दिय । सभा बिराजे सु पट्टुंभर ॥
 सिर फेरि षेर दिज्जै दुनी । यों रष्वे पतिसाह दर ॥ छं० ४० ॥
 पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और
 लूट के माल की संख्या ।
 एक लष्व बाजित्र । सहस तीनह मय मत्तह ॥
 लष्व एक तोषार । तेज ऐराकी तत्तह ।
 आराबा हस्थिनी । सत्त सै सत्त सु भारिय ॥
 चामर छत्र रषत्त । साहि लिन्निय घर सारिय ॥
 सामंत सूर बहुविधि भरिग । पट्टे घाव सु बंधिये ॥
 रन जंत सोधि संभर घनी । बज्जै अनत सु बज्जिये ॥ छं० ४१ ॥
 पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अरबकी
 बार शहाबुद्दीन को प्राण बंड बिया जाय ।
 †रची सभा प्रथिराज । सूर सामंत बुलाए ॥
 गौर्यद निदुदुर सलष । कन्ह पतिसाह पठाए ॥

१. ए०-को०-हरी

* ए०-क०-को०-लिए पतिसाह नरिद हिय ।

† ए०-क०-को०-तहां चहुआन जैत लिह ।

२. ए०-क०-को०-करिब ।

करी दंड सिर छत्र । राम प्रोहित पुंडीरह ॥
रा पञ्जून प्रसंग । राव हाहुलि हंमीरह ॥
इत्तने मत्त मझ्झह मिले । हम मारें छौरै न अब ॥
हैंहै न हास्य अबकें हमें । फिर न आइहै इह सु कब ॥ छं० ४२॥
कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश ले कर
इसे छोड़ दिया जाय ।

दिए देस पंधार । दिए पछिबानं सारं ॥
कासमीर कबिलास । दिए घरटिला पहारं ॥
गज्जन रष्ये देस । बियो समपे प्रथिराजह ॥
ना तर छुट्टे नाहिं । कर हम उपपर काजह ॥
बोलयो कन्ह नरनाह मुनि । अबकें मारें कोइ नह ॥
पंजाब दियो छुट्टे सु अब । यह हमीर दिवजे हमहिं ॥ छं० ४३ ॥
पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना
को साथ दे कर शाह को घर भेज देना ।
तब बुल्यो प्रथिराज । कहै काका त्यों किज्जिय ॥
जेता रंजक होइ । तिता लादा भरि लिज्जिय ॥
जग्य कियो पंडवन । हेम काची उन आन्यो ॥
त्यों लभ्यो पतिसाहि । लष्य लोहा हम मान्यो ॥
करि दंड कन्ह पतिसाह को । लोहानी सथ्ये दियो ॥
असवार सहस मथ्ये चलें । कर सिर कन्ह इतो कियो ॥ छं० ४४ ॥
कन्ह का अजमेर से बाबशाह को दिल्ली लाना । शाह का
कन्ह को एक मणि और राजा को अपनी तलवार
नजर दे कर घर जाना ।

करि जुहार तब कन्ह । गयो अजमेर दुरगह ॥
तज्यो कन्ह पतिसाह । बत्त सब जंपी अप्पह ॥
हैं पुसाल गजनेस । दई इक लाल सहित मनि ॥
कन्ह लेइ पतिसाह । गयो दिली सु ततच्छन ॥
मनुहार करिय सामंत सब । तेग दई दिल्लेस बर ॥
दो अश्व करी दोइ देय करि । साहि चलायो अप्प घरा ॥ छं० ४५ ॥
मुलतान का कुरान बीच में दे कर कसम खाना कि अब
कभी आप से विग्रह न करूंगा ।
करि सलाम गजनेस । करिय नव निह दिल्लेसर ॥
तम रथियो हम प्रीति । बरव मन सत्तह केसर ॥

पेसंगी घर सीम । बीच पौरान कुरानं ॥
 जा तक्कों म अबे । तबे तुम कदियौ प्रानं ॥
 उत्तरों अटक तो मैं अबर । मुसलमान नाही घरों ॥
 तुम हम सु प्रीत चलिहै बहुत । हूंन अबे ऐसी करों ॥छं० ४६ ॥

सुनतान के घटक पार पहुँचने पर उधर से
 तत्तार खां का आकर मिलना ।

पहु चल्यो सुरतान । दियो लोहानी सथ्यं ॥
 इत च्यारि अनुसार । काल छुटघो सें हथ्ये ॥
 गयो बीस म्होलान । अटक उत्तरि इन पारं ॥
 सोवन पथ मेलान । सहस सन्हे असवारं ॥
 निरुरति सुनन दरिया सुतन । आइ कियो सल्लाम तहां ॥
 आजान बाह महिमान किय । चल्यो अप्पगज्जन रहां ॥ छं० ४७ ॥
 रयसल को दूतों का समाचार बेना उसका सेना ले कर

अटक उतर रास्ते में रोकना ।

रयमल हरी नवट्ट । सहस अठारह सथ्यें ।
 हेो करि पतसाह । पुले लगा इन पथ्यें ॥
 इत च्यार अनुसार । कटक देष्यो असवारह ॥
 कह्यो चरन सब सथ्य । सहस दोइ सेना मारह ॥
 तिन बार बज्जि ब्रंबाल बहु । सिलह सज्जि सिरदार सह ॥
 उत्तन्यो कटक छोरिय अटक । नदि हुओ उगंत पहु ॥ छं० ४८ ॥

गाथा — बज्जै गुडि ब्रंबालं । हथिय नेत्रं मु उपारं फहरं ॥

जानि सपुद् उहालं । किय गजनेस मीरं ॥ छं ४९ ॥

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप
 रयसल का मुकाबला करना ।

कवित्त — कह्यो साह लोहान । कौन बज्जा बज्जा । ॥

दोरि इत तिन बेर । घनी पछिवानह घाए ॥

कूच कूच पर कूच । कौन पछिवान घनी कहि ॥

सब जान्यो रयसल्ल । सेन आजान बन्यो सह ॥

पतिसाह चलो हीं पछि रहों । सहस डेढ़ असवार दिय ॥

बंधेय फौज लोहान बर । पुहुं फौज टायंक किय ॥ छं० ५० ॥

सबेरा होते ही रयसल्ल आ पहुँचा, लोहाना से युद्ध होने लगा ।

अहन किरन परसंत । आइ पहुँच्यो रयसल्लं ॥

बरजे बान बिहंग । जानि बुद्धा दोइ मल्लं ॥

संमाही आजान । तेग मानहु हबि दिट्टिय ॥
जामि सिषर मझि बीज । कंध रमल्लह बुट्टिय ॥
लोहान तनी बज्जै लहरि । कोउ हल्लै कोउ उत्तरै ॥
परनाल रुधिर चल्लै प्रबल । एक घाव एकहु मरै ॥ छं० ५१ ॥

दूहा मुह मुह चमकै दामिनी । लोह बज्यौ लोहान ॥
इक उप्पर इक इक तर । लुध्थे लुध्थ समान ॥ छं० ५२ ॥
रयसल्ल का मारा जाना, सुलतान का निर्भय गज्जमी पहुँचना ।
पयौ लुध्थ रयसल्ल तहं । दुंढि पेत लोहान ॥
सुबर साह गोरी निभय । गयो सु गज्जन थान ॥ छं० ५३ ॥
तातार खां खुरासान खां आदि मुसाहबों का सेना सहित
सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछाबर करना ।

कवित्त तत्तारिय घुरसान । सुतन गोरी पय लग्गा ॥
न्योछाबर करि षेर । बहुत मनसा भय भग्गा ॥
लष्ष एक अमवार । मिल्यौ गोरी दल पप्पर ॥
लष्ष भये दरवेस । आइ पइ लगे गष्पर ॥
उछछाह भयो गज्जन इला । गयो मझि गोरी घनिय ॥
दरबार भीर भीरघ्न घन । मिलत आइ अग अप्पनिय ॥ छं० ५४ ॥

दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास
घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया ।

डेरा दिय लोहान । करिय मनुहारि रोज दस ॥
करिय सत्त आजान । तुरिय पचास अप्प बस ॥
इह दिन्नी लोहान । बियो भेज्यौ नूप राजं ॥
लाठे दाइ हजार । सत्त मै तोला साजं ॥
इक इकक तुरी हूथी सु इकक । सामंतन दीनो सबै ॥
मुह करिय कित्ति अन्नेक बिधि । सुबर सूर फेरिय जबै ॥ छं० ५५ ॥

लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला । पृथ्वीराज ने एक
एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया
और सब सोना चित्तौर भेज दी ।

सीष दई लोहान चलयौ दिल्लीय पंथानं ॥
संग सहस असवार । अप्प रिघ्न वासव यानं ॥
दिल्लीपति सामंत । कली छत्तीसह दण्बै ॥
मिल्यौ बाह आजान । बसत सुरतान सु अप्पै ॥

इक इक्क तुरिय हृथी सु इक । सामंतन पठए घरें ॥
सोत्रन्न रासि रंजक षहर । मुक्कलिये चित्रंगपुरे ॥ छं० ५६ ॥

चन्द कवि ने चित्तोर में आकर सब सेना आदि रावल की भेंट
की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया ।

गढ़ चीतोड़ ^१दुरंग । भट्ट पठयो परिमानं ॥
लादे सित्त सुरंग । सित्त ले ^२तुला प्रमानं ॥
दोइ हृथी मय मत्त । सत्त हैबर कुल राकिय ॥
छत्र लियो पतिसाह । जड़ित मनि मानिक साकिय ॥
ले चंद चलयो चित्तोर गढ़ । जाइ समप्पो रावरह ॥
बहु दान दियो रावर समर । चलयो भट्ट अप्पन घरह ॥ छं० ५७ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके घघर नदी की
लड़ाई कन्ह पतिसाहग्रहनं नाम श्रोगनतीसमो
प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २६ ॥



१. ए० कु० को०—चित्रकोट ।

२. ए० कु० को०—दुरगा ।

३. ए० कु० को०—लोक, लोका ।

अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते (तीसवां समय)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जंचंद से जाकर कहना ।

दूहा - दूत चरित दिल्ली तनौ । देषि गयो 'कनबज्ज ॥

चढत पंग सम्हौ मिल्यौ । सुबर बीर कमघज्ज ॥ छं० १ ॥

करि षलषट मुरतान सौं । दल भग्गे सु विहान ॥

अब करनाटी देस पर । चढ़ि चलयौ चहुआन ॥ छं० २ ॥

यद्व की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना ।

करनाटक बेश के राजा का कर्नाटकी नामक बेश्या का

पृथ्वीराज को नजर करके संधि करना ।

कवित्त - चढ्यौ सुबर चहुआन । बीर क्रम्राट देस पर ॥

मिलि जद्व बर सेन । तारि कढ्यौ सु तुग नर ॥

दष्विन दछिन नरिद । सबे प्रथिराज सु गाही ॥

तिन राजन इक पात्र । पठय नाइक घर थाही ॥

बर बीर जुद्ध कमघज्ज करि । भीर भगी बर बीर अचि ॥

तिहि दिनां बीर पज्जून पर । षग मार बोहिथ्य मचि ॥ छं० ३ ॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना ।

दूहा लै आयौ नाइक सथ । करनाटी प्रथिराज ॥

जत्र तत्र एकठ भये । 'सबै साज संमाज ॥ छं० ४ ॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में

आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत विद्वान

केलहन नायक को सौंप देना ।

कवित्त - संवत इकतालीस । दिवस प्रथिराज राज भर ॥

अति सामंत उभार । आइ अति धम्म ठिल्लि घर ॥

दिय थानक नाइकक । नाम केलहन गुन देयं ॥

अति संगीत सु बिद्य । कला सजुत्त सुनेयं ॥

१. ए०-कसबज्ज ।

२. ए० क० को०-प्रणि ।

३. ए० क० को०-मार्व ।

४. मो०-सब कमघज्जहि सात्र ।

ता सध्य त्रीय रतिरुव तन । बर चवद् चातुर सकल ॥
दुब तीस सु लच्छित मति विमल । अति मति अगनित बिद्याबल ॥
॥ छं० ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंसा सुनकर पृथ्वीराज का उस के
लिये कामातुर होना ।

बाधा—संभलि बत्त सुयं प्रथिराजं । अति अंगनि विद्याबल साजं ॥
कला सपूरन पूरन चंदं । पूरन हाटक बरन बिबंदं ॥ छं० ६ ॥
बानी जेम बीन कल सारं । स्वर जनु पंचम मध्म गुंजारं ॥
नष सिष रूप रूपगति उत्तं । सुभ सामंत प्रसंस प्रभुत्तं ॥ छं० ७ ॥
दरसन ताहि अवर नन दिष्वै । बासन महल मंझ तन दिष्वै ॥
सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि । जग्यौ काम नूपनि उर अंदरि ॥ छं० ८ ॥
अनि सनमान सु नाइक दीनौ । बहुर प्रसंसन साधरु कीनौ ॥ छं० ९ ॥

पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन ।

बुहा—संज्ञ समय अंदर महल । किय सुराज ग्रह घाम ॥
अप्य बयट्टी राज तहें । अनत सजगित काम ॥ छं० १० ॥

पृथ्वीराज के सभामंडप की प्रशंसा वर्णन ।

नराज—जयं सु अत्ति जगियं । सु घाम तेज तगियं ॥
सजे सुभाल आसनं । अमोल रोहि बासनं ॥ छं० ११ ॥
सु दीप साम सोभयं । सुगंघ्र गघ ओभयं ॥
कपूर पूर जंभरं । मृगज्ज बास अंगरं ॥ छं० १२ ॥
सु सज्जि सिष आसनं । समोल रोहि वासनं ॥
कनकक छत्र दंडयं । सु रंग रंग मंडयं ॥ छं० १३ ॥
अबीर जेष कर्दमं । सरोहि ग्रेह सदर्दमं ॥
अभूत साप लोभयं । अबीर मूर ओभयं ॥ छं० १४ ॥
अयास धूम घोमरं । प्रसार वास ओमरं ॥
प्रभून ब्रन्न वन्नयं । स भूषनं स भ्रम्मयं ॥ छं० १५ ॥
घनं सु सार सम्मरं । अभूत वास अम्मरं ॥
धुअं कुसम्म केसरं । सुरं अभूत जे सुरं ॥ छं० १६ ॥
तहां सु राज आसनं । सरोहि सिष सासनं ॥
सुपाय अंग रणियं । कला जु काम लणियं ॥ छं० १७ ॥
प्रवीन भाव पायसं । विचित्र चित्र पासयं ॥
भवति कृति भूषनं । सुबुद्धियं विषनं ॥ छं० १८ ॥

प्रमून १विद्धि बासनं । अभूत १सिद्धि आसनं ॥
 बरष्ण षोडशं समं । अदोस रूपयं १रमं ॥ छं० १९ ॥
 कला विग्यान विद्धयं । सु पास भूप सिद्धयं ॥
 सिगार सार सारयं । अभूषनं स धारयं ॥ छं० २० ॥
 ग्रहे विद्म चामरं । सु विद्म राज सामरं ॥
 धरंत कम्बि पन्नयं । सु कंठ धान सन्नयं ॥ छं० २१ ॥
 सु घन्नसार पानयं । सु सगंध विद्ध मानयं ॥
 करे सु १द्रप्पकं करं । सु सष्वि १अद्धि संमरं ॥ छं० २२ ॥
 शृंगार ग्रहे सोमयं । अभूत दुति ओमयं ॥
 समोभ धामयं सज । सुबास वासवं लजं ॥ छं० २३ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम ।

कवित —रञ्चि धाम अभिराम । राज हरि धान वयट्टी ॥
 दिपत १दीह सुम लीह । तेज उम्भर तप जिट्टी ॥
 बोलि १चंद चंडीस । बोलि जद्दव रा जामं ॥
 निद्दुर बोलि कमघज्ज । अत्ति जामनि बल सामं ॥
 बलिभद्र बोलि कूरंभ भर । लोहानी आजानभुअ ॥
 बैठक्क बैठि आसन्न सजि । ताप सतप्प तेज धुअ ॥ छं० २४ ॥
 कल्हन नट का करनाटी सहित सभा में घाना श्रीर पृथ्वीराज
 का उससे करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना :
 बोल ताम नाइक्क । सध्य मध्यह सब साजं ॥
 बोलि पात्र कर्नाटि । बैठि गानं बर वाज ॥
 नाटक भेद निबंध बस्सि राजन बर बत्तं ॥
 कवन कलाकृत पात्र । कही नाइक्क निज मन ॥
 नाइक्क कहै प्रथिराज सुनि । एह पात्र देय्यो मु पय ॥
 इह रूा रंग जोवन सु वय । कला मनोहर विति मय ॥ छं० २५ ॥

कविचंद्र का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिस में निद्दुर राय प्रसन्न हों ।

पदरी —उक्क-यो ताम कविचंद्र बानि । नायक्क अहोमति मरम जानि ॥
 मो धरी कला विचवार साज । निद्दुरह वयट्टी पास राज ॥ छं० २६ ॥

-
१. मो०—विद्ध । २. मो०—मद्धि । ३. को० ए०—समं ।
 ४. छं०—दर्, ए०—द्वय । ५. मो० अठ्ठ ।
 ६. मो०—वेह । ७. छं०—चंद पुंठिर ।

नाटकक विविध बुझौ बिनान । विञ्चार चार सुर तान गान ॥

माइक का पूछना कि राजा के पास बंठे हुए सुभट ये कौन हैं ।
नाइक जंपि हो चंद भट्ट । नूप पास बयट्टी को सुभट्ट ॥ छं० २७ ॥

कविचंद का निद्दुरराय का इतिहास कहना ।

उच्चन्यो चंद नायक सरीस । कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥

ता अनुज बंध बरसिध देव । ता सुअन कमध निद्दुरह एव ॥ छं० २८ ॥

नायकक कहैं हय बत्त सच्च । आवन्न केम हुआ दिली तच्च ॥

बरदाइ कहै नायकक चित । आवन्न कित्तुकरन्नमित्त ॥ छं० २९ ॥

जै सिध कियो तहां उद्ध काज । अति तेज अप्प जैचंद राज ॥

लघु बेस उभय बंधव सरूप । श्रुत धान उभय वेलंत भूप ॥ छं० ३० ॥

आइयो महल निद्दुर समेक । कहि कुमर राज सडौ सु एक ॥

उच्चन्यो ताम निद्दुरह देव । कर कमर हंम मिच्छंत सेव ॥ छं० ३१ ॥

जयचंद समुष निरषेत ताम । कल 'कलिय लग्न चामट्ट घाम ॥

करि सभा सु निद्दुर आइ गेह । सुष घाम काम बिलसंत देह ॥ छं० ३२ ॥

निद्दुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग
के बगीचे में गोठ रचना ।

कवित्त — समय एक निद्दुर । कमध आषेट सपत्ती ॥

बिधि कुरंग दुअ तीन । उभय एकल निज घत्ती ॥

आइ बग सारंग । सुवन सौवंत प्रधानह ॥

करिय गोठि उच्चार । सध्य संभरे सवानह ॥

ता अग्न गोठि सारंग सजि । धन पकवान असान रस ॥

ग्रिह गये वाग आगम सकल । लह्यौ निद्दुर भेव तस ॥ छं० ३३ ॥

यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर

निद्दुर के रंग में भंग करना ।

मुरिल्ल — निद्दुर ताम 'गोठिलिय अप्पं । तर सेवक सारंग सु दप्पं ॥

धन पकवान सरस गति सारं । रच्चे मंस बिबहु विमवारं ॥ छं० ३४ ॥

करि क्रीडा सो गोठि अहारे । 'त्रपती सध्य सबै बिधि भारे ॥

सुमनह द्राव सुमन सब सौहै । कासमीर चंदन मुर रोहै ॥ छं० ३५ ॥

आहारे तंमोल 'सुगंधं । मादक आइ अगि जहाँ जगं ॥

सुनी श्रवन सारंग सुवत्तं । आयी आतुर 'बग्ग मुरत्तं ॥ छं० ३६ ॥

१. ए० छं० को०—मलिय ।

२. ए०—गोणिय ।

३. मो०—नूप ती ।

४. को०—सुरंग ।

५. मो०—बेवि ।

कठिन वाच निदुहुर सम वाचे । तरस्यो निदुहुर तामेत राचे ॥
गयो अग्र जैचंद सु रावं । लुट्टी बस्त गोठि मनि सावं ॥ छं० ३७ ॥

निदुहुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और
जैचंद का सारंग का पक्ष करना ।

संभलि वचन कुप्यी रा पंग । कलमलि कोप रोम सब अंगं ॥

निसा महल निदुहुर सैपत्ती । फेरे सुष जैचंद बिरत्ती ॥ छं० ३८ ॥

न संग्रह्यो रस बसि सिर नायो । निदुहुर ताम अप्प ग्रह आयो ॥

सजि सु सध्य जुगनिपुर आयो । अति आदर करि पिथ्य बघायो ॥ छं० ३९ ॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही

नाट्य कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो ।

दूहा—सुनि नाइक हरष्यो सुमन । घनि घनि बेंन उचार ॥

लहै सुविद्या अर्थ गुन । जै जै अर्थ उचार ॥ छं० ४० ॥

गाथा—राजभीलि गति रवं । गुन संपूर त्रीस एकंगं ॥

बे रंजे रज छ्यानं । सुनि कविराज सद्ध संपूरं ॥ छं० ४१ ॥

राजाओं के स्वाभाविक गुणों का वर्णन ।

साटक—विद्या विनय विवेक ^३वानि विमलं वर्णो कुवेरप्रभा ॥

^३सुबिचारो सु विचक्षणे ह सुमनं सौजन्य सौदर्यता ॥

^४भाग्यं रूपं अनूपयं रस रसं संजोग विभोगयं ॥

मांगल्यं संपूर सौम्य कलसं जानंत केली कला ॥ छं० ४२ ॥

मृदु तत्वं मृदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं ॥

^५उदायं उहार दाव उछहं एते गुना राजयं ॥

सोयं जान विचार चारु चतुरं विव्वेक विच्चारयं ॥

सोयं ^६नीति सनीत किति अनुलं प्राप्तं जयं ^७जोरयं । छं० ४३ ॥

दूहा—फुनि नाइक जंपै सु नमि । अहो चंद बरदाइ ॥

राग विनोदह त्रीसषट । कह्यो सुनौ विधिसाय ॥ छं० ४४ ॥

१. ए०—कनिक ।

२. ए०—क० को० को०—मार मलयं, विव्वेक विच्चारयं ।

३. ए० क० को०—विचचारं मसु तप्य सोप सुमनं सौजन्य सौभाग्यं ।

४. ए० क० को०—भाग्यं । ५. ए०—उदायं ।

६. को०—नीति ।

७. ए०—को०—चोवरं ।

★दंडमाली—दरसन नाद बिनोदयं । सुरबंध नृत्य समोदयं ॥
गीताद्य अधि नव वादयं । अभिलाष अर्थ पदादयं ॥ छं० ४५ ॥
'बक्रात जग्यपवीतयं । प्रासन्न प्रभुत प्रनीतयं ॥
पंडीत पालक तल्पयं । ते पदय तर्क विजल्पयं ॥ छं० ४६ ॥
प्रमान सरन प्रमोदयं । प्रातापयं च प्रमोदयं ॥
प्रारंभ परिछद संग्रहं । निग्राह पुष्टित तुष्टिहं ॥ छं० ४७ ॥
प्रासंस प्रीति स प्रापयं । प्रातिग्र यासु प्रतिष्टयं ॥
धीरज धीर जुधं वरं । सो रज्जएव सतं नरं ॥ छं० ४८ ॥
राजा का करनाटी को छाने की छात्रा देना ।

दूहा— सुनि नायक राजन्न मति । जंपहि दिली नरेस ॥
पात्र प्रगट गुन सकल विधि । विद्या भाव विसेस ॥ छं० ४९ ॥
कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना ।
प्रथम गान सुरतान गुन । वादी नेक विनान ॥
पाछें नृत्य प्रचार भर । प्रगट करहु परिमान ॥ छं० ५० ॥
नाटक का क्रम वर्णन ।

भुजंगी—
तबै बोलियं अप्प नाइकअगं । मुखं पात्र आरोह उच्चार जगं ॥
घरै आप बीना सुरसाज सारे । सुरं पंच घोरं घरे धान भारे ॥ छं० ५१ ॥
धुनि रूप रागं सुहानं उपाए । रचे च्यार राहं सुभा सुम्भ भाए ॥
गियं गान अप्पं सुरं तंति मानं । रचे मंडली राय आयास धानं ॥ छं० ५२ ॥
मनं सबं मोहे अति राग रूपं । तनं लग्गए तार आरंग भूपं ॥
तनं वेद रोमंच उच्छाह अंगं । बयं विस्मयं बेपथं मोद रंगं ॥ छं० ५३ ॥
दया दीन बित्तं अभिलाष जगं । गुनं रूप रागं जितें चित्त लगं ॥
नषं सिष्य जग्यो तनं मीनकेतं । चढी मत्त बेली चित्तं पत्र हेतं ॥ छं० ५४ ॥
कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न होकर राजा का नाइक से मूल्य
पूछना और नायक का कहना कि आप से क्या मोल कहूं ।
तबै बोलि नाइक राजन्न तामं । कहा मोल पात्रं कहो द्रव्य नामं ॥
कहै नाम नाइक पात्रं सरीसं । कहा मोल पात्रं नृपं जोग जीसं ॥ छं० ५५ ॥

★ ए० छं० को०—मैं यह छंद गीता मालवी नाम में लिखा है ।

१. छं० ए०—वक्यत, वकमत ।

पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर वेदया को
महलों में रखना ।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं । ग्रिहं रषियं अप्प पात्रं सुभासं ॥
बिसज्जे मिहल्लं करे अप्प उट्टे । कला काम क्रत्यं निसा पात्र तुट्टे ॥छं० ५६॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन
संकड़ों वासियों का उसके पहरे पर रहना ।

दूहा - काम कला तुट्टिय नृपति । सु ग्रह पवारी द्वार ॥

तिन अवास दासी सघन । रम निस रह रषवार ॥ छं० ५७ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रामके कर्नाटी
पात्र वर्णनं नाम तीसमो प्रस्ताव
संपूरणम् ॥ ३० ॥



अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय)

प्रातःकाल होते ही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना ।

कवित्त - महल भयो नृप प्रात । आइ सामंत सूर भर ॥
ठट्टा दिसि ^१उच्चारिय । राय चामुंड बीर बर ॥
बंभन वास जु राज । ^२कोइ मुक्कलि इन काजं ॥
चावहिसि अरि नन्ह । सीम कहै न्ह आजं ॥
कैमास बोलि मंत्री तहां । मंत्र लाज जिहि लाज भर ॥
सिर नाइ आइ बैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इंद्र नर ॥ छं० १ ॥

सभा जम जाने पर राज्यकार्य के विषय में बार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का संतुष्ट होना ।

पद्वरी - बैठे सुं राज आरंभ गुह्य । पद्वरी छद बरनेति मझ ॥
बुल्लिय नरिद जं मत्त धीर । सदै सु जुद्ध संग्राम श्रीर ॥ छं० २ ॥
दिसि मत्त मत्त उज्जैन काम । बचाइ राज कग्द सु ताम ॥
सामंत सूर तपि तोन बंधि । आवत्तं रोस चलि सेन संधि ॥ छं० ३ ॥
दिन सुद्ध राज चलियै सु आज । सम बंर बीर बंकान साज ॥
जैचंद सेन दुस्सह प्रमान । पुरसान सैन सुलतान भान ॥ छं० ४ ॥
चालुकक बीर गुज्जर नरेस । क्रित करै जुद्ध करनी विसेस ॥
थल बटिय बीर मझिय हुआव । रणंति सूर तिन मध्य आव ॥ छं० ५ ॥
सब सबर अरी चहुँ दिस नरिद । तिन मध्य वन्द पृथिराज इन्द ॥
सौ बरन बीर उज्जेन ठाम । मझि मंह काल सुमथान ताम ॥ छं० ६ ॥
तिन बरन ठाम देवास तीय । संग्राम राज मंभन सु वीय ॥
बंभ्यो सु राज कग्द प्रमान । धर धनुह धार अर्जुन समान ॥ छं० ७ ॥

१. ए० क० को०-उत्तरिय ।

२. ए० क० को०-कोदक ।

पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है ।

द्विग करन धरन धर धरनि पाल । सामंत सूर तिन मध्य लाल ॥
देवास धीय देवास ब्याह । मंडथी सु राज संभरि उछाह ॥ छं० ८ ॥

जैचंद करहु अप्पर निधान । कलि काल बत्त चल्लै प्रमान ॥
सा पुरस जीवतं विय प्रहार । संभरै एक किती संसार ॥ छं० ९ ॥

जीरन सु जुग इह चलै बत्त । संसार सार गल्हां निरत्त ॥

इह कच्च पिड १ संवी सु बत्त । जैहै सुजोग जोगाधि तत्त ॥ छं० १० ॥

जैहै सु भान सब ग्रह प्रकार । दिष्टिये मान सो बिनसि सार ॥

वापी विरष्य सर मठ प्रमान।मिलिहै सु मर्व अगतिस्न जान॥छं०११॥

छंडो न बीर देवा सु मुष्य । रष्यो सुमंत गल्हां १पुरुष्य ॥ छं० १२ ॥

राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच ने अपनी अस्ति
देवताओं को भी । दुर्योधन ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए ।

कवित्त गल्हां काज सु देव । अस्ति दधीच दीय बर ॥

गल्हां काज मरुष्य । बज्र किन्नी सु इंद्र जुर ॥

गल्हां काज नरिद । बंस दुरजोध मान रपि ॥

गल्हां काज सु घात । मान अवृत्ति भूमि लषि ॥

रष्यहै नरन गल्हां सुबर । गल्हां रष्ये नृपति उष ॥

जयचंद बंध दल बल सकल । सबर १साइ किज्जै सरुप ॥ छं० १३ ॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोगाय करना ।

बूहा - इह १परतग्या नरिद मन । करै बनै प्रथिराज ॥

सकल सूर सामंत ज्यो । मुहि अग्या सिरताज ॥ छं० १४ ॥

सभा में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन ।

त्रोटक -इति सामंत सूर प्रमान धरं । दरबार बिराजत राज भरं ॥

चक्रि चच्चर चंद पुंडीर कियं । सोइ देह धरै फिरि आनंदियं ॥ छं० १५ ॥

नर लज्ज नृपनिध सारै गयं । सभ पुज्जिन सामंत ता बरयं ॥

अतताइय अंग उतंग भरं । सिव सेव किये तन फेरि धरं ॥ छं० १६ ॥

नर निद्धुर एक नरिद समं । कनवज्ज उपज्जिय जास जम ॥

गहिजीत गरिष्ट गोइंद बली । प्रथिराज समान सु देह कली ॥ छं० १७ ॥

१. मो०-सष्पी, ए०-वंची ।

२. ए० कृ० को०-पुरिष्य ।

३. ए० कृ० को०-साइ ।

४. ए० कृ० को०-परंत ग्याम ।

छिति रष्यन छित्ति पजून भरं । तिन पुत्र बली बलिभद्र नरं ॥
 परमार सलष्य अलष्य गती । तिन पुज्ज न सामत सूर रती ॥ छं० १८ ॥
 कयमास सु मंत्रिय राज दरं । अरि अंग उछाहन बीर बरं ॥
 अचलेस उतंग नरिद घरं । रन मझ्झ विराजत पंग भरं ॥ छं० १९ ॥
 चावंड नरिद सु षग बली । नरसिघ सु दंद अरिद कली ॥
 बर लंगरिराइ उतंग षलं । बय देहिय जानि सुबाहु बलं ॥ छं० २० ॥
 इक रंग सु अंग करंत रनं । कर षाइ सु अंषय हृष्य तनं ॥
 लरि लोह लुहानय कित्ति करं । अरि वाइव धूर ज्यों पत्त इरं ॥ छं० २१ ॥
 भजि भौंह चंदेल सु षल षगं । घर धूसन भूमिय जपि जगं ॥
 दिवराज सु बगगरि बंध बियं । जिन कित्तिय जित्ति जगत्त लियं ॥ छं० २२ ॥
 उदि उद्दिग बाह पगार बली । हरि तेज ज्यों रोर फटंत षली ॥
 नरनाह सु कन्ह का कित्ति करौं । भर भीषम भारष सुदि घरौं ॥ छं० २३ ॥
 भय भट्टिय भान जिहान जपै । तिहि नाम सुने अरि अंग कपै ॥
 सुन नाहर नाहर के क्रमयं । तिन कंकन बंक बियं श्रमयं ॥ छं० २४ ॥
 रज राम गुरं षग धम्म बली । जिन कित्ति दिसा दस बदिद षली ॥
 बड़ गुज्जर राम नरिद समं । जिन कंदल रुदि उठंत भ्रमं ॥ छं० २५ ॥
 कविचंद हकारि सु अग लियो । भर भट्टिय भान भयंक बियो ॥
 रघुबंसिय राम सुरग बली । कनकू जिन नाम नरिद कली ॥ छं० २६ ॥
 बर राम नरिद नरिद समं । तिहि कंदल उठि रुधं मु जमं ॥
 जिहि वस्त्र सु सस्त्रय अंग करं । घरि द्वै भर उट्टिज बूद भरं ॥ छं० २७ ॥
 भगवत्ति अराधन न्याय करे । रघुबंसिय किल्ह नरिद बरै ॥
 जिन जित्तिय जाइ पंजाब घरं । ॥ छं० २८ ॥
 जिन पंडिय रावर जुद्ध जित्यो । घर मंडव मुड चका बरत्यो ॥
 पांवार सलष्य सु पुत्र बली । नृप जंत सजंत कि कित्ति कली ॥ छं० २९ ॥
 सु चळै बर भाइ दुभाइ भरं । तिन सीस सु जंगल देस घरं ॥
 धनवंन धनू नृप धावरयं । जित्त तित्त नहीं मन सावरयं ॥ छं० ३० ॥
 परताप प्रथीपति नाम बरं । उपज्यौ कुल पंडव जोति गुरं ॥
 तन सुंअर नेत त्रिनेत बरं । परिहार पहार सु नाम घरं ॥ छं० ३१ ॥

१. ए० कृ० को०-उछाहन ।

३. ए० कृ० को०-घरं ।

५. ए०-मंत्रिय ।

७. मो०-धीवरयं ।

२. ए० कृ० को०-इकरंग सुरंग ।

४. कृ०-ककनि ।

६. मो० सुभाइ ।

८. ए० कृ० को० सुंअर ।

सजयो जय सह पुंडीर बली । जिनके भुज जंगल देस कली ॥
 परसंग सु पीबिय षग बली । चमरालिय कि किति नच्यंद हली ॥ छं० ३२ ॥
 नव किति नरिंद सु अल्हनय । भजि भारत कुंभज किल्हनय ॥
 सारग सुरंगिय किति बली । बर चालुक चार नक्षत्र हली ॥ छं० ३३ ॥
 परि पारथ क्रम कुंवार नृप । तिहि पारथ पूजय जुद्ध जपं ॥
 षग षंडिय छिन्निय छित्त रनं । सब सामंत सूर समोह तनं ॥ छं० ३४ ॥
 हहकारि उभै नृप पास लिए । समतम्मि सु मन्निय मंत्र त्रिए ॥
 जित जोध विरोधत राज करे । तिन मै मुष भारत नाउ सरै ॥ छं० ३५ ॥
 कविचंद सु नामय जाति क्रमी । तिनके गुन चंनि नरिंद भ्रमी ॥
 सिर अंतय भातप छत्र धन्यो । कमकाबलि मंडिय मडि हन्यो ॥ छं० ३६ ॥
 कवि किति प्रमोक्षय राज बली । प्रथिराज विराजत देह बली ॥
 बर मंगल बुद्ध गुरं सु धरं । सुक सक्रय बक्रय बुद्धि तरं ॥ छं० ३७ ॥
 तिन माहि विराजत राज तरं । सु मनो छवि मेरय भान फिरं ॥
 बर सेंगर सूर कल्याण नमं । जिहि भारत को प्रथिराज ममं ॥ छं० ३८ ॥
 जयचंद जेंधारय नाहरयं । नृप राज सु रष्यन साहरय ॥
 मकवान महीपति भीर बली । प्रथिराज सु जानत जोति छली ॥ छं० ३९ ॥
 कठ हेरिय सारंग सूर बली । प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली ।
 जग जंबुअ राव हमीर बरं । छिति पति कंगूरह सूर गुरं ॥ छं० ४० ॥
 नर रूप नराइन राज भरं । भर भारत जुगिगनि पात्र करं ।
 गुरराज सु कन्हय जम्म जिसी । मग वेद चलंतह ब्रह्म इसी ॥ छं० ४१ ॥
 गुर ग्यारह मै सकसैन बरं । प्रथिराज चदंतह बाज धरं ॥
 चलि सेन मिली करि एकठयं । बजि बंब कि अंबर घुम्मरय ॥ छं० ४२ ॥
 धननकत षग फरी धरयं । भजि डंक ज्यो डक्कन भून भय ॥
 गहरात गजिद सुरिंद समं । जनु छुट्टि जलह विहह भ्रम ॥ छं० ४३ ॥
 चलि मल्लन हल्ल ज्यो रोस रसै । जमजूथ मनो दल दद प्रसे ॥
 ह्यनारि सुप्रारि के कंक षगी । धरि सिष्ट सु दिष्ट कि इष्ट लगी ॥ छं० ४४ ॥
 कमनैत बनैत कि नेत धरं । मंडि मुष्टि मही जनु रूप करं ॥
 कहराति सु बैरष वाइ बरं । सु मनो धन फुट्टिय अगि झरं ॥ छं० ४५ ॥
 सब सेन सभा इह वन्न कहै । बरषा रुव संत द्वै छवि लहै ॥ छं० ४६ ॥
 पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना ।
 हिा— जो बुलै सामंत सय । तो चल्लै प्रथिराज ॥
 करि उप्पर जैचंद को । अरि बंधो सिरताज ॥ छं० ४७ ॥

सामंतों का राजाज्ञा मानना ।

कवित्त — जो अग्या सामंत । स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥

ज्यौ मंत्रह गुन ग्यान । घीय मानंत तंत लिय ॥

ज्यों सु धम्म उबरत्त । बीर बहूठी परिमानं ॥

ज्यों गुरु बलहुअ विदुष । तत्त सोई करजानं ॥

साधम्म त्रिया अग्या नृपति । मान मोह जानै न अँग ॥

सामंत सूर प्रथिराज सम । सबल बीर चल्लेत सँग ॥ छं० ४८ ॥

जैचंद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना ।

दूहा - अति आनुर आरंभ बल । गिनी न तिन गति काज ॥

तिन उप्पर जैचंद की । सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छं० ४९ ॥

कमधरज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के बीर सेनापति

सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन ।

त्रोटक — सोइ सज्जिय सूर नरिद बलं । छिति धारन को छिति छत्र कल ॥

मति मंत्र बरष्यय सूर बरं । धर पवंत ज्यों भर कन्ह करं ॥ छं० ५० ॥

आवत्त अहीर करै बलयं सुरध्यौ गिर एक हरी छलयं ॥

सु करै बलत्रीय अबत्त भरं । नृप राज सु कंठिय कंठ गुरं ॥ छं० ५१ ॥

हरसिध महाबल बंधु बियो । बरसिध बली अरि छत्र लियो ॥

बर जद्व जाम जुवान नरं । जिन कंधय ढिल्लिय राज गुरं ॥ छं० ५२ ॥

नर नाहर टांक नरिद नमं । तिहि कंठ अरि धम्म तम ॥

पंचम्म पवार सु पुंज बरं । मद मोष बिछुट्टिय काल भरं ॥ छं० ५३ ॥

परषत्त सु पल्हन अल्हनय । भुज रषिय भारथ ढिल्लनयं ॥

बर तूंअर रावति बान बली । जिन कित्ति कलाधर धम्म छली ॥ छं० ५४ ॥

बर बीर कंठी पुरसान रनं । ह्य त्रीय अहुठुपती सुमनं ॥

कंठीर कलंकृत जैत बली । जिहि ओटत जंगल देस भली ॥ छं० ५५ ॥

नृप रूप नरिदति वाहनयं । पुरसान दलंपिति सा हनयं ॥

असरत्ति सुरत्ति सुरत्त गुरं । पित की पित कंध परै न धरं ॥ छं० ५६ ॥

जनएस गुरेस सबंध बली । जिहि निदुठुर उप्पर पंष पुली ॥

परसंग पवित्र पवित्र छती । पुरसान दलं जिन जुद्ध मती ॥ छं० ५७ ॥

अवनीस उमाह तुरंग तुरं । जिहि बंधन वास उगाहि धरं ॥

बिन गुञ्जर ताप तिरं तिरनं । कयमासय उप्पर कौष घनं ॥ छं० ५८ ॥

१. मो०—उरवत्त ।

२. ए० क० को०—कंधय ।

३. ए० क० को०—पंचमुष्यय बार ।

४. ए० क० को०—नरं ।

५. मो०—हूनी ।

६. मो०—पुरं ।

महनंग महा मुर नैन समं । तिन राज सु रषिय जिति क्रमं ॥
 बरदावलि चंद नरिद पढ़ी । सु मनो कल जोति सरीर बढी ॥ छं० ५९ ॥
 सभ सोहत सित्त रु पंच इकं । जिन जानत 'मोद मयं करिकं ॥
 कवि नामति जित्तिय जानि तिनं । तिनकी विरदावलि जपि फुनं ॥ छं० ६० ॥
 सत में षट राजत राज समं । तिनके जुव नाम कहोति क्रमं ॥ छं० ६१ ॥

उन छः सामंतों के नाम जो सामंतों में सबसे अधिक मान्य थे ।

कवित्त — निद्दुर सूर नरिद । कन्ह चहुआन सपूरं ॥

जिपड़ जैत जैसिष । सलष पावारति सूरं ॥

जामदेव जद्व जुवान । भारध्य पत्ति सिर ॥

बर रघुबंसी राम । द्रग महि कौन तास बर ॥

बर बीर्य रक्त 'पच्छे सुनिय । रुधिर बूंद कदल परहि ॥

मधि मद्धि मुहरत इक्क बर । अरि बर पन रुंधहि भिरहि ॥ छं० ६२ ॥

उक्त छः सामंतों का पराक्रम वर्णन ।

सौ सामंत प्रमान । 'उगि अंकूर बीर रस ॥

सद्धि भली नकपत्त । अंग लग्गे सुभत तस ॥

'राजस तम सातुक्क । साष अगौ अधिकारिय ॥

जध्य कध्य आरुहिय । रत्ति दिल्लीपति धारिय ॥

जंगलू देस जंगल न्रपति । जग लेबै बर सूर षट ॥

पुरसान षान उप्पर चढिय । बर बीर रस वीर पट ॥ छं० ६३ ॥

सामंतों का जैचंबपर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना ।

अनल दंग अरि लगि । उगि अगिवान बीर रस ॥

सामंता सतभाव । पंग उप्पर कीजै कस ॥

पंच घटी सौ कोस । राज अगं दिल्ली तंह ॥

साम दान अरु भेद । दंड निर्नय - साधौ जैह ॥

मन बच क्रम कह कह कल्यौ । अल्प न मुर सद्दय सुघट ॥

दुजराज संधि गुरराज की । सद्धि महरत चट्टिपट ॥ छं० ६४ ॥

प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था ।

श्रेष्ठक प्रति प्रीति प्रत्य प्रतिविधं नृपं । ससि राज इकं प्रति व्यंब पथं ॥

प्रतिव्यंबह मझ्झ इकंत उमै । चहुआनरु सामंत मर सुभै ॥ छं० ६५ ॥

दिस राकय अकैय थान बियो । तम भजित तेज सु राज लियो ॥

सोइ लच्छि ह्यगय मंत बुली । रवि की क्रिनावलि तेज डुली ॥ छं० ६६ ॥

१. १० क० को०—मोह ।

२. ए० क० को०—परै ।

३. ए० क० को०— "रौद्र भयानक रस"

४. मो०— राजत ।

५. मो०—साधै ।

पर पश्वर स्याह तुरंग रनं । सु मनो घन सोभत नैर तनं ॥

सु विचें विच राजत राज रती । सु मनो प्रतिविब किदेव किती ॥ छं० ६७ ॥

पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मंत्र ठहरा ।

झूहा—इत्ते मंतन इक्क मुष । नप सेवक अर इष्ट ॥

एक मंत्र एकह बुले । वियो न जंयं त्रिष्ट ॥ छं० ६८ ॥

चढ़ाई के लिये बैसाष सुदि ५ का सुदिन पक्का करके
सबका अपने अपने घर जाना ।

तिते सूर तिहि रति बर । ग्रेह सपतें बीर ॥

पंचमि बर बैसाष धुर । लैजु वचन ते घीर ॥ छं० ६९ ॥

मरने के लिये मुहूर्त साध कर सब बीरों का आनन्द में मतवाला होना ।

अरिल्ल—अप्प अप्प गय ग्रेहे ससूरं । मरन महरत मरन न पूरं ॥

चढ़े बीर चावदिसि रंगं । मनो 'षलह लिय मेघ असंगं ॥ छं० ७० ॥

प्रातः काल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़कर जुड़ना ।

झूहा - मेघ पंति वहल विषम । बल दंतिय सजि सूर ॥

चढ़ि जिहाज पर दिषियै । धर नहि परै करूर ॥ छं० ७१ ॥

घरनीघर तिय गुननि बर । लिय कारन परिमान ॥

सूर उगे सत नत्र ज्यौ । ज्यौ भद्व बल भान ॥ छं० ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन ।

त्रोटक - सुअं बर बीर मु त्रोटक छंद । छिनी छिति मत्त ह्यगय इंद ॥

रनं क्रिय बीर नफीर रवद् । ठलक्किय ठाल मु द्विलिय भद् ॥ छं० ७३ ॥

घनं केय सकर अंदुन अंद । जग्यौ मनु भारत बीरय कंद ॥

छिनी छितिपूर ह्यगय भारादिसी दिसि दिष्वहि ज्यौ जल धार ॥ छं० ७४ ॥

ठरे दिगपाल सु अठुय मेर । भये भयभीत भयानक भेर ॥

सुने स्तुति छत्रिय सद् निमान । दिसा पुरमान सु बह्दम पान ॥ छं० ७५ ॥

मंडे मय मत्त गहम्महराज । उठे बर अकुर मुच्छ विराज ॥

कहै कबिचंद सु उप्पम ताहि । मनो सुर लगिय चंद कलाहि ॥ छं० ७६ ॥

अपें प्रथिराज समप्पय बाज । तिनें दिषि पंतिय प्रब्वत लाज ॥

दुअं दुअ बंधि रकेबन जोर । चढ़े बर छित्रिय सूर सकोर ॥ छं० ७७ ॥

ह्यदल पंति सुभंतिय ठानि । मनो बगपंति घनी घट बांनि ॥

मयं मय रुद्र सु रुद्र सार । भयो जनु अंत प्रलै दुति वार ॥ छं० ७८ ॥

ढहडुह बजजय डककय मात । उलै तिन बीर गिरब्वर गात ॥
 सु दिष्पन वाम फुरककय नैन । चढघौ जनु बीर परब्वत बैन ॥ छं० ७९ ॥
 इमे दोठ बीर बिराजत रिष । गुफा इक मझ्झ मनो दुअ सिष ॥
 चले ग्रह छंडि ग्रहग्रह सूर । कही कविचंद सु उप्पम पूर ॥ छं० ८० ॥
 कहै कहना रस कंतहि चीर । उठ्यौ तहां जित्त भयानक बीर ॥
 लिषो लिष चित्रय दंपति बैन । मनो पलटै दिन चात्रिग नैन ॥ छं० ८१ ॥
 छिा छिप होम प्रमान प्रमान । किधो चकई सुपमुक्कय मान ॥
 भयो मन बीरन बीर प्रमान । भयो कहना रस तीय प्रमान ॥ छं० ८२ ॥
 दुहुं दिसि चित्त अचित्त अलोल । मनो दुअ पास हलंत हिडोल ॥
 दोऊ मझ रष्यय सूर सनूर । भजै कहना रस काइर पूर ॥ छं० ८३ ॥
 मिले त्रिअ आइ सु ठिल्लिय थान । कहै कविचंद बवान बवान ॥ छं० ८४ ॥
 सामंतों की सर्व से उपमा वर्णन ।

दूहा -स्वामि धम्म सो 'सुद्ध मन । ज्यो 'बांबी दिसि 'सुप्प ॥
 अग बिषांन ज्यो अरिन बर । जगि बीरा रस जप्प ॥ छं० ८५ ॥
 सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त -जगति जग्य जनु बीर । जगि त्रयनेत अगि सिव ॥
 कै मचकुंद प्रमान । गुफा बारुन सु देत्य लिब ॥
 कै 'जग्यो भसमास । देत्य भग्गा गोरीसं ॥
 इसे सूर सामंत । बीर बावदिसि दीस ॥
 दीनी न नृपति किन निरति बर । किहु न सुनी जैचद क्रम ॥
 बगं उपारि घाए बलिय । अभिलाषह भारथ्य श्रम ॥ ८६ ॥

शूर बीर सामंतों का उत्साह वर्णन ।

अभिलाषह श्रम गर्व । भयो किल किंचित्त सूरं ॥
 ज्यो नल मति दमयंत । सेन सज्जी रन पूर ॥
 भवर सद् सम सुमन । प्रेम रस छट्टिय जग ॥
 सुवर राज चहुआन । करन उप्पर बर पंगं ॥
 माधुरत मधुर बानी तजी । रजिय सूर रंजित्त मुभर ॥
 छित्तित्त मत्त -लितौ छित्रिय 'छित्रिग । दिपति दीप दिबलोक धर ॥
 ॥ छं० ८७ ॥

१. ए० क० को०-जुद्ध ।

२. को०-बांबी ।

३. ए० क० को०-सपे ।

४. ए० क० को०-जग्गा ।

५. ए० क० को०-छित्त ।

६. को०-छिपय ।

कौज की शोभा वर्णन ।

मेतीदाम—दंसं दिसि पूरग 'मलय भार । चढ़्यो जनु इंद्र धनुष्य धार ॥
 तुरंगन तुंग हरष्य ईस । षरक्किय नारद सारद रीस ॥ छं० ८८ ॥
 छहंमित छोह्य शंकर हृथ्य । कहै कबिचंद सु ओपम कथ्य ॥
 गए गजनेस सुसथ्य बीर । रहै लगि भीर तिनै लगि नीर ॥ छं० ८९ ॥
 मनो कुत कुंतय बारय पुल्लि । गए मनु आरद शकर भुल्लि ॥
 करुना रस केलि क्रमीनह बीर । नच्यो अदबुह स रुद्र डकीर ॥ छं० ९० ॥
 इकं इक रस्स सु संतिय सूर । दिषे मुख मत्त महा मति नूर ॥
 सुलतानरु हिंदुअ बैर प्रमान । सुभादय जुद्ध निदान निदान ॥ छं० ९१ ॥
 दया बर हीन सगप्पन नथ्य । ॥
 उमा क्रत काज प्रजापति दच्छि । तज्यो नन मात उरगिय लच्छि ॥ छं० ९२ ॥
 षिझे सिर ईस पटक्किय जट्टु । भयो तहां जन्म सु बीरय भट्टु ॥
 भिरी भिरि नंदिय दंद प्रकार । पछे दछि दच्छिय दछि उचार ॥ छं० ९३ ॥
 इतं मिति मंत सु कंतिय राज । भयो बर बीर भयानक साज ॥
 दिसो दिसि पच्छिम हिंदुअ मेछ । बज्यो रनतूर रवह्य एछ ॥ छं० ९४ ॥
 मली जनु जंगम जो गवरीस । दसकंधु डुलावत प्रव्वत रीस ॥
 तज्यो जहां मान लगी पिय कंध । नयो रस संत सु मतिय संघ ॥ छं० ९५ ॥
 सु जाति जरा नृप हक्क प्रमान । चढ़्यो तिन बेर बली बहुमान ॥ छं० ९६ ॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण ध्येर्णीवद्ध करना ।

कवित्त—चाहुवान बर बलिय । भार भारथ रस भिन्नो ॥

मधुर सुधर सिधुरस । अंग चावदिसि छिन्नो ॥

सुबर सेन सामंत । सुबर बल बीर निनारे ॥

मझ मझह आवृत । देव जनु जुद्ध हकारे ॥

कुसमिस्त जुद्ध देवह करन । रथ सुरतथ ह्य ह्यति नर ॥

सामंत सूर पुज्जे नहीं । बर कंदल 'उठुंति धर ॥ छं० ९७ ॥

सामंतों की बीरता का वर्णन ।

उरग विद रवि उठे । सीस हकके धर नंचे ॥

देवासुर संग्राम । देव पूजा देवंचे ॥

इंद्र जुद्ध तारकक । सोइ तत्तह अधिकारी ॥

पंच पंच पंडव सु । भीम दुजोधन भारी ॥

गज मंत दंत कट्टे सु भ्रत । दैवत्त जुध सामंत रत्त ॥

उह्यो जुद्ध आवृत मिति । नहिन मेच्छ हिन्दू छपन ॥ छं० ९८ ॥

युद्ध के लिये प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित
निद्धुर का वीर-मत वर्णन ।

मिले सूर सामत मत मज्जिय निद्धुर वर ॥
 कहां सु प्रान संग्रहै । पंच किहि जाइ मिलै घर ॥
 कोन क्रम्म संग्रहै । क्रम्म को करै सु देहं ॥
 कोन जीव संग्रहै । कोन त्रिमवे सु छेहं ॥
 जैचंद आनि सुरतान वर । अधर राहु लग्यो अवर ॥
 विन मत्ति दान दिय विप्र बरारहसि सह लग्यो सु घर । छं० ९९॥
 कह निद्धुर रठौर । सुनहु सामंत प्रकारं ॥
 कही देव को धम्म । कित्ति संग्रही सु सारं ॥
 बारि बूंद बुदबुद । हथ्य वारी सु आव इत ॥
 ज्यों बहलवै छाहि । घास अगी सु मत्ति भ्रित्ति ॥
 इत्तनिय देह की गत्ति वर । तीय उम चित्तं सु नर ॥
 मस्सान पुरान ह काम के । अंत चित्त सदगत्ति घर ॥ छं० १००॥
 अंत मत्ति सो गत्ति । अंतजा मत्ति अमत्तिय ॥
 पुब्ब धम्म संग्रहै । पुब्ब गत्तिय सुइ गत्तिय ॥
 देव भाव संग्रहै । काल केवल गुन वत्तिय ॥
 सिच्चिये वेलि जंजं बधै । तंतं बुद्धि पुरान वर ॥
 त्रिष्वात घात पत्तिय सु वर सु वृत काल निच्चरि सुनर ॥ छं० १०१॥
 स्वामि निद जिन सुनी । स्वामि निदा न प्रगासौ ॥
 अह निसि वंछौ मरन । भीर संकरें निवासी ॥
 तब बुल्यौ महनंग । छडि इह मंत्र सस्त्रगह ॥
 अस्ति काज दद्धीचि । दिए सुरपत्त मत्त बहु ॥
 सुरपत्ति मत्त किन्नी सु वर । निवर अंग को अंग मय ॥
 जैचंद भूमि उब्वैलि कै । चढहु भूमि घर सुगं मय ॥ छं० १०२ ॥
 गाथा - के के न गया गुर ग्रेहं । के के न काल संग्रहे हंतं ॥
 मंत्री जा प्रथिराजं । रण्ये जा वीर सो सस्त्रं ॥ छं० १०३ ॥
 साटक - जाता जा मनसा समस्त गुरयं, मानस्य ग्गा सुंदरी ॥
 'ता भग्गा मन सूर काइर वरं, 'किल किंचि किंचित रसै ॥
 अभिलाषं छित्ति गर्बं ताहन विधे, संसार सहकारयं ॥

चारं जा पारंम दिव्यत गुरं, दीसंति देवानयं ॥ छं० १०४ ॥

बुद्धसत्त्वार शूरवीरों की चाल वर्णन ।

भुजंगी--प्रवाहंत वाहं उचारै पवंग । तिनै धावतं होइ मारुत पंग ।

झमै झुंम अगं सुमं तीन संघै । मनो ब्रह्म विधि गंठि लै वाइ बंधै ॥ छं० १०५ ॥

पुजै पंथ अंधी मनं पीन धावै । तिनं उप्पमा कौन कविचंद लावै ॥

किधौ कैसपन्नं चलै त्रित भारी।किधौ चक्करी हृथ्य 'आवत्त तारी ॥ १०६ ॥

किधौ वाय छुट्टै नहीं चाइ पावै । अंगराज कैसै उपम्माति लावै ॥

अर्गपाइ दीसे मुषं मेह कारै । मनो दिव्य वानी पढै कव्वि भारै ॥ छं० १०७ ॥

धरे पाइ बाजी दूदंतं निभारै । मनो तार सौ तार बज्जै हकारै ॥

तिनं दूरि तें अंग ओपंम ऐसे । मनो तार छुट्टै अकासं सु जैसे ॥ छं० १०८ ॥

इसे बाजि सज्जे समप्पेति राजं । दिषं सुर सामंत हृथ्यं सुपाजं ॥ छं० १०९ ॥

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना ।

दूहा--बाज राज नृप ेराज दिय । बिलसि विधान विधान ॥

तिन उप्पम कविचंद कहि । का दिज्जं घपवान ॥ छं० ११० ॥

घोड़ो की शोभा वर्णन ।

रसावला—

घपै बान भारे, हकारे निनारै।दुरै अप्प छाया, तते अग्गि ताया ॥ छं० १११ ॥

घबै 'अंठ भारी, मुकोटं निनारी । बरं नैन ऐसैं, हरी देव जैसैं ॥ छं० ११२ ॥

महा मत्त ग्रीवा, विना वाइ दं वा । उरं पुठु भारी, 'सु मासं निनारी ॥ ११३ ॥

तुला जानि पंभं, पला जानि अंभं । नष डंड इदं, मनो डंड सिदं ॥ छं० ११४ ॥

द्रुमं वीर डुल्लै, कवी किति पुल्लै।मनो वाय कांडं, परी मक्क होडं ॥ छं० ११५ ॥

कचोलंत नीरं, पिय वाज जीरं।अवत्तं निनारे, मनो स्वामि सारे ॥ छं० ११६ ॥

इसे राज राजी, दिए वाज राजी । सु द्वै द्वै रकेबं, चढ़े बीर बेबं ॥

सुरत्तान पासं, चढ्यो बीर भासं । ॥ छं० ११७ ॥

शाहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा ।

दूहा- बिना हेत सगपन बिना । इष्टपना बिन राज ॥

घनि राज प्रथिराज को । षग गोरी किय साज ॥ छं० ११८ ॥

शाहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना ।

कवित्त- षल गोरी सुरत्तान । जाइ रंध्या रन अगं ॥

हय गय रथ नर सज्जि । बीर पावसं षट जग्गी ॥

महन रंभ अग्रंभ । रत्त अरुनोदय करारिय ॥

चाहुआन सुरत्तान । बीर जैपत्त करारिय ॥

१ ए० कु० को०--दीसंत । २. ए० गज ।

३. मो०--कम्बु । ४. मो०--समंसं । ५. ए० कु० को०--वेवं ।

डमक डहक जुगिनि हसै । जिम जिम बंबर धज लसै ॥
 सामंत सूर बहुजान सौं । बीर विदुरि सस्त्रह कर्म ॥ छं० ११९ ॥
 राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का प्रागे बड़ जाना ।

मेछ मसूरति सत्ति । मत्ति कीनी रत भारी ॥
 वीरा रस विदुरिय । लोह लगी अधिकारी ॥
 छिति मिति छिति सौभ । अंषि आवै न अंषि षिन ॥
 ज्यां नद्व वन दिष्ट । चपि चूवंत मंत धन ॥
 रन हरषि धरषिय मुक्ति जिहि । घप्पि लोह कोहां करसि ॥
 चावंडराइ बाहर तनी । न्यप अग्या विन अग्र घसि ॥ छं० १२० ॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानबाहु का पांच कोस प्रागे बड़
 कर तत्तार धां सुरसान धां पर आक्रमण करना ।

रा चावंड जैतसी । लोह आजानबाहु वर ॥
 रष्ये रन सुरतान । मत्त अग्ये सुबीर भर ॥
 पंच कोस न्यप छडि । आप रंध्या सुरतानं ॥
 बज्र घाट वज्जीय । आइ लगा सु विहानं ॥
 छूटा कि सिध पल काब वर । उरसि लोह लगा लरन ॥
 तत्तार धान घुरसानपति । अप्प मसूरति मरन मन ॥ छं० १२१ ॥

उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुस्लमानों का कमान पर
 बाण चढ़ाकर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना ।

भुजंगी - घुरासान धानं सु तत्तार बीरं । मनो बज्र देष सु वज्रं सरीरं ॥
 महा बाहु बज्जी कढ़े बज्र हृथ्ये । लगे अंग अंग निरथ्ये निरथ्ये ॥ छं० १२२ ॥
 छुलिका सु बानं कमानेन साही । इसे सूर बेगं पललै त्रिबाही ॥
 उरं मत्त मत्ते विमत्ते निनारे । मनो देषिये बीर रत्ते प्रकारे ॥ छं० १२३ ॥
 उरं काल काली जपददुठ कदुठी । किधौ दंहुठ जम ददुहु जम कर विडदुठी ॥
 उरं मत मत विमत्तं सु मत्ती । परे रंग चंगं छके जानि गत्ती ॥ छं० १२४ ॥
 दुवं हिंदु मेच्छं तसवीति नषी । सरै सट्टि हज्जार आवृत लष्यी ॥
 तिनै हृथ्य हृथ्यं मुकत्ती प्रमानं । मनो देषि देवंत देवाधि धानं ॥ छं० १२५ ॥
 वित्रं त्रिद्वि रूपं प्रमानंत न्यारे । भए अंग अंगं तही तथ्य सारे ॥
 नचै कंधं बंधं कबंधं दुरंगी । मनो बीर आवृत भारथ्य रगी ॥ छं० १२६ ॥ -
 इतो जुद्ध करि बीर भर ईं निनारे।धुमं सार धुम्में मनो मतवारे॥छं १२७॥

१. मो०—मनह ।

२. मो०—नैषिबाही ।

पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना
और जयचंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन का राह छेकना ।

★ गूहा—चल्यो राज सब सेन सजि । दिसि उज्जनिय रंग ॥

आइ साहि जग हजूरन । लयै सहायक पंग ॥ छं० १२८ ॥

गही गैल देवास की । गहन उपज्ज्यौ मिच्छ ॥

नर वित्तन इच्छै कछु । ईसर औरै इच्छ ॥ छं० १२९ ॥

मनुष्य की कल्पनाएँ सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बनवती है ।

कवित्त—नर करनी कछु और । करै करता कछु औरै ॥

नर चित्तन कर ईस । जिय सु नर औरै दौरै ॥

रचे रचन नर कोटि । जोरि जम पाइ बस्त सह ॥

छिनक मध्य हर हरै । केल किर तष्य क्रम्म इह ॥

प्रथिराज गमन देवास दिसि । भ्याह विनोद सु मंडि जिय ॥

अनचित्ति जग्गि गज्जन बलिय । आनि उत्तंग सु कंक किय ॥

॥ छं० १३० ॥

पृथ्वीराज का राजा बली से पटतर बेकर कवि का उक्ति वर्णन ।

ज्यो बावन बलि पास । आनि अनचित्त्य छलन किय ॥

उन धर ले उन दीन । इन सु सुर बंधि छंडि जिय ॥

दसों दिसा दल उमड़ि । घुमड़ि घनघोर आइ जनु ॥

मीर मसंद ससंद । बान बहु बूद बरषि घन ॥

दोउ दीन दंद दनु देव सम । भ्रम लगे लगे लरन ॥

प्रलंकाल हाल पिषिय निजरि।मनों मित्र वृत्ती करन ॥छं०१३१॥

युद्ध प्रारंभ होना ।

रसावला—

कोह लगे षलं, सार उहुँ पलं । अंत तुट्टै हलं, पग बेली लं ॥ छं०१३२ ॥

नैन रत्ते झलं, जुट्टि जाल षलं । मिट्टि मोहै मलं, कीह कै केवलं ॥छं०१३३॥

रंड नच्चै दलं, मुंड वक्कै बलं।गिट्टि सिद्धी कलं, बज्जि कोलाहलं॥छं०१३४॥

छिछ उहुँ ललं, जानि तिदू झलं । हृथ्य तुट्टै नलं, वृष्य साषा डलं॥छं०१३५॥

पंष पंषी बलं, ईस आसावरं । माल सोभै गरं, रुद्धि बुंदै झरं ॥ छं० १३६ ॥

आनि नगं परं, चडि पत्र भरं । मति डक्क डरं, भूत नच्चै षरं ॥छं०१३७॥

उष्मयं चिक्करं, बविक नैरु हरं । कपि स्यारंनरं, सूर बद्धै वरं ॥छं०१३८॥

झर झारै हरं, ॥ छं० १३९ ॥

★मो०—प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है ।

१. ए० क० को०—दीप ।

२. ए० क० को०—दम सुरम बंधि छंडिय प्रिय ।

३. ए० क० को०—वर ।

४. ए० क० को०—मति ।

स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे ।

दूहा - सार मंत मत्ते सुभट । षग दिल्ली गज ठट्ट ॥

स्वामि धम्म सद्धै रनह । मुक्ति सु द्वारै वट्ट ॥ छं० १४० ॥

दोनों शौर के शूर वीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन ।

कवित्त - कोह छोह रस पान । वीर मत्ते चावहिसि ॥

बलि उतंग सजि जं । अंग जनु पंग कप्पि जिमि ॥

हय दल बल उछ्छार । कद्धि गज दंत नडारै ॥

जनु माली महि मध्य । कट्टि मूला करि धारै ॥

भय सीतभीत काइर कर्पाहि । बहुत सूर मापंत रिन ॥

कलि कहर कंक बकहि विहसि।गहन गोम मत्तौ महन॥छं०१४१॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अतताई की वीरता और

उनके पराक्रम से मुस्लमानों की फौज का विचलाना,

हासब खां शूरसान खां का मारा जाना ।

भुजंगी - परी भीर मेच्छं 'तसब्बी तनष्वांकले कंक बक हीन जीवं मु लष्वां॥

षलं कन्ह गोइंद कोका प्रमानं । मनौ देषियै देवयं दुंद थानं ॥ छं० १४२ ॥

बढ़े वीर रूपं प्रमानं निनारै । अरी अग चेतं न वित्तं धरारै ॥

नचै कंध बंधं असंधं धरंगी । मनौ वीर भारथ्य आवूत्त रंगी ॥ छं० १४३ ॥

लग्यौ लंगरी लोह लंगा प्रमानं । षगे षेत षड्घौ शुरासान षानं ॥

उडै अत्तताई हयं पाइ तेजं । दलं दिप्पिये पेट पष्वे करेज ॥ छं० १४४ ॥

हन्यौ हासबं षान सीसं गुरज्जं । गयं उड्डि गेनं मु षोपरि पुरज्जं ॥

इतौ जुद्ध करि वीर भए दूँ निनारो।घुमे सार घुम्मे मनौ मत्त वारे।छं०१४५॥

दूहा - रत मत्तवारे सुभट । विधि विनान उनमान ॥

तहन सुष्प दुष्पं निजहि । मोह कोह रस पान ॥ छं० १४६ ॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना । शहाबुद्दीन का कुपित होना और

पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त - मोह कोह रसपान । वीर मत्ते चावहिसि ॥

तबल तुंग बजि जंग । वीर लग्गे सु वीर कसि ॥

जा दिष्वाँ सुरतान । नैन बड्बानल धारी ॥

प्रलय करन करवान । प्रलय इन षंग हकारी ॥

सुभि लोह मोह अरुनय तनह । अति उदार चिन्हय रनह ॥

प्रथिराज राज राजिद गुर । गहन गज्जि लीनों पनह ॥छं०१४७॥

१. मो-तसब्बीनि ।

२. मो-पार्श्व ।

युद्ध की पाबस से उपमा वर्णन ।
 साहन बाहन बिरध । साह गोरी सयन्न सम ॥
 हय गय दल विछछरहि । रोस उछछुरहि बीर भ्रम ॥
 बज्रहि षग आवृत्त । जूथ उडुहि असमानं ॥
 मनहु सिध गुर गज्ज । हृदिक कारिय सिर भानं ॥
 दल जोरी विहसि साहाब भर । भर भर भिरि असिबर बजिय ॥
 जानेकि मेघ मत्ते दिसा।निसा नष्प विज्जुल लसिय ॥छं०१४४॥

घोर युद्ध वर्णन ।

त्रोटक -इति तोटक छंद प्रमान धरं । सुनि नागकला तिहि किति गुरं ॥
 भिरि भारथ पारथ से उचर । मय मंत कला कलि से बिडुरे ॥छं० १४९ ॥
 रननंकय नागय बीर सुरं । मनो बीर जगावत बीर उरं ॥
 छिति छत्र दुहाइय छत्र धरं । सु मनो बरवा हवि बज्र सरं ॥ छं० १५० ॥
 छिति सोहत श्रोन अपुब्ब रनं । मनो भारत पर चली सुभनं ॥
 दोउ दीन बिराजत दीन उमै । रंग रत्त रमै छिति छत्र सुमै ॥ छं० १५१ ॥
 सुमनो मधु माधव रीति इलै । सुजनो कृत कंकर बीर फुलै ॥
 इक अंग विमंगन हृथ्य चरै । सु मनो कल बीर कला दुसरै ॥ छं० १५२ ॥
 भिति मत्त अवृत्तन षाइ घटं । सु नचै जनु पारथ बीर भटं ॥ छं० १५३ ॥
 कवित्त बरकि बीर भट सुभट । झुम्मि हकै चावहिसि ।
 इक्क इक्क आवृत्त । बीर बरवंत मंत असि ॥
 नचि नारद किलकंत । जग्गि जुगनि हक्कारिहि ॥
 सार ताल वेताल । नचि रन बीर डकारहि ॥
 अंमरिय रहसि दल दुअ विहसि । करसि बीर लग्गे सु बर ॥
 चहुआन चान सुरतान दल।करहि केलि समरस अडर ॥छं०१५४॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन ।

नव बाजी नव हृथ्य । रथ्य नव नबति सुभ्र भर ॥
 इन बज्जै असि बरह । सार बुज्जै प्रहार धर ॥
 केक अंत जमकंत । कदूठी जमदाक निनगरी ॥
 मनु कदूठी जम ददद । हृथ्य सामंत सुभ्ररी ॥
 चालुक्य चंपि चक्कर कियो । सार धारु सम उत्तन्वो ॥
 इह करी कोइ करि है न कोइ।करी सु कीगुन बिस्तन्वो ॥छं०१५५॥
 इह -- जंसति जमकिय जंम सम । जम प्रमना दोउ सेन ॥
 मिळे बीर उत्तर दिसा । आवृत्तह तिन नैन ॥ छं० १५६ ॥

बामदेव बाबब का आध कोस घागे डटना और उसकी
बीरता की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त—अध कोस नून अग । सूर रोपे पग गढ्ढे ॥

सद् मद् गजराज । चंडि पढ्ढे बल चढ्ढे ॥

लज्ज बंध संकरिय । बीर अंकुरिय दिष्ट रन ॥

सार धार बज्जी कपाट । त्रिघात घुमत रन ॥

कलमलिय कंक इम मिच्छ सह । जनु लुअ लगत जेठ महि ॥

जद्द सु जाम धरि इक्कलों । जनु बडवानल चंद कहि ॥छं० १५७॥

गाथा - दिष्ये मुष्पय मच्छरयं । अरज दुवं सन्नाम श्रवनयं ॥

अच्छरि वर कर इच्छं । ध्रमत फिरंत गौन मग्गाईं ॥ छं० १५८ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना ।

कवित्त मोरव्यूह रचि राज । सज्जि सब सेन सुद्ध करि ॥

चंच पीप परिहार । कन्ह गोइंद नयन सरि ॥

कंठ चंद पुंडीर । पांव जुग जैत सलष सजि ॥

निढ्ढर भर बलिभद्र । पंष बजि बाय तेज गति ॥

सम पुंछ और और सम पुंछ मन । बरन वरन छबि सिलह तन ॥

रन रोहि रह्यौ प्रथिराज महि । गिलन अण्य सुरतान रिन ॥छं० १५९॥

गाथा - मुच्छीजं वर मच्छरं । तं वटे अच्छरी अंगं ॥

सोयं साध प्रमानं । सा पूजी सूर सामंतं ॥ छं० १६० ॥

न्याजी खां, ततार खां और गोरी का उधर से आक्रमण करना और
इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हराबल सम्हालना ।

कवित्त - कर बल षान ततार । षान न्याजी षां गोरी ॥

हरबल पीप नरिंद । साहि बघी बिय जोरी ॥

मोरव्यूह चहुआन । मार धारह संघारै ॥

गिलन अण्य सुरतान । बोल बड्डा उच्चारै ॥

कृत अकृत सीस धारन भिरवि । जै जै जै चारन सु धुअ ॥

सुरतान सूर आवुत्त वर । धनि सुबर सामंत भुअ ॥ छं० १६१ ॥

तन तरफत धर मिच्छ । बला छबि जानि नटक्कै ॥

मत्त दन्ति आरुहै । दंत सौ दंत कटक्कै ॥

समर अमर करि बंदि । भये विस्मत पल^२ चारिय ॥

अहै तहै चंद पुंडीर । चंद ज्यों रेनि उजारिय ॥

१. ए०-करत ।

२. ए० क० को-नैन ।

३. ए० क० को -अण्य ।

४. ए० क० को हारिय ।

तन ग्रेह नेह मन अंत सम । भ्रम छंडघो दल दलि सुभर ॥
संभरिय सूर सुरतान दल । महन रंभ मन्वी सु धरा ॥ छं० १६२ ॥
युद्ध होते होते रात्रि हो जाना ।

हनुफाल इति हनुफालय छद । कल विकल कल कृत चंद ॥

भय निसा उदित प्रमान । चहुआन सेन सुधान ॥ छं० १६२ ॥
कर हृथ्य बथ्यन थाक । मनो मंडि बंधि चिराक ॥ छं० १६४ ॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना ।

कविन करि चिराक छह सहस । सेन उम्भे चावहिस ॥

रतिवाह सम जुद्ध । बीर धावंत बीर रस ॥
तेज विराक रु सन्ध । रत्त द्विग तेज प्रमानं ॥

सार धार निरधार । बेद छेदन गुन जानं ॥

सारुक करक्के रं५ पल । निसा जुद्ध किन्नी न किहि ॥

सामंत सूर इम उच्चरें । मुबर बीर भारध्य नहि ॥ छं० १६५ ॥

आधी रात हो जाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन

पर आक्रमण करना और मुसलमान फौज का पैर उखड़ना ।

अद्ध होत बर रत्ति । साहि गोरी धरुंध्यो ॥

तोंअर बर पाहार । कित्ति सा सिधुह संध्यो ॥

सेत बंध बंध्योति । सर बंध्यो रिन पाजं ॥

जै जै जै उच्चार । धन्नि सामंत सु ब्यजं ॥

सुरतान सेन भग्गा सुभर । तीन बान पुं जान गय ॥

गज घंट न घंट न मत मुनि।मुनि जपें बर ह्यति ह्य ॥ छं० १६६ ॥

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का बूढ़ संकल्प करना ।

दोत होत मध्यान । पीप नें पन मन मंडघो ॥

प्रबल पानि परचंड । साहि गोरी गहि बंध्यो ॥

सेत बंधि ज्यो राम । चंद सुर भान सूर सधि ॥

यो लिन्नो परिहार । बालि दस कंध कंध मधि ॥

रन छंडि हंडि घर मच्छि हुअलाजवंत कै फिरि भरिय ॥

जय जय सु जपें मुष धर अमर।सु मविचंद कवितह धरिय ॥ छं० १६७ ॥

प्रसंगराय खींची, पञ्जनराय के पुत्र, बीरभान, जामदेव, घसाताई के

भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुआब खाई का मारा जाना ।

भुजंगी -

पन्थी राव तिन वेर खींची प्रसंगं । जिने षडियं विसवल धग अंगं ॥

पन्थी राव पञ्जन पुत्रंति राजं । गयं मुगं लोगं करे देव गाजं ॥ छं० १६८ ॥

धुकघी धार घक्कै अजमेर राई । दुअं सेन जंपी मुख किति चाई ॥
बधं जामदेवं बधों बीरभानं । लरी अच्छरी मइस बीरं बरानं ॥ छं० १६२ ॥
पन्यौ घाइ षेतं अतताइ तातं । मनो देखिये भूमि कंदर्प गातं ॥
पन्यौ सेन हुज्जाब गोरीस बंधं । हयं अट्ट भगो मु उठु कंमधं ॥ छं० १७० ॥
परे ताहि दीने परे साहि भारे । दिखे यान थानं मिछं प्रात तारे ॥ छं० १७१ ॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना ।

दूहा इन परंत मुरतान गहि । ग्रह निग्रह घट बीर ॥
तिन जम जंपत का कबी । जिन करि जज्जर श्रीर ॥ छं० १७२ ॥
कवित्त - जज्जर पंजर प्रान । साहि गोरी गहि बध्यौ ॥
बिन सेवा बिन दान । पान पगह षल संध्यौ ॥
फिरि ग्रह पती राज । लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
डोला तेरह तीस । मद्धि साहाब सुभतिय ॥
ग्रह गयी लिये मुरतान संग । जै जै जै जस लढ्यौ ॥
जयचंद कनाइत चिति जिय । मान प्रसंसन सिद्ध्यौ ॥ छं० १७३ ॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल

कीर्ति का वर्णन ।

कवित्त - मान भंजि मुरतान । मान भंज्यौ मुरतानं ॥
उन उप्पर नन कियो । हुनो बर बर निदानं ॥
पंग लज्ज उच्चरै । सुनौ मंत्री अधिकारिय ॥
करिय षेत चहुआन । इद पहुं पथह वारिय ॥
मुह मुच्छ मुच्छ सोमेम सुअ । धुअ समान सभरि धनिय ॥
पढरै दीह जम चढई । घर पढर करि अप्पनिय ॥ छं० १७४ ॥

दूहा - धन्य राज अवसान मन । रन संध्यौ मुरतान ॥
लच्छि लई चतुरंग जिति । बर बज्जे नीसान ॥ छं० १७५ ॥

कविन - छत्र मुजीक निसान । जीति लीने मुरतानं ॥
गो घर ढिल्लिय ईस । बज्जि निरघात निसानं ॥
दिसा दिसा जय किति । जिति गावै प्रथिराजं ॥
बाल बूढ भर जुवन । जंग जंपै धनि लाजं ॥
सा धम्म धारि छत्री नृपतिदिपति दीप भुअलोक पति ॥
पुज्जै न कोइ मुरतान को । मुख अयन्न पारण्य गति ॥ छं० १७६ ॥

दूहा - हाकाहल वित्ते सुभर । कोलाहल अरि गान ॥
सुबर राज प्रथिराज को । तपय बीर बहु जान ॥ छं० १७७ ॥

सुलतान का मुस्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन ।

कवित्त - छंडिदियो सुरतान । सुजस पट्ट पीप मंडि सिर ॥

जित्ति जंग राजान । इच्छि पूजा इच्छी यिर ॥

भूमिय मिलि इक आइ । इक बंधे बस किञ्जिय ॥

इक अप्प पहराइ । मान भजि रुमन दिज्जय ॥

आवे 'न पार लच्छी सहज । षट् बरन सुष्वह वगन ॥

चहुआन सूर संभरि धनी । तप तेज सोमह सुअन ॥ छं० १७८ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके मोरभ्यूह

पीपा पातिसाह ग्रहनं नाम एकतीसमो

प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ३१ ॥



अथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(बत्तीसवां समय)

पृथ्वीराज का मालव (वेश) में शिकार खेलने को जाना ।

ब्रह्मा — 'कितक दिवस बित्ते नप्रति । मारंगोदुर साज ॥

घर मालव मंड्यौ नृपति । आषेटक प्रथिराज ॥ छं० १ ॥

पृथ्वीराज का ६४ सामंतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना

और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना ।

कवित्त— चौअगगानी सठि । सूर सामंत सु मथ्यं ॥

मालव घर प्रथिराज । सज्जि आषेटक तथ्यं ॥

बर उज्जेनी राव । जीति पांवार सु भीमं ॥

वल संमर जो गट्ट । गाहि चहुआन 'जु सीमं ॥

सगपन सु जीनि संभरि धनिय । ग्रहन जंग सम बर नप्रति ॥

संभाग समर सुनयो समर । समर बीर मंडन दिपति ॥ छं० २ ॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य वंपति होना ।

ब्रह्मा — सुबर बीर चित्तै नप्रति । बद बरनी दुति काज ॥

बर इन्द्रावति सुंदरी । बरन तकै प्रथिराज ॥ छं० ३ ॥

इन्द्रावती की छवि वर्णन ।

कवित्त इंद सुंदरी नाम । बीय इन्द्रावति सोहै ॥

वर समुंद पांवार । घरिग अति सम सग लोमै ॥

मनमथ मथन नरिद । हाइ करि भाइह गाढी ॥

'रूप तरैंग झंकुरित । तुंग दोऊ करि काढी ॥

ज्यों छित्ति काम जप्यौ परित । अति सुदेह त्रिमल झलकि ॥

संकुच सु काम कर 'कलिय तिहि । 'रिपु सुदेखि आयौ ललकि ॥ छं० ४ ॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लगन बहाना ।

ब्रह्मा— श्रीफल दुजबर हथ्य करि । दैन गयो चहुआन ॥

दिन पंचमि बर भीम दिन । लगन 'करै परमान ॥ छं० ५ ॥

१. छं० ए० को०—कितक, केनेन, फितक । २. मो०—जु ।

३. मो०—सुसीमं ।

४ ए० छं० को०—रुअत जंग, अँग ।

५. मो०—कर लीप । ६. ए० छं० को०—फेरिपुं देख । ७. मो०—करइ ।

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय
इत्यादि के विषय में प्रश्न करना ।

दुज पुच्छे आतुर न्रपति । किहि वय किहि उनहार ॥

किहि लच्छिनमति कौन १विधि । कहि कहि सुमति विवार ॥छं०६॥

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना ।

कुंडलिया -वय लच्छन अरु रूप गुन । कहत न बनै सु वाम ॥

सारद मुष उच्चारती । साषि भरै जो काम ॥

साषि भरै जो काम । कहै सारद मुष अप्पन ॥

साषि चित्त नन १धरै । कहिय दिषियं सु अप्पन ॥

बलि सरूप सज्जी मदन । सुभ सागर गुर मेव ॥

सो सज्जिय भज्जिय दिवह । तकि प्रथिराज बलेव ॥ छं० ७ ॥

ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना ।

दूहा -बाल सुनत प्रथिराज गुन । १दुरि दुरि श्रवन सुहित ॥

जिम जिम दुजबर उच्चरत । तन मन तिम तिम रत ॥ छं० ४ ॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन ।

हनूफाल -सुनि प्रथम बालिय रूप । बर बाल लच्छन १नूप ॥

अहि संघि सैसव पाल । अजु अरक राका हाल ॥ छं० ९ ॥

सैसब सु सूर समान । वय चंद १चहुन प्रमान ॥

सैसद जीवत एल । ज्यों पंथ पंथी मेल ॥ छं० १० ॥

परि भौंह भँवर प्रमान । वै बुद्धि अच्छरि आन ॥

द्विग स्याम सेत सुभाग । सावकक अग छुटि बाग ॥ छं० ११ ॥

बिय द्विगन ओपन कोड़ । भिस भ्रंग षंजन होड़ ॥

बर बरन नसिक राज । मनि जोति दीपक लाज ॥ छं० १२ ॥

गति सिषा पतँग नसाव । ओपम दे कवि आव ॥

नासिकक दीपन साल । सौप देत षंजन बाल ॥ छं० १३ ॥

बिय बाल जोवन सेव । उबों दंपती हृषलेव ॥

वैसधि संघि अचिद । ज्यों मत्त जुरहि गुविद ॥ छं० १४ ॥

* कहि ओपमा कविचंद । ॥

तुछ रोम राजि विसाल । मनो अग्नि उगिय बाल ॥ छं० १५ ॥

१. ए०-बुध ।

२. ए० को०-किहि किहि ।

३. ए० क० को०-भरै ।

४. ए० क० को०-दुरि दुरि ।

५. ए०-रूप ।

६. मो०-चढ़त ।

* यह पंक्ति मो०-प्रति के अतिरिक्त अन्य किसी प्रति में नहीं है ।

कुच तुच्छ तुच्छ समर । मनो काम फल अंकर ॥
 वय रूप ओपम एह । मनो कामद्रूपन देह ॥ छं० १६ ॥
 वर छिन्न थक्कत तेह । जा जनक नृप कर देह ॥
 वैसंधि कविवर वधि । ज्यों वृद्ध बाल बिबंधि ॥ छं० १७ ॥
 वैसंधि संधि १समान । ज्यों सूर ग्रहन प्रमान ॥
 वै राह समि गिलि सूर । चव ग्रहन मत्त करूर ॥ छं० १८ ॥
 वर बाल वैसंधि एह । मित्रकार काम करेह ॥
 लज करे लज लजि छडि चित रंक दीन समडि ॥ छं० १९ ॥
 कहां लजि कहीं बर नाइ । तो जंम अंत मु जाइ ॥
 फल हथ लिय परवान । तप तूंग तो चहुआन ॥ छं० २० ॥
 उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी
 समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना ।

कवित्त- वर उज्जैनीराव । रंग बग्जे नीमानं ॥
 इन्द्रावति मुंदरी । बीर दीनी चहुआनं ॥
 राज मंडि आषेट । ममर कगार बर घाइय ॥
 बर गुज्जरवं राव । चपि चित्तौर आइय ॥
 उत्तरे बीर प्रबन गुहा । घर पड्डर मेलान किय ॥
 जोगिंदराव जग हथ बर । गढ़ उत्तरि किरपान लिय ॥ छं० २१ ॥
 पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना ।
 दूहा छडि बीर आषेट बर । गौ मेलान नरिंद ॥
 छडि सूर सिंगार रस । मडि वीर बर नंद ॥ छं० २२ ॥
 पृथ्वीराज का पज्जून राव को भ्रपना खड्ग बंधा कर उज्जैन
 को भोजना और घाप चित्तौर की तरफ जाना ।

कवित्त- मतो मंडि चहुआन । सबे सामत बुलाइय ॥
 दै षंडो पज्जून । बीर उज्जैन चलाइय ॥
 सथ्य कन्ह चहुआन । सथ्य बड़गुज्जर रामं ॥
 सथ्य चंदपुंडीर । सथ्य दीनों नृप हामं ॥
 आवृत अत्तताई सुबर । रा पज्जून सु मुक्कलिय ॥
 मुक्कलयो गोर निहदुर सुबर । मुक्कलिजैसिध षष्यलिय ॥ छं० २३ ॥
 दूहा - मुक्कलयो कविचंद सथ । अत्रप मुक्कलि गुरराम ।
 मुक्कलयो कैमास सैम । दाहिम्मो बर ताम ॥ छं० २४ ॥

१. ए० कृ० को०-प्रमान ।

२. ए० कृ० को०-करवान ।

३. ए० कृ० को०-भनष ।

सब सामंत सुसंग लै । लै चलयो चहुआन ॥

बरनि चिन्ह उर सल्लई । कहिग कबिय 'बषवान ॥ छं० २५ ॥

सलैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन

ओटक --प्रथिराज चढ़यो सिर छत्र उपं । ससि कोटि रबी ज्यों नछिन तपं ॥

गजराज विराजत पंति घनं । घनघोरि घटा जिम गजि गनं ॥ छं० २६ ॥

हय पष्वर बष्वर तेज 'तुनं । किननंकहि 'धक्कहि सेस धुनं ।

सहनाइ नफेरिय भेरि नदं । घुरवान निसानन मेध 'भदं ॥ छं० २७ ॥

घन टोप सु ओप अनेक सरं । मनु भद्व बोज उपम धरं ॥

* किरवान कमानन तान करं । हयनारि हवाइ कुहक वरं ॥ छं० २८ ॥

सुजयं प्रथिराज सु सारथयं । दुतियं कहि भारत्य पारथयं ॥ छं० २९ ॥

ओतीवाम चढ़यो नय बीर अनदिय चंद । सु मुत्तिवदाम पयं पय छंद ॥

दए नय कगद भृत सु इष्ट । मिले सब आइस जंग न रिष्ठ ॥ छं० ३० ॥

उड़ी घुर घूरि अछादिय भान । दिसा धरि अट्टु न सुझसय 'सान ॥

बजे घन सह निसान सुहद । लजे तिन सह समुहय रह ॥ छं० ३१ ॥

'मुदे सतपत्र कमोदन वेरु । करे चतुरंगय सकिय मेरु ॥

द्विगपाल पयाल पुरं सरसी । तिनके बर कन्ह परे धुरसी ॥ छं० ३२ ॥

जु अनदिय चंद निसाचर यों । किल कंपहि नुड जसं बर यों ॥

बिफुरे बर सूर चिहूं दिसि यों । डरपे सुर 'पत्ति उरं बसि यों ॥ छं० ३३ ॥

फन फूक फनपति को बिसरी । धरके पय बज्जि घुरं दुसरी ॥

जु रहे रुकि चंपि घजा न घजं । तिनसों बर 'पांति वगं उरखं ॥ छं० ३४ ॥

बर बज्जि तं ;र तहां तबलं । निमु नंन नवीनय बंस बलं ॥

जु धरें वर गौर 'उछंग हरं । सु कहै बर कंतिन कंपि डरं ॥ छं० ३५ ॥

जु बजावत 'डोंरुअ डक्क सुरं । रन नंकहि जोग जुगाधि हरं ॥

सजियं चतुरंग 'प्रथीपतियं । दुतियं कथि भारत्य पारथयं ॥ छं० ३६ ॥

पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और

उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज

का रावल की कुशल पूछना ।

१. ए० बषान ।

२. ए० क० को०-मनं ।

३. मो०-नुमं ।

४. ए०-धकाहि ।

५. मो०-नदं ।

* यह पंक्ति मो०-प्रति में नहीं है ।

६. मो०-मान ।

७. ए० क० को०-मुदे ।

८. ए० क० को०-पथियते ।

९. मो०-उबाग ।

१०. मो०-मोरे ।

११. ए० क० को०-मंडहि बर ।

ब्रह्मा —सजी सेन प्रथिराज बर । बीर बरन चहुआन ॥
बरद सौर संभय मिल्यो । चित्रंगी परधान ॥ छं० ३३ ॥
उत राबर सम्हो मिल्यो । चित्रंगी परधान ॥
कहो समर रावल कहां । पुच्छि कुसल चहुआन ॥ छं० ३४ ॥
कुंडलिया मिलत राज प्रथिराज बर । समर कुसल पुच्छि तीर ॥
कहां सेन चालुकक को । कहां समरंगी बीर ॥
कहां समरंगी बीर । दियो उत्तर परधानं ॥
करहेरा चित्रंग । राज आहुठु प्रमानं ॥
गुज्जरबै गुरि 'जम । हकक उत्तर पद्धर बलि ॥
भद इत्तें दस कोस । समर उम्भो समरं मिलि ॥ छं० ३९ ॥
प्रधान का उत्तर देना ।

कवित्त —कहि चित्रंगिय मंत्रि । चंपि आयो चालुककह ॥
तुम नन दीनी भेद । आइ मंडोवर चुककह ॥
चित्रंगी चतुरंग । आइ अड्डो करहेरां ॥
जुद्ध रुद्ध चालुकक । हुए कोऊ दिन भेरां ॥
हम देन बबर नुम मुक्कलिय । कहीं कही मुष मुष रष ॥
प्रथिराज राज अगो विवरि । कही वत्त परधान मुष ॥ छं० ४० ॥
पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही
परास्त कहंगा ।

अप बुझै चालुकक । सेन कित्तक परमान ॥
आइ ग्रह्यो चित्रंग । निरत दीनी नन आन ॥
मूर सुवर आवत्त । रंति रषी विधि जानं ॥
इन अगै चालुकक । बेर कित्ती भगानं ॥
जोगिद राव जीयन बलिय । कलिय काल छप्पन बिरद ॥
समरंग बीर सम सिष बल । चंपि लैन चालुक दुरद ॥ छं० ४१ ॥
पृथ्वीराज का घाने बढ़ना ।

चौपाई —करि अगै लीनी परधानं । आतुर ही चत्यो चहुआनं ॥
दे गढ़ दच्छिन तच्छिन आनं । समर सजन समुह उठि धानं ॥ छं० ४२ ॥
रजभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ।
कवित्त— पावस रन प्रव्वाह । अम्भ छायो छिति छाड्य ॥
छिन्नी छिनि प्रमान । इम्भ बदरं उठि शांड्य ॥

आलस १नींदय पीक्ष । सप्त राजस गहि तामस ॥
 धर दुह रन कुतुनह । करै उदिम रन हामस ॥
 श्रंगार रंभ ग्रेहं नसह । औ कुलटा सुकवीय हुव ॥
 कारभ किति औ काल मिसि । द्रवै इंद्र सूरह सुलव ॥ छं० ४३
 चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन ।
 ज्यौ गुनाव गारड् । सेन चालुक मिसि साही ॥
 विषम जोर फुंकयी । सु फन ब्रह्मंडन वाही ॥
 जीभ षग जइझारि । सेन सउजे चतुरंगी ॥
 बान मंत्र मने न । रमन कुंनन आवगी ॥
 मन धीर बीर तामस तमसि । निधि चले मन मध्य दिसि ॥
 मोरा भुवंग भंजन भिरन । पुष्व दई चितह सु बसि ॥ छं० ४४ ।
 पृथ्वीराज की सेना की पारधि से उपमा वर्णन ।
 यह संभरि चहुआन । बीर पारधि षरि आइय ॥
 दुहुं निसान बजि समुह । भूभि पुर कपि हलाइय ॥
 बीर सिंध आहुठु । बीर चालुक मुष साहिय ॥
 पुच्छ मग चहुआन । दुहुन बर बीर ममाहिय ॥
 उत्तरिय मनो सामुद् तहि । उदित दीह मगल अरक ॥
 जोगिद जेम जोगिद कसि । अष्ट कुली बंछे मुरक ॥ छं० ४५ ॥
 चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना ।

हुहा - चालुक्यां चहुआन दल । भई सनाह सनाह ॥

दोऊ सेन कविचंद कहि । बरनि बीर गुन चाह ॥ छं० ४६ ॥

दोनों और से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारंभ होना ।

मोतिदाम सजी बर सेन सु चालुकराइ । परे बर बीर निसानन घाइ ॥

भए दल सोर चिहूं दिसि वक्क । मनो मरु पुत हकारहि हक्क ॥ ४७ ॥

बछादि अरुन्न न सूक्षय भल्ल । करे किधो सोर कपी बर गल्ह ॥

गह्वर बैन उचारत श्रोन । इहै जुधकार प्रकारय द्रोन ॥ छं० ४८ ॥

घरं गज आगम नीम अउद्ध । छुटे बर पाइक फूलय रुद्ध ॥

सुसील अफूल बन्यो ह्यवान । विचै गुधि मोति कुहक्क अचान ॥ छं० ४९ ॥

दुहुं बिच नग मगं नग पति । पगी तहां पट्टनराइ मपंत ॥

जु भाल अंकूर सु सुदप बिद । घरी ह्यनारि छतीसय चंद ॥ छं० ५० ॥

कसुंभिल डोरि सु पच्छिम संधि । तिठोहर बंध नारिद सु बंध ॥

सरं मधि ब्रह्म सु चालुकराइ । दिसं बुकि भट्टिय दल्लि न काव ॥ ५१ ॥

दिसि वामे जवाहर मेर अराव । रच्यो अरगंध नरिदन चाव ॥
रंग स्थाम सनेत कमे घर रूप । निन में बर छीन सुरंग अनूप ॥ छं० ५२ ॥
पसरी बर कन्न सनाह न तीर । अववे उत कालिय के रुचि षीर ॥
सजी वनुरंगन बग बनाइ । चढ़े अरि के उर चालुक राइ ॥ छं० ५३ ॥
इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का
चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ।

दूहा - चालुक्यों चित्रंगपति । मिले दिष्टि दुअ दोरि ॥
मनों पुंज पच्छिमहु तें । उड़ि डंबर इल सोर ॥ छं० ५४ ॥
'इत चंगी चित्रंगपति । उत चुहान प्रथिगव ॥
आइ राज उपर करन । बज्जि निमानन घाव । छं० ५५ ॥

कुडलिया ढाल ढलकि दुअ सेन बर । गज पंती हलि जुथ्य ॥
मनों मरुल आसूद दोउ । तारी दै दै हथ्य ॥
तारी दै दै हथ्य । राम अवनी अन पिण्ये ॥
दुहुन दिष्ट अकुरिय । पाज बंधन बल दिण्ये ॥
चंपि सेन चालुक्य । बीर भ्रम मो बर मिल्ले ॥
आहुआन बर सेन । दुरी पच्छिम दिमि दित्ले ॥ छं० ५६ ॥
पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज
व्यूह रचना ।

कविन 'मब सामंन रु समर । श्रीर दच्छिन दिमि हंडिय ॥
चाहुआन हुसेन । गज्ज व्यूहं रचि गद्विक्य ॥
एक दंत हुसेन । दंत दच्छिनह ततारी ॥
सुंड गरुअ गोयंद । राज कुंभस्थल भारी ॥
दिमि वाम सबै आकार गज । महन सीह मोरी सुबर ॥
बदहनय अंम आहुट्टपति । महन रंभ मच्चै सुभर ॥ छं० ५७ ॥
युद्ध वर्णन ।

पठरी - घन घाइ घाइ अघघाइ सूर । सिधु ओ राग बज्जै करर ॥
हुंकार हक्क जोगिनिय डक्क । मूह मार मार ' बज्जै बक्क ॥ छं० ५८ ॥
नंचयो ईस गौ दरिद सीम । पणपर उपट्टि घुटे घुरीस ॥
नाचंत नह नारह तुंब । अच्छरी अच्छनद जानि लुंब ॥ ५९ ॥
गिट्टिनी सिद्ध बेताल फाल । वेचर षपाल कूदै कराल ॥
श्रोनित्त जानि सरिता प्रवाह । कडकंत रंड मुंडह सु वाह ॥ ६० ॥

१. मो०-इन

२. मो०-हुसेन

३. को०-उध

४. मो०-दुस्से

चमकंत दंत मध्ये रूपान । मानों कि ऊक लग्यो गिरान ॥
पति बिजकोट चहुआन सेन । चालुक क चूर किभी सुरेन ॥ छं० ६१ ॥
चालुक्य राय का प्रकेसे रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर
संग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना ।

ब्रह्मा—चालुककां परि सूर रन । सहस्र एक मुर सत्त ॥
चूक चित चूकी चितन । अं अचिज्ज विधि बत्त ॥ छं० ६२ ॥
पंच पहर वित्यो समर । दिन अथवंत प्रमान ॥
उमै सत्त रावर 'समर । प्रथीराज सत्त आन ॥ छं० ६३ ॥
दुसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना ।
निस बर घटीति 'सत्तरहि । शेष जाम पल तीन ॥
भिरि भोरा रावर समर । रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ६४ ॥
भोराराय का नदी उत्तर कर लड़ाई करना ।
नदि उत्तरि चालुकक बर । चिपि सुभर प्रथिराज ॥
सुभर भीम उप्पर परे । मनो कुलीगन बाज ॥ छं० ६५ ॥

घमासान युद्ध वर्णन ।

भुजगी -

परे घाइ चहुआन चालुकक मुष्ण । मनो मोप मद मत्त जुट्टे कुरण्यं ॥
बजे कुंन कुंनं समं सेल साही । परी सार टोपं बजी तं त्रघाई ॥ छं० ६६ ॥
झरै सार अग्गी दझै टोप दइक्षं । मनो तं त्रनेतं प्रलैअग्नि सज्जं ॥
फटै गज्ज सीसं सिरं भेदि लोही । घसी भारती कासमीरंति सोही ॥ छं० ६७ ॥
दिए नागमुष्णं गजे तं तबान । ठनककंत घटं फटै पीतवानं ॥
बजे बअ घाई उकतीति चिन्हं । बकै जानि भट्टं प्रसंस्ती इन्हं ॥ छं ६८ ॥
गहै दंत सूरं चट्टे कुंभ तंती । फिरै जोगिनी जोग उच्चारवती ॥
लग्यो हृद्य गोरी गई अंग भेदी । मनो राह सूरं बेटे माहि छोदी ॥ छं० ६९ ॥
दंधी धार मंती सुमंती उछारै । उतककंठ भेळी जु रंभा विचारै ॥
परै घुम्मि सूरं महा रोस भीनं । मनो वारुनी मह प्रथमं सु पीनं ॥ छं० ७० ॥

समय पाकर रावल समर सिद्ध जी का तिरछा
दख बेकर थाबा करना ।

ब्रह्मा—औसरि भर पिच्छे परे । समर तिरच्छी आइ ॥
मानहुं पल हुत्तैसनी । भई बीभछ निवाइ ॥ छं० ७१ ॥

युद्ध लीला कथन ।

त्रिभंगी—निय त्रिय अरि मंनं, बहु वक्रवंतं, ग्यारह जंनं, अति रंगी ।
 त्रिभंगी छंदं, कहि कविचंदं, पढ़न फनिदं, बर रंगी ।
 बिय हुअ नय नालं, बज रिन नालं, असिवर झालं, रन रंगी ।
 सामत भर सूरं, दिठ्टु करं, मिलि 'अरिपूरं, अनभंगी ॥ छं० ७२ ॥
 मनु भान पथानं, चढ़ि बर वान, मिलि बथथानं, असिझारं ।
 ओढन कर डारं, बेन करारं, तामस भारं, तन तारं ॥
 जुट जुट्टिय जुद्धं, जोवति वृद्ध, अरिनि अरुद्धं, अरि बक्कं ॥
 उर धरिचालुक्कं, सूर जहक्कं, 'मुर आतक्कं, धक धक्कं ॥ छं० ७३ ॥
 दल बल पर भोटं, मीस विचोटं, रन रम वोटं, परि उट्टुं ।
 दंतं उष्वारं, कंठय मारं, अरि उत्तार, धत छुट्टुं ॥
 जोगिन किलकारी, हसिंह ततारी, दै दै भारी, हिलकारी ।
 अरि तन नन काठं, परि वेहाळं, चालुक झालं, बर सारी ॥ छं० ७४ ॥
 सामंतों का जोश में धाकर प्रचार प्रचार युद्ध करना ।

कवित्त--बीर बीर आरुच । चढिय बीरं तन हक्के ॥
 चावडिमि विहदुरे । मोह माया न कमक्के ॥
 एक दिनां आहुरे । आदि जुद्धं षिति लग्गे ॥
 के छुट्टे मद मोष । जानि बीरन द्रग जग्गे ॥
 घन घाइनि घाइ आवाइ घन । मति मुमाइ त्रिम्भाइ ररि ॥
 कविचंद बीर इम उक्करे । प्रथम जुद्ध आदीन टरि ॥ छं० ७५ ॥

भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उन
 का नाम ग्राम कथन ।

दूहा—मंश सरट्टिय बीर भर । परिग सुभर दम राइ ॥
 तिय बवास परिगह नृपनि । सिर घुम्मं घट घाइ । छं० ७६ ॥
 कवित्त—पन्थी समर बावास । जित्यो जिन मम चालुविक्रय ॥
 परि भट्टी महनंग । छत्र नष्ठी अरि सक्किय ॥
 पन्थी गौर केहरी । रेह अजमेरी लगिग ॥
 परिग बीर पामार । धार धारह तन भगिय ॥
 रघुबंस पंच पंचौ मिले । बर पंचानन और कवि ॥
 चित्रंग राव रावर लरत । टरय दीह अथवंत रवि ॥ छं० ७७ ॥

१. मो०—मसि ।

२. ए० ह० को०—दुर ।

आधी घड़ी बिन रहने पर पृथ्वीराज से हुसेन खां
का चालुक्य पर आक्रमण करना ।

घरी अद्ध दिन रह्यो । चलिग हुसेन खान भ्रम ॥

चालुक्यां दिसि चल्थो । मोह छंड्यो जु क्रमंक्रम ॥

असि प्रहार चढ़ि धार । मन न मोच्यो तन तोच्यो ॥

अस्त बस्त बञ्जी कपाट । दधीच ज्यों जजोच्यो ॥

बर रंभ बरन उतकंठती । सूर हूर उत कंठ मिलि ॥

दिल्लीव ढोल जीरन जुगं । गल्ह बीर जुग जुग चलि ॥ छं० ७८ ॥

एक दिन रात्रि और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज
की जीत होना ।

दूहा - निसि दिन घटिय तिसत्त बर । दल चहुआनन चीन्ह ॥

भिरी भोरा रावर रिनह । रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ७९ ॥

गुरजर राय भीम देव का भागना ।

भ्रिगि भग्गो सुत भुअंग को । गरुड़ समर गुर राज ॥

फिगि पच्छो पुंछी पटकि । बिन सु गरब तजि लाज ॥ छं० ८० ॥

कवित्त - षेत जीति चित्रंग । हृथ्य चढ्यो बहुआनं ॥

के श्रीरी भर सुभर । लीन अप्पह पर आनं ॥

केरु किए परलोक । मुक्ति लभ्यो जुग जानं ॥

पंच तत्त मिलि पंच । सार धारह लगानं ॥

चहुआन समर इकतन्नि मह । तहां सेन उत्तरि सुभर ॥

चालुक्य भीम पट्टन गयो । करी चंद कित्तिय अमर ॥ छं० ८१ ॥

कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई ।

चोपाई - अमर कित्ति कविचंद सु अष्वी । जा लगि ससि सूरज नभ सप्यी ॥

इह काया माया जिन रष्वी । अत काल सोई जम भष्वी ॥ छं० ८२ ॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्वल भेष धारण कर स्वप्न में

पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना ।

दूहा - निसि सुअंतर राज पै । कित्ति आइ कर जोर ॥

नीतन अति उज्ज्वल तनह । नीद नपति मन चोर ॥ छं० ८३ ॥

कीर्ति का कहना की हे क्षत्री मैं तुझे दर्शन देने आई हूँ ।

जपि जगाइ सोमेस सुअ । मदन भीम चहुआन ॥

देत रूप छत्री प्रकृति । दरसन तवही पान ॥ छं० ८४ ॥

१. ए० गुर ।

२. ए० छं० को०-छत्री ।

कोटि लछन सुंदरि सहज । भय सुंदरि तिन प्रेम ॥
सूर सुभर डरपे रनह । तो सुधीर कहि केम ॥ छं० ४५ ॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन ।

कवित्त— तो कित्ती चहुआन । निदरे संसारह चल्लों ॥
तीन लोक में फिरों । देव मानो उर सल्लों ॥
थान थान द्विगपाल । फिरिव चावहिसि रुंध्यो ॥
तन विसाल उज्जल सुरंग । दुज्जन सिर बुंदो ॥
हूं सार अडर डोरू कहन । जोग प्रमानह उत्तरी ॥
चहुआन सुनो सोमेम तन । भूत भविष्यत विस्तरी ॥ छं० ८६ ॥

द्रुहा - तो कित्ती चहुआन हो । तीनों लोक प्रसिद्ध ॥
धीरज धीरं तन धरै । द्रवै भूमि नव निद्ध ॥ छं० ८७ ॥
हों सु देवि सुंदरि सहज । तुम गुन गुंथित देह ॥
पुष्व प्रेम अति आतुरह । लग्यो प्रेमलह नेह ॥ छं० ८८ ॥
प्रातःकाल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद्र और गुरुराम
को सुनाना और फल पूछना ।

कवित्त— जु कछु लिष्यो लिलाट । सुष्व अरु दुःष समंतह ॥
धन विद्या सुंदरी । अंग आधार अनंतह ॥
कल्प कोटि टर जाहि । मिटै नन घटे प्रमानह ॥
जतन जोर जो करै । रंच नन मिटै विनानह ॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि । बुद्धिअ चंद गुरुराम तरु ॥
बरनी विचित्र राजन बरहि । कही मत्ति मत्ती सु अरु ॥ छं० ८९ ॥
गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये का परास्त करने
वाली कीर्ति देवी थी ।

द्रुहा—इह सुपनंतर चिततह । कहि सु देव जिम कीम ॥
रत्ति बाह बर नरिद सो । दीनों भोरा भीम ॥ छं० ९० ॥
रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज
के सिबिर पर सहसा आक्रमण करना ।

कवित्त— चौकी जैत पंवार । सलष नंदन रचि गढ्ढी ॥
ता सत्यह चामंड । भीम भट्टी रचि ठढ्ढी ॥
महन सीह बर लरन । मार मारन रन चौकी ॥
उठी दिष्ट अरि भोज । प्रात विस्मय बर सौकी ॥
हज्जार पंच अरि टारि कें । भोरा अरि उप्परि परिय ॥
जाने कि पुराने दंग में । अगिग तिनका अरि परिय ॥ छं० ९१ ॥

रात का युद्ध वर्णन ।

रसावला —

रत्ति अच्छी रनं, तेग कद्दी घनं । रत्ति अद्दी मनं, बीज कुद्दी घनं ॥
बीर रस्सं तनं, सार भंजे घनं । हक्की मच्ची रनं, बाह बाहं तनं ॥छं० ९२॥
रंड मुंड घनं ईस इच्छे चुनं । षग भगं तनं, प्राह गंगं जनं ॥
संभ रुद्दी मनं, तार चौसठिनं । भूत प्रेतं तनं, भण्ण दिन्नी घनं ॥ छं० ९३ ॥
जानि सीलं रुद्दी, कव्वि ओपम सुद्दी । मनं भारथ जलं, भेदि उप्पर चलं ॥
॥ छं० ९४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान बीर काम घ्राए, उनके नाम ।

कवित्त — दै अरि पच्छो जैत । पन्यो पांवार रूषन ॥

पन्यो किल्ह चालुकक । संघि चालुकक हजूरन ॥

पन्यो वीर बग्गरी । भयो अग्गर चहुआनं ॥

परि मोरी जैसिघ । सिघ रष्ठी षिजवानं ॥

हलमल्थो सबै प्रथिराज दल । दलमलि दल चालुक गयी ॥

तिय सीत अग्गि अंधार पष । चंद तुच्छ उद्दित भयो ॥ छं० ९५ ॥

दोनो तरफ के छेड़ हजार सैनिको का मारा जाना ।

डूहा — चालुकका चहुआन दल । लुधिय स देढ़ हजार ॥

सब घाइल 'होड़े परिय । तब मुरि मेर पहार ॥ छं० ९६ ॥

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना ।

कवित्त — जंगी सिर चहुआन । लुधिय 'हुंठन उप्परिय ॥

षेत तिरच्छो मुक्कि । षिन्निय लग्गी अरि भारिय ॥

यो आतुर लग्गयो । जान चालुकक न पायो ॥

'कैन्ह बैन संभलियं । फेर बर भीम घसायो ॥

उच्छरिय पानि बर मद् भिरि । संग लोह हक्कारि दुहुं ॥

गुज्जर नरिद चहुआन दुहुं । परि पारस भरथ बहुं ॥ छं० ९७ ॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना ।

बर प्रभात बन होत । होड़ चौहान सु लग्गिय ॥

लरत सूर दिनमान । सिरह चालुक षत षग्गिय ॥

षह धरि बज्जि निसान । रत्ति आई सु भिरतां ॥

लोह किरन पसरंत । सूर विरहत्त 'मथ गतां ॥

१. मो०-दीड़े ।

२. ए०-दहन ।

३. मो०-कैन वन संभलिय फेरि बर भीम घसायो ।

४. ए०-सपरिलिय ।

५. ए० छं० को०-बय रतां ।

बर सूर दिष्य काइर विडुरि । ठटुकि सूर सामंत रन ॥
दिष्यनह सूर इन काम बर । चडि दिष्यन गौ सूर तन ॥छं० ९८॥
दोनो सेनाधो का जी छोड़ कर सड़ना ।

भुजंगी - भिरे सूर चालुकक चहुआन गतं । लरते परते उठे सूर ततं ॥
दिवं दन्दिछनं भीष भिरि वित्रकोटं । परे मार ओटे चहुआन जोटं ॥छं० ९९॥
किए सूर कोटं न हल्लै हलाए । भ्रमी सेन दून रहे हथ्य पाए ॥
रसं बीर आयौ च यौ मोह प्रानं । जिने छत्र बंस धरी ध्यान मानं ॥छं० १००॥
भय्यी चित्त वाहं लजे सूर दिष्यं । तहां चंद कब्बी सु ओपम्म पिष्यं ॥
पियं त्रास पिष्यं सधी पास लग्गी । मनो बाल बद्ध परे पाइ अग्गी ॥छं० १०१॥
अमब्बार ऐसे सनाहंत कट्टं । मनो वीय सौकी इषी भाग वट्टं ॥
उडै काइरं हक्क हरि जीव त्रासं । उपमा करं फुटै नैन पासं ॥ छं० १०२ ॥
मनो पुतली कंठ गदि चित्र लाही । करं जान लग्गी टगं टग चाही ॥
फुटै केकरं तेट तारग झल्लै । मनो नाभि तें कोल सारग फुल्लै ॥ छं० १०३ ॥
दिए नाम मुष्वी गजं हहु षग्गी । पितं तेज आयौ वरं जत लग्गी ॥
उपमा न पाई उपमा न बंची । मनो इद्र हथ्य करं राम षची ॥ छं० १०४ ॥
करी फारि फट्टं करं ऐक कोरं । जकै सिधु भारं जुरै जानु जोरं ॥
पयं जोर ऐसे प्रतंगं चलायौ । भगदत्त छब्बी तहां सूर पायौ ॥ छं० १०५ ॥
गिरे कंध बंधं कर्मंधं निनारै । उरंमा तिनं की न ओपम चारै ॥
हकै सीस नीचं धरं उंव धायौ । मनो भंगुरी रूप नपनी दिषायौ ॥छं० १०६॥
समं पाज घट्टै कितं साम काजं । तिते ऊपरे सूर चडि कित्ति पाजं ॥
बड़े सूर सिद्धं सिधं कोन जोगी । भ्रिगं षल्ल की भति ज्यो षाल ओगी ॥
॥ छं० १०७ ॥

दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते ५ हजार सैनिकों का मारा जाना ।
कवित्त - चढ़त दीह विष्णुहर । परिग हज्जार पं व लुधि ॥
बान बचन भरि नरिद । झारि उच्चारि देव घपि ॥
षट छह बर हज्जार । रुक्कि मंझे चहुआनं ॥
बर कदइन चालुकक । मत्ति कीनी परिमानं ॥
सह सेन बीर आहुठि तहां । तो पट्टनवै कददयौ ॥
उच्चय्यो बंध भट्टी विहर । धार धार अपु चददयो ॥ छं० १०८ ॥

१. मो०-चाह ।

२. को०-जाइ ।

३. ए० क० को०-विषं विषं ।

४. मो०-गहि ।

५. ए० क० को०-गजं ।

६. ए० क० को०-छब्बं ।

७. ए० क० को०-उत्तरे ।

८. मो०-परिवानं ।

पृथ्वीराज की जीत होना धीरे चालुक का भागना ।
 तब रा निगर राव । झुझ धर रावर मंडिय ॥
 रुक्मि सेन चहुआन । षग मगह तन षंडिय ॥
 परिगहिय सब सध्य । गयी चालुक बजाइय ॥
 षभर षेह षग मिलिय । निरति प्रथिराज न पाइय ॥
 बीरंग बीर बज्जर बिहर । भिरत बज्जि निय विप्पहर ॥
 बज्जरत बीय बंभन परत । गयी भीम तन वर कुसर ॥ छं० १०२ ॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना ।

दूहा -- तीस सहस बर तीस अग । गत चालुक रन मंडि ॥
 तिन में कोइ न ग्रह गयी । सार धार तन षंडि ॥ छं० ११० ॥
 बाव सूर कोइ न भयी । घनि चालुक्की सेन ॥
 सामि काज तन तुंग सौ । त्रिन करि जान्यो जेन ॥ छं० १११ ॥
 पृथ्वीराज का रणक्षेत्र दुंडवा कर घायलों को उठवाना
 और मृतकों की बाह किया करवाना ।

कवित्त - षेत दूढि चहुआन । समर उप्पारि समर में ।
 निठ पायी चामड । मिले सब मंस रुधिर में ॥
 है गैबर विभूत । रंक लुट्टी चालुक्की ॥
 किन ह्य हस्थिय लुट्टि । गयोपति प्रब्वत 'मुक्की ॥
 दिन अट्टु राज चित्तीर रहि । बहुत भगति राजन करी ॥
 जोगिनी नपति जुगिनि पुरहाजस बेली उर बर धरी ॥ छं० ११२ ॥
 पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना ।

दूहा -- दिल्ली न दिल्ली गयी । बजि निघात सुदंद ॥
 जिम जिम जस ग्रह राज करि । तिम तिम रचित कबिद ॥ छं० ११३ ॥
 जस घवलो मन उज्जलो । निम्बी पहुमि न होइ ॥
 भूत भविच्छति त्रित्त मन । चित्रनहार न कोइ ॥ छं० ११४ ॥
 इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना ।
 षंडो सुनि पठयो सु ग्र । बज्जि निमानन षाइ ॥
 बर इन्द्रावति सुंदरी । बिय बर करि परनाइ ॥ छं० ११५ ॥
 इति श्री कविचंद्र चिरचिते प्रथिराज रासके करहे रो रावर
 समरसी राजा प्रथिराज विजय नाम क्लीसयो प्रस्ताव ॥ ३० ॥

अथ इन्द्रावती व्याह ।

(तैत्तीसवां समय)

उज्जैन के राजा भीम का चंद्र कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा ।

कवित्त - कहै भीम सुनि भट्ट । सूर बंध्यो मुरही १रिन ॥

दीना सों प्रति प्रीति । मामि करिहै जु मामि मिन ॥

अमृत रत्न विष होत । अमृत रस रत्न उपज्जै ॥

ग्राव ग्राव सों प्रीति । सार मों सार मपज्जै ॥

कटु सों कटु बर बंधियै । नारि नरन मों बाहियै ॥

इह काज राज कविचंद्र मुनि । त्यों बरनी बर चाहियै ॥ छं० १ ॥

कवि चंद्र का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया ।

मुनि भीमंग पेंवार । चङ्गे प्रथिराज प्रपत्ते ॥

समर दिसा चालुकक । सजे चतुरंग सपत्ते ॥

धन्नि मगन तन आनि । किति चहुआन सुनिज्ज ॥

साम दान अरु भेद । दंड मुंदरि ग्रह लिज्जै ॥

मो मत्त सुनो १षर जाइ तौ । ग्रप बर महि कलहत भय ॥

गुर गुरह सब्ब सामंत ए । लज्ज बधि नृव हृथ्य दिय ॥ छं० २ ॥

भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ।

कहै जोइ वरदाइ । मंत कविचंद्र सु आमन ॥

मन वासों मन मिलत । जियत कै कंठ सामन ॥

जो वासुर मुर पंच । १ग मडै चहुआनं ॥

तौ भाविक जिह लेष । तिही ह्वै परिमानं ॥

भावी विगति १भंजन गइन । दइय दुसंकह जानि गति ॥

लिखि बाल मीप दुष सुष्ण दुहु । मत्थ होइ परमान मनि ॥ छं० ३ ॥

१. ए० कु० को०-तत । २. ए० कु० को०-तदिनां । ३. ए० कु० को०-मति ।

४. ए० कु० को०-रत अरत्त विष होइ अमृत रत जुरत उपज्जै ।

५. मो०-कंठ ।

६. मो०-सुजो ।

७. ए० कु० को०-पर ।

८. ए० कु० को०-दिय ।

९. ए० कु० को०-मति आगो ।

१०. ए० कु० को०-भंजी ।

वह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकालुर होना ।

बूहा — सुनि इन्द्रावति सुंदरी । धरनि सरन सिर लाइ ॥

कै धरनी फट्टै कुहर । कै पावक जरि जाइ ॥ छं० ४ ।

इन भव न्रप सोमेस सुअ । जुघ बंधन सुरतान ॥

कै जलद्वि बूडवि मरे । अवर न 'बंधौ प्राण ॥ छं० ५ ॥

सखियों का इन्द्रावती को समझाना ।

कवित्त — सषी कहै सुनि बत्त । सुती दानव कुल कहियै ॥

अवर जाति अन्नैक । राइ 'गुर परनह लहियै ॥

करे कोन परसंग । पाइ अगमद घनसारं ॥

कोन करै कुष्टीन । संग लहि कामवतारं ॥

तो पित्त अवर बर जो दियै । तो नन जंपै अलिय बच ॥

राचियै अप्प राचै तिनह । अनरच्छे रच्छे न मुच ॥ छं० ६ ॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा बचन

कहापि पलट नहीं सकता ।

बूहा - तुम दासी दासी सु मति । मो मति न्रप पुत्रीय ॥

बो लि विन चुककै न नर । जो वर मुक्कै जीय ॥ छं० ७ ॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े

हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते ।

कहै भीम कविचंद 'सुन । स्वामि काम तुम अहु ॥

सेन-सगप्पन रीत नह । तुम दानव कुल बहु ॥ छं० ८ ॥

कवित्त — हौं सु भीम मालव नरिद । मोहि घर बर अच्छिय ॥

सवा लाष मो ग्राम । ठाम संपति बहु लच्छिय ॥

विधि विधान त्रिम्मान । कोन मिट्टै इह बत्तिय ॥

होनहार होईहै पुषष । जंपै गति मत्तिय ॥

तुम कहो नाम बरदाइ बर । गुरुराज बंदे चरन ॥

ओछी सु बत्त बद्धो कथन । एह सगप्पन विधि बरन ॥ छं० ९ ॥

कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य

करना ही बुद्धिमत्ता है ।

बूहा — अहो भीम 'सत्तह सुमति । तुम मतिमान प्रमान ॥

ओसर तकि कीजै 'जुगत । ओसर लहिजै दान ॥ छं० १० ॥

१. ए० इ० को०—छरी ।

२. ए० इ० को०—गुन ।

३. ए० इ० को०—कहि ।

४. ए० इ० को०—सतिममति ।

५. को० इ० ए०—जु रन ।

भीमदेव का पञ्जून से कहना कि तुम्हें बावशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरवीर ही नहीं जानते ।
कवित्त — कहै भीम पञ्जून । सुनौ पामर मतिहीना ॥

अमत कियौ तुम मत । बरन बरनी षग लीना ॥
तुम सहाब बलि बंधि । गर्व मिर उप्पर लीना ॥
गिनौं और तिल मत्त । कह्यौ न सुन्यो तुम कीना ॥
छत्रीन बंस छत्तीस कुल । सम समान गिनियँ अवर ॥
घरु जाहु राज मुक्की बरन । करन व्याह उछ्छाह नर ॥छं० ११॥
जंतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो ।

जंतरव जम जंत । नैन लल्ले करि बोलै ॥
अहो भीम करि नीम । वत्त पहली तुम भोलै ॥
बल बलिष्ट केहरिय । स्यार क्यों मुष वर घल्लै ॥
लोक भाष बुझी न । न्योत बैरी को मिल्लै ॥
हम कज्ज लज्ज साईं घरम । क्यो कदुदय मुष बत्तरिय ॥
सु विहान बरन थपै मरन । आज तुम्हारी रत्तरिय ॥छं० १२ ॥

भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है ।

हुहा — तब कहि भीम नरिंद सुनि । अहो सु गुर दुज राम ॥
अमत मत्त मंडी मरन । इह सु कोन धम काम ॥ छं० १३ ॥
गुरुराम का ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना ।

कवित्त - त्रिया काज सुन भीम । मिल्यौ सुग्रीव राम जब ॥
कहिय बत्त पय लगि । नाथ मो बालि हत्यो प्रब ॥
हरी नारि तारिका । मास षट जुद्ध सु मंड्यो ॥
अस्ति वस्य करि सिथल । अतक सम बर करि छंड्यो ॥
तुम देव सेव रसनौ ग्रहिय । अब सहाय तुम सारयो ॥
बंधियौ सत्त तारहु सु जिय । बलिय बान इक मारियो ॥छं० १४॥
भीम का गुरुराम को मूर्ख बनाकर कविचन्द्र से कहना कि जंतराव को तुम समझाओ ।

हुहा — तुम बंधन बंधन सु मति । पढ़ि पुस्तक कहि सुस्त ॥
दो घर मंगल मंडियै । इह घर जानी बस्त ॥ छं० १५ ॥

अहो चंद दंद न करहु । तुम कुल दंद सुभाव ॥

जैतराव 'मिलि राम गुरु । लै काने समझाव ॥ छं० १६ ॥

कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना ।

कवित - कहै चंद मुनि दंद । त्रीय कज रावन बंध्यौ ॥

बैरोचन नर नंद । मारि अप्पन धम भंड्यौ ॥

कंस कन्ह मिसुपाल । कज्ज रुकमनि जुध मंड्यौ ॥

ता बंधव रुकमान । बंध मुंडवि सिर छंड्यौ ॥

सुर अमुर नाग नर पषि पसु । जीव जंत त्रिय कज भिरै ॥

रे भीम सीम चहुआन की । ता बरनी को बर बरै ॥ छं० १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना ।

ब्रूहा - भीम पूछ राधान 'भर । कही सु कीजै काम ॥

जुद्ध जुरे चहुआन मौं । ज्यों इल रषै नाम ॥ छं० १८ ॥

मंत्रो का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को ब्याह दीजिए पर

भीम का इस बात को मानकर क्रोध करना ।

कवित - इह सु नाम 'अन्नाम । जेन नामह घर जाइय ॥

इहै नहीं घर जोग । अगने दीपक दिष्वाइय ॥

पछछें ही भजिजयै । होइ दुज्जना हसाई ॥

इन्द्रावति सुंदरी । देहु चहुआन प्रथाई ॥

मुनि भीम राज ततो तमकि । गई बत्त बुझी मु तुम ॥

हवकारि जैत गुरुराम कवि । षग ब्याह न न करै हम ॥ छं० १९ ॥

सामंतों का परस्पर बिचार बांधना ।

ब्रूहा - उठि चले सामंत सब । करन दंद मति ठाम ॥

जो बरनी बिन पछि फिरें । नृपति न मन्त्रै माम ॥ छं० २० ॥

रघुवंस रामपवार का बचना ।

कवित - फिरि जानी पांवार । राम रघुवंस बिचारी ॥

जीवन जो उब्बरै । मरन केवल सधरी ॥

★महंकाल बर तिथ्य । तिथ्य धारा उदारी ॥

स्वामि धम्म तिय तिथ्य । मुक्ति सौतो न बिचारी ॥

१. मो०-बलि । २. ए०-वैरीचन, वैरीचन । ३. मो०-के बंधव रुकमान ।

४. ए० कृ० को०-बर ।

५. ए० कृ० को०-सन्नाम ।

★महंकाल-महाकाल "उज्जैन्याम् महाकाले" इति निज्जपुराणोक्त बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है ।

पांवार सुबल मालव नृपति । बर समुंद जिम भारयी ॥
 बर नीति किति सुर वर असुर । मुगति मथन संभारयी ॥ छं० २१ ॥
 मतो मंडि सब सध्य । मत्त को बित्त बिचारिय ॥
 बर पट्टन दक्षिण है । धेन लंहे हक्कारिय ॥
 बर बाहर पालिहै । स्वामि पित्रिहै पांवारय ॥
 बर आतुर घाइहै । अप्प संम्हो हक्कारिय ॥
 घर दहै कोस अधकोस बर । फिरि चावदिसि रुघही ॥
 करतार हृथ्य केतिय कला । तिहि दुज्जन फिरि बघही ॥ छं० २१ ॥
 बहुग्रान की फौज के भीमदेव की गोंग्री के घर लेने पर
 पट्टनपुर में कलभल पड़ना ।

दूहा - पंच कोस मेलान करि । लिय त्रप पट्टन धेन ॥
 कूक कहर बज्जिय बिषम । चढिय भीम नृप सेन ॥ छं० २२ ॥
 उंच क्रन अनमिष नयन । प्रफुलित पुच्छ सिरेन ॥
 रंग गंग गौ निजरि लषि । प्रज्जलि भीम उरेन ॥ छं० २४ ॥
 बहुग्रान सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना
 और भीम का उसका साम्हना करना ।

कवित्त - ओसरि बसि सामंत । धेन लृट्टिय पट्टनवे ॥
 बर मंडल उज्जेन । घाक बज्जिय बदनवे ॥
 ग्राम ग्राम प्रज्जरहि । सूर मानव बर बज्जे ॥
 सामंतारी घाक । धार मुविकय बिधि भज्जे ॥
 सभरिय बीर बाहर श्रवन । बाहर हर बाहर चढिय ॥
 चतुरंग सज्जि पांवार बर । अगन हकि अगपति बढिय ॥ छं० २५ ॥
 भीम का का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना ।
 हय गय रथ चतुरंग सज्जि साइक पाइक भर ॥
 आइ मिले मुषमेल । दुहुन कद्विदय असि बर बर ॥
 तेग मार सिर झार । धुंम धुंमर हर लुविकय ॥
 पन्थी घोर अधियार । विछरि निसि ध्रम चक चविकय ॥
 को गिनै अपर पर को गिनै । लोह छोह छक्के बरन ॥
 सामंत सूर जैतहं बलिय । कहत चंद जुगति लरन ॥ छं० २६ ॥

१. गो० सब ।

२. ए० क० को०--"मिले लोह सामंत धुंम धुंमर हर लुट्टिय ।

रघुबंसराय का नाका बांधना और पञ्जून का भीम को
गाएँ घेर कर हांकना ।

बर सिप्रा नदि तट्ट । धाइ सामंत जु रुक्मिण्य ॥
रोकि मुख रघुबंस । घेन पञ्जून सु हक्मिण्य ॥
दुतिय बीर बर टिके । भीस भारथ जिम लगिगय ॥
सूर बिना प्रथिराज । धके जुरि षगन षगिगय ॥
मुकि घेन गठि बंधिय मिलवि । औसर षग कद्विठय लरन ॥
सरि सार तिनंगा तुट्टि बर । तिरदू सर लग्यो सरन ॥ छं० २७ ॥
जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन ।

मोतीदाम—

तुरंगम आउ लहू गुर ठाउ । कला 'ससि संधि जगन्नय पाउ ॥
पयं पिय छंद सु मोतियदाम । कछ्यो घर नाग सु पिगल नाम ॥ छं० २४ ॥
मिले जुध जैतह भीम नरिद । मच्यो जुध जानि वृतामुर इंद्र ॥
बनें षग मग परे घर मुंड । परे भर बध्य मरोरत झुंड ॥ छं० २९ ॥
कटकहि हड्डहि गूद करकक । विछुट्टकि तुट्टहि लुंब लरकक ॥
भमककत बककत घाइल छकक । उरककत अंन सु पाहन तकक ॥ छं० ३० ॥
करककस केम मनो नट भंग । नचे सब सारद नारद संग ॥
रनचिबय बेस उरुध्य पलध्य । परे घर लुठिय उनें उन जध्य ॥ छं० ३१ ॥
करें कर आवध रंड छतीस । तकें छल सांइय धम्म मतीस ॥
नचें भर षपार चौपडि नार । इपी जुध हड्ड अनुद्ध अपार ॥ छं० ३२ ॥
गए भगि सेन मंग्राम सियार । भिदै रवि मंडल सूर मुवार ॥ छं० ३३ ॥
बूहा—आदि सूर पांवार बर । भीम मरन तिन जान ॥

हमसि हमसि संधो भिरे । षग पन मोषन पान ॥ छं० ३४ ॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि ।

पडरी—★अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध सूर । बरि भरत भति दीसे करूर ॥
सकमली संगि फुटि परदि तुच्छ । उपपम। चंद जंपे सु अच्छ ॥ छं० ३५ ॥
बहुल सु माहिं दीसे प्रमान । निक्कयो पंचमो भाग भान ॥
†बर सांग फोरि सिपर प्रमान । छरि महन चंद सो भासमान ॥ छं० ३६ ॥
मानो कि राह ससि ग्रहे घाइ । पैठयो सरन बहुलन जाइ ॥
किरवान बंकि बहुडे बिसाल । मनुं ससिअ होर कदि चक्र लाल ॥ छं० ३७ ॥

१. मो०-सति ।

★ छन्द ३५ से ३८ तक का पाठ मो० प्रति में नहीं है ।

† यह शक्ति मो० को० छं०-इत्यादि प्रतियों में नहीं है ।

सिध्पर सुमंत करि तुट भमाइ । मानहु कि चक्र हरि घरि चलाइ ॥
 इहुं सेन तीर छुट्टे समूह । मानों द्वपति पंथिय सजूह ॥ छं० ३४ ॥
 कटि इसी तेग घाइय पहार । मनु श्रम इंद्र सज्ज्यो संभारि ॥
 विरचै जु सूनु बाहै विहथ्य । दिषि दूर चढिद मनमथ्य रथ्य ॥ छं० ३९ ॥
 भरहरै सम्ब पाइल सुभार । रिन 'रूप देव दिसि सूर पार ॥
 गुरहरी भेरि वर भार सार । बज्जे सु तबल आकास तार ॥ छं० ४० ॥
 शक शक उक्तक बहल दिषीव । ओपम्म चंद तिन कहत हीव ॥
 कट हित सूर जोप्राइ मुक्कि । कटुदंत बाल ज्यों बाल रक्कि ॥ छं० ४१ ॥
 इह सार मुट्ट मिट्टिय डरेन । जानिये त्रिय वयसंधि तेन ॥
 परि सहस सत दोउ सेन बीरारवि गयो सिधु तीरह सु तीर ॥ छं० ४२ ॥
 सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना ।

कवित्त—संज्ञ हेत बहि सार । मार 'करि तुट्टि सनह रिज्ञ ॥
 सो ओपम कविचंद । भ्रंग छुट्टे कि बाल विज्ञ ॥
 टोप 'ओप उत्तरै । परै विपरीत विराजै ॥
 मनो सु भाजन भीम । हथ्य जोगिनि रुध काजै ॥
 यों भन्यो सेन सम बर सुबर । नन हान्यो जित्यो न कोइ ॥
 दोउ सेन बीच सरिता नदी । निस कट्टी बर बीर होइ ॥ छं० ४३ ॥

दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामंतों का
 पान-व्यूह रचकर युद्ध करना ।

होत प्रात सामंत । पान व्यूहं जुध रच्चिय ॥
 मोती भर सामंत । पान कूरंभ रा सच्चिय ॥
 बर हरिन्य उध्यट्ट । पत्ति मंडी 'गुन राजै ॥
 'लाल हा कविचंद । मट्टि कनइक दुति साजै ॥
 'नालीब रूप लीनो बरन । राम सुबर रघुवंस भिरि ॥
 कोदनि सुरंग पंती करिय । बंय सहस पुंडीर परि ॥ छं० ४४ ॥

युद्ध वर्णन ।

मालती—तिथ पंच गुरु, सत सत्ति चामर, बीय तीय, पयो हरे ॥
 मालती छंद, सुचंद जंपय, नाग षग मिलि, चित हरे ॥

१. ए० क० को०—दूप राव ।

३. मो०—कट्टि ।

५. मो०—मुष ।

७. ए० क० को०—नाग ।

२. ए० क० को०—नीर ।

४. मो०—जोट ।

६. ए० क० को०—गुर ।

८. मो०—नालीब ।

नव सूर सलि ललि, अरिन अल मिलि, लोह भिल मिल, निक्करे ॥
 बर सूर तल छुटि, लजन नट्टय, बीर सबदन, बर भरे ॥ छं० ४५ ॥
 मिलि सार सार, पहार बजि घट, उघटि नट जिमि, तानयी ॥
 झलमलत तेरु, सकति बंकिय, ओपमा कबि, मानयी ॥
 मनों बिट्टु जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं ॥
 घन सूर धार, अघार जन जिन, धार धार, जनेकियं ॥ छं० ४६ ॥
 चिहुं दिसा चाहं, सूर बह बह, जूट चल्लं, निद्वयं ॥
 मनु रास मंडल, गोप कन्हं, दंप दंपति, बंधियं ॥
 बर अरिर सेन, विडारि चिहु दिसि, करषि काइर, भज्जयं ॥
 बर बीर धार, पवार सेना, परे सोम, अलुङ्गयं ॥ छं० ४७ ॥

युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना और इन्द्रावती का बहुभ्रान के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छोड़ा देना ।

कवित्त - दिन पल्लटथो पांवार । सस्त्र बाहै सस्त्रन पर ॥
 चावदिसि सामंत । भीम बं ठथी सुरंग नर ॥
 तन सट्ट अरि सट्ट । बंधि लीने उज्जेनी ॥
 बल छुटथो संग्रह्यो । दई बर भंभर नैनी ॥
 कविचंद छंडायो बीच परि । बाल सुन्नर सुंदर बरी ॥
 धरि सूर बीर सामंत ही । जुमर जुद्ध इत्तो करी ॥ छं० ४४ ॥
 भीम का सब सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके उनके घायलों को शौचधि करना ।

दूहा - भीम भयानक भग्रह्यो । सरन राम कविराज ॥
 बर इन्द्रावति सुंदरी । मे दीनी प्रथिराज ॥ छं० ४९ ॥
 जो मति पच्छै उप्पजै । सो मति पहिले होइ ॥
 काज न विनसै अप्पनो । दुज्जन हँसे न कोइ ॥ छं० ५० ॥
 आदर करि आने सु ग्रह । भगति जुगति बहु कीन ॥
 जे भर घाइल उप्परे । जतन जिवाइ सु दीन ॥ छं० ५१ ॥
 षग विवाह भीमंग रुचि । बाजे बज्जन लगि ॥
 मंगल मिलि अलि गावही । गोष गोष निके जगि ॥ छं० ५२ ॥

१. ए० छं० को०-बट ।

२. मो०-तीनयी ।

३. मो०-सु बरः ।

इन्द्रावती का विवाह उरसव वर्णन और सामंतों का पृथ्वीराज को
पत्र लिखना कि भीम वेद ने विवाह स्वीकार कर लिया है ।

भुजंगी—रची बेदिका बंस सोयन्न सोहे । जरे हेम में कुंभ देषंत मोहे ॥
लगी बेद विप्रान सों 'गान झाई' । रचे कुंड मंडप्प सेषं न साई ॥ छं० ५३ ॥
हसे तर्क वितर्क हासं सुरासं । घसे कुंकमं लाल गुल्लाल वासं ॥
उहे बीर 'गोधूरकं वास रेनं । करे भेरि भुंकार गज्जत्त गेनं ॥ छं० ५४ ॥
चवं छंद बंदी ननं पार जान । करे दान हेमं सु विद्या बिनानं ॥
भई प्रीति जेतं सुरा कठ्विरानं । तिनं लेषियं कग्गदं चाहुआनं ॥ छं० ५५ ॥
दूहा—लिषि कग्गद चहुआन दिसि । दिय पुत्री भीमानि ॥

इंद्र धरनि सम मुदरी । कलह कुमल बर बानि ॥ छं० ५६ ॥

इन्द्रावती का श्रृंगार वर्णन ।

नाराच—कन्यो सुन्हानं कामिनी । दिपंत मेघ दामिनी ॥
सिगार षोडसं करे । सु हस्त दर्पनं घरे ॥ छं० ५७ ॥
बसन्न वासि वासनं । तिलक्क भाल भासनं ॥
दुनैन ऐन अंजए । चलं चलंत षंजए ॥ छं० ५८ ॥
मुहंत श्रोन कुंडलं । ससी रवी कि मंडलं ॥
सु मुत्ति नास सोभई । दसन्न दुत्ति लोभई ॥ छं० ५९ ॥
अनेक जाति जालितं । घरंन पुप्फ मालितं ॥
झंकार हार नोपुरं । घमकि घुघरं घुरं ॥ छं० ६० ॥
विलेपि लेप चंदनं । कसी सु कंचुकी घनं ॥
सु छुद्र षंटि षंट्टिका । तमोल आप अंटिका ॥ छं० ६१ ॥
कनक्क नग्ग कंकनं । जरे जराइ अंकनं ॥
बिसाल वानि चातुरी । दिषन्न रंभ आतुरी ॥ छं० ६२ ॥
अनेक दुत्ति अंग की । कहंत जीभ भंग की ॥
सहस्स रूप सारदं । सरन्न रूप नारदं ॥ छं० ६३ ॥

इन्द्रावती का मंडप में सखियों सहित ग्राना और पृथ्वीराज के
के साथ गठबंधन होना ।

दूहा—करि श्रृंगार अलि अलिन सेंग । रिम झिम झुंडन मंझ ॥
बसन रंग नवरंग रंगे । जानु कि फुल्लिय संझ ॥ छं० ६४ ॥
घोपाई—कर गहि षग्ग मग्ग चहुआनं । बरन इंद्र सुंदरि बर बानं ॥
मन षंठे मंठिय श्रिय जानं । जानकि देव विहाह विवानं ॥ छं० ६५ ॥

भीम का बहुमान को भावरी दान वर्णन ।

ब्रूहा—सत हृथी ह्य सहस विय । सा कृति साजि अनूप ॥
हथलेवौ बहुआन कों । दियो भीम वर भूप ॥ छं० ६६ ॥
नग्न चरित चौडोल सौ । पुर सत वासिय सथ्य ॥
दे पहुंचाइय सुंदरी । कही बनै बर गथ्य ॥ छं० ६७ ॥
गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा ।
मात पुत्ति परठिय सुमति । विधि विवेक विनयान ॥
पति वृत सेवा मुष घरम । इहै तत्त मति ठान ॥ छं० ६८ ॥
षति लुप्यै 'लुप्यै जनम । पति बंबे बंचाइ ॥
इहै सीष हम मन धरी । ज्यों सुहाग सचवाइ ॥ छं० ६९ ॥

पृथ्वीराज का बंदियों को दान वेना ।

बंदिन दान प्रवाह दिय । लिय सुंदरि जुध जीति ।
दुहुं जस त्रम्मल छंद 'गुन । पढ़न कविन इह रीति ॥ छं० ७० ॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त—घनि सामंत सनध्य । जेन त्रप बिन जुध जित्तिय ॥
घनि सामंत समध्य । जेन जस किट्टि विदित्तिय ॥
घनि सामंत समध्य । जेन बरनी बर संध्यौ ॥
घनि सामंत समध्य । जेन भीमंग 'रन बंध्यौ ॥
सामंतं घन्नि जिन कित्ति बर । दिल्ली दिस पायान कर ॥
बैमाष मास अष्टमि सितह । कित्ति संचरिय देस पर ॥ छं० ७१ ॥
विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन ।

दिल्लिय पति मिनगार । हट्ट पट्टन की सोभा ॥
गोष गोष जारीन । दिष्षि त्रिय नर सुर लोभा ॥
भूंगल 'भेरि नफेरि । नह नीसान अदंगा ॥
नाना करत संगीत । ताल सों ताल उपंगा ॥
गाजंत नम्भ गज्जिय गुहिर । त्रप प्रवेस सुंदरि करि ॥
सामंत जैत पयलगि प्रथ । प्रथक प्रथक परसंस करि ॥ छं० ७२ ॥

बहेज वर्णन ।

अ्यार अग च्यालीस । मत्त अप्ये गजराजिय ॥
सौ तुरंग तिय अग । बीस चव अथि सु पाजिय ॥

१. मो०—ठप्ये ।

२. मो०—गुर ।

३. ए० क० को०—बर ।

४. ए० क० को० फेरि न फेरि ।

इक अमोल सुंदरी । सत्त तिय दासिय त्रिटिय ॥
 सब सप्य सामंत । रहे भर करिय अमितिय ॥
 सामंत करी प्रथिराज बिन । करै न को रबि चक्क तर ॥
 सुंदरी सहित अरि जीति कै । गए बीर अष्टमि सु घर ॥ छं० ७३॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना ।

ब्रह्मा - बर अष्टमि उज्ज्वल पषह । तियि अष्टमि रवि 'भीर ॥
 अष्ट कोस दिल्लीय तें । त्रिय मुक्किग तिन बीर ॥ छं० ७४ ॥

उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन
 का पत्र देना ।

गय सुंदरि सम्हो न्रति । गनन करन चहुआन ॥
 लोहानी सम्हो मिल्यो । दे कग्द 'सुरतान ॥ छं० ७५ ॥
 लोहाना का कहना कि सुरतान बंड देने से फिर कर
 दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है ।

कवित्त—मेषगगाही सेन । दंड पलठयो सु विहानं ॥
 अपुठो भर चतुरंग । सजे दस गुनो प्रमानं ॥
 बर कमान घुरसान । रोहि रगे रा गष्यर ॥
 हबस हेल षंधार । सजिज घल्ली फिर पष्यर ॥
 पंजाब देम पंचो नदी । बर नंगे मंगी सु बर ॥
 चहुआन राह मै 'मगिगली । मते मच्छ कट्टन उगर ॥ छं० ७६ ॥

पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुँचा कर युद्ध को नैयारी करना ।

ब्रह्मा—मुनिय साहि गोरी सु बर । बर भरयो चहुआन ॥
 ले सुंदरि पच्छो किन्थी । बर बज्जे नीमान ॥ छं० ७७ ॥

इन्द्रावती का रहाइस ।

दिस दच्छिन तच्छिन महल । सुंदरि समुद समपि ॥
 सकल सत्त दासी अनुप । नृप इन्द्रावति अपि ॥ छं० ७८ ॥

सुहागस्नान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों
 सहित पृथ्वीराज के पास घाना ।

कवित्त—अगर कपूरति महल । सार धनसार सु रम्मिय ॥
 धूप दीप सुगंध । दीप दस दिस वृत् 'जम्मिय ॥

१. ए० क० को०—बीर ।

२. ए० क० को०—चहुआन ।

३. बी०—त्रियली ।

४. ए० क० को०—नम्मिय ।

सेज सुरंगति रंग । हेम नग जरे जरानं ॥
दिए भीम भूपाल । भोग साजं सु सदानं ॥
त्रप देवि अचंभ समानि मन । मुष आतुर देवन महल ॥
आनिय मु सेज त्रिय अलिन मिल । अलि गुंजत उप्पर चहिल ॥ छं० ७९ ॥
इन्द्रावती की लज्जामय मंद खाल का वर्णन ।

बुहा— हंस गवन हंसह सरन । गनि गति मति सारह ॥
रूप देवि भूल्यो त्रपति । रचिय विरचि बिहद् ॥ छं० ८० ॥
सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना ।

कवित्त— रस विलास उप्पज्यो । सषी रस हार सुरत्तिय ॥
ठाम ठाम चढि हरम । सह कहकह तह मत्तिय ॥
सुरत प्रथम संभोग । हंह हंहं मुष रट्टिय ॥
ना ना ना परि नवल । प्रीति संपति रन थट्टिय ॥
शृंगार हास्य करुणा सु रुद्र । बीर भयान विभाछ रस ॥
अदभूत संत उपज्यो सहज । सेज रमत दंपति सरस ॥ छं० ८१ ॥
सुकी सरस मुक उच्चरिग । गंध्रब गति सो ग्यान ॥
इह अपुठब गति संभरिय । कहि चरित्त चहुआन ॥ छं० ८२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज्ज रासके इन्द्रावती व्याह
सामंत विजं नाम तेतीसमों प्रस्ताव संपूरणः ॥ ३३ ॥



अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते ।

(चौतीसवां समय)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना ।

कवित्त—किहि भेषत प्रथिराज । किहित भेषन चिहु पास ॥
किहि भेषत दिसि विदिमि । कही मनया उल्हासं ॥
किहि उमाह उच्छाह । कोन ओपम द्रग राजै ॥
सो उत्तर कविचंद । देव गुरराज विराजै ॥
सजि मान बीर चतुरंगिनी । कमल गहन सुरतान बर ॥
नव रस विलास जस रस सकल । तरे तुग चहुआन बर ॥ छं० १॥

ढाई वर्ष पश्चात् पृथ्वीराज का षट्ठू बन में शिकार खेलने का जाना और नीतराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना ।

नीतराव शित्रीय । भेद ले ग्रह चहुआन ॥
दिल्लि कौ 'गृह भेद । लिष्यौ कग्गद सुरतानं ॥
बरष उभै षट मास । फेरि सु विहान पलान्यौ ॥
षट्ठू बन प्रथिराज । बहुरि आपेटक जान्यौ ॥
सामंत सूर सध्यहन को । बर बराह बर पिल्लइय ॥
देवान जोष चहुआन बर । भिरि दुग्जन भर ठिल्लइय ॥ छं० २ ॥

पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जंतुओं की गणना और षट्ठू बन में शहाबुद्दीन के दूत का ग्राना ।

सत चीता द्वादसति । स्वान अच्छे सु रंग दह ॥
बीय अग च्यालीस । सीह बर गोस कहंदह ॥
सत्त सत्त अग अच्छ । सत्त दह अगति 'पाजी ॥
आषेटक प्रथिराज । बीर ओपम अति राजी ॥
उप्परति राय षट्ठू ति बर । मिलि बसीठ गोरी सु बर ॥
मंगे हुसेन साहाबदी । पंच देस बंटन सु घर ॥ छं० ३ ॥

१. गो०-बर ।

२. ए०-पाजी ।

पृथ्वीराज का सामंतों से सलाह लेना ।

मुबिक राज आषेट । सूर सामंत 'बुलाइय ॥

सुबर साह गोरीस । आनि उप्पर षरि आइय ॥

मंगे घर पंजाब । षान हूसेन सु मंगे ॥

इष्ट भ्रत अवसान । दिए कग्द लिषि अंगे ॥

संगुहे सूर सामंत बर । दे मिलान संम्हो षरिय ॥

चालंत जेम लगत दिवस । झुकि लग्यो गोरी 'गुरिय ॥ छं० ४ ॥

बूहा— बेगि सूर सामंत सह । मिले जाइ चहुआन ॥

सिधु विहृथ्ये दूत मिलि । गोरी वै सुरतान ॥ छं० ५ ॥

अनंगपाल तीरथ्य गय । बंधव रण सुरतान ॥

बैर बीर डिल्लिय 'तनह । बर मंगे चहुआन ॥ छं० ६ ॥

शाहाबुद्दीन के दूत का बचन ।

कवित्त— बर बसीठ उच्चरै । साहि जानो पहिली ना ॥

अप्पी पहु हुस्सेन । साहि 'जानो दस गुना ॥

कंक बंक करतें । नरिद कबहुक घर छिज्जै ॥

भिर गोरी तिन भरह । रहट घट्टी घट भज्जै ॥

दुप्परह छांह दीसै फिरत । भावी गति दिष्ठी किनह ॥

मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर । करहु एक बुडी सुनह ॥ छं० ७ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि ऐ ठीठ बसीठ तू नहीं जानता कि प्रभी

कोन जीता और कोन हारा राज्य सुख के लिये

कलंग्य छोडना परे है ।

अरे ठीठ वस्सीठ । कोन हान्यो की जित्यो ॥

'किन वित्तग वित्तयो । कोन बित्तग अब बित्यो ॥

पंच तत्त पुत्तरी । पंच हृथ्यन कर नच्चै ॥

अजै बिजै गुन वंघि । चित्त तामस रस रच्चै ॥

बंछे जु सुष्य फल राजगति । वह करतार सु नन करै ॥

उच्चरै कित्ति छल ना रहै । तब लग्यो गल बल परै ॥ छं० ८ ॥

कहां गजनी है और कहां बिल्ली और कै वार मैंने उसे बंधी किया ।

बूहा— कै कोसां डिल्ली घरा । कै कोसा गजजाव ॥

बंढा सो 'कर बंधिया । चहुआना 'सुरतान ॥ छं० ९ ॥

१. मो०—बुलाये ।

२. मो०—गुरिय ।

३. मो०—तनह ।

४. मो०—आदी ।

५. ए० कु० को०—विन ।

६. ए० कु० को०—बर ।

७. ए० कु० को०—पुरसान ।

में रण्णी *हुस्तेन बर । बर बंधयी सुरतान ॥

उठ्ठाए बस्सीठ बर । बर बज्जै नीसान ॥ छं० १० ॥

दोनों और की सेनाओं की सजावट की पावस ऋतु
से उपमा वर्णन ।

मोदक—दसमत्त पयो लहु पंच गुरं । षण्ण हरे विष हरे विष पत्त १बरं ॥

बर सुद्ध प्रयान हुल्लास छत्री । कहि मोदक छंद प्रमान कवी ॥ छं० ११ ॥

जु सजी चतुरंगन दान दियं । कबि दोअ सेन उपम्म क्रियं ॥

सुत षंजन ज्यों बुधगत्ति रकी । सति सीतल २बात प्रमान बढ़ी ॥ छं० १२ ॥

बर रत्त रषत्त सुरत्त बनं । तिन की छबि पावस सज्जि घनं ॥

सु बजे बर बीर निमान बजं । सु मनो घन पावस सज्जि गजं ॥ छं० १३ ॥

बजावत बीर जंजीरन सूर । कैंपे सुर बीर पयालनपूर ॥

उडि रेन चिहूंदिसि विध्युरियं । मुदरी द्रग अकृत धुंधरियं ॥ छं० १४ ॥

तिह ठौर रस अप वंधव से । तिनके सुप बाल भुअंग ग्रसे ॥

बर अगमत नेन सु मेन मुचें । तहां कूर नमें नर आइ नचें ॥ छं० १५ ॥

श्रम सूर तिनं अभिलाष रिनं । वर ग्रब्व बलं बर बंसु तनं ॥

कल किंचित संकर सूर दियं । बर बीर अजादन लाज लिय ॥ छं० १६ ॥

सहनाइय सिधुअ अदरियं । तिन ठौर भयानक संचरियं ॥

बर पंच सु दीह ससी चदियं । बर बीर अवाज दिम वदियं ॥ छं० १७ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन
की तरफ बढ़ना ।

गाथा—तं बीरं जल गंभीरं । आव यों उपाटी सेनं ॥

गोरी दिसि चहुआनं । चहुआनं गोरीयं साहि ॥ छं० १४ ॥

इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये
उत्सुक होना ।

कुंडलिया - इह सु राज राज आतुर ३धरिय । सुरतानह प्रथिराज ॥

भूमि भार कछु ४बद्धयो । सो उत्तारन ५काज ॥

सो उत्तारन काज । परे आतुर दोउ दीनह ॥

तिन अर बस चर परे । को इन ६छट्टै मति हीनह ॥

१. मो०-हरं ।

२. मो०-गत ।

३. ए० कु० को०-बाल ।

*हुस्तेन शब्द से यहाँ मोर हुस्तेन से अभिप्राय नहीं है बरन उसके पुत्र से तात्पर्य है जैसा कि समय ३१ में भी दिखाया जा चुका है ।

४. ए० कु० को०-धरिय ।

५. मो०-पार ।

६. मो०-पार ।

७. मो०-छट्टै ।

अप्पन सुसिंह बहुरे 'सुरह । चक्कई चक मुक्कै नहीं ॥
 अप्पन सुहृष्य भरही परै । दया न किण्णै मन इही ॥ छं० १९ ॥
 शहाबुद्दीन का सिध नदी तक घाना और चहुआन को दूतों
 द्वारा समाचार मिलना ।

डूहा - चढ़त सिध सुरतान दल । दूत सपत्ते आइ ॥

चर चरित चहुआन दल । कहै साह सों जाइ ॥ छं० २० ॥

पृष्ठीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ।

कवित्त - नहिन इंद्र प्रथिराज । सोम नंदन सिवरं दिसि ॥

बर इंद्रह दीसै न । महल मंडयो सु दुहु निसि ॥

जबहीं हम संचरे । काल तबही दिसि पासं ॥

परत वाह लष्वंत । दिष्ट देवन सुष बासं ॥

लच्छीन ग्रीव बस बीर रस । दह दिसि भिरि दानव मिलिय ॥

मेलान कोस परपंच को । गौरी वै संम्हौ चलिय ॥ छं० २१ ॥

चहुआन सेना में शूरवीरों का उतसाह करना और
 कायरों का भयभीत होना ।

डूहा - इह अवाज चहुआन दल । बंदि सेन सु बिहान ॥

काइर भर सह उच्चरै । कहि बंधन सुरतान ॥ छं० २२ ॥

कवित्त हाइ हाइ कहि साहि । चरनि वरज्यौ सु विहानं ॥

मुझ्ज रहै कै जाइ । जु कछु पत्तो चहुआनं ॥

बरन मेच्छ बर हिंदु । सुनत रन पन कर हेरी ॥

जय जानी अन पंच । चपं चनुरंग सु भेरी ॥

भुअ बीर रूप गौरी सु बर । मुक्कि भयानक भट्ट जिम ॥

पलटयो भेष देषत सयन । बर बज्जै नीसान तिम ॥ छं० २३ ॥

चलते समय सेना का आतंक वर्णन ।

चंद्रायना - बर बज्जिग नीसान, दिसान पयान हुआ ।

उड्डि उछंगिय रेन, सु मेरनि भान जय ॥

गौरी वै भो राह रयन हर मिगई ।

गज असवारन सूर निव्रत्त सु लगई ॥ छं० २४ ॥

शाही सेन की सजावट की वर्णन ।

गीतामालवी - गुर पंच सत्तति चामरे कवि, जोग नव गति संघयो ॥

सब पाइ सिंगल सावरे लहु, बरन अचिछर बंधयो ॥

लगी गीत मालति छंद चंदय, दवरि साहित गोरियं ॥
 गज मद् नद्य छिरहृ भद्य, अननि दिन दिन जोरयं ॥ छं० २५ ॥
 घन चढधी गिरि जनु चले दिस दिस, बीय बग उरब्बरे ॥
 तिन देषि मन गति होत पंगुर, दान छट्टि पटे भरे ॥
 गजदंत कतिय झलकि उज्जल, पिप्पि पंतन रा डयं ॥
 रबि किरनि बद्दल पसरि धावै, वाय पंकति मज्जयं ॥ छं० २६ ॥
 गज करत दंत मुमंन ऊरध चंद, उग्रम मंडिकै ॥
 मनो बग पंतिय वार, 'उड़गन मोह दिसि सो छंडिकै ॥
 घर मत्त दंतिय सेन वंधिय, इम्भ छबि 'कवि तामयं ॥
 मनो मेघ बरषत विज्ज कोधन, अम्भ बुढि गिरि स्यापयं ॥ छं० २७ ॥
 गति नाग गिरबर गात दीसै, कूट कज्जल उज्जले ॥
 घर चलत गिरबर बहन, स्याम बद्दल हलचले ॥
 'झटकंत सुंड दिपंत पाइक, बनि समथ पमु पुज्जवै ॥
 अति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति लज्जवै ॥ छं० २८ ॥
 त्रय लष्व मीरनि साह गोरिय, भार झुझ अलुझवै ॥
 पुरसान पान अरक्क आरव, सज्जि सेन 'सझ्जवै ॥ छं० २९ ॥
 शाहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि
 अब की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय ।

भ्रमरावली - सजे बर साह तुरंगम तुंग । लजे कविचंद उपम कुरंग ॥
 सितं सित चोर गुरै गत्र गाह । तिनं उपमा बरनी नन जाइ ॥ छं० ३० ॥
 जु सजे ह्य गोरियसाहि षरे । तिन देषि रवी रथ के विसरे ॥
 दिषि सेन तिनं उपमा सु करी । सु मनो नदि पूर छिली दुसरी ॥ छं० ३१ ॥
 'कहि चंद कविद इदं कवित । गुरु बक पिष मन मन कै चढत ॥
 बजि बाज कुहू घर सह पुरं । सु मनो कठतार बजंत तुरं ॥ छं० ३२ ॥
 गज गाह गुरं सित सोभ षगे । मनो सेत केऊरन भान उगे ॥
 नभ कै तिमरं जिन के समरं । मनु उट्टि किरन सु पाल परं ॥ छं० ३३ ॥
 बिय ओपम चंद बनी बनिकं । सु घसें मनु गग तरंगनि कै ॥
 जग हृद्य बने ह्य के सिरयं । गलि प्रव्रत हेम दुमं बरयं ॥ छं० ३४ ॥
 बर पष्वर सोम करै तनयं । मनु अक्क अरक्क बिचै घनयं ॥
 तिनकी हर बाय फुलिग सजे । सु कहै कविचंद कुरंग लजे ॥ छं० ३५ ॥

१. ए० क० को०-उडन ।

२. ए० क० को०-इम्भ छबिदता, छबिद ।

३. मो०-झटकंत ।

४. ए०-पुज्जवै

५. ए० क० को०-बज्जवै ।

६. मो०-कविचंद ।

बुहु रैनन आसन जो डरयं । 'मग मत्त मनो बहरें बनयं ॥
 मन मत्ति तिहां इत असि पढ़ी । हय नष्वत रागम सांस कढ़ी ॥ छं० ३६ ॥
 बिय बाय अरक्कन बंध बढै । कबिचंद पयन्नन बाद बढै ॥
 सु उडै नन घावत धूरि पुरं । गतिमान सुसील विसाल उरं ॥ छं० ३७ ॥
 पय मंसत अश्वत आतुरयं । विरचे नच पातुर चातुरयं ॥
 दुहु पार अषार अबद्ध धरी । मनुं गावहि इंदुन बंध धरी ॥ छं० ३८ ॥
 हय अप्पिय भ्रतन साहि बरं । जु गहो चहुआन पयाल पुरं ॥ छं० ३९ ॥

प्रातः काल होते ही जमसोजखां घोर नवरोजखां का
 युद्ध के लिये सेना तैयार करना ।

बूहा - सबे सेन गोरी सु बर । चढ़िग धान जमसोज ॥

प्रात सेन चतुरंग सजि । उठि धान नवरोज ॥ छं० ४० ॥

चहुआन का सेना तैयार करना ।

चौपाई—

ढल 'मिली ढाल चिहुं दिसि बनाइ । 'डम्परी उडिड आकाम छाइ ॥

अचरनचरन गोरीन 'साई' । सेन चहुआन हृष्ये बनाई ॥ छं० ४१ ॥

बोनों सेनाओं का मंहजोड़ होना ।

बूहा - समर सउप्पर समर किय । चानदिसि अरुनग ॥

सुष गोरी चहुआन भिरि । ज्यों रावतु लगि अग ॥ छं० ४२ ॥

चौपाई—

समह्यो रन चहुआन सपट्टिय । वजिग वाय सुस्मिन 'नदि उट्टिय ॥

धुंधर अन बट्टर निसि भट्टो । सुस्मिन न अंध कन्न सुनि नट्टो ॥ छं० ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन ।

कवित्त - अट्ट अट्ट जोगिनिय । सुक्क सम्हो सुरतानं ॥

दिसा सूल दिसि बाम । बेर कन्हा चहुआनं ॥

सिष बाम भैरवी । गहक बोली गोरी दिसि ॥

गुर पंचम रवि नवों । राह ग्यारमो सुरंग मसि ॥

ईसान मध्य देवी पहकि । गहक मक्षत घू घू बहक ॥

आकास मट्टि गज्यो गयन । परों बूँद बेवंग हक ॥ छं० ४४ ॥

बूहा—ज्यों जगदीसह कान दी । तकसी रन किहुं कीन ।

मिलि उत्तर पच्छिमहुं तें । भिरन भरन दोउ दीन ॥ छं० ४५ ॥

बोनो सेनाओं में रन बाद्य बजना और उससे सूर बीर लोगों
तथा घोड़े इत्यादि का भी प्रसन्न होकर सिहनाद
करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना ।

भुजंगी—

परे घाइ घोइ दीन हीनं न जुद्धे । मुपं मार मारं निनं मान मद्धे ॥
परी आवधं होइ बज्जै निमानं । बजे हक्क सूरं दमामे न जानं ॥ छं० ४६ ॥
बड़े आवधं हृथ्य सामंत सूरं । घुरं वै निमानं बजै जैत 'पूरं ॥
कढ़े बे सनाहं झनक्के उनगी । मनो आवधं हृथ्य बज्जै विनगी ॥ छं० ४७ ॥
परं पीलवानं मढं 'मरक दंती । ढली ढाल ढालं ढलक्क तुरती ॥
फुरै हृथ्य ऊनं मुरक्की उरक्की । मुरं धार धारं मृघारं मुरक्की ॥ छं० ४८ ॥
तुटे सिप्परं कोर फूलं समती । ग्रस्यौ राह सूर छटै नभ्भ हुंती ॥
परं सार तीरं छनक्कंत बज्जै । सद तीनरं जेम सो पच्छि गज्जै ॥ छं० ४९ ॥
बहे सीर गोरी पछै दै सभानं । भगं पच्छिनी पंति पावै न जानं ॥
तुटे सीस जुझसै कमधंत नच्छवं । चले रुद्धि धार चिहूं पाम गच्छै ॥ छं० ५० ॥
घरा भारती गंग पारथ्य आई । मनो उपठि सो सिध को मिलन घाई ॥
फटी वारि धारं चली ईस सीस । लगे धार धारं रजं रज्जकीम ॥ छं० ५१ ॥
मनो तप्त लोही परे बूद पानी । ढुंढी लुधिय पावै व नही बहानी ॥
मनं मोद लै सोम मुद्राह कीनी । ॥ छं० ५२ ॥
उठं रद्धं सीमं उपमा समूलं । मनो पावकं प्रलय धो थोन लल्लं ॥
दोऊ दीन घाए मनं कोप रीसं । तिनक्रोध करि धार आकाससीसं ॥ छं० ५३ ॥
परं लुधिय लुधयी अलुधयी जबै वं । इसी जुद्ध देशी न दानव्व देवै ॥ छं० ५४ ॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का
साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ।

कवित्त— त्रितिय पहर पर पहर । बीर घरियार ठनक्किय ।
गोरी वै सो हृथ्य । चंपि चहुआन सु 'तक्किय ॥
घरिय इक्क वनि सेन । सूर सामंत परण्णिय ॥
घरि ओइन करि बग्ग । बैर मु विहान परिवक्किय ॥
कर वार धारि सिप्पर करह । एक होइ उपपर तरै ॥
दिसि बाम चंपि दुज्जन दलह । उसरि सेन मम्हो भिरै ॥ छं० ५५ ॥

१. मो०—सूरं ।

२. ए० ह० को०—सरक दंती ।

३. मो०—वक्किय ।

४. ए० ह० को०—सिप्पर ।

पृथ्वीराज का अपनी बीरता से शत्रु सेना को विह्वल देना ।
 शिक्षि नन्धो है नरिंद । भूभि धुञ्जय पुरतारं ॥
 मनो बहर 'गज्जयत । सह पर सह पहारं ॥
 उड्डि नाल चमकि । मक्षस धुंधर छबि लगिय ॥
 रबि ओरम कविचंद । चंद मावस घन उगिय ॥
 अरि सेन भगिग दिसि विड्डुरिय । परे मध्य सेना घनिय ॥
 घनि घनि नरिंद सोमेस सुअ । इहु अरि तें तिन वर गनिय ॥छं० ५६॥

इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सरदारों के नाम ।

इत्त षान मारुफ । फिरत उसमान षान ढहि ॥
 इन दुज्जन ह्य नंषि । बाग आजान बाह गहि ॥
 इतं दीह अध्धम्यो । सूर वर सिधु सपन्नो ।
 मुकत तट्ट मिलि सूर । स्याम रन अप्प अपन्नो ॥
 साषला सूर सारंग ढहि । जुरि जुवान पंचाइनो ॥
 केहरी गौर अजमेरपति । पन्थो सुडिन्न रन भाइनो ॥ छं० ५७ ॥

सूर्योदय के समय की शोभा वर्णन ।

दूहा — निसि घट्टिय फट्टिय तिमिर । दिसि रत्तो घवलाइ ॥

सैपव में जुव्वन कछ । तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥ छं० ५८ ॥

दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तैयारी होना ।

कवित्त — जाम निसा पाछली । सेन सज्जिये दोउ बीरं ॥

सामंता चहुआन । आनि गोरी कछमीरं ॥

भान पयानन भयो । करे द्रिग रत्तह चडिडय ॥

ता पहिले पायान । जोध रन असुरन कडिडय ॥

आदिहार वीर गोरी सुवर । चाहुआन दिन सुदिन घन ॥

करतार हृथ्य किर्त्ती कला । लरन मरन तकसीर नन ॥ छं० ५९ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन ।

भुजंगप्रयात —

पन्थो साहि गोरी सुरत्तान गाजी । चपी 'गज्ज' सेना क्रमं पंच भाजी ॥

तहां बाहुन्थो बीर बीरं नरिंद । लग्यो धार धारं सची कित्ति चंदं ॥ छं० ६० ॥

अनी एक मेकं घरी अद्ध पच्छी । फटी सेन गोरी मुरी सो तिरच्छी ॥

दोऊ दीन बाहू दोऊ हृथ्य लोहं । पन्थो जानि वाराह पारडि रोहं ॥ छं० ६१ ॥

कटे कंघ बंधं कंघं निनारे । मनो पत रत्तं बहंतं सुडारे ॥

ननं अघ बल्लै बल्लै हृथ्य रोजं । ननं चित्त बल्लै रबो रथ्य दोजं ॥ छं० ६२ ॥

१. ए० छं० को०—गज्जत, गरजत ।

२. मो०—सपत्नी ।

३. मो०—शरत ।

४. ए० छं० को०—राज ।

घनं अश्व फेरें चलै अश्ववाहं । तिनं की उपमा कवीचंद गाहं ॥
 ग्रहं पति अगै रहै ज्यों कुलट्टं । चित्तं वृत्ति चल्लै अगै स्वामि घट्टं ॥छं० ६३॥
 बरं कज्ज माला ग्रही रंभ सध्यं । चढ़े धार धारं भिदै रव्वि रथ्यं ॥
 रही रंभ रंभी टगंटग आई । मनो पुत्तली कट्ट करसी लगाई ॥ छं० ६४ ॥
 हहंकार बीरं हहंकार पाई । मनो पातुरं चातुरं सो दिषाई ॥
 दोऊ बाह सेना दोऊ बीर ठेलं । मनो डिभूरू जानि 'हड्डूड षेल ॥छं० ६५॥
 तजे आवधं सब्ब इक तेग साहं । करे भाग बिबं अरी कोप वाह ॥
 जबै विड्डुरी सेन गौरी नरिदं । दिषे थान थान मनो प्रात चंदं ॥ छं० ६६ ॥
 परे थान चौसठि दुहं बाहु राई । दुहं मुक्कती रास कवि किति गाई ॥छं० ६७॥
 शहाबुद्दीन का हाथीपर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना ।
 दूहा—परत साहि गोरी सुधर । है गै भूमि भयान ॥

रन रंध्यौ सुरतान को । परी बीटि चहुआन ॥ छं० ६८ ॥

शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना
 और यवन बीरों का शाह की रक्षा करना ।

भुजंगी-परी बीट गोरी मुरे मीर थानं । तबै माहि गोरी गह्यो कोपि वानं ॥
 न को कंध कट्टे चाहुआन तिनं । पयो धाइ पावार भर सलष दिन्नं ॥६९॥
 लग्यो सत्त बेनं सुलित्तान साह्यो । तहा मीर मारुफ अगं गुरायो ॥
 घरी अद्ध सुइयो करी छत्र धारं । बहै सब्ब सामंत विचि तीन धारं ॥छं० ७०॥
 तुटे आवधं सब्ब अरि ह्य्य लाजी । तबै आइ सीसं 'गुरज्जंत वाजी ॥
 गजं गहन प्राहार निट्टे डहायो । तबै गज्जनी साह पावार साह्यो ॥छं० ७१॥
 जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज
 के सम्मुख प्रस्तुत करना ।

कवित्त—गहि गोरी सु विहान । ह्य्य आप्पो चहुआनं ॥
 चामर छत्त रषत्त । तषत्त लूट्टे सुरतानं ॥
 गोरी बै हुस्सेन । बीर 'तुट्टे आहुट्टिय ॥
 मान तुगं चहुआन । साहि मुष के बल षुट्टिय ॥
 मध्यान भान प्रथिराज तप । बर समूह दिन दिन 'चढ़े ॥
 जस जोति मंत संभर धनिय । चंद बीज जिम बर बढ़े ॥छं० ७२॥
 इति श्री कविवचं बिरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेटक मध्ये
 गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बंधन
 चौतीसमो प्रस्ताव संपूर्ण ॥ ३४ ॥

१. ए०-हड्डूड ।

३. ए० छं० को०-पुटे ।

२. ए० क० को०-गुरं गुरज ।

४. मो०-बढ़े ।

अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पैंतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं
कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूं और आप
इस का वचन भी दे चुके हैं ।

कवित्त -- कितक दिवस निस मात । आइ जालंधर रानी ॥
कहै राज सों बचन । हूं सु कांगुर दुग जानी ॥
तो तुट्टी कर पान । लेह में वाचा दषिष्य ॥
भोट भान धुर जीति । पल्ह पच्छें फिरि अषिष्य ॥
हम्मीर भीर अगों करै । दल भज्जै मति सति करि ॥
बरनी सु लच्छ लच्छी सहज । परनि राज आवहु सु घर ॥ छं० १ ॥
पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना ।

दूहा -- चलय राज कांगुर दिसा । दयो भाट फुरमान ॥
कं आवे हम सेव पय । कं जीती नप भान ॥ छं० २ ॥
दूत के बचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का
क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ।

कवित्त -- तत्र मुनि भान नरिंद । सत्रद उष्भार अतुर बर ॥
रे जंगली जुवान । मोहि पुज्जै अप्पन बर ॥
जो षजुआ अति तेज । तोइ का दिनयर लोपे ॥
जो इवना अति सूर । तोइ का भाठी कोपे ।
हं नीति जानि अन्निन न करि । तूं लोभी आतुर आतुर ॥
इनि बात मोहि आगे अवन । आई फुनि जेहै मु नुर ॥ छं० ३ ॥
दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहाँ की बात
निवेदन करना ।

दूहा -- मुनि ह दूत पच्छी फियी । कही राज सों बत ॥
तमकि तीन लीनी नपति । मनो सुजोधन पथ्य ॥ छं० ४ ॥

१. मो०--मिस ।

२. मो०--मर्ग ।

३. मो०--दिसा ।

४. ए०. क० को०--मोट ।

५. ए०. क० को०--श्री षजुआ ।

६. ए. क० को०--श्री इवना ।

७. मो०--भाषी ।

इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का
बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना ।

कवित्त — चढ़िग रात्र प्रथिराज । सथ्य सामंत सूर भर ॥

है गै रथ चतुरंग । गोरि जंबूर नारि सर ॥

कूच कूच अरि भान । आइ अड्डो षग बज्यो ॥

बनु कि मेघ में बीज । तमकि तातो होइ रज्यो ॥

आवृत झरत झारत परत । श्रोन धार धर पैर चलि ॥

इत उत सूर देखै लरत । घरी पंच रवि रथ न हलि ॥ छं० ५ ॥

युद्ध बर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न
होकर नृत्य करना ।

दूहा — भिरत भान अति छोह करि । जन जन मुष मुष जानि ॥

घोर विछट्टी दामिनी । सब चकचौघिय आनि ॥ छं० ६ ॥

कवित्त — पग वाहिय भिरि भान । अरिन अडर घर किन्नी ॥

जय जय मुष उच्चार । सीस उम्मापनि लिन्नी ॥

रिसरु लिग उत मंग । अमिय विष जंग सु डरयो ॥

ठंडो मंडि असघ । नहि भौ अंग जु परयो ॥

बीभच्छ भनायक भय उमा । रुद्र रुद्र मुष हास हुआ ॥

सिगार बीर अच्छर बरन । नव रम सुर्नाहि नरिद दुअ ॥ छं० ७ ॥

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना ।

दूहा — स्रम भिलाष गंधर्व हुअ । नारद तुम्भर गान ॥

संकर कल किंचित भयो । चाहुआन प्रम्मान ॥ छं० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना ।

कवित्त — जीति समर भिरिभान । परी अरि मग अरिष्टह ॥

रन मुक्कि न ग्रह गइय । बरत अच्छरि नन दिद्रुह ॥

कहुँ त मंस कहुँ अंस । हंस कहुँ सस्त्र बस्त्र कह ॥

ब्रह्मयान शिवयान । धान देषिय न जम्म जह ॥

दीपौ न अगनि रवि भेद ननि । तत्व जोति जोतिह मिल्यो ॥

इस दीप चरित प्रथिराज ने । कवित्त एह जुग जुग चन्थो ॥ छं० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना ।

इह परंत बहुआन । मोष लभ्यो सु रथं रवि ॥

दिन पूरन पुनि भयो । मिटे संकुरन भान छवि ॥

दिन पूरन पुनि भयो । हरह भग्नी 'उतकंठं ॥
भग्नि मनोरथ रंभ । 'ब्रह्म भग्नी चित्त गंठं ॥
झल हलत नीर काइर मुषन । प्रलय सुभर रनरत्त रह ॥
दिन पति पतन्न सह तप्प तन । भान भान भेदंत 'नह ॥ छं० १० ॥
राजा भान का शोच बस होकर कंगुर बेबी का ध्यान
करना और बेबी का कर कहना कि मैं
होनहार नही भेट सकती ।
तब कंगुर पाल्हन । चित्त चिंता उप्पन्नी ॥
मुनि भोटी भर मरन । सरन कोइ सुद्धि न मन्नी ॥
निसि अंतर करि ध्यान । मात कंगुर आराधी ॥
सो आई न्यप सुपन । कहै सुनि बात अगाधी ॥
'सोभति अनेक जानै न को । मो सेवा को परि लहै ।
भाबी बिगति हों पकृति हों । तो प्रधान भूठह कहै ॥ छं० ११ ॥
सबेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न
का हाल सुनाना ।

चौपाई-

वचनन मात कही समझाइय । निसि पल भ्रमित गमत बरु आइय ॥
भोटो न्यप कन्हा 'पै आइय । काली कन्ह कि हंकि जगाइय ॥ छं० १२ ॥
तब कन्हा परधान बुलाइय । मात वचन की जुगति सुनाइय ॥
दिल्लीपति दल लै चढ़ि आइय । करी सुनति जिहि होइ भलाइय ॥ छं० १३ ॥
प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिंता न
करें मैं शत्रु का मान मर्वन करुंगा ।
अरिल्ल - का चिंता सु विहानं । * कन्ह होइ जाके परधानं ॥
स्वामि वचन किन्नी परमानं । लरि भंजी दुउजय बहुमानं ॥ छं० १४ ॥
भोटो राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना ।
कवित्त- सो सुपनंतर राज । रैन दिठ्ठी सु कही रचि ॥
बर बंसी 'ससिपाल । पल्ह आयी सु सेन सचि ॥

१. मो०-उप कंठं ।

२. ए० क० को०-प्रतियों में 'चतुरानन भक्तिचेत टारि रथ मग मुग्गली'
(युगती) अधिक पाठ है । ३. मो०-बह ।

४. ए० क० को मो भक्ति ।

५. ए० क० को०-वै ।

* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम 'कन्ह' था ।

६. मो०-सिद्धपाठ ।

लष्य एक असवार । लष्य दह पाइल भागी ॥
अप सेन उपाये । जुगं जुग गहि उच्चारी ॥
घरि अद्ध अद्ध अप सेन मुरि । पच्छि उररि दुज्जन परिय ॥
चडि गयी वीर परवत गुहा । सामता कुडल फिरिय ॥ छ० १५ ॥
पृथ्वीराज का रघुवंसगाय और हाहुनीराय हम्पीर को कंगुर
गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना ।

बर रघुवंस प्रधान । राज मड्यो विचारिय ॥
बोलि वीर हम्पीर । भेद जानै धर मारिय ॥
बाट घाट बन जह । धरा पद्वर नद घाट ॥
श्रव्व जान ग्रिमान । कोन पद्वर 'वन बाट ॥
अगवान देहु नारेन वर । कछक मन ज्यो मु तुम ॥
जालंधराज जंबू घनी । स्वामि ध्रम्म मडहित हम ॥ छ० १६ ॥
हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा ।
सुनि हाहुलि हम्पीर । हृथ्य जोरै नप अग्गे ॥
सकल भूमि की भेद । राज जानै ए भग्गे ॥
अति सु विकट बन जह । चहे सग्राम न होई ॥
अश्व पाय गज पाइ । चढन किट्टि ठोर कोई ॥
बन विकट जह परवत गुहा । बर बेहर वकम विषम ॥
दारुन्न भयानक अति मरल । बर प्रस्तर नहि जल सुपम छ० १७ ॥

कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके
विकटपन का वर्णन ।

भुजंगी - बन जा विषमं विष बाज कर । घनं व्याप्य आघातता नह घंटं ॥
षह जा षजूरी घनं जूथ भोरं । जिनै वाम आम लगे पक मोरं ॥ छ० १८ ॥
घन पामरं जाति बंधे घनंकी । गिर देखने गनि भाजै मनकी ॥
शरै झरनि झोरं सु आघात सोर । जिनै मद्गा मद् ता अग मोर ॥ छ० १९ ॥
हयं तगिज राजं चलै हृथ्य डोरं । इरु इकर उच्छे बिप जन्न जोरं ॥
बजै सद् सद् परछंद उठुं । सुनै क्रन्न सोरं सु धीरज्ज छट्टे ॥ छ० २० ॥
इकं होइ राजं पथं सत्त 'रुद्धे । दिर्यं हृथ्य तारं' तिनं कोन बद्धे ॥
तबै मुक्कले राज नारेन बीरं । ननं षण्ण मगं सधै इक्क तीरं ॥ छ० २१ ॥

१. मो०-बर ।

३. मो०-जिनै ।

५. ए० छ० को०-बंदी ।

५७

२. मो०-मडहित न हम ।

४. ए० व० को०-बंधे ।

अयं काम नाही 'प्रधानं प्रवानं । दोऊ सेन रघुवंस अरिसेन भानं ॥ छं० २२ ॥

उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां को सुपुर्ब करके आप
पंडल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना ।

पूहा — मानि मंत चहुआन कौ । मुकलि दीय दोइ वीर ॥

ताजी तुंग समप्पिये । ंषां हुसेन दिय भीर ॥ छं० २३ ॥

नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना ।

कवित्त— तब लगि पान सु पान । हृथ्य नारेन मंडिलिय ॥

नमि चरननि कर बाहि । रोस आरोहि अंषि विय ॥

ताजी तुंग सु अधिथ । जेन रुक्के बर विय करि ॥

नीतिराव कुटवार । संग दीनी नरिद बरिद बरि ॥

बारंग वीर बज्जर बहिर । निधि निसान बज्जे सुभर ॥

नेपुरह अप्प बरनी बरा । जस मुकट्ट प्रथिराज बर ॥ छं० २४ ॥

कंगुर द्रुग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन ।

बर भगियं बर अप्प । लियो फुरमान नरिदं ॥

लाज राज विटयो । जानि पारस बिच चंदं ॥

श्रीय काज श्रीराम । सु छल हनमंतह तैसे ॥

स्वामि काज सामंत । बियो घर म्भक्षब जैसे ।

जस तिलक हृथ्य चहुआन कौ । दुज्जन दल जित्तन चल्थो ॥

रवि वार सुरंग सु सत्त में । गुन प्रमान जंबुअ षुल्थो ॥ छं० २५ ॥

नारे (पीठ की सेना के नायक) को चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना ।

पद्धरी—नारेन जंबु गढ बढथो काज । बोलहित वाम कौदहति ताज ॥

दाहिने सग समुह फुनिद । नौरूप बोल बोलहित हद् ॥ छं० २६ ॥

हंकरे सिह कौदहति वाम । उत्तरे देबि दाहिन सु ताम ॥

दिसि वाम कोद धू धू टहक्क । फुनि करे हक्क केकी पहक्क ॥ छं० २७ ॥

उत्तरे दार वाराह सथ्य । डहकरे सांइ दिसि वाम तथ्य ॥

'बन्नर विरुर दाहिनै सद् । सुनियै न क्रन्न नंदनी नद् ॥ छं० २४ ॥

'कुरलंत वाम सारस समुह । मुक्कइ न गिडि पच्छे अजूह ॥

कुरलेत कग चित्तहत हीन । हंसीय वाम आनंइ कीन ॥ छं० २९ ॥

१. ए० छं० को०—प्रवानं ।

२. ए०—खान ।

३. मो०—देव ।

४. ए० छं० को०—डार ।

५. ए० छं० को०—रत्थ, हृथ्य ।

६. ए० छं० को०—बंवर ।

७. छं० कुरलेत ।

हां कहत हल्ल करि गट्ट मध्य । चहुआन पिध्य रिझ्जेव तध्य ॥
हाहल्लराव दीनी विरह । आनंद बज्जि नीसान नह ॥ छं० ३० ॥

सेना का हल्ला करके क्रोध से घावा करना ।

दूहा—हां कहतें डीलन करिय । हलकारिय अरि मध्य ॥

*तार्थे विरद हमीर को । हाहल्लि रात्र सु कध्य ॥ छं० ३१ ॥

चङ्गि चल्ले बंदन ^१मुकन । भागह जे प्रथिराज ॥

बार प्रभवत बेदेस सधि । वीर वजी रन बाज ॥ छं० ३२ ॥

युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन ।

पदरी—आएस लीन जुगिन नरेस । सजि सिलह मुभर मंडी मु भेम ॥

सिगिनी सुध्य गी गंठि थाल । अरि अंग षतंग भै पाति ^२काल ॥ छं० ३३ ॥

नेत्रा सुरंग बंबरि त्रिपान । अठार टंक षंचै कमान ॥

घन सुरंग रत्त गजराज हालि । जानं कि भमि बहलनि चालि ॥ छं० ३४ ॥

अनि इत दहकि घर धरकि हल्लि । चनुरंग सेन चिहुं पास चल्लि ॥

श्रामंन तीर सब तुंग मानि । गट्ट मुक्कि गट्ट ओठंडि थान ॥ छं० ३५ ॥

आवाज बज्जि दस दिसा मान । भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥

बन्लभ मु बाल गय बाल मुक्कारो रथ्य नारि चकि नय मु चक्कि ॥ छं० ३६ ॥

फट्टे दुकूल नग नगन चड्ढि । मंगलिक जानि बन्नोर कड्ढि ॥

^३फुटि अंमु वास रस गत दिषाहिनोप्रह सु हेम गिरि मल्ल गाहि ॥ छं० ३७ ॥

नंपंनि हार कहुं बाल नारि । तिन की उपम बरनी मुभार ॥

तुट्टं मुत्ति पग पगन मान । नंपंन तीय पिय को निसान ॥ छं० ३८ ॥

के दुरन घाइ चित्त चित्रमाल । जानहि मुचित्त पुत्तलिय बाल ॥

ना नश्य जाइ रहे षंचि सास । मानहु कि रच्चि चित्रह बिलास ॥ छं० ३९ ॥

मुर नुकी दीन भइ बाल बाम । अगं सुवाल दीसहि सु ताम ॥

कविचंद सु ओपम एक वार । उतन्यो राह रूपह सवार ॥ छं० ४० ॥

चित्रहृति साल रषीति बाल । नह परहि बंदि ते तिहृति काल ॥

दस्सव ^४बाहि मदिरत्ति रिझ्झि । चल्लै न पाइ मानं उलझि ॥ छं० ४१ ॥

देवन सुमन गति भई पंग । रुट्टई काम रति कोटि रंग ॥

नट्टई उगति तिन देखि बाल । मानो कि रास मझें गुपाल ॥

*छं० नं० ३० का आषा और ३१ संपूर्ण मो० प्रति मे नहीं है ।

१. मो०—सगुन ।

२. ए० क० को०—वान ।

३. ए० क० को०—फट्टे ।

४. मो०—नाहि ।

अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना ।

ब्रूहा—बंस दुजन घर गाहि फिरि । तब लागि दुजति सपन्न ॥
एकल्ले रघुवंस ने । लै गढ़ सबर प्रपन्न ॥ छं० ४३ ॥

सब सामंतों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा
पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के
पास जाकर विजय का हाल कहना ।

कवित्त— सबै सूर सामंत । पल्ह बंध्यो गढ़ लिखी ॥
थप्यो राम नरिंद । हृथ्य फुरमान मु ^१दित्री ॥
तुम रहियो इन थान । जाइ कंगुर संपत्ती ॥
मिलौ जाइ प्रथिराइ । राज सम्ही प्रापत्ती ॥
आनंद फते तप तुझ बल । धन सम्ह आइय मु धर ॥
सुम्भर मुघाइ तेरह परे । बिय दाहिम्म नरिंद बर ॥ छं० ४४ ॥

सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान
रघुवंस का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी
पुत्री व्याहना ।

सबै भूमि अरि गाहि । आन फेरी चहुआनं ॥
पन्थी भान रघुवंस । बीर बचे फुरमानं ॥
माल्हन वास नरिंद । राज रष्यी तिन थानं ॥
बर बंध्या अरि साहि । पून कढ़घी परवानं ॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर । बर रघुवंस बुलाइयो ॥
दिन देव दममि बर भूमि बर । तदिन सु रंगन पाइयो ॥ छं० ४५ ॥

नियत तिथि पर व्याह होना ।

ब्रूहा—परिनि बीर प्रथिराज बर । बर सुंदरी सु लच्छ ॥
देव व्याह दुज्जन दवन । दिन पद्वरी सु अच्छ ॥ छं० ४६ ॥

भोटी राज का कन्या के रूप गुण का वर्णन ।

कवित्त— ^१दच्छिन वृत्त सुनामि । तुंग नासा गज गमनी ।
सासनि मंघ रु संजु । कुटिल केस रति तरनी ॥
बर जंघन मृदु पंथ । कुरैम लज्जे छबि हीनं ॥
इह ओपम कविचंद्र । हृष्य करतार सु कीनं ॥

बर बरनि बीर प्रयिराज बर । घन निसान बज्जे सुबर ॥
जंबूज राव हम्मीर ने धम्म काज दीनी 'सुधर ॥ छं० ४७ ॥
भोटी राज की तरफ से जो बहेज दिया गया उसका वर्णन और
पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ
भोग विलास करना ।

बर बरनी दे हथ । गुंट अप्पे जु एक मी ॥
चौर मृगमद मधुर । चम्म दीनि सु मत्त सौ ॥
अठु सुरंग गजराज । वाज ताजी मौ दामी ॥
बर लच्छी चतुरंग । चद पिण्णिय सोभामी ॥
दिल्लीव नाथ दिल्ली दिमा । अरनि जीनि वर परनि के ॥
संजीव काम बोलिय मु द्विग । बर निसान वर बरनि के ॥ छं० ४८ ॥
दूहा —आयी न्न दिल्ली पुरह । वर बज्जे त्रिघोम ॥
डोला पंच नरिद सँग । मधि मुदरी अदोष ॥ छं० ४९ ॥
इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रयिराज रासके कांगुरा विजं
नाम पंतोसमो प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥



अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिख्यते ।

(छत्तीसवां समय)

पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्दूपुर जाना ।

बूहा —इक तप पंग नरिंद को । सुनि अवाज सुरताद ॥

आषेटक प्रथिराज गय । षट्दूपुर बहुआन ॥ छं० १ ॥

रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक
एक सुंदर कन्या थी, श्रीर चंदेरी में शिशुपाल
बंसी पंचाइन नाम राजा राज करता था ।

कवित्त —रा जह्व रिनथंभ । भान पंचाइन भारी ॥

हंसावति तिन नाम । हंसवति गती सारी ॥

१अवनि रूप सुंदरी । काम करतार सु कीनी ॥

मन मन्नवै विचार । रूप सिगार स लीनी ।

लखन बतीस लच्छी सहस । अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥

अस्तम्म उदै वर १बक्र त्रिच । दिषिषि न कहुं चक्रंत रवि॥छं० २॥

हंसावती की शोभा वर्णन ।

नाग बेनि सुनि पीन । कंति दसनह १सोभत सम ॥

अंषि पदम पत्र मनु । भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥

सिषा नाभि गज गति । नाभि दछना वृत सोभै ॥

सिष सार कटि चारु । जंघ रंभा जुषि लोभै ॥

सुंदरी सीत सम वरि चरित । चतुर चित्त हरनी बिदुष ॥

सन पत्र गंध मुष ससिय सम । नैन रंभ आरंभ रुष ॥ छं० ३ ॥

चंदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ
को दूत भेजना ।

भाषा—वर बंसी १ससिपालं । चितं जस संभलं बालं ॥

मन वयनं तन १बद्धै । रिनथंभं १मुक्कवै दूतं ॥ छं० ४ ॥

१. मो०—अवरि ।

२. को०—चक्र ।

३. मो०—सोभत ।

४. मो०—शिशुपालं ।

५. मो०—बद्धे ।

६. ए० छं० को०—मुक्कले, मुक्कले ।

चंडेरी का रणथंभ में जाकर पत्र देना ।

अरिल्ल — दूत आइ बर बीर सपत्ते । जगद हृद्य दिए बर तत्ते ॥

हंसावति अप्पे बर १ रंभं । तजो वेग उम्भो रिन थंभं ॥ छं० ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं

चंडेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुड़कने से नहीं डरता ।

कवित्त — रा जह्व रिन भान । तमकि कर वंपि लुहट्टी ॥

बर रनथंभ उत्तरी । बीर बस्सी अहुट्टी ॥

बर कगद ३ कर फेरि । सुभ्रि करिये बर राजन ॥

मते बैठि कुंडली । धम्म छत्री जिन भाजन ॥

बुल्लई न एन दुज्जन भिरन । तरन तार साधन मरन ॥

बर बीर जुद्ध चालुक्क रन । हक्कायी दुज्जन भिरन ॥ छं० ६ ॥

कुंडलिया — रिन थंभह बर उप्परै । चठि गट्टी करि साहि ॥

हंस मरत रा भान को । घसि उप्पर घर घाइ ॥

घसि उप्पर घर जाइ । सुजम जपे सब कोई ॥

जोग मग लम्भनह । पग मगह मत होई ॥

अल्प आव संसार । सिद्ध साधकह अथंभह ॥

सब्ब जोग सहकम्म । सब्ब तीरय रनथंभह ॥ छं० ७ ॥

चंडेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना ।

कवित्त — सुनि बंसी ससिपाठ । बीर पंचाइन कोप्यो ।

सह मद् गज जेमि । तममि धीरज सम लोप्यो ॥

रिनथंभह दिसि थंभ । दियो बर वीर मिलानं ॥

गय ह्य दल चतुरंग । मजे तिन वेर प्रमान ॥

बर बीर अग बस्सीठ चलि । राजही संमुह दिसा ॥

परनाइ कुंअरि हंसावती । सु बर कोपि आयो निसा ॥ छं० ८ ॥

चंडेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना

और एक शाहाबुद्दीन के पास मदद के लिये ।

दूहा — जस बेली रिनथंभ न्प । फल पच्छे न्प आइ ॥

रा जह्व सुरतान सौं । कहि बर जाइ सुधाइ ॥ छं० ९ ॥

स्त्री के पीछे राबण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण

और राज्य गया ।

कवित्त — सीय १ रषि राबनह । लंक तोरन कुल षोयो ॥

कपट रषि दुरजोध । षग षोहनि दल २ गोयो ॥

१. ए० क०को०—उम्भं ।

२. ए०—उठही ।

३. ए० क० को०—बर ।

४. ए०—रबी ।

५. मो०—वोयो ।

मंतहीन बर चंद । रियो गुरवार सुहिल्लो ॥
क्रम रषि रघुराइ । अजे जान्यो न पहिल्लो ॥
रनथंभ मडि छंडी सरन । भिरन रुहो बर बीर सब ॥
ससिपाल वीर बंसी बिलस । हम देष आयो सु अब ॥ छं० १० ॥
जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं ।
जीवन बलह विनोद । अलह नब्बी घन मंगहि ॥
जीवन बलह विनोद । आस आसन्न असुर गहि ॥
जा जीवन सुदर । सुमंघ बर बधव लोकै ॥
जा जीवन काजें । कपूर पूरन प्रभु कोकै ॥
जा जियन देव दानव मिलन । किलमन कलि आवन गवन ॥
तिन भवन छंद छंडित गहर । तजित तुंग तन सो भवन ॥ छं० ११ ॥

भानुराय यदुव का बसीठ की बात न मानना ।

दूहा - रा जद्व बर भान नें । बहु मंग्यो बर हट्ट ।
वाजी नार पयानरै । तुंगी तेरह ठट्ट ॥ छं० १२ ॥
बसीठ का लौट कर चंदेरीपात की फौज में जा पहुंचना ।
इह सुनि बीर बसीठ उठि । भानह हल्यो न हल्ल ॥
तीस कोस सग्गो मिन्यो । बर पंचाइन ढल्ल ॥ छं० १३ ॥
पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखा हुआवला
आदि सरवारों का श्राना ।

कवित - अगिगवान उजबकक । धाड भाई परवानिय ॥
ता पचछें साहाब । पान बधे तुरकानिय ॥
ता पचछें नूरी हुआब । सेई सवारिय ॥
केलौपान कुलाह । सब सेनी कुटवारिय ॥
बानिकर वीर दुल्लह सुजर । भाइ पान रन अंम बर ॥
ससिपाल वीर बंसी बिलस । बर आयो रनथंभ पर ॥ छं० १४ ॥
दोनों घनघोर सेनाओं सहित चंदेरी के राजा का प्रागे बढ़ना ।

दूहा - पचाइन बल पण्यरै । थह रनथंभ काज ॥
कंक बंक बर कट्टनह । चढ़ि बल्ल्यो रन राज ॥ छं० १५ ॥
चंदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन ।

भुजंगी -
ससिपाल बंसी चढ्यो कोरिदधं । मनों बंक चक्र घस्यो आनि पधं ॥
जळं जुम्वनं जूव घात्रे दुरंगा । करै कूच उवं उरउजे तुरंगा ॥ छं० १६ ॥

१. ए० क० को०-मरन ।

२. मो०-धिमल ।

३. ए० क० को०-हप, हध्व ।

४. मो०-उरुषी, उरुजे ।

कहै बत्त रत्ती मुखं रत्त आहो । कहैं अश्व आठू रनथंभ ढाहो ॥
ससीपाल बंसी चंदेरीय रायं । उर्यो छत्र मीसं कबी देषि गायं ॥ छं० १७ ॥
नगं पंति मुत्ती सिरं हेम दंडी । ग्रहं अट्टु मानों समी मेच्छ मंडी ॥
फिरी पंति राई रिनथंभ घेन्यो । मनो भावरी भान सुम्मेर फेन्यो ॥ छं० १८ ॥

रनथंभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना ।

दूहा घन घेन्यो निरथंभ पर । लिषि दिल्ली परवान ॥
तव जद्व रा भान ते । दिय कग्द चहुआन ॥ छं० १९ ॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना ।

कवित्त रा जद्व बीराधि । बीर गुजह अनुमरयो ॥
हयदल पयदल गज । अरोहि रिनथंभ यो आयो ॥
धंधेरा धंधेल । चंद समिपालह वमिय ॥
अध लष दलहि हिलोर । जोर गरुवनं गमिय ॥
हम्मीर राव हाड़ा हठी । पीची राव प्रमग दुह ॥
प्रारंभ करै मंभरि धनी । जोरै बंध पुमान सह ॥ छं० २० ॥

उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिंहजी के पास कन्ह को भेजना ।

दूहा - सुनि कग्द चर चित के । तिथि साते चहुआन ॥
समर सिंघ रावर दिमा । गुर जन मुक्चो कान्ह ॥ छं० २१ ॥
कन्ह का समरसिंह के पास पहुँच कर समाचार कहना ।

कवित्त बर पंचाइन सवर । सबर बसी ससिपालं ॥
घेन्यो तिन रनथंभ । मुबर जपे बर कालं ॥
मान बीर पुक्कार । धाइ आई दिल्लीवै ॥
अद्ध अद्ध पहु पंग । सध्य अद्धो बर है वै ॥
जोगिदराव जग हृथ्य बर महन रंभ उप्पर सवर ॥
कालंक राइ कपान विरद । तुम आओ रचि सेन बर । छं० २२ ॥

समर सिंह जी का सेना तयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे ।

दूहा - चित्रंगी चतुरंग सजि । बर रनथंभ सु काज ॥
बर सहेट रावर समर । आवन बदि प्रथिराज ॥ छं० २३ ॥
बलत कन्ह चहुआन बर । कहि चतुरंगी राज ॥
तुम अगों हम आइहैं । आवन सुधि प्रथिराज ॥ छं० २४ ॥

तथा यहाँ से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम से
आगे जा पहुँचेंगे ।

पंच कोस बर सद्धि अग । चीतौरह रनथंभ ॥

तुम अगों हम आइहैं । महन रंभ आरंभ ॥ छं० २५ ॥

कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का बिल्ली से तेरस को चले
हैं और राजा भानपर बड़ी विपत्ति है ।

कवित्त - महन रंभ आरंभ । कन्ह चालत मन मंडिय ॥

अठु दीह हम अग । राज तेरसि ग्रह छंडिय ॥

बर बंसी ससिपाल । गंज लगिय नृप 'भानं ॥

घरति घवर तह नाम । सेत मिसि देही दानं ॥

अग्रन ग्रहन रिनथंभ मति । इह सुमित्र आयी पढ़न ॥

कालंक राइ कप्यन विरद । महन रंभ बढघौ बढन ॥ छं० २६ ॥

समरसिह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है

कि शरणागत को त्यागें और बात कह कें पलटें ।

मुनि कन्हा चहुआन । रीति आहुठु ग्रह कुल ॥

सरन रषिष कडुइन । मिले जो कोटि देव बल ॥

संग्रामं हरषै न । सुबर षत्री बर घायी ॥

रन रष्ये रजपूत । छत्र छल छांहु नवायी ॥

द्रिग रत बल बंसै सुवर । बेद धम्म बंध्यो चत्रे ॥

कालंक राइ कप्यन विरद । कित्ति काज नव निधि द्रवे ॥ छं० २७ ॥

समर सिह का कन्ह की बी हुई नजर को रक्षना ।

इहा - तिय हजार तेरह तुरैंग । हस्त मत्त बर तीन ॥

मनि गन मुत्तिय माल दन । रष्ये कन्ह सु बीन ॥ छं० २ ॥

पूज कुलह चहुआन दय । वे सब मनि गनि साह ॥

लच्छिय सब हृथिय ग्रहन । दीना लब्ध समाहि ॥ छं० २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूष करना कि तेरस को घुड़ वर्णन

चले कन्ह बर संग नृप । समर सजग्गी आउ ॥

तेरसि न्यंबक बज्ज है । घरकि बीर उमराउ ॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिह जी की यात्रा की मुहूर्त होगा ।

कवित्त - घरी पंच बर सोम । दैव दसमी ग्रह सारिय ॥

दुष्ट दान करि मंत्र । सुगुर पंचमि दुष चारिय ॥

१. ए० छं० को०-मान ।

२. ए० छं० को०-नाहि ।

३. ए० छं० को०-बर साहि, बर साई ।

४. ए० छं० को०-वारिय ।

बद्ध चार भय सूर । फेरि नव मीन न भग्ना ॥
 अमुर सुगुर वक्रयी । छड बिय थानति अग्ना ॥
 चित्रंग राइ रावर समर । महा जुद्ध सग्राम रजि ॥
 दम कोम बीर मेलान दे । मुवर बीर चतुरंग सजि ॥ छं० ३१ ॥
 यात्रा के समय समर सिंह जी की चतुरंगिनी सेना
 की शोभा वर्णन ।

पट्टरी - सजि चल्थी ममर रावर सु नथ्य । जानै कि मरित मागर ममथ्य ॥
 बज्जे निसान दिमि दिसि प्रमान । मानो समुद्र गिरि गजिय थान ॥ छं० ३२ ॥
 सुझै न भान रज मझि मलीव । चक्कीय चक्कबे चलि सु कीव ॥
 चतुरंग सेन चल्लिय सरंग । बहु रुक्कि अभ घन नथ्य मग ॥ छं० ३३ ॥
 सहनाइ भेरि कल कलनि बज्जि । जल होइ थलनि थल जलन रुझि ॥
 उन्नयी मेह ह्य गय प्रमान । मद चलहि गघ्र गज शिर ममान ॥ छं० ३४ ॥
 बर रंग नेज कल मिली त हि । बर बरन बीच सोहन जाहि ॥
 पाइन पयाल द्रगपाल हल्लि । चतुरंग सेन चित्रंग चलि ॥ छं० ३५ ॥
 घन जिम निसान बज्जे विमाल । जोगिद मत्त जग हथ्य भाल ॥
 पावस समूह रावर नरिद । भिषजार भट्ट मोरन गिरिद ॥ छं० ३६ ॥
 कोकिल नफेरि पप्पीह चीह । बोलत मद् कवि मधुर जीह ॥
 बरषहति दान गज मद् मान । फरहरहि घञ बगति मान ॥ छं० ३७ ॥
 अंनू सद् झिगुर झंकार । सुझहि भमद् बदि श्रवन पार ॥
 पावस समूह करि समर चलि । रिनथभ दिसा मेलान मल्लि ॥ छं० ३८ ॥
 मुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के बाएं ओर पृथ्वीराज
 और बहिने ओर से समर सिंह जी का आना ।

कवित्त बाम कोद प्रथिराज । छडि रनथभ संपत्ती ॥
 बर दच्छिन समरंग । बीर जोगिद प्रपत्ती ॥
 दुहन बीर गढ चंपि । सुकवि ओपम तिन पाई ॥
 कुंभ अंब डोलंत । हथ्य बरने रम माई ॥
 चहुआन सेन चित्रंगपति । चावहिसि बर विड्डुरिय ॥
 बर दोह छडि चदेर ग्रप । जुगिनि ह्वं सम्हौ भिरिय ॥ छं० ३९ ॥
 दूहा - उत चंपे चहुआन ने । इन चने चित्रंग ॥
 मूदि सास अरि सम दरी । जनु चंप्यो सु अदंग ॥ छं० ४० ॥

१. ए० कृ० को०-राजि ।

२. ए० कृ० को०-गजि ।

३. मो०-मधि ।

४. मो०-गीह ।

५. मो०-वत्त ।

६. ए० कृ० को०-चंपी ।

पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समर सिंह जी का पड़ाव था
और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी ।

कवित्त - प्राची दिशि चहुआन । चढघौ षष्ठिम चतुरंगी ॥

दुहं बीच रिनथंभ । बीच अरि फौज सु रंगी ॥

दुहं सेन ३समकंत । १नग मत्ता गज अग्गी ॥

मनु राका रवि उदै । अस्त होते रथभग्गी ॥

ससिपाल बीर बंसी ४विमल । दुहन बीच मन मेर हुआ ॥

षह मिलै बेह षगह ह्यौ । चवै चंद रवि दंद दुअ ॥ छं० ४१ ॥

किले और घास पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन ।

अनल पंष अंकुयौ । जुद्ध पंचाइन मंडघौ ॥

इक सपंष षग वीय । पेट रनथंभ सु छंडघौ ॥

पीठि पंड पावार । सु वर हूऔ नष पंष ॥

एक मुष्प वन बीर । धीर उभ्रौ विय मुष्प ॥

निम्मान बंभ बर पुंछ कवि । पुच्छ पाइ साधन समर ।

दुह लोह कदिह परियार तें । समर मोह भूल्यौ अमर ॥ छं० ४२ ॥

उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन ।

भुजंगी मिले आइ घाय सु आहुठु राई । लगे बीर बथ्ये लगे लोह घाई ॥

कन्डी बंक अस्मी समी बीय गती । बरै जवाल सूर मनो हबि तत्ती ॥ छं० ४३ ॥

करै हक्क सीस महा मार मारं । धरं कित्ति सीसं तुर पार पारं ॥

बजै सस्त्र बीसं १नुरित्तं बषानं । तिन सह अगै दुरै वै निसानं ॥ छं० ४४ ॥

घकै आइ सूरं बिधं कन्ह हथ्यं । थकी रंभ उतकंठ मनो पंग तथ्यं ॥

लगे धार धारं धरक्क विवानं । गहै हथ्य छट्टु चले देवधानं ॥ छं० ४५ ॥

कटे सुंड डंडं कयै दंत तथ्यं । मनो ज्यों पुलकी कदै कंद हथ्यं ॥

घनं घक्क हथ्यं रस रक मत्तं । मनो ठपती सजुधं की सुरत्तं ॥ छं० ४६ ॥

परै ढाल ढीचाल गज ढाहि सूरं । महा दिणिये बीर रूपं करूरं ॥

कटे कंध सूरं उडै छिछ भारी । झरै फूल तथ्यं शिरं डुंड भारी ॥ छं० ४७ ॥

जगी जोगिनी जुद्ध देषे २जरूर । उडै रैन रावत कच्छे करूरं ॥

घराघाब श्रोनी पलं भद्र जानं । गजे सूर जुद्ध विसानं दिसानं ॥ छं० ४८ ॥

तपै तेज तेजं सु नेजं सुरंगं । मनो विज्रमाला चमककंत चगं ॥

घनुष्यं कमानं धरे मेव महुं । रवै दंड दंडं नफेरी सबहुं ॥ छं० ४९ ॥

१. ए०-चतुरंग ।

२. ए० क० को०-चमककंत ।

३. ए० को०-नग, नगा ।

४. ए० क० को०-विसान ।

५. ए० क० को०-घाई ।

६. मो०-नुटित ।

७. ए० क० को०-करूरं ।

बहै बग्न बानं मनो बग्न पानं । रचै चित्त चहुआन वेतं किसानं ॥
 भिरै भंति भारी परै जूह राजं । ठरै घाइ धंधेर बंधी सु पाजं ॥ छं० ५० ॥
 १इलावार पूरं सरित्तान श्रोतं । तिरै रुंड मुंडं मछं जानि तोतं ॥
 मुषं मेद पाटं सु घाटं पुमानं । भिरै भीर भारी मु प्रब्वे उमानं ॥ छं० ५१ ॥
 गहै नाग मुष्पी अरी जा उठायी । मनो चंद मंदेस पच्छै पठायी ॥
 ग्रहै रंभ मालं भरं ग्रीव वालं । रचै ईस सीसं गरै रुडमालं ॥ छं० ५२ ॥
 पच्यो बग्न षीची भरं चित्रकोटं । जलं पणष मच्छी घरं जानि लोटं ॥
 तहां गलि मत्तं न सुष्पं न दुष्पं । धकी जंममालं लरे सूर पिष्पं ॥ छं० ५३ ॥
 महादेव जुद्धं दिप्यो मेस यानं । धनी चित्रकोटं धमी सेन जानं ॥ छं० ५४ ॥

चौदेरी की सेना और रुस्तमा खा के बीच में रावल समर सिंह जी
 का घिर जाना ।

कवित्त - उन बंसी समिमाल । इने रुस्तम दूद बर ॥
 बिचै समर रावर । नरिद वीरन गाहरमल ॥
 उतै तेग उधभारि । इने मिगनि धरि वानं ॥
 छंडि निधक अरियात । उरगि पागी परि तानं ॥
 रन तुंग अवर चिने रिपुन । हवि मुष रुप मुक्कै नही ॥
 भर सुभर दार रपपन सु बर । समर ममर उधभौ पही ॥ छं० ५५ ॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद करना ।

सम लरत बर समल । दिपि चहुआन कियो बल ॥
 बांम मुष्प अरोहि । नर असि झल मुष्प झल ॥
 सौ सामन छै सूर । मथ्य प्रभुगज मु धायी ॥
 सार कोट अरि जोट । पग्न पल पंभ हलायी ॥
 जै जैत देत जै जै करहि । देव वीर आनंद बढ्यो ॥
 तारुण तुंग तन तेज बर । असि पहार घर भर चढ्यो ॥ छं० ५६ ॥

रनथंभ के राजा भान का समर सिंह जी से मिलना और

पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना ।

हुहा - रा जदव रिनथंभ तजि । मिलिय राव प्रति मान ।
 समरसिंह राबर सु प्रति । चरन चंपि चहुआन ॥ छं० ५७ ॥

१. भो०-इलावार ।

२. ए० रु० को०-मघी ।

३. ए० रु० को०-कीथ ।

समर सिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिल कर
युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ।

★ दिन धवलो धवली दिसा । धवल कंध भारथ्य ॥

समरसिंह रावर मिल्यो । चाहुआन समरथ्य ॥ छं० ५८ ॥

मद्धि फौज प्रथिराज बल । रा जद्व दिसि वाम ॥

समरसिंह दछिछन दिसा । चढ़ि संग्राम सु काम ॥ छं० ५९ ॥

चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के बीरों का
उत्साह और भोजस्विता एवं युद्ध का बृश्य वर्णन ।

छंद त्रिभंगी—ससिगलय बंसी, मिलि रन गंसी, बीर प्रसंसी, बर बीरं ॥

सैंमुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं ॥

तुरसी रस मंजरि, पति 'समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, शृग रारी ॥

बर टोप सु कंतिब, मूर सुभंतिय, बहर पंतिय, जम रारी ॥ छं० ६० ॥

गोरष्वन पाइय, कंठन लाइय, कढ़ि असि घाइय, विरुझाई ॥

परि जोगह सोकं, दिय दिषि धोकं, बसि मुरलोकं सरसाई ॥

†वीरंग विचारै, डकक हककारै, मंत्र मारै, उभारै ।

अपफार कि फारं, असि बर तारं, बंसेति मारं, सिर मूरं ॥

बर टोप समेतं, सिप्पर तेतें असि आलेतं, हँसि हूरं ।

‡हारी रउ चिन्हं, हथ्य न लिन्हं, भयउ ममन्नं, ब्रह्मचारं ॥ छं० ६२ ॥

बर दरसि कपालं, बिय त्रिय मालं, हसि बर बालं किल कालं ।

‡नचि नारद पूरं, वजि रन तूरं, बरि बरि मूरं, धरि मालं ॥

कर ब्रज सु नुट्टं घर घर लुट्टं, ओरम घट्ट, कविराजं ।

ओपम्म विराजं, ज्यात्रल काजं, मच्छवराजं, सक साजं ॥ छं० ६३ ॥

चष छिछत श्रोनं, लगि घटि कोनं, उप्पम होनं, घन घाई ।

कवि ओपम तासं, मूर त्रिलासं, माधव मासं, फिरि आई ॥ छं० ६४ ॥

युद्ध में मारे गए सैनिक बीरों की गणना ।

कवित्त—दस क्रम्मन अरि ठेल । मुरिय पंचाइन सेनं ॥

बीर छकक उत्तरी । मुक्ति भिरि रन द्त नैनं ॥

★ "मो" प्रति छन्द ५८ और ४९; उनके बाद आया है प्रसंग में यही मिक-
मिला ठीक जैबना है ।

१. ए०—ममनेजरि ।

† यह पंक्ति 'मो' प्रति में नहीं है ।

२. ए० क० को०—हारी चिर चिन्ह ।

‡ यह पंक्ति ए० को० क० तीनों पंक्तियों में है, केवल 'मो' प्रति में नहीं है,
परंतु इस का ठाप गीब मालूम होता है ।

मुरस पिथी प्रथिराज । प्रगटि अंषिन जल झलकिय ॥
 पी अघरा रस पीन । प्रातसी की मुष जविकिय ॥
 बहुआन सु बर सोरह परिग । समर सिध तेरह त्रिघट ॥
 ससिपाल बीर बंसी सुबर । सहस पंच लुधय सुभट ॥ छं० ६५ ॥
 पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना ।
 दूहा - निग्रह नर बंछत त्रपति । अहि गवन्न सुष वान ॥
 पंच अनी करि घेत चढ़ि । घेत अरक चहुआन ॥ छं० ६६ ॥
 युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप ।
 अजिन गुन प्रगटत पिंड । सोई मिघार मूर बल ॥
 अत कुलस तन जान । लभ कित्तीति सुभट कल ॥
 जिहि मरन्न मन सूर । मरन जेही मन उत्तगि ॥
 पंच पंच पथ गोअ । फिर न एकट्टे नर नर ॥
 धरियार रूपि सु कुठार घट । तत मुक्कि लग्गी नदिय ॥
 सिचीय कित्ति तर अमिय में । घुअ ब्यापं लग्गन दिय ॥ छं० ६७ ॥
 हंसावती की धरियार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन ।
 दूहा - बाल कुंअर धरियार घरे । विय तरवर बर छीह ॥
 जिम जिम लग्गे जिम अरिय । ढाहन ढाहै दीह ॥ छं० ६८ ॥
 सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन ।
 कुंडलिया - पंच चिराकन मझन्न त्रप । सो सोभित जुग्गिद ॥
 मुनि ग्रह सत्तह बीस थह । लिय पारस मडि चंद ॥
 लिय पारस मंडि चंद । सुभ्रित ससिपाल सु बंसिय ॥
 अप्प सामि बर जानि । किति जपे रन धंसिय ॥
 सुनिय बेंन बुल्लिये । घोरि ठंकी अरि रंचे ॥
 कपट द्रोह करि इकर । पद्य टारै पंच पंचे ॥ छं० ६९ ॥
 प्रातः काल होते ही समर सिंह जी का अपनी सेना को
 चक्रव्यूहाकार रचना ।
 दूहा - इम निसि बीर कडिय समर । काल फंद अरि रुडिड ॥
 होत प्रात चित्रंग पद । चकाव्यूह रचि ठडिड ॥ छं० ७० ॥

१. ए० कु० को०-निग्रह नवर ।

२. ए० कु० को०-प्रतियों में यह छन्द दुबारा लिखा हुआ है । पाठ भेद कुछ भी नहीं है ।

३. ए० कु० को०-कुसल ।

४. को०-बर बीह ।

५. ए० कु० को०-हृष ।

६. ए० कु० को०-पंच ।

७. ए० कु० को०-पंग ।

समरसिंह जी के रचित जक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन ।

कवित्त - समरसिंघ रावर । नरिद कुंडल अरि घेरिय ॥

एक एक असवार । बीच त्रिच पाइक फेरिय ॥

मद सरक्क 'तिन अग । बीच सिल्लार सु भीरह ॥

गोरंधार विहार । सोर छुट्टै कर तीरह ॥

रन उदै उदै बर अरुन हुअ । दुह लोह कदवी विभर ॥

जल उकति लोह हिल्लोरही । कमल हंस नचै 'सु सर ॥ छं० ७१ ॥

युद्ध वर्णन ।

रसावला - करं लोह कदूँ, रमं रोस बडूँ । अंगं अंग गदूँ, कथं सूर कदूँ ॥

॥ छं० ७२ ॥

असी अंच उदूँ, थटं थट्ट गदूँ । हकं सीय रदूँ, षगं सूर कदूँ ॥ छं० ७३ ॥

गिघं लोल रदूँ, दुनं नंच ठट्टै । थनी रंभ पदूँ, अंनं तुट्टै जुट्टै ॥ छं० ७४ ॥

सिरं अंग बदूँ, लोहं पच्छ कदूँ । करं कित्ति मदूँ वकं बीन नदूँ ॥ छं० ७५ ॥

मुषं चंद पदूँ, । सिंघ सम्भ रंनी, लुथिय लुथिय घन्नी ॥ छं० ७६ ॥

संघि तुट्टै ऐसे, कंधं बध्य जंसे । ॥ छं० ७७ ॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उदाहार बहना और

तिरछे हल पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना ।

दूहा - ससरसिंघ दिष्यत सुबर । उपारे स्न भान ॥

इह समान दृज्जन दवन । तिरछी परि चहुआन ॥ छं० ७८ ॥

चंदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना ।

रसावला - इसी सेन राई, चंदेरी सुमाई । षगं षोलि घाई, अरी सीस घाई ॥

॥ छं० ७९ ॥

भिरंतं बजाई, रजं तम्म छाई । बिरुझाई घाई, असी बंक झाई ॥ छं० ८० ॥

कि रच्चं उडाई, ससी व्यंव पाई । सुतं 'राति छाई, कबी कित्ति गाई ॥

॥ छं० ८१ ॥

उमा ज्यों बताई, बरं पंच पाई । चवंसठि ताई, ॥ छं० ८२ ॥

लही मुग्ति रासी, अन्विअबी नासी । उपं राज जीतं, सु भारथ्य बीतं ॥ छं० ८३ ॥

रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का इन्द्र युद्ध और

चन्देरी के राजा (वीर पंचाइन) का मारा जाना ।

कवित्त - बर बंसी ससिपाल । समर रावर रन 'जुडे ॥

अमर 'बंध चित्रंग । वीर पंचाइन बडे ॥

सर्व सध्य सामंत । धेन ढोह्यो विरुझाइय ॥
गुरिल गयो अरि ग्रहन । लद्ध नन लुधिय न पाइय ॥
प्रथिराज बीर जोगंद नप । दिष्ट देव अंकुरि रहिय ॥
बंधनह वत्त बंधन दिवन । दिष्टकूट हसि हसि कहिय ॥छं० ८४॥

युद्ध को अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना । हुसैन खां
और कन्हाराय का घायल होना ।

लुट्टि लच्छि चित्रंग । राज रिनथंभ उचारे ॥
धेन ढुंढि चहुआन । कन्ह चहुआन उपारे ॥
उमै घाड बर अस्सु । घाड आट्टु अठोभिय ॥
पंच घाड हुस्सेन । धान चौडोल घालि लिय ॥
प्रथिराज बीर बीरंग बलि । निसि सपनंतर अद्ध पहि ॥
'यागति जागि देषे नपति । तबह कन्ह जलयान लहि ॥छं० ९॥

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्दवदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन
करना और नीचे खलने पर उसे न पाना ।

हंस सुगति माननी । चंद जामिनि प्रति घट्टी ॥
इक तरंग सुंदरि सुचंग । हथ नयन प्रगट्टी ॥
हंस कला अवतारी । कुमुद बर फुल्लि समर्थ्यै ॥
एक चित्त सोइ बाल । मीत संकर अम रथ्यै ॥
तेहि बाल संग में पूहुय लिय । बरन बीर संगति जुवह ॥
जाग्रत देवि बोलि न कछु । नवह देव नन मान वह ॥ छं० ८६ ॥
पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी
अभिष्य स्त्री हंसावती है कहिए तो मैं उसका
स्वरूप रंग कह डालूं ।

इहा—सो सुपनंतर देवि वह । सो तुअ बर बर नारि ॥
बे बर गज्जि नरिद तू । हंसि हंसि पुच्छि कुंआरि ॥ छं० ८७ ॥
एन बयन रूपह रवन । इन गुन इन उनमान ॥
धीरस्तन पूजंत बर । सुनहु ती कहूं प्रमान ॥ छं० ८८ ॥

१. मो०—उचारे ।

२. ९० कृ० को०—मति ।

३. मो० वति ।

४. मो०—हथ ।

★ इस छन्द में यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किसी का नाम स्पष्ट नहीं है
परंतु छन्द के आश से यह ज्ञात होता है ।

हंसावती के स्वरूप गुण और उसकी वयःसन्धि
 अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन ।
 हनूफाल - सुनि सुवर बरनी रूप । तिहि वदन बे नूप भूप ॥
 दिन धरत सैसन एह । बालत्त तजजन देह ॥ छं० ८९ ॥
 वय काम दिन पछितान । आवंन दिन सुभ जानि ॥
 इन काज असुभ प्रमान । ज्यों सहिव तजि अनि ध्यान ॥ छं० ९० ॥
 धन धनक वेदी काम । 'द्विग काल गौरभ वाम ॥
 जंजीर भौह चढाइ । देषंत काम बजाइ ॥ छं० ९१ ॥
 बरछिन्न उन्नित बाल । बर काम चित वढि साल ॥
 चित हृअ गरुअ सुहंत । गुर गरु होत पढ़त ॥ छं० ९२ ॥
 जिम जिम सु विषा आइ । तुल भरत तुछ सरसाइ ॥
 मति लघू अलघू प्रमान । अंब निबद समान ॥ छं० ९३ ॥
 बर मत्त पिछली जीअ । तहां रसन 'हीनांत पीय ॥
 गति हंप चढत सुभाइ । सुत बंदि जसु अमिसाइ ॥ छं० ९४ ॥
 सैसव सु सुतन सुषाइ । जोवन्न रस सरसाइ ॥
 तिसहंत गजगति जानि । ॥ छं० ९५ ॥
 जसु पन्न चित क्रम मान । जिम संधि प्रथम गियान ॥
 प्राचीन मुष रंग सूर । प्रगथी सु काम करु ॥ छं० ९६ ॥
 बर बाल महि सरुप । घट धरक कपट अनूप ॥
 वय बाल जोवत काज । किय कपट उत्तर लाज ॥ छं० ९७ ॥
 मधु मधुर 'अमृत जानि । बेजियन सीषत बानि ॥
 मति मत्ति बरनी षाइ । तहां बाल बेस 'छि काइ ॥ छं० ९८ ॥
 पूबीराज उक्त बालों को सुनही रहा था कि उसी समय
 भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना ।
 कवित्त - कहि सुपनंतर 'नूपति । सु वह श्रीतान बढ़ाइय ॥
 तव लागि 'भान नरिद । बीर दुजराज पठाइय ॥
 'बर दुजराज पठाय । रतन उर कीनी अषी ॥

१. ए० क० को०-दुम का लघो सुभ वाम । २. मो०-अंब विन्द समान ।
 ३. मो०-हीनित । ४. मो०-अभि जनु माइ ।
 ५. ए० क० को०-जोवन । ६. ए० क० को०-उंतम ।
 ७. मो०-मुकाय । ८. मो०-उपति ।
 ९. ए० क० को०-मान ।
 १०. ए० क० को०-"दुम हृषिव मनि मृत रतन उर किहो रबी" ।

तिय पं चम रवि भोम । लगन प्रथिराज मु थप्पी ॥
कमरुहु सुरीज किन्नी कनक । किनि लम्भी दुज्जन वहिय ॥
तप तेज भान मध्यान ज्यौ । तिन चौहान चदह कहिय ॥छं०९९॥

और उक्त रनथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन ।
बर पंचाइन समर । दंड मुक्किय बर मुक्किय ॥
मथी सेन सम्मूह । रतन किती फल रुक्किय ॥
लच्छि भाग चहुआन । हृथ्य हसावति लद्धिय ॥
अमृत भाग चित्रग । सेन हाला हल सद्धिय ॥
बाहनी बीर अस्सिय सु झर । अरिन पाह जस रतन लिय ॥
मह महन रंभ हृथ्यह कपटमिभ सीस बर अप्प लिय ॥छं०१००॥
लगन के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का बाहु बन
को शिकार खेलने के लिये जाना ।

बूहा—तब लगि मंतन लगन दिन । ग्रिय आपेटक जाइ ॥
बाहु बन उम्भो ग्रपति । मात दरस निस राइ ॥ छं० १०१ ॥

पृथ्वीराज के बाहु बन में शिकार करते समय सारंग
राय सौलंकी का पितृ बंर लेने का विचार करना ।

कवित्त—बाहु विरल ग्रपति । राइ आपेटक सारिय ॥
सारंग चालुक चूक । रुक तिहि बेर विचारिय ॥
समरसिध चढ़ि हृथ्य । हृथ्य आवं चहुआन ॥
पिता बंर बहु बध । हुआ कर नार समान ॥
बर बंर सपुत्तन निक्कसै । ज्यौ आगम अरि अगयो ॥
बर बीर बंर ससि सनिह लगि । गुन प्रधान बर मगयो ॥छं०१०२॥

सारंगदेव का कहना कि पितृ बर का लेना वीरों का मुख्य
कर्तव्य है ।

बूहा—बंर काज बर नंद सुत । बर बेरोचन हत ॥
करि बसीठ माली सुतन । बंर पुब्ब मन जित्त ॥ छं० १०३ ॥

कवित्त—सुनि मंत्रीबर बंर । राम रावन सिर सज्जिय ॥
बंर काज ग्रहभेद । करन उरजन सिर भज्जिय ॥
बंर काज सुप्रीव । बाल जान्यो न बंधमति ॥
बंर बीति सुर इंद्र । बंर चित्तिये इसी भंति ॥
चहुआन समर कम्मै जु तत । बंर सूर जिम गेह लिय ॥
बर चूक दान बग लगिहै । कित्त एक जुग जुग बलिया ॥छं०१०४॥

१कित्ति काज परधान । राज राजन सुख बुविकय ॥

कित्ति काज विक्रम्म । देश देसह घर लुविकय ॥

कित्ति काज पंवार । सीस जगदेव समप्पी ॥

कित्ति काज बर सिवरि । २मथ्य कर कट्टि सु अप्पी ॥

‡ रष्वंत- ३अचल गल्हां जियन । कीरति सब जग भल कहै ॥

सकंग एक जुगन विरह । रहै तो गुर भल्हा रहै ॥ छं० १०५ ॥

बुहा - केहरि कल केहरी हिरन । करन जोग में ईस ॥

कोइक उत्तर देषिये । गल्ह बोहंधी सीस ॥ छं० १०६ ॥

सारंग राय* का नागौब के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा

हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट मत में बांधना ।

कवित्त—मंगल गढ़ मंगलिय । नयर नामवह मिलंतह ॥

है हाड़ा हम्मीर । नैन बाहू सु-जुरंतह ॥

पारधिरा प्रथीराज । चूक-झंडपी चालुककां ॥

हाड़ा सों हथलेव । मूल कददन ४सालुककां ॥

भंभरी भीर भौनिग तनय । परि पगार उद्दिग तन ॥

पंचारि राह पट्टनपती । तिवर तेग बत्ते कहन ॥ छं० १०७ ॥

★ सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के

पास न्योता भेजना ।

बुहा - भोजन मिस चालुकक ने । ५पाइक पाइक कीन ॥

येह कपट सु मंडि कै । करि जु निबंतन कीन ॥ छं० १०८ ॥

बरन राव रावन्न ठिग । बर चालुकक सु थान ॥

समर सिध चहुआन कीं । न्योतन को बलवान ॥ छं० १०९ ॥

★ "सारंग राय" भंम देव का पुत्र था । यद्यपि यह बात इस छन्द में स्पष्ट नहीं लिखी गई है परंतु इस "पिता वीर बहुबन्ध, हुआ कर नार ममान" पंक्ति से उक्त आशय निकलता है ।

१. ए० कृ० को०—किसी को परधान राज हरिकन्द म मंधिय ।

२. ए० कृ० को०—मम ।

३. ए० कृ० को०—अचर ।

‡ ए० कृ० को०—प्रतियो मे . "कित्ति काज भिय राम राज भाभीछन दोनो" पाठ है और दूसरी पंक्ति "कित्ति काज विक्रम्म जैसे देसह घर लुविकय नहीं है ।

४. ए० कृ० को०—चालुककां ।

★ इस प्रबन्ध में चालुक शब्द से सारंग राय से ही अभिप्राय है ।

५. को० को०—आइक ।

यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके
कपट-चक्र रचना ।

कवित्त — एक ग्रह बिच बीच । मुभर 'सन्नाहति पंचे ॥
पंच घट्टि पंचाम । बीर अंबी रज संचै ॥
तऊ लोह सह दीन । करै चालुक सु.चल्ले ॥
आषेटक चहुआन । समर रावर बर मिल्ले ॥
भोजन भंति रस बीर बर । बर प्रबोध ग्रह दिसि चलिय ॥
मन तन्न मुख मिट्टे.मघन । सुबर बीर संगह हलिय ॥छं० ११०॥
हाड़ा राबा का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर
शिष्टाचार करना ।

दूहा — आज हनंदे पाप बर । ग्रह बहु बहराइ ॥
समरसिध चहुआन मिलि । दुष्य हनंदे आइ ॥ छं० १११ ॥
कवि का हाड़ाराव पर कटाक्ष ।
बर प्रमान ग्रह गेह कै । भेद चूक तिन जानि ॥
घालि पिटारी उरग कों । मेन्है को ग्रह आनि ॥ छं० ११२ ॥
पृथ्वीराज को नगर में पंठतेही अशकुन होना ।
गाम वाम पैसत त्रपति । बन त्रप बोलत सद् ॥
फेरि बीर दषिपन भयो । बेरी करन निकंद ॥ छं० ११३ ॥
उयोनार होते हुए वार्तालाप होना ।
करिय सबर मनुहार त्रिप । चित्त घरं धरकत ॥
भोजन विधि विधि सकल भय । अकल अपुरब बत्त ॥ छं० ११४ ॥
उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर
चारों ओर से आक्रमण हुआ ।

कवित्त -- दै किपाट बिहुकोद्र । राज मुखी सु मंस ग्रह ॥
ठाम ठाम सब सध्य । सूर सामंत सध्य रहि ॥
चोरंधार विहार । विपन बर बर बन मुक्किय ॥
संस सप्रते राज । चूक चालुकक सलुकिय ॥
अधिराज सध्य सामंत सह । बर षवास लोहान भर ॥
बर बंध उभै सेवह त्रिगट । समर काज उम्भी समर ॥छं० ११५॥

दूहा — तबिक बकि उठुं मुभर । चंपे चालुक राइ ॥
हाइ हाइ मञ्जी समुष । बकत बीर प्रथिराइ ॥ छं० ११६ ॥

सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के
सामन्तों का उनका साम्हना करना ।

कवित्त—चिह्नं कोद वर सूर । तेग कड्डी सु हक्कि कर ॥

बज्र कडिठ कुंडली । करिय मंडली रजं फिरि ॥

लहि न और अवसान । कड्डी वर 'अभिभ सु सस्ती ॥

झरि चालुक सब देह । सिरह बड्डी मन हस्ती ॥

कैधूं दुबडि बंदर सिर । हलधर हल सिर झारयो ॥

सामंत सठि ग्रह कूदि कै । फिरि पारस अरि पारयो ॥ छं० ११७॥

रावल जो और भीम भट्टी का इज्ज मुद्ध ।

रावगीन वर समर । भीम भट्टी जु कंध परि ॥

तेग ह्यथ झरुमोर । बीर लिप्रां सु बध्य 'भरि ।

दुतिय घात आघात । घाह 'अगा वर बाहे ॥

कमल पंति दती । समूह दादन जल गाहे ॥

घट घाव भंग भेदै नहीं । चीरुट जल घट बूंद जिम ॥

आहुट्ट उग्र साहस करिय । पत्र तरोवत अरिन तिम ॥ छं० ११८॥

पृथ्वीराज का ★ नागफनी से शत्रुओं को मारना ।

पूहा—नागमुषी चहुआन लिय । अरिन करम सु दाह ॥

हृद् नंषि उच्चाइ अरि । ज्यों कल बंधि बराह ॥ छं० ११९ ॥

घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में सारभर मद्य जाना ।

मोतीदाम—रन बीर रवह कहै कवि चंद । सु मोतिय दाम पयं पय छंद ॥

कई वर आवध बज्जत तूर । उठे परसह महल्लन सूर ॥ छं० १२० ॥

नचै वर उठि घरं घर सूर । करै हक देषि उमस्सि करूर ॥

जु तक्कत अच्छर जालिन मडि।रही तिन मझस सुकीव समुझस ॥ छं० १२१॥

दिषी दिषि 'मुक्किक अच्छरि जुध्य । उपावहि 'मत्त जु सुंदर तय्य ॥

उपावत मत्त सु छोड़न घट्ट । चलंत है विडि अगम्मनि वट्ट ॥ छं० १२२ ॥

'अपज्जस कित्त तज्यो अस राइ । चल्थी अप अग छुड़ावत जाइ ॥

वरं कुलटा छंडि छंडि सु केउ । झुझे उरु कित्त तज्यो करि पेउ ॥ छं० १२३॥

जु पीय वियोग सखो नह जाइ । चली वर नारि अमगन घाइ ॥

करंतह भूपति भान कुंमार । करै मनु 'बज्जय बज्ज प्रहार ॥ छं० १२४ ॥

१. छं० को०—अति वस्ते ।

२. ए० ह० को०—परि ।

३. मो०—करना ।

४. मो०—हृद् नंषिड ।

★ 'नागफनी' एक शस्त्रविशेष ।

५. मो०—मुक्किक, कुक्किक ।

६. ए० को०—मंत ।

७. ए०—अपज्जस ।

८. मो०—बज्जह ।

करै भर चालुक चंपत घट्ट । स वीरह नारि अंगम सुभट्ट ॥
त्रिगं त्रिग लज्जन दच्छन जाइ । भजे क्रम सूर 'त्रियं गय पाइ ॥छं०१२५॥
कड़ी बर तेग लग्यो ग्रह घन । उडे बर मग अलग 'क्रसन्न ॥
सु उज्जल छोह चल्थो रुधि छेदि । मनो जल गग सु भारति भेदि ॥छं०१२६॥
तजै जर जम्म भिदे रवि जाइ । परे घर मुत्ति जु सूरन आइ ॥ छं० १२७ ॥
रामराय बड़ गुजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ
कर पारस करना ।

कवित्त—बर बड़ गुजर राम । कृह वज्जिग बर घायो ॥
पीलवान अरियान । 'पील अरि पूर लगायो ॥
नारिगोरि सा बात । तीर जल जोर सु बढी ॥
मीन रूप रघुवंस । पूर सम्हो अरि चढी ॥
कल मलिनि कलिनि कलि कलन कल । लोह लहर सम्हो हली ॥
अरि घरा फुट्टि बर 'घार सो । सुमन लोह उड्डु मिली ॥छं०१२८॥

कविचम्ब द्वारा "युद्ध" एवं सारंग देव के कुहृत्य का परिणाम कथन ।
पंच क्रमन दस हथ्य । लुथिय पर लुथिय हुट्टिय ॥
न को जियत सचयो । न को जुझ्यो बिन षुट्टिय ॥
कोन जम सु जुझवै । वैर मगे सु पुव्व अब ।
व्याज तत्त अप्पीय । मूल अप्पयो कुटंब सब ॥
अदिहार वीर वालुवक को । नको षेत वित मुक्कयो ॥
संभाग बीर चहुआन को । सबै सथ्य शोरी कियो ॥ छं० १२९ ॥
पञ्जून राय के पुत्र कूरभराय का बड़ी वीरता के
साथ मारा जाना ।

कवित्त—'सुत पञ्जून न नरिद । वीर कूरभ नाम हर ॥
बस्त बस्त अरु सस्त । टूक लम्भे न दूढ घर ॥
विहत्त बीच अरु षंड । एक उगारि षंडेक भय ॥
कवि आयो गुर तीय । नम्भ कहि सहिस अति हय ॥
हुंडेत अस्ति न मुम्भि परे । लोह किरवि रच्यो रह्यो ॥
भेदयो राह रूपह सु रवि । बरन वीर बैकुंठ गयो ॥ छं० १३० ॥

१. ए० क० को०—त्रियं भय । २. ए० क० को०—सक्रन्न । ३. ए०—पीर ।
४. ए०—घरा । ५. मो०—'जोधि पर लोय' ।
६. मो०—सत । ७. ए०—रगारि ।

इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पंद्रह भारी
योद्धा काम आए ।

कवित्त—तीन राइ रजवार । सु इक्क रायत्तन सोरह ॥
रावत्तन दस पंच । सेन संभरिपति जोरह ॥
नागर चाल नरिद । रेन १ रावत पट्टनवै ॥
इते राइ अंगए । चूक एकन ठट्टनवै ॥
उहिग दार पांवार पर । पहुर तीन लुट्ट्यो करन ॥
आचिज्ज सूर मंडल मुन्यो । सह सथ्ये २ बंध्यो सुतन ॥छं० १३१॥
रेन पवार (सामंत) की प्रशंसा ।

हुंडलिला—मरन न लड्यो तुंग तिहि । सब सथ्यई पंवार ॥
सोमेसर नंदन ३ छला । गहि गज्जे गंमार ॥
गहि गज्जे गंमार । तेग तोरिन बर जारन ॥
चूक मूक्कि चालुक्क । स्वामि कढ्यो बर बारन ॥
४ है हलान हथियन । रयन रायत्तन सिद्धे ॥
सह सथ्या तन ताइ । तुंग तिन मरन न लद्धे ॥ छं० १३२ ॥
रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का
उसे छोड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र
भाव से पेश आना ।

कवित्त—बंध रेन लिय रज्ज । चाइ चालुक छंडायो ॥
ढक्कि सेन संभरी । हेल् हम्मीर बढ़ायो ॥
षेल षग्ग षुमान । पान जोरें जल पीनो ॥
सो षीची परसंग । राइ तुल्ले दल लीनो ॥
अंकुन्यो अरिन रिनथंभ सों । सजि जह्व बीरन बलिय ॥
रवि राह सस्सि संमुह गहन । जानि छछुंदरि श्रप्पलिय ॥छं० १३३॥
तेरह तोमर सरबार और धम्य बारह सरबार सारंग की तरफ
के काम आए ।

भयो भूमि भूचाल । संव समरी आवुट्टे ॥
सजि सद्धे सिहर । सिंह पिंठी रवि तुट्टे ॥
तट्टे तेरह ५ तुरेंब । सथ्य बंवर बर घारी ॥
बार बार रावत्त । हस्त बर बाहर वारी ॥

१. मो०—रावन ।

२. ए० छ० को०—मंड्यो ।

३. ए० छ० को०—कला ।

४. मो०—हेतुपथ्यान बंधेरन ।

५. ए० छ० को०—पुररा ।

अदभूत जुद्ध चहुआन किय । मिलि धुमान चल्यो बलह ॥
अजहं सु अजत्र जुगिनि जगहि । पत्रु संभरि पषिन पलह ॥१३४॥
हुसेनखा का अमरसिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जो
का उसे छोड़ा देना ।

कुंडलिया — बंधे बर हुसेन । पान बल सुवर कुंआरिय ॥
रन जिते दुजजनह । कोइ न मंडे रारिय ॥
कोइ न मंडे रारि । मेछ सुंदरी बघरी ॥
समरसिंह मुनि कूह । त्रिय बंधत फिरि हेरी ॥
'घीठ पान दे आन । हद् अहरत्तन मंधे ॥
घीठ जमन हंकार । समर हेनु बर बंधे ॥ छं० १३५ ॥
रावल अमरसिंहजी की प्रशंसा और अमरसिंह का
उत्तको अपनी बहिन ब्याह देना ।

दूहा — अमर बंध रषी अमर । अगि दीनो बर माल ॥
जस बेली चतुरंग को । बरन बल्लि उर माल ॥ छं० १३६ ॥
चोपाई — जसबेली 'बरिगो चतुरंगी । चढ़ि चौडोल ग्रेह अनमंगी ॥
बरन राव रावल संजोगी । सु धर फेरि चालुक्क न भोगी ॥ छं० १३७ ॥
प्राची रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा
को चन्देल ने घेर लिया है ।

कवित्त — अद्द रयनि संदेह । सह सावद् कर्त्र यस ॥
पन्थी बीर जह्व । नरिद चंदेल 'छवीयम ॥
गूइराइ सत्रमलह । जुद्ध लोहं लरि बित्ते ॥
मुन्थी सेन पुम्बहि । पसार पच्छिम भरि जिने ॥
'अप्पाह अप्प वीतक त्रित्यो । बधि चंदेल सज्ज मुहर ॥
आवद्ध बीर मत्तो कहर । गही गल्ह बंधी सु धर ॥ छं० १३८ ॥
धुमान और "प्रसंगराय" खोबो का रणथंभ की
रक्षा के लिये जाना ।

गाथा — जिताराय धुमानं । निसानें सह्यं धायं ॥
छुट्टा रन रनयंभं । पा बगो पीचियं रायं ॥ छं० १३९ ॥
चोपाई — पीबीराइ हमीर अबन्निय । दोइ चहुआन घरम्म भवन्निय ॥
चालुक्कां तौं पक सबन्निय । दुत्तिय दीपंता निरवन्निय ॥ छं० १४० ॥

१. ए०-पीठ ।

३. ए० छं० को०-सवीयम ।

२. ए० छं० को०-बरिगो ।

४. छं०-अप्पाह ।

कवित्त—हूसासन अंग में । राज विहंग गति कीनी ॥
 मध्यदेश मालव नरिव । हंसध्वज भीनी ॥
 नीलध्वज कर धरिग । विप्र बंदन संपन्नौ ॥
 नालिकेल तरु फूल । अनंद सौनह सुभ किन्नौ ॥
 सत पत्र लगन लक्ष्मह भरिय । धरिय अट्ट तेरह तिनह ॥
 रनथंभ सेन संचरि नपति । करिय अवधि ताकरि रनह ॥
 पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना ।

हूहा—बागम बीर बसंत की । रन जित्ते जुघवान ॥
 बर हंसावति सुन्दरी । चलि ब्याहे चहुआन ॥ छं० १४२ ॥
 पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन ।

गाथा—रंग सुरंग सुदीहं । ज्यों कुंजिन मेलयं सडवं ॥
 बयं रुष मुष अंकुरियं । सा मिलयं बंकुरी मुच्छं ॥ छं० १४३ ॥

हूहा—मुच्छ रबन्धिय राजमुष । बर बंधिग सुरतान ॥
 तीन दिनन आवन लगन । आय संगंध पुरान ॥ छं० १४४ ॥

दोषक—ग्रंथहु ग्रंथ पुरान कुरानय । राज रसं बरुनी बरु जानय ॥
 नीति अनीति सुभं सरसानय । लक्ष्मरु कित्ति लही चहुआनय ॥ छं० १४५ ॥

संपय राज स कोकिल संठिय । जानि जुवान न जानि सु पुद्धिय ॥
 गायन गाइ सुअध्य सु अध्यिय । संज्ञय गानकला कल सधिय ॥ छं० १४६ ॥

छंदहु छंद रसे रस जानन । कंठ कला मधुरे मधु आनन ॥
 उद्दिम भेन उदार सुधारिय । नृज्जय रूप सरूप सुरारिय ॥ छं० १४७ ॥

हूहा—श्रवन रवन अरु सिष भवन । पवन त्रिविघ्न तन लग्न ॥
 वापी रूप तटाक वृष । विधि बंनन कवि लग्न ॥ छं० १४८ ॥

पृथ्वीराज का ग्रामवन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से
 हंसावती का शरोवे से झांकना ।

सा सुंदरि हंसावती । सुनि श्रोतान सुरुष्व ॥
 बर दिष्टा नन मानिय । बेला लगि गवध्व ॥ छं० १४९ ॥

सुनि आयो चहुआन अप । गुह्वन बंध्यो जानि ॥
 तब मति सुंदरि चितवै । भेदक गीषा वषान ॥ छं० १५० ॥

गौड में छे देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन ।

कवित्त—पंच बाल पिय झंकि । सुन्नित विरिय सु राजै ॥
 मनो चंद उदगन विवाल । मेरह बधि भाजै ॥

सुनिय श्रवन दै सैन । अलिन अलिमैन सरोजं ॥
 रति मच्छर मति काम । जानि अच्छरि सुर सोजं ॥
 घावंत वेस अंकुरित वपु । बसि सैसव तिन वेस धुरि ॥
 श्रोतान सुष्व दिष्टान घनि । यह कहि चलि सैसव बहुरि ॥
बूहा—प्रथम बत्त श्रोतान सुनि । सुष पं दिषहि सलोइ ॥
 सच्च बात झूठी चवौ । तब जिय सुष्व न होइ । छं० १५२ ॥
 सुनि श्रोतान सु मभिय । दिषि दिष्टांत सचीय ॥
 बीज चंद पूरन्न जिम । बघै कला मनि जीय ॥ छं० १५३ ॥
 हंसावती के शृंगार की तय्यारी ।
 बर बेहरि देखी नृपति । गो त्रि न त्रिपवर थान ॥
 बालु सुअंबर काज कौ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० १५४ ॥
 हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन ।
 आभूषन भूषन नृपति । वंसंधि कहि न कविद ॥
 कवि बनन इह लगि त्रिय । ज्यों बूढत लघु चंद ॥ छं० १५५ ॥
 हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य वर्णन ।
कवित्त—बर भूषन तजि बाल । सुवर मज्जन आरांभय ॥
 सोइ छबि बर दिष्वनह । कोटि ओपम गारंभिय ॥
 बर सैसव बर चंपि । कपि चिहु कोद म्पायो ॥
 सो ओपम कविचंद । जोन्हू बूढत नल घायो ॥
 बालपन बीर बर मित्र पन । रबि ससि करि अजुरि भरिय ॥
 बय बाल उबीवन प्रीति जल । सैसव तें हरई करिया ॥ छं० १५६ ॥
 नेत्रों की शोभा वर्णन ।
बूहा—बर सैसव अच्छर नहीं । जोवन जल बर मैन ॥
 बाल बरी धरियार ज्यों । नेह नीर बुडि नैन ॥ छं० १५७ ॥
 हंसावती के स्नान समय की शोभा ।
मोतीदाम—
 कि बाल प्रमोद सु मज्जन चंद । सुमुत्तिय दाम पयं पय छंद ॥
 कटि भिजि बार रही लपटाइ । मनो दिह सुक लग्यो ससि आइ ॥ छं० १५७ ॥
 वि ओपम दै बरनै कबिराज । द्रवै ससि रीस दसं महु आज ॥
 बहै जल भेदि सु कुंकुम बार । तिनं उपमान लहै कवि चार ॥
 जु राह्य प्रास पियै विष सोम । द्रवै मुष चंदह मत्तह भोम ॥
 करै बर मज्जन सज्जन नारि । धरै धन धारत संत सँवारि ॥ छं० १५८ ॥

हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहो शृंगार और
बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित
शोभा वर्णन ।

नराच—कियं सुरंग मञ्जनं । नराच छंद रञ्जनं ॥

सुगंध केस पासयो । बिहृष्य हृष्य भासयो ॥ छं० १६१ ॥

उपम्म जीस साप्रयो । बिरंचि लेष बाघयो ॥

जु बुद्धि रासि भासयो । गजीवता प्रगासयो ॥ छं० १६२ ॥

१जु केस मुत्ति संजुरे । समी सराह दो लरे ॥

मनीस बाल साच ज्यौ । कि कन्ह कालि नाच ज्यौ ॥ छं० १६३ ॥

षरी नबैन कध्ययो । जु कन्ह कालि मध्ययो ॥

तिलकक भाल भासयो । भलकक काल साचयो ॥ छं० १६४ ॥

विघार गंग पावयो । जु तिथ्यराज भासयो ॥

द्यसंत सोमता वरं । कलीन भद्र सावरं ॥ छं० १६५ ॥

सुभाव वान बाढ़यो । सुराह कं पि ठाठयो ॥

सु पट्टि बाल ठानयो । सु राह रूप जानयो ॥ छं० १६६ ॥

उपम्म नेन ऐनसी । मनी कि मीन मैनसी ॥

कवी १निसंक जानयो । उपम्म चित्त मानयो ॥ छं० १६७ ॥

भवन्न जीव छंडयो । ससीम रूप मंडयो ॥

उपंम बिब उगगनं । कमल्ल जासु सुम्मनं ॥ छं० १६८ ॥

रुलंत मुत्ति सोभई । उपम्म अत्ति लोभई ॥

अभ्रत तार विच्छुरी । दु चंद अगग निक्करी ॥ छं० १६९ ॥

सु तारि हंस सामरं । अनेक भेस तामरं ॥

विभास रूप जामरं । सु चंद चित्त साहरं ॥ छं० १७० ॥

रत्तन्न त्रिन जानयं । मु चंदवी प्रमानयं ॥

त्रिवल्लि ग्रीव सोभई । जु पोत्ति पुंज १लोभई ॥ छं० १७१ ॥

ससीर राह छंडि कै । असंन बैठि मंडि कै ॥

डरं हुरा विसाल यी । कि ईस दीप मालयो ॥ छं० १७२ ॥

उरं त्रिजंग जित्तयो । जु सुक्क बाग पंतयो ॥

कि काम बीर भंजयो । दहत्ति ग्रेह रंजयो ॥ छं० १७३ ॥

उपंम ईस १कुच्चयो । अनंन नीत्ति रच्चयो ॥

रोमंग तुच्छ राजयं । उम्पम्म ता विराजयं ॥ छं० १७४ ॥

१. मो०—दु ।

२. मो० बाढ़की ।

३. मो०—ठाठकी ।

४. ए० छं० को०—संड ।

५. मो०—लुभई ।

६. ए०—चक्की ।

उरज्ज यत्र काम की । लिषै जोवंत वाम की ॥
 कटी अलप्पता ग्रही । मनो कि रिद्धि रंकई ॥ छं० १७५ ॥
 कि सीभ द्वै न्यपं रही । तुला कि दंडिका कही ॥
 चलंत छुद्र घटिका । सदत सह दंडिका ॥ छं० १७६ ॥
 जु जेहरी जराइ की । घुरंत नद् पाइ की ॥
 नितंब अद्धं तुंबियं । प्रबाल रंग पुंबियं ॥ छं० १७७ ॥
 कि काम रथ्य चक्रए । चलंत एडि वक्रए ॥
 उलट्टि रंभ जंघनं । करी सु नाम पिडन ॥ छं० १७८ ॥
 उपम रंग राजही । जलज्ज भांति साजही ॥
 बसन्न सेत बन्नयं । उपम्म कव्वि भन्नयं ॥ छं० १७९ ॥
 मनो कि दीय अंभय । सुभंत मध्य रंभयं ॥
 दसन्न जोति दामिनी । मनो अनंग भामिनी ॥ छं० १८० ॥
 सुगति हंस लीनयं । सिगार सोभ कीनयं ॥
 झंकार झंजनं झनं । मनो कि सोर भदनं ॥ छं० १८१ ॥
 सु काममीर रंगयं । जु एडि जावकं लयं ॥
 मनो कि हस सावकं । चलै बिद्रुम्म भावकं ॥ छं० १८२ ॥
 १जरित्त मुद्रका नग । सु जोति अंगुली लगं ॥
 जुवास रास त्रामयं । मनो हुतास पासयं ॥ छं० १८३ ॥
 १दिपति नष्य बीसयं । रबी ससी सुरीसय ॥
 नव ग्रहीय पुच्चिया । उपम्म कव्वि बच्चिया ॥ छं० १८४ ॥
 जु चंद राह वेदि कै । कि हस्त चंद भेदि कै ॥
 उभै तिषट्ट भूषनं । सजंत मेटि दूषनं ॥ छं० १८५ ॥
 चलंत वाम कोड़यं । तजंत हस होड़यं ॥
 उमगि प्रिथ्थि देषनं । अलीन मइझ पेषनं ॥ छं० १८६ ॥
 सु सैसवं लगंत रषिष । मुक्किय दरस्स दिषिष ॥ छं० १८७ ॥
 हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन ।

हनूफाल - सुर मनो कौंकिल जोइ । अबजघ रंचन होइ ॥
 अंबर कमल्ल पुटन्न । रिनु देषि सीत वसन्न ॥ छं० १८८ ॥
 इह संधि रंभ दसन्न । बनि रवनि प्रीत बसन्न ॥
 कसि कासमीर सुरंग । झंकार पिड अमंग ॥ छं० १८९ ॥

१. मो०-पुंबियं, को०-पुंबियं

२. मो०-जरित ।

३. मो०-दिवत्त ।

नग जरित मुद्रिक पानि । रवि परी होड़ सुजामि ॥
 नौ ग्रहिअ पुं चिय हृष्य । उपम्म चद सु कष्य ॥ छं० १९० ॥
 सोई चंद उप्पम वेदि । कै हंसत हिम कर भेदि ॥
 बर एड़ि मडि सुरंग । जनु प्रभा रवि ससि संग ॥ छं० १९१ ॥
 षट दून भूषन मज्जि । सजि सजत सैसव लज्जि ॥
 नग मुत्ति जेहर जोड़ । गति हंस तजहित होड़ ॥ छं० १९२ ॥
 बर चरन लगि विपयान । पय परम चलि चहुआन ॥
 कर वाम पान सलाइ । बे काज क्रम अगदाइ ॥ छं० १९३ ॥
 तब लग्गी सैसव रषिष । मो कंत दरसन दषिष ॥ छं० १९४ ॥
 हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन ।

कुंडलिया—बर कुंकुम सत्र सध्य रगि । बहु सथ नृप बर सध्य ॥
 सो ओपम बर राज लहि । कवि बरनन लहि कष्य ॥
 कवि बरनन लहि कष्य । किरिय गुर राजहि कष्ये ॥
 मन ससिनर काम की । प्रात उगत रवि सध्ये ॥
 सुभ्रन रवि ससि रूप । एक असु जीव काम तर ॥
 पंचानन तिन होइ । पंच प्रथिराज देव बर ॥ छं० १९५ ॥
 पृथ्वीराज का विवाह-मंडप में प्रवेश । -

दूहा—बंदन बर आयो नृपति । तोरन संभरिवार ॥

प्रीति पुरानन जानि कै । कामिन पूजत मार ॥ छं० १९६ ॥
 पृथ्वीराज के रत्नजटित मोर (व्याह मुकुट) की शोभा और
 दीप्ति वर्णन ।

कुंडलिया—नग मग जटित सुमेर सिर । तन तर बर मन सोभ ॥
 पंच उभै ग्रह चंद सिर । संव सपत्ती लोभ ॥
 संग सपत्ती लोभ । जुढ तट बर अन रुक्मी ॥
 रहै नृपति दे आन । नैन चितवत फिर मुक्की ॥
 पंचन पष चिमनिय । ति नर तर्कनी मन लगा ॥
 रन रावत जिम रेह । सूर भंगन ग्रह नग्गा ॥ छं० १९७ ॥
 हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना ।

चौपाई—सत संग किन्न अवंत अली । नचत बर अचित 'पाय चलि ॥
 पिय तन देवि रूप रस 'सानि । पंधि मनी नव पंचर आनि ॥ छं० १९८ ॥

१. ए० छं० की०—यान ।

२. मो०—कहत ।

३. मो०—उप ।

४. मो०—हैं सुभ्रत ससि रूप ।

५. ए० छं० की०—नग्गा नग्गा ।

६. ए० छं० की०—पिय । ७. मो०—मानी ।

पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य देख कर प्रफुलित होना ।
कवित्त—बैदि सु बर चहुआन । मझ ग्रह काज सु लित्रो ॥

बाल रूप अवलोकि । महर महरं रस पित्रो ॥

द्रिग सौं द्विव संमुहे । पीय उमगे द्रिग ओरन ॥

सो ओपम प्रथिराज । चंद ज्यौ चंद चकोरन ॥

नव भमर पिठु वर कमल में । कै मरुंद झुलावही ॥

आनंद उगनि मगल अभिष । सो कवि वरनन गावहीं ॥छं० १९९॥

पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना ।

बूहा—बर अंचल सोमेस तिन । वधि वीर बर नारि ॥

देवक्रम दुज क्रम कही । सो बर वीर कुआरि ॥ छं० २०० ॥

हंसावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन ।

कवित्त—बैनि नाग लुट्टयो । बदन ससि राका लट्टयो ॥

नैन पदम पंषुरिय । कुंभ कुव नारिग छट्टयो ॥

मडि भाग प्रथिराज । हंम गनि सारंग मत्ती ॥

जंघ रंभ बिपरीत । कठ कोकिल रस मत्ती ॥

ग्रहि लियो साज चंपक बरन । दमन बीज दुज नास बर ॥

सेना समग्र एकत करिय । काम राज जीतन मुघर ॥छं० २०१॥

बूहा—कवि लघु लघु बत्ती कही । उकति चंद नन छेव ॥

मनों जनक बंदन कवन जानु कि बदे देव ॥ छं० २०२ ॥

इसी समय दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना

और ५० सामंतों का उस आक्रमण को रोकना ।

कवित्त—चदिठय सब सामंत । चूक सब सेन मु दिण्णय ॥

षट दस बर सामंत । मरन केवल मन लिण्णय ॥

षंत निसुरति समूह । जूह देवान मु घाड्य ॥

मार मार उचरत । मार कहि समर मु माड्य ॥

इत उतह सब सामंत रजि । तिन अरि नन तिन बर करिय ॥

मानव न नाग दिन आइ जुघ । सुबर जुद्ध रती करिया ॥छं० २०३॥

पृथ्वीराज के सामंतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन ।

रसावली—

सूर सम्हें परे, सेन भग्ने लरे । काफरं विड्डु रे, लोह मञ्ची झरे ॥छं० २०४॥

पारसं तं फिरं, सूर हक्के करं । कदिठयं धंजरं, नंषि लोहं करं ॥ छं० २०५॥

सूर बघ्यं परं, मोहं मोहं परं । कूक बज्जी परं, लोह वडप्परं ॥छं० २०६॥

१. ए० छं० को०—सारव ।

२. मो०—जीपन ।

* यद्यपि यहाँ पर दिल्ली का कोई जिक्र नहीं है परंतु यह बात आने छं०

२९० में झुलती है ।

३. ए० छं० को०—उचंत, उचंचंत ।

अग्न उड्डी सरं, बीर बाजं डरं । श्रोन रतं 'धरं, अंत आलुझसरं ॥छं०२०७॥
सूर जा उच्चरं, रारि उगं जरं । लज्ज पण्व परं, लोह लोहं करं॥छं०२०८॥
बास साजं भरं, रेनि अड्डी बरं । बाज कुट्टी सरं, षान शारा सरं॥छं०२०९॥
डाह मीरं धरं, मझ्ज रोसं ररं । सानि सामं नरं, षाह घुम्मं धरं ॥छं० २१०॥
डूहा - कन्ह बंध मझ्जं रण्णी । रहे सु जंत कु आर ॥

है मुक्किक सामंत गौ । उगर मेर पहार ॥ छं० २११ ॥

दूसरे बिबस प्रातः काल सुरतान खां का आक्रमण करना ।

कवित्त - प्रात षान सुरतान । सेन 'बंधी अहसारी ॥

बर सोभै कविचंद । चंद अष्टमि आकारी ॥

अर्द्ध चंद्र महर्मुदि । अर्द्ध पुरसान षान करि ॥

मध्य भाग रस्तम्म । सेन पुरसान जित्ति 'वरि ॥

दल धरकि भरकि सिपर लई । अहन दीय उहिम सुभर ॥

चित्रंग राइ रावर समर । चढि मंग्यौ 'बंधव अमर ॥ छं०२१२॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन ।

त्रोटक - सारंग चढ्यौ कविचंद भनं । रन नकिय बीर नफेरि षनं ॥

छननंकहि घंटन घंटन की । तन नंरुहि भेरि भयटन की ॥ छं० २१३ ॥

षननंकहि घुध्वर प'ष रनं । ठननंकहि आइ प्रसद् घनं ॥

'बर चिकिकय चिकि मिले पलटे, दिषि घुध्वर रेनिय अरस घटं । छ २१४॥

तमके तन तेज पहार उठे । बहुरे किधु पाविस अम्म बुठे ॥

कविचंद सु अंसुय 'साव घरे । त्रय 'नेत्त जु गंग समीर घरे ॥ छं० २१५ ॥

दोउ दौन आनदिय तेग छुटी । सु बनै चहुआनय सार टटी ॥ छं० २१६ ॥

तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना ।

डूहा - उट्टि डाल चहुआन बर । बढि अबाज परवान ॥

सुनि बरनी सों रत्त तिन । सत छुट्टे बर घान ॥ छं० २१७ ॥

थोड़ी बेर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड़ गए ।

कवित्त - घुअ मुख रावर समर । षान निसुरसि षेत तजि ॥

घरी अद्द बजि लोह । सबै चतुरंग सैन भजि ॥

जुद्ध कंध कुल-नास । षान निसुरसि अहुट्टे ॥

षामर छत्र रषत्त । तषत्त है वै बर कुट्टे ॥

प्रथिराज बीर रावर समर । मिलि नषित्र पति ग्रहन गिरि ॥

धर लज्जि लज्जि आहुट्टु पति । तीन बार अहुंग गिरि ॥छं०२१८॥

१. मो०-बरं । २. मो०-बन्धे । ३. ए० छं० को०-बर ।

४. ए० छं० को०-बंध्यौ । ५. ए० छं० को०-“बर चिकिकय” ।

६. मो० साष । ७. मो०-नेत्र । ८. ए० छं० को०-नषित्र ।

मूढ के अगत में लूट में एक लाख का असवान हाथ लगना
और पीरोज खां का भारा जाना ।

जीत लियो चतुरंग । चाह चतुरंग समोरी ॥

'एक लख प्रमान । डाल गोरी ढंढोरी ॥

बां पीरोज परि बेत । बेत को का उप्पारी ॥

समर सिध राबर । नरिद शोरी करि डारी ॥

बज्जे निसान जयपत्त के । बिन सुरतान लुट्टि दल ॥

नीसान नद् उनमद् के । चामर छत्र रषत्त तल ॥ छं० २१९ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं
आपका बहुत ही अनुगृहीत हूँ ।

मिले आइ बहुभान । सब्बर सामंतन मन्ने ॥

उच्च भाव आदर सु । दीन उर चपि सु लिभ्र ॥

नैन चैन नन बैन । हीन सुपन्न कडि दोऊ ॥

बर समान तुम राज । तेग राजन विधि कोऊ ॥

रष्ययो गाम रतिवाह दे । तुम कधें दिल्ली नयर ॥

चित्रंग राव रावर समर । पाघ सीम बंधी अमर ॥ छं० २२० ॥

पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुंभा जी को संभर
की जागीर का पट्टा लिखना ।

इहा— 'तेजसिंह सुत समरसी । तिह मुन कुंभ नरेम ॥

संभरि संभरि वार दे । दौहितो सोमेम ॥ छं० २२१ ॥

समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना ।

कवित्त — तब चित्रंग 'नरेस । पिअवि नष्यो बर पट्टो ॥

तुम ढूंढा कुल दुढ । सु मनि ऐसी मति ठट्टो ॥

१. मो०—'एक लख पम्बर प्रमान' ए० क० को०—एक लख पम्बर प्रमान ।

२. मो०—'बिन सुरतान सु लुट्टि' छत्र ।

३. क० पाघ ।

४. छं० २२१ की प्रथम पंक्ति का पाठ ए० क० को०—तीनों प्रतियों में समान है जिसका अर्थ होता है कि 'समरसी का पुत्र तेजसी तिमका पुत्र कुम्भकरस की कि पृथ्वीराज का भाजा बा किन्तु मो०—प्रति में तेज सिंह पिचन सुत माक करिन बर देव' पाठ है, इससे उक्त अर्थ में शेष पड़ता है ।

५. मो० कवित्त ।

हृद्य नीचकरतार । हृद्य उप्पर गजत गुर ॥
हम आहुट्टु मझामि । स्वामि कहिजे सु ^१उंच बर ॥
कालंक राइ कप्पन ^२विरुद । कुलह कलंक न लगयो ॥
दगथी न'हाथ ^३चित्तोर पति । हम अगत सब दगयो ॥छं०२२२॥
समर सिंह का चित्तोर जाना ।

दूहा—प्रेह गयो चित्रंग पति । गौ ठिल्लिय नप छेह ॥
मास बीय बित्ते नपति । मती मंडि नप एह ॥ छं० २२३ ॥
पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त हो जाना ।
विमल विलोकन कोक रस । सोक हरन सुष मत्त ॥
समुष हंस प्रभु नीलग्रभ । विभ्रम बर द्विग मत्त ॥ छं० २२४ ॥
हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन ।

भुजंगी—द्विगं मंत्र मंत्रं सुमंत्रं प्रमानं । वियंकेलि करनी विधानं सुजानं ॥
निजं नेह नीलं सु कील कलानं । मुषं मूल बिप्यं सु देवं सघानं ॥ छं० २२५ ॥
मयं मोह मंडं सु बंदीन दानं । हयं हेम हडुं पताका सु थानं ॥
^४मु अंघं च सोभा स सोभा स मंत्रं । छयं छंद जोतीय संसाइ तंत्रं ॥छं०२२६॥
पियं पेम तंत्रं सु कंतं सु थान । सुराया बिहंगं सु पुत्री प्रमान ॥
लियं प्रेह सज्जया प्रथमं अलीन । मनो मत्त मातंग ^५बंध्यौ कलीनं ॥छं०२२७॥
बचं अंकुसं हेट हेटं नलावै । दुरै देषि जालंतरे फेरि नावै ॥
छुटथौ सैसवं लज्ज तें प्रेम आसां।फिरे जानि बाळा तनं प्रेम आस ॥छं०२२८॥
सया हंस हंसावती नील थाह । कवी केलि कंठे यकी सञ्च स्याहं ॥
चरं अंत घोरं विवाहं बिरोरं । कला केलि बद्धी विहानं सजोरं ॥छं०२२९॥
दनी देव ज्यौं जानि सदान सेजं । सदा स्वेद वेदं हुओ प्रात हेजं ॥
... .. ॥ छं० २३० ॥

मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध होकर
कामान्ध वृषभ की नाई मस्त होना ।

* कवित्त—अगह गहन रमि रमन । रवन रमि रवन सु छुट्टिय ॥
दहिय ^६वदन सहि रहिय । सरस रस सौर सु लुट्टिय ॥

-
१. मो०—बंद । २. ए० छं० को०—विरुद ।
३. छं०—चित्तोर । ४. छं० को०—सुष ।
५. मो०—“छय दुतिय छंद उम्माय तंत्रं । ६. मो०—बद्धौ ।
* यह छन्द मो०—प्रति में नहीं है । ७. को०—सवर ।

महिय लहिय नहि नहिय । 'हृदय ह्य ह्यइ यथा 'हइ ॥
सहिय सेज कह कहिय । चंषि चिचनिय सन्न यह ॥
कामंघ अंघ मुद्धह वृषभ भ्रमन भ्रमावह निलक सन ॥
इह अर्थ सर्थ जानन सु गह । अगह मुगद्धन मन हसन ॥छं०२३१॥
हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निम्मल चन्द्रमा की
भाति प्रफुल्लित हो जाना ।

दूहा—मन हिय वृत्तन मुगधनिय । रमि राजन निय नेह ॥
नमिय निसा कर अग रथिय । निसि त्रिम्मल दिय छेह ॥छं०२३२॥
शनं शनं: हंसावती के डर और लज्जा का हास होना
और उसकी कामेच्छा का बढ़ना ।

छंद कमंघ—त्रिम्मली नेह नासा । दिष्ट एन लग्गी सु त्रासा ॥
छेहंग कामी रसा । संबान भग्गी त्रसा ॥ छं० २३३ ॥
हंसावती संकुची । दासी प्रीति संवची ॥
† पुस्तका पढ़ि विस्तरी । कथा गाथा प्रेम विस्तरी ॥छं० २३४॥
दंत कंडक निस्तरी । हास विलास मुस्तरी । छं० २३५ ॥
हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चन्द्रमा को देख कर पृथ्वीराज
के हृदय समुद्र का उमड़ना ।

काव्य - गगन सरस हंसं स्याम लोकं प्रदीपं ।
सस ५सज बंधू चक्रवाकोपि कीरा ॥
तिभिरगजस्रगेद्रं चन्द्रकातंप्रमाथी ।
बिकसि अरुन प्राची भास्करं तं नमामी ॥ छं० २३६ ॥
अमृतमय शरीरं सागरा नंद हेतुं ।
कुमुद बन बिकासी रोहीणी जीव तेसं ॥
मनसिज नस बंधु माननीमानमर्ही ।
रमति रज निरमनं चंद्रमा तं नमामी ॥ छं० २३७ ॥
दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती
ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये ।

मुरिल—बंधय चंद चकोरत राजन । ५हंसनि हंस उदै भयो साजन ॥
बिहु निसि नेह निसा कर बहिडय । कनक जेम कसि कर आहुटिय ॥छं०२३८॥

१. ए०—हरष ।

२. को०—हय

३. मो०—मगधिय ।

४. मो०—ममं मसं ।

† इस छन्द का पाठ चारों प्रतिभों में उलट पलट है ।

५. ए० छं० को०—हृदयि, हंसनि ।

६. ए०—आहुटिय ।

भाषा—उषनि फलनी फंदा । विसनी पत्त बलाकरे हृष्यं ॥
मरकति मनि भाषन्ने । परठियं पहुप सु तीयं ॥ छं० २३९ ॥

पावस का प्रस्त होने पर सरह का प्रागम और
शीत का बढ़ना ।

झिल्ली झिगुर करी । गायन पुत्रीय ललित लुम्भरियं ॥
पहुकिय वष 'सु हासं । झलकिय सीताइ मदं मंदाइ ॥ छं० २४० ॥
किय मंडि सु पुक्करियं । मैनं राइ सिरीय बंधायं ॥
पर दार और साही । पुक्कारे जाहू रे जाहू ॥ छं० २४१ ॥
शीत काल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ वंपति में प्रेम बढ़ना ।
पंपट करि करतारं । हंसा सयनेव हंस सह पायं ॥
निसि बड्डय अंकुरियं । कुक्कडयं कंठ कल्लायं ॥ छं० २४२ ॥
अचलीय नेह ससी हर^१ । 'रसनह रंगी सुरंगयं देहं ॥
उवकंठय सदेसं । गावै एकंतं चित्त सलाइ ॥ छं० २४३ ॥
हे मौनं करि कोकिलयं । जलधर सम एह कंठ उंचत ॥
विकसित कर जल बंदे । विकसित रमे लोक सावासी ॥ छं० २४४ ॥
संग्राम गए सूरौ संसगे । होइ चंद्रोदए ॥
विविधा काम तीयं । अवसर रत्त काम लम्भाइ ॥ छं० २४५ ॥
गाहा नक्किय तत्ती । सदानं नूपुरे उरवा ॥
'जिह अंकुर पध्वितं । भूतं जुध्याइ मंग भगुरयं ॥ छं० २४६ ॥
जोई छबिना वेनं । रचया सि महिला न रूप महु कमले ॥
तां नचिय सु बियोगे । निमहं मुत्तं जुग जुगाए ॥ छं० २४७ ॥
हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में
अहिंसि मस्त रहते थे ।

पीय आरंभत त्रिययं । त्रिय आरंभ कंतं चित्तायं ॥
सो तिय पिय पत्ती । मा पिमं विहमं धामं ॥ छं० २४८ ॥
अजा 'सन्न जो होजा । कंठायं पर्यो हरं फलयं ॥
दीहते सय लष्वं । हसनं रस नाय स बकियं होइ ॥ छं० २४९ ॥

१. ए० छं० को०—महासं ।

२. मौ०—कंठक ।

३. ए० छं० को०—'अबलिय नेह से सहिए' ।

४. ए० छं० को०—रसरह ।

५. ए० छं० को०—उषंती

६. ए०—वष ।

७. ए० छं० को०—कान ।

८. ए० छं० को०—'निह अंकुर ए जित' ।

९. ए० छं० को०—चित्तायं ।

१०. मौ०—बंधयं ।

११. ए० छं० को०—सामं ।

† जोती अहर सहाओ । उचसिया कील कंतायं ॥
सो तिय अग सुहाई । दिस असनी रसं नायं ॥ छं २५० ॥

कवित्त—रयनि पंच संकुलित । पंच लज्जित दुरि लोइन ॥
भिरत उभय भिरि षग । मग लगिय जुर जोइन ॥
१ मिलत चतुर इक रीय । अतुर ग्रहं ३ ददुर बल ॥
कमल कमल मंडिय सु चित्त । नष अष ३ बष्य बल ॥
आरति सोइ दइता विछुरि । पार ५ समुद्र न नेह लहि ॥
इय प्रति पतिवृत प्रथम पहु । नवति चित आचभ लहि ॥ छं २५१ ॥
इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन ।

कवित्त—हंसराइ ५ हंसनिय । पानि ग्रहनी ग्रह हल्लिय ॥
मालव हुग देवास । १ वाम मुद्रत नव बल्लिय ॥
ह्य गय धुर धर धम्म । क्रम्म किती अति दानह ॥
ता पाछे रनयंभ । प्रीति षीची चौहानह ॥
चित्रंग राइ रावर रमिय । ३ देव राज जद्व बहिय ॥
वितिय वसंत रिति अम्मरिय । अबल एक किती रहिय ॥ छं २५२ ॥
समर सिह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन ।

दूहा—वत्त कवित्त उगाह करि । चंद छंद ६ कविचंद ॥
समर अठारह बरष दन । दिवस त्रिपंच रविद ॥ छं २५३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हंसावति विवाह
नाम छत्तीसमो प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ३६ ॥



† यह छंद ए० क० को०—तीनों प्रतियों में नहीं है ।

१. मो०—मणित

२. ए० क० को०—दुदुर ।

३. श्री०—बष्य ।

४. मो०—समुद्रिन ।

५. ए०—मंडिय ।

६. मो०—वास मुद्रत नवल्लिय ।

७. ए० क० को०—वेदराज ।

८. को०—कवि छंद ।

अथ पहाड़राय सम्यो लिष्यते ।

(सैंतीसवां समय)

कविचंद्र की स्त्री का पूछना कि पहाड़राय तोंवर ने
शाहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा ।

बुद्धा— दुज सम दुजी सु उच्चरिय । ससि निसि उज्जल देस ॥
किम तूंअर पाहार पहु । गहिय सु असुर नरेस ॥ छ० १ ॥
शाहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि वृध्वीराज का
क्या हाल है ।

कवित्त— संवत सर च्यालीस । मास मधु पष्य धम्मधुर ॥
प्रतिय दीह अहरुन्न । उदित रबि व्यंब बरन तर ॥
अलिय आल आलोल । गरुअ 'गज्जे' विसम्म गन ॥
रस रसाल मंजरि । तमाल पल्लव कमल्ल मन ॥
साहाब दीन सुरतान भर । आनि द्वार ठढ्ढी सु बर ॥
अष्वै ततार पुरसान वां । कहा अबरि चहुआन घर ॥ छं० २ ॥
तत्तार खां का उत्तर देना ।

गाथा— उच्चरि धान ततारं । अरि वरजोर अतर अत्तारं ॥
सामंत मूर सभारं । मत्त अमित समित जमकारं ॥ छं० ३ ॥
शाहाबुद्दीन का वृध्वीराज पर चढ़ाई
करने की सलाह करना ।

धुजंगी—

कई साह साहाब तत्तारवानं । रचो मंडली मंडि दीवान धानं ॥
अरी 'धान दिष्वी बरं आसमानं । 'करी कूच सेना प्रकासंत भानं ॥ छं० ४ ॥
दलं लष्व तीनं गजं बाज पूरं । तिनं तेज तीनं करं कित्ति सूरं ॥
अनंहद् नीसान नहे कि नूरं । नचे भूत बीताल मत्ते मूरं ॥ छं० ५ ॥
हलाहम्म शंकार हुंकार शारी । तुट्टे तेक तानं शरं हुमि धारी ॥
करे सेन मगं नचे जोगमाया । धनं निवरे चोरं नचे न छाया ॥ छं० ६ ॥

१. यो०-मज्ज ।

२. ए० छं० को०-विश्वं मन ।

३. ए० छं० को०-पाव ।

४. यो-करी कूच सेनाह सासंत भानं ।

सुरं सिद्धनं सोभ सा भानं लोलं । सजे सेन राजी रसालं सदोलं ॥
 रची रंभ रंभा विमानं विमानं । जयं सह देवी 'दिमानं दिमानं ॥ छ० ७ ॥
 मनो साल भंजीक तेजं प्रकारं । रची स्वामि सची रची मडि रारं ॥
 धजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे । रितं राज अग्ने मनुं फूलि 'दगे ॥ छ० ४ ॥
 असं बेस कंपी दुरी चौर मज्जी । चढे काम फजरं पती पीत सज्जी ॥
 निहारं विहारं उपं हार हारं । बरें अग्रसेना मघ 'व्रत पारं ॥ छ० ९ ॥
 रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं । सजे ताल वंताल सिद्ध सबैनं ॥
 बन अच्छरी कच्छि विम्मान गैनं । पतं जुगिनी पानि इच्छें त रैनं ॥ छ० ११ ॥
 नचै रंग नारद मंडै अनूपं । चमू च्यारि भारं भरं सहि रूपं ॥
 अनी कोर आकार आकृति नूपं । वढी भाग पथी पथो उंचओपं ॥ छ० ११ ॥
 मही मंडि माया रहै लोपि मालं । पिले 'षग अगं बल बोलि तालं ॥
 नवं नह नीसान 'भेरी भयानं । मनो मेघ गज्जे 'कयानं पयानं ॥ छ० १२ ॥

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों
 मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना ।

दूहा— 'तब ततार पुरसान वां । सुनौ साह साहाब ॥
 अरि अभंग दल सबक रस । अमित तेज बल आव ॥ छ० १३ ॥
 अरुन बरुन उदित अरुन । बड़ि प्राची रुचि 'रूप ॥
 मेच्छ सामि चडि सेत अस । रन दिल्ली सम भूप ॥ छ० १४ ॥
 समस्त सेना का बस कोस पूर्व को बड़ कर पड़ाव डालना ।
 कवित्त— अरुन कोर बर अरुन । बंदि साहाब साहि बड़ि ॥
 दिसि प्राची दष्विन 'विपथ्य । पच्छिम उत्तर बड़ि ॥
 सेस भाग भै भाग । भोमि संकुचि कुकपि निल ॥
 गमन सेन उड़ि रन । गेन 'रवि षत्त धुंघ इल ॥
 दस कोस धान दल उत्तरिग । धन अवाज धर रिपु 'परिग ॥
 गत मेच्छ मंडि मंडल सुमति । गति सु जंग अगगर धरिग ॥ छ० १५ ॥
 दूहा— रत निसान डग मग अरुन । जिम दीपक बसि बात ॥
 सुनिव धंष प्रति साह मन । तन विकंप अकुलात ॥ छ० १६ ॥

- | | |
|----------------------------|----------------------|
| १. ए० छ० को०—विमानं विमानं | २. मो०—हंगे । |
| ३. मो०—जात । | ४. मो०—पग । |
| ५. ए० छ० को०—भेरी । | ६. मो०—पयानं कयानं । |
| ७. ए० छ० को०—तवि । | ८. ए० छ० को०—रुचि । |
| ९. मो०—विद्ध । | १०. मो०—रचि । |
| | ११. मो०—परिय । |

अरिल्ल - मिले मेच्छ मंडल भर भीरं । अतुलित पान पान संघीरं ॥
उठत बंयन अप अप्प समीरं । साहि 'बडो थिर कर कंठीरं ॥ छं० १७ ॥
साहाबुद्दीन की आशानुसार बीवान खास में गोष्ठी के लिये
उपस्थित हुए सबस्य योद्धाओं के नाम ।

हनूफाल - धम धम्म बज्जि निसान । चडि सेंन कं पि दिसान ॥
पहु ओर वीरति भान । भर मंडि साहि दिवान ॥ छं० १४ ॥
बर मंत्र धान ततार । जु रि जुद्ध सेन करार ॥
धुरसान हस्तम धान । 'बाजिद मीर प्रमान ॥ छं० १९ ॥
मनसूर सेर हुआब । जिन दान धग जम आब ॥
'महमंद कम्मन काल । तिन तेज अरि भै चाल ॥ छं० २० ॥
मन ज्यंद जम्मन धीर । तेजम्म धान गंभीर ॥
बेहद् धान जिहान । निमुरत्ति आजम मान ॥ छं० २१ ॥
ममरेज से रनसिध । भजि जात तिन अरिभंग ॥
मुलतान धान मसद् । भारध्व धान सुहद् ॥ छं० २२ ॥
आमोद जाजन पीन । तिन हक्कि अरि तन छीन ॥
आषेट आतम मीर । सारुफ सेर गंभीर ॥ छं० २३ ॥
सुरतान 'मंडि दिवान । बर मंच करि परमान ॥ छं० २४ ॥
सभा में ततार खा का नियमित कार्य के लिये प्रस्ताव करना ।

हूहा - मिले मीर भर धान सब । रचि दिवान दरबार ॥
मंड मसूरत्ति मत्त बर । तब धुरसान ततार ॥ छं० २५ ॥
वितंड खा का सगर्व प्रपना पराक्रम कहना ।

कवित्त - मीरधान से रनवितंड । हक्किय हक्कारिय ॥
सनमुष साहि सहाब । बोलि बहु बहु बक्कारिय ॥
हनों सेन हिदवान । ऐन चहुआनह सघों ॥
अरि अरिन्न अरि भीर । हक्कि हक्कों धग^१पंघों ॥
गज बाज साजि ऊपल पयल । पल अंदुन भर्जो 'भरन ॥
भुज भाष भिस्त मंकोद रन । कै 'घोरह जीवन धरन ॥ छं० २६ ॥
धुरसान खा का राजनीति कथन ।

-पट्टरी - धुरसान धान कहि सुनि ततार । संघो सु बत्त जंपो सु ठार ॥
दल जोर तेज हिः अकार । बर मंत्र सेन रघ्यो 'विचार ॥ छं० २७ ॥

१. ए० छं० को०-बटो बठ्ठी ।

२. भो०-भाजीद ।

३. ऐ०-महमंद ।

४. ए० वक्ति, छं०-माति ।

५. ए० छं० को०-बन्धी ।

६. ए० छं० को०-सरन ।

७. ए० छं० को०-घोरहि ।

८. ए० छं० को०-विचार ।

बुल्लयी वितंड काली तमकि । तस छतें जुद्ध ^१किम साह संकि ॥
संग्रहो सेनपति हिंदुराज । बंधों अषारि षल षग बाज ॥ छं० २४ ॥
निसुरति मीर जंवे सु तब्ब । तम हसे साह किज्जें न प्रब्ब ॥ छं० २९ ॥
बूहा - राबन प्रब्ब बिनाश रज । एन सीस ह्यवीर ॥
अप्पा कोनन उच्छयो । कालू से रनमीर ॥ छं० ३० ॥
पट्टरी - पुनि अट्ठि साहि निसुरति बैन । सूरतान आन भरकान ^२नैन ॥
कुहि बाज तेन चालंत पब्ब । भीषंग कं पि है प्रब्ब सब्ब ॥ छं० ३१ ॥
राई सुमेर करते न बार । ^३अल्लह सुआल ऐसी विचार ॥
बिन साह तेज बद्धे मु प्रब्ब।इष्पै न ताहि अल्लह अदब्ब ॥ छं० ३२ ॥
मनो न संक चहुआन सूर । बंधव सुमंत्र भर मंत्र पूर ॥
बेलु विलाइ नदि बंधि वारि।बिन सेन कंक चहुआन च्यारि ॥ छं० ३३ ॥
अहिइ सहस्स दस सामसंद । दल गेन लेस तन तेक कंद ॥
बुल्लाइ बैनपति समर मंड । बंचे विचार मु विहान चंड ॥ छं० ३४ ॥
बाबसाह का (लोरक राय) खत्री को पत्र देकर धर्मायन
के पास दिल्ली भेजना ।

गाथा - ^४बुल्लि मु इत हजूर । मंडे पत्रीय बीर पत्रायें ॥
अष्पित पान प्रमानं । कथ्यी गाथाय सूर चहुवानं ॥ छं० ३५ ॥
बूहा - बोलि इत चव निकट लिय । दिय सु पत्र तिन ह्यथ ॥
कहौ जाइ धम्मान सों । सजि चहुआन समथ्य ॥ छं० ३६ ॥
दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना ।
गाथा - निज के वीसा रुठं । बर साहाब दिल्लीयें प्राप्त ॥
बरति मंत्र मष किन्नं । गज्जय मद् भद् नीसानं ॥ छं० ३७ ॥
बूहा - गए दूत चलि निकट चव । करि सलाम बर साहि ॥
पुर बंकिन कंकन सजन । बलि आतुर बर ताहि ॥ छं० ३८ ॥
दूत का दिल्ली पहुँचना ।
स्याम ^५पष्य पूरन क्रमिग । पहु जुगिनपुर नैर ॥
दिय कगमर धम्मान कर । बर ^६अम्मै रित बैर ॥ छं० ३९ ॥

१. मो०-क्यों । २. मो०-दैन । ३. ए० क०-अल्लहसुआल ।
* ए० क० को०-“हिन्दु मु हद् सोमेस नंद । लगे न लेस तन तेक कंद” ।
४. ए० क०-बुल्लयि । ५. मो०-साह ।
६. मो०-पष्य । ७. ए० क० को०-मंथी ।

दूत का धर्मायन से मिलना ।

बाबा—दिय पत्री धर्मानं । पानं गहि पाइ नाइ बर मध्यं ॥

भर चौहान समध्यं । सज्जी सम साह कज्जयं बैरं ॥ छं० ४० ॥

धर्मायन का पत्र पढ़ कर बाबसाह के मत पर शोक करना ।

बूहा—कायथ कागर बंचि कर । हायथ 'हाय सु कीय ॥

साहि काल सुभर सभर । आय पहुंच्यी दीय ॥ छं० ४१ ॥

धर्मायन का दरबार में जा कर यह पत्री कौमास को देना ।

बचनिका—पत्री धम्मन बाचि कें देहु । बहुरि दरबार गएहु ॥

कै मास कों तसलीम कीनी । पत्री सु हाथ दीनी ॥ छं० ४२ ॥

शहाबुद्दीन की पत्री का लेख ।

चौपाई—हम तुम घरतें सौगंध कीनी । नाते धम्म दुद्ध है चीन्ही ॥

दानव देव आदि भी लगे । तातें बैर पुरातन जगे ॥ छं० ४३ ॥

ज्यों ज्यों हम तुम बजिहैं 'घार । त्यों त्यों सुकवि गाइहैं सार ॥

अमर नाम साहिब का सांघा । पानी पिंड बेह का कांघा ॥ छं० ४४ ॥

हम तुम में बंध्या अहंकार । मरदां धम्म पुरातन धार ॥

मरदा अलि भारध्या बेती । मरद मरै तब निगजै बेती ॥ छं० ४५ ॥

बूहा—मरदां बेती षग मरन । 'अध्य समप्यन ह्य्य ॥

सो सच्चा कच्चा अवर । कोइ दिन उहै सु कथ्य ॥ छं० ४६ ॥

कथा रही पैगंबरा । अरु भारध्य पुरान ॥

तातें हठ हजरति है । सुनो राज बहुवान ॥ छं० ४७ ॥

धर्मायन का कौमास के हाथ में पत्र देना ।

दिय पत्री इह कहि सु कर । करि सलाम तिय बार ॥

साहिब तुम सन लरन कौ । आयो सिंधु उतार ॥ छं० ४८ ॥

कौमास का पत्र पढ़ कर सुनाना ।

सुनि मंत्री नूप अष्यि सम । बंचि पत्र तिन बार ॥

कंब कूब धंधार पति । आयो सिंधु उतार ॥ छं० ४९ ॥

पत्री सुनकर वृष्ठीराज का सामंतों की सभा करना ।

सुनि पत्री बहुवान ने । सम सामंतन राज ॥

बात परद्विय सब भरन । अण्य अप्य 'भरसाज ॥ छं० ५० ॥

१. ए० को०—हीय ।

२. ए० को०—सग्यो ।

३. ए० को०—बाई ।

४. ए०—ह्य्यि ।

५. मो०—बल ।

पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना ।
कविस्त — कहै राज प्रथिराज । सुनो सामंत सूर भर ॥

गज्जनेस चतुरथ्य । विरथ आयौ सु अप्प पर ॥
साज बाज मय मत्त । षग बर भर उम्मारिय ॥
उतरि वेग नदि सिधु । सुनिय धुनि अर उत्तारिय ॥
सज्जी समध्य सामंत सब । संमर चावर डं व रन ॥
सुरतान खान खुरसानपति । दल बद्दल पावम परन ॥ छं० ५१ ॥

सामंतों का उत्तर देना ।

तमकि राज प्रथिराज । कहै ममत सूर भर ॥
चाहुआन समरथ्य । पथ्य भारथ्य चारु चर ॥
सिधु साहू गज गाहू । पग षंडी पल पित्तह ॥
कर अंजुलि रिषि 'अस्ति । चंद अचवन दल किमह ॥
हर हार सार मंमुष समर । अमर महो जग्यो अमर ॥
ज्यों मान व्योम आरढ़ 'घरि । दनी चमू चौसर चमर ॥ छं० ५२ ॥
पृथ्वीराज का पचीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना ।

अरिल्ल—

चढघौ राज प्रथिराज सु राजन । 'पाव लष्य दल बल गज बाजन ॥
चामर छत्र रषत्त निसानं । मनु घनघोर दिसान दिसानं ॥ छं० ५३ ॥

कूच के समय सेना की शोभा और उसका अग्रतंक वर्णन ।

त्रोटक -- चढ़ि राज महा भर सन भरं । उडि वेह पुर रुकि सूर करं ॥
बनि अच्छरि चच्छरि चारु बरं । किल 'कौतिग भूत वेताल वरं ॥ छं० ५४ ॥
मुष छंद सु चंद बरं पठिय । 'मुष जुगिगनि अंग वियौ गहियं ॥
सुर सद् जयं जयरं 'कथयं । चल चंचल सूर चढ़े कसियं ॥ छं० ५५ ॥
तल ताल करालति कूक करं । ॥
दोइ आइस दूत ससाहि दलं । तिन अषिय सेन निकट कलं ॥ छं० ५६ ॥
पृथ्वीराज का पड़ाव डालना ।

दूहा— सुनि अबाज सुरतान दल । हरषि राज प्रथिराज ॥
कोस पंच दुअ संबचिग । हिदुअ मेच्छ अबाज ॥ छं० ५७ ॥

१. ए० क० को०—जागस्ति, जगस्त ।

३. भो०—तीन चौक रष्ये गज बाजन ।

५. ए०—पषयं ।

२. ए० क० को०—डरि ।

४. ए० क० को०—सुल ।

६. ए० क० को०—कौतिक ।

अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना ।
उदय भान प्राची अरुण । चढ़पी राव सखि सेन ॥

उर पातर कातर 'इते । मेच्छ पीर फर सेन ॥ छं० ५८ ॥

गाथा — अच्छरि कच्छिय गैनं । चैनं चवसहु गैन गोभायं ॥

हर हरषे हारायं । जुद्धं सज्जाह बी दसा दीनं ॥ छं० ५९ ॥

हिन्दू और मुस्लमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ।

झूहा — मिलिबि सेन अरुन सु अनी । तनी तनी दुअ 'दीन ॥

असुर ससुर सज्जे सयन । दोउ बीरां रस भीन ॥ छं० ६० ॥

शाहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना ।

भोटि साहि भर धान सब । पति पुच्छी इह बत्त ॥

अरिय प्रचंड प्रचंड दल । करहु समर सक मत्त ॥ ६१ ॥

सूर्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना

और कोलाहल होना ।

अरिल्ल — प्रगटित भान पयानिति पूरं । वाजिग दुंशभि धुनि सुर कूरं ॥

चढ़पी साहि संमर करि सूरं । अरुन बरुन मिलि तथ्य 'अनूरं ॥ छं० ६२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना ।

झूहा — ठलकि ठाल बहुरंग बर । 'गुरुत मत्त गजराज ॥

झलकि नीर बपु दल चढ़िय । मनो पावस गुर राज ॥ छं० ६३ ॥

दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन

सेना का व्यूह वर्णन ।

भुजंगी—

ठलकी सु ठालं, हलककेति 'सूरं । धमकके धरा, नाग नीसान 'पूरं ॥

किलकके सुभैहं, बजे बाज दूरं । झलकके सुनेजा धरा 'धूम धूरं ॥ छं० ६४ ॥

बरकके वितालं, बजे तार तालं । करे कूह कूहं, जगी जोग मालं ॥

नचै सठि चारं, करे राग सिधं । वकें भूत प्रेतं, कठें तार तिहू ॥ छं० ६५ ॥

मिली सैन सेनं, टगी लगि 'नेनं । बड़ी काल काया, चड़ी गिद्धि गैनं ॥

भरं भीर भीरं, भिरै बीर भारं । रची अठु फौजं, विबै साहि सारं ॥ छं० ६६ ॥

मुख अग मने, घुरासान अत्री । भरं चिम्मनं, वान तेयं दिठत्री ॥

दिसं वाम मारुफ पीरोज सज्जे । दिसा दच्छनं, चिम्मनं जम्मरज्जे ॥

॥ छं० ६७ ॥

१ ए० छं० को०—प्रिते ।

२. ए० छं० को०—वीस ।

३ ए० छं० को०—न पूरं ।

४. मौ०—'पुरतम चडि मजराज' ।

५ ए०—निसामं ।

६. ए०—भैरं, छं०—पूरं ।

७ मौ०—'धरा धूर धूर' ।

८. मौ० वैनं ।

अनी च्यारि पिठ्ठं, अनी दोइ अणं । गुरं गौर वारं, फरो पाइ कणं ॥
अग्यी जंग जोरं, हुअी बीर सोरं । घननद नीसान, भइं सघोरं ॥ छं० ६८ ॥
हुहा — भर सहाब सज्जिय अनी । जिवन जोर चतुरंग ॥

सुभर प्रफुल्लित बीर मुख । काइर कंपत अंग ॥ छं० ६९ ॥

हिण्डू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उस के
अनी भाग और ध्यूह बढ होने का वर्णन ।

भुजंगी —

चढ्यो राज चहुआन कुप्यो करं । बढी बेद साधी बढी जाग हरं ॥
ढलककी मुढालं सु डालं घमक्के । करं कृत षगं सु पट्टे चमक्के ॥ छं० ७० ॥
घनआगमं जानि विज्जू दमक्के । घनघोर नीसान नादं घमक्के ॥
रची पंच 'सेना मधे' मद्धि राजं । गजं वाजि रोह हृथन्नार साजं ॥ छं० ७१ ॥
मुषं अग कौमास चावंड सूरं । महम्म अठं सेन गज वाजि पूरं ॥
'भुजा दच्छिनं भीम कन्हू किवार । सतं तथ्य सामंन सेनं सवारं ॥ छं० ७२ ॥
दिगं वाम पंम्मार आबू 'प्रईसं । चमू च्यारी सोभं भिरी आनि सीसं ॥
'रसं रौद्र मंड्यो षगं 'वंडि जीसं । फिरं केक डाल 'ढुरे नागरीसं ॥ छं० ७३ ॥
पछं जाम जाखं दलं सिध साजं । सयं पच पंचास सगी विराजं ॥
दहं तीन पंचं 'तयं पंच सज्जं । इलं लेप नंद गनं गेन गज्जं ॥ छं० ७४ ॥
घमं घम्म नीसान रीसान बज्जं । सबद् 'मुसद्धं सु सिद्धं सु लज्जं ॥
चढे मेच्छ हिं मिली जुद्ध अघ्नी । कथी व्यास भारथ्य सा आज वन्नी ॥
॥ छं० ७५ ॥

कुरं पंड बंध्यो बघे आप अगगे । इसे मेच्छ हिंदू भरं षग लगे ॥ छं० ७६ ॥

दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना ।

हुहा — जनुकि पथ्य भारथ्य भर । लगि कुर पंड प्रचंड ॥

चाहुआन दल मेच्छ दल । हक्कि हय गय झुंड ॥ छं० ७७ ॥

इत हिंदू उत मेच्छ दल । 'रन चढ्ढे बर धीर ॥

हक्कि तेज असि वेग बढि । लगे सुभर हर भीर ॥ छं० ७८ ॥

१. मो०—फौज ।

२. ए० क० को०—मध ।

३. ए० को०—दिसा ।

४. मो०—अईसं ।

५. मो०—“रखं सक्कुर मडि षग पांढे जीसं” ।

६. ए० क० को०—वंड ।

७. ए० क० को०—दल, डल ।

८. ए० क० को०—मय ।

९. ए० क० को०—दुसद्धं ।

१०. ए० क० को०—बत्से बढि ।

पुत्र का वृद्ध वर्णन ।

चंडमाल — मेछ हिं जुद्ध धरहरि । चाइ चाइ अवाय धर हरि ॥

रंड मंडन षंड धर हर । गत बहुत सुरत सरहरि ॥ छं० ७९ ॥

भगम काइर ज्ह भीरम । छंडि जल सुरिउज्र धीरन ॥

रंड चडिइय रच्चि धर हरि । रक्त जुगिगनि पत्र पिय धरि ॥ छं० ८० ॥

धवत कीरनि अच्छ अच्छरि । सुफटि पट्ट सुरट्ट फर हरि ॥

सिद्ध सूरन वीर जुरि जुरि । ॥ छं० ८१ ॥

प्रबल धीलिय पाल सेनिय । विचलि धल दिग परै ऐनिय ॥

गोम गेन निसान नंगिय । धान धान बिवान संगिय ॥ छं० ८२ ॥

भुअन भिरि भुअघार धारन । श्रोन तुच्छिय हीर धारन ॥

हिंदु मेच्छ अघाइ धाइन । नंचि नारद जुद्ध चायन ॥ छं० ८३ ॥

गाथा — नंचिय नारद मोदं । क्रोधं धन देखि सु भट्टायं ॥

हर हरधिय हारं । पत्तो चंद भानं भा यानं ॥ छं० ८४ ॥

सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विधाम करना ।

बूहा — थकि क्षुभत संध्या सपत । सपत भान पायान ॥

पहु प्राची बजि पंचजन । लह सूभत गोयान ॥ छं० ८५ ॥

प्रातःकाल होते ही इधर से कामास का धीर उधर शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना ।

कुंडलिया — पहलग्गे चामंड सुभर । अरु विमन्न चतुरंग ॥

इंद्रजीत लछिमन रहसि । बहसि बढी सु तुरंग ॥

बहसि बडिठ सु तुरंग । पंच साइक भाले भिलि ॥

फुनि गोरी दाहिम्म । सु हय छंडे सु बंधि कलि ॥

जिम रत्रुपति पतिलकं । बकं कंकन कर अग्गी ॥

तिम गोरी दाहिम्म । सु हय छंडे जुध लगी ॥ छं० ८६ ॥

सुम्योदय होतेही दोनों सेनाओं का धामे बहना धीर

अपने अपने स्वामियों का जकार सख्य करना ।

कवित्त — उदय भान पापान । कोर दिष्विय दल चडिठय ॥

हय गय नर आररिय । सद्ध पर सद्धन बडिठय ॥

अच्छरि तन सच्छरिय । व्योम विम्मानह चडिय ॥

दिष्वि सूर सामंत । देव जैजै मुख पडिय ॥

हडिय सुधारि हवनारि धरि । गजैनारि करनारि बजि ॥

चडि हिंदु मेछ पुह मिलि अनिय । मनो अम्म पावस सु रजि ॥

॥ छं० ८७ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर बाणों
की वर्षा करना ॥

दूहा - भर भीषम तीकम अमर । धनुष बान अग्रान ॥

हिंदुअ मीर सुइवक हुअ । मीरचंद सनमान ॥ छं० ८४ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना ।

भुजंगी - मिले हिंदु मेछं अनी एक मेकं । 'बजे षग धारं रजे तोन तेकं ॥

करं पत्र 'सती चवे' मिघ नहं । श्रवै श्रोन गंडूष षगं उनगं ॥ छं० ८९ ॥

उठें रत्त पीतं घमं घूम रंगं । मतं 'सेत नीलं जलं' जात संगं ॥

उठं पत्र 'डंडर सर सोभ सज्जी । मनो डंड सालं समंडं डरज्जी ॥ छं० ९० ॥

वितालं वितालं रजे ताल प्रेरं । गिरं मेच्छ हिंदू घनं घाइ बेरं ॥

जमं जामं जग्यौ जमानं सुजगं । तिलं 'तिइस अग बदे' षग षगं ॥ छं० ९१ ॥

जयं अगि जग्यौ जनु जग्य जूनं । रते अंग अंगं चले संगं 'सूनं' ॥

चही मिडि गनं छयौ बान भानं । परे पाइ सामत सो चंद जानं ॥ छं० ९२ ॥

जिमं पड 'कैरुं' परे मडिस जुडं । सही सनु कथ्यौ षगं वडिड उडं ॥

कवीचंद कथ्यौ कुरखेत हेतं । इसे हिंदु मीरं चदे बंदि नेतं ॥ छं० ९३ ॥

युद्ध भूमि में बैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन ।

कविन नेत बंधि हिं । नरिदं मामंत मनभर ॥

मीर भार असरार । सबे ढाहे सु सडि सर ॥

पथ्य जेम भारथ्य । कथ्य सुष्मै जिम कथ्यिय ॥

सु कविचंद बरदाइ । एभ अधिय रन बांतिय ॥

घन घाइ आघाइ सुघाई घट । तेक तानि नचिय करस ॥

चहुआन राइ सुरतान दल । नृत्य बीर मंड्यौ सरस ॥ छं० ९४ ॥

दूहा तेग तार मंडिय समर । नचिय नंच बिन पैर ॥

चाहुआन सुरतान रिन । रचे नृत्य बर बैर ॥ छं० ९५ ॥

योगिनी भूत बैताल और अस्तराओं का प्रमत्न होना

और सूरवीरों का बीरता के साथ प्राण देना ।

भुजंगी - रचे नृत्य बर बैर 'हिंदू क मीरं । म्रदुमंदल तज्ज राजंत घीरं ॥

घनं गज्ज नीसान ईसान सोरं । करे नृत्य भूतं रचे और कोर ॥ छं० ९६ ॥

१. मो०—'बजे षग धारं जेनो सलतेक' । २. ए० क० को०—सट्ठी ।

३. मो०—सिल ।

४. मो०—सेल ।

५. ए०—डंडूर ।

६. ए० क० को०—तिलक ।

७. मो०—कथ्य ।

८. ए० क० को०—केरं ।

९. मो०—हिंदू सनीर ।

करेताल भालं बजें रंग रंग । धर्म गिद्धि गैनं नचै चारि जंगं ॥
 सुरं सुंदरी नंदरी चदिद व्योमं । छबी छभि छायं वरं वार सोमं ॥छं० ९७॥
 उहैं रत्त गुल्लाल फले सु फागं । बलं वग कूचं समं माल लागं ॥
 उठें माइनं नचि तोरंत तानं । लगें वग पसं सु पेरंत मानं ॥ छं० ९८ ॥
 कटै अड सीसं बहै रक्तजानं । रतं पट्ट बंध्यी मनो रिक्त भानं ॥
 सुरं सट्टि नहं चबै मुख गानं । फिरें जुड जोधं बहै मोह बानं ॥ छं० ९९ ॥
 बड़े मांस प्रासाद भूतं असूरं । रतं पानि डारं तकै सूर नूरं ॥
 वरै रत्त वरं कचं कुच वासं । विधि छिति राजी रसं रंग रासं ॥छं० १००॥
 नचै प्रेत पानं बिना सीस केलं । मनो अग फागं जगे न्यस्य बेलं ॥
 वगं घंति नाना कडे रंड शेषं । इभं रुद सट्टी निनें नारि देषं ॥ छं० १०१ ॥
 बकै मत्त हालाहलं वग वंडे । जिसे राम रन मरुत रावन्न मंडे ॥
 नवं नारिका बाटिका बीर तुट्टै । घनं घाइ प्रघ्वाइ जुग जोग छुट्टै ॥छं० १०२॥

युद्ध रूपी समुद्र मथन को उक्ति वर्णन ।

कवित्त— नव बदिठय नाटिका । वग कट्टी असु हकिरय ॥
 हिदु भेच्छ मिलि घेत । अप्प अप्पन चदि कंकिय ॥
 रा चावैड रा जैतसी । राइ पज्जून कनककह ॥
 मीर वान भर पंच । यग बड्डए तननकह ॥
 वपु वेद चन्द बानी विमल । विदुरि वग बल घेत बदि ॥
 -केवल सु कदिड^१ सुरताक दलालिय रतन्न मधि देव दधि ॥छं० १०३॥
 कुंडलिया - मधि कठघौ सुरतान दल । दधि केवल मन बदिड ॥
 मीर वान मारुफ दल । बीर विमानन चदिड ।
 बीर विमानन चदिड । दिष्ट बड्डी बारह परि ॥
 भर चंदेल विरंम । घेत झोरी सुभोह भर ॥
 गय नंगबंद अमृत झरिग । कुसुम गुच्छ कविचद पधि ॥
 विग्मान पध्य रवि कुंत रयावग्घ नेह कठि केल मधि ॥छं० १०४॥

इस युद्ध में जो जो बीर सरदार मारे गए उनके नाम और
 उनका पराक्रम वर्णन ।

भोतीदाम—मथ्यो सुरतानय सेन पयार । लई जस कीरति चंद सुचार ॥
 परै रन मरुत चंदेल सुचाइ । परै बहु वान सुचाइ अचाइ ॥ छं० १०५ ॥

१. ए० छं० को.—काव्य ।

२. ए० छं० को.—कनककह ।

३. को.—सुरताक, पुरतान ।

पन्थी धर बाहर 'राइति साल धरदर षग्न तुट्टिय ताल ॥
 बरें कर अच्छर सुच्छर माल । धकदक काइर छति त्रिसाल ॥ छं० १०६ ॥
 झुकि झुकि तुंडन अद कमद । मनो हरि चक्रन केतन वद ॥
 पन्थी घन 'घाब सु वीरमदेव । ह्यग्गय विद्विय छत्र अनेव ॥ छं० १०७ ॥
 बिनी सिर नंबत मीर कमंध । ह्ये ह्य नाग नरम्भर सध ॥
 लयो धर सीस सुभ्यो असि साइ । हने लगि पंचय पंचय घाइ ॥ छं० १०८ ॥
 'हृए लगि पंचल विम्मन घाइ ।
 'पन्थी पीरोज सु रावन नंद । करे नय कोतिग सूरन चद ॥ छं० १०९ ॥
 बले दल बंचल दो सुरतानं । लगे कर देषि चंदेल परानं ॥
 परे मफरइ सुमंच 'बिमीर । लगे ग्रहलुट्टि क्रषी कर कीर ॥ छं० ११० ॥
 गिरे सु पिरोज तिलतिल गात । विय छवि छछ बक्षी ह्विपात ॥
 'रजे रति आगम राव वसंत । नगम्मनि जग पने वर सत ॥ छं० १११ ॥
 गही तरवार विपानि सु झारि । नवनिथ वाइस अंत उतारि ॥
 पन्थी सम बाज सु हाजमघान । रचे गज इंद्र सु 'ब्रह्म घियान ॥ छं० ११२ ॥
 कन्थी मन सूर तिलतिल षग । उडे रिन 'पत्तरि तप्यन अग ॥
 चदे सारूप सु गंबर रूप । छयो सम सीस धरदर भूप ॥ छं० ११३ ॥
 भिरें भर हिंदुअ मीर अघाइ । गिरे दस पंच सहस्सह छाइ ॥ छं० ११४ ॥
 युद्ध होते होते रात्रि हो गई ।

दूहा—गिरे मेच्छ हिंदू सुभर । हय गय घाइ अघाइ ॥

१ 'सुंड इंड मुंडन भरत । रत झाकि झुकि ताइ ॥ छं० ११५ ॥
 उपरोक्त बीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोमर का हराबल
 में होकर स्वयं सेनापति होना ।

भिरि तूअर लिय बग भरि । हय करि नीर प्रवाह ॥
 सघन घाइ संमुष 'समर । लगे मेच्छ पति घाइ ॥ छं० ११६ ॥

पहाड़राय तोमर का बल और पराक्रम वर्णन ।
 घाइ वाइ तन छाइ छिति । रत छिछ उछरत ॥

भर तौबर हर जिम तमकि । लगि 'जमन गज अत ॥ छं० ११७ ॥

१. मो०—राव त्रिसाल ।

२. मो०—घाय ।

३. ए० क० को—हने, हने ।

४. ए० क० को—“परयो पुं पीरोज;”

५. ए० क० को—अव ।

६. ए० क० को—बिमीर ।

७. मो०—रते ।

८. मो०—ब्रह्म बुघान ।

९. मो०—पातरि ।

१०. ए० क० को—मुंड ।

११. ए—ससन, क० को—सरन ।

१२. मो०—अनुपू ।

कबित्त—भर तौंजर अभि रत्त । धरत कर कुंत अंत भरि ॥
गजन बाज धर ठारि । धरनि धर रत्त जुष्य परि ॥
भगिग मीर काहर कनेंग । हिय पत्त 'मुच्छि' द्रव ॥
भगिग सेन सुरतान । दिषिष भर सुभर पानि कढ़ ॥
उधमारि सिगि कुंभन छरिय । झरिय श्रोन मद गज डरिय ॥
हर हरषि हरषि जुगिगनि सकलाजै जै जै सुर उच्चरिय ॥छं० ११४॥

दुतिया का चन्द्रमा धरत होने पर युद्ध का प्रवसान होना ।

दूहा —प्रदिपद परिपातह पहर । समर सर चहुआन ॥
दिन दुतिया दल दुअ उरभि । ससि जिम सद्धि विसान ॥ छं० ११९॥
तूतिया को दोनों सेनाओं में शांति रही और चतुर्थी
को पुनः युद्धारंभ हुआ ।

कबित्त—दिन त्रतिया धर तुंग । झुकि शारन झुकि झुकिन ॥
हिंदु मेच्छ हय हकिर । धक्क बज्जिय भर इकहन ॥
कटि मंडल घटि घुम्मि । झुम्मि झंझरिन अकालहि ॥
भूत बीर बेताल । मंस तुद्धत भ्रम चालहि ॥
दसकंध कोपि रघुपति रहसि । बिहसि चंद बद्धिय बदन ॥
चतुरथ्य जुद्ध जंगिय जगी । रंगि कंक डकिरन रदन ॥छं० १२०॥

चतुर्थी के युद्ध में कीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध
का अलमय बीभत्स दृश्य वर्णन ।

दंडक —चवधि जुद्ध उदोत आरनि । सुभर भीर समुष्व धारनि ॥
कोपियं चहुआन भरहर । घाइ कुंजर ठाहि धरहर ॥ छं० १२१ ॥
श्रोन द्रोण प्रवाह धरहर । अत अंतन अंत झर हर ॥
'तार तान विताल करि करि । तेग बेंचत पाइ परि परि ॥ छं० १२२ ॥
घुम्मि झुम्मि निसान बज्जिय । अगम मेष असाढ़ गज्जिय ॥
धुनि सु बसि असमान रज्जिय । दिषिष बेव विमान छज्जिय ॥छं० १२३॥
कंपि कायर लज्जि लज्जिय । 'बिकल युष ह्वै 'निकलि भज्जिय ।
समुष तौंबर साह सज्जिय । 'बिचल अरि कर तेग तज्जिय ॥छं० १२४॥

१. ए छं० को०—मुच्छि ।

१. को०—द्रव ।

३. को०—तार विसान विताल कर कर ।

४. ए० छं० को०—विचल ।

५. ए० छं० को०—विकरि ।

६. ए०—विचल ।

बीर बहुरि विशेष वानय । छुट्टि छाया अकास भानय ॥
 रेन सूर दिसान थानय । सोरु कोक 'अलोक आनय ॥ छं० १२५ ॥
 झमकि सुर मुष सस्त्र लगिय । दमकि दिसि दिसि षग नगिय ॥
 रत्त पत्त प्रवाह झरि झरि । ईस सीस 'सजंत गुरि गुरि ॥ छं० १२६ ॥
 मच्छ मच्छन कच्छ कच्छिय । दलन दोन कलोन अच्छिय ॥
 अंत 'दंतिय दंत पाइन । गिद्ध जुग लै उड़ी चाइन ॥ छं० १२७ ॥
 नषत वित्त मुहत्त फिरि फिरि । मप्पि डोरि पसारि कर घरि ॥
 रहिर सर सम बहन धार स । भँवर पंथिन काक पारस ॥ छं० १२८ ॥
 मोका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी पर तलवार
 का बार करना और हाथी का भहरा कर गिरना ।

हनुकाल —रंगिय रदनु जुगिन बीर । हे गै पारि असि 'वर मीर ॥
 तोबर राइ दिष्यी साहि । नंष्यी बाज सनमुष आइ ॥ छं० १२९ ॥
 डारिय तेग सिर करि बीज । 'गिर पर जनु कि करकिय बीज ॥
 करि कर वारि गज धर दाहि । 'गँवर गिरत निककरि साहि ॥ छं० १३० ॥
 तोंबर दिष्वि राह पहार । गँवर दिष्वि है कँध डारि ॥
 भावरी भगि जठर मेछान । जँ जँ जँ जँपिय चहुआन ॥ छं० १३१ ॥

मुस्समाम सेना का घबरा कर भाग उठना ।

दूहा —भगि सेन सुरतान सब । रव लगी मुष तविक ॥
 गह्यी साहि तोंवर 'पुरम । जानि गह ससि बक्क ॥ छं० १३२ ॥
 अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह
 जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और
 लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना ।

कवित्त —जुगिनि गन गर सिधु । करत उच्चार सार मुष ॥
 अछि अच्छरि बर इच्छ । विसन थ्रक पानि नैन सिष ॥

१. ए० कृ० को०—बसोक जानय ।

२. मो०—जनि ।

★ मो०—गिर पर जामु करकिय बीन-पाठ है और ए० कृ० को०—प्रतियों में
 "गिरि पर निकर कीय बीज" पाठ है किन्तु इन दोनों पिठों में छन्दोमंथ
 होता है ।

३. ए० कृ० को०—ततिय ।

४. मो०—वर ।

५. मो०—गिर अंत बैबर निकर साह ।

६. मो०—पुरिह ।

बज्जि ताल बेताल । रज्जि बर 'तुंड बंड संग ॥
ओन छोनि छय छंछ । गुंज गन देन रति अंग ॥
'मुरि मेच्छ घाइ घट सघन परि । हृष्य घालि सुरतान लिय ॥
जित्तो जु आनि सोमेस सुअ । अभे सुभे अंगन घटिय ॥ छं० १३३ ॥

सुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और बंड
लेकर उसे छोड़ देना ।

गहि गोरी सुरतान । अप्प दिल्ली संपत्तौ ॥
माह सुकल पंचमी । बार भ्रगु बर दिन वित्तौ ॥
क्रिय सु दंड पतिसाह । सहस सत्तह सुभ हैवर ॥
दुरद षट् प्रम्मान । वहे षट रिक्त मह झर ॥
कोटेक द्रव्य नृप हेम लिय । घालि सुषासन 'पठय दिय ॥
कलि काज कित्ति बेली अमरासुभत सीस चहुआन किय ॥ छं० १३४ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके तौबर पहाड़
राइ पातिसाह ग्रहन नाम संतीसमो
प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ३७ ॥



१. ए० इ० की०-सं० ।

२. मो०-मुरि सेन घाइ मिछ सघन परी ।

३. यो०- पद० ।

अथ धरुण कथा लिष्यते ।

(अड़तीसवां समय)

“सोमेश्वर” सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे ।

द्रुहा —सुष लुट्टहि लुट्टहि मयन । अरि घर लुट्टे घाइ ॥

अंग नवनि करि उब्वरे । है पुर पगह चाइ ॥ छं० १ ॥

चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज स्नान यमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना ।

सोम ग्रहन सुनि सोमत्रय । कालद्री मन आनि ॥

है गै जन सब संग लै । तहां बोले बिप्र ठानि ॥ छं० २ ॥

सोमेश्वर जीके साथ में जाने वाले योद्धाओं के नाम

और पराक्रम वर्णन ।

मोनी दाम —

जुरोइस दान विचारिय राज । रची विधि ज्यो बध देवति साज ॥

तहां ढिगोसिध पैवार पवित्त । सुधम्मय धम्म तहां बिपचित्त ॥ छं० ३ ॥

जुगौर गुरंबर सिंह सुसंग । जिनै करि जज्जर देहिय जंग ॥

तहां ढिग संजम राव नरिंदु । धरे जनु इद्र विराजत चन्द ॥ छं० ४ ॥

सुवाहन बीर बली कुनि तथ्य । तिने कलि धम्मन दूजि यकथ्य ॥

तहां गुर राज विराजत ताम । तिदिष्ट बचिष्ट मनो ढिग राम ॥ छं० ५ ॥

सु और अनेक महाभर मंस । श्रमंत क्रमंत सयन्तिय संस ॥ छं० ६ ॥

उक्त समय पर पूर्णमा की शोभा वर्णन ।

साटक —मुंकी मुख कपोद हंसति कला, चक्कीय चक्कचितं ॥

चंद किरन कवंत पोइन पिमं, भानं कला छीनयं ॥

१. ए० छं० को०—ग्रहणी ।

२. ए० छं० को०—हाम जग्य ।

३. ए० छं० को०—बुध ।

४. मो०—देवनी ।

५. ए० छं० को०—सुधर्मय धम्म नहीं विपचिन ।

६. ए० छं० को०—इन्द्र, इन्द्र ।

७. मो०—विरामत ।

८. ए० छं० को०—तपस्विय ।

९. मो०—चक्कीचितं ।

बानं मन्मथ मत्त रत्न जुगयं, भोग्यं च भोगं भवं ।

१निद्रा वस्य २जगत भक्त जनयं, वा जग्य कामी नरं ॥ छं० ७ ॥

नोटक—★चकी चक्क चक्किय चित्त मयं । बिछुरे बिय दिषिय संस मयं ॥

† जु पयो धिम तत्त भसं मुरबी।सु मनो दिसि दिस्सि सिद्धर'जबी।।।।छं०८॥

घन सोर द्रुमं करि पंष घनं । सु मनो लुगि पारसियं पठनं ॥

अलि वासिय पंकज कोक नदं । कुलटा बसि छैल रसं किमिदं ॥ छं० ९ ॥

विरही जन दिष्टि सु घाम दुरी । उलटें बसि डोरि ज्यों बंग उरि ॥

बजी बर देवल झल्लर झूर । तिसं घर सिगिय सिद्धन पूर ॥ छं० १० ॥

१कपी मुग घापिय केलि कठीर । मुदै हसि प्रौढत सुंदर चौर ॥

छबि दीपक द्वारन जोति जगै । अनु दंपति नैन सुभे उमगै ॥ छं० ११ ॥

जु लगीं घुष घुंमर रैनन मंडि । बलै क्रम चोर मगं २पियं छंडि ॥

‡ जुरसे रस चामर सीस इसे । दिषि दीपक जोति पतंग जिसे ॥ छं० १२ ॥

विरहा उर झारिय केलि करी । इन दाहिय देहर प्रीति घरी ॥

विरही त्रिय मुख सु दुष्य ३सदं । कुम्हिले अनु पंकज कोक नदं ॥ छं० १३ ॥

जु संजोगय भोग सुषं सरसे । सु कमोदिन चंद फुलं वरसे ॥

जु ग्रिहं ग्रह जोवत दीप जुबं । जु वए मनु काम के बीज भुवं ॥ छं० १४ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लगन घाने पर सब का
यमुना के किनारे पर जाना ।

इहा—साझ समय ससि उगि नभ । गह आमिनि जुग जाम ॥

ग्रहन समय दिषि होतही । जमुन पधारे ताम ॥ छं० १५ ॥

बहण के बीरों का जागृत होना ।

स्नानं जंकी नौ नपति । जल रसा जगि बीर ॥

४हृकारे संमुष उठे । मंगन जुद्ध ५सरीर ॥ छं० १६ ॥

१. मो०—निद्रया ।

२. ए० क० को०—जगत ।

★ ए० क० को०—“कवि चक्क मु चक्किय” ।

† ए० क० को०—जु पयोध पतंत भसं मुरबी ।

३. मो०—बबी ।

‡ ए० क० को०—किषि ।

४. ए० क० को०—पिय ।

‡ ए० क० को०—“जुरसे रस चामर सीस के” ।

६. ए० क० को०—मुदै ।

७. मो०—घाम ।

८. ए० क० को०—हृकारे ।

९. ए० क० को०—वनीर ।

इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवलं दूब और प्रक्षत भादि
लिए हुए लड़े थे ।

ए बिन वस्त्र रु सस्त्र बिन । हस्त दरभ कुस कोस ॥
तिल तंदुल जब पुहप कर । बरन त उठि रोस ॥ छं० १७ ॥
वीरों का गहरे जल में शब्द करना ।

अति प्रचंड गहराइ गल । गल गज्जे बल बीर ॥
स्याम बरन भय भीत दिषि । धीरन छट्टे धीर ॥ छं० १८ ॥

जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन ।
कवित्त—अति उत्तंग बज्रंग । उदित उर जोति रत्त द्विग ॥

अरुन रुधिर नष अधर । बस्त्र नन अस्त्र सस्त्र ढिग ॥

दसन ऊंच सिर केव । वेस भय भगिय पास ॥

अति उनाह जम दाह । कौन मंडे जुध आसं ॥

कल कलह बचन किलकंत सुर । सुर बाजत जनु धुनि घमनि ॥

हम करत केलि जल संचरत । तुम 'संमूह कोइ' मत अवनि ॥

॥ छं० १९ ॥

सामंतों का प्राव पर चला जाना ।

बुहा—सुभट दिष्य करि क्रोध उर । भये भयानक सुर ॥

सस्त्र हृद्य दिष्ये नहीं । *प्राव ग्रहे जलपूर ॥ छं० २० ॥

जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल प्राव पर पड़ता था

उसका दृश्य वर्णन ।

कवित्त—परत प्राव जल पूर । झरत जनु रुष्य फल सुवन ॥

बजत घात आघात । फरत अबसान वीर तन ॥

रावत्तन अबसान । देव दुंदुभि अधिकारी ॥

'जोग ग्यान त्रय मान । बनिक बुधि मोहि सुनारी ॥

राजेंद्र दान सिद्धह तपह । भुगति जुगति विधि 'कोबिदह ॥

इत्तनी बस अबसान मिलि । मनहु मंत्र जनु गुन भिदह ॥ छं० २१ ॥

जल के बीच में जल वीरों की घासुरी माया का वर्णन ।

आवरि कर वर करह । भिरत भारथ 'परचारिय ॥

अंग अंग संग्रहहि । इक्क इक्कत अधिकारिय ॥

१. ए० कृ० को०—सुमूह ।

२. ए० कृ० को०—मति ।

* प्राव यह कुछ संस्कृत शब्द है यथा-शब्दकल्पद्रुम "पृथ्वी तावत् त्रिकोण विधिन तत्र मदी प्रावदं तददम्" । इसका तात्पर्य डेलटा से है ।

३. को०—अवनी ।

४. मो१—कोबदह ।

५. ए० कृ० को०—परचारिय ।

अधम जुद्ध जुरि करहि । करहि बल कण्ठ अनगिय ॥
 कबहु धूम वे करहि । करहि कव झार झरनिय ॥
 कबहुं मेघ उठुं सुजल । कबहि करन प्रावहु बरष ॥
 उच्चरहि बैन बहु बीर बर । विरचि कबहु बुल्लै हरष ॥छं०२२॥
 जलबीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेस्वर के सामंतों
 का भयभीत न होना ।

कबहुं सस्त्र सर परहि । कबहुं डक्के डक्कारिहि ॥
 तीन लोक तन हकहि । बकहि बीरन बक्कारिहि ॥
 अकल कलह बल करहि । समहि संग्राम सुधारहि ॥
 अजुत जंग उद्धरहि । कलह बल धार उधारहि ॥
 सामंत भूमि भंजहि विरहि । गिरहि परहि उठुहि लरहि ॥
 सोमेश सूर संक न गनहि । विरचि गाल गल बल करहि ॥छं०२३॥
 वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामंतों का
 भय दिसाना ।

हम सु भयंकर बल अभूत । सुमटन हक्कारिहि ॥
 हम सु प्रवत्त प्रमान । कनिष्ठ अंगुरि उप्पारहि ॥
 हम समुद्र प्रमान । डोहि जल पहूमि प्रवाहहि ॥
 देषी सुनी न कोइ । सोइ ब्रह्म मंडल गावहि ॥
 किन काम धाम तजि वाम सुष । आइ सपत्ते जमुनि निसि ॥
 चर बेर निसाचर हम फिरहि । नीर रमें तिल लेइ घसि ॥छं०२४॥
 वीरों का राजा सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना ।
 दूहा — "इह कहि के लग्गे लरन । गैन गुंज जल फार ॥
 मानहु भारत अंत की । भार उतारन हार ॥ छं० २५ ॥

सामंतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना ।

कवित्त — काल संक अहुरहि । तार बज्जत प्रहार सुर ॥
 जम्मुन जल अंदोल । वीर बोलंत वीर गुर ॥
 कलह केलि सम केलि । ठेलि कब्धै भावहिंसि ॥
 एक प्राव बरषंत । एक फारंत नष्य कसि ॥

१. मो०—बुट्ठे ।

२. मो०—तकहि ।

३. छं० को०—कबहि वीरन बक्कारिहि ।

३. मो०—विरहि ।

४. ए० छं० को०—हक्कारिय ।

५. ए० छं० को०—चंड प्रवत्त प्रमान ।

६. मो०—प्रवाहिहि ।

७. न होइ ।

८. मो०—एह कहे ।

९. मो०—बज्जत ।

परि मुच्छि मध्य विक्रम बलिय । जुद्ध निमाचर विषम *अधि ॥
 बर बीर धीर घप्पे लरन । फहु पट्टत नग सोम लधि ॥ छं० २६ ॥
 इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख बीरो का
 बल कम होना धीर सामंतों का जोर बढ़ना ।

पद्वरी —तिम *निम सु बीर तामसत थोर । दिन उगन *बढ़े रजपूत जोर ॥
 बढ़े जु मल्ल मुठ्ठी प्रहार । फट्टे कि भूम पट तार तार ॥ छं० २७ ॥
 उच्छरत जमुन जल इन प्रहार । क्रीडत जानि मद गज फुंकार ॥
 तरकरडि मध्य जत्र इन प्रहार । कपि कोय नंषि गिरि ममुद सार ॥ छं० २८ ॥
 बर भरहि करहि लनननि हाइ । अबज्जन बज्र जनु विषम घाइ ॥
 रन रह बहसि उच्चार बैन । इतने भयो परताप गैन ॥ छं० २९ ॥
 निसिचरन दिषि जब समय सूर । झलमलत किरर त्रिमल कर ॥
 तमचरह पूर प्रगटी किरन । प्रगटी सु दिसा विदिमान अन्न ॥ छं० ३० ॥
 तब लगि पंच भर परिय मुच्छ । निमचर उतंग करि जुद्ध गच्छ ॥ छं० ३१ ॥

प्रातःकाल के बाल सूर्य की प्रतिभा वर्णन ।

दूहा —ज्यों सैसत्र में जुवन *कशु । तुच्छ तुच्छ दग्साइ ॥
 यों निसि मध्यह अरुन कर । उदित दिसा लसाइ ॥ छं० ३२ ॥
 *रति रही बर विलगि बर । ज्यों समि कोरह राह ॥
 हरि बढे बाराह धर । कै हरि चपत राह ॥ छं० ३३ ॥
 सूर्योदय होते ही बीरों का अन्तर्धान होना और सोमेश्वर
 सहित सब सामंतों का मूर्छित होना ।

अरिल्ल —गच्छिय सुद्ध निमाचर बीर । परे घर मुच्छि सु पंच सरीर ॥
 किए तन नान प्रमानन जान । सु देवहि दुंदुभि जःनिय गान ॥ छं० ३४ ॥
 सब मूर्छित पड़े हुए थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर आना ।
 दूहा —मृतक समानति मृतक परि । रहिग जीव छिपि छान ॥
 तब लयि तहें प्रथिराज रन । आनि सपत्ते पान ॥ छं० ३५ ॥

१ ए० क० को०—पिषि ।

२ ए० क० को०—लिषि ।

३. ए० क० को० तिमनि ।

४. मो०—बडे ।

५. मो०—मुवल ।

* मो०—बख लेत हृष्य जम्बू विषइ

६. ए० क० को०—परभात ।

७. ए० क० को०—कव ।

८. मो०—लकसाइ ।

* मो०—“यों रति ही रविलग बर”

९. ए० क० को०—पान ।

निज वित्तों एवं सब सामंतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के
हृदय में दुःख होना ।

साटक—'सोहिष्णं ग्रर राज तात निजयं । वीभच्छ इच्छा क्रुधं ॥
कालं केलिय छिछ रुद्ध तनयं, रुद्रं सु संरत्तयं ॥
माते तामस रस्स कस्स असुरं, 'हालाहलं नैनयं ॥
राजं जा प्रथिराज विति तनयं, पुच्छै गुरं 'ततगुरं ॥ छं० ३६ ॥

यमुना के सम्मुख हाथ बांधकर लड़े हो पृथ्वीराज
का स्तुति करना ।

दूहा—जमुन सनंमुख जोर कर । अस्तुति मंडिय मुख ॥
तूं माता दुष भंजनी । रंजन सेवक मुख ॥ छं० ३७ ॥
यमुना जी की स्तुति ।

भृङ्गी —

नमो मात मातंग 'सूरज्ज जाया । नमो देवी भनी जमं पै 'कहाया ॥
जगं अंधकूपं सु दीपकक गभी । नदी कौन 'ग्ज्जं सु तेरी करभी ॥छं० ३४॥
महा धम्म धारन्न तारन्न देही । निहस्सी सलीलं सु सेलं समेही ॥
बलीमद्र रष्वी हरष्वी हलंदी । तुअं नाम पासं सुभं हो कलंदी ॥ छं० ३९ ॥
त्रयं ताप भंजै जगतं जनघ्नी । तुयं सेपियं ज्ञेसु नमं सरभी ॥
तुही तारनी जुग्ग हारन्न पापं । तुहीं मात 'करनी अचं कष्ट कायं॥छं०४०॥
तुही यामं सूरं जलं मुक्ति धारा । तुही नम्भ मातंग नर लोग सारा ॥
तुहीं साधवी मात नष्णं समानी । तुही तारनं लोक त्रैलोक रानी ॥छं० ४१॥
तुही बाल बेसं तुही वृद्ध काली । तुवी तापसं ताप आपं सुराली ॥
तुअं सट्ट सेवें जिते 'तिद्ध सिद्धं । तिते मुक्ति मुक्ति मनं बंछ दिद्धं ॥छं०४२॥
तुही 'मदनं मध्यनं तेज धारा । तुहीं देवता देव त्रय लोक हारा ॥
तुही जोगिनी जोग जोगं कपालं । तुही कल्प 'में कंष रावंत आलं॥छं०४३॥
तुही विस्न रुपं तुहि विस्न माया । तुही तारनं जन्न संसार आया ॥
कियौ अश्वमेधं पुनर्जन्म आवै । नही जन्म मातंग तो ध्यान पावै ॥छं० ४४॥

१. ए० छं० को०—तो दिष्णं ।

२. ए० छं० को०—हाकी ।

३. ए० छं० को०—सद्गुरं, तदुरं ।

४. को०—सूरिज्ज ।

५. ए० छं० को०—कहावे ।

६. को०—पूजै ।

७. ए० छं० को०—कर वत्त, कर वत्त ।

८. ए० छं० को०—“तिद्धं तिद्धंति” ।

९. को०—मार्त ।

१०. ए० छं० को०—में कष्ण ।

तुअं ध्यान मातंग अस्नान पूरं । करे अर्घ १आचार उगंत सूरं ॥
 तर्न तम्ननं नं त्रयं निर्विकारी।इमी त्रमन अष्पं सदिष्ठी अकारी॥छं० ४५॥
 स्तुति के प्रन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना ।

कबिल— गंगा मूरति विसन । ब्रह्म मूरति सरसत्तिय ॥
 जमुना मूरति ईस । दिव्य देवन मुनि थपिय ॥
 मिली जाइ १अल मंग । गंग सागर अवधारिध ॥
 ता सोमेसर रोग । दोष दोषह तन टारिय ॥
 अब सुभट सहित देवी सु तन । करि निरमल तन मोह मय ॥
 इह कहत जगिग नृप मूरछा । प्रति बुल्लौ प्रथिराज तय ॥छं०४६॥
 सोमेस की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुन ब्रह्मज्ञान
 की युक्तिमय स्तुति करना ।

साटक— १ त्वं मे देह सु भाजनेव १सरिसा जीवं धनं प्रनायं ॥
 दाहं अगिग सु क्रम्म दाहन धरै आवस्य १बंदं करं ॥
 सं रुद्धं जम जोग तिवृत तनै अद्धं पलं मध्ययं ॥
 जीवी वारि तरंग चंचल धियं बिस्मत १अस्नंतरं ॥ छं० ४७ ॥
 आसा अस्य सरोवरीय सलिलंपंषी वरं १मुद्धयं ॥
 सुष्पं दुष्पय मध्य वृच्छ तवयं साषास्य त्रं गुन्नयं ॥
 मोहं पत्तय रत्त वृष्वव क्रमे फूलं फलं धारनं ॥
 एकभय संतोष दोष तिगुना अस्याय वा निर्गुनं ॥ छं० ४८ ॥
 यो भूतं आभूत बर्ष सु सतं आयुर्बलं अदभूतं ॥
 तेषा अर्द्धं निसा गतं रवि उभै बाल्यैच वृद्धैगता ॥
 प्राप्तं जोवन रत्त मत्तय रस व्याघ्रं क्रुधं बंधनै ॥
 ना भूतं संसार तारन गुने १संभार निस्तारयं ॥ छं० ४९ ॥

इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यंत्र का जप करना
 जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना ।

दोहा— ग्यान ध्यान अस्तुति करिय । भयसु प्रसन्नय देव ॥
 राज सहित सामंत सब । जगे मूरछा एव ॥ छं० ५० ॥

१. ए०—आचार ।

२. ए० क० को०—अर्ष्वं ।

३. ए० क० को०—अल वय ।

४. ए० क० को०—त्वमे ।

५. ए०—वस्ती ।

६. ए० क० को०—तवदं ।

७. ए० क० को०—नर ।

८. मो०—सुठयं ।

९. मो०—संसार ।

गंधद मंत्र सुदृष्ट १जिय । आराध्यौ प्रथिराज ॥

१बरुन दोष तन ताप गय । उठि निद्रा अनु भाज ॥ छं० ५१ ॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना ।

पद्धरी - प्रथिराज राज सिर नामि जाइ । जानंत भरम तुम सकल राइ ॥

सरिता रु ताल वापी अन्हाइ । निसि समय बरुन तन धरिय पाइ ॥ छं० ५२ ॥

सरवरिय केलि सोइस्त १आइ । पाताल ईस क्रीलै सुभाइ ॥

सुमिरै न नाम सन सुद्ध १ध्याइ । उपजै सु विघन कै धर्म जाइ ॥ छं० ५३ ॥

भौसेन तब तहँ एरु ठाइ । करि वेद पठन तहँ विप्र गाइ ॥

करि होम जाप किस्नह पराइ । भए सुद्ध पाय गए तन १पुलाय ॥ छं० ५४ ॥

सोमेश्वर को लिबा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना ।

डूहा बरुन दोष मेंटघो सुप्रथु । ग्रेह संपते आय ॥

देखि पराक्रम सोम नृप । फूल्यौ अंग न माय ॥ छं० ५५ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके बरुन कथा नाम

अइतीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ३८ ॥



१. ए० छ० को०-डूम ।

२. ए० छ० को०-बरन ।

३. ए० छ० को०-पाइ ।

४. ए० वाह, छ० को०-वाह ।

५. ए० छ० को०-सुगाइ ।

अथ सोमबध सम्यो लिष्यते ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीमदेव की इच्छा

कवित्त— गुज्जर घर चालुकक । भीम जिम भीम महाबल ॥
 कोइ न चंपै सीम । कित्ति बर रीति अचंगल ॥
 सोमेसर संभरिय । तास मन अंतर सल्लै ॥
 प्रथीराज दिल्लीस । रीस तस 'अंतर नल्लै ॥
 मिलि मंत तत्त बुद्धवि मरम । करिय सेन चतुरंग सज ॥
 घर लेउ आज दुज्जन दवटि । एकछत्र मडोति रज ॥ छं० १ ॥
 भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ।

पदरी— संभरिय राज गुज्जर नरेस । रती जु साम दानह 'असेम ॥
 'कालिद कूल जंगलिय जास । प्रथिराज अकस रपे इलास ॥ लं० २ ॥
 चंपौ जु श्रप्य उर रषे डंस । मंन मध्य भीम इम भूमि गंस ॥
 हारे जुआरि कलमलिय 'षेल । चालुकक चित्त इम 'मिलन सेळ ॥ छं० ३ ॥
 कुलटा छयल्ल जिम मिलव हेत । इम षगन षेत चहुआन चेत ॥
 जिम चंद सूर मनि राह केत । कलभलिय चलिय उर भीम तेत ॥ छं० ४ ॥
 रानंग देव झाला नरिद । बुल्यो मु राइ चालुकक इंद ॥
 'तमि कहायो ताम ही इतत रोस । झलहलत अगिग ज्यों जगिग कोस
 ॥ छं० ५ ॥

बुल्लाह सम्ब मर इक्क ठोर । चढ़िवाइ बेगि बर करो दौरि ।
 षलंत नारि नर लेइ गद्ध । इम लेउ भूमि षल षग बदिड ॥ छं० ६ ॥
 जिम करिब बाल मर मिटत घूरि । तिम इला आउ चहुआन चूरि ॥
 भज्जंत भील जिम चर सुहाल । सभरिय भूमि इम करों हाल ॥ ७ ॥
 कवित्त— बोसि कन्हू कद्दी नरिद । रानिग राज बर ॥
 चौरा सिम जयसिच । बीर धबलग देव घर ॥
 धौक हरी मुरतान । बीर सारंग मकवानं ॥
 जूनामड तसार । सार लम्यो परवानं ॥

१. भी०—अंबर ।

२. भी०—काश्यप ।

५. ए० छं० को०—मलय ।

२. ए० छं० को०—अरेस ।

४. ए० छं० को०—वेव ।

६. भी०—मत ।

मत मंति सज्जि चालुकक भर । पुम्ब वीर साल्यी हिये ॥

केती न बत संभरि धरा । रहै रंग चञ्चर किये ॥ छं० ८ ॥

गाथा—सोमती रन जिला । केवा किस संभरी राज ॥

१तं केलि कलहंतं । सल्लै मूल षग मगायं ॥ छं० ९ ॥

सब सरबारों का कहना कि वीर का बदला अवश्य लेना चाहिए ।

कविता—बोली राव रानिग । बोलि चौरासिम भानं ॥

स्यामा स्याम नरिद । भीर कद्वी रन थानं ॥

अति उदार अति रूप । भूप साईं रन रष्वन ॥

चाहुआन बरसिह । विश्वी बड़वानल भष्वक ॥

जै जैत किति संसे न करि । सुबर वीर कद्वी विषम ॥

भारथ्य कथ्य भावै भवन । सुभर मुत्ति लम्पै सुषम ॥ छं० १० ॥

बूहा—सुगम पिड संग्रहिय बर । जुग जोम नह लम्प ॥

हिम ग्रीषम पावस सु तप । करै वीर प्रति अम्भ ॥ छं० ११ ॥

भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा ।

भुजंगी—करै वीर वीरं सु वीरं प्रकारं । लगे राह चहुआन सो जुद्ध सारं ॥

सु रावत रता अक्षीरत कोनं । करै घेत भीमंग कौ सोन जोनं ॥ छं० १२ ॥

करै कोन जमजोति जोर्यं प्रकारं । गने कोन बेलू सु गंगा प्रकारं ॥

गिनै कोन तारकक ते तेज भोरै । लरै कोनु चालुकक सो जुद्ध सोरै

॥ छं० १३ ॥

भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना ।

गाथा—फट्टे पुडु फुरमानं । घाये घराजित्त जिताहं ॥

इम जुट्टे सब सेनं । ज्यों भू नीर वडिड सरताहं ॥ छं० १४ ॥

भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक

शोअस्थिता का दृश्य ।

विअष्वरी—जुट्टे दल पहु पंग अपारं । हैगै बर भर लम्पि न सारं ॥

बने हयं पय पंथ समानं । यह भूमी अनुपंथ उडानं ॥ छं० १५ ॥

गज गज्जं गज्यो अनु नीरं । भह्व बह्ल जानि सक्षीरं ॥

दिषिये सूर नूर बहू पूरं । संघ्या सागर नूर ककरं ॥ छं० १६ ॥

चल्लै मल्ल मंग अलहारे । ज्ञावै धर पग पाहुर कारे ॥

कच्छे कच्छे बंधे डोरी । बंदन वोरि किति अनु डोरी ॥ छं० १७ ॥

१. ए० छं० को०, "विकेति कुलहंता" ।

२. ए० छं० को०—मगायं ।

३. मो०—विश्वी ।

४. ए० छं० को०—नहि ।

५. मो०—नेव ।

६. ए० छं० को०—अपारं ।

७. ए० छं० को०—सूर ।

जिन पग भूमि न ढिल्लें कोई । विररै लरै जानि जम दोई ॥
 पाइक पग पिन्नें जनु नठठं । षंडा कक्किठ वढे गज ददुठं ॥ छं० १८ ॥
 गोरी बिन तिन लोह न छिज्जै । धार अनी कर बर ठेलिज्जै ॥
 बंचछ अश्वह नंषत सूरं । सूर तेज जिन मुष्प सनूरं ॥ छं० १९ ॥
 बंकी भोह भयंकर नैनं । फूली बंबर लग्गे गैनं ।
 रत्ते स्वामि धम्मं रस रंगं । जोग जुगति मन चदुठत जंगं ॥ छं० २० ॥
 नेह न देह न मायां प्रेहं । चित्त सदा ब्रह्म मन लेहं ॥
 तेग त्याग मन मंड न अंगं । मुष्मत सेन मनो सुअ गंगं ॥ छं० २१ ॥
 गदुठ परे त्रप गाहत गदुठं । जिम वाराह मोय रस ददुठं ॥
 औगुन अंग न स्वामित जंगं । ज्यों सह गोत दुहागिल रंगं ॥ छं० २२ ॥
 यो मातुर रत्ते षग मगं । ज्यों कुलटान छैल मन लगं ॥
 दसहं दिसि दाफन दल बदुठं । ज्यों धुर बदल भद्व चदुठं ॥ छं० २३ ॥
 सिलह सज्जि बदुठे बल बंकं । रीछ लंगूर मनो कपि लंकं ॥
 विष्पत सेनह नैन भुलाई । मानह साइर पार डुलाई ॥ छं० २४ ॥
 अमरसिह सेवर परिमानं । भंरु भट्ट तत्त बुधि जानं ॥
 बंमन लीला लच्छिन मंडें । देव क्रम सब बंधि रु छंडें ॥ छं० २५ ॥
 सांम रूप सेवर परिमानं । दान रूप बर भट्ट मुजानं ॥
 भेद रूप दुज राज वकार । डंड रूप चारन आकार ॥ छं० २६ ॥
 लीने भीम संग चव मंत्री । दुष्ट अरिष्ट रमे जिन जंत्री ॥
 सुगं मृत्यु पाताल सुसंकं । अस आडंबर मंडत कंकं ॥ छं० २७ ॥
 भोसाराम भीम का साम दाम दंड श्रीर भेद स्वरूप अपने
 चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना ।
 पूहा - साम दाम अह भेद करि । निरनै दंड रु सार ॥
 च्यारि इत चतुरंग मन । बर सिधन आकार ॥ छं० २८ ॥
 ए बुलाइ चालुक बर । मंत्री भोरा राज ॥
 अमरसिह सेवर प्रसन । मंत्र जंत्र गुन काज ॥ छं० २९ ॥
 इनहि सक्षीप बुजाइ करि । बोलिय भीम नरिद ॥
 ज्यों तुम जंपो त्यों करौं । तुम छल मो सुख रनिद ॥ छं० ३० ॥

१. मो०-बदुठं, बदुठ ।

३. मो०-साम ।

५. ए०-मंती ।

७. ए० छं० को० ज्यो ।

९. ए० छं० को०-नरिद ।

२. मो०-जनुषत ।

४. ए० को०-पाइ ।

६. मो०-इनह ।

८. मो०-बड ।

मंत्रियों का कहना कि इस कार्य में विलंब न करना चाहिए ।
जंपि सु मंत्री मंत्र तव । सुनि भीमंग सुदेव ॥
घरती वर पर अपनी । लेत न कीजे छेव ॥ छं० ३१ ॥
राज्य प्राप्त करने की खासता से गत भीषण घटनाओं का
ऐतहासिक उदाहरण ।

साटज—भूमीनं घर धम्म क्रम्म 'निरतं, बंध्यो बधे पाडवं ॥
भूमी काज दधीच आस मृगया, नित्तं बज्जं कारनं ॥
केरुइयं भुभ काज रामय वनं, दसरथ्य मंगे वरं ॥
सा भूमी कित कारनेव सरसा, लेहाययं भूमय ॥ छं० ३२ ॥
पुनः मंत्रियों का आशयान कहना ।

कवित्त—जा जीवन जग पाइ । आइ अबनी रस रंगह ॥
जो जा जीवन बलह । विनोद रषह मन पंगह ॥
जा जीवन कज्जह । कपूर पूरन प्रभु कोकह ॥
जा जीवन आरंभ । कित्ति सा धम्म सु रोपह ॥
जिहि काज जियन तप जप करहि । भमर गुफा साघहि अवस ॥
तिहि जियन 'त्यागि बंधय कलह । तो भूमिय लुभे सु 'रस ॥ छं० ३३ ॥

दूहा—सो जीवन इम पहुनि करि । अछित्त सती समान ॥
चावहिसि नषे निठिर । वो लुभे 'मिम पान ॥ छं० ३४ ॥
भोत्ताराय का सेन सब कर तय्यारी करना ।
सुनत मंत बल्लिय ग्रपति । सज्जि सेन चतुरंग ॥
जनु बहल बह उन्नए । दिठु न परत 'नभंग ॥ छं० ३५ ॥
सेना के जुड़ाव का वर्णन ।

जरिल्ल—हाला हलं मिलत्तं सेनं । 'ज्वाला मलि 'ज्वालाह क्रत्तेनं ॥
दैवत देव बंधि चतुरंगी । हे हिल्लन्न हिदु दल 'नंगी ॥ छं० ३६ ॥
नामा—सो चतुरंगय सेनं । हय गय सज्जि बीर उर रेवं ॥
अरुनोदय गुन मंतं । जानिजे सूरतं बीरं ॥ छं० ३७ ॥
भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना ।

दूहा—उट्यो छत्र छित्ति राज सिर । त्रिषत बीर रस पान ॥
यो सब सेना रज्जिये । ज्यो जोगिद जुमान ॥ छं० ३८ ॥

१. ए० छं० को०—सेव ।

३. मो०—काज ।

५. ए० छं० को०—विम ।

७. मो०—नामा ।

२. मो०—सर्व ।

४. मो०—वर ।

६. ए० छं० को०—वर्णन ।

८. मो०—नामाह ।

९. ए० छं० को०—समी ।

कवि की उक्ति कि मंत्री सर्वैव भला मंत्र वेते हैं परन्तु
वे होनहार को नहीं जानते ।

कहहि मंत्र मंत्रिय सुमति । विधि विधि सुविधि न जान ॥
कै भंजे कै रंजई । कै 'दिवत्त प्रमान ॥ छ० ३९ ॥

सेना का धेनीवद्ध खड़ा होना ।

आनिअ ^१अल्लित साल गुन । विधि चालुवक सयन्न ॥
पुध्व बैर सोमिति को । मिरि भंजे रिन तन्न ॥ छ० ४० ॥
पंच सहस्र पंचौ सुकृत । पंचौ पंच प्रकृत ॥
पंच रषिष पंचौ ग्रहै । तो भारष्य सु जित्त ॥ छ० ४१ ॥

सेना समूह का क्रम वर्णन ।

दूहा—सली मिली कज्जल वग्न । भेक भयानक पंति ॥

तिन अग्ये छर मंडे । तिन अग्ये गज पंति ॥ छ० ४२ ॥

उक्त सनासमूह की सजाबट के आतंक की पावस ऋतु
से उपमा वर्णन ।

माधुर्य—गज पंति अल्लिय जलद हल्लिय गरज नग घन भुल्लियं ॥

हल हलन घंटन घोर घुघर नाग दुम्भर डुल्लियं ॥

गत लगि गिरवर पुरहि तरवर हलहि घरवर घाहही ॥

सलकंत वंत कि पंत बग घन घाम कल सति गावही ॥ छ० ४३ ॥

गज बहत मदहद ^१मनहुंघन भद छुट्टि छिछन उम्भरे ॥

पग जोरि मोरि मरोरि मुर जनु दिषिषि मुरपति लुम्भरे ॥

बनि पीलवाननि ढाल हालनि बनिय बैरष साजही ॥

मनुं सिषर गिरि वर काम अंगन छत्र चमर कि राजही ॥ छ० ४४ ॥

अंघ घुंघन चलत मगन सुनत बज्जन चल्लही ॥

वै कोट ओटन अगड़ मन्नत सिषर गिर रद मल्लही ॥

दल मुख मंडिय मेंघ छंडिय मनहु मुरपति वज्जयं ॥

मुर सोम सोमह मन्न मोमह गेह तजि प्रज भज्जयं ॥ छ० ४५ ॥

परि देस देसन रौरि दोरिय सुनिय संभरि रज्जयं ॥

वर मंमि बाजिय सिलह संजिय ^१वहै भोरा अज्जयं ॥ छ० ४६ ॥

१. ए० छ० लौ०—वैरष ।

२. मो०—जनति ।

३. मो०—वज्जयं ।

४. मो०—वही ।

इसी अवसर में मुख्य सामंतों सहित पृथ्वीराज का उत्तर
की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों को
पीठि सेना की तरफ जाने की आज्ञा देना

कवित्त— उत्तर वै विजयंत । रोह रती प्रथिराजं ॥

सोमेसर दिल्लीस । संग सामंत सुराजं ॥

धीची राव प्रसंग । जाम अहीं घट भारिय ॥

देवराज बग्गरिय । भान पट्टी बल हारिय ॥

उद्दिग बाह पम्मार भर । बलिय राव बलिभद्र सम ॥

इत्तने रथि कैमास संग । कलह कूच किन्नी सुक्रम ॥ छं० ४७ ॥

पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का भी चला
जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था ।

बूहा— जिन कंठन दिल्ली नगर । ते रथ्य प्रथिराज ॥

रसित स्वामि अभ्यंतरह । कलह न इच्छन काज ॥ छं० ४८ ॥

सुनत पुकारह छोह छकि । सतिय सत्त प्रमान ॥

चढ़त सोम चढ़े ह्यन । बिटि नछिन्न भान ॥ छं० ४९ ॥

रन बन बन सोमेस सुत । सज्जि सेन चतुरग ॥

को विद गुन मन ज्यों रमत । ज्यों भर जानत जंग ॥ छं० ५० ॥

उसी समय पूर्व बैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर
पर चढ़ जाना, प्रातःकाल की उसकी तैयारी का वर्णन ।

कवित्त— नाग कलं मलि भार । सार सज्जत रन रजजन ॥

दे दुवाह बालुक्क । भीम भारथ सों लगन ॥

सोससी बर बैर । बहुरि हालाहल मच्छ्यौ ॥

भरन पट्टुचिय आव । लेष लंचे को रथ्यौ ॥

करि न्हान दान इष्टं सु जप । भट अर्पंग सज्जे समुद ॥

विगसंत नयन दिय बयन । मनो प्रात फुल्ले कुमुद ॥ छं० ५१ ॥

इधर कहू और बैसिह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के
सम्मुख युद्ध करने के लिये तैयार होना ।

कुसुम जुठ कुसुमेक । कुसुम संघा कुसुमेकह ॥

आदि जुठ संपनी । देव बद्यौ दुति देकह ॥

संभरि वै संभरिय । राज सोमसह कज ॥

उत्तर दिसि प्रथिराज । गयी उत्तर दिसि मज ॥

जे सिंह देव जे सिंह सुज । सुत्र प्रमान पय 'डड बरी ॥
दल अबल अबल लगन नदिय । गरिल गगार उम्भरी ॥ छं० ५२ ॥
सोमेश्वर की सेना की तैयारी वर्णन ।

शुक्रकाल - सत्रि सेन सोम अगार । सुनि सज्ज सेन प्रकार ॥
सोमेश्वर सूर बिचार । सत्रि चढ़े बीर जुगार ॥ छं० ५३ ॥
भररा धरा कपिय भार । ॥
चढ़ि राह चालुक पान । धर धरिय दिल्ली सुधान ॥ छं० ५४ ॥
सुनि श्रवन संभरि राज । बर बज्जि विजयत बाज ॥
तन त्रिविधि तूठ तरंग । विधि मंडि बीर विजंग ॥ छं० ५५ ॥
दल देधि सूर सुसंग । उर होत अरियन पंग ॥
दलकंत दिल्ली डाल । मधु माघ नूत तमाल ॥ छं० ५६ ॥
छुटि अर्चंग अच्छनुपार । पाहार फारि प्रहारि ॥
उडि वृत्त तिडिय सेन । मनो राम लंका लेन ॥ छं० ५७ ॥
सैनिकों का उरसाह सोमेश्वर की वीरता और
कन्हाराय का बल वर्णन ।

कवित्त - त्रिविध सात्र त्रिडिय । अवाज भेरी कोकिल सुर ॥
भवर झुंड झंकार । चीर मोरह दुरंत बर ॥
बर बसंत मम वीर । नच्चि तोषार त्रिभगिय ॥
धरज रत्ती सोमेश । भीम भारथ अनभगिय ॥
दल धरकि भरकि काहर सरकि । हरषि मूर बज्जिय करम ॥
कन्हा नरिद प्रथिरात्र बिन । सुभर कक मांडिय सरम ॥ छं० ५८ ॥
युद्ध प्रारंभ होना ।

दूहा - सुबर बीर मंड्यो समर । रन उतंग सोमेश ॥
दौ दुबाह "दुज्जन धरी । धरी सु अबक तरेस ॥ छं० ५९ ॥

१. छं० को० मो०-डंड ।

* यद्यपि यह पाठ मो०-प्रति में ५३ छंद का चतुर्थ चरण करके दिया हुआ है किन्तु अन्य तीनों ए० छं० को० प्रतियों में छं० ५३ के चतुर्थ चरण का "सत्रि चढ़े बीर जुगार" पाठ है। अतएव यह पाठ भेद नहीं होसकता, भाषे बलकर छंद भंग भी है-इससे मालूम होना है कि इसके साथ का दूसरा चरण लेखक की धूँ में छूट गया है ।

२. मो०-विजयसु ।

३. ए० छं० को०-विधि ।

४. को० छं०-गर, ए०-गर ।

५. ए० छं०-नुज्जन ।

कन्ह की बीरमेत और तबभुसार सेनापति उलकी धोख्यान ।

कविता—जा दिन जीवं व जम्म । क्रम्मता दिज जवं पच्छे ॥

सुष्व सुष्व जय अजय । लीभ माया नन सुच्छे ॥

काल कलह संग्रही । मोह पंजर ओरही ॥

भुगति भग सुस्त्री न । ग्याने अंतह किन सुदो ॥

प्रतिध्वं व अंब अंबह जुगति । भुगति क्रम्म सह उदरे ॥

केवल सु धम्म विधिये तनह । कन्ह कंक जो सुदरे ॥ छं० ६० ॥

ब्रह्मा—बीर गज्जि गज्जिय विबुध । * नर निरदोष सवोष ॥

संभरवे संभर सुमति । नृप लगि सुमत जमोष ॥ छं० ६१ ॥

कन्ह की भासों की पट्टी खुलना ।

कविता—सजिय सकल सन्नाह । दाह जनु दंगल पट्टिय ॥

सुमरि साह इक देव । द्रुवन दल देवि पट्टिय ॥

छट्टिय पट्टिय नयन । भइ दुंदभी गयना ॥

नेज बेग क्षम क्षमिय । मच्छ आरीठ भयना ॥

फूलह सु धार धर कन्ह वर । कर पर छट्टिय छह धरिय ॥

पग सट्टि नट्टि भीमंग दल । बल अभूत कन्हा करिय ॥ छं० ६२ ॥

दोनों हिंदू सेनापतों की परस्पर श्लोचस्वितता का वर्णन ।

ब्रह्मा—काल अपि बर अपि कल । नर निषोष निसान ॥

सुबर बीर हिंदुअ सयन । बर बीरा रस पान ॥ छं० ६३ ॥

कन्हुराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन ।

† कलाकल—कलहंतय केलि सु कन्ह कियं । जु अनंदिय नंदिय ईस बिय ॥

नचि नो रसमं इक कन्ह भरं । मय मंचि भयानक अंत करं ॥ छं० ६४ ॥

क्षमकंत सु दंतन अस्सि क्षरी । जनु विज्जुलि पध्वत मेष परी ॥

उडि धुंधरियं निय छाइ जनं । जनु सज्जिय भुग जुगदि पनं ॥ छं० ६५ ॥

१. क० को०—भुगति, ए०—सुकति । २. ए० क० को०—छत्री

३. ए०—संभर ।

* ए० क० को०—नर निर दोष लोष ।

४. ए०—दुपट्टिय, मो० को०—लपट्टिय ।

५. जो०—नी रस में ।

६. जो०—सज्जि ।

† इस छंद को "को" प्रति में मथुराकल करके लिखा है और "मो" प्रति में भ्रमरावली करके लिखा है परंतु भ्रमरावली छंद कन्ह है नहीं । भ्रमरावली अथवा कलिनी छन्द ५ सप्तम का होता है परं इस छंद में केवल चारही सप्तम है ।

बजि 'बीहज इकक निसान घुरं । जनु बीर जगावत बीर उरं ।
दुअ सेन बलं असियो बरषी । नचि जुग्गनि षप्पर लै हरषी ॥छं० ६६॥

'जिनके सिर मार दुआर झरे । बहुन्यो नन पंजर आय परे ॥छं० ६७॥
कविस - कहर भगर जिम बेल । ठेल सेलन सम ठिल्लहि ॥

इकक धुकत धर तुट्टि । * इकक वल्लन गल मिल्लहि ॥

इकक कमंघ उठंत । इकक अंतन आलुइइहि ॥

इकक हृथ 'पग झरहि । टिकिक षग 'पग बिन झुइइहि ॥

'तरफरत इकक धर मीन जनु । रन रवन्न 'छिन्न कन्यो ॥

घन घाइ घुम्मि षट धुकि धर । इम सु जुद्ध कन्हह 'भिन्यो ॥छं० ६८॥

कन्ह राय का कोष ।

किन्न दंति बिन दंत । मुभट सीसन बिन किन्निय ॥

हय किन्निय बिन नरनि । सेन भीमह करि झिन्निय ॥

'बुद्धा बिन किय काल । बाल बर बिगरिन दिष्णिय ॥

पल हरिय पल पूर । सूर कन्ह भय भिष्णिय ॥

कीनी सुकित्ति भूमी अचल । सचल सस्त्र सह झंझरिय ॥

मदमत्त गंध महियो 'दुरिय । मनो वाय वृच्छह गुरिय ॥ छं० ६९ ॥

दूहा - सत्तह '१० आराधिय सुमहि । हरि दाढा घन जान ॥

'१ सो संभरि सोमेस बर । सो कीनी पहिचान ॥ छं० ७० ॥

अपनी सेना को छितर बितर देख कर भीम देव का

रोस में आकर स्वयं युद्ध करना ।

कवित्त - मध्य रूप मध्यंत । मध्य '२ धम्मन तन मोचन ॥

सिद्ध सुरघ अनुरद्ध । वृद्ध वय कामति सोचन ॥

'१ पुत्र बिना बिन बंध । बळ सु बंध्यो भीमंदे ॥

सार सुकृत आरद्ध । सुण्य लण्यं तंमंदे ॥

बंधनिय बिने सखी सयन । *नय तरत्त रती मुगति ॥

सोमेस सूर सोमेस सों । सार लगि बीरह सुभति ॥ छं० ७१ ॥

१. ए० इ० को० - इकक ।

२. मो० - जिन ।

* मो० - इकक बल भावल मिल्लहि ।

३. ए० इ० को० - पग ।

४. मो० - वय ।

५. ए० इ० को० - तरफंत ।

६. ए० इ० को० - छनी ।

७. ए० इ० को० - लन्यो ।

८. ए० बुद्धा, इ० - बुद्धया ।

९. मो० - दुरत ।

१०. ए० इ० को० - आधारिय ।

११. ए० इ० को० - से परिदे सोमेस बर ।

१२. मो० - बुद्ध ।

१३. ए० इ० को० - मुनि ।

* मो० - "बन्धन तरत्त तरती मुगति" ।

कन्ह और भीम शैव का परस्पर घोर युद्ध होना ।

रसावला—

रस बीर मत्ते, लरै लोह तत्ते । धुरा कन्ह मत्ते, रनं 'रोस पत्ते ॥ छं० ७२ ॥
मनों काल 'दंते, रसं रद्र रत्ते । झरै फुल्ल पत्ते, विमानं विहत्ते ॥ छं० ७३ ॥
बगने विहत्ती, उरै गज्ज मुत्ती । असं मंस कत्ती, रक्षी धार रत्ती ॥ छं० ७४ ॥
उमा हाथ कत्ती, उछारंत छत्ती । महा भीम मत्ती, इसी रद्र रत्ती ॥ छं० ७५ ॥
तजै मोह बंसं, मिलै हंस हंसं । झरै अंत झूमी, मनो मेघ झूमी ॥ छं० ७६ ॥

कवि की उक्ति ।

कवित्त—सघन धाय निषाह । † मय्यी को मरन अहुट्टिय ॥

सूरबीर संग्राम । घीर भारथ्य स जुट्टिय ॥

कोन बेत तजि गयो । कोन ह्यौ को जित्ती ॥

लिषं अंक बिन कंक । कोन माया रस बित्ती ॥

छह घरी थोन बसिबर उबघौ । धार भार उधि धार बलि ॥

संजुत अग्नि घूमह संजुत । छलि बलि बीर बलिष्ट बलि ॥

॥ छं० ७७ ॥

युद्ध स्थल की उपमा वर्णन ।

सिद्धि रिद्ध विष्वरिय । लुप्यि पुर लुप्यि अहुट्टिय ॥

थोन बलिल बदि बलिय । मरन मन किंरुन जुट्टिय ॥

कलमल सिर वहि गुरिय । नयन अलि बास सु बासिय ॥

अंध मगर कर भीन । कच्छ पुप्परि षग बासिय ॥

पोइनी अंत सेवाल कच । अंगुलि पग करि सिंग झरि ॥

सोमेस सूर बहुआन रन । भीम भयानक जुद्ध करि ॥ छं० ७८ ॥

बूहा—हय गय जुद्ध अनुद्ध परि । बहुत सार असरार ॥

★मानों जालुग अंत की । जानि संपती पार ॥ छं० ७९ ॥

कन्हुराय का भीमशैव के हाथी को मार गिराना ।

कवित्त—सोमेसर अरि सूर । डाहि 'दीने' बरि वानै ॥

नल कूबर मनि शीव । जमल भग्ना 'तह कान्है ॥

१. मो०—शैव ।

२. ए० छं० की०—बत्ते ।

† मो०—'मुप्यो कोमर काहुट्टिय' ।

३. ए० छं० की०—बलि ।

४. ए० छं० की०—मगर ।

★ ए० छं० की०—बकी थोन चुनति की ।

५. ए० छं० की०—दीनी ।

६. ए० छं० की०—वर ।

७. मो०—वर ।

वे सराय नारद प्रमान । दरसन हर लद्धिय ॥
 इन तमंग उत्तरी । सार कद्धे बर बद्धिय ॥
 त्रिधात घात मत्ती कलह । अमुर बुरन मत्ती १महन ॥
 कद्धे सुरत कित्तिय सुमट । सु कविचंद २कित्ती कहन ॥छं०८०॥
 दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध ।

शुजंगी — बजे बीर बीरं सु सारं वनककं । महा मुक्ति वत्ते सु बीरं रनककै ॥
 गजे बीर बहं करभाल सहं । सनाहं ससूरं बहै सार हहं ॥ छं० ८१ ॥
 नचै जंग रंग ततध्ये तथंगं । १लचै रंक चित्तं मनं सूर २पंगं ॥
 बडे बंक कंक ससंकी घरानं । नगं नग जुट्टे अमगं परानं ॥ छं० ८२ ॥
 ठनककंत घंटं रनकके नफेरी । मया मोह दोषन्न सूरन्न ३नेरी ॥
 धरं धार वीरे वंडोरे सु डालं । मनो चक्र फेरं कि पंक कुलालं ॥ छं० ८३ ॥

जामराय यद्धव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना,
 दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन ।

कवित्त — समर समुद भीमंग । मध्य दडवानल राजं ॥
 चाहुजान चालुकक । रोस जुट्टे बल साजं ॥
 दल दध्विन जदु जाम । कलय अंती कर कुप्पी ॥
 १ता मुख्ह वंगार । झार अग्गी झर रुपी ॥
 बिरचे कि २महिष बलबंड बल । दल ३चमूह चवदंत हुअ ॥
 न्यप काम जाम इक जहर झर । बहर रूप पिण्वेति दुव ॥छं०८४॥

रसावला—

जडू जाम जोधं । वंगार सरोधं । भरं भार क्रुद्धं । रमै रोस उद्धं ॥छं० ८५ ॥
 करे केलि कंकी, घुते लज्ज पंकी । कहरं करारे, मनो मत्तवारे ॥ छं० ८६ ॥
 पिये लोह छककं, बकै मार हककं । धरा धीर धूनें, फिरं अश्व सूनें ॥छं० ८७॥
 विना दंत वंती, किए क्रुद्धवंती । गिरे कट कारे, झरे रत्त धारे ॥ छं० ८८ ॥
 परे १सार मारे, भयानं निनारे । हयं पाइ एकं, फिरं धेत केकं ॥छं० ८९ ॥
 दुअं मुख्ह लग्गे, डिगै नाति डिगं । परे लोह पूरं, गिनै नाति सूरं ॥छं०९०॥
 बहै शोन धार, झरे १०सिन्न तारं । ॥ छं० ९१ ॥

१. ए०—महन ।

३. ए० क० को—बंभ ।

५. ए० क० को—जेरी ।

७. ए० क० को—बनव ।

९. मो०—धार ।

२. मो०—कीरति ।

४. ए० क० को—बल ।

६. मो०—तमु ।

८. ए० क० को—समूह ।

१०. ए०—फिरन, क० को मो०—सिरन ।

उक्त दोनों बीरों की असाध्य बल से अपना गर्जन ।

गाथा—यों लगे रन सूरं । ज्यों मत्त^१ बृषभ रोस रंगाई ॥

गरजें घर घुर घुं दे । तबकें भाइ अप्प अंगाई ॥ छं० ९२ ॥

इन बीरों का युद्ध देखकर देवताओं का विस्मित

होना और पुष्प वृद्धि करना ।

ब्रह्मा—अंमर घर पन्नग असुर । पिषि सह रष्वित नेन ॥

सुमन ससंभ्रम पिषिष क्रम । सुमन स^२ वृष्टिय गैन ॥ छं० ९३ ॥

सधन घाह धूमत विषट । पिलै कि पन्नग मंत्र ॥

विस भोए डविस सबल । सगति नही जुग^३ जंत्र ॥ छं० ९४ ॥

सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलिभद्र का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त—वाम अंग सजि संग । बलिय बलिभद्र विरचि रन ॥

सेत चमर गज सेत । सेत गज संप करनि गन ॥

सेत हयन गज गाह । घंट घूंघर घनघोरं ॥

वष्पर पष्पर जीन । सार ददुर दल रोरं ॥

गज गाज बाजि नीसान धुनि । अति उष्पर दल जोर वर ॥

बजि लाग राग सिंधू स धुनि।करन सु उथल्ल^४पत्थल्लघर ॥ छं० ९५ ॥

भीम देव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान

खूट कर घागे बुढ़ना ।

ब्रह्मा—पावस मावस निसि धुनिय । सजि सारंगी भाइ ॥

विभिर वेत घन घाह मिलि । जानिक लग्गी लाइ ॥ छं० ९६ ॥

सोमेश्वर जी की तरफ के बहुत से * कछवाहे बीरों का मारा जाना ।

भुजंगी—मिले सेन^५ सूरं कहरं करारे । छुटे बान कम्मान करि बार घारे ॥

परें कसियं घात निरघात बीरं । फिर दंड मुंडं तनं तच्छ^६ तीरं ॥ छं० ९७ ॥

उड़ें दंत सुंडं भसुंडं निनारे । मनो कज्जलं कूट अहि चंद दारे ॥

उड़ें टोप टूकं गुरज्जं प्रहारे । मनो सूर सीसं कसे चंद तारे ॥ छं० ९८ ॥

१. मो०—मनस्य रोस ।

२. मो०—वृष्टिय ।

३. मो०—सकति, ।

४. ए०—तंत्र ।

५. मो०—पथ ।

* कछवाहा अश्विनों की एक जाति विशेष को कहते हैं । वर्तमान जैपुर राज्य उसी वंश में है । कवि से इस कछवाहा शब्द के लिये प्रायः कूरुव शब्द प्रयोग किया है जो कि कूर्म (कच्छप, कछुवा) शब्द का रूपान्तर है ।

६. ए० छं० मो०—घार ।

७. मो० तीरं ।

भई तीरयं भीर अग्रैव मानं । सरं पंजरं पथ्य षंडेव जानं ॥
 मिले सेल भेल भएकं भयंती । कुटे धान मानों घनं कूटकंती ॥ छं० ९९ ॥
 रजं रज्ज रज्जे सुरज्जे अनूपं । रमै जानि वासंत भूपाल भूपं ॥
 जिनं कछ्छ वरुषं धरं धम्म धारै । तिनं क्षल्लियं षग्ग अरि सस्त्र झारै ॥
 ॥ छं० १०० ॥

जिते काछवाचं जितं धम्म धारी । तिनं ठिल्लियं भार भर भीर फारी ॥
 धरं घुक्कियं धार कूरंभदेवं । सुभै सस्त्र सज्या मनो संत नेवं ॥ छं० १०१ ॥

भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना ।

रूहा - दक्षिण पच्छिम वाम दल । वृत्त अनुद्विय मार ॥

गोल गहर गाजी अनी । सोमेशर अरि भार ॥ छं० १०२ ॥

उस समय बहुमान बीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना ।

गाथा - बज्जे रन रनतूरं । गज्जे गहर सूर षल चूरं ॥

मंडे निजर कहरं । छंडे मरन मोह मासूरं ॥ छं० १०३ ॥

सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना ।

साटक - पिण्ठेयं सोमेश गुज्जर धनी, मचकंदु निद्रा तयं ॥

जलधेयं गंजाल कोपित बलं, हालाहलं नैनयं ॥

जो बंडं करवान कर्णित दलं, अज्जेन आयातयं ॥

श्री बीरं बहुआन वानति बलं, चालुकक संघातयं ॥ छं० १०४ ॥

भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना ।

भुजंगी - बडे बान बहुआन चालुककं षेतं । महा मंत्र विद्या गुरं मुक्रु जेतं ॥

घने घोर नीसान गज्जे गहारं । उठे जानि प्रासाद वर्षा 'प्रहारं ॥ छं० १०५ ॥

बजी भेरि शंकार नफेरि नादं । तडककंत बिज्जू करभाल सादं ॥

छुटी बान जंत्री उड़ी नेन अगी । 'महादेव बीरं चषं निद्र भग्गी ॥ छं० १०६ ॥

सहन्नाइ सिधू सुरं हर्ष वीरं । नचें ताल संमाल वेताल श्रीरं ॥

नचें त्रत्य नीसान नारह् चाई । चदी व्योम त्रिम्मान अपछरि सुहाई ॥

॥ छं० १०७ ॥

जके जप्प गंधर्व कौतियाग हारी । प्रलंकालयं ष्वाल 'व्यालं विचारी ॥

दुवं दिग्गपालं दुवं छत्रधारी । दुवं डाल ठिचाल मल्लं करारी ॥ छं० १०८ ॥

दुअं 'तबल दारं दुअं विरद वानं । दुअं भूमि संघार हिइ हृदानं ॥

दुअं सूर पूतं दुअं 'रुस्य पाए । दुअ इवं दासुन बाजे बजाए ॥ छं० १०९ ॥

१. मो०-पहारं ।

२. ए० ह० को०-महाबीर देवं ।

३. को०-वशी, ए० ह० को०-शशी ।

४. ए०-तत्र, ह० को०-तत्त्व ।

५. को०-वश्य, ए० ह०-वस्य ।

दुबं लोह मेवाक मंदूर मान । दुबं हुंकि हुंकार बद्धेव रानं ॥
 दुबं सैन त्याही जलं बद्धानं । दुबं गच्छ गुम्मानयं तेव मानं ॥ छं० ११० ॥
 रषी चण्चरी लोह बंधं करारी । प्रचुलीय मेरा अचंती करारी ॥
 'सरं बाल बालं भिदै जंन जीवं । हयं हीस मडे गरणजे करीवं ॥ छं० १११ ॥
 तुटं हड्ड मंसं धरंमं अमंती । गहै अंत गिळी गयंनं भमंती ॥
 उछं छीछ तारं अपारं उतमं । सुरं बूष्ट बंधूक पूजं 'जुतंमं ॥ छं० ११२ ॥
 छटं मझस सझं नरं केक कच्चे । लरं जंन हृष्यं विना केक रच्चे ॥
 उडं पुप्परी षग झारं करारी । मनो चंव सूरं दधी पूष धारी ॥ छं० ११३ ॥
 किते घाड अघ्वाड घट धूम लुट्टे । 'तिनं जम्म अनं क्रमं बंध छुट्टे ॥
 किते लोह छक्के रनं भूमि धूमै । तिनं वास वैकुंठ कै ठाम धूमै ॥ छं० ११४ ॥
 जिते अंगं अंगं परे टूटि न्यारे । तिनं उप्पजै मुक्ति कै धूम त्यारे ॥
 कहे कव्वि बध्वाण किं वनि तेनं । फलै 'कृष्णि पच्छं मरंनं जितेनं ॥ छं० ११५ ॥
 कविस - हालाहल विसयो । सार मसी झोलाहल ॥

जुगिनि जय जय जपहि । पस्सु पंविन कोलहल ॥

धर परंत बुरि धरनि । उत्त मंगतिहि कारहि ॥

झर झरंत षग्गाह । बीर डंकिनि डक्कारहि ॥

महि मच्चि महूरत मरन रन । सह जाड जय सूर करिय ॥

चहुआन सूर सोमैस रन । बंड बंड तन झरि परिय ॥ छं० ११६ ॥

अपना मरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अनुसित बीरता

से युद्ध करना और उसका मारा जाना ।

हय गय नर भर परिय । भिरिय भारव सम्मानं ॥

सोमैसर संचयो । मरन निहचै उनमनं ॥

रत्त रंग सबरंग । जंग सारह उझारै ॥

हकि मार धकि सार । शुम्मि झग सार 'भु रारै ॥

कलहंत कंक अनभूत हुम । उडहि हुंस हुंसन मिलहि ॥

तन तुट्टि रुधिर पल हड्ड सनाकै कमंध उठि रन थिलहि ॥ छं० ११७ ॥

सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी छोड़े पदाती एवं राबत

सामंतों की संख्या कमन ।

बाजि नधि सोमैस । सहस बर इक्क प्रमानं ॥

'तिन मध कहि पंचास । बीर भारव भरि पानं ॥

१. ए० छं० को०-रत्त ।

२. को०-तनं ।

३. को०-भुवारै ।

४. ए० छं० को०-भुवारै ।

५. ए०-कृष्णि ।

६. को०-तिन मध कहि पंचास ।

तीन तीस षट परे । पन्थी सोमेसर बेतं ॥

गिद्धि सिद्धि बेताल । कंक बंध्यौ सिर नेतं ॥

कम्भी सु मुगति अदभुन जुगति । हंस हकि हंसह मिल्यो ॥

सोमेस करी सोमेस गति । पंच तत्त पंचह मिल्यो ॥ छं० ११८ ॥

सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना ।

ब्रूहा—जुद्धिस पन्थो सोमेस घर । डोला चालुक राय ॥

बुहूं सेन करि घर परे । बजी बत्त षग चाइ ॥ छं० ११९ ॥

नए भृत्य नः रिषि के । ज्यों फिरि करिहै मृद्धस ॥

चतुरानन चिंता भई । नर भारथ्य अबुद्धस ॥ छं० १२० ॥

सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली ।

गाथा—जा 'मुक्कि जोगिद । कालं काह भ्रम्म भ्रमाइं ॥

सा मुक्ती सोमेसं । इवक छिने लम्भियं राजा ॥ छं० ११९ ॥

भूमी भरंत भरयं । कलयं कर कथिथ कथयेवं ॥

जै जै जंपि जगतं । है है नम्भ सद सुर यायं ॥ छं० १२२ ॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण

करना और षोडसी आदि मृत्युकर्म करना ।

कविस - सुन्यो राज प्रथिराज । भूमि सिज्जा अवधारिय ॥

तात काज तिन पिउ । दान षोडस विच्चारिय ॥

भद् भद् सहयो । राज गति श्रम्ब प्रकारं ॥

द्वादस दिन प्रथिराज । भूमि सज्या संथारं ॥

विन भोग भोज इक टंक करिसुह्य दान दिय राज बर ॥

दिश्रो न कोइ दंहे न कोइ । इतो दान जनमंत नर ॥ छं० १२३ ॥

पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और पण करना

कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग

बाधूंगा न घी खाऊंगा ।

अट्ट सहस्र दिय घेन ॥ *तब प्रथ्यो विधि धारिय ॥

हेम श्रुंग पुर हेम । तील द्वादस हिमसारिय ॥

जुगति जुगति विधि नान । दान षोडस विस्तारं ॥

तात बीर संग्रहन । लेन प्रथिराज विचारं ॥

भूत मुक्कि पाष बंधन तजिय । सुवृत बीर लीनी विषम ॥

बालक भीम भर गजिके । कढी तात उदरह सुषम ॥ छं० १२४ ॥

१. ए० छं० को०—मुक्ति, मुक्ति ।

* बी०—“तब प्रथिराज सुधारिय” पाठ है ।

अरिल्ल - धिग ताहि ताहि जीवन प्रमाण । सध्यो न तात बैरह बिनाव ॥
राजिदु दृष्टि रग तेत मेन । बड्यो सु रोसु कर उमडि मेन ॥छं०१२५॥
पृथ्वीराज का भीमाराय पर बढ़ाई करने की इच्छा
करना परमसु मंत्रियों का पृथ्वीराज को बलबेर
की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना ।

बूहा -सजन सेन चाहे जपति । बैर तात प्रथिराज ॥
पाठ पुब्व बैठन मती । पच्छ सु जुडह काज ॥ छं० १२६ ॥
पृथ्वीराज का राज्यभिक्षेक ।

कवित -बोलि विप्र प्रथिराज । तत्त बुडी अधिकारिय ॥
राज क्रम सब जान । धम्म क्रम्मह तन धारिय ॥
जग्य आप मति जोग । क्रम्म बंधन बल बधन ॥
दिषत 'मृष्य जनु 'ब्रह्म । पाप भजन जन सजजन ॥
जोगिद जोग पुज्जे नहीं । काल त्रिदस जानी सुभति ॥
सासांति सूर सोमह करन । सुविधि सूर मंडी सुमति ॥छं०१२७॥

बूहा --राज विप्र सुवृत । जजन सुजग्य पवित्र ॥
तत्र कोइ पुज्जे नहै । क्रम बारन बर मित्र ॥ छं० १२८ ॥
पृथ्वीराज का दरबार में बैठना और विप्रों का स्वस्तयन
पढ़ कर तिलक करना ।

पड्यरी -आएसु विप्र दरबार बार । 'साधंत जोग मति सिद्ध 'सार ॥
मतिवंत 'रत्ति प्रथमीत जोग । जुग जगति सेव तिन 'देन भोग ॥छं०१२९॥
पूजै प्रकार 'साधन अनेव । तिन प्रसन होइ तन मडि देव ॥
देवेति विप्र इन विधि प्रकार । जानंत बुद्धि तसी प्रथार ॥ छं० १३० ॥
महि मगन मंडि नहीं निरुट फंद । दिष्यंत देह आनंद कंद ॥
प्रथिराज इंद्र राजिद जोग । अप्यै सु मुक्ति अब भुक्ति भोग ॥ छं० १३१ ॥
धर धरनि भिरन वै दान राज । सोबल भूमि मंडी विराज ॥
पइ सहस सहस बर हेम इइइ । अप्यै सु दान मानह कितिक्क ॥ छं०१३२ ॥
'जोगिद 'मति प्रथिराज किस । बर बीर धीर साधंत भिस ॥ छं० १३३ ॥

१. सो०-सुष्य

२. मो०-विम्व ।

३. छं०-साधनत ।

४. ए० छं० को०-वार ।

५. ए० छं० को०-रत्त ।

६. छं० ए०-नीन ।

७. को० मो०-राजन ।

८. ए० छं० को०-जोगिद ।

९. मो०-मति ।

पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरबार
में नृत्य गान होना ।

इहाँ—विविध दान परिमान करि । निगमबोध सुभ थान ॥

लिय दिष्वा जहाँ धम्म सुत । करि अभिषेक नृपान ॥ छं० १३४ ॥

अमरावली—नव बीर नवं रस बीर नच्यौ । अमरावलि छंद सु चंद रच्यौ ॥

सिद्धि बुद्धिय विप्र समान धरं । मति जानत तत्त सुमत्ति गुरं ॥ छं० १३५ ॥

गुर जानन गो विध तत्त सुरं । मनु बिब सु बिबर रंभ डरं ॥

त्रिय दिष्पिय रंभति रंभ गती । ॥ छं० १३६ ॥

बय स्याम सषी गुन गौर धरं । कविचंद सु व्रनन किति करं ॥

तमकी तम तेज किरंन 'रजं । तिन देषत चंद कलाति लजं ॥ छं० १३७ ॥

गुर सत्त बुधं गुरमत्त प्रसं । तिन कै उर काम ककन्न नसं ॥

बहकें नग ज्यो गज मगग फिरे । तुटि वार प्रहारत धार धरे ॥ छं० १३८ ॥

... .. । मनु तारक तेज ससी उचारं ॥

छलकै छिति मति जराइ जलं । झलकै जनु मुत्तिय मुत्ति गसं ॥ छं० १३९ ॥

गुर ध्यार ग्रहं गुरु जीव रवी । प्रगटी जनु जोति सु तेज हवी ॥ छं० १४० ॥

दरबार में सब सामंतों सहित बंठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन ।

कवित्त—प्रगटि राज दर जोति । रंग रवनी रस गावहि ॥

पाट बैठि प्रथिराज । सब्ब सामंत सु भावहि ॥

दधि तंदुल हरि दूब । सुम्भ रोचन कसमीरं ॥

मनों भान में भान । प्रगटि कल किरन सरीरं ॥

दिष्पिये बाल गावत सरन । सपत सुरस पट राग मति ॥

संसार भेद आभेद रतापत्ति प्रकृति साघत सुरति ॥ छं० १४१ ॥

भुजंगी—कुरंवीं सु चंगी द्रपंग ति वाले । इकं मोल अमोल लोलंत भाले ॥

गरे पुष्क माला बिसालाति धारे । मयंका मुषी कंठ कलघठ सारं ॥ छं० १४२ ॥

इहा—वित मति गति सारंत विधि । न्रप जै जै प्रथिराज ॥

मनों इंदु सुरपुर गहन । उदै करे मनु साज ॥ छं० १४३ ॥

लोइ स पते तिन महल । जहें सामंत नरिद ॥

इच्छिनि अंचल गंठ जुरि । मनों इंद्रानी इंद्र ॥ छं० १४४ ॥

१. ए०—वरं ।

२. ए० इ० को० किरति ।

३. ए० इ० को०—वट ।

४. ए० इ० को०—गति ।

५. मी०—रन ।

६. ए० इ० को० प्रपति ।

७. मी०—कुरति ।

८. मी०—कलघठ ।

भुजंगी —

नूपे इच्छिनी गंठि बंधी प्रकारे । मनो कामता काम की बुद्धि तारें ॥
कुहू रंग रंगी सु रंगीति साधी । मानों जीव गुर राह एकंत बाधी ॥ छं० १४५ ॥
सही सत्त मंतं प्रकारे निनारे । मनो मेनिका रंभ आवे अघारे ॥
बरं देखि असमान अभिमान जानै । बने कोन वृक्षंत ता बुद्धि दाने ॥ छं० १४६ ॥
दूहा — चौअगानी लच्छि दे । सब सामंतन सध्य ॥

जस जा हृष्यन बिप्य के । भी कामिनिति समध्य ॥ छं० १४७ ॥

माया — उभै राम बर सूरं । सामंतं सत्त षट दूनं ॥

ता अप्पन प्रथिराजं । चौ अगगा लच्छि संग्रामं ॥ छं० १४८ ॥

ईच्छनी से गठबन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलावर संबन्धी
पूजन विधान करना ।

भुजंगी —

भई कामना काम कामित्त राजं । दियो कन्ह बहुआन हृष्यी विराजं ॥
उभै राज राजंग जोगिंदु मित्तं । मनो देवता जीव के जग्य जतं ॥ छं० १४९ ॥
पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना । पहिले कन्ह का घोर
तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामंतों का टीका करना ।
दूहा — प्रथम तिलक सिर कन्ह क्रिय । दुत्तिय निडर रठौर ॥
इन अगह सुभ संत करि । तापछ सुभर और ॥ छं० १५० ॥

कवित्त — कियो तिलक बर कन्ह । पाट प्रथिराज विराजहि ॥

मनो इंद्र अरधंग । हृष्य इंदीवर राजहि ॥

चमर सेत सोभंत । दुरत चावहिसि मीसं ॥

चमर सेत सोभंत । दुरत चावहिसि मीसं ॥

मनो भान पर धरिय । किरनि ससि की प्रति रीसं ॥

अवनीस इंद्र लग्यौ तपन । धुअ सुतेज तप उडरन ॥

सुरतान गहन मोषन करन । बहु बीरा रस संबिघन ॥ छं० १५१ ॥

पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन ।

कनक दंड सिर छत्र । सुभत चौहात सीस पर ॥

कै तरत्त ससि भान । तेज मंगल जंगल गुर ॥

ग्रह सुसंत संग्रहन । पंच पंचौ अधिकारिय ॥

चावहिसि बहुआन । दिष्टि नवग्रह बल टारिय ॥

प्रज मिलिय जानि बढयो अनेव । चंद्र छंद चातिग रटहि ॥

प्रथिराज सु बर दुजजन मनहाकाल ब्याल कारन ठटहि ॥ छं० १५२ ॥

इति श्री कविचंद्र चिरचिते प्रथिराज रासके भोला भीम विजय
सोमेश बंधनो नाम उक्त चातिसर्गो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ३६ ॥ ●

अथ पञ्जून छोंगा नाम प्रस्ताव लिष्यते* ।

(चालीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना ।
इहा - † मुनि कगद प्रथिराज जब । बध्यो भीम सोमेस ॥
आतुर परि आयो जहां । दिल्ली देस नरेस ॥ छ० १ ॥
पञ्जून राय कछबाहे की पट्टन के संग्राम में बीरता वर्णन ।

इहा - किति कला कूरंभ बल । कहत चंद बरदाय ॥
ज्यों पट्टन संग्राम किय । जाइ सु भोग राइ ॥ छ० २ ॥
सुनी राज प्रथिराज ने । झाला रानिंग सूय ॥
बिरद बुलावै महबली । छोंगा सज्यो सभूय ॥ छ० ३ ॥
पृथ्वीराज का पञ्जून राय के सिर पर छोंगा ‡ बांध कर
लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना ।

कवित्त छोंगा ला सिर छत्र । सीस बंध्यो पञ्जून ॥
जस जयपत्त जु आनि । करं परसन मह ऊनं ॥
अप्रातें घर रैठि । रीस कीनी चालुकका ॥
हीय षट्शके साल । वान संभरि बाणुकका ॥
पुच्छैव पल्लु कुरंभ कां । अप्पानी दल ट रियो ॥
पञ्जून मलयसी बीर वर । करन कूच उच्चारयो ॥ छ० ४ ॥
भूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय
सोनिगर के किले में है और यहां पर पञ्जूनराय
का लड़ाई करना ।

दल भोला भीमंग । साल चित्तिउ सोनिगर ॥
किये कूच पर कूच । काल घेन्यो कि कूट गिर ॥

* मो० प्रति में "पञ्जून कछराहा छोंगा नाम प्रस्ताव ऐमा पाठ है ।
† यह दोहा मो० प्रति में नहीं है और पाठ से भी शेषक ज्ञात होता है ।
१. ९० छ० को०-दूनं ।

‡ एक प्रकार का राजसी या सरदारी बिन्ह जो पगड़ी के ऊपर बांधा जाता
है इसके कांभी भी कहते हैं । तबुबैच, कलगी तुरा इत्यादि का एक भेद है ।

चंद्र मंडि ओपम्म । सरद राका परिमानं ॥

उदधि मद्धि जिम अनिल । जलधि लंका गढ़ बानं ॥

दल इत राज पिथ्यह कहिय । हककायी पञ्जून बल ॥

तुम जाइ जुरो 'ऊपम करो । हनौ राज भीमंग बल ॥ छं० ५ ॥

ब्रूहा—सकल सूर कूरंभ बरे । सब लिझी अप 'जति ॥

समर धीर बीरत सबर । लज्जी परे न 'भति ॥ छं० ६ ॥

पञ्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन ।

पद्वरी—

चढ़यो बीर पञ्जून कूरंभ सध्यं । मनो कञ्छियं जोग जोगी समध्यं ॥

दुअं तोन बंधे दुअं लै कमानं । • मनो उत्तरा पध्य पारध्य जानं ॥ छं० ७ ॥

दुअं असं बंसं रचे रध्य जोरं । लगे पाइ छत्री उठी भोमि भोरं ॥

कियो पट्टनं कूच चालुकक थानं । अपं सध्य बीरं सु लीए जुवानं ॥ छं० ८ ॥

पुछै पंथ पंथी तनं सच्च जपै । सुनै दुष्ट बीरी तित तेज कपै ॥

इकं चित्त इष्टं 'निजा साइ मानें । इसे बीर कूरंभ रैवान जानें ॥ छं० ९ ॥

तहा घेरियं ग्राम चालुकक रायं । अपानक बीरं दरम्भार आयं ॥ छं० १० ॥

ब्रूहा—★घौकी भीमानी चढ़े । झाला रानिग सध्य ॥

छोंगा बीर महाबली । बर बीरा रस कध्य ॥ छं० ११ ॥

पञ्जूनराय का घेरा डालना । मलय सिंह का मुकाबला करना ।

कवित्त—चंपि काल पञ्जून । बीरा भोरा भीमदे ॥

कै आयी उप्परै । फुट्टि पायाल सबदे ॥

सकल सेन चमक्यौ । बीर भोरा उठि जग्यौ ॥

मलैसीह मुखकाल । हाल सम 'व्याल सु 'भग्यौ ॥

'बककार बीर छोंगा गह्यौ । सिर मंडन लिय ह्य्य घरि ॥

आए सु सीस पञ्जून करि । समर बाल बीरं सुबरि ॥ छं० १२ ॥

भूपञ्जूनराय का चाबुक भूल जाना और फिर सात कोस से

लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले आना ।

ब्रूहा—लै छोंगा बर 'बीर बलि । चावक भूत्यौ ह्य्य ॥

सात कोस ले बाहुन्यौ । बर बीरा रस कध्य ॥ छं० १३ ॥

१. ए० छं० को०—ऊपर ।

२. ए० छं० को०—जति ।

३. ए० छं० को०—भति ।

★ को०—मनो उत्तर पारध्य जानं ।

४. ए० छं० को०—विन ।

★ ए० छं० को०—'विहारी विमान विहारी' । ५. ए० छं० को०—व्यालह ।

६. ए० छं० को०—भग्यौ ।

७. ए०—बककार ।

८. ए०—भति ।

पट्टन हट्टन मझ ते । लै आयी फिरि घीर ॥

ता पाछे बाहर चढ़यो । दल चालुक्की बीर ॥ छं० १४ ॥

बालुक सेना का पीछा करना और पञ्जन राय का उसे परास्त करना ।
 भुजंगी — चढ़े पच्छ चालुक सो सज्जि सेन । हकारे नरिंद सु कूरंभ तेन ॥
 सुने सह क्रमं फिरे तथ्य बीरं । छुटै तीर तीरं मनो मिधु नीरं ॥ छं० १५ ॥
 बजै चाइ अर्घ्याइ गज्जै हवाई । बजै आवघं मझ आवढ झाई ॥
 मिले बीर बीरं स्वयं सूर भारे । परे रंग जंगं मनो मत्तवारे ॥ छं० १६ ॥
 झरै सार सारं बिनंगीस उठु । मनो तिगनं भदवं रेनि वुठु ॥
 घनं रत्त घंटे उमा बीर रत्त । परै अठुदह बीर कूरंभ पत्तं ॥ छं० १७ ॥
 परे सहस चालुक वृवान बीरं । तहां इतनें भान अस्तंम नीरं ॥ छं० १८ ॥

छोंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय
 सिंह और पञ्जन राय की कीर्ति का स्थापित होना ।

हूहा मल्लेसीह पञ्जन रा । दस दिमि किनि अवाज ॥

दे छोंगा भोरा फिन्यो । गयो सुपट्टन राज ॥ छं० १९ ॥

पञ्जन राय का पृथ्वीराज को छोंगा नजर करना ।

गयो सुचालुक ग्रेह तजि । रही कने गिरि लाज ॥

छोंगा कूरंभ रावलै । कर दीनी प्रधिराज ॥ छं० २० ॥

पृथ्वीराज का पञ्जन राय को ही छोंगा दे देना

और एक घोड़ा और देना ।

राज सु छोंगा फेरि दिय । बर है बर आगेहि ॥

घटि चालुक * बदि कूरमा । अयुत पराक्रम रांह ॥ छं० २१ ॥

मल्लेसिह राणिग सुत । सुभर भोरा राज ॥

कर्म अचानक यो पन्थो । ज्यो तीतर पर बाज ॥ छं० २२ ॥

*पञ्जन राइ महाबली । मल्लेसिह घर पारि ॥

छोंगा लै पाछे फिन्यो । सुनि चालुक पुकार ॥ छं० २३ ॥

चन्द कवि की उक्ति से पञ्जन राय के वीरशिरोमणि होने की प्रशंसा ।

बहुत जुद्ध कीनी सुबर । सुभर तेज प्रधिराज ॥

भट्ट चंद कीरति तबै । कूरंभह सिरताज ॥ छं० २४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रधिराज रासके पञ्जन कछ बाहा

छोंगा नाम ज्योसोसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४० ॥ ●

१. ए० छं० को०—लज्ज ।

२ मो०—कर दानो ।

३ ए० छं० को०—प्रभु हृष्य । ४ मो०—बधि । ५. ए० छं० को०—तवी ।

* छं० २१ और २२ मो०—प्रति में नहीं है । इन छन्दों में पुनरुक्ति है इस से इनके क्षेत्रफल होने का भी संदेह हो सकता है ।

अथ पञ्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(एकतालीसवां समय ।)

जै चंद के उभाड़ने से बालुका राय तोलंकी और शहाबुद्दीन
की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना ।

इहा — 'बालुकका हिः कमध । और सु गोरी साहि ॥

साम भेद जैचंद किय । पति दोली सम ताहि ॥ छं० १ ॥

दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना ।

कवित्त—आइ खबरि चहुआन । 'सु दल बालुककराइ सजि ॥

आइम पंग नरेस । साह साहाब बैर कजि ॥

लष्य दोइ भर दोइ । पुरह षोषंद सुआइय ॥

दिषि है गै अनमत्त । इत दिल्ली दिसि घाइय ॥

प्रथिराज हथिर कारी कडिय । समह राम 'प्रोहित्त रडिय ॥

सुरतान समध बालुक कमध । 'कहैं कोन चम्पू चडिय ॥ छं० २ ॥

पृथ्वीराज का बिचर करना की पञ्जून राय से यह
कार्य्य होना संभूष है ।

चालुकका परि राइ । बीर बज्जे नीसानं ॥

सकल सूर सामंत । षग मगं किय पानं ॥

खबर सेन सुरतान । राज प्रथिराज विचारिय ॥

विन कूरंभ को दलै । नृपति इह तथ्य उच्चारिय ॥

जो त्रियन बस्य नन द्रव्य बसि । मरनसु तिन जिम तन मनै ॥

तिर धरै काम चहुआन की । वियौ काम चित्त न गनै ॥ छं० ३ ॥

पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को बुलाना ।

इहा — बोलि राज प्रथिराज तब । पान हृष्य विय साज ॥

कहौ जाइ कूरंभ 'कौ । इह किजजै हर्म काज ॥ छं० ४ ॥

पृथ्वीराज का सभा में बोड़ा रखना और कित्ती का बोड़ा न

उठाना, सबका पञ्जूनराय की प्रशंसा करना ।

कवित्त—सुनि सुबत्त कूरंभ । कोइ झिल्लै न पान बर ॥

बड़गुज्जर दाहिम्म । चूर चालुकक चंपि धर ॥

१. मो०—चालुकका ।

२. मो०—'सुबर चालुकका राह सजं ।

३. ए० छं० को—प्रोहि ।

४. मो०—कहौ काम चडै ।

५. ए० छं० को—बाज ।

६. ए० छं० को—धौ ।

परमरह कपधउज । बीर परिहारय भद्रिय ॥
सकल सूर वर नटे । काल चपे मति षट्टिय ॥
पञ्जूनराइ षग अगरी । करं नाम निरमउ सु धर ॥
इन सम न कोई रजपूत रन । डरहि काल दिषिय निजर ॥ छं० ५ ॥
पञ्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं
का ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना ।

ए करंमह बीर । घीर आवुन घनुदर ॥
* जो मह नह पूजन । जोग पल षंडन सबर ॥
इनह अप्प बल दीरि । जाइ असि असि अरि झारिय ॥
एकल्लै पञ्जन सिध । परि पिसुन पछारिय ॥
लै पान सीम करंभ धरि । सकल सूर सामन नदि ॥
बालुकराइ हिः दुमह । विषम काल व्यालह मु जुटि ॥ छं० ६ ॥
मुस्तान और कमधउज के दल की मर्ष और प्रफीम से उपमा
और पञ्जूनराय की गरुड़ और ऊँट से उपमा वर्णन ।

दूहा -- कालव्याल मुस्तान दल । कमध मु पपय कूट ॥
हरि बाइन पञ्जन दल । ते सजि धाए ऊँट ॥ छं० ७ ॥
पञ्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा में आनन्द ध्वनि होना ।
मन्त्री -- ली गी तान पञ्जन करभराइ । स्वय जानने मोइ कीनी मु भाइं ॥
मिठि अगि करंभ पोवित ज्ञान । गई टुडुड चहुआन मूरतान मान ॥ छं० ८ ॥
बत्रं दुदुभी देव देवं मु थानं । भरी मुप्य करंभ विन स भान ॥ छं० ९ ॥
पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को घोड़ा देना ।

दूहा -- लरन हृथ्य लिय तेग वर । बगमि राज नव वाज ॥
लिए करंभ कुल उज्रले । मीम नवाइ समाज ॥ छं० १० ॥
बदाई के लिये तय्यार होकर पञ्जूनराय का अपने कुटुम्ब
से मिलना और उसके पाँचों भाइयों का साथ होना ।

कविन -- षग बंधि करंभ । आइ पञ्जन अप्पन भर ॥
सुबर बीर बलिभद्र । तान पञ्जन सध्य वर ॥
कन्हू बीर बर बीर । मिघ पालहन्न सुधार ॥
मलयसिह सब हृथ्य । मंग लीने भर मार ॥
बित्त स्वामिध्रंम सो अरि भिरन । लरन मरन तकसीर नन ॥
सुनि राग बीर काइर धरकि । बज्रिग बीर नीसान घन ॥ छं० ११ ॥

१. ए० क० को०--दिषी ;

२. ए० क०--नवरि ।

* मो०--प्रति--दोहन पुञ्जै जोग पल षंडन बीर ।

३. ए० क० को०--पूट ।

४. क० को०--ववा ।

पञ्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन ।

दूहा—बज्रिग बीर नीसान घन । पावस सक्र समीर ॥
चक्रिग जोष पञ्जून भर । सज्जि हयगय बीर ॥ छं० १२ ॥

भुजंगी—

चढ़यी बीर बलिभद्र कूरंभ राय । कला पथ्य कोटं सुजोटं दिषायं ॥
छबी तेज मुष्णं सु सोभंत बीरं । मनो केवलं अंग बीरं तरीरं ॥ छं० १३ ॥
चढ़यी बीर संगं नरं सिग रायं । दिठी दिठु दिठ्ठी मनो बेद गायं ।
चढ़यो राइ पञ्जून छत्रं सुधारे । बदै जाहि स्वामी रबी रत्त भारे ॥ छं० १४ ॥
द्रुमं सीस फेरै पञ्जूनं सहेतं । मनो बाज राजं परं बंधि नेतं ॥
चढ़े सेत बंधी सयं सज्जि सारं । तिथं पंचमी पूर आदीत वारं ॥ छं० १५ ॥

पञ्जून राय के कूच की तिथि वर्णन ।

दूहा— तिथि पंचमि रवि बार बर । छंडि पंच भर आस ॥
चढ़े जोष है गै परिय । ^१मुगति सु लूटन रासि ॥ छं० १६ ॥

पञ्जून राय का कृत वीरताओं का वर्णन ।

साटक—^१धीरंजं घर घीर कूरम बली, पञ्जून रायं बरं ॥
जितेतं सुरतान मान सरसं, अगवृत्त बानं बिषं ॥
भूयो, बाल भुआल भारय कृतं, कृष्णों घा घट्टियं ॥
तं काजं बर बीर घीर घरयं, संसार मुषतं बरं ॥ छं० १७ ॥

पञ्जून राय की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

पदरी—चढ़ि चलयी सेन कूरंभ बीर । डपटीय जानि साइर गंभीर ॥
बंधिय सुतीन कूरंभ मंत । जाने कि जोग जोगाधि अंत ॥ छं० १८ ॥
तहां हुए सगुन ए सुध्र रूप । दाहारसिध रवि रथ्य जूप ॥
दाहिनें पूठ मृग मृगिय जाय । बामह सुबीय सारस सुभाय ॥ छं० १९ ॥
उत्तरे तार देवीति वार । इहकंत सद जुगिनिय भार ॥
मृगराज मिल्यो दंतह प्रमान । ^५बंदे सुराज पञ्जून जान ॥ छं० २० ॥

पञ्जून राय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुंचना ।

दूहा—सकल सूर कूरंभ बर । भान भयम मुष बीर ॥
तबै राइ चालुक बर । आइ ^५संपत्ती तीर ॥ छं० २१ ॥

१. मो०—परि ।

२. ए० इ० को०—मुकति ।

३. ए० इ० को०—धीरंजं ।

४. ए०—बडी, इ०—बंदी ।

५. ए० इ० को०—संपत्ती ।

कमधुञ्ज घोर यवन सेना से पञ्जून राय का साम्हना होना ।

आइ संपत्ते सूर भर । सुरताना कमधुञ्ज ॥

कूरंभह पञ्जून सम । चढे जोध गुर गज्ज ॥ छ० २२ ॥

बोनो प्रतिपक्षी सेनाघनों का घातक वर्णन ।

पट्टरी—दुभ दीन हिंदु ममुहु प्रमान । चालुक्क राइ अरि मलन भान ॥

चहुआन सूर रबि जेम बीर । पट्टन सु राइ अरि ग्रमन धीर ॥ छ० २३ ॥

कूरंम दान षग रूप दीन । अखान जान रज रूप कीन ॥ छ० २४ ॥

द्रुहा—करिण सेन ममुष मुवर । गरुड व्यूह क्रिय बीर ॥

लरन मरन भारथ्य क्रत । जज्जर करन सरीर ॥ छ० २५ ॥

१मिद्ध व्यूह कूरभ करि । नाग व्यूह सुरतान ॥

षा ततार पुरसान पति । मडि फीज मैदान ॥ छ० २६ ॥

पञ्जून सेना के व्यूहवध्य होने का स्पष्टीकरण ।

कवित्त—१पग जदव परिहार । पुच्छ पामार सुघारिय ॥

भट्टी सेन विषम्म । पिड पावं अधिकारिय ॥

जानु होइ पुंडीर । नष्य उर मंस अंस करि ॥

चंच अंष सुभ जीह । बीर कूरंभ १पयदरि ॥

१घोवा सुजोति गज गाह गहि । १लहि लोहानी १ठीर बर ॥

छत्रह १मुजीक पञ्जून सह । दोरि पन्थी बलिभद्र बर ॥ छ० २७ ॥

युद्ध की तिथि ।

घरिय सत्त दिन रह्यो । बार नोमीति मुक बर ॥

पंच बीस आवट्टि । १षट्टि लोथ सुबधि थर ॥

कूरंमह षग झारि । सार भारथ्य स किन्नो ॥

सार बज्ज घरियार । टोप टकार सु भिन्नो ॥

आचार चाह राजन बरे । मरे बीर रजपूत वर ॥

संग्राम सूर कूरंभ सम । नर न नाग दानभव १सुर ॥ छ० २४ ॥

श्लोक—मानवं दानवं नैव । देवानां कुरु पांडवो ॥

कूरम्म राइ समो बीरं । न भूतो न भविष्यते ॥ छ० २९ ॥

१. मो०—गहड़ ।

२. ए० क० को०—राइ धरि ।

५. ए० करि ।

७. मो०—मुनीक ।

८. मो०—मवर ।

२. मो०—पग ।

४. ए० क० को०—घोवह ।

६. मो०—मिडि ।

★ ए० क० को०—“लुथि पर लुथि बंधि थर” ।

पञ्जून राय की सेना का बड़ी बीरता से युद्ध करना ।

कवित्त—हाइ हाइ कहि घुष्ट । इष्ट बलिभद्र अंमरिय ॥
 बलिय तप्य कूरंम । सार साहित्य चुम्मरिय ॥
 यों पञ्जून दल मलयी । सोइ ओपम कवि भाइय ॥
 कमल पंति गजराज । सरित मङ्गलहु झुकि प्राहिय ॥
 धन घाइ अघाइ सुघाइ घट । करिय एम कूरंम घट ॥
 सुघाट आइ कुघाट किय । सुभट घाइ भारथ्य 'घट ॥ छं० ३० ॥

बूहा—सुभट घाइ भारथ्य भिरि । ते अंगन दिष्वाइ ॥
 रुधि सुक्कै कद्म हुए । हय तरंग सुभ्माइ ॥ छं० ३१ ॥
 इस युद्ध में पञ्जून राय के भाइयों का मारा जाना ।
 जुद्ध सुचालुक राइ तहैं । ध्यार बंधि परि वेत ॥
 पंच भ्रात कूरंम बर । उप्पारे सु अचेत ॥ छं० ३२ ॥

पञ्जून राय की जीत होना और क्षत्रु सेना का माल मत्ता लूटा जाना ।

कवित्त—उप्पारिग पञ्जून । बीर बलिभद्र उप्पारिग ॥
 उप्पारिग पाल्हन नरिदु । घाव 'सठु' तन धारिग ॥
 परि पंचाइन कन्ह । जैत जैतसिह जुवानं ॥
 हिंदु बीर दइमान । मेच्छ गडुन परिमानं ॥
 लठु दरेब्ब गज बाजि रथ । रिध राव उप्पारयो ॥
 जस जैत लियो कूरंम 'रन । जीवन अवनि सु धारयो ॥ छं० ३३ ॥
 पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा ।

बूहा—* आज भाग चहुआन घर । आज भाग हिंदवान ॥
 इन जीवत दिल्ली धरा । गंज न सककै आनि ॥ छं० ३४ ॥
 पञ्जून राय का भाइयों की क्रिया करना और
 २५ दिन गमी मना कर बान देना ।
 कोस घट चहुआन बर । संमुष गय बर बीर ॥
 उभै बीस अरु पंच दिन । न्हाइ दान दिय धीर ॥ छं० ३५ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासाके चालुक
 समागम पञ्जून विजय नाम इकतालीसवो
 प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४१ ॥

१. ए०-नट ।

२. ए० छं० को०-सडे ।

३. ए० छं० को०-नर ।

* उभय ३४ वी०-प्रथि में नहीं है ।

अथ चंद द्वारका समयौ लिष्यते ।

(बयालीसवां समय ।)

कविचंद का द्वारिका को जाना ।

दूहा— चलन चित्त चंदह कन्यो । चलि द्वारिका सु चित्त ॥

मंगि सीष प्रथिराज पहु । सजिय सकल अप सथ्य ॥ छं० १ ॥

कविचंद का यात्रा समय का साज सामन और

उसके साथियों का वर्णन ।

कवित्त— दोइ सहस है बर बिसाल । सत वरुन सथ्यह ॥

सत गयंद रथ रुढ । साज आसन प्रथि रज्जह ॥

पलक बेद जोजन प्रमान । थटे * संघल क्रत पाइय ॥

साज लष्य तन लष्य । सकल बल कोरि सजाइय ॥

घानुक्क धार सत अठु चलि । करन तिथ्य जात्रह चलिप ॥

सत सुभट दान दिय तुरिय गज । मनहु जमन सागर मिलिय ॥ छं० २ ॥

चंद का चित्तौर के पास पहुंचना ।

* गज घंटन त्रंबाल भेरि सहनाइय बज्जिय ॥

चलत आइ चित्रकोट । पुरन त्रियलोक मुरज्जिय ॥

कन्हु मान लेय न कविद । जोजन दुअ दिषिय ॥

शृंगारिय गढ़ हट्ट । मनो इंद्रासन पिषिय ॥

बजि त्रंब बंब बज्जन बहुल । मन उच्छाह भिष दान दिय ॥

गढ़ मद्धि घाम मनु राम पुर । कवि सु * तथ्य डेरा करिय ॥ छं० ३ ॥

चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन ।

दूहा— गिरवर शृंगर गहर बन । प्रबल पेपि जल ठोर ॥

चित्रगढ़ मोरी बसिय । दै गढ़ नाम चित्तौर ॥ छं० ४ ॥

१. मो०—चित्त ।

३. ए० क० को०—त्रिलोक ।

५. मो०—समयपह ।

७. मो०—बज ।

९. मो०—मनो इंद्र दान विसिषिय ।

१. ए० क० को०—सथ्य ।

† चंद ४ से लेकर चंद १५ पर्यंत मो०—प्रति में नहीं है और पाठ से भी.

वह चंद लेपक मालूम होता है ।

२. मो०—पै ।

४. ए० क० को०—बारुनह ।

* पाठ अधिक है ।

८. ए० क० को०—परषिय ।

चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा ।

कवित्त - चित्रकोट दिय नाम । बंधि चित्रगद सर बर ॥
 पंधि असंध निवास । सघन छाया तट तरवर ॥
 बुरज कोट कंगुरा । गोष जारी चित्रसारी ॥
 महलायत चहबचा । झिरन कारंज किनारी ॥
 पागार पोरि आगार करि । धान सदेवत पिष्ययो ॥
 छतीस बंस महिचंद कहि । मोरी नाम सुरष्ययो ॥ छं० ५ ॥
 उरु भोरी का गोमुख कुंड बनधाना ।

अरिल्ल गोमुख कुंड बंधि फुनि मोरिय । सुर पति विपन सोभ सब चोरिय ॥
 भार पठार उगी बन राइब । देषि कें रीझ रह्यो बरदाइय ॥ छं० ६ ॥

एक सिहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना ।

कोरि कडिठ पाषान महि । गिरि बंदर इक रिष्य ॥
 मुहु अगे सिघनि भषत । हनि बालक तिहि सिष्य ॥ छं० ७ ॥

सिहनी की पूर्व कथा ।

कवित्त - नगर अजोध्या नृपति । नाम कीरति घबल्लं ॥
 सर ऊसुरि तातट्ट । रमत सिक्कार सयल्लं ॥
 तानि वान कम्मान । हनिय हिरनी प्रभ बतिय ॥
 तरफंरत अवलोकि । श्रोन घन द्वार श्रवतिय ॥
 उतपन्न ग्यान वैराग लिय कुंवर स कोसल संजुगत ॥
 अइ सठ्ठि करे तीरथ अटन । चित्रकोट महि तप तपत ॥ छं० ८ ॥

पद्धरी - तप तपत आइ चित्रकोट मडि । सहचरिय जाइ इह करिय मुद्धि ॥
 सूनि कान बानि रानी प्रफुल्लि । उतरन महल्ल सोपानि भुल्लि ॥ छं० ९ ॥

अनुराग मुत्तपति को हरष्य । उठि चलिय मिलन मारग गवष्य ॥
 थकचूर भइय परि पहुमि आइ । तडिता कि तेज तारक दिषाइ ॥ छं० १० ॥

जल जलनि विष्व गिरि झंन पात । पाबहि न गति इह सति बात ॥
 जप तप्य तिष्य अस्नान धान । कोटिकक पठहु पंडित पुरान ॥ छं० ११ ॥

अंतह सुमति गति होइ सोइ । अहंकार उअर जिन करहु कोइ ॥ छं० १२ ॥
 कवित्त - बंधिनि होइ बिकराल । आइ गिरि कंदर प्यासिय ॥

प्रगटि पुष्प तामस्स । भजि अंग अंगल प्यासिय ।

दंत कति चमकंत । अरित कुंदन मय मेधं ॥

ईहा मोह करंत । जनम पछिली सपेधं ॥

असराल चष्य असू डरत । पंसूरहि तुष भंस गलि ॥

इक मास लगि अनवन्न करि । गय नंगन डके हुंस बलि ॥ छं० १३ ॥

दूहा—किसि घवल धीरज्ज धरि । श्रवन आइ उपकंठ ॥
 राम नाम सभलाइ सुर । कुंअर पाइ बैकुंठ ॥ छं० १४ ॥
 रघुवंसी राजिंद नें । मन हटविक तब्ब ॥
 प्रभवती हिरनी हनी । तिहि वदलो लिय अब्ब ॥ छं० १५ ॥
 कबिबंद का घाना सुन कर पूथाकुमारी का कबि के डेरे पर जाना ।
 कवित्त - कवि सु सध्य मति प्रबल । बोलि सहवरी मति बर ॥
 नव नव रम भोइन । अनंत इंद्रानि इंद्र घर ॥
 रूप माल सु विसाल । मेघ माला मुभ मंजरि ॥
 मदन बेलि मालति । विसाल मन अट्ट अनंबर ॥
 नरकंध रथ्य के आरुहिय । ठकि छबि मनों अंब्र जल ॥
 प्रति बलिय भट्ट रुट्टन दरिद । मोघ निरवि अनुराज थल ॥ छं० १६ ॥
 कितक छबि वःत्रंग । मद्धि माला मुनिय मनि ॥
 सीतारामी सहस । कनक थारी मन बीजनि ॥
 अगर पान अइसठु । रजक पालिका पठाइय ॥
 सुवन इक्क पुत्तरिय । कर सु सारंग 'मुह गाइय ॥
 मुक्कलिय प्रथा कवि थान कहूं । भरन भार अध्रन भरिय ॥
 प्रति प्रति मु दान मानह प्रबल । कवि सषियन आदर करिय ॥ छं० १७ ॥
 कवि का चित्तीर जाना ।

दूहा दिय बहोरि न्यप नगर को । प्रिय आसीस पढ़ाइ ॥
 प्रति सुनंत मति दति प्रबल । करिस 'कूप कळ नाइ ॥ छं० १८ ॥
 नील कंठ सिव दरस करि । मात भवानी भेति ॥
 फुनि नरिंद चित्रंग मिलि । चद दंद तन मेटि ॥ छं० १९ ॥
 कवि का किले में भोजन करने जाना । पूथा का उसे भोजन परोसना ।
 अरिल्ल --प्रतिहारन रावन पधराइय । बोलि मंत्र भोजन बुलवाइय ॥
 करन प्रथा जेवन परिमानं । उड़ि घुम्मर अम्मर सु प्रमानं ॥ छं० २० ॥
 'लोह कुंड रक्खे सुर सक्की । कुरछन झारि दियंत सु षिक्की ।
 मनो ओपमा में छबि रक्की । जेबे बरन अठारह जक्की ॥ छं० २१ ॥
 एकलिंग अबतार सु झारिय । नारि केल पुज्जे नर नारिय ॥
 कलिनि कलंक काल कटि झारिय । जेबे सब परिगह परिवारिय ॥ छं० २२ ॥
 केसर अगर धौरि सब किदिय । पान सु पारि कपूर प्रसिदिय ॥
 हृष्यी है मोती नग विदिय । दान मान रावर कर दिदिय ॥ छं० २३ ॥

१. ए०—दूहा ।
 २. मो०—कह्यौ ।

२. ए० इ० को—दूध, कूर ।
 ४. मो०—देख ले रंभी ।

कन्ह अमरसिंहादि सामंतों का पुषा कुमारी को उपहार देना ।
 कनक साज है तुरी गठाइय । कन्ह एक गज मुत्तिय गाहिय ॥
 अमरसिंघ गज मुत्ति सुभाइय । जो चित्रंग अत्य सम राइय ॥छं० २४॥
 मोरी रामप्रताप महाभर । सुष्पासन आरोहिय उप्पर ॥
 मोती जिरित मोल घन सज्जर । दीय सु दान मान अपरंपर ॥क्रं० २५॥
 बन्ध का बितोर से चलना

बूहा—चलिय चंद पट्टन १२ह । अहि सिर पर घरि पीर ॥
 पंथ एक पण्यह चलिय । त्रिग सागर दिशि नीर ॥ छं० २६ ॥

हारिकापुरी में पहुँच कर भट्टा भक्ति से दर्शन
 और यथाशक्ति दान करना ।

कवित्त—उत्तरि हृद्यिय बाजि । ऋपाइ प्रति मिले सु मंगन ॥
 दिद्विय देवल घज्ज । पाप परहरि अंग अंगन ॥
 गजत पिठु गोमतिय । भान तप तेज विराजिय ।
 सागर जल उच्छलै । पाप भंजन पाराजिय ॥
 रिनछोर राइ दरसन करिय । परिय मोह मानुष्य पर ॥
 मुरयान मान इतनी सुचित । देवलोक कैलास दर ॥ छं० २७ ॥

बूहा—हाटक मंडप छत्र लहि । मुत्तिय पतिन माल ॥
 मनो चंद बहु भान मझ । कल मय कट्टत काल ॥ छं० २८ ॥
 फिरि परदछ दरसन करिय । हुअ परतष्यि प्रमान ।
 तब अस्तुति सु प्रनाम करि । प्रभा विराजिय भान ॥ छं० २९ ॥

कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति ।

रसावला—

तुअं देह हट्टी, तुअं मान बट्टी । तुअं बीर दट्टी, तुअं धान बट्टी ॥ छं० ३० ॥
 तुअं लोक पालं, तुअं जालमालं । तुअं भाल जालं, तुअं त्रिगपालं ॥ छं० ३१ ॥
 तुअं देस दष्वी, तुअं भीर मष्वी । तुअं द्रोप रष्वी, तुअं सम सष्वी ॥ छं० ३२ ॥
 तुअं तीन रष्वी, तुअं ब्रह्म लष्वी । तुअं पंष रोही, तुअं गोप मोही ॥ छं० ३३ ॥
 तुअं सनु ब्रोही, तुअं सप्र सोही । तुअं सिद्धि वूही, तुअं रिद्धि सोही ॥ छं० ३४ ॥
 तुअं सर्व बंडं, तुअं तीन कुंडं । तुअं पित्त बंडं, तुअं बार मुंडं ॥ छं० ३५ ॥
 तुअं ग्यान गट्टं, तुअं रंभ बट्टं । कबीचंद पदुंडं, गयी दूर हट्टं ॥ छं० ३६ ॥
 बूहा—हरिहर बच सब वारि बर । पुर घरि सिर पर इब ॥

मनु गुर तब कर बार नभि । कलमलि हलि गोबिंद ॥ छं० ३७ ॥

* मो०—पाइ प्रति चले सु मंगल ।

१. ए०—बंदिब, पतिय ।

१. ए० क० को०—पंड ।

देवी की स्तुति ।

भुजगी— नमो तु नमो तुं नमो तु कुमारी । नमो तुं नमो तुज संसार सारी ॥
नमो तुं अभष्णी नमो बीज भष्णी । नमो रिष्य पूजत सज्जतं सष्णी ॥ छ० ३८ ॥
नमो तुं रटै राज राजं रजाई । नमो 'तुंज संसार तें सिद्ध पाई ॥

नमो तंत जाल विकालंत राई । नमो विश्वयान 'गिरजा गिराई ॥ छं ३९ ॥

★नमो सस्त्रिपाल अकाल अभष्णी । नमो काल जन्म न काल न सष्णी ॥

नमो एक भग्नी भरत्तार पचं । नमो कोरि कोर करत्तार मचं ॥ छ० ४० ॥

नमो सिद्ध तुं रिद्ध तुं दद्धि पानी । नमो काल तु भाल तु साल रानी ॥

नमो कित्ति तुं मंत्र तुं गीत गानी । नमो आदि तु अत तु जोग जानी ॥

॥ छ० ४१ ॥

नमो विश्व तु भिस्त तु भार भारी । नमो जोग तु जीव तु जुग चारी ॥

नमो भूमि तुं धूम तुं अब पानी । नमो तप्य तु ताष तु अट्ठरानी ॥ छं ४२ ॥

नमो बाल तुं वृद्ध तूं हाल चाली । नमो भान तु मान तु मुक्ति माली ॥

नमो व्याघ्र तुं सार तु वाग वहं । नमो भुड मुड तुही पारि मद् ॥ छं ४३ ॥

नमो पत्र तुं छत्र तु छित्ति घारी । नमो वृद्ध तु वृक्ष तु अध्र हारी ॥

नमो रूप तुं रग तु राग रत्ती । नमो भील तु भाव तु मील मती ॥

॥ छ० ४४ ॥

नमो भ्रत तुं वृत्त तु वारु बानी । नमो चद चडी सदा चारु मानी ॥ छं ४५ ॥

कवि का होम कर के ब्राह्मण भोजनादि कराना ।

ब्रूहा— करि असतुति ससतुति सुबर । होम हवन हरि नाम ।

सीवन तुला सु माज बर । करि पुभट्ट मुचि काम ॥ छ० ४६ ॥

हय हृषी सत दान दिय । रथ रथिय 'द्रव दिद्ध ॥

हाटक बीर 'वसुंधरा । कवि घर दीन सु निद्ध ॥ छ० ४७ ॥

हारिकापुरी में छाप लगवाने का महात्म्य ।

कबित्त— † जे द्वारामति जाइ । छाप भुज नाहि दिवार्वाहि ॥

ते दरवाह चदिठ । न्याय हय पिठ्ठ दगार्वाहि ॥

१. ए० कृ० को०—तूप, तुझा, तुझे । २. ए० कृ० को०— गिरज्जा ।

★ मो०—नमो सस्त्रि पाल अकालंत राई । नमो काल जमल काल नसाई ॥

३. ए० कृ० को०—रंगी ।

४. ए० कृ० को०—संगी ।

५. ए० कृ० को०—धर ।

६. ए० कृ० को०—अनत अनि ।

† छन्द ४८ वीर ४९ दोनो मो०—प्रति मे नहीं है तथा शेषक जान पड़ते हैं ०

हरि चरन करि सेव । रहि न उम्भै अुरि करि वर ॥
 ते बागुरि अवतरे । अधोमुख 'मूलत तर वर ।
 दीनी न जिनहि परदखिना । दंडवृत्त करि सुद्ध उर ॥
 * कविचंद कहत ते बूषभ होइ । अरहुट जु 'पेरिरंत नर ॥ छं० ४६ ॥
 भद्र भेषनह हुए । जाइ गोमति न न्हावै ।
 तजं न ध्रम सेवरा । होइ करि केस लूचावै ॥
 मुख पावन हन करै । वस्त्र धोवै न विवेकं ॥
 आसू अंध परंत । करत उपवास अनेकं ॥
 दरसन देव मानै नहीं । गंगा गया न श्राद्ध क्रम ॥
 कविचंद कहत इन कहा गति । किहि मारग लगै सु ध्रम ॥ छं० ४९ ॥
 द्वारिकापुरी से लौट कर चन्ह का भीमबेव की राजधानी
 पट्टनपुर में आना ।

बंदि देव द्वारिका । करिय अति दान अचगल ॥
 पट्टन पति भीमंग । मनो चंदन मिलि अगगर ॥
 वास भट्ट गरलंत । लपटि लग्गा मन 'डाहर ॥
 तिन सेवर बदि बह । चंद मावस उग्गा बर ॥
 तिन नगर पट्टन्यौ चंद कवि । मनो कैलास समाष लहि ॥
 उपकंठ महल सागर प्रबल । सषन साह 'चाहन चलहि ॥ छं० ५० ॥
 - पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन ।

सहर दिषि अंधियन । मनहु बहर वाहनु दुति ॥
 इक चलंत आवंत । इक ठलवंत नवनि भति ॥
 मन दंतन दंतियन । इला उप्पर इल भारं ॥
 बिप भारय परि दंति । किए एकठ व्यापारं ॥
 रजकंब लष दस बीस बहु । दोइ गंजन बाव्ह पन्यौ ॥
 अनेक चीर सूपइ फिरंग । मनो मेर कंठी भन्यौ ॥ छं० ५१ ॥
 षलक बिबिध धन भार । रतन मुलिय द्विग रंजत ॥
 गज भरि लिउत्रे कोरि । दान चुकत मति मंजत ॥

१. ए०-भूमत, को०-मूलत ।

२. ए० छं० को०-फिरत ।

३. ए० छं० को०-बाहर ।

* "कविचन्द कहत" ऐसा पाठ नहीं भी नहीं पाया क्या है कथाक्रम, काव्य, भाषा आदि ४८ और ४९ छन्दों की बहुत कुछ भिन्न है मत एक इन दोनों छन्दों के शेषक होने का सम्बन्ध है ।

४. ए० छं० को०-बाहन ।

मनों गुल फूलिय घरनि । किञ्च नवप्रह ताराइन ॥
 लेय न इव हिम दान । रज्ज साला हिम भाइन ॥
 भाषन सु भाष कदुई मुषह । सिर स्वानह तर घरु घवल ॥
 प्रतिबिंब बसहु द्रय मानि मन । कबि मोहन दिष्णीय बल ॥छं० ५२॥
 पट्टनपुर के आनन्दमय नगर श्रीर वहाँ की सुन्दरी
 स्त्रियों की शोभा वर्णन ।

अर्द्धनराच - बज्रान बज्जयं घनं । सुरा सुरं अनंगनं ॥
 सदान सह सागरं । समुद्रयं पटा झरं ॥ छं० ५३ ॥
 'अग्यंद कै गजं वरं । ॥
 हलं मलं हयं गयं । नरा नरं नरिदयं ॥ छं० ५४ ॥
 गिरं वरं 'सुरा घरं । सबद्ध सागरं पुरं ॥
 अनेक रिद्धि मानयं । तवं निघं सु जानयं ॥ छं० ५५ ॥
 भरे जु कुंभयं घनं । इला मृ पानि गंगनं ॥
 असा अनेक कुडनं । ॥ छं० ५६ ॥
 मरोवरं समानयं । परीम रंभ जानयं ॥
 बतकरु सार संमयं । अनेक हस क्रमयं ॥ छं० ५७ ॥
 भरे सु नीर कुंभयं । ॥
 अरुद्ध काम रथयं । सु उत्तरी समध्यय ॥ छं० ५८ ॥
 राज्य उपवन में चंद्र का डेरा दिया जाना ।

ब्रह्मा - दिय डेरा कुंदन मुडिग । जे लीने मुरतान ॥
 तर ते वर तंबू तनिय । मनहु कलस कै भान ॥ छं० ५९ ॥
 गज बंधे गज साल मे । हय बंधे हयसाल ॥
 अद्ध कोस विस्तार अति । भई भीर भर चाल ॥ छं० ६० ॥
 किनक जान भोरा कह्यो । दिल्लीपति दानेस ॥
 अंबाई वर दान इन । नाम चंद्र ब्रह्मा बेम ॥ छं० ६१ ॥
 भीमदेव का कविचंद्र के पास अपने भाट जगदेव को भोजना ।
 कविस्त - कहै भीम जगदेव । जाहु तुम चंद्र 'समष्यन ॥
 नग मनि मुत्तिय माल । परसपर बाद सगष्यन ॥
 दियो सु हृषिय एक । मत्त हय इक ऐराकिय ॥
 छं सु जाहु तुम लच्छि । मट्ट पुच्छो 'मनुहाकिय ॥
 बल दुष्ट मट्ट आयो वरे । करि मुझ्झो मत्रह सुपरि ॥
 आरंभ बंध सुनियं बहुत । कर पिछानि मन वेद करि ॥छं० ६२

१. ६० छं० को०-मनचं वसुधं वरं ।

२. मो०-सुधा ।

३. मो०-समष्यन ।

४. मो०-मनुहारिय ।

जगदेव का कविचंद से मिलना ।

पूहा चर लगा दिसि कवि बरा । आयी भोरा भट्ट ॥
करिय अनूपम रू दुरि । बेस अचंभम नट्ट ॥ छ० ६३ ॥
दीबी जाल कुदाल डिग । अंकुस पैरी हृष्य ॥
पूछे भोरा भट्ट इह । किन समान इह कथ्य ॥ छ० ६४ ॥
जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल
बैभव की प्रशंसा करना ।

कवित्त—सोमेसर किन बधिय । बंद जानी वह गतिय ॥
आबू गढ़ किन लीन । भीम चालुक जुध मत्तिय ॥
इह दरिया की राव । सिद्ध पट्टनवै नदन ॥
इह सु जुद्ध तें बड़ी । गाम घामह गति गंमन ॥
कवि जुगति जानि अधिकी कहों । बुझी नाहिन मरम गति ॥
इह पंच दीह में जानिहो । इह तुम इह हम जुद्ध मति ॥ छ० ६५ ॥
पूहा—मिलिय परसपर रसन रहि । मिलि नाहर इक ठौर ॥

बत्त घत्त भर मन्त्र मिलि । सङ्ग अल्पिय द्रव कोर ॥ छ० ६६ ॥
साज बाज मब फेरि दिय । प्रथ किय कित्त अपार ॥
जगदेव भोरा भनिय । काह सु कवित्त उचार ॥ छ० ६७ ॥
कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना ।

सोमेसर किन बधिय । सार संमुह किन सज्जिय ॥
कन्ह पीर क्यों सहिय । किद्ध किन आबू कज्जिय ॥
इह गुज्जरी नरेस । वह मु दिल्ली विरश मै ।
कृष पीर आदरं । घाम उदरे वृत्त घामै ॥
वागुरिन वृत्त अवतार गनि । भिरि भुअंग भोरा सुबर ॥
अवतार लियो कलि उपरौ । कलि प्रगटिय मनु संहम कर ॥ छ० ६८ ॥
पुहमि राइ हस्तिनी । ध्यार हंडी रंधानिय ॥
इक गज्जनी सहाब । सुइ सू पी तुर तानिय ॥
इक राइ परमार । सधर सिर वानग जित्यो ॥
करन मंद चालुकक । दई तिहुवार विधुतो ॥
मेल्ली जु तीन तिहु राइ घर । सु इह बत्त जुग सब करिय ॥
इम चन्द कहै जगदेव सुनि । एक राइ तुम उदरिय ॥ छ० ६९ ॥

१. ए छ० को०—मन भट्ट, भट्ट ।

२. मो०—“सङ्ग अल्पिय द्रव कोर”

३. को०—कवि ।

४. ए० छ० को०—रंधानिय ।

५. ए० छ० को०—गुरतानिय ।

बूहा—दस लष्वन भष्वन करै । प्रथु सामत कुमार ।
 भोरा उठि गोरा गयन । तब सिर छत्र उभार ॥ छं० ७० ॥
 चढ़ि भोरा तुम उप्परें । दरियापति दस लष्व ॥
 'वग्ग साहि भंजें सुभर । सित्त सूर पति भष्व ॥ छं० ७१ ॥
 जगदेव का कहना कि अचछा तो तुम अपने पृथ्वीराज
 को लिवा लागो ।

कवित्त—दइय मीष जगदेव । जाहु तुम लै आओ प्रभु ॥
 जदिन सूर सामंत । तदिन पिण्ठी सुरत्ति सुभ ॥
 नाम करिग तुम मुधिर । पाव चंचल होइ जैंहैं ॥
 मेछ मिलै पट षंड । परम उतमंग जुध जुरहै ।
 रन बुध संपूरन भगिहै । जब महिमानी हम करै ।
 जगदेव भट्ट मंची चवै । चंद भट्ट इम उचचरै ॥ छं० ७२ ॥
 भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना ।

बूहा—आइ सु भोर चंद यह । हय गय नर भर भार ॥
 सध्य सपत्नी तध्य सब । बज्जा बज्जिय मार ॥ छं० ७३ ॥
 देषिय डेरा भीम नृप । उचचै यह आवास ॥
 गौष पट्टिका बनि गहअ । देषिय बादर राम ॥ छं० ७४ ॥
 कविचन्द का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना ।

आदर करि आसीम शिय । भुअ भोरा भीमग ॥
 सिद्ध दिद्ध जै सिध तुअ । तिन पहु पुज्जि पवग ॥ छं० ७५ ॥
 कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना ।
 पद्मरी—जिन सिद्ध दिद्ध लिद्धी विषंड । अन्नै क दीप वाहन उतंड ॥
 जिन घर मनुष्य पहिरे न चीर । कलि कट रूप देषन बीर ॥ छं० ७६ ॥
 गिर घरै कंघ उप्पारि नंष । पहिरे सु एक ओट सुपष ॥
 प्रति तिरें मरुछ सागर पयाल । बहु लिए रतन अन्नै क माल ॥ छं० ७७ ॥
 तिन जीति लिए बहु रिद्धि देम । सब दीप मझ्झ गुज्जर नरेम ॥
 मझि दीप रोम राहब कुसाब । संजाल दीप प्रति काल आव ॥ छं० ७८ ॥
 गिरवान दीप कंचन गुहरीर । तिन झुझ्झ दझ्झ आसिष्व बीर ॥
 हय मुख्झ ग्राह चर अब एक । तिन जीत लिए जल जानि देरु ॥ छं० ७९ ॥

१. ए० क०—अरव ।

३. को०—राब० ए०—रान ।

५. ए० क० को—देक ।

२. ए० क० को०—उतकंड ।

४. ए० क० को०—जिन ।

बाहन अरोहि लीने असंख । प्रति पाम पुरातन लख्य पंख ॥
अवतार सेस लीनी अबन्नि । इन भंति चंद्र कवि करि तबन्नि ॥ छं० ८० ॥

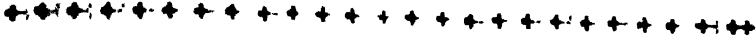
कविचन्द्र और अमर सिंह सेवरा का परस्पर बाध होना और
कविचन्द्र का जीतना ।

कवित्त—तब पुष्पिष्य भीमंग । तुम बरदान सु दिद्विय ॥
बाद 'बहि देवंग । सुपन पिष्पिय मन सिद्विय ॥
चंद्र देव किय सेव । तिन सु अमरा बुलाइय ॥
धूल रथ आरूढ़ । चंद्र असमान चलाइय ॥
तरवार सुपत्त बंठी तिनह । फिरि न वाद कीनी बलिय ॥
नट्टी जु सधी उपजी अनल । सुरस बंचि नंधी कलिय ॥ छं० ८१ ॥
अरिल्ल—जीता वे जीता चंदानं । परि पिष्पिय रषिय रंभानं ॥
मुष बुल्लं जै जै बहुभानं । नाटिक करि नचै निरवानं ॥ छं० ८२ ॥
हल हलंत तंबू हल हिलियं । बंदि भ्रत है गै पति चलियं ॥
चंद्र मंत्र पट्टन चल चलियं । मनो अंब ताराइन तुलिय ॥ छं० ८३ ॥
भीमसेव का अपने महल को लौट जाना ।

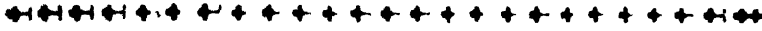
बूहा—आरोहिय असु उप्परह । उड़ी रेन पुर वेह ॥
भोरा चढ़ि सोरा भयो । गयी अप्पने ग्रेह ॥ छं० ८४ ॥
कविचन्द्र का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर विल्ली को
प्रस्थान करना ।

प्रथु कागद चंद्रह पदिय । आयी धरि गजनेस ॥
कूच कूच मग चंद्र धरि । पबुंथी घर दानेस ॥ छं० ८५ ॥

इति श्री कविचन्द्र चिरचिते प्रथिराज रासके चंद्र
द्वारिकागमन देव मिलन परस्पर बाधजुरन
नाम बयालीसवी प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४२ ॥



परिशिष्ट १



हिन्दी का आदि कवि

(बाबू श्याममुन्दरदाम बी० ए० लिखित)

आज कल प्रायः सभी प्राचीन विषयों के अनुसंधान की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हो रहा है और प्रायः सभी पढ़े लिखे लोग इन विषयों में अपना अनुराग प्रगट करते हैं। इसलिये ऐसे अवसर पर हिन्दी भाषा का, जो इस समय उन्नति के बिन्दु दिखा रही और अपनी ओर लोगों को आकर्षित कर रही है, कुछ तरशानुसंधान करना कदाचिन् अनुपयुक्त न हो।

यह शान सर्वप्रथम है कि ईस्वी सन् के २५० वर्ष पहिले भारतवर्ष के उत्तर में एक भाषा बोली जाती थी जिसकी उत्पत्ति प्राचीन काल की वैदिक संस्कृत से हुई और जो समय पाकृत नित्य प्रति के व्यवहार की साधारण भाषा हो गई। इस भाषा का नाम प्राकृत था। इसके साथ ही साथ एक दूसरी परिष्कृत और संस्कारयुक्त भाषा का पढ़े लिखे लोगों में प्रचार था। यह संस्कृत नाम से प्रसिद्ध थी और अब तक उसी नाम से प्रसिद्ध है।

इस प्राकृत भाषा में ही राजा अशोक के आज्ञा पत्र जो अबलों चट्टानों पर खुदे हुये पाए जाते हैं लिखे हुए हैं। उनके देखने और अध्ययन करने से यह स्पष्ट विदित होना है कि उस समय प्राकृत भाषा दो मुख्य भागों में विभक्त थी—एक पश्चिमी और दूसरी पूर्वी। पश्चिमी प्राकृत का दूसरा नाम सौरसेनी था। इस से गुर्जरी, अवन्ती, सौरसेनी और महाराष्ट्री इन भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस सौरसेनी से ही हमारी हिन्दी भाषा ने जन्म ग्रहण किया पर यह जन्म किम वर्ष में हुआ इसका निर्णय करना बड़ा कठिन है। शिवसिंह सरोज के अनुसार तो हिन्दी का आदि कवि पुष्य है पर न तो उसके क्रिमी ग्रन्थ का और न उसकी भाषा का ही कहीं कुछ पता लगना है। दूसरा ग्रन्थ खुमान रासा है जो सन् ८३० में लिखा गया था पर इस ग्रन्थ की जो प्रतियाँ अब विद्यमान हैं उनमें महाराणा प्रताप सिंह का भी वृत्तान्त सम्मिलित है जिससे यह मानना पड़ता है कि इसकी भाषा, जैसा कि अब यह वर्तमान है नीची क्षत्राब्दी की नहीं मानी जा सकती। तीसरा प्रसिद्ध कवि जिसके विषय में हमें कुछ वास्तविक वृत्तान्त विदित है चन्द बरदाई है। इसने एक ऐसी भाषा में ग्रन्थ लिखा है जो प्राकृत के अन्तिम रूप और हिन्दी के आदि रूप से बहुत कुछ मिलती है। इसके यह सिद्ध होता है कि उस समय भाषा का रूपान्तर हो

रहा था। इसके अतिरिक्त प्राकृत का अन्तिम ब्याकरण हेमचन्द्र भी ११५० के लगभग वर्तमान था। इसलिये जहाँ तक अभी पता चला है चन्द्र को ही हिन्दी का आदि कवि मानना पड़ता है और हिन्दी भाषा की उत्पत्ति का काल ११ वीं शताब्दी नियत करना पड़ता है। यदि अनुसंधान करने पर और ग्रन्थों का पता लग गया तो इस मत को छोड़ना पड़ेगा परन्तु जब तक यह न हो, इसी सिद्धान्त को स्थिर मानना चाहिए—

अस्तु चन्द्र वरदाई का नाम हिन्दी और ऐतिहासिक समाज में प्रसिद्ध है— यह लाहौर का रहने वाला था और अन्तिम हिन्दूपति पृथ्वीराज चौहान का राज्य कवि और प्रधान मन्त्री था। ऐसा कहा जाता है कि जिस दिन पृथ्वीराज का जन्म हुआ उसी दिन चन्द्र भी जनमा और दोनों एक साथ ही परलोक को भी सिधारे।

पृथ्वीराज का नाम भारत वर्ष के इतिहास में सदा स्मरणीय बना रहेगा। हिन्दू राज्य का अन्त इसी के साथ हुआ। आपस की कलह और परस्पर के बैर विरोध ने भारतवर्ष का नाश किया। पृथ्वीराज सोमेश्वर राज का पुत्र था—सोमेश्वर राज का विवाह दिल्ली के राजा अनंगपाल की कन्या से हुआ। अनंगपाल को कोई पुत्र न होने के कारण उसने अपने नाती पृथ्वीराज को गोद लिया। इससे अजमेर और दिल्ली का राज्य एक हो गया। यह बात बलोच के राजा जयचन्द्र को न भाई क्योंकि वह कहता था कि दिल्ली के सिंहासन पर मुझे बैठना चाहिये न कि पृथ्वीराज को। निदान इसी डाह और ईर्ष्या में पड़े हुए जयचन्द्र ने राजसूय यज्ञ किया और भिन्न-भिन्न स्थानों के राजाओं को यज्ञ का सब कार्य करने के लिये नेवता भेजा। पृथ्वीराज भी निमन्त्रित हुये पर उन्होंने जयचन्द्र के घर आकर दासकृत्य करना स्वीकार नहीं किया। जयचन्द्र ने अपनी कन्या का स्वयंवर भी इन दिनों में रख दिया कि जिसमें उसके पाणिग्रहण की आशा से अनेक राजे आवें। पृथ्वीराज से और जयचन्द्र की इस कन्या से आन्तरिक प्रेम था पर इन सब बातों के होते भी पृथ्वीराज उस यज्ञ में न गया। हाँ वह छिपा हुआ बलोच पहुँच गया कि जिसमें समय पर अपना काम करके आता देने। जयचन्द्र ने जब यह देखा कि रत्न राजे तो आये पर पृथ्वीराज नहीं आया तो उसे बड़ा क्रोध आया और उसने पृथ्वीराज की एक स्वर्णमूर्ति बनवा कर द्वार पर रखवा दी। ऐसा करने से उसका आशय यह प्रकट करने का था कि यद्यपि पृथ्वीराज नहीं आया पर उसकी प्रतिष्ठा ऐसी है कि वह आकर इस यज्ञ के समय द्वारपाल का काम करता। निदान जब स्वयंवर का समय आया तो जयचन्द्र की कन्या जयमाल लेकर निकली। सब राजाओं को देखते-देखते उसने अन्त में आकर पृथ्वीराज की स्वर्ण प्रतिमा के चले में माला डाल दी और इस प्रकार अपने माँड़ तथा गूढ़ प्रेम का पूर्ण परिचय दिया। पृथ्वीराज तो बलोच में पहुँचे से ही परिचित था। षट् अक्षर पाकर उसी समय वहाँ का

पहुँचा और घोड़े पर अपनी प्राणप्यारी को बैठा दिल्ली की ओर भाग चला। जयचन्द ने बहुत कुछ उद्योग किया, येना भी पीछे दौड़ाई पर पृथ्वीराज किसी के हाथ न आया। यह अज्ञानिष्ठा जयचन्द न सह सका पर अकेला कुछ कर भी नहीं सकता था इसलिए उमने अकानिष्ठा के अधिराजि शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी को कहता था कि यह समय है कि तुम दिल्ली पर आक्रमण करो मैं तुम्हारी महायत्ना करूँगा। इन यवनों को अपने मनोरथ की सिद्धि के लिये बहाना ढूँढ निकालना कोई बड़ी बात है ही नहीं। शहाबुद्दीन एक नवयौवना सुन्दरी पर आसक्त था पर वह उमने नहीं चाहती थी। शहाबुद्दीन के उस और उसके प्रेमी को बहुत दिक् करने पर वे दोनों भाग कर पृथ्वीराज के पास चले आये और उमसे शरण माँगी। उस उम समय तक हिन्दुओं में इनकी वीरता और इनका आनिध्य-धर्म वर्तमान था कि शरणगत के साथ कभी विश्वासघात न करके सदा उनकी रक्षा करते थे। अब शहाबुद्दीन को यह प्रकट हुआ तो उमने पृथ्वीराज को कहला भेजा कि वह उम स्त्री और उसके प्रेमी को अपने देश में निकाल दे। पृथ्वीराज ने यह उत्तर भेजा कि शरणगत की रक्षा करना मेरा धर्म है, उन्हें निकालना तो दूर रहा मैं सदा उनकी रक्षा करूँगा—इस अब क्या था शहाबुद्दीन दिल्ली पर चढ़ दौड़ा। कई युद्ध हुए जिनका वर्णन पढ़ कर हम समय भी हिन्दू-हृदय रोमांचित और वीररस पूर्ण हो जाता है। निदान अन्तिम युद्ध में पृथ्वीराज पकड़े गए और गोर लेजाकर वहाँ मारे गए। साथ ही चन्द बरबाई भी इस संसार को छोड़ परलोक में भी अपने स्वामी का साथ देने गया।

इन्हीं कथित ऐतिहासिक घटनाओं की चन्द ने अगले पृथ्वीराज रासो नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में वर्णन किया है—हिन्दी भाषा में यह ग्रन्थ अपनी समता नहीं रखता पर जब हम अभूय रत्न पर भी लोग बिना समझे बूते अथवा ईर्ष्या या द्वेष से आक्षेप करने बैठते हैं तो हृदय को दुःख होता है। अभी नागरीप्रचारिणी सभा के अधिवेशन में जोधपुर के मुंशी देवीप्रसाद का एक लेख पढ़ा गया था जिसमें उन्होने पृथ्वीराज रासो का खण्डन किया था। मुझे इस बात के लिखते बड़ा दुःख है कि मैं एक बात में भी मुंशी देवीप्रसाद से सहमत नहीं हो सकता। सबसे पहिले इस रासो का खण्डन उदयपुर के कविराजा श्यामलदास जी ने किया था, उनके पीछे तो हिन्दू भेड़ियाखतान की उक्ति के अनुसार सब लोग वही राग अपनाये लगे। किसी ने यह न सोचा कि बास्तव में क्या बात है उसका पता लगावें। अस्तु, कविराजा श्यामलदास जी का कथन था कि रासो में जिनने संवत् दिये हैं सब झूठे हैं। इसी बात को मुंशी देवी प्रसाद भी कहते हैं। आज इस लेख द्वारा हम यह दिखाया चाहते हैं कि पृथ्वीराज रासो के संवत् झूठे नहीं हैं पर सब ठीक हैं—यह लोगों का अभिप्राय है कि उनकी ऐसी समझते हैं।

पृथ्वीराज का राजत्वकाल तीन मुख्य घटनाओं के लिये प्रसिद्ध है (१) पृथ्वी-राज और जयचन्द का युद्ध (२) कालिंजर के परमारदिवेव का पराजय (३) और शहाबुद्दीन और पृथ्वीराज का युद्ध जिसमें पृथ्वीराज बन्दी बने और अन्त में मारे गये । इस स्थान पर यह उचित होगा कि पृथ्वीराज, जयचन्द, परमारदिवेव और शहाबुद्दीन का समय ठीक-ठीक जान लिया जाय और इस बात का निर्णय दान पत्रों और शिलालेखों से हो तो अति ही उत्तम है क्योंकि इससे बड़ कर इसका कोई विश्वासदायक मार्ग इस बात के जानने का नहीं है ।

(१) अब तक ऐसे चार दानपत्रों और शिलालेखों का पता लगता है जिन पर पृथ्वीराज का नाम पाया जाता है । इनका समय विक्रम संवत् १२२४ और १२४४ के बीच में है ।

(२) जयचन्द के सम्बन्ध के १२ दान पत्रों का पता लगता है इनमें दो पर जो विक्रम संवत् १२२४ और १२२५ के हैं इसे युवराज करके लिखा है । शेष १० पर महाराजाधिराज जयचन्द यह नाम लिखा है । इनका समय विक्रम संवत् १२२६ से १२४३ के बीच में है ।

(३) कालिंजर के राजा परमारदिवेव के जिनको पृथ्वीराज ने पराजित किया था, ६ दानपत्र और शिलालेख वर्तमान हैं, जिनका समय विक्रम संवत् १२२३ से १२५८ तक है । इनमें से एक पर जो विक्रम संवत् १२३९ का खुदा हुआ है पृथ्वीराज और परमारदिवेव के युद्ध का वर्णन है ।

(४) शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी का समय फारसी के इतिहासों से मिथ है और उसके विषय में किसी का मतभेद नहीं है । मेजर रेवर्टी "तपकाते नासरी" के अनुवाद के पृष्ठ ४५६ में लिखते हैं कि "५८७ हिजरी (ईस्वी ११९०) में उन सब ग्रन्थकारों के अनुसार जिनसे मैं उद्धृत कर रहा हूँ तथा अन्य अनेक ग्रंथकारों के अनुसार जिनमें इस ग्रंथ का कर्ता भी सम्मिलित है, राय पिथोरा के साथ (शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी का) पहिला युद्ध और उसका दूसरा युद्ध जिसमें राय पिथोरा पराजित हुआ और (मुसलमान लेखकों के अनुसार) मारा गया निःसन्देह हिजरी सन् ५८८ (ईस्वी ११९१ विक्रम १२४८) में हुआ ।

ऊपर जिन सन् संवत्तों का वर्णन किया जा चुका है के पृथ्वीराज, जयचन्द और परमारदिवेव के दानपत्रों और शिलालेखों से लिए गए हैं और एक दूसरे को खुद और प्रामाणिक सिद्ध करते हैं । निदान इन सबसे अब यह सिद्धान्त निकलता है कि पृथ्वीराज विक्रम तेरहवीं सताब्दी के प्रथमाब्द और ईस्वी बारहवीं सताब्दी के द्वितीयाब्द में जीवित था और उसका अन्तिम युद्ध विक्रम संवत् १२४८ (ईस्वी ११९१) में हुआ ।

जिन शिलालेखों का ऊपर उल्लेख हो चुका है उनके अतिरिक्त अर्धराज और सोमेश्वर के भी शिलालेख और दानपत्रादि मिलते हैं जो ऊपर दिए हुए सन् संवत्तों की प्रामाणिकता और ऐतिहासिक सत्यता को सिद्ध करते हैं ।

अब हम रासे के सन संवत्तों पर विचार करेंगे । चार भिन्न-भिन्न संवत्तों पर विचार करने से यह स्पष्ट विदित हो जायगा कि वे अन्य इतिहासों में दिए हुए संवत्तों से कहां तक मिलते हैं । चंद ने पृथ्वीराज का जन्म काल संवत् १११५ में, दिल्ली गोद जाना ११२२ में, कन्नौज जाना ११५१ में और शहाबुद्दीन के साथ युद्ध ११५८ में लिखता है । तबकाने नासरी में अन्तिम युद्ध का समय, जिसमें पृथ्वीराज पराजित हुआ और बन्दी बनाया गया, हिजरी ५८८ दिया है । अब यदि १२४८ में से ११५८ बाकी निकाल दिया जाय तो ९० बाकी बचता है । इसके अतिरिक्त इन चार भिन्न-भिन्न अवसरों पर पृथ्वीराज के बयक्रम का हम ध्यान करें तो यह सिद्ध होता है कि उपरोक्त घटनाएँ १२०५, १२१२, १२४१ और १२४८ में हुईं कि १११५, ११२२, ११५१ और ११५८ में जैसा कि रासो में किया है—यह भेद नीचे दिए विवरण से स्पष्ट हो जायगा—

घटनाएँ	रासे का संवत्	पृथ्वीराज की उस समय वय	अन्य पुस्तकों का ठीक संवत्	अन्तर
जन्म	१११५-१६	●	१२०५-०६	९०-९१
गोद जाना	११२२-२३	७	१२१२-१३	९०-९१
कन्नौज गमन	११५१-५२	३६	१२४१-४२	९०-९१
अन्तिम युद्ध	११५८-५९	४३	१२४८-४९	९०-९१

अब यदि प्रत्येक घटना के संवत्त में पृथ्वीराज के जीवन के देव वर्ष जोड़ दिये जायं तो सबका समय १२४८ हो जाता है । जो कुछ ऊपर लिखा जा चुका है उससे स्पष्ट है कि चन्द ने अपनी पुस्तक में ९०-९१ की भूल की है परन्तु सब स्थानों में समभेद का रहना भूल की मिनती में नहीं आ सकता । चन्द ने ९० वर्ष का अन्तर अपने ग्रन्थ की बर्णित समस्त घटनाओं में क्यों रखा इसका कोई उपयुक्त कारण अवश्य हीवा ।

(८)

हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों के अनुसंधान में मुझे पण्डित मोहनलाल विष्णु स्नाज पंड्या से ९ प्राचीन परवानों और पट्टों की नकल मिली जिनका सम्बन्ध रातो में वर्णित चट्टनों से है। हम पहिले इन परवानों और पट्टों की नकल और उनका अनुवाद देकर तब इनके विषय में कुछ कहेंगे।

(१)

(नकल)

स्वस्ती श्री श्री चीत्रकोट महाराजाधीराज तपोराज श्री श्री रावल जी श्री समरजी जी बचनानु दाग्रमा आचारज ठाकुर हसीकेश कश्यप बाने दलीपु डायजे लाया अणी राज में ओषद धारी लेवेगा ओषद ऊपरे माल की धाकी है जो जनना में धारा बंसरा टाल ओ दुजो जावेगा नहीं ओर धारी बेठक दली में ही जी प्रमाणे परधान बरोबर कारण रेवेगा ओर धारा बंस क सपून कपूत वेगा जो ने गाम गोमो जणो राज में धाय्या पाम्या जायगा ओर धारा चाकर चोड़ा को नामो कोठार सू मला जायेगा ओर धूं जमाखातरी रीजो मोई में राजधान बाब जो अणी परवाना री कोई उल्लंघन करेगा जो ने श्री एक लींग जी की आज है। दुवे पंचोली जानकी दास सं० ११३९ काती बीद ३।

(अनुवाद-)

स्वस्ति श्री चितौड़ से महाराजाधिराज तपोराज श्री रावल समर सिंह जी की आज्ञा से आचारज ठाकुर शुकिकेश को लिखा। हम तुम्हें दिल्ली से बहेज में लाए। इन राज में तुम्हारी औषधि ली जायगी ओर राज्य के औषधि विभाग पर तुम्हारा अधिकार रहेगा। जनाने में तुम्हारे बंस के लोगों को छोड़ दूसरा न जायगा। दरबार में तुम्हारा स्थान, जैसा कि दिल्ली में मंत्री के निकट था, रहेगा, तुम्हारे बंसज चाहे कपूत या सपूत हों याव और चोड़ा पाबेंवे और उन्हें भोमेंगे और तुम्हारे नौकरों और चोड़ों के लिये राज से प्रबन्ध होगा। निश्चय रक्को, मोई ग्राम में घर बनवाओ। इस परवाने को कोई उल्लंघन न करे क्योंकि इसमें श्री एकलिंग जी की आज है। दुवे पंचोली जानकी दास द्वारा संवत् ११३९ मिति कार्तिक बदि ३ को लिखा गया।

(२)

स्वस्ती श्री उदैपु सुधाने महाराजाधिराज महाराजा श्री भीमसीध जी आवेसातु आचारज संबुसीध सयासीध राव स्य अग्र धा तीरे महारावल जी श्री समरसा जी की सही को परवानो पंचोली जानकी दास के दुवे बीय्यों संवत् ११३९ काती बीद ३ की मती को आचारज ठाकुर हसीकेश का नाम को दली की राजा प्रवीराजो

कना यी हाथवे लाया जीरो परवानो के बगस्यो जो मे लीषी ह के अणी राज में औषद थारो लेवेगा औषद ऊपरे माऊकी थाको है और जनाना में थारा बंभरा टाऊ ओ दुवो जावेगा नहीं और थारी बैठक दली मे ही जी प्रमाणे परवान बरोबर कारग देवेगा और थारा बम का मयुन कयुन वेगा जीने गाम गोडी अगी राज मे पाया पाया जायेगा और थारा चाकर गोड्य को गामो कोठार में मन्दा जायेगा और थु जनापावी रोजो मीई मे रातयान बाद जी अणी प्रवाना हे कोई ऊतंगण करेगा जी ने श्री येक िग जी की आण है..... परवानो पाडेगी येक लोग दाम संमत १८५८ वर्षे जेठ मुद ३ गुरे ।

(अनुवाद)

स्वनि श्री उदयपुर सुयनि मह राज प्रिराज श्री भीमविह जी की आज्ञा मे सदाविह के पुत्र आचारज पत्रुवीर को िवा । प्रागे तुम्हारे पाम महारावज जी श्री समरती जी की मत्री का एक परवान है जो पत्रुओ जानकी दाम का संवन ११३९ कार्तिक वदी ३ का आचारज ऋतीकेश के नाम का लिवा है जिममें लिखा है कि दिन्नी के राजा पृथ्वीराज के यहां से तुम्हें स्हेज मे लाए । यह परवाना तुम्हारे पाम था । बहुत जीर्ण हो जाने मे एक नया हमने दिया । अपने िज्ज है कि इस राज मे तुम्हारी औषधि ली जायगी । औषधिविभाग पर तुम्हारी मालकी रहेगी । जनाने मे तुम्हारे बंसवालों की टाल और कोई नहीं जायेग —तुम्हारी बैठक जैनी कि दिन्नी मे मत्री के निकट थी, यहां रहेगी और तुम्हारे कून या मयुन वग वाके गाव और घोडा पावे श्री भोगे और तुम्हारे तीकर और घोडे के लिये राज्य मे प्रबुट होगा । तुम जवाबानरो रक्षना । मोई धाम मे घर बनवाओ । कोई हव परवाने का उल्लंघन न करे क्योंकि हममें एकलिंग जी की आन है ।

पानओ एकलिंग दाम द्वारा सवन १८५८ जेठ मुदी ३ इहस्वनि वार को दिया गया ।

(३)

पूर्वदेश महोपति प्रथीराज
दिन्ली नरेश संवत ११२२
बेमास सुदी ३

(सही)

श्री श्री दलीन मंडन राजान धीराजन हनुमथान राजप्रान संभरो नरेश पुरज दली लषत श्री श्री महान राज धीराजन श्री प्रथीराजी सुमथान आचारज श्रीकेस धर्मचिन अग्रन तप को बाद श्री प्रभु कवरन की साथ हतकेने बीरकोड

बहारबा की सीखवी है ने दली काका जी रे बेद है जो कागद बाचत चल्ल
आव जो पाने या आगे जाणो पड़ेगा चांके वास्ते डाक बेठी है श्री हज़ूर ..
हुकम बी वेगीयो है जो ये ताकीद सू आव जो पारे संदर को ब्याव का मारफ
बबार करांगा दली तु आ पीछ करागा ओ—रछे सवेरे दन अठे बांचसी
संवत ११...चंत सुदी १३ ।

(अनुवाद)

श्री श्री चित्रकोट (चित्तौर) से बाई साहिबा श्री प्रया कुंवर बाई का बारण
(प्रणाम) आचारज भाई ऋषिकेश जी मोई गाम मे बांचे । आगे दिल्ली से
भाई श्री लंगरी राई आए है और दिल्ली से श्री हज़ूर का भी खास रुका आया
है और हमारे भी दिल्ली जाने की आज्ञा हो गई है । दिल्ली मे काका जी को खेव
है सो कागज बाचते चले आओ बयोकि तुम्हे हमारे आगे जाना पड़ेगा । तुम्हारे
क्रिये डांक बेठी है । श्री हज़ूर का भी हुकुम हो गया है इसलिये ताकीद से आओ ।
जो तुम्हारे मन्दिर की प्रतिष्ठा का मुहुर्त है तो दिल्ली से आने पर करेगे । ऐस
करो कि सवेरा वहा हो और संध्या यहा । संवत ११....चंत सुदी १३ ।

(६)

श्री राम हरी

श्री
पूर्व देश महीपति प्रथीराज
दली नरेस संवत ११२२
वैशाख सुदी ३

मही

श्री श्री दली महाराजं धीराजन हिंदुमथानं राजधानं संभरी नरेस पुरब दली
संवत श्री श्री महानं राजं धीराजनं श्री प्रथीराजो सुसायनं आचारज रवीकेश घनंश्रि
अग्रन तमने काका जीन के दुबा की आराम चओ जीन के रीजं मे राकड रवीआ
५००० तुमरे अहाती गोडे का बरबा सीबाअ आबेगे पजानं मे इनं को कोही माफ
करेगे । जीन को नेर को के अछंकारी होबेगे सड़ी दुवे हुकम के हृदमंत राम संमत
११४५ बरें असाठ १३ सुदी ।

(अनुवाद)

श्री श्री दिल्ली स्थान मे जो महाराजाधिराज पूर्वोय भारतवर्ष के साकम्भरी
राजाओं की राजधानी है, श्री महाराजाधिराज श्री पृथ्वीराज की आज्ञा से आचार
रज ऋषीकेश अन्वन्तरि को-आने तुमने काका जी को दबा से आराम किया जिससे

पुरकार में ५०००) २० नगव और हाथी घोड़ा लखे सहित कजाने से जायगा । जो कोई इसे न होने देगा वह नरक का अधिकारी होगा । हडमंतराय के आज्ञा से संवत् ११४५ मिति आषाढ सुदी १३ को लिखा ।

(७)

सही

श्री श्री चित्रकोट महाराजघीराज तपेराज श्री रावर जी श्री श्री समरमी जी वखनातु दाअमा आचारज ठाकुर रसीकेस कस्य गाम मोही रो वेडो वाले मग्ना की दो लोग भोग सुदीया आवा दानकर जो जमा थाची सो आवा दान करजे थारे हे दुबे घडा मुक्त नाथ संमत ११४५ जेठ सुदी १३ ।

(अनुवाद)

श्री श्री चित्रकोट महाराजघीराज तपेराज श्री रावर जी श्री श्री समरमी जी की आज्ञा से दायमा आचारज ठाकुर ऋषिकेश को गांव मोई का खेडा तुमको दान में दिया जाना हे उसे बमाओ निस्तन्देह उमे बमाओ । वह तुम्हारा है । दुबे घवा मुक्तनाथ द्वारा संवत् ११४५ जेठ सुदी १३ को लिखा गया ।

(८)

चित्रकोट महा सुभ सुयाने श्री.....मी पास तीरे मामाब चवान श्री परयु .. की आमीम बाबजी श्री दली का.....सु अग्रन अठे श्री हजुर माआसुद १२ क...वांडा में वेकु पदारी आने आचारज सीकेस बी श्री हजुर की लार काम आ आबी हजुर की लारे जावागा वेकुट ने पछे.....सीकेस रा मनवा की बात्री राबजी मारा.....रा का मनवा की बात्री राब जो ही मारा चारी.....नव मारा जीवका चांकर हे डीयामु राज... ..हरामधोर नीवेगा दुबे नदुरराज के..... ११५७ माहा मुद १२ दमगन पासवान बेनरका भं -मा साब श्री -युवाही का वेकुटप.....

यह पत्र बहुत ही जीर्ण हो गया और इसके स्रष्ट नही पढ़ा जा सकता । बड़ी कठिनाई से जो कुछ ऊपर दिया गया है वह पढ़ा जा सका है । ऐसा जान पड़ना है कि इस पत्र को महाराणी पृथा बाई ने अपने पुत्र को लिखी लिखा था—इसमें उन्होंने निज पति के परलोकवास और साथ ही आचारज ऋषिकेश की मृत्यु की भी सूचना देकर यह लिखा था कि उन चार घरों के लोगों को जो दिल्ली से दहेज में उनके साथ आए थे प्रतिष्ठा से रखना क्योंकि वे राज्य के विषयामी नौकर होंगे । महाराणी ने निजपति के साथ स्वर्ग जाने की इच्छा से सती होने की भी सूचना इसी पत्र में दी थी—इस पत्र को महाराज त्रसिंह ने संवत् १७५१ में फिर से नयाकर के दिया था जिसकी नकल आने ली है ।

श्री गणेशप्रसादानु श्री रामी जयति । श्री अबलीग प्रसादानु ।

सही

स्वरित श्री ऊर्दपुर मुषाने महाराजा धीराजमहाराणा श्री जंसीध जी आदेसातु आचारज अषेराम रगुनाथ रा कस्य ३ अप्र थारे पास मा साहेब चबाण जी श्री प्रधुबाही बेकूट राबल जी श्री समरसी जी दली काम आया जरी सारा पदारता श्री चीत्रकोट लषी के आचारज भाई फ़ीसेस ता राबली श्री हजुर की लोर कामा आध्या ने पाछे माग च्यारी गरा का मनषा की धात्री राष जोड़ी मारा जीव का चाकर है जो धासु कही हराम खोर नीवेगा । मो लघ्ये हो जो टेपेन नवी करा देवाणो जो थे अणी राज का स्यामखोर हो दुवे पंचोली जगमोहन संमत १७५१ वर्ष माहा वीद १० ।

(अनुवाद)

स्वस्ति श्री उदयपुर शुभ स्थान से महाराजाधिराज महाराणा श्री जयसिंह जी की आज्ञा से रघुनाथ के पुत्र आचारज अषेराम को लिखा । आगे तुम्हारे पास मांजी श्री चौहान पृथू बाई जी का (एक परवाना) है जिसमें उन्होंने श्री राबल श्री समरसी जी के दिल्ली काम आने पर चित्रकोट लिखा था कि आचारज भाई ऋषीकेश श्री राबल श्री हजुर जी के साथ काम आया । हमारे पीछे हमारे चारों तर के लोगों को खानी रखना क्योंकि वे हमारे जीवन के चाकर हैं और तुम्हें कभी छोड़ना न वेगे । यह उसमें लिखा था सो नया करके दिया । अब तुम इस राज्य के स्यामखोर (हरामखोर का सरला हुलाल खोर) होओ । दुवे पंचोली जगमोहन दास के द्वारा सबत १७५१ माघ बदी १० को दिया गया ।

अब इन पट्टों और परवानों से जिनकी तकल और जिनका अनुवाद ऊपर दिया जा चुका है और जिनका समय ११३५ से ११५७ के बीच में है, निम्नलिखित बातें प्रमाणित होती हैं ।

(१) ऋषीकेश कोई बड़ा वैद्य था जिसका बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध मेवार और दिल्ली के राज घरानों में था और जो पृथा बाई के विवाह समय चित्तौर

(१) इनके लिये मैं पण्डित माह 'नाल विष्णु लाल पंड्या' का अत्यन्त अनुग्रहीत हूँ । इन सब परवानों को उन्होंने उदयपुर में ऋषीकेश के वंशजों के अधिकार में पाया और उनकी फोटो ले ला । इससे मैं इनको यहाँ प्रकाशित करने में समा हुमा । मुझे इस बात के लिखने में विशेष सन्तोष होता है कि पंड्या जी की सहायत ही से मैं इनके पढ़ने और अनुवाद करने में भी समर्थ हुमा ।

के महाराज श्री रावल समरसी जी को वहेज में दिया गया था। यह घटना इन चरवानों के अनुसार संवत् ११४५ में हुई...महाराणी पृथाबाई ने जो अन्तिम पत्र अपने पुत्र को लिखा था उसमें उन चार चर के लोगों का उल्लेख था जो उनके साथ चित्तौर से आए थे और जिन्हें सम्मान पूर्वक रखने के लिये उसने अपने पुत्र को लिखा था। 'पृथ्वीराज रासो' के 'पृथा विवाह समी' के निम्न लिखित उद्धृत खंड से यह कथा स्पष्ट हो जायगी।

श्रीपत साह सुजान देश यम्भह संग दिगो
 अब प्रोहित गुरराम ताहि अग्या नृप किगो
 रिषीकेस दिग बह्य ताहि अनंतर पद सोहे
 चंद सुतन कवि जल्ह असुर सुर नर मन मोहे
 कविचंद कहे बरबाय बर फिर सुराज अग्या करिय
 करि जोर कह्यो पीबल नृपति तब राबर सत धावर फिरिय
 निगम बोध नोतम रिषि, धिर जेहि बरली धान
 दास भगवती नाम दे पृथी राज चौहान
 रिषीकेस अब राम रिषि बहु बिधि देकर मान
 पृथा कुंजरि परनाइ के संग चलाये जान'

इससे अब यह स्पष्ट है कि जिन चरों का वर्णन पृथा बाई ने अपने पत्र में किया है उनके विषय में चन्द का कथन है कि वे वहेज में रावल समरसिंह को दिए गए थे। श्रीपत साह "द्वैपुरा महाजन" बंश का, गुरराम प्रोहित "सनाबड़ काह्यणो" का, "रीषीकेस", अचारज (दायमा) काह्यणों का और चन्द का ज्येष्ठ पुत्र जल्ह "राजौरा दाय बंश" का आदि पुरुष थे। ये चारो लोग पृथाबाई के साथ चित्तौर गए और अब तक इनके बंशजों की मेवार दरबार में विशेष प्रतिष्ठा है।

(२) पृथ्वीराज का अन्तिम युद्ध जिसमें चित्तौर के रावल समरसिंह (या समरसी) मारे गए संवत् ११५७ के माघ शुक्ल पक्ष में हुआ था जो समय चन्द के दिए हुए समय से अर्थात् ११५८ से मिलता है।

(३) कविराज इयामकदास जी और उनके अनुयायी लोगों के न मानने पर भी यह बात सिद्ध है कि पृथाबाई का विवाह समरसिंह के साथ हुआ—जो बंशवृत्त मेवार बंश का उस दरबार से प्रगट किया जाता है वह ठीक नहीं माना जा सकता। मुहम्मद अलदुस्का लिखित "द्वारीक मुहूर्ते राजस्थान" में जो मेवार दरबार की ओर से छापी गई थी और जिसे स्वयं महाराजा और कविराज

व्यामलदास जी ने सुना और स्वीकार किया था (उसकी भूमिका देखो) उदयपुर बंश की नामावली है जिसमें मे दो नाम जान बूझ कर निकाल दिए गए हैं— एक तो उदित सिंह का और दूसरे बनबीर का। यद्यपि आगे चल कर यह लिखा गया है कि वे दोनों उदयपुर की गद्दी पर बैठे थे। इस स्पष्ट पूर्वापर विरोध का कारण भी खोजने पर उसी ग्रन्थ से मिल सकता है क्योंकि उसमें लिखा है कि इन दोनों में से एक तो दामीपुत्र या और दूसरे ने अपनी कन्या को एक मुसलमान को देने को कहा था। अतएव एक ऐसे वंश ने जो बहुत दिनों से राजपूताने के सब बंशों में प्रसिद्ध चला आता है यह उचित न समझा कि ऐसे दो नाम उनके बंश में बने रहे। जिनके कारण उनके निर्मल यश में कलंक लगता हो। हम फिर क्या था झट कन्ध से दो नाम काट दिए गए। यद्यपि बंश के विचार से यह कार्य किसी प्रकार से प्रशंसनीय हो सकता है पर इतिहास के लिये इससे बढ़ कर दूसरा कोई घोर पाप नहीं है। इस बात से यह स्पष्ट है कि जो बंश इस प्रकार का कार्य कर सकता है वह यदि यह बात कहे कि पृथाबाई का विवाह समर सिंह के साथ हुआ ही नहीं और समर सिंह पृथ्वीराज की पताका के अधीन होकर न लड़े और न मारे गए तो इतिहासवेत्ता विज्ञ पाठक तथा उन पत्रों और खर्नियों पर जो ऊपर दिए जा चुके हैं ध्यान देकर स्वयं विचार और न्याय कर सकते हैं कि यह बात कहा तक सत्य मानी जा सकती है।

इस सम्बन्ध में एक ऐतिहासिक घटना ऐसी है जिम पर विचार कर लेना आवश्यक है। यदि समरसि पृथ्वीराज के समकालीन थे तो उनके पुत्र रतनसि का युद्ध अनाउद्दीन खिलजी के साथ १३०२-३ ई० में कैसे हुआ। सादडी के जैनी शिलालेख में जिम पर १४९६ विक्रम संवत् खुदा है और जो राणा कुम्भ करन के राजत्व का काल है, वाप्यारावल से लेकर कुम्भकरन तक के राजाओं की नामावली दी है। उसमें लिखा है कि भुवन सिंह ने जिसका नाम समरसिह के पीछे दिया है, अलाउद्दीन को हराया। तुहफे राजस्थान ने जो नामावली दी है उसमें समर सिंह और भुवनसिह के बीच में ९ राजाओं के नाम और दिए हैं— वे हैं (१) समरसि (२) रतनसि (३) करनसि (४) राहुत (५) नरपत (६) दिनकर (७) जसकरन (८) नागपाल (९) पूर्णपाल (१०) पृथ्वीपाल (११) भुवनसिह। भुवनसिह के पीछे भीमसिह प्रथम, जी सिंह प्रथम और लक्ष्मण सिंह ये तीन नाम दिए हैं। कर्मल टाड लिखते हैं कि राट्ट से लक्ष्मणसिह तक के बीच में नौ राजे पितौर की गद्दी पर बैठे और चौदो चौदो दिनों तक राज करके सब सुरघाम को बिचारे। इन राजाओं में से ६ लडाईं में मारे गए। इन सर्पों ने क्या को मुसलमानों के रक्षित रखने के लिये अपने प्राण दिए। पृथ्वीपाल ने इन मुसलमानों को हरा दिया और अलाउद्दीन के पूर्व में अपने जघन्य कर्म से पराक्रम्युक्त रहे।

अब इससे भुवनसिंह का समय १२८० ई० के लगभग होता है और लक्ष्मणसेन का उससे कुछ पीछे इससे यह सम्भव जान पड़ता है कि वह रत्नसी नहीं था जिसकी स्त्री प्रसिद्ध सुन्दरी पद्मावती के लिये अलाउद्दीन ने चित्तौर का नाश किया वरन वह लक्ष्मणसिंह था जिसका नाम अब तक इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध खला जाता है। कविराजा श्यामलदासजी जिस शिलालेख को अपने पक्ष में उपस्थित करते हैं वह ठीक नहीं माना जा सकता। पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या उसकी पोल भली भाँति खोल चुके हैं और मैं इन शिलालेखों पर पूर्णतया विश्वास कदापि नहीं कर सकता जब तक उनकी फोटो न छापी जाय क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि किसी अन्ध पक्षपाती महाशय ने उनमें २ के स्थान पर ३ बनवा दिया है।

(४) पृथ्वीराज के परवानों पर जो मोहर है उससे उसके सिंहासन पर बैठाने का समय ११२२ विदित होता है। यह भी चन्द के दिए हुए समय से मिलता है। रासो के "बिस्ली दान समौ" में यह लिखा है—

एकादस संवतः अट्ट अग्न हत तीस चने ।

प्रथ सुरित तहां हेन सुद्ध मर्णांतर सुमास गने ।

सेत पक्क पंचमीय सकल गुर पूरन ।

सुदि मृगासिर सम इन्व जोग सवहि सिध चुरन ।

पहु अनमपाल अप्पिय पहुनि । पुतिय पुत पबित्त मन ।

छँहो सुमोह सुक्त तन बरनि । पत्ती बडी सजे सरन ।

तो अब चन्द के अनुसार अनंगपाल ने राजसिंहासन अपने दोहित्र को शुद्धमन से ११३०-८—११२२ की मार्गशीर्ष सुधी ५ को दिया। इससे यह सम्भव है कि पृथ्वीराज गद्दी पर बैशाख ३ संवत ११२२ को बैठा हो।

इन पर्वानों और चिट्टियों की सत्यता में किसी प्रकार का संदेह नहीं किया जा सकता क्योंकि वे एक दूसरे की सत्यता को प्रमाणित करते हैं। कुछ फारसी शब्दों के प्रयोग में संदेह हो सकता है पर यह जान लेने से संदेह का कारण दूर हो जाता है कि पृथाबाई दिल्ली से आई थी जहाँ एक सेना मुसल्मानी योद्धाओं की सदा रहती थी और जहाँ लाहौर के मुसल्मानी दरबार से दूतों का आना जाना सदा लगा रहता था क्योंकि दोनों राज्यों की सीमा मिली हुई थी और पृथ्वीराज के १०० वर्ष पहिले से मुसल्मानी राज्य पंजाब में स्थापित हो चुका था। इस अवस्था में क्या यह आश्चर्य की बात है कि दिल्ली के रहने वालों की भाषा में कुछ फारसी के शब्द थिक नए हों ?

जो कुछ ऊपर कहा जा चुका है उससे स्पष्ट है कि चन्द ने निज "रासी" में जो सब सन संवत् दिये हैं वे अशुद्ध नहीं हैं वरन् वे उस अब्द से ठीक मिलते हैं जो उस समय द्वाार के कागजों में प्रचलित था और जो प्रचलित विक्रम संवत् से ९०-९१ पूर्व था। इसी अब्द से हम यह बात स्पष्ट मिद्ध कर सकते हैं कि शिला-केस और पर्वानि तथा पट्टे दोनों सत्य हैं। पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या का कथन है कि इस नवीन संवत् का आभाम वे आदि पर्व के ३५६ वें रूपक (१) में ही पाते हैं जिसमें चन्द लिखता है कि जैसे युधिष्ठिर के ११०० वर्ष पीछे विक्रम का संवत् चला वैसे विक्रम के ११०० वर्ष पीछे मैं पृथ्वीराज का संवत् चलाता हूँ। आदि पर्व के ३५५ वें रूपक में पुनः चन्द इस नवीन अब्द को स्पष्ट कर देता है (२)। अब तब मेवाड में यह बात प्रसिद्ध है कि पूर्वकाल में दो विक्रम संवत् थे। कर्नल टाड भी हारावती के वर्णन में इस बात का उल्लेख करते हैं। अब तक "आनन्द" शब्द का अर्थ "आनन्द" "शुभ" लगाया जाता था परन्तु पण्डित मोहनलाल जी का कथन है कि इसका अर्थ है "नन्द रहित" और नन्द के अर्थ नी के हैं क्योंकि "नव नन्दा प्रकीर्तिताः" यह भागवत में लिखा है। अ का अर्थ है शून्य— अंकानां वामतो गति" के अनुसार अब आनन्द का अर्थ हुआ है ९० और इसे घटा देने से चन्द का दिया हुआ समय सब ठीक मिल जाता है। दूसरा अर्थ अनन्द का यह है। मौर्य बंस का आदि राजा चन्द्रगुप्त हुआ जो महानन्द का पुत्र था और इस बंस के राजा नन्दवंशीय कहलाते थे। मेवाड के राजपूतों ने जानबूझ कर इन राजाओं के काल की गणना न करने के उद्देश्य से प्रचलित विक्रम संवत् में से उनका राजत्वकाल घटा दिया और इस "अनन्द विक्रम संवत्" का प्रचार किया हो। इन अर्थों के अतिरिक्त सबसे उपयुक्त एक दूसरी ही बात सूझती है जिसे मैं यहाँ लिख देना उचित समझता हूँ। यह बात इतिहास में प्रसिद्ध है कि कन्नौज का राजा जयचन्द अपने को अंगपाल का उत्तराधिकारी बताता था और कहता था कि गद्दी पर बैठने का अधिकार मेरा है और न कि पृथ्वीराज का। इस कारण पृथ्वीराज और जयचन्द दोनों में परस्पर विवाद रहा और अन्त में दोनों का नाश हुआ। कन्नौज के राजाओं ने जयचन्द तक केवल ९०-९१ वर्ष राज्य किया था अतएव आश्चर्य नहीं कि उनके राजत्वकाल को न गिनने के प्रयोजन से और उन्हें नन्दवंशियों के तुल्य मानने के अभिप्राय से इस नवीन संवत् का प्रचार किया गया हो (३)।

(१) एकादश सौ पंच दह । विक्रम साक अनन्द

तिहि रिपु जयपुर हरन की । भय प्रियिराज नरिद

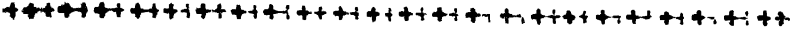
(२) एकादश से पंचदह । विक्रम जिमि छम सुत । त्रितय साक प्रियिराज को
लिख्यो विप्र गुन गुम ।

(३) उस विभिन्न तथा माघ ही अभ्यन्त उपयुक्त सम्मति के लिए मैं अपने परम विश्व मित्र बाबू रघा कृष्णदास का अनुग्रहीत हूँ।

जो कुछ ऊपर लिखा जा चुका है उससे स्पष्ट है कि चन्द के संघत मनोकल्पित और असत्य नहीं हैं और रासी में जो बातें लिखी हैं वे निरी सत्य नहीं हैं। वह भी सिद्ध कर दिया गया है कि १२वीं शताब्दी में मेवाड़ में दो संघतों का प्रचार था एक सनन्द और दूसरा अनन्द और उनमें ९०-९१ वर्ष का अन्तर था। अब यह स्वतः सिद्ध है कि चन्द का रासी वास्तविक सत्य घटनाओं से पूरित ग्रन्थ है जैसे कि उस काल के ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रायः सब देशों में मिलते हैं और अब इसे झूठा सिद्ध करने का उद्योग केवल निरर्थक, निष्प्रयोजनीय और द्वेषपूर्ण माना जायगा। इसमें सन्देह नहीं है कि यह ग्रन्थ सहस्रों मनुष्यों के हाथों में गया है और सैकड़ों ने इसे लिखा है। इससे यदि आज हमको इसके पाठ में दोष वा कही-कहीं गड़बड़ मिले तो इसमें आश्चर्य ही क्या है। इससे उस ग्रन्थ के गुण और आदर में किसी प्रकार की क्षति न होनी चाहिये।

अन्त में अब मुझे केवल इतना ही कहना है कि यदि पण्डित मोहनलाल विष्णु-लाल पंड्या जो अपने कर्तव्यपालन से पराङ्मुख न होते, यदि पृथ्वीराज रासी अब तक छप कर प्रकाशित हो गया होता तो आज मुझे इतना लिखने तथा अन्य लोगों को व्यर्थ आक्षेप करने का अवसर न प्राप्त होता। आशा है कि अब वे इन अप्रम्य रत्न को चिबड़ों में न लपेट कर उस आसन पर इसे सुशोभित करेंगे जिसके यह योग्य है और जो अब तक इसे मिलना उचित था—यदि पण्डित मोहनलाल जी अब भी मौन साधे बैठ रहें तो हमें केवल देश का दुर्भाग्य मानने के और कोई चारा नहीं है।





परिशिष्ट २



पृथ्वीराज रासो

(मुन्शी देवी प्रसाद लिखित)

पृथ्वीराज गमे के न छपने मे जो खेदमयी सूचना नागरीप्रचारिणी सभा की पिछली रिपोर्ट मे प्रकाशित की गई है उससे मैं भी महमन हूँ क्योंकि हिन्दी भाषा के साहित्य में यह बड़ा भारी ग्रंथ एक महाभारत के समान है। सबसे पहिले ऐशियाटिक सोसाइटी बंगाल मे इसके छापने का प्रयत्न हुआ था परन्तु दो तीन अंकों मे अधिक नहीं निकले, फिर पण्ड्या मोहनलाल जी ने उद्योग किया किन्तु वह भी पूरा न हुआ। उसके पीछे मुना था कि अजमेर के छापेखाने मे छपा परन्तु यह बात झूठी ही निकली। अब कही मे भी मुनने मे नहीं आता कि इसके छाने का उद्योग हो रहा हो। हा उदयपुर मे अबश्य एक महाशय ने इसका माराश प्रकाशित किया है परन्तु महा कवि बंद बरदाई के कविवारम पान करने के उत्सुक जनों की प्यास इममे नहीं बुझती, हा इतिहास के भूषों की तृप्ति तो शीघ्र ही हो जाती है क्योंकि उसमे जो इतिहास है वह अधिकांश कल्पित, बहुत ही असंगत और अमत्य है तथा विचार करने मे ऐसा जान होता है कि पृथ्वीराज जो के बहुत पीछे चंद या किसी दूसरे कवि ने चंद के नाम से अटकल पञ्चू इतिहास की भरती करके यह काव्य रचा है। इसी कारण यदि ऐशियाटिक सोसाइटी वालों ने इसका छपना बन्द कर दिया हो तो आश्चर्य नहीं है और पण्ड्या जी के बाबत यह सुना गया है कि जब उदयपुर के कविराज श्यामलदासजी ने पृथ्वीराज रासो का सण्डन छपा था तो यह बात वहाँ के चौहान ठाकुर बेदकेराव जी को बहुत बुरी लगी थी और उन्होंने पण्ड्या जी को सहायता देकर पृथ्वीराज रासो का संरक्षण भी छपाया था और रासो का छापना भी प्रारम्भ कराया था परन्तु वह बहुत बड़ा काम था इसलिए पूरी सहायता न मिलने से आगे न चला।

अब रासो का छाना कठिन है, इसके अनेक कारण हैं प्रथम तो कठिन ग्रंथ फिर क्षेत्रकों को भरमार, दो प्रतियाँ परस्पर मेल नहीं खाती तीसरे आजकल पठित समाज की काव्य में रुचि कम और इतिहास मे अधिक है और रामे के इतिहास से विचारवान् विद्वानों की अरुचि हो चुकी है। इसलिए जो काव्य के रसिक ही कुछ सहाय करेगे तो वह ग्रन्थ छपेगा। नागरीप्रचारिणी सभा पण्ड्या जी से १०० ग्रन्थ लेना चाहती है तो भी पूरी आशा छाने की नहीं होती क्योंकि यह बड़े खर्च और परिश्रम का काम है।

जब तक यह ग्रंथ मेरे देखने में नहीं आया था तब तक मुझे भी इसका बड़ा भाव था परन्तु देखे पीछे चौहानों के शुद्ध और यथार्थ इतिहास मिलने की जो आशा थी वह पूरी नहीं हुई किन्तु सफ़्टी बरचि हो गई क्योंकि कपोलबलिपत और मनमानी कथारों इसमें बहुत देख पड़ीं जिनका इतिहास से कुछ भी सम्बन्ध नहीं पाया गया। उनमें से बहुत सी तो मेरे ही संशोधन और निर्णय से असरय सिद्ध हो गईं।

कविराज श्यामलदास जी ने रासे का एक खण्डन छपा था। उससे १०/१२ वर्ष पहिले ही मुझे रासे की ऐतिहासिक और सामयिक अशुद्धियाँ ज्ञित हो गईं थीं जब कि मैंने संवत् १९२७ में उदयपुर राज्य अन्तर्गत राज समुद्र तलाब की पाज के शिलालेखों की उदूँ में उत्था की थी और उसके एक नोट में छाप दिया था कि पृथ्वीराज रासे के संबंधों में यथार्थ समय से १०० वर्ष का अन्तर है और इस बात को न मानने वालों के परितोषार्थ मुसल्मानों के विद्युद्ध और अक्षण्डित इतिहासों के अतिरिक्त पृथ्वीराज जी के समय का शिलालेख बूँड कर प्रकाशित कर दिया था। यह प्रत्यक्ष प्रमाण बहुत द्रव्य भय्य करने पर जयपुर राज्य बीसलपुर ग्राम से प्राप्त हुआ था जो कि जिनास नदी के तट पर राजमहल के समीप गोकर्णेश्वर महादेव से कुछ दूर पर बसा है। उसके एक सूने मन्दिर की प्रवास्ति में संवत् १२४४ और पृथ्वीराज का नाम परम भट्टारक महाराजाधिराज परमैश्वर्यादि विशेषणों से संयुक्त खुदा है और यह गाँव भी पृथ्वीराज के दादा दीसरदेव जी का ही बसाया हुआ माना जाता है जिनका दूसरा नाम विग्रहराज देव था। और एक शिलालेख इनका भी मैंने अजमेर में ढाई दिन के झोपड़े से २/३ वर्ष पहिले बूँड निकाला है जिसमें विग्रहराज नाम और संवत् १२१० खुदा है। फिर इसी पर लिखी प्रवास्ति में भी बीसलपुर का नाम "विग्रहपुर" लिखा है।

इन शिलालेखों, मुसलमानी इतिहासों, और पृथ्वीराज विजय ग्रन्थ में, जो पृथ्वीराज के समय का बना हुआ है रामे की गलतियाँ खूब पकड़ी जाती हैं। रासे में जिन राजों और वृत्तान्तों का संबत ११००—१२०० में होना लिखा है वे १०० वर्ष पीछे १२००—१३०० के बीच में हुए थे।

(२) रासे में लिखे राजों में से कई तो उस समय से पहिले भी हो गये थे जैसे मंडोर महीपनाड राव प्रतिहार जिसकी ८वीं पीढ़ी में राजा ककुड प्रतिहार संवत् ९२२ में हुआ था। इसका प्रमाण उस प्रकृत शिलालेख में है जो मैं अपनी पुस्तक "प्राचीन लेख संग्रह" में प्रकाशित कर चुका हूँ।

(३) कई राजों के झूठे नाम ही लिख दिए हैं—जैसे जाबु पहाड़ के राजा जेत और कलक-जिनके नाम वहाँ के शिलालेखों में कहीं नहीं है। जाबू पर तो उस समय बाराबर्ष प्रमार ही राज करता था जो पृथ्वीराज ने पीछे एक बिलग रखा।

(४) कई राजों का झूठे ही पृथ्वीराज के हाथ से मारा जाना लिख मारा है । उन में एक गुजरात के राजाधिराज भीमदेव ही को लीजिए कि रासे में तो उनका पृथ्वीराज जी के हाथ से मारा जाना लिखा है और मुमलमानी इतिहासों तथा गिराजेवों के अनुसार संवत् १२७२ तक उनका जीवन समय निश्चित होता है ।

इसी भाँति गहाबुद्दीन गोरी का भी पृथ्वीराज जी के तीर से मारा जाना सच नहीं है जो पृथ्वीराज जी को मार कर १० वर्ष पीछे संवत् १२६० में गकड़ों के हाथ से मारा गया था ।

(५) पृथ्वीराज जी से १०० पीछे होने वाले राजों को भी उनका समकालीन और सम्बन्धी लिख दिया है । दुष्टांत के लिए चित्तौड़ के राजल समरसी जी को ही लीजिए जिनका विवाह, चन्द तो पृथ्वीराज जी की बहन पृथा से करता है और उनके शिलालेख संवत् १३३१ से १३८० के मिलने हैं ।

(६) ऐसे ही पृथ्वीराज जी का गहाबुद्दीन को मान बेर पकड़-पकड़ कर छोड़ देना भी असम्भव है केवल एक बेर हरा दिया या पकड़ा नहीं । दूसरी बेर संवत् १२४३ में गहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज जी को मार कर दिल्ली और अजमेर का राज्य ले लिया । चन्द ने जो पृथ्वीराज रासे के अन्तिम प्रकरण में बादशाह का पृथ्वीराज को अन्धा करके पकड़ ले जाना, अरना उनके पास पहुँच कर बादशाह से उनके शब्दवेधी बाण चन्दाने की प्रशंसा करके उनको राजमभा में बुलाना, बादशाह का शब्द सुना कर बादशाही बैठक की माँग बनाना जिसके परिमाण पर पृथ्वीराज जी का बाण द्वारा मुम्नान को मार गिराना, फिर चन्द और पृथ्वीराज का परस्पर कट मरना इत्यादि लिखा है जो कि सर्वथा निर्मूल है । ये तथा अगान्य बातें भी उसने केवल आत्म श्लाघा और पृथ्वीराज जी की वीरता के वर्णन का धर्म निभाने के लिये लिखी हैं जिनका प्रारम्भ बड़ी धूमधाम से किया गया था, और आश्चर्य यह है कि इन कल्पित रासे को प्रमाण समझ कर जयपुर, जोधपुर, उदेपुरादि पिछले अल्पबुद्धि इतिहास लिखने वालों ने अपने पुराने यथार्थ इतिहासों को बिगाड़ कर उसके अनुकूल कर दिया है । अतएव यह रासा इतिहास विषय में तो कुछ उपयोगी नहीं है, हाँ काव्य तो अति अनुपम है और वीर रस से भरा पड़ा है ।

